

॥ अथजानिन्धरीपारमः ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ अथ यथा प्रतिबोधितां सारावनां गणानां स्वयं आसिन् यथा पुराणा अभिवासाः स ह मां गते ॥ अहं तस्मिन्
 त्वविषिणीं सगवतीं महादशां श्रुत्वा विनोम वनामनुसंस्थां मम गवते नैमिव दुर्गिणी ॥ १ ॥ अथ त्वया च वने कृपा गते ॥
 ज्ञानमुद्राय हृदयाय गतिनां भूत दुहन्ममः ॥ २ ॥ स योगिनिपदा गोवोदा रथो गाल्मनदत्तः ॥ यो यो नृत्तः ॥ ३ ॥ कादुरथो नासुतम
 हतु ॥ ४ ॥ वसुदेवस्तत्तद्वक्त्रसत्पाणरुसदं ॥ देवकीपरमानंदं हृष्यावदं जगद्गुरुसु ॥ ५ ॥ आनंदाज्ज आकाशं ॥ वेदप्रतिपाद्या ॥
 जयजय स्वसंवेद्या ॥ आत्मरूपा ॥ ६ ॥ देवात्वाच्च योगश ॥ सक्त्वा यथातिमकाश ॥ द्योनिव निदाश ॥ अथ यथा रिजो नी ॥ ७ ॥ हे शब्द
 ब्रह्म अशेष ॥ तैत्तिरीयसंवेद्य ॥ नेयवर्णवर्ण निदाश ॥ मरुवत असौ ॥ ८ ॥ स्मृतेति च अवयव ॥ दग्धा रोगिनी माव ॥ तेषां लोव-
 णाच्च विव ॥ अथ शोभा ॥ ९ ॥ अर्धादशपुत्राणां ॥ तैत्तिरीयसंवेद्य ॥ पदपद्मतीरवेवण ॥ मम गुरुत्वात् ॥ १० ॥ पदवधनागर ॥ तैत्ति-
 रगाथिलं अंबर ॥ जयसाहिं न्यवाणमपूर ॥ उजाह्वानं ॥ ११ ॥ देवाकाशनादका ॥ जनिर्धारिनामर्कानका ॥ त्वाकिरुणं दूरागता
 स्फुटदधिदका ॥ अथ अक्षि ॥ १२ ॥ लानां मम याचीपरी ॥ निपुणपणे गाल्मनां कुरसरी ॥ दत्तमर्ता उचिनपदे वाद्याभिरत्नं मूर्ति ॥ १३ ॥
 जय व्यासादिकाचीमर्ता ॥ तैत्तिरीयसंवेद्य भिरवती ॥ चारवाळपणं दूळकर्ता ॥ पल्लवसुदका ॥ १४ ॥ देववाषट्पदं दर्शनं द्युणिपती-
 तैत्तिरीयजांची आहूतो ॥ द्योनां नृप वसनादधरिणी ॥ आयुधहानो ॥ १५ ॥ तरोतकतोचिफरश ॥ नैर्हि स पदं अक्रुश ॥ वेदान्तम
 हारस ॥ मोदकभिरव ॥ १६ ॥ एकदातोदंत ॥ जास्वमावतारवर्दिता ॥ नाबाहुमतं संकेत ॥ नाति कोत्तो ॥ १७ ॥ मंगसहजं सुल्ला
 रवाट ॥ तोप द्यौकरवरद ॥ यथयति धातार्कसिद्ध ॥ अभयहन्त ॥ १८ ॥ दग्धा विवक्त्रवतं स विमल ॥ नां च शब्दादं स रळ ॥ जय
 परमानंदकवळ ॥ महास्मरवाचा ॥ १९ ॥ तरोमिवा दतोचिदशान ॥ जासमतां राक्षसवर्ण ॥ देवतुल्यवस्त्रं स एष ॥ विमराज ॥ २० ॥

पाठ. ओं १ नमः श्री जीर्जिनि ओ २ सकलमथिताय ओ ३ चारवाका ना ओ १४ स्वमना देवाट ७

मज्जभवगमन्दिशादो ॥ सीसांशम्यवास्थानां ॥ नोयमदास्तुमुनी ॥ अलीसंविती ॥ १६ ॥ प्रमयप्रवालरूपमसा ॥ इतोद्वेगनेचि
 निरुक्त ॥ सरिसागकवदतोदम ॥ मस्तकावरी ॥ १७ ॥ उपरिवेदोपनिषदे ॥ जियेउदारज्ञानमकरंदे ॥ नित्यकुसुमेमुकुंदोस्फुरा
 थ ॥ शासतोमदी ॥ १८ ॥ अकारुचरणयुगल ॥ उकारउदरविशाल ॥ मकारमहामहल ॥ मस्तकाकारे ॥ १९ ॥ हनोक्तोएकवदले
 तेशाब्दब्रह्मकवचले ॥ नोभियाच्चीगुरुहणामिने ॥ आदिबोज ॥ २० ॥ आनाअमिनववांगिवनासीना ॥ जेचानुशयकलका
 मिनी ॥ तच्छाशरदाविश्वयोहिनो ॥ नमिनीभियां ॥ २१ ॥ यजलददोसहुरु ॥ जेणोनारिलोहाससारपूर ॥ ह्यणाअनिविशेष
 अत्यादरु ॥ विवकावरी ॥ २२ ॥ जसेडोळगंअजमने ॥ नेवळोदुष्टमिफागफुटे ॥ भगवाभ्यापीहजेतथप्रगद ॥ महाभियां
 ॥ २३ ॥ कर्चिनामणीआनिराहानी ॥ सदाविजयवीजमनोरयो ॥ तसापूणकायस्थीभिवृत्तो ॥ ज्ञानदेवह्यण ॥ २४ ॥ ह्यणोनि
 जाणमनगुरुमज्जे ॥ नणहृतकायहाउजे ॥ जसेमळमिचनेसहेजे ॥ शारवापलवसतोपतो ॥ २५ ॥ यानीअजियेचमुवनी
 मियेयहतोसमुदावगाहनी ॥ नानरीअमृतरसस्वादनी ॥ रससकळ ॥ २६ ॥ तेसापुदनापुदतोनोचि ॥ भियांआनिवदिलाच्छीगुरु
 चि ॥ अभिज्ञाधितमनोरुचि ॥ पुरनिना ॥ २७ ॥ आनाप्रवथारानुयागहन ॥ जसकळकथोजन्यस्यानु ॥ नोअमिनवउद्यान ॥
 विवकतुरुच ॥ २८ ॥ नानरीसवसरवाचीआदि ॥ जमयमहाभियां ॥ नाननवरसस्तुथि ॥ परिपूणहे ॥ २९ ॥ कोपरमथास
 मकद ॥ हविद्यान्मूलपोट ॥ शास्त्रजानोवसाद ॥ अशेषने ॥ ३० ॥ नानरीसकळथोचिपाहर ॥ मज्जेनोचिजकार ॥ नोवण
 रलसादार ॥ शारदेच ॥ ३१ ॥ नानाभयारपसारतो ॥ प्रगदनीअसेविजगता ॥ आवस्त्रोनिमहामनी ॥ व्यासाचिये ॥ ३२ ॥ ह्या
 योनिहाकाव्यागवा ॥ ययगुप्तवतोचाटोवा ॥ गंधूनिरसाआलाआरो ॥ रसाळपणाचा ॥ ३३ ॥ तेवीविआदकाआणीकरु ॥ ए
 गाठ ॥ ३४ ॥ दोषाणकषह ॥ ३५ ॥ विशयमनीआदरु ॥ ३६ ॥ धर्मप्रागवाप्त ॥ ३७ ॥ जोअभियोगि ॥ ३८ ॥ कावका ॥ ३९ ॥ मनेविशिष्ट ॥ ४०

युनिशब्दोसिद्धः॥आणिमहाबाधोकावळोकादुणावलो॥३४॥थचातुर्यशाहाणझाले॥प्रमयसुनीसआले॥आणिसेमा
 मयपारवले॥स्फुरवाचेंगय॥३५॥माथुर्योमधुरता॥भृगारीस्फुरवता॥रूढपणउचिता॥दिसलेभले॥३६॥गथकळाविदप
 णकळा॥पुण्यासिमतपभागळा॥ह्याणउनिजनमजयाचेअवलीळा॥दोषहरेले॥३७॥आणिगाहूनानासिवे॥रंगीस्फुरगते-
 चिआगळिक॥मुणासगुणपणाचेबिक्॥बहुवसरय॥३८॥मानतेजेथकले॥जेसेवेलाक्यादिसउज्यकले॥तसेव्यासमा
 नीकबिळले॥भिरवेवन्व॥३९॥कामदग्नेविजयातले॥तेआपुलियापरीविस्तारिले॥तसेभारतीस्फुरवाडले॥अर्थजात॥४०
 नातरीनगरातरीविसज॥तरीनागराचिहाइजे॥तसेव्यासोफीतेजे॥थक्कतसकळ॥४१॥कोमथमवयसाकाळो॥लाव
 ण्याचीनक्काळो॥मगदेजेसीआमकी॥अंगनाआंगो॥४२॥नातरीउद्यानीमाधवोयद॥तेशचमशांभवेचीरवाणीउपडे॥आदि
 त्यागसोनिअपडे॥जियापरी॥४३॥नानायनीसुनसुवण॥जेसेन्याहाळितासाधारण॥मगअळकारीबरवण॥निवाडदा
 वी॥४४॥तसेव्यासोफीअळकारले॥आवडतबरवणपातले॥तेजाणोनोअज्यथिले॥इतिहासी॥४५॥नामापुरतिथे-
 यतिसेत्तागी॥सानोवधरुभिआगी॥पुर्णणआरच्यानरूपजगी॥भारताआली॥४६॥ह्याणऊनिमहाभारतीनाहो॥तेनोहो
 लोकीतिहो॥येणेंकारणेंह्याणिपेपाहो॥व्यासोळिहजगल्य॥४७॥ऐसीजगीस्फुरसकया॥तजन्मसुमिपरमाथा॥मु
 नीसागेनपनाथा॥जन्मेजया॥४८॥जेअहोनीयउत्तम॥पवित्रेकमिरुपम॥परममगळयास॥अवथारजा॥४९॥आ-
 तांभारतकभळपराग॥गीतारव्यभसंग॥जोसवादलाओरंग॥अर्जुनसी॥५०॥नातरीशब्दब्रह्माब्धि॥मथियलाव्यास-
 बुद्धि॥निबडिलेनिरवधि॥नवनीतिहो॥५१॥मगज्ञानाभिसपके॥कडसिल्लिविवेके॥पदआलुपरिणके॥आमोदासी॥५२

पाउ॥ ओ॥ ३६ दिसं॥ ओ॥ ४५ आवडंत कांथि आश्रायिले॥ ओ॥ ४८ जे॥ ओ॥ ५१ वेद॥

जे अपेक्षिजे वरुनी ॥ सदा अनुभवे संतो ॥ साहसावधारयती ॥ रमिजे जेय ॥ ५२ ॥ जे आकर्षण जेमनी ॥ जे आदि वद्यो
 जगती ॥ ते श्रीपार्वी संगती ॥ संगि जेत ॥ ५३ ॥ जे भगवद्गीता ह्यणिज ॥ जे ब्रह्मगानी प्रशंसिजे ॥ जे सनकादि कृष्ण विज
 आदरेसी ॥ ५४ ॥ जे संसार दनि येनं दकल ॥ साजि अभूत कणक वळ ॥ ते वेचिती सनमगद ॥ चकार तलगे ॥ ५५ ॥ तियापरी
 ज्ञाता ॥ अनुभावी हक्कथा ॥ अनिहकार पणानि ॥ आणुनिया ॥ ५६ ॥ हे शब्द वीण सवादिजे ॥ इदिये नैणता सनिग
 जे बोला आदि द्यो विजे ॥ प्रसयासी ॥ ५७ ॥ जे सप्रयण रगनेनी ॥ परिकसेळ दुलनेणनी ॥ नसोपरि आहसे विती ॥ प्र-
 थोडये ॥ ५८ ॥ का आपुला नायन सांदिता ॥ आंखि गज चंद्रमगदतो ॥ हा अनुगग भोगना ॥ कुमुदिनी जाणे ॥ ५९ ॥ ऐसे निग
 मीरपणे ॥ स्थिरावन्दि निभूत करणे ॥ आयि न्याता निजाणे ॥ मानु देये ॥ ६० ॥ अहा भुजना चिय पाती ॥ जे परिमणयागे
 रयहाती ॥ निहीलु पाकरु निमसी ॥ अवधान द्यावे ॥ ६१ ॥ हसलुगी म्या ह्यणो तल ॥ चरणालागी निविन विले ॥ प्रसूत रगे
 लहदय आपुले ॥ ह्यणुनिया ॥ ६२ ॥ जे सान्नाभाव मायवापाचा ॥ अपत्यबोल जरी बोवडी ॥ चा ॥ नरी अधिकृत याचा ॥
 सनाय आयो ॥ ६३ ॥ नसातु द्यामि अगि कारना ॥ सज्जनी आपुला ह्यणीतला ॥ तरी गेणे सहज उपसाहला ॥ प्रायुं काय
 ॥ ६४ ॥ परा अपराधना आणुनि आह ॥ जे संगी नायुं कबळ पाहे ॥ तं भवधार विनं दुलह ॥ ह्यणुनिया ॥ ६५ ॥ हे भनावन
 विचारिता ॥ वायो विधिवसा उपनहति चिन्ता ॥ यरवो नायमानुजरी खद्याता ॥ शोभा आया ॥ ६६ ॥ कीर्ति हसलु चोखरी ॥
 मापस्य सागरी ॥ सीनयन त्या परी ॥ निवर्तये ॥ ६७ ॥ आथका आकाश गि वसाये ॥ तरी आणी कल्याह निथोर हा आवे ॥
 ह्यणुनिया ॥ निहरीता ॥ ६८ ॥ तया गीतार्थी थोरी ॥ स्वयं शास्त्र विवरी ॥ जे अभयानी प्रभु करी ॥ चमत्कारो
 पाव ॥ ओं ६९ ॥ वाको ॥ ओं ६९ ॥ उपजला ॥ ओं ७० ॥ पा. ७

नी ॥ ७० ॥ तेषु हरस्वर्गोर्नाज ॥ त्वं जसकास्वरपनुस्ते ॥ ते संहं न्यन्नतनदो र्विजे ॥ गीतानन्व ॥ ७१ ॥ हविदायं सागर ॥ ७२ ॥
 या निद्रिना चाधार ॥ तोस्वये अं सर्वं चर ॥ मन्दाश अनुवा दन्ता ॥ ७३ ॥ ऐसे जे अगाध ॥ जेथे डावनी विद ॥ ते अल्पमी
 मति मद् ॥ कायहाये ॥ ७४ ॥ हे अपगर्वे से निव वझावे ॥ महानि जकवण धवळावे ॥ रागनमुदी सुवावे ॥ मशे के के विं ॥ ७५ ॥
 परी एथ असंगक आधार ॥ तेणो चिवाल सो सधर ॥ जस सुकुळ अंगुर ॥ ज्ञान देवा ह्यण ॥ ७६ ॥ चहु वी नरी सी मुरव ॥ ज
 री जाला आविवेक ॥ तर्ह सत सुपादो पक ॥ सा ज्वळ अस ॥ ७७ ॥ लोहा चकनक हाये ॥ हे सा मथ्य परी सी चिकी आहे ॥
 कां मृते ही जिवित लाहे ॥ अमृत सिद्धी ॥ ७८ ॥ जरी प्रकट सिद्ध सरस्वती ॥ नदी मुक्त या भाये ॥ सारती ॥ एथ वरु सा मथ्य
 शक्ती ॥ नवलु कायी ॥ ७९ ॥ कां जयाने कामधेनु माय ॥ नया सो अमाय का हो आहे ॥ ह्यण ॥ ८० ॥ मिमी प्रवती लाहे ॥ यथी द
 ये ७१ नरी न्यूनत पुरते ॥ अधिक त सरते ॥ करुनि अविह तु मते ॥ विनवीत अस ॥ ८१ ॥ आना दं ज अवधान ॥ तु ह्ये विल
 विला मी बालन ॥ जे संचष्ट स्त्रार्थिन ॥ दास्येन ॥ ८२ ॥ ते मासी अनुग्रहान ॥ साधु चानि रपित ॥ ते आप्ला अजकारित ॥
 मलतया परी ॥ ८३ ॥ तंव श्रीगुरु स्तणती राही ॥ हे तु ज बाला वन न राका हो ॥ आनाय या चि न दे ॥ झड करी विगा ॥ ८४ ॥
 या बाला निह निदास ॥ पावुनि परम उल्हास ॥ ह्यण परी सामना अवकाश ॥ ननु निचा ॥ ८५ ॥ म्हा कु ॥ ८६ ॥ ह्यण ॥ दंडा व
 धर्म से ने कु रस त्रे समव ता धु युत्सव ॥ मास का ॥ पांडवा चैव क म्कुष तम जय ॥ ८७ ॥ दौ ॥ नरी पुन स्नहं सो हिन ॥ द्युत श
 ष्ट अस पु सत ॥ ह्यण संज या रागे मात ॥ कुरु क्षत्री चिं ॥ ८८ ॥ जे धमालय ह्यण जे ॥ तेथ पांडव आणि माझ ॥ गले भ्रम
 नी व्याजे ॥ जुझावे नि ॥ ८९ ॥ नरी ति हो ये तुला अवसर ॥ वाय कि जत अस ये रयेरी ॥ ते सा ड करी कथन करे ॥ मज मंज

पाठ, ओ. ७६ आथी, ७७ परि सो न आह आ. ८६ तु डावो न ७८, ७९

हासभद्रास्तदवनन्दन ॥ जाअपरनवात्मन ॥ तात्तामस्तुस्तुणदुयोयर्ष ॥ देरवद्राणा ॥ १॥ आणीकहादोपदोक्रमर ॥ हुरेक-
 बहोमहार्यविर ॥ मानिलेअसती ॥ २॥ अत्तो ० अरमाकुतुविशिष्टायतान्निबोयदिजोत्तम ॥ नायकामसस्तु ॥ ३॥ अत्तो ०
 येनानब्रवीमिते ॥ ७॥ टी ० आताआमुचादलानाचक ॥ जरुदवीरसैनिक ॥ नेमसगंआइक ॥ सगिजती ॥ ३॥ अत्तो ०
 भवान्भीषश्चकणश्चहपश्चसमितेजय ॥ अन्वत्यामाविकणश्चसामदत्तित्तयेवच ॥ ८॥ टी ० उदशेएकदोनी ॥
 जाइजतीबोलोनी ॥ तुह्यीआदिकरुनि ॥ मुञ्चजेजे ॥ ४॥ हाभाभ्रगगान्दनु ॥ जोमतापतेजस्वीमानु ॥ रिपुगजप
 चाननु ॥ कर्णविर ॥ ५॥ एकेकाचनिमनाव्यापार ॥ हविश्चहोयसहर ॥ हाहूयाचार्यनपुर ॥ एकलाचि ॥ ६॥ एयविक
 णेवीरआह ॥ हाअन्वत्यामापलपाह ॥ याचाआइदसेदावाह ॥ हूनोतमनी ॥ ७॥ समितिजयसोमदत्ति ॥ ऐसआणी-
 कहीबहुतआहती ॥ जयाचियावळामती ॥ धानाहानणे ॥ ८॥ अत्तो ० अन्वचबहवः शुरामदर्थेत्यक्तजभिवता ॥ नाना
 शस्त्रमहरणाः सर्वपुष्टिविशारदाः ॥ ९॥ टी ० जेशस्त्रविद्यापारगत ॥ मन्त्रानारमृते ॥ होकाजेअस्त्रजान ॥ एयुनिरुद १
 हेअमतिमस्तुजगी ॥ पुरताप्रतापआगी ॥ परासवयाणेमजन्मिन्लागी ॥ आराधिलेअसती ॥ १०॥ पतिव्रतेचैतदयजसे ॥ पति
 वाचनिनस्पृशी ॥ मीसवस्तयानेस ॥ सप्तमदासी ॥ ११॥ आमुचियाकाजानेनिपाड ॥ देरवतीआपुलेजीवितथाकडे ॥ ऐसे
 निरवधिचोरवडे ॥ स्वामिभक्त ॥ १२॥ बुझतीकळकणीजाणती ॥ कळेकीर्तिसेजिती ॥ हेबहुअसोसात्रनीति ॥ एथोनिया
 ॥ १३॥ ऐसेसुवापरीपुरते ॥ वीरदुर्ळाआसुते ॥ आनाकायगणयाने ॥ अपारहे ॥ १४॥ अत्तो ० अपयासतदस्माकबलमी-
 ष्माभिरक्षिते ॥ पयासलितमेतथावलभासामिरक्षित ॥ १५॥ टी ० वरीक्षविद्यामाजिअष्ट ॥ जोजगजेदोजगोसुमद

पाठ, ओ. १०२, मिळालेआहार्ता, ७

७

७

७

तयादळवैपणाचापाट ॥ श्रीआमिरे ॥ १० ॥ आनायाचिनिवळेगंवसले ॥ हेदुर्जेसंपन्नासिले ॥ एणेयाडेथुकुळे ॥ लोकत्रर
॥ १६ ॥ आधीचिसुद्धाही ॥ तेथदुवाडपणकवणनाही ॥ मगवडवानळतसेयाही ॥ विरजोसेसा ॥ १७ ॥ नानरीप्रलभ
हिमहावत ॥ यादथजेसासाधन ॥ तसाहागासुत ॥ सेनापति ॥ १८ ॥ आताएणेसीकनणसिडे ॥ हंपाडवसेल्यकीरया
कडे ॥ वरनिलेनिपाडे ॥ दिसतअसे ॥ १९ ॥ वरश्रीमसमवेषु ॥ नोजाहानाअसेसनानु ॥ ऐसेबोलीनियामातु ॥ सादि
लीतेणे ॥ २० ॥ श्री० अथनधुचसर्वपुण्यामागमवस्थिताः ॥ श्रीसमेवाभिरक्षतुभवनः सर्वएवहि ॥ २१ ॥ टी० मरापुन
रपिस्त्रावोले ॥ सकळसेनिकानेह्याणिते ॥ आनादळभारआपुलाले ॥ सरसेकरा ॥ २२ ॥ जयाजियाअहोहिणी ॥ नेण
नियाआवरणी ॥ वरगणकवणकरणा ॥ महारथिया ॥ २३ ॥ नेणतेआवरजे ॥ श्रीआतळरांरांहेजे ॥ द्रोणातेह्येणपाहित
तुलीसकळ ॥ २४ ॥ हाचि एकरसावा ॥ योनिंसाहादेरवावा ॥ एणेदळभारआपवा ॥ साचआमुचा ॥ २५ ॥ तस्यभज
नयनहर्षकुरुहर्षः ॥ पितामहः ॥ सिंदनादेविमद्योच्चैः शरवदेओप्रनापवान ॥ २६ ॥ टी० याराजयाचियाबोला ॥ सेनापति
सतोपला ॥ भगतेणकळा ॥ सिंदनाद ॥ २७ ॥ नागाजनअसेअदुत ॥ दोहीसेल्याआन ॥ मतिथ्येनिनसमान ॥ उपजनअ
से ॥ २८ ॥ तयाचतुल्यगासैव ॥ वीरहनेचिनिथावे ॥ दिव्यशरगमीस्यदेव ॥ आस्फुरिला ॥ २९ ॥ तेहाहीनादीमिनले ॥ तेथ
अलोकावधिरीभूतजाहाले ॥ जेमेआकाशकापडिले ॥ तुदेनिया ॥ ३० ॥ यदुग्रहीतअवर ॥ उचवळतसागर ॥ श्रीमद्रुच
राचर ॥ कापतअसे ॥ ३१ ॥ नेणेमहायाषराजे ॥ दुसदुमितानीगिरिकंदरे ॥ नवदळासाजिरणनुरे ॥ आस्फुरिली ॥ ३२ ॥
श्री० ततः शरवाच्यभयपणवानकुरापुरवाः ॥ सहस्रवाप्यहन्त्यनसाशब्दस्तुमुलामभवत ॥ ३३ ॥ टी० उदडसेयवजन

पाठ, ओ. १०१ मज्ज, ओ. १०२ आरणी, किंवा अरणी वरगणी. ४

४

४

४

४

४

४

४

४

मयानेकरवारवति ॥ महाभक्त्युजये ॥ धाकडासी ॥ ३१ ॥ षरगे निशाणसुदुक्त ॥ शंखकाहाकाभोगळ ॥ आगिभयाकरुणको-
 ल्लाळ ॥ सुमदाचे ॥ ३२ ॥ आवशेषु जात्राहादिती ॥ विसणले हाकादेती ॥ जेथमहाभक्त भक्त जन्त ॥ आवरतीना ॥ ३३ ॥ तेथ
 पैदाची कवणमात ॥ कान्थाकरि पित्त ॥ जेणदत्त वलाकृतात ॥ आगेनेये ॥ ३४ ॥ एका उमयाचि मागळ ॥ नागाने दातु वस-
 त ॥ बिरदाचे दादुले ॥ हिवतीती ॥ ३५ ॥ रसा अद्भुत तरु वबाळ ॥ एकानिम्बस्याव्याकुळ ॥ देवह्मणतो प्रकृपकाळ ॥ वोडवला-
 आजि ॥ ३६ ॥ ततः श्वेतं हयं युक्तं महति स्य दत्तं स्थिता ॥ साधवः पाडवश्चैव दिव्यो शरैवा मत्तं भूतः ॥ १४ ॥ पाच जन्य
 त्वर्षिके शोदंषदत्तं धनं जयः ॥ पांडुदंभो महाशरैर्वीमर्कभो वृकोदरः ॥ १५ ॥ अनेत विजयराजा कृता पुत्रो युधिष्ठिरः ॥ नकु-
 लः सहदेवश्च स घोषमणिपुष्पका ॥ १६ ॥ द्रोण ए सोऽस्वर्गो मात ॥ देखे निती आकात ॥ तं वपाडवदत्ताभात ॥ वतले काथी
 ॥ १७ ॥ होकां निजसारविजयांच ॥ कीर्तिभादारमहातजांच ॥ जेथगरुडानिये जावळिजे ॥ कातले च्छाद्रा ॥ ३८ ॥ कोशरावाच्या
 मेरजेसा ॥ रहं वरुभिरवत संतसा ॥ तेजे कांदादंभियादिशा ॥ जयांचे नि ॥ ३९ ॥ जेथ अश्वबाहक आपणा ॥ वैकुंठानाराणाजा
 ण ॥ तपारथचे गुण ॥ कायदे ॥ ४० ॥ अजस्तमा वरीधानर ॥ तासुति संतशकर ॥ सारथी शांडूर ॥ अर्जुने सो ॥ ४१ ॥ देख्वा
 नवलतया प्रसूते ॥ अद्भुतं यस्य तन्माच ॥ जसार्थ्यपणयायेचे ॥ कुरीत असे ॥ ४२ ॥ याइ कथा विस्मियातला ॥ आपण पुढराहि
 ला ॥ तेणें पांचजन्य आस्फुरिला ॥ अचलिळाचि ॥ ४३ ॥ परितामहायोषधोर ॥ गर्जत असे गहर ॥ जेसा उदला लोपीदिन-
 कर ॥ नसआते ॥ ४४ ॥ तं संपुरंबवाळ भवते ॥ कोरवदळ गाजत होते ॥ ते हारपोनि नेणो कउते ॥ गेलेतें ये ॥ ४५ ॥ ते सुचि
 देखे येर ॥ निनादे अति गजरे ॥ देवदत्त धनुधरे ॥ आस्फुरिला ॥ ४६ ॥ नेदानी शब्द अचाट ॥ भिनल गकवट ॥ तेथ अस्त्रप्रदा-

पाठ, ओ, १८ कातले, ३९

हशतकृत ॥ होपाहत असे ॥ ४७ ॥ तं व श्रीसेन वि सौंला ॥ जैसा महाकाळ रव वला ॥ तेणें पांडु आस्फुरिला ॥ महाशरव ॥
 ॥ ४८ ॥ तौ महा मळय जलधर ॥ जैसा गडगि दैतगिदिर ॥ तंव अनंत विजय युधिष्ठिर ॥ आस्फुरित असे ॥ ४९ ॥ नकुळ स योष
 सह देवें मणि पुष्पक ॥ जेणे नंद अंतक ॥ राजबजला दौक ॥ ५० ॥ काश्यप्य परमेष्वासः शिवें दोचि महारथः ॥ धृष्टद्यु-
 म्ना विराट् अस्मान्य विच्चा पराजितः ॥ ५१ ॥ द्रुपद द्रापदया अस्वर्षशः युधिवीर्यते ॥ सोमदश्च महाबाहुः शरवाच दसुः ॥ ५२ ॥
 कुरुथ ॥ ५३ ॥ सद्यो धात राक्षणाः त्वदद्यान्व्यदारयत ॥ नमश्च युधिर्वैवतुमुल्यव्युनातयन् ॥ ५४ ॥ द्रो० तथ मंत्राजो
 होत अनक ॥ द्रुपद द्रोपदयादिक ॥ हाका गोपनिदरव ॥ महाबाहु ॥ ५५ ॥ तथ अर्जुनाच्चासन ॥ सात्यकि अपराजित ॥ धृष्टद्युम्न
 नृपनाथ ॥ शिखंडी हन ॥ ५६ ॥ विराट् दिनु पवर ॥ जैसैनिक मुरख वोर ॥ तिर्हानाना शरविनिरत ॥ आस्फुरिले ॥ ५७ ॥ तेंगें
 महाशोष निर्याते ॥ शोषक म अवचित ॥ राजबजो निभु माराते ॥ साडू पाहानो ॥ ५८ ॥ तथ तो न्ही लोक डळ मळिते ॥ मेरु सादा
 र आदोषित ॥ समुद्र जळ उमळत ॥ केंनां सवरो ॥ ५९ ॥ यथोक्त उलुथा पाहात ॥ आकाश भूमे आसू उत ॥ तथ सादा हात ॥
 नक्षत्रांचा ॥ ६० ॥ सृष्टि गेली रंगेली ॥ देवां मोठ्ठ वाद जाहाल ॥ ऐस एकु दाळी पिदलो ॥ सत्यलोकी ॥ ६१ ॥ दिहां चिद न-
 शो कला ॥ जैसा मध्य काळ मांडला ॥ तैसा हाहाकार जाहाला ॥ तिहां लोकी ॥ ६२ ॥ तें देर वानि आदि पुरुष विस्मृत ॥ ह्युग ह्य
 णे होय पाअत ॥ मग लोपिला भिदुत ॥ सप्तमतो ॥ ६३ ॥ ह्यण कुनि विष्णु सावरले ॥ एद्रुश युगांत होत वाडवल ॥ जैव की साहा-
 शंरव आस्फुरिले ॥ कृष्णादिकी ॥ ६४ ॥ तो योगनरी उपस हरला ॥ पशे पिंड साद होत राहिना ॥ तेणतळ आरवि धवें मिला ॥ को-
 रवांचा ॥ ६५ ॥ जैसा गज दना आंत ॥ भिहळी आ विदारित ॥ तैसा व्हदयानें भिदित ॥ कोरवांचिया ॥ ६६ ॥ तो गाजत जव आदक
 पाठ ॥ ओं ॥ ६७ ॥ यउयडिला ॥ ओं ॥ ५५ ॥ उडवित वरी ॥ ओं ॥ ५६ ॥ नें थहाहाकार गिला ॥ सत्यलोकी ॥ ओं ॥ ५७ ॥ जें ॥ ५८ ॥

नो ॥ तं वरुमोचि हिंयं लिनी ॥ एकमेकां ते ह्यणती ॥ सावधेरे सावध ॥ ६३ ॥ श्लो० अथ व्यक्थितान् श्रुत्वा यतः श्लांस्त्रिपि जः ॥ महत्तेशस्त्रसपाते धनु रद्यस्य पाडुवः ॥ ७० ॥ टी० ते यच्छ्रमो दीपु रते ॥ सहारथी वीर हते ॥ तिहो पुनरपि दक्षते ॥ आवरिते ॥ ६४ ॥ भगस्रिरे संपणे उदावन् ॥ दुणवदो नि उचल्ल ॥ तया दुर्दीप्ता मेते ॥ लो कत्रय ॥ ६५ ॥ तेथ बाणवरीय जुधरे ॥ वृषेताति निरंतर ॥ जेसे पट्टयात जलधर ॥ अनिवारका ॥ ६६ ॥ ते दे श्वि लिया अजुने ॥ संतोषय ऊनि मने ॥ भग-
 सभ्रमं हे वृषे मेने ॥ याली तसे ॥ ६७ ॥ तव संयामो सज्ज जाहोनि ॥ सकळ कोरव दे रिल्ल ॥ तं वली न्नाय नुष्य उचलिले ॥ पांडु-
 कुमरे ॥ ६८ ॥ श्लो० त्वर्षी वीरानदावाक्यं मिदमाह महोपत ॥ अजुन उवा ॥ मेन योरु भयोमं अरथस्यापरमेत्युत ॥ ७१ ॥ टी० तं वलीं अजुन ह्यणत संदवा ॥ आतो झट करे रथ पन्नावा ॥ न ऊनि मध्यं धालावा ॥ दोहो दळा ॥ ६९ ॥ श्लो० यावदे-
 तां निरी द्युहयो दुकाभानवस्थितान् ॥ कसया सह योद्धव्यमभ्यनया समुद्यमे ॥ ७२ ॥ योऽस्य मानानवेसि हं यत्ते वृष-
 मागताः ॥ धातुराष्ट्रस्य तु बुद्धयुश्चापियानिर्काधवः ॥ ७३ ॥ टी० जयमानो विक् ॥ हे सकळ वीर सैनिक ॥ न्याहाळी नि अशेष-
 दुसने ज ॥ ७० ॥ एगु आनि असती आधवे ॥ परी कवण सीं स्या जुझावे ॥ हे रणालांग पाहाव ॥ ह्याण ऊ भयो ॥ ७१ ॥ ब्रह्-
 न करुनि कोरव ॥ हे आतुर दुःख स्वभाव ॥ वादिवा वीण हाव ॥ बोधित जुझो ॥ ७२ ॥ जुझाची आवडी धरितो ॥ योसो-
 गामो धोरन कृती ॥ हे सांगान राया प्रती ॥ काग संजयो ह्यण ॥ ७३ ॥ श्लो० सजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा लब्धवीकेशोऽगु-
 ङ्गकेशेन भारत ॥ मेन योरु भयोमं अस्यापि त्स्वारथोत्तमं ॥ ७४ ॥ टी० आइका अजुन इतुं कुं बां लिन्ना ॥ तव श्रीह-
 षोरथ पे लिन्ना ॥ दोहो सैन्यामाजिकला ॥ उभा नेणे ॥ ७४ ॥ श्लो० भोऽस्मद्गोणमसुरवतः संवेषाच्च महोत्तिता ॥ उवाच-
 पाठ, ओ० ६५ एकवदने० ओ० ६७ दिवा० ओ० ७० अशोरव, अ

ध

ध

ध

ध

ध

पार्थयैतान्स्मवेतान्कुरुमिति ॥ २५ ॥ तत्रापथयिष्यताम्यार्यः पितृनयपितामहान् ॥ आचार्यान्बाबुलान् श्रातृन्पुत्रान्यौवान्
 सर्वस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्कुरुदंश्चैवमेतयोरुभयोरपि ॥ तान्समोऽस्यसकांतयः सवीन्बधून्वस्थितान् ॥ २७ ॥ दौ० जेथ
 भीष्मद्रोणादिकु ॥ जवळिक्रमिस्सुख ॥ दधिर्वापतिआणिक ॥ बहुतआहानी ॥ २८ ॥ तेथस्थिरकरुनियारय ॥ अजुन
 असेपाहत ॥ तोदळप्रारसमस्त ॥ संध्यमसी ॥ २९ ॥ मगदेवाहणेंदरवदेख ॥ हेगोत्रगुरुअशेख ॥ तवकृष्णासनी
 नावेक ॥ विस्मोजाहाला ॥ ३० ॥ तोआप्रणिता आपणक्षण ॥ रथकायीकवणजाणे ॥ हेमनीधिरलेणें ॥ परीकहां-
 आश्चर्यअसे ॥ ३१ ॥ ऐसापुढीलसेयेत ॥ तोमहजेजाणेतदयस्य ॥ परिउगाअसेनिवात ॥ तियेवेळीं ॥ ३२ ॥ तंवसिय
 पार्थसकळ ॥ पितृपितामहकुंवल ॥ गुरुबधूमातुळ ॥ देखताजाहाला ॥ ३३ ॥ इष्टमित्रआपुले ॥ कुमरजनदेखले
 हेसकळअसनीआल ॥ नयांमाजो ॥ ३४ ॥ कुरुज्जनसासरे ॥ आणीकहासरेवसादरे ॥ कुमरपौत्रधुधरे ॥ दोसिं
 लेतेथ ॥ ३५ ॥ जयाउपकारहातुकुले ॥ वींआपदेजेरसिले ॥ हेअसावडिलथाकुटे ॥ आदिकरुनी ॥ ३६ ॥ ऐसांगोत्र
 चिसेहोदळी ॥ उदितजालेअसकटी ॥ हेअजुनेतियेवेळीं ॥ अगलोकिले ॥ ३७ ॥ ह्मो० ह्मयापरयाविष्टोविषी
 दनिदमप्रवात ॥ दौ० तेथयनींगजळजजाहानी ॥ आणिआपेसाह्मपाउपजली ॥ तेणेंअपमानेंनियाली ॥ वीर
 वृत्ति ॥ ३८ ॥ जियाउत्तमकुर्दचियाहानी ॥ आणिगुणलावण्यरआथी ॥ तियाआणिबोतेनसाहती ॥ सतेजपणे ॥
 ॥ ३९ ॥ नवीयेआवडचिनिमरे ॥ कामुकनिजबुनितविसर ॥ मगणेंदुवाणअजुसरे ॥ भ्रमलजिंसा ॥ ४० ॥ कींतपो
 वेळकःही ॥ पातलियाचशबुद्धि ॥ मगविरक्ताभिद्धो ॥ आतवेना ॥ ४१ ॥ तेसांअजुनांतथजाहोले ॥ असतेपुरुषल
 - संपद, आमवगउस ॥ दोहांमनिस्ममरसे ॥ वर्षतोबाणजाकनसा ॥ आकाशपुंगु ॥ ओं ॥ ४२ ॥ अमो, ओं ॥ ४३ ॥ विरहता. क. ४

गेले ॥ जे अतः करण दौधले ॥ कारुणयासी ॥ ८९ ॥ देखामंत्रज्ञवरळआय ॥ तेंथकाजेंसासंचारहाय ॥ तेसातोथनुधर्महासो
 हे ॥ आकळ्या ॥ ९० ॥ ह्यणअनिअसनाधीरगेला ॥ त्दयादावआला ॥ जेसाचंदकळीधिवतलो ॥ सोमक्रांत ॥ ९१ ॥
 तयापरीपार्य ॥ अतिस्नेहसाहित ॥ मगसरबदअसेबोलत ॥ श्रीअच्युतसी ॥ ९२ ॥ अजुनउवाच ॥ हृष्टमस्व
 जनकृणायुतुंमुसुपस्थित ॥ २८ ॥ सीदंतिममगात्राणिसुरवंचपरिश्रयति ॥ वेपथुश्चशरीरेमरोमहर्षश्चजायते ॥
 ॥ २९ ॥ गौडवस्वसंतहस्तान्वक्वंपरितद्व्यते ॥ नचशक्रोऽप्यवस्थानुभमतीवन्ममनः ॥ ३० ॥ टी ० तोह्मणेअवधार
 दवा ॥ म्याप्राहिलाहांमळावा ॥ तबगात्रवगआयवा ॥ देखिलाएथ ॥ ९३ ॥ हेसयामोउदित ॥ जाहालअसतीकारसम
 स्त ॥ पणआपणपयाउचित ॥ केविंदोय ॥ ९४ ॥ एणनांमंचिनेणाकायी ॥ मजआपणपसर्वथानाही ॥ मनबुद्धावायी ॥
 स्योरनोहे ॥ ९५ ॥ देखंदहकापत ॥ तोउअसेकारंदोहेत ॥ विकळताउपजत ॥ गात्रासी ॥ ९६ ॥ सर्वंगाकाटाळाआला ॥
 अतिसंतोपउपजला ॥ तेंथदेवळहातगेला ॥ गौडीवाचा ॥ ९७ ॥ तेंनधरतचिनिहले ॥ परिनेणेचिहातोमिपडिलें ॥ ऐसें
 त्दयअसेव्यापिलें ॥ मोहयेणें ॥ ९८ ॥ जेवज्यापासोनिकरिण ॥ दुधेरअतिदुरूण ॥ तयाहुनअसाधारण ॥ हेंस्नेहनवल
 ॥ ९९ ॥ जेणेंसयामीहरजितला ॥ निवातकव्यात्वावाफेडिला ॥ तोअजुनमोहकवळिला ॥ क्षणामाजी ॥ १०० ॥ जेसाक्रम
 मरसेदीकोडें ॥ मलुतेंसंकाष्ठकोरडें ॥ परिकळिकमाजिसापडे ॥ कोवळिये ॥ ११ ॥ तेंथउत्तीर्णहोईलयाणें ॥ परितेक
 मळदळचिरुनेणें ॥ तेंसंकरिणकोवळपणें ॥ स्नेहदेखा ॥ १२ ॥ हेआदिपुरुषाचीमाया ॥ ज्दयाहाहीनयेविआया ॥ ह्य-
 णअभिमुलविलाऐकराया ॥ संजयाह्मण ॥ ३ ॥ अवधारमगतोअजुन ॥ देखानिमळस्वजन ॥ विसरलाअभिमा
 पात ॥ ओ ९१ करींशिपिला ॥ ओ ९२ उद्यत ॥ ओ ९३ उपनम्रा ॥ विकळ ॥ ओ ९४ पासाव ॥ ओ २०० कृतांतअंकणायातला ॥ ओ २०१ कमळकीडें

न ॥ संयासीच ॥ ४ ॥ कैसीनेणोसदयता ॥ उपननीनेयचिन्ता ॥ भगवण्णेकूषाआतां ॥ नसिजेएय ॥ ५ ॥ माझेअतिशयेंमनु-
व्याकुल ॥ होतसेवाचाबुरळ ॥ जेचथावेहसकळ ॥ येणेनावें ॥ ६ ॥ भ्लो ० निमित्तानिचपश्यामिपरीतांनिकेशव ॥ नचअ-
योपुपश्यामिहत्वास्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥ टी ० याकोरवाजरीवधावे ॥ तरीयुधिष्ठिरादिकांकानवधावे ॥ हेयरेयअएव ॥
गोत्रजआमुच ॥ ७ ॥ ह्यणानिजकाहजुझ ॥ प्रत्यथानयेमज ॥ एणकायफ्राज ॥ महापाप ॥ ८ ॥ देवाबहुतापरीपाहता
एयवोरपदहाईलजुझता ॥ वरकाहोनुकविता ॥ लाभार्थी ॥ ९ ॥ भ्लो ० नकांसेविजयंकूषानचराज्यस्तराविच
किन्मोराज्यनगाविदकिंमोगेजीवितनवा ॥ ३२ ॥ येथामथेकासितलोराज्यभोगाःसुखानिच ॥ तइमवास्थितायुद्धमणा
स्वस्काधनानिच ॥ ३३ ॥ टी ० तयाविजयवृत्तिकाहो ॥ मजसवयाकाजनाहो ॥ एथराज्यतरीकाथी ॥ हपाहनया
॥ १० ॥ यासकळांतवधावे ॥ मगजेभोगभोगावे ॥ तेजळोतआधवे ॥ यायह्मण ॥ ११ ॥ तेंपासुखवीणहोइल ॥ तंप्रल-
तेंसेसाहिजेतु ॥ वरिजीवितहीवेचिजेतु ॥ याचिन्तारी ॥ १२ ॥ परीयासीचातकीजे ॥ मगआपणराज्यसुखभोगि
जे ॥ हेस्वमोहोभनमाझे ॥ करूनशके ॥ १३ ॥ तरीआह्मीकाजन्नावे ॥ कवणानुगोर्जियावे ॥ जरीविडलांयानिता
वे ॥ विरुद्धमने ॥ १४ ॥ पुत्रातुंरुछीकुकु ॥ तयाचकायिहचिफळ ॥ जेनिर्दळिजेकवळ ॥ गोत्रआपुल ॥ १५ ॥ हेमनेनि
कविंधरिजे ॥ आपणवज्जाचियाहाइजे ॥ वरिधउतरीकीजे ॥ मनेइया ॥ १६ ॥ आह्मीजेजोडावे ॥ तेंसमस्तोइहोमि
गाव ॥ हेजीवितहीउपकारावे ॥ काजोइयाच ॥ १७ ॥ आह्मीदिंगतीचिभूपाळ ॥ विमाडनिसकळ ॥ मगसंतोषविजकु-
ळ ॥ आपुलेजे ॥ १८ ॥ तेचिहसमस्त ॥ परीकेंसकर्मविपरीत ॥ जजाहलअसतीउद्यने ॥ जुंझावया ॥ १९ ॥ अंतोर्नि-
पात ॥ ओ १२ तेंहो ॥ ओ १४ जेविडकया ॥ ओ १६ ऐसा ॥ ओ १७ उपगाजके ॥ ओ १८ ॥ ओ १९ ॥ ओ २० ॥ ओ २१ ॥ ओ २२ ॥ ओ २३ ॥ ओ २४ ॥ ओ २५ ॥ ओ २६ ॥ ओ २७ ॥ ओ २८ ॥ ओ २९ ॥ ओ ३० ॥

याकुमरे ॥ साजनिंयांभोदोरे ॥ शस्त्राद्योजिह्वारे ॥ आरोपुनी ॥ २१॥ एमियांनेकसेनिमारु ॥ कवणावरीशस्त्रयक्रु ॥ नि
 अहं दयाक्रु ॥ धातुकेवो ॥ २१॥ भ्रुं ० आचायोः पितरः पुत्रास्तथेवचपितामहाः ॥ मातुलः श्वशुरः पौत्राः श्यालाः
 सवधित्वतथा ॥ ३५॥ टी ० हेनणमिन्तुक्रवण ॥ परिपेलभासादण ॥ जयच्चउपकारअसाधारण ॥ आत्माबहुत
 ॥ २२॥ एयशालकसामरभातुळ ॥ आणिवधुकाहसुकळ ॥ पुत्रभानुकेवळ ॥ इष्टहीअसता ॥ २३॥ अवधारीअत-
 जविकेचे ॥ हेसकळहीसोयराभुमुत्त ॥ स्वणानिदावआथिगच ॥ बोलताचिभ्रुं ० एतान्हनुसिद्धाभिमनो
 एपधुंरदन ॥ आंग्रिलोक्यराज्यसहनाः किंनुमहीहृत ॥ ३५॥ टी ० हेवरीमनुतेकरितु ॥ आतांचिऐयमारितु ॥
 परीआपणमनधातु ॥ नचितावा ॥ २५॥ चेलाकेचिअनकळित ॥ जरीराज्यहाइलमाव ॥ तरोहेअनुचित ॥ ना
 चरमी ॥ २६॥ जरीआजिएथगसेकोजे ॥ तरोकवणाचाभनीडुरिज ॥ सोरागुरुवकुंविपहिजे ॥ नुसेकृष्णा ॥ २७॥
 भ्रुं ० निहंत्युधातराद्रान्नः कामीमिः स्याज्जनादंन ॥ पापमेवाअथेदस्मान्महलतानातताचिनः ॥ ३६॥ टी ०
 जरीवधकरागानजाचा ॥ तरोविसाताहोडुनिदोषाचा ॥ भजजोदिलासित्हातीन्चा ॥ दूरहोसी ॥ २८॥ कुळहः
 गीपातने ॥ तिथेआंगीजडतअशेष ॥ तरोवेळातुंक्रवणके ॥ दरवावासी ॥ ३०॥ जसाउद्यानामाजिअनळभस
 चरलादेरवोनिप्रबळ ॥ मरादणभरीकाकळ ॥ स्थिरनोहे ॥ ३०॥ कासकदेमसरावर ॥ अवलोकुनीचक्रार ॥ न
 सेवितअक्कर ॥ करुभिनिगे ॥ ३१॥ तंयापरीतुंदवा ॥ मजस्यकऊनयेभिमावा ॥ जरीपुण्याचावालावा ॥ नाशि
 जळ ॥ ३२॥ भ्रुं ० तस्मान्नाहंविषहंतुधातराद्रान्नसंवाधवान् ॥ स्वजनहिकयहंलासुखिनः स्यामसाधवः ॥
 यातः ओ २६ येथ, ओ २७ गोत्राचा, ओ २१ नियः ०

व्य

०

०

०

०

०

०

०

दी० ह्यणोनिमीहंनकरीं॥ इयं संत्राभीशस्त्रनधरीं॥ हेँकिडाळबहुर्तांपरी॥ दिसतसे ॥ ३३॥ तुजसींअंतरायहोइल
 मगसांगेआमुचेकायुरेल॥ तेणेंदुःखेह्येकुदेल॥ तुजवीणहृष्ट्या ॥ ३४॥ ह्यणऊनिकोरवहवधिजती॥ मगआ
 ह्यीभोगभोगिजनी॥ हेअसोमातअघडती॥ अर्जुनह्यण ॥ ३५॥ श्लो० यद्यप्येतेनप्रशंभिलोभोपहृतचेतसः
 कुलक्षयहतदोषमित्रद्वेहचपातक ॥ ३६॥ कथनशयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितु ॥ कुलक्षयकृतदोषप्र
 शयर्हिर्जनादन ॥ ३७॥ टी० हेअभिमानमदंभूलेल॥ जहापांसंशयभाआले॥ तद्हीआह्योहितआपुले ॥ जाणा
 वेलीगे ॥ ३८॥ हेऐंसेवसंकरावे ॥ जेआपुलेआपणमारावे ॥ जाणतजाणतांचिसेवावे ॥ काळकूट ॥ ३९॥ हांजी
 मागचालता ॥ पुढांशिहजाहालाअवचिता ॥ तोतवचुकविता ॥ लाभआशि ॥ ४०॥ असतामकाशसाडावा॥ म
 गअथदूपाआआवा ॥ तरीतेथकवणदेवा ॥ नाभसागे ॥ ४१॥ कांसमोरअग्निंदखोनी ॥ जरीज्वचिजेवोसं
 दोनी ॥ तरीक्षणीएकाकवकुनी ॥ जाळुसक ॥ ४२॥ तेसेदोषहंमूर्त ॥ आगीवाजेअसतीपाहात ॥ हेजाणता-
 होकेविएथ ॥ मवतीवे ॥ ४३॥ ऐंसेपाथितयेअवसरी ॥ ह्यणदेवाअवधारी ॥ याकूलमषाचीथोरी ॥ सांगनतुज
 ॥ ४४॥ श्लो० कुलक्षयमणशंभिनिकुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मनष्टकुलकुलसमधर्मोभिप्रवत्युत ॥ ४५॥ टी० अ
 संकाषेकाष्ठमथिज ॥ तथवर्त्तिगकउपजे ॥ तेणेंकाष्ठजातजाळिजे ॥ मज्जलेनी ॥ ४६॥ तेसागेत्रीनिपरस्प-
 रे ॥ जरीवधयइमल्लर ॥ तरीतणमहादोषधोर ॥ कुळचिनाशे ॥ ४७॥ ह्यणऊनिरणणप ॥ वधजयमलोपे ॥
 मगअथमंचिभारोप ॥ कुळामाजी ॥ ४८॥ श्लो० अथमोभिप्रवात्सृष्टाप्रदुष्यति कुलस्थिरः ॥ ह्यापुद्गुष्टा-

पाठ, ओ० ३८ मार्गी ८

८

८

सुषार्षोय जायते वर्णसंकरः ॥ ४५ ॥ टी० एयसासामारविचारगेवं ॥ कवणेकाय आचरावे ॥ आणविधिनिषेध आचरे ॥
 पारुषति ॥ ४६ ॥ असतादीपतवडिज ॥ मगअधकारिराहादिजे ॥ तरारुजृचिका अरु कृच्छिजे ॥ जयापरी ॥ ४७ ॥ त
 साकुळी कुळसयहाय ॥ नयवच्छेना आलथमजाय ॥ मग आनकाही आह ॥ पापावाचुर्ना ॥ ४८ ॥ जयमनियमस्तुक्ती
 नेयइद्रियसेराहातर्त ॥ ह्यणान्नियमिचारयदती ॥ कुळारुखासी ॥ ४९ ॥ उत्तमअधमीसंचरती ॥ ऐसेषाविवण
 मिसळती ॥ तेथसमृद्धउगदती ॥ जातिथसं ॥ ५० ॥ जैसीचाहदाचियवळा ॥ पाविजसंराका उळा ॥ तैसीसहा पापकु
 ली ॥ संचरती ॥ ५१ ॥ भ्रमो संवरांनरकाय कुलमाना कुलस्यच ॥ पुनतिपितरा लोपालुमपिंदादक्रियाः ॥ ४२ ॥ हो
 मगकुळानया अशेषा ॥ आणिकुळयातका ॥ येरथरानरको ॥ जाण आथि ॥ ५२ ॥ देरयेवशाहिसमस्त ॥ यापरिहो
 यपतिता ॥ मगवावी दुतीस्वर्गस्य ॥ पूवंपुरुष ॥ ५३ ॥ जेथनित्यादि क्रयानाक ॥ आणनिमित्तिक्रिया पारुरव ॥
 तेथकवणानिळादेक ॥ कवण भर्पा ॥ ५४ ॥ तरापीतरकायवरिती ॥ कसेनिस्वर्गवसती ॥ ह्यणानिनतहीयेती ॥ कु
 लापासी ॥ ५५ ॥ जैसानरषार्थव्याळलगे ॥ तोशिरवातव्यापेवेगे ॥ तेव आब्रह्मकुळ आवेध ॥ आह्लाविजे ॥ ५६ ॥
 भ्रमो दोषैरते ॥ कुलमानावर्गसंकरकारक ॥ उत्साद्यतजातिधर्मा ॥ कुलधर्माश्चिन्ताः ॥ ४३ ॥ उत्सन्नकुलधर्माणा
 मनुष्याणां जनादन ॥ नरकेनयंतवासो भवतीत्यनुशब्दुम ॥ ४४ ॥ अहोवतमहत्पापकर्तुं व्यवसिता वयं ॥ यद्वा ज्यसु
 र्वलोभेन हंतुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ टी० देवा अवधार आणीक एक ॥ एथ घउमहापातक ॥ जसगदापहान्त्रिक
 कषापडे ॥ ५७ ॥ जैसाधर आमुला ॥ या निवेशार्थ मन्नागला ॥ तो आणिका होमज्जळिला ॥ जाळुनियाली ॥ ५८ ॥
 तेमियातया कुळसंगती ॥ जेजलाक भवतती ॥ तहीबाधा पावते ॥ निमित्तयेण ॥ ५९ ॥ तैसनानादोपसकळा ॥ अजुनह्यण-

पाठ, ओ ४० अडांकेजे ओ ४१ विचरती ओ ५२ अशेषा ओ ५३ कय ओ ५४ यत ओ ५५ वायु थ

तं कुळ ॥ मगमहायोगे कुळ ॥ निरयभोगो ॥ ६० ॥ यडिभियातियेलायी ॥ मगकल्यातीहेउकुळनाही ॥ येसणेपतनकुलक्षयी
 अर्जुनहाणे ॥ ६१ ॥ देवाहेविधिकांनोकेज ॥ परिअडुनिवरीआसपुजे ॥ त्ददयवज्जिहकायकीजे ॥ अवथारीपा ॥ ६२ ॥
 अपसिजेराज्यसुख ॥ जयाभुगतीतवस्तुणिक ॥ ऐसेजाणतांहीदोष ॥ अहंरुना ॥ ६३ ॥ जेहंविडिअसकळ आपुले ॥ वथावया
 दितीसुदल ॥ सागणकायथकुल ॥ घडलेआह्या ॥ ६४ ॥ भोगे ॥ यदिसासुमनोकारमशस्त्रशस्त्रपाणय ॥ धातराष्ट्राणेहस्तु
 स्तन्यदेशमतरभवेत ॥ ६५ ॥ दी० आनांयावरीजेज्यावे ॥ नयाणस्तुनिहवरवे ॥ जेशस्त्रसांडनिसाहावे ॥ बाणयांचे ॥ ६५ ॥ त
 यावरीहोयजिउक ॥ तेभरगाहीदरिनिक् ॥ परीयेणेकल्मसे ॥ चाउनाही ॥ ६६ ॥ ऐसेदेखोनिसकळ ॥ अर्जुनेआपुलंकुळ ॥ मग
 त्यागशज्यनकुळ ॥ निरयभोग ॥ ६७ ॥ भोगे ॥ संजयउवा ॥ एवसुक्काजुनःसंख्येशापस्यउपाविशत ॥ विरुज्यसशरचापशो
 कसीविद्यमानसः ॥ ६८ ॥ इतिश्रीमद्ब्र० यो० श्रीकृ० जू० अर्जुनविषादयोगोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ दी० ऐसेतियेअ
 वमरी ॥ अर्जुनबाभिलागमरी ॥ संजयह्मणअवधारी ॥ धतराष्ट्राते ॥ ६८ ॥ मगअन्यतउद्देगला ॥ नथरतगहिबरआला ॥ तेथ
 उडीयानलखांना ॥ रथानिया ॥ ६९ ॥ जेंसाराजकूरपरदच्युत ॥ सर्वथाहोयउपहन ॥ कांरिविराहुयुस्त ॥ कळोहीन ॥ ७० ॥ नान
 रीमहाभिद्विसंभ्रमं ॥ जितिलांनापमभ्रमं ॥ मगआकळनिकायं ॥ दोनकीजे ॥ ७१ ॥ तेसातोधनुधर ॥ अत्यंतदुःखजर्जर ॥ दि
 सेजथरहवर ॥ ल्याजलातेणो ॥ ७२ ॥ मगयनुयबाणसांदिने ॥ नथरतअमुपातआले ॥ ऐसेदेकरायावर्तले ॥ संजयह्मण ७३
 आनांयावरीतोवकुंडनाथ ॥ देखानिसंखेदपाथ ॥ कवणेपरिपरमार्थ ॥ निरूपिल ॥ ७४ ॥ तसविस्तसपुदाभीकया ॥ अतिसंकोतु
 करेकता ॥ ज्ञानेदेहह्मणेभ्रानां ॥ निवृत्तिदास ॥ ७५ ॥ ॥ इतिश्रीभारवर्गदीपिकायाज्ञानदेवविरचिनायांप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 पाठ-ॐ ६१ उगद ॐ ६२ योगुले ॐ ६३ परिस ओ ६४ मसा ओ ७३ मेथवर्तले ७

अंगणशरितमः ॥ संजय उवाच ॥ ॥ नंतथा ह्यप्याविष्टमश्रुपूणीकुलेक्षणं विषादतमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १॥
 स्त्रीं सगंसंजयो ह्यणशरितं ॥ आदंकेतोपायेनेयं ॥ शोकाकुलरुदनात् ॥ कुरीत असि ॥ १॥ तं कुलदेवो निसमस्तं ॥ स्नेह
 उपलब्धं अदुतं ॥ तेणेदं देवसेचित्तं ॥ वषणेपरी ॥ २॥ जसंलवणजलं अलवले ॥ नातरं अश्रुवांतं हले ॥ तं संधारं परि-
 विरसन्तं ॥ तदयतयात् ॥ ३॥ ह्यणानि ह्यप्याविष्टमश्रुपूणीकुलेक्षणं ॥ दिसतं स अतिकोपादला ॥ जेसा कदं मोरुपला ॥ राजहस
 तया परतोपादकुमरं ॥ महासोह अतिजर्जरं ॥ देवो निश्ची शोडधरं ॥ कायबालं ॥ ५॥ स्नेहश्रीं सगवानुवाच ॥ ॥ कुत
 स्वाकृष्टमालिभिर्देविषगसंरुपस्यत् ॥ अनार्यजुष्टमस्वरयमर्कान्तं करमजुनं ॥ २॥ दं ह्यणे अजुना आदिपाहं ॥ हं उचि
 तं कायदेवयो ॥ त्वं कवणहं कार्यं ॥ करंत आहांसी ॥ ६॥ तुजसांगं कायद्याले ॥ कवणतुणं आले ॥ करिताकायवेलं ॥ रेव
 रकामं दसा ॥ ३॥ तं अजुचितं चित्तं नंदिसं ॥ धोरकहं नंदिसं ॥ तुजनिनामं अपयशं ॥ दिशालं यिजे ॥ ८॥ त्वं शरवर्त्त
 चोहावो ॥ द्वाधयाभां जरावो ॥ तुजियां अवेपणाच्च आवो ॥ तं होलाको ॥ ९॥ तुज्यां यामो हरं जिकला ॥ निवातकवचा
 चानारुपे इला ॥ पवां तां पुवांकला ॥ गंधवंसी ॥ १०॥ पाहातां तुजनिपाडे ॥ दिसचला ॥ क्वाहां थोवडे ॥ ऐसें पुरुषत्वचोत्रव
 डे ॥ पायां तुजं ॥ ११॥ नाचं हं आजियेयं ॥ सां नयिं वीरवृत्तीं ॥ अथे सुवरुदनात् ॥ करंत आहांसी ॥ १२॥ वित्तां तं
 अजुनं ॥ काकारण्यं कांजं सीदितुं ॥ सांगणं अधिकोरमानु ॥ यामिला आर्थी ॥ १३॥ नातरं पवंमं यामिबिहो ॥ को अम-
 तां सिमरण आहं ॥ पाहं यां दुधनचिं छलानि जाये ॥ पावकांते ॥ १४॥ कांलवणे चिजळो वीर ॥ ससंगं काळकूटं मरे ॥ साग-
 पायहाफणीदुरे ॥ निचिं जवाथी ॥ १५॥ सिंहासिद्धाबे काल्ला ॥ ऐसा अथाड आशिक जाहाला ॥ परेतां तां साचं कला

पाठ - ओ. १. उपनना ओ. २. जंरणी. ओ. ३. दुवा. ७.

आजिरेय ॥ १६ ॥ ह्यणोभिअझुर्नाअजुन्ना ॥ इणोचनदेसीयाहीना ॥ वेगंधिरकरुत्तनियामना ॥ सावधहोई ॥ १७ ॥ सोडो
 हेसुंरंधपण ॥ उठोपेधनुस्यवाण ॥ समामोहकथण ॥ कारुण्यतुझे ॥ १८ ॥ हागात्तेजाणता ॥ तरानिवाचरिस्सोकोआतो ॥
 सागजुसावेखेसदयता ॥ उच्चित्तकार्या ॥ १९ ॥ हेअसतिरेकर्तिसीनाश ॥ आणिपारिद्रकासिअपममश ॥ ह्यणजगनि
 वास ॥ अजुनते ॥ २० ॥ म्हाखेल्यसास्मगमः पार्येननल्युपपद्यते ॥ सुइत्तदयदेवव्यत्यत्कानिभुपरतप ॥ २१ ॥ हो
 ह्यणोभिशीकनकरी ॥ तपुरनाधीरधरी ॥ हथोच्च्यताअहरी ॥ पाइकुमरा ॥ २२ ॥ तुजनकहचिन्त ॥ येणनामलजोड
 लवहुत ॥ त्अझुनिवरीहत ॥ विचारणा ॥ २३ ॥ येणसमासाचोनिअवसर ॥ एथहपलुपणनुपकर ॥ हेआनाचिका
 यसायेरे ॥ जाहालितुज ॥ २४ ॥ त्आर्थोचिकायेणसी ॥ क्कहोगोत्रजनोळरवसी ॥ वायोचिकायकरिस्सी ॥ अतिशय-
 आतो ॥ २५ ॥ आजिचहजुझ ॥ कायजन्मानवलितुज ॥ हेपरस्परेतुह्याव्याज ॥ सदाचिआर्थो ॥ २६ ॥ तराआताकाय
 जाहाल ॥ कायस्सहउयनल ॥ हेनेणजिगरीकुइकेले ॥ अजुनातुगा ॥ २७ ॥ माहधरिलियाऐसेहोइल ॥ जअसतीम-
 निहाजाइल ॥ आणिपरलोक्काअंतरेल ॥ गेहकसी ॥ २८ ॥ ह्दयाचोहिलपण ॥ एथनिकयासिनहेकारणा ॥ हेस-
 यासीयतनजाणा ॥ सत्रियासी ॥ २९ ॥ गेसनिताहपवत ॥ नामापरगअसिशकवित ॥ हेएकोनिपाइसुते ॥ कायबाले ॥
 म्हा ॥ ३० ॥ अजुनउवले ॥ वयसीपमहंसरथेदोणचमइसुदन ॥ इपमिः प्रनियोल्सीमपूजाहोवोरसुदन ॥ ३१ ॥ टी
 देवाहयंतुलवरी ॥ वालोयनलगभगधारी ॥ आधीन्तचिचिचारी ॥ समामहा ॥ ३२ ॥ हेजुझनकुंममाद ॥ एथप्रवर्तिलिया-
 दिसतसेबाध ॥ हाउधउंजरासद ॥ वाडवलाआत्तो ॥ ३३ ॥ दग्गमातागितरेअचिजती ॥ सवम्बताषपाविजती ॥ नुयया
 पाव ॥ ओ २४ अतिसोआना विद्या अतिशाकहा ॥ ओ २५ हागा ॥ ओ २६

वीकैवीविधिजनी ॥ आपुनियहानी ॥ ३२ ॥ देवासमष्टदन्मस्कारिजे ॥ कायेडुतर्गपूजिजे ॥ हवाचूनिक्वर्वानिदजे ॥ स्वयंवा-
 न्म ॥ ३३ ॥ तैसगात्रगुरुआमुच ॥ हइजनियआह्यानमाच ॥ मजबहूनमीपदोणाच ॥ वर्तनमे ॥ ३४ ॥ जयालगामेनोवरु-
 आह्नीस्वर्नानशकायसु ॥ तयामन्यसक्वर्वाकरु ॥ यातेदेवा ॥ ३५ ॥ वरिजळोहजयाने ॥ गथआग्रवैयासिहोविकायजा-
 हान ॥ जयाचावधाअभ्यामिले ॥ भिंगविजेआह्नी ॥ ३६ ॥ सोपार्थद्रोणाचाकेला ॥ येणंपेनुवेदमजदिधला ॥ तेणउपका-
 रकायआभारला ॥ वर्धतयाते ॥ ३७ ॥ जेथोचयाहृपानाहजवर ॥ तयोचिमनव्यभिचार ॥ तरोकायभीमस्मासर ॥
 अजुमद्यणे ॥ ३८ ॥ भ्मो० गुरुनहत्याहिमहानुभावान्मयोभाक्तमेस्थमपीहलोक्त ॥ हत्वार्यक्तामास्तुगुरुनिहवभुजो-
 यभागानुरथिरमादग्धान ॥ ३९ ॥ टी० देवासमुद्रगभारआर्द्रिजे ॥ वरितोहीआहाचदेखजे ॥ परासाभमननेणिजे
 द्राणाचिये ॥ ४० ॥ हेअपारजेगन ॥ वरतयाहीहाइलमान ॥ परीअगाथभलगाहन ॥ न्ददययाच ॥ ४१ ॥ कंरिअसुनहावि-
 दे ॥ कोकाचवशजहोफुटे ॥ परामनोपमनोदे ॥ वकरविलाही ॥ ४२ ॥ स्महालगाम्याय ॥ ह्यणिपेनंकारहाये ॥ पारह-
 पातेसूनआहे ॥ द्रोणीदये ॥ ४३ ॥ हाकारण्याचींआदि ॥ सकळगुणाचाभिधि ॥ विद्यासंधुर्नरवधी ॥ अर्जुनद्यणे ॥ ४४
 हायेणयानेमहत ॥ वरिआह्यालागीहृगावते ॥ आतासागणायथात ॥ चित्तयेदल ॥ ४५ ॥ गंमहेरणाविधाव ॥ मगआ-
 पणभूरेराज्यभागावे ॥ नेमनानयआघवे ॥ जोगिनसी ॥ ४६ ॥ हयेणमानेदुभर ॥ जयाहोहूनिभोगसधर ॥ तअसतुराय-
 वर ॥ भिस्वामागनामला ॥ ४७ ॥ नातरदेशत्यागेजाइजे ॥ कागिरिकंदरसविजे ॥ परीशस्त्रआतानधरिजे ॥ इयावरी ॥ ४८
 दवानवनिशानशरी ॥ वावरोनियाचाजिह्मारी ॥ भागगिंवसांवरुधिर्पा ॥ बुडालेजे ॥ ४९ ॥ नकाहुनिकायकीजर्वा ॥

पाठ. ओं. ४५ राज्यसुख. ओं. ४७ हातें. ४७

लिनं कर्त्तुं विजती ॥ मजनये हे उपनि ॥ याचिन्मणी ॥ ४९ ॥ ऐसे अर्जुन ते अवसर ॥ ह्यणे श्री कृष्णा अवधारी ॥ परिते सना
 ये विचुरारी ॥ आइकोनिया ॥ ५० ॥ हे जाणोनि पार्थ स्याला ॥ मग पुनरपि बोलोला गला ॥ ह्यणे देवो काचि नया बोला ॥ देतीचि
 ना ॥ ५१ ॥ म्यो नूचेत इन्द्रः कतरन्तो रगो य हा जये मया दिवानो जयेतु ॥ याने वहत्वानि जर्जा विषामस्ते वा स्थिताः प्रसु
 र्वे धानरात्राः ॥ ६॥ टी० य नूर्वीसा द्याचिन्ती जे होतें ॥ ते मी विवरून निबोली नोरये ॥ परिने कं कायया परेतें ॥ तें तु ह्यि जाणो
 ॥ ५२ ॥ ये विरजया सिरे किजे ॥ आणि बोलीं चि पाण सांडिजे ॥ नेरय संया मव्या जे ॥ उभे आहाती ॥ ५३ ॥ आता रस या ते व
 धावे ॥ वी अक्क रू निर्या नयावे ॥ या दोहा माजि बरे ॥ ते नेणो आह्यो ॥ ५४ ॥ म्यो का पण्य दोष पहत स्वभावः दृष्टा मिलाय
 मे संभूद चेनाः ॥ ये छेयः स्यान्निश्चि न ब्रू हत न्ये शिष्य स्ते हं शादि मिला प्रपन्न ॥ ७॥ टी० आह्या काय उचित ॥ ते पाहाता न स्तु
 रेय ॥ जे माहये पंचिन् ॥ व्याकुळ माझे ॥ ५५ ॥ नि भिरावरू जे सें ॥ दृष्टी चें ते जम्यो ॥ मग पासीं त्वि अस्तो न दिसे ॥ व-
 स्तु जात ॥ ५६ ॥ देवा ते संभज जाहोले ॥ जे मन हे त्या तिघा मले ॥ आता काय हत आयुले ॥ ते हं निणें ॥ ५७ ॥ तर श्री कृष्णा
 तें वांजोणावें ॥ निकतें आह्या सांगावें ॥ जे सरवास वस्त्र आयवे ॥ आह्या सितें ॥ ५८ ॥ तें गुरु वंधु पिता ॥ तें आयु नी इष्ट देवता
 तें विसदोर सिता ॥ आपदा आयुते ॥ ५९ ॥ जें सा शिष्या नि गुरू ॥ सर्व थाने ने अक्क रू ॥ वी सरितें ते सागरू ॥ त्यजि केवो ॥ ६० ॥
 मानरी अपत्या न भाये ॥ साडू नि जरा जाये ॥ नरी तें केसे निजिय ॥ ऐकं कृष्णा ॥ ६१ ॥ ते सासवी पर आह्यासी ॥ देवा ते चिरक आ-
 हासी ॥ आणि वांनिले जरी न मनीसो ॥ मारील माझे ॥ ६२ ॥ तर उचिन काय आह्या ॥ जे व्यभिचरे नाय मी ॥ तें झडकरी पुरुषोत्त
 मा ॥ सरग आना ॥ ६३ ॥ म्या न हि मप्रय भि ममापनु द्या दच्छा कसु च्छोषा भि दिवाणा ॥ आवाप्य भूमाव मपत्न मृदू राज्यसुरा
 पाठ श्री ५२ विष्णु कनि ॥ त उपदेशि जो जो ॥ ओ ५० नेणो ॥ ७

णामपिचाधिपत्य ॥ ८ ॥ टी० हे सकळ कृच्छरेखांनी ॥ जोगोक्रउपनम्यसेमनी ॥ नोतुझियावाखावांचुनी ॥ नजायआणिक् ६५
 एथमुखीतल आपहाईल ॥ हेमहदपदहापाविजेल ॥ परिमोहहानिफिरेल ॥ मानसीचा ॥ ६५ ॥ जेसीसर्वथाबोजेआहाळ
 ली ॥ तींमुसंधाज हींपोरली ॥ तरेचिविरुदतीसिचली ॥ आवडुनसी ॥ ६६ ॥ नातरीआयुष्यपुलेंआह ॥ तरेओषधका
 हींनोहे ॥ एथगंधविउपगाजाये ॥ परभाभुते ॥ ६७ ॥ नमराज्यभोगसमूह ॥ उज्जीवननोहइथबुद्धी ॥ एथजि कळांक
 पानिधी ॥ कारुण्यतुझे ॥ ६८ ॥ तंभेअर्जुननेथबोर्लला ॥ नवदणएकध्यानीसोडिला ॥ मगपुनरपिद्वीपला ॥ ऊर्मीने
 णी ॥ ६९ ॥ क्रामजपाहाताऊर्मीनोह ॥ हेअनारिसंगमतआह ॥ नायासिलासहामोह ॥ काळसर्प ॥ ७० ॥ सवसृष्टदय
 कल्हारी ॥ तेथकारुण्यवेळचाप्ररो ॥ लागलाभूणांनिनहरी ॥ सोजचिना ॥ ७१ ॥ हेजाणोनिजेसीयोदी ॥ जोदृष्टिसव
 चिविषफुडी ॥ तोयावयाचीहरीगारुडी ॥ पातलाकी ॥ ७२ ॥ तेसिआपहुकूसराव्याकुक्या ॥ मिरवतसेथीकृष्णजवळा ॥
 तोरुपावरीअवलीळा ॥ रक्षिलआता ॥ ७३ ॥ क्षणाभिनापार्थ ॥ मोहफणिग्रस्त ॥ म्याक्षणातलाहाहेतु ॥ जाणोनिया ॥
 ७४ ॥ मगदेखांतथफाल्गवु ॥ घेतलाअसेस्मिंतिकवकुनु ॥ जेसाधुनपटकींमानु ॥ आछादिजे ॥ ७५ ॥ तयापरीतोयुसुध
 र ॥ जालासेदुःखजजर ॥ जेसायीषकाळींगिरिवर ॥ वणवलाका ॥ ७६ ॥ क्षणानिमज्जेसुनीळ ॥ कृपासुतसजक ॥
 तेवोळलाथीगोपाळ ॥ महाभय ॥ ७७ ॥ तेथसुदर्शनाचीद्युती ॥ तेचिविद्युत्ताझळकती ॥ गर्भरवाचनेआयती ॥ ग
 जेनेचि ॥ ७८ ॥ आतातोउदारेकसावेपेनु ॥ तणेअर्जुनाचळनिवेळ ॥ मगनवीविरुदफुटेल ॥ उन्मेषाची ॥ ७९ ॥ नेक
 याआइका ॥ मनाचियाआराणुका ॥ जानदेवक्षणेदेखा ॥ निहांतदास ॥ ८० ॥ स्तो० संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वा

पाठ. ओं. ६४ नवके. ओं. ६७ ओषधी. ओं. ६८ जीवबुद्धि. ओं. ७१ सहज. ७२

धीकेशगुडाकेशः परंतप ॥ नयान्मृदुतिगोविंदमुक्तावणीविभूवह ॥ ८ ॥ टी० गेसंसजग्रअसेसागत ॥ हाणेरुथानोप
 र्थ ॥ पुनरपिशाकाकुलित ॥ कायबोले ॥ ८१ ॥ आदकसणदवोलेअ ॥ हाणोते ॥ आतानाळवोवेतुह्यस्योते ॥ मोसवथान्जु
 जेरुथ ॥ मरवसेनी ॥ ८२ ॥ गेसंयकहेळाधान्जु ॥ मगमोनधरुनिवला ॥ नैथअीझणाविस्मयापावला ॥ देरवोनिताया
 ते ॥ ८३ ॥ म्हे० तमवाचल्लोकेशः महसान्निवमारत ॥ सनयोरुसयामेअ ॥ विषादंतमिदवचः ॥ ८४ ॥ टी० मगआपुलाचि
 नीह्मण ॥ एथहेकागिआदरिंलुयणो ॥ अजुनसवथाकाहानेणो ॥ कायकोजे ॥ ८५ ॥ हाउमजेआताकवणपरी ॥ केसेनि
 धीरस्वीकारी ॥ जेसायाहातेपंचाक्षरी ॥ अनुमानीक ॥ ८६ ॥ नानरीअस्यदेखोनिव्याधि ॥ असृतासमीदव्यओवधि
 वेद्यसूचीनरवधि ॥ निदानीचि ॥ ८७ ॥ तैसेविवरतअसेअीअनेत ॥ तयादोहोसैन्याआंत ॥ जयापरीपर्थ ॥ फातिमांडो
 ॥ ८८ ॥ तेकारणमनेधरिंले ॥ मगसरोथबोलेओदरिंले ॥ जेसंमानेचाकोयाकूले ॥ स्महआथी ॥ ८९ ॥ कीओपथचियाक
 उवटपणी ॥ जेसीअसृताचीपुरवणी ॥ तेआहाचनदिसपरिगुणी ॥ मुकुंदहोय ॥ ९० ॥ तंसीविरवीरपाहाताउदासे ॥ आ
 तनरीअतिस्मरसं ॥ निगंवाक्यन्दरीनेशो ॥ बोलेओदरिंलो ॥ ९१ ॥ म्हे० कधीमगवानुवाच ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्व
 मजावादाअभाषसे ॥ गतास्तेनगतासंचनानुशोचंतिपंडिताः ॥ ९२ ॥ टी० मगअजुनातेह्मणितले ॥ आसीआजिहंन
 वलदरिंले ॥ जतुवाएथआदरिंले ॥ माझारीची ॥ ९३ ॥ तुजाणततरीह्मणविमो ॥ पशनेणिवेनसोडिसी ॥ आपिशि
 कतुह्मणातुरीबोलसी ॥ बूहुसालनीता ॥ ९४ ॥ जात्यथालागेपिसे ॥ मगतेसराधावेजसे ॥ तुझेशाहाणपणतेसे ॥ दिंसत
 से ॥ ९५ ॥ ह्मआपणातनरीनणसी ॥ परीयोकारवनेशोचुपाहासी ॥ हावहुविस्मयआत्यासी ॥ युदतपुदती ॥ ९६ ॥ तनरीसाग

पाठ, ओ. ८३ पातला. ओ. ८६ ओवधि, ओ. ९४ आपणपे, पावसी ४

पां अर्जुना ॥ तुजपास्त्रनिस्थानियात्रिभुवना ॥ हे अनादिविष्मत्तना ॥ ननुदं कुर्या ॥ ९५ ॥ एषमभयैक आशी ॥ तथापास्त्र
 निभूतहोती ॥ नरीहवायचिकारबालती ॥ जगामाजी ॥ ९६ ॥ हाकासायनरुसेजाहले ॥ जेहकुन्मभूतुवास्त्रजले ॥ आ-
 णिनाशपेवनाशिंद ॥ तुझेनिकार्या ॥ ९७ ॥ तुझमलेपणअहकृती ॥ यासिधातनकरसंचित्ता ॥ तरोसागकायिहेहोती
 चिरतन ॥ ९८ ॥ कांतारवधिना ॥ आपिसकळलाकहाभरता ॥ ऐसिभ्रानिद्वयंचित्ता ॥ येवोदेसी ॥ ९९ ॥ अनादिसिद्ध
 हंआर्षे ॥ होतजातस्वभाव ॥ नरीतुवांकाशोच्चावे ॥ सांगेभज ॥ १०० ॥ परीसूरुवपणेनासी ॥ नचितावेतेंचिनिसी ॥ आ-
 णितुंचिनीतिसागसी ॥ आह्वापति ॥ १०१ ॥ देखेविवर्कजेहोती ॥ तेदोहीतेहीनशोचिती ॥ हेहोचजायेहंभाती ॥ द्यणऊ
 निया ॥ १०२ ॥ भ्रुं० नलवाहंजालुनासनत्वमभजनधिपाः ॥ नचैवमभिविध्यामः सर्ववयमतः पर ॥ १०३ ॥ टी० अजुनासा-
 गेनआदक ॥ एषआह्वातुहोदेषव ॥ आणिहेभूपतिअशेषव ॥ आदिकरूनी ॥ १०४ ॥ नित्यताऐसेचिअसोर्न ॥ नातरनिश्चि-
 तसयाजाउनी ॥ हेभ्रानिवगळीकरूनी ॥ दोन्हीनाही ॥ १०५ ॥ हेउपजआणिनाशे ॥ तेभायावशोदसे ॥ येहवीतत्वनावस्तु-
 जेअसे ॥ तेअविनाशवि ॥ १०६ ॥ जेसपवनेनायहालविनं ॥ आणितरगाकारजाहले ॥ तरीकवणकेजन्मले ॥ ह्यणोयेर्य ॥ १०७
 तेचिवायुंस्फुरणवेलं ॥ आणिरुदकसहजसपादजाहले ॥ तरोआनाकारभिमले ॥ विचारोपा ॥ १०८ ॥ देहिनीस्मिन्य
 शादेहकोमारयावमजरा ॥ तथादेहातरमासिधोरस्तत्रनमुत्यति ॥ १०९ ॥ टी० आहुंशरीरतररीरक ॥ परीवयसाभेदे-
 अनक ॥ हेमृत्युक्षयिदेरव ॥ प्रमाणत्वं ॥ ११० ॥ एषकोमारत्वदिसे ॥ मगनारूपीतेंमेश ॥ परीदेहचिक्लननश ॥ एकेकास
 वे ॥ १११ ॥ तेसंचितन्याचावारी ॥ इयंशरीरातरहोतीजातीपाहो ॥ ऐसंजाणतयानाहो ॥ व्यासाहृदुःख ॥ ११२ ॥ भ्रुं० व्यासा

पाठः ओं ९५ गाअर्जुना, किंवा मजअर्जुना, सिद्धः ओं ९८ परिसी, ओं ९९ सपानदेले, ओं १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥

स्पृशस्ति को न यथीनाप्यासु रवदुःखदाः ॥ आगमापायिनो नित्यास्मांस्ति नित्यस्वभावन ॥ १३॥ टी० गत्यनणावयाहं सि-
 कारण ॥ जइं द्रियां आधनिपण ॥ तिहीं आकळिजे अंनः करण ॥ ह्यणकु निस्समे ॥ ११॥ इंद्रिये विषयमेव विती ॥ तेषां वृ-
 शोक् उपजती ॥ ते अंतर आलु विती ॥ संगेये ॥ १२॥ जया विषयां चानाया ॥ एक निमृता क होनाही ॥ तेषां दुःख आणी-
 काही ॥ सख ही दिस ॥ १३॥ देव शब्दा च व्याप्ता ॥ निदा आण सुती ॥ तेषां देवा दुष उपजती ॥ अवण हरे ॥ १४॥ सु-
 दुर्भाण का मिण ॥ हंस्प शोचं दो नीयुण ॥ जेव पूचे निसंगे करण ॥ सतोष वदा ॥ १५॥ स्यास्सु आणिस्सु रव ॥ हेरूपी न-
 स्वरूपे दस्व ॥ अ उपजवो स्सरवदुःख ॥ नेअ हरे ॥ १६॥ ससंध आणि दुग्ंध ॥ हापरि मळाचा मदे ॥ जो आण संगे विषाद-
 तोष देता ॥ १७॥ न समाचि हो वियरस ॥ उपजवो पीति वास ॥ ह्यण निहा अपसंध ॥ विषय संग ॥ १८॥ देव इन्द्रिया आ-
 धीन होइजे ॥ नेगी तोष्ठा न पाविजे ॥ आणिस्सरवदुःखे आकळिजे ॥ आयण प ॥ १९॥ या विषया वाचि नि काही ॥
 आर्णा क संयथारख्य जाही ॥ ऐसास्व भाव नि पाही ॥ इन्द्रियाचा ॥ २०॥ हे विषय तर केसे ॥ रोहिणी चि जळ जसे ॥ का-
 स्वमी चि आभास ॥ मदे जाति ॥ २१॥ देव अंत्यत या परी ॥ ह्यण कु निहं अहरे ॥ हास वंथा संग न धरी ॥ धनुष-
 रा ॥ २२॥ अहो वं हिन व्यथयत्य ते दुःखं पुरुषं म ॥ समदुःखं सखं रंधि रं मां सुतन्या यकल्पते ॥ १५॥ टी० हे विष-
 य जयाने ना कळिती ॥ नयास्सरवदुःख दाने निपवती ॥ आणि गमास संगती ॥ नाही तया ॥ २३॥ तो नित्य रूप पाथा ॥
 वाच्य रवा वास र्वथा ॥ जो या इन्द्रियाया ॥ नागवेचि ॥ २४॥ अहो नास तो विद्यते मावो ना भावे विद्यते सतः ॥ ३॥ मयोरपि
 दृष्टान् रज्ज्वनया फलत्वं दर्शयिषिः ॥ १६॥ टी० आना भर्तु ना काही एक ॥ सागेन मी आदक ॥ जे विचार परमो क ॥ वो कख-
 पाठ ॥ ओ १६ इ रवी ॥ ओ २५ नाय ॥ ओ २७ आर्णा क ॥

ती ॥ २५ ॥ या उपाधिमाजीरुस ॥ चैनन्य असेसुवंगत ॥ तंतलजसंत ॥ स्वीकारिता ॥ २६ ॥ सहिलोपयजसें भगक होऊ-
 नि भोमनेने असे ॥ परी निवडु निराज हसे ॥ वेगळे कीजे ॥ २७ ॥ को अशिसुरे विडाळ ॥ नो जो नया चोर वाळ ॥ निवडितो के-
 वळ ॥ बुद्धिमत ॥ २८ ॥ ना तरी जाणिवेच्या आयणी ॥ करिता अधिक उदसणी ॥ मग न वनेत निर्वाण ॥ दिसे जे से ॥ २९ ॥
 द्रो मूस बोर कवट ॥ उपाण तो राह्य न वट ॥ तेथ उडे ते फळ कट ॥ जाणो आले ॥ ३० ॥ तें संविचारिता निरसले ॥ तें प्रपंचे-
 महज साडवले ॥ मग तल्लता तल उरले ॥ ज्ञानियां सी ॥ ३१ ॥ ह्याणी निअनित्याचा वारो ॥ तथा आस्ति क्य बुद्धि ना हो ॥ नि-
 कषे दोहो हो ॥ दोरिल्या असे ॥ ३२ ॥ अस्मि ॥ अविनाशितु न दिहिये न सवें मिद तन ॥ विनाश मव्यय स्या स्थन कश्चित्क तु-
 मर्हति ॥ ३३ ॥ टी ॥ देरें सारा सार विचारिता ॥ फ्राति न पाहो असार ना ॥ तरी सार ते स्वभाव ना ॥ नित्य जाणो ॥ ३४ ॥ हा-
 लो क अथाकार ॥ नो जयाचा विस्मार ॥ तेथ ना मवण आकार ॥ चिन्ह ना हो ॥ ३५ ॥ जो सवदा सवंगत ॥ जन्म सायानत ॥ तथा-
 के निचा हि घात ॥ कदा नो हे ॥ ३६ ॥ अस्तु ॥ अतुल न दुमेद हो नित्य स्याक्ता ॥ शरीरिणः ॥ अनाशिनान मेयस्य तस्या दुर्यस्व-
 मारत ॥ ३७ ॥ टी का ॥ आणि शरीर जात आयव ॥ हे ना शत्रु न स्वभावे ॥ ह्याणी निवृत्तां जुझावे ॥ पंडकुमरा ॥ ३८ ॥ अस्मि ॥ य-
 एन वे निहंतारय अैनमन्य तेहत ॥ उभा तो निविजानी तो नाय हो तन हन्यते ॥ ३९ ॥ टी ॥ तू धरु निदे हो भिमानाते ॥ दिव्य स्मि-
 शरीराते ॥ सी मारिता हे मरेते ॥ ह्याणत आहासी ॥ ४० ॥ तरी अजुना तुं हे नणसी ॥ जर न तलता विचारि सी ॥ तरी वधिता न-
 नरु सी ॥ ते वधयन ह्मता ॥ ४१ ॥ अस्मि ॥ न जायते स्मिये ते वाकदा चिन्नाय मूला भविता वान मयः ॥ अजो नित्यः शान्धतोय-
 पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ ४२ ॥ वेदा विनाशिनं नित्यय एन मजमव्यय ॥ कथमसु रुषः प्रार्थय कथातयति हा निकं ॥ ४३ ॥

टी० जैमिन्समाजिदेशिजे ॥ तैस्वमिन्समाच आपले ॥ मगचेरुमियापाहिजे ॥ नयकाहोनाही ॥ ३१ ॥ तैसीहे ज्ञाणमाया ॥ दुख
मनआहासिवाया ॥ शक्यहाणितलियाछाया ॥ जैमीआंगिनरूपे ॥ ३२ ॥ कापुणकुसुंउल्ला ॥ तथविवाकारदिसेमंशला ॥
परिभाजुनाहीनासला ॥ तयामवे ॥ ३३ ॥ नातरासर्वाकाशजैसे ॥ मठावृतीभवतरनेअसे ॥ तोमंगलियाअपेसे ॥ स्वरूपवि
॥ ३४ ॥ तैसेशरीराचालोथी ॥ सर्वथानाशनाहास्वरूपी ॥ ह्यणरुनिवृंहकारोती ॥ ह्यातिवापा ॥ ३५ ॥ म्मोवासासिजिणांनि
यथविहायनवाभिरुह्णतनरोपरणि ॥ तथाशरीराणिविहायजीणान्यन्यानिमंयानिववानिदेही ॥ ३६ ॥ टी० जैमंजीण
वरुसंसिजे ॥ मगनुमनेदिजे ॥ तैसंदहातशतंन्याकारिजे ॥ चनन्यगोथी ॥ ३७ ॥ म्मोनेनलुदतिशस्त्राणिनेनदहति
पावकः ॥ नेचेमकुंदयन्याशनशाषयतिमारुतः ॥ ३८ ॥ टी० हाअनादिनन्यासादु ॥ निरुपाधिविशुद्ध ॥ ह्यणरुनिशस्त्रादि
छेद ॥ नयइतया ॥ ३९ ॥ होमळयोदकेनाभवे ॥ हाअधिदाहनसमवे ॥ रथमहाआषनमभवे ॥ मारुताचा ॥ ४० ॥ म्मोअठे
द्योयमदान्द्योयमकुंद्योशाअणवच ॥ निन्यः सर्वगतस्याणुरचलोयमवानन् ॥ ४१ ॥ टी० का भजुनाहानित्या ॥ अचवहाशाचिन ॥
सर्वत्रमहोदित ॥ परीरुपुणहा ॥ ४२ ॥ म्मोअथक्तागमचिन्यावमधिकारोयमुच्यते ॥ तस्मादेवंविदित्येनानुशांचितुमहोम
॥ ४३ ॥ टी० हातकारिचयहसी ॥ गोचरमोहोकरदिही ॥ आनयाचियेमेने ॥ उक्तदावाह ॥ ४४ ॥ हासदादुलभमना ॥ आपनाहसंश
ना ॥ निःसीमहाअजुना ॥ पुरुषोत्तम ॥ ४५ ॥ हायणुंनयारहित ॥ अनादिअविहृत ॥ व्यर्त्तोसअर्तति ॥ सर्वरुपा ॥ ४६ ॥ अजुं
नारमाहाजोणावा ॥ सकृद्यात्मवदय्यावा ॥ मगसहजशाक्आयवा ॥ हरेमनुआ ॥ ४७ ॥ म्मोअथेचेमिन्वजातंनित्यवामल्य
सेमृत ॥ तथापित्वमहाज्ञाननशांचितुमहसि ॥ ४८ ॥ टी० का अथवागेमोनिगम ॥ तंमंगवनविमानसी ॥ तहोशेत्वनपव
पाठ ॥ ओ. ३९ स्वमिनि जव ओ. ४० अजुनातमह ओ. ४१ दया ओ. ४२ दाहा दिका तहो ० ४३ दया ० ४४ दया ० ४५ दया ० ४६ दया ० ४७ दया ० ४८ दया ० ४९ दया ० ५० दया ०

सी॥ पंडुकुमरा ॥ ५२॥ जेआदिस्थितिअत॥ हा निरंतरअसें नव्या॥ जेसा मवाहअनुसृत॥ गंगाजळाचा ॥ ५३॥ तेअ
नादिनाहीरवदेले॥ ससुद्धांतराअसेमिनले॥ आणिजांनाचिमध्येउरले॥ दिसेजैसे॥ ५४॥ इथेनीहोतयापरी॥ सरसीनिर
दाअवधारि॥ मूर्तासिकवणी॥ अवसर॥ दाकतीना॥ ५५॥ झणोनिहोअपुन॥ एथतजलगेशांचावे॥ जेस्थितिचिह
स्वभावे॥ अनादिहसी॥ ५६॥ नातरहेअजुना॥ नयेचिनुझियामना॥ तेदरवाभिलाकआधीना॥ जन्मसया॥ ५७॥ त
राथेकाही॥ तुजयाकासिकारणनाही॥ हेजन्ममृत्युपाही॥ अपरिहृ॥ ५८॥ ज्ञातस्यहिमुवांमृत्युवृजन्म
मृतस्यच॥ तस्मादपरिहारेथेनत्वशोचिनुमहीसि॥ ५९॥ टी० उपजेतनाश॥ नाशलेपुनरपिदिसे॥ हेयदिकायअत
से॥ परिभ्रमणा॥ ६०॥ नातरउदांअस्तुआपसे॥ अरवाइनहानजातेजेसे॥ हेजन्मभरणतेसे॥ अनिवारजगी॥ ६१
महामुल्यअवसर॥ हेचलाकरहीसहर॥ म्हणोनिहानपरिहर॥ आदिअत॥ ६२॥ तंजरीहोएसंभानिसे॥ नरीरिवद
काकरिसी॥ कायजापातचिनणार्स॥ धनुधरा॥ ६३॥ एथआणिकहीएकपाया॥ तुजबहुनीपरीपाहता॥ दुःखकरा
वयासवया॥ विषांनाही॥ ६४॥ भ्ला० अव्यक्तादीनिमूर्तानिअव्यक्तमार्थानिभारत॥ अव्यक्तानिथमान्यवयकापारिवना
टी० जेसमस्तेइयमूर्त॥ जन्माआदिअमूर्त॥ मगपानलीव्यक्तीते॥ जन्मलया॥ ६५॥ नियसयासिजयजाती॥ तेथनिभात
आनेनहती॥ देखुंप्रवस्थितचयेती॥ आपुनिये॥ ६६॥ येरमध्येंजप्रतिभासे॥ तेभिद्रिनास्वमजेसे॥ तेसाआकारहासा
यावरी॥ सत्स्वरूपी॥ ६७॥ नातरापवनेस्पशिलेनरा॥ पटुयासनरगाकार॥ कापरपसअळकार॥ व्यक्तिकनकी॥ ६८
तेसंसकळहमूर्त॥ जाणपाभायाकारिता॥ जेसंआकाशोबिबत॥ अभ्रपटळ॥ ६९॥ तेसेआदीचिजेनाही॥ तयालागी
पाठ॥ ओ॥ ५४॥ जतचि॥ ओ॥ ५५॥ जे॥ ओ॥ ५६॥ जिय॥ किवा॥ जी॥ ओ॥ ६१॥ स्वरूपीनाही॥ ओ॥ ६२॥ परांपसा॥ ७॥

नरुदसीकायी ॥ त्वं अर्वातनं पाहो ॥ चैतन्यगुणः ॥ ६० ॥ जयानी आनी भिषोगित ॥ विपरीत्य जिलुसंत ॥ जया लागी विरक्त ॥ वन
 वासिचे ॥ ७० ॥ दृष्टोस्मि जयते ॥ ब्रह्मचर्या दिवने ॥ मुनींश्चिरनपात ॥ आचरनातो ॥ ७१ ॥ स्मृतो ० आश्रय वसुधायति विश्वे
 नमाश्रय वदुतितयवचान्यः ॥ आश्रयवच्चैनमन्यः ॥ अणोनि श्रुत्यायेन वेदने च वक्रचित्ति ॥ २१ ॥ टी ० एक अनरी निश्चक
 जं निहाळिताक वळ ॥ विसरले भुक्त ॥ संसार जाल ॥ २२ ॥ एका गुणानुवाद करि तो ॥ उपरते हाडुनि चिना ॥ निरवधित सुनि
 ता ॥ निरतर ॥ २३ ॥ एक एक तचि निगले ॥ तदेह माते साडिले ॥ एक अनुभवे पानले ॥ तद्रूपता ॥ २४ ॥ जैस सरिता ओघ स-
 मस्त ॥ समुद्रा माजि भुक्त ॥ परीसाधो तेन समान ॥ परतले नाहो ॥ २५ ॥ तेमिया योगींश्चिराचिया मती ॥ भिळणीं स्वव-
 कवदती ॥ परीजे विचारुनि पुनरावर्त्त ॥ भजती चिना ॥ २६ ॥ स्मृतो ० देही निन्यसवधो यंदे हे सवस्य भारत ॥ तस्मात्सर्वा
 णि भूतानि नखरौ चितु महसि ॥ २७ ॥ टी ० जे सवस्य सवहो देही ॥ जया करि ताही रात नाहो ॥ ते विस्वात्मक तयाहो ॥ चैतन्य
 एक ॥ २८ ॥ इया चिनि स्वभाव ॥ हे हो न जान आयचे ॥ नरी साग काय शोचाव ॥ एथ तुवा ॥ २९ ॥ एहवीं नरी पाथो ॥ तुज-
 कां न पांन भनि चिना ॥ परीकडाळ हशो चिना ॥ वहता परी ॥ ३० ॥ स्मृतो ० स्वधमसगि चि वेदस्य न विकपितु महसि ॥ ध-
 म्यादि द्रुहाच्छ्रयो न्यस्य धियम्य ना विद्यते ॥ ३१ ॥ टी ० त्वं भद्र नि कानि विचारि सी ॥ काय हे चि तिम आहासी ॥ स्वधमस-
 विसरलासी ॥ नराव जणे ॥ न्यायाकारं गं भजने जाहान ॥ अथवा तुज चि काहो पातले ॥ कोयुग चि हे बुडले ॥ जहाए
 था ॥ नरी स्वधम एक आह ॥ नाम वधान्या ज्यनाह ॥ सग नर जेल काय पाहे ॥ सपाळ पणे ॥ ३२ ॥ अजुना तुजे चित्त
 जही जाहो लदवी भूत ॥ तद्देह अनुनित ॥ संया मसमया ॥ ३३ ॥ अगारो सी रजरी जाहो ल ॥ नरी पथ्या भिना हो घेतले

पाठ ० ओ ० मायुने ओ ० तं गिने ओ ० हर्षा निने ०

ऐसे निविषहाय सटले ॥ नवज्वरहेता ॥ ८४ ॥ तैसे आनी अनकरिता ॥ नाशहाई नहिता ॥ ह्यापाऊ नित आता ॥ स्थावरोहोद
 ॥ ८५ ॥ वाद्या विद्या कुळकायी ॥ आपुला निजधर्मपाही ॥ जा आचरिता वाधनाही ॥ कृपण काळी ॥ ८६ ॥ जे सभार्गे चिचलेता
 अपायान नवे सवया ॥ कांदा पाथार वनेता ॥ नाजिजे ॥ ८७ ॥ नया परंपथा ॥ स्वधर्म राहातता ॥ सकळ काम पूर्णता ॥ सह
 जे होय ॥ ८८ ॥ ह्यो निया न्यागी पाही ॥ तुह्या स्त्रिया आणि कहां ॥ सया मावचु निनाही ॥ उचित जाणें ॥ ८९ ॥ निष्कर हेही आ
 वे ॥ उमिणा धादुं झोव ॥ हे असो काय सागाव ॥ मत्पद्वारी ॥ ९० ॥ प्रस्नो कू य ह्छु यो तो पपल स्वर्ग द्वार मपावतम् ॥ सु
 रिवनः स्त्रियाः पाथल भन युद्ध मोदश ॥ ९१ ॥ दी० अजु नाजु सुंदर आताच ॥ हों का जे देव तुमचे ॥ की निधान स कळय
 मंचि ॥ मगटल असे ॥ ९२ ॥ हा स्याम काय द्वाणिपे ॥ की स्वर्ग चियेणे रूप ॥ मूर्त का मनापे ॥ उदय कला ॥ ९३ ॥ नातरी गुणा
 चे भिपति करे ॥ आते चिं भिपति मरे ॥ हे कीर्ती चि स्वयंवर ॥ आली तुजे ॥ ९४ ॥ स्त्रिया येवहु न पुण्य कीजे ॥ ते जु द्वारे संलाहिजे
 जे सभार्गे ज्ञान आडि छिजे ॥ चिना मणसी ॥ ९५ ॥ नातरी ज्ञान पाप ससुरव ॥ तेथ अवचट पउरी युरव ॥ ते साहास या मंदरव
 पातला असे ॥ ९६ ॥ प्रस्नो ० अथ चेत्स्वमि सधर्म्यं स्याम करिष्यमि ॥ ततः स्वधर्म कीर्ति च हिता पापमवाप्यमि ॥ ९७ ॥ दी०
 आता हारे सा अकुरिजे ॥ मग नाथि नुं बोलिजे ॥ तरे आपण आहाणा होइजे ॥ आपण परया ॥ ९८ ॥ पूर्व जांचे जोडले ॥
 आपणा चि हाय थारिले ॥ जरी आजि शस्त्र सांडिले ॥ रणीं दये ॥ ९९ ॥ अस तो कीर्ति जाडल ॥ जग चि अभिशाप दइल ॥ आ
 णि गि वसित पाव तोल ॥ महा दोष ॥ १०० ॥ जे सो भानोर हा न विनिता ॥ उपहती पाव सवया ॥ मग ते सद्गुण जीवना ॥ स्वयंसेवणा
 ११ नातरी रणीं राव साडिजे ॥ तंचा मरी गिधी विदारिजे ॥ तैसे स्वधर्म होना अभि मरिजे ॥ माहादोषी ॥ २०० ॥ प्रस्नो ० अकुरि

पाठ ओं ८७ अपावा ओ ११ कांदेव ओं १२ उदये ओं १३ स्त्रिया ओं १४ स्त्रिया ओं १५ स्वधर्म ओं १६

निंशीपमूतानिकययिष्यंति तेयथायसं॥ संभावितस्यस्वाकीर्तिर्मरणदतिरिच्यते॥ १३५॥ टी०० ह्यणोनिस्वयमहासांडसील॥ त
 रिपाववरिपडाहोसील॥ आणिअपेशतेनवचेत्॥ कल्यातवरी॥ १॥ जाणतेनितवचिजिचावे॥ जंअपकीर्तिआगानपवे
 आणिसागपाक्किविभावे॥ एथानिया॥ २॥ त्वनिमत्सरसदयता॥ एथुभिनिगसीलकीरमायेता॥ परीतेगतिस्मस्ता॥
 नमनेलयया॥ ३॥ हेचहूकुडनिकवळिते॥ बाणवरीयेतील॥ तेथपरीयेतील॥ कणकुपणे॥ ४॥ ऐसेभिहोमाणस
 कटे॥ जरीविषयेपानियेणये॥ तरीतेजियाहोवोवटे॥ मरणाहुनी॥ ५॥ स्तो० मयाइणादुपरतमस्यतेत्सामहारथा
 यषाचत्वंबुहुमतामूलायास्यमिस्त्राव॥ १५॥ टी०० तुंआणिक्कहोएकनविचारिसी॥ एथसंभवेजुझोआलासी॥ आणि
 सकणवपणनिघालासी॥ मायुताजरी॥ ६॥ नरीतुझेअजुना॥ यावीरयादुजना॥ कामत्यथायेइलमना॥ सागेमज
 ॥ ७॥ स्तो० अवाच्यवादांश्चबहूस्वदिष्यंतितवाहिनाः॥ निंदतस्तवसामर्थ्यनतोदुःखतंरंभुकि॥ १६॥ टी०० हेह्यणतो-
 गलारेगला॥ अजुनआह्याविहाला॥ हासांगेवाल्डुरला॥ निकाकायी॥ ८॥ लोकसायासेकरूनिबहुते॥ वेत्तितीआपु
 नीजिविते॥ परीवाढिवतीर्कीर्तिते॥ धनुषेरा॥ ९॥ तंतुजअनायासे॥ अनकळिनजोडिलोअसे॥ हेअदुनीयजेसे॥
 गगनआहे॥ १०॥ तेसीकीर्तिनिःसीम॥ तुझावायीनिरुपम॥ तुझेगुणउत्तम॥ निहोलीकी॥ ११॥ दिगतीचेभूपती॥ प्राट
 होअुनिवारवाणिती॥ जेगेकिनिग्यादत्तकती॥ कृतानादिक॥ १२॥ एसीसीहमायनवद॥ गंगोतेसीत्तोखद॥ जयादेखी-
 जगीसुभद॥ वावजाहाल॥ १३॥ तेंपासपतुझेअदुत॥ आइकोनियोहेसमस्त॥ जालेअनिविरक्त॥ जीवितेंसी॥ १४॥
 जेंसांमिहाचियाहाका॥ युगांतहायमदबुगवा॥ तेसांकारवाअशेरवा॥ तेसांकारवाअशेरवा॥ १५॥ जेंसेपर्वतवजाते॥ नानरीस
 पाठ नाही.

पंगुडोते ॥ तेमे अजुनाहेतुने ॥ मागिते सदा ॥ १६ ॥ ते अयाधपण जो देन्त ॥ मंगल जन्म आंगायेईन्त ॥ जरीमागुना निघरील
 मजु सुनिवि ॥ १७ ॥ आणि हे पळतां पळोनि दती ॥ परुभि अवकळा करिती ॥ नरां शितकुरी चोळती ॥ आइकता लुज ॥ १८ ॥
 भगत वेळी हिय फुटावे ॥ आतां ताद पण कांन जु जावे ॥ हो जंतल नरी मागावे ॥ महीतळ ॥ १९ ॥ अन्तो ॥ हतो वा मा स्वसिस्व
 री जित्वा माझे स्वसहस ॥ तस्माद निरुकात च पुढा यक्ष तं गिअय ॥ ३७ ॥ टी ॥ नानरी रणी एथ ॥ मुं सता वेचले जी वि
 त ॥ तरी स्वगम रव अनकळित ॥ पावे सान्ते ॥ २० ॥ ह्यणा निच गांधी ॥ विचार न करी करी टी ॥ आतां नुष्य धरु नि उठी ॥
 जुं सवैरी ॥ २१ ॥ देव स्वयं सहा आचरता ॥ दापनां शि अरुणा ॥ तुं जन्म निह क वण विना ॥ पात काची ॥ २२ ॥ सागो भू वाचि
 काय बुडिजे ॥ को मागी जातो आडळिजे ॥ जरी विषय चालो न ठिजे ॥ तर तिही पड ॥ २३ ॥ अमृतं तर निम रिजे ॥ जरी विषयी
 से विजे ॥ तिसा स्वधर्मो दोष पाविजे ॥ हे तु क पणे ॥ २४ ॥ ह्या पां मिया चाया ॥ हत साड नि सवे था ॥ तुं जसा अदृती जुं मता ॥ पाप
 नाही ॥ २५ ॥ अन्तो ॥ सुरवटु ॥ रव समस्त लाभा मा मो जया जया ॥ तना मुडा न पुं न्य स्वने व पाप म वा स्यसि ॥ ३८ ॥ टी ॥ सु
 री सता पा न यावे ॥ दुःख विषादान स जावे ॥ आणिला माला सन धराव ॥ मना मा गी ॥ ३६ ॥ एथ विजय पण होइन्त ॥ की सवैया
 देह जाइल ॥ हे आधी चिको हें पुढे ल ॥ चिंता वेना ॥ ३७ ॥ आपण या डहिता ॥ स्वयं सरा हां दता ॥ जे पवे ते निवाता ॥ साहो नि
 जावे ॥ ३८ ॥ एमे या मने हो आवे ॥ तरी दोष न घडे स्वभावे ॥ ह्यणां न आतां जुं सवे ॥ नि म्मान तुवा ॥ ३९ ॥ अन्तो ॥ एषां ते मिहि
 तां सारथ्य बुद्धि योगी ल्म मां धण ॥ बुध्या युक्तो यया पांथ कर्म बंध म हारयसि ॥ ३९ ॥ टी ॥ हे सारथ्य स्थिति मुकुछिती ॥ सांगति
 शीतु जण ॥ आना बुद्धि या गनि श्रित ॥ अवधारणा ॥ ३० ॥ जया बुद्धि युक्ता ॥ जालिया पाथी ॥ कर्म बंध सव था ॥ बोधून पव

पाठ - आ १७ हीनाको ओ १९ एर्ध्वतळ ओ २२ एथ पात काची ओ २८ स्वयं मां वि ओ ३१ बांधू

॥३१॥ जैसं वज्रकम्बले इजे ॥ सगशास्त्राचा वर्षाव साहिजे ॥ परं जैतं मोडराजे ॥ अन्नु वित ॥ ३२ ॥ अजो ० नेशां मित्रमनाशां स्तिय
 न्यवायोन विद्यते ॥ स्वल्पमल्पस्य धर्मस्य धारयते महता मयात ॥ ३३ ॥ टी ० नमो गहि कुतराननरा ॥ आगिमास्तो उरला असे ॥
 जय प्रयाचक्रमादिसे ॥ नो गच्छत ॥ ३३ ॥ कमायांगरा हादिजे ॥ पराकसां प्छान निर्हासिजे ॥ जेसा मन्त्र न वधिजे ॥ मन्त्र बा
 धा ॥ ३४ ॥ निरापरा जे साबुदि ॥ आयुलालया निरवधि ॥ हा असता चि इयाधि ॥ आक कुन सके ॥ ३५ ॥ जेथ न संचर पुण्य पाप
 जे सुस्म अगिनि कपा ॥ गुण भयादि लप ॥ नलगनी जेया ॥ ३६ ॥ अजुना पुण्य वेगे ॥ जेग ॥ अल्प चिन्ह दये विहिम काशे ॥ तसे
 अशोष ही नाशे ॥ संसार मया ॥ ३७ ॥ अजो ० स्वव्याया चिकानु दिरेक हकून दन ॥ वहारावा न्द नना अकुद्ध याव्यवसायिना
 ॥ ३८ ॥ टी ० जेसी दीपका धा कुटी ॥ पराचि हुत जान मरादी ॥ ते सोप्य दुहि हे ये कुटी ॥ स्वणानय ॥ ३९ ॥ पाओ बहु तो प
 री ॥ हे अपक्षि जे विचार पुनरी ॥ जे दुर्लभ चराचरी ॥ मद्रासगी ॥ ४० ॥ आणिकामां ररा बहु वसा ॥ जेमान जोडे परिसा ॥
 का असुता चानरा ॥ देवगुणे ॥ ४१ ॥ ते सी दुर्लभ सद्दि ॥ जेथ परमात्मान असाये ॥ जेसा गग सिद्ध दि ॥ भिरंतर ॥ ४२ ॥
 नसे दंष्टरा वाचूनि काही ॥ जिय ॥ आगि कल्याण जाही ॥ नृपक निवृत्ति जाही ॥ अजुना जगी ॥ ४३ ॥ येरने दुर्मती ॥ जेवहुया
 असे विकरनी ॥ नय निरंतर रक्ते ॥ अश्विरी कृत ॥ ४४ ॥ जगानि नया रायो ॥ स्वर्ग संसार नरका वस्था ॥ आत्म सुख वस्था
 ह सुमाही ॥ ४५ ॥ अजो ० नार्हिल कुटुंबाचा चंद्र लया गि मित्र ॥ नेदवा दरता ॥ पाथना न्यदस्ती तिवां दन ॥ ४६ ॥ टी ० वे
 दाथे रिवो लनी ॥ कंचला कचन निनिनी ॥ पराक न मन्त्री आसन्ती ॥ धर्क निया ॥ ४७ ॥ स्वणान संसार जे निजे ॥ यज्ञादि क
 कर्म कीजे ॥ सग स्वर्ग संसार सा विजे ॥ मना हर ॥ ४८ ॥ गय हे वाचूनि काही ॥ आगि कस वया म्हरा विनाही ॥ ऐसे अजुना
 पात ॥ ओ ३० वीरभाव ओ ३० निर्गन्तुज ०

बोलतोपाही ॥ दुर्बुद्धिते ॥ ४५ ॥ ॥ कासात्मानः स्वर्गारण्यं जन्मदुःखं कृत्यमिदं ॥ क्रियाविशेषवद्वासां भगवन्प्रयतिम्
 नि ॥ ४३ ॥ टी ॥ देवकामना अभिभूत ॥ हा दुःखि कर्म आचरत ॥ जेकवळ भागां चित्ते ॥ देऊनिया ॥ ४८ ॥ क्रियाविशेष
 ब्रह्मते ॥ नलोपिती विधीते ॥ निपुण हा दुःख भोगते ॥ अनुष्ठिते ॥ ४९ ॥ ॥ सांशय भन सत्ता नोतया पद्धतचेत
 सा ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ निविधायित ॥ ४६ ॥ टी ॥ परांशु चिक इ करिते ॥ जल्लगना समनं धिरती ॥
 यज्ञपुरुषाचक्रतो ॥ मोक्षाज्ञा ॥ ५० ॥ ॥ जसां क्रियावाचारां शकते ॥ सम आधिया दुर्बुद्धि ॥ कांमिष्टान्ते सत्तरो विजे
 काळकूट ॥ ५१ ॥ टी ॥ देव अभूत कुंभ जाडला ॥ तो पाय हाणां निगुन्दी डला ॥ तसांना सात पिमि भुप जला ॥ हतुं कपण ॥ ५२ ॥
 सायासिपुण्य अजेने ॥ सगसंसार कुंभ अपि दिज ॥ परे सिंगते तिका वरुजे ॥ ५३ ॥ ॥ जसां शयवर्णारि-
 मसाचर्निका ॥ करुं नियासां निर्विको ॥ तसां भागां सोदा अभिवर्क ॥ ५४ ॥ टी ॥ हाणां निहाया ॥ दुर्बुद्धि
 देवसंभया ॥ तया वदवा दरता ॥ मनो वस ॥ ५५ ॥ ॥ अद्रो ॥ अचरण्य शिष्या वदो निस्त्रयं गथा भवो गुन ॥ निहं हानिल्य
 सत्वस्थानि र्योगं सिंभ आत्मवान् ॥ ४५ ॥ टी ॥ तिहां र्णां आवत ॥ हवद जाणां भिफ्मत ॥ स्वाणां भुडय निवदादि स-
 मस्त ॥ सां विवकते ॥ ५६ ॥ ॥ यर जतमात्मक ॥ जया निरूपि जक माहिक ॥ जेक वळ स्वगस्तु चक्र ॥ धनुषरा ॥ ५७ ॥ ॥ हाणां
 नितु जाण ॥ हेसरवदः स्वासी चकारण ॥ एव्य अणें अतः करण ॥ रियादु र्मा ॥ ५८ ॥ टी ॥ हाणां वयात्ते अकर ॥ मोसां सेहन
 करी ॥ एक आत्म सुख अतरो ॥ विसव सणी ॥ ५९ ॥ ॥ अद्रो ॥ यावानय उदगान भवतः सत्ता तादक ॥ तांवात्म्य वषु वद वषु
 हाणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥ टी ॥ जरी वेद व हुतवां निल ॥ विविध भेद स्तुचिले ॥ तर्हा आपणां हने आपुंल ॥ तं चिधप ॥ ६० ॥

असायगदनिगारासस्ति॥अशेषहीमार्गेदिसर्त॥तरीतेतुल्येहिआयचालिजनी॥सांगेसज॥६१॥कउदकमयसकळ॥
जईजाहलेअसेसहानळा॥तरीआपणययकबुळ॥आनीचजोगे॥६२॥तेसंज्ञानीजहानी॥तेवदूयातीविवरुती॥स
गअयसिततेस्वीक्रांती॥शाश्वतज॥६३॥अमु०कमणयेवधिप्रकारस्साफल्यपुकाचन॥साकमफलहपुसुमातेसंगा
स्वकर्मणि॥६४॥टी०दणोर्निआदंकायो॥याचिपंगपाहाना॥नूनउचितहायेआता॥स्वकर्म॥६५॥आह्रासमस्तह
विचारिणे॥नवगेसंचिहमनाअल्ह॥जेनसांडजेनुद्याआपुळ॥विहतकर्म॥६६॥परिकर्मफलंआसनकरावी॥अणिअ
कर्मसगतेनकावी॥हेसक्रियाचिआचरावी॥हतायगा॥६७॥अमो०योगस्थः कुरुकर्मोणिसगत्यत्काशनजग॥सिअ
सिअः समोभूत्वासमल्ययोगउच्यते॥६८॥टी०तृयोगयुक्तहोउनी॥फळाचासंगटाकुनी॥मगअजुनाचितदेउनी॥क
रीकर्म॥६९॥परिआदरिनेकर्मदेवे॥जरीसमावनिगावे॥नरीविशेषितेयनोषावे॥हेहीनको॥६८॥कर्मनिमित्तकोण
के॥तेसिद्धनिवचनोचिदाके॥तरीतेथिचेनिअणिरनोखे॥ह्याभावेना॥६९॥अचरनेमिहंगले॥नरीकाजाचिर्का
रआले॥परिनेम्यहसंगुणाजाहले॥गसेचिमाना॥७०॥दरेवेजतुनान्कर्ममिपजे॥तेतुलेआदिपुरुषसमर्पिते॥तरीप
रिपूर्णासहजे॥जाहलेजोणे॥७१॥दरेवेमनासनकर्मो॥हेजसरेपणसमोयर्मा॥तेनयोगस्थितोउतर्मा॥प्रशोस
जे॥७२॥अमु०दरेणल्लवरकर्मवृद्धियोगादहनजग॥बुद्धाशरणमनिच्छकृपणाः फलहनवः॥७३॥बुद्धियुक्तोजहातोह
युसकहतदुष्टते॥नस्माद्यागाययुज्यस्वयागःकर्ममवोशनस॥७४॥टी०अजुनासमल्यनिचावे॥मविस्मरजाणयागा
ने॥जेशमनआणितुद्धिचे॥एक्यआथा॥७५॥ताबुद्धियागविवरना॥बहनेगानेगार्था॥दिसहाअरुना॥कर्मयोग॥७६
पार॥श्री०४८०॥जे०५९०॥जेर्मकपुंगवी॥आ०६००॥कुरुमी॥ओ०६००॥विशय॥आ०६००॥नववत॥आ०७००॥जोगा॥ओ०७००॥कर्मसाग॥७०

परं ते च कर्म आचरन्ति ॥ तं रत्नं ह्ययोगपावित्रं ॥ जन्मसंशयसहजं ॥ योगस्थितौ ॥ ७५ ॥ ह्यणो निबुद्धिद्विगोसधर ॥ तस्य अजुना
 होदं स्थिर ॥ मनं कर्षं अहंरु ॥ फलं ह तच्छा ॥ ७६ ॥ जे बुद्धि योगाया जले ॥ ते चिगारगन जाहल ॥ इहो उभयसंधी संदिह्ये ॥ पा
 पपुण्यौ ॥ ७७ ॥ श्लो ० कर्म जे बुद्धि युक्ता हो फलुत्यन्वैक मनीषिणः ॥ जन्मवधविनिमुक्ताः पदगच्छत्यनामय ॥ ७८ ॥ टी ० तद
 मो नरीवर्नती ॥ परा कर्म फलाना ननु तं ॥ आणिया तोयाने लायती ॥ अजुना तया ॥ ७९ ॥ मग निरामयं भरितं ॥ पावर्तपद अ
 च्युत ॥ ते बुद्धि योग युक्त ॥ धनुर्धरा ॥ ८० ॥ श्लो ० यदा तमोह कलिलं बुद्धि र्मयं तितारयति ॥ तदा गतां सिनि वेदं आतव्यस्य अ
 तस्य च ॥ ८१ ॥ टी ० तदस्मात्तं हासी ॥ जं मोहानयथा सोऽहसी ॥ आणिवरोपयमानस्य ॥ संचरन्त ॥ ८२ ॥ मग नि कलं करह
 न ॥ उपजेल आत्मज्ञान ॥ तेणे निचाइ हाई लमन ॥ अपसंनुजं ॥ ८३ ॥ तथ आणिक काही जाणावे ॥ वां मागलितं स्पे रवे ॥ हे
 अजुना आपवे ॥ पारुषे ल ॥ ८४ ॥ श्लो ० श्रुति विप्रतिपन्नाने यदा स्यात्स्थिति निश्चला ॥ समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्
 स्थिति ॥ ८५ ॥ टी ० इंद्रियांचिया संगती ॥ जिये पसरहा तसेयती ॥ ते स्थिर होई लभायती ॥ आत्यस्वरूपी ॥ ८६ ॥ समाधि सुखी
 कवळ ॥ जे बुद्धि हाई लमनिश्चल ॥ तें पावसी तं सकळ ॥ योगस्थिति ॥ ८७ ॥ श्लो ० अजुन उगच स्थित मजस्य का भाषा समा
 धिस्थस्य कशव ॥ स्थितधीः किं मभापेता कमासी तव्रजेन किम ॥ ८८ ॥ टी ० तथ अजुन सणे देवा ॥ हाचि अभिप्रायो आयवा ॥
 मी पुसेन आतो सांगावा ॥ ह्दयां भयो ॥ ८९ ॥ मग अच्युत द्यण सुखे ॥ जं किरीदा तु जंमिके ॥ तें पृसप उन्मेष ॥ मनोचिनि ॥ ९० ॥
 यावाला पाय ॥ ह्मणाने लें सागा पाथी ह्मणाते ॥ द्वाय ह्मण पंस्थित मज्ञान ॥ वोळखी कवी ॥ ९१ ॥ आणि स्थिर बुद्धि मोह्यणि जे
 तो कं सिया चिन्ह जाणजे ॥ जो समाधि स्वरु भुंजे ॥ अरु वा इत ॥ ९२ ॥ तो कवण स्थितो असे ॥ के समिरूपी विनसे ॥ देवा सांग

पाठ ओं ८० इया ओं ८१ निचाट ओं ८२ मागिलात ओं ८३ अभिप्रायो ओ

वेहेरेसेनस्मोपैती ॥ ८९ ॥ तं वपरब्रह्म अवतरण ॥ जोषदुणाधिकारण ॥ तोकायत्रीनारायण ॥ बोल्न अस ॥ ९० ॥ श्लो १० ओ
 प्रगवानुवाच ॥ मज्जहानियदोकाभासत्रात्प्राथम्येनोक्तानि ॥ आत्मन्येवात्मनानुष्टः स्थितमज्ञस्तदोच्यते ॥ ९१ ॥ टी १० ह्यणे
 अजुनापरियेसी ॥ जोहाअभिनाषेदोदमानसी ॥ तोअंतगयस्तस्सरेवंसी ॥ करीत अस ॥ ९२ ॥ जोसंवदो नित्यत्नम ॥ अंतः क
 रणभरित ॥ परीविषयासाजिगत्तित ॥ जेणंसंमोर्कजे ॥ ९३ ॥ तोकामसर्वथाजोये ॥ जयत्वेआत्मसंतोषोमनराह ॥ तोचिस्थि
 तमज्ञहोय ॥ पुरुषजोणो ॥ ९४ ॥ दुःखेवद्वन्द्वमनाः स्मरवपुविगतस्महः ॥ दोतरागभयक्रोधः स्थितधीमुनिरुच्यते ॥ ९५ ॥
 टी १० नानादुःखीमासी ॥ जयाउदूगनाहोचिन्तो ॥ आणिसरवाचिया आती ॥ अडंपेचिजेगा ॥ ९६ ॥ अजुनानवाच्यावा
 यी ॥ कामक्रोधमहज्जनाहो ॥ आणिमयानेनेणेकहो ॥ परिपृणते ॥ ९७ ॥ ऐसाजोभिरवधि ॥ तोजाणपंस्थिरवदि ॥ जोनि
 रसूनिउपाधी ॥ मेदरहित ॥ ९८ ॥ श्लो १० यः सर्वत्रानभिरुमेहस्तत्तन्वायशसुश्रुतं ॥ नाभिनंदति न देहि तस्य मज्जाभतिष्ठ
 ता ॥ ९९ ॥ टी १० जोसवत्रसदासीरिमा ॥ पण्णचंद्रकांजैसा ॥ अधोमानमकाशा ॥ माजिनह्यण ॥ १०० ॥ ऐसीअनवछि-
 न्नसमता ॥ भूतमात्रोसदयता ॥ आणियालदहोहंविना ॥ कयगवळ ॥ १०१ ॥ गोमेदकाहीणवे ॥ तरीसंतोषेनेणोनामिमवे ॥
 जोओरवेदेनिगवे ॥ विषादासी ॥ १०२ ॥ ऐसाहंरुगशोकरहित ॥ जोआत्मबाधभरित ॥ तोजाणगामजायत्त ॥ धनररा ॥ १०३ ॥
 श्लो १० यदासंहरतेचायकुमारान्विमवशः ॥ उद्विद्यार्णादिशार्थस्य मज्जाभतिष्ठता ॥ १०४ ॥ टी १० काइसाविद्यापूरी ॥
 उवाइलाअवेषपरी ॥ नानरीदच्छावेशावरी ॥ आपुलआरण ॥ १०५ ॥ तेसींदिद्वयं आपेनी ॥ नगानेदं दृष्टवान्नेमिनी ॥ न
 याचीमज्जाजाणस्थितो ॥ पानलीअस ॥ १०६ ॥ तंनराचीमजा ॥ स्थिरजाहालीमाजा ॥ दुयेप्रथोअवजा ॥ मऊमबोहो ॥ १०७ ॥ श्लो १०

विषया विनिवर्तते निराहारस्य दर्शनः ॥ रसवर्जसं ज्ञस्य परहृत्वा निवर्तते ॥ १५ ॥ टी० अर्जुना श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ समगताः पर-
वर्तकः ॥ जे विषयाते साधकः ॥ त्या जर्तनियमे ॥ ४ ॥ श्रिया दर्शये आवर्तिता ॥ परस्मैपदनिमित्तकमवर्तिता ॥ तस्य हस्तप्रक्षिप्य
क्षीजती ॥ विषयी इहो ॥ ५ ॥ जे सा विवरणालंघनवृद्धिज ॥ आणमुक्तो उदकया निज ॥ तरे किंसे नानाशां नमः ॥ ५ ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
॥ ६ ॥ तो उदकाचे निबळ अधिक ॥ जे सा आदर्शन आगं भोके ॥ ते सा मानसी विषया रेव ॥ रसना द्वार ॥ ७ ॥ या गुरुद्वितीय विष-
यतुटे ॥ ते सा नियमनयरसहते ॥ जे जिवनि चिहं नयते ॥ येणे विणा ॥ ८ ॥ मग अर्जुना स्वभोवे ॥ ऐस याही निवर्ततावे ॥
जे का परब्रह्मावुभवे ॥ हो कुनि जादुजे ॥ ९ ॥ नंगरी रसावनामर्ता ॥ इंद्रिये विषय विसरती ॥ जे सा हं भाव नर्तता ॥ मग उहाय
॥ १० ॥ श्रुतो ॥ यतनोत्थापिको तय पुरुषस्य विपश्चितः ॥ इंद्रियाणि प्रमथानि हरति प्रसममनः ॥ ६५ ॥ टी० ये कर्वा तरि अनेन
हं आशानय साधना ॥ जे राहात ताति जतना ॥ निरतर ॥ ११ ॥ जयाते अभ्यासाची घरदा ॥ यम नियमाची तादा ॥ जे मना ते सदा
सुती ॥ धरूनि आहानि ॥ १२ ॥ ते ही किजती कामा विरमा ॥ या इंद्रियांची मोटा एसा ॥ जे सा रसज्जाने विवर्सा ॥ सुलव को ॥ १३ ॥
देखे विषय हंते से ॥ पावती कुट्टि सिद्धी चं निमिष ॥ मग आकाळ ते स्पर्श ॥ इंद्रियांचे तो ॥ १४ ॥ तिये संधी मग जाये ॥ मग
अभ्यासां थोदा वलंताये ॥ ऐस वळकट पण आह ॥ इंद्रियांचे ॥ १५ ॥ श्रुतो ॥ तानि सर्वाणि संयम्य युजन् ॥ आसीत मत्परः ॥ विश-
हिये स्वेन्द्रियाणि तस्य मज्जा र्जति क्षिता ॥ ६१ ॥ टी० ह्यणां निभादं कपाया ॥ यांते निंदंती जो सवथा ॥ सर्व विषयो आस्था ॥ सा
दुनिया ॥ १६ ॥ तो चित् जाण ॥ या गनिने भिस्कारण ॥ जयांचे विषय सरवे भूतः करण ॥ झुकरना ॥ १७ ॥ जो आत्म बोध युक्त ॥
हो कुनि भूसे मतत ॥ जो सा ते लुटया ॥ भान ॥ निमवेना ॥ १८ ॥ ये कर्वा बाह्य विषय तरि नाहो ॥ परमात्मनि हा इत जरी का हो ॥ त

रीसाद्यंतचिपाही॥ संसारभ्रमे ॥ १॥ जैसाकांविषाचालेश॥ येनलियां होयबहुवस॥ मगनिश्चितकानाश॥ जीवितामी २१
 तेसीविषाचिंशका॥ मनीं वसतींदेखा॥ घातकरीअशेरषा॥ चिवेऊजाता॥ ११॥ श्लो० आयतोविषयाचुसःसंगत्तेधूप-
 जायते॥ संगत्सजायतेकामःकायाक्रांथोभिजायते॥ क्रोधाद्वनिसमाहःसमोहात्स्मृतिविस्मयः॥ स्मृतिंभ्रंशादुदितना
 शोशुद्धिनाशात्स्वप्नशयति॥ ६३॥ टी० जरीन्हदयोर्विषयस्मृती॥ तरीनिःसगाहंआपजसगती॥ संगेअगटेस्मृती॥ अस्मि
 लाषाची॥ २३॥ जेथकामउपजला॥ तेथक्रोधआधींचिआला॥ क्रोधांअसेनेविना॥ संमोहजाणें॥ २३॥ संमोहाजानिया
 व्यक्ती॥ तरीनाशपवेस्मृती॥ चंडवातेंज्योती॥ हतेंजैसी॥ २४॥ काअलगावींनिशी॥ जैसीसर्वनेजातेंआसी॥ तेसीदशा
 स्मृतिंभ्रंशी॥ प्राणियासी॥ २५॥ मगअज्ञानांथेवृद्ध॥ तेजोआधुविजेसकळा॥ तेयुद्धिने० आकुळ॥ न्हदयासाजी २६
 जैसेंजाल्युधपळणीपावे॥ मगतेकाकुळतीसंगयोवे॥ तेसीवुद्धींमिहोतीमने॥ धन्यअगा॥ २७॥ तेसास्मृतिंभ्रंशयडे॥ मग
 सर्वयाबुद्धिअवयडे॥ तेथस्मृत्कहउपडे॥ ज्ञानजात॥ २८॥ चेतव्याचिंशशी॥ मनींविदयातेदे॥ तेसंपुरुषाबुद्धिनाशी॥ हो
 यदेखें॥ २९॥ ह्यणोनिआदकेंअर्जना॥ जैसाविस्मृतिंगळतेइंधना॥ मगतोमोहजाति०अ०गुफा॥ पुराणे॥ ३०॥ तेसीवि
 षयांचेअ्यान॥ जरींनिषायवाहमन॥ तरीयेसणहपतना॥ गिंदसीतिमावे॥ ३१॥ श्लो० रागद्वेषभुते० कृतिमययाभिंदयअरन
 आत्मवश्येवंधेयात्सामसादमोयगच्छति॥ ३२॥ टी० ह्यणोनिविषयआपव॥ सर्वथापेतेनिभाउये॥ मगरागेदुरस्वमावे॥
 नाशतीस॥ ३३॥ पायाआणिकहंगक॥ जरीनाशहंरागदेख॥ तरीबुद्धिभावपणींविषय॥ रसांतांतीं ३४॥ जैसासुखआ-
 काशगत॥ रश्मिकरेंजगातंस्पर्शत॥ तरीसंगदांवेकाशलिमत॥ तेथचेनि॥ ३५॥ तेसादेविषयांउदासीन॥ आत्मरसेचिनिमि
 पाठ॥ ओं २४ आहत॥ ओं २५ यमी॥ ओं २६ सर्वबुद्धि॥ ओं २७ रश्मिकरी॥ किंवा० रश्मिकरुनि॥ ७

न्म ॥ जोकांमक्रोधविहिन ॥ होहुनिअसे ॥ ३५ ॥ तरोविषयानयाकाहो ॥ आपणयेवाचुनिनाहो ॥ सगविषयकवपाकाशु ॥
 वाधिनीलकवणा ॥ ३६ ॥ जरीउदकोउदकुवुडिजे ॥ कांअभिआणीपोळिजे ॥ तरोविषयसंगोआशुनिज ॥ परिपूर्णता
 ॥ ३७ ॥ गेसाआपणचिक्वळ ॥ होहुनिअसोनिखल ॥ तयाचेपत्ताअचळ ॥ निम्यागुमानो ॥ ३८ ॥ भ्रुटां प्रसादसर्वदुः
 खानाहोभिरस्यापजायते ॥ प्रमलचतुमात्वाशुवुडि ॥ पयवतिष्ठन ॥ ३९ ॥ टी ॥ दुखअरपडितप्रमलता ॥ आथोजि-
 षुचिना ॥ तथारिगणनाहीसमसा ॥ संसारलुः स्वा ॥ ४० ॥ जेसाभमृताचिभिअर ॥ प्रसयजथाचाजवर ॥ तयादुरुधव
 वचाअदर ॥ कहींचिनाहो ॥ ४१ ॥ तसंलदयप्रमलताहोय ॥ तरीदुरवकुचकेआह ॥ तथअपसोवुडिहोह ॥ प्रमात्म
 रूपी ॥ ४२ ॥ जेसानिर्वानिचादीप ॥ सर्वथानणकंप ॥ तसास्थिरवुडिस्वस्वरूप ॥ योगयुक्त ॥ ४३ ॥ भ्रुटां नास्तिबु-
 धिरयुक्तस्यनचायुक्तस्यभावना ॥ नचाभावयत ॥ यातिरशानस्यदुतः सारव ॥ ४४ ॥ टी ॥ ययुक्तनीकडसणी ॥ नाहो
 ज्याचाभितः करणी ॥ ताआकळिजाणगुणी ॥ विषयादिको ॥ ४५ ॥ तयाग्यरुदुदियायी ॥ कुहीनाहोसर्वथा ॥ आ-
 णिस्थेयीचीआस्था ॥ तेहानुपजे ॥ ४६ ॥ निअळल्याचीभावना ॥ जरीनहोचिंदेखमना ॥ तरीशानिकवीअनुना ॥ आ-
 पहोये ॥ ४७ ॥ जेथशानेचाजळाळानाहो ॥ तप्रसरविसरांभितरिगुहो ॥ जसापापियाचादायी ॥ मासनवस ॥ ४८
 ॥ देखेअग्निमाज्ज्यापती ॥ तियंबाजेजरीविरुदती ॥ नरीअशानासरवाम्नी ॥ घुडोशक ॥ ४९ ॥ ह्यणांनिअयुक्तपणभ
 नचे ॥ तेचिसवस्वदुःखाचे ॥ याकारणइद्रियाचे ॥ तमनकीजे ॥ ५० ॥ भ्रुटां इद्रियाणांहिचरतायन्मनोवुविधीयत
 तस्यहरनेप्रज्ञावायुनांविमवांमसि ॥ ५१ ॥ टी ॥ इद्रियजेह्यपती ॥ तेतचिजेपुरुषकरिती ॥ तेतरलेचिनतरती ॥

पाउ ओ ३६ हो ओ ३८ निकळ ओ ४२ सत्स्वरूप ओ ४८ निक ७
 ओ ७६ हो ओ ३८ निकळ ओ ४२ सत्स्वरूप ओ ४८ निक ७

विषयसिंधु ॥ ४१ ॥ जैसी नाव थलिये ना किता ॥ जरी वरपड होय दुवाता ॥ नरी बुकलाही सागोता ॥ अपावो पावे ॥ ५० ॥ तैसा
 ग्रामे ही पुरुषे ॥ इंदिये लाबिली जरी कोतुके ॥ नरी आक्रमिल जणा दुःखे ॥ सासारिके ॥ ५१ ॥ स्त्रो ० तस्माद्यस्य भ्रमा
 बाहो निरुहो ना निमवशाः ॥ इंदियाणीं दिशयेथ्यस्तस्य प्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ टी ० ह्याणो नि आपुलौ आपण पया ॥
 जरी इंदिये यती आया ॥ नरी अधिक क्रां हो धन जया ॥ साथे कअसे ॥ ५२ ॥ देवे कूर्म जिया परी ॥ उवाइला अवयव प-
 सरा ॥ ना नरी इछावें आवरी ॥ आपण पेंचि ॥ ५३ ॥ तैसी इंदिये अपेती होती ॥ जया चें ह्या गितलें करिती ॥ तयाची
 मजा जाणस्यती ॥ पावली असे ॥ ५४ ॥ आता आपण कही एक गंहन ॥ पूर्णा चें चिन्ह ॥ अजुना तु जसा गन ॥ परिसर्पा ॥
 ॥ ५५ ॥ स्त्रो ० या निशासं वंभूताना तस्या जागनि सययी ॥ यस्या जागति भूतानि सा निशा पश्यतो सुनेः ॥ ६९ ॥ टी ० दे-
 वे भूत जानी न देले ॥ तया चि जया पाहले ॥ आणि जीव जयचे इल ॥ तैथी न दित जो ॥ ५६ ॥ तैचि तो निरुपाधि ॥ अजु-
 ना तो स्थिर बुद्धि ॥ तो चि जाणे निरवधि ॥ मुनीं स्वर ॥ ५७ ॥ स्त्रो ० आपूर्यमाणमचमत्स्यमिष्टममृदुमागः प्रविशति यद्
 न ॥ तद्वत्कामायणं विशति सर्वं सशान्तिं समाप्नोति न कामकामिणी ॥ ७० ॥ टी ० पार्था आणी कही परी ॥ ना जाणो ये इल अव-
 धारी ॥ जैसी अस्त्रो भना सागरी ॥ अगवें दित ॥ ५८ ॥ जरी सरी ना वोध समस्त ॥ परि पूर्ण होऊ निभक्त ॥ तन्ही अधिक-
 नो हें दवत ॥ मया दान सादो ॥ ५९ ॥ तानरी श्रीमं काळीं सरिता ॥ शोबुनि जातीं समस्तो ॥ परी न्यून न के पाथी ॥ समुद्र-
 जैसा ॥ ६० ॥ तैसा प्रार्मां क्रिदिसिद्धी ॥ तया भिक्षा भना ही बुद्धि ॥ आणि न पवतान बाधी ॥ अर्थी ततयाते ॥ ६१ ॥ साग-
 र्याचा घरी ॥ प्रकाश कायवती वेच्छी ॥ कानल विजे नरी अधकारी ॥ कोडे न तो ॥ ६२ ॥ देवे कही हिमिद्धि तया परी ॥ आ-
 पाठ ॥ ओ ० ० ० आपुली ॥ ओ ० ० ० परिये सीपा ॥ ओ ० ० ० निश्चित ॥ ओ ० ० ० सर्वथा ॥ ४१

लो गेलो मेन करी ॥ तो विरुंतला असं अंतरी ॥ महासखी ॥ ६३ ॥ जो आपुले निगारुपण ॥ इद्रमुवनत पावळ हाणें ॥ तो के वि
 रंज पात्रवणे ॥ मित्राचेनी ॥ ६४ ॥ जो असनातें ठिगवी ॥ तो जे साकाजी नसेवी ॥ ते सास सरवा नुसवी ॥ न भागी क्वदि ॥ ६५ ॥
 पाथानवल हे पाही ॥ जेथ स्वर्ग सरावले रवणी नाही ॥ तेथ क्वदि सिद्धि काई ॥ माकृताहीनी ॥ ६६ ॥ म्लो ० विहाय का भाव्य
 सर्वानुपुसां चरनि निस्पृहः ॥ निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥ टी ० ॥ ऐसा आत्म बोधे तो पला ॥ जो परिमा
 नें दे पावला ॥ तो चिस्थिर मज्ञ भला ॥ वोलखत ॥ ६७ ॥ तो अहंकारांतें दवडनी ॥ सकळ काम साडुनी ॥ विचरें विस्वहा
 उनी ॥ विश्वाभाजी ॥ ६८ ॥ म्लो ० एषा ब्राह्मी स्थितिः पाथेनेना प्राप्य विमुह्यति ॥ स्थित्वास्याम त काले पद्म ह्यनिवा
 णमृच्छति ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु पविषत्स ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवाद सारथ्य या
 गोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ टी ० ॥ हे ब्रह्म स्थिति निःसीम ॥ जे अनुभविती निष्काम ॥ ते पावले परब्रह्म ॥
 अनायासे ॥ ६९ ॥ जेचि दूरी भळता ॥ देहानीची व्याकुलता ॥ आडवाकें नसे क चित्ता ॥ प्राज्ञा जयो ॥ ७० ॥ तेचि हे -
 स्थिति ॥ स्वमुखें स्वीपति ॥ सागत अर्जुनां प्रति ॥ सजयो ह्यण ॥ ७१ ॥ ऐसे कृष्ण वाक्य ऐकिल ॥ तेथ अर्जुने मनी -
 ह्यणि नलें ॥ आतां आमुचि या का जाकीर आलें ॥ उपपत्ती इया ॥ ७२ ॥ जेक मजात आयव ॥ एथ निराकारिले देखें ॥
 तरे पावले व्याजुं झोवें ॥ ह्यपूनिया ॥ ७३ ॥ ऐसा श्रीअर्जुना चिया बोला ॥ चितो धरु धरु वायिल्ला ॥ आतां प्रश्न करील मला
 आशंकोनी ॥ ७४ ॥ तो प्रसंग असे नागर ॥ जो सकळ धर्मोसि आगरा ॥ विषका मृत सागर ॥ प्रानहीन ॥ ७५ ॥ जो आपण सर्व जना
 य ॥ निरूपिता होईल श्रीअर्जुनत ॥ ज्ञान देव सांगेल भात ॥ निदृशि दासा ॥ ७६ ॥ इति श्री भा ० ज्ञा ० द्वितीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ओ ० ॥ ७६ ॥

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

॥ इति श्रीभाषार्यदर्शिकायां ज्ञानदेववि।
॥ रचितायां द्वितीयाऽध्यायः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ आयसी चित्कर्मणस्ते मत्तु बुद्धिर्जातं न ॥ तत्किं कर्मणो यो रमो न योजयति
 केशव ॥ १॥ टी० मग आइका अर्जुन ह्यणि तले ॥ देवा तु ह्यो जवा कय वालिने ॥ तस्यानि कया परि सिले ॥ ह्युपा निधि १
 नेथ कर्म आणिकर्ता ॥ उरे चिना पाहता ॥ ऐस मत्तु दुइओ अनता ॥ निश्चित जरी ॥ २॥ तरी माते वे विन्धी हरि ॥ ह्युण-
 सी पाथा संश्राम करी ॥ इये लाज सी नाम हाथरी ॥ कर्म सिता ॥ ३॥ हागा कर्म तु चि अशेष ॥ निरा करि सी निः शेष ॥
 तरी मज कर वोहिं हि सक ॥ का करि र्सी ॥ ४॥ तरी हं चि विचारि ओलु वी केशा ॥ तुं माने दुसी कर्म लेशा ॥ आणिये मणी हे
 हिंसा ॥ करवे त आहासी ॥ ५॥ भूतो ० व्यामि ओणै व वा के न बुद्धि मो हाय सी वमे ॥ तदेक वद निश्चित्य येन थो ह मा मुया
 ॥ २॥ टी० देवानुवाच ऐस बोलावें ॥ तरी आह्य निणती काय करवें ॥ आता संपले ह्युणा पा आयवें ॥ विवेकाचे ॥ ६॥ हो-
 गा उ पद शजरी रसा ॥ तरी अपभ्रशती कसा ॥ आता पुरला आह्य विवसा ॥ आत्म बोधाचा ॥ ७॥ वलु पथ्य वारु निजा ये
 मग जरी आपणो च विष सये ॥ तरी रोगिया के से निजिये ॥ सांगे मज ॥ ८॥ जे से आय छे स रजे आल्लादा ॥ का पाज वणिदि
 जे मर्कटा ॥ तसा उ पद शहांगा मटा ॥ बोदवला आह्या ॥ ९॥ मी आधी न कांही नेणे ॥ वरी कवी छला मो हायेण ॥ श्री ह्युणा
 विवेक या कारणे ॥ पुसिल तुज ॥ १०॥ तंबलु स्त्री ए के कनवाई ॥ एथ उ पद शा मा जिगा वाइ ॥ तरी अनु सर लिथ काइ ॥ ऐ
 सें कीजे ॥ ११॥ आह्या तनु म न जिवें ॥ लुइ पा बोला वोठ गवें ॥ आणितु वांचि ऐं करवें ॥ तरी स रने ह्युणे ॥ १२॥ आना
 ते सिया परी वाधि सी ॥ तरी निके आह्या करी ॥ एथ ज्ञाना चि आश काय सी ॥ अर्जुन ह्युणे ॥ १३॥ तरी ये जाणि वे चै कर म
 रले ॥ परे आणी क एक असं जाहलें ॥ जेथि ते उ ह छले ॥ मान स माझे ॥ १४॥ तेवो चि ओ ह्युणा हंतु से ॥ चरित्र कांही नेणे जे
 पाठ ॥ ओं ४ मग ॥ अथवा ॥ तरी मग ॥ ओं ६ ह्युणे ॥ किंवा ॥ ह्युणे ॥ ओं १४ हंतु हलें ॥ ७

जरीचिनागाहसांसादो ॥ येणोसिंधो ॥ १५ ॥ नातराझकवीत आहारीसाते ॥ कांतलचिकीथिसीअभिते ॥ हे प्रवर्गभितानि
रुते ॥ जाणवेना ॥ १६ ॥ ह्यणोनि आइवेदेवा ॥ हा मावय आननबोलावा ॥ मजविवेकसांगावा ॥ मन्हातजी ॥ १७ ॥ मी
अत्यंतजडअसे ॥ परांगेसाहिनकेपरियसे ॥ आहूण्याबोलावेनुवातेसे ॥ एकमिष्ट ॥ १८ ॥ देखेरोगेनेजिणवे ॥ ओ
षधतरीदेवा ॥ परीतेंअतिसुखदावे ॥ साधुरजसे ॥ १९ ॥ तेंसंसकळारथमरित ॥ तत्वसागावेरुवित ॥ परबोधेमाझचि
ना ॥ जयापरी ॥ २० ॥ देवातुजोसांनिजगुरू ॥ आजिआनधिणांकानकरु ॥ एयमीडकवणार्चिधरु ॥ नृमायआमुची ॥ २१ ॥
हांगाकामगुननेदुसते ॥ देवजाहनेआपते ॥ नरोकामनेनिकानेये ॥ वाणिकेजि ॥ २२ ॥ जरीचितामणीहानाचंद ॥ ते
रीवाछेचेकवणमाकडे ॥ कोआपुर्नैनसरगोंडे ॥ दुछावेना ॥ २३ ॥ देखेअमूर्तसिंधुतेवाकोवे ॥ भगताहानाचीजरीफुल
वे ॥ तरीसायासकाकरावे ॥ भागिलेने ॥ २४ ॥ तेंसाजन्मानरीबुहते ॥ उणभितिअिकसकापती ॥ तोतेंदेवआजिहार्ता ॥ जा
हान्नासिजरी ॥ २५ ॥ तरीआपुर्नयासवसा ॥ कोनभागावासिपरशा ॥ देवाककाळहामानसा ॥ पाहिलाअसे ॥ २६ ॥ देखेने
सकळार्तिचेजिणने ॥ आजिपुणयशसिआले ॥ हेमनारयजाहाने ॥ विजयीमाझे ॥ २७ ॥ जर्जापरमंगळधमा ॥ स
कळदेवदेवानया ॥ नृस्वार्थानेआजिआहू ॥ ह्यणकानिया ॥ २८ ॥ जेंसमानेचजासी ॥ अपन्याअनवसरनाही ॥ स्मन्याला
गुनिपाही ॥ जियापरी ॥ २९ ॥ तेंसदेवानने ॥ पुमिजेतेंसंआवदुते ॥ आपुर्नैनआते ॥ कृपानिधी ॥ ३० ॥ तरीपारिवकीदि
त ॥ आणिआचरितांतरीरुचित ॥ नसांगणुनिअधित ॥ यायत्यणे ॥ ३१ ॥ अन्ना ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ लोकस्मिन्निदिवे-
धानिहापुराणेनामयाच ॥ जानयोगनसारथ्यानाकर्मयोगनयोगिना ॥ ३२ ॥ टी ० याबोलाअथिअच्युत ॥ ह्यणतअसं

पाठ ॥ ओ ॥ १६ ॥ कथिले ॥ ओ ॥ २८ ॥ देवें ॥ ओ ॥ २८ ॥ जी ॥ ७

विस्मित ॥ अर्जुनाहायनित ॥ अभिमावो ॥ १२ ॥ जेवुं हयोगसांगतो ॥ सांगल्यमनमस्था ॥ मगाटनीस्वभावता ॥ मसंगे आ-
 द्यो ॥ १३ ॥ ना उदुशते नेपसंनिचि ॥ ह्यणोनिशिणलासिवायचि ॥ नरो आताजाणसोचि ॥ उक्तदोहो ॥ १४ ॥ अवधारीवोरि-
 द्या ॥ ये लोकां यादोने निष्ठा ॥ मज्जिचिपासूनिमगदा ॥ अनादिमिद्धा ॥ १५ ॥ एकजानयोगह्यणिज ॥ जो सारथी अनुष्ठिज ॥
 जेथवोळरवोसंवेपांविजे ॥ तदुपता ॥ १६ ॥ एककर्मयोगजाण ॥ जेथसाधकजननिपुण ॥ होऊनिंयांनिर्वाण ॥ पावतीवे-
 छे ॥ १७ ॥ हेमार्गनरोना ॥ पराएकवादतीनिदानो ॥ जेसोसिद्धसाधुमोजनो ॥ लुभगक ॥ १८ ॥ कापूवापरसरिता ॥
 मिलिदिमनोवाहता ॥ मगसिंधुमिळणीगुक्थता ॥ पावतोशेखो ॥ १९ ॥ तसोदोनाहोमते ॥ स्वजितोएककारणाते ॥ प-
 रीउपास्तितोग्यन ॥ आधीनअसे ॥ २० ॥ देरेकउत्सुवनसोरसा ॥ पक्षोफळासिद्धोबजसा ॥ सांगनरकविनेसा ॥ पावे-
 वेगा ॥ २१ ॥ तोहकुहकुहदाळंदाळ ॥ केतुनैगकेवेछे ॥ सागाचिनिवळे ॥ निश्चितदाकी ॥ २२ ॥ तसेदेखपाविहगसमते ॥
 अधिष्ठनिज्ञानाते ॥ साख्यसद्यसाक्षाते ॥ आकळितो ॥ २३ ॥ येरयागयेकमाधारे ॥ विहतेचिनिजाचारे ॥ पूणताअव-
 सरं ॥ पोवतेहोती ॥ २४ ॥ अस्त्रो ॥ नकर्मणासनारमान्नेकम्यपुरुषोन्मुत ॥ नचसत्यसनादेवीशिंदुसमधिगच्छति ॥
 टी ॥ वांचोनिस्मारमउचित ॥ नकरतोसिद्धवत ॥ कर्महीनानिश्चित ॥ होदजेना ॥ २५ ॥ कीमासकमसाडिजे ॥ येतुले-
 निनेकम्यहोइजे ॥ हेअर्जुनावागवोलिजे ॥ मूर्खपणे ॥ २६ ॥ सांगेपलतीराजो ॥ ऐस्यसमकाजयपावे ॥ तेथनावेतो-
 त्यजीवे ॥ यदुक्ती ॥ २७ ॥ नातरीत्वसिद्धिजे ॥ नरोकेंसनिपाकनर्काजे ॥ कीसिद्धहीनसेविजे ॥ केविसांगे ॥ २८ ॥ जव-
 निगनतानाही ॥ नवव्यापारभसेपारो ॥ मगसतुष्टिचाठायो ॥ कुवसहजे ॥ २९ ॥ ह्यणोनि आइकपायो ॥ जयोनैकम्यपदे ॥

७

पाठ ॥ ओं ३० ॥ अभिप्राय ॥ ओं ३४ ॥ क्षामलासि ॥ ओं ३५ ॥ वाटा ॥ ओं ३६ ॥ ग्राहता ॥ ओं ३७ ॥ निःकर्म ॥ ७

आस्था ॥ तया उचितकर्मसर्वथा ॥ त्वत्त्वनाह ॥ ५० ॥ आणि आपुल निरचेडि ॥ आपा दिले हे मोडे ॥ कां त्वजिले कर्मभाडे ॥ ऐ
सें आहे ॥ ५१ ॥ हे वायांचि सैरा बो लिजे ॥ उकल तर दिखे नि पाहिजे ॥ परंत्य जिनां कर्म न त्यजे ॥ निष्ठांत मानी ॥ ५२ ॥ अहो-
नहि कश्चित्सण भिज जातु तिष्ठत्य कर्मकृत् ॥ कार्य ते न्य वशः कर्म सर्वः प्रहति जैरुणैः ॥ ५३ ॥ हे देव विहित कर्म जे तुलें ॥ ते स गळ जरी वा-
छान ॥ तंव भाडी मांडि हे अज्ञान ॥ जे चि सो न गुणाधीन ॥ अपेसी असि ॥ ५४ ॥ सांगें अथवा एका वेतलें ॥ कीं नें यांचें त जगेले ॥ हे नासार मनुज
संडिलें ॥ तरो स्वभाव काय निमाले ॥ इंद्रियंचि ॥ ५५ ॥ सांगें अथवा एका वेतलें ॥ कीं नें यांचें त जगेले ॥ हे नासार मनुज
लें ॥ परि मळ नेये ॥ ५६ ॥ ना तर माणा पा न गति ॥ कीं निर्विकल्प जाहाली मति ॥ कोरु ध्या त्प्रादि आनि ॥ खुंदलिया ॥ ५७
हे स्वभाव बोधेले ॥ कीं चरण चालीं विसरले ॥ हे असो काय निमाले ॥ जन्म मृत्यु ॥ ५८ ॥ हे नव कचि जरी कोही ॥ तरो सा-
डिलें रथेंतें कायी ॥ ह्युणो नि कर्म त्याग नाही ॥ प्रहति संतो ॥ ५९ ॥ कर्म परार्थी न पण ॥ निपजत से प्रहति गुणें ॥ येरी धरी म-
कळीं अंनःकरण ॥ वाहिजे वायां ॥ ६० ॥ हे देव रथीं आरु दिजे ॥ मग जरी निश्चिंत नो सजे ॥ तरो नळ होरु मिहिं दिजे ॥
परंत्या ॥ ६१ ॥ का उचलिले वायु वुरा ॥ चळ शरु पत्र जेसे ॥ निचुष्ट आकाशे ॥ परं मने ॥ ६२ ॥ तें स मळ नि आधारे ॥ क-
र्म दिश विकारें ॥ निष्कर्म हे ह्युपापारे ॥ निरतर ॥ ६३ ॥ ह्युण कर्म सग जे वमळु तोचा ॥ तंव त्याग न घेई कर्माचा ॥ ऐसिया हि
करु ह्यणती न थाचा ॥ आय हं चि उर ॥ ६४ ॥ अहो ॥ कर्म दिश नि संसद व नाहो पात ॥ ६५ ॥ मति न मनुजानां मि-
थ्याचारः स उच्यते ॥ ६६ ॥ हे देव जे उचित कर्म सांदिती ॥ मग नैश्चर्म हो पाहती ॥ परं कर्म दिग्गम मूर्तनी ॥ मिरो युनी ॥ ६७ ॥ तयो-
कर्म त्याग न घेई ॥ जे कर्तव्य मनी सांपडे ॥ वरं न दती नें फुडे ॥ दारिद्र जाण ॥ ६८ ॥ ऐसेने पाथा ॥ विषया सक्त स वंधा ॥ बोळ
पाव ॥ ओं ५८ सांडिलें काई ओं ६० निश्चळ होऊनि ओं ६३ आघो ७

खवेतलता ॥ स्वीतिनाही ॥ ६६ ॥ आतां दुःशवधान ॥ प्रसंगे तु जसांगन ॥ यानिराशयचिह्न ॥ धनुर्भाग ॥ ६७ ॥ स्तो ० यस्मि
 दियणिमनसा निधव्यारभतुर्जन ॥ कर्मद्वयः कर्मयोगमसक्तः स विधिप्राप्त ॥ ७० ॥ जो अंतरादुद ॥ परमात्मरूपी रा
 द ॥ बाल्यातरीरुद ॥ लोकिकजसा ॥ ६८ ॥ तां हि दया आज्ञा न करी ॥ विषयाच भय न धर ॥ ७१ ॥ न कर्मणा करी ॥ उचित ज
 जे ॥ ६९ ॥ नो कर्म द्वय कर्मी ॥ राहाद तां तरि न धर ॥ परं ते धिचे निरुमी ॥ आकांछना ॥ ७० ॥ तोका मना भावनयेप ॥
 मोहमळ न लिपे ॥ जे सें जळीं जळीं न शिंपे ॥ पदपूज ॥ ७१ ॥ ते सासं सगा माजि अस ॥ सकळा सां रिखा दिस ॥ जे सें तो-
 य संगे आमासे ॥ भानु बिंब ॥ ७२ ॥ ते सासा मान्य ले पाहिजे ॥ तर साधारण चिंदे रिखे ॥ चरधो निर्धार तो न शिजे ॥ सा
 यजयाची ॥ ७३ ॥ ऐसा चिह्नी चिह्नित ॥ दरवर्सा तां चि सुक्त ॥ आशा पाशरी हित ॥ वोल्लवपां ॥ ७४ ॥ अजुना तां चि ये
 गो ॥ विशोष जे जोगी ॥ ह्यणो निरसा होय यालागी ॥ ह्यणि पेतते ॥ ७५ ॥ तं मानसां नियम करी ॥ निश्चल होयें अंत
 शी ॥ भग कर्म द्वय व्यापरी ॥ यते तु सरें ॥ ७६ ॥ स्तो ० नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म न्यायात्यक्रमणः ॥ शरीरयात्रा पित्त
 नम्रमिथे दक्रमणः ॥ ७७ ॥ ह्यणां निने सुम्य हो आवे ॥ तर एथे तन संभवे ॥ आनि निर्बद्ध कावरा हाटायें ॥ विचा-
 रीपां ॥ ७८ ॥ ह्यणो निजें उचित ॥ आनि अवसर करूनि मास ॥ ते कर्म हेतु रहित ॥ आचरेंत ॥ ७९ ॥ पायां आणिक ही
 एक ॥ नेणसी तु हं कवतिक ॥ जे सें कर्म सोचक ॥ आपसं असे ॥ ८० ॥ देव अमुक्त माधारे ॥ स्वधर्म जो आचरे ॥ तो मोक्ष
 तेण व्यापारे ॥ निश्चित पावे ॥ ८१ ॥ स्तो ० यज्ञार्थोक्तसंगान्यत्र लोकाय कर्म बंधनः ॥ तदर्थं कर्म कांतय मुक्त संगः समा-
 नर ॥ ८२ ॥ टी ० स्वधर्म जो बापा ॥ तो चि नित्य जजापापा ॥ ह्यणो भि वतं तां तयापा ॥ सचार नाही ॥ ८३ ॥ हा निज धर्म
 पाठ ॥ ओं ६७ निरासाचें ॥ ओं ६८ मं ॥ ओं ७० ही व्यापारी ॥ ओं ७१ तेणें विहार ॥ ओं ७२ ॥

जैसां ॥ आणिकुक्रमींति यडे ॥ तैचिबंधे ॥ सासारिक ॥ ८९ ॥ हाणोनिस्वधमसुखान ॥ तै अरंवडयज्ञयाजन ॥ जोकरीति
 याबंधन ॥ इहीनंयडे ॥ ८३ ॥ हालोककर्मबंधिला ॥ जोपरंतयासुलला ॥ तोनित्ययज्ञांतेंबुद्धला ॥ हाणोनियां ॥ ८४ ॥ आनां
 येचिविषयोपायां ॥ जसृष्ट्यादिसंस्था ॥ अहोनेकेना ॥ ८५ ॥ स्मृती ० सहयज्ञा ० भजा ० सुखापुरोवाचप्रजापति ॥ अनेनम
 सिव्यधर्मेष्वेस्त्वष्टकामयुक् ॥ ९० ॥ टी ० तैमित्ययागसिद्धिंतें ॥ सृजलींमृतसमस्तें ॥ परिणतींचितेययज्ञांतें ॥
 सूक्ष्महाणुनी ॥ ८६ ॥ तैवेद्योप्रजोविनिविनाब्रह्मा ॥ देवाकाय आद्ययोग्य आह्वा ॥ तंवह्मणेतोकमखजन्मा ॥ सु-
 ताप्रति ॥ ८७ ॥ तुह्मावर्णविशेषवशे ॥ आहोहास्वधर्मविहलाभसे ॥ यातेंउपासामगअपैसे ॥ पुरतीकाम ॥ ८८ ॥ तुह्या
 व्रतनियमनकरावे ॥ शरीरांतेंनपोडावे ॥ हरिकैहोनवचावे ॥ तीर्थीभिरा ॥ ८९ ॥ योगादिकेंसाधनें ॥ साकाक्षआराधनें ॥
 मंत्रयंत्राधिकारि ॥ द्यणीकरा ॥ ९० ॥ देवतांतरानमजावे ॥ हेंसर्वथाकार्हांनकरावे ॥ तुह्यास्वधर्मयज्ञीयजावे ॥ अनाया-
 से ॥ ९१ ॥ अहंयुक्चिन्ते ॥ अनुष्ठापायांतें ॥ एतव्रतापतेंतें ॥ जियापरा ॥ ९२ ॥ तैसास्वधर्मरूपभरव ॥ हांचिसेव्यतुह्याक
 र्गेंसंस्थलीकनायक ॥ बोलताजाहाला ॥ ९३ ॥ देवास्वधर्मांतेंमजान् ॥ तरीकासधेनुहाहोदल ॥ मगजजाहोनसीदल ॥
 तुमतेकदा ॥ ९४ ॥ स्मृती ० देवात्मावयनानेतेंदेवाभावयतुवः ॥ परस्परभावयतुवः ॥ अयः परमवास्थ्य ॥ ९५ ॥ टी ० जेयणें
 करूनिममस्तां ॥ परिताषहोदंलदंष्ट्रं ॥ मगनेतुह्याईक्षितां ॥ अर्थतेंदेवी ॥ ९५ ॥ यास्वधर्मपूजापूजितें ॥ देवगारण्यां
 समस्ता ॥ यागक्षमनिश्चिता ॥ कार्त्तानुमचा ॥ ९६ ॥ तुह्यादेवांतेंमजाल् ॥ देवतुह्यातुभनेल ॥ गेंसीपरस्परेंयडेल ॥ मोनि
 जेय ॥ ९७ ॥ तेथतुह्यांजकरुहाणाल् ॥ तेंअंभेंसंभिद्धिजाडल् ॥ यांछितहापुरेल ॥ मानसीचिं ॥ ९८ ॥ वाचासिद्धिपावल ॥

आज्ञापक हो आल ॥ ह्यणि ये तु संतसागतील ॥ महाकृदि ॥ १० ॥ जे संकत पतींचि द्वार ॥ वन आच्ययीं नरतर ॥ वोढो गे ॥ १० ॥
 मार ॥ लावयेसीं ॥ १०० ॥ ॥ १०० ॥ इह न भोगानि हो दो वादास्य तथ ज भाविताः ॥ ते दान यदा गे प्यो गे मी के स्त नर
 वसः ॥ ११ ॥ टी ॥ ते संसर्व सरवें सहित ॥ देव चि मूर्ति मंत ॥ य इ ल दूर वा का दत ॥ तु ह्या पाठी ॥ ११ ॥ ऐसे स मस्त भाग भा ॥ ११
 हो आल तु ह्यी अनात ॥ जरी स्वधर्म व निरत ॥ वनी लवा पा ॥ १२ ॥ को जा नि या स कळ स पदा ॥ जो अनुसर न इंद्रिय सदा
 ॥ बुद्ध होऊ नियां सादा ॥ विषयां चिया ॥ १३ ॥ निहोय ज मा वि को स्मरी ॥ जं हं स प नि दि ध लो पुरी ॥ तथा स्वधर्मो भवं च
 श ॥ न भज ल जो ॥ १४ ॥ अग्नि पुर वी हवन ॥ न करो ल देव ता पूजन ॥ मा म वेळे भाजन ॥ ब्राह्म पात्रि ॥ १५ ॥ विमुर ग हो इ न गुरु
 प्रसी ॥ आदर न करी ल अतिथी ॥ संतोष न दी ल जाती ॥ आपु नि ये ॥ १६ ॥ ऐसा स्वधर्म क्रिया री हत ॥ आधि न्य पण री नित ॥
 के वळ भोगा सक्त ॥ हो इ ल जो ॥ १७ ॥ तथा भग आ पा वो थार आह ॥ जे ग न हो ति च स कळ जाये ॥ दर पा भान हो नि लाह ॥ साग
 मो ग ॥ १८ ॥ जे से ग ता यु शरी री ॥ चेत न्य वा स न करी ॥ का नि दे वा चा धरी ॥ न रा ह लु ल्प्या ॥ १९ ॥ ते सा स्वधर्म जा न्यो पला ॥ -
 नरी स र्व सुखा चारा मोड ला ॥ जे सा दो पा स वं ह र पला ॥ म का या जोये ॥ १० ॥ ते सी नि ज वृ नि ज थ सांड ॥ तथ स्वतंत्र व
 स्ती न घडे ॥ आ इ का प्र जा हो पुं दे ॥ वि र चि ह्यु ण ॥ ११ ॥ ह्यु ण इ नि स्व धर्म जो सांड ला ॥ तथा त काळ दंड ला ॥ चार ह्यु ण नि ह
 री ल ॥ सर्व स्वतयांचे ॥ १२ ॥ भग स कळ दो ष भवं ते ॥ ग व सो नि ध नो त या ते ॥ रा धि स म र्था श्म शाना ते ॥ भू ते जे सी ॥ १३ ॥ ति
 सी त्रि सु व नी चिं दुः ख ॥ आ णि ना ना वि धे पा त के ॥ दे न्य ज्ञान ति नु के ॥ ते थो चि व स ॥ १४ ॥ ऐ से हो य न या दु न्य ना ॥ भग न स रू -
 बा पा रू द तो ॥ क ल्या नो हो स र्व था ॥ मा णि ग ण हो ॥ १५ ॥ ह्यु ण उ भि नि ज वृ नि हे न सो डा वी ॥ दी द्र ये व र को न दा वी ॥ ऐ से भ ज न
 पाठ ॥ ओं १०० श्री ॥ ओं ३ कां ॥ ओं ४ सा वि ती ॥ ओं ५ म म न ॥ ओं ६ ग ता त्रि पी ॥ ७

शिक्षुर्वी॥ चतुरानन॥ १६॥ जैसंजळ्वरांजळसांडे॥ सगतत्क्षणांमरणभंडे॥ हास्वधर्मतेणंपाडे॥ विसंबोनये॥ १७॥
 ह्यणाभिहृत्वांसयस्मी॥ आपुनुलियाक्रमंउचिनी॥ निरतुक्कंवेपुह तपुहतो॥ ह्यणिपतअसे॥ १८॥ अत्तो॥ यज्ञशि
 पाशिनः सतामुच्यतसर्वकिल्बिषः॥ मुं जतनेत्वधपापयेपचत्यात्मकारणात्॥ १९॥ टी० देखागिहितक्रियावि
 धि॥ निरहृतुकावुदि॥ जाअसतिंयसमृद्धि॥ विनियोगकरी॥ १९॥ गुरुगात्रअशिपूजो॥ अवसराभजंद्दुजो॥
 निभिन्नादिकीयजे॥ पितरोद्दुगं॥ २०॥ यायजंक्रियारुचिता॥ यज्ञसीहवनकरिता॥ हुतशेषस्वभावता॥ दुरजंजे
 ॥ २१॥ तैस्सर्वे आपुनंपरी॥ कुदुवसंमोजनकरं॥ कोमोगयचित्तनिवारं॥ कल्मषांतं॥ २२॥ नयज्ञावशिष्टभारी॥
 ह्यणोनिंसांदिजेनांअयो॥ जयापरांमहारागी॥ अमृतसिद्धि॥ २३॥ कीतल्वनिष्ठजेसा॥ नागवेस्त्वानितनेया॥ तोशेष
 भारीतेसा॥ नाकळदाषा॥ २४॥ ह्यणोनिंस्वधर्मजेअजे॥ तैस्वधर्मिनिविनयोगिजे॥ सगउरेतेमोगिजे॥ सतोषे-
 सी॥ २५॥ हवचूनिपाया॥ राहादोनयअन्यया॥ एस्मीआद्यहकथा॥ श्रीमृगारुसांग॥ २६॥ जेदेहनिआपणयेसा
 निती॥ आपिनिविषयातेमोगयद्याती॥ यापरतेनस्मरनं॥ आणिककाहो॥ २७॥ हेयज्ञोपकरणसकळ॥ नगतसा
 तेबरळ॥ अहंबुद्धिबळ॥ मोगूणाहनी॥ २८॥ इंद्रियरुत्तोस्मारंवे॥ करार्वेतेपाकानिक॥ नेपापिचपातंके॥ सेविना
 जाण॥ २९॥ हेसपनिजातुआधवेदाहवनव्ययमानवे॥ स्मगस्वधर्मगुजेअगीवे॥ आदिपुरुषोनी॥ ग्राहसादो॥ नया
 मूर्ख॥ आपणपेयाभारांद्दुरव॥ निपजवितीपाक॥ नानाविध॥ ३१॥ जिहायजभिहृद्दुजाय॥ परशातोषहोय॥ नहे
 साभान्यभन्ननहोय॥ ह्यणानिशा॥ ३२॥ हेनद्यावेसाधारणा॥ अन्नवत्यरूपजाण॥ हेजोवनहतकारण॥ निस्वा
 पाव॥ ओ॥ ३३॥ सेवनी॥ ओ॥ ३३॥ जे॥ ७

यया ॥ ३३ ॥ अन्तो ० अन्ताद्रवोनिष्ठतामिपजन्त्यादन्तसंभवः ॥ यज्ञाद्रवोतिपजन्त्योयज्ञः ॥ क्रमसमुद्भवः ॥ ३४ ॥ टो ० अन्ता-
रुवभूते ॥ भरोहपावतोसंस्त ॥ सगर्पजन्यया अन्तानि ॥ सर्वत्रमसंभ ॥ ३५ ॥ तथापजन्त्यायुर्नाजिन्य ॥ यज्ञानमर्गदीक
मे ॥ अन्तो ० क्रमसंभत्याद्रवोविद्विद्ब्रह्माक्षरसमुद्भव ॥ तस्मात्सवगतब्रह्मानित्ययज्ञमतिष्ठित ११ ॥ टो ० क्रमाभा ॥ आ ॥ द
ब्रह्मावेदरूप ॥ ३५ ॥ सगर्पद्वान्तपरात्पर ॥ मसवतसेअक्षर ॥ ह्यणक्रमिहंनराक्षर ॥ ब्रह्मबद्ध ॥ ३६ ॥ पराक्रमोचिचेशू
नि ॥ यज्ञाधिवासंनुति ॥ एकसंभदापति ॥ अखंडगा ॥ ३७ ॥ अन्तो ० एवंभवतितंचक्रानावनयतोहयः ॥ अपार
रीदियारासोमोयपथसंजोवनि ॥ ३८ ॥ टो ० ऐसीहआदिपरपरा ॥ संक्षिप्तुतुजधनुधरा ॥ सागेतलोयाअधरा ॥ ला
गोनिथा ॥ ३९ ॥ ह्यणनिमसंमूलाडुचिनु ॥ स्वधमरूपकतु ॥ नातुषोजोभनु ॥ लोकोदय ॥ ४० ॥ तोपानकानोरासी ॥
जाणभारभूमीसी ॥ जोकृकसंइदियासी ॥ उपगंगला ॥ ४१ ॥ तेजम्भकर्मसकळ ॥ अजुनाअतिनिकळ ॥ जेसका
अभ्यपटळ ॥ अक्रान्ति ॥ ४२ ॥ सांगक्रांस्तनभ्रंजच ॥ तंसंज्यांनंदेखंतयांचे ॥ जयाअनुष्ठानस्वधसांचे ॥ यंडेचि
ना ॥ ४३ ॥ ह्यणभिर्लूकपाडवा ॥ हास्वधमकवणनसंडावा ॥ सर्वसांविभजावा ॥ हांचिएक ॥ ४४ ॥ हांगाशरीरजरी-
जाहाल ॥ तरीकृतव्यवारेआने ॥ मगउचितकाभापल ॥ वासडावे ॥ ४५ ॥ परिसपासव्यसाचा ॥ मूर्तिलाहोनिदेहाचे ॥
खतोकरितीकमांचे ॥ नेगांवदुगा ॥ ४६ ॥ अन्तो ० युस्तात्मरतिरेवस्यादात्मतुसंचमानवः ॥ आत्मन्येवचसंतुष्टस्त
स्यकार्यनिविद्यते ॥ ४७ ॥ टो ० देखेंअसर्तनिदेहधर्मे ॥ एयतोचिएकनलिपकर्म ॥ जोअखंडितरसे ॥ आपणप ॥ ४८
जेतोआत्मबाधताषला ॥ तरीहतकायंदखजाहाला ॥ ह्यणानिमसहंजसाडवला ॥ क्रमसंगा ॥ ४९ ॥ * अन्तो ० नैवत
पात ॥ ओं ॥ ३४ बरिबु ॥ ओं ॥ ३६ पापपर ॥ किंवा ॥ प्रगवर ॥ ओं ॥ ३९ मनु ॥ संक्षेपक ॥ नाहंचितयुद्धरंते ॥ जेकर्मजोडआपुंला ॥ ह्यणोनिसर्वसांदिने ॥ आत्मतेनि ॥

स्थसु तेनार्थो नाकृतेन ह कश्चन ॥ नचास्य सर्वं हतेषु कश्चिदर्थं व्यपगम्य ॥ १८ ॥ टी० ॥ त्वमिजालियं जैसं ॥ साधनेन सत्सती
 अपैसीं ॥ देवैर्भात्मतुष्टिर्नैसी ॥ कर्मनाही ॥ १८ ॥ जवरी अर्जुना ॥ नो बोधयेदनामना ॥ तव चिया साधना ॥ मजवि
 लागे ॥ १९ ॥ स्तो० ॥ तस्मादसक्तः सततं कायं कर्मसमाप्तर ॥ असक्तो न्यावरन्कर्मपरमाप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥ टी० ॥ ह-
 ण ऊर्ध्वनिभयत ॥ सकल कामना रहित ॥ होइ निथा उचित ॥ स्वधर्म राहाटे ॥ २० ॥ जैस्य धर्म नि कामता ॥ अनुसरल पा
 यो ॥ तैक कस्य परम पद तवता ॥ पावले जगी ॥ २१ ॥ स्तो० ॥ कर्मण्येवाहं संसिद्धि मास्थितां जनकादयः ॥ लोकसंघ
 ह भवपि संघं यन्कर्तुं महसि ॥ २० ॥ टी० ॥ देवपंजन कादि क ॥ कर्म ज्ञातं प्रशंस्य ॥ न सां इना मोक्ष सुख ॥ पायने जा
 हाले ॥ २१ ॥ याकारण पाथी ॥ हो आवी कर्मो आस्था ॥ हे आणिका ही एका अर्थी ॥ उपकार ले ॥ २३ ॥ जै आचरतो आप
 ण पया ॥ देखी लागे लोकां यथा ॥ तरे च कुल या अपाया ॥ प्रसंगे चि ॥ २४ ॥ देखे पाना य जा हाले ॥ जैन कामता पाव
 ले ॥ तया हो कत व्यअसे उरले ॥ लोकां लागी ॥ २५ ॥ मार्गी अधासरि सा ॥ पुढे देखणा ही चाले जैसा ॥ अज्ञाना प्रकटाया
 धर्म ते सा ॥ आचरे नी ॥ २६ ॥ हां रागे सें जरी न कर्ज ॥ तरी अज्ञाना काय उमं जै ॥ तिहो कुरुणे पर जाणिजे ॥ मार्ग ते
 या ॥ २७ ॥ स्तो० ॥ यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेन रोजनः ॥ सयन्मयाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ २१ ॥ टी० ॥ यथ वडिल
 जै जै करिती ॥ तया नाम धर्म वेदिनी ॥ तो चिये र अनु धिनी ॥ सामान्य सकळ ॥ २८ ॥ हे गे सें असे सभावे ॥ ह्यगो नि नू
 र्मन संडावे ॥ विशेष आचरणे ॥ लागे संती ॥ २९ ॥ स्तो० ॥ नमयार्थं स्मि कर्तव्यं विबुधैर्बोकेषु किंचन ॥ नानवासमवामब्य
 वर्तएव च कर्मणि ॥ २१ ॥ टी० ॥ आनो आणिकां चिया गोती ॥ कौर शासांगी करि दी ॥ देखे मी चिये राहाही ॥ वर्तते तथे स
 पाठ ॥ ओं ५९ अंकर्म , जै अमर ले पर ॥ ओं ५९ योने ओं ५८ ने ओं ६० तुजसांगी काय ॥

॥६०॥ कायसां कडेकाहंसाते ॥ वीकगणएकभाते ॥ आचरसोद्यसाते ॥ अणसो जरी ॥ ६१ ॥ तरापुरते पणालागी ॥ आ
 णिकइ सरानाही जगी ॥ तसीसामयोसाझाआगी ॥ जाणसीत्वे ॥ ६२ ॥ सूतगुरुपुत्र आणिला ॥ तोतुवापवाडोदेसिनना
 तोहीसो उगला ॥ कर्मोविते ॥ ६३ ॥ अन्ना ० यदित्यहंनवर्तये जातुकमप्यतिदूतः ॥ समन्तामुवर्ततमनुष्याः पार्थिववशः
 ॥ २३ ॥ टी ० परास्वयं वित्तं कैसा ॥ साकासिका हाय जसा ॥ नयाचिएका उइशा ॥ लागोनिया ॥ ६४ ॥ जेसूतजातेस
 कळ ॥ असेआह्या आधीनिचिवळ ॥ तरनिह्तावेवरळ ॥ ह्यणोनिया ॥ ६५ ॥ अन्ना ० उत्सोदियुरिमेलोकानकुर्याक
 भित्तिदह ॥ संकरस्य कृतास्यामुपहन्त्या भिमाः न जाः ॥ २४ ॥ टी ० आह्यापुणकायहोउनी ॥ जरीआत्मस्थितिराहुनी ॥ ना
 तराप्रजोहेकसेनी ॥ निस्तेरल ॥ ६६ ॥ इहोआसुचिवासपाहावी ॥ सगवर्ततोपराजाणावी ॥ तेलोकस्थितिआघवी ॥ ना
 मिलोहोइल ॥ ६७ ॥ ह्यणोनिमसयं जाणया ॥ आशिलासुवैजते ॥ तेणेंविशेषकसाते ॥ न्यजावेना ॥ ६८ ॥ अन्ना ० सक्ताः क
 र्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्निभारत ॥ कुर्याद्दृढास्तं यास्तु कश्चिद्विर्भावो न संयहस ॥ २५ ॥ टी ० देखेवैक्याचियाआशा ॥
 आचरेकामुकजसा ॥ कर्मसिरहो आवातेसा ॥ नराशयसो ॥ ६९ ॥ जेपुदनेपुदनेपायो ॥ हेसकळलोकसंस्था ॥ रक्षणी
 यसरवा ॥ ह्यणऊनिया ॥ ७० ॥ सागरीपरवतावे ॥ विश्वहंसाहंसायावे ॥ अलोकिकनोहोवे ॥ लोकाप्रति ॥ ७१ ॥ अन्ना ०
 नबुद्धिमेजनेयेदज्ञानाकर्मसंगिना ॥ जाषयेत्सर्वकर्मणि विद्वान्मुक्तः सयान्तरन ॥ २६ ॥ टी ० जेसायासंज्ञानसे
 वो ॥ तपक्वान्तिकविजवी ॥ ह्यणोनिवाळकोजसीनिदावी ॥ धनधरा ॥ ७२ ॥ तसीकर्मोजया अयोग्यता ॥ तयाप्र
 निनेकम्यना ॥ नप्रगटावीखेळतां ॥ आदिकरुनी ॥ ७३ ॥ तथेसंगिवाचिलावावी ॥ तेचिएकोप्रशसावी ॥ नैक-

पाठ ओं निराशाहो ओं ७३ योग्यता ७

मीहीदावावी ॥ आचरोनी ॥ ७४ ॥ तथा लोकां महालागी ॥ वर्तनां कर्मसंगी ॥ तो कर्मबंध आंगी ॥ वजेलना ॥ ७५ ॥ जेसी व
 हुहू पियां चरीरावोराणी ॥ रूपा पुरुषभावोना होमनी ॥ परिलोकां संपादणी ॥ तेसी च करिती ॥ ७६ ॥ देखें पुढिलो चें वझे ॥
 जरी आपुला साधये इजे ॥ तरी सोरोकां नदी देजे ॥ धुंधरा ॥ ७७ ॥ स्तोत्र ० महुते ० क्रयमाणानि गुण ० कर्मणि सवश
 अहंकारा वसूहात्मा कताहि मिति मन्यते ॥ ७८ ॥ टी ० तेसी शक्राश्रमं कर्म ॥ जियें न पजती प्रकृति धर्म ॥ अहंमिति
 मूर्खमति फल ॥ मोकतो ह्येण ॥ ७९ ॥ ऐसा अहंकारा रुढ ॥ एकदेशी मूढ ॥ तथा हा परमाथ्य रूढ ॥ मग दावाना ॥ ८० ॥
 हं अहंमो मस्तुत ॥ सो गिजेल तुजहित ॥ ते अर्जुनाई कर्मि चित्त ॥ अवधारीपां ॥ ८१ ॥ स्तोत्र ० तलवितु महाबाहो-
 गुण कर्मविभागयोः ॥ गुणा गुणेषु वर्तन्ते इति मत्वा न संजति ॥ ८२ ॥ टी ० जेतल ज्ञानियां चादारी ॥ तो प्रकृति सावना-
 ही ॥ अथ कर्म जानयाही ॥ निपजत अस ॥ ८३ ॥ ते देहासि गुण सोंदनी ॥ गुण कर्म वा काहुनी ॥ सास्त्रिभूत होउनी ॥ व
 नेती देही ॥ ८४ ॥ हाणो निशरीर जरी होनी ॥ नरी कर्मबंधाना कडुनी ॥ जैसा काभूत चेधरी रासस्ती ॥ यपवेना ॥ ८५ ॥
 स्तोत्र ० महुते गुण समूहाः ॥ सृजन्ते गुण कर्मसु ॥ तानि कल्मस विदोरा दान्धल्लम विन्निविचालयेत् ॥ ८६ ॥ टी ० एथ कर्मो-
 तो चिंतिपे ॥ जो गुण संप्रमयेय ॥ महुते चिंति आदोपे ॥ वर्तन अस ॥ ८७ ॥ इदिये गुणा धारे ॥ राहा दती निज व्यापारे ॥
 ने पर कर्म बळा ल्कारे ॥ आपा दीजा ॥ ८८ ॥ स्तोत्र ० मधिसर्वाणि कर्मणि मन्यस्या आत्मचेतसा ॥ निराशी निर्मेक ह-
 त्वायुः स्वविगतज्वरः ॥ ८९ ॥ टी ० नरी उचित कर्म भाववो ॥ तुवा आचरो निमज अयावो ॥ परे चित्त वृत्ति विन्यसावो ॥
 आत्मरूपी ॥ ९० ॥ हे कर्ममीकना ॥ कां आचरे नया अभया ॥ ऐसा अभिमान झणे चिन्ता ॥ रिया देसी ॥ ९१ ॥ तुवा शरीर स्वश-
 पाठ ० श्री ७९ अहंकारा धिरूढ ०

नोहावे ॥ कामनाजानसांलोवे ॥ मग अथ संरोचित भोगोवे ॥ भोग समस्त ॥ १८ ॥ आतां कोटोदधे क्रान्ति हाती ॥ आरुढ पाद
 ये रथी ॥ देई आलिंगन वीरवृत्ती ॥ समाधाने ॥ १९ ॥ जरी कीर्ति करु देवी ॥ स्वधर्माचा मान वा दुर्गो ॥ दुर्गो भारापासो निस्सा
 डवी ॥ सेदि नो हो ॥ २० ॥ आतां पार्थो निःशक होई ॥ या सया भास्विते देव ॥ रघु हवाचु भिकाही ॥ बोलोनय ॥ २१ ॥ ८२
 ये समना भिदनित्य मनुतिष्ठति मानकाः ॥ अक्षयवानस्य तो मुच्यते नो पदं पार्थिव ॥ ३३ ॥ टी० हे अनुपरोधि मत माझे
 जिहीपरमादर स्वीकारिजे ॥ अद्यावृक्ष अनुष्ठिजे ॥ धनुंधरा ॥ २२ ॥ ते हो सकळ कर्मा वतन ॥ जाण पाक मरहित ॥ ह्म
 गो निहो निश्चित ॥ करणायगा ॥ २३ ॥ स्तो० येल्ल नदं अस्थूय नो ननु तिमि विमयने ॥ सर्वज्ञान विमूढां स्तान् विद्वान् स्थाने च
 तसः ॥ ३२ ॥ टी० नातरा मरुति मंत होउनी ॥ दीदया लळादउनी ॥ जेह माझी मंत अकरुनी ॥ वोसो दिनी ॥ २४ ॥ जे सा
 मान्य स्वलेखितो ॥ अवज्ञा करुनि देखितो ॥ सा अर्थ वाद दखणती ॥ वाचा चरण ॥ २५ ॥ ते मोह मांदरा सुलले ॥ वि
 वय विषयारले ॥ अज्ञान पर्का वुडाले ॥ निप्रयतमाना ॥ २६ ॥ देखें शक्ती हाती दीधले ॥ जे संकार लबा योगले ॥ नात
 र जाल्यथा पाहिले ॥ प्रमाण मोह ॥ २७ ॥ कांचिदाचा उदय जम ॥ उपयोगान वने वायसा ॥ सूरवा विवेक हा ते सा ॥ रुच
 लना ॥ २८ ॥ एणो निते न मानितो ॥ आण निदा हो करु लागती ॥ सोरो यतंग कायसा हाती ॥ नकाशाती ॥ २९ ॥ पतंगा
 दीपी आलिंगन ॥ नेय त्यासि अनुक्रमण ॥ ते विविषया चरण ॥ आत्मधात्ता ॥ ३० ॥ ते सेनेया रथी ॥ जे सूरवया परमा
 रथी ॥ तया सीमा धर्मा सवया ॥ वरावना ॥ ३१ ॥ स्तो० सदश चिधत स्वस्थाः ॥ यद्वत्तं जानवा नपि ॥ मरुति यानि मृतानि
 निग्रह किं करिष्यति ॥ ३३ ॥ टी० ह्मणोनि देयें रेके ॥ जाणोनि निरुक्षे ॥ याद्यावी नां को वुक्ते ॥ आदिकरुनी ॥ ३४ ॥ हा

पाठ ॥ ओं ॥ ९२ ॥ ऐसं ॥ ओं ॥ ९६ ॥ ओं ॥ ९९ लाहती ॥ ओं ॥ १ विमुक्त संसाधण ॥ ६५

गासर्पसंखेच्छेद्येदुल ॥ कीं व्याघ्रसंसर्गसिद्धिजादुल ॥ सागं ह्यलालजिरल ॥ सेविलेयाकृद् ॥ १॥ देवैवेवैबं-
 अभिलागला ॥ यगतोनसावरेजसाउथवला ॥ तेसाद्दियालुकादिचला ॥ भलानोहे ॥ २॥ येरवतरीअजुना ॥ या
 शरीरापाधीना ॥ कानानाभोगरचना ॥ मेकवाधो ॥ ५॥ आपणसायासंकरुनिबहुते ॥ सकलहीससुद्धिजाते ॥ उ
 द्दोअस्त्यानेहाते ॥ अतिपाकावेका ॥ ६॥ सर्वस्वशिणोभिगये ॥ आजवावोसगतिजाते ॥ तेणेंयमसाइनिदेहाते
 पोरवावेकाई ॥ ७॥ योगहनवपांचमेळावा ॥ शरीरेंअनुसरुपवला ॥ तवेळीकेलांकिंगवसावा ॥ शीणअसुला
 ॥ ८॥ ह्यणूनिक्कवळदहभरणा ॥ तेजाणेंउघडीनागवणा ॥ यालागीणयअनःकरणा ॥ देयावेना ॥ ९॥ अतो ० इंदिय
 स्येद्विचस्यथैरागहेषोव्यवस्थितो ॥ तयानवराभागच्छेनोत्थस्यपरिपथितो ॥ १०॥ टो ० येऊर्वेइंदियाचिया-
 अथा ॥ सारिखाविषयपोषिता ॥ सेतोवकीरचिना ॥ आपलेद ॥ १०॥ परीनासवचाराचासागाते ॥ जेमानवेकस्व
 स्य ॥ जेवनगराच्यान ॥ सांदिजेना ॥ ११॥ वाणाविषाचंमधुरना ॥ झणीआवदीउपजेचिना ॥ तोपरिणासविचा-
 रिता ॥ मणाहरी ॥ १२॥ दरवर्गद्वयीकामअस ॥ नेलावोसरुदुरासे ॥ जेसागळोमीनअभिषे ॥ मुलविजेगा ॥ १३
 परीतयामाजिगळुआह ॥ जोमाणांतेंयेद्रुमिजाये ॥ तोजेसावाउचानोहे ॥ झांक्लेपणे ॥ १४॥ तेसेअभिलाषेंयेण-
 कीजेला ॥ विषयंचोआशाधरिजेला ॥ तरीवरपडाहोइजेला ॥ कोधानका ॥ १५॥ जेसाकवळोभियांगारधी ॥ याते
 नियेसंधी ॥ आणिमृगोतकुदि ॥ साधावया ॥ १६॥ एथेतोचिपरीआहे ॥ ह्यणूमिसगहातुजनेहे ॥ पार्थादेही-
 कामकोथेहे ॥ यानकजाणे ॥ १७॥ ह्यणुद्रुमिहाआव्ययोनिकसवा ॥ मेनेहीआठवोनभरावा ॥ एकनिजहृतीचा

अथ ॥ ओं १३ सरवहरीदुरासे, अथवाहः सरदुरासे ॥ ७

योनावा ॥ नासो जेदी ॥ १८ ॥ श्रेष्ठोऽयं यास्वधर्मो विगुणाः रथमास्त्वनुष्ठितांतं ॥ स्वधर्मे नियन्मयः परधर्मो भयावहः ॥ १९ ॥
 टी० अगास्वधर्महा आपुला ॥ जरी कां करि पाजा हा ला ॥ नरी हा नि अनुष्ठिता ॥ मला दे रक् ॥ १९ ॥ पर आचार जो परा
 वा ॥ तो दे शिता की र वर वा ॥ परी आचर तो नि आचर वा ॥ आपुला चि ॥ २० ॥ मोगे धरु यरी आ यकी ॥ एकाले आ हा नि
 बुर वी ॥ तो हु जे के बिस्वा वी ॥ दुबळ जरी जा हा ना ॥ २१ ॥ हे अनुचित के समी कर जे ॥ अग्रान्ध कवी छि जे ॥ अथ वा द
 छिले हो पा विजे ॥ विचारी पां ॥ २२ ॥ नरी लोकांची धवळार ॥ दे रवा नि यां मनो हरे ॥ अस तो आपुला तणारे ॥ मो उबी
 के वी ॥ २३ ॥ हे असो वा निता आपुलो ॥ कुरु पर जरी जा हा नी ॥ त हो मोगि ना ते चि मली ॥ जिया परी ॥ २४ ॥ ते विभा वडे
 ते सा सां कड ॥ आचर नां जई दु वा द ॥ त ही स्वधर्म चि सर वा द ॥ पर शो च ॥ २५ ॥ हा या सा कर आणि दुध ॥ हंगोल
 की र म सिद्ध ॥ परी हा मि दोषी विरुद्ध ॥ ये प के वी ॥ २६ ॥ ऐ मे मि हा जरी से विजल ॥ नरी ते आळु की चि उरल ॥ जेत परी
 णा मी पथ्य न दे ल ॥ धनु री ॥ २७ ॥ त्या ना नि आणि कां भि जो वि हत ॥ आणि आपण पे यां अनु चित ॥ ते ना चरी वं ज
 शी हत ॥ विचारी जे ॥ २८ ॥ या स्वधर्म ते अनुष्ठित ॥ वे तु हो र ल जी वित ॥ तो हि नि का वर सु मय ना ॥ दि सत अस २९
 ऐ से सम स्त सु री शी र म र्णा ॥ बोलि जे जय श्री शां ड पाणी ॥ ते थ अंजु न त्या नां विन वणी ॥ असे दे वा ॥ ३० ॥ हं जे तु ही सा
 गी तले ॥ ते स कळ की कृपां परी सिले ॥ तरी आतां पु से न कां हीं आपुले ॥ अर्ग सिन ॥ ३१ ॥ श्लो० अंजु न उ वा च ॥ अ-
 थ के न मयु क्तो रं पां कुंजु र नि पूरुषः ॥ अनिच्छन्तो पि बाणो य बल्यो दि व भयो जि नः ॥ ३२ ॥ टी० नरी दे वा ह के से ॥ जै श नि
 यं ची ही स्थिति म्बरा ॥ मा गे सा हु नि अनभि से ॥ चाल त दे रवा ॥ ३३ ॥ स वं ज हा जे हो नी ॥ हे उ पा य हो जा ण नी ॥ ते ही पर

धर्मव्यभिचरती॥ कवणं गुणं ॥ ३३ ॥ बीजाभ्याणि सुसा ॥ अंधनिस्सहने जसा ॥ नावकदं वणाहं तस्मा ॥ वरके काया ॥ ३४ ॥ जेअ
सनासंगसां इति ॥ तेचिससर्गकारितानथाना ॥ वनवासिहं सिवितो ॥ जनपदाने ॥ ३५ ॥ आपणनरीलपती ॥ सनसं पागचुक्रं वि
ती ॥ पुरीबळ्कारसुदजती ॥ तयाचिमाजो ॥ ३६ ॥ जयाचो जे वेधे तो विवसा ॥ तेचि जडो निताकुजो विसो ॥ चुकु वितो
गिवसो ॥ तयातिचि ॥ ३७ ॥ ऐसाबत्कारुणदिसो ॥ नोक्वणत्तागुआयहाअसे ॥ हेवालावटुषीकुरो ॥ पायह्मणा ॥ ३८ ॥ श्री
श्रीभगवानुवाच ॥ कामरूपकोधरपरजोगससुदवः ॥ महाधानामहाणयाविधेयमहं वीरणा ॥ ३९ ॥ तं वटुदं दृक्कुस
ळआरासा ॥ योगियांचानिष्कामकामा ॥ तोह्यणनसपुरुषोनमा ॥ सोगेन आदक ॥ ४० ॥ नरोहेकामक्रोधपाहो ॥ जयाते सुये
चोसाववणनाहो ॥ हेकृतानानातार्थ ॥ सोनिजती ॥ ४१ ॥ हेजानियचिमुजंगा ॥ विषयदरेचिवाय ॥ भजनमार्गेचिमांगा ॥
मारकजे ॥ ४२ ॥ हेदेहदुर्गोत्तिथोरा ॥ दीदिययासीचेकोडा ॥ याचेव्यासोहादिकदंबुडा ॥ जगावरो ॥ ४३ ॥ हेरजोगणमानसत्ति ॥
समूळआप्सरियेचै ॥ धोरपणयरांचै ॥ अर्बद्याकेले ॥ ४४ ॥ हेरजत्तिकोरजाहोले ॥ परानमासीपदिद्येतेभाने ॥ नेणेनिजपद
यांदेधिते ॥ प्रमादमोह ॥ ४५ ॥ हेमत्सुचानगरी ॥ मानिजतीनिर्कियापरी ॥ जेजोविताचेवरी ॥ ह्यण्डुनियां ॥ ४६ ॥ जया
सिमूकलियाआमिषा ॥ हेविष्वनपुरिचधासा ॥ कुळवादेयांचियोआशा ॥ चाळानअसे ॥ ४७ ॥ कवुनुकवळितसुगो
जियचवदाखुवनथेकुटी ॥ तिथेभ्याविहीधाकुटी ॥ वोल्लोदुल्ही ॥ ४८ ॥ जेलोकप्रयचिमातुके ॥ खेळताचिरवायववनिक्के
तिच्यादासीपणाचेनिबिक्के ॥ नृणां जये ॥ ४९ ॥ हेअसोमाहमांनिजे ॥ यानेअहंकारेयेपदेजे ॥ जेणेजगआसुलियाभोजे
नान्वीनअसे ॥ ५० ॥ नेणेसत्याचाभोक्तृसाकादिना ॥ भगअसत्यनृणकुटाभिरला ॥ नादं मरुदविला ॥ जगीदही ॥ ५१ ॥ सो

पाठः ओः ३७ चुकुवितो निगिवसाः ओः ४६ याचो ओः ५० असत्याना ७

अ

अ

अ

अ

अ

अ

अ

धीशोतिनागविन्दी ॥ मगमायासोरीभृशरिनी ॥ तियवरवीं विदाविली ॥ समुद्रद्व ॥ ५३ ॥ इहीविवेकाने प्रायकेशिनी
 वेरायाने सिलकादिली ॥ जितयामानसो दिली ॥ उपशमाचरी ॥ ५४ ॥ इहीसनायनरुंदिली ॥ धैर्यदुर्गपा दिली ॥ अने
 दरापसा दिली ॥ उपडुनिया ॥ ५५ ॥ इहीवोधाचरीपलुचिली ॥ सरवाने लोपही दिली ॥ जित्तराभोगोसुदली ॥ ताकप्रया
 ची ॥ ५६ ॥ हे आगतवधुने ॥ जेविलेच आयज दुन्द ॥ पराना दुर्नागनमिले ॥ ब्रह्मादिका ॥ ५७ ॥ हे नमन्याच शजरी ॥ वस
 ने ज्ञानाचा एकाहारी ॥ ह्युणानमवर्तते महासारी ॥ सावरतीना ॥ ५८ ॥ हे मन्त्रयोगानुदुवती ॥ आगोर्वीणजाळती ॥ नबोल
 नां कर्तुकी ॥ प्राणियाने ॥ ५९ ॥ हे रात्रिपिणसाधित ॥ दोरेर्वीणवाधित ॥ ज्ञानियासोत्तवधित ॥ पेजयेउनी ॥ ६० ॥ हे
 चिरवल्वीणरोविती ॥ याशर्वीणगोधित ॥ हकवणा जोगनहोती ॥ आगुवटपण ॥ ६१ ॥ अतो धूमनात्रियते त्रिधिया
 दर्शोमनेनच ॥ यथाल्वनासुनागभस्तयाननदभावने ॥ ६२ ॥ ही जे मन्त्रिदनाचो मुखी ॥ शिवसांनिये पव्याळी ॥ नातर उ
 ल्वाचरेवाळी ॥ गर्भस्थ्यासी ॥ ६३ ॥ नामभाने पासांनु ॥ धूमवेणइवाशु ॥ जे सादपणमळहीनु ॥ कहीत्तनसे ॥ ६४ ॥ ते स
 इहीवीणरकले ॥ आहो ज्ञाननाहोदिसले ॥ जसकडून पागुनले ॥ दोजोमपजे ॥ ६५ ॥ अतो आवतज्ञानमेतेनज्ञानि
 ने नित्यवैरिणा ॥ कामरूपणकोतशुद्धप्रेरणानलेनच ॥ ६६ ॥ टीने लोहूननरीशुद्ध ॥ एरीइही भसे प्ररुद्ध ॥ ह्योमि
 ने अगाध ॥ होअनिले ॥ ६७ ॥ आधीयाती जणाव ॥ मगतज्ञानपवावे ॥ तयपराभयानसभवे ॥ रागदूषा ॥ ६८ ॥ याने
 साधावयानागी ॥ जेबळुआणिजे अगरी ॥ नेदधने जसो आगो ॥ भागोवासाय ॥ ६९ ॥ अतो इंदियाणि मनोबादि
 रस्याधिभानमुच्यते ॥ एतेविमोहयत्यवदानमावत्यदोहने ॥ ७० ॥ टीने स उपायकजतीजजे ॥ तयासीचहोतीविर
 पाउ ॥ ओं ५३ रवाल ॥ ओं ५६ प्रवर्तने ॥ ओं ५९ पाथिक ॥ अंतोने ओं ६२ वणिजे ॥ ओं ६५ वणिजे ॥ ओं ६८ वणिजे ॥ ओं ७० वणिजे ॥

जे ॥ ह्यणोनिहृदयान्तेजिणजे ॥ इहींचिजंगा ॥ ६६ ॥ ऐसियाहीसाकडेंबोला ॥ एकउगायआहेमला ॥ तोकरितांजरीआंगव
ला ॥ तरेसोंगेनकुज ॥ ६७ ॥ स्तो ० नस्मात्सिद्धियाणयादोनिचय्यभरतर्षमा ॥ पाप्मानमजहितेनज्ञानविज्ञाननाशकं ॥ ६८ ॥ इंदी-
टी ० इयांचापिहल्लुक्कुडाइंदियें ॥ एथानिमर्शनिकमांतेविये ॥ आधीनिदेवूद्यालेंतिये ॥ सर्वथेव ॥ ६९ ॥ स्तो ० इंदी-
याणिपराण्याहुरींदियायः परमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धियाबुद्धेः परनस्तुमः ॥ ७० ॥ इति ० मगमनाचीधावपारुवेर ॥ आ-
णिबुद्धेर्चासिद्धवणहादल ॥ इतुकीमिशाराभादल ॥ यापापियाचा ॥ ६९ ॥ स्तो ० एवमुद्धेः परंबुद्ध्यासंस्तप्यात्मन-
मात्मना ॥ जहिशंनुमहाबाहाकासरुयदुरासद ॥ ७१ ॥ इति ॥ श्रीमद्भगवद्गीतासूयनिघत्स ॥ ब्रह्मविद्यायां योगशा-
स्त्रे ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवाद ॥ कर्मयोगनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ टीका ॥ हेअनरोहनिजरीफुटले ॥ तरीनिश्चिंतजाणा
निवटल ॥ जैसरश्मिर्वाणउरले ॥ मृगजळनाहीं ॥ ७० ॥ तेंसारागदुःखजरीनिसाले ॥ तरोब्रह्मचिंस्वराज्यआले ॥ मग
तोभोगीसरुवअपुले ॥ आपणचि ॥ ७१ ॥ निपुरुशिष्याचीगोर्वा ॥ पिडापदार्त्तांगोर्वा ॥ तेथस्थिरराहोभिजुर्वा ॥ कव-
णंकार्वा ॥ ७२ ॥ रससकळसिद्धाचारगो ॥ देवाल्लक्ष्मीयचानाहो ॥ रायारेकेंदेवो ॥ बोलताजाहान्वा ॥ ७३ ॥ आ-
नापुनरपिनअनत ॥ आद्यगुंकास्मात ॥ सागलतथपदुस्मन ॥ मन्त्रकरीन ॥ ७४ ॥ नयाबोलाचाहनगाड ॥ कीरसवृत्ती-
चा निवाड ॥ येणआतयाहोइल्लस्तगाड ॥ अवणसरुवाचा ॥ ७५ ॥ ज्ञाननेयोह्यणोनिघर्त्ताचा ॥ चांगउतावाकस्तुनिउ-
त्सवाचा ॥ मगसंवाद ॥ श्रीहंरियायीचा ॥ भोगावावापा ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ इति ॥ श्रीभाषार्थटीपिकायाज्ञानदेवविरचिता
यातृतीयाः अध्यायः समाप्तियोगमन ॥ ३ ॥ ७८ ॥ भोर्वा ॥ ७९ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शक्तममस्तु ॥

पार, ओ. ७१ जाहोले, ओ. ७२ पदविज्ञाची, ओ. ७३ धर्मान, ७४

श्रीगणेशायनमः॥ आजिभ्यवर्णोद्रयापाहिले॥ जेयेणगीतानिपानदेरिवले॥ आतांस्वमचिहंतुकले॥ साचासारिरेवे॥ १॥ आधीचिबुवे
 काचीगोठी॥ वरिभतिपादीश्रीकुष्माण्डजजेटी॥ आणिसत्तराजकिरीटी॥ परिसतअसे॥ २॥ जेसापचमालापझुगंध॥ कीपरिमळआणिस
 स्वाद॥ मलाजाहालाविनोद॥ कथेंचाइये॥ ३॥ केसीआगळिकदेवाची॥ जेगाजोडिलीअमृताची॥ होकाजेतपेओतयाची॥ फळाअली॥
 ४॥ आतांईंद्रियजातआपवे॥ तेहीअवणाचेंघररिपवें॥ मगसवादफारसत्तावें॥ गीतारव्यहें॥ ५॥ हाअतिसोअतिप्रसंगी॥ सांडुनकयाते
 सांगी॥ जेरुष्मारुनदोधे॥ बोलतहोते॥ ६॥ तेवढींसंजयोरायातेंझुणो॥ अर्जुनअधिलदेवगुणो॥ जेअतिमीतीअनारायणो॥ बोलि
 जनअसे॥ ७॥ जैनसांगोपितयावस्तुदेवासी॥ जैनसांगेचिमातेदेवकीसी॥ जैनसांगेचिबुबाळिमद्रासी॥ तेगुत्यअजुनेसीबोलत॥
 ना॥ देवीलक्ष्मीयेएवटीजवळिका॥ परीतेहीनदेरेयामेसाचेंसुखा॥ आजिअकुष्माण्डमेसाचेंबिक॥ यातेंचिआधी॥ ९॥ मनकादिकांचि-
 याआशा॥ वाटीनल्यकीरबहुवसा॥ परीत्याहीयणेंमानेयशा॥ येतीनिना॥ १०॥ याश्रीजगदीश्वराचेंमेसा॥ एथादिसतसेनिरुप-
 मा॥ केसेपार्थेयेंसर्वोत्तम॥ पुण्यकेले॥ ११॥ होकाजयाचियासीती॥ अमूर्तहाआलाव्यक्ती॥ भजणकवकीचियास्थिती॥ आव-
 डुतअसे॥ १२॥ येन्हवीहायोगियांनडुळे॥ वेदार्थासिनाकळे॥ जेथआनाचेंहडोळे॥ पावर्तना॥ १३॥ तोहानिजस्वरूप॥ अनादि
 निरूप॥ परीकवणेमानेसरुपा॥ जाहालोआहे॥ १४॥ हात्रेलोक्यपदाचीपडती॥ आकाराचींपलथडी॥ केसायाचियेआवडी॥ अवत
 रलीअसे॥ १५॥ श्लोका॥ श्रीभागवानुवाच॥ ॥ इमंविष्वक्तेयोगीश्रुक्तवानहमभ्ययम्॥ विवस्ताभनवेमाहमनुशिक्षाकवेब्रवीशु
 ॥ १॥ टी०॥ मगदेवझुणेंपंडुस्मृती॥ हाचियागाआशीविष्वक्ता॥ कथिलापरीतवाती॥ बहूनादिवसांची॥ १६॥ मगतेणोविष्वक्ते
 रवी॥ हेयोगास्थितीआधवी॥ निरूपिलीबरवी॥ मनुप्रति॥ १७॥ मनूनंआपणअनुष्ठिती॥ मगइत्वाकुवाउपदेशिली॥ ऐसीपरु
 पाठ॥ ओ०१०पवळे, सारिसे॥ ओ०११पिक॥ ओ०१२होला॥ ओ०१३अवरला॥ ओ०१४अगापडुस्मृता॥ बहूना॥ ४

पराविस्तारिणी॥ आर्द्रौ हे ॥ १८॥ ॐ ॥ एवं परंपरा प्रामासमिं सराजर्षयो विदुः ॥ सकलेनेह महता योगेन हः परंतप ॥ २॥ टी० ॥ समा
 णिकदीयायागांतं ॥ राजर्षिजाहलजायते ॥ परीतेशो निआतां सांयते ॥ नौणजे कोणही ॥ १॥ जे प्राणियां काभी सरा ॥ देह निचरि आ
 दरा ॥ ह्मणो निपडिला विसरा ॥ आत्मबोधान्ता ॥ २०॥ अहं टालिया आस्था बुद्धि ॥ विषय सरस्वची परमावधी ॥ जीव तैसा उपाधी ॥ आवडे
 लोका ॥ २१॥ ये रवीत ही रवणो यांचा गावी ॥ पाटवें काय करावी ॥ सांगे जात्य परावी ॥ काय आशि ॥ २२॥ काबि हरयाचा आस्थानी ॥
 कवणगीता तैसानी ॥ कीं कोल्हे यांचा दणी ॥ आवडि उपजे ॥ २३॥ पेंचेंद्रो दया आरौते ॥ जयाचे डोळे फुटनी असते ॥ तेका गळे केविंच्छ
 तें ॥ बोलवरती ॥ २४॥ तैसी वैराग्याची शिवन देवरती ॥ जे विवेकाची सावनेणती ॥ ते सूरव केविं पावती ॥ मजई श्वराते ॥ २५॥ कैसा
 नेणो मोहवाटिनला ॥ तेणें बहुतेक काळ व्यथे गेला ॥ ह्मणो नि योगा हा लोपला ॥ लोकों दये ॥ २६॥ ॐ ॥ सरवायं मया ते दय
 गः प्रोक्तः पुरातनः ॥ भक्तो मम सरवाचे तिरहस्यं त्यं तदुत्तमम् ॥ ३॥ टी० ॥ तो चिहा आजि आनां ॥ तुज प्रीति कुंतीसना ॥
 सांगी तला आह्मी तलना ॥ क्यांतिन करी ॥ २७॥ हंजी विचिं निजगुज ॥ परी के विरावा तुज ॥ जें पटिये सीतुं मज ॥ ह्मणार्डे नि
 यां ॥ २८॥ दुंये माना पुतळा ॥ मक्तीची जिझाळा ॥ मंत्रयेची चिक्का ॥ धनुर्धरा ॥ २९॥ तुं अनुसंगाचा ठावो ॥ ओतां तुज-
 काय वचें जावो ॥ जे हं सग्या मारू ठाहो ॥ जाहा लो आह्मी ॥ ३०॥ तरी नावक हे सहावो ॥ गाजाबज्य हीन धरावो ॥ परी तु
 झें अज्ञान त्वहरावो ॥ लागे आधी ॥ ३१॥ ॐ ॥ अजुन उवाच ॥ अपरभवतो जन्म परजन्म विवस्वतः ॥ कथं मत्तं द्विजानो
 यां त्वमादौ मोक्तवानिति ॥ ३२॥ टी० ॥ तंव अजुन ह्मणेशी हरी ॥ माय आ पुले याचा स्नेह करी ॥ तेथ विस्मय काय अवधारी ॥
 कृपा निधौ ॥ ३३॥ हूं संसाश्चा तांची सांडली ॥ अनाथ जीवांची सांडली ॥ आमुनें कीर प्रसवली ॥ तुझी चिरुपा ॥ ३३॥ देवपा
 पाठः ओं ॥ १८॥ अनादि ॥ ओं ॥ २१॥ अहं वली ॥ ओं ॥ २३॥ कृपा निधि ॥ ३३॥ ॥ ३३॥

गुह्यकाधैविदुजे ॥ तरीजमोनिजोजारसाहजे ॥ तेंबोलोकायतुझें ॥ तुजचिपुढां ॥ ३४ ॥ आतां पुंमनजेंमीकांहीं ॥ तेंथेंचित्तनिंकेदें
 ई ॥ तेंविचिरेवेंकोपावेंनाहीं ॥ बोलाएका ॥ ३५ ॥ तरीमागीलजेवातो ॥ तुवांसांगीतलीहोतीअनता ॥ तेंनुवंकमजचिन्ता ॥ मानचिन्ता ॥
 ३६ ॥ जेतोविवस्वतस्मानजकायी ॥ ऐसंहवडिलाठाउवेनाहीं ॥ तरीतुवांचिकेविकेहीं ॥ उपदेशिला ॥ ३७ ॥ तोआइकिजबहुताकावाचा
 ॥ अणितुंतंबथीकुष्ठासंपेंचा ॥ ह्मणोनिगाइयेमातुचा ॥ विसंवाद ॥ ३८ ॥ तेंविचिरेवाचिस्वतुझें ॥ आपणकांहींचिनोणजें ॥ हेलोति
 केंकैविंझाणजे ॥ एकहेळां ॥ ३९ ॥ परिहेचिमातुआघवी ॥ मोपरियेंसैरेषीसांगवी ॥ जेकांतुवांतयारवी ॥ उपदेशकेला ॥ ४० ॥ श्रीभ
 गवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतांनिजव्यानितवचार्जुन ॥ तान्यहंवेदसर्वाणि नलंवैत्यपरंतप ॥ ४१ ॥ तेंबथीकुष्ठाह्मणेंपंडुसुता ॥ तोवि
 वस्वतजेंहोता ॥ तेंआह्मीनसोरेसीचिन्ता ॥ झोंतिजरीतुज ॥ ४२ ॥ तरीतुगांहेनेणसी ॥ पैजचें आह्माबुद्धा सी ॥ बहूतेगोलींपरिनस्मरसी ॥ आ
 पुढीहें ॥ ४३ ॥ मीजेजेजेअवसरें ॥ जेंहोर्तुनिअवतरें ॥ तेंतेंसमस्तहोस्मरें ॥ धनुर्परा ॥ ४४ ॥ ह्मणो ॥ अजोपिसन्मव्यथात्मापूतामामी
 श्वरोपिसन ॥ प्रकृतिस्वामिधियांसंभवाभ्यासमायया ॥ ४५ ॥ ह्मणोनिआयवें ॥ मागीलमजआठवे ॥ मीअजहीपरिसंभवें ॥ प्रकृ-
 तियेसी ॥ ४६ ॥ माझेंअव्ययत्वतरीननमे ॥ परिदोणेंजाणेंएकदिसे ॥ तेंप्रतिविंबेमायावशें ॥ माझाचिठायी ॥ ४७ ॥ माझीस्वतंत्रतातरी
 नमोडो ॥ परिकर्मोधीनरेमाआवडे ॥ तेंहोप्रानिबुद्धतरीपडे ॥ येन्हवीनाहीं ॥ ४८ ॥ कींएकचिदिसेदुसरे ॥ तेंदोणानेचिनिआधारे ॥
 येन्हवींकायवस्तुविचारें ॥ दुजेंआहे ॥ ४९ ॥ तेंसाअमृतचिमीकरीदी ॥ परीप्रकृतिजेंअधिष्ठी ॥ तेंसाकारणेंनरेंनदी ॥ कायाला
 गी ॥ ५० ॥ यदायदाहिर्यस्यगलानिर्भवतिभारत ॥ अमृत्या नमधमस्यतदात्मानसृजाम्यहम ॥ ५१ ॥ जेधर्मजातआ
 घवो ॥ युगायुगीभ्यारक्षवि ॥ ऐसाओपहास्वभावं ॥ आद्यअसे ॥ ५२ ॥ ह्मणोनिअजत्वपरंतवी ॥ मीअव्यक्तपणहीनाठवी ॥ जेवें-
 पाठ-ओं०३७ पाहीं ० ॥ ३९ कायनाणजे ० ॥ ४० जेतुवांचिकेवी ० ॥ ४१ तेंयेनस्मरसी ॥ ४२ ॥

क्रीं धर्मात्ते अस्मिन्नी ॥ अधर्महा ॥ ५० ॥ श्लो ० ॥ परित्राणा यसाधूनां विनाशाय च दुरुक्तताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संसृष्टाभियुक्तो
 ॥ ८ ॥ टी ० ॥ ते वळीं आपुल्यांचे निवेद्यो ॥ भीसाकार होइ निअवतरो ॥ मग अज्ञानाचे ओं धां ॥ गिळुनि घळीं ॥ ५१ ॥ अधर्माची अकथी
 तोडी ॥ दोषांची लिहली फाडी ॥ सज्जनकरवीं गुढी ॥ सरवाची उमवी ॥ ५२ ॥ दैत्यांचीं कुळें नाशी ॥ साधूंचा मान गिं वशी ॥ ५३ ॥ धर्मासीं
 नीतीसीं ॥ शैलसरीं ॥ ५४ ॥ मी अविवाची काजळी ॥ फेड निवेक दीप उजळी ॥ नैयोगियां पाहो दिवाळी ॥ निरंतर ॥ ५५ ॥ स्वस्त
 रविविषको दे ॥ धर्मचिज गीं नांदे ॥ शक्तीं निपती दोंदे ॥ साविको चो ॥ ५६ ॥ तै पांपांचा अचळ फिरे ॥ पुण्याची पहात फुरे ॥ जैमूर्ति
 माझी प्रगटे ॥ पंडु कुमरा ॥ ५७ ॥ ऐसे या काजालागीं ॥ अवतरे मी युगीं युगीं ॥ परीं हिंचि वोळखे जे जगीं ॥ तो विवेकिया ॥ ५८ ॥ श्लो ०
 जन्म कर्मचि दिव्य मेवो वेत्ति तत्त्वतः ॥ त्यक्ता देह पुनर्जन्म नैतिमा मे निमोर्जुन ॥ १ ॥ टी ० ॥ माझे अजलें जन्मणें ॥ अक्रियता नि
 कर्म करणें ॥ हे अविकार जो जाणें ॥ तो परम मुक्त ॥ ५८ ॥ तो चां ललां मों न चले ॥ देहाचा देह ना कळे ॥ मग पंचवर्ती तंव मिळे ॥ माझा नि
 रूपी ॥ ५९ ॥ श्लो ० ॥ वीतराग सयको धाम्नु या मा मुपाश्रिता ॥ बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्रावभागाताः ॥ १० ॥ टी ० ॥ येन्ही परा
 नशी चिती ॥ जे कामना न्युहोती ॥ वाटा कोणें वेळीं न चिती ॥ ओं या चिया ॥ ६० ॥ सदां मियाचि आशिले ॥ माझिया मेवा ज्योले ॥
 की आत्मबोधे तो वले ॥ वीतराग जे ॥ ६१ ॥ तै तपोने जाचिया राशी ॥ की एकाय तन ज्ञाना सो ॥ जे पवित्रता तीर्थो सी ॥ तीर्थरूप ६२
 ॥ तै मद्रावास हजें आले ॥ मी तिंचि ते होइ निठले ॥ जेमजत या उरले ॥ पद नही ॥ ६३ ॥ सांगें पितळेची गंधिका ठिक ॥ अफिदही
 होय निःशेष ॥ तें संवर्ण कांड आणिक ॥ जे इंद्रा जे ॥ ६४ ॥ तै सयम मिय मी कडमले ॥ जे तपो ज्ञानें चोरवाळले ॥ मी तिंचि ते
 जाहाले ॥ एथ संशयो कायसा ॥ ६५ ॥ श्लो ० ॥ येथया मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भज्याम्यहम् ॥ मम वर्त्मानुवर्तते मनुष्याः पार्थिव
 पाठ ॥ ओ ॥ ५५ सत ॥ ओ ॥ ५७ युगाः ॥ ओ ॥ ५९ देहा ॥ ओ ॥ ६० के ॥ ओ ॥ ६१ जे सकां ॥ ओ ॥ ६२ जे

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

शः ॥ ११ ॥ टी० ॥ येन्वहीन्तरीपाही ॥ जैसेमाझाठारी ॥ भजतीतयांमीही ॥ तैसाचिभजे ॥ ६६ ॥ देवेमनुष्यजातसकळ ॥ हे-
 स्वंभावताभजनशीळ ॥ जाहालेअसेकेवळ ॥ माझाठारी ॥ ६७ ॥ परीज्ञानेवीणनाशिले ॥ जेबुद्धिभेदासिआले ॥ त्यापीलकाचि
 ययाकलिले ॥ अनेकले ॥ ६८ ॥ ह्यणऊनिअसेदीपेदेवरती ॥ ययाअनामया नामेदेवती ॥ देवीदेवोह्यगती ॥ अचबोते ॥ ६९ ॥
 जेंसर्वत्रसदासम ॥ तेथविष्णुगोधसोत्तम ॥ मातवशेसक्यम ॥ विविचिती ॥ ७० ॥ कोक्षतेः कर्मणां सिद्धयजतइहदेव
 ता ॥ क्षिप्रं हिमातुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ टी० ॥ भगवानाहेतुप्रकारे ॥ ययाचिनेतुप्रकारे ॥ मांनिहीदेवतांतरे ॥ उ-
 पासिती ॥ ७१ ॥ एथजैअपेक्षित ॥ तैसेचिपावतीसमस्त ॥ परितेकर्मफळनिश्चित ॥ वोळखतू ॥ ७२ ॥ याचूनिदेवतेआ-
 णिक ॥ निष्ठांतनाहीसम्यक ॥ एथकर्मचिफळसूचक ॥ मनुष्यलोकी ॥ ७३ ॥ जैसेसेत्रीजेनेरजे ॥ तेवाचूनिआनननिपजे ॥ नि-
 कांपाहिजेतोंचेदशिवजे ॥ दर्पणाधारे ॥ ७४ ॥ नातरीकडेयातळवदी ॥ जैसाआपलाचिबोलकिरीटी ॥ पडिसादहोर्नितुटी ॥ नि-
 भित्तयोगे ॥ ७५ ॥ तैसासमस्तोंयांभजना ॥ मीसाक्षीपूतेंपेंअर्जुना ॥ एथप्रतिफळेसावना ॥ आपुलाही ॥ ७६ ॥ चातुव-
 ण्येमायासृष्टगुणकर्मविभागशः ॥ तस्यकर्तारमपिर्मावृद्धयकर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ टी० ॥ आतांयाचिपरीजाणा ॥ चाहीदेवणी ॥ सु-
 जिलेस्यगुणा ॥ कर्मविभाग ॥ ७७ ॥ जेप्रकृतिचेनिआधारे ॥ गुणाचेनिज्यभिचारे ॥ कर्मतदनुसारे ॥ विविचिले ॥ ७८ ॥ एथएकविंश-
 नुष्यपाणी ॥ परीजाहालेगाचहुवणी ॥ ऐसीगुणकर्मकडसणी ॥ केलीसहजे ॥ ७९ ॥ ह्यणनिआइकेपाथी ॥ हेवर्णभेदसंख्या ॥ मीकतो-
 नदेसर्वथा ॥ याचिलोगी ॥ ८० ॥ श्लो० ॥ नमो कर्मणि लोपति न मे कर्मफलं स्पृहा ॥ इति मां यो भिजानाति कर्मभिर्न स बद्धते ॥ १६ ॥
 टी० ॥ हेप्रजचित्तवनजाहाले ॥ परीम्यानाहीकेले ॥ ऐसेजेणेंजाणितले ॥ तोसदलागा ॥ ८१ ॥ श्लो० ॥ एवमात्मा कृतं कर्म पूर्वैरपि
 पाठः ओं- ६९ अजअवर्तते- ओं- ८० हेतुः ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥

मुमुक्षुः किं ॥ कुरु कर्म वत स्वाम्यं पुनः पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ टी० ॥ मागीलपुरुषं जहोते ॥ तिहोरेसिय ज्ञाणो निमाते ॥ कर्म केलो
समस्ते ॥ धनुषा ॥ ८२ ॥ शंताबीजं जैसी दधली ॥ नुगवती चिपेरली ॥ तैसी कर्म चिपरितयां जहाली ॥ मोक्षहेतु ॥ ८३ ॥ एथ-
आणि कही एक अर्जुन ॥ हे कर्मो कर्मो ववचना ॥ आपुलिये चाडे स ज्ञाना ॥ योग्य नो हे ॥ ८४ ॥ श्लो० ॥ किं कर्म किं कर्मो न कवयो
व्यनमोहिताः ॥ तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यत्तात्त्वामोक्षयेः शुभात् ॥ १६ ॥ टी० ॥ कर्म द्याणि पतं कवणा ॥ अथवा अकर्मो कायलक्षण ॥
ऐसो विचारि तो विचक्षण ॥ गुणो न ते ले ॥ ८५ ॥ जैसं कां कुंडे नाणो ॥ खयाचो निसारखेणो ॥ डोळयांचे विदेवणो ॥ संशयो घाली ॥
८६ ॥ तैसैने कर्म्ये ते चे नि फर्म ॥ शिंविमिजती आहानी कर्म ॥ जे दुजिस्ति छिमनो धर्म ॥ करूं सकती ॥ ८७ ॥ वांचूनि मूर्ख चि गो-
ठी कायसी ॥ एथ मोहलेगा दीर्घदर्शी ॥ ह्यणो नि आतां ते चिपरिये सी ॥ सांगे न तुज ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ कर्मणोऽपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं
च वि कर्मणः ॥ अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणां गतिः ॥ १७ ॥ टी० ॥ तरी कर्म द्याणि जे स्वभावे ॥ जेणो विश्वाकस सवे ॥ तैसम्य
कै आर्थी जाणावें ॥ लागे एथ ॥ ८९ ॥ भगवणोऽप्यस्माभिर्मुञ्चत ॥ जैविशेव कर्म विहित ॥ तैही वोळखावें निश्चित ॥ उपयोगे सो ॥ ९०
परी जे नो विद्वद्दक्षिणें ॥ तैही बुद्धावें स्वकूपे ॥ यत्तु लीन कांही न गुंये ॥ आपे से चि ॥ ९१ ॥ ये हवीं जग हे कर्मो धीन ॥ तो भियाची-
व्यासी गहन ॥ परितें आदक चिन्ह ॥ ग्रामे चें ॥ ९२ ॥ श्लो० ॥ कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणि चक्रमयः ॥ सद्युदिमान् मनुष्येषु
सद्युक्तः कुरु कर्मकृत् ॥ १८ ॥ टी० ॥ जो मकळ कर्मो वर्तेना ॥ देखे आपुनी नै कर्म्यता ॥ कर्मसंगे निराशता ॥ फळा चिया ॥ ९३ ॥
आणि कर्तव्य नै लागी ॥ जया दुसरें नाही जगो ॥ तोसि याने कर्म्यना तरि चांगी ॥ बोधला असो ॥ ९४ ॥ तरी क्रिया कलाप आपवा ॥ अना
चरन दोसे वरा ॥ तो चितो ये चिन्ह जगावा ॥ ज्ञानियागा ॥ ९५ ॥ जैसा कांजळा पाशी उभाठा के ॥ ते जरी आपापे जळामाजि दे
पाव ॥ ओ० ८२ मुमुक्षुः ओ० ८८ कानि ॥ ओ० ८९ स्वयंसेवक ॥ ॥ ६५ ॥

रेवे॥ तरीतोनिभ्यांतवोळरेवे॥ ह्यणंमदीगळाआहं॥ ९६॥ अथवानवेहनरिगो॥ तोथइयेचरुखजातांदरुववेगो॥ तेचिसाचकारेपा
 होजोलागो॥ तंवरुखह्यणअचळ॥ ९७॥ तेंसंसर्वकर्मअिसणो॥ तेंपुढेमानूननिवायणो॥ मगआपणजोजाणो॥ नेकस्येरेसा॥ ९८॥ आ
 णिउडोअस्माचेनिममाणो॥ जेसेनचलतांसूर्याचंचालणो॥ तेंसेनेकस्यतत्वजाणो॥ कर्मींचिअसता॥ ९९॥ तोमनुष्यासारिवतारी
 आवडे॥ परीमनुष्यत्वतयानयडे॥ जेसेजळामाजिनबुडे॥ भानुबिंब॥ १००॥ तेणंनपाहतांविश्वदेखिले॥ नंकरितांमर्वकेले॥ नसो
 भितांमोगिले॥ भैरवजयत॥ १०१॥ एकोचिठायीबैसला॥ पारिसर्वत्रतोचिगेला॥ हेअसोविश्वजाहाला॥ आंगोचिन्तो॥ १०२॥ य
 स्यसर्वेसमारभाः कामसंकल्पवर्जिताः॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः प्रोक्तं बुधाः॥ १०३॥ टी०॥ ज्यापुरुषाचाठायो॥ कर्माचान-
 रीखेदनाही॥ तरीफळापेक्षाकांही॥ संचरेना॥ ३॥ आणित्हेकर्ममोकरेना॥ अद्यावाआदर्शोमिदूनिइना॥ येणेंसंकल्पेहीजय-
 चेमना॥ विटाळना॥ ४॥ ज्ञानाग्नीचेनिमुरवें॥ जेणेंजाळीकर्मेशेखें॥ तोपरब्रह्मचिमनुष्यवेखें॥ वोळखतुं॥ ५॥ श्लो०॥ त्यक्ताक
 र्मफलासंगंनित्यवसो निराश्रयः॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनेवकिंचित्करोति सः॥ २०॥ टी०॥ जोशरीरीउदा॥ फळभोगीनिरास॥ नित्यताउ
 ल्हासा॥ होउनिअसे॥ ६॥ जोसंतोषाचागाभारो॥ आत्मबोधाचियावोवरा॥ पुरेनह्यणोचिधनुधरी॥ आरोगिता॥ ७॥ श्लो०॥ निरा-
 शीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः॥ शारीरंकेवलं कर्मकुर्वन्ब्राम्होति किंल्विषम॥ २१॥ टी०॥ केंसीअधिकाधिकआवडी॥ घेतमहा
 सखाचीगोडी॥ मांडोनियांआशाकुरोंडी॥ अहंभावसेमी॥ ८॥ ह्यणोनिअवसरेंजेंपवे॥ तेणोंचिसखेसखावे॥ ज्याआपुलेआ
 णिपरावें॥ दोन्हीनाही॥ ९॥ तोदिठीजोंपाहे॥ तेंआपणचिहोउनिजाये॥ आइकेतेंआहे॥ तोचिजाहाला॥ १०॥ चरणीहन्चाले॥ मु
 खेंजेजेबोले॥ ऐसेंचेष्टजातंतुले॥ आपणचिजो॥ ११॥ हेअसोविश्वपाही॥ ज्यासिआपणपेंगंनूनिनाही॥ आतांकवणतेंकर्मका
 पाठ॥ ओं॥ ९८॥ आपणपेंयातो॥ ओं॥ १०१॥ तया॥

॥ ३॥

॥ ६॥

॥ ९॥

॥ १३॥

॥ १६॥

॥ १९॥

॥ २२॥

॥ २५॥

॥ २८॥

यी॥ बाधितयान्ते॥ १२॥ ॐ०॥ यदृच्छालाभसंदुष्टोदं द्वाततो विमत्सः॥ समः सिद्धवसिस्थोचक्षुः॥ पिनो न वृक्षान्॥ २२॥ टी०॥
 हा मत्सरे जेथ उपजे॥ तामुलें मुरेचि जयादुजे॥ तो भिर्मत्सरे का इह्यणिजे॥ बोलवरी॥ १३॥ द्वाणो निसर्वापरिमुक्त॥ तो सकर्मचिकर्म
 रहित॥ समुपापरिगुणानि॥ तत्त्वध्यातिनाही॥ १४॥ ॐ०॥ गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः॥ यज्ञाद्याचरतः कर्तव्यं समग्रं वि-
 लीयते॥ २३॥ टी०॥ तो देहसंगे तरी असे॥ शिचैतन्यासारिखा दिसे॥ पाहातां परब्रह्माचे निकसे॥ चोरजळ अळा॥ १५॥ ऐसाही परी
 कोतुके॥ जरी कर्म करी यादुके॥ तरी तिगेरु ज्ञाती निःशंखे॥ तयाचा चिठायी॥ १६॥ अकालीची अन्धे जेशी॥ उर्मि विषा आकाशी
 ॥ हारपती छापैशी॥ उदयलो सार्तांगी॥ १७॥ तैसी विधिवाने विहितें॥ जरी आचरत समस्ते॥ तरी तिगेरु ऐक्य भावें ऐक्यातें॥ पाव
 नीचिगा॥ १८॥ ॐ०॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म विब्रह्मार्गो ब्रह्मणा हुतम्॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना॥ २४॥ टी०॥ हे हवनमी
 होता॥ कांइ येथ ज्ञाहा भोक्ता॥ ऐसिया बुद्धी भिनाही भिभ्यता॥ द्वाणु निर्या॥ १९॥ अइष्टय जय जावे॥ तें हविर्मे त्रादि आयवे॥
 तो देव तसे अविनाश भावें॥ आत्मबुद्धि॥ १२०॥ द्वाणु निब्रह्म ते चिकर्म॥ ऐसें बोध अन्धे जया सम॥ तया कर्तव्य ते नैक्य॥ धनुर्व
 रा॥ २१॥ आतां विवेक कुमारत्व मुक्ते॥ ज्या विरक्तीचे पाणिग्रहण जाहाले॥ मग उपासना जिही आगिले॥ योगागमीचे॥ २२ ॐ०॥
 देवमेवापरे यज्ञयोगिनः पृथुपासते॥ ब्रह्मार्गनावपरे यज्ञं यज्ञैर्नैवोपजुह्वति॥ २५॥ टी०॥ जे यजनशील अहर्निशी॥ जिही अवि-
 द्याह विलीमने सी॥ गुरुवाक्य हुताशी॥ हवन केले॥ २३॥ तिही योगागिन कीं यजिजे॥ तो देव यज्ञ ह्यणिजे॥ जेणे आत्मस्वरूपा
 भिजे॥ पंडुकुमरा॥ २४॥ देवास्तव देहाचे पाळणा॥ ओचिति ना देह मरण॥ तो महायोगी जाण॥ देव योगी॥ २५॥ आतां अवधारीं सां-
 गेन आशिक॥ जे ब्रह्मार्गमी सागिनक॥ तया तें यज्ञे चिय जे देख॥ उपासिजे॥ २६॥ ॐ०॥ श्रोत्रादि तींद्रियापण्ये संयमाग्निपुजु-
 क्षेपक + ऐसा निश्चय परिपूर्णः पाठ. ओं. २४ जेथ. ओं. २५ साग.

॥ १॥

॥ १॥

ति॥ शब्दादीन्वषयानन्यदं द्रव्याग्निषु जुहति ॥ २६ ॥ टी० ॥ एकसंयमाग्निहोत्री ॥ तेषु त्रिष्यचा मंत्राः ॥ यजनकारितीयवित्री ॥ इन्द्र
 यद्रव्यी ॥ २७ ॥ एकावैराग्यरविषिष्यो ॥ तव संयती विहारकेले ॥ तेषु अपावृत्तजाहले ॥ इन्द्रियानळा ॥ २८ ॥ तिहो ॥ वरस्तीचिज्वाळाघेत
 ती ॥ तंव विकारावीं धनं पळी ॥ तेषु आशाधूमे सोढिली ॥ पांचही कुंडे ॥ २९ ॥ मग वाक्यविधी चिया निरवडो ॥ विषय आहुती उंदो
 हवन केले कुंडी ॥ इन्द्रियाग्निचा ॥ ३० ॥ मूलो ॥ सर्वणींद्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चारे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौ जुहति ज्ञानदीपिते
 २७ ॥ टी० ॥ एकीययापरीपार्या ॥ दोषक्षामिलसवथा ॥ ऐकान्द्रिया रणिमंथा ॥ विवेककेला ॥ ३१ ॥ तो उपासने निहाडिला ॥ धैर्यसारे दादि
 ला ॥ गुरुवाक्यें काढिला ॥ बळकटपणे ॥ ३२ ॥ ऐसं समरसं मंथनकेले ॥ तेषु झडकरीकाजाआले ॥ जेज्जीवनजाहले ॥ ज्ञानानीचें ॥ ३३
 पहिलो मूद्रासिद्धीचा संक्रम ॥ तो निवर्तौ निगला धूस ॥ मग मकटला सुक्ष्म ॥ विस्फुलिंगा ॥ ३४ ॥ तया मनानचें मोकळें ॥ तें चिपेटवणया
 तळें ॥ यमनियमी हळवारलें ॥ आइतें होतें ॥ ३५ ॥ तें पेंसादुकवणे ज्वाळासमृद्धा ॥ मग वासनोतरा चिया समिधा ॥ स्नेहें समिना वि
 धा ॥ जाळिल्या ॥ ३६ ॥ तथसो हंमत्रें दीक्षितो ॥ इंद्रियकर्माचिया आहुती ॥ तिये ज्ञानानकी प्रदीप्ती ॥ दिधिल्या ॥ ३७ ॥ पाठीया
 णाकर्माचिये सुवेनिशी ॥ पूर्णाहुती पडलिया हुताशी ॥ तेषु अवभृथ समरसी ॥ सहजें जाहलें ॥ ३८ ॥ मग आत्मबोधिचें स्वरव ॥
 जें संयमानीचें हुतशेष ॥ तें चिपुरोडाशदेख ॥ घेतला तिही ॥ ३९ ॥ एकरेण शिया इही यजनी ॥ मुकते जाहले त्रिभुवनी ॥ यायज्ञ
 क्रियातरी अनानी ॥ परिषाण्यतें एक ॥ ४० ॥ मूलो ॥ द्रव्यज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ॥ स्वाध्याग्नज्ञानयज्ञाश्च यतयः सं-
 शितव्रताः ॥ ४१ ॥ टी० ॥ एकद्रव्ययज्ञस्मरणपत्नी ॥ एकतपसामिश्रिया निपजवित्ती ॥ एकयोगयागही आहाती ॥ जेसांगीतले ॥
 ४१ ॥ एकीं शब्दीशब्दयजिजे ॥ तो वागयज्ञस्मरणिजे ॥ ज्ञानें जेयगमिजे ॥ तो ज्ञानयज्ञ ॥ ४२ ॥ हे अर्जुनासकळकुवाडें ॥ जे अनश्विना

पाठ-ओं ० ३१ आणकीं-ओं-३५ दमीं-ओं-३८ क्रिं-

अतिसांकडें॥ परिजतेंद्रियासीचि घडो॥ योग्यतावशें॥ ४३॥ तेपवीणतेथमले॥ आणियोगसमृद्धिआशिले॥ द्यणोंनिआप्
णपांतिहीकेंले॥ आत्महवन॥ ४४॥ श्लो०॥ अपानेजुव्हनिप्राणप्राणेपानंतथापरे॥ प्राणापानगतीरुध्वाप्राणायामपक्षय
णाः॥ २९॥ टी०॥ मगअपानाग्नीचेमुखी॥ प्राणद्रव्येंदरवी॥ हवनकेंलेएकी॥ अग्न्यासयोगे॥ ४४॥ एकअपानप्राणिंअर्पिती॥
एकदोहीतेंहीनिरुंधिती॥ तेप्राणायामीह्यणिपती॥ पंडुकुमरा॥ ४६॥ श्लो०॥ अपरेनियनाहाराः प्राणान्प्राणेषुजुव्हति॥ सर्वेयेहे
यज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्पाः॥ ३०॥ टी०॥ एकवज्रयोगक्रमें॥ सर्वाहारसंयमे॥ प्राणीप्राणसंयमे॥ हवनकरिती॥ ४७॥ ऐसे
मोक्षकामसकळ॥ समस्तइयजनशीळ॥ जिहीयसद्दारांमनोमळ॥ क्षाळणकेंले॥ ४८॥ जयाअविद्याजातजाळितां॥ जें
उरलेंनिस्त्रभावता॥ जेथअग्निआणिहोता॥ उरेंचिना॥ ४९॥ जेथजितयाचाकामपुरे॥ यज्ञीचेंविधानसरे॥ मागुतेंजैथोनि
वोसरे॥ क्रियाजाती॥ ५०॥ विचारज्जैनरिगे॥ हेनुज्यातेंनेथें॥ जैथैदूतदोषसंगें॥ लिंपेंचिना॥ ५१॥ श्लो०॥ यज्ञशिष्टाभूत
भुजोयांनिब्रह्मसनातनम्॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोऽन्यःकुरुसत्तम॥ ३१॥ टी०॥ ऐसेअनादिसिद्धचौरवट॥ जेंज्ञानयज्ञाव-
शिष्ट॥ तेंसेवितीब्रह्मनिष्ठ॥ ब्रह्माहमंत्रें॥ ५२॥ ऐमेशोषामतेंथाले॥ कींअमत्यभावाआले॥ द्यणोंनिब्रह्मतेजाहाले॥ अनाया
सें॥ ५३॥ यशोविरक्तिमाळनयालीचि॥ जयांसयमाग्नीचीसैवानघडेचि॥ जेयोगयागनकरितीचि॥ जन्मलेंसांते॥ ५४॥ जयांरे-
हिकथडनाहीं॥ तयांचेंपरत्रपुसशीकाई॥ द्यणोंनिअसोहेगोष्ठीपाहीं॥ पंडुकुमरा॥ ५५॥ श्लो०॥ एवंबहुविधायज्ञाविततान्न-
द्यणोमुखे॥ कर्मजांन्विद्धतांन्सर्वानेवंज्ञान्वाविमोक्ष्यसे॥ ३२॥ टी०॥ ऐसेबहुतींपरीअनेग॥ जेंसांगीतलेतुजकांयाग॥ ते-
विस्तारुनिवेदेंचांग॥ द्यणितलेआहाती॥ ५६॥ परितेणोंवस्मारेकायकरावें॥ हेंचिकर्मसिद्धजाणीवें॥ येतुलेंनिकर्मबंधस्वभा
पाठ-ओं०५१ जेथननिगे, जें. ३ओं. ५५ सांगोंकांवाई. ॥ ३५॥ ॥ ३५॥

वें॥ पावेलनां॥ ५७॥ श्लो०॥ श्रेयाद्रव्यमयाद्यज्ञात्तानयज्ञः परंतप॥ सर्वकर्मांस्त्रिलोपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते॥ ३३॥ टी०॥ अ-
 नुनावेदजयांचें मूळ॥ जे क्रियाविशेष स्मूळ॥ ज्यान व्हाक्ये फळ॥ स्वर्गस्वर॥ ५८॥ ते द्रव्यादिगणकीरहोती॥ परिज्ञान
 यज्ञाची मरीन पवती॥ जे सीताराते जसपती॥ दिनकरापाशी॥ ५९॥ देवें परमात्मस्वरुचिनिधान॥ साधवयायोगीजन॥ जे
 नविसें विती अंजन॥ उन्नोषनेत्री॥ ६०॥ जे धावतया कर्माची लाणी॥ नेक स्यबोधाची खाणी॥ जे मुकलिया धणी॥ साधना-
 ची॥ ६१॥ जेथ प्रवृत्ती पांगुळ जाहाली॥ तर्काची दृष्टी गोली॥ जेणें इंद्रिये विसरली॥ विषय संग॥ ६२॥ मनाचें मन पण गेलो॥
 जेथ बोलाचें बोलूक पण ठेलो॥ ज्यामाजि सांपडलें॥ जेथ वैराग्याचा पांग फिटो॥ निवेकानाही सोसतुढो॥ जेथ न
 पाहातां सहज भेटो॥ आपण पें॥ ६४॥ श्लो०॥ तद्दिक्षमणिपातेन परिग्रहेन सेवया॥ उपदेक्ष्यति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शि-
 नः॥ ३४॥ टी०॥ तें गाज्ञान पें बरवें॥ जरी मनीं अधिआणवें॥ तरी संतां तें कजावें॥ सर्व रसे सो॥ ६५॥ जे ज्ञानाचा कुरुठा॥ ते-
 थ सेवाहादारी वंठा॥ तो स्वाधीन करी स्फुभटा॥ वोळ गोनी॥ ६६॥ तरी तनुमनुजीवें॥ चरणासी लागावें॥ आणि अगर्वाकरावें
 ॥ दास्य समकळ॥ ६७॥ मग अपेक्षित जें आपुलें॥ तें ही सागातील पुसिलें॥ जेणें अंतःकरण बोधलें॥ संकल्यान ये॥ ६८॥ श्लो०॥ य-
 क्षात्वा न पुनर्मे हेमवयास्य शिपांडव॥ येन भूतान्यशेषेण द्रव्यास्यात्मन्यशोभयि॥ ३५॥ टी०॥ जयाचें निवास्य उजि वडें॥ जाहलें वि-
 त्ति निधडें॥ ब्रह्माचें निपडें॥ निःशंक हाये॥ ६९॥ ते वेळीं आपण पें यासहितें॥ इयें अशेषो हसतें॥ माझा स्वस्व अंभिर वंडितें॥ देव सीतू
 ॥ ७०॥ ऐसें ज्ञानमकाशे पाहिल॥ तें मोहांध करजार्जिल॥ जें श्रीगुरुकृपा होइल॥ पार्थांगा॥ ७१॥ श्लो०॥ अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः
 पापहृत्तमः॥ सर्वज्ञानपूर्वैर्न वृजिनं संति रम्यासि॥ ३६॥ टी०॥ जरी कल्मषाच आगर॥ दूळीतीचा सागरा॥ व्यामोहाचा डोंगर॥ हो
 पाठ० नही०॥

॥ ५॥

॥ ६॥

॥ ७॥

॥ ८॥

उभिअससी॥७२॥ तद्द्विज्ञानशक्तीचेनिपाडें॥हेंआघवेंचिगाथाकडें॥ऐसेंसामर्थ्यअसेचोरवडें॥ज्ञानीइयो॥७३॥देखेंविश्व
 संप्रभमारेसा॥जोअमृतचाकडवस॥तोजयांचियाप्रकाशा॥पुरेचिना॥७४॥तयाकायसेहेमनोमळ॥हेबोलतांचिअतिकिडा
 क॥नाहीचिणेंपाडेंदिसाळ॥दुजेजगी॥७५॥श्लो०॥यथैथांसिसाभिद्धेनिर्मत्ससाकुरुतेषुन॥ज्ञानग्निःसर्वकर्माप्तिर्मत्ससा
 कुरुतेतथा॥३७॥टी०॥सांगेभुवनत्रयाचीकाजळी॥जेगगनामाजिउधवली॥तियेप्रकयीचेवाहुळी॥कायअम्नपुरे॥७६
 कीपवनाचेनिकोपें॥पाणियेंचिजोपळिपे॥तोप्रळयानळदडपे॥तृणकाष्ठेकाइ॥७७॥श्लो०॥निहृज्ञाननसदशंपवित्रमिहविद्य
 ते॥तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविदति॥३८॥टी०॥ह्मणोभिअसोहेनघडें॥तेंविचारितांचिअसंगडें॥पुढतिज्ञानाचेनिपाडें॥
 पवित्रनिदिसे॥७८॥एथज्ञानहेंउत्तमहोये॥आणिकहीएकतेमेंकेंआहे॥जैसेंचेतन्यकानोही॥दुसरेंगा॥७९॥यामहातेजाचेनिक
 से॥जरीचोरवाळप्रतिबिंबदिसे॥कांगिविसिलेंगिवसे॥आकाशहें॥८०॥नातरीपृथ्वीचेनिपाडें॥कांठाकेंजरीजोडे॥तरीउपमाज्ञानी
 घडे॥पंडुकुमरा॥८१॥ह्मणूनिवहुनींपरीपाहतां॥पुढतपुढतीनिर्धारितां॥हेज्ञानाचीपवित्रता॥ज्ञानींचिआथि॥८२॥जैसीअमृ
 तचीचिर्वीनिवडिजे॥तरीअमृतांचिसारिस्वीह्मणिजे॥तैसेंज्ञानहेंउपमिजे॥ज्ञानंसीचि॥८३॥आतांयावरीजेंबोलणें॥तेंवायांचि
 वेळफेडणें॥तंवसाचिहेंपार्थह्मणें॥जेंबोलतअसां॥८४॥परितेंचिज्ञानकेविजाणावें॥ऐसेंअजुनजंवपुसावें॥तंवतेमनोगतदे
 वें॥जाणीतलें॥८५॥मगह्मणतसेकिरीटी॥आतांचितेदीयेगोठी॥सांगेनज्ञानाचियेमेठी॥उपायतुज॥८६॥श्लो०॥अद्वा
 वानुलभतेज्ञानंतस्परःसंयतेद्वयः॥ज्ञानंलब्ध्यापरांशंतिमचिरेणाधिगच्छति॥३९॥टी०॥तरीआत्मस्वरवाचिगोडिया॥विटः
 जोकांसकळविषयी॥जयाचाठायींदंद्रियां॥माननाहीं॥८७॥जोमनासीचाडनसांगें॥जोप्रकृतीचेंकेंलेनेये॥जोअद्वैचेनिम
 पाठ॥ओं॥७२॥आहासीः ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥

भोगों॥ स्मरिवंयाज्राहाला॥ ८८॥ तयतौचिगिवसित॥ तेंजानपावेनिश्चित॥ तयामाजिअचुंबित॥ शांतिअसे॥ ८९॥ तेंज्ञानस्वर्या
 प्रतिष्ठे॥ आपिशंतीचाअंकुरफुटे॥ मगविस्तारबहुप्रकटे॥ आत्मबोधचा॥ ९०॥ मगजेउतौवासपाइजे॥ तेउतीशांतीचिबोविते
 रिवजे॥ तेथआपपरनेषिजे॥ निर्द्वारिता॥ ९१॥ ऐसाहाउत्तरोत्तर॥ ज्ञानबीजाचाविस्तार॥ सांगतंअसेअपार॥ परिसंसांआ-
 ता॥ ९२॥ ॥ अज्ञाश्चाद्बुधानश्चसंशयास्माविनश्यति॥ नायलोकोस्तिनपरोनस्वरुवसंशयात्मनः॥ ४०॥ ॥ ॥ ऐकंजयाप्रा-
 णियाच्चाठायी॥ इयां ज्ञानाचीआवडीनाही॥ ज्याचेंज्यालेंद्वणोंकाई॥ वरीमरणचांग॥ ९३॥ शून्यजेसंरुहा॥ कांचैनन्येवीणदेह
 तेंसेंजीविततेंसंमोह॥ ज्ञानहीना॥ ९४॥ अथवाज्ञानकीरअपुनोहे॥ तरितेचाडएकीजरीवाहे॥ तरितेथजिब्लाळाकाहीआहे॥
 प्राप्तीचापें॥ ९५॥ वंचूनिज्ञानाचीगोठीकायसी॥ परितेंआस्थाहीनपरीमानसी॥ तरितोसंशयरूपहुतशी॥ पडलाजाण॥
 ९६॥ जेअमृतहीपरिनावडे॥ ऐसेंसावियाचिआरोचकजेंपडे॥ तेंमरणआलेंअसेंपुढें॥ जाणोंएकी॥ ९७॥ तेंसाविषयस्वरुजें॥
 जो ज्ञानेसींचिमजे॥ तोसंशयअंगीकारिजे॥ एथक्यांतिनाही॥ ९८॥ मगसंशयजरीपडिला॥ तरनिश्चयान जाणेंनासला॥ तोरोह
 कपरचाभुक्ला॥ करवासिगा॥ ९९॥ ज्याकाळज्वरआंगीबाणो॥ तोशीतोथोंजेंशीनेणो॥ आंगींआणिचांभणें॥ सरिसेंचिमायी॥
 १००॥ तेंसेंसाचआणिलटिकें॥ विरुद्धैथवानिकें॥ संशयीतोनोंकरवे॥ हितहित॥ १०१॥ हाराविदिवसपाही॥ जेंसाजाल्यंघांठाउ
 वानाही॥ तेंसेंसंशयअसतांकांही॥ मनानये॥ १०२॥ ॥ यंरागसंन्यस्तकर्मापांज्ञानमंछिन्नसंशयम्॥ आत्मवतनकर्मा-
 णिनिबभ्रंतिर्भनंज॥ ४१॥ दीद्वणर्तिसंशयाहूभियोर॥ आणिकनाहीपापयोर॥ हावनाशाचीवायुर॥ माणियोंसि॥ ३॥ येणें
 कारणेंतुवांत्यजावा॥ आधींठाविणकजिणावा॥ जो ज्ञानाचियाअप्तावा॥ माजिअसे॥ ४॥ जेंज्ञानाचगडपडे॥ तेंहाबहुवसम्
 नीवाटे॥ द्वाणोभिसर्वथाभोगेंमोडे॥ विस्वासाचा॥ ५॥ त्दयोंहाचिनस्मया॥ बुद्धिर्तेगिवहूनिठये॥ तेथेंसंशयात्मकहोये॥ लोकत्रय॥

पाउ-ओं-६३ परियेसीं ओं- १ आणि-

श्लो० ॥ तस्मादज्ञानसंभूतं तत्स्थानानां सनात्वनः ॥ ध्रुत्वेन संशययोगमातिष्ठानिष्ठकारण ॥ ४२ ॥ इति श्रीमद्भागवद्गीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायोगशब्दे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ब्रह्मार्पणयोगनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ टी० ॥ ऐसाजरीयोगवे ॥ तरीउपायेएकेंआंगविभजरी
हूतीहोयबरो ॥ ज्ञानरड्ड ॥ ७ ॥ तरीतेणेंज्ञानशक्तितरवटे ॥ निखळहानिवटे ॥ मगनिःशेषरयनाफटे ॥ मानसींचा ॥ ८ ॥ साकारेणंपा
थी ॥ उठोचंगीवरीता ॥ नाशकरोनिहृदयस्थ्या ॥ संशयासी ॥ ९ ॥ ऐसेसर्वज्ञाचाबाप ॥ जोश्रीकृष्णज्ञानदीश ॥ तोद्वानतमेसहसा ॥ ऐकैतया
॥ १० ॥ तंवयापूर्वापरबोलाचा ॥ विचारूनि कुमरपंडूचा ॥ कैसाप्रश्नअवसरीचै ॥ करिताहोइल ॥ ११ ॥ तेकथेचीसंगती ॥ भावाचीसंपत्ती ॥
रसंत्तीउभती ॥ द्वाणिपेलपुढा ॥ १२ ॥ जयाचियावरवेषणी ॥ कीजेआठांरसांचीवोंवाळणी ॥ जोसज्जनांचियेआयणी ॥ विसावाजगी ॥ १३ ॥ जो
श्रान्तिचिअभिनेवैला ॥ तेपरियसामन्हाटेबोल ॥ जेसमुद्राहनिमंखोल ॥ अर्थसरित ॥ १४ ॥ जैमेंबिंबतरीबचकेएवढे ॥ परिप्रकाशासिन्निभु
वनथोकडे ॥ शब्दाचिव्यासितेंपाडे ॥ अनुभववी ॥ १५ ॥ नातरीकाभितयांचिइछा ॥ फळेकल्यवृक्षजैसा ॥ बोलव्यापकहोयतसा ॥ तरी
अवधानयावें ॥ १६ ॥ हेंअसोकायह्मणावें ॥ सर्वज्ञजाणतीस्वभावे ॥ तरीनिर्केचित्तयावें ॥ हेविनंतंमाझी ॥ १७ ॥ जैसाह्रित्यआणिशांसी
हेरेवादिमेबोलती ॥ जैसीलावण्यगुणकुळवती ॥ आणिपतिव्रता ॥ १८ ॥ आधींचसास्वरआवड ॥ तेचिजरीऔंघपासीजोडे ॥ तरीसे
वर्तनाकाकोडे ॥ नावानावें ॥ १९ ॥ सहजेमलयानिलमंदसंगंध ॥ तयाअमृताहोयस्वाद ॥ आणितेंथेचिजोडेनाद ॥ जरीदेवगत्या ॥ २० ॥
तरीस्पर्शसवोंगनिववी ॥ स्वादेंजिह्वेतेंनाचवी ॥ तेवींचिकानाकखीह्मणावें ॥ बापमाझा ॥ २१ ॥ तेंमेकथेचेंदयेरेकणें ॥ एकअवणासिंदोय-
पारणें ॥ आणिसंसारदुःखमूळजवणें ॥ विकृतीविणें ॥ २२ ॥ जरीमेंचिचैरीमरे ॥ तरीवायांकांबाघेकटारें ॥ रोगजायदुधेंसारवरे ॥
रीनिंबकीधियावा ॥ २३ ॥ तेंसामक्षचाभारनकरिता ॥ आणिइंद्रियादुखनदेता ॥ एथमाक्षअसेआयता ॥ अघणांनिमाजि ॥ २४ ॥ दीष्टा ॥ नआथक्षि
याआराणका ॥ गीताथेहातिका ॥ ज्ञानदेवह्मणेआइका ॥ निवृत्तिदास ॥ २५ ॥ इति श्रीप्रावर्थादीपकायां ज्ञानदेवविरचितायाचतुर्थोऽध्यायः ॥
पाठः ओं. ५ भागः ओ. ११ हनअवसरीचा. ओ. १४ खोल. ओ. १९ ओतवदी. ओ. २२ मळवणें.

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ॥ यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्
 १॥ टी० ॥ मगपार्थ श्रीकृष्ण तं ह्यणे ॥ हाहा हं कसे तु मन्चे बोलणें ॥ एक हाव तरी अंतःकरणें ॥ विचारूं ये ॥ १॥ मागास कळकृमाचि
 संन्यास ॥ तुहीच निरोगि प्लाहोता बहुवस ॥ तरी कर्मयोगां कुवि अतिरस ॥ योगवीत सांपुदनी ॥ २॥ ऐसं द्यय हं बोलतां ॥ आह्वा न पात
 यांच्या चित्ता ॥ आपुलिये चाडें श्रीअनंता ॥ उमज न हो ॥ ३॥ एके एक सारांतें बोधिजे ॥ तरी एक निश्चि बोलिजे ॥ हें आणि कीं काय खांशि
 जे ॥ तुह्मां प्रति ॥ ४॥ तरी याचि लागी तुमतें ॥ म्यारा उळासि विन विलें होतें ॥ जेहा परमार्थ ध्यानि तें ॥ न बोलवा ॥ ५॥ परी मागील अ-
 सोदेवा ॥ आतां प्रस्तुती उकल देखावा ॥ सांगें दाही माजि बरया ॥ मार्ग कवणा ॥ ६॥ जो परिणामी चिनि वर्ळा ॥ अचुं बितय फळा ॥ आणि अ-
 बुद्धितां प्राजळा ॥ सावि याची ॥ ७॥ जैसो निद्रेंचें सुख न मोडें ॥ आणि मार्ग तरी बहु साल सोडें ॥ तें संस्तु खास न सांगडें ॥ सोहणें होये ॥ ८॥
 येणें अर्जुन चिनि बोलें ॥ देवो मनीं रिझलें ॥ मग हाईल एकें स्मणितलें ॥ स्तोत्रो निया ॥ ९॥ देखवा कामधनु ऐसी माये ॥ मदेवा जया हो
 ये ॥ तोच दही पारि लाहे ॥ खेळावया ॥ १०॥ पाहणें श्रीशंभूची प्रसन्नता ॥ तथा उपमन्यु चिया आता ॥ काय क्षीराब्धि द्रूपभाता ॥ देइजे चि-
 ना ॥ ११॥ तें सांभोदार्थ चाकुरुठा ॥ श्रीकृष्ण आपुजा हालिया सुभटा ॥ कांसर्व सुखाचा वसोटा ॥ तो चि नो हावा ॥ १२॥ एथच मत्कार काय
 सा ॥ गोसावी श्रीलक्ष्मी कांता ऐसा ॥ आतां आपुलिया सर्वसा ॥ मागावा कीं ॥ १३॥ ह्यणो निअजुनें स्मणितलें ॥ तें हांसां निया रेईं धूळें
 ॥ तें चि सांगें बोलिलें ॥ काय कृष्ण ॥ १४॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ संन्यासः कर्मयोगश्च निश्चयेय सकरावृत्तौ ॥ तयोस्तु कर्मस-
 न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २॥ टी० ॥ तो ह्यणो गाकुनी सुता ॥ हंसन्यास योगविचारितां ॥ मोक्ष करतलता ॥ दोनीही होली ॥ १५॥
 तरी जाणानेणा सकळा ॥ हाकर्मयोग कीर प्राजळा ॥ जैसी नाचि स्थियां बाळां ॥ तोय तरणी ॥ १६॥ तें सें सारा सारणां हिजे ॥ तरी स्मेह-
 पाठ ॥ ओं ॥ ४ सरातें ॥ ओं ॥ ५ माहेरासि ॥ ओं ॥ ७ सविचाची ॥ ओं ॥ ८ सापडें ॥ ओं ॥ ९३ कीना

पाहाचि देखिजे॥ येणें संन्यास फळाहिजे॥ अनायासे॥ १७॥ आंतोयाचि मारी सांगेन॥ तजस न्यासियाचें चिन्ह॥ मग सहजे
 अभिन्न॥ जाणसीतू॥ १८॥ श्लो०॥ ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति॥ निर्द्वेषो हर्महाबा ह सुखवधात्यमुच्यते॥
 ३॥ टी०॥ तशी गोळियाची सेन करी॥ न पवतांचा डन धरी॥ जो सुनिश्चळ अंतरों॥ मरुजे सा॥ १९॥ आणि मी माझे एसी आठवणा॥
 विमर लेंजयाचें अंतःकरण॥ पार्थातासंन्यासी जाणा॥ निरंतर॥ २०॥ जो मनें ऐसा जाहाला॥ संगतीचें सांडला॥ म्हणोनि मुखें
 सुख पावला॥ अखंडित॥ २१॥ आतां गृहादिक आघवें॥ तें काही न लगेत्यजवें॥ जेवते जाहाले स्वभावे॥ निःमग म्हणुनि ॥
 २२॥ देखे अग्नि विझोनि जाये॥ मग जे राखाडी केवळ हाये॥ तें तें कापुस गिवसूये॥ जिया परी॥ २३॥ तें सा आसतें निरुपाधी॥ ना
 कळिजे तो कर्मबंधी॥ ज्याचें ये बुद्धि॥ सकल्य नाही॥ २४॥ म्हणोनि कल्यन जें सांडे॥ तें चिगास न्यास घडे॥ इयें कारण दोनी सा
 गडे॥ संन्यास योग॥ २५॥ श्लो०॥ सारव्य योगोऽथ गबलाः प्रवर्तित न पंडिताः॥ एक मय्या स्थितं सव्य गुणयो विदते फलम्॥
 २६॥ टी०॥ येन्हवीं तरी पार्था॥ जें मूरख हातीस वथा॥ ते सारव्य योग संस्था॥ जाणतीं केवी॥ २६॥ सहजे ते अज्ञान॥ म्हणोनि ह्य
 णती तें भिन्न॥ येन्हवीं दीपाची तका इ आनान॥ प्रकाश आहती॥ २७॥ पेंसव्य कृएक अनुभवें॥ जिही देखिलें तत्त्व आघवें॥ ते
 दोही तें ही ऐक्य भावें॥ मानिती गा॥ २८॥ श्लो०॥ यत्सारव्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगोऽपि गम्यते॥ एक सारव्य च योग नयः पश्यति सप
 श्यति॥ २९॥ टी०॥ आणि सारव्यी जें पाविजे॥ तें चि योगीं गंभिजे॥ म्हणोनि ऐक्य दोही तें सहजे॥ इया परी॥ ३०॥ देखें आकाशा
 णि अवकाशा॥ भेद नाही जें सा॥ तें सें ऐक्य योग संन्यासा॥ वोळखे जो॥ ३१॥ तयासीं चि जगी पाहिळें॥ आपण पेंते पोचें देखिलें॥
 जया सारव्य योग जाणवले॥ भेदे विण॥ ३२॥ श्लो०॥ स न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः॥ योगयुक्तो मुनि ब्रह्म निचिरे
 पाठ॥ ओ० २६॥ कर्मः

णाधिगच्छति॥ ६॥ टी०॥ जायुक्तिपथपर्या॥ चंदमोक्षपर्वता॥ नोमहासुरवाचांनिमथा॥ वहिहापावे॥ ३२॥ येराथोगास्थिनी-
जयासाडे॥ तोवायोचिगाहव्यासपडे॥ परप्राप्तिकहांनघडे॥ मन्यासाची॥ ३३॥ श्लो०॥ योगयुक्ताविशुद्धात्माविजितात्माजि-
तेद्रयः॥ सर्वभूतात्मभूतात्माकुर्वन्पिन्नलप्यते॥ ७॥ टी०॥ जणंभ्यान्तापासूनिहिरतले॥ गुरुवाक्यमनधुतले॥ मगश्चात्म-
स्वरूपीयातले॥ रौडिनिया॥ ३४॥ जेसंसमुद्रीलवणनपडे॥ नववेगळेअल्पआवडे॥ मगहायसंधूचिएवटे॥ भिळेतळो॥
३५॥ तेसंसंकल्योनिकाटिले॥ जयाचंभनचिचतन्यजाहाले॥ तणांकूदशियपरिव्यापिले॥ लोकत्रय॥ ३६॥ आतांकर्तकर्मकरा-
वे॥ हेंखुटलतयासंभावे॥ आणिकरीजन्हीआघवे॥ तन्हीअकर्तो॥ ३७॥ श्लो०॥ नैवाकिचिक्तरापीतियुक्तोभन्येततत्त्ववि-
त॥ पश्यन्शृण्वन्स्पृशन्जिघ्रश्चनगच्छन्स्वपन्स्वप्नम्॥ ८॥ प्रलभन्विजसजगणहन्नुन्मिषन्भिभषन्प्राप॥ इद्वियाणींद्रि-
यार्थेषुर्वर्ततइतिथारयन्॥ ९॥ टी०॥ जपाथातयादर्ही॥ मीएसाआउनाही॥ तरीकर्तृत्वकचेंकाई॥ उरसांगे॥ ३८॥ ऐसेतनु-
त्यागोवणे॥ अमर्ताचेगुण॥ दिसतीत्संपूर्ण॥ योगयुक्ता॥ ३९॥ येन्हवोआणिकांच्यपरी॥ तोहीएकशरीरी॥ अशेषांहीव्या-
पारी॥ वर्ततदिसा॥ ४०॥ तोहीनेवीपाहे॥ श्रवणीएकतआहे॥ परीतींश्चासर्वथानोहे॥ नवलदेखे॥ ४१॥ स्पर्शासितरीजाणे॥ परि-
मळसंवीघ्राणे॥ अवसरोचिंतबोलणे॥ तयाहिआधि॥ ४२॥ आहारातेस्वीकारी॥ त्यजावेंतेपरिहारी॥ निर्दोचियाअवसरी॥ निर्दि-
जेसुखे॥ ४३॥ आपुलेनिइच्छावरो॥ तोहीगाचालतदिसा॥ पेंसकळकर्मएसे॥ ग्राहटेकीर॥ ४४॥ हेंसांगोकाइएकेका॥ देखेस्वा-
मोश्वासादिक॥ आणनिमिषोन्मिषाष॥ आदिकरूनि॥ ४५॥ पाथातयाचेंठाई॥ हेंआघवेचिआधिपाही॥ परितोकर्तानव्हेका-
ही॥ प्रतीतिबळे॥ ४६॥ जेभ्यातिसेजसुतला॥ तेस्वभसुखवसुतला॥ मगतांजानादरीचेंइला॥ दणोनिया॥ ४७॥ श्लो०॥ ब्र-
पाठ-ओं-३२सुरवाचेनिमाषां ओं-३४हिरानिमां ओं-३७तयांचे-ओं-४०अष्टाष-ओं-४२स्पर्श-अवसरोन-

पाठ.ओं.३२.सुखचिन्मयां ओं.३४.ह्रियिनां ओं.३७.नयानं.ओं.६०.अप्राप.ओं.६२.स्य.अवसरोन्व

ह्यप्याथावकर्मणि सगंत्यत्कां करोति यः ॥ लिप्यते न स पापेन पदपत्रमिवांमसा ॥ १० ॥ दी ० ॥ आतो अधिष्ठानसंगती ॥ अशेषाही
 शं द्विपवृत्ती ॥ आपुला लियार्थी ॥ वर्तत आहती ॥ ४८ ॥ दी पाचे निप्रकाशे ॥ गृहीचे व्यापारजैसो ॥ देहो कर्मजाततैसे ॥ योगयु
 क्ता ॥ ४९ ॥ तोकर्मकरीसकळे ॥ परीकर्मबधानकळे ॥ जैसं न संपेजळीजळे ॥ पदपत्र ॥ ५० ॥ म्हा ० ॥ काये न मनसा बुद्ध्या केवल
 शं द्विपे रापि ॥ योगिनः कर्मकुर्वति सगंत्यत्कां सुबुद्धये ॥ ११ ॥ दी ० ॥ देखें बुद्धीची भाषे निज ॥ मनाचा अकुरु नु देजे ॥ ऐसा व्यापा
 रतो बोलजे ॥ शारीरगा ॥ ५१ ॥ हें च मराठे परिश्रमी ॥ तरी बाळकाची चेष्टा जैसी ॥ योगिये कर्मकां शीतैसी ॥ कवळ्यात नू ॥ ५२ ॥
 मग पांच भौतिक संचले ॥ जेव्हा शरीर असो निदले ॥ तें ये मन चिराहा टाकले ॥ स्वप्नी जेवीं ॥ ५३ ॥ नवल ऐकें धनु धरा ॥ कसा वा-
 सन चा संसारा ॥ देहा हो ने दी उजगरा ॥ पुरी मुख दुःख भोगी ॥ ५४ ॥ इंद्रियांचा गांवीं निज ॥ ऐसा व्यापार जो निपजे ॥ तके व
 क्का गद्दा निज ॥ मानसाचा ॥ ५५ ॥ योगिये तो हो कारिनी ॥ परी कर्म ते न बधिजती ॥ जे सांडिली आहे संगती ॥ अहं भावाची ॥ ५६ ॥
 आतां जाहा लिया फल महत ॥ जैसो पिशाचाचें चित्त ॥ मग इंद्रियांचें चित्त ॥ विकळ दिसे ॥ ५७ ॥ स्वरूप तरी देखे ॥ आळविलें आ-
 इके ॥ शब्द बोले सुखें ॥ परिदान नाही ॥ ५८ ॥ हें असो कांजो विण ॥ जें कांही करणें ॥ तें केवळ कर्मजाण ॥ इंद्रियांचे ॥ ५९ ॥ मग सर्व
 न जे जाणत ॥ तें बुद्धिचें कर्म निरुते ॥ वोळख अजुनात ॥ ६० ॥ तें बुद्धिदुर करनी ॥ कर्मकां शी चित्त देनी ॥ परिते कर्मपासु
 नी ॥ सुकृदिसती ॥ ६१ ॥ जे बुद्धीचिये दावु ने देही ॥ तथा अहंकाराचें संचिनाही ॥ ६२ ॥ अणानिकर्म करिता पाही ॥ चोखाळले ॥ ६३ ॥ आमां फुरित
 नवीण कर्म ॥ तें चित्तो न फर्म ॥ हें जाणती सुखम ॥ गुरुगाम्य ज ॥ ६४ ॥ आतां शांतर साचें मरिते ॥ सांडीत आहे पात्रांतें ॥ जे बोलणें बोला परितें ॥
 बोलवले ॥ ६५ ॥ एथ इंद्रियांचा पाग ॥ जया फलला आहे चराग ॥ त्यासी चि आथि लागा ॥ परिमावया ॥ ६६ ॥ हा असो अतिपसंगा ॥ न संडी पांक्शा

लाग॥ होईल श्लोक संगती संग॥ स्वर्ण उनिषां॥ ६६॥ जंमना आकृति कुवाडें॥ घागुसिता बुद्धी न तुडें॥ तें देवाचे निस्सर वाडें॥ सांगवेलें तुज
 ॥ ६७॥ जेशब्दतीत स्वभावं॥ तें बोलें चिजरी फावें॥ तरीं आणि कंकाय वरावें॥ कथा सांगों॥ ६८॥ हा आर्ति विशेष श्रोतयाचा॥ जाणोनि दास
 निवृत्तीचा॥ स्वर्ण सवा दद्याचा॥ परि सांनिपरिया॥ ६९॥ मग श्रीकृष्ण द्वाणे पार्थना॥ आतां पाप्माचें चिन्ह हुरतें॥ सांगेन तुज निरुतें॥ जितें दे
 ई॥ ७०॥ श्लो॥ युक्तः कर्मफलं त्वत्काशं तिमसांति नैष्ठिकां॥ अयुक्तः कामकारेण फलं सत्तो निबद्धयते॥ ७१॥ तरीं आत्मयोग
 आधिका॥ जे कर्म फळाशीं विटला॥ तो धरियां न वारला॥ शांति जगों॥ ७२॥ येर कर्मबंधीं करी दी॥ अभिलाषा चिया गाठी॥ कळा सलाखे
 दी॥ फळ प्रोगाचा॥ ७३॥ श्लो॥ सर्व कर्माणि मनसा मन्यस्यास्तं सुखवशी॥ नव द्वारे पुरे देही नें व कुन् कारयेत्॥ ७४॥ टी॥ जसा फळा
 चिये हावें॥ तें स कर्म करी आयवें॥ मग न कीजें वयेणें भावें॥ उपेक्षी जा॥ ७५॥ तो जया कडें वास पाहे॥ तें उतीं सुखाचीं स्त्रिं हाये॥ तो ह्य
 पोते थराहे॥ महा बोधा॥ ७६॥ नव द्वारे देही॥ तो असत चीं परि नाही॥ करि मचिन करी कांही॥ फळ त्यागी॥ ७७॥ श्लो॥ न कर्तृत्वं न क
 र्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः॥ न कर्मफलं स याग स्वभावं स प्रवर्तते॥ ७८॥ टी॥ जसा कां सर्वे स्वरा॥ पाहिजे तें व निव्यापार॥ परि तो चिर
 चीं विस्तार॥ त्रिभुवनाचा॥ ७९॥ आणि कृतो ऐसं ह्यणि पें॥ तरीं कवणे कर्म निशि पें॥ जे हात पावो न मिं पें॥ उदास वृत्तीचा॥ ८०॥ योग
 निद्रा तरीं न मोडे॥ अकर्त पणास कु न घडे॥ परि महा मूर्तांचें दळ वाडें॥ उभा रीं भलें॥ ८१॥ जगाचा जो र्वा आहे॥ परीं कवणाचा कही
 नाहे॥ जग चिहं होय जाये॥ तो सुद्धी ही नेणे॥ ८२॥ श्लो॥ ना दत्तं कस्य चित्पापनं चैव सुकृतं विभुः॥ अज्ञानेना वृतं ज्ञानेन सु
 द्योतितं तव॥ ८३॥ टी॥ पाप पुण्य अशेषां॥ पाप्मां चि असतु न देखें॥ आणि साक्षी ही हो उनि नावें॥ येरीं गोष्टी काय सी॥ ८४॥ पै
 मूर्तीचि न भेळें॥ तो मूर्ते चि हो उनि सवें॥ परि अमूर्त पण न भेळें॥ दाडुलयाचें॥ ८५॥ तो मूर्ती पाळीं संहारी॥ ऐसें बोलती जे चराचरी॥ ते अ
 पाद॥ ओ॥ ६७॥ श्लो॥ ओ॥ ७२॥ एक॥ ओ॥ ७३॥ ऐसें॥ ओ॥ ७४॥ वी॥ ओ॥ ८०॥ त्रिपंजरासी॥

ज्ञानगाअवधारी॥ पंडुकुमरा॥ ८२॥ श्लो०॥ ज्ञानेन तु तदज्ञानयेषां नाशितमात्मनः॥ तेषामादित्यवत्तानमकाशयितत्सम्॥
 १६॥ टी०॥ तेषां ज्ञानजममुक्तवुद॥ तेषां ज्ञानेन तदज्ञानयेषां नाशितमात्मनः॥ तेषामादित्यवत्तानमकाशयितत्सम्॥
 मानलजरीचिन्ता॥ आपणितोचिमीहस्वभावता॥ आदीचिआहो॥ ८६॥ ऐसेनि विवेकें उदोचिन्ता॥ तयां सिमदकेचाञ्जिगती॥
 देखे आपुलियाप्रतीती॥ जगचिमुक्ता॥ ८५॥ जैशी पूर्वीदेशे चारउकी॥ उदयाची सूर्ये दिवाळी॥ कीचेरी ही दिशा॥ तयचि काळी॥
 काळीमाना ही॥ ८६॥ श्लो०॥ तदुद्धयस्तदात्मानस्मिष्टास्तत्परायणाः॥ गच्छत्युपुनरावृत्तिं ज्ञाननिधूतकल्मषाः॥ १७॥
 टी०॥ बुद्धिनिश्चये आत्मज्ञान॥ ब्रह्मरूपभावी आपणा आपणा॥ ब्रह्मनिष्ठाराखे पूणे॥ तत्सरायण अहनिशी॥ ८७॥ ऐसे व्यां
 पकज्ञानमले॥ जयांचिया तद्दयागि वासित आलें॥ तयांची समता दृष्टिबोले॥ विशेपूकाई॥ ८८॥ एक आपण पोचि जैसे॥ ते देव
 ती विश्वतेसे॥ हे बोलणें कायसे॥ नवल एथा॥ ८९॥ परी देव जें सेक वतिके॥ कहींचि देव्यन देखे॥ का विवेक हानो करवे॥ फांतो ते
 जेवीं॥ ९०॥ नातरी अंधकाराची वाणी॥ जें सासून ते देखे स्वमी॥ अमृत नाय के कानी॥ मृत्यु कथा॥ ९१॥ हे असो संताप के-
 सा॥ चंद्रनक्षर जैसा॥ मूर्ती भेदे नेणती तेसा॥ ज्ञानियेते॥ ९२॥ श्लो०॥ विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि॥ गु-
 नि चैव श्वपाके च पडिताः समदर्शिनः॥ १८॥ टी०॥ मग हा मशकु हा गज॥ कीं श्वपच हा हज॥ पैल इतर हा आत्मज॥ हे
 उरलें॥ ९३॥ नातरी हे धेनु हे चूना॥ एक गुरु एक हीन॥ हे असो केचें स्वभ॥ जागतया॥ ९४॥ एथ भेद तर कीं दुस्वाबा॥
 जरी अहं भाव उरला हो आवा॥ तो आर्थी चिना ही आयवा॥ आतं विषमकाई॥ ९५॥ श्लो०॥ इह वै तेजितः स गगै यथा सा-
 म्ये स्थितमनः॥ निदोषा हि समब्रह्मा तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥ १९॥ टी०॥ ह्यर्णा नि सर्वत्र सात्मम॥ तें आपणांचि अद्भ्य ब्र-
 षाट्-ओं-११ नेणे-ओं-१३ उरल-ओं-१५ कें-आपण-

हा॥ हंसपूर्णजाणैवर्म॥ समदृष्टांचे॥ १६॥ जहीं विषयसंगनसांडितां॥ इंद्रियतेनंदितं॥ परिमोहिनीः संगता॥ काम
 नेविण॥ १७॥ जहीं लोकांचे निआधारे॥ लोकें केचि व्यापारे॥ परिमोडिलें नंदसुरें॥ लोकें केहे॥ १८॥ जैसा जनामाजिरेवंच
 रा॥ असचि जना नव्हे गोचरा॥ तसा शरीरा परि ससार॥ नोळखेत यातें॥ १९॥ हें सोपवनाचे निमेलें॥ जें सेंजळीचि जळो-
 के॥ तें आणिकें दगती वेगळे॥ कळोव्हे॥ २०॥ तें सें नामा रूप तयाचें॥ येहवीं जो ब्रह्मचि तासाचें॥ मनसाच्या आलें जयाचें॥ स
 र्वत्रगा॥ २१॥ ऐसे नि समदृष्टी जो होया॥ तथापूरुषा नृक्षण हीं आहें॥ अर्जुनासक्षेपें सांगे न पाहें॥ अच्युत हाणें॥ २२॥ भ्लो०॥ न प्र
 दूष्येत्स्वयं माय नो द्विजे साप्य चापि यम॥ स्थिरबुद्धिरसंभूदो ब्रह्मविद्वद्भाषि स्थितः॥ २३॥ तरी मृगजळाचे निपूरें॥ जें सें न
 लोद जे कां गिरि वरें॥ तें सायुष्मायुष्मीं न वकरें॥ पातलिया जो॥ २४॥ टी०॥ तरी मृगजळाचे निपूरें॥ जें सें न
 तोचि ब्रह्म॥ २५॥ भ्लो०॥ बाह्यस्पृशस्व सत्तात्सा विंदत्यात्मनि यत्स्वरूपम्॥ स ब्रह्मयोगगुक्तात्मा स्वरूपमक्षय्यमभ्युते॥ २६॥ टी०॥
 जो आपण पें सांडुनि कांहीं॥ इंद्रियमावरी येणें नाहीं॥ तो विषय न सें वेहें कांई विच एव॥ २७॥ सहजें स्वसुखाचें निअपारें॥ सुखा
 डलें निअंतरें॥ रत्न लाहाण उनि बाहिरें॥ पाउल न घली॥ २८॥ सांगे मुकुंद दळाचे निताटे॥ जो जे विलाच द्रीक्षणें चोखटे॥ तोच
 कोरक यिवाकुवटे॥ चुंबित असे॥ २९॥ तें सें आत्मा सुख उपाडलें॥ जयासि आपण पें चि फावेलें॥ तया विषय सहज साडवेलें॥ -
 हाणें कांई॥ ३०॥ येहवीं तरी कोतुकें॥ विचारूनि पाहं पांनि कें॥ या विषयाचे निमुखें॥ ३१॥ झलो०॥ येह सें य
 स्पर्श जाभागादुःख योनय एवते॥ आद्यतवतः कौंतेय न ते बुध समते बुधः॥ ३२॥ टी०॥ जिहीं आपण पें नाहीं दोषिलें॥ तें चि
 इही इंद्रियाथी रजलें॥ जें सें रंक कां आलुं केलें॥ तुषांतें सेवी॥ ३३॥ ना तरी मृगें तृषाणी डिलें॥ संपन्नमें विसरो निजळातें॥ मृग
 पादः ओ० १७ कामें० ओ० ३ कर्मो निवकरे० ओ० ५ जे० ओ० ६ स्वरवाडे अंतरें०

५

५

५

तोयबुधिरडते॥टांकूनियेती॥१॥ तैसैआपणपेनाहींदेते॥ जयातेस्वसुरयाचेसदास्वरादे॥ तयासीविषयहेगोमटे॥ आ
 वडती॥१२॥ येहवीविषयीसुखआहे॥ हंबोलणोचिसारिखेनाहे॥ तरीविद्यतस्फुरणेकानपाहे॥ जगामाजी॥१३॥ सांगेवा
 तवर्षआनपधरे॥ ऐसैअभ्रघ्रायाचिजरीसरे॥ तरीत्रिमालिकेधवळारे॥ करवीका॥१४॥ ह्यणोनिविषयसुखजेबोळिजे॥ ते
 नेणतांगावांयाजल्पिजे॥ जैसैमहुरकां ह्यणिजे॥ विषकंदाते॥१५॥ नातरासैमानमंगळ॥ रोहिणीतै ह्यणतीजळ॥ मै-
 सासुखमवादबरळ॥ विषयकहा॥१६॥ हेअसोआयवीबोली॥ सांगपांसपफणीचीसाउली॥ तेशीतलहाईलकेतुली॥ मू-
 षकासी॥१७॥ जैसाआमीषकवलपांडवा॥ मीननसेवीतवाचिबरवा॥ तैसाविषयमंगआयवा॥ निष्ठांतजाणे॥१८॥ हे
 विरक्ताचियदृष्टी॥ जैन्याहाळिजेकिरीटी॥ तैपांडुरेगाचियेपुष्टि॥ सारिखेदिसो॥१९॥ ह्यणोनिविषमोगीजैसुख॥ तैसाचेत
 चिजाणदुःख॥ परिकायकरितीसुख॥ नसेवितानसरे॥२०॥ तैअंतरनेणतीबापुडे॥ ह्यणोनिअगत्यसेवणेघडे॥ सांगे
 पूयपकीचौकडे॥ कायचिळसीघेती॥२१॥ तयादुःखयांदुःखचिजिह्वार॥ तैविषयकदमीचेदुर्दुर॥ तैमोगजळीचेजळचर
 ॥ सांडितीकेवी॥२२॥ आणिदुःखयानीजियाआहती॥ तियानिरथकातरीनळती॥ जरीविषयावरीविरक्ती॥ धरितीजीव
 २३॥ नातरागर्भवासादिसंकट॥ काजचमरणीचेकष्ट॥ हेविस्मावेणीवाट॥ बाहवीकवणे॥२४॥ जरीविषयीविषयोसांड
 जेल॥ तरीमहादोषीकेवमिजेल॥ आणिमसारहाशब्दनळल॥ लटिकाजगी॥२५॥ ह्यणोनिअविद्याजातनाशिले॥
 तैतिहीचिसाचदोविले॥ जिहीसुखबुद्धीघेतले॥ विषयदुःख॥२६॥ याकारणैगास्तभटा॥ हाविचारितांविषययोखदा
 ॥ दूष्मणैकहीयावाटा॥ विसरोंनिजाशी॥२७॥ पैयेतैविरक्तपुरुष॥ लजितीकांजैसेविष॥ निराशांतयांदुःख॥ इमिव
 पाठ. ओं-१३ कायस्तर, सायेख ओं-१४ पुरे.

लेंनावडे॥ २८॥ ॥ शक्रोतीहवयः सोढुं माकुशरीरविमोक्षणात् ॥ कामक्रोधोद्वेगंसयुक्तः सस्रस्वीनरः ॥ ३३॥
 दी० ॥ ज्ञानियां चाहनरायी॥ याची मातही कीरनाही॥ देही दुहभावजिही॥ स्ववशकेली॥ २९॥ ज्यातंबाद्याची प्राप्ति॥ ने-
 णिजेचिनिःशेषा॥ अंतरासरू॥ एकआशि॥ ३०॥ परितवगळेपणें भागिजे॥ जें संपक्षियें फळबुजिजे॥ तें सें नळेतें
 विसरिजे॥ भोगितेपणही॥ ३१॥ भोगी अवस्थाकी उठी॥ तें अहंकाराचा अंचळोरी॥ मग सखें सिये आनी॥ गाढपणें
 ॥ ३२॥ तिये आलिंगनमेकी॥ होय आपें आपकवळी॥ तें थजळें सें जकी॥ वेगळें न दिसो॥ ३३॥ कां आकाशी वायोहरपो॥
 तेथ दोन्ही हे भाषलोपो॥ तें सें सरुवचि उरें स्वरूप॥ सरतीं तिये॥ ३४॥ ऐशी हेताची भाषजाय॥ मग ह्मण जरी एकचि हा-
 य॥ तुरीतें थसासी कवण आहे॥ जाणतें जे॥ ३५॥ ॥ म्लो० ॥ योनः सखीतरारामस्तथा तज्योतिरेव यः ॥ सयोगी ब्रह्म-
 निवाणं ब्रह्मभूतो धिगच्छति ॥ २४॥ लभते ब्रह्मनिवाणमुषयः क्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वेषा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः
 ॥ २५॥ दी० ॥ ह्मणोनि असो हे भाषवो॥ एथ न बोलणें काय बोलवें॥ तेव्हुणा चि पावेल स्वभावं॥ आत्मारासा॥ ३६॥ जेरे-
 से निमुखें मातले॥ आपण पांचि आपण राहिले॥ ते मी जाणें निखळवातले॥ साभर स्याचि॥ ३७॥ तें आनंदचें अनुका-
 र॥ सरुवाचें अकुर॥ कीं महाबोधें विहार॥ केलें जे सो॥ ३८॥ तें विवेकाचे गाव॥ कीं परब्रह्म चि स्वभाव॥ ना तरी अंककाले
 अवयव॥ ब्रह्मविद्येचें॥ ३९॥ तें सत्त्वाचे सात्विक॥ कीं चैतन्याचे आंगिक॥ हे बहु असा एक॥ वा निसी काई॥ ४०॥ तूं संतस्त
 वनीं रतसी॥ तरी कयेची सें न करि सी॥ कीं निराळी बोल देखसी॥ सनागर॥ ४१॥ परितर सातिशया मुकुळीं॥ मग प्रथार्थ-
 दीप उजकीं॥ वरी साधुदय राउळी॥ मगळ उरवा॥ ४२॥ एसा गुरुचा उवायिला॥ निवृत्ति दासासी पातला॥ मग तो ह्मणें ह्मण बा-
 पाट-ओं-३० अंतरांचि-ओं-३२ अहंकाराचक-ओं-३४ होय-ओं-३७ गुंतले.

४

७

७

लिला॥ तच्चिआइका॥ ४३॥ अर्जुनअनंतसुखाचोही॥ एकसंरांतळचिघेतलाजिहीं॥ मगस्थिराडोनितेही॥ तेचिजसहा
 ले॥ ४४॥ अथवाआत्मप्रकाशोचोसो॥ जोआणपेंचिविश्वदेखे॥ तोदेहोचिपरब्रह्मसुखे॥ मानूयेला॥ ४५॥ जेसाचोकारेंप
 रमा॥ नतेंअस्तरनिःसीमा॥ जियेगांवींचेनिष्काम॥ अधिकारियो॥ ४६॥ जेप्रहर्षिवाटले॥ विरक्ताप्तागाफिटले॥ जिनिःसंश
 यपिकले॥ निरतर॥ ४७॥ श्लो०॥ कामक्रोधवियुक्तानायतीनायतचतसाम्॥ अभिलोब्रह्मनिर्वाणवर्ततेविदित्वात्मना
 म्॥ २६॥ टी०॥ जिहींविषयापासोनिहरतले॥ चित्तआपुलेंआपणजितले॥ तेनिश्चितजेथसतले॥ चेतोचिना॥ ४८॥
 तेपरब्रह्मनिवाण॥ जेआत्मविदांचेंकारण॥ तेचित्तेपुरुषजाण॥ पंडुकुमरा॥ ४९॥ तेऐकैसेनिजाहाले॥ जेदेहोचिब्रह्मत्वाआ
 ले॥ हेहीपुसशीतरीभले॥ संक्षेपेंसांगो॥ ५०॥ श्लो०॥ स्पशान्कृत्वाबहिर्बाह्याश्चैवांतरेषुवोः॥ याणापानोसमो-
 कृतानासाभ्यंतरचारिणो॥ २७॥ टी०॥ तरीवैराग्याचेनिआधारे॥ जिहींविषयदवडूनिबाहिरें॥ शरीरेंएकंदरें॥ केलेस
 न॥ ५१॥ सहजेंतिहींसंधीभेटी॥ जेथफ्रूपल्लुवापडेगांटी॥ तेथपाठिसोरेदिही॥ पारुखोनिया॥ ५१॥ सांडनिदक्षिण-
 वामा॥ याणापानसम॥ चित्तेंसीव्योम॥ गांमयकरीति॥ ५३॥ श्लो०॥ यतौद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्माक्षपरायणः॥ विगतेष्वा-
 भयक्रोधयःसदासुकुण्वसः॥ २८॥ टी०॥ तेजैसीरथ्योदकसकळ॥ येउनिगंगासमुद्रोभिळे॥ मगएकैकवेगाळें॥ निवडू
 नये॥ ५४॥ ऐसीवासनातरीचिवंचना॥ मगआपेंसीपारुखेअजुना॥ जेवेळींगंगानालयामना॥ पवनंकीजे॥ ५५॥
 जेथहेसंसारचित्रउभटे॥ तोसनोरूपपुतफाटे॥ जेसंसरोवरआदे॥ मगप्रतिमानाहीं॥ ५६॥ तेसंमनएथसुदुलजाय॥
 मगअहंभावादिंकहेंआहे॥ ह्मणोनिशरीरेंचिब्रह्महोये॥ अनुभवीनो॥ ५७॥ श्लो०॥ प्रोक्तांरयज्ञतपसांसर्वलोकमहे
 पाठ-ओ०-५७ शरीरं॥

अवरप ॥ गच्छेत्सर्वभूतानां ज्ञानाभांशां तिसृच्छति ॥ २० ॥ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूत्रपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग-
 शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सन्यासयोगाजिज्ञासुर्धर्मोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ आत्मीयाणां हनसां गीतले ॥ जं देही चि
 ब्रह्मत्वपावले ॥ ते योगभांगओले ॥ ह्यणोर्निवा ॥ ५ ॥ आणियमनियमाचडांगर ॥ अत्यासाच सागर ॥ क्रसां ह्यपरणत
 को ॥ ५१ ॥ तिही आपणपंकरुनिभिलप ॥ यपवावं धनं रसा ॥ मगसाचशां नीचं चित्तरूप ॥ होरुनिवेले ॥ ६० ॥ ऐसा
 वागयुक्तीचा उद्देश ॥ जेथ बांलिताह्मं तं रसा ॥ तय अर्जुनसंदेश ॥ ह्यणोर्निवमकारं रसा ॥ ६१ ॥ तें देगिलियाकृष्णजाणित
 ले ॥ मग हां मां निपायातें ह्यणितले ॥ कां रयां चित्त उवाडले ॥ इय बांलितुं स ॥ ६२ ॥ तंव अर्जुन ह्यणो देवा ॥ परचित्तलक्षणाचा
 रावी ॥ भला जाणितला जीभावी ॥ मानससाड ॥ ६३ ॥ भ्यां जेकां हो विवरुनिपुसावे ॥ तं आधीचि जाणितले देवे ॥ तरीचो लि-
 ले तें चिमागावे ॥ विवळ करुनि ॥ ६४ ॥ गच्छेत्सर्वभूतानां ज्ञानाभांशां तिसृच्छति ॥ २० ॥ ॥ आत्मीयाणां हनसां गीतले ॥ जं देही चि
 हपजसा ॥ ६५ ॥ तें सासारथाह्मनिमजळा ॥ आत्मा सारीखयो अचळा ॥ एथ आहं काही परकाळा ॥ तो सा हो येवर ॥ ६६ ॥
 ह्यणोर्निवकवळ देवा ॥ तो चिपडताका येयावा ॥ विस्तरलतरां सागावा ॥ साधतं चि ॥ ६७ ॥ तंव श्रीकृष्ण ह्यणती हाको ॥ तुज-
 हा माग मालां निका ॥ तरीकाय जाहलें आदर्श जोकां ॥ सरं वेबो ॥ ६८ ॥ अर्जुन तूं परससी ॥ परिसां नि अनुष्ठसी ॥ त
 री आत्मा सी चिवाणि कायसी ॥ सांगावयाची ॥ ६९ ॥ आधीचि चिचमायचे ॥ बरीं भिषजाहोले पुढ्यतयाचे ॥ आतां तें अर्जुन प
 ण रसे हाचे ॥ ७० ॥ तें ह्यणो कास्य वरसार्थ ॥ कीं नवयां रसे हाची स्मृती ॥ हें असो नणिजे दृष्टी ॥ हरीचि वातुं ॥ ७१ ॥
 जे अभूत ची वातली ॥ कीं यमां चिपडन सातली ॥ ह्यणोर्नि अर्जुन मां हंगुतली ॥ निधां नणा ॥ ७२ ॥ हें बहू जे जलिये जेले ॥
 पाठ - ओं - ५९ अपार - ओं - ६० साचा चिं निरूप - ओं - ६१ कळविले - ओं - ६२ अनुसरा -

७

७

तें कथें शिफां कहां इल ॥ पारितास्त हरू पानयेल ॥ बोलवरी ॥ ७३ ॥ ह्मणों निविसरा काययेणें ॥ तो ईश्वर कवळ वाकवणें ॥
 जो आपुलें मान्मणें ॥ आपणचि ॥ ७४ ॥ तरी मागील ध्वनी आंत ॥ मजगमलासा विद्याचि मोहित ॥ जेबला ल्कारे असे ह्मणतें ॥
 परिसबापा ॥ ७५ ॥ अर्जुन जण जेणें भेद ॥ तुझे कांचि न बोधे ॥ तें सें तें मोचि न दे ॥ निरूपि जेल ॥ ७६ ॥ तो का इसीथाना व
 यागा ॥ तयाचा कवण उपेग ॥ अथवा अधिकार प्रसंगा ॥ कवणायथ ॥ ७७ ॥ ऐसे जे कांहीं ॥ उक्त असे इतुंदी ॥ तें आयवें चि पाही ॥ संग
 न आतां ॥ ७८ ॥ तें चित्त देई नि अवधारी ॥ ऐसे ह्मणों नि श्रीहरी ॥ बोलि जेल ते पुदारी ॥ कथा आहे ॥ ७९ ॥ श्रीकृष्णा जुनासी
 संग ॥ नसांडो नि सांगेल योग ॥ तो व्यक्त करूनि प्रसंगा ॥ ह्मणें नि वृत्ति दास ॥ ८० ॥ इति श्री सावायधर्मापिकायाज्ञा
 नदेव विरचित यापचम ॥ अथायः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ७९

श्रीगणेशायनमः ॥ मगरायानंदगोसंजयां ॥ तौनिप्रभिप्रायअवधारिजो ॥ श्रीकृष्णप्रागनीआलंजो ॥ योगरूप १ ॥ सहजेब्र
 ह्मरसचिंपारणें ॥ कैलेंअर्जुनालणींनारायणें ॥ ईतेंचिअवसरपारुणें ॥ पातलोआदो ॥ २ ॥ केसीदेवाचीयोरीनणिजे ॥ जेसे-
 ताहेलियातोयसेविजें ॥ कीर्तेचिचवीकरूनिषाहिजे ॥ तंवअमृतआहे ॥ ३ ॥ तेंसेंआत्मानुह्या जाहलें ॥ जेंआडमुईतत्वफाव
 लें ॥ नवधतराष्ट्रह्मणितलें ॥ हेंनपुसोतुने ॥ ४ ॥ तुयासजयाचीनियेणबोलें ॥ रायाचहदयचोजवलें ॥ जेअवसरोआहेयेनलें ॥
 कुमराचिया ॥ हेजाणोनिमनोहोमिला ॥ ह्मणह्मतागमोहंनशिला ॥ येहवोबोलतगंभलाजाहाला ॥ अवसरोइयें ॥ ५ ॥ परितेंतेंसेके
 सेनिहोइल ॥ जाल्याकेंसेपाहिल ॥ तेवांचयेरुरोषघेइल ॥ ह्मणोनिबहे ॥ ७ ॥ परिआपणचिनांआपुला ॥ निक्षिपरोसतोपला ॥
 जेनांसावादफावला ॥ श्रीकृष्णानुनाचा ॥ ८ ॥ तेणेंआनदांचेनिधालेयणें ॥ साभिप्रायअंतःकरणें ॥ आतांआदरेसोबोलणें ॥ घडे
 लतया ॥ ९ ॥ तोगीतेमाजिषवोचो ॥ प्रसंगअसेआदणीचा ॥ नेंसाक्षीराणवीअमृताचा ॥ निवाडजाहाला ॥ १० ॥ तेंसेंगीताथेचि
 सार ॥ जेंविवेकसिंधुचेंपार ॥ गानायोगविभवभाडार ॥ उघडलेंका ॥ ११ ॥ जेंआदिप्रकृतचेंविमवणें ॥ जेंशब्दब्रह्मासिनबोन
 णें ॥ जेथूनिगीतावल्लीचेंठाणें ॥ मगहंपावे ॥ १२ ॥ तोअध्यायसाहावा ॥ वरिमाद्वित्याचियाबरवा ॥ संगिजेलद्वगोनिपरिमा
 वा ॥ चित्तदेउनी ॥ १३ ॥ माझामराठाचिबोलकोतुकें ॥ परिअमृतातेंपंजाजिकें ॥ तेंसांप्रक्षरसिमेकें ॥ मेखवीन ॥ १४ ॥ जियेको
 वळिकेचिनिपाडें ॥ दिसतीनादीचेंरंगथोडे ॥ वेधेपरिमळाचेंवीकमांडें ॥ जयाचिनि ॥ १५ ॥ ऐकारसालपणाचियालोभा ॥ कोअ
 वणीचीहोतीजिभा ॥ बोलेंइंद्रियालागेकळभा ॥ एकमको ॥ १६ ॥ सहजेंशब्दतरविषोथवणाचा ॥ परिरसनाक्षणेसहाआ
 मुचा ॥ द्याणांमिभावजायपरिमळाचा ॥ हानोचिहोइल ॥ १७ ॥ नवलबोलतीयेरखेचोवाहाणा ॥ देखताडोकापुरंगलागेधणा ॥
 तेह्मणतीउघडलीरवाणी ॥ रूपाचिहे ॥ १८ ॥ जेथसंपूर्णपदउभार ॥ तेथमनचोवेवाहिरें ॥ बोलमुजाहोआविकरे ॥ आलिं-
 णव ॥ ओ० ५ ॥ नव ॥ ओ० ६ ॥ हास्यानरा ॥ ओ० ७ ॥ के० के० तें ॥ ओ० ८ ॥ माये ॥ ओ० ९ ॥ अमृतामहो०

गावया ॥ १९ ॥ ऐसीं दीं दिये आपुन लिय भावी ॥ झोबती परितो रसि पणेंचो बुझावी ॥ जें सा एकला जगचे वरी ॥ सहस्र कर ॥ २० ॥ तें सें शब्दाचे व्यापक पणा ॥ देखिजे अभाधारण ॥ या हातया भाव जाफावती गुण ॥ निता मणीचे ॥ २१ ॥ हे असो नया बोलाचे ला दे भली ॥ वेरी केवळ्यार सें वों गरि लों ॥ हा प्रमिपनि मियां केली ॥ निष्ठा मासी ॥ २२ ॥ आतां आत्म प्रसा नित्य नवी ॥ ते नि करू शिवाण दिवी ॥ जो इंद्रिय तें चोरू निजेवी ॥ तयासीं चिफावे ॥ २३ ॥ तथ्य वणाचे निपणें ॥ वीण थोतयां द्वावे लागे ॥ हे मनाने न निजोंगे ॥ की- भिजे ना ॥ २४ ॥ अहोच बोलाची वाला फुफ दिजे ॥ आणिव द्वा निया चि अंगा घडिजे ॥ मग सुख सी सुर वाडिजे ॥ सरवाचि माजी ॥ २५ ॥ ऐसें हळवार पण जरीय इल ॥ तरीच हे उपणा जाइल ॥ यद्दवीं आयवी गोष्टी होइल ॥ मुकया बहिरयाची ॥ २६ ॥ परिते असो आनां आयवें ॥ नलगे थोतया तें कडु सावें ॥ जे अदिक रिये गथ स्व सावें ॥ निष्काम काम ॥ २७ ॥ जिही आत्म बोधाचि नया आवडी ॥ हे लो स्वर्ग सें सारा कुरोडो ॥ ते वाचूनि एथिं चीगोडी ॥ नेणतीं आगिक ॥ २८ ॥ जें सा वायसींच दनां करिजे ॥ ते सा जाहतीं यथ हो नेणि जे ॥ आणिलो हि सा धन चिजे विरगाजें ॥ न कोराजें ॥ २९ ॥ तें सा अजनासीं न राहावो ॥ आणी अजानासीं आनगावो ॥ क्षणो निबोले वया विषय पाहो ॥ विशेष ना दों ॥ ३० ॥ परि अभुवा दंडां सें पिसों ॥ तें स ज्जन उड पस हावें लागे ॥ आतां सागेन काय थोरोंगे ॥ निरो पिलेंतें ॥ ३१ ॥ तें बुद्धी ही आकळितां साकडें ॥ क्षण दू निबोली विषय सांपडे ॥ परि थो निव निव निव पदी पड जियेंडें ॥ देखेन मा ॥ ३२ ॥ जे दिवहीन पविजे ॥ तो देवी वीण राखिजे ॥ उरी अर्भो दिय लोहिने ॥ जानबळ ॥ ३३ ॥ नातर जें धातु वाता हीन जोडे ॥ तें लोही चि पथर सांपडे ॥ जरी देव योगेंचडे ॥ परि पहाला ॥ ३४ ॥ तें सो सा दुरुक्षया होय ॥ तर्ग करि ना काय आपुनो ह ॥ क्षण क्षणिते अपारमाते आहे ॥ जा- नदे वक्षणी ॥ ३५ ॥ तें पण कारणें सीबोलेन ॥ बोली असुण चक्षु दागिन ॥ भर्ता दिय परि भोग बोना ॥ इंद्रियां करी ॥ ३६ ॥ आइ काय थो आंशार्थ ॥ जो नवें राख्य एषवय ॥ हे सा ही गुण वय ॥ यस्तो जें य ॥ ३७ ॥ क्षणो नितां सा पावन ॥ जो निःसं गाचा सांगात ॥ तो क्षणो यथो द- पाव ॥ ओ-२० क्षीं वना ॥ ओ-२३ नीच ॥ ओ-२४ येथ ॥ ओ-३० विषेण ही ॥ ओ-३४ पल्लेय ॥

तत्तचित् ॥ होई आना ॥ ३८ ॥ ॥ श्री भगवत्पुत्राच ॥ ॥ अथाशितः कर्मफलं श्रुत्य कर्मकरो गतिः ॥ असन्त्यासीत्त्वयोगोच्चगन्धिगुणं
 चाक्रियः ॥ ११ ॥ टी० आडकं आराध्या आगिपत्स्यारुर्जनं ॥ इह एकां निगिनाम आगी आर्त्ता ॥ येन्द्रवी विचारि जतोज्जवदीन्दी ॥ तेष्वेव
 वि ॥ ३१ ॥ सोडिजुजयानासाचा आभासा ॥ तरेयागती चयन्यस्य ॥ दाहनाद्वदीनाहो अवकाश ॥ दोहोगाजो ॥ ५० ॥ जेसेनासाचेनि अ
 नरिसेपणो ॥ गकापुरुषानेवान्तरा ॥ कदाहीमागी जाण ॥ एकानिद्राया ॥ ४९ ॥ नादरागकचिउदकमहेजे ॥ पर्यसिनानाद्यदीर्भरिजे
 ॥ तेसें भिन्नत्वजाणिजे ॥ योगसन्त्याशाच ॥ ४८ ॥ आडकं श्रुत्य कर्मकरो जगी ॥ अर्जुनापाहने चियोगा ॥ ओकमेककरुनिरागी ॥ नोहने
 फळी ॥ ४३ ॥ जेसोमही हउ दिजे ॥ जने भद्रबुद्दीवाणराहने ॥ आशतथिचितीयवाजे ॥ अपरीना ॥ ४४ ॥ तेसा अन्वयचेनि आ
 धारे ॥ जोतीचेनि अनुकारे ॥ जेजणे अवसर ॥ करणपाव ॥ ४५ ॥ जने सोड्डीवनकरो ॥ परिमादापनादशरीरी ॥ आणिवुद्दीहाकरेन
 निपळवरी ॥ जायेचिना ॥ ४६ ॥ गेसातो चिसन्त्यासे ॥ पाथागापीयसे ॥ ताचिभरवसनिमी ॥ व्यागभर ॥ ४७ ॥ वांचूनि उचितकर्म
 प्राप्तिक ॥ त्यातहाणे हेसाडांवढक ॥ तगांकां दोकां आणिकराक ॥ मांहीचिने ॥ ४८ ॥ जेसासाकृनिगोनेपएक ॥ सर्वेचिन्निवि
 जेआणिक ॥ तेसेनि आमहाचापाडक ॥ वचवया ॥ ४९ ॥ गृहस्थायमानेवांझे ॥ कपार्थीचिआहसहजे ॥ कोर्तेचिसन्त्यासे
 वादविजे ॥ सरिसेपुटनी ॥ ५० ॥ द्यण्णिअग्निसेवानसादिना ॥ कर्माचरखानांदिना ॥ आहयोगसुखस्मावता ॥ आपणपोंचि
 ॥ ५१ ॥ श्लो० यसन्त्यासमितिमाहयोगंतं विरुपाडव ॥ नव्यसन्त्यससंकल्पायोगासवतिकथन ॥ २ ॥ टी० गेकंसन्त्यासीतोचियोगी
 ऐसीएकवाक्यतेचीजगी ॥ गुढाउभविर्लोअनेगी ॥ शास्त्रानरी ॥ ५२ ॥ जेथसन्त्यासिलासंकन्यतुंदे ॥ तेथचियोगाचेसारभेदे ॥ ऐसे
 हेअनुभावाचेनिधेदे ॥ सांचंजया ॥ ५३ ॥ श्लो० आरुरुक्षार्मुनेयोगं कर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥
 टी० आतोयोगाचव्हाचिमिया ॥ जरीवाकावाअधिपार्या ॥ तरोसोपानायाकर्मपथा ॥ चुकाड्योण ॥ ५४ ॥ योगेयमनियमांचेनिनळवदे ॥
 पाठ० ओ० १२ हेजाणिजे ओ० ४३ गातां ओ० ४६ वरी ओ० ४८ मांडीन ओ० ५० सन्त्यासमवांजेवजे

रिगे आसनाचिये पाउल बाटे ॥ येई प्राणायामत्वे नि आडकांटे ॥ वरीतागा ॥ ५५ ॥ मग प्रत्याहाराचा आधाडा ॥ जो बुद्धीविशालिह पाषाणि सर-
डा ॥ जेथ हृदये सांडितो होडा ॥ कडे लग ॥ ५६ ॥ तरी अभ्यासाचे निवळे ॥ प्रत्याहारि निगळे ॥ न रित्युगे लढावे दाळे ॥ वेग ग्याची ॥ ५७ ॥
ऐसा पवनचे निपावारे ॥ येताधारणेचे निपावे ॥ क्रमोच्यानाचंचरे ॥ सांडेतव ॥ ५८ ॥ मगतया मार्गाचे ग्रावे ॥ सुरेल मवृत्तीची हावे ॥ जेथ-
साध्य साधनाखेव ॥ समर संहोये ॥ ५९ ॥ जेथ पुढील पेंस पासवे ॥ मागील स्मरणें वेगळे ॥ ऐसिये सारि सिये झुमिके ॥ समाधि राहे ॥ ६० ॥
येणें उपायें योगीगारूढ ॥ जो निरबधिना हा लोकोटा ॥ तया चिया चिन्हाचा निवाड ॥ सांगेन आडकें ॥ ६१ ॥ श्लो० यदा हि नैदियाथे बुबक म-
स्तनुषज्जते ॥ सर्व संकल्प सन्यासी योगारूढ स्तनोच्यते ॥ ६२ ॥ तरी नरी जया चिया इंदिया चिया घरा ॥ नाहीं विषया चिया येर झारा ॥ जो
आत्म बोधाचा वोवरा ॥ पडुडला असे ॥ ६३ ॥ जयाचें संपुट स्वाचे निप्रागे ॥ विषय पासी हो आलियासे न-
रिघे ॥ हे काय झणउनि ॥ ६४ ॥ इंदियें कर्मचा नागो ॥ वाटि न तो परि कंढो ॥ फळ हे नृची चाड नाहीं ॥ अंतः करणी ॥ ६५ ॥ असते निदे हे ए-
तुला ॥ जोचे तुचि दिसे निदे ला ॥ तो नि योगारूढ जन्मा ॥ वाळखे वने ॥ ६६ ॥ तेथ अजुन झणें अनता ॥ हे मजो विसोवहु आडकता ॥ सा-
गतया ऐसी योग्यता ॥ कवणें होजे ॥ ६७ ॥ श्लो० उद्धरे दास्युना त्मानमात्मानमवसादेयेत ॥ आत्मवत्वात्मनो बंधुराखे वरि पुरात्म-
नः ॥ ६८ ॥ तरी तव हासो निरुणा हा योगी ॥ तडोने वल्लुखे वाळुणे ॥ कवणां भिकाय दिजे लकवणें ॥ अदुर्त तिथी ॥ ६९ ॥ पेंच्या मोहा निवे-
शेजे ॥ बळिया अविद्या निदिन होइजे ॥ ते वेगोदुःख संच भद्रो भोगिजे ॥ जन्म मृत्यूचा ॥ ७० ॥ पावी अवसात येचे वो ॥ ते तें अवधे निहा-
य बावो ॥ ऐसा उपजे नित्य सद्भावो ॥ तोही प्राणार्पाणी ॥ ७१ ॥ झणऊनि आपणचि आपणया ॥ घात किजत असे धनंजया ॥ चिंतें दे-
निना थिलिया ॥ देहाभिमाना ॥ ७२ ॥ श्लो० बंधुरात्मात्मनस्तस्य येन स्मिं गत्सनाजितः ॥ अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वेतंतात्वे वशनुवत् ॥ ७३ ॥
पाठः ओवीः ५७ नरबी, वेराग्याचियेः ओ० ५८ इयं ओ० ५९ कर्मनिः ओ० ६० इयं ओ० ६१ दूःखसमः ७

दी० हाविचंरूनिअहंकारसांडिजे॥ मगअसतीचिवस्तुहोडिजे॥ नरोआपुलीस्वस्मिहजे॥ आपणकली॥ ७१॥ येहवेकोशकीहका
 चियापरी॥ तोआपणयांआपणवैरी॥ जोआत्मबुद्धिशरीरी॥ नारुस्थळी॥ ७२॥ केंसेमासीनियंवेळे॥ निंदेवांआधेळेपणाचेडोम
 हळे॥ कीअसतेआपुलेडोळे॥ आपणझाकी॥ ७३॥ काकवणएकस्त्रमलेपण॥ मीतो नव्हेगाचोरलोझण॥ एसा नाथिळाछंदूअ
 तः करण॥ घेऊनिठोके॥ ७४॥ येरवांदायंत तोचिआहं॥ परकाइकोजबुद्धितेंसीनोहे॥ दस्वास्मीचेनिघाये॥ कीमरेसाचे॥
 ॥ ७५॥ जेसीतेषाकाचेनिआणुमार॥ नळिकासोविल्लोयेरोमाहरे॥ तरीतेणेउडावेपरिनपुरे॥ मनशंका॥ ७६॥ वायांचिमानणि
 की॥ आहुंवेदियेंआंवळी॥ दिटांतुनळा॥ धरूनिठोके॥ ७७॥ झणेवांधनासोफुडा॥ एमियाभावेननियापडुखोडा॥ कींमोकाळि
 यापायाचचवडा॥ गोवीअधिक॥ ७८॥ एसाकाजंवीणाआतुडला॥ तोसागपाकायआणिंकंवांधला॥ मगनसोडचिजरीनेला॥
 तोडनिअर्दी॥ ७९॥ झणारुनिआपणयांआपणाचिगिपु॥ जेणेवाहविलाहासकल्यु॥ येरस्वयंबुद्धीझणेबापु॥ जोनाथिलेनेये॥ ८०
 ॥ श्रुती० जितोत्तमः प्रशानस्यपरमात्मासमाहितः॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः॥ १॥ दी० नयास्वांतः करण
 जिना॥ सकळकामोपशाना॥ परमात्मापरोता॥ दूरनार्दी॥ ८१॥ जेसाकिडाळाचादोषजाये॥ नरोपधरंतेंचिहोये॥ तेंसेजोव
 ब्रह्मत्वआहे॥ सकल्यलापी॥ ८२॥ हाघटाकारजसो॥ निमालियातयाअवकाशा॥ नलगंमिळांजणेंआकाशा॥ आनावाया॥
 ॥ ८३॥ तेंसादहाहकारनाथिला॥ हासमूळजयाचानाशिला॥ तोचिपरमात्मासंचला॥ आधींचिआहे॥ ८४॥ आनांशीतोष्णाची
 यावाहाणी॥ तेथसुखदुःखाचीकडसणी॥ इयेनसमातीकाहोबोल्णी॥ मानापमानाची॥ ८५॥ जेजियेवातामूर्यजाये॥ तेउतें
 तेजाचेविश्वहीये॥ तेंसेनथापावतेंआहं॥ तोचिझणउनी॥ ८६॥ देखेंमंधोनिमुटतीधारा॥ तियानरूपनीजेसियासागरा॥

पाठ. ओ. ७२ नारुस्थळाअथवा नारुस्थळ. ओ. ७७ दिटांत. ओ. ७९ आधा.

७

७

तैसींशप्राशभंयोगीश्वरा ॥ नन्दती आनै ॥ ८७ ॥ श्लो० ज्ञानविज्ञानतुमात्माकूटस्थोविजितोद्वयः ॥ युक्तइत्युच्यतेयोगीसम
 लोष्टासमकांचनः ॥ ८८ ॥ दी० जोहोविज्ञानात्सकमावो ॥ तथाविवरिताज्ञाहालावावो ॥ मगलागलाजवपाहो ॥ तवज्ञानतैतेवि ॥
 ॥ ८८ ॥ आताव्यापककोएकदेशी ॥ हेऊहापोहिजेऐसी ॥ नेकरावतेलीओपेसी ॥ दुजेनवीणा ॥ ८९ ॥ ऐसाशरीरोचिपरिको-
 तुके ॥ परब्रह्मचेनिपाडेनुके ॥ जेणोजितिलोएक ॥ इदियेगा ॥ ९० ॥ तोजितैद्वयसहजे ॥ तोचियोगयुक्तसाणिजे ॥ जेणेंसने
 शीरनेणिजे ॥ कवणेकाढी ॥ ९१ ॥ देखेंसो नयाचेंनखळ ॥ मेरुयेसणेंठिसाळ ॥ आणिमातयेचेंडिखळ ॥ कींसरिसेंविमा
 नी ॥ ९२ ॥ पाहातापृथ्वीचेंमोलथोडे ॥ ऐसेंअनघ्यरत्नचोरडे ॥ देखेंदगडाचेनिपाडे ॥ निचाडोऐसा ॥ ९३ ॥ श्लो० सुहृन्नि
 ब्राह्मदासीनमध्यस्थहेयबंधुषु ॥ साधुघापिचपपेपुसमबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९४ ॥ तेथसुहृदआणिशत्रु ॥ काउदासआणि-
 मित्र ॥ हाभावभेदविचित्र ॥ कल्पूकेंचा ॥ ९४ ॥ तयाबधुकोणकाढ्याचा ॥ होवियाकवणतयाचा ॥ मीचिविषयेसाजयाचा ॥ बो
 धजाहाला ॥ ९५ ॥ मगतयाचियेहथी ॥ अधमोनमअसेकिरीटी ॥ कायपरिसानियेकसवटी ॥ वानियाकीजे ॥ ९६ ॥ तेजे
 सीनिर्वाणवर्णचिकरी ॥ तैसीजयाचीबुद्धीचराचरी ॥ होयसाम्यचिउजरी ॥ निरंतर ॥ ९७ ॥ जेनेविश्वाळकाराचेविसुरे ॥ जरी
 आहातीआननेआकरे ॥ तरीघडलेएकनिमंगोरे ॥ परब्रमे ॥ ९८ ॥ ऐसेंजाणजेकरवे ॥ तैसावलेतथाभाववे ॥ ह्मणेनिअहाचहाहच
 नमुकवे ॥ येणेंआकारचिं ॥ ९९ ॥ घापेपदमाजिहथी ॥ दिसेतंतूचिसंघसृष्टी ॥ परिताएकवांचूनिगोष्टी ॥ दुजोनाही ॥ १०० ॥ ऐसेमिप्र
 तीतीहेगवसे ॥ ऐसाअनुभवजयानेंअसे ॥ तोचिसमबुद्धीहेअनारसे ॥ नव्हेजाणें ॥ १०१ ॥ जयाचिनावतीर्थगती ॥ दर्शनेंप्रशस्तीसिंवा
 बी ॥ जयाचेनिसंगेब्रह्मभावो ॥ प्रजातासही ॥ १०२ ॥ जयाचेनिघेतेंधर्मजिये ॥ दिढीमहासिंहोतेंविया ॥ देखेंस्वर्गस्मरवादिइया ॥ खेळजे
 पाठ ॥ ओ० ८७ बाधतीना ॥ ओ० ९० जेनेविष्वअळकाराचे घडले ॥

याचा ॥३॥ विषयं जग आठ बलां चिन्ता ॥ तरि हे आपुली योग्यता ॥ हं असंतयतं प्रशंसितो ॥ लाभ आशि ॥४॥ श्लो० योगीश्वरी
 नमस्ततमात्मानरहसि स्थितः ॥ एकार्कयत्नचित्तात्मानिशरीरपरिग्रहः ॥१०॥ टी० पुटनी अस्तु नो गेम्सं ॥ जयापादिलं प्रदत्त
 दिवसे ॥ मग आपणयांचि आपणा अस्मं ॥ अरवोदित ॥५॥ ऐसियाहृष्टीजो विवेकी ॥ पार्थो तो एकाकी ॥ सहजे अपरिग्रही ज्योति
 होलीकी ॥ तो चिद्वर्ण उर्नीत ॥ ऐसियें असाधारण ॥ निष्पन्नाची लक्षणें ॥ आपुलो नवद्वय संपणें ॥ श्रीकृष्णबोले ॥७॥ जैसा
 निघाचा बाप ॥ देवगणांचि दीक्षादीप ॥ जयादादल्याचा सकल्य ॥ विश्वरची ॥८॥ प्रणवाचिये पंढें ॥ जाहालं शब्दब्रह्म ज्यो
 ॥ तं जयाचिये यशश्चाकुटं ॥ वेद न पुरें ॥९॥ जयाचें न अंगं कें जें ॥ आवोर विशरीचियें वर्ण जें ॥ स्मण उं निजगहं वस जें ॥ वीण अ
 सेतया ॥१०॥ हांगाना मचि एक जयाचें ॥ पादनागन हा दिसे दांचें ॥ गुण एक कक्या तयाचें ॥ कलि शीलतुं ॥११॥ स्मणो नि अमो
 हं वानणें ॥ सांगो नणां कवणांची लक्षणें ॥ दावावीं भियें यणें ॥ कावो लिल्यांतें ॥१२॥ ऐकू हे नाचा वावो चि फुडीं ॥ ते ब्रह्म विधा कि जे लउय
 डी ॥ तरि अर्जुना पदिये हंगोडी ॥ नाश लह ॥१३॥ स्मणो नि ते न से वोलणें ॥ नव्दस पातळ आड लावणें ॥ केल मन विवगळ वाणें ॥ भ्रा
 गावया ॥१४॥ जया सोह भाव अटक ॥ मोक्ष सुरवालागीं निरंक ॥ नयाचिये दीक्षा झुणें कळंक ॥ लागेल तुझिया मेमा ॥१५॥ विषयें अहं
 भाव जयाचा जाईल ॥ मोर्ते चि हा जरी होईल ॥ तरि रमग कार्य कजे ल ॥ एक लेया ॥१६॥ दीतो चि पाहतां निर्वजें ॥ कांतांड मरो निबो लि
 जें ॥ नातरी हादूनि रव दीजें ॥ ऐसं काण आहे ॥१७॥ आपुलिया मनावरी ॥ असमाई गोदी जीवां ॥ ते कवणें सिचावळावो ॥ जरी एन्स
 जाहलें ॥१८॥ इया काकुळती जनादने ॥ अन्यापदेशाचें निहाता मने ॥ बोला माजि मन मने ॥ आलिगु सरलें ॥१९॥ हं परि सता जरि
 कानडें ॥ तरि जाण पापाया उघडें ॥ श्रीकृष्ण सुरवाचें चिरुपडें ॥ वातलें गा ॥२०॥ हं असो वयसे निशंवदी ॥ जें सें एक निबियें वाझो
 पार ॥ ओ० ९ माजिवें ॥ ओ० ११ आकलशील ॥ ओ० १२ नेणें ॥ ओ० १४ सपतळ ॥ ओ० १५ हा अटक ॥ योगिया

॥ मगनेमोहाचीत्रिपुटी ॥ नाचोलागे ॥ २१ ॥ तें सें जाहालें श्रीअमंता ॥ गें संतो र्मीन द्वाणता ॥ जरीनयाचानदेस्तता ॥ अमिशयएय ॥ २२ ॥ पाहापांनवलकें संचोज ॥ कें उ पदेशेकउ तें दंज ॥ परिपुटं वालसाचें भोज ॥ नाचत असो ॥ २३ ॥ आवडीं आगिलाजवो ॥ व्यसनआ णिनशीणवो ॥ पिसं आगिनमुलवो ॥ नरितेंनिकाइ ॥ २४ ॥ द्वाणउं निभावाथंनो एसा ॥ अर्जुनगेमिग्र्यचाकुवासा ॥ कौसुखें भंगारलि यामानसा ॥ दर्पणो ॥ २५ ॥ यापरीबापपुण्यपवित्र ॥ जर्गभ्रिनिवोजांमिसंसेत्र ॥ मोश्रीरुणाकृपपात्र ॥ याचिनागो ॥ २६ ॥ होको आत्मनिवेदनातळीची ॥ जेपठिकाहोयसाख्याची ॥ पार्थ अधिष्ठात्रींतीथीची ॥ मानुकागा ॥ २७ ॥ यासोचिगोसावोवरनेवानिजे ॥ मागापाइकाचागुणघेइजे ॥ ऐसा अर्जुनतोसहजे ॥ पदियहरी ॥ २८ ॥ याहाणं अनुयोगेभजे ॥ जेप्रियोचनेमोभिजे ॥ नेंपतीहानिका यनवानिजे ॥ पतिव्रता ॥ २९ ॥ तेंसा अर्जुनचि विशेषेस्सवावा ॥ ऐसं आकडलंमजजीवा ॥ जेतोत्रिभुवनींनयांदेवा ॥ एकायननजाहा ला ॥ ३० ॥ जयाचियाआवडीचेनिपंगे ॥ असूर्तीहिसूर्तिभवंग ॥ पूर्णादिपरिभागे ॥ अवस्थाजयाची ॥ ३१ ॥ नवश्रीनद्वानतीदेव ॥ केसीबोलतीहवाव ॥ कायनादातेंहनबरव ॥ जिणोनिआर्ता ॥ ३२ ॥ हांहानवलनोहदेशी ॥ मन्हादीबोली जेतोरेशी ॥ वाणउंमरता हेआकाशी ॥ साहित्यरंगाची ॥ ३३ ॥ कैसंउंचोखचांदिणेंसनागर ॥ आगिभावाथपंडंगार ॥ हेविस्त्रोकाथकुमुदीप्फार ॥ मोवियाहोती ॥ ३४ ॥ चाडचिनिचाडेश ॥ ऐसीमनोरथांदेयोरो ॥ तेणेंविचळंअंतरां ॥ तेंथडोलआला ॥ ३५ ॥ तेंनिद्विनितासंजणितलें ॥ मगअवथा नघाह्णितलें ॥ नवलपडवकुळीणांहें ॥ कृष्णादिवसं ॥ ३६ ॥ देवक्रियाउदरीवांहला ॥ यशोदासायासेपाळिला ॥ शंखवंउंपगनेला ॥ पांडवासि ॥ ३७ ॥ द्वाणउंनिवहदिवसवाळगावा ॥ काअवसरूयाहोमिविनवावा ॥ हाहीसोमनयासुंदेवा ॥ पडचिना ॥ ३८ ॥ हेंअसो कथासंगेवेगी ॥ मगअर्जुनद्वाणसलणी ॥ देवाइयेसंतनिहेंओगी ॥ नठकतोमाझा ॥ ३९ ॥ येन्धोयालक्षणाचियाभिजसागो ॥ मो- पाठः श्रीः २८ नवनिजे, मगः श्रीः ३३ वांनं, ओः ३४ मेगितआहती, ओः ३५ निचाडा.

अपांडे कीरअपुरा ॥ पुरितुमचेनिबोलेंअवधारा ॥ योगवजरी ॥ ८० ॥ जीतुस्तीनिनंदयाल ॥ तरोव्रह्ममियाहोइजल ॥ कायजाहोलेंअ
 प्यासिजेल ॥ सागलज ॥ ८१ ॥ हाहानंगां कवणार्चकाहाणी ॥ आइकोनिस्त्राधिजतअसोअंतः करणी ॥ ऐसीजाहोलेंपणाचिनिशिरया
 पी ॥ कायसीदेवा ॥ ८२ ॥ हेंआगेम्याहोइजाका ॥ येतुलेंगामावा आपुलपणेंकोजाका ॥ तंवहांसोनिश्रीलुखादोका ॥ करूझणती ॥ ८३
 ॥ देखासंतोषएकनजोडे ॥ तवचिमुखाचेंसंयसाकंड ॥ मगजोडुलियाकतणेकडे ॥ अपुरेंअसो ॥ ८४ ॥ तेंसासवेंश्वरबळियासेवक ॥
 झणोनिब्रह्महीहायतोकोतुक ॥ परिक्रमाभारआतळापिक ॥ देवाचनि ॥ ८५ ॥ जोजन्मसहअचियासाधो ॥ इंद्रादिक्रहंमहाग
 भेदी ॥ तोआधीनकेंतुझाकिरीटो ॥ जेबोलहोनमाद्र ॥ ८६ ॥ मगएकाजेंपोडवें ॥ झणितलेंम्याव्रह्महोआवें ॥ तेंअशेषहोदेवें ॥ अ
 वधारिलें ॥ ८७ ॥ तेंथएसंचिएकविचारिलें ॥ जगाब्रह्मलानंदाहळुजाहोल ॥ परिदुदारांगंरायआहआलें ॥ बुद्धीचिया ॥ ८८ ॥ येह
 वींदिसतरीयाअपुरो ॥ परिवराग्यवसनांचेनिभर ॥ जसोद्वस्मावमहुर ॥ सोडोनिआलो ॥ ८९ ॥ झणोनिमामिफळीफळतो ॥ ययासि
 वेबनलंगेलआतो ॥ होयविरक्तएसाअनतो ॥ भरचंसाजाहालो ॥ ९० ॥ झणोजेंजहाअधिघाल ॥ तेंभारसीचययाफळुळ ॥ झणोनि
 सागीतलानवचेल ॥ अस्मासवायो ॥ ९१ ॥ ऐसींविचरोनियांआहरी ॥ झणितलेंतियअकसरी ॥ अर्जुनाहाअवधारी ॥ पंथराज ॥ ९२ ॥
 तेंयमृतीतरूचाबुडो ॥ दिसतीनिवृत्तिफळ्याचियाकांडो ॥ जियेमार्गोचाकापडो ॥ महेशआसूनो ॥ ९३ ॥ पंथांगितेंदेवहिलो ॥ आड
 चींआकाशीनिघालो ॥ कींतंय अनुभवचापाडो ॥ धारणपडिला ॥ ९४ ॥ तिहोआत्मबोधाचेंनिउतुकारें ॥ धावयेतलोएकसरें ॥
 कींएरसकळमार्गनिदसुरें ॥ सोडनिया ॥ ९५ ॥ पाठींमहर्षीयेणआले ॥ साधकाचेसिद्धजाहोले ॥ आत्मनिदयोराले ॥ येणेंचिपेथें
 ॥ ९६ ॥ हामार्गजेंदंभिवज ॥ तेंतोहानक्षूकबिसरिजे ॥ रात्रिदिवसेनिजे ॥ बोटइये ॥ ९७ ॥ चान्नोपाउलजेथपडे ॥ तेंथअपवर्गनि
 पाठ ॥ ओं ॥ ८१ माझेहोईल ॥ तें ॥ ओं ॥ ८५ सांगेलस्तमुखें ॥ ओं ॥ ८९ मांडोनि ॥ ओं ॥ ९१ अनुदीन ॥

रवाणीउघडे ॥ आकांशलियातरिजोडे ॥ स्वर्गसुख ॥ ५८ ॥ निगजिपूर्विलियामोहरा ॥ कांथेइजेपश्चिमेचियाघरा ॥ निश्चलणोंशु
 धरी ॥ चालणेंएथिवें ॥ ५९ ॥ येणेंमार्गेजयावायाजाइजे ॥ तोगांव आपगाचिहाइजे ॥ हेंसांगोंकायसहजे ॥ जाणसीतुं ॥ ६० ॥ तेथेपा-
 थेंसिणितलेवा ॥ तरितेंविमगकेळो ॥ कांआनिंसमुद्रोंनिनकादावा ॥ बुडतूंजीमी ॥ ६१ ॥ तंवकृष्णहणतीऐसे ॥ हेउत्सखबोल
 णेंकायसे ॥ आसीसागतसांआपेंसे ॥ वरिपुशिलेनुवा ॥ ६२ ॥ श्लो० श्रुचेंदेशप्रतिष्ठाप्यविजिनासनमात्मनः ॥ नास्त्यिच्छंतंनानिवा
 चं॥ चैलाजिनकुशान्तरम् ॥ ११ ॥ टी० तरिंविशंपंआतांवांलिजल ॥ योरितेंअनुभवेंउपेगाजाईल ॥ ह्मणेनिनेसंएकलोगेल ॥ स्थान
 पाहावें ॥ ६३ ॥ जेथआराणुंकेचेंनिकांडं ॥ वेंसलियाउवांनावडे ॥ वेराग्यासिदुणीचदे ॥ देखिलियाजे ॥ ६४ ॥ जोसंतोवसविस्तरा
 वो ॥ संतोषासिसांवावो ॥ मनाहोयउत्सावो ॥ धंयाचा ॥ ६५ ॥ अग्यासुचिआपणुंयांतेंकरी ॥ त्दद्यातेंअनुभववरी ॥ ऐसीरम्य
 पणाचीथीगी ॥ अखंडजया ॥ ६६ ॥ ज्याआडजानांथारी ॥ तगश्चर्यामनोरथा ॥ पारवांडियाहीआस्था ॥ समूळहोंयां ॥ ६७ ॥ स्वभावें
 वादेयंतो ॥ जरिवरपडाजाहान्नाअवविनी ॥ तरिसकामहीपरिमाद्योता ॥ नियोविसरो ॥ ६८ ॥ ऐसेनिनराहूयांनंराहवी ॥ प्र
 मतयातेंबेसवी ॥ थापटूनिचवी ॥ विरकीतें ॥ ६९ ॥ दृगल्यबरेसांदिजे ॥ मगनिवांताएथेंचिअसिजे ॥ ऐसंशृंगारियांहुउप
 जे ॥ देखतरवेवो ॥ ७० ॥ जेयेणेंमानवरवट ॥ आणितेंसंचिअंतचांखट ॥ जेथअर्धहानपगट ॥ डोळींदिसे ॥ ७१ ॥ आणिकही
 एकपहरेवें ॥ जेंसाधकीवसनहेंआवें ॥ आणित्तनचेंनिपायवें ॥ मळेचिना ॥ ७२ ॥ जेथअमृतानेनिपाडे ॥ मुखाहीसकटगोडे ॥ जो
 डनीदांटेद्राडे ॥ सदाफळती ॥ ७३ ॥ गारुलाणउलाउदकें ॥ वेंषाकाळावोणअतिचोरवें ॥ निझरेकांविशेणें ॥ फलमंजये ॥ ७४ ॥ हा
 आतपहीअळमाळ ॥ जाणितेनराशीनळ ॥ पवनअनिनिश्चळ ॥ मदझळकें ॥ ७५ ॥ बहुनकरूनिनिःशब्द ॥ दाटनरिवेश्यापद ॥
 पाव. ओ० ७० वारिः ओ० ७१ मंजु. ओ० ७२ पाउलीं, परिवंषाकाळोहीचोरवें.

शुक्लनपदपदं ॥ तेउतेनाही ॥ ७६ ॥ पाणिलगेहंसे ॥ दोनांचारीसारसे ॥ कवगेएकेवेसे ॥ तरेकोकिळहोको ॥ ७७ ॥ निरंतर
 नाही ॥ तरीआलीगेलीकांही ॥ होतुकाभयूरही ॥ आदीनानझणां ॥ ७८ ॥ परिअवश्यकपाडवा ॥ एसाठावजोडावा ॥ तेथेनिपू
 दहोआवा ॥ कांशिवालये ॥ ७९ ॥ दोहोमाजिआवडते ॥ जेमानलुहोयचित्ते ॥ बहूतकरुनिआकते ॥ वैसिजेगा ॥ ८० ॥ झणोनिते
 सतेजाणावे ॥ मनराहतंपाहावे ॥ राहणुतथराचवे ॥ आसनऐसे ॥ ८१ ॥ वरीचारवटभुगसेवडी ॥ माजिधनवस्त्राचीयंडी ॥
 तळवटीअपोडी ॥ कुशाकुर ॥ ८२ ॥ सकोमळसरिसे ॥ स्रवटराहतीआपैसे ॥ एकपाटुतेस ॥ वोजायाली ॥ ८३ ॥ परिसावि
 याचिउचहोइल ॥ तरिआगहनडालल ॥ नाचनरोपावल ॥ भूमिदोष ॥ ८४ ॥ झणोनितेसनकरावे ॥ समभावेधरावे ॥ हे
 बहुअसोहोआवे ॥ आसनऐसे ॥ ८५ ॥ श्रुती ० तंत्रकाग्रमनःकृत्वायतचित्तोदयक्रियः ॥ उपविश्यासनेयुज्यायोगीमात्मवि
 श्रद्धये ॥ १२ ॥ टी ० मगंतथआपण ॥ एकाग्रअतःकरण ॥ करुनिस्तुरुस्मरण ॥ अनुभविजे ॥ ८६ ॥ जेथसंरतेनिआदे ॥
 सवाह्यसालिकेभरे ॥ जंवकाविययपणवरे ॥ अहंभावांचे ॥ ८७ ॥ विषयाचाविसरपदे ॥ इंद्रियांचाकसमसमोडे ॥ मनाचीयडोयडो ॥
 हृदयामाजी ॥ ८८ ॥ एसंऐक्यहंसहंज ॥ फावेतं वराहिजे ॥ मगतेणोचिवोदेवैसिजे ॥ आसनावन ॥ ८९ ॥ आतांआगतेअंगक
 री ॥ पवनानेपवनधरी ॥ ऐसीअबुभवाचीउजरी ॥ होचिलगी ॥ ९० ॥ प्रवनिमाधोनामोहरे ॥ समाधिएलाहोउतरे ॥ आंधवेअ
 ध्यांसंसरे ॥ बेसुतरेवो ॥ ९१ ॥ मुट्टेचोमोदीऐशी ॥ तेचिसांगिजेलआतांपरियेसी ॥ तरिउरूयाजघनासी ॥ जडोनिघाली ॥
 ॥ ९२ ॥ चरणतळदेवडी ॥ आधारदुमाचाबुडी ॥ सुधटितेगादी ॥ संचरणां ॥ ९३ ॥ सव्यतोतळंठेविजे ॥ तेणेंशिवाणीमअर्थाद
 जे ॥ तरेबेंसोसहजे ॥ वामचरण ॥ ९४ ॥ गुदमेदाआतोती ॥ चारीअगुळेंनिगुती ॥ तेथसाधसाधयेतोती ॥ सांडुनिया ॥ ९५ ॥ माजि
 णट ॥ ओ ॥ ७७ ॥ हो ॥ हीहो ॥ ओ ॥ ८५ ॥ बाये ॥ ओ ॥ ८७ ॥ जेसे ॥ अथवातेसे ॥ ओ ॥ ८९ ॥ कठिण ॥ ओ ॥ ९० ॥ व ॥

आंगुल्यङ्गनिगे ॥ तेथदांचेंचं निउत्तरभाग ॥ नंदेदिजेविराजें ॥ पल्लेनी ॥ ६५ ॥ उचलिलंकांनेणिजे ॥ तेसेंपृष्ठातउचलिजे ॥ शु-
 ल्मद्वयधरिजे ॥ तेणेंचिमानें ॥ ९७ ॥ मगशरीरसंचुपाया ॥ अशेषहोसवया ॥ पाळींचामाथा ॥ स्वयंप्रहोये ॥ ९८ ॥ अजुनाहंजणा ॥
 मूळबंधचेंलक्षण ॥ वजासनगोणा ॥ नामयासी ॥ ९९ ॥ ऐसीआधारसुंदपडे ॥ आणिआधींचामार्गमोडे ॥ तेथअपानआंतुळेक
 डे ॥ बोंहोदोलगे ॥ १०० ॥ श्लो० समंकायशिरोघ्रीवंधारयन्मचळस्थिरः ॥ संप्रेक्ष्यनामिकाग्रंस्दिशश्चानवलोकयन् ॥ १२ ॥
 दी० तवकरसपुटआपेंसें ॥ वामचरणीवेंसें ॥ बाहूस्फूर्तिसें ॥ थोरीवआली ॥ १ ॥ माजिउमरिलेनिंदें ॥ शिरकमळहोयगा
 डें ॥ नेवहारीचिंकवडें ॥ लागूपाहती ॥ २ ॥ वरचिलेपातेंनदळती ॥ तळींचीतळीपुंजाळती ॥ नेथअर्धोन्मीलितस्थिती ॥ उपजेत
 या ॥ ३ ॥ दिवाराहोनिआतुलेकडे ॥ बाहेरपाउलघालीकोडें ॥ तेठारीवावोपडे ॥ नामाग्रपीठां ॥ ४ ॥ ऐसेंआतच्याआतचिरचे ॥ वा
 हेरिमाणुनैनवचे ॥ ह्यणोनिराहाणेंआधिचोदिठेंचें ॥ नेथेचिदोय ॥ ५ ॥ आतांदिशांचीभेदोष्ट्यावी ॥ कांरूपानीवादपहावी ॥ हेचाड-
 मरेआयवी ॥ आससया ॥ ६ ॥ मगकटनळओटे ॥ हनुवटीहोदोतीदाटे ॥ तेगाहोहोर्जनिनेहटे ॥ वसस्थळी ॥ ७ ॥ माजिघंटिकालोपें ॥
 बरिबंधजोआरोपें ॥ तोजाळंधरदूणिपें ॥ पंडुकुमरा ॥ ८ ॥ नामीवरपोसे ॥ उदरहोथोके ॥ अंतरांपांके ॥ हृदयकोश ॥ ९ ॥ साधि
 छानाचरिलेकांवी ॥ नाभिस्थानतळवटी ॥ बंधपडेकिरोटी ॥ बोदीयाणातो ॥ १० ॥ ऐसीशरीराबाहेरलीकडे ॥ अप्यासाबीपा
 रवरपडे ॥ श्लो० प्रशान्तात्माविगतमीर्द्रंक्ष्वाशित्रतेस्थितः ॥ मनः संयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीनमत्परः ॥ १४ ॥ दी० तंवआत-
 नायमोडे ॥ मनोधर्माची ॥ ११ ॥ कल्पनानिमे ॥ प्रवृत्तीशोमे ॥ आगमनविरमे ॥ सावियर्चा ॥ १२ ॥ क्षुधाकायजाहाली ॥
 निद्राक्रेउतीगेली ॥ हआठवणहीहारपली ॥ नदिसेवेगा ॥ १३ ॥ जीमूळबंधेंकोडिला ॥ अपानमाथोतासुडला ॥ तोसर्व-

पाठ. ओ. ६ वास. ओ. वृत्ती. ओ. १० बोदियाण.

चित्रीसांकडला ॥ धरीफुगू ॥ १४ ॥ सांमलेपणे साजे ॥ उवाइलातायीगाजे ॥ मणिपुरसांजुसे ॥ राहोनिशां ॥ १५ ॥ मगथांब
 लियेबाहदुबी ॥ सेंधघेरुनिघेरडहुबी ॥ बाळपणीचीकुहादुळी ॥ बाहेरयाली ॥ १६ ॥ भीतरीवुबीनधरे ॥ कोठ्याभाजिसंच
 रे ॥ कफपित्ताचेयारे ॥ उरेंनेदी ॥ १७ ॥ धातूचेसमुद्रउलडी ॥ मेलाचपतफोडी ॥ आतलीमज्जाकाटी ॥ अस्थिगत ॥ १८ ॥
 नाडीतेंसोडवी ॥ गात्रातेंविथडवी ॥ साधकातेंमडसावी ॥ परीविद्देवना ॥ १९ ॥ व्याधतंदावी ॥ सवेचिहारवी ॥ आपपृथ्वा
 कालवी ॥ एकवाट ॥ २० ॥ तंवयरीकडेधनुर्धरा ॥ आसनाचाउवारा ॥ शक्तिकरीउजगरा ॥ कुडलनीतें ॥ २१ ॥ नागिणीचेंपिलें
 ॥ कुंकुमेंनाहलें ॥ वळणघेडिनिआलें ॥ सेजंमंमं ॥ २२ ॥ तेंसीतेंकुडलिनी ॥ मोटकीओटवळणी ॥ अधोसुरवसंपिणी ॥ निदे-
 लीअसे ॥ २३ ॥ विद्युल्लतेचीविडी ॥ वह्निज्वाळाचीधडी ॥ पंथरयाचीचांसुडी ॥ घोंदीचेंजेशी ॥ २४ ॥ तेंसीसुबकआदली ॥
 पुदीहोतीदादली ॥ तेंवज्जासनेचिमुतली ॥ सावधहाय ॥ २५ ॥ तेंथुनक्षत्रजसेउलडलें ॥ कांसूर्याचेंआसनमोडलें ॥ तेज्जें
 बीजविरूढलें ॥ अंकुरेशी ॥ २६ ॥ तेंसेविटयानेसोडिती ॥ कवतिकंआगमोडामोडिनी ॥ कंदावरीशक्ती ॥ उठिलीदिसे ॥ २७ ॥
 सहजेंबहुतांदिवसान्चीभूक ॥ वरिचेवविलीतेंहोयमिषा ॥ मगआवधांपसरीसुख ॥ उद्वाउजू ॥ २८ ॥ तेंथत्तदयकोशातळववी
 ॥ जापवनमरेकिरीटी ॥ तयासगळ्याचीमिठा ॥ देडनिवाली ॥ २९ ॥ मुरवेंच्याज्वाळा ॥ तळींवेरीकवळा ॥ मासान्चीवुडुबाळी
 आरोगूलागी ॥ ३० ॥ जेजवांसमासा ॥ तेंथअहाचजोड्याउसे ॥ पाठीयकदोनांधास ॥ दिव्यादीभरी ॥ ३१ ॥ मगतळवेतळद्द
 तशोधि ॥ उर्ध्वेंचिरवडसेदी ॥ झाडायेरंधी ॥ प्रत्यंगाचा ॥ ३२ ॥ अधोभागतरीनसांडी ॥ परिनरगेंचिहांसत्वकाटी ॥ तत्ताधु
 वृनिजडी ॥ पांजरेशी ॥ ३३ ॥ अस्थीचेनळेनिर्गरी ॥ शिगयेंदेहरवादिपा ॥ तेंनगहेरिहोदोकरेपा ॥ रोमदोजान्नी ॥ ३४ ॥ मगन-
 पाव ॥ ओ ॥ १४ सावियन्ची ॥ ओ ॥ २० वट ॥ ओ ॥ ३१ ओबिस ॥ ओ ॥ ३२ तळका ॥ ओ ॥ ३३ अंधारा ॥

समधातुच्चासागरीं ॥ ताहानेलीघोटमरी ॥ आणिसर्वेचिउन्हाळाकरे ॥ खडखडीत ॥ ३५ ॥ नासापुलोनिवारा ॥ जोजातसे आंशु-
 खंबारा ॥ तोगचियेरुनिमाघारा ॥ आतयाली ॥ ३६ ॥ तेथअधवरेंतें आकुंचे ॥ उर्ध्वतळेंतें स्वांचे ॥ नयाखेवामाजिचक्रीचे ॥
 पदरउरती ॥ ३७ ॥ येहवीतरांदोन्हीतेव्हाचिभिलती ॥ परिकुंडलिनानवें कदुनितहेती ॥ तेतयातें द्वाणोंपरीतो ॥ तुझीचिकय-
 एये ॥ ३८ ॥ आइकंपार्थिविधातुआघवी ॥ आरोगितांकाहीनुपरी ॥ आणिआपातें तंववेवो ॥ पुसोनियां ॥ ३९ ॥ ऐसीदोनोमृतें
 रवाये ॥ तेवेळींसंपूर्णधायो ॥ मगसोस्यहोर्निराहो ॥ मरुसंपाशी ॥ ४० ॥ तेथतुसीचेनिमसंतोषे ॥ गरळजेविबभोसुखे ॥ तेणें-
 तियेचेनिपीयूषे ॥ प्राणजिये ॥ ४१ ॥ तोअग्नीआतुनिनिघे ॥ परिसबाह्यनिववूंचिलागे ॥ तेवेळीकसुबाधतीआंगें ॥ सांढिलीपुट-
 ती ॥ ४२ ॥ मार्गमोडितीनाडोचे ॥ नवविधपणवायूचे ॥ जायद्वणुर्निशरीराचे ॥ धर्मनाही ॥ ४३ ॥ इडापिंगळाएकवती ॥ गोंठोती
 न्हीसुटती ॥ साहीपदरफुटती ॥ चक्राचेहे ॥ ४४ ॥ मगशशीआणिमानु ॥ ऐसाकल्यजेजोअनुमानु ॥ तोवातीवरीपवतु ॥ शिवंस-
 लानदिसे ॥ ४५ ॥ बुद्दीचाफुलिकाविये ॥ परिमळझाणीनुरे ॥ तोहीशक्तीमवेसचरे ॥ मध्यमेमाजि ॥ ४६ ॥ तंववरिलें कडोनिदाळें ॥ वं-
 द्राभृताचेंतळें ॥ कानवडोनिमिळें ॥ शक्तिसुखी ॥ ४७ ॥ तेणेंनाळेंकरसभरे ॥ तोसर्वागामाजिसंचरे ॥ जेशिंचातेथपुरे ॥ प्राणपव-
 न ॥ ४८ ॥ तातलियेसुसे ॥ मेणनिघोनिजायजेंसे ॥ मगकांदलारांदरेसे ॥ वोलतेनो ॥ ४९ ॥ तेंसेंपिंडाचेनिआकारें ॥ तेकळाचिकांउ-
 वतरे ॥ वरित्वेचेनिपदरें ॥ पांघुरलीअसे ॥ ५० ॥ जेंसीआमाळाचीबुंधी ॥ करूनिराहोगमस्ती ॥ मगफिटलियादीस्त्री ॥ धरूनिये-
 ॥ ५१ ॥ तेंसाआहाचवरिकोरडा ॥ त्वेचाअसेपातोडा ॥ तोझडोनिजायकोडा ॥ जेंसाहोये ॥ ५२ ॥ मगकाशमीरीचेंस्वयंभ ॥ कारल-
 बीजानिधालेकोफा ॥ अवयवकर्तृत्वांभाव ॥ तेंसीदिसे ॥ ५३ ॥ नातरांसंध्यागरीचेंरंग ॥ काटुनिविळिलेंतें आंग ॥ किंअंतरज्योति

पाठ- ओः ४० मालीः ओः ४१ वमिजः

चेलिंगा॥ निर्वां छल्ले ॥ ५६॥ कुंकुमाचंमराव ॥ सिद्धरसाचेर्योनिव ॥ भजपाहतांसावेव ॥ शांतिचित्ते ॥ ५५॥ तें आनंदचिन्तेंवेले
 पा॥ नातरीमहासुराचरूप ॥ क्रिसतापतरुचरोप ॥ थावलेंजैसे ॥ ५६॥ तोकनकचपकाचाकळ्या ॥ कीअमृताचापूतळा ॥ ना
 नासांसिनलामळा ॥ कोवळिकेचा ॥ ५७॥ होकाजेशारदियेचनिवाले ॥ चंद्रविंपणलेले ॥ कांतेजचिमूतबेसले ॥ आसनाव
 री ॥ ५८॥ नैसेशरीरहाये ॥ जेवळीकुडलिलीचंद्रपिये ॥ मगदेहाकृतिविदे ॥ कृतातगा ॥ ५९॥ यार्धक्यतराबहुडे ॥ तारुण्या-
 चीगांभीविचडे ॥ लोपलीउधडाळटशा ॥ ६०॥ वयसातरयेतुलवरी ॥ येहवीबाळाचाबळार्यकरी ॥ धेंयांचीयोरी ॥ निरुपम
 ॥ ६१॥ कनकद्रुमाम्यापालवी ॥ रत्नकळिकानियनवी ॥ नगवैतेसोद्वरवी ॥ नवीनिघनी ॥ ६२॥ दांतहीआनहोती ॥ परिअपट्टे
 सानेजती ॥ जेसीदुवाहीबैसंपाती ॥ हिरयाची ॥ ६३॥ माणिकुलियाचियाकणिया ॥ सावियाचिअणुप्रमाणिया ॥ तेंसियासंबी
 गीउधवतीआणिया ॥ रामाचिया ॥ ६४॥ करचरणतळे ॥ जेसीकोरांतोन्यले ॥ पारवाळावैहोतीदोळे ॥ कायसांगो ॥ ६५॥ मिडान-
 राचेनिकोदोटे ॥ मोतियेनावतीसंपुटे ॥ मगशिवर्णजिमीउतटे ॥ धनक्तिपल्लवाची ॥ ६६॥ तेंसीण्यातियांचियेकवळियेनसमाये ॥
 दिठीजाकळीनिनिघांणहे ॥ आधिलोचिपरीहोये ॥ गगनाकळीती ॥ ६७॥ आइकंदेहहोयसोनियांचे ॥ परित्ताचवइयेवायूचे ॥ जे
 आपआणिपृथ्वीचे ॥ अशानाही ॥ ६८॥ मगसमुद्रांपलीकडीलदेखे ॥ स्वर्गाचाआलोचआइके ॥ मनोगतबोळखे ॥ सुगियेंचे ॥
 ॥ ६९॥ पवनाचावारिकांवळये ॥ चालतगंगुदकीपाउलनलगे ॥ येणेंयेणेंमसंगे ॥ येतीवहुतासिही ॥ ७०॥ आइकेमाणाचाहात
 धरूनि ॥ गगनाचीपाउगीकरुनी ॥ मध्यमंचेनिदाराहुनी ॥ तूदयाआली ॥ ७१॥ तेंकुडलिलीजगदंबा ॥ जेवेंतन्यचक्रवर्तीची-
 शीमा ॥ जयाविश्ववीजाचियाकोंभा ॥ साउलीकली ॥ ७२॥ जेधृत्यलिंगावोपिंडी ॥ जेपरमात्मायाशिवाचीकरंडी ॥ जेप्रणवोची-
 पाठः ओः ५५ हेः ओः ६४ मानियाः ओः ६५ पारवाळांः ओः ६७ कवळियाः ओः ७३ मणानीः ओः ७४

उयडी ॥ जन्मभूमी ॥ ७३ ॥ हे असो ते कुंडलिनीबाळो ॥ तू दया आंत आली ॥ तंव अनहानाचा बोली ॥ चावळे ते ॥ ७४ ॥ शक्तीचि अ-
 आंगलागले ॥ बुद्दीचें चेतन्य होतें जाहोले ॥ तें तोंणें आइ किलें ॥ अळुमाळ ॥ ७५ ॥ घोषाचा कुंडो ॥ नाद सिवाचीं रूपडी ॥ प्रणवारि
 यामोडी ॥ रेशिनी ऐसी ॥ ७६ ॥ हे चि कल्यांव नरी जाणिजे ॥ परिकल्पितें कैचें आणिजे ॥ तरि नेणो काय गजें ॥ नित्येठारो ॥ ७७
 विसरोनि गेलो अजुना ॥ जंवना शाना ही पवना ॥ तंव वाचा आधी गगना ॥ ह्मणुनि युमे ॥ ७८ ॥ तथा आनाहानाचें निमेष ॥ आ
 काश दुमडु मोंलागे ॥ तंव ब्रह्मस्थानी चें वेगें ॥ सहज फिटें ॥ ७९ ॥ आइ कै कमलगर्भा करे ॥ जेंम हृदाकाश दुसरे ॥ जेथें चेतन्य आ-
 धातुरें ॥ होईनि असिजे ॥ ८० ॥ तथा तू दयाचा परिबारि ॥ कुंडलिनीया परमेश्वरी ॥ तेजार्चा शिंदोरो ॥ विनियोगिली ॥ ८१ ॥ बुद्दी
 चें निशांकें ॥ हातबोने निंकें ॥ हे तें तेथ नंदरेव ॥ तें सकलें ॥ निजकानी हारविली ॥ मग प्राणचि केवळ जाहाली ॥ तेवेळी कै सोरागम-
 ली ॥ ह्मणावीण ॥ ८३ ॥ हो कांज पवनाची पुनळी ॥ पांघुरली होती सोने सळी ॥ तें फेडुनिया वेगळी ॥ तेविली निया ॥ ८४ ॥ नातरी वा
 युचें नि आंगें झगटली ॥ दीपची दृष्टी निमटली ॥ कालखलखली निहार पली ॥ बाजगेनी ॥ ८५ ॥ तें सीतू दयक मळवेही ॥ हिसे
 जेसी सोनयाची सरी ॥ नातरी मकाशजळाची झरी ॥ वाहत आली ॥ ८६ ॥ मग तें तू दयभूमी पोकेळें ॥ जिसली कां एके वेळें ॥ ते
 सें शक्तीचें रूप मावळे ॥ शक्तीचि माजि ॥ ८७ ॥ तें व्हांवरी शक्तीची ह्मणिजे ॥ येतूही तो माण केवळ जाणिजे ॥ आताना दबिंद नेणि
 जे ॥ कळज्योती ॥ ८८ ॥ मनाचा हनमार ॥ कांपवनाचा आधार ॥ ध्यानाचा आदर ॥ नाहीं पारी ॥ ८९ ॥ हे कल्पना घेसांडो ॥ तेजोही
 दयेपर वडी ॥ हे महाभूतचें फुडो ॥ आदणींदेखा ॥ ९० ॥ पिंडी पिंडाचा यास ॥ मोहानाथसंके निचाटश ॥ परि हाउनि गेला उद्देश
 श्रीमहाविष्णु ॥ ९१ ॥ तथा धनिनाचें केंगें मांडुनी ॥ यथार्थाची घडी झाडुनी ॥ उपन विलीप्या जाणुनी ॥ ग्राहो कथीते ॥ ९२ ॥

पाव. ओ. ७९ स्थानी चें वेगें. ओ. ८० कुरुनि. ओ. ८१ पारिवार. ओ. ८४ जेंसो. ओ. ८५ जेंसो. ओ. ८६ जेंसो. ओ. ८७ जेंसो. ओ. ८८ जेंसो. ओ. ८९ जेंसो. ओ. ९० जेंसो. ओ. ९१ जेंसो. ओ. ९२ जेंसो.

प्रसो० युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीनियतमानसः शान्तिर्निर्वाणपरमांमत्संस्थामधिगच्छति ॥ १७ ॥ दी० ऐकंशक्तीचेतेजज्जलोपे ॥
 तेथदेहाचेरूपहारपे ॥ मगतोडोळयागात्रिलोपे ॥ जगांनिया ॥ १३ ॥ येहवीआधिलानिऐसें ॥ सावयवतरिऐसें ॥ परिवायूंचेजेसें
 ॥ बळिलहोये ॥ १४ ॥ नातरकंदळीचागभा ॥ लुथीसाडोनिउष्मा ॥ कांअवयवचिन्मा ॥ उदयलानो ॥ १५ ॥ तैसेंहोयशरीर ॥ तेंतस्य
 णिजेस्वेचर ॥ हेपदहोतांचमत्कार ॥ फिंजर्ना ॥ १६ ॥ देखेंसाधकनियोजिजाचे ॥ मागंणउल्लाचिबोलराहे ॥ तेथवार्थवार्थहोये ॥
 अणिमादिक ॥ १७ ॥ परितेगंकायकाजआणण्या ॥ अवथारिऐसाधिनजया ॥ लोपआथीभूतत्रया ॥ देहाचादेहो ॥ १८ ॥ पृथ्वीति
 आपविर्धी ॥ आपातेंतेजजिर्धी ॥ तेजातेपवनहूर्धी ॥ न्हदयामाजी ॥ १९ ॥ पाठीआपणएकलाउरे ॥ परिशरीराचिनिअबुका-
 रे ॥ मगतोहिनिगेअंतरे ॥ गगन्नामिळे ॥ ३० ॥ तंवळींकुंडलिनीहेमाषजाये ॥ मगमारुतेऐसेंनामहोये ॥ परिशक्तीपणतेआहे
 ॥ जंवनमिळेशिर्वां ॥ १ ॥ मगजाळंधरसांडो ॥ ककारंगतफोडो ॥ गगनचियेपाडो ॥ पैगीहोये ॥ २ ॥ तेंओंकारानियेपाडो ॥ पाय
 देतउवाउवी ॥ पश्यतीयेचियेपाउवी ॥ मागाघालो ॥ ३ ॥ पुढेंतन्मात्राअर्थवरी ॥ आकाशाचाअंतरी ॥ भरतीगमेसागरी ॥ सरिता
 जेवी ॥ ४ ॥ मगब्रह्मरंध्रीस्थिरावोनी ॥ सोहंभावाचाबाह्यापसरुनो ॥ परमात्मालिगाधावोनी ॥ आगाथडे ॥ ५ ॥ तंवमायाभूता
 चीजचनिकफिटे ॥ मगदोहीमिहोयसूटे ॥ तेथगगनासकटाटे ॥ समरसीतिये ॥ ६ ॥ पैमेथाचेनिअबुखीनिवडला ॥ ससुडकावो
 घीपडिला ॥ तोमागुताजैसाआला ॥ आपणण्या ॥ ७ ॥ तेबिपिंडाचिनिमिषें ॥ पदांपदमवेशी ॥ तेंएकतलदेथतेंसें ॥ पंडुकुमरा ॥ ८ ॥
 आतांदुजेंहनहोतें ॥ कोएकविहेंआइतें ॥ ऐशियेविंबचनेपुरतें ॥ उरेविना ॥ ९ ॥ गगनींगनलयाजाये ॥ ऐसेंजेंकाहीआहे ॥ तेंअ
 नुसवेंजोहोय ॥ तोहोऊनिवाके ॥ १० ॥ ह्मणोनितीथिचाभात ॥ नवदेविबोलाचाहात ॥ जेणेंसंचादविचागावाआत ॥ पैवकीजे ॥ ११ ॥

अर्जुनायेरुवतींरी ॥ इया अभिमायाचा जेगर्व धरी ॥ ते पाहें पांचरवरी ॥ दुर्गेदली ॥ १२ ॥ भूलता भागती कडे ॥ तेथ मकाराचे चि आंगने
मांडें ॥ सडेया प्राणासां कडे ॥ गगनायेतां ॥ १३ ॥ पागेतें येचि तो मिसळला ॥ तें शब्दाना देवमावळला ॥ मगतयाही वरी आटसों वि-
नल्या ॥ आकाशाचा ॥ १४ ॥ आतां महाशून्याचिया डोहीं ॥ जेथ गगनासी चिया बोनाहीं ॥ तेथ नागाला गेला काई ॥ बोलाचा इया ॥ १५ ॥
सपूनि आरवरी माजि सांपडे ॥ कीं काना बरी जेडे ॥ हे ते सें नव्हे पुढे ॥ त्रिशद्वीरा ॥ १६ ॥ जैकाही देवे ॥ अनुभविले फळे ॥ ते आपणावि-
हें ठाकावे ॥ होउनि यां ॥ १७ ॥ पुढती जाणणें तेनाहींचि ॥ झणोनि असो किती हं चि ॥ बोलावे आतां वांयाचि ॥ धनुर्धरा ॥ १८ ॥ ऐसें धन-
दजात माघों तें सरे ॥ तेथ सें कल्याचें आयुष्यपुरे ॥ वाराही जेथ नशिरे ॥ विचाराचा ॥ १९ ॥ जेउन्य नयेचें लावण्य ॥ जें तुयें चें तारुण्य ॥
अनादि जें अगण्य ॥ परमतले ॥ २० ॥ जे विश्वाचें मूळ ॥ जे यागदुमाचें फळ ॥ जें आनदाचें केवळ ॥ चेतन्यगा ॥ २१ ॥ जें आकाराचा मा-
ता ॥ जो मोसाचा एकांत ॥ जेथ आदिआणि अंत ॥ विरोनि गेले ॥ २२ ॥ जें महासुतांचें बीज ॥ जें महातेजचें तेज ॥ एवं पाथी जें किज ॥ स्व-
रूपमाझे ॥ २३ ॥ तेहचतुर्भुजकां मेळो ॥ जयाची शांमारुणमि आलो ॥ देखेनि नास्ति कां नो किलो ॥ भक्तवंदरो ॥ २४ ॥ तें अनिर्वाच्य महा-
सुख ॥ पै आपणचि जाहाल जे पुरुष ॥ जयाचे कानि कवी ॥ प्रा निवरी ॥ २५ ॥ आहोसा धन हें जें सांगितले ॥ तें विश्वेश्वरी जिहो केलें ॥
ते आसुचे निगडे आले ॥ निवळले या ॥ २६ ॥ परब्रह्माचे निरसे ॥ देहाकृती ॥ येथे निरसुं ॥ वोतां वजाहालें तें सें ॥ दिसती आणे ॥ २७ ॥
जरि हे मतीनिहन अंतरी फाके ॥ तरी विश्वचि हे अवयं द्याके ॥ तंव अर्जुन द्योने के ॥ साचनि जो हे ॥ २८ ॥ कांज आपण आतां देव ॥ हाबो-
लिले जो उपाव ॥ तोपामीचा बाव ॥ झणोनि घडे ॥ २९ ॥ इयें अस्थामी जें हट होता ॥ तेथ रवं मी न ब्रह्मबयेवो ॥ हें सांगत याचीरीती ॥ कळ-
लें मज ॥ ३० ॥ देवागोवीचि हेरेकतां ॥ बोधउपजनसंचिना ॥ या अनुभवे तें झोनना ॥ ना होले केवो ॥ ३१ ॥ झणउनि येथ काही ॥ अन्तरि

पमत. ओ. १४ दिवो. ओ. १५ गगनासिमाबोनाही. ओ. १६ प्रसंगा ओ. १७ कही ओ. २० शयनीति

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

येनाहो॥ परिनावभरीचिन्दई॥ बोलाएका॥ ३०॥ आतां कृष्णातुवासांगीतलयोग॥ तों मनानरीआलाचंग॥ परिनशवेकुरुणांग॥
 योग्यतेचा॥ ३३॥ सहजेआंगिकजेतुलेंआहे॥ नितुलियाचिजरीमिह्रिजाये॥ तरहाचि मार्गसुखापाये॥ अस्थामीन॥ ३४॥ नानरी
 देवनेंसांगीतल॥ तेंसंआपणपंजरीनठकल॥ तरंग्यतेवाणजरीहोडल॥ तेंनिपुसां॥ ३५॥ जीवींचियेगंसीधारण॥ ह्मणेनि
 पुसायजाहलेंकारण॥ मगह्मणतरीआपण॥ चिन्दइजो॥ ३६॥ हाहाजीप्रवधारिलें॥ जेंदेंसाधनतुमीनिरूपिलें॥ तेंआवड
 तयाहिअस्थामिलें॥ फावोशके॥ ३७॥ कांग्ययतेवाणनाहो॥ एंसंहनआहेकाही॥ तंथमीकृष्णह्मणताकाई॥ धनुर्यो॥ ३८॥
 हेकाजकीरनिर्वाण॥ परिआणिकहीजेकाहोसाधारण॥ तेंहीआधिकारानेंवोडविण॥ कायसिद्धजाये॥ ३९॥ पंग्यतजेह्मणि
 जे॥ तेप्राप्तीचिआधानजाणिजे॥ कांजयोग्यहोडनकाजे॥ तेंआरंभिलेंफुळे॥ ४०॥ तरिनेसीएथकाहो॥ साविथाचिकेणीनाहो
 आणियोग्यतेचिकाई॥ रवाणीअसे॥ ४१॥ नांवेकविरक्त॥ जाहलादेहधर्मोनियत॥ तरितोचिनदेव्यवस्थित॥ अधिकारिया॥
 ॥ ४२॥ येतुलालियेआयणीमाजिवेंड॥ योग्यपणतुनंदाजोडे॥ एसेंमसंगसाकडे॥ फंडिलंतयांचे॥ ४३॥ मगह्मणपायी॥ तेंदरेसी
 व्यवस्था॥ अनियतासिमवथा॥ योग्यतानाही॥ ४४॥ श्लो० नात्यथतस्तुयोगीस्तिनंचकानमनश्चनः॥ नचातिस्वप्रशीलस्यजा
 ग्रतेनैवचार्जुन॥ १६॥ टी० जोरसेनंदियाचाअंकिला॥ कांनिदरेमिजीविकला॥ तोनाहोएथह्मणितला॥ अधिकारिया॥ ४५॥
 अथवाआग्रहाचियेबाहोडी॥ क्षयातृषाकोंडा॥ आहारांतंतोडी॥ मारुनिगां॥ ४६॥ निंदनियावादाबवचे॥ ऐसाहोवेचेंनिश्चव
 तरणेंनाचे॥ तेशरीरचिन्हंतयांचे॥ मगयोगकवणाचा॥ ४७॥ ह्मणेनिअतिशयविषयसेवावा॥ ऐसाबोधनोहावा॥ कासर्वथा
 निरोधावा॥ हेहीनको॥ ४८॥ श्लो० युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु॥ युक्तस्त्रमाबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ १७॥ टी०
 पाठ॥ ओ० ४० जै० तै० ओ० ४४ हेत०॥ ओ० ४७ मा० ओ० ४८ तै० सावित्रीधनोहावा॥ अथवाविरोधहोदावा॥

आहारतरसि विजे ॥ पराशुक्तीच निमापम विजे ॥ क्रिया जात आनरिजे ॥ तथाची स्थिती ॥ ६१ ॥ मापितलाबोलबोलिजे ॥ भितलिया पाउळीं
चालिजे ॥ निद्रहीमानदीजे ॥ अवसर एक ॥ ६० ॥ जाणें जरी जाहोले ॥ नरी व्हावें तें भितलें ॥ येतुलें निधातु साम्य संचले ॥ असे लसुख ॥
॥ ६१ ॥ ऐसें शुक्तीचे निहाते ॥ जें इंद्रिया बांधे जाते ॥ तें संतोषा भिवा दत्तं ॥ मन चिकरी ॥ ६२ ॥ श्लो० यदा विनियत निचभात्ये वावति
छते ॥ निस्पृहः सर्वकामेष्वप्ययुक्त इत्युच्यते तदा ॥ ६३ ॥ टी० बाह्यं शुक्तीची मुद्रा प्रदे ॥ नव आंत आंत सरव वाटे ॥ तेथें सहजें चियोग घेते
॥ नाश्यासिता ॥ ६४ ॥ जे संश्रयानि नय मंडसे ॥ उद्यमाचे निमित्त ॥ मग समष्टि द्वाजान ओपसे ॥ घर रिये ॥ ६५ ॥ ते सायुक्ति संत कौतुकं ॥
अभ्यासा चिया मोह राढाके ॥ आणि आत्मसिद्धार्थ पिके ॥ अनुभव तथाचा ॥ ६६ ॥ क्षणोनिशुक्ति हे पाडवा ॥ घडे जया सरेवा ॥ तो अप
वर्गी विये राणिवा ॥ अचक्षु रंजे ॥ ६७ ॥ यथा दीपो निवानस्थानं गते सोपमा स्मृता ॥ योगिने यतचित्तस्य युंजते योगमात्मनः ॥
॥ ६८ ॥ टी० युक्तियोगाचें आंग पावे ॥ एतं प्रयागं न यथा यव रवं ॥ तेथे दोत्र सन्यासो स्थिरावे ॥ मानस जयाचें ॥ ६९ ॥ तथातं योगयुक्त-
तं स्मृण ॥ हं ही प्रसंग जाण ॥ तें हो पांच उघल स्मृण ॥ निवांती विया ॥ ७० ॥ आनातुं समनोगत जाणी नी ॥ कांही एक आह्मी स्मृणोनी ॥ तें
निक्कें चित्ते उ नी ॥ परिसाधया ॥ ७१ ॥ नृनामीची चाडवा दसी ॥ परि अभ्यासो दस्स न हासी ॥ तें सांगंगा काय बिहसी ॥ दुबाड पणे ॥ ७२ ॥ नरि
पार्थो हं क्षणे ॥ साधारं वश हो मन ॥ वाया बायु लय दुर्जनो ॥ इंद्रिय करुनी ॥ ७३ ॥ पाहें पां आयुष्यातें अटळ करी ॥ जे सरतें जीवित बारी ॥
तया ओषधा ते वरी ॥ काय निद्वान स्मृणे ॥ ७४ ॥ ते मोहना मिजे निके ॥ तें सदां चिया इंद्रिया दुःखें ॥ येह वीं सोपें योणा सारि रवे ॥ कंही
आहे ॥ ७५ ॥ श्लो० यत्रोपरमते चित्त निरुद्धयोग संवथा ॥ यच्च वारुणात्मानं पश्यन्नात्मनि तु यमि ॥ ७६ ॥ सुखमात्यंतिकं यत्तदुद्दि-
ष्टाद्य मनींद्रियम् ॥ वीत्यत्र न च वार्थं स्थितं श्रुतं नित्यतः ॥ ७७ ॥ टी० क्षणोनि आसना चिया गाढका ॥ जो आहो अभ्यास सोगत
ला निक्का ॥ तेणें हो ईल तर हो का ॥ निरोधया ॥ ७८ ॥ येह वीं तरें येणें योग ॥ जें इंद्रियां विदाण लागे ॥ तें चित्त भेदो रिये ॥ आपणें पये ॥

परतो निपाठिरीठांके ॥ आणि आपुणियांतें आपणदेखें ॥ देगवतं गंवें वाळुमे ॥ दूणेतत्त्व हे मी ॥ ६५ ॥ नियोबोळगवीची स्मरिसे ॥ सूरवा
विचासास्त्राज्यीबेंसे ॥ मग आपण पासमनस ॥ विरनिजाये ॥ ६६ ॥ अथापरतें आणी कनाही ॥ जयातें इंदियेने पातीक हो ॥ तें आ
पणचि आपुलियावारी ॥ होउनिठांके ॥ ६७ ॥ यत्तो ॥ यंतळ्याचापरसाभंमन्यतेनाधिकंततः ॥ यस्मिं स्थितो नरुः सेनगुरुणापि वि
चाल्यते ॥ २२ ॥ टी० मगंमरुशसूनिथां ॥ देहदुःखाचे निंदां गरी ॥ दाटां जाणांपरी स्मारे ॥ विनन होतें ॥ ६८ ॥ काशस्त्रे वरी तोडिल्या
॥ देहअग्नीमाजि पडलिया ॥ चिन्नमहासुखापेह इलिया ॥ चेंवोनये ॥ ७० ॥ ऐसं आपयापां रिगोनिवाये ॥ मगदेहाचे वासनपाहे ॥ आ
गिकेचि सुख होउनिजाये ॥ ह्मणानि विसरा ॥ ७१ ॥ तों विद्यादुःखसंयोगां गसंज्ञितम् ॥ सनिश्चयेन शोक्त्योयोगो
निर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ टी० जसासूरवाचियांगां ॥ मन आर्त्तचिं संचि सोडा ॥ संसाराचियां तां डो ॥ गुंतलेंजो ॥ ७२ ॥ जें योगाची बरवा
संतोषाची रागिवा ॥ दानार्त्तजाणिव ॥ मयाळगी ॥ ७३ ॥ तें अस्थामिले निशां ॥ मावयवे देखावं लागो ॥ देखिलंतरां अंगो ॥ होइ जे लया
॥ ७४ ॥ श्लो० संकल्पप्रपंचांकाभास्यत्वासांनशपतः ॥ मनसैर्वेदियमां विनियम्य समंततः ॥ २४ ॥ टी० तरितांचियोगबापा ॥
एकेपरी आहो सोपा ॥ जरपुत्रशोकासंकल्पा ॥ दाखवाजे ॥ ७५ ॥ हाविषयाते विनालिया आइके ॥ इंदियेने माविषाधारणी देखे ॥ तरि
हियेचालु निमुके ॥ जीविलासि ॥ ७६ ॥ ऐसं वेरागयं हकरा ॥ तरिसंकल्पाचो सोपरा ॥ मुगंधती विषाधवबारी ॥ बुद्धिनांदे ॥ ७७ ॥ श्लो०
शनैः शनैरुपरमेहुद्धार्थितृहातया ॥ आत्मसंस्थमनः कृतानि कर्तविदपि नित्यतः ॥ २५ ॥ यतोयतो निश्चल निमनश्चंचलमस्थिरम्
ततस्ततो नियम्येतदात्मन्यवशनेयम् ॥ २६ ॥ टी० बुद्धिये होय वे सोदा ॥ तरिमनातें अनुभवविषावादा ॥ हलुहलु आपुनिकशम
तिष्ठा ॥ आत्मसुखनी ॥ ७८ ॥ याहि एकेपरी ॥ मार्माओह विचारी ॥ हेनतें कैतरां सोपारी ॥ आणी के ऐके ॥ ७९ ॥ आतां नियममिहा
पाठ ॥ ओ० ६६ तें ॥ ओ० ६७ तेथोच नपणें ॥ रस ॥ ओ० ६९ टें ॥ ओ० ७० चेंवोचि ॥ ओ० ७१ तें ॥ ओ० ७२ टें ॥

एकला ॥ जीवे करावा आपुला ॥ जे साकृतनिश्चया चिथाबोला ॥ बाहेरांगे हो ॥ ८० ॥ जरी येतुले भिचिनि स्थिरावे ॥ तरी काजा आलें स्वप्नां ॥
 नौहीतरी घालावें ॥ मोकलुनी ॥ ८१ ॥ मग मोकलिलें जे थजईल ॥ नेथूनि नियमों चिहोइल ॥ ऐसे निस्थैर्ये चिहोइल ॥ सा वियाचि को ॥
 ८२ ॥ श्लो० प्रशांतमनसहीन थो गिनं स्वरुमुत्तमम ॥ उपैति शांते रजसु ब्रह्मभूतमकल्मषम ॥ २७ ॥ टी० पावीके तुले निवें वेळे
 ॥ तया थैर्याचि निमैळें ॥ आत्मस्वरूप जवळें ॥ येईल सहजे ॥ ८३ ॥ तया ते देखीनि आगा धडेल ॥ तेथ अहेतो होत बुडेल ॥ आणि ए
 क्यने जे उधडेल ॥ त्रैलोक्य हे ॥ ८४ ॥ आकाशी दिसे दुसरे ॥ ते अफ्रजें विरे ॥ ते गंगन चि कोसरे ॥ विश्व जें ॥ ८५ ॥ तें सें चितलया जा
 ये ॥ आणि चितन्य चि आधवे होये ॥ ऐसी प्राप्ती सुखोपाये ॥ आहयेणें ॥ ८६ ॥ श्लो० युंज न्वे वसता त्मान थो गी विगत कल्मषः ॥ सु
 खेन ब्रह्मसंस्पृश मत्यंत सुख भक्षुते ॥ २८ ॥ टी० या सोपया थो गी स्थिती ॥ उकल देखिला गाबहुती ॥ संकल्पा चिया संपत्ती ॥ रुसो
 नियां ॥ ८७ ॥ ते सुखांचे निमांगणें ॥ आले परब्रह्मा अंतोंतें ॥ तेथ नृवणां जें सेजकांतें ॥ सांडुं नेणें ॥ ८८ ॥ तें सें होय ति ये मेळी ॥ म
 ग सागर स्या चि थारा उळीं ॥ महासुखाची दिवाळी ॥ जें गें सिदिसे ॥ ८९ ॥ ऐसं आपले पांच वरी ॥ चालिजे आपुने पाठीवरी ॥ हे पाथी
 नागवे तरी ॥ आनं ऐकें ॥ ९० ॥ श्लो० सर्वभूतस्थ मात्मानं सर्वभूतानि चात्मानि ॥ ईक्षते योगयुक्तत्वा सर्वत्र समदर्शनः ॥ ३१ ॥ योमां
 पश्यति सर्वत्र सर्वत्र समधिपश्यति ॥ तस्याहं न प्रणश्यामि मन्ये न प्रणश्यामि ॥ ३२ ॥ टी० तीरमीत वसकळें देही ॥ असें एथ विचारै ना
 हीं ॥ आणि तें सें चि माझा ठाई ॥ सकळ थसे ॥ ९१ ॥ हे ऐसं चि संचलें ॥ परस्परें मिसळलें ॥ बुद्धि येणें तुलें ॥ हो आविगा ॥ ९२ ॥ येह
 वीतरी अर्जुना ॥ जो एक व दलिया भावना ॥ सर्वभूती अभिन्ना ॥ मांजें भजे ॥ ९३ ॥ भूतांचे नि अनेक पणें ॥ अनेक मोदे अंतःकरणें ॥
 केवळ एक तत्व चि माझे जाणें ॥ सर्वत्र जो ॥ ९४ ॥ मग तो मो एक हो मिथ्या ॥ बोलतो दिसतें सवाथां ॥ येह दोन बोलिजे न रिधन जया ॥
 पाठ ॥ ओ० ८१ नराहे ॥ ओ० ८२ हे ॥ ओ० ८३ ते ॥ ओ० ८४ मो ॥ ओ० ८५ पायदे ॥ ओ० ८६ म्यांनि ॥ ओ० ८७ अंतः ॥ ओ० ८८ प्रथवा हे गाथा.

नोमीचिआहे ॥ ९५ ॥ दीपा आणि प्रकाशा ॥ एकवर्कचा पाड जंसा ॥ तो माझा ठाडें तंसा ॥ मी तया माजी ॥ ९६ ॥ जें साउटकाचे निआवु
 छेरस ॥ कागनचे निमानें अवकाश ॥ ते सा माझ निमरे रूपसा ॥ पुरुष तो गा ॥ ९७ ॥ श्लो० सर्वभूत स्थितं यो मां भजत्येकतमस्थि
 तः ॥ सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगीति श्रवते ॥ ३५ ॥ टी० जेणें ऐक्याचि येत तो ॥ सर्वच मानें किराटो ॥ देखला जें सापटो तंतु एक ॥ ९८ ॥
 कास्वरूप तरी बहते आहातो ॥ परिते मी सोर्न बहव नहेर्ता ॥ ऐस ऐक्या चळाची स्थिती ॥ केडो जेणे ॥ ९९ ॥ मातरो वृक्षाची पा
 ने जेतुली ॥ ते तुलारी पें नाई लाविली ॥ ऐसी अहं तद्वसं पाहिला ॥ गत्री जया ॥ १०० ॥ तो पंचात्मा कीं सापडे ॥ तरि मग सांगण
 केसे निअडे ॥ तो प्रतीतीचि निपाडें ॥ मज सीतुके ॥ १०१ ॥ माझी व्यापक पण आधेव ॥ गवसलें तयाचे निअनुभवे ॥ तरि नद्वणता स्वभा
 वे ॥ व्यापक जाहाला ॥ १०२ ॥ आनां शरीर तो गे आह ॥ परि शरीराचा तो नोह ॥ ऐस बोल वरी होयो ॥ ते करूं ये ॥ १०३ ॥ श्लो० आत्मोपम्ये
 न सर्वत्र समपश्यति योऽर्जुन ॥ सुखवार्धदिवानुखं स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥ टी० ह्यणो निअसोतें विशेषें ॥ अथवा आपण पें यासा
 रिवे ॥ जो चराचर देख ॥ अखंडित ॥ १०४ ॥ सुखदुःखादिवंभ ॥ कांश आशुभं कर्म ॥ दोनी ऐसी मनोधर्म ॥ नेणे विजो ॥ १०५ ॥ हे समवि
 षमभाव ॥ आणि कही विचित्र जमवे ॥ तें भान जें अस अवयव ॥ आपुल होती ॥ १०६ ॥ हें एक कुराय सांगावे ॥ जया वें लोस्य विखाधेवो ॥
 मी ऐसें स्मवावे ॥ बोधा आल ॥ १०७ ॥ तथा हीं दृष्ट एक करी आर्थ ॥ लोक किं सुखदुःखीत यांत हाणी ॥ परि आह्मते ऐसी प्रतीती ॥ प
 र ब्रह्मचिहा ॥ १०८ ॥ ह्यणो निआपण पोविश्वेदे विजे ॥ आणि आपण विस्व हो जे ॥ ऐसें साम्य चि एक उपासिजे ॥ पाडवागा ॥ १०९ ॥ हे तु
 ते बहुती जसंगी ॥ आही ह्यणों याचि लागी ॥ जें साम्य परें ती जगी ॥ प्राप्ती नाही ॥ ११० ॥ श्लो० ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ यो यं योगक्ष
 या प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ॥ एतं स्थाहं न पश्यामि चंचलत्वास्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥ चंचल हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दम ॥ न स्या
 पाठः ॥ ओ० १८ मांतेनि ओ० ३ गा अथवा आई० ओ० ७ शि० ओ० ८ तरि ॥ ७

हंनिग्रहमन्यबायोर्विस्मदुक्तरम् ॥ ३४ ॥ टी० तव अर्जुन द्वागे देवा ॥ तुह्योसांगाकीर आमुचक्रणवा ॥ परिनपुरंजोत्सभावा ॥ मना वि
 या ॥ १११ ॥ हंमनकेसेकेवदे ॥ ऐसेपाहोद्वाणोतरानसापडे ॥ येहवीरांहाटावयाथोडे ॥ त्रैलोक्यया ॥ १२ ॥ द्वाणोनिरेसेकेसेधडेले ॥ जे
 मर्कटसमाधोयेइल ॥ कांराहाद्वाणितलियाराहेल ॥ महाबाता ॥ १३ ॥ जेकुद्दोतेसळी ॥ निश्चयानेदाळी ॥ धुयेसींहातफळा ॥ भिळउनि
 जाये ॥ १४ ॥ जेविवेकातेमुलवी ॥ संतोषाचीचुलवावी ॥ बेसिंजतरींहुडवी ॥ दाहीदिशा ॥ १५ ॥ जेनीरंधलेधुडवावो ॥ ज्ञासुय-
 मचिहोयेसाबावो ॥ तेमन आपुलास्वभावो ॥ मांडीलकाई ॥ १६ ॥ द्वाणोनिमनएकनिश्चलराहेल ॥ मगआहासिसाम्यहोईल ॥ हे
 विशेपेहीनधडेले ॥ राचिल्यागो ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ असंशयंमहाबाहोमनोदुर्निग्रहचलम् ॥ अप्यासेन
 तुकोतेयेवराग्येणचगृह्यते ॥ ३५ ॥ टी० तव श्रीकृष्णद्वाणतोसाचनि ॥ बोलतआहासितेतेसेवि ॥ यथामनाचकारचपळवि ॥ स्व
 मावोगा ॥ १८ ॥ परितेवराग्यचेनिआधारं ॥ जरिलाविलेअप्यामाचियेमोहरे ॥ तरिकेतुलेनिएकेअवसरें ॥ स्थिरावेल ॥ १९ ॥ का
 जेयथामनाचेयेकनिहें ॥ जेदेखिलेयागेडीचियावायासेकें ॥ द्वाणोनिअनुभवसुखाचीकवतिहें ॥ दावीतजाइजे ॥ २० ॥ श्लो० असे
 यतात्मनायोगीदुष्टापइतिमेमति ॥ वय्यात्मनानुयतनाशक्यावानुमुपायतः ॥ ३६ ॥ टी० येहवीरिक्किजयांसिनाहो ॥ जेअ
 भ्यासीनरियतीकहीं ॥ तयानाकंठहंआसीहो ॥ नमनूकाहो ॥ ३७ ॥ परियमनियमाचियावाटानवजिजे ॥ कहीवेराग्यचेसेनक-
 रिजे ॥ केवळविषयजकींकिजे ॥ बुडीदुनी ॥ ३८ ॥ यथाजालियामानसाकहीं ॥ युक्तीचीकांबोलागलीनाहो ॥ तरोनिश्चलहोईलकाई
 ॥ कैसेनिसांगें ॥ ३९ ॥ द्वाणोनिमनाचानिग्रहदांये ॥ ऐसाउपायजोअहे ॥ तोआरभीममनोहे ॥ केसापाहो ॥ ४० ॥ तरीयोगसाधन
 जितुके ॥ तेअवधेचिकायलरिकें ॥ परिआपणपयाअप्यासनदेके ॥ हेचिद्वणी ॥ ४१ ॥ आंगीयोगाचेंहोयबळ ॥ तरिमनकेतुलेचपळ
 पाव ॥ ओ० १३ राहें ॥ ओ० १७ येइल ॥ ओ० २५ आपणयातडेके ॥

कायमहदादिहंसकम् ॥ आपुनोहे ॥ २६ ॥ तंथअजुनद्वणोनिंके ॥ देवोबोलतीतेनचुके ॥ मावेचियोगवळसीनतुके ॥ मनोबळे ॥ २७ ॥ तरि
 तोचियोगकेंसाकेविजाणो ॥ आसोयेंतुलेदिवसयाचापुनोदीनणो ॥ द्वणोनिमनातेजीद्वणो ॥ अनावर ॥ २८ ॥ हाआतांआघवेअज्या
 तुशेनिभसांदेपुरुषोत्तमा ॥ योगपरिचयआह्मा ॥ जाहलाआजी ॥ २९ ॥ स्तो० ॥ अजुनउवाच ॥ ॥ अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगज्ञ
 लितमानसः ॥ अमाप्ययोगसंसिद्धिंक्रान्तिरुक्तागच्छति ॥ ३० ॥ कच्चित्प्रययिष्वष्टिद्विज्ज्ञानमिवनश्याति ॥ अयतिश्चोमहाब
 होविषुदोब्रह्मणःपथि ॥ ३१ ॥ एतन्मेशयःकृष्णछेतुमहस्यशेषतः ॥ त्वदन्यःसशयस्यास्यछेतानन्दुपपद्यते ॥ ३२ ॥ दी० परिआ
 योक्कएकगोसांविद्यां ॥ मज्जमशयअसेसाविद्या ॥ तोतृवाचूनिंफडावया ॥ समयेनाहो ॥ ३३ ॥ द्वणोनिसांगेंश्रीगोविंदा ॥ कवणए-
 कमोक्षपदा ॥ शोबतहोताश्रद्धा ॥ उपायेंविण ॥ ३४ ॥ इंदियत्रामोर्निगाला ॥ आस्थेचियेंबाढालागला ॥ आत्मसिद्धिचियापुढि
 ला ॥ नगरायावया ॥ ३५ ॥ तवआत्मसिद्धिनठकेचि ॥ आणिसागुनंनयेवेंचि ॥ ऐसाअस्तुगेलामाझाशेचि ॥ आयुष्यमानु ॥ ३६ ॥
 जेसेंअकाबीअभाळ ॥ अळुमाळसपातळ ॥ विपायेंअलेंकेवळ ॥ वसेनावर्षे ॥ ३७ ॥ तेंसीदांन्हीदुरावलो ॥ जेप्राप्तीतवअलग-
 वेली ॥ आणिअमासिहोसाडवली ॥ श्रद्धतया ॥ ३८ ॥ ऐसाबोलाअंतरलाकाजी ॥ जोश्रद्धचासमाजी ॥ बुडालानथाहोजी ॥ क
 वणगति ॥ ३९ ॥ स्तो० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ पार्थनैवेहनामुवविनाशस्तस्यविद्यते ॥ नहिक्ल्याणकृत्कश्चिदुर्गतिता
 तगच्छति ॥ ४० ॥ दी० तंवश्रीकृष्णद्वणर्तपार्था ॥ ज्यामोक्षसुखीआस्था ॥ तथाभोक्षावाचूनिअन्यथा ॥ गतीआहेगा ॥ ४१ ॥
 परिएतुलेंहेंचिएकघडे ॥ जेमाझाशेविसावेंपंडे ॥ तंहापरिऐसेनिस्सुनगडे ॥ जोदवानाहो ॥ ४२ ॥ येहूवेंअप्यासान्नाउचल
 ता ॥ पाउलीजरीचालता ॥ तरिदिवसाआधीठाकिता ॥ सोहंसिद्धते ॥ ४३ ॥ परितंतुलोवेगनदेचि ॥ द्वणोनिविसावांतमिन्का
 पाठः ओ० २८ अनावरहे ॥

वि॥ षाढीमोक्षनवनेसावि॥ वेविलाअसे॥ ४०॥ श्लो० प्राप्यपुण्यकृतांस्त्रोकानुधित्वाशास्वतीःसमाः॥ भुविनांश्रीमनांगेहयोगश्चष्टिभि
जायते॥ ४१॥ टी० ऐकं क्वचनिकहंकेसे॥ जेशतमस्वालोकासायसे॥ तेतोपावेअनायासे॥ केवल्यकाम॥ ४१॥ मगंतंथिचजेअमोघ
॥ अल्लोकिकभोग॥ भो गितांदिसांग॥ कांटाळेमन॥ ४२॥ हाअंत रायअवसितां॥ कांबोदवलाश्रीभगवंता॥ दिविभोगभोगतां॥
अनुनापीनित्या॥ ४३॥ पाठीजन्मेसंसारीं॥ परिसकधर्मोचियाभाहरीं॥ लांबाउगवेआणरीं॥ विभवश्चियेचा॥ ४४॥ जयातेनीवि
पथेचालिजे॥ सत्यधृतबालिजे॥ देखावेतेंदेसिजे॥ शास्त्रदृष्टी॥ ४५॥ वेदतोजागेचरू॥ जयाव्यवसायनिजाचारू॥ सारासारवि-
चारू॥ मंत्रीजया॥ ४६॥ जयान्चाकुळोउचिता॥ जान्दीईश्वराचीपतिव्रता॥ जयातेंगृहदेवता॥ आदिऋद्दी॥ ४७॥ ऐसीनिजपु
ण्याचीजोडी॥ वादिनलीसर्वस्वराचीकुळवाडी॥ तिजेजन्मेतोसुरबाडी॥ योगच्युता॥ ४८॥ श्लो० अथबायोगिनामेवकुलेभवति
धीमताम्॥ एतद्दिदुलभतरलोकेजन्मयदीदृशम्॥ ४२॥ तत्रतद्विसेयोगलभतेपौवेदेहिकम्॥ यततेचततोभूयः संसिद्धीकुरुन-
दना॥ ४३॥ टी० अथवाज्ञानाग्निहोत्री॥ जपरिद्विहाण्यशोवी॥ महास्मरवहीवी॥ आदिवन॥ ४९॥ जंमिद्धाताचियासिंहासनी॥ रा-
ज्यकरितीविभुवनी॥ जेकूजनीकोकिलवनी॥ संतोषाचा॥ ५०॥ जेविवेकग्रामीचेंमुखी॥ बैसलेआथिनित्यफळी॥ तयायोगियां
वियाकुळी॥ जन्मपावे॥ ५१॥ मोटकीदेहाकृतोउमट॥ आणनिजज्ञानाचीपाहांदफुटा॥ सूर्याफुटेंमगटे॥ प्रकाशजैसा॥ ५२॥ तेसी
दशेचीवादनपाहता॥ वयसेचियागांवाजयेनां॥ वाळपणीचिभवंदना॥ वरीतयाते॥ ५३॥ तिंयेसिद्धयज्ञेचैनिलासं॥ मनविसार-
स्वनेदुप्रे॥ मंगसकशास्त्रेस्यभे॥ निधर्तमुपेवं॥ ५४॥ ऐसेंजंजन्म॥ जयात्तागिंदेवसकाम॥ स्वर्गीठेलेंजपहोम॥ करितोसदां॥ ५५॥
अमरीभाटहाइजे॥ मगसुल्लाकांतवानिजे॥ ऐसेंजन्मपार्थागांजे॥ तंतोणावे॥ ५६॥ श्लो० पूर्वोप्यासेनतेंवहयनेह्यवशोगपिस
पाठ॥ ओ० ४९ मोक्ष॥ ओ० ५० कौजनी॥ ओ० ५१ तरुचं॥ ५२

जिजासुरपियोगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥ ६४ ॥ टी० आणिसागलजसद्बुद्धि ॥ जंयज्जीविलाजाहलीहोतीअवधि ॥ मगतेचिपुदती
 निरवधि ॥ नवीलाहे ॥ ५७ ॥ तेथसंदेवाआणिपायाळा ॥ वरिद्विजानहोयडोळा ॥ मगदेखेजेसीअवल्लिळा ॥ पाताळबने ॥
 ॥ ५८ ॥ तेसेदुर्भेजेअभिप्राय ॥ कांयुरुगम्यहनवाय ॥ तंयसारंमंवाणजाय ॥ बुद्धितयाची ॥ ५९ ॥ बळियेंइंद्रिययेतीमना
 ॥ मनएकवटेपवना ॥ पवनसहजेरागन्म ॥ भिळांचिलागे ॥ ६० ॥ ऐंमंनंणोकायअपेसं ॥ तयातेचिकीजेअप्यासें ॥ मसाधियरपुसे
 ॥ मानसाचें ॥ ६१ ॥ जाणिजेयोगपीठानाभंरव ॥ कायदाआरभरभंरागोंरव ॥ कींवेराग्यसिद्धीचाअनुभव ॥ रूपाआला ॥ ६२ ॥
 हांसंसारउमाणितेभाप ॥ कांअष्टांगसाग्रीचेंद्वीप ॥ जेंसंपरिमळेंचिधरिजेरूप ॥ चंदनचें ॥ ६३ ॥ तेसासतोषाचाकायघडि
 ला ॥ कींसिद्धिभांडारोद्वुनिकाढला ॥ दिसेतणंमानेंरूढला ॥ साधकदशे ॥ ६४ ॥ श्लो० प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसशुद्धकि
 ल्विषः ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरंगतिम् ॥ ६५ ॥ टी० जेवषशनांचियाकोडी ॥ जन्मसहस्वाचियाआडी ॥ लंघितां
 पानलाथडी ॥ आत्मसिद्धीचा ॥ ६५ ॥ ह्मणोनिसाधनजातआधवें ॥ अनुसरेतयास्वभावं ॥ मगआयतियेंबेंसराणिवें ॥ विवे-
 काचें ॥ ६६ ॥ पाठींविचारितयावेगां ॥ तोविबकहीटाकेशागां ॥ मगअविचारिणीयेतेंआगा ॥ दडोनिजाये ॥ ६७ ॥ तेथमनाचें
 मेहुडेंविरे ॥ पवनाचेंपवनपणासरे ॥ आपणयाआपणसुरे ॥ आकाशही ॥ ६८ ॥ प्रणवाचामाथाबुडे ॥ येतुलेनिअतिबोव्य
 मरकजोडे ॥ ह्मणोनिआधीचिबोलबहुडे ॥ तयालागीं ॥ ६९ ॥ ऐसीब्रह्माचीस्थिती ॥ जेसकळागतीसांगती ॥ तथाअंमूर्ती
 चिभूर्ती ॥ होउनिगळे ॥ ७० ॥ तेजेवहुतीजन्मीमागीतली ॥ विसंपाचींपाणिबळेझाडिलीं ॥ ह्मणोनिउपजतुखेंबोबुडाली ॥ लग्नघ
 टिका ॥ ७१ ॥ आणिनद्रूपतेसीफलग्न ॥ लागोनिवेलेंअभिन्न ॥ जेसेलोपलेंअश्वगन ॥ होउनिवळे ॥ ७२ ॥ तेंसंबिस्वजेथ

पाव. ओ. ५९ सायसं. ओ. ७२ वळे.

५६

५७

५८

५९

पार. ओ. ८७ ओरिला, पारो.

तो प्रसंग आर्हि सुदां ॥ ज्येष्ठांतिदिसेल उघडा ॥ तोपल विजंल मुडा ॥ प्रमेय बीजान्चा ॥ ८९ ॥ जे सात्विकाचे निवडये ॥ गेले आध्या-
 ती करवरये ॥ सहजें निडार ले बाफे ॥ चतुर विचाचे ॥ ९० ॥ बरी अवधानाचा वाफसा ॥ लाधला सोन्या ऐसा ॥ ह्मणोनि परंबया-
 धि सा ॥ श्रीनिवृत्तोमी ॥ ९१ ॥ ज्ञान देव ह्मणोमी च्छांदे ॥ सद्गुरु निकलें कोडे ॥ माथा हात ठेविला तें पुढे ॥ बीज चि वाडले ॥ ९२ ॥ ह्म-
 णोनि येणें मुरवें जे निगे ॥ तें संताच्या ह्दयां सांचें विलागें ॥ हें असो सांगों श्रीगणें ॥ बोलिलें जें ॥ ९३ ॥ परितें मनाच्या काती ऐकावे
 ॥ बोल बुद्धीच्या डोळ्यां देखावं ॥ हें साटावादीं ध्यावं ॥ चित्ताचे या ॥ ९४ ॥ अवधानाचे निहाते ॥ नेथा पाहत्या आतीने ॥ हेरि-
 स्मवील आयणीतें ॥ सज्जनानिये ॥ ९५ ॥ हें स्महितें निवविती ॥ परिणाम तें जीवविती ॥ मूरवाची वाहविती ॥ लासली जीवा-
 ॥ ९६ ॥ आतां अर्जुनें सीं श्रीसुकुंदें ॥ नागर बोलिल जे लक्षितें ॥ तें वां विचेचें निप्रतिबंधं ॥ सांगेन मी ॥ ९७ ॥ ॥ इति श्री-
 भावार्थदीपिकाया ज्ञानदेव विरचिता या षष्ठाऽध्याय ६ ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णांपणमस्तु ॥ ५ ॥

इतिषष्ठाध्यायसमाप्तः

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीभगवानुवच ॥ ॥ मय्यासक्तमनाः पार्ययंग्युजन्मदाश्रयः ॥ असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि ब्रह्म
णु ॥ ११ ॥ ज्ञानं तं हं स विज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ॥ यस्तान्वानहं स योन्यनुज्ञातव्यमविशिष्यते ॥ २ ॥ दी० ॥ आदका मगतोऽपि अनन्त
॥ पार्थोत्तं असे द्यपणत ॥ पौगाद्वयंग्युक्त ॥ जालासि आतो ॥ ११ ॥ मजसमग्रान् जणसंगेसं ॥ आपलीयात क हाति चैरल जैसं ॥ वृजज्ञानसा
गेन तैसं ॥ विज्ञानेसं ॥ २ ॥ एथ विज्ञानं काय करवं ॥ ऐसं यं सी जरीमनो भावै ॥ तैपं आर्धजाणावै ॥ तैचलागो ॥ ३ ॥ मग ज्ञानाचियेक
॥ झांकती जाणिवे चोळे ॥ जैसीतिरिनावनदळे ॥ टैकल्लासोनी ॥ ४ ॥ तैसी जाणिव जे यनरिगो ॥ विचारमायुता पाउली निघे ॥ तर्क-
आथिनेये ॥ अगोजियाचा ॥ ५ ॥ अर्जुना नयानाव ज्ञान ॥ यं यं पंच हो विज्ञान ॥ तैयसत्यबुद्धि ते अज्ञान ॥ हं ही जाणा ॥ ६ ॥ आतां-
अज्ञान अवयें हारये ॥ विज्ञान निःशेष करये ॥ आर्धज्ञान ते स्वरूपे ॥ हारी न जाइ जे ॥ ७ ॥ जेणं सागतया चं बोलणं रं वुटे ॥ एकतया चं
व्यसन तुटे ॥ हं जाणें सांनं मां उरानंदी ॥ ८ ॥ ऐसं वर्म जं रूढ ॥ तों कजल वाक्या रूढ ॥ जेणं थोडें निपूर कोड ॥ बहु तमनीचें ॥ ९ ॥
श्लो० ॥ मनुष्याणां महस्येषु कश्चिद्यतति सद्दय ॥ यतनामपि सिद्धानां कश्चिन्मां विनित त्वतः ॥ ३ ॥ दी० ॥ पौगामनुष्या चिया स हस
शा ॥ माजि विपाइ लयांचिये थोवसा ॥ तैसं याधिवसे करं बहु वसां ॥ माजि विरळा जाणे ॥ १० ॥ जैसां प्रलेया चिमुवना ॥ आंत एक
एक चांग अर्जुना ॥ निवडूनि कोजं सेना ॥ लक्षवरी ॥ ११ ॥ कितया ही पाटी ॥ जं वळीं लोह मासां तं पाटी ॥ तें वळीं विजय श्रियं चा पाटी
॥ एक चिं बैसे ॥ १२ ॥ तैसै आस्थे चाम हा पुरी ॥ रिघता तिको टिवरी ॥ परी प्राप्तिचा पेंल तीरी ॥ विपाइ लां निगो ॥ १३ ॥ स्पण ऊनि सामा
न्यानां हो ॥ हे सांगातं विडला गोटागा आह ॥ परी तें बोळोयें इ ल पाहें ॥ आतां यस्तु ते एक ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ भूमि रापोन लो वसुः स्व मनो
बुद्धिरेव च ॥ अहंकार इतीयं मे भिन्ना यस्तु निररुथा ॥ १५ ॥ दी० ॥ तरी अवधारो गा धनं जया ॥ हे माह दादिक माझी माया ॥ जैसी प्रतिवि

पाठ. अं. ३

3

3

2



बंध्याया ॥ निजांगाची ॥ १५ ॥ आणि द्येनें यकृति द्यणिजे ॥ जें अष्टधा भिन्न जाणिजे ॥ लोकत्रय निफजे ॥ इये सव ॥ १६ ॥ हे अष्ट-
 धा भिन्न कैसी ॥ एसाध्य निधरि सांजरी मानसी ॥ तरी तें चिगा आनां पश्यसी ॥ विवेचना ॥ १७ ॥ आपजे जगन ॥ मही मारुन मन ॥
 बुद्धि अहंकार हे भिन्न ॥ आठें प्राग ॥ १८ ॥ श्रुती ० ॥ अपरय भित स्वल्यां यकृति विद्म पुरी ॥ जीव भूतां महाबाहो यें द्येथें ते ज-
 गत ॥ १९ ॥ टी ० ॥ या आटांची जसा म्यावस्था ॥ ते माझी परम यकृति पाशी ॥ तियेना मअवस्था ॥ जीव ऐसी ॥ १९ ॥ जे जडा ते जीव वी
 ॥ चेतने ते चेतवी ॥ मना करी मानवी ॥ शोक मोहो ॥ २० ॥ पेंबुद्दुचा भंगीं जाणों ॥ तें जिये जवळी कें करणें ॥ जिया अहंकारा चें वि-
 दाणें ॥ जग चि धरजे ॥ २१ ॥ श्रुती ० ॥ एतद्योनी निभूतानि सवाणी न्युपधारय ॥ अहं कल्प स्वजगतः प्रसावः प्रलुपस्तथा ॥ ६ ॥
 टी ० ॥ ते स्मृत्स यकृति काडें ॥ जें स्थुळा चिया ओगा दंड ॥ तें भूत सृष्टिची पदे ॥ टांक साळ ॥ २२ ॥ चतुर्विध दसा ॥ उमटो लागो अपैसा ॥ मो-
 क्ता तरी मरि सा ॥ परी थरि च आना ॥ २३ ॥ होती चो न्यासी लुप्त भय ॥ येरा भितीने निजे भांडारा ॥ परे आदि न्युन्या चागा सारा ॥
 नाणें यासी ॥ २४ ॥ ऐसं एक तुकें पांच भौतिक ॥ पडती बहु बहु मटाक ॥ प्रगति ये संसृद्धि चें लखा ॥ प्रकृती चि धरी ॥ २५ ॥ जें ओरवूनि ना
 पोंगि सारी ॥ पाटी तयाची आटणी करी ॥ माजी कमाक मां चिया व्यवहारी ॥ प्रवर्तुं दावी ॥ २६ ॥ हे रूप कपरी असो ॥ सांगों उघड जे
 संपरियसो ॥ तरी नामरूपाचा अविरो ॥ प्रकृती चर्कजे ॥ २७ ॥ आणी प्रकृति तव माझ्या दारी ॥ विवेयेथ आनही ॥ ह्यणी निआ-
 दि मध्य अवसान पाही ॥ जगां मिसो २८ ॥ श्रुती ० ॥ मनः पर न रान्य किंचिदस्ति न जय ॥ मयि सर्व भेद योगं सूत्रे मणिगणा इव ॥
 ॥ टी ० ॥ हे रोहिणी चें जळ ॥ नया चें पाहनां येइ जे मूळ ॥ तें रोहिमन न्दुर्न के वळ ॥ होय तें मानु ॥ २९ ॥ तया चि परी की रती ॥ इया मक-
 ति जालिये सुधी ॥ जें उपसं हारुनि की जे लुटी ॥ तें मोचि आहं ॥ ३० ॥ ऐसं होय दिस न दसे ॥ हं यच्चि माजी असे ॥ मिया विश्व धरजे

जैसं ॥ सुवर्णं ॥ ३१ ॥ सुवर्णं चंमणिकं ॥ तैसां न्याचं सुतं वीं विलं ॥ तैसां न्याजगंधारिलं ॥ सबाह्याभ्यंतरीं ॥ ३२ ॥ ॥ स्तो० ॥ रसो ह-
 मफकोतयमभास्मि शोशस्वरयोः ॥ यणवः सवदेष्टुशब्दः स्वयोरुपेन्द्रु ॥ ८ ॥ पुण्योगपः एशिव्याचने जश्वास्मि विभावसो ॥ जीव नस-
 वं भूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥ टी० ॥ ह्यणानि उदकीरिसा ॥ कापलनी जो स्यश ॥ शशिस्वर्यो जो मकाश ॥ तोर्मा चि जाण ॥ ३३ ॥ तैसा
 चि नैसर्ग कि बुद्ध ॥ मीरुध्या चारार्थो गंध ॥ गगनं मों शाब्द ॥ वेदां यणवा ॥ ३४ ॥ नराचारार्थो नरत्व ॥ जें अहं प्रावि ये सत्व ॥ तें पौरुष मो-
 हंतत्व ॥ बोल जत असें ॥ ३५ ॥ अग्निगे सें अह्राच ॥ तें जो नामाचें अहं कवच ॥ तें परंतें केलुया साच ॥ निज तें जमी ॥ ३६ ॥ आणि नाना
 विधयोनी ॥ जन्मो निभूतें अभुवर्नी ॥ वर्तत आह्वाति जवर्नी ॥ आपूला ॥ ३७ ॥ एकंपवर्नो चर्पाती ॥ एकं तुणास्तवर्जती ॥ एकें अन्ना-
 धारं राहती ॥ जळ एक ॥ ३८ ॥ तैसां भूतार्थ आनान ॥ जें यकानि वशी दसे जवन्न ॥ तें अपवादायां अभिन्न ॥ मोचि एक ॥ ३९ ॥ ॥ स्तो० ॥
 बीजं मां सर्वभूतानां विधाय सनातन ॥ बुद्धिर्बुद्धयः तामास्थितं जस्तजस्विनामहं ॥ १० ॥ बलबलवनां चाहं कामरागविवर्जितं ॥ धर्मो
 विक्रदो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥ टी० ॥ पें आदिचो न अवसरें ॥ विरुदे गगनाचो न अंकुरें ॥ जें अति गिळो असरें ॥ यणवर्पी ठे-
 वीं ॥ ३१ ॥ जंवहा विषयाकार असे ॥ तव जें विषवाचिसारि स्वें दसे ॥ मग मद्भाग्य दुशें कैसों न नव्हे ॥ ४० ॥ एसें अनादि जें सहज ॥ तें मीणा
 विश्वबीज ॥ हे हातातळीं तुज ॥ दद जत असे ॥ ४१ ॥ मग उघड करुनि पांडवा ॥ जें हें आणिसीसां रव्याचिया गांवा ॥ नैयचाचा उपेग बर-
 वा ॥ देखसील ॥ ४२ ॥ परीहें अग्रसंगिक आलाप ॥ आतो असतु बोखों संशेप ॥ जाणतो पयांचा टायीतप ॥ तें रूप माझे ॥ ४३ ॥ बकिया
 माजि बळ ॥ तें मीजाण अदळ ॥ बुद्धि मलीकें वळ ॥ बुद्धि तें मी ॥ ४४ ॥ भूतांच्या टायीं काम ॥ तोर्मा ह्यणे आत्मा राम ॥ जेणे अर्थोस्तवध
 र्मा ॥ शोर होया ॥ ४५ ॥ येन्हवीं विकाराचे निपे सें ॥ करी कारदें द्रव्याचें सें ॥ पारिधर्मासंवरवासें ॥ जावें नंदो ॥ ४६ ॥ जो अपवर्तनेचा-
 अब्दांटा ॥ सांडुनि विधीचिया निघे वारा ॥ तें वर्वाचि नयमाचा दिवटा ॥ सर्वे चाळे ॥ ४७ ॥ कामणें सियावो जा प्रवर्ते ॥ ह्यणो नयमो सिद्धो

यपुरते॥ मोक्षार्थंचिमुक्तं॥ संसारभोगी॥ ४८॥ जोश्रुतिगौरवाचा मांडवी॥ कामसुखीचा तेलवाढवी॥ जंवकर्मफळां संपालवी॥ अ-
 पवर्गीदके॥ ४९॥ ऐसा निघतकां कंदर्प॥ जोभूतांयांबीजरूप॥ तोमीह्मणेबाप॥ योगीयांचा॥ ५०॥ हेंकेक कितीसांगावें॥ आ-
 तोवरूजातचिआद्यें॥ मजपासूननिजाणवें॥ विकारलेंअसे॥ ५१॥ श्रुती॥ येचेंवसात्विकाभावागजसास्तामसाद्यये॥ म-
 नएवेतितात्त्विकनत्वहेंतेषुतेमपि॥ १२॥ टी०॥ जेसात्विकनभाव॥ कोरजतमादिसर्व॥ तेमसरूपसंभव॥ वौळखेंत॥ ५२॥ ते-
 हेजळेतरीमाझाठाणी॥ परीतयांमार्जमीनाही॥ जेंसत्त्वमिचाडोही॥ जागृतीनबुडें॥ ५३॥ जेंसोसमाचीचमघट॥ बीजकणि-
 काघनवट॥ परितयेस्तवहोयकाष्ठ॥ अंकुरद्वारें॥ ५४॥ मगतयाकाश्याचाठाणी॥ सांगपंबीजपणअसेकाई॥ तेंसामीविकारी-
 नाही॥ जरीविकारलाअसे॥ ५५॥ पैगगानीउपजेआभाळ॥ परीतयेगगननाहीकेवळ॥ अथवाआभाळीहोयसलिल॥ तेश्यअ-
 धनाही॥ ५६॥ मगत्याउदकाचेंनिआवेंशें॥ दगटलेंतेजजेंकरवलस्वीतसे॥ नयेविजूमजिअसे॥ सलिलकाई॥ ५७॥ सांगें
 अरनीस्तवधूमहोय॥ तियेधूमीकायअग्निआहे॥ तेंसाविकारहामीनोहें॥ जरीविकारलाअसे॥ ५८॥ श्रुती॥ त्रिभिर्गुणमयै-
 शीर्वैश्विःसर्वमिदजगत्॥ मोहितंनानाभिजानातिमामेष्यःपरमव्यय॥ १३॥ टी०॥ परितुदकीजालीबबुळी॥ तेउदकांतेंजसीझां-
 कोळी॥ कांवायाचिआभाळी॥ आकाशालोपे॥ ५९॥ हागास्तमलटुकेंह्मणोये॥ परिनिद्रावशेंबाणलेंहोय॥ तंवआठवकारहेतआ-
 हे॥ आपणपे॥ ६०॥ हेंअसोडोळ्याचें॥ डोळांचिपडकरचें॥ तणेंदरवणेपणडोळ्यांचें॥ नगिळिजेकाई॥ ६१॥ तेंसीहेमाझीचवि-
 बली॥ विरुणास्तकसाउली॥ कंमजचीआडवोडवली॥ जवानिकाजेंसी॥ ६२॥ ह्मणअनिभूतेंमातेंनेगती॥ माझीचपरीमीनवळ-
 ती॥ जेंसीजळींरीजळींनिविरती॥ मुक्ताफळां॥ ६३॥ पैएश्रीयेचाघटकीजे॥ सर्वेचिएश्रीसिमळेजरमेकविजे॥ येन्हवीनोचि-
 मत्तः ५०० विमर्शने लो० ५४ नातरा०

अग्निस्सोसिजे ॥ तश्चिवाकाहोय ॥ ६५ ॥ तस्मिन्मृतजातसर्व ॥ हमाद्रिचिकोरअत्यव ॥ परिमायायोगजनिवा ॥ दशोअले ॥ ६५ ॥ ह्म-
 णोनिमाझेचिमीनकृती ॥ भाद्रिचिसजनीवस्वती ॥ अहममताधोती ॥ विषयोधजले ॥ ६६ ॥ भ्रमो ॥ देवस्यथगुणमयीमममा-
 यादुरत्यया ॥ मामेवयमपद्यतेमायामतामरनिने ॥ ६६ ॥ दी ॥ आतामहदार्दिहमाझीमाया ॥ उनरोनयाधनजया ॥ मीहांइजेहोआ-
 या ॥ केमेनियो ॥ ६७ ॥ जियेबस्याचकाचोआयाडा ॥ पहिल्यासंकल्पजळानाउपाडा ॥ भवेविमहाधृताचाबुडुडा ॥ मानाआला ॥ ६८ ॥ जेसु-
 धिबिस्तासचेनिवोयो ॥ चदनकाककनेचोनवोगो ॥ पवर्तनिमृनिचिपुन ॥ तंदभोडा ॥ ६९ ॥ जगुणपनाचनिवाप्रर ॥ भरलोमोहाचेनिमहापूर ॥ घे-
 ऊनिजातनगर ॥ यमनियमार्थी ॥ ७० ॥ जेदुषाचाआवर्तितदत ॥ मत्सराचबळसंपडन ॥ माजिपमादादितकपत ॥ महामीन ॥
 ७१ ॥ जेथपंचार्चीवळण ॥ कर्माकर्माचीवोभाण ॥ परततर्तवोभाण ॥ सुखदुःखोची ॥ ७२ ॥ रत्नचियाबेटा ॥ आदकृतीकामाचि-
 यालाटा ॥ जेथजीवफनसधता ॥ सोधादेस ॥ ७३ ॥ अहकाराचियाचोळया ॥ वरिमदत्रयाचियाउकिया ॥ जेथविषयोर्मिच्यआक-
 किया ॥ उल्लाखेदेती ॥ ७४ ॥ उदयास्तनिळोड ॥ पाईतलन्यमरणाचंचोड ॥ जेथपांचभोतिवबुडुडो ॥ हांतीजती ॥ ७५ ॥ संमोहविषम-
 मासे ॥ शिळितातिथेयांचीओमिप ॥ तेथदेहेंभांवतवळसे ॥ अज्ञानाचे ॥ ७६ ॥ भ्रांतीचिनिखडुळ ॥ रेवलेआस्थेचेअवगाळ ॥ र-
 जोगुणाचेनिखळां ॥ स्वर्गगान ॥ ७७ ॥ तमाचेधारसंबाड ॥ सत्ताचेस्थारपाजाड ॥ किंबहुनाहदुबाड ॥ मायानदी ॥ ७८ ॥ पैपु-
 नरावर्तचिनुभंड ॥ झळबतीसत्यलोकीचेहुडे ॥ घायंगडबडीधोंडे ॥ ब्रह्मगोकुतांचे ॥ ७९ ॥ तयापाणिनाचिनिवाहलेपणें ॥ आ-
 मुनीनधरतीवोभाणें ॥ ऐसामायापूरहाकवणें ॥ तरजेळगा ॥ ८० ॥ येथएकनवलावो ॥ जोजोकीजेतरणोपावो ॥ तौनोअपाची ॥
 हायतरेक ॥ ८१ ॥ एकस्वयंबुद्धचाबाही ॥ शिगालेतयाचीबुद्धिचिनाही ॥ एकजाणिवेदेडोही ॥ गर्वशिकले ॥ ८२ ॥ एकावेदत्रया-
 पाटः ओं ७२ वोमणें ओं ७३ संधारा ओं ७४ घेतः ओं ७५ आसिं

चियासांगडी॥ घेतल्याअहंभावाचियाथोडी॥ तेमदमीनाचांतोडी॥ सगळेचिंगेले॥ ८३॥ एकीवयसेचेंजाडबांधले॥ मगमन्यथा
चियेकासेलगले॥ तेविषयमगरीसांडले॥ चयळनियो॥ ८४॥ आतांवाधिव्याचातरंगा॥ माजिमनिशशाचाजरंगा॥ तेंणेंकवळिज
तातिपेंगा॥ चहूंकडे॥ ८५॥ आणिशोकाचाकडाउपडन॥ क्रोधाचाआवर्नीदाटन॥ आपदापिधोचुंबीजत॥ उधवलादारी॥ ८६॥ म
गदुःखाचेंनिबरतंबोवले॥ पाटींमरणाचेंरेंवले॥ ऐसेकामाचेकासेलगले॥ तेगेलेवायो॥ ८७॥ एकींयजनक्रियेचीपेटी॥ बांधोन
घातलीपेटी॥ तेंस्वर्गसुखाचाकपाटी॥ शिरकोनिठेले॥ ८८॥ एकींमोसीलागावयाचियाआशा॥ केळाकर्मबाह्यांचाभरवसा॥ प
रीतेपडिलेवळसा॥ विधिनष्टेभंचा॥ ८९॥ तेंथवेराग्यांचीनुवनरिंगी॥ विवेकाचागानलगे॥ वरिकांहितरेंयेयोगें॥ तशिवपायेतो॥
९०॥ ऐसेतरंजीवाचियेआंगवणें॥ दयमायानदीचेंतरणें॥ हंकासयासारिवेबोलणें॥ ह्यणवेंपां॥ ९१॥ जरअपथ्यशीळ्याधीग
कळेसाधूसिदुजनाचीबुद्धी॥ किरगांसांडीसिस्थीआलीसानी॥ ९२॥ जरचोरासप्तादाटे॥ अथवामीनागळघोटे॥ नातरांभेडाउलटे
॥ विवसीजरि॥ ९३॥ पाडसवागुरकरांडी॥ कामुर्गामेरुवोनांडी॥ नरीमायेचीपेंलुथडी॥ देखतेजीवि॥ ९४॥ ह्यणउमगापंडुसुता
॥ जैसीसकामानजिणवेंचिवांनता॥ तेंवीमायामयहंसारिता॥ नतरवेंजीवां॥ ९५॥ येथएकचिलीलातरले॥ जेसर्वभावेंमजभजले॥
नयांलीचथडीसरलें॥ मायाजळ॥ ९६॥ जयांसदुरुनारुपुटे॥ जेअनुभवाचेकासेगाटे॥ जयांआत्मनिवेदनतरांटे॥ आकळले॥
९७॥ जेंअहंभावाचेंवोझेसांडुनी॥ विकल्याचियाझळकाचुकाउनि॥ अनुभवाचानरुताहोउनि॥ पाणिदाळ॥ ९८॥ जयाऐक्या
चियाउतारा॥ बांधाचाजोडलातारा॥ मगनिवृत्तीचियापेंलतीरा॥ झोंपावलेजे॥ ९९॥ तेउपरतीचावार्वीसैलत॥ सोहंभावाचेंनिंधांवे
पेंलत॥ मगनिघालेअनकाळित॥ निवृत्तिनरी॥ १००॥ येणेंउपायेंमजभजले॥ तेहेमाझीमायातरले॥ पारिऐसेप्रक्तावियाइले॥

पाठ-ओं ९९ उतरणी ओं-१०० झेलत.

बहुवसनाही १ श्लो०॥ नमो दुष्टातिनामृदाः प्रपद्यन्त नराधमाः॥ मायया पट्टत ज्ञाना आसुरमावमाश्रिताः॥ १५॥ चतुर्विंश
 भजते मां जनाः सुकृतिनो जनुन॥ आर्तो जिज्ञासुरथार्थी ज्ञानी च प्रभुतपसा॥ १६॥ टी०॥ जबहुना एकां आवांतरा॥ अहंकाराचा प्र
 तसंचार॥ जाला द्द्वयणा निर्विसर॥ आत्मबोधाचा॥ २॥ तबे कां नित्य भावें स्वरुना देवा॥ पुढील अर्थो गत चिंता जननेण वे॥ आणिक
 रिता तजने करवे॥ वेद द्द्वयणा॥ ३॥ पद्मं परं शरीरा चिया गोवा॥ ज्या लागी आलयां डवा॥ तों कार्याय आयवा॥ सांडुनियां॥ ४॥ इंद्र
 यद्रामीचे राजबिंदी॥ अहंममते चिया जन्मवादी॥ विकारां तराचीं भादी॥ मळुनियां॥ ५॥ दुःस्वशांकाचा घाई॥ मारिल्याची से
 चिनाही॥ हें सांगावया कारण काई॥ जे मासिल माया॥ ६॥ द्द्वयणां निने माते चुकले॥ एक चतुर्विध मज्जले॥ जिही आत्मा हित के
 ले॥ वाटतें गा॥ ७॥ तों पाहिला अतं द्द्वयण जे॥ दुसरा जिज्ञासु यो लजे॥ तिजा अर्थार्थी जाणजे॥ ज्ञानियाचो या॥ ८॥ श्लो०॥ ते
 यो ज्ञानी नित्य सुक्त एक भाकि विंशित॥ प्रिया हि ज्ञानिना द्द्वयण दुःस्वचम प्रियः॥ १७॥ टी०॥ ते य आतं नो आर्त्ता चिनि व्याजे
 ॥ जिज्ञासू तो जाणावया लागीं भजे॥ निज निंतण इच्छिजे॥ अर्थ सिद्धि॥ ९॥ मग चोथियाचा दायी॥ कोही चिकरणे नाही॥ द्द्वयणा
 निप्रक्त एक पाही॥ ज्ञानिया जो॥ १०॥ जंतया ज्ञानाचे निप्रकाश॥ फिटले भेदांचे कुडवे॥ मग मोचि जाला समरसे॥ आणि प्र
 कटीतें विंचि॥ १५॥ परी आणिकांचे या दिठनावेंक॥ जे सास्फटिकाचे भासें रुक॥ ते सा ज्ञानी नव्हे कोतुक॥ सांगतां तो॥ १३॥
 जे सावारा कागर्नी विरे॥ मग वारपण वेगळु नुरे॥ परि प्रक्त हें पंजन सर॥ जरी ऐक्या आळा॥ १३॥ बरी पवनहाळी निपाहिजे
 ॥ तरी रागनावे कादो शिवजे॥ ये चहवीं गगन तो सहजे॥ असं जें सें॥ १४॥ तें सें शरीरें हनक मे॥ तो भक्त ऐसाग मे॥ परी अंतरय
 तो तिथ मे॥ मी चि जाला॥ १५॥ आणि ज्ञानाचे निउज डले पणो॥ मी आत्माणें संतां जाणो॥ द्द्वयण जनि मी ही तें सें चि द्द्वयणे॥ उच
 पाठः ओं० ५०॥ सेख वितातीः ओं० १५०॥ अंतरं०

बळुळासांती ॥ १६ ॥ हांगाजीवांपलीकडिलीखुणें ॥ जोपावांनिवावरोंजाणें ॥ तोंदहाचेंनिवंगळुपणें ॥ कायवेगळाहोये ॥ १७ ॥
 श्रुती ॥ उदाराः सर्वएवेंनेजानीत्यात्मवमेवतें ॥ आस्थितः सहियुक्तात्माभामेवानुनमार्गति ॥ १८ ॥ दी० ॥ ह्यणोनिआपुळालाहनाचे
 निलासें ॥ मजआवडंतोहोभक्त झोबे ॥ परिर्माचिकरंविंगळुभें ॥ ऐसाज्ञानियाएक ॥ १८ ॥ पाहंपोटुमंतयाचियाआशा ॥ जगधेनुसि
 करीतसेफांसा ॥ परिदोरंवीणकैसेसा ॥ वत्साचाबळी ॥ १९ ॥ कोजेंतनुमनप्राणें ॥ तेंआणीककांहींचनेपौ ॥ देखतसांतेंह्यणें ॥ हेमा
 यामाझी ॥ २० ॥ नेयेणंमानेंअनन्यगती ॥ ह्यणउंनिधेनुहेंनिंसीचिघीनि ॥ नयाळुगोळुस्मापती ॥ बोलिलेंसाचें ॥ २१ ॥ हेंअसो
 मगह्यणितलें ॥ जेंकांतूनसांगितलें ॥ तेंहोभक्तमळे ॥ पटयेनेआह्मा ॥ २२ ॥ परिजाणोनियांमातें ॥ जेपाहोंविसरलेमाधुतें ॥ जेंस
 मागारायेउनिसरितें ॥ मुरडावेंतेलें ॥ २३ ॥ तेंसीअंतःकरणकुहरीजन्मली ॥ जयाचीप्रतीतिगंगामज्जमीनली ॥ तोमीहेकायबोली ॥
 फारकरु ॥ २४ ॥ येहवींज्ञानियांजोह्यणजे ॥ तोचेंतन्याचिकवळुमाझें ॥ हेंनह्यणावेंपरिकारकीजे ॥ नबोळणेंबोले ॥ २५ ॥ श्रुती ॥
 बहूनोजन्मानामेंज्ञानवाच्योप्रपद्यते ॥ वासुदेवः सर्वशितिसमहात्मासुदुर्लभः १९ ॥ दी० ॥ जेतोविषयाचीमोटीझाडी ॥ माजिका
 मक्काधाचींसांकडी ॥ चुकाउंनीआळाणडी ॥ सहासनेचिया ॥ २६ ॥ मगसाधुसंगेंसुप्रता ॥ उजूसळुमाचियावाता ॥ अंपव्हीचा-
 अढ्दाटा ॥ डावळनी ॥ २७ ॥ आपिजन्मशानाचायाहनवाणा ॥ तेंविआस्थेचियानलेचिवाहणा ॥ तेंथफळहेतुचाउगाणा ॥ कवणचा
 की ॥ २८ ॥ ऐसाशरीरसंयोगाचियेराति ॥ माजियावंनांसडियाआयति ॥ तंवकर्मक्षयाचिपाहाति ॥ पांहाटजाली ॥ २९ ॥ नैसीचिगु
 रुरुपाउरवाउजळली ॥ ज्ञानाचीवोतपडीपडली ॥ तेंथसाख्याचीन्मूढउघडली ॥ नयाचियेदृष्टि ॥ ३० ॥ तेंवेळींजयाकडेवासपाह
 ॥ नेउतामीचितयाएकआहे ॥ अथवानिवोतजरीराहे ॥ नर्हीमीचिनया ॥ ३१ ॥ हेंअसोआणीककांहीं ॥ तयासर्वत्रमीवोचिनिहो

पाठ- ओं- २४ उपजली- ओं- २६ दाट-

जैसं सबाह्यं जकुडो ही॥ बुडा लिया घटा॥ ३२॥ तैसा तो मज्झिमा नरी॥ मातया भ्रांत बाहरी॥ द्वंसा गि जल बोलवरी॥ तैसं न क्ले॥ ३३॥
 द्यणो नि असो हं दया परी॥ तो दरव ज्ञानाची वारवारी॥ तेंणें ससरले न करी॥ आप विषवा॥ ३४॥ हंस सस्रही श्री वासुदेव॥ ऐसा प्रीति
 रसाचा वीतला भाव॥ द्यणो नि मक्ता माजी राव॥ आ गि ज्ञानियां तांचि॥ ३५॥ जयाचि यशतिनी चा वारवारा॥ पवाड हाय वराच-
 रा॥ तो महात्माधनुषी॥ दुर्लभ आश्री॥ ३६॥ येरब हूत जांडतीं करीती॥ जयाचीं भजनं भांगा साटी॥ जे आशाति मरे दृष्टी॥ वि
 षया धि जाळे॥ ३७॥ श्लो०॥ कामें स्तेहें तें ज्ञानाः यपद्ये तं न्य देवताः॥ तें तें नियम मास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया॥ २०॥ टी०॥
 आणि फळाचिया हावा॥ न्दर्यां कामाजी कारिगावा॥ कौतयाचि यय सगर्णा दिवा॥ ज्ञानाचा गला॥ ३८॥ ऐसे उभयतां ओधारी पड
 ले॥ द्यणो नि पार्मिचि मातें चुकले॥ मग सर्व भावें अनुसरले॥ देवतां नरा॥ ३९॥ आर्धचि प्रकृतीचि पादका॥ वरिभोगाला गितं वरं क
 ॥ मग तेणें लोलुपत्वे कौतुक॥ कें सोनि भजनी॥ ४०॥ कवर्णानिया नियम बुद्धि॥ कें सिया हन उपचार समुद्धि॥ को अपणायथाविधी
 ॥ विहित करणें ४१॥ श्लो०॥ यो यो यां यांत नुं भक्तः श्रद्धया चिंतुमिच्छति॥ तस्य तस्या चलां श्रद्धांतां संवदिदुःश्राम्यहं॥ २५॥ टी०
 ॥ पैजो जिये देवतां नरी॥ भजवयाची चाड करी॥ तथाचि ते चाड पुरी॥ पुरावतामी॥ ४२॥ देवां देवीं मीचि पाही॥ हाही निश्चय सा-
 भिनाही॥ भावते ते दायीं॥ वेगळाला धरिती॥ ४३॥ श्लो०॥ सतया श्रद्धया युक्तस्तस्या राधनमहीने॥ लभ न च ततः कामाभ्यै
 य विहितान् हितान्॥ २२॥ टी०॥ मग ते श्रद्धा युक्त॥ तें शिचें आराधन जें उचित॥ तें साद्वर सा मस्त॥ वृत्तीं लागे॥ ४४॥ ऐसे जे-
 णें जे भाविजे॥ तें फल तेणें पाविजे॥ परी ते ही सकळ निपजें॥ मज चि स्तवा॥ ४५॥ श्लो०॥ अंत वतु फलं तं शांतं द्रवत्य ल्य मे पसां॥
 देवान् देवजो यांति मद्भक्ता यांति मामपि॥ २३॥ टी०॥ परी ते भक्त मातें नेणती॥ जे कल्य ने बाहरी नीन घाति॥ द्यणो नि कल्य नि फळा
 पाट॥ ओ० ३४ संचरले॥ ओ० ३७ विषय मंजाले॥ ओ० ४६ जरि॥ ४७

पावती॥ अंतवन्त॥ ४६॥ किंबहुना ऐंसे भजन॥ तंसंसारार्चि साधन॥ येर फल भोग नो स्वप्न॥ नावसरणी देसे॥ ४७॥ हें असो परांते॥
 मग हो कां आवडते॥ परियजी जो देवतांते॥ नो देवत्वासींचिये॥ ४८॥ येर तनु मन प्राणी॥ जे अनुसरलु माझे याचि वाहणी॥ ते देहाचि नि
 र्गणी॥ मीं निहाती॥ ४९॥ श्रुती॥ ०॥ अर्ध्यां व्यक्तिसापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः॥ परं सावजानंते मामव्यमनुजम्॥ २४॥ टी०॥ प-
 री ते सैनकारि नो प्राणिये॥ वांया आपुल्याहिती वाणिये॥ जे गोंहनाति पाणिये॥ नऊ हातिचेनी॥ ५०॥ नाना अमृताचा सागरी बुडजे
 ॥ मगतोडा कोवज मिटी पाडजे॥ आणिसनीं नरीं आठवजे॥ थिल्लो रोंदकाते॥ ५१॥ हें ऐसे कासया करवें॥ जें अमृतीही रीगो निमरा
 वें॥ तें सरवें अमृत होऊनि कां नसावें॥ अमृत मानी॥ ५२॥ तें सा फळ देतु चागजरा॥ सांडुनि यंध नुईरा॥ कां प्रतीति पाखींचि देव
 रा॥ गोसावियां नो हावें॥ ५३॥ जे थडचा वलो निपा नाडें॥ सखाचा पसारु नाडें॥ आपुलें निरसरवाडें॥ उडोये ऐसा॥ ५४॥ तथा उमपा-
 मापकां सुवावें॥ मज अव्यक्ता व्यक्त कामानावें॥ सिद्ध असतीं कनिं मावें॥ साधतवरी॥ ५५॥ परी हा बोल आपखा॥ जरीं विचारि
 जत संपाडवा॥ तरीं विशेष याजीवा॥ नचो जवया॥ ५६॥ श्रुती॥ ०॥ नाहं मकाशः सर्वस्य योगमाया समायतनः॥ मृदोयं नाभिजना
 तिलोको मामजसव्यये॥ २५॥ टी०॥ काजे यागमाया पडके॥ हें जालें आहातीं भ्रांथके॥ हाणो निष्कशाशचि न देह बळे॥ न देरव-
 ती माते॥ ५७॥ येन्हदीं मीं नसे ऐसा॥ काय वस्तु जात अस॥ पाहं पांळवण जळरसे॥ रहित आहे॥ ५८॥ पवन कवणाते न सवेचि
 ॥ आकाश कें न सयाचि॥ हें असो एक मींचि॥ विस्वी आहे॥ ५९॥ श्रुती॥ ०॥ वेदाहं समतीतां निवर्तमानां निचाजुना॥ भविष्या-
 णि च भूतानि मां तु वेदन कश्चन॥ २६॥ टी०॥ येथें भूतें जियें आहातिं जतुलीं॥ नियें मींचि होऊनि ठेडीं॥ आणिवर्तति आह्वाति जे
 तुलीं॥ ते ही मींचि ६०॥ कां भविष्यमाणें जियें हीं॥ तीं हो सजवंगडीं नाहीं॥ हा बोल चिये न्हवीं काही॥ होय ना जाये॥ ६१॥ दोराचि-
 पाठ-ओं० ६९ नितर-ओं० ५५ नेमावें ओ० ५८ काही०

यासापासी॥ डोषावडिया नागगव्हाकाएसी॥ संख्या न कर वेकाण्हासी॥ तं वीभृतां सिमथ्यत्वे॥ ६२॥ ऐसामीपंडुसूता॥ अनुसू-
 तसदो असतो॥ यासंसारजंभृती॥ नो अने बोले॥ ६३॥ तरिते चिआतां थोडीसी॥ गोठीसो गिजे लुपेर्येसी॥ जेथ अहंकार तन्वसि
 ॥ वोलमपडिले॥ ६४॥ श्लो०॥ इच्छाहंपुसमुत्थ न हृदमोहेन मारता॥ सर्वभूतानि संमाहं सर्वं योति परतप॥ २७॥ टी०॥ तेय इच्छाहे कु-
 मारी जाली॥ मगने कामा चिया तारण्या आली॥ तेय देयें सीमो डली॥ वराडिक॥ ६५॥ तया दोयां स्नवजन्मला॥ ऐसा हृदमो हजा-
 ला॥ मगतो अजेयाने वाढवला॥ अहंकारे॥ ६६॥ नो धर्तीसि सतां प्रति कृत्वा॥ नियमाही नाग वेस्युक्त॥ आशारसें दोदिल॥ जाला-
 सांता॥ ६७॥ अमंनुष्टी चिया मदिरा॥ मत्त होवो निथनु हरा॥ विषयाचे वारा॥ विकृतीसि असो॥ ६८॥ तेंणें भावभूस्थी चिया वाटे॥
 विखुरले विकल्याचे काटे॥ मग चिरले आव्हाटे॥ अमरुतीचे॥ ६९॥ तेंणें भूतें भावावली॥ द्यर्णो न संसारा चिया आडवा माजि प-
 डिली॥ मग महा दुःखाचे तली॥ वीझीवरी॥ ७०॥ ये पांत्वें तगतें पापं जनानो पुण्य कर्मणा॥ ते हृदमोह निमुक्ता भजने-
 मा हटवता॥ २८॥ टी०॥ ऐसं विकल्याचे वायाणें॥ काटे देखो निसिणाणें॥ जें भनिभ्रमाने पासावणो॥ घेती चिना॥ ७१॥ इजुए
 कनिष्टे चा पाउली॥ रगडुनि विवल्या चिया भाली॥ महापानकाची सांडली॥ आठवी जीहि॥ ७२॥ मग पुण्याचे धावायेनेले॥ आ-
 णिमाझी जवळी कपावेली॥ किबहुना ते चुकले॥ वाटवयेया॥ ७३॥ श्लो०॥ जरा मरण मोक्षाय मामभित्ययंतितये॥ ते ब्रह्म न द्वि-
 दुःकलमभ्यासं कर्म चास्विकं॥ २९॥ टी०॥ ये न्हीती पाया॥ जन्म मरणार्चनि मेकया॥ ऐसिया प्रयत्नातें आस्था॥ वियजया
 ची॥ ७४॥ तया तो प्रयत्न चिके वेलें॥ मग समग्र परब्रह्म फळे॥ जयापिके द्यारसगळे॥ पूर्णतेचा॥ ७५॥ तें वेळीं कृत कृत्यता
 जगमरे॥ तेथ अभ्यासाचे नवलपणपुरे॥ कर्माचे कामसर॥ विरमेमन॥ ७६॥ ऐसा अभ्यासला भनया॥ होय गाधन जया॥ भ्रडव

पाठ-ओं-६७ मवळ-ओं-७० दोहे-ओं-७१ पासवणे.

७

७

७

लजया ॥ उद्यमीर्मा ॥ ७७ ॥ नयातंसास्याचियंवाटी ॥ एक्याचीसांदेकुळवाडी ॥ तथमेदाचियादुबळवाडी ॥ नेणजेतयां ॥ ७८ ॥
 प्रसू ॥ साधिपूताधिदेवंमांसाधियज्ञचयंविदुः ॥ प्रयाणकालेपिचमोतेविदुयुक्तेतसः ॥ ७९ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासुपरि
 षत्सु ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ८० ॥ जिह्वाधिपूतादिमा
 ने ॥ पतीतिचेनिहाने ॥ धरूनिआधिदेवांत ॥ शिखलेगा ॥ ८१ ॥ जयाजागिवेचेनिवेगें ॥ मांआधियज्ञदृष्टीरिगें ॥ तेननुचेनि-
 वियोगें ॥ विनूयेनव्दति ॥ ८२ ॥ येचूर्वांआयुष्याचेंसूत्रविद्यतां ॥ अनांचिउमदेखडाडनां ॥ कायममरतयांहीचिता ॥ युगांतनो
 हे ॥ ८३ ॥ परिनेणोंकेंसंपंगा ॥ जंजडांनिगेलेमाझियाआंगा ॥ तेंप्रयाणीचियालगबगा ॥ नसांदितीचमातें ॥ ८४ ॥ येचूर्वांनीरी
 जाणा ॥ ऐसेजेनिपुणा ॥ तेचिअंतःकरण ॥ युक्तयोगी ॥ ८५ ॥ नवदुयेशळूपिकेतकी ॥ नोडुयेंचिअवधानाचीअंजुकी ॥ जेना
 वेकअंजुनतयेवेकी ॥ मागांचिहोना ॥ ८६ ॥ जेथतद्ब्रह्मवाक्यफळें ॥ जेनानाथरसेंरसाळें ॥ बहूतेंआह्मातिपरमळें ॥ भावाचेनि
 ८७ ॥ सहजकृपामंदानिकें ॥ श्रीकृष्णदुमान्नीकचनफळें ॥ अजुनश्रवणाचियेखेळें ॥ अवचितपडिळो ॥ ८८ ॥ तियेपेमाचीहो
 कावळी ॥ कीब्रह्मरसाचासागरीचुबकळी ॥ भगंतसांचिकायोंळी ॥ परमानंदें ॥ ८९ ॥ तेणेंबरवेपणेंनिमळें ॥ अजुनाआ-
 निमेषाचेडोहळें ॥ येतातिगळी ॥ विस्मयामृगचे ॥ ९० ॥ तियापुरुषसंपत्तीजोडिळ्या ॥ भगत्सागाचोयबाकुलिया ॥ नृदया-
 चाजीवांशुतकुलिया ॥ होतआहार्ती ॥ ९१ ॥ ऐसेवराचिर्लाचिबिरवा ॥ मरुवजावोलागलेफवा ॥ तवसस्वादाचियाहांवा ॥ ला
 होकेळा ॥ ९२ ॥ झडकरीअनुमानाचेंनिकरतळें ॥ घेरुनिनियेवाक्यफळें ॥ प्रतीतीमुखीएकेंवेळें ॥ याळुपाहे ॥ ९३ ॥ तंवविदाराचि
 थारसमानदादनी ॥ परहनुचादशनीनकुतनी ॥ ऐसेंजाणोंनिमुभद्रापती ॥ चुंबीबिना ॥ ९४ ॥ भगत्चमत्कारलाहाणे ॥ द्येजळीचिंमिता
 पाठः ओं ८५ बहकतः ओं ८६ वावतीः

रंगणों॥ कैसा इसाक विलो असलागणों॥ असुरांचे नि॥ ९३॥ इयपदेन वनिमुडिया॥ याना चिया धड्या॥ येथ आमुची मती बुडालिया॥
 थावन निघे॥ ९४॥ बांचूनि जाणावयाची कोंगाठी॥ ऐसं जे र्वांकलूनि करी दी॥ तिया पुनरपिकेली हरी॥ यादेंद्रा॥ ९५॥ मग विचविलें
 सुमरें॥ हांहे जे ये एक वाटे॥ सानही पद अनुष्ठे॥ नवनं पाहती॥ ९६॥ ये हवी अवधानाचे निविहले पणें॥ नाना प्रमेयाची उगाणें॥ काय
 श्रवणाचे नि आंगवणें बोल्लाहाति॥ ९७॥ परिते सहं नो हांचे दवा॥ देखिला असुरांचा मेळावा॥ आण विस्मयी जे वा॥ विस्मये माला
 ॥ ९८॥ कानाचे नि गवाक्षद्वारे॥ बोलाचे रश्मी अभ्यंतरें॥ पाहनांत वचमळारें॥ अवधान ठाकलें॥ ९९॥ तें विचि अर्थाची चाड मज आहो॥
 तें सांग नो ही वेळ न साहे॥ ह्यापूनि निरूपण लवलाहे॥ किजो देवा २००॥ असामागील पडनाळा घेउनी॥ पुढा आशिया यदृशी सूनी॥
 ते विचि माजि शिरुनि॥ आतीं आपुली॥ १॥ केंसी पुसती पाहें पांजाणिव॥ भिडें चितरीं लयां नें दीशिंव॥ ये हवीं श्रीकृष्णाहृदया सिंखें
 ॥ देवो सरली॥ २॥ आहो श्रीगुरु नें जे पुसावें॥ तें येणें मानें सावय व्हावें॥ हे एक विजाणें आयव॥ साळासाची॥ ३॥ आत्मतयाचे ते प्रभक
 रणें॥ वरी सर्व ज्ञाही रीचें बोलणें॥ हे सजयों आवडले पणें॥ सांगले कसे॥ ४॥ नियो अवधान द्यां वेंगो दी॥ बोलिले लोद मन्हा दी॥ जे-
 सी कानांचे आधी हरी॥ उपयोगा जाये॥ ५॥ बुद्धि चिया जभा॥ बोलाचा स्वतः गाभा॥ असुरा चिया भांदा॥ इदियें जितो॥ ६॥ पाहाण मालती कळे
 ॥ घ्राणां सिकार वाटले परिमळें॥ परि वरि चिया बरवाका इडोळें॥ सुख येन व्दनी॥ ७॥ तें सें दीशिया चिया हवावा॥ इंदियें करिती राणि वों॥
 मग प्रमेया चिया गांवां॥ लेसा जाइजे॥ ८॥ ऐसे नि नागर पणें॥ बोलनि भिजें बोलणें॥ ऐका ज्ञान दवहाणें॥ निवृत्तीचा॥ २०९॥
 इति श्री भावार्थदीपिका यांज्ञानेश्वरविरचिता यां सप्तमोऽध्यायः ७

७

७

७

७

श्रीगणेशायनमः ॥ अर्जुन उवाच ॥ किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ॥ अधिभूतचक्रं योक्तुं मयि देवं किमुच्यते ॥ १ ॥ टी० ॥ मर्गं अर्जुन
 ह्यणिनलं ॥ हां हो जी अवधारिले ॥ जें म्यां पुंसिले ॥ तें नरु पिजे ॥ १ ॥ सांगा कवण तें द्रव्य ॥ काय सया ना मकम ॥ अथवा अयात्म ॥ काय
 ह्यणिप ॥ २ ॥ अधिभूत तें वेस ॥ गथ अधि देव त कवण अस ॥ हें उघड मी परि रसे ॥ एसे बोला ॥ ३ ॥ म्ह्यो ॥ अधियज्ञः कथं को वदं हस्मि
 न्मधुसूदन ॥ प्रयाण काले कथं ज्ञेयो भिनयता त्स्वभिः ॥ ४ ॥ टी० ॥ देवा अधियज्ञ तो काई ॥ कवण पांदयं दही ॥ हें अनुमाना भक्ता ही ॥
 दिदीन भरे ॥ ५ ॥ आणि नयना अंतः कर्ण ॥ तू जाणी जशी देह प्रयाणी ॥ तें कें सोने दे श्राड याणी ॥ परिसवामांते ॥ ५ ॥ देवा धवळारी चि
 तामणी चा ॥ जरी पड्ड्या होय देवांचा ॥ तरां वसण तां हो गोल तयाचा ॥ सांपन वंचे ॥ ६ ॥ तें सें अर्जुना चिया बोला भवें ॥ आलें तें चि ह्यणिनल
 देवें ॥ तें परिये सें गाबरवें ॥ जें पुंसिलें तुवां ॥ ७ ॥ किरीटी चाम धेनु चा पाडा ॥ बरी कल्यतरुचा आहं मा दाडा ॥ ह्यणां निमनोरथा सिद्धी चिया चाडा ॥
 तो नवल नोहे ॥ ८ ॥ श्रीकृष्ण को पो निजा सिमरी ॥ तां पावें परब्रह्म साक्षात्कारी ॥ मांष्ट येने उ पदेश करी ॥ तों कें शापरी न प्रवल् ॥ ९ ॥ जें श्रीकृ-
 ष्ण चि होइ जे आपणा ॥ तें श्रीकृष्ण होय आपुलें अंतः करण ॥ तेथ वां संकल्यांचें आपणा ॥ वोळगती सिद्धी ॥ १० ॥ परि ऐसे जें येम ॥ तें अर्जुना-
 चि आशनिः सीम ॥ ह्यण उ नितयांचे काम ॥ सदा फळ ॥ ११ ॥ या कारणें श्री अर्जुन तें ॥ तें मनागत नयांचें पुसतें ॥ होइल जाण निआइतें ॥ वोग
 रूनि ठेविलें ॥ १२ ॥ जें अपत्यथानीं गे ॥ तयाची मृक्वंत मां तें सींचिलो ॥ यें हवें तें शब्द काय सांगो ॥ मग स्तन्य देखरी ॥ १३ ॥ ह्यण वों निरूप
 कुवागुरू चिया द्याथी ॥ हे नवल नां हं कांही ॥ परितें असो आदकाई ॥ जें देव बोलत जहालें ॥ १४ ॥ म्ह्यो ॥ श्री भगवानुवाच ॥ असं ब्रह्म परमं
 स्वभावो ध्यात्म सुच्यते ॥ भूत भाव द्रव्य कर्मा विमर्गः कर्मसांज्ञितः ॥ १५ ॥ टी० ॥ मग ह्यणिनलें सर्व बरें ॥ जें आकारोदय स्वोक्तरें ॥ कोतलें अस न
 न श्विरें ॥ कवणें काळी ॥ १५ ॥ ये हवें सांपुरण तयांचें पाहावें ॥ त रित्युचि न ह्म भावें ॥ वीरगानांचे निपाळवें ॥ गाळुनि घिनलें ॥ १६ ॥

जेंसंहीपरिवरुं ॥ द्योविज्ञानाचियंसोळें ॥ हालवलंहीनगळे ॥ तेंपरब्रह्म ॥ १७ ॥ आणिआकाराचिंजालेपणें ॥ जन्मयमार्तेनेपणें ॥ अकारलेपींनमणें ॥ नाहोकोही ॥ १८ ॥ ऐसियाआपाहियाचिसहजस्थिती ॥ ज्याब्रह्माचीनिदंताअसती ॥ तथानामसुप्रद्रापती ॥ अथास्त्रगा ॥ १९ ॥ मगगगनीजेंविंमंळें ॥ नेणोंकेंचीएकवेळें ॥ उदनीधनपटळें ॥ नानावर्णें ॥ २० ॥ तेंसैंअमूर्तीतियोविश्रुं ॥ महदादिभूतभेदें ॥ ब्रह्मांडाचेबांधें ॥ हेंचिलगती ॥ २१ ॥ पौर्नविकृत्याचियंबडी ॥ फुटेआदिसंकृत्याचीविकृती ॥ आणिसर्वोचमोहोनेयेदीती ॥ ब्रह्मगोकुळाचा ॥ २२ ॥ तयाएकैकाचेभीतरीपाहिजे ॥ तंवरीजाचाचिप्रारिलादेस्विजे ॥ माजिहोतियांजानियांनेणिजे ॥ लखंजीवा ॥ २३ ॥ मगतयाब्रह्मगोकुळांचेआशांश ॥ प्रसवनीआदिसंकृत्यअसमासैं ॥ हेंअसोरोसीबहुवसा ॥ सुधीवाटे ॥ २४ ॥ परिदुजेनवीणएकळा ॥ परब्रह्मचिसंचला ॥ अनेकत्वाचाआला ॥ पूरजेंसा ॥ २५ ॥ तेंसंसमाविषमत्वनेणोंकेंचें ॥ वायांचिचराचरचे ॥ पाहातांप्रसवतियायोनीचे ॥ लक्षादिसती ॥ २६ ॥ योरजीवभावाचियेपाळविये ॥ काहोमयादाकरूनये ॥ पाहिजेकवणेंआपवेंविये ॥ तंवमूळतेंश्रुत्या ॥ २७ ॥ ह्मणूनिकर्तामुदलनदिसे ॥ आणिसेसोंकारणहीकाहोनसे ॥ माजिकार्यचिआपेंसैं ॥ वाटोंचिलगो ॥ २८ ॥ ऐसाकरितेनवीणगोचर ॥ अव्यक्तीहाआकार ॥ निपजेजोव्यापार ॥ तथानामकर्म ॥ २९ ॥ म्हणो ॥ अधिभूतंसरोभावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ॥ अधिपज्ञोहमेवावदेहेदहभूतांवर ॥ ३० ॥ टी० ॥ आतांअधिभूतजेंह्मणें ॥ तेंहीसांगोंसंश्रें ॥ नरिहोयआणिहारपे ॥ अफजेंसैं ॥ ३१ ॥ तेंसैंअसंनपणआहाच ॥ नाहोहोइहेसाच ॥ झयातेंरूपाआणितीपांचपांचा ॥ मिळोनिया ॥ ३२ ॥ भूतांतेंअधिकरूभिधामे ॥ आणिभूतसंयोगेंनरिदिसे ॥ जेंवियोगवेंळंशे ॥ नामरूपादि ॥ ३३ ॥ तयातेंअधिभूतह्मणजे ॥ मगअधिदैवनपुरुषजाणिजे ॥ जेणेंप्रकृतीचेंमोणिजे ॥ उपाजिलें ॥ ३४ ॥ जोचेतनेचाचक्र ॥ जोइंद्रियदेशीचाअधक्र ॥ जोदंहासमानोवृक्ष ॥ सकृत्याविहंगमाचा ॥ ३५ ॥ जोपरमात्माचिपरिदुसरा ॥ जोअहकारानिद्रानिदसरा ॥ ह्मणोनिसुषुप्ति ॥ ओं-२४ असमहास-

स्वप्नाचियावोर॥ बारासंतोषशिणो॥ ३५॥ जीवयणंनावे॥ ज्यातें आळविजेस्वभावे॥ नें अधिदेवतजाणावे॥ पांचयतनचि॥ ३६॥ आतां इ
 येचि शरीरगामी॥ जेशरीरमात्रातें उपशमी॥ तो अधियज्ञप्रणामी॥ पंडुकुमरा॥ ३७॥ येरअधिदेयाधिष्मता॥ हेमीचिकीरसमस्ता॥ परि
 धरीकडाळामिळुता॥ तें कायनोहे॥ ३८॥ नरिपथरपणनमळे॥ आणिकडाळाचियाहीअंशानमिळे॥ परिजवअसेतयाचेंनमेळे॥ तेंव
 सांकेचिद्विगणजे॥ ३९॥ तेंसंअधिष्मतादिआपवें॥ हेंअविद्येचेंनपाळवें॥ झाकलेंतवमानावें॥ वेगळेंऐसे॥ ४०॥ तेंचिअविद्येचाजवनीक
 फिटे॥ आणिमंदेसावूचीअवधीनुटे॥ मगद्विणोरकहोउंनिजरीआटे॥ नरिदानीकायहोती॥ ४१॥ पैकेशांचागुंडाळा॥ वारिदेविलीस्फुटि
 काशिळा॥ तेजवपाहिजेडोळा॥ तंवभदलीगमती॥ ४२॥ पाठीकंशपरोनेनळे॥ आणिमंदलपणकायनेणोंजाहाळे॥ नरिडांकदेऊनि सांदिळे
 ॥ शिळेतेंकारे॥ ४३॥ नातेअसंवडचियायती॥ परिसंगंभिन्नागमलाहांती॥ तेंसारिलयांमोगोती॥ जेंसांकांतेसो॥ ४४॥ तेवींचिअहंसावजा
 ये॥ तारिक्वतेंआधींचिआहे॥ हेंचिसांचेंजयहोये॥ तोअधियज्ञमी॥ ४५॥ पैंगाआळीनुज॥ सकळयज्ञकर्मज॥ सांगीतलेंकोजेंकाज
 मनींधरुनि॥ ४६॥ तोहासकळजांचाविसावा॥ नैष्ठ्यसुखाचाठवो॥ परिउयडकरुनिपांडवा॥ दाविजतअसो॥ ४७॥ पाहिलेंवैरा
 यदंधनपरिपूती॥ इंद्रियानळांप्रदीप्ती॥ विषयद्रव्याचियाआहुती॥ देउनियो॥ ४८॥ मगवज्रासनतेंचिउवी॥ शोभुनिआथरसमुद्राव
 रवी॥ वेदिकाराचेंमंडर्वी॥ शरीराचा॥ ४९॥ तंयसंयमाचीचिकुडें॥ इंद्रियद्रव्याचेंनिषवीडो॥ गजनीउरडें॥ युक्तरौष॥ ५०॥ मगमनया
 णसंयमा॥ हाचिहवनसंपदेचासंयमा॥ येणेंसंतोषविजेंनिधूमा॥ ज्ञानानळ॥ ५१॥ ऐसोनिहंसकळज्ञानीसमपे॥ मगज्ञानतेंज्ञेशींहारये
 ॥ पाठींज्ञेयचिस्वरूपें॥ निस्वित्तरं॥ ५२॥ तयानावगाअधियज्ञा॥ ऐसंबोलिजाजवसंज्ञा॥ तंवअर्जुनअंतयाज्ञा॥ तयापातलेंतें॥ ५३॥
 हंजाणोंनिद्विगणितलेंदेवें॥ पार्थापरिसनआहासिबरवें॥ शकृष्णाचियाबाळासंवें॥ येरुसुखाचाजाहाळा॥ ५४॥ देखाबाळकाचेंयध
 पाठ ओं- ३९ तेंकायसांकेनोहे- ४२ पाहिती- गमती-

णीधाइजे॥ कांशिष्याचेनिजाहालेपणंहांइजे॥ हेसहुकृत्तिरकलेनिजाणिजे॥ कांयसवति॥ ५५॥ ह्यणोनि सात्त्विकावाचीयां
दीं॥ कृष्णाअंगीअछुनाअधी॥ नसमातसेपरिवुद्धि॥ सावकृत्तिदेवे॥ ५६॥ मगपिकलियासुखाचापरिमई॥ कीनिबालियाअमृता
चाकलीळ॥ तैसाकोंवळाआणिरसाळ॥ बोलबोलिऊ॥ ५७॥ ह्योपरि सणेंयाचाया॥ आदेंकबापाधनंजया॥ ऐसीजळोसरलि
यामाया॥ तेंयजळीतेंतैहोजळो॥ ५८॥ अंतकाळेजमामेवस्परच्युक्ताकलेवरम्॥ यः यथातिसमद्रावंयातिनस्त्यवश-
यः॥ ५९॥ दी॥ जेंआनांचिसांगीतलंहांतें॥ अगाअधियसह्यजानलाजयातें॥ तेंआधींचितयामातें॥ जौणोनिअंती॥ ५९॥ नेदेह
झोळऐसेमानुनी॥ ठेळेंआपणपेआपणहोउने॥ जेंसामठगानापरुनि॥ गगनींचिआहे॥ ६०॥ येयतीतींचियासाजियरी॥ तया
निश्चयाचीवोवरी॥ आलीह्यणोनिबाहरी॥ नव्हेंचिसे॥ ६१॥ ऐसेंसबान्दरेक्यसंचळें॥ मोहोउनिअसतांगचिलें॥ बाहोरिभूतांचीपां
चहीरखवळें॥ नेणतोचिपडिळी॥ ६२॥ आतांउमयाउमपणनाहीजयाचें॥ माण्डिलियांगहानकवणतयाचें॥ ह्यणोनिपतीतिचि
येपोदींचें॥ पाणीनहाले॥ ६३॥ नातेंऐक्याचिआहंवोनिनी॥ कींनिन्यनेचयाददधोयानली॥ जैसीसामरससमुद्रेंद्रितली॥ रुळेचि
ना॥ ६४॥ पेंआथारीघटबुडाला॥ तोआंतबाहरिउकेंसरला॥ पाटीदेवगत्याजरीफुटला॥ तरीउदककायफुटे॥ ६५॥ नातरीस
पेंकवचमोडिलें॥ काउबोरनेवरुफाडिलें॥ तरसांगणकायमोडिलें॥ आवेवामाजी॥ ६६॥ तैसाआकारहाआहाचक्षरी॥ वाचू
निवस्तुतेसांचलीचिअसे॥ तेंचिबुद्धजांलियावसुकुसे॥ केंसेनिआतां॥ ६७॥ ह्यणोनिंयपरिमातें॥ अंतकाळीजाणतसातें॥
जैमोकळीतेदेहातें॥ तेमीचिहोती॥ ६८॥ येन्हवीनरीसाधारण॥ उरींआदळलियामरण॥ जोआठवपरीअंतःकरण॥ जेंचि
होइजे॥ ६९॥ जैसाकवणएदकाकुळती॥ पळतांपवनगती॥ दुयावलीअवचिती॥ कुहामाजिपडियेला॥ ७०॥ आतांतयाप-
पाठ- ओं- ५७ गमिळ- ओं- ५८ तेंही- ओं- ५९ जाणोअंती- ओं- ६२ मीचि-

४

४

४

दुणया आरौति ॥ पढण चुकवावयापराते ॥ नाही द्यणोर्नतेय ॥ पडावे चि श्हे ॥ ७५ ॥ ते गभृच न अवसरेंके ॥ जें येउं नजीवास मोरेंटा
 के ॥ तें होणें मगनचुके ॥ भळतया परी ॥ ७२ ॥ आणि जगाना जव आसिजे ॥ तेव जणोग्राने सावना भाविजे ॥ दोळालागत रवे वेदें श्रिजे ॥
 ते निस्वयी ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ येयवा पिस्सुग्गमावें स्तन्यंतें कलंदरमा ॥ तन मेलति को ते यस्तदान द्रवभाविता ॥ १ ॥ ॥ तेवीं जंतें नि अवसरें ॥
 जें आवडो निजी गुरे ॥ ते चिमण्या चिरं द्रंग ॥ फार हांला म ॥ ७६ ॥ आणि मणोजयावें आवे ॥ मोतें चि रगतीं येनि ॥ ७७ ॥ तस्मात्सर्व
 पुत्रा लेधु मा मेनुस्मरयुध्व ॥ मय्यर्पित मनो बुद्धि मा मेवेष्यस्य संशय ॥ ७८ ॥ ॥ टी ॥ ॥ द्यणो नि सदां मगवें ॥ मातें चि तुवा ॥ ७९ ॥ ॥ दोळ जें देखा
 वे ॥ कांफानीं हनंकावे ॥ मनीं जें भावावे ॥ बाळावे वाचे ॥ ८० ॥ ॥ तें आतना होर आघवे ॥ मोचि करूनि गालावे ॥ मग सवीकाळीं स्वभावो ॥ मोचि
 आहे ॥ ८१ ॥ ॥ अर्जुना गेंसे जाहालिया ॥ मग न मरि जें दह गोळिया ॥ मांसे ग्राम कोळिया ॥ भयकाय तुज ॥ ८२ ॥ ॥ तूं मज बुद्धि साचें सो ॥ जरी मा
 क्षिया स्वरूपीं अपि सी ॥ तणि मातें चिया पावरी ॥ हं माझी भाक ॥ ८३ ॥ ॥ होचिका थिसया वरी हाया ॥ एसा जरी सें दहवतें त आहे ॥ नरि अश्या
 स्त्री नि आदी पाहें ॥ मग न व्हं तरि कोप ॥ ८४ ॥ ॥ अप्या सया गाधुत्त न चेत साना न्यागामिना ॥ परमं पुरुष दिव्यया नि पाथांनु चिंतयन् ॥
 ८५ ॥ ॥ टी ॥ ॥ येणें चि अप्या से सीं याग ॥ चि नासि करी पांचाग ॥ अगाउ पाय वळ पंगु ॥ पहाड टोका ॥ ८६ ॥ ॥ तेवीं सश्या सा नि रतर ॥ चि
 नासि परम पुरुषाची मोहर ॥ लोवीं मग शरीर ॥ राहो अथवा जावो ॥ ८७ ॥ ॥ जंनाना गतीं पावि वें ॥ तें चित्त वरी ल आत्मयाते ॥ मग क-
 वण आठवीं दहानें ॥ गोळीं आहे ॥ ८८ ॥ ॥ पेंसरि ते चि नि ओघें ॥ सिंधुजळ मी न लेंद्रोघें ॥ तें काय न न आहे मगें ॥ द्यणो नि पाहो येनी ॥ ८९
 नातें समुद्र चि हळो नेंढलें ॥ तें वें चित्त चें चेतन्य जाहालें ॥ जेथाना या नीं नि मालें ॥ घनानें जें ॥ ९० ॥ ॥ कवि पुराण मनुशां सितारम
 पो रणी या नम मनुस्मरेद ॥ सर्वस्य धातारम चित्य रूपमा दित्यवर्णनम सः परस्तात् ॥ ९१ ॥ ॥ टी ॥ ॥ जयाचे आकाश वीण असणें ॥ जया जन्म

नानिमणें॥ जें आधवेंचि आधवेपणें॥ देसत असे॥ ८६॥ जें गगनाहूनि जुने॥ जें परमाणूहूनि सानें॥ जयाचे निमि अधिनें॥ विश्वचळे॥ ८७॥
 जें सर्व तें यया विंयें॥ विश्वसर्व जेणें जियें॥ हेतु जया बिहें॥ अचित्य जा॥ ८८॥ देसें बोलें बाइगुन चरें॥ ते जीति मिरन शिरें॥ जें देहाचे आ-
 धारें॥ चर्म चरुसी॥ ८९॥ सुसडास्य किरणा चारशी॥ जो नित्य उदो ज्ञानियासी॥ अतमानाचें जयासी॥ आडनाव नाहीं॥ ९०॥ श्लो॥
 प्रयाण काले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव॥ ह्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्संतपः पुरुषमुपैति दिव्यम्॥ ९१॥ टी॥ तस्य अ-
 व्यंगवाणेया ब्रह्माते॥ प्रयाण काले प्राप्त॥ जो स्थिरबले निवितें॥ जाणोनि स्मरे॥ ९१॥ बाहेर पद्यासनरचुनी॥ उन्नराभिमुख बैसेनी॥ जीवीं
 सुखसुनि॥ कर्मयोगाचें॥ ९२॥ आतु भिनले निमनो धर्में॥ स्वरूप या नीचे निम्यें॥ ओं ऐं आप आम्हें॥ भिळावया॥ ९३॥ आकळो नियों॥
 मध्यमा मध्यागौ॥ अग्नित्थानो निनिगे॥ ब्रह्मरंध्रा॥ ९४॥ तें य अचेतें चिनाचा सांगत॥ आहाच वाणादि सें मांडत॥ तें थप्राणगगना आं-
 ता॥ संचरें को॥ ९५॥ परिमनचे निर्य्ये धरित्वा॥ प्रकृति चिया प्रावना भरला॥ योगबळें आवरला॥ सज्ज होउनी॥ ९६॥ तें जडा जडा तें विरवि-
 दु॥ झूलता माजि संचरतु॥ जें साधना दलें यस्तु॥ घंटे सींच होयो॥ ९७॥ कांझा कलियें घटीचा दिवा॥ नेण जे काय जाहाळा केळा॥ यारी-
 ती जो पाडवा॥ देह देवी॥ ९८॥ तो केवळ परब्रह्म॥ जया परमाणु रूपा सें नाम॥ तें भाझें निज धाम॥ होउनि दाके॥ ९९॥ श्लो॥ यदस्तर वेद वि-
 दो वदंति विशति यद्यतयो वीतरगाः॥ यदिच्छन्तो ब्रह्म च र्यं चरति तेन पदं ग्रहेण प्रवक्ष्य॥ १००॥ टी॥ स कदा जाणोण्या जे लाणी॥ तिये जा-
 णिवेची जेखाणी॥ तयां ज्ञानियां चियें आरणी॥ जया तें अक्षर स्मृणियें॥ १०१॥ चंडवा तें हीन मोडे॥ तें गगनीं चि कीं फुडें॥ वांचूनि जरी होई
 लुमे हुडें॥ नरा उरलें के॥ १०२॥ तें विजाणण्या जें आकळें॥ तें जाणीव पण चि उभाणलें॥ मग नेण वेचितया स्मृणितलें॥ अक्षर सहजें॥ १०३॥ स्म-
 रणा निवेद विद नर॥ स्मृणती जया तें अक्षर॥ जें प्रकृती सीं पिर॥ परमात्मरूपा॥ १०४॥ आणिविषयां चो विषय उलंडुनि॥ जें सर्व दिश्यायाय भिन देउनि
 पाठः ओं॥ ९५॥ अचेतनः॥ ९७॥ कृपू कुवा॥ लयस्तु॥ ओं॥ २॥ जाणले पण॥

आहानिदं चायं बोधिनि ॥ झाडानि च ॥ ५॥ अयाचि निरंतरवाटया द्वाति ॥ निष्कासाभि अभिप्रेत ॥ सर्वदा जे ॥ ५॥ जयाचि-
 या आवडी ॥ नगणिनि ब्रह्मचर्याचि साकडी ॥ निष्ठुरहाउनि वापुडी ॥ दोदिये करिती ॥ ६॥ एसं जे पद ॥ दुल्लभ अणि अगाध ॥ जयाचिये थडि
 येवढे ॥ चुबुका वलेटले ॥ ७॥ तेने पुरुष हांने ॥ जयापरि लया जाते ॥ तारया याहि चि स्थिती ॥ एक वेळ सांगो ॥ ८॥ ते एथ अजुने द्यणित ले स्वामी
 ॥ हे चि द्यणावा हांनो पांमी ॥ तेवस हजुर सांकल्य नुद्री ॥ तारिबो लोको ॥ ९॥ परि बोलावे ते अनिसा हांने ॥ तथे द्यणित ले प्रभु वन दीपे ॥ तु
 जकायने पांसे पें ॥ सो गे न एक ॥ १०॥ तस्मिन्ना बोहो गे कडे ॥ ययाचि साविद्या भवं मांडे ॥ हं हृदया चिया डाहो बुडे ॥ तसे कोजे ॥ ११॥
 ॥ १२॥ सर्वदाराणि संयम्य सनात्तदिनि बुद्धि च ॥ सुध्यायात्मनः प्राणमास्थिता योगाध्यानाम् ॥ १३॥ दी० ॥ परि हंतरी च चडु ॥ जरि स
 यमाचि असवंडे ॥ सर्वदारीं कवांडे ॥ कळा सती ॥ १४॥ तस्मिन् हजे मन कांडले ॥ न्दरी नि असंलुगले ॥ जे संकर चरणो मांडले ॥ परि वरन
 संडी ॥ १५॥ तें संचि न राहिल्या पोडवा ॥ प्राणाचा प्रणव चि करुवा ॥ मग अनुशु नि पंथ आणावा ॥ मुद्दि वरी ॥ १६॥ तथे आकाशीं भिळन
 भिळ ॥ तें सीधरी धारणा वळ ॥ जंवमात्रा वय मावळ ॥ अध विबी ॥ १७॥ तें वरी तां स मीरु ॥ निराळीं की जस्थिरु ॥ मग लुग्नीं जे विओं कारु
 ॥ बिबीं चि विलसे ॥ १८॥ ओमित्ये काशेर असव्याहर सामनु स्मरने ॥ यथा प्रयत्नित्य जन्तु हं सया नि परभांगिनि ॥ १९॥ दी० ॥
 तें सें ओहें स्मरीं सर ॥ आणित थो च या पापु रे ॥ मगा प्रणवानीं तुरे ॥ पूण च न जे ॥ २०॥ ह्यणो भि यणें वेकनास ॥ हें गकाक्ष ब्रह्म ॥ जे मा
 हो स्वरूप परम ॥ स्मरत साना ॥ २१॥ या पोरत्य जी देहांते ॥ तो चि शुद्धि पवमांते ॥ जयाया वया पुरांते ॥ अगो का वणे नाही ॥ २२॥ ते
 थ अर्जुन जरी विपाये ॥ तुझा जी हो नो सें जाये ॥ नाहें स्मरण मग होय ॥ काय सया वरी आती ॥ २३॥ इंदियां अनवडु पाडिल्या ॥ जीविता
 चें सुख बुडालिया ॥ आंत बाहोरि सुघडालिया ॥ मुत्का चि द्दं ॥ २४॥ तें वळीं विसावें चि कवणें ॥ मग कवण नि सोया करणें ॥ तंथा कात्याचि अ
 पाट ॥ ओ० १०१ तें ॥ ओ० १०१ विं ॥ ओ० २० अनी ॥ ओ० २१ अतयड

७.

४.

३.

तः करणौ ॥ प्रणवस्वरवा ॥ २१ ॥ तारिगोपसियाहोव्यनी ॥ इणोथापदशरिगामनी ॥ योनित्यसंविहामीनिदानी ॥ सेवकहोयो ॥ २२ ॥ म्बो ॥
 अनन्यचेतः सततेयोमास्मरतिनित्यशः तस्याहमुत्सर्गार्थान्यथयुक्तस्यार्थगिन ॥ ११४ ॥ मामुपेत्यपुनजन्मतुः खालयमशान्धनम् ॥ न-
 मुर्वतिमहात्मानः ॥ संसिद्धिपरमागमाः ॥ ११५ ॥ दी ॥ जेविषयासिमिलान्कर्तुं ॥ प्रवृत्तीतरनिगडवाउनी ॥ मातेहृदथीसुनी ॥
 प्रोगिताती ॥ २६ ॥ परिप्रोगितयानराणुका ॥ भरणेनाहंस्फादिको ॥ मयस्सुसदिरका ॥ ववणपाड ॥ २७ ॥ ऐसेनितरएकवडो ॥
 जेअतः करणीमजशीकुगदले ॥ मौचिहोडनिआंनते ॥ उणसिती ॥ २८ ॥ तयादहावसानजेपांवि ॥ तौतहीमातेस्मरावे ॥ माभ्योजरीन
 पावावे ॥ नरिउपाभितेकायसी ॥ २७ ॥ पैरकरकआडुलपणो ॥ काकुचनीधानवाधवमणो ॥ नरितयावियेगुनीधांवणो ॥ कायनघडेम
 जो ॥ २८ ॥ आणिसक्तोहीतेचिदशा ॥ तरिस्पर्त्ताचासोसक्तयसा ॥ झाडुतेमहाध्वनीमेसा ॥ नगराणावा ॥ २९ ॥ निहजेवेड्डीमीस्मरावा ॥ तेवे
 कीस्मारिलाकीपावावा ॥ नोआभारहीजावा ॥ सादवोवना ॥ ३० ॥ तैकुरणयेपणदेखोनिओनी ॥ मआपुलयाचउतीणत्वाणी ॥ भक्तोचियान
 नुत्यागी ॥ परिचर्यकरी ॥ ३१ ॥ देहवक्त्याचावारा ॥ इणोपिणोल्यासकुमारा ॥ म्पणानिआत्मरोधानेपांजिरा ॥ सुयेतयाते ॥ ३२ ॥ व
 रिआपुलियास्मरणचीदेवाइनी ॥ हीनांसीकरिगदुली ॥ ऐसेनिमित्यचादूसवली ॥ मोआणीतयानि ॥ ३३ ॥ म्पणोनदेहांवीचेंसाकडे
 ॥ मांशयाकंहोचिनपडे ॥ मोआपुलयातेआपुलीकडे ॥ सुरवेचिअमर्त ॥ ३४ ॥ वरचीदेहांवीरांयसणीकिडुनी ॥ आहाचअहंकारा
 चेरजझाडुनी ॥ शरूवासानानिवडुनी ॥ आपणपांमळी ॥ ३५ ॥ आणिसानानरादेही ॥ विषाणकतकीचहावनाही ॥ म्पणानिअवडे
 रकरितोकाही ॥ विषाणेसांनवाते ॥ ३६ ॥ नातरदेहांवीचिमियाये ॥ मराआपणयेणानेन्यावे ॥ हेहीनाहंजेस्वभावे ॥ जेआधीचिम
 जमिनले ॥ ३७ ॥ याशरीयाचियासाली ॥ असतपणहीचसाडली ॥ वाचूनिचिदकातेतली ॥ चटोचआहे ॥ ३८ ॥ ऐसेजेनित्ययुक्त ॥ न-
 पाद-ओं ॥ २६ निमाद-ओं ॥ २६ तैमावि-ओं ॥ ३३ उपादली-ओं ॥ ३४ आपणपां-

यासिसुलभमीसतन॥ स्यणउनिदेहांतीनिश्चिन्ता॥ मीचिहांती॥ ३९॥ मगकुशतरुचस्वाडी॥ जनापत्रयार्त्तचिसगडी॥ जेमृत्ककाका
भिकुरौडी॥ सोडिलीआहे॥ ४०॥ जेंदेव्याचेंदुभते॥ जंमहाभयातेंवाटवितें॥ जेंमकळदुःखाचेंपुरतें॥ भांडवल॥ ४१॥ जेंदुर्मनचिंमूळ॥
जेंकुक्काचेंफळ॥ जेंव्यामाहाचेंकेवळ॥ स्वरूपचि॥ ४२॥ जेंसंसारचेंबेसणें॥ जेंविकाराचेंउद्यानें॥ जेंसकळरागाचेंभाणें॥ वाटिलेंआहे॥
४३॥ जेंकाठाचास्विचउशिता॥ जेंआशाचाओगवटा॥ जचमरणाचावांलिवटा॥ स्वभावेंजें॥ ४४॥ जेंमुलीचेंभरिंवें॥ जेंविकल्याचेंवोतिव
किंबहुनापेंवें॥ विंचुवांचें॥ ४५॥ जेंव्याघ्राचेंक्षेत्र॥ जेंपण्यागनाचेंमित्र॥ जेंविषयविज्ञानयंत्र॥ सुगूजिता॥ ४६॥ जेंगुलवेचाकळवळा॥ नि
वाळियाविषोदकाचागळाका॥ जेंविश्वासुआगवळा॥ संवचाराचा॥ ४७॥ जेंकोटियाचेंरेंवेंवा॥ जेंकाळसपाचेंमादव॥ गोरियेचेंस्वभा
वा॥ गायनजें॥ ४८॥ जेंवैरियाचापाहुणर॥ जेंदुर्जनाचाआदर॥ हेंअसंजेंसागर॥ अनथाचा॥ ४९॥ जेंस्वमीदेखिलेंस्वमा॥ जेंमृगज
ऊंसंसीनलेंजिवितें॥ जेंधूम्रजचेंगगन॥ आतलेंआहे॥ ५०॥ एसंजेंहंशरीर॥ तेंतनपवर्तनीचणुटनीनर॥ जेंहोउनिहेंलेअपार॥ स्वरू
पमाझे॥ ५१॥ श्लो०॥ आब्रह्मभुवनालोकाः पुनरावर्तिनांजुन॥ मामुपेत्यानुकृतंयपुनजन्मविद्यते॥ ५६॥ टी०॥ येह्वीब्रह्मपणा
नियेभहसो॥ ननुकतीचिपुनरावर्त्तचिवळस॥ परिनवटलियाचेंजेंसं॥ पाटनदुखे॥ ५३॥ नातरीचेंइलियानतरे॥ नवुडिजस्वमीचे-
निमहापूरें॥ तेंविंमातेंपावलेतेंमसारे॥ लुपतीचिना॥ ५३॥ येरवीजगदाकाराचेंभरें॥ जेंचिरस्थायीयाचेंधुरे॥ ब्रह्मभुवनगाचवरी॥
लोकाचळाचें॥ ५४॥ जियेगांवीचाप हारिदोवरी॥ एकाअमरेंद्राचेंआशुष्यनधरी॥ वळोनिपातीउद्याकसरी॥ चवदाजणाचो॥ ५५
श्लो०॥ सहस्रयुगपर्यंतमहद्वह्मणाविदुः॥ रात्रियुगसहस्रातेंहारात्रविदोजनाः॥ १७॥ टी०॥ जेंचोकाड्यासहस्रजाये॥ तेंदाये
दावोवळाचिहोये॥ आणितेंसंचिसहस्रभारियेपाहें॥ रात्रीजया॥ ५६॥ येवढेंअहोरात्रजेंथिचें॥ तेंपानलाटनीजेंभाग्याचे॥ देस्वनीते
पाठ० ओ० ५० नव०

७

७

७

७

७

७

स्वर्गचिं॥ चिरंजीवा॥ ५७॥ येरं सुराणां चिन्तयार्द्रं॥ विशेषसांगावीं तैथकाई॥ मुदलइंद्राची चिदशापाहीं॥ जो देहाचेचोदा॥ ५८॥ य
 रिब्रह्मयाचियाहि आवायहरांतें॥ आपुल्याडोळां देसवें॥ जैआहा निगातयातें॥ अहोरात्रविदह्मणिजे॥ ५९॥ अ० ॥ अव्यक्तह्म
 यः सर्वाः प्रपवंत्यहरागमे॥ राज्यागमं यत्नयेनेतंत्रैवाव्यक्तसंज्ञकं॥ १८॥ श्रुतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते॥ राज्यागमेव शः पाथ्यप्रभव
 त्यहरागमे॥ १९॥ टी० ॥ तयेब्रह्मपुवर्नीद्विसंपाहें॥ नंवेळीं गणनार्कहीनसमाये॥ तंमैअव्यक्ताचे होये॥ व्यक्ताविषव॥ ६०॥ पुढतीदेहाची
 चौपाहारीफिटे॥ आणिहा आकारसमुद्रआटे॥ पाठीमगंनंसाचिपांहाटे॥ प्ररेंलागो॥ ६१॥ शारदीयेचियेप्रवेशीं॥ अर्धो जिरतीआका
 शीं॥ मगघीष्मांतीजेशीं॥ निगानीपुढनी॥ ६२॥ तैसीब्रह्मादनाचियेआदी॥ हेसूतसूधीचीमांदी॥ मिळेंजवसहस्वावधी॥ निमित्तपुरे॥
 ६३॥ पाठीरात्रीचा अवसरहोये॥ आणिविश्वअव्यक्तीलयाजाये॥ तोहीद्युगसहस्रमोदकापाहे॥ आणितेंसेचिरचे॥ ६४॥ हेसागावया-
 कायउपपत्ती॥ जौजगाचाप्रलयोआणिसंभूती॥ इथेब्रह्मपुवर्नीचियाहोनी॥ अहोरात्रामाजी॥ ६५॥ केंसेथोरियेचुंमानपाहेंपो॥ जियासृष्टि
 बीजाचासांतेपा॥ परिपुनरावर्नीचियाभापा॥ शीगजाहाली॥ ६६॥ येहूर्वीचेंलोख्यहेंयधुंरो॥ नियागावीं चागापसांरा॥ मोहादिनोद-
 रींएकसरां॥ मांडतअसे॥ ६७॥ पाठीरात्रीचासमोपवे॥ आणिअपैसाचिसांतेवे॥ ह्मणियेजेथिचेंतेथस्वभावे॥ साम्यासिये॥ ६८॥
 जैसेहृत्सपणबीजासिआले॥ कींमेघहेंगगनजाहाले॥ तेंसंअनेकलक्षणसामावले॥ तेंसाम्यह्मणिपो॥ ६९॥ अ० ॥ परस्तस्मानु-
 भावोन्योव्यक्तोव्यक्तात्सनातनः॥ यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्स्मृतिविनश्यति॥ २०॥ टी० ॥ तेंयसमविषमनदिसकांहीं॥ ह्मणोनिभूतेंहे
 पाषाणाहीं॥ जंविंदुधचिजाहालियादहीं॥ नामरूपजाये॥ ७०॥ तेंविआकारलोपासरिसें॥ जगाचेंजगपणप्रशो॥ परिजेथेजाहाले
 तेंजैसें॥ तैसेचिअसे॥ ७१॥ तेंतयानावसहजअव्यक्त॥ आणिआँकारोयेतोंचव्यक्त॥ हेंएकास्तवएकसूचित॥ येहूर्वीदोनीनाहीं॥ ७२
 पाठः ओं० ५८ एथः ओं० ६० वहीं० ओं० ६१ जै० ओं० ६६ जौ० ओं० ७२ आन्नारः

४

७

४

४

जैसं आदलियारूपं ॥ आदलपणतें खाटीं ह्यणिपें ॥ पुढर्ताना धनाकार हारपो ॥ जेव्हा अळकार होती ॥ ७३ ॥ होदोन्ही जैशीं होणें ॥
 रकीं साक्षी भूत सुवर्णा ॥ तें सीव्यक्त्या व्यक्तार्चक दुसणी ॥ वस्तूचा ठायीं ॥ ७४ ॥ तें तरी व्यक्तना अव्यक्त ॥ नित्यना नाशवंत ॥ या दो-
 हो भावातीन ॥ अनादि सिद्ध ॥ ७५ ॥ जें हें विश्वचिह्नं अनिमित्त ॥ परिक्वपणना सिलें नित्यनासे ॥ अक्षरें प्रसिल्या न पुसे ॥ अर्थ जे-
 सा ॥ ७६ ॥ पाहें पांतर गतरी होत जात ॥ परितेय उदक तें अखंड असत ॥ तें विभूता भावीं ना नाशत ॥ अविनाश जें ॥ ७७ ॥ ना तरी आद-
 तिये अळकारी ॥ नारतें कनक असे जया परी ॥ तें विमरानिये जीवाकारी ॥ अमर जें आहे ॥ ७८ ॥ अक्षर कोक्षर इत्युक्त स माहु-
 परमांगतिम् ॥ यथाप्यननिवर्तें तद्दाम परममम ॥ ७९ ॥ पुरुषः स परः पर्यभक्त्या लभ्यस्त्वनन्यथा ॥ यस्यानस्थानि भूतानि येन स-
 र्वमिदं ततम् ॥ ८० ॥ जया तें अव्यक्त ह्यणों ये काडें ॥ ह्यणानां स्तुतीं हे नावडें ॥ जें मन बुद्धीन सांपडें ॥ ह्यणों ये नियो ॥ ८१ ॥ आणि
 आकारा आलिया जयाचें ॥ निराकारपण नवचें ॥ आकारलोपें न वि संचें ॥ नित्यतागा ॥ ८२ ॥ ह्यणोनि अक्षर जें ह्यणि जे ॥ तें वों च ह्य-
 णानां बोधही उपजे ॥ जया परी ना पें स न दोखि जे ॥ यानां मपरमगती ॥ ८३ ॥ परि आयवा इही देह पुरी ॥ आहे निजिलियाचे परी ॥ जेव्हा पा-
 र करविना करी ॥ ह्यणों ये नियो ॥ ८४ ॥ ये ह्वर्त जेशरीर चें दण ॥ त्या मर्जा एकी ही न टके गा सुभटा ॥ दाह इंदियांचिया वाटा ॥ वाहन चि आहे-
 ती ॥ ८५ ॥ उकळ्ही निवषयांचा पेटा ॥ होत मनाचा चों हटा ॥ तो सुरवदुःखाचा राजवांटा ॥ भितरा ही पावें ॥ ८६ ॥ परि रावो पड्डिलिया सु-
 खें ॥ जैसा देशींचा व्यापार न टके ॥ प्रजा आपुला लेनि अभिलारवें ॥ करिती चि असती ॥ ८७ ॥ तें सें बुद्धीचें हन जाणणें ॥ कामनाचें येणें
 देणें ॥ इंदियांचें करणें ॥ स्फुरण वायूचें ॥ ८८ ॥ हे देह क्रिया आयची ॥ न करिनां हांय बरवी ॥ जैसा न चलवें तो न रवी ॥ लोक चाले ॥ ८९ ॥
 अर्जुना तया परी ॥ सुतलारे सा आहे शरीरी ॥ ह्यणों नि पुरुष गा अवधारी ॥ ह्यणि पें जयते ॥ ९० ॥ आणि मकूनी पतिव्रते ॥ पंडिता शक

पत्नीव्रते ॥ येषां ह्येकारणं ज्ञान ॥ पुरुषस्य गणाय ॥ ८९ ॥ पंचदाचं बह्वसपण ॥ देवे चिना जयाचं आगण ॥ हंगगनाचं पाथुरण ॥ हाय
 देखा ॥ ९० ॥ ऐसं जाणूनि यागीष्वर ॥ जयानं स्य गती परास्वर ॥ जे अनन्य गती चें थर ॥ भिं वसी नये ॥ ९१ ॥ जे ननु वाचिने ॥ नादकती दु-
 जिये गोष्टीने ॥ तया एक निष्ठे चें पकते ॥ मुक्षे व्रजे ॥ ९२ ॥ हें त्रैलोक्य चि पुरुषांत म ॥ ऐसा सा जयाचा नामो धर्म ॥ तया आस्तिकाचा आश्रम
 ॥ पांडवा गा ॥ ९३ ॥ जें निगवंचें गोरव ॥ जें निगुण जाणिव ॥ जें सुस्वर्चा शिणिव ॥ निराशा सी ॥ ९४ ॥ जें से तो थियावा ठेले नाट ॥ जें अचिना अ-
 नाथाचें मायपोट ॥ भक्ती सी उजवाट ॥ जया गावा ॥ ९५ ॥ हें एकै क्रम गो निवायो ॥ काय फार करूं न जया ॥ पैगो लया जया ठाया ॥ तो ठावो चि
 होद जे ॥ ९६ ॥ हिंवा चिया झळुका ॥ जें सें हिंवा चि पडू पादका ॥ कोसामोर जैलु यो अर्का ॥ तम चि प्रकाश होये ॥ ९७ ॥ तें सासं सार जया गावा
 ॥ गेला सा ना पांडवा ॥ हो र्मे निदाकें आधवा ॥ मोक्षाचा चि ॥ ९८ ॥ नरि अभिमाजि आलें ॥ जें सें रंधे निचि अभिमाजि आलें ॥ पादो निवडें चि कांहीं
 केलें ॥ काष्ठपणा ॥ ९९ ॥ नानरी सारखे चाया घेता ॥ बुद्धि मंन येणें हां करिता ॥ परिक्रमन व्हे पडु सुता ॥ जिया परी ॥ १०० ॥ लाहाचें कनक जा
 हालें ॥ हें एकें परिसें चिकलें ॥ आनां आणी केलें चें न गलें ॥ लाहल आणी ॥ १०१ ॥ ह्याणां निवृ प होड निमायेनें ॥ तेवो दुपण मये चि निरुते ॥ ते विपावी
 नियां जयते ॥ पुनरावृत्ति नाही ॥ १०२ ॥ नें माझें परम ॥ साचो कोरें निज धामा ॥ हें अनुवट तुज वर्म ॥ दाविज न असें ॥ १०३ ॥ यत्र काले लनाए-
 ति मारुनि चें वयो गिन ॥ प्रया नायां निनें काले वक्ष्यामि भरत पर्म ॥ १०४ ॥ टी ॥ तेवो चि आणिकें ही एकै प्रकारें ॥ हें जाणानं आहे सो पारें ॥ नरि
 देह सोडिनें निअवसरें ॥ जर्थो भळुनीं यागी ॥ १०५ ॥ अथवा अवचटें ऐसं घडें ॥ जें अनवसरें देह सोडें ॥ नरि माघें ते येणें घडें ॥ देहासी चि ॥ १०६ ॥
 ह्याणां नि काळ शुद्धी जरी देह टोवनी ॥ नरि देवी नखें वेत्राचि होनी ॥ ये ह्ववीं अकाळी नरी येनी ॥ संसारु टुटी ॥ १०७ ॥ तें सें सायुज्य अणि पु-
 नरावनी ॥ यादो न्हा अवसर आहानी ॥ तो चि अवसर नु जयते ॥ प्रसंगें सांगों ॥ १०८ ॥ नरि ऐकें गा सुभटा ॥ पानि लया मरणाचा माजि वटा ॥

पाठ. ओं. ९१ परम. ओं. ९२ नें गड्यां म. ओं. ९३ पांडवें, आदिवा. ओं. ३ आनवट. ओं. १ आकळे.

पांचे आपुल्यालुस्ययाता॥ नियर्ताअन्तो॥ ८॥ रसावर्गवशिष्यद्विप्रयाणकार्त्त॥ बुद्धीतंस्त्रमनागिच्छी॥ स्थितिनच्छ् ओधर्त्त॥ नकोडेमुन॥ १॥
 हाचेननावर्गाअथवा॥ मरणार्तिदिसद्वय॥ पश्चिअनुभविश्रुयाब्रह्मसावा॥ गवसणीहोउनी॥ १०॥ ऐसासावधहासमाभावो॥ आणनि
 वर्णवेर्हीनवाहो॥ हंतरांचपंडसावावो॥ अर्गनाचाआर्थी॥ ११॥ गहापावारेनेकाउदकं॥ जेंसोदिव्याचेंदिवेपणाझाके॥ तेंसंअसनीजकाय
 देखे॥ दिटीआपुर्ला॥ १२॥ तेंसंदहानांचिनिधिपभयांतें॥ देहआतवाहेश्लेष्मआंतें॥ तोंवडोनिजायउजितें॥ अग्निचेंजेच्छ॥ १३॥ तेंवेळीं-
 प्राणासिप्राणनाही॥ तेंयबुद्धीअसोनिरगालुकार्द॥ ह्यणांनिआर्त्तवर्षणदेही॥ चैनननथारें॥ १४॥ अगादेहोचाअग्निजरंगोळा॥ तरिदे
 हनच्छेचिरवलवोळा॥ वायोआयुष्यवेळुआपुर्ला॥ आधारेगवर्सा॥ १५॥ आणिसागीलुस्मरणआघवें॥ तेंनेणंअवसरेंसांभाळावें॥ मगदेह
 त्यज्तीनिमिळावें॥ स्वरूपीकीं॥ १६॥ तेंवनयादेहदुष्टांचाचिरवर्ला॥ चेतनाचिबुडोनिगोर्ला॥ तेंथमागिलीपुर्तिलाहेदेळी॥ आठवणसहजें॥
 १७॥ ह्यणांनिआर्धचिअप्यासजोकर्ला॥ तोंमरणनयनांचिमोनिगोर्ला॥ जेंसंदेवणेंनदिसनांमालुवला॥ दीपहानीचा॥ १८॥ आतांअसोहें
 सकळ॥ जाणपोजानासिअग्निमूळ॥ तयाअग्निचिंययाणीबळ॥ संपूर्णआर्थी॥ १९॥ अग्निज्योतिरहयुक्कुःषण्मासाउत्तरायण
 म॥ तत्रप्रयानागच्छतिब्रह्मब्रह्मविदाजनाः॥ १९८॥ टी०॥ ओतअग्निज्योतीचाप्रकाश॥ बाहेरिमुक्कुपक्षआणिदिवस॥ आणिसामासांमा
 जिमास॥ उत्तरायण॥ २०॥ ऐसियासमयोगाचीनिरुती॥ लाहोनिजेदेहदेविनी॥ तेंब्रह्माचिहानी॥ ब्रह्मविदा॥ २१॥ अवधारीगाधनुर्धरा॥
 येथवरिसामर्थ्ययाअवसरा॥ तेंवीनिहाउज्जुमार्गस्वपुरा॥ यावयांपें॥ २२॥ येथअग्नीहोत्राहिलयावनरें॥ ज्योतिर्मयेंहंदुसरें॥ दिवसजाणोनि
 सरें॥ चौथेशुक्लपक्ष॥ २३॥ आणिसामासांमाजिउत्तरायणा॥ तेंवरचीलग्नासोयान॥ येणेंसायुज्यसिद्धसदन॥ पावनीयागी॥ २४॥ हाउत्तम
 काळजाणिजे॥ यातेंअचिरादिमार्गहाणिजे॥ आतांअकाळनोहीसहजें॥ सोगेनआईक॥ २५॥ अहो॥ धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मासा
 पाठ- ओं०१९ मंत्रे- ओं०१९ धर्मे- ओं०१५ यागाचिया, ब्रह्मविदहोनी, परब्रह्मो-

दक्षिणायनम् ॥ तत्र चंद्रमसं ज्योतिर्योगीश्वर्यानिवर्तते ॥ २५ ॥ टी ७ ॥ तस्मिन् यथा चिन्ता अवसरं ॥ वानस्पृश्यासुसरे ॥ तेषां अंतः करणं आंशं
 दे ॥ कौटिल्ये टोके ॥ २६ ॥ सर्वोदयालां कुडपडे ॥ स्थितिश्च मासमाजिपुडे ॥ मनहोयवेडे ॥ कौंडमाण ॥ २७ ॥ अग्निं अग्निपणजाये ॥ मगतो
 धुमचिअवधाहोये ॥ तेषां च न नागिबसिहाटोये ॥ शरीरं चिं ॥ २८ ॥ जैसे चंद्रा आडुआभाळ ॥ सदत दाटे सजळ ॥ मगा उदन उजळ ॥
 ऐसे झांबळे होये ॥ २९ ॥ कांमरे भासावित्र ॥ ऐसे जीविनासिपडे स्मथ ॥ आयुध मरण चिं सयदा ॥ वेळटाकी ॥ ३० ॥ ऐसी मनबुद्धि करणी ॥
 संप्रवती धूमाकुळाची कौंडणी ॥ नेथ जन्म जाडिले वाहणी ॥ युग निवुडे ॥ ३१ ॥ हांगा हातीं चेंजे वळं जाये ॥ ते वेळीं आणि कालाभाची
 गोठी कें आह ॥ ह्यण उनिमयाणीं नव होये ॥ येनु लीट्या ॥ ३२ ॥ ऐसे देहां आनी स्थिती ॥ बाहेरि कृष्ण पक्ष वरिती ॥ आणि सा मास ही वोड
 वती ॥ दक्षिणायन ॥ ३३ ॥ इव पुनरावृत्ती चिं ॥ आघर्णि एक वती जया चिं मयापणी ॥ मोक्षरूप सिद्धीची काहाणी ॥ कैसे निआदळे
 ॥ ३४ ॥ ऐसा मयाचा देह पडे ॥ नया योगी ह्यणो निचेंद्वर जाण घडे ॥ मग ते धूनि मायुना बहडे ॥ संसाराये ॥ ३५ ॥ आही अकाळ जे पांडवा ॥
 ह्यणि नला नो हाजाणावा ॥ ह्याचि धूम मार्गावा ॥ पुनरावृत्ती चिं ॥ ३६ ॥ येर नो अचिं दिमार्ग ॥ नो वसत आणि असं नरा ॥ साविता स्वस्त
 चाग ॥ निवृत्ती वरी ॥ ३७ ॥ श्रुद्धो ॥ शुद्ध ह्यो गती नो जगन ॥ एक यायात् नालु निमन्य यावर्तते पुनः ॥ ३८ ॥ टी ७ ॥ ऐसे या
 अनादिया दीना वाटा ॥ एकी उज्जु एकी अहंता ॥ ह्यण उनिबुद्धि पूर्व सुभटा ॥ दाबिले या तुज ॥ ३९ ॥ कांजे मागा मार्ग देखे ॥ साचला दि-
 कें वोळखे ॥ हिना हिन जाणें ॥ हित चिं ॥ ४० ॥ पाहें या नावे देखे नांबरवी ॥ कोण ही आड्याली काय अथावी ॥ कां सुपंथ जाणो निआ
 दुवी ॥ शिवत असे ॥ ४१ ॥ जीविव अमृत वोळखे ॥ नो अमृत काय सांडू शके ॥ ते वंजो उज्जवा देखे ॥ नो अहंता नवचे ॥ ४२ ॥ ह्यणो निवुटे ॥
 पारखावे वर कुंडे ॥ पारखिलें तरी न पडे ॥ अनवसरं काही ॥ ४३ ॥ येव्ही देहांती थार विषम ॥ या मार्गाचें आहें संश्रम ॥ जे अस्वर्गा मिल
 पाठ नही ॥

७.

७.

७.

७.

७.

७.

याचं हनकाम ॥ जाईलवायो ॥ ६३ ॥ जरि अचिंशदिमार्गचुकलिया ॥ अवचटें धूमपथें पाडालया ॥ नरिसंसारं थोडिं जुंतीलियां ॥ भंवतचि
 असावें ॥ ६४ ॥ हंसायासंदरवांनिमोटा ॥ आतां कैसें निपाणक वेंकडफुटे ॥ ह्यणो नियां नयोगमार्गामटे ॥ शोधिले दोन्ही ॥ ६५ ॥ तंव एकें ब्र
 ह्मलाजाईजे ॥ आणिलें कुनगद्य निरदजे ॥ परिदेवगत्याजो लाहिजे ॥ देहांत जेणो ॥ ६६ ॥ स्मरे ॥ नेंतं सुते पाथं जानन्योगी सुह्यति क
 र्चन ॥ तस्यास्सर्वेषु कालेषु यागधुक्को भवजुन ॥ ६७ ॥ टी ॥ तें वेंकड्याणतं न्हंनव्हे ॥ वायो अवचटकाय पावें ॥ देह ज्ये निवस्तु हो आसो ॥ मा
 र्गचकी ॥ ६८ ॥ गरि आतां देह असा अथवा जावो ॥ आहोनां के वळवस्तु चि आहो ॥ कोजें दोरी सर्यत्व वावो ॥ दोगां चकडुनी ॥ ६९ ॥ मजनं रंग
 ण असे कीं नसो ॥ तें सें हें उदकायनी कीं भासो ॥ तें भल तें न्हंजेंस ॥ उदका चिको ॥ ७० ॥ तरंगाकारें न जन्मो चि ॥ नातरगरूपें न मेचि ॥ ते वि
 देह जे देहें चि ॥ वस्तु जाहाले ॥ ७१ ॥ आतां शरीराचं नयां चियाटाई ॥ आडनाव हें उरलूं नाहीं ॥ तरिकाणें काळें कोही ॥ निमेंतं पाहें योग ॥ ७२ ॥ म
 गभागीं कासयाशोधवें ॥ काणें काढून कें जावें ॥ जरी देशकाळादि आघवें ॥ आपणचि असे ॥ ७३ ॥ आणि हागाथर जे वेंकडफुटे ॥ तें वेंकडीं ते
 थिचें आकाशलागे न दवाटे ॥ वातालागलें न रगनां भटे ॥ येर वेंचुके ॥ ७४ ॥ पाहें पाणें सें इत आहें ॥ कीं तो आकारुचि जाये ॥ येर गगन-
 तें गगनीचि आहें ॥ घटलाई आशी ॥ ७५ ॥ ऐसिया बोधाचें निसुरवाड ॥ मार्गा मार्गाचें साकडें ॥ नयासो हें सिद्धाचान पडे ॥ योगियां सी
 ॥ ७६ ॥ याकारणें पंडुसुना ॥ नुवां हो आवें योग सुक्ता ॥ तें तुला निसर्ग काळीं साम्यता ॥ आपसया हो इल्ल ॥ ७७ ॥ मग भल न ये भल न व्हा ॥
 देह असो जावो अथवा ॥ परिवुद्धि नित्य ब्रह्म भावा ॥ विषडनाही ॥ ७८ ॥ ताकल्या दिज्जाना गावें ॥ कृत्यां तो मरणें न पुवें ॥ माजि स्वप्न सें
 साराचें निष्ठावें ॥ झकवेना ॥ ७९ ॥ येणें बोधें जे योगी होये ॥ तयासाचिया बोधाचें न टपण आहें ॥ कोजे भागां तें पेलुन पाये ॥ -
 निजरूपाये ॥ ८० ॥ पैगाईं द्राविद कां वंवां ॥ जयासवस्वें स्वर्गी गजती राणिवां ॥ तें सांडणें मानूनि पांडवा ॥ डावली जा ॥ ८१ ॥ ॥ ॥

पाठः ओं ५३ कायचुके ओं ०५८ आकल्यानी.

वेदेषु ते श्रुतः सुचैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रतिष्ठम् ॥ अत्यन्तितत्सर्वमिदं विदित्व योगी परस्थानमुपैति चायम् ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ८ जशवेदाध्ययनचिन्ता
 लं ॥ अथवा यज्ञाचेशेन पिकलं ॥ कीं तपदानाचें जडलं ॥ सर्वस्वहनजें ॥ ६१ ॥ तथा आधवपुण्याची मेळा ॥ भारांतों निजयायेफ
 क्का ॥ तें परब्रह्मानिर्मळा ॥ सांदिनसरे ॥ ६२ ॥ जें नित्यानंदाचें निमानें ॥ उपमेचा कांटाळा न दिसे सानें ॥ पाहापां वेदयज्ञा दिसाथें ॥
 ज्या सरवा ॥ ६३ ॥ जें वेदेनासरे ॥ भोगीतयाचे निपवाडें पुरे ॥ पुढती महासुराचें सोयरे ॥ पावडची ॥ ६४ ॥ ऐसें दृष्टीचे निमुखपणें ॥
 ज्यासी अदृष्टाचें समणें ॥ जें शतमखंडी आंगवणें ॥ नोहे चिण्का ॥ ६५ ॥ तथा तें योगीश्वर अलौकिकें ॥ दिदीचे निहात तुकें ॥ अनुमान
 नीको तुकें ॥ तें वहळ्वार आवडें ॥ ६६ ॥ मग नयासुखाकिरीटी ॥ कळूनि आंगापाउटी ॥ परब्रह्माचिये पाटी ॥ आरूढती ॥ ६७ ॥ ऐसें चरा
 चरें कभाग्य ॥ जें ब्रह्मेशा आराधने योग्य ॥ योगियाचें भाग्य ॥ भोगधनजें ॥ ६८ ॥ जो सकळ कळांची कळा ॥ जो परमानंदपुतळा ॥ जो
 जिवाचा जिह्वाळा ॥ विश्वाचिया ॥ ६९ ॥ जो सर्वज्ञ तेचा बोलावा ॥ जो यादवकुळीचा कुळिवा ॥ तो श्रीकृष्णाजी पांडवा ॥ प्रतीबोळुळा ॥
 ७० ॥ ऐसां कुरुक्षेत्रांचा वृत्तान ॥ संजयोगयासि असे सांगत ॥ तें निपरिये सापुढरी मात ॥ ज्ञानदेव म्हणोनि वृत्तीचा ॥ २७१ इति श्री
 भावार्थदीपिकायां ज्ञानदेवविरचितायां अष्टमोऽध्यायः ८

पाठ-ओं-६६ हळवट.

॥ श्रीकृष्णापणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ तारि अवधानये कलंदेजि ॥ गमसर्वमुखासिपात्रहो जे ॥ हं प्रतितामगभासो ॥ उघड आइका ॥ १॥ परिप्रोशो
 नबोलें होजी ॥ तुझासर्वजाचा समार्जी ॥ हियांचे अवधान हं भाझी ॥ दिनवर्गा सल्लगीचा ॥ २॥ कांजेलुंयचे लखे सरती ॥ मन्तरयां
 चे मनोरथ पुरती ॥ अरंभाहरे थामें तें होती ॥ तुझा एसी ॥ ३॥ तुमचे या दिठी वेया विवेलें ॥ सासिन्ने प्रसन्ननेचे मळें ॥ ते सा
 उली देखे नि लोळें ॥ आनर्जीमी ॥ ४॥ प्रभू तुही सुरवा मृतांचे हो ॥ हाग उनि आसी आपुली स्वेच्छावाला बोलाहो ॥ तेथहा
 जरी सल्लगी करू विहो ॥ तरां निवों कंपा ॥ ५॥ नातरा बाळक बोबडां बाली ॥ वांकुडां विचुळी पाडली ॥ तेचो ज करू निमाडली ॥ रि-
 झेजेवीं ॥ ६॥ तें विंतुझा संतोचा पटियावो ॥ कुंसे निनरी आद्यावरि हो ॥ याबहुवा आळुं किद्याजी आहो ॥ सलगी करित ॥ ७॥ वां
 च्चुनि माझिये बोल तिचे योग्यते ॥ सर्वज्ञभावाह श्रोते ॥ काय थडया वरी सारस्वते ॥ एदीं सिकजे ॥ ८॥ अवधारा आवडते-
 मणा धुंधुरू ॥ परिमहातंजी निमिरवकाय करू ॥ अमृता चिया ताटी वोंगरू ॥ ऐसो रं समोथे वेंचो ॥ ९॥ हां हो हिमकरासी वि-
 जणें ॥ कीना दापुटे आइ कवणें ॥ लेणिया सिलेंगे ॥ हें कही आर्थी ॥ १०॥ सागापरिमळ काय मुर बाव ॥ सागरे कवणे दायी नाहा
 वें ॥ हे गगनचि आड आवें ॥ ऐसा पवाडुं कंचा ॥ ११॥ तें संतुमचें अवधान थार्ये ॥ आणि तुझी क्षणा हें होये ॥ ऐसे वस्तु कव
 णा आहे ॥ जेणे रिझा तुझी ॥ १२॥ तरि विश्वप्रगटी तियाग भस्ती ॥ काय हाति वैनन कीजे आरती ॥ काचुळोतूक अपापती ॥
 अर्घ्य ने दिजे ॥ १३॥ प्रभू तुझी मंदाशा चिया मूर्ती ॥ आणि मंदुबळा अर्चित से भक्ती ॥ क्षणोनि बालज ही गंगा वती ॥ तद्दीस्वी
 कारा लकीं ॥ १४॥ बाळक बापा चिया ताटी रीगे ॥ आणि बापांचे जे वडलगे ॥ कीतो संतोषु ले निवेगे ॥ मुखची वोढवी ॥ १५॥ ते सा
 मी जरी तुझा मती ॥ चावटी करित सें बाळ मती ॥ तरि तुझा संतोषि ऐसी जाती ॥ जेमाची असे ॥ १६॥ आणि तें पां आपुले पणाचे नि
 पावः आः ६ आणिः स्त्रीः ८ तुझीः ओः ९ रसोयः ओः १० जेमाचीयाः ११

मोहं ॥ तु स्त्रीसंतघंतले आसाबौहं ॥ ह्यगोनेकेलियेसलगीचानोहे ॥ आभारतुह्या ॥ १७॥ अहोतान्हयान्नेत्यगतां द्यौः ॥ नेणेअधिक३
 पाद्माफुटे ॥ रोषं प्रेमदुणवटे ॥ पटियंतयांचेनि ॥ १८ ॥ ह्यणऊनिमजलेकुरुवाचेनिबोलें ॥ तुमचंरुपाकूणनिदेलें ॥ तेंचेंदेलें ऐसंजी जाणव
 लें ॥ यालाशिबोलिलोमीं ॥ १९ ॥ येन्हवींचांदिणेंपिक विजत आहेचेपणी ॥ क्षंबारयाघापत आहेवाहणी ॥ हाहोरागनासिगवसणी ॥ या
 लिलेजेकेवीं ॥ २० ॥ आडकापणिवोशिजोवेंनलगे ॥ नवनीतींमाथुलानरिगे ॥ नैबिलांजिलेव्याख्याननिगे ॥ हेस्वेंनिजयानें ॥ २१ ॥ हेंअ-
 मोशब्दस्वज्ञियेबाजे ॥ शब्दमावळलेयानिवांतनिजे ॥ तारीतार्थमन्हादीयावोलिजे ॥ हापाडकाई ॥ २२ ॥ परिऐसियाहीमजधिंव-
 सा ॥ नोपुटनियाचियेकें आशा ॥ जेधिदांवाकरुनिमवाहशां ॥ पटियनयादो आवें ॥ २३ ॥ तरिआतांचद्रापामोनिनिववितें ॥ जेआ-
 मृताहूनीजिववितें ॥ नेणेंअवधानेंकीजोवाटें ॥ मनोरथासाक्षिया ॥ २४ ॥ कांजेदिठिवातुमचावसये ॥ तेंसकळार्थेसिद्धिमतीथिके
 ॥ येन्हवींकोमैलाउन्मेषसंके ॥ जरीउदासतुही ॥ २५ ॥ महजेतरीअवभावा ॥ वच्छत्ताअवधानाचाहोयचारा ॥ तरीदोदेंपेलतीअ-
 क्षरा ॥ प्रमेयची ॥ २६ ॥ अर्थबोलांनचाटपाहे ॥ तेंथअप्रावीनिअभिप्रायानेंविये ॥ भावाचाफुलोराहोतजोये ॥ मतिचरी ॥ २७ ॥
 ह्यणनिसंवादाचासुवावोदळे ॥ तर्हीहटयाकाशसारस्वतेंदळे ॥ अणिअसाहूअमोनरीनिगुळे ॥ माडल्यारुस ॥ २८ ॥ अहोचंद
 कांतद्रवतांकीरहोये ॥ परितेहानवटीचंदींकीं आहे ॥ ह्यणोनिवच्छानोवच्छागेह ॥ आतेनिवण ॥ २९ ॥ परिआतांआमुनेगोडकरावे
 ऐसंतादुळांकासयाविनवावें ॥ साडरवडियानेकाडप्रार्थवें ॥ स्मृतधारतें ॥ ३० ॥ नोकायबाहुलियाचियाकाजानाचवी ॥ किंआपुअरिये
 जाणिवेचीकळावाटवी ॥ ह्यणऊनिआस्वायादेवादेवी ॥ कायकाज ॥ ३१ ॥ तेंयथगुरुद्वयानोकायमाहाते ॥ हेसमस्तहीआस्वाया
 वले ॥ आतांसांगेंजैनेरोपिलें ॥ श्रीकृष्णदेवें ॥ ३२ ॥ येथसंतोषींनिवृत्तीदासें ॥ जांनोह्यणऊनिउल्हासें ॥ अवधाराश्रीकृष्णऐसें

बोलते जाहले ॥ ३३ ॥ श्लो० श्रीभगवानुवाच इदं तु ते गुह्यतमं ब्रह्मसाम्यनस्मृत्वे ॥ ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ञालामोक्ष्यसे ॥ शुभात् ॥ १ ॥
 दी० नातरि अर्जुनाहं बीजं ॥ पुटती सार्धं जलतृज ॥ जहं अंतःकरणं तृज ॥ जिवाचि ॥ ३४ ॥ येणं माने जीवाचे हि ये फडावो ॥ भगवज्ज
 कां पां मज्जासांगवें ॥ ऐसें काहं स्स भावें ॥ कल्पिशी जर ॥ ३५ ॥ तरापरिये सांगा ना जा ॥ तू आस्थे नीच संज्ञा ॥ बोलि नये गोष्टीची अत्र
 ज्ञा ॥ नेण सी करूं ॥ ३६ ॥ ह्मणो निगूट पण आपुलें मोडो ॥ वरि न बाल्यो हो बोल्यो वे घडो ॥ परि आमुचिये जीवे चें पडो ॥ तुझा जिरी ॥
 ॥ ३७ ॥ अगाथानीं कां रूढ गूढ ॥ परिथानासीं चि नव्हे कां गोंड ॥ ह्मणो निमं स कांसे वतया चि चाड ॥ जर अ नन्य मिळे ॥ ३८ ॥ मुढो
 हनि बीज काटिले ॥ भगनि वाळिले ये भूमी पेरिले ॥ तरों ते साडि वर वुरा गेले ॥ ह्मणो ये काये ॥ ३९ ॥ या त्या गोस्स मन आणिव ह्म मती ॥
 जी अभि नंदक अनन्य गती ॥ परि गा गोप्य हो परि तथा प्रती ॥ चाव कि जे मुरवें ॥ ४० ॥ तरि प्रस्तुत आतां गुणीं हो ॥ तू वांचून आणी क
 नाही ॥ ह्मणो निगूज तरि तुझा वार्थ ॥ लपटून ये ॥ ४१ ॥ आतो कि तो नावाना वा गुज ॥ ह्मणतां कां न डे वाटेल तुज ॥ तरि सांगे न ज्ञान स
 हज ॥ विज्ञाने सी ॥ ४२ ॥ परि तं चि ऐसें नि न वाडे ॥ जे सें भस्म वळं रवर कुंडे ॥ भगकाटि जे फडा वाडे ॥ पार रवूनिया ॥ ४३ ॥ कांचां
 चूचे नि सांडसे ॥ रवां डि जे पय पाणी रा जहं सें ॥ तुज ज्ञान विला नें तें सें ॥ वाटु नि दे ॥ ४४ ॥ भगवारया चिया धार सा ॥ पडि न ला कां डा
 को लुरे चि जे सा ॥ आणि कणाचा आपें सा ॥ राशि वा जो दे ॥ ४५ ॥ तें सें जे जाणी तन्मया साटी ॥ संसार संसारा चिये गवी ॥ लाऊनो
 निवें संपाटी ॥ मोक्ष धिये चा ॥ ४६ ॥ श्लो० राजर्षि धार जगुद्य पवित्र भिद सु नम म ॥ प्रत्यक्षा गमं धर्म्यं स्मरु व कर्तुं मव्यय म
 ॥ २ ॥ दी० जं जाणण्यां स्म विद्ये चांगां ॥ गुरुत्वात् आचार्य पदो ॥ जे स वळ मुढ्या चांगां सार्वा ॥ पवित्रां वावो ॥ ४७ ॥ आणि धर्मो
 चें निज धाम ॥ ते विंचि उत्तमांचें उत्तम ॥ पें जया ये गां ना ही काम ॥ ज्ञाना तरां वें ॥ ४८ ॥ मोटे कं गुरु मुरवें उटें जतरि सें ॥ आणि ह्म द

पाठ. ओ. ३५ फोडावें. ओ. ३७ बोलावें.

योऽस्यंभविअसो ॥ प्रत्यक्षप्राबोलांगेतैसं ॥ आपंसयावि ॥ ४९ ॥ तैर्वीचिगासुस्वाचापाउटी ॥ चततोयेइजेजयान्नासेदी ॥ मगसेदत्वाकी
रमिठी ॥ भोगणेयाहिपटे ॥ ५० ॥ परिभोगाचियेएलीकडिलियेमेरे ॥ चित्तउसंहेउंसुस्वाभरे ॥ ऐसंमलभआणिसोपारे ॥ वरिपरब्रह्म ॥
॥ ५१ ॥ पैंगाआणीकहाएकइयत्तें ॥ जेंहानाआलियानरीनबचें ॥ आणिअनुस्रवितोकाहीनवेंचें ॥ वरिविदेहिना ॥ ५२ ॥ यंयजरींतूला
किंका ॥ ऐसीहनयेसीशांका ॥ नायेवटीवस्तुहोलोका ॥ उरलीकेंविपां ॥ ५३ ॥ जंएकोत्तरेयाविचावटी ॥ जळानियेआगींघालितोउडी ॥
तेअनायामेंसंगोडी ॥ सांडितोकेवी ॥ ५४ ॥ तरिपवित्रआणिरस्य ॥ तोंवीचिसुखीपायसुगम ॥ आणिसुसुखपरमधर्म्य ॥ वरिआ
पणपांजोडे ॥ ५५ ॥ ऐसाअवघाचिहासरवाड आहे ॥ तरिजनादातींकेवीउरोलाहे ॥ दाशक्रेचाटावकीरहोये ॥ परिनधरावीतुवां ॥
॥ ५६ ॥ श्लो० अश्रद्धधानाः पुरुषाधर्मस्यास्यपरंनप ॥ अप्राप्यमोनिवर्ततेमृत्युमसागवत्सनि ॥ ३ ॥ टी० पाहेयादूधपवित्रआणिगो
दु ॥ पामोत्तंचेचियापदराआड ॥ परितंअद्धेरुनिगोनिड ॥ अश्रद्धचिमेवी ॥ ५७ ॥ कांकमलकदाआणिदुंदुरी ॥ नादणूकएकैचि
घरी ॥ परिपरागसेविजप्तरांगी ॥ येरांरिवलचिउरे ॥ ५८ ॥ नातरांनैदेवाचापरिवरी ॥ लोन्दा रुतलिया आहातिसहस्वरी ॥ प
रितेयवसोनिउपवासकरी ॥ कांदरिदेंजीये ॥ ५९ ॥ तैसाहदयामध्यंमीराम ॥ आसतोसर्वसुखान्नाआराम ॥ कांफ्नातासीकाम ॥
विषयावरी ॥ ६० ॥ बहुभूगजळदेखोनिडोळां ॥ थेंकिजेअमृताचागिकिनागळाळा ॥ तोडिलापरिसबाधिलागळां ॥ शक्तिकाला
सें ॥ ६१ ॥ तैसीअहमतेचियेवडुसुनडी ॥ मातेनपवतीरिबापुडी ॥ क्षणोनिजन्ममरणानियेदुडो ॥ डहबीतेदेवी ॥ ६२ ॥ ये
न्हवीमीतरीकैसा ॥ सुखाप्रतोमानुकांजैसा ॥ केहोंरेसनदिसेसा ॥ वाणीचानोदे ॥ ६३ ॥ श्लो० मयाततमिदं सर्वजगदव्यक्तमू
र्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाद्रतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ टी० माझेयागिस्मारलेपणनावें ॥ हंजगविनोहेआधवें ॥ जैसंदूधसुरा
पावः ॥ ओ० ६३ नमो० ओ० ६४ पणोन्मोनि

४

५

६

लेस्वभावे ॥ तरितेचिदही ॥ ६४ ॥ कार्वाजनिजाहलंतरु ॥ अथवाभांगारनि (अवच्छल) ॥ तेया मजरकांचाविस्मर ॥ तेहंजग ॥ ६५ ॥
 हे अच्युत्तरपणें भिजले ॥ तें नमगविस्पाकारें बोधिजले ॥ ते सें अमृतमृभिभयारिस्मारले ॥ वेलाक्यजाणें ॥ ६६ ॥ महदादिदेहानें
 ॥ इयें अशें धंहीसृते ॥ ये माझ्यादायीं बिंबने ॥ जें सज्जीफिया ॥ ६७ ॥ परितयाफेना भातपाहता ॥ नेवीजळनदिसें पडसुता ॥
 नातरांस्वप्नीची अनेकता ॥ चेईलया आदिजे ॥ ६८ ॥ तेसींभूतेंडयेसाझाटाई ॥ बिंबतीतथाभाजिमीनाही ॥ इथाउपपत्तीतुज
 पाही ॥ सांगीतलियाभागी ॥ ६९ ॥ ह्मणउनिवोर्ला लिखाबोल्या आतिसो ॥ नीकजयाजागीहें आसो ॥ परेमज आतेंपेसो ॥ दिदा
 तुझी ॥ ७० ॥ श्लो० नचमस्तथानिभूतानिपश्यसेचो जें मेरु ॥ भूतफुलचभूतस्थोममात्सा भूतभावनः ॥ ७१ ॥ टी० आमुचाप्रवृत्तीपेली
 कडोलभावो ॥ अशक्यनेवीणलागसीपाहो ॥ परिमगसाभिभूतेंद्रिहावो ॥ जेमीमपेक्षणउजि ॥ ७२ ॥ येद्वीसंकल्पा विथेसाजवेळो ॥
 नावेकतिमीरेजतीबुद्धीचेंदोल ॥ ह्मणोनअसंडितार्थापरिहसिद्धे ॥ छूतभित्तेयेदेंसे ॥ ७३ ॥ तेनिसंकल्पचोसांजेंलोपे ॥ तेंअखं
 डितनिअंहेस्वरूप ॥ जें सेंशकाजनवेंबोलीपे ॥ सापपणमाळेंचें ॥ ७४ ॥ येद्वीसंकल्पचोसांजेंलोपे ॥ कायघट्टेयागाडगेयाचे-
 नियतीकोभा ॥ परितेंकुल्लाढसतीचेगर्भ ॥ उमटेंदो ॥ ७५ ॥ नातरेंसागरेचेंपाणी ॥ कायतरसांनियाआहानीरवाणी ॥ तेंअवांतरकर
 णी ॥ बारयाचीनद्धे ॥ ७६ ॥ पाहंपाकापसाचाणटो ॥ कायप्रापसाचेंहीतपेदो ॥ तोवेदितयांनयादिथो ॥ कापडजाहला ॥ ७७ ॥ जरि
 सोनेलेणेंहोउनिघट्टे ॥ तरितयाचेंसोनेपणमोड ॥ येरअळकारदेवचिलीकंड ॥ येतयाचेनिभांदे ॥ ७८ ॥ मांगेपडिमाहाचीयस्करें ॥
 कांअरिसाजेंअबिस्करें ॥ तेंआपलेंवीसाचोकारें ॥ तेंथविहोतें ॥ ७९ ॥ तेसीइयेंनखेंमाडासस्वरुपी ॥ जोभूतभावनाआंगी ॥ त-
 यासींतयाचासंकल्पी ॥ भूताभासअसे ॥ ८० ॥ तेचिकल्पितोपुरे ॥ तभूताभासाआधीचसरे ॥ मगस्वरूपउरएकसरे ॥ निस्वळभा

स्ये ॥ ८० ॥ हे आगीं भरलिया भवंडी ॥ जेशा भोंवत दिसती अरडी दरडी ॥ तेंशी आपलिया कल्या अस्वडी ॥ मगतीं सृते ॥ ८१ ॥ तेंचि
 कल्याना सांडुनि पाहीं ॥ तरि मीं श्रुतीं श्रुतें माझिया ठायी ॥ हे स्वामी होपरि नाहीं ॥ कल्यावया जोगें ॥ ८२ ॥ आतां मीं नये कसूतें धर्ता ॥
 अथवा श्रुतां माजी मी असता ॥ यास कल्यास निपाता ॥ आंनु लिया बोलिया ॥ ८३ ॥ झुणे निपरिये सीं नां पियोत्तमा ॥ मीं विश्वं मीं विश्वा
 त्या ॥ जो इया लटकिया श्रुत ग्रामा ॥ भाव्य सदा ॥ ८४ ॥ रश्मिचे निआ थारें जेंसे ॥ नव्हे तो चि सुगजळ आपसासे ॥ माझा ठायीं श्रुत जातें
 सें ॥ आगि मातें हि भावी ॥ ८५ ॥ मी ये परीचा श्रुत भावसु ॥ परि सर्व सूनतां भुअ भिनु ॥ जें मी प्रभा आगि भानु ॥ एक निते ॥ ८६ ॥ हा
 आसुचारं स्वयंयोग ॥ तुवां देखि वटा कींचाग ॥ आतां सांगें कां हो एथलाग ॥ घृत भेदाचा असे ॥ ८७ ॥ यालागीं मज पासूनि श्रुतें ॥ अनेने
 वृतीं होनि सतें ॥ आगि श्रुतां वेगळिया मातें ॥ कहींच न मनीं दोग ॥ ८८ ॥ श्लो० यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्ववर्गो महान् ॥ तथासा
 र्वाणि श्रुतानि नमस्त्यानीत्युपधाया ॥ ८९ ॥ पेंगगन जे वटें जेंसे ॥ पवन हि गगनी ते वटाचि असे ॥ सहजें हाल बिडिया वेगळारिसे ॥ ये
 न वींगरा नें वितें ॥ ९० ॥ तेंसें श्रुत जात माझा ठायी ॥ कल्पिजे नगें आपासे कांहीं ॥ निर्विकल्पीं तरि नाहीं ॥ तें थमीं चिमी आघवें ॥ ९१ ॥
 हाण ऊनि नाहीं आगि असे ॥ हे कल्यानेचे नि सोरसें ॥ जे कल्यानालो संश्रयें ॥ आगि कल्याने संवे होये ॥ ९२ ॥ तेंचि कल्पितें सुदल जाये ॥
 तें असें नाहीं हे के आहे ॥ हाण ऊनि पुढतीं नृपाहे ॥ हा ऐश्वर्ययोग ॥ ९३ ॥ ऐसिया प्रतीति बोध सागरी ॥ तूं आपणें शतें कल्लोळ एक
 शें ॥ मग जं वपा हा सी चराचरी ॥ तव नृपि आद्दासी ॥ ९४ ॥ या जाणें याचांचे बो ॥ तुज आना हा जाणती देवो ॥ तरि आतां हे तस प्रवाचो ॥
 जालें कींना ॥ ९५ ॥ तरी पुढतीं जरी वणये ॥ बुद्धीसि कल्यानेचीं झोपये ॥ तरि अभेद बोध जाये ॥ जें स्वामी पंडिते ॥ ९६ ॥ हाणो नि ये नि देवा
 वांट मोडे ॥ निरि वळ उडो थांचेंचि आपणें पंधडे ॥ ऐसें वर्मजि आहे पुढें ॥ तें दावें आतां ॥ ९७ ॥ तरी धनु र्धा धैर्यो ॥ नि के अवधानें देवा
 धन जया ॥ पें सर्व श्रुतां नें माया ॥ करी हरी गा ॥ ९८ ॥ श्लो० सर्व श्रुतां नि कोनें यमदुर्हिं यांति मामा काम् ॥ कल्यास ये पुनस्तां नि कल्या दो विस्तृ

जाग्रहम् ॥७॥ दी० जियेनागणप्रकृती ॥ जेहि विधसांगीतलीनुग्रमती ॥ एका अष्टथासंदव्यक्ती ॥ दुजी जीवरूपा ॥ १८॥ हा प्रकृती
 विस्वो आद्यवा ॥ तुवांमाधापरिमिलासपाडवा ॥ ह्मणोनि असो काइसांगावा ॥ पुढतसुदती ॥ १९॥ तरीतिथेमासियेप्रकृती ॥ म
 हाकल्याचा अंतो ॥ सर्वभूते अव्यक्ती ॥ एव्यासियेतीता ॥ १०॥ गीथाचा अंतो रसी ॥ सर्वाजंतुं जेसी ॥ मागुतो म्हासी ॥
 मलीन होती ॥ ११॥ कावाषियेंदं फ्रिडा ॥ जंझाशारदीयाच अनघडफुटो ॥ तेह्माघनजात आटो ॥ गगनीचे गगनी ॥ २॥ गोनरी आ
 काशाचे रवोप ॥ बायुनिवांत चलोपे ॥ कोतरगाकार हारपे ॥ जळीं जेवो ॥ ३॥ अथवाजागी नलिये वेळ ॥ स्वप्नमनीचि मनोमा
 वळे ॥ ते संपाकृत प्रकृतीमिळ ॥ कल्पसयो ॥ ४॥ मग कल्यादिपुदती ॥ मीचि सुजो एसीवदती ॥ तरी इय विषयी निरुती ॥
 उपपत्ती आडक ॥ ५॥ स्तो० प्रकृतिस्वामि धिष्ठाया विस्तृजा मिपुनः पुनः ॥ भूतग्राममिमंकुलमवशमकृतवशात् ॥ ८॥ दी०
 ॥ तरीहेचि प्रकृती किरीटी ॥ मोस्वकीयासहजे अधिष्ठा ॥ नेथतत्समवायपदी ॥ जेवो विणावणो दसे ॥ ६॥ मगतिथे विणा वणी
 चे निआधारे ॥ लाहानाचो कडियापटवभर ॥ तेसीपचात्मके आकारे ॥ प्रकृतीनि होये ॥ ७॥ जे संपा विरजण्याचे निसंगे ॥ दया
 वि आटो जेलागे ॥ तेसी प्रकृती आगारिगे ॥ सृष्टीपणाचिया ॥ ८॥ वीजजळाची जवळी कलाह ॥ आणि ते विशाखोपशाखो
 होये ॥ ते संपा मजकरणे आह ॥ भूताचे ॥ ९॥ अगानगरदंगये कुले ॥ याद्वगणयासाचपणकोर आले ॥ परि निरुते पाहा
 तांकायसिमिले ॥ रायचे हात ॥ १०॥ आणि मी प्रकृती अधिष्ठित केसे ॥ जे सास्वर्गजो असे ॥ मग तो निप्रवेशो ॥ जागृताव
 स्ये ॥ ११॥ तरि स्वप्नो निजागृतीयेतो ॥ कायपायदुरवती पडसता ॥ कीं स्वप्नामाजि असतो ॥ प्रवास होये ॥ १२॥ या आद्य
 विद्याचा अभिप्रावाकाथि ॥ जेहे भूतसृष्टीचे काही ॥ मज एकही करणे नाही ॥ एसाचि अथो ॥ १३॥ जे सीराये अधिष्ठिली प्रजा

पाठ. ओ. १८ नावकां. ओ. ३ तरगता. ओ. ८ आळ. ओ. १० तरी.

व्यापारं आपुलालिकाजा ॥ तेषामप्रकृतानामगमाश्च ॥ यैरकरणं तं द्रव्यं ॥ १४ ॥ पादेषां पूर्णचंद्रा वियमं ॥ समुद्रां अपरपरभर-
नं दौरी ॥ तेषां च द्वाभिकायां कौरी ॥ उपस्वापद ॥ १५ ॥ अदपरजिविका ॥ लोहचक्रं तैरिचिका ॥ तत्रिक्वणसोपायामका ॥
सन्निधानाच्चा ॥ १६ ॥ किंवदुनायापरी ॥ मर्मनिजप्रकृतौ अंगिकारी ॥ आणिसुतसुधैरकसरी ॥ प्रसवोचिलागे ॥ १७ ॥ जोहासू-
तग्राम आश्रवा ॥ असंप्रकृता अधिनपाडवा ॥ जैमोर्विज्ञानिचिवावेत्तल्लवा ॥ समथभूमि ॥ १८ ॥ नातरीवाळादिकावयसा ॥
गोसावीरं हसगजसा ॥ अथवाग्रनायवी आकाशा ॥ वीरियं मेरी ॥ १९ ॥ कामुसामीकारणान्द्रा ॥ तैसीप्रकृतान्द्रनंदा ॥ याअ-
शेषादिभूतसमुद्रा ॥ गोसाविणीवा ॥ २० ॥ ग्यादरा जोगितगसा ॥ स्यूका अयथासुदमा ॥ हे अगोसुतग्रामा ॥ प्रकृतीचिमुच्छ ॥
॥ २१ ॥ स्मृणोनिभूतं हनसूजावी ॥ कामुमिन्निमिपाळावी ॥ इयं कर्णो नयेत आश्री ॥ आमचिया आशा ॥ २२ ॥ जळींचिद्रिके-
वियापसरतीवली ॥ तैवाटीचंद्रनाद्रोक्तो ॥ तैवाकान्तं पायां निदन्ती ॥ दरीवमे ॥ २३ ॥ म्यो न चमोतानिकमणिनिवधतिथन-
जय ॥ उदासीनवदामीनामसक्तं तंप्रकमस ॥ २४ ॥ दी ॥ आणिसुदलियायें धुजयाच्यान्द्रा ॥ नशेकेश्रुसंयवाचाधाट ॥ तैवि-
सकळकसामीचेशीवट ॥ तं कायवाधतीमाते ॥ २५ ॥ धृमराजार्चार्चिपनरी ॥ वाजतियावायून नरी द्रोकारि ॥ कामूर्यवबासा-
री ॥ आधारं शिरि ॥ २६ ॥ हे अमोपवर्तार्चयेत्तयं चि ॥ तैवापमन्यधारकनवनसोचि ॥ तैवाकर्माता तप्रकृतेचि ॥ नलगमज ॥
२७ ॥ येन्दवां द्रयेमकृतीविकारी ॥ एकर्मिचि असे अवधारी ॥ परितुदारी नान्यापरि ॥ करीनाकरणी ॥ २८ ॥ जैसादीपेर्विला-
परिवरी ॥ कवणान्तं नियमीनानिदारी ॥ आणिकवणवर्णियेच्यापरी ॥ राद्रोतं नं द्विनेण ॥ २९ ॥ तौ जैसाकासाक्षिभूतु ॥ गृह-
व्यापारमवर्तिहेतु ॥ तैसाभूतकर्म अनारक्त ॥ मोमृती प्रसे ॥ ३० ॥ द्वाएकान अभिप्रायां पुनपुनती ॥ कायसागोवह-
पाठ आ. १६ चाले चानो ओ. ३० वीरिय ओ. २७ वादविन्द ओ. २५ द्रोकारि जे.

तांउपपत्तीं॥ यथागृहं द्यास्मभद्रापत्तीं॥ येनृतेजोपात्तीं॥ ३७॥ अन्यो न साध्यो यो यो न हविः स्रव्यं न मनो न रात्रि रसु ॥ हेतुना नैव कौते
 यजगद्विपरिवर्तते ॥ १०॥ टी० जेन्नायन्तरासमन्ता ॥ तेषां निमित्तं सत्तत्त्वानि जन्ता ॥ तेषां तत्त्वानि स्रव्यं न मनो न रात्रि रसु ॥ हेतुना नैव
 मो ॥ ३१॥ कांजमियो अधिष्ठित्यामरुती ॥ दोती चराचरा चिदासं धृती ॥ द्योता विमोदतु ॥ ३२॥ उपपत्ती ॥ वडयया ॥ ३२॥ आता
 येणंउजियेडो निरुते ॥ त्याहाळीया एअवया पात्ती ॥ जेगा आवाडो वणे ॥ एगे पुरो मीनम ॥ ३३॥ अयवा भूतमासा नार्या ॥ आ
 णिभूतं माजिमी नार्ही ॥ याखुणात्तं कही ॥ ३४॥ दोसवल्पा जन्तु न पुरा ॥ यो रीति यो न जउड ॥ आतां इदियां
 देउं निरुवाड ॥ हटयों फोगी ॥ ३५॥ हाटयों मीनं न हाना ॥ ने विसादयानि सा मया मरुत ॥ जमपड ॥ राखया ॥ जवीतुषी कण
 ॥ ३६॥ येहवी अनुमानाचे निषम ॥ आय डेकार कळटो मी ॥ यनि कय कय विगो ॥ कान ॥ मीन मय गीति वे ॥ ३७॥ जे जाळज
 चीं पांगिळे ॥ तयचंद्र विवदिसे आ ॥ तु इन्ने ॥ परि थई ये फाटुं नट्या ॥ ३८॥ तय द्या विरय कानो ॥ ३९॥ तय स्याल्म्वरि वाचा वळे ॥
 वांया चिद्वक् वितीमती चंडो ॥ मगसात्वा कंदो आवे ॥ ४०॥ अविन होइ ॥ ४१॥ अविन नितिमा सदा मानुषी तनुमा
 श्रितम् ॥ परमावमानतो मगभूत गहं स्वरन ॥ ४२॥ टी० किंयहजा भरा विहाया ॥ साणिमांचे नाड आथिजरीभियां ॥ तरि
 तूंगाउपपत्तीडया ॥ जतन विज ॥ ४३॥ दहरो गिदीये धटो मयळे ॥ वासिगिवात धर्गा विवडे ॥ तविमा सास्वर्पनिर्मळे ॥ दे
 खती दोष ॥ ४४॥ नातरि ज्वरं विवाळ मुरव ॥ तदयो ते क्षया रुडि विरव ॥ तय विमानु कानुष ॥ मानितीमाते ॥ ४५॥ क्षणं डीने
 पुढत पुढती धनजया ॥ झनो विसवरीया अतिमाया ॥ जे विदां स्फुट द्योताया ॥ जोड तेलगा ॥ ४६॥ पंस्थुळ हरी देखतीमा
 ते ॥ तेचिने देखणं जाण निरुते ॥ जे सस्वनीचिनि अभूते ॥ ४७॥ येहवी स्फुट हटि भुट ॥ मानं जाणती कार हट

परिंजणणेंचिजाणणेंयाआड॥ रिगोनिवाळे॥ ४५॥ जैमानसत्राचियाआमासा॥ सावीधातजाहालातयाहसा॥ माजिरतकुंदा
 चियाआशा॥ रिगोनिवां॥ ४६॥ सांगेंगंगायाबुद्धिसृगजळ॥ दांकोनिआळियाचेंकवणफळ॥ कांसरततुह्मणोनिबाबुळ॥ सेवि
 लीकरी॥ ४७॥ हारनिळयाचाचिदुसरा॥ याबुद्धीहातधातलविस्वारा॥ कारलेंह्मणोनिगारा॥ वेचिजे॥ ४८॥ अथवानि
 धानहेंप्रगतलें॥ ह्मणोनिरवदिसागारखोळेश्रिट्टे॥ कांसाउलीनेगतांघातले॥ कुहामीहें॥ ४९॥ तेंविंमीह्मणोनिप्रपूर्वी॥
 मिहीबुडीतीधलीकृतनिश्चयाची॥ निहीचंदासावीजेविजळीची॥ प्रभाधरिनी॥ ५०॥ तैसाकृतनिश्चयवायोगेला॥ जैसा-
 कोणहीएककाजीप्याला॥ मगपरिणामपाहोलागला॥ असुनाचा॥ ५१॥ तैसीस्यूळाकारिंनशिंवतें॥ भरवसाबाधोनिचि
 तें॥ जवपाहतीमजअविनाशांतें॥ तरीकेंचादिसे॥ ५२॥ अगाकाईपश्चिमसुदाचियातदा॥ निगिजेतआहेपुर्विलीयाबा
 रा॥ कांकांडाकांडितासुभटा॥ कणजोडे॥ ५३॥ तैसेविकारलेंहेंस्यूळ॥ जाणितलेंयामीजाणवतसेकेंवळ॥ कायफेणपीतां
 जळ॥ सेविलेंहोये॥ ५४॥ ह्मणोनिमोहिलेनिमनोधर्में॥ हेंचिमीमानूनिसंभ्रमें॥ मगयेथिचिजेंजियेजन्मरुमें॥ नितेंमजचि
 ह्मणती॥ ५५॥ येतुलेनिअनामानाम॥ मजअक्रियाभिकर्म॥ विदेहासीदेहधर्म॥ आरोपिती॥ ५६॥ मजआकाशशून्याआ
 कार॥ निरूपाधिकाउपचार॥ मजविधिबजितव्यवहारा॥ आचारादिक॥ ५७॥ मजवर्णहीनावर्ण॥ गुणातीतामिगुण॥ मज
 अचरणचरण॥ अपाणियापाणी॥ ५८॥ मजअममैयामान॥ सर्वगतासीस्थान॥ जेंसेंमैजमाजीवन॥ निदोलादेवे॥ ५९॥
 तैसेंअथवणाओवा॥ मजअचक्षुसीनेत्र॥ अगोत्रागोत्र॥ अरूपारूप॥ ६०॥ मजअव्यक्तासीवक्ता॥ अनार्तामिआर्ता॥ स्व
 यंतुसातुसी॥ प्रावितीगा॥ ६१॥ मजअनावर्णांभावर्ण॥ भूषणातीतामिभूषण॥ मजसककारणाकारण॥ देवतीने॥ ६२॥
 पाठः ओ० ४८ हांनिळयाचा॥ ५

मजसहजातैः करिती ॥ स्वयंभानेर्मातिष्ठिता ॥ निरंतरांतं आह्वानित्ता ॥ विमर्जितगा ॥ ६३ ॥ मोसर्वदांसतः सिद्ध ॥ तोकां बा-
 बनरुणवृद्ध ॥ मजएकरूपासंवंध ॥ जाणतीएसं ॥ ६४ ॥ मज अहेतासिदुजे ॥ मज अकतेयासिकाजे ॥ मीअसोत्ताकीसुजे ॥
 ऐसं स्पणती ॥ ६५ ॥ मज अहुवाचं कुळवाणिते ॥ मज नित्याचे निधने शिणती ॥ मज सरावोनारांतं कल्पितो ॥ अरि मित्रगा ॥ ६६ ॥ मी-
 स्तानदाभिरामा ॥ तथा मज अनेक सरसकेचा काम ॥ आद्यवाचिमा अरेंसम ॥ कीअणतो एकेदेशी ॥ ६७ ॥ मी आद्याएकचरांचरी ॥
 स्पणती एकाचो कपस करी ॥ आणिकाणे निणकातं मारी ॥ ले चिह्णदावनी ॥ ६८ ॥ किबहुना एससमस्त ॥ जेहं मानुषधमं यकृत ॥
 तथा चिनाममी एसं विपरीत ॥ ज्ञानतयांचं ॥ ६९ ॥ जेव आकार एकपुटा दुखनी ॥ तेव हा देवपणं भावं भजनी ॥ मगतो चि विघड-
 लियादाकिती ॥ नाही ह्मणोनि ॥ ७० ॥ मातं येणं येणं न करी ॥ जाणतो मनुष्य ऐसं नि आकारे ॥ क्षण ऊभितानचि ते आधारें ॥ सोना
 सि करी ॥ ७१ ॥ श्लो० मोयाशा मोघ कर्मणो मोघ दानां विचेतसः ॥ राक्षसीमारुतं चैव न ह्मतिं मोहिनीं श्रिता ॥ ७२ ॥ टी० या-
 लागी जन्मले ते मोघ ॥ जेसे वारि ये दीणं मघ ॥ कामुगजकचे तरंग ॥ दुहर्ता विपाहोव ॥ ७३ ॥ अथवा कान्हेरीचं अमि वार ॥ नातरी
 वोंडबरीचं अंकार ॥ किंगंधवं नगरांचि आवार ॥ आभासतीका ॥ ७४ ॥ साबरी वार्ता दत्तल्यासगळा ॥ वरीफळनाही आनपां कळा
 ॥ कास्तनजाले गळा ॥ शोडयेतंसे ॥ ७५ ॥ तेंसं सुखचिंतयाजियाने ॥ आगिदिगि कमनयांचि नफजले ॥ जेसें सां वरीफळ आले
 ॥ घेयेनादिजे ॥ ७६ ॥ मगजं काहीनं पहिले ॥ तेमकटेनारकतो दिने ॥ मोतीं जेसे ॥ ७७ ॥ किबहुना तयाची शाले ॥ जेसी कुमारी
 हाती दीधली शाले ॥ का अशोच्यामंत्र ॥ धीजं कुथिली ॥ ७८ ॥ तेंसं ज्ञान जातया ॥ आगि जे काही आचरलं गाधन जया ॥ ते
 आद्य वेचि गेले बाया ॥ जे विनहीन ॥ ७९ ॥ पैतं मागुणाची राक्षसी ॥ जसुवुद्धी नं यासी ॥ विवेकान्नाटाव विपुसी ॥ निशाचरी जे ॥ ८० ॥

पाठः ओ० ६८ वादविनी

निधेप्रकृतिवपरपुडेजले ॥ ह्मणऊनिर्निवृत्तेचेनिकपणलेगेले ॥ वरिनामसीयेचियेपडिले ॥ मुरवामाझी ॥ ८० ॥ जेथआशोवियेलाको॥अ
 तहिंसाजीमलोळे ॥ तेवीचिअसंतोषाचेकवळे ॥ अरवडचवडी ॥ ८१ ॥ जेअनयचिकानेवरी ॥ आरबुबेचाटीतनिघेबाहरी ॥
 जेप्रमदापरवर्तीचिदरी ॥ मदाचीमानली ॥ ८२ ॥ जेथदूषाचियादादा ॥ खसरवसाज्ञानाचाकृतिरगडा ॥ जेअगस्तीगवसणीमूढा
 स्थळदृष्टा ॥ ८३ ॥ ऐसेआसुरियेप्रकृतीचंतोडी ॥ जेजालेगाशुतेंडो ॥ तेबुडोनिगलेकुंडो ॥ व्यामोहाच्या ॥ ८४ ॥ एवनामवियेप
 डिलेगते ॥ नपरिजतीचिविचाराचेनिहाते ॥ हेअसोतेगलेजेथे ॥ तेग्रहीचिनाही ॥ ८५ ॥ ह्मणोनिअसोतुइयेवायाणी ॥ काय
 मीमूर्खाचीबोलणी ॥ बांयावाढवितावाणी ॥ शिणोल्हून ॥ ८६ ॥ ऐसेबोलिलेदेवे ॥ तेथजीजीह्मणीतलेपाडवे ॥ आइकजेथ
 वाचाविमवे ॥ तेमाशुकथा ॥ ८७ ॥ म्हणे० महात्मानस्तुमांणार्थदेवीप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजतेःनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्य
 यम् ॥ १३ ॥ टी० तरीजयाचेचोखदेभानसी ॥ मीहोऊनिअसेंक्षेत्रसन्ध्यासी ॥ जयानिजेन्यातेंउपासी ॥ वैराग्यगा ॥ ८८ ॥ ज
 यचियाआस्थेचियासद्वावा ॥ आतधर्मकरीराणिवा ॥ जयाचेंमनओल्हावा ॥ विवेकासी ॥ ८९ ॥ जेज्ञानगंगेनाहोले ॥ पूर्णता
 जेऊनिथाले ॥ जेशांतोसिझाले ॥ पल्लवनवे ॥ ९० ॥ जेपरिणामानियालेकैप्र ॥ जेथेयमंडपाचेस्तंभ ॥ जेआनदसमुद्रोकुंभ ॥
 चुबुकुळोनिभरिले ॥ ९१ ॥ जयाचियेप्रकृतीचीयेतुलीपामी ॥ जेकेंबन्यातेंपरतेंसरह्मणनी ॥ जयाचियेलिळेमाजिनीती ॥ जि
 यासीरिसे ॥ ९२ ॥ जेआघवांचाकरणो ॥ लेइलेशातीचिलेणी ॥ जयाचेंचिन्नगवसणी ॥ व्यापकामज ॥ ९३ ॥ ऐसेजेमहाजुभाव
 ॥ दोवियेप्रकृतीचेदेव ॥ जेजणांनियासर्व ॥ स्वरूपमाझे ॥ ९४ ॥ मगवाढतेनिअमें ॥ मातेमजतीजेमहात्मे ॥ परिदुजपणमनो
 धर्मे ॥ शिवतलेनाही ॥ ९५ ॥ ऐसेमीचहोऊनिपाडवा ॥ करतीमाझीमेवा ॥ परिनवलावतोसांगावा ॥ असेआइका ॥ ९६ ॥ म्हो
 ॥ प्रमत्तकीर्तयेतोमायतंतश्चहृदव्रताः ॥ नमस्यतश्चमाभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ टी० तरीकीर्तनाचेनिनटनाचे ॥

नाशिले व्यवसायमायि अन्ताने ॥ जेनामचिनाहोपापचि ॥ ऐमेकले ॥ १७ ॥ यमदाप्रवकळाअणिनी ॥ नीयेदायावरुनिउठ-
 विनी ॥ यमलोकिनीगोदली ॥ राहाटीआमची ॥ १८ ॥ यमदागोकाययमाचि ॥ दमदगोकवणानंदमुव ॥ तीर्थद्वगतीकायबबो-
 ॥ दोषऔषधासिनाहो ॥ १९ ॥ ऐसमाझेनिनामधोपा ॥ नाहोचिकिर्तिविश्वाचीदुःख ॥ अवयेजगचिमहास्वर ॥ दुमदुमीतसर-
 ने ॥ २० ॥ तेपाहोदेवाणयाहाविन ॥ अमृतवीणजीवविन ॥ योगेवीणदाविन ॥ कवन्यडोळा ॥ २१ ॥ परियायकापाडुधरु ॥
 नेणतीमानेयाथोराकडुसणीकरु ॥ एवसरआनदान्च आवरु ॥ दोतजगा ॥ २२ ॥ दहोकाथनिवेकृदाजाव ॥ तेनिहोकिटवी
 केलेआघवो ॥ ऐसनामधोपगोरव ॥ धवळविश्व ॥ २३ ॥ तेजमुयतससाज्ज ॥ परितीहोअस्तवेहकिडाळ ॥ चंद्रसंपूणगरवा-
 देवेळ ॥ हेमदापुर्ते ॥ २४ ॥ मेघदुदारपरिवार ॥ दण्डनिउपसमिनपुर ॥ होकिशकपणसपारवर ॥ पंचानन ॥ २५ ॥ जयाचवाचे
 पुढाभोज ॥ अगवदनामनाचतअसमाझो ॥ जजन्मसहस्रावाळगीजो ॥ एकवेळयावया ॥ २६ ॥ नामीवेकठानसे ॥ वेळगकभानुबिबोहो
 नदिसे ॥ वरीयागयाचोहोमानसे ॥ उमरडानिजाये ॥ २७ ॥ परानयापासीपाडवा ॥ मोहारपन्नागिवसावा ॥ जयनामधोपवरवा ॥
 करितीमाझा ॥ २८ ॥ कैसेमाझागुणीथले ॥ देशकाळातेविसरुल ॥ काननसुरवेसरसावेले ॥ आपणपाचि ॥ २९ ॥ कृष्णाविष्णुद्वरेगो
 विंद ॥ यानामाचेनिशिवळप्रवध ॥ माजोआत्मचर्चाविशद ॥ उदुडगती ॥ ३० ॥ हेवहुअसोचापरी ॥ कीर्तिनामातेअवधारो ॥ ग-
 कविचारितीचराचरो ॥ पांडुकुमरा ॥ ३१ ॥ मगआणिकतेअजुना ॥ साविशवहुवाजनना ॥ पंचमाणभना ॥ पादाउयउनी ॥ ३२ ॥
 बाहेरीयमनियमाचाकाटीलाविली ॥ आतवज्जासनाचीपांढापन्नामिलो ॥ वरोप्राणायामाचीसोडिली ॥ बाहानायचे ॥ ३३ ॥ ते
 अउल्लाटशक्तीचेनिउजवडे ॥ मनपवनाचेनिमुखांडे ॥ सतराविंचेपाणिप्याडे ॥ बळाविले ॥ ३४ ॥ तेह्मपन्याहारख्यातीकेला ॥

विकारांची संपत्ती बांहरिती॥ इंदियें बांधोनि आणिली॥ तदया आन॥ १५॥ तंव धारणावरू दादिनले॥ महाभूतांतें एकवटिलें॥ मगेंच
 तुरंगें सैन्य निवटिलें॥ संकल्याचें॥ १६॥ तया वरी जें तें जें तें॥ क्षणोनि ध्यानाचें निशाण वाजत॥ दिसे तन्मयाचें चंद्राळकृत॥ एकछत्र॥
 १७॥ पाठीसमाधी श्रियेचा अशेषा॥ आत्मासुभवराज्य सरवा॥ पदृभिषेक देखा॥ समर सें जहाला॥ १८॥ ऐसे हें गहन॥ अर्जुनामाझे
 भजन॥ आतों ऐकें सांगेन॥ जे करिती एक॥ १९॥ तरी दोल्हीणलवरी॥ जें सा एक तें तूं अंबरी॥ तें सामी वाचूनि चराचरी॥ आणती
 ना॥ २०॥ आदि ब्रह्मा करूनि॥ शीवटीमशक धरूनि॥ माजो समस्तें द्वजोनि॥ सरूपमाझे॥ २१॥ मग बडथाकुटन स्मृणती॥ सजीव
 निर्जिविनेणती॥ देखिले येवस्तु उजूलती॥ मीचि स्मृणोनि॥ २२॥ आपलें उत्तम त्वनातवे॥ पुढील योग्या योग्येनेणवें॥ एकरुसरे व्य
 क्तीमात्राचें निनावें॥ नमुवि आवडे॥ २३॥ जें सें उचीउदक पडिले॥ तें तलवटवरी येउलागलें॥ तें सें नमिजे भूत जात देखिले॥ ऐसा-
 स्वभा वचि तयाचा॥ २४॥ काफळ लयात रूचे शारवा॥ सहजें क्षुर्मासीं उतरे देखा॥ तें सें जीवमात्रा अशेषा॥ खोलावनीने॥ २५॥ अस्व
 द अगर्वता होऊनि असती॥ तयाचि विनय हें चिसपती॥ जेजय जय मंत्रें अर्पिती॥ माझा ठायी॥ २६॥ नमितामाना पमान गबाले॥
 क्षणोनि अवचितार्मी चज हाले॥ ऐसे निरतर भिभळले॥ उपमिता॥ २७॥ अर्जुना हे गुरु विभक्ती॥ सांगीतली तूज प्रती॥ आतों ज्ञा-
 नय जें यजिती॥ तें भक्त आड कें॥ २८॥ परिभजन करिती हात वटी॥ तं जाणत आहा सि करिती॥ जेसागां इथागोष्टी॥ केलिया आ-
 द्ही॥ २९॥ तंव आदिजी अर्जुन द्रव्यो॥ हें द्रव्य किशमसादांचें करणें॥ तरिकाय अमुताचें आरोगणें॥ पुरें स्मृणवेलें॥ ३०॥ याबोल्या श्री
 अनने॥ लागू दे रवो नितयातें॥ कीं स्मखावले निचितें॥ डोलत असे॥ ३१॥ क्षणें भले केलें पाथी॥ येतू वीहा अनवसर सर्वथा॥ प
 रिबोलवितसे आस्था॥ तुझी मातें॥ ३२॥ तंव अर्जुन क्षणें हें कायी॥ चकोरें वीणाचा दिणें चिनाही॥ जगाचि निवविजे हातयाचा ठायीं
 पाठः ओ० १५ ब्रीहिलें॥ ओ० १९ सांगो आनः ओ० २३ नमनवें॥ ओ० ३० अमुना चिया, काडें पुरें स्मृणवें॥ ओ० ३१ लागवाः

स्वभावोकींजी ॥ ३३ ॥ येनेच कोरेतिये आपुलियेचंडा ॥ चानूकरितेचंद्राकडे ॥ तेंवी आझीविन उंतेथोकडे ॥ देवोदुपासिंधु ॥ ३४ ॥ जीमेप
 आपुलियेमोदी ॥ जगाचा आर्तदवडी ॥ वाचूनिचातकाचीताहानकेवदी ॥ तोवधावपाहुनी ॥ ३५ ॥ परितुळाएकाचियाचाडे ॥ जेविणेंजे
 चितो कणपडे ॥ तेवि आर्तवहकाथोंड ॥ तरिकांसांगवेदेव ॥ ३६ ॥ तेथेदेवेंद्वानितेंलेरोहें ॥ जोसंतोष आह्माजाहाला आहे ॥ तथावरी
 स्मृतीसाहे ॥ ऐसं उरलेनाही ॥ ३७ ॥ पेंपमिमतुं आह्मासिर्निकयापरी ॥ तेंचिचकुत्तावन्हाडीककरी ॥ ऐसेपुरस्कोनिझीहरी ॥ आद
 रितेंबोली ॥ ३८ ॥ स्त्री ० ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्यय जेंतोसामुपासते ॥ एकत्वेनपृथक्तेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ दी ० तरिज्ञानय-
 ज्ञतोएवरूप ॥ जेथ आदिसकल्पहावृप ॥ महाभूतंमंडप ॥ भद्रतापश ॥ ३९ ॥ मगपांचाचेजोवशेषगुण ॥ अथवाइंदियेआणिआ
 ण ॥ हेचियज्ञोपचारभरण ॥ अज्ञानद्युत ॥ ४० ॥ तेथमनबुद्धीचियाकुडा ॥ आतज्ञानागनीध्रकुडा ॥ साप्यतेचिस्फुटा ॥ बेदि-
 काजाणें ॥ ४१ ॥ सविंक्रमनीपाटव ॥ तेंचिमंत्रविद्यांगारव ॥ शांतिंसंपत्तीस्तुक्स्तुव ॥ जीवयत्ना ॥ ४२ ॥ तोपनीतीचेनिपात्रें ॥ वि-
 वेकमहाभंत्रें ॥ शानाग्निहोत्रें ॥ भद्रनाशी ॥ ४३ ॥ तेथअज्ञानसरोनिजाये ॥ आणियजितांयजनहंगये ॥ आत्मसमरसींन्हाये ॥ अ-
 वभृतीजेव्हा ॥ ४४ ॥ तेव्हाभूतेंविषयकरणें ॥ हेंवंगळालेंकांहींनक्षणें ॥ आयवंगकविऐसंजाणें ॥ आत्मबुद्धी ॥ ४५ ॥ जेसाचेइला
 तोअजुना ॥ क्षणस्वमीचीहोविश्वसेना ॥ मीचिजाहालाहोतोंना ॥ निद्रावशें ॥ ४६ ॥ आतांसेनातेसंनानव्हे ॥ हंमीचआयवे ॥ ऐ-
 सेंएकत्वेमानावे ॥ विश्वतया ॥ ४७ ॥ मगतोजीवंहभावसरे ॥ आब्रह्मपरमात्मबोधेंभरे ॥ ऐसेभजतीज्ञानाध्वरें ॥ एकत्वेणें ॥ ४८
 अथवाअनादिहंअनेक ॥ जेंआनसारिस्वएकाएक ॥ आणिनामरूपादि ॥ तेंहोविषम ॥ ४९ ॥ क्षणोनिविश्वभिन्नभिन्न ॥ परि-
 नमंदेतयाचेज्ञान ॥ जेसंअवयवतरांआनआन ॥ परिऐकेचिदेहीच ॥ ५० ॥ काशाखासांनियाथोरा ॥ परिआह्मातिएकाचियेतस
 पाव ॥ ओ ३६ टांकावें ॥ ओ ३९ तेथ ॥ ओ ४३ जो ॥

वरा॥ बहुरशमीपरीदिनकरा॥ एकचैजैवं॥ ५१॥ तैविनानाविधव्यक्ती॥ आनानेनावेआनानावृत्ति॥ ऐसेजाणतीसेदलासुतां
 अभेदामाते॥ ५२॥ येणेंवंगळालेपणेंपांडवा॥ करितीज्ञानयज्ञवरवा॥ जनभेदतीजाणिवां॥ जाणतेद्वगउनी॥ ५३॥ नातरीजिंधा
 वांजियवायी॥ देसजीकांजैकेकाही॥ तैमीवांचूनिनाही॥ ऐसाविबोधा॥ ५४॥ पाहपाहुडुडुडाजेउताजाये॥ तेउतेजळतयाएकआ
 हे॥ मगविरेअथवाह॥ तद्दोनळाचिमाजी॥ ५५॥ कापवनेपरमाणुउचलले॥ तपृथ्वीपणावेगळेनाहीगेलें॥ आणिमाझीने
 जरीपडले॥ तरीपृथ्वीचिवरुते॥ ५६॥ तैसेंफलतेथभलतेणेंभावं॥ फलतेंहीहोअश्वबानोहावं॥ परितेमीऐसेंआघवं॥ होऊ
 निवेलें॥ ५७॥ अगाहेंजंददामाझीव्यानी॥ तेवुदीचितयाचीयतीनी॥ तैसेबहुधाकारेंवर्तनी॥ मीविहोउनी॥ ५८॥ हंभानुवि
 बआवडेनया॥ संसुखजैमैधनजया॥ तैसामोविश्वाइया॥ समोरसदी॥ ५९॥ अगातयांचियाज्ञाना॥ पावीपोटनाहीअर्जुना॥
 वायुजसागना॥ सर्वाणीअसें॥ ६०॥ तैसामेजिनुनाआघवा॥ तेंवितुकेतयाचियासदावा॥ तरेनकरितांपांडवा॥ सजनजाहा-
 लें॥ ६१॥ येह्वंतरीसकळमीचिआहे॥ तरीकवणेंकिंउपासिनाहोहे॥ एथएकजाणगेवीणवाये॥ अमासासी॥ ६२॥ परितेअसोये
 णोउचिते॥ ज्ञानयज्ञेयजितसांते॥ उपासिनीमाते॥ तैसांगितलें॥ ६३॥ अखंडसकळदेसकळासुखी॥ सहजअपितेअसेंमजए
 कीं॥ कींनेणेंयासादीसुखी॥ नपविजेचिमाते॥ ६४॥ श्लो० अहंकरहंभज॥ स्वधाहमहंमोपधम॥ मजोहमहंमेवाज्यमहम
 ग्निरहहुतम॥ १६॥ टी० तौचिजाणिवंचाजरीउदयहोये॥ तरीमुदलवेदमीचिआहे॥ आणितौविधानतेजयाविचे॥ तौकतहीमीचि
 ॥ ६५॥ मगतयाकृपापासुनिबरवा॥ जोसांगोपांगआघवा॥ यज्ञप्रगटेपांडवा॥ तौहीमीगा॥ ६६॥ स्वादामीस्वधा॥ सोमादिऔष-
 धीविबिधा॥ आज्यमीसमिधा॥ मंचमीद्वर्वा॥ ६७॥ हातामीहवनकीजे॥ तेथअग्नीतोस्वरूपमाझे॥ आणिहुतवस्तुजेजे॥ तैही-
 पाठ० ओ० ५८ बहुचि० ओ० ५९ तैसेने०

भीवि ॥ ६८ ॥ श्लो० पिताहमस्य जगतीमाताधातापितामहः ॥ वेद्यपवित्रमोक्षकारकः सामर्थ्यजुरेव च ॥ १७ ॥ टी० पंजयाचेनि अंगं स्मरं
 ॥ इयेमकृतीस्तव अष्टांगे ॥ जन्मपादितजन्त असे जंगे ॥ तोपितामहा ॥ ६९ ॥ अर्थनारान्ते स्वरी ॥ तोपुरुषवतोचिनारी ॥ तं विभीचराचरी
 माताही होये ॥ ७० ॥ आणि जाहाले जग जगती ॥ जेणे जीवित वाटत आहो ॥ तं भावाचूनि नोहे ॥ आननिरुते ॥ ७१ ॥ इयेमकृतिपुरुष
 होन्ही ॥ उपजली जयाचिया अमनमनी ॥ तोपितामह विभुवनी ॥ विस्वाचामी ॥ ७२ ॥ आणि आयं वया जाणयेयाचिया वाटा ॥ जया-
 गावायेतीगासू भटा ॥ वेदांचियांना ददा ॥ वेद्यहसि जे ॥ ७३ ॥ जयनामानां तुझावणी आली ॥ एकमेकां शास्त्राची अनोळखी फिटली
 ॥ चुकली जेने जेथ मिळो आली ॥ जपवित्र स्मरिने ॥ ७४ ॥ पद्मसुखी जा जाहाला अकर ॥ द्योपध्वनी नादाकार ॥ तयाचें सुवन जो आकार ॥
 तोही मीगा ॥ ७५ ॥ जया ओंकारा विंये कुशा ॥ अहं रं होनी अउमकार मी ॥ ७६ ॥ इये उपजत वेदं मी ॥ उठली ती न्ही ॥ ७७ ॥ द्युणो विभुरयजुः सा
 म ॥ हंती न्ही द्युणो मी आत्माराम ॥ एवं मी विकलकम ॥ शब्दमहाची ॥ ७८ ॥ श्लो० गति भर्तामिभुः साक्षी निवासः शरणं सद्गुरु ॥ प्र-
 भवः प्रलयस्थाननिधानबीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ टी० हंचराचर आद्यवे ॥ जयं प्रकृती आतसां ववे ॥ तेशिणली जयविसवे ॥ तपरम
 गती मी ॥ ७९ ॥ आणि जयाचे निमकृती जिये ॥ जेणे अधिष्ठली विश्वविये ॥ जोये उनिमकृती इये ॥ गुणाते मोगी ॥ ८० ॥ क्षपक ओषी-
 ॥ जालियं मकृति दर्शे ॥ कर्ता कारयिता रूप असे ॥ परी विश्वाभिलाष समरसे ॥ अन्तिम पणे ॥ ८१ ॥ तो विश्व श्रियेचा भर्ता ॥ श्रीविगा-
 ल्यपंडु स्मृता ॥ भोगो साधिसमस्तो ॥ त्रैलोक्याचा ॥ ८२ ॥ आकाशें सवत्रवसांवे ॥ वायूने नावभरी उगेन सांवे ॥ पावकें दाहांवे ॥ वर्षी
 वें जळें ॥ ८३ ॥ पर्वती बें सकानस डावी ॥ समुद्रां रेखांनी लांडावी ॥ पृथ्वीया मृतवाहावी ॥ हे आज्ञा माझी ॥ ८४ ॥ म्याबोलविल्या वेद बो-
 ले ॥ म्यांचालविल्या सूर्याचाले ॥ म्याहालविल्या मागहाले ॥ जो जगाने चाकित ॥ ८५ ॥ मियांचि निया भिन्नासांना ॥ काळ घ्यामि तसे पृ-

तां॥ इयं ह्यणिग्यानेयां दुस्त॥ सकलं जयाचीं॥ ८४॥ जो ऐसा मयथ॥ तो मी जगचा नाथ॥ आणि गगना ऐसा साक्षिभूत॥ तो ही-
 मोची॥ ८५॥ इहीना मरूपी आधवा॥ जो भरला असे पांडवा॥ आणिना मरूपाचा वोल्लावा॥ आपण विजो॥ ८६॥ जेसे जळाचे
 कल्लोळ॥ आणि कल्लोळीं आथी जळ॥ ऐसे निवसवीत से सकळ॥ तो निवास मो॥ ८७॥ जो मज होय अनन्यशरणा॥ त्याचे निवागे मी
 जन्यमरणा॥ या लागी शरणागता शरण्या॥ मोचि एक॥ ८८॥ मोचि एक अने कपणें॥ वेगळाले निप्रहृति गुणें॥ जो जगचे निज
 णें॥ वर्तत असें॥ ८९॥ जेसा समुद्रा थिहूर न ह्मणता॥ अलत थबिबे सविता॥ तेसा ब्रह्मादिस वाभूता॥ स्फुटत मो॥ ९०॥ मी
 चिगा पांडवा॥ या निभ्रवना मि वोल्लावा॥ स्फुटि सय भ्रवा॥ मूळ ते मो॥ ९१॥ बीजशारवात सवे॥ मगत रूख पण बीजो समा
 वे॥ ते से संकल्पे होय आधवे॥ पाठी संकल्पी भिच्छे॥ ९२॥ ऐसे जगचे बीज जो संकल्प॥ अव्यक्त वासना रूप॥ त्या कल्याती जेथ नि-
 क्षेपा॥ होय ते स्थान मो॥ ९३॥ इयेना मरूप लोदती॥ वर्णव्यक्ती आदती॥ ज्ञानी चिसे दफिदती॥ जें आकार नाही॥ ९४॥ ते संकल्प वा
 सना मस्कार॥ माथो ते रचावया आकार॥ जेथ राहोनि असती भ्रमरा॥ ते निधान मो॥ ९५॥ अस्मि० तपास्य ह्म हू वर्ष निगृह्णाभ्युत्सजा भिच
 ॥ अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन॥ ९६॥ ही० मी सूर्याचे निबंध॥ ते पें ते हंशो वे॥ पाठी इद्रहोद निवरे॥ ते पुदती मरे॥ ९७॥ अग्नि-
 काष्ठ खाये॥ नैकाष्ट निअग्नि होये॥ ते से भरतें मारि ते गाहे॥ स्व रूप माझे॥ ९८॥ यानागी मृत्यूचा भागी जे जे॥ ते ते ही पेरूपाझे॥ -
 आणि न मरतें न वे सहजे॥ मोचि आहें॥ ९९॥ आता बहु बोलां नि सांगवे॥ ते ऐक हे कायेण आधवे॥ तरी सातासत ही जाणवे॥ मी
 चि पें गा॥ १००॥ ह्मणो नि अर्जुना मी नसे॥ ऐसा कवण वाव असे॥ परि प्राणियाचे देवें कसे॥ जे न देखती माते॥ १०१॥ तर गणायिं वा
 ण सकती॥ रथ मी वाती वीणा न देखती॥ ते से मी चि ते मी नो ह्मना॥ विस्मो देखे॥ १०२॥ हे आंत बाहेर भियां कोंदले॥ जग निरिवल
 पाठः आ० ८५ ही० अं० ९३ होय ते मो० अं० ९८ अविनाश मो०

माद्रौचिवोत्तिले ॥ कीं केंसं कर्मनयां आड आलं ॥ जंभीचिनाहो ह्यणर्ता ॥ २॥ परिअसृतकुहांपडिजे ॥ कांआपणपयांतें कडिथे
 कारिजे ॥ ऐसं आथीकायवीजे ॥ अप्राप्तासी ॥ ३॥ ग्रामाएकाअन्नासाठी ॥ अधधावताहोकिरीदी ॥ आटळलाचितामणिण
 गेलोदी ॥ आधळेपणें ॥ ४॥ तें सेंज्ञानजें सांडनिजाये ॥ तें ऐसीहदशाआहे ॥ ह्यणोनि किजेंतें केलें नोहे ॥ ज्ञानेविण ॥ ५॥ आं
 धळेयागरूडाचे पाखव आहती ॥ तेकवग्राउपेगजाती ॥ तें सेंसत्कर्मचिउपेवेवाती ॥ ज्ञानेविण ॥ ६॥ स्त्री० त्रैविद्यामोसोमण
 पृतपापायें जौरिस्वास्वर्गेंतें मर्थयतें ॥ नें पुण्यमासाधसुरेंद्रलोकभ्रमश्चिदिदेवभागान् ॥ २०॥ टी० देवपांगाकिरी
 दी ॥ आश्रमधर्माचियाराहादी ॥ विधिमार्गाकसवदी ॥ जें आपणचिहोती ॥ १॥ यजनकरितां कौतुकें ॥ तिहीवेदाचामाथातु-
 के ॥ क्रियाफळें सिउमीठाके ॥ पुढांजयां ॥ ८॥ ऐसेदीक्षितजें सोमप ॥ जें आपणचियज्ञाचें स्वरूप ॥ तिहितयापुण्याचें निनिवे-
 पाप ॥ जोडिलें देवें ॥ ९॥ जेशुतित्रयांतें जाणोनि ॥ शतवरीयज्ञकरूनि ॥ यजिलियामातें चुकांनि ॥ स्वर्गवारीती ॥ १०॥ जें सेंक
 ल्यतरूतळबदी ॥ वें सोनिझोळियेपाडित सेंगांटी ॥ मगनिदेवनिघेकिरीदी ॥ दैन्यचिकरू ॥ ११॥ तें सेंशतंक्रतुयजिलेमाते ॥
 कीं दीप्तिनातिस्वर्गसरवाते ॥ आतापुण्यकीं हें निरुतें ॥ पायनोहे ॥ १२॥ ह्यणोनिमजवीणपाविजे स्वर्ग ॥ तोअज्ञानचापुण्यभा-
 र्ग ॥ शानियेतयानें उपसर्ग ॥ हानिह्यणती ॥ १३॥ येदवीतीरंनरकींचें दुःख ॥ पावोनिस्वर्गनामकीं सरव ॥ बाबूनिनित्यानदगानि
 दीषि ॥ तें स्वरूपमाझें ॥ १४॥ मजयेतापें सुभदा ॥ याद्विधागाअळादी ॥ स्वर्गनिकावादी ॥ चोराचिया ॥ १५॥ स्वर्गापुण्यात्संके-
 पापें येइजे ॥ पापात्संकापें नरकाजाइजे ॥ मगमातें जेणें पाविजे ॥ तें शेरुदुपुण्य ॥ १६॥ आणिमजचिमाजोअसतां ॥ जेणें भांडु
 ह्यवेपाडुसता ॥ तें पुण्य ऐसें ह्यणतां ॥ जीभनतुं देकाई ॥ १७॥ परिहें असाआतांमस्तुत ॥ ऐकेंयापरितेदीक्षित ॥ यजुनिमा

पाट. ओ० २ ओटनलें. ओ० ११ देनसे. ओ० १४ स्वर्ग. ओ० १७ दुरीहोयें.

तैयानि ता स्वर्गभांग ॥ १८ ॥ मगामी नय विजे ऐसैं ॥ जेया पक्ष पुण्य असे ॥ तेणें ला धळे नि सोरसें ॥ स्वर्ग येती ॥ १९ ॥ जेथ अमर लव
हें सिंहासन ॥ ऐरावता सारि रेंवाहन ॥ राजधानी सुवन ॥ अमरावती ॥ २० ॥ जेथ महा सिद्धीचीं सांडारें ॥ अमृताचीं कोठारें ॥ जि
येगां वीरि वल्लारें ॥ कामधेनूचीं ॥ २१ ॥ जेथ वोळगे देवां पाइका ॥ सैद्य चिंता मणी चिया झूमिका ॥ विनोद वन वाटिका ॥ सुरत सूनिया ॥
२२ ॥ गंधर्व गत गणी ॥ जेथ रंभे शिष्या नाचणी ॥ उर्वशी मुख्या विलासिनी ॥ अंतोरिया ॥ २३ ॥ मदन वोळगे येजारें ॥ जेथ चंद्र शिष्य साव
रें ॥ प्रवना ऐसैं ह्मणि यारें ॥ धावणें जेथ ॥ २४ ॥ पै बहु ह्मती मुख्या आपण ॥ ऐसे स्मृति श्रियेचे ब्राह्मण ॥ स्मृति वेंचे सुरगण ॥ बहु वस जे
थें ॥ २५ ॥ लोका पाळरंगेचे ॥ राउत जिये पदवीचे ॥ उच्चैः श्रवाखांचे ॥ खोल गिये ॥ २६ ॥ हे असो बहु ऐसैं ॥ भोग इद्र सुखा सरिसो ॥
ते भोगी जती जव असे ॥ पुण्य लेश ॥ २७ ॥ श्लो० तेनं प्रक्ता स्वर्ग लोकां विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्य लोकां विशांति ॥ एव च यो धर्म यनु
प्रपन्ना गतां गतं काम कामालु सन्ते ॥ २८ ॥ टी० मग तया पुण्याची पउटी सरें ॥ सर्वे चिंद्र पणाची उट उतरें ॥ आणिये रंजला गती मा
यारें ॥ मृत्यु लोका ॥ २९ ॥ जेमा वंश्या भोगी कवडा वेंचे ॥ मग दारही चें पुनयेतियेचें ॥ तें सैलाजिर बाणो दीक्षितांचें ॥ कायसांगों ॥ ३० ॥
एवं तिथिया मातेंतु कले ॥ जिही पुण्यें स्वर्ग कां मिले ॥ तयां अमर पणातें वावोजले ॥ अंती मृत्यु लोका ॥ ३१ ॥ माते चिया उदर कुहरी ॥ प
चुनि विष्टे चादथरी ॥ उकडूनि नवमास वरी ॥ जन्म जन्मो निमरती ॥ ३२ ॥ अगास्त्रीं नयान फावे ॥ परिचे इलिया हार पे आयवें ॥ ते
सुं स्वर्ग सुख जाणवें ॥ देवज्ञांचें ॥ ३३ ॥ अर्जुना वंदे विदुज ही जाहना ॥ तारं मातें जेनां वाया गेला ॥ कणसांडु निउपणिला ॥ स्नेडा-
जेंसा ॥ ३४ ॥ स्मरण ईनि मज एका विया ॥ हेच यो धर्म अकारण ॥ आता मातें जाणो नि काही नेण ॥ तूं सुखिया होसी ॥ ३५ ॥ श्लो० अ
नन्याश्चि तथै तो माये जनाः पयुपासते ॥ तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं ब्रह्मा म्यहम् ॥ ३६ ॥ टी० पै सर्व भावें सी उरिते ॥ जेवो पळे
पाठः ओ० २५ तारिये ओ० २६ पदींचे ओ० ३० स्थितया किंवा स्थितया ओ० ३३ वंदे

मज्जिचित्तं ॥ असागर्भगोळउद्यमानं ॥ कोणयाहीनणं ॥ ३५॥ तैसामीवांचूनि कांही ॥ आणीकगोमटेचिनाही ॥ मज्जिचिनामपाही ॥
जिणयावें विलें ॥ ३६॥ ऐसेअनन्यगतिकेंचित्ते ॥ चिंतितसातेमांतं ॥ जेउपासितोतयांतं ॥ मोचिसेवी ॥ ३७॥ तेएकचदुर्निजियेस
णीं ॥ अनुसरलेगासाद्रियेकहणीं ॥ तेंव्हांचिंतयांचीचिंतवणी ॥ मज्जिचिपडली ॥ ३८॥ मगतिहोजेंजेंकरावे ॥ तेंमज्जिचिपडिले
आयवें ॥ जैसीअजातपस्थांचेनिजिवें ॥ प्रक्षिणीजिये ॥ ३९॥ आपुलीताहानभूकनणं ॥ तान्हयानिकेंतेंमाउलीसीचकरणें ॥ तैसेआ
नुसरलेमज्जप्रणें ॥ तयांचेसर्वमीकरें ॥ ४०॥ तयांमाद्रियासासुज्याचीचाड ॥ नरितेंचपुरवीकोड ॥ कांसेवाह्मणतीतराआड ॥
प्रेमसुयें ॥ ४१॥ ऐसामनीजोअरितीभावो ॥ तोपुढापुढालागतयांदेवां ॥ आणित्थलियान्चनिवाहो ॥ तोहोमीचीकरी ॥ ४२॥ हाया
गस्समआयवा ॥ तयांचामज्जिचिपडिलापाडवा ॥ जयांचियासर्वभावा ॥ आश्रयमी ॥ ४३॥ स्तो० येथ्यन्यदेवताभक्तायजेंतेअह्ययान्तिताः
॥ तैयिमामेवकैतेयजंत्यविधिपूर्वकम् ॥ ४३॥ टी० आतांआणीकहीसंमदाये ॥ परिमातेंनणतीसमवाये ॥ जेअग्निइंद्रसूर्यसोमाये ॥
ह्मणउंनियजिती ॥ ४४॥ तेहीकीरमातेंचिहोये ॥ कांजेंहंआयवेंमाचिआहें ॥ पारितेभजतीउजरीनद्धे ॥ विषमपडे ॥ ४५॥ पाहंपाशा-
खापल्लवरुसंचि ॥ हेकायनद्धतीएकाचिबीजचि ॥ परिणायेंणेंसुळांचें ॥ तेंसुळींचथापं ॥ ४६॥ कांदाहाईद्रियेआहाती ॥ इयंज-
रीएकेचिदेहींचींहीती ॥ आणित्हीसैंबिलेविषयजती ॥ एकाचिठायी ॥ ४७॥ नरिंकरोनिरमसोयबरवी ॥ कानीकेंवोभरवी ॥ फु-
लेंआणूनि तुरबावी ॥ डोळांकवी ॥ ४८॥ तेंथरसंतोमुरवंचिसेवावा ॥ परिमळतोघ्राणेंचिध्यावा ॥ तैसामीतोयजावा ॥ मोचिस्यगोनि
४९॥ येरमातेंनणोनिभजन ॥ तेंवायांचिगाआनेआन ॥ ह्मणोनिकर्मांचेंडोखेजान ॥ तेंनिंदपिहोआवे ॥ ५०॥ स्तो० अहंहिसर्वय-
ज्ञानांभीक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितलेनातश्च्यवंति ॥ २४॥ टी० येहवीपाहंपापाडुसता ॥ यायेजोपचाराममस्ता
॥ ५१॥

षाठ- ओं- ४० मायेसीच- ओं- ५१ यज्ञोपहारां- ५१

भीवांचुनिभोक्ता ॥ ५१ ॥ मीसकळायज्ञाचीआदो ॥ आणियजनाययामीन्विअवधि ॥ कीमातेचुकोनिदुर्बुद्धी ॥ देवांभज
 ले ॥ ५२ ॥ गंगेचेंउदकगंगेजेंसे ॥ अर्पिजेदेवपितरोदेशें ॥ माझेमजदेतोतेसे ॥ परिआनानिभ्रावीं ॥ ५३ ॥ ह्यणउनिनेपार्थी ॥ मातेन
 पवतीचिसर्वथा ॥ मगमनीचाहिलीजेआस्थी ॥ तेथआले ॥ ५४ ॥ श्लो० यातिदेवद्रवनादेवानपितृनृयांतिपितृवताः ॥ मृताभियांतिमृ
 तेज्यायांतिमद्याजिनोपिभाम् ॥ २५ ॥ टी० मनेवाचाकरणी ॥ जयाविवाभजनीदेवांचियावाहणी ॥ तेशरीरजातियेसणी ॥ देवचिजाले
 ॥ ५५ ॥ अथवापितरांचीव्रते ॥ बाहारीज्यांचीचित्ते ॥ जीवितसरलियातयांते ॥ पितृत्ववरी ॥ ५६ ॥ कांक्षद्रदेवतादिमृते ॥ तियेंविज
 यांचिपरमदैवते ॥ जिहांअभिचारिकींतयांते ॥ उपासिले ॥ ५७ ॥ तयांदेहाचीजवमिकाफिटली ॥ आणिमृतत्वाचीप्राप्तीजाहली ॥
 एवंसंकल्पवशेफळली ॥ कर्मेतया ॥ ५८ ॥ मगमीचिडोळादेखिला ॥ जिह्वाकानामीचिऐकिला ॥ मीचिमनीभ्राविला ॥ वानिलावाचा ॥
 ५९ ॥ सर्वांगीसर्वांगी ॥ मीचिनमस्कारिलाजिहां ॥ दानपुण्यादिकेंकांहीं ॥ तेंमाझियाविमोहरां ॥ ६० ॥ जिह्वांतेविअथयन
 केलें ॥ जेआतबाहोरिभियांचिआले ॥ ज्यांचेजीवितजोडलें ॥ मजचिलागीं ॥ ६१ ॥ जेअहंकारवाहतआंगी ॥ आस्तीहरीचेसुषावया-
 लागीं ॥ जेलीभियेएकचिजगीं ॥ माझेनिलोसं ॥ ६२ ॥ जेमाझेनिकामेंसकाम ॥ जेमाझेनिपेमेंसंप्रेम ॥ जेमाझियासुलीसंप्रेम ॥ ने
 णतीलोक ॥ ६३ ॥ ज्याचीजाणतीमजविशास्त्र ॥ मीजोंडेंतयाचेनिमंत्रे ॥ ऐसेजेचेष्टामात्रें ॥ प्रजलेमज ॥ ६४ ॥ तेंमरणऐलीचकडे
 ॥ मजमिळोनिलेपुढें ॥ मगमरणीआणिकीकडे ॥ जातीलेंकेवी ॥ ६५ ॥ ह्यणींनिमद्याजीजेआहले ॥ तेंमाझियासायुज्याआले ॥ वि
 हीउपचारिभोर्दिधले ॥ आपणपेंमज ॥ ६६ ॥ पेंअर्जुनामाझेवार्थी ॥ आपणपेंवांगसोरसनाहीं ॥ मोरुपचारेंकवणाहीं ॥ नाकळंगा ॥
 ६७ ॥ एथजाणीवकरीतोचिनेणें ॥ आशिलेपणभिरवीतेंचिउणें ॥ आस्तीजाहालोऐसेजोसुणें ॥ तोंकांहींचि नव्हे ॥ ६८ ॥ अथवा-
 णाठ-ओः ५५ मन-ओः ५८ तिये-ओः ६८ कहीं-

१७

७

७

७

७

७

यज्ञदानादिकिरीदी ॥ कान्तपेहनजेहुदहुदी ॥ तेतणाएकासादी ॥ नसरेएया ॥ ६९ ॥ बाहंपंजाणिवेचेंनिबळं ॥ कोह्दीवेदापासूनअसंआ-
 गळे ॥ कींशेषाहनितांडोळे ॥ बोलकेंआथी ॥ ७० ॥ तोहोआथुरणातळवदीदडे ॥ येरुनेतिनीतस्मणोनिबहुडे ॥ एथसनकादिकवेडे ॥ पिसेजा
 हाले ॥ ७१ ॥ करिनातापसाचौकडसणी ॥ कवणजवळोडिजेरूळपणी ॥ तोहोअभिमानसांडुनिपायवणी ॥ माथावाहे ॥ ७२ ॥ ना-
 तरीआथिलेपणेंसरशी ॥ कवणीआहलक्षियेंएसी ॥ श्रियेसारिखयादासी ॥ घरींजयेते ॥ ७३ ॥ नित्याखेळतांकरितीघरकुली ॥
 तयानामेंअमरपुरेजरिवेली ॥ तरिनहांतीकायबाहुली ॥ इद्रादिकनयाची ॥ ७४ ॥ नित्यानाकडोनिजेव्हांमोडती ॥ तेव्हांमहेंद्राचरक-
 होती ॥ नित्याजिशाझाडाकडेपाह्यती ॥ तेकल्यवृक्ष ॥ ७५ ॥ ऐंभियाजियेचियाजवळिका ॥ सामथ्यघरींचियापाइका ॥ तेलस्मीमुख्य
 नायका ॥ नमनेंचिएथ ॥ ७६ ॥ भगसर्वस्वरूनिसेवा ॥ अभिमानसांडुनिपाडवा ॥ नेपायधुवावयाचियादेवा ॥ पात्रजाहाली ॥ ७७ ॥
 स्मणोनिथोरपणपंढासांडिजे ॥ एथव्युत्पत्तीआघर्वावसरिजे ॥ जेंजगाथाकूटेंहोइजे ॥ तेजवळीकमाझी ॥ ७८ ॥ अगासहस्रकिंणा
 चियेदिठी ॥ पुढाचद्रहोलोपकिरीदी ॥ तेथरवद्योतकाहुदहुदी ॥ आपुलेनिजे ॥ ७९ ॥ तेंसंलक्षियेचेंथोरपणनसरे ॥ जेथशसूचेंहो-
 पपनपुरे ॥ तेथयेरमाहतहेंदरे ॥ केविंजाणींलाहे ॥ ८० ॥ यालागिंधारीरसांडोवाकिजे ॥ सकळगुणांचेंजोणउत्तरिजे ॥ संपत्तिमदसा
 डिजे ॥ कुरबडीकरुनी ॥ ८१ ॥ श्लो० पत्रपुण्यफलतोययोमैमत्तयाप्रयच्छति ॥ तदहमन्त्युपहतमभ्याभिप्रयतात्मनः ॥ ८२ ॥ टी०
 मगनिःसीमभावउल्हासे ॥ मजअर्णवयचेनिभिसे ॥ फळएकआवडेतेसं ॥ अलनयांचेंहो ॥ ८३ ॥ भक्तमाझियाकडेदावी ॥ आधि-
 मादोन्हीहावबोडवी ॥ भगदेंतनफेंडितांसेवी ॥ आदरंसी ॥ ८४ ॥ पैंगाप्रक्तीचिंनिनावे ॥ फुलएकमजघोवें ॥ तेंतुरेवेंतरिम्यातुरंवा-
 वें ॥ परिसुरवींचयाली ॥ ८५ ॥ हेंअसोकायसीफुलें ॥ पानचिएकआवडतेजाहुलें ॥ तेसाजूकहीनहोसुकलें ॥ फलतेसं ॥ ८६ ॥ परि-
 पाठ- ओ- ६९ दानादिक- ओ- ७३ सिद्धां- ओ- ७५ येउते- ७

सर्वभावेभ्रमलेदरेवं ॥ आणिभुक्तेलाअमृतंतोरेवे ॥ तैसेंपत्रचिपरितेणेंसरुवे ॥ आरोंगुलागे ॥ ८६ ॥ अथवाऐसेंहीएकघडे ॥ जें
 पात्वाहीपरिनजोडे ॥ तरिउदकाचेंतवसाकडे ॥ नद्वेलकी ॥ ८७ ॥ तेंमलतैथनिमोले ॥ नजोडितांआहेजोडले ॥ तेंचिसर्वस्वरुनि-
 अपिलें ॥ जेणेंमज ॥ ८८ ॥ तेंणेंवेंकुठापासोनिविशाळें ॥ मजलागींकेलीराउळे ॥ कोस्तुभाहोनिनिर्मळें ॥ लेणींदधली ॥ ८९ ॥ दुधा-
 चोसेजारे ॥ क्षीराब्धीऐसींमनोदर ॥ मजलागींअपारें ॥ सृजिलींतणें ॥ ९० ॥ कपूरचंदनअगरू ॥ ऐसेयासुगंधाचिमाहोमेरू ॥ म-
 जहातीलाविलादिनकरू ॥ दीपमाळे ॥ ९१ ॥ गरुडासारिविवाहनं ॥ मजसरतहूचोउघानें ॥ कामधेनूचिंगोधनं ॥ अपिलींते-
 णीं ॥ ९२ ॥ मजअमृतहूनिस्फुरसं ॥ बोनीवांगारिलींबहुवसें ॥ ऐसाभक्तचेंनिउदकलेशो ॥ परितोषेणा ॥ ९३ ॥ हेसागावेंकायकि-
 रीदी ॥ तुवांचिदेखिलेआपुलियादिवी ॥ मीसुदामयाचियासोडींगांठी ॥ पद्मयासांठी ॥ ९४ ॥ पैकक्तीएकीमोजाणें ॥ तेथसानें
 थोरनक्षणे ॥ आह्मीभावाचिपाहुणे ॥ भलतेया ॥ ९५ ॥ येरपत्रपुष्पफळ ॥ हेभाजवथाभिसकेवळ ॥ वाचूनिआसुचियालाणिंनिक्क-
 ला ॥ भक्तितल ॥ ९६ ॥ दृणोनिअर्जुनाअवधारीं ॥ तूबुद्धीएकीसोपारीकरीं ॥ तरांसहजेंआपुलियामनोमंदीरीं ॥ नविसंबेमांते-
 ॥ ९७ ॥ श्लो० यत्करोषियदस्मासियज्जुहोषिददासियत ॥ यत्तपस्यमिर्कोतेयत्तल्लुक्कमदपणम् ॥ २७ ॥ टी० जेजेकांहीव्यापा-
 रकरिसी ॥ कांभोगहनमोगिसी ॥ अथवायजीयंजिसी ॥ नानाविधी ॥ ९८ ॥ नातरीपात्राविशेषदानें ॥ कासेवकादेसीजीवनें ॥ तणादिहनसा-
 धनें ॥ व्रतेंकरिसी ॥ ९९ ॥ तेंकृपाजातआयेवें ॥ जेमेंनिपजेनुस्वभावे ॥ तेंभावनाकरोनिकरावे ॥ माझियामोहरां ॥ १०० ॥ एरोसर्व-
 थाआपुलजीवी ॥ कैलियाचिसंकाहोचिनुरवी ॥ ऐसीद्युवोनिकर्मधावीं ॥ माझियाद्वातीं ॥ १०१ ॥ श्लो० श्रमाश्रमफलैरेवंमोक्ष्यसेक-
 र्मबंधनैः ॥ सत्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोभामुपैष्यसि ॥ २८ ॥ टी० मगअग्निकुंडोबीजघातलो ॥ तिथेअंकुरदृशेजिवमुद्गती ॥
 तेंविनफळतीचिमजअपिली ॥ श्रमाश्रमं ॥ २० ॥ अगाकर्मजेंउरावें ॥ तेंतिहीसरुवदुःखींफळावें ॥ आणितयातेमोगावयाथोवें ॥

देहाएका ॥३॥ तें उगणिले मजकर्म ॥ तें व्हाविपुसिलें मरण जन्म ॥ जन्मासंश्रम ॥ वरवीलही गेलें ॥४॥ क्षण उमिअर्जुनायापरी ॥
 पाहें पावेळ नव्हेलपारी ॥ हे सत्यासयुक्ति सोपारी ॥ दिथलीतुज ॥५॥ या देहाचिये बांदोडीन पडिजे ॥ सूरतदुःखाचिया सागरीं न
 बुडिजे ॥ सूरवे स्मरव स्मरण घडिजे ॥ माझिया चिआगा ॥६॥ श्लो० समोद सर्व मृत्यु न मेढ्यां स्तिन प्रियः ॥ ये भजंति तु मां भा
 न्या मयिते ते सुचाप्यहम् ॥२१॥ टी० तो मी पुससी केसा ॥ तरि जो सर्व मृत्यु न सोदा मरि सा ॥ जेथ आपपर ऐसा ॥ भागना हेन ॥७॥
 ॥ जे ऐसिया माते जाणोनि ॥ अहंकाराचा कुरवामोडोनि ॥ जे जिवं कर्म करुनि ॥ मातें भजलें ॥ ८॥ ते वर्तत दिसती देहां ॥ पारितो
 देहांना माझा वारी ॥ आणि माते याचा हृदयी ॥ समग्र भ्रम ॥९॥ सविस्तर वट त्वजेंसे ॥ बीज कणिके माजि असे ॥ आणि बीज क
 णवसे ॥ वटी जेवीं ॥१०॥ ते विआह्मातया परस्पर ॥ बाहेर ना माचिं निअंतरे ॥ वांचूनि आत वट वस्तु विचारे ॥ मोते निते ॥११॥ अ
 तां जायांचे जे संलेणे ॥ आगावरी आहाच वाणे ॥ तें संदेह धरणें ॥ उदास तयांचे ॥१२॥ परि मळ निघालिया पवना पाठी ॥ मार्गे बोस रु
 लराहे देती ॥ ते संआरुष्याचिये मुवी ॥ केवळ देह ॥१३॥ येर अवष्टम जो आघवा ॥ तो आरूढो निमद्रावा ॥ मज निआत पांडवा ॥ पेंठा जा हा
 ला ॥१४॥ श्लो० अपि चेत्सदु राचारी भजते मामनन्य भाक ॥ साधुरे वसमतव्यः सम्याद्वयसितो दिसः ॥१५॥ टी० ऐसे भजते निअ
 म भावां ॥ जया शरीर ही पाणीं न पवे ॥ तणें भलतया व्हावें ॥ जोती विया ॥१५॥ आणि आचार पाहाता सुभदा ॥ तो दुष्ट नाच करि रसे
 लवांटा ॥ परि जीवितें चिहें चोहटां ॥ मक्षत्र चिया कीं ॥१६॥ अगा अती निया मनी ॥ साच पण पुढिले गती ॥ क्षणो निजी वितजेणें फुटि
 ॥ दिथलें शोबी ॥१७॥ तो आधीं जरी दुगचारी ॥ तरी सर्वोत्तम चि अवधारी ॥ जें साबुडाला महापूरी ॥ नमरत निघाला ॥१८॥ तथा
 चें जी रिते ऐलथ डिग्ये आलें ॥ क्षणो निबुडाले पण जे विवाया गेलें ॥ ते विनुरे निपाप केलें ॥ शेवट लिये मर्त्त ॥१९॥ या लागीं दुष्ट ना

पाठ- ओ० ८ भजती मातें- ओ० १२ सदा- ओ० १८ आधी-

जहो जाहाल्य ॥ तरिअनुतापतीर्थीन्होला ॥ न्होनिमजआनआला ॥ सर्वभावे ॥ २० ॥ तरिआनोपवित्रयचेंकुळ ॥ आभिजात्यंतेंनिर्मि
 क ॥ जन्मलयाचेंफल ॥ तयासीचजोडले ॥ २१ ॥ तोसकळहीपटिनला ॥ तपेंतोचितपिनला ॥ अशंगअभ्यासला ॥ योगतेणें ॥ २२ ॥ हेंअसो
 बहुतपार्थी ॥ तोउतरलाकर्मसर्वथा ॥ जयाचीअरकडगाआम्या ॥ मजचिजागें ॥ २३ ॥ अवधियामनोबुद्धीचियाराहटी ॥ भयोनिएक
 निष्ठेचोपेदी ॥ मजमाजिकिरीदी ॥ निसोपिलीजेणें ॥ २४ ॥ श्लो० क्षिप्रप्रवतिधर्मास्त्राशस्त्रच्छांतिनिगच्छति ॥ कोंतेयप्रतिजानीहि-
 नमेभक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ टी० तोआतांअवसरेंसजसाभिरवाहोडु ॥ ऐसाहनभावतुजजाडुल ॥ हांगाअमृताआंतराहिल ॥ तया
 मरणकेंचें ॥ २५ ॥ पैसूर्यजोवेकुनिदेजे ॥ तयावेळाकोरात्रिद्विणिजे ॥ तेंविमाझियेभक्तीवाणजेंकीजे ॥ तेंमहापापनोहे ॥ २६ ॥ ह्मणो-
 नितयाचियाचिन्ता ॥ माझीजवळीकपाडुसता ॥ तेव्हाचितोतवता ॥ स्वरूपमाझे ॥ २७ ॥ जैसीदीपेंदीपलाबिजे ॥ तेथआदीलकोणेंहोळ
 सिजे ॥ तेंमासर्वसंजोमजभजे ॥ तोमोचिहोडुनिठोक ॥ २८ ॥ मगजोझीनित्यशांति ॥ तयादशांतेंचिक्कांती ॥ किंबहुनाजिती ॥ माझे-
 निजीवे ॥ २९ ॥ एथपार्थीपुदतपुदती ॥ तेंचिनेसांगोंकिती ॥ जरिमियाचाहुतराफक्ती ॥ नविसेंबिजेगा ॥ ३० ॥ अगाकुळाचियाचोसरदप-
 णानलगा ॥ आभिजात्यझणेंन्हाया ॥ व्युत्पत्तीचावाउगा ॥ सोसकांवाहावागा ॥ ३१ ॥ काहूंपैवयसामाजा ॥ आशिलेपणेंकांगजा ॥ एकमा
 वनाहीमाझ्या ॥ तरिपाल्हाळते ॥ ३२ ॥ कणेंवीणसोपटें ॥ कणसंलागलीआशियनदाटें ॥ कायकरावेंगोमटें ॥ वोसनगर ॥ ३३ ॥ नातरी
 सरीवरआटलें ॥ रानीहुःखियाहुःखीसेटलें ॥ कांवाझफुलीफुललें ॥ झाडजैसां ॥ ३४ ॥ तेंसंसकळतेंवैभव ॥ अथवाकुळजातिगो-
 रव ॥ जैसेशरीरआहेसावेव ॥ परिजोवचिनाही ॥ ३५ ॥ तेंसेमाझियेभक्तीविणा ॥ जळोतेजियालेपणा ॥ अगापृथ्वीदरीपाषाण ॥
 नसनीकाई ॥ ३६ ॥ पेंहिबरचीदाटमाउली ॥ मज्जनजैसीवाळी ॥ तेंसांपुणेंडावळुनिगेली ॥ अफक्ततें ॥ ३७ ॥ निबनिबोळि

पाठः ओ० २१ जाहालें ओ० २४ निबनेचा ओ० २१ माझे ओ० ३२ रूपे

५

५

५

५

५

यामोडोभिआला॥ तरितोडउदियासींचिस्फळाळाहाला॥ तैसाभक्तिहीनवादिनला॥ दोषांचिलार्गी॥ ३८॥ कांफडुसवापरिघादि
 ले॥ वादुनिचोदंगवेंवेलें॥ तैसूणियांचेउपेगाआले॥ जियापरी॥ ३९॥ तैसैभक्तिहीनाचेंखिणे॥ जोस्वप्नीहोपरिस्फुटनेणे॥ तैसा
 संसारदुःखासिभ्राणें॥ बोगरिलें॥ ४०॥ स्मणोनिकुळउत्तमनोहावें॥ जातोअंत्यजहीक्षवें॥ वरिदेहाचेंनिनावें॥ पयचिहीलाभो॥
 ॥ ४१॥ पाहेंपांसावजेंहातिरुधरिलें॥ तेणेंतयाकाकुळतीमातेंस्मरिलें॥ कंथयाचेंपशूतवावोजाहालें॥ पावल्यामाते॥ ४२॥ श्लो०
 मांद्दुपथैव्यणश्रित्ययेपिस्वः पापयोनयः॥ स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरगतिम्॥ ३२॥ दौ० अगानावेंधेतांवोसवदी॥ जे
 आधवेयाअधमाचियेसेवदी॥ तियेपापयोनीहीकिरीदी॥ जन्मलेजे॥ ४३॥ तेपापयोनिमुदें॥ मूरुवजेंसेकादगड॥ परिमाझावाशहद
 ॥ सर्वभ्रावें॥ ४४॥ जयाचियेवाचेमाझेआलाप॥ हद्योभोगीमाझेचिरूप॥ जयाचेंमनमरुत्पा॥ माझाचिबाहे॥ ४५॥ माझियाका-
 तीविण॥ जयांचेरितेनाहीअवण॥ जयासर्वोगीभूषण॥ माझेसेवा॥ ४६॥ जयाचेंज्ञानविषनेणे॥ जाणीवभजएकतेंचिजाणे॥ ज
 गारेसेंवाभेतराजिणें॥ येन्हवींमरण॥ ४७॥ ऐसेआधवाचिपरियाडवा॥ जिहीआपुलियासर्वभावा॥ जियाचयाळागींबोलावा॥
 भोचिकेला॥ ४८॥ तेंपापयोनीहीहोतुका॥ तैअताधीतहीनहोतुका॥ परिमजसीतिंकितातुका॥ तुदीनाही॥ ४९॥ पाहेंपांभक्तीचेजिआ
 थिलेपणें॥ दैत्यांदेंआणिलेंउणें॥ माझेनृसिंहललेणें॥ जयांचियेमहिमे॥ ५०॥ तोप्रह्लादगाभजमागी॥ घेताहंदेवहुतांकधी॥ का
 जेंभियांदावेंतेगोशी॥ तयाचियाजोडे॥ ५१॥ येन्हवींदेंत्यकुळसाचोकरें॥ परिइंद्रहीसरिनळाहुउपरा॥ स्मणोनिभक्तिगाएयसरें॥
 जातिअप्रमाण॥ ५२॥ राजाजेंचिअसरेंआहाती॥ नित्येचामाएकजयापडतो॥ तयाआमासावीजोडतो॥ सकळवस्तु॥ ५३॥ बाहुनि
 मोनेंरूपेप्रमाणनोहे॥ एथराजाज्ञाचिसमयेआहे॥ तेचिचामएकजेलोहे॥ तेणेंविकृताआधवा॥ ५४॥ तैसेंउत्तममलेंतिंतिरे॥ तैचि
 पाठ॥ ओ० २९ रात्रीठोवेलें॥ ओ० ४० आंवतणें॥ ओ० ४४ गूढ॥ ओ० ४७ मरणमलें॥ ५

सर्वज्ञातासरे ॥ जैमिनोबुद्धिर्मरै ॥ माझेनिमैमे ॥ ५५ ॥ ह्यणोनिमुकजातिवर्ण ॥ हेआद्यवैविगाअकरण ॥ एथअजुनामाझेपण ॥ सार्धव
एक ॥ ५६ ॥ तेविभलतेणभावे ॥ मनमजआंतुयेतेंहोआवे ॥ आलेतरांआद्ये ॥ मणीलपावी ॥ ५७ ॥ जैमेतवचिवहाळवोहळा ॥ जवनप
वतीगंगाजळा ॥ मगहोउनिठाकतीकेवळा ॥ गंगारूप ॥ ५८ ॥ कांवेरचंदनकाष्ठे ॥ हेविंननातवचियटो ॥ जवनघापतीएकवटे ॥ अमि-
भाजी ॥ ५९ ॥ तैमेसुत्रवैश्यस्त्रिया ॥ कांसूअत्यजादिइया ॥ जातीतवचिवेगळालिया ॥ जवनपवतीमाते ॥ ६० ॥ मगजातिव्यक्तिपं
डेबिंदुले ॥ जेव्हांभावहोतीमजमीनले ॥ जैमेलवणकणधातले ॥ सागरामाजी ॥ ६१ ॥ तंववरीनदानदीचींनावे ॥ तवचिपूरपध्रिमे
चियावे ॥ जवनयेतीआद्ये ॥ समुद्रामाजी ॥ ६२ ॥ हेविकवणेएकेभिपे ॥ चित्तमाझेठावार्थंप्रवेशे ॥ येतुलेहोमगआपैमे ॥ मोचिहोणे
असे ॥ ६३ ॥ अगावरीफेडावयालागी ॥ लोहोमिळाकापरिसत्विआगी ॥ कांजेंमिळतियेप्रसंगी ॥ सोमोवेहोईडा ॥ ६४ ॥ पाहेंपाव-
लुमाचेनिव्याजे ॥ तियाज्जांगनाचिनिजे ॥ मजमिनलियाकायमाझे ॥ स्वरूपनव्दती ॥ ६५ ॥ नातरीभयावेनिमिसे ॥ मातेनपरि-
जेविकायकसे ॥ कीअरवडैवरवेशे ॥ चैद्यादिका ॥ ६६ ॥ अगासोयेरणेंविणडवा ॥ माझेसाथुज्यादवा ॥ कांममलेवसुदेवा ॥ दि-
कासकळा ॥ ६७ ॥ नारदाध्रुवाअक्रूरा ॥ शक्राहनसनकुमाग ॥ इयासत्तिमीधनुर्धरा ॥ प्रायेंजैसा ॥ ६८ ॥ तैसाचिगोपिकोपिका
मे ॥ तयाकसाभयसुभ्रुमे ॥ येरायोतकामनोधर्मे ॥ शिशुपालादिका ॥ ६९ ॥ अगामीएकलाणिवेंस्वंगे ॥ मजयेवेंशुभलतेनिमा
गी ॥ भक्तिकांविषयविरागे ॥ अथवावैरे ॥ ७० ॥ ह्यणोनिपार्थापाही ॥ प्रवेशावयुमाझाठायी ॥ उपाशांनीनाही ॥ वाणोएथा ॥ ७१ ॥
आणिभ ठतियाज्जातीजन्मावे ॥ मगभजिजोकांविरोधावे ॥ परिभक्तकांवेरीक्दावे ॥ माझियाचि ॥ ७२ ॥ अगाकवणेएकेबोले ॥ मा-
झेपणजहीजाहाले ॥ तरीमीहोणेआले ॥ हातानिरुते ॥ ७३ ॥ यालाशिपायेनीहीअनुना ॥ हावैश्यशूद्रअंगना ॥ मातेभजन
पाठ ॥ ओः ५५ मोहरे ॥ ओः ५६ वेराये ॥ ओः ७० केणी ॥ ओः ७१ मज ॥ वेरियाहोआवे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

तांसदना ॥ भोद्वियायेती ॥ ७४ ॥ श्लो० किंनुनब्राह्मणाः पुण्याभक्ताः कर्णयस्तथा ॥ अनित्यमशमं लोकांमिमं प्राप्य भजसुभाम् ॥ ३३
 दी० मगवर्णमाजिछत्रचामर ॥ स्वर्गजयचिअग्रहार ॥ मंत्रविधेसिमाहेर ॥ ब्राह्मणजे ॥ ७५ ॥ जेपृथीतळीचेंदेवा ॥ जेतपोवतारसत्त्व
 व ॥ सकळतीर्थोसीदेवा ॥ उदयलेंजे ॥ ७६ ॥ जेथअरसुदुर्वाभजेयागी ॥ जेवेदांचीवज्रागी ॥ जयाचेयादितोचियाउत्सगी ॥ मंगळवाटे
 ॥ ७७ ॥ जयाचिवेआस्थेचेनिवोलें ॥ सत्कर्मपात्हाळींगेलें ॥ संकल्पेंसत्यजियाले ॥ जयाचेनी ॥ ७८ ॥ जयाचेनिगालें ॥ अग्नासि
 आयुष्यजाहालें ॥ ह्मणोनिसमुद्रगणीआपुलें ॥ दिधलेयाचिमीती ॥ ७९ ॥ मियांलक्ष्मीडौवळोनेक्रेलोपरोती ॥ फेडोनेकोस्तुभघेत-
 लाहती ॥ मगवोटविलीवक्षस्थळाचीवांसती ॥ नरणरजां ॥ ८० ॥ आडूनिपाउलाचीसुद्रा ॥ मोहदयीवाहंगसुभद्रा ॥ जेआपुलियादे
 वासमुद्रा ॥ जतनेलागीं ॥ ८१ ॥ जयांचाकोपसुभद्रा ॥ काळाभिरुद्राचावसोदता ॥ जयाचेप्रसादींफुकता ॥ जोडतीसिंदी ॥ ८२ ॥ ऐसेपुण्य
 पूज्यजेब्राह्मण ॥ आणिमाझातायीअतिनिपुण ॥ आतांमोतंपावतीतंहीकवण ॥ समथवि ॥ ८३ ॥ पाहंपाचंदनाचेनिअंगअनिळे ॥
 शिवतिलेंनिबहोतेजेजवळें ॥ तिहोनिजीवींहांदेवांचीनिडळें ॥ बेसणीकेली ॥ ८४ ॥ मगतोचंदननेथेंनपवा ॥ ऐसेमनोकैसेनिधरवें
 अथवापातलोहेसमर्थवि ॥ तेंव्हाकायिसाच ॥ ८५ ॥ जेथनिववीलेंऐमयाआशा ॥ हरचंद्रमाआधारेसा ॥ वाहिजतअसेशिरसा ॥
 निरंतर ॥ ८६ ॥ तेथनिवविताआणसगळा ॥ परिमळेंचंद्राहूनआगळा ॥ तोचंदनकेविअवलळा ॥ सर्वांगीनवैसे ॥ ८७ ॥ कांरथोदकंज्यो
 चियेकासे ॥ लागलियासमुद्रजालीअनायासे ॥ तियेंगेंसिकायअनारिसे ॥ गत्यतरअसे ॥ ८८ ॥ ह्मणोनिराजणीं ब्राह्मण ॥ जंशंग
 तिमतीभोचिशरण ॥ तयाचिश्रद्धीमीचिनिर्वाण ॥ स्थितीहीमीनि ॥ ८९ ॥ यालागींशतजर्जरनवें ॥ रिंगोनेकैविनिस्थिताहोआवं ॥ कैसे
 निउघडियाअसावें ॥ शस्त्रवधौ ॥ ९० ॥ आगावरीपटहापायाण ॥ नसूबावेंकैविवाडण ॥ रोंगेंदादलियाआणिउदासपण ॥ वोखंदेसा ॥ ९१
 पाठ ॥ ओ० ७८ पाहाळीं ॥ ओ० ८० जवळूनि ॥ ओ० ८१ नरोद्रा ॥ ओ० ८३ समर्थणें ॥ ओ० ८४ शीतळें ॥

जेषचहूँकडेजळतवणवा॥ तेंयूननिनिगेजेकेविण्डवा॥ तेंचिलोकांयेरुनिसोपद्रवा॥ कौदिनभाजेंजोमते॥ १२॥ अगामातेनप्रजाषया
 लागी॥ कवणबळपांआपुलियाआगीं काइघरींकींमोगीं॥ निश्चितोकेली॥ १३॥ नातरीविद्याकींवेयसा॥ ययांप्राणियासिहाऐसा॥
 भजनभजनांभरवसा॥ स्मरवाचकीण॥ १४॥ तरींमोय्यजातजेंतुले॥ तेंएकारेहाचियानिकियालगले॥ आणिएथेदूतुरअसेपडिले॥
 काळाचियेतोडी॥ १५॥ बापदुःखाचेंकेणेंस्मरले॥ जेथमरणचेंभरोलोल॥ नित्येमुलुकींचेंशेवटिलें॥ येणेजाहूलहाटवेको॥ १६॥
 आतांस्मरवेंसिजोविता॥ कैचोयाहिंकींजेलपांडुसुता॥ कायरावेंडोफुकिता॥ दीपलागे॥ १७॥ अगाविषाचेकारेवाहुनो॥ जोरस
 येइजेपिळुनी॥ तयानामअसुतळेनो॥ जेंसेअमरहाणे॥ १८॥ तेविषयाचेंजेस्मरव॥ तेंदेवळपरमदुःख॥ परिकायकींजेमूर्ख॥ से
 वितानमरे॥ १९॥ कांशीसरवांडुनिआपुले॥ पायींचारवनींवांघिले॥ तेंसेमुलुकींचेंस्मर॥ अहेआवो॥ २०॥ ह्मणोनिमुलुकींस्मरवा
 चीकहाणी॥ ऐकिलेकवणाचियेअवणी॥ कैचोसुखनिद्राआथरणी॥ इगळाचा॥ २१॥ नित्येलोकींचाचदसयरी॥ जेथउदय
 होयअस्तालागीं॥ दुःखलेउनिस्मरवाचियाआंगी॥ मकिनजगाने॥ २२॥ जेथमंगळाचियाअंकुरा॥ सर्वेचिअमंगळाचापडेबोहोरी॥ मु
 ल्युउदराचियापरिवारी॥ गरमगिंवसी॥ २३॥ जेनाहीतेंनयातेंचितवी॥ तंवतेचिनेइजेगंधवी॥ गेलियाचिकवणेगांवी॥ श्रद्धानलगे॥
 ॥ २४॥ अगागिंविंसांआथविवादां॥ परतलेंपाउलाचिनाहींकिरोदी॥ सेंथनिमालियाचियागोष्टी॥ तियेंपुराणेंजेथिची॥ २५॥ जेथी
 चियेअनित्यतेचीथोरी॥ करीतयाब्रह्मयाचेआयुअवेरी॥ कैसेनाहोहाणेअवधारी॥ निरुदनिया॥ २६॥ ऐसीलोकींचिजियेनांदणुका॥
 तेथजन्मलेआथिजेलोका॥ तयांचियेनिश्चिंतोचेंकोतुका॥ दिसतअसो॥ २७॥ पैहशहशचियेजोडी॥ लागींभाडवलनसुटेकवडी॥ तेथ
 सर्वसेंहानितेथकोडी॥ वेचितागा॥ २८॥ जोबहुवेविषयविलासेंगुंफे॥ तोह्मणतेउचाईपडिलासापें॥ जोअभिलाषमारंदडपे॥ तयांत
 पाठ १२ कैविंनभजिजे ओ १९ नसेवितां ओ ३ आहपरि ओ ४

सम्भावचिरेसा ॥ २४ ॥ परिबापभाग्यमाहो ॥ जेहृतांतसागावयचेनिव्याजे ॥ कैसागसिलेंसुनिराजे ॥ श्रीव्यासदेवे ॥ २५ ॥ येतुले
निहंबाडसायासे ॥ जंबबोलतअसेहृदमानसे ॥ तंबनधरेविआपुलियाऐसे ॥ मातिकेंदेलें ॥ २६ ॥ विचचाकाटलेंआहुधेना ॥ वान
चाणगुळलाजेशिंचितेथ ॥ आपादकनुकित ॥ रोमांचआले ॥ २७ ॥ अर्दुन्मालिनडोळे ॥ वर्षनानिआनंदजळें ॥ आंतुलियासुरगेभी
चेनिबळें ॥ बाहुरिकापें ॥ २८ ॥ मेंआयवाचिरोममूळी ॥ आलीसेदूकणिकानिमंडी ॥ लेइलामोतियांचेकणियाली ॥ आबुडनेसा
॥ २९ ॥ ऐसामहासुरराचेनिअतिसंग ॥ जेथआटणीहोपाहेजीवदश ॥ तेथनिरोपिलंब्यासे ॥ तेंनेहीचहो ॥ ३० ॥ आणिकश्रीकृष्ण
चेबोलणे ॥ योकरेआलंश्रवणें ॥ कीदेंहस्मृतेचतेणें ॥ वापसाकेला ॥ ३१ ॥ तेव्हांनेत्रीचेंजळविसर्जी ॥ सर्वांगीचास्वदपरिमा-
जी ॥ तेवींचिअवधाराह्मणेहोजी ॥ धनराशुते ॥ ३२ ॥ आनाश्रीह्मणावाक्यदीजानिवाड ॥ सजयसात्विकाचाविवह ॥ ह्मणोनिश्री
तयांहीईलसुरवाड ॥ प्रमेयपिकाचा ॥ ३३ ॥ अहोअलुमाळअवधानदेयावे ॥ येतुलेनिआनंदाचेराशीवरीबेसावे ॥ बापअवणेंदि
यांदेवे ॥ घानलीमाळ ॥ ३४ ॥ ह्मणोनिबिभूमीचाजोगवो ॥ अर्जुनादावीलमिहाचारावो ॥ तोएकाह्मणेशानदेवो ॥ निहत्तीन्वा ॥
॥ ३५ ॥ इतिश्रीगीतार्थदीपिकायाज्ञानदेवविरचितायांनवमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णापर्णमस्तु ॥

पाठः + स्तंभः सेदोःधरोमांचः स्वरसंगोऽथवेपथुः वेवर्ण्यमद्युमलयइत्यष्टौसात्विकामताः ओः २५ वां ओः २७ एकवटलेंबागे ओः ३१ कृष्णांजुतावे ॥ ३५

सप्तान ह्मणती ॥१॥ जयाचें आयुष्य धाकुदें हांयो ॥ बळ प्रज्ञाजिरो निजाये ॥ तथाचैनमस्कारिती पाये ॥ वडिल ह्मणुनी ॥१०॥ जंव जंव बा
ळ बळिया वाटे ॥ तंव तंव भोजन चिती कोडें ॥ आयुष्य निमालें आतुलिये कडे ॥ तें ग्लानी चिना हो ॥ ११॥ जन्म लिखा दिवसा दिवसे ॥ ह्म
लागे काळाचे याचि ऐसे ॥ कीं वाढनी करिती उल्हासे ॥ उभा विती गुटिया ॥ १२॥ अगा मर हा बोलन साहती ॥ आणि मेलियान
तरी रडती ॥ परि अस ते जात न गणती ॥ गहि सपणे ॥ १३॥ दूर सापें गिळिजतु आहो उभा ॥ कीं तो मासिया वेंटाळी न जिमा ॥
तें से माणी एक वोलोभा ॥ वाढ विती तुट्या ॥ १४॥ अहा कटकटा हो वर दे ॥ इये मृत्यु लोकी वें उफरा दे ॥ एथ अर्जुना जरी अवंच
दे ॥ जन्म लासीतू ॥ १५॥ तरि झड झडो निचा हि ला निघ ॥ इये भक्ती चिये वाटे लागा ॥ जिया पावसी अव्यग ॥ निज था ममांझे ॥ १६॥
स्त्री ० मन्मना भव मद्रक्तो मद्याजीमान मस्तूरु ॥ माये वैष्य मिश्रु त्ते वैमात्मानं मत्परायणः ॥ ३४॥ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता
सूप निषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्यारजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥१॥ दी ० तूं मन हेमी न
निकरी ॥ माझिया भजनी पंमधरी ॥ मर्वदन मस्कारी ॥ म न एकाते ॥ १७॥ माझे नि अनुसंधानें देरवा ॥ संकल्प जाळणें निःशेष ॥ मद्याजी
चोरव ॥ याचि नावो ॥ १८॥ ऐसा मिथा आशिला होसी ॥ तें थ माझिया चिस्वरूपा पावसी ॥ हे अंतःकरणें चें तुज पासो ॥ वोलि जत असो ॥
॥ १९॥ अगा आवधियांचो रिया आपुने ॥ जें संपन्न भादी भसं दे विलें ॥ तें पावो निस्करव सचलें ॥ होऊ निठासी ॥ २०॥ ऐसे सावळे नि
पर ब्रह्म ॥ तें गें भक्त काम कन्यद्रम ॥ बोलिले श्री आत्मा रामें ॥ संजयो ह्मणो ॥ २१॥ अहो एक जत असे कीं अवधारा ॥ तव इया बोला
निवात ह्या तारा ॥ जे साक्षे साजु दो का पुरा ॥ तें सा गुण चि अमो ॥ २२॥ तें थ संजये माथा तु किला ॥ अहो अमृताचा पाउ सवर्षला ॥
कीं हा एथ अस तृचि गेली ॥ मो जिया गवा ॥ २३॥ तद्दी दाना हा आमुचा ॥ क्षणोनि हें बालतां मेलें लवचा ॥ काय की जे पयाचा ॥
पाठ ० ओ १० बळ ० ओ ११ जन्म लोनि देह दिसे ० ओ १२ जातें ० वायो सोमा वारो ० श्री १६ बडिला ० ओ २२ नेणो ० श्री १७ रुखा ०

श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो विशदबोधविदरथा ॥ विद्यारविंदप्रबोधा ॥ परात्ममेयप्रमदा ॥ विलासिना ॥ १॥ नमो संसारतमसूया
 ॥ अपरिमितपरसवीर्यो ॥ तरुणतरुर्वीर्यो ॥ लालनलीला ॥ २॥ नमो जगदरिवलपालना ॥ मंगळमणिनिधाना ॥ सज्जनवनचंदना ॥
 आराध्यलिंगा ॥ ३॥ नमो चतुरश्चिचचकारचंद्रा ॥ आत्मानुभवनेंद्रा ॥ श्रुतिसारसमुद्रा ॥ मन्त्रयमन्त्रथा ॥ ४॥ नमो सभावभजना
 ॥ भवेभक्तुभंजना ॥ विशवाद्वयभुवना ॥ श्रीगुरुराथा ॥ ५॥ तुमचा अनुग्रहागणेश ॥ जे आपुला देसोरसा ॥ तें सारस्वतीप्रवेश ॥ बाळ
 काही आधि ॥ ६॥ जो देविका उदारवाचा ॥ जें उद्देशदनाभिकाराचा ॥ तेन वसस्तथाब्दीचा ॥ पवाडलासो ॥ ७॥ जी आपुलियासूहेत
 ची वागेश्वरी ॥ जरी मुक्यांतें अंगीकारी ॥ तो वाचस्पतीसों करी ॥ प्रबंध होडा ॥ ८॥ हे असो दिठी जयावरी झळके ॥ की हा पद्यकरमा
 था पासवे ॥ तो जीवचिपरितुके ॥ महेशंसी ॥ ९॥ एवढें माहमेचें जयकरणें ॥ तेवाचा बळेवाना वेंकवणें ॥ कासूर्या चिया आंगाउट
 णें ॥ लग्नत असो ॥ १०॥ के उताकल्यतरु वरी पुलारा ॥ कायसा निपाहुणे रक्षीरसागरा ॥ कवणें वासीकापुरा ॥ सुवासदेवो ॥ ११॥ चंद-
 नातें कायस निचचीवें ॥ अमृतातें के उतरांधावें ॥ गगनावरी उपवावें ॥ घडें कवी ॥ १२॥ तें सें श्रीगुरुचे महिमान ॥ आकाशितें के-
 असे साधन ॥ हे जाणो निया नमन ॥ निवात केलें ॥ १३॥ जरी प्रज्ञेचे निआधिलपणें ॥ श्रीगुरुसामर्थ्याक पकरू ह्मणें ॥ तरितें सो-
 निया भिंगरणें ॥ तें सें होइल ॥ १४॥ कासाडे पथर या रजतवाणी ॥ तें सोस्तराची बोलणी ॥ उगिया चिमाथा ठीवि जे चरणें ॥ हेचि भ-
 द्रपद स्मणितलिया साठी ॥ आधवियासीराब्दीची करू निवादी ॥ ह्मणां निरुध्वाजुन सगमी ॥ प्रयागवटजा हालो ॥ १५॥ माणो
 दुधदे स्मणितलिया साठी ॥ आधवियासीराब्दीची करू निवादी ॥ उपमन्युपुटू धूजदी ॥ ठीवली जें सो ॥ १७॥ नातरी वेंकुठपीठनाय-
 के ॥ रसला धवकवनिकें ॥ बुझा विलादें निभातुके ॥ ध्रुवपदाचें ॥ १८॥ तेसी जे ब्रह्मविद्या विद्यारावो ॥ सकळ शास्त्राचा विसंवा-
 णाठ-ओं-२ अग्रनिमः बाल-ओं-४ गुण-ओं-८ हाजी-वागीश्वरी-ओं-११ ऐसाकवणें-ओं-१२ काई-ओं-१६ जी-

७

७

ठावो॥ नैमगवद्दीतावोवियोगावो॥ ऐसेकलें॥ ११॥ जंबोलणियाचेरनीं हुडतां॥ नायकिजेफळिल्याअक्षराचीवार्ता॥ तैवाचाचि
 केलीकल्पलता॥ विवेकची॥ २०॥ होतीदेहबुद्धीएकसरी॥ तैआनंदभांडाराकलीवोवरी॥ मगगीतार्थसौरसागरीं॥ जळशयनजालें
 ॥ २१॥ ऐसेएकदेवाचेंकरणें॥ तैअपारबोलोकेवीभीजाणें॥ नहीअनुवादलोधीटपणें॥ तेंउपसाहिजोजी॥ २२॥ आतांआपुले
 निरुपायसादें॥ मियांमगवद्दीतावोवीप्रबंधें॥ पूर्ववडविनाटें॥ वारवाणिलें॥ २३॥ प्रथमींअर्जुनाचाविषाद॥ हुआबोलिला
 योगविषाद॥ पारसारखबुद्धीसिभेद॥ दाडनिया॥ २४॥ तिजोकेवळकर्मप्रतिष्ठिलें॥ तेंचचतुर्थीज्ञानेसींमगाहिलें॥ पंचमींमग
 व्हरिलें॥ योगतत्वा॥ २५॥ तेंचषष्ठांमाजिप्रगट॥ आसनालागांनिस्पृह॥ जीवात्मभावएकवार॥ होतीजेणें॥ २६॥ तैसीजेयोग
 स्थिती॥ आणियोगग्रंथोजेगती॥ तैआघवीचिउपपत्ती॥ सांगीतलीषष्ठी॥ २७॥ तथावरीसमसीं॥ प्रकृतिपरिहारोपक्रमीं॥
 करूनिभजतिजेपुरुषोत्तमीं॥ नैबोलिलेचाही॥ २८॥ पाटीसममींप्रश्नसिद्धी॥ बोलोनिप्रयाणसमयशुद्धी॥ एवसकळवाक्या
 वधि॥ अष्टमाध्यायी॥ २९॥ मगशब्दब्रह्मीअसरव्याकें॥ जेतुलाकाहीअभिमयापिके॥ तैतुलामहाभारतएकें॥ लसेंजोडे॥ ३०॥
 नित्येआघवाचिजेमहाभारती॥ तैलाभेरुष्याजुनवचनेंकी॥ आणिजेअभियावोगीतैसांनैशतीं॥ तोएकलाचिनवमीं॥ ३१॥ ह्मणो
 निनवमींचियाअभिमया॥ सहसामुद्रालावावया॥ बिहालोंमगमींवायो॥ गर्वकांकरूं॥ ३२॥ अहोगुळासाखरेमालयाचें॥ हेंबाधेत
 रिएकाचिरसाचें॥ परिस्वादगोडयेचें॥ आनआनजेंसे॥ ३३॥ एकजाणोनिंयांबोलती॥ एकतारयदायजाणविती॥ एकजाणेंजान-
 तांहारपती॥ जाणतेंगुणसीं॥ ३४॥ हेंऐसेअध्यायगीतेचें॥ परिअनिर्वच्यनवमाचें॥ तैअनुवादलोहंतुमचें॥ सामर्थ्यप्रभू॥
 ३५॥ अहोएकाचिशारीतपिन्नली॥ एकीसृष्टीवारिसृष्टिकेली॥ एकीपाषाणींवाडैनिउतरली॥ समुद्रीकटकें॥ ३६॥ एकींआकाशें-
 पाव-ओं-२० परिते-ओं-२८ प्रजति-ओं-२९ विधिअथवासंधि-ओं-३० आतां-ओं-३१ अठगपर्वी-ओं-३६ का-

६

६

सूर्योत्तरेण ॥ एकीं बुद्धीं च सागरांतं पारिलं ॥ तैसं मज्जु कथाकरं बालविलं ॥ अनिर्वच्य तु ह्यी ॥ ३७ ॥ परिहंसो एथ ऐसं ॥ श्री-
रामरावणजुझिनलकसे ॥ श्रीरामरावणजैसे ॥ सीनलसमरी ॥ ३८ ॥ तैसं नवमीं कृष्णाचंबालणे ॥ तेनवमीं च्याचि ऐसं मीद्वणें
॥ या निवाडा तलत जाणे ॥ जयागीतार्थ हाती ॥ ३९ ॥ एव नवही अथ्याप दिले ॥ मियां मती सारि सर्वेखाणिले ॥ आतां उतर सर्व-
डउपाइलं ॥ ग्रंथाचें ऐका ॥ ४० ॥ जैथ विष्णु मीथीति वसृती ॥ यस्तु त अर्जुना सांगीजती ॥ तें विद्वद्वार सवृत्ती ॥ ह्यणि पेलकथा ॥ ४१ ॥
देशियेचे निनारपणें ॥ शांत भृंगारा तें जिणें ॥ तरि वों विद्या हातीलेणें ॥ साहित्यासी ॥ ४२ ॥ मूळ ग्रंथीं चियां संस्कृता ॥ वरि मन्हादी
नीट पाहानो ॥ अभिप्राय मानिल्या चित्ता ॥ कवण भूमी हंन चोजवें ॥ ४३ ॥ जैसं आगांचि निरुदरपणें ॥ लेणिया आगांचि हांयलेणें ॥ तेश
अळकारिले कवणें ॥ हें निर्वचें ना ॥ ४४ ॥ तैसी देशी आणि संस्कृत वाणी ॥ एका भावार्थाचा स्वरुपासी ॥ शोष मती ते आयणी ॥
चोरवट आइका ॥ ४५ ॥ उदयलियां भावरूप ॥ करिंतर सवृत्ती चें लागें वडवड ॥ चातुर्य ह्यणें पडपा ॥ जोडलें आह्यां ॥ ४६ ॥ तैसें देश
येचें लावण्या ॥ हिरो निरसां आपिलें तारुण्या ॥ मगर चिलें अगण्या ॥ गीतातत्व ॥ ४७ ॥ जांचराचर परमगुरु ॥ चतुरा चित्तचमत्कर ॥
तो एका यादवें श्वर ॥ बोलता जाहाला ॥ ४८ ॥ ज्ञान देवान वृत्तीचा ह्यणें ॥ तैसं बोललें श्रीहरी तें ॥ अजुन आथविया चिमातु अंतःक
रणें ॥ धडोता आहसी ॥ ४९ ॥ म्हणो ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भूय एव महाबाहू शुभं परमवचः ॥ यत्ते हं प्रीयमाणा यव
स्थामिहितकाम्या ॥ १ ॥ टी ॥ आहो मागील जें निरूपण कलें ॥ तें तुझें अवधान चिपाहिले ॥ तंव तें चें नव्हे भलं ॥ पुरतें आहो ॥ ५०
घटी थोडें उदक घालिजे ॥ तें नंगळें तरि वरिता मारिजे ॥ ऐसापरि सांनिपाहला सिंतवणिस विजे ॥ ऐसें चिह्न होतसे ॥ ५१ ॥ तयाव
री सर्वस्व सांदिजे ॥ मग चोरवतरी तो चिमांडारी कीजे ॥ तैसा किरीतुं आतां माझें ॥ भिजधाम की ॥ ५२ ॥ ऐसें अजुन जवसे वरें ॥
पाठ अँ ॥ ३० नेंणत्या अँ ॥ ४३ उचित अँ ॥ ४६ उवाल्या वडप.

पाहोनिबोलिलोंअत्यादें॥गिरीदेखोनिस्फुरे॥मेघजैसा॥५३॥तैसाकृपाकुवाचारावो॥झणेआइकेंगामहाबाहो॥सांगीत
 लाचिअभिप्रावो॥सांगेनपुढती॥५४॥पैंमतिवर्षीक्षेवंपरिजे॥पिकाचीजरीवाढीदेखिजे॥याळागीनुबगिजे॥वाहोकरिता॥५५॥
 पुढतपुढतीपुढेंतां॥जोडेबाभियेचीअधिका॥झणोनिमोनेपांडुसूता॥शांधुचिआवडे॥५६॥तैसाथपार्थो॥तुजआफ़रना
 होसवथा॥आह्मीअपुलियाचिस्वाथो॥बोलीपुढती॥५७॥जैसाबाळानेवावेंजेलोण॥तयाप्रमाणेबाळकाइजाणे॥पैंभितेसु
 र्वाचेसोहकेमोराणें॥माउलियोढी॥५८॥तैसेतुझोहितआयवें॥जंवजकांतुजफावें॥तंवतंवआमुचेंसुरवदुणावें॥ऐसेआ
 हे॥५९॥आतांअर्जुनाअसोहोवकडी॥मजउघडतुझीआवडी॥झणोनिनवमीचीसवडी॥बोलतोनापडे॥६०॥आह्मायेतुलिया
 चिकारणें॥तैंचिनेतुजशीबोलणें॥परिअसोहेंअंतःकरणें॥अवधानदेइ॥६१॥नरीऐकेंऐकेंगासवमो॥वाक्यमाझेंपरमा॥जें-
 असरेंलेउनिपरब्रह्म॥तुजसेवासिआलें॥६२॥परिकरीदीतूंमातें॥नेणसीनाभिरुतें॥नरितोगाजोमीएथें॥तैंविश्वचिहें॥६३॥
 म्लो०॥नमोविदुःस्मरणाःप्रभवन्महर्षयः॥अहमादिहिंदवानांमहर्षीणांचसर्वशः॥२॥दी०॥एथेवदमुकेजाहाले॥मनपव-
 नपापुळले॥रतीविणभावळले॥रविशशीजियो॥६४॥अगाउदरीचिगर्मजैसा॥नदेखेअपुलियेमायेचीवियसा॥मीआववेयादे
 वातैसा॥नेणवकाहो॥६५॥आणिजळचराउदधीचिमान॥मशकानोलांडवेचिगगन॥तेवोमहर्षीचेंज्ञान॥नदेखेचिमातें॥६६॥
 मीकूवणपांकेतुला॥कवणाचाकेंजाहाला॥याभिरुनीकरितांबोला॥कल्पंगेलें॥६७॥कोजेमहर्षीआणियादेवो॥येरांभूतजातो
 सर्वो॥मोचिआदिझणोनिपांडवा॥अवयजाणतो॥६८॥उतरलेंउदकपर्वतवळ्यो॥जरीझाडवातमुकीलागे॥नरीमियाजाले-
 निजणें॥जाणिजेमातें॥६९॥कांगांभेवनेवदगिवसवे॥जरीतरंगीसागरसांदवे॥कांपरमाणुमाजीसमा॥भूगोळहा॥७०॥त-
 पाठ-ओं-६७७येगेंढी-ओं-७००गांभे-

शिभयांजलिस्मृतीनां॥ महर्षीअथवादेवां॥ मातंजाणावयाहोआवा॥ अवकाशगा॥ ७१॥ ऐसाहीजरीविपाये॥ सांडनिपुढीलपाये॥
 सर्वैदियांसिहोय॥ पाठिमारजा॥ ७२॥ नमअलिमसर्वासी॥ स्वयेंअलिमहोणंनमासी॥ हेंचिमहाभूतांचियाभाथयासी॥ चटण
 साच॥ ७३॥ प्रवर्तलाहीवेंगाबिहुंडा॥ देहसांडनिमागलीकुंडा॥ महाभूतांचियाचंदे॥ माथियावरी॥ ७४॥ श्लो०॥ योमामजमनादि-
 चवेंतिलोकमहेश्वरमु॥ असमृटःसमंयपुसर्वपापैःप्रमुच्यते॥ ३॥ टी०॥ तेथराहोनिवायाठकें॥ स्वप्रकाशचोगे॥ अजलमार्गदे-
 रेवें॥ आपुलिवाडोळा॥ ७५॥ मीअर्दसोंपरा॥ सकळलाकमहेश्वर॥ ऐसियासातेंजोनरा॥ यापरिजाणें॥ ७६॥ तोषाणमाजिपरिसा॥ जसारसाआन
 भिद्धरसा॥ तेसासमुषाआंतनोअंश॥ माझाचिजाणा॥ ७७॥ तेंचालुतेंज्ञानाचेंबै॥ तयाचेंअवयवतेंसुखाचेंकोभा॥ येरमाणुसपणानेसां
 बा॥ लौकिकभागा॥ ७८॥ अगाअवचिंतकापुरा॥ माजिसांपडलाहिरा॥ दरीपांडुलियानरा॥ नागवेकाही॥ ७९॥ तेंसामनुष्यलोकाआन
 ॥ तोजरीजाहालाभारुत॥ तन्हीप्रकृतिदोषाचीमात॥ नोणचिकी॥ ८०॥ तोआयमथेचिसोडिजणपी॥ जेसाजळतचंदनसपी॥ तेंविमाने-
 जाणेंसकन्यी॥ वज्रनियापें॥ ८१॥ तेंचिआमुतेंकेंसोजाणिजे॥ ऐसेकल्यार्जगीचिचतुझी॥ तरीमीऐसाहंमाझी॥ भावेंकें॥ ८२॥ जेंवेग-
 ळालियाभूती॥ सारिवेंहोडनिप्रकृती॥ विरपुरलेंआहेचिजगती॥ आघाविया॥ ८३॥ श्लो०॥ बुद्धिज्ञानमसमोहःक्षमास्तयंदमःश-
 मः॥ सरवदुःखंभवोभावोभयप्रथममेवच॥ ४॥ अहिंसाभमतातुष्टिस्तपादानंयथायथा॥ भवेंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्वि-
 धी॥ ५॥ टी०॥ तेथप्रथमजाणबुद्धी॥ मगज्ञानजोनरवधी॥ असमाहसहनसिद्धी॥ क्षमास्त्य॥ ८४॥ मगशमदमदोन्हो॥ सु-
 खदुःखवर्तनजनी॥ अर्जुनाभावाभावमानी॥ हेभावाचिमाजी॥ ८५॥ पंपयआणिनिर्मयता॥ अहिंसाआणिसमता॥ तुष्टि-
 तपपांडुसुता॥ वोळखतू॥ ८६॥ अगायथाआणिअपकाती॥ हेजेभावसर्वचरदस्ती॥ तेमजचिपासूनिहंती॥ भूताचियादा
 पाठ॥ ओ० ७८ बीज, परी, पणाची, लोकाचियाचिमागा॥ ओ० ७९ नीगजेतंथ॥ ओ० ८० नीगजेतंथ॥ ओ० ८१ नीगजेतंथ॥ ओ० ८२ नीगजेतंथ॥ ओ० ८३ नीगजेतंथ॥ ओ० ८४ नीगजेतंथ॥ ओ० ८५ नीगजेतंथ॥ ओ० ८६ नीगजेतंथ॥ ओ० ८७ नीगजेतंथ॥ ओ० ८८ नीगजेतंथ॥ ओ० ८९ नीगजेतंथ॥ ओ० ९० नीगजेतंथ॥ ओ० ९१ नीगजेतंथ॥ ओ० ९२ नीगजेतंथ॥ ओ० ९३ नीगजेतंथ॥ ओ० ९४ नीगजेतंथ॥ ओ० ९५ नीगजेतंथ॥ ओ० ९६ नीगजेतंथ॥ ओ० ९७ नीगजेतंथ॥ ओ० ९८ नीगजेतंथ॥ ओ० ९९ नीगजेतंथ॥ ओ० १०० नीगजेतंथ॥

यौ॥८७॥ जैसीभूतेंआहातीभिनीनी॥ तैसंचिहहीचेगकालेंसानी॥ एकउपजतीमाझाज्ञानी॥ एकेनेणतीसातें॥८८॥ प्रकाश
 आणिकडवमे॥ हेसूर्याचिस्तवजेंसे॥ प्रकाशउदर्यादिसे॥ तमअस्तसी॥८९॥ आणिमाझेजाणणेंनेणणें॥ तेंतवभूतांचियाभी
 वांचेंकरणें॥ ह्यणांनिभूतीभावाचियाहोणें॥ विषमपडे॥९०॥ यापरीमाझियाभावों॥ हेजीवसृष्टिआहेआघवी॥ शुतलेअसे
 जाणावी॥ पांडुकुमरा॥९१॥ आतांदेजेसूर्यचिपालक॥ ज्यांआधीनवर्तेतीलोका॥ तैअकराभावआणिक॥ सांगेनतुज॥९२
 अली०॥ महधयःसमपूर्वचत्वारंगनवस्तथा॥ मद्रावासानसाजातायंलोकाः॥९३॥ दी०॥ तरीआघवाचिगुणीवृद्ध
 ॥ जेमहाविंभाजिप्रबुद्ध॥ कश्यपादियभिक्ष॥ समभूषीगा॥९४॥ आणीकहीसांगिजतील॥ जेकांचोदाआंतुलमुदल॥ स्वयं
 मुखवाडिल॥ चारीभनु॥९५॥ ऐसेहैअकरा॥ माझामनींजाहांकेधनुर्धरा॥ सूर्यचियाव्यापारा॥ लागोनिया॥९५॥ जैलो-
 कांचिव्यवस्थानपडे॥ जेयात्रिभुवनाचेंकोहीनमोडे॥ तैमहाभूतांचेंदेऊवाडे॥ अचुंबितअसे॥९६॥ तैचिहेजाहाले॥ मगइ-
 हींलोककेंले॥ तथअथदरचूनिदेविले॥ इहीजन॥९७॥ ह्यणांनिअकराहींदराजा॥ मगयेरजगयांचियाप्रजा॥ एवंचिषव
 विस्तारहामाझा॥ ऐसंचिजाण॥९८॥ पाहेंपांआरंभीनीजगकेंले॥ सगतांचिविरूढियांबुडेंजाहालें॥ बुडोंकोंप्रानियाले॥
 रयांदियांचे॥९९॥ रयांदियांप्रास्तूनिअनेका॥ कुटिलिन्यानांशारवा॥ ज्ञानवस्तवदेखा॥ पलुवपनि॥१००॥ पल्लवीफूलफळ
 ॥ एवंचिस्तवजाहलेंसकळा॥ तैनीयांरिअवकवळा॥ तंववीजांचेचिआयें॥१०१॥ तैसामीएकचिपहिलें॥ मगमीतेंचिमनांतव्या
 लें॥ तथसतत्रपेआणिजाहाल॥ चारीभनु॥१०२॥ निहोविंधुंधुंकांनिमिने॥ लोकांलोकपाळवेगळाले॥ लोकपाळीवाढ
 विले॥ प्रजाजाते॥१०३॥ ऐसंनिहोविंधुंधुंकांनिमिने॥ मीचिचिस्तारिलोसांनिरुतें॥ यरिभावांचिनिहांते॥ मानेजया॥१०४॥ अली०॥
 पाठ-ओं१० देवांचे-ओं११ बुद्धन-ओं१०० शारकोपशास्त्रा

एतां विष्णुर्नियोगं च मयैवेति तत्त्वतः ॥ सोऽधिकं पनयोगेन युज्यते नान्न सशयः ॥ ७॥ टी० ॥ यालागि सुभद्रापती ॥ हे भवइयामां श्रिया वि-
 भूती ॥ आणियां चिया व्याप्ती ॥ व्यापिलें जगा ॥ ८ ॥ द्यणो निगाया परी ॥ ब्रह्मादिपि पलिका वरी ॥ मीवांचूनि दुसरी ॥ गोष्टी चिनाही ॥ ६ ॥ ए-
 से जण जो साचे ॥ तथाचे शिरे जाहाले ज्ञानाचे ॥ द्यणो निउत्तमाधम भेदाचे ॥ समनदेखे ॥ ७ ॥ मीमांशिया ग्रिभूती ॥ विभूती अधिष्ठ-
 लिया व्यक्ती ॥ हे आघवे योग्य तर्ती ॥ एकचि मानी ॥ ८ ॥ द्यणो निनिः शक्ये ये महायोग ॥ मज्जमालें मनार्चने आंगे ॥ एथ सशय क-
 रणे न लगे ॥ तौ त्रिभुद्धी जाहाला ॥ ९ ॥ कां जे ऐसे करीती ॥ माते भजे जो अमदादीती ॥ नयांचिये मज्जनचे नादी ॥ मीचिलुभो ॥ १० ॥
 द्यण उनि अभेदे जो भक्ति योग ॥ तेथ शंका नाही नये रवंग ॥ करिते तेलाने रीचागा ॥ तें सांगी नलें घटी ॥ ११ ॥ तेंचि अभेद केसा ॥ हे-
 जाणावया मानसा ॥ सादर जाला तरी पयेसा ॥ बोलें जल ॥ १२ ॥ म्हो ॥ अहसर्वस्य मप्रवो मन्तः सर्वे नृवर्तते ॥ इति मत्वा भजंते-
 मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ टी० ॥ तरुमीचि एकसर्वा ॥ याजगा जन्म पाडवा ॥ आणिमज्जचि पास्सुनि आयवा ॥ निवाहयंचा ॥ १३
 ॥ कल्लो कभाळा अनेगा ॥ जन्मजळा चि पेंगा ॥ आणितया जळा चि आययतरंगा ॥ जीवनही जळा ॥ १४ ॥ ऐसें आयवांचि दायी ॥ त-
 यां जळा चि जे विपाही ॥ तें सांभीवांचूनि नाही ॥ विश्वांडय ॥ १५ ॥ गंशिया व्यापकाभाते ॥ मान्नि जे नजनी भलनेये ॥ परिसाचो का-
 रे उडितें ॥ प्रेमभावे ॥ १६ ॥ देश काळ वतमान ॥ आघवं मज्जसीं करुनि अभिन्न ॥ जें सावायुहो उनि गगन ॥ गगनीं चि विचरे ॥ १७
 ॥ ऐसें निजे निजज्ञानी ॥ खेळत सुखें प्रभुवर्नी ॥ जगद्रुपा मनी ॥ सातु उनि साते ॥ १८ ॥ जें जे भेदें मृत ॥ तें तें सांनिजे भगवत ॥ ह्या भ-
 क्तियोगा निश्चित ॥ जाणमाझा ॥ १९ ॥ म्हो ॥ मच्चित्तमिदं न माणा बीधयः न परस्परम् ॥ कथयतश्च मान्नि तेषां निश्चयं निश्चरमाति च ॥
 १॥ टी० ॥ चित्ते मीचि जाहाले ॥ मियें चियाणें थोले ॥ मग जो वंभरा विसरले ॥ बांधा चिया भुली ॥ २० ॥ मग नया बांधाचे निमजें ॥ ना-

चतीसंवादसुखाचीं भोजे ॥ आतां एकमेकां धेपें दिजे ॥ बोधचि वरी ॥ २१ ॥ जैसी जिवि कुंचेचीं सरोवरें ॥ उचंबळालियां कालवनी परस्परें ॥
 ॥ भगत रंगासीं धक्कारें ॥ तरंगांचि होती ॥ २२ ॥ तें सोये रे रां चियो भिळणी ॥ पडत आनंद कळ्हाळाची विणी ॥ तें थें बोध बोधाचीं लेणी ॥
 बोधाचीं मरी ॥ २३ ॥ जैसं सुये सुया तें वोंगाळिलें ॥ कीं चंदें चंद्रम्या क्षम दीधलें ॥ नातरीं सारिं सोनि पाडें भिनले ॥ दोनी वाया ॥ २४ ॥ तें
 सें प्रयाग होत साभर स्याचें ॥ वरी वांसागत रत सांवि काचें ॥ तें संवा दचतु यथीचें ॥ गणेश जाहाले ॥ २५ ॥ तें व्हांत या म हा सुखाचें
 निभरें ॥ धवो निंद हा चिया गावा बाहरें ॥ मिया धालें तें उ हारें ॥ लागतीं गाजो ॥ २६ ॥ पेंगु रुशिष्या चिया एकांनीं ॥ असं राएकाचि
 वदती ॥ तें मया चिया परीं निज गती ॥ गजनीं संघ ॥ २७ ॥ जैसी कसल कळिका जालें पणें ॥ तदर्थी चिया मकर दोंतरा खों नेणें ॥ दे राया
 रंका पारणें ॥ आमोदाचें ॥ २८ ॥ तें सोंचि मांनं विश्वी काथिता ॥ कथितें निनां पंकथूं विसरत ॥ भगत या विसरा माजि विरत ॥ आंगें जिवें ॥
 २९ ॥ ऐसं भमांचें नव हुव सपणें ॥ नाही राती दिवां जाणणें ॥ केलें माझं सुख अव्यय बाणें ॥ आपण पें जिही ॥ ३० ॥ ज्यो ॥ तें वांस्तत सु
 क्तानां भजनीं प्रीति पूर्व कस ॥ ददां मनु दिगंत येन मा मुपयां निते ॥ ३१ ॥ दी ॥ तया भजे आहो काही ॥ द्यावें अनुना पाहीं ॥ ते दान
 थिं चि चिनिही ॥ येतलीं संल ॥ ३२ ॥ कांजें जिया वादा ॥ न गालुं गा सुसदा ॥ तें सोय पाहो नि आळां ता ॥ स्वर्ग पवर्ग ॥ ३३ ॥ ह्यणों नित ही
 जें मय भरिलें ॥ तें चि आमूचें टें उपाइलें ॥ परि आहो देया वें तें ही केलें ॥ तिही ह्यणि पें ॥ ३४ ॥ आतां या वरी येतु ले घडे ॥ जें तें चि सुख
 आगळें वादें ॥ आणि काळाची हृष्टी न पडे ॥ हें आहो काणें ॥ ३५ ॥ नुकें चिया बाळु काकिरी दी ॥ गंव सणी करूनि स्नेहा चिया दि
 दी ॥ जैसी खळतां पाटा पाटी ॥ माउली धावें ॥ ३६ ॥ तें जो जे खेळ दावी ॥ तो ना पुढें सोनयाचा करूनि देवी ॥ तें सी उपासीची पद
 वी ॥ पोषित मी जायें ॥ ३७ ॥ त्रियं पदवी चि नि पांय कें ॥ तें मांनं पावनी यथा सुखें ॥ हे पाळनी मज विशे रे ॥ आवडे करूं ॥ ३७ ॥ पें

पाठ ॥ ओं २३ जवळि केचि ॥ ओं २३ मळणीं वांघ ॥ ओं २४ खेंव ॥ ओं २७ जंझरा ॥ ओं ३० पया ॥ ओं ३३ हें ॥

गाभक्तासिमाझेंकोण॥ मजतयाचेंअनन्यगतीर्त्तचाड॥ कांजेंमळान्चेंसांकड॥ आमुचियापरी॥ ३८॥ पाहेंपांस्वर्गमोक्षउपाय
ले॥ दोन्हीभागतयांचियवाहणीवले॥ आर्हाआंगर्हासूर्याचिचले॥ लक्ष्मियेसि॥ ३९॥ परिआणणंपेवीजएक॥ तेतेसोचिसुखसा
जुक॥ संपेभालागिदख॥ देविलेंजतन॥ ४०॥ हादायवर्गीकरादी॥ आर्ह्यायेमळयेवोआणण्यासादी॥ याबोलीबोलावियागोष्टी॥
तेभियानव्हतीगा॥ ४१॥ श्लो०॥ तेंपासेदुानुकरायमहमानजंतम॥ नाशायान्यभावरथाज्ञानदीपेनभांस्तन॥ ११॥ दी०॥ द्विणी
निमजआत्मयाचाभाव॥ जिहीजियावयावल्गदाव॥ राक्षसीवाचुनिबाव॥ येरमांनिले॥ ४२॥ तयातन्वज्ञांचेरवतां॥ दिवीपेनासाची
सुप्तता॥ भगमीचिहोउनिदवता॥ पुढापुढाचाले॥ ४३॥ अज्ञानाचेंरान्ती॥ भाजितमार्चाभिन्कणीदोटती॥ तेनाशूनिघालीपरो-
ती॥ तयांकरीनियोदया॥ ४४॥ ऐसेंयेमळचेनिमयांसं॥ योलिलेजयपुरूसोत्तम॥ तेचअर्जुनमनोरंम॥ निबालेंद्विगतसा॥ ४५॥ हाहोजीअवथा
रा॥ भलाकरफोडिलासंसार॥ जाहलाजाननीजहरजोहर॥ वेगळाग्रभ॥ ४६॥ जोजन्मलुगणाआपुले॥ हेआजमियाडोळतखिले॥ जीवित
हाताचढे॥ ओवडेंतसे॥ ४७॥ अजिआयुयांजुजवज्जोहाला॥ माझयादवादेशाउदयली॥ जेवाक्यकृपालाधन्दी॥ देविकांनिमु-
खे॥ ४८॥ आतांयेणेंवननंतजाकरें॥ गढलेआंतिलेहादेईलआधरें॥ द्युणीनंदरवतसंसांचाकरें॥ स्वरूपतुझे॥ ४९॥ श्लो०॥
॥ अर्जुनउवाच ॥ परब्रह्मपरमभयविघ्नपरमभावान्॥ पुरुषशाश्वतद्विद्याभांदेवमजविभुश॥ ११॥ दी०॥ तरिहंसांगान्परब्र-
ह्म॥ जेंयामहाभूतोविरावतेंधाम॥ पवित्रतुंपरम॥ जगन्नाया॥ ५०॥ तेंपरमदवर्तनिहोदवा॥ तेंपुरुषजपंचविखावा॥ दिव्यतुंय
कृतिभावा॥ पैलोकडील॥ ५१॥ अनादिमिहृतुंस्वामी॥ जोनाकाळजसोजन्मभो॥ तावूहोआर्ही॥ जाणितलेंआतो॥ ५२॥ तेंया
कालत्रयासिसूत्री॥ तूजीवकळेंअधिष्ठात्री॥ तूब्रह्मकटाहधारी॥ हेंकळुपुढे॥ ५३॥ श्लो०॥ आहुस्वाम्ययःसर्वदेवर्षिवारद-
पावः ओ० ३८ आसुतें ओ० ३९ शेषा ओ० ४१ योलिजन ओ० ४४ मिहकृणी ओ० ४७ उडवत असे ओ० ४८ उजवणी ओ० ५० नाश ओ० ५२ धर्मी ओ० ५३ यंत्रासि-

स्तथा॥ असितो देवलो व्यासः स्वयंचैव ब्रवीषि मे॥ १३॥ टी०॥ पैंआणी कहीएकंपरी॥ इयेयतीतीचियेतसेथोरी॥ जेमागेंसैंचिक्क
 षेधवरी॥ सांगीनलेतुतें॥ ५४॥ परितयासांगितानियाचेंसाचपणा॥ हेंआतांमाझेदेसतसेअंतःकरण॥ जेकराकेलीअपणा॥ ह्य
 णीनिदेवा॥ ५५॥ येन्हवीनारदुअसइजवळाये॥ तोहीऐसंचिवचनीमाये॥ परिअथनवुजोनिठायो॥ गीतसुखचिऐको॥ ५६॥ जो
 ओंखेयाचागांवी॥ आपणपपगाटलरवी॥ तारिनिहोंतपलीचिआवी॥ वोंचुनिप्रकाशकचा॥ ५७॥ पोरदेवर्षिअभ्यासगानां
 ॥ आइचरागांसीजमधुरता॥ तेंचिफावेयेरचिता॥ ननुगंचिकांही॥ ५८॥ पैंआसितां देवलाचेंनसुखें॥ मीएवंविधियांतुतेंआ
 इकें॥ पारितेंबुद्धीविषयविरवें॥ यारिलीहोती॥ ५९॥ विषयविषाचापडियाइ॥ गाडपरमायेलागेकडु॥ विषयतेगोडु॥ जीवासिजा
 हाळा॥ ६०॥ आणिहेंआणिकाचेंकायसांगावें॥ गारुकाआपणचियेंइनिव्यासदेवें॥ तुझेस्वरूपआयवें॥ सर्वदासांगिजे॥ ६१
 परितेआंधारींचेंतामणीदेखिला॥ जेविनळेंयाबुद्धीउगंधिला॥ पाटीदिनोदयीचोळखिला॥ होयह्यणोनि॥ ६२॥ तेंसोव्यासा
 दिकाचेंबोलणी॥ तैयामजपाशींचिद्रव्हाचियास्वर्गा॥ परिरुपेक्षित्याजाहोनियातरणी॥ तुजवीणकृष्णा॥ ६३॥ म्हेलो०॥ सर्वमे
 तइतंमन्येयच्यावदभिकेशवा॥ नहिंतेभगवन्त्यक्तिविदुर्देवानदानवा॥ १६४॥ टी०॥ तेआतांवाक्यसूयकरतुझेफाकले॥ आणिअ
 धीनीमागेंहीतेजकथिले॥ तयाआघवयेंचेंचिफ्रितलें॥ अनोळखपणा॥ ६४॥ जीज्ञानाचेंबोजतंतवयाचेबोले॥ माजिन्दुदयभूमिके
 पडिलेसरबोले॥ वरिइयेरुपचीजाहालीवोले॥ ह्यणोनिंसावदफळेंसीउठिले॥ ६५॥ श्रीकृष्णावाक्यसंवादें॥ फुलीआलेमकरदें॥
 तेंफळजीविनोदें॥ दिधलेंभज॥ ६६॥ अहानारदादकासेता॥ त्यांचियाशुक्तिरूपसरिता॥ मीमहोदधीजाहालोअनंता॥ संवाद-
 सरवाचा॥ ६७॥ प्रसुआघवेनियेणजन्मे॥ जियेंपुण्येंकलोभियाउत्तमें॥ तयाचैनतकतीचिअंगीकामें॥ सहुरुतुवा॥ ६८॥ येद
 पाठ-ओं-५७ हांगा-ओं-५८ येन्हवीं-ओं-५९ विधा-ओं-६० कडु-ओं-६१ तियाणसो-ओं-६२ अर्घीमागे-

छ

५

वीचंडिलवडिलांचे निमुखें ॥ मीसदांतुं तू कांनीं आइकें ॥ परिकृपान किजें चितुवां एकें ॥ तं वनेणें वें चिकाही ॥ ६१ ॥ द्यणो निभाय जें सातु-
 कूळ ॥ जालियां केलें उद्यम सादास फळ ॥ तें संश्रुतार्थ तसकळ ॥ गुरुदया माच ॥ ७० ॥ जीवन कर झडें सो जी वें साटी ॥ पाडि जचें काटी-
 आटी ॥ परि फळें सीतिं विभटी ॥ जें वें संत पावे ॥ ७१ ॥ अहो विषमा जें वो हटपडे ॥ तें मधुर तें मधुर आवडे ॥ पिर साय नें तें गोडे ॥ जें आरो रो-
 देही ॥ ७२ ॥ कांदें द्रियें वाचायाण ॥ याजा मियांचें तें चिरार्थ कपण ॥ जें चेतन्य यंत्रि नि आपण ॥ मंचर माजी ॥ ७३ ॥ तें संशब्द जंत आ-
 लोडिलें ॥ अयवा योगादिक जें अभ्यासि ॥ तें तें चिद्वर्णाये आपुल ॥ जें रा नुक्क मी पुरु ॥ ७४ ॥ ऐस यजालिये यतीनी चें निभजें ॥
 अर्जुना निश्चय नाचत भोजें ॥ तें वी चिद्वर्णाये वातु झी ॥ वाक्य मज मानलें ॥ ७५ ॥ तरि साचि हें कें वल्य पती ॥ मज विभु श्री ओली म-
 तीती ॥ जें तें देवां दान वांचिय मती ॥ जोगान दुरी ॥ ७६ ॥ मुझे वाक्य व्यक्ती न येत देवा ॥ जो आपुलिया जाण जाणिवा ॥ तों कही चि-
 नो हे हें सद्वा ॥ भरें वें सनि आलें ॥ ७७ ॥ म्दो ॥ राय म वात्मनात्मन वल्य न्य पुरुषात्म ॥ भूत भावन भूत शब्द वदव जागस्पते ॥
 १५ ॥ टी ॥ एथ आपुलें वाडपण जें सें ॥ आपणा चिजाणिज आकाश ॥ कामीय तुदीय न वद सें ॥ पृथ्वी चिजाणें ॥ ७८ ॥ तें सा आपु-
 लिये सर्व शक्ति ॥ तुज तूं चिजाण सील क्षमापती ॥ येर वें दारिद्र्य मती ॥ मिर वती वायो ॥ ७९ ॥ हागा मन तें मागां सांडावें ॥ पवन तें वावी-
 मवावें ॥ आदि धन्य उतर निजावें ॥ कुतें वाही ॥ ८० ॥ तें संहनु झे जाणें आह ॥ द्यणो नि कोणा हीं ठावें को न हो ॥ आतां तुं झे ज्ञान हो-
 ये ॥ तुज चिजो ॥ ८१ ॥ जी आपण यात नूं चिजाण सी ॥ आणिका तें सांगावया हीं समर्थ हो सी ॥ तरि आतां एक वळ धाम पुसी ॥ आ-
 ती चिये निडकीचा ॥ ८२ ॥ हे आई किलें की भूत भावना ॥ त्रिभुवन गज पचनना ॥ सकळ देव देवता चिना ॥ जग भायका ॥ ८३ ॥ जरी
 शरीर तुझी पाहत आहो ॥ तरि पासी उभे ठाकावया ही याग्य नो हो ॥ या शौच त जरी गिन वृं बिहो ॥ तरि आन उपाय नाही ॥ ८४ ॥ भ-
 पाठ ॥ ओ ॥ ७१ जीवन कर ॥ ओ ॥ ७४ ब्रह्म ॥ ओ ॥ ७६ आलें ॥ ओ ॥ ८२ पयातें ॥ ओ ॥ ८४ शाब्दना ॥

रलेसमुद्रसरित्तचहूंकड॥ तन्निंबापियासिंक्रूरड॥ कांजंमपोनिथेंबुरापड॥ तेंपाणिकीतया॥ ८५॥ तेंसंयंगुसर्वत्रआर्थो॥ प-
रिच्छयाआद्याचंचिगती॥ हेंअसंमजप्रती॥ विभूतिसांगो॥ ८६॥ ॐ॥ वक्तुमहस्यशेषेणादिव्याख्यासीविभूतयः॥ याभिर्वि-
भूतिभिर्लोकानिमास्त्वव्याप्यतिष्ठति॥ १६॥ टी०॥ जोतुझियाविभूतीआघविया॥ परिव्यापितीशक्तिदिव्याजिया॥ तियाआपु-
लियादावाविया॥ आपणमज॥ ८७॥ जिहीवैभूतययासमस्तां॥ लोकांतव्यापूनिआहासीअनंता॥ तियाप्रधानानामांकितो॥ प्र-
गटाकुरी॥ ८८॥ ॐ॥ कथविद्यामहयोगिस्त्वासदापरिनिंतयन॥ कंफुकुचुप्रभावेयुचिंत्यासिभगवन्मया॥ १७॥ टी०॥ जीकैसंभि-
यांतुतेजाणावे॥ कायजाणोनिंसादोचिंताये॥ जरीतुचिद्वर्णोआघवो॥ तीरिचिंतचिनघड॥ ८९॥ द्दवर्णोनिमागाभावजसे॥ आपुले
सांगीतलेतुवाउहेशे॥ आतांविस्तारोनिंसे॥ एकवेळबोले॥ ९०॥ ज्याजयाभावाचियाठायो॥ तुतेंचिंतितांमजसायासनहो॥
तेविकककरूनिददे॥ यांगआपुला॥ ९१॥ ॐ॥ विस्तरणाल्मनायोगोविभूतिंचजनादन॥ भूयःकथयतुनिर्दिष्टपूजतोना
स्तिभेभूतम्॥ १८॥ टी०॥ आणिपुसालियाजियाविभूती॥ त्याहीबोलावियाभूपती॥ एयद्दवर्णसीजरीपुदती॥ कायसांगो॥ ९२॥
तरीहभावमना॥ द्दवर्णजायहोजनादना॥ पंप्राकृताहोअमृतपाना॥ नानद्दवर्णवेजेवी॥ ९३॥ जेंकाळकूटाचंसहोदरा॥ जेंमृल-
भेणेंप्यालेअमरा॥ तरिदेहाचेपुरदरा॥ चोदाजानी॥ ९४॥ एसाकवणाएकदीराखीचारसा॥ जयावायांचिअमृतपणाचाआभास॥ त-
याचाहीभोवश॥ जेंपुरद्दवर्णानदी॥ ९५॥ तयापावळयाहियेतुलवरी॥ गोंडियोचिआथिथोरी॥ मगहंतवअवधारी॥ परमाभूत
साचे॥ ९६॥ जेंमंदराचकनूदाकिता॥ क्षीरसागरनडहुकता॥ अनादिसंभावना॥ आइतंआहो॥ ९७॥ जेंअवणाद्वानळवळ-
जेथनेजतीरसंगंधा॥ जेंमलनयाहीसिद्ध॥ आठवलचिफावो॥ ९८॥ ज्याचीगोंठीनिंएकतरवेयो॥ आपवांससारहासवावो

वक्त्या नित्यनालागं येषां ॥ आपयं पथा ॥ ११ ॥ जस्य मूल्यं च भाषं ॥ हारपां निजाद्यनिःशेषं ॥ आंतबहोरिमहासुखं ॥ वादोचलागं ॥ २० ॥ मगदवगत्याजरीयं वज्रं ॥ तरितं आपणं चिदादेनिटाकिजं ॥ तंतुजलं तोचिन्मामादो ॥ पुरद्वणानशकं ॥ १ ॥ तंवतु द्वेजामचि
 आह्वा आवडं ॥ वशिभेदी हाथ आगिजयादि वज्रोड ॥ वादीगोठं सायसो सुरवाडं ॥ आनेराचनी ॥ २ ॥ आतं हं सरवकायिसयासा
 शिरवें ॥ कोर्ही नवंचेनामजपरितोरे ॥ वरिधेचुलजाणं जयणपुखं ॥ पुनरुक्तहाहं ॥ ३ ॥ हांगा मूर्यकायिषा ॥ अग्निद्वणोये
 त आहं वाविका ॥ कोनित्यवाहतयागं गाजळा ॥ पागसं पणअंसं ॥ ४ ॥ जंतुद्विआणि कयावरें बोलिले ॥ हं आह्वा नादासिरुपर
 रिखले ॥ आजिचंदनतरुची फुले ॥ तुरबात आह्वामी ॥ ५ ॥ तथापार्थी चियाबाला ॥ सवोगंधो रुध्या डालळा ॥ द्वणभक्ति ज्ञानांमिजा
 हाळा ॥ आगरहा ॥ ६ ॥ ऐसापतिकराचियातापाआत ॥ प्रमाच आघउचवळत ॥ सायासयावरु निअनत ॥ कायबोले ॥ ७ ॥
 ष्ठो ॥ ॥ श्रीपागवानुवाच ॥ ॥ हंत ते कथयिष्यामी दव्यान्धात्मा विभूतयः ॥ आधान्यतः कुरु अष्ट नांस्त्यतो विस्तरस्य मे ॥ ११
 ॥ १ ॥ मीपितामहाचापिता ॥ हं आढवितां हीनातुर्विचि ॥ काद्वणतसपाइरुता ॥ भलं कले ॥ ८ ॥ अजुनांत बाह्मण एकाही ॥
 आह्वाविस्मोकरावयाकारण नाही ॥ आंगंतोलेकरुकाई ॥ नव्दं चिन्दाच ॥ ९ ॥ परिप्रस्तुत ऐसं असे ॥ हं करवी आवडीचा अतिसो ॥
 मगद्वण आदकें सागतसो ॥ धनुधरा ॥ १० ॥ तरतुवापुसलिया विभूती ॥ तथाचें अपारपण सुभद्रापती ॥ जमाद्वियाचिचिपरीमाद्विये
 नी ॥ आकळतीनां ॥ ११ ॥ आर्गीचियारोमाकिती ॥ जयाचियातयासिनगवती ॥ तोसयामाद्वियाविभूती ॥ असंख्यमज ॥ १२ ॥ ये
 रवींतरीमैकें साकेवदा ॥ द्वणोनि आपणपयांनव्दं चिफुडा ॥ यालागिं प्रधानजियानांमो रूढा ॥ भियाविभूती आदकें ॥ १२ ॥ जियाजा
 णितलियासाठी ॥ आघवियाजाणवतीलकिरीटी ॥ जेंसेबीज आलियामुठी ॥ तरु विआला होये ॥ १३ ॥ काउधान हाताचि टिनले ॥ तरि

पाठ-ओं-२०० भावनिःशेष-ओं-४ तुवांस्त्यमुखेजें-ओं-७ वेग-

आपैंसी सांपडलीं फळें फुलें॥ तें विंदेखिलिया जयादेखवेलें॥ विश्वसकळ॥ १५॥ येन्हुर्वासाचिचिगाधनुर्धरा॥ नाहीं शेषवत्सांश्रि-
 याविस्तारा॥ पैगगनाऐसियाअपारा॥ मजमाझिअसणें॥ १६॥ अहो०॥ अहमात्मागुडाकेरासर्वभूताशयस्थितः॥ अहमादिश्व-
 मर्थचभूतानामंतएवच॥ २०॥ टी०॥ आदकेंकुटिलालकमस्तका॥ धनुर्वेदव्यवका॥ मीआत्माअसैंएकको॥ भूतमात्राचाडायों॥
 १७॥ आठुलीकडेमीचियचेंअंतः करणी॥ भूतावहिरमाझीचिगवमणी॥ आदिमीनिवाणी॥ मध्यहीमीचि॥ १८॥ जैसैमेघा
 तेंयांतकीवरी॥ एकआकाशचिआंतबाहेरी॥ आणिआकाशींचिजालेंअवधारी॥ असणेंहीआकाशी॥ १९॥ पाठीलयाजेवेळींजा
 नी॥ तेवेळींआकाशचिहोईनिवाती॥ तेंविआछाईस्थितांती॥ भूतांसिमी॥ २०॥ तेंसंबहुयसआणिव्यापकपण॥ माझीविभू-
 तिनियोगजाण॥ तरीजीवचिकरूनिथवण॥ आदकानिआदक॥ २१॥ याहीवरव्याविभूती॥ सांगणेंतुलेंसुभद्रापती॥ सांगेनह्यणित-
 लेंतुजपती॥ त्याप्रधानाआदकें॥ २२॥ अहो०॥ आदित्यानामहेंविणज्योतिषारविरच्युमान॥ मरीचिमरुतास्मिन्सप्तत्राणामहंश
 शी॥ २१॥ टी०॥ हेंबोलेनितोरुपावेंत॥ ह्यणेंविष्णुमीआदित्या॥ २२॥ मीरादिसवेंत॥ सूर्यभामाजी॥ २३॥ मरुहणाचावर्गी॥ मरी
 चीह्यणेंमीशाही॥ चंद्रमीगगनरंगी॥ तारांमाजी॥ २४॥ अहो०॥ वेदानासामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासरः॥ इंद्रियाणांमनश्चा
 स्मिभूतानामस्मिचेतना॥ २२॥ टी०॥ वेदांआंतसामवेदु॥ तोमीह्यणेंगोंविदु॥ देवामांजिमरुदुधु॥ महेंद्रतोमी॥ २५॥ इंद्रिया-
 मांजिअकरावें॥ मनतेंमीहेंजाणावें॥ भूतांमांअस्वभावें॥ चेतनांतमी॥ २६॥ अहो०॥ रुद्राणांशकरश्चास्मिन्नेशोयस्सरक्ष
 साम्॥ वसूनांभपवक्श्चास्मिन्ः शिखरिणामहम्॥ २३॥ टी०॥ अशेषांहीरुद्रामाझां॥ शंकरजोमदनारी॥ तोमीथेथन
 धरी॥ श्रान्तिकांही॥ २७॥ यक्षरक्षोगणांअंत॥ शंभूचासखाजोधनवंत॥ तोकुबेरमीहेंअनंत॥ ह्यणतजाहाला॥ २८॥ मरा-
 पाठ-ओं-२७ गती किंवाअंती- ओ-२२ तुजप्रति, निगुतो-

आठाहीवसूमाझारी॥पावकतोमीअवधारी॥शिरवराधिलियांसर्वोपरीमेरुतोमी॥२९॥ ऋ०॥ पुरोधनसांचमुख्यमांविहिपा-
 र्यबृहस्पतिम्॥सेनानीनामदृक्दःसरसामस्मिसागरः॥२९॥ महर्षीणांभृगुरहगिरामस्थेकमक्षरम्॥यज्ञानाजपयज्ञोस्मि-
 स्थावराणांहिभालयः॥२९॥ टी०॥ जोस्वर्गसिंहासनासावावो॥सर्वज्ञतेआदिचाठावो॥तोपुरोहितोमांजिरावो॥बृहस्पतीमी॥३०॥
 ॥विभुवर्नोचियासेनापती॥आंतस्त्र्यतोमीमहामती॥जोहरवीर्येअग्निसगती॥कृत्तिकातजाहाला॥३१॥सकळिकासरो-
 वरासी॥माजिसमुद्रतोमीजळराशी॥महर्षीआंततपोराशी॥भृगुतोमी॥३२॥अशषाहीवाचो॥माजिनटनाचसत्याचा॥ते
 असुरएकमीवैकुंठोचा॥वेल्हाळद्वारो॥३३॥समस्ताहीयज्ञाचोपर्वो॥जपयज्ञतोमीयेतर्की॥जोकर्मयोगंग्रणवादिकी॥नि-
 पजविजे॥३४॥नामजपयज्ञतोपरम॥बाधूनशंकरानादिकर्म॥नांमंपावनधामोधर्म॥नामपरब्रह्मवेदार्थी॥३५॥स्थावरा-
 गिरीआंत॥पुण्यपूज्यजोहिमवंत॥तोमीद्वारोकांत॥लक्ष्मियेचा॥३६॥ ऋ०॥अश्वत्थःसर्वदृक्षाणांदेवर्षिणांचनारदः॥गंध-
 र्वाणांचिवरथः॥सिंहांनांकापिलोभुनिः॥२६॥ उच्चैःश्रवसमश्वानोविहिमाममृताः॥द्रवम्॥ऐरावतगजेद्राणांनराणांचनराधिपम्
 ॥२७॥ टी०॥कल्पद्रुमहनपारिजात॥गुणेंचदनहीवाडविरव्यात॥तारियादृक्षाजानाआत॥अश्वत्थतोमी॥३७॥देवव्रवीआ-
 तपद्रव॥नारदतोमीजाणावा॥चित्ररथमीगंधर्वो॥सकळिकामाजी॥३८॥ययांअशषाहीसिद्धा॥माजिकपिलत्वायमीप्र-
 बुद्धा॥तुरंगजाताप्रसिद्धा॥आंतउच्चैःश्रवामी॥३९॥राज्यभूषणाराजाआंत॥अर्जुनामीगारेरावत॥ययोराराक्षिस्त्रमंथिता॥
 अमृतांशतोमी॥४०॥यथानरांमाजिराजा॥तोविभूतिविशेषमाज्ञा॥जयातेंसकळोकाप्रजा॥होउनिर्मोविती॥४१॥ ऋ०
 ॥आयुधानामहंक्वथेनूनामस्मिकामधुकू॥प्रजनश्चास्मिक्कदपः॥सर्पाणामस्मिवासुकिः॥२८॥अनंतश्चास्मिनागानांवरुणा-
 पाठ-ओ-३२माझारी-ओ-३६पुंज-

यादसामहम्॥ पितृणामयमात्मास्मियमः संयमनामहम्॥ २१॥ टी०॥ पेंआघवेयाह्मतेयरे॥ आंतक्जनेमीधनुधरा॥ जेंशतम
खेत्तीर्णकरा॥ आरूटोनिअसे॥ ४२॥ धेनुमथेंकामधेनु॥ तेमीद्वणेविषकूमचु॥ जन्मवितयाआंतमदनु॥ तोमीजाणों॥ ४३॥
सपकुळाआंतअधिष्ठाता॥ वासुकीमीकुंतिसुता॥ नागांमाजिसमस्तो॥ अनंततोमी॥ ४४॥ अगाथादूसांआंत॥ जोपश्चिमसम
देचाकान्त॥ तोवरुणहेंमअनंत॥ श्रापतअसे॥ ४५॥ आणितपुत्रगणासमस्तो॥ माजिअर्यमाजोपितृदेवता॥ तोमीहंतत्वता॥
बोलतआहे॥ ४६॥ जगाचेंशत्रुभाषुमेंलिहती॥ याणियांचाभानसाचाझाडधनी॥ मगकैलियानुरूपहोती॥ भोगनियमजो॥ ४७
तयानियमितयामाजियमा॥ जांकमसाक्षीपर्य॥ तोमीद्वणेंआन्धारांम॥ रमापती॥ ४८॥ म्छो०॥ मन्हादस्मास्मिदैत्यानांका
लः कलयतामहम्॥ मृगाणांचसूक्ष्महंनंतंयश्चयक्षिणाम्॥ ४९॥ टी०॥ अगांदेश्यांचियाकुली॥ मन्हादतोमीन्यहाकी॥ द्य
णोनैदद्वभावादिमकी॥ लिपंचिना॥ ४९॥ पंकजिनयामाजिमहाका॥ तोमीद्वणेंगोपाळ॥ श्वापदांमाजिषाईळ॥ तोमीजाण
॥ ५०॥ पक्षिजातीमाझारी॥ गरुडतोमीअवभारी॥ यालागिंजोपाठीवरी॥ वाहोशकेमातें॥ ५१॥ म्छो०॥ पवनः पवतामस्मि
रामः शरूभुतामहम्॥ झषाणांमवरश्वास्मिस्तानसामस्मिजान्दवी॥ ५२॥ टी०॥ पृथ्वीचियांपेंसारा॥ माजिमडीनळगनां
धनुधरा॥ एकेचिउड्डुणेंसाताहीसागरा॥ मदक्षिणाकीजे॥ ५३॥ तयावहिलयागतिमंतो॥ आंतपवनतोमीपण्डूसता॥ शरूधरा
समस्तो॥ माजिअरीरामतोमी॥ ५४॥ जणेंसाकडलियाधर्माचेंकेंवारे॥ आपणपयोधनुष्यकरूनिदुसरें॥ विजयलक्ष्मीएकमोहरें॥
कैलेंचनी॥ ५५॥ पाठीउभेवाकूनिसकवती॥ मनायलेंकेश्वराचासिसाव्ही॥ गगनीउंदोद्वगनयाहस्तबवी॥ दिपलीभूतो॥ ५६॥ जे
णेंदेवांचामांनिगविसन्या॥ धर्मासिर्जाणोंभारकंळ॥ सूर्यवंशीउंदेल॥ सूर्यजोका॥ ५६॥ तोह्मातियेपरजितयांआंत॥ रामचंद्रम
पाठ-ओ-४९॥ मकी-ओ-५२॥ करिजो-ओ-५५॥ शिववाकी-हात-

रमाकांत॥ सकरमीपुच्छवत॥ जळचरांमार्जा॥ ५७॥ पेंसमस्ताहीवाघा॥ मध्यंजमगिरथेंआणिलीगंगा॥ जन्हनेगिळिलीमग-
 जंघा॥ फाडूनिदिधली॥ ५८॥ तेंविभुवनेकसरिता॥ जान्हवीर्मापांडुसता॥ जळजवाहासमस्तो॥ माझरीजाणें॥ ५९॥ ऐसं
 निवेगळांलास्रिपेकी॥ विभूतीनामठविताएकेकी॥ सगळेजन्मसहस्रेंअवलोकौ॥ अर्धोनव्हेती॥ ६०॥ प्रहो॥ सर्गणां
 मादिरंतश्रमअंचेवाहमजुन॥ अध्यात्मविद्याविद्यानीवादःप्रवदतामहम्॥ ६१॥ अक्षराणामकारास्मिहं हः सामासिकस्य-
 च॥ अहमंवाक्ष्यः कालाधानाहंविप्रवतोमुखः॥ ६२॥ टी॥ जैसींअवधींचिनसुनवेंचावी॥ ऐसीचाडउपजेलजैजीवी॥ तें
 गगनाचीबांधावी॥ लाघजैवी॥ ६३॥ कांमुख्योयपरमार्थचरुगणाध्यावा॥ तरिभूगोलचिकारेंसुवावा॥ तैसाविस्तारमाझा
 पाहावा॥ तरिजाणाविंमातें॥ ६४॥ जेंसंशास्त्रीसीगुलफक॥ एकाहकाविटाकुहाणिजेसकळ॥ तरीउपहुनियामूळ॥ जेविहा-
 नीचेंपें॥ ६५॥ तेंविंमाझविभूतिविशेष॥ जरीजाणापांडुजंतोअशेष॥ तरीस्वरूपकनिर्दोष॥ जाणजमाझें॥ ६६॥ येचूवी
 वेगळालियाविभूती॥ काथिएककपरिससीकिती॥ ह्यणोंनिएकाहकांमहामती॥ सर्वमीजाण॥ ६७॥ मोआघवियेंचिसृष्टी॥-
 आदिमथांतींकिरीटी॥ वोतमोतपटी॥ तंतुजंघी॥ ६८॥ एंसियाध्यापकामांतेंजाणांवी॥ तेंविभूतिभेदकायकरवें॥ परिहंतुझीयो
 म्यतानव्हे॥ ह्यणोंनअसो॥ ६९॥ कांजनुवापुसिर्दयाविभूती॥ ह्यणोंनितियाआदिकसुभद्रापती॥ तरिविद्यामाजिप्रस्तुती॥ अ-
 ध्यात्मविद्यातेमी॥ ७०॥ अगाबोलनयांचियाठायी॥ वादतामीयाही॥ जोसकृशारुसमनेकहीं॥ सरंचिना॥ ७१॥ जोनिव्र-
 चूंजातंवाट॥ आईवतयाउल्लासासूचटो॥ ज्यावरीबोलनियांचीगोडे॥ बोलणींहांती॥ ७२॥ ऐसाप्रतिपादनामाजिवाद॥-
 तोमीह्यणेगोविंद॥ अक्षराभाजिविशद॥ अकारतामी॥ ७३॥ पेंगासमासामाझारी॥ दूदतोमीअवधारी॥ मधाकालागोनि-
 पाठ॥ ओं॥ ५७ जानकी॥ ओं॥ ५८ आणितां॥ ओं॥ ५९ तारिणीसरिता॥ ओं॥ ६० सता॥ ओं॥ ६१ जेंजाणवें॥ ओं॥ ७० उल्लेखसंभव॥ किंवा उल्लेखसंभव॥

ब्रह्मवेरीं॥ ग्रामितातोमी॥ ७२॥ मेरुसं दारादिकीं सर्वीं॥ सहितप्रस्थितं विरवीं॥ जो एकार्णवाते हो जिरवीं॥ जेथिचा तेथें॥ ७३॥
 जो प्रकचने जा देत मिठी॥ सगळिया पवनाते गिळी किरीटी॥ आकाश जया चिया पोटीं॥ मांसा वळे॥ ७४॥ ऐसा अपार जो काक॥
 तो मी ह्मणेल क्षमी लीळा॥ मरा पुढती स्मृतीचा मेळ॥ सृजिता तो मी॥ ७५॥ श्लो०॥ मृतकः सर्व हर आह सुद्रवश्च भविष्यताम्॥ क्रीर्तिः
 श्रीचक्रचनरीणां स्मृतिर्मध्याधुतिः क्षमा॥ ३६॥ टी०॥ आपि स्मृजिल्या भूतो ते मी चिधरीं॥ सकळां जीव नही मी चि अवधारिं॥ शो
 र्खीं सर्वो ते या स हारीं॥ ते व्हां मृतक ही मी चि॥ ७६॥ आतां स्त्री गणाचा पेंकी॥ माझिया विभूती सात आणिकी॥ तिया एक कवति
 कीं॥ सांगि जतील॥ ७७॥ तरी नित्य नवी जे कीर्ती॥ अजुना ते माझी मूर्ती॥ आणि ओदो ये सो जे संपत्ती॥ ते ही मी चि जाणें॥ ७८॥
 आपि जे गा मी वाचा॥ जे सरवा सनी न्यायाचा॥ आरु दों निवि काचा॥ जागींचि ले॥ ७९॥ देखि ले नि पदार्थें॥ जे आठवु
 नि दे माते॥ ते स्मृति ही एथें॥ त्रिभुन्द ही मी॥ ८०॥ पेंसि हिता अनुपायी नी॥ श्रुता ते गा मी इये जनीं॥ धृती मी चि भुवनीं॥ क्षमा ते
 मी॥ ८१॥ एव नारी माझारीं॥ या सात ही शक्ति मी अवधारिं॥ ऐसें संसार गज केसरी॥ ह्मणत जा हा ला॥ ८२॥ श्लो०॥
 बृहत्साम तथा सांखागा यत्री छंदसा महम्॥ मासाना मार्गशीर्षो हृद्य तूनां कुसुमाकरः॥ ३५॥ टी०॥ वेद राशी चिया सासा
 ॥ आंत बृहत्साम जे प्रियो नसा॥ ते मी ह्मणेर मा॥ पाणे श्वर॥ ८३॥ गा यत्री छंद जे ह्मणिजे॥ ते सकळां छंदों माजि माझे॥ स्व-
 रूप हे जाणिजे॥ निभ्रांत तुवां॥ ८४॥ सासा आंत मार्ग शिर॥ तो मी ह्मणेशांड धर॥ भूतू माजि कुसुमाकर॥ वसंत तो मी॥ ८५॥
 श्लो०॥ द्युत छलयत्सामि स्थिते जस्तं जस्विना महम्॥ जयो स्मिद्य वसा यो स्मि सत्सत्स्व वना महम्॥ ३६॥ दृष्ट्या नां स
 सा देवोऽस्मि पांडवो नांधं जयः॥ मुर्ननामय हव्यासः कवीनामुशना कविः॥ ३७॥ टी०॥ छकित यां विदणा॥ माजि जूतें मी-
 पार-ओ-८१ अनपायिनी-

विचक्षणः॥ ह्यणो निचो हठांचरीण रिकवणा॥ निवारूनये॥ ८६॥ अगा अशंभाही तजसा॥ आतने जतं मे भरवसा॥ विजयो-
 मी कारो देशो॥ सकळा माजी॥ ८७॥ जणें चोखाळत दिसल्या॥ तोव्यवसायात व्यवसाय॥ माझे स्वरूप हेराय॥ सराचा स्वणो॥
 ८८॥ सला थिल्या आत॥ सत्वमी ह्यणे अनंत॥ यादवामा जिर्झा मंत॥ तो चितो मी॥ ८९॥ जो दवकी वस दयास्त जहालो॥ कु-
 मारी साठी गो कुळींगेलो॥ तो मी याणा सकट पियालो॥ मृतनेतें॥ ९०॥ नुघड ना बाळक पणाची फुली॥ जणें मिया अदान वी स्थि-
 केली॥ करीं गिरिधरू निउमा णिली॥ महद्रमहि मा॥ ९१॥ कालिंदीचे हृदय शल्य पेडिले॥ जणें मिया जकत गो कुंकरा खिले॥
 वासरु वासाठी लाविले॥ विरंची सापिसो॥ ९२॥ प्रथम दश विष पहाटे॥ माजि कसा एशी अचाटे॥ महा धंदा अवचटे॥ लीळा चि-
 ना सिली॥ ९३॥ हे काय किती एक सागावे॥ तुवांही दोखिले रां किले असं आयवे॥ तरिया दवामा जिजाणावे॥ हे चिस्वरूप माझे॥
 ९४॥ आपि सोमवशी तुझ्या पांडवा॥ माजि अजुन तो मी जाणावा॥ ह्यणो नि एक मे का चिया मे मप्पावा॥ बिघडन पडे॥ ९५॥ सन्या-
 सी तुवां हो उनिजनी॥ चोरून निनेली माझी भिगनी॥ तन्ही विकल्प नुपजे मनी॥ मी तुं दोन्ही स्वरूप एक॥ ९६॥ मुनी आंत व्यास दे-
 व॥ तो मी ह्यणे यादव राव॥ कवीश्वरामा जिधे रयाव॥ उशनाचार्य तो मी॥ ९७॥ ऋग्वेद॥ देडा दमय नमस्मिनी तिरस्मि जिगीषना मु-
 ॥ मोनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञान ज्ञानवतामहम्॥ ९८॥ दी०॥ अगा दमिताया माझारी॥ अनिवार दद तो मी अवधारी॥ जो सुगियेळा
 गो निब्रह्म वेरी॥ नियमित पवे॥ ९८॥ पें सारा सार निर्यो रितयां॥ धर्म ज्ञानाचा पक्ष रितयां॥ सकळा सास्त्रा माजियया॥ नो तंशा-
 रूतें मी॥ ९९॥ आद्य विद्या चिगुदा॥ माजि मोनं ते सहाडा॥ ह्यणो निन बोलतया पुढां॥ स्रष्टा ही नेण होय॥ १००॥ अगा ज्ञानियां
 चिया दायो॥ ज्ञान ते मी पाही॥ आतां असा हयं यां काही॥ पार न देखो॥ १०१॥ यच्चापि सर्व भूतानां बीज तदहम जून॥ न
 पाठ नाही॥

तदस्तिविनायत्स्यान्नायाभूतचराचरम्॥३०॥नानोस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप॥एषतूदृशतःशोकोविभूतेर्विस्तरोभया॥
४०॥दी०॥पैंपर्जन्याचियाधारा॥वरीलेखकरंवलधनुर्धरा॥कांष्ट्वीचियावृणांकुरा॥होइलती॥२॥पैमहोदधीचियातसंगां॥
॥व्यवस्थाधरूतयेजेविंगा॥तेविंमाझियाविशेषलिगा॥नाहीभिनी॥३॥एशियाहोसातपाचयाप्रधाना॥विभूतीसांगितलियातू
जअर्जुना॥तोहउदृशजोगामना॥आहाचगमला॥४॥येराविभूतिविस्मारांसकाही॥एयसर्वयालेखनाही॥ह्यणोनपरिस
सीतूकाई॥आहोसिंगोंकिनी॥५॥यालागिएकिवहकांतुज॥दाउआतांममिज॥सर्वभूतांकुरबीज॥विरूढतअसेतेमी॥६॥
॥ह्यणोनिसानेथोरनह्यणावे॥उंचनीचिभावसाडावे॥एकमीचियेसेमानावे॥वस्तुजाताते॥७॥तरीयावरीसाधारण॥आईक-
पाआणीकहीखुणा॥तरिअर्जुनातेतूजाण॥विभूतीमाझी॥८॥यद्यदिभूमिमत्सलंभीमदुर्जितमेववा॥तत्तदेवाव
गच्छत्वमतेजोशसंभवम्॥४१॥दी०॥जेथजेथसंपनिआणितया॥दोन्हीवसनीआलियाजयादया॥तेतेजाणधनजया॥
अशमाझी॥९॥श्लो०॥अथवाबहुनेतेनाकिंज्ञानेनतवाजुन॥विष्टभ्याहमिदंरुत्समेकांशेनस्थितोजगत॥४२॥ इतिथी
मद्भगवद्गीतासुपनिषस्तुब्रह्मविद्यायागशास्त्रश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतिविस्तारयोगोनामदशमोऽध्यायः॥१०॥ दी०
॥अथवाएकलेकविबगनी॥परिप्रभाफांकिविभुवनी॥तेविमजएकाचियाचिसकजनी॥आज्ञापाळिजे॥१०॥जयातेएकले
झणेह्यणा॥तोनिधनयाभाषनेणा॥कायकामधेनुसर्वसंना॥चालतअसे॥११॥नियेतेजेधवाजोमाये॥तेतेएकसरेचित्रस
वोलागो॥तेविविधविभवतयाअंगो॥होउनिअसती॥१२॥तयातेवांशकावयाहोचिसुज्ञा॥जेजगेनमस्कारिजेआज्ञा॥ते
सेअथीतेजाणयाज्ञा॥अवतारमाझी॥१३॥आणिसामान्यविशेष॥हंजाणगेण्यसंदोष॥कांजेमीचिएकअशेष॥विश्वहंस
पाठ-ओं-१एकविद्याविभूतिमाझी-ओं-१०एकाकियाचि-ओं-११नयाते-ओं-१४आतांमहाशेष-ओं-१४आहो-६॥

णोनि॥१४॥नरिआतासाधारणआणिचांगा॥ऐसाकेंसोनिपांकल्यावाविभाग॥वायांआपुलियेमनीवंगा॥भेदाचालावावा॥१५॥
 येहवीत्पकासायापुसळावें॥अमृतकाराधूनिअर्धकरावें॥हागावायूसिकायपाडावें॥उजवेंआगाआहे॥१६॥पेंसूर्यबिंबा-
 सिपोटपाटी॥पहानानासैलेंआपुलिदही॥तेविमाझास्वरूपीगोटी॥सामान्यविशेषाचानही॥१७॥आणिसीनानाइहीवि-
 भूती॥मजअपारातेंमविसीलकिती॥द्वयांनिविबहुनासमद्रापती॥असोहंजाणो॥१८॥आतांपैमाझीनएकेअशें॥हंज
 गव्यांपलेंअसे॥यान्नाशिभेटमाडुनयगिसे॥२०॥अज॥१९॥ऐसेविबुधवनवसतें॥तेणविरक्ताचेनिएकातें॥बोलिलेंजेश
 श्रीमंतें॥श्रीकृष्ण॥२०॥तेशअर्जुनह्मणस्वामी॥यत्तुलुहरोभस्यबोलिलेतुह्मी॥जभेदएकआणिआही॥साडावाएकी
 ॥२१॥हाहोभूर्यह्मणकायजगातें॥आधारदवडाकापगतें॥तेविधसाळह्मणादवातें॥तरीअधिकहाबोल॥२२॥तुझेनामचि
 एककाणहीवळा॥जयांचियंमुखसिकाकानाभेळ॥तयांचियान्हृदयातेंसाडुनिपळ॥भेदजीसाच॥२३॥तोतुपरब्रह्मचिअस
 के॥मजेंदेवीदधलासिहस्तुदके॥तरीआतांभेदकाचसाक॥देखावाकवणी॥२४॥जीचद्रविंबाचाभासांग॥रिगालियांवरीही
 उवारा॥परिणोपणेंशाडधरा॥बोलाहेतुह्मी॥२५॥तेथसगवियाचिपरीतोषानिदेवें॥अर्जुनातेंआलिगिलेंजीवें॥मगह्मण
 तुवानकोपावें॥आमुचियाबोला॥२६॥आहीतुज्जभदाचियावाहाणी॥सांगीतलीजविभूतीचीकहाणी॥तेअभेदकायअतः
 करणी॥मानलीकीनमने॥२७॥हेंचिपाहावयालागी॥नावेकबोलिलेंबांहरिसवडियाभोगी॥तवविभूतीतुजचंगी॥आ-
 लियाबोधा॥२८॥तेथअर्जुनह्मणेंदेवें॥हेंआपुलेंआपणजाणावें॥परिदेखतसेंविश्वआयें॥तुवांभरलें॥२९॥पेंगयातोपा
 दुसुत॥ऐसियप्रतीतीमिजाहालावरेंत॥सजयाचियाबोलांनिवात॥धतराष्ट्रआहे॥३०॥कीसजयदुखवेलेंनिअंतःकरणे
 पाट-ओं-१७नाशे-ओं-२१येथ,रहस्य-ओं-३०पेंरत.

॥ ह्यणतमेनवलनन्देदेवावदण॥ हाजीविंधयमाआहेमीदण॥ तदंताहीओपळा॥ ३१॥ परिअसोहेतोअर्जुन॥ स्वहिनां
चावादनीतसेमान॥ कीयाहीवरितयाआना॥ धिक्साउपनळा॥ ३२॥ ह्यणहेचिहृदयाओतुलीप्रतीती॥ बाहेरिअवतरोकाडोळ
होबनोदेवाआगळा॥ ह्यणउनिक्की॥ ३३॥ मियाइहीचदेहाडोळा॥ झोबावेंविश्वरूपासकळा॥ येवटी-
चियापुस्वा॥ तेंतेसाचिकुंगीतसेयेरु॥ ३४॥ आजितोक्कतस्वशास्त्रा॥ ह्यणानिवाझोकांनलगतीदेवा॥ जेजेयेइलतया-
॥ किरोहोसी॥ ३५॥ ह्यणोनिविश्वरूपपुण्यावयादुर्गा॥ पार्थरिगलाहोइलकवणेभार्गी॥ तेंसांगेनपुढलियेप्रसंगी॥ ज्ञानदेवह्य
णोनितुतीचा॥ ३६॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

ईतथ्याभावायेदीपिकायाज्ञानदेवविगचिनायांदेशसोऽध्यायः ॥ १० ॥

पाठ-ओं-३५ देवांचे-

॥ शरभंभवतु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ आतांथावरीणकादशी ॥ कथाआहेदोहरासीं ॥ जंथपार्याविश्वरूपेंसीं ॥ होईलसंदी ॥ १॥ जंथशांताचियाप
 रा ॥ अद्भुतआलाहेपाहुंणरा ॥ आणिचरांहीरसापांतकरा ॥ जाहालामान ॥ २॥ अहोवधुवरांचियेमिळणी ॥ जेंसोंवराडियंहीलु-
 गडींलेणीं ॥ तेंसेदेशेचक्रस्वामनीं ॥ भिरवलरस ॥ ३॥ पशुशांतादुतकरवे ॥ जेंडाळ्यांअजळींघ्यावे ॥ जेंसेहरिहरयेमभावे ॥ आ
 लेंवेवा ॥ ४॥ नातरीअवंसेचांदलसी ॥ फुटलींबंबंदोनीसरसी ॥ तेविएकवकारसीं ॥ केलाएथ ॥ ५॥ मिनलेगोंयधुनेचेओघ ॥ तेंसर
 सांजाहालेयगा ॥ ह्यणोंनसुखानहोतजगा ॥ आयवएथ ॥ ६॥ अजिगीतासरस्वनीगुप्त ॥ आणिदोनीरसतेवोधयूत ॥ यालागिंवि
 वेणीहेउचित ॥ फावलीलापा ॥ ७॥ एथअवणाचंनिहों ॥ तीर्थींरयलेंसोपारें ॥ ज्ञानंदवह्यणेदातारें ॥ माझेनिकलें ॥ ८॥ तेंरिसरू
 ताचींगहनें ॥ तोडोंनिमन्हाटियाशब्दसोपानें ॥ रचलींथर्सनिधानें ॥ श्रीअहोनिदवें ॥ ९॥ ह्यगोनिमलनेणेंएथसद्भावेंनाहावें ॥ प्रया
 गमाधवींविश्वरूपहावें ॥ यंतुलेनिसंसारसिद्धावें ॥ तिळादका ॥ १०॥ हेंअसोणेंसंसावयव ॥ एथसांसिनलेआर्थीरसभाव ॥ जंथअ
 वणसरवाचीराणिव ॥ जोडलीजगा ॥ ११॥ जंथशांताद्भुतरांकेडे ॥ आणियंथरांसांपडजोडे ॥ हेंअल्पचिपरउघडें ॥ हेंवल्यएथ ॥
 १२॥ तोड्वाअकरावाअथाव ॥ जोदेवाचाआपणपोंविसवताठाव ॥ परिअजुनसंदेंवांचाराव ॥ जंथहीपातळा ॥ १३॥ एथअजुनचिका
 यह्यणोंपातळा ॥ अजिहाआवडतयाहासकाळजाहाला ॥ जंगीनाथआला ॥ मन्हाटिय ॥ १४॥ याचिळागींमाझे ॥ विनविलेंआद
 किजे ॥ तरिअवधानदिजे ॥ सज्जनीनुह्मी ॥ १५॥ तेंवींचितुह्यांसंताचियंसंग ॥ ऐसीमलर्गीकीरकरूनलंग ॥ परिमानवेंजीतुह्मी
 लोभें ॥ अपर्यामज ॥ १६॥ अहांपुसाआपणचिपटविजे ॥ मगपुटेंतरीमाथातुंकिजे ॥ कांबोलगिलेनिचोजेंनरिजे ॥ बाळकामय ॥ १७
 तेंविमोजेंजेंबोलें ॥ गेंथशुतुमचेंचिशिकविलें ॥ ह्यणोंनअवधारजोआपुलें ॥ आपणदेवा ॥ १८॥ हेंसारस्वताचेंगंड ॥ तुह्मीचिळा-

विलेजी साड ॥ त्रीआतां अवधाना मुनं वड ॥ सिंघो नि कीजे ॥ ११ ॥ मग हेरसमाव फुलीं फुलेल ॥ नानार्य फल प्रारं फळ येइल ॥ तुमचेनि
 धर्म होइल ॥ सर वाडजगा ॥ २० ॥ याबोलास नरि झले ॥ ह्मणी तोष लोगा मले केले ॥ आतां मांगे जें बोलिले ॥ अजुने तेथें ॥ २१ ॥ तेवनि
 वृत्ति दास ह्मणे ॥ जी कृष्णार्जुनाचे बोलणें ॥ मी या कृतकाचें सांगों जाणें ॥ परि सांग वा तुझी ॥ २२ ॥ अहो रानी चिया पालेर वा द्या ॥ नेवाणें
 करवि जे लंके श्वरा ॥ एकठा अजुन परी असोहिणी अकरा ॥ निजोचि काई ॥ २३ ॥ ह्मणोनि समर्थ जें कशी ॥ तें न हा नये चराचरी ॥
 तुझीस ततया परी ॥ बोलवा भाते ॥ २४ ॥ आतां बोलि जनसे आइका ॥ हागीता सावनि का ॥ जो श्रीवें कुंड नायका ॥ मुखौं निनि घाला ॥
 २५ ॥ बाप बापुं थगीना ॥ जैवें दीया नि पाद्य देवना ॥ तो श्री कृष्ण वंत्ता ॥ जिये यथी ॥ २६ ॥ तेथि चें गोरव कें सैवानां वें ॥ जें श्री घांभूचिंय
 मनी नागवें ॥ तें आतां न मस्कारि जे जिवें भावें ॥ हेंचि मलें ॥ २७ ॥ मग आई का तो करीती ॥ घाळुनि विश्वरूपीं दही ॥ पाहली कें सीगो-
 दी ॥ करिता जाहाला ॥ २८ ॥ हें सर्व हीं सर्व श्वरा ॥ ऐसा यतीनि गत जो येनि कर ॥ तो बाहेर हो आवागोचर ॥ लोचनासी ॥ २९ ॥ होजिवाओं
 तुलीचाड ॥ परि देगा भिसा गातां साकड ॥ कांजें विश्वरूप पट ॥ कें सोनि पुसावें ॥ ३० ॥ ह्मणे मागा कवणी कहो ॥ जें पाटये तेने पुसिले
 नाही ॥ तें सहसा कें साई ॥ सांगा ह्मणों ॥ ३१ ॥ मी जरी सलगीचा चांगा ॥ तरिकाय होई साहुनि अंतरंगा ॥ परिते ही हा प्रसंगा ॥ बि
 हाही पुसों ॥ ३२ ॥ माझी आवडें तें सीसं वाजाहाली ॥ तरिकाय होई लुग रुडा चिया येतुली ॥ परितो ही हे बोली ॥ करीचि ना ॥ ३३ ॥
 मी काय सनकां दिहां निज वळ ॥ परितो ही नागवें चिहाला ॥ मो आवडें न काय प्रेमळा ॥ गोकुळि चिया ऐसा ॥ ३४ ॥ गथातें होले कु
 रणें झकविलें ॥ एकाचे गर्भास हो साहिले ॥ परि विश्वरूप हे राहाविलें ॥ नटवीच कवणा ॥ ३५ ॥ हाटाय वरी गुज ॥ याचि अंत
 रीचें हीं निज ॥ केविल राउरी मज ॥ पुसों येपां ॥ ३६ ॥ आणि न पुसेंचि जरी ह्मणे ॥ तारी विश्वरूप देखिलिया विणें ॥ स्रग्वनो हेचि परि
 पाठ ॥ ओ० २३ ॥ चिह्नाय ॥ ओ० २४ ॥ जो ॥ ओ० २५ ॥ पति कर ॥

३

३

३

३

जिणो ॥ तेंहीव पाये ॥ ३७ ॥ ह्यणोनि आतांपुसो अळुमाळुसो ॥ मग करु देवाटाकेंतेस ॥ येणें प्रवर्तलासाध्यसे ॥ पायें बोले ॥ ३८ ॥ प
रितेचि ऐसोनि भास ॥ जे एकादाउत्तरासचें ॥ दावाविशेवरूप आये ॥ ३९ ॥ अहांवासरुंदरिवलियाचिसादी ॥ धेनुवरुवडो
निमो हें उठी ॥ मगसना मुरवाचियेंभेटी ॥ कायपाह्यभे ॥ ४० ॥ पाहापांतयांपादचेंचिनिनावें ॥ जोकृष्णारानिहांप्रतिपाळुधवे ॥ तयांस
अर्जुनंजवपुसावें ॥ तंवसाहीलकाई ॥ ४१ ॥ तोयहजोचरुमहांचें अचतरण ॥ आणियेंरुमंदायातळें आहंमजवणा ॥ ऐसियेभिकुचणी
वेगळेपण ॥ उरेंहीचवहु ॥ ४२ ॥ ह्यणोनि अर्जुनाचियाबोलासरिसा ॥ हंयविशेरूपहांदळ आपेसा ॥ तांचिपाहलाप्रसंगेसा ॥ ऐकजेत
री ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ मरुनुग्रहायपरमंशुद्रभाआत्मासो नितम् ॥ यन्वयांतवचस्तेनमोहायाविगतामम ॥ १ ॥ टी ॥
मगपाथेदेवांतें ह्यणे ॥ जीतुह्मीमजकारणें ॥ वाच्यकेंलेंजेनबोलणें ॥ कृपानिशे ॥ ४४ ॥ जेम हाभूतेंद्रस्त्रीआतनी ॥ जीवमहदादिचेठायफट
ती ॥ तेंजेदेवहोनिटाकती ॥ तेंविप्रवणेंशोधचें ॥ ४५ ॥ होतेंन्द्रयाचियेपरिदरी ॥ देविल्लुगुणाचियेपरी ॥ शब्दब्रह्मासिहचेंरी ॥ जयाचीके
ली ॥ ४६ ॥ तेंतुह्मीआजिआपुलें ॥ मजपुढांहियेंफांदिलें ॥ ऐश्येहरें ॥ ४७ ॥ तेंवरुक्तमजस्वामी ॥ एकाहंकादिथली
तुह्मी ॥ हेंबोलांतरीआह्मी ॥ तुजपासांनिभिन्नकेंचें ॥ ४८ ॥ परिसाचिचिमहांमोहाचियेपुरी ॥ वृद्धियांदरवोनिशिसवरी ॥ तुवांआप
णपेघालोनिश्चीहरी ॥ मगकाटिलेंमातें ॥ ४९ ॥ एकतुवाचुनिंकही ॥ विश्वांदुजयाचींभाषनाही ॥ कीआमुचेंकर्मपाही ॥ जेआह्मीआ
यीह्यणों ॥ ५० ॥ मीजगीएकअर्जुन ॥ ऐसादेहीवाहंअभिमान ॥ आणिकोरवांतेंइयास्वजन ॥ आपुलें ह्यणें ॥ ५१ ॥ याहीवरीयातेंमीमारोन
ह्यणेतेंणपापेंकोरेण ॥ ऐसेंदरयतहोतोदुःस्वम ॥ तांचेविलाप्रभ ॥ ५२ ॥ देवागर्धनगरींचीवस्ती ॥ सोडुनिनयालेंलुह्मीपती ॥ होतो
उदकांचियाआंती ॥ रोहणीपीत ॥ ५३ ॥ जीकिरडुनरीकापडाचें ॥ परिलहरीयेंतहोतयासाचें ॥ ऐसेंवायांभरतयांजीवाचें ॥ अंयनुवाये

पाट ओ० ४६ गेविलें ओ० ४७ फाडिलें ५० काही ओ० ५३ साडुनि

तलें ॥ ५६ ॥ आपुलें प्रतिबिंब नेणता ॥ सिंहुकुवांयाली लुदे रोगी निआतां ॥ ऐसा थरिजे तो वं अनंता ॥ राखिलें मातें ॥ ५५ ॥ ये हवीं माझात
 शी ये तुले वरी ॥ एथ निश्चय होता अवधारी ॥ जे आतां चिंसातां ही सागरी ॥ एक चमिळिजे ॥ ५६ ॥ हे जग चि आयवें बुडावें ॥ वरि आकाश ही
 तुदी निपडावें ॥ परि सुझणें न घडावें ॥ गोत्र जे सीमज ॥ ५७ ॥ ऐसिया अहंकारा चिये वादी ॥ भिया आग्रह जळीं दधली हाती बुडी ॥ चांगि चि
 ते जवळीं ये हवीं कादी ॥ कवण मातें ॥ ५८ ॥ नाथिलें आपण पो एक मां नलें ॥ आणि नव्हतया नामोत्र ठेविलें ॥ थोर पिसें होतें लागलें ॥ प
 रिराखिलें तुझी ॥ ५९ ॥ मागां जळत काढले जो हरी ॥ तें ते देहासी चि भय अवधारी ॥ आतां हे जो हर याहार दुसरी ॥ चैतन्या सकट ॥ ६० ॥ दुरा
 ग्रहों हरण्यास ॥ माझी बुद्धी वसुंधरा सुदली कारे ॥ मग मोहा पूर्ण वगवासे ॥ शिघो निठेली ॥ ६१ ॥ तैथ तुझी निगोसावी पणें ॥ एक वेळ बुद्धी
 चिया ठायी येणें ॥ हे दुसरे वरा हों पणें ॥ घडिलें तुज ॥ ६२ ॥ गेसें अपार तुझे केलें ॥ एकी वाचा कायमी बोलें ॥ परि पंच ही पालव मोकिले ॥
 मज याति ॥ ६३ ॥ तें कोही नवचे चि वांयो ॥ मलें यश फाविलें देव राया ॥ जे साद्यंत माया ॥ निरमिळी माझी ॥ ६४ ॥ अर्जो अनंद सरोवरींचीं क
 मळें ॥ तैसे हे जे नुझे डोळे ॥ आपुळिया प्रसादाचीं राउळें ॥ ज्याला रोगीं करिती ॥ ६५ ॥ हां होतया ही आणि मोहाची भेदी ॥ हे काय सीपा बळी
 गोठी ॥ केउती मृग जळाची लुही ॥ वडवानळें सी ॥ ६६ ॥ आणि मी तें वदानारा ॥ येक ये चिये नियो निगाभारा ॥ येत ओहचारा ॥ ब्रह्मरसा
 चा ॥ ६७ ॥ तें पो माझी मां हजाये ॥ एथ विस्माकां ही काय आहे ॥ तरी उदर लोकी तुझे पबें ॥ भिवत लें आहाती ॥ ६८ ॥ अलोक ॥ भया
 पयौ हसूतानो भुतौ विस्तरशो मया ॥ त्वनः कमल प्रसास माहात्म्यमपि चा व्ययम् ॥ २ ॥ टी० ॥ पैक मलायत डोकसा ॥ सूर्य कोटिते तसा ॥
 भिया तुज जण सोनि मंदेशा ॥ परि शिलें आजी ॥ ६९ ॥ द्ये भूतें जया परी होत ॥ अथ वाल याहन जे से निजती ॥ ते मज पुढा पकती ॥ विव
 चिली देवें ॥ ७० ॥ आणि प्रकलिन कीर उगाणा दिधला ॥ पर पुरुषाचा ही ठाव दाबिला ॥ जयाचा मी हमा पांघरी निजाला ॥ धडोता वेद ॥

पाठ. ओ. ५५ कुहा. ओ. ५८ राटी

७१॥ जीशब्दसिवादनये ॥ काधर्मोपशिपारत्नांतं विये ॥ तं धिचं प्रभेचं प्राये ॥ वोळगं ह्मणोनि ॥ ७२॥ ऐसें अगाधमाहात्म्य ॥ जें सकळ-
 मूर्ति कगम्य ॥ जें स्वात्मानुभवम्य ॥ तं दयापरीदाविलें ॥ ७३॥ जें साकं रुफिटलिया आभाळीं ॥ ददीशे ग्म्य मंडळीं ॥ काहानें साकूनि बा-
 बुळी ॥ जळें दोश्वजे ॥ ७४॥ नांतरी दुक्कूनिया सापाचें वेंट ॥ जें सें चंदनारें वेंटें घडें ॥ अथवा विवसी पळे मगचेंटो ॥ निधान हातीं ॥ ७५॥
 तें सीं द्रुनी हें आडहांती ॥ तें देवें चसागो निपरीती ॥ मग परत्वा माजिये मनी ॥ शेजार केल्या ॥ ७६॥ ह्मणोनि इथे विषयी चांभज देवा ॥ प्रस-
 साकीर जाहाला जीवा ॥ परि आणीक एक हेवा ॥ उपनळा असें ॥ ७७॥ तो भिडांजरी ह्मणोनाहों ॥ तरी आनाक वणां पुं सों जावों ॥ कथ तुजवो
 चोनि ठावो ॥ जाणत आहों आत्मी ॥ ७८॥ जळूचूर जळूचा आभार धरी ॥ बाळकूस्तनपानीं उपरोध करी ॥ तरी जयाजिणयां श्रीहरी ॥ आ-
 न उपयो असें ॥ ७९॥ ह्मणोनि म्हांडसाकडून धरावें ॥ जीवा आवडें तेही तुज पुढां बोलवें ॥ नंवरा हें ह्मणितलें देवें ॥ चाडसांगें ॥ ८०॥ म्हणो क ॥
 एवमेत दयात्यत्वमात्मानं परमेश्वरम् ॥ दृष्टमिच्छामि ते रूपं भस्वरं पुरुषोत्तमम् ॥ ३॥ टी ॥ मग बोलिला तो किरीटी ॥ ह्मणे तुझी केली जे गो-
 ढी ॥ निया मनी नीची दिडी ॥ निवादीं माही ॥ ८१॥ आतं जयाचें निभकस्यें ॥ हे लोक परंपरा हांय हारपे ॥ जया टायानें आपणपें ॥ मी एसें
 ह्मणसी ॥ ८२॥ तें सुंदल रूप तुझें ॥ जं धूनि इथें ह्मजें हनच नुमुजें ॥ सरकायाचें निव्याजें ॥ घेवों येसी ॥ ८३॥ पेंजळू शयनाचिया अव-
 गणिण्या ॥ कामक्ष्य कूर्म दयाभिराणि ॥ एवेक सरलिया त्र्युणिण्या ॥ सोदादसी जेथ ॥ ८४॥ उपनिषदें जें गानी ॥ योगिये ह्म दुर्योशो-
 निपाहानी ॥ जयातें सनकादिक आहनी ॥ पोटाकुनियां ॥ ८५॥ ऐसें अगाध जें तुझें ॥ विश्वरूप कानी ऐक जे ॥ तें देखावयाचें तमाझें ॥ उ-
 तावीळ देवा ॥ ८६॥ देवें फेंडुनियां सांकड ॥ कोमं पुं भिळी जरी चाड ॥ तरि ह्मचि एकी वाड ॥ आतंजी मज ॥ ८७॥ तुझें विश्वरूप आपवें
 ॥ मां भिये दिदी सी गोचर हो आवें ॥ ऐशी थोर आश जिवें ॥ बोधोनि आहें ॥ ८८॥ म्हणो ॥ मन्यसे या दंतच्छब्दस्यं मया द्रष्टुं भिति प्रभो ॥ यो

पाठ ॥ ओं ॥ ७१ बरी ॥ किंवा परि ॥ ओं ॥ ७२ ॥ उकळतया ॥ ओं ॥ ७३ ॥ सांकाडिन भरवें ॥ ओं ॥ ८१ ॥ येवों येवों ॥ ओं ॥ ८८ ॥ रूपणा.

गेश्वरतनोमेलं दर्शयामानमव्ययम् ॥ ४ ॥ टी० ॥ परिअणीकएकरथशार्दी ॥ तुजविश्वरूपतं देखावयालागीं ॥ पैयोग्यतामाश्रयामा-
 गीं ॥ असेकीनाहीं ॥ ८९ ॥ हे आपलें आपणमीनेणें ॥ तें कोनेणसीजरीदेवह्मणें ॥ तरि योगियाकाय जाणें ॥ निदानरोगाचें ॥ ९० ॥ आणि
 जीअर्तचिनिपडि मरें ॥ आतं आपलीं तांकीं पोंविसरें ॥ जेसामान्हेलाह्मणें नपुंरें ॥ समुद्रमज ॥ ९१ ॥ ऐसासचाडपणाचि येमुली ॥ नसां-
 ण्माळवेसमस्याआपुली ॥ यालागियोग्यताजें विमाउली ॥ बाळकाची जाणें ॥ ९२ ॥ तथापरिश्चीजनार्दना ॥ विचारिजेमाझीसंभावना
 ॥ मगविश्वरूपदर्शना ॥ उपक्रामकीजे ॥ ९३ ॥ तरि ऐसीतें कृपाकरा ॥ येन्हवीन व्हं देह्मणाअवधारा ॥ वायांपंचमालापेंवधिया ॥ सुख
 केउतें देणें ॥ ९४ ॥ येन्हवीं एकलंवापियाचें तूप ॥ मयतयापुरगें कायनवय ॥ परिजाहालीहीरुष्टिउपरवें ॥ जन्होरवडकीं हांये ॥ ९५ ॥
 चकोराचंद्रामृतफावलें ॥ येरांआणवाहूनि कायवारिलें ॥ परिडोळयावीणपाहिलें ॥ वायांजाये ॥ ९६ ॥ ह्मणार्निविश्वरूपतं सहसा
 ॥ दाविसीकीरहाभरवसा ॥ कांजेकडाडाआणिगंदिंसा ॥ मांजनिन्यनवातुंकी ॥ ९७ ॥ तुझे औदार्यजाणोंस्वतंत्र ॥ देतंनह्मणसीण
 चापत्ति ॥ पैकेंवल्य ऐसेंपवित्र ॥ वोरियाहीदिधलें ॥ ९८ ॥ मांसादुरासधर्कारहाया ॥ परितोहीआपाधीतुझेपाय ॥ ह्मणोंनिधाडिसीने
 शजाय ॥ पाईकजेंसा ॥ ९९ ॥ तुवांसनकादिकांचिनिमानें ॥ सायुज्यींसौरसदिधलापूतनं ॥ जंविषाचेंनिस्सनपानें ॥ मांकुंआली ॥
 १०० ॥ हांगाराजसूय यागांचियासभासदीं ॥ देसतांविभुवनाचीं मांदीं ॥ केंसाशतधादुर्वाक्यशब्दीं ॥ निस्तेजिलासी ॥ १ ॥ ऐविया
 अपराधियाशिश्नपाळा ॥ आपणपेंटावांदिधलायोगाळा ॥ आणिउजानचरणांचियाचाळा ॥ कायभ्रवपदींचाड ॥ २ ॥ तोवनाआ-
 रियाचिलागीं ॥ जेंबैसोंवेंपिनयांचियावोसंगीं ॥ कींतांचंद्रसूर्यादिकांपरिसजगीं ॥ भ्लाध्यकेला ॥ ३ ॥ ऐसावनवांसियांसकळां ॥ दे-
 ताएकचिंतूधसाळा ॥ पुत्राआळवतांअजामिळा ॥ आपणपेदेसी ॥ ४ ॥ जेजेंदुरींहाणितलासिंपपरा ॥ तथाचाचरणवाहासीदलान-
 पाठ-ओं-८३ पैवोंघवों-ओं-८८ रूपपणा-ओं-९० मरोग-ओं-९ दुर्वादी-

रा॥ अस्मन्मयो रियं चिया कच्छवरा॥ विसंबसीना॥ ५॥ ऐसा अपकारि स्यानु झा उपकार॥ तू अपात्रीही परि उटाण॥ देदान द्यगो निदार
 वंदे कर॥ जाहाला सिबळीचा॥ ६॥ तंतें आराधीना आयकें॥ होता पुंसां बोलवीत कोनुकें॥ नित्येचें कुंदी तुवांगणिके॥ स्फुरवाड केंळा-
 ॥ ७॥ ऐसी पाहूनि वायाणी भिषे॥ आपण पादें बोल्लागती वा निवस॥ तोतुं को अनारिसे॥ मजलागीं करि सी॥ ८॥ हांगा दुसतया जे नि-
 पवाडे॥ जेजगाचें फेडी सांकडे॥ नित्येका मधे नृचे पाडे॥ काय भ्रकें लुटाती॥ ९॥ द्यगो निमया जे विनविळें काही॥ तें देवन दाखविती हे-
 कीरनाही॥ परदेखावयालागीं देई॥ पात्रता मज॥ १०॥ तुझे विश्वरूप आकळे॥ ऐसे जरी जाणसी माझे डोळे॥ नरें आनीचें डोळे-
 पुरधी देवा॥ ११॥ ऐसी दायदाय विनंती॥ जंवकरु सरला सभद्रापती॥ तंवतया घडुण चक्रवती॥ साहवें चिना॥ १२॥ तोळपाणीयू-
 षसजळ॥ आणि येरुजवळों आळावयाकाळ॥ नाना श्रीकृष्ण कोकळ॥ अर्जुन वसंत॥ १३॥ नानरीचें द्रविंबवादाळें॥ देखोनि हरीर-
 सागर उचंबळे॥ तें सादुणें ही वरी येमबळे॥ उल्लसित जाहाला॥ १४॥ मग नित्ये प्रसन्ननेत्रे नि आतोपें॥ गार्जोनि द्यगि तलें सरूपें॥ पाथी-
 देख देखेव अमुपें॥ स्वरूप माझी॥ १५॥ एक विश्वरूप दहावे॥ ऐसा मनोरथ कें ला पाडवें॥ कीं विश्वरूप मय आपवें॥ करुनि घातलें
 ॥ १६॥ बाप उदार देव अपरिभित॥ याचक स्वच्छासदा देत॥ असं सद्गुरु वरी देत॥ सर्वस्व आपुलें॥ १७॥ अहो शेषाचें हीं डोळे चोरिले
 ॥ बेटजयालागीं झकावले॥ लुक्षियें ही राहाविलें॥ जिव्हार जें॥ १८॥ तें आतां प्रादसी अनंकया॥ करीत विश्वरूप दर्शनाचा पंदा-
 ॥ बाप माग्या अगाथा॥ पार्थोचिया॥ १९॥ जो जागतां स्वभावस्थे जाये॥ तो जे स्वप्नीचें आदवें होये॥ तें विं अनंत ब्रह्म कराहुं आ-
 हे॥ आपण चि जाहाला॥ २०॥ तें सहस्रामुद्रा सोडिलें॥ आणि स्थूळ दृष्टी जवनी कफाडिली॥ किबहुना उपडली॥ योग मन्दी॥
 २१॥ परि हादें देखल कीनाही॥ ऐसी सोचि न करी काही॥ एक सरा द्यग तं सपाही॥ स्नाहानुर॥ २२॥ श्लोक॥ ॥ श्री प्रागवानुवच

पाठ॥ ओ॥ ६ कर॥ ओ॥ ८ वानसें ओ॥ १३ नोकोकळ॥ ओ॥ १५ उमये॥ ओ॥ २१ नैथिनी सहज

पश्यमेपाथरूपाणिशतशोयसहस्रशः॥ नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतानिच॥ ५॥ टी०॥ अर्जुनानंवाएकदावाह्यणित
ले॥ आपितोचदावृत्तरिकायदाविले॥ आनांदेवंआधवंभरिले॥ माझाचिरूपी॥ २३॥ एकंकुशेएकंस्यूळे॥ एकंकुसेएकेविशा
के॥ एथूनैसरले॥ अग्रानेंएके॥ २४॥ एकेंअनावरेंप्रांजळे॥ सव्यापारेंएकेनिश्चळे॥ उदासीनैरुहोळे॥ तीघेएके॥ २५॥ एकें-
घुणितेंसावयें॥ असलगेंएकेंअगाधें॥ एकेंउदारेअनिबद्धे॥ कुणेंएके॥ २६॥ एकेंशांतेंसांमंदे॥ स्तब्धेएकेंसानंदे॥ गति-
निशब्दे॥ सोम्येएके॥ २७॥ एकेंसाभिलाषेविरक्तें॥ उभिद्रितेंएकेनिद्रितें॥ परितुष्टेएकेंआर्तें॥ प्रसन्नेएके॥ २८॥ एकेंअशस्त्रेस
शस्त्रे॥ एकेंरौद्रातिभयें॥ भयानकेंएकेंविचित्रें॥ लयस्थेएके॥ २९॥ एकेंजननलीलाविहासें॥ एकेंपालनशीळलसें॥ एकें
संहारकेंसावेषीं॥ साक्षिभूतेंएके॥ ३०॥ एवंनानाविधेपरिवहवसें॥ आणिरव्यतेजप्रकाशें॥ तेवींचिएकएकाऐसे॥ वर्णही
नव्हे॥ ३१॥ एकेंतातलेसाडेपंधरें॥ तैसींकंपिलवर्णेअपारें॥ एकेंसर्वांगिजैसींसंदूरें॥ दुवरलेंनम॥ ३२॥ एकेंसाविद्याचीचुल
कीं॥ तैसंब्रह्मकटाहराचिलेमाणिकीं॥ एकेंअरुणोदयासाशिवी॥ कुंकुमवर्णे॥ ३३॥ एकेंशत्रुदूस्फटिकसोज्वळे॥ एकेंइ
दनीलरुनीळें॥ एकेंअजनवर्णोसकाळे॥ रक्तवर्णेएके॥ ३४॥ एकेंलसक्तांचनसमपिवळीं॥ एकेंसमजलजलदृश्यामळीं॥
एकेंचांपोगीरेंकेवळीं॥ हरितेंएके॥ ३५॥ एकेंतमातामनामडीं॥ एकेंश्वेतचंद्रचोरवडीं॥ ऐसीनानावर्णेरूपडीं॥ देवेंमाझीं॥ ३६
हजेसैकाआनानवर्णा॥ तैसींआकृतीहअनारिसेपण॥ लाजोंकटपरिघालाशरण॥ तैसींसंदूरेंएके॥ ३७॥ एकेंअतिहावण्यसा
कारें॥ एकेंस्निग्धवपुमनोहरें॥ शृंगारश्रियेचीभांडारें॥ उघडिलीजैसीं॥ ३८॥ एकेंपीनावयवमासळे॥ एकेंशक्तेअतिविकाळे॥
एकेंदीर्घकंठेविताळे॥ विकटेंएके॥ ३९॥ एवंनानाविधाकृती॥ इयाणादातांपारनाहीसुप्रदापती॥ ययांचाएकेकींअंगप्रान्ते॥ दे-
ओ०२६कुंठे ओ०२७संतसचंदरे ओ०२८उन्मिद्रे ओ०३० सरांगेओ०३३एकें ओ०३४अजनाचळममकाके ओ०३८आयत-

स्वर्णजगात् २०॥ भूतो ०॥ पश्यादित्यान्वसुनरुद्रानि श्वनो मरुतस्तथा ॥ बहुन्वदृष्टृर्वाणि पश्याश्वर्वाणि मारुत ॥ २१॥ टी० ॥ जेषु-
 भीलनहोनाहो स्त्रीणां तेषु मयती आदित्या चिया सुहृदी ॥ पुटनी निर्मालनी मिटी ॥ दत्त आह्वती ॥ २२॥ वटनी चिया वाफे सवे ॥ होजजा-
 कामय आधवे ॥ जेषावकादिक पावे ॥ समूहवसुचा ॥ २३॥ आणि भूतलान् चोलावा ॥ मिर्तनी जे अश्विनो देवा ॥ आनी होत पांडवा ॥ तथरुद्रगणांचे
 संघाट ॥ अवतरनं देखे ॥ २४॥ पेंसाभ्यने चाबोलावा ॥ मिर्तनी जे अश्विनो देवा ॥ आनी होत पांडवा ॥ तथरुद्रगणांचे
 एके काचिये लोले ॥ जचनी सरासि हांची कुळे ॥ ऐसी अपार आणि विशाल ॥ २५॥ जयानं वटनी कोर्धनायक ॥ नित्ये इयं प्रत्यक्ष देव
 हावया काळाचे ही आयुष्य शाकडे ॥ धातया ही पारिनासापड ॥ टाव जयाचा ॥ २६॥ जयानं वटनी कोर्धनायक ॥ नित्ये इयं प्रत्यक्ष देव
 अने के ॥ भोगी आश्वयार्चक वतिते ॥ महासिंह ॥ २७॥ भूतो ०॥ इहे कस्य जगत्कृत्स्न पश्याद्यस चराचरम् ॥ मम देहं गुडाकृशय
 चान्यद्रुष्टुमिच्छसि ॥ २८॥ टी० ॥ श्यामूर्ती चयाकिरीटी ॥ गंगमूर्ती देखे पां सुहृदी ॥ सरत रूत कवरी ॥ तृणाकुरं जेसे ॥ २९॥ वीताय-
 न आणिमभासे ॥ उडत परमाणु दिसती जेसे ॥ श्रमत ब्रह्म कदाह नसे ॥ अवयव संधी ॥ ३०॥ अथ एकैका चिया प्रातर्देशी ॥ विश्व
 देरव विस्तारसी ॥ आणि विश्व ही परंते मानसी ॥ जरी देखे वांचते ॥ ३१॥ तरी देखे ही विषयी चिंकाही ॥ अथ सर्वथा सांकडे नाही
 सखे आवडेंते माझ्या देही ॥ देखसीतु ॥ ३२॥ ऐसीं विश्वमूर्तीनेणे ॥ बोलिले करुण्यपूणे ॥ नवदेखत आहे की नाही न ह्मणे ॥ निवा
 त चिये ॥ ३३॥ अथ कोपाहा उगला ॥ ह्मणा निश्चीरु घाजवणां हिला ॥ नव आर्त चिंले लोडला ॥ तें साचि आहे ॥ ३४॥ मग ह्मणे उक्ते
 वोहट नडे ॥ अझणी सरस्वाची सोयन सापडे ॥ परि टाविले तें पुढे ॥ नौक कंचियया ॥ ३५॥ हे बोलो निदेव दाशिले ॥ हां सो निदेवणि
 यां ह्मणितले ॥ आहो विश्वरूप नरी दाविले ॥ पार देखसी चिनातु ॥ ३६॥ यया बोलायें विश्वसंग ॥ ह्मणितले हाजीक वणां सिने उणे
 पाठ- ओ- ४१ निर्मीळणी, दत्ते- ओ- ४२ आणि चंडवानाची नमस्काशी- ओ- ४३ मूर्ति- ओ- ४४ कदाह- यथा- ओ- ४५ न-

॥ तुह्यीबकाकरवींचांदिणें ॥ चरउपहामा ॥ ५६ ॥ हाहा उवांनियां आरिसा ॥ ओंधळियांदाउंबेसा ॥ बहिरियापुढें भ्रवींकेसा ॥ गाणीं वंकरा ॥ ५७ ॥ मकरंदकणाचाचारा ॥ जाणतां धातूनिददुरा ॥ वायां धाडां धाडूं ॥ धरौं ॥ कोपाकवणा ॥ ५८ ॥ जें अतींद्रिय ह्यणों निव्वस्थिलें ॥ केवळे ज्ञानहरीनियां भागां फिटलें ॥ तंतु स्त्रीचमचक्र पुढें सांदलें ॥ मीकें सनिंदसे ॥ ५९ ॥ परिहंतुमचंणें बोलावें ॥ मीचि साहंतों बबुरवें ॥ एथ आधिह्यणि तलें देवें ॥ मानुबापा ॥ ६० ॥ साच विश्वरूपजरि आस्ती दावावें ॥ तरी आधीं देखावया सामर्थ्य कीं द्यावें ॥ परि बाळतबो लुतपे मभावें ॥ धसाळुगेलें ॥ ६१ ॥ काय जाहालें नवाहनां भाई परिजे ॥ तरि तां वेलां शिंपिलिया वीणवायां जाइजे ॥ तरी आतां माझीं निजरूप देखिजे ॥ तें हरीं हंवें तुज ॥ ६२ ॥ ॥ न तु मां शक्य संद्रष्टु मने न वेस्व चक्षुषा ॥ दिव्यं दत्तामि ते चक्षुः पश्यं मया गमैश्वरम् ॥ ६३ ॥ ॥ भगति या हरी पांडवा ॥ आमुचा ऐश्वर्य याग आघवा ॥ दरेवां नियां अनुभवा ॥ माजि वडाकरी ॥ ६३ ॥ ऐसें नेणें वेदांत वेद्यें ॥ सकळ लोकें कआद्यें ॥ बोलिलें आराध्यें ॥ जगाचें नि ॥ ६४ ॥ ॥ ॥ एवमुक्ता ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ॥ दर्शयामास पाथाय परमं रूपं ऐश्वरम् ॥ १ ॥ ॥ टी ॥ पै कोरवकुळचकर्ती ॥ मज हाचि विस्मय पुढत पुढती ॥ जेशिये हानि निजगती ॥ सदेव भसे कवणी ॥ ६५ ॥ ना तरी खुणें चेंवाना वयाळागीं ॥ श्रुती या न्निदावा पोंजगीं ॥ ना सेवक पण तरि आंगीं ॥ शेषाचि आशि ॥ ६६ ॥ हा हो जयाचें निसासे ॥ शिणती आटही पाह्यारी योगी जेसे ॥ अनुसरलें गरुडाऐसें ॥ नवण आहें ॥ ६७ ॥ परि नें आवेचि एकी कडे तलें ॥ सापें कृष्ण मुख एकरंजालें ॥ जिखें देव सींह निज स्वले ॥ पांडव हें ॥ ६८ ॥ परि पांचाही आंत अजुना ॥ श्रीकृष्णा सा वियाचि जाहा ला आधीना ॥ कासुक कांजैसा अंगना ॥ आपेना कीजे ॥ ६९ ॥ पद गिलें पारिखूं ऐसें नयेले ॥ या परि क्रीडा मुगही तें मानचले ॥ कैसें देव एथें स्मरवाडलें ॥ तजापोन ये ॥ ७० ॥ आजि परब्रह्म हें सगळें ॥ भोगावयास देव याचें चिडोळें ॥ कैसे वाचें चेहनलें ॥ पाळीत असे ॥ ७१ ॥

पाठ-श्री-५६ मग धाडूं-परा-ओ-६८ दिव्य नि-

हाकोपेकोनिबालसाहे॥ हारुसेनरीबुसावीतजाय॥ नवलपसेलागलेआहे॥ पाथांचेदेवा॥ ७२॥ येन्हवीविषयनिर्णानजन्मले॥ जेशका
 दिक्दादुले॥ तेविषयचिनिवांतजाहाले॥ प्राटययाचे॥ ७३॥ हायोगियाचेसभाधिधन॥ कीहांनिहेलुपार्थाआधीन॥ यालागिंविस्मयमाझे
 मन॥ करीलसेराया॥ ७४॥ तेवींसजयद्यणकायसा॥ विस्मयाण्येकोरवशा॥ श्रीकृष्णस्वीकारजेतथांगेसा॥ प्राप्तायेदयहोये॥ ७५॥ ह्यणो-
 निनेतेवांचारावा॥ ह्यणोपाथीतनुजदिव्यदृष्टदेवा॥ जयाविश्वरूपाचाटावा॥ देवसीतुं॥ ७६॥ ऐसीश्रीमुखानिअक्षरे॥ भियतीनाजवएकस
 रे॥ तंवअविद्येचेआंधारे॥ जावोचिलागे॥ ७७॥ तीअक्षरंनव्दनींदेराया॥ ब्रह्मसाम्राज्यदीपिका॥ अनुनालागींचक्कळिका॥ उजळालिया
 श्रीकृष्ण॥ ७८॥ मगदिव्यचक्षुप्रकाशजाहाला॥ नयाज्ञानदृष्टीफोटाफुटला॥ ययापरीदाविनाजाहाला॥ ऐश्वर्येआपुले॥ ७९॥ हेअवता
 रजेसकळ॥ तेजियेसमुद्रीचेकांकल्लाक॥ विश्वहेंसृगजळ॥ जयाश्रमीस्तवदिसा॥ ८०॥ जियेअनादिभूमिकेनिटे॥ चराचरहोचिबुध
 रे॥ आपणपंथीवेंकुंटे॥ दाविलेतया॥ ८१॥ मागांबाळुपणीयेणेश्रीपती॥ जोंकंवळुरवादलीहोतीमाती॥ तेंकोणोनियाहोती॥ येशोदाथ
 रिला॥ ८२॥ मगामेणेंमेणेंजैसे॥ मुखीझाडाघावयाचेनिमिसें॥ चवदाहीभुवनेंसाप्रकाश॥ दाविलींनिये॥ ८३॥ नातरीमधुवनीप्रवाभि
 केतें॥ जेंसेकपालशंखेशिविलें॥ आणिवेदांचियेहीमनतिलें॥ तेंलागलाबालो॥ ८४॥ तेंसाअनुग्रहपेंराया॥ श्रीहरीकुंलापनंजया
 आतांकवणेकडेहीमाया॥ ऐसीप्रापणेंचिती॥ ८५॥ एकसरेंऐश्वर्यंतजपाहाले॥ तयाचमत्काराचेकाणकजाहाले॥ चिनसमाजी
 बुडोनिटेलें॥ विस्मयाचिया॥ ८६॥ जेंसाअब्रह्मपूर्णदकी॥ येहेमाकंदेयएकाकी॥ तेंसाविश्वरूपकीतुकी॥ पार्थलोळे॥ ८७॥ ह्यणेंके
 वेंदेगगनएथहोतें॥ तेंकवणेंतेंपंकउतें॥ तेंचराचरेंमहाभूतें॥ कायजाहाली॥ ८८॥ दिशांचेदावहीहारपळे॥ अर्धधंकायनेणो
 जाहाले॥ चेईलयास्वमैसेंगेले॥ लांकाकार॥ ८९॥ नानासूर्यतजप्रनापे॥ सचंद्रतारागणेंसैलोपे॥ तैसीगिळीविश्वरूपे॥

प्रपंचचना ॥ १० ॥ तेष्वांमनासीमनपणनस्फुरे ॥ बुद्धिआपणपेंनसांवरें ॥ इंद्रयांचेरशरीभाघारें ॥ हृदयवरीप्रभरे ॥ ११ ॥ तेथताट-
 स्थानाटस्थपडिलें ॥ ठकासीटकलागलें ॥ जेंसंभाहनास्थयानलें ॥ विचारजालें ॥ १२ ॥ तैसाविस्मितपाहेकोडे ॥ तंवपुढांहेतंचतुडो
 जरूपडें ॥ तेंचिनानारूपचहूंकडे ॥ मांडांनिठलें ॥ १३ ॥ जेंसेवर्णकार्ळांचेमोडो ॥ कांमहाप्रकृत्यांचेंतेजवाटे ॥ तैसापणावीणकव-
 णीकडे ॥ नेदींचिउरें ॥ १४ ॥ प्रथमस्वरूपसमाधान ॥ पावोनिठलाअर्जुन ॥ सर्वोचिउडिलेंलोचन ॥ तंवविश्वरूपदेवे ॥ १५ ॥ इहींचिदो
 हीडोकां ॥ पाहावेंविश्वरूपासकळा ॥ तेंश्रीकृष्णोंसोहका ॥ पुरविलेसा ॥ १६ ॥ श्लो ॥ अनेकवल्लनयनमनेकाडुतदर्शनम् ॥
 अनंकादिव्याभरणोंदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १७ ॥ टी ॥ मगतेथसैयदेखेवदनें ॥ जेंसरमानायकाचीराजमुवनें ॥ नानाप्रकटो
 निधानें ॥ लावण्यश्रीयेचीं ॥ १७ ॥ कांआनंदाचीवनेंसासिन्नली ॥ जैसीसौंदर्याणीवजोडली ॥ तैसीमनोहरेंदेखिलीं ॥ हरीचिंकं
 तेणें ॥ १८ ॥ तयाहीमाजिएकें ॥ सावियाचिभयानकें ॥ काळरात्रीचींकटकें ॥ उठावलीजैसीं ॥ १९ ॥ कीमत्सुसींचिमुखेंजाहाली ॥
 होकांजेंभयार्चीदुर्गेपन्नासिली ॥ कीमहाकुंडुघडली ॥ मळयानकाची ॥ २० ॥ तैसीअद्भुतेंभयानकरें ॥ तेथवदनेंदेखिलींवीरें ॥
 आणिकेंअसाधारणेंसाळकारें ॥ सौम्यबहुन ॥ ११ ॥ पेंज्ञानहृदिचेनिअवलोकें ॥ परिवटनाचाशेवदनटके ॥ मगलोचननेकवतिके ॥
 लागलापाहो ॥ १२ ॥ तवनानावर्णेंकमळवनें ॥ दिकासिलीतैसीअर्जुनें ॥ नत्रदेखिलेपुलगेनें ॥ आदित्याचीं ॥ १३ ॥ तेंथेंचि कृष्णमेघाचि
 यादरी ॥ माजिकल्यांनविजुचियाफुटी ॥ तैसाबाब्हिंगळादिठी ॥ म्हुंभंगानळीं ॥ १४ ॥ हेंलेंकेंअश्वर्यपाहातां ॥ तिथेंकोचिस्पर्षी
 पांडुसुता ॥ दर्शनाचीअनेकता ॥ प्रतिफळली ॥ १५ ॥ मगद्वेणेंचरणतेकवणेंकडे ॥ केउनेमुकुटकेंदोर्दंडो ॥ ऐसीवाटविताहेकोडे ॥ चो
 डेरवावयाची ॥ १६ ॥ तेथमारयनिधीपाथी ॥ कांविफलहोईलमनोरथा ॥ कायपिनाकपाणिपाचाभाता ॥ वांयकांडींआहानी ॥ १७ ॥

पाठ. प्रो. १०. स्पडी. ओ. ७ पाणीचा. कांड.

नातरीचतुराननाचियेवाचे ॥ कायआहानीलुदिकियाअक्षरांचरांचे ॥ द्रणांनिसाद्यातपणअपाराचें ॥ देखिलेंतेणें ॥ ८ ॥
जयाचीसोयवेदो नाकळे ॥ तयाचंसकळावयएकचिवळे ॥ अजुनाचेदोन्हीडोळे ॥ भोगितंजहाळे ॥ ९ ॥ चरणौनीमुकुट-
वरी ॥ देखतविश्वरूपाचीथारी ॥ जेनानारत्नअळकारी ॥ मिरवतअसे ॥ १० ॥ परब्रह्मआपुलनिअये ॥ ल्यावयाजाहाला
आपणचिअनेगें ॥ तिथेलणीमीसांगें ॥ कादुसयासारिवी ॥ ११ ॥ जियेप्रभंचियेझळाळा ॥ उजाळचंद्रोदितसमंडळा ॥ जमहाने
जाचाजिन्हाळा ॥ जेणेंविश्वमगटें ॥ १२ ॥ तोदिव्यनेजगुगार ॥ कोणाचियेमनीसीहोयगोचर ॥ देवआपणपेंचिलइलेंसंबीरा ॥
देखतअसे ॥ १३ ॥ मगतेंथेंचिज्ञानाचियाडोळा ॥ पहानेकरपळुवांजवसरळा ॥ नयनोडनकल्यातींचियाज्याळा ॥ तेंसीशस्त्रे-
झळकतंदरेवें ॥ १४ ॥ आपणआंगआपणअंकांकार ॥ आपणहानआपणहानियार ॥ आपणजीवआपणशरीर ॥ देखेंचुराचर
कोंदलेंदेवें ॥ १५ ॥ जयाचियाकिरणार्चेनखरेपणें ॥ नखत्रांचेहानफुटाणें ॥ जेंजेखरडळावन्हमणें ॥ समुद्रोरियो ॥ १६ ॥
मगकाळकूटकल्लोकींकवळिलें ॥ नानामहाविजृंचेंदोगउमटलें ॥ तेंसंअपारकरंदोखिलें ॥ उद्यतायुधी ॥ १७ ॥ अहो ॥ दि-
व्यमात्यांबरोदिव्यगंधानुलंपनम् ॥ सर्वांश्वर्यमयंदेवमनेनंगिवनोमुखम् ॥ १८ ॥ री ॥ ० ॥ कांभणेंतेंथूनिकाटिडीदि-
डी ॥ मगकूटमुगुटपाहानसेकिरीटी ॥ तेंवसुरतरुचीसुधी ॥ जयापासांनिकोजाहालो ॥ १८ ॥ जियेमहासिद्धीचीमूळपी-
ठ ॥ शिणलीकमळाजयावावटें ॥ तेंसीकुसुमंअतिचोखटें ॥ तुरांबलींदेखिलीं ॥ १९ ॥ मुगुटावरीस्तबक ॥ दांयीठग्येंपू-
जाबंधअनेक ॥ कंठीरुक्तानिअलोकिक ॥ माळादंड ॥ २० ॥ स्वर्गसूर्यंतजवेदिलें ॥ जेंसंपथरेंमैरुतेंमटिलें ॥ तेंसेनि-
तंबावरीमाटिलें ॥ पीतांबरझळके ॥ २१ ॥ श्रीमहादेवकापुरेंउटिला ॥ काकेंकामपारजेंडवरिला ॥ नानाक्षीरांदकपांघ
पाठ-ओं-१४ पहातो, कल्यांतविज्रविया- ओं-१६ रिये- ओं-१७ उमळलें- ओं-१८ कबुक्कट-

रविला ॥ क्षीरणबन्धसा ॥ २२ ॥ जैसीचंद्रमयाचीयडीउपलविली ॥ मगगगनाकरवींबुंधीघेवविली ॥ तैसीचंद्रनपिजरी
देखिली ॥ सर्वांगीतणें ॥ २३ ॥ तणेंस्वप्रकाशाकांतचिटें ॥ ब्रह्मानंदाचा निदापमोडे ॥ ज्याचेंनसोरप्येजीविनजोडे ॥ वेदधीन
ये ॥ २४ ॥ ज्याचेंतुलेंअनुलपकरी ॥ जेंअनंगहीसर्वांगीधरी ॥ तयासुगंधाचीशोरी ॥ कवणवानी ॥ २५ ॥ ऐसीएकैकसुं-
गारशोभा ॥ पाहतांअर्जुनजातसोक्षोभा ॥ तैवीचदेवबैसलाकींउभा ॥ कींसन्मुखयातेंहेंनेणवे ॥ २६ ॥ बाहेरदिठीउघडू
निपाहे ॥ तंवआयवेंसुनिमयदेखतआहे ॥ मगआतांनपाहेंह्यणोनिउगाराहे ॥ तारिआंतहीतैसोचि ॥ २७ ॥ अनावरसु-
खेंसमोरदेखे ॥ तयामणेंपाठीमोराजवठाके ॥ तंवतयाहीकडेअसुखें ॥ करचरणतैसोचि ॥ २८ ॥ अहोपाहानाकीरप्रानि
भासे ॥ एथनवलावोकायअसो ॥ परिनपाहानांहीदिसे ॥ चोजआदका ॥ २९ ॥ कैसंअनुग्रहाचेंकरणें ॥ पार्थाचेंपुंहाणेंआणि
नपाहणें ॥ तयाहीमकटनायणें ॥ व्यापूनिघेतलं ॥ ३० ॥ ह्यणोनिआश्वर्थाचापुरीएकी ॥ पडिलाठोयेठायेतडीराकी ॥ तं
वचमत्काराचियाआणिकी ॥ महाणीवीपडे ॥ ३१ ॥ ऐसाअर्जुनअसाधारणें ॥ आपुल्यादर्शनाचेनिविंहाणें ॥ कवळुनिघेत-
लातणें ॥ अनंतरुपें ॥ ३२ ॥ नोविश्वनांमुरस्सभावं ॥ आणित्तिंदिवावयालागींपाडवें ॥ पार्थिलाआतांआववे ॥ होउनिठेला
॥ ३३ ॥ आणिदीपेंकासूर्यप्रगटें ॥ अथवानिमुदालयादेखावेंचिरवुटे ॥ तैसीदीनव्हेजेवेंकुटें ॥ दिधलीआहे ॥ ३४ ॥ ह्यणोनि-
किरीटीमिदोहीपरी ॥ तेंदेखणेंदेखअवधारी ॥ हेसंजयहस्तिनापुरी ॥ सागतसेराया ॥ ३५ ॥ ह्यणोकिंबहुनाअवधारिलें ॥ पार्थ
विश्वरूपदेखिलें ॥ नानाआभरणींप्ररलें ॥ विश्वनांमुखा ॥ ३६ ॥ श्लो ॥ दिविस्वर्यसहस्वस्वभवेक्ष्मापदुस्थिता ॥ यद्रूपाः
सदशीमास्याद्रासस्तस्यमहात्मनः ॥ ३७ ॥ टी ॥ त्वेंअगममेचादेवा ॥ नवलावाकादसयाऐसासांगावा ॥ कल्याणिएकचि
पाट ॥ श्रीः २४ वेद्य ॥ श्रीः २५ निलेपें ॥ श्रीः २६ काश्यांत ॥ श्रीः २७ सगो ॥ श्रीः २८ धनान्त ॥ धनान्तें ॥ श्रीः २९ ॥ श्रीः ३० ॥ श्रीः ३१ ॥ श्रीः ३२ ॥ श्रीः ३३ ॥ श्रीः ३४ ॥ श्रीः ३५ ॥ श्रीः ३६ ॥ श्रीः ३७ ॥ श्रीः ३८ ॥ श्रीः ३९ ॥ श्रीः ४० ॥ श्रीः ४१ ॥ श्रीः ४२ ॥ श्रीः ४३ ॥ श्रीः ४४ ॥ श्रीः ४५ ॥ श्रीः ४६ ॥ श्रीः ४७ ॥ श्रीः ४८ ॥ श्रीः ४९ ॥ श्रीः ५० ॥ श्रीः ५१ ॥ श्रीः ५२ ॥ श्रीः ५३ ॥ श्रीः ५४ ॥ श्रीः ५५ ॥ श्रीः ५६ ॥ श्रीः ५७ ॥ श्रीः ५८ ॥ श्रीः ५९ ॥ श्रीः ६० ॥ श्रीः ६१ ॥ श्रीः ६२ ॥ श्रीः ६३ ॥ श्रीः ६४ ॥ श्रीः ६५ ॥ श्रीः ६६ ॥ श्रीः ६७ ॥ श्रीः ६८ ॥ श्रीः ६९ ॥ श्रीः ७० ॥ श्रीः ७१ ॥ श्रीः ७२ ॥ श्रीः ७३ ॥ श्रीः ७४ ॥ श्रीः ७५ ॥ श्रीः ७६ ॥ श्रीः ७७ ॥ श्रीः ७८ ॥ श्रीः ७९ ॥ श्रीः ८० ॥ श्रीः ८१ ॥ श्रीः ८२ ॥ श्रीः ८३ ॥ श्रीः ८४ ॥ श्रीः ८५ ॥ श्रीः ८६ ॥ श्रीः ८७ ॥ श्रीः ८८ ॥ श्रीः ८९ ॥ श्रीः ९० ॥ श्रीः ९१ ॥ श्रीः ९२ ॥ श्रीः ९३ ॥ श्रीः ९४ ॥ श्रीः ९५ ॥ श्रीः ९६ ॥ श्रीः ९७ ॥ श्रीः ९८ ॥ श्रीः ९९ ॥ श्रीः १०० ॥

मंळावा ॥ हांदशादिक्कांचाहाये ॥ ३७ ॥ तेंसातदिक्कामुयसहस्रवरी ॥ जरीउदयजंतीकाएकेचिअवसरी ॥ तंहीतयांतजाचीथारी ॥
 उपभूतये ॥ ३८ ॥ अष्टअर्थाचिविष्टचामंळासाकीज ॥ आणिमळ्याग्नीचीसवसामगीआणिजे ॥ तेंवीचिदशकहीमंळीयेजे ॥
 मंळातजांचा ॥ ३९ ॥ तंहीतेंदशंगमभंजनिपांड ॥ हंमंजकाहोकाहोहांदलयांड ॥ आणितयाऐसेकीरचोखंड ॥ विशह्नीनोहे ॥
 ४० ॥ ऐसेमहाव्यसाचीदरीतेंराहजा ॥ साकनससवागीचेंतज ॥ तेंमुनिकुपार्जिमजदृश्यजादालें ॥ ४१ ॥ ॥ तंत्रैकस्थं
 जगत्कृत्स्नमविभक्तमनकथा ॥ अपश्यदृष्टदृष्ट्यशरीरपांडवसदा ॥ १३ ॥ टी० ॥ आणितयेविश्वरूपीएकीकडे ॥ जगआघ
 वेंआपुलेंनिपवाडें ॥ जेंसेमहादशसौजगुडवुड ॥ ४२ ॥ कोआकाशीगोधवनगर ॥ भूतकींपिपीलिकाबंधप
 रा ॥ नानामेरुवरीसपुर् ॥ परमाणुजंसे ॥ ४३ ॥ विश्वआघवंचिनयापरी ॥ नियादेवचक्रवर्तीचियाथारी ॥ अर्जुनतयेअवसरो
 देखताजाहाला ॥ ४४ ॥ ॥ ततःसविस्मयाविशन्द्दृशोमधनजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकुंतांजलिरमापत ॥ १४ ॥ टी०
 तेषांरुक्मिविश्वरूपआपण ॥ ऐसेअकुमाकुहांतेंजदुजपण ॥ तेंहीआटोनिगेलेंअतःकरणा ॥ विराळेंसहसा ॥ ४५ ॥ आहुआनंदा
 चेदेंजाहालें ॥ बाहोरिगात्रांचेबळहारणीनिगलें ॥ आपादपांगुलें ॥ पुलकांतै ॥ ४६ ॥ वार्षियेप्रथमदशो ॥ बांहळयाशौलेंचें
 सवांगजैसे ॥ विरूढकोमळाकुर्गजंसे ॥ रोमाचजाहालें ॥ ४७ ॥ शिवतलाचंद्रकरी ॥ सोमकांतद्रावरी ॥ तैसियास्वेदकणिका
 थारी ॥ दाटल्या ॥ ४८ ॥ मांजसापडलनिअलिकुलें ॥ जकावरीकमळकाजेंविंआंदोळें ॥ तेंविंअंहुलियासुसंवाभीचेंनि
 बळें ॥ बाहोरिकोपो ॥ ४९ ॥ कपूरकर्दळांचेनिगमपुट ॥ डुकलतांकापुराचेंनिकांदातें ॥ पुलिंगोगाकतीनेविंथेंबुटें ॥ नेत्रोनिपडती ॥
 ५० ॥ उदयलेनिसुधाकरें ॥ जेसाभरलाचिसमुद्रभरे ॥ तेंसावेकोवेकाडमिभरें ॥ उचंबळतअसे ॥ ५१ ॥ ऐसासालिकांहीआटां
 पाट ॥ ओं ॥ ४३ बेंसलें ॥ ओं ॥ ४६ पुलकाचलें ॥ ओं ॥ ५० पुलिका

भावां ॥ परस्परैर्वर्तते सहेवा ॥ तेथ ब्रह्मानंदाची जीवा ॥ राणीव फावली ॥ ५२ ॥ तैसा चितया सूरवानुभवा पाठी ॥ केला दूनाचा सो
 भाळा दिठी ॥ मग उससो नाकरी दिठी ॥ वास पाहिला ॥ ५३ ॥ तेथ वेंसला होता जिया सवा ॥ तिया चिकडे मस्तक वाला विला देवा ॥
 मग जोडुनि कर संपुट वरा ॥ बोलत असं ॥ ५४ ॥ श्लो ० ॥ अर्जुन उवाच ॥ पश्यामि देवांस्तव देव देह सर्वोत्तम ॥
 तविशेषं संधान् ॥ ब्रह्माणमीजं कमलासनस्थं सर्षपं च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ ५५ ॥ दी ० ॥ ह्यणे जय जया जी स्वामी ॥ नवल
 रूपा के ली नु ह्यी ॥ जें हें विश्वरूप कीं आम्ही ॥ ग्रह ते देखी ॥ ५६ ॥ पोरताचि भल्ले केलें गोसाविया ॥ मज परितोष जाहाला
 सविया ॥ जी देखिला स जो दया ॥ सुशिसि तें आश्चर्य ॥ ५६ ॥ देवा मंदराचे निअंगलगें ॥ तारीठ्यीं श्रवा पदांची दांगें ॥ तैसीं द्ये
 नु झा देही अनेगें ॥ देखत संप्रवने ॥ ५७ ॥ अहो आकाशाचि येवळ ॥ दिसती घाहगणाची कुळे ॥ कां महावृक्षीं आमि सावळें
 ॥ पक्षि जातीचीं ॥ ५८ ॥ नया परीं श्रीहरी ॥ नु झया विश्वात्सर्कीं ये शरीरी ॥ स्वर्ग देखत सें अब धारी ॥ सरगणें सी ॥ ५९ ॥ प्रफु
 महाभूतांचें पंचक ॥ एथ देखत आहें अनेक ॥ आणि भूत घाम एक ॥ भूत सृष्टीचे ॥ ६० ॥ जी सत्य लोक तुज माजि आहे ॥ दे
 खिलाच नुरा नन हानो हे ॥ आणि येरीकडे जं वपा हे ॥ तंव कैलास ही दिसे ॥ ६१ ॥ श्रीमहादेव भवानि येशी ॥ तुझा देखत आ
 हे एक अंशी ॥ आणि नु ते ही गान्धर्वां ॥ तुज माजि देखे ॥ ६२ ॥ पैक श्रयादि भक्तिकुळें ॥ इयें तुझिया स्वरूपी सकळें ॥ देखत
 संपाताळें ॥ पद्मगंसी ॥ ६३ ॥ किंबहुना त्रैलोक्य पती ॥ तुझिया एकैची अवयवाचि ये भिती ॥ इयेंच तुं शशुवने चि वरुती ॥ अंकुरी
 जाणों ॥ ६४ ॥ आणि ते शिंचें जे लांक ॥ तें चित्र रचना जी अनेक ॥ ऐसें देखत सें अलोलिक ॥ गांभीर्य तुझें ॥ ६५ ॥ श्लो ० ॥ अ
 नेक बाहू दूर वळने पश्यां मिलां सवतानें त रूपम् ॥ नांत न मध्यं न पुनस्तवां दिं पश्यां भविष्ये श्वरा विश्वरूपम् ॥ ६६ ॥ टी ० ॥
 पाठ. नाहो.

यारिव्यन्त्रसूत्रं निपेयं ॥ च हूंकडे जेवपा हन असं ॥ तव दोंदोड को जे सें ॥ आकाशा को मेलें ॥ ६६ ॥ तें सें एकै कनि रंतर ॥ देवा देखत-
 असें तुझे कर ॥ करीत आयवंचि व्यापार ॥ एकेंचि काकी ॥ ६७ ॥ सुगमहासून्याचे निपे सारे ॥ उघडली ब्रह्मकटाहाची भोंडारे ॥ तें सी
 देखत सें अपारें ॥ उदरं नुसी ॥ ६८ ॥ जीस हसू शीर्षयाचे दोखळे ॥ कोंटी वरी हांता तिण्की वेळे ॥ कीपर ब्रह्मचिव दन फळें ॥ मोडीने
 ओळें ॥ ६९ ॥ तें सी वळें जे उनीतं उनी ॥ तुझे देखत सें विश्व मूर्ती ॥ आणितया निपरी नेच पंक्ति ॥ अने का सें प ॥ ७० ॥ हें असो सरग पा
 ताळ ॥ की भूमी दिशा अंतराळ ॥ होव साठे लीस कळ ॥ मूर्ति मय देखत सें ॥ ७१ ॥ तुज वीण एका दिया कडे ॥ परमाणु दिहे तु
 लाकोडे ॥ अवकाशा पा हात सें परि न सापडे ॥ गें सें व्यपिलुं तुनां ॥ ७२ ॥ इयें नाना परी अपरि मि तें ॥ जे नुली सां दगिळीं होती
 महाभूतें ॥ ते तुला ही पवाड तुवां अनंतें ॥ कोंट ला देखत सें ॥ ७३ ॥ ऐसा कवणे दाया हूनि तें आला सी ॥ एथ बेसला मि की उ-
 णा आह सी ॥ आणिक वणि यमाये चि प्रपंती हांता सी ॥ तुझें दाण के वटें ॥ ७४ ॥ तुझें रूप वय कें सें ॥ तुजें पैळी कडे काय अ-
 से ॥ तू काय सया वरी आहासि ऐसें ॥ पाहिलें मियां ॥ ७५ ॥ तंव देखिलुं जी आघवेंचि ॥ नरि आतां तुझा दाव तूं चि ॥ तूक वणा
 चान ब्हे मि ऐसा चि ॥ अना दि आयता ॥ ७६ ॥ तूं उभा ना वेंठा ॥ दिघडां ना खुजटा ॥ तुजत की वरी वेंकुटा ॥ तेंचि आहा सी ॥ ७७
 ॥ तूकूं पें आपणयांचि ऐसा ॥ देवा तुझी तूं चिवयसा ॥ पाठी पोद पेशा ॥ तुझें दगा ॥ ७८ ॥ किंबहुना आतां ॥ तुझें तूं चि अमप
 वें अनंता ॥ हें पुटन पुटती पाहातां ॥ देखिलुं मियां ॥ ७९ ॥ परिया नुं झयारू पा आतां ॥ जी उणी विएक असें देखत ॥ जे आ-
 दि सध्या अंत ॥ तीन्ही नाहीं ॥ ८० ॥ येन वीर्गी गवसिलें आघवा ठायीं ॥ परिसोय न लां हेचि कंठीं ॥ झणो निश्रिही हे नाही ॥ नी
 न्ही एथ ॥ ८१ ॥ एवं आदि सध्यांतरा हिता ॥ तूं विश्व वरा अपरि मिता ॥ देखिला मि जीत त्वना ॥ विश्वरूपा ॥ ८२ ॥ तुजम हा

पाठ. ओं. ६६ त्या. ओं. ६९ दाखले, मांडोनि. ओं. ७३ नानाभूती साहित.

सूतींचिया आंगीं॥ उमटलिया एथ कसूतीं अंगीं॥ लंडला सिवानेपरिची आंगीं॥ ऐसा अवघड तुआ हासी॥ ८३॥ नाना एथ
कसूतीं निया दुमवली॥ तुझिया स्वरूप महा चर्चा॥ दिव्या लंकार फुलीं फकीं॥ सासिन्नलिया॥ ८४॥ हांकां जेम होदधी तूंद
वा॥ जाहाला॥ सतरासूतीं हलावा॥ कीतू एकदृश बरवा॥ सूतक फकीं फळालासि॥ ८५॥ जीभूतीं मूतक मांडिलें॥ जें सें
नक्षत्रांग गगन गुदालें॥ तें ससूतीं मय भरलें॥ देखत सें तुझे रूप॥ ८६॥ जीएके कोच अंग मांतीं॥ होय जाय हे विजगतीं॥ ए
वटिया हीं तुझा आंगीं मूतीं॥ कीरां माजालिया॥ ८७॥ ऐसा पवाद मांडुनि विशवाचा॥ तूंक वण पाएथ कोणाचा॥ हें पाह
लें तेव आमुचा॥ सारथीं तांचिवू॥ ८८॥ नरिमज पाहा नां मुकुंदा॥ तूं ऐसा चिव्या पकसवदा॥ मग भक्ता नुग्रहेंतया सुगंधा
॥ रूपांत धरि सी॥ ८९॥ कैसंच हूं फज्जेंचां वळें॥ पाहानां वाल्हावनी मन डोळें॥ रे मदे उजाडे तरे आकळे॥ दोही चिबा
हीं॥ ९०॥ ऐसीं सूतिं कोडिस वाणी कृपा॥ करूनि हांसीनां विश्वरूपा॥ कीं आमुचिया दिटीं सलेपा॥ जे सा मान्य हो देखती॥
९१॥ तरि आतां दिटीचा विटाळ गला॥ तुवां मज दिव्य चक्षू केला॥ ह्मणोनिया थारूं देखवला॥ महिमा तुझा॥ ९२॥ परि म
कर तुंडा भागिले कडे॥ हातां सितांचित् एवढें॥ रूपा जाहालासि हें पुढें॥ वाळविलें मया॥ ९३॥ श्रुत०॥ किशोदिन गदिन चक्रि
णें चतजोरा शिर बवंतोदी मिमंतम्॥ पश्यां भित्या दुर्गिरीत्य स मतां तरी मानला कंघुनि मयेयम्॥ १०॥ टी०॥ नोहेतो चिहा शि
रीं॥ मुकुट लेइलासि श्रीहरी॥ परि आतांच तज आणित्योरी॥ नवलकी बहु हे॥ १४॥ तेचि हे वारली चिये हातीं॥ चक्र पशिलि
तया आझनी॥ सांवरतां सिद्धि वसूतीं॥ तेन मोडें वृण॥ १५॥ येरी कडे तेचि हे नोहे गदा॥ आणित् किं लया दोनीं मुजानि
रायुथा॥ वांगोर सां वरा वयागीं विंदा॥ संसरिलिया॥ १६॥ आणितेणें चि वेंगे म हसा॥ माझिया मनो रथा सरिसा॥ जाहाला

पाठ- ओं- ८६ गुटलें. ओं- ९६ वांगोर.

७

७

७

७

भिष्विश्वरूपं विप्रवेद्या ॥ ९७ ॥ परिकायसंवाहं चोज ॥ यिस्मथकरावयाद्वाडनाहोमंज ॥ चित्तहोडनिजान-
 मोनर्बुज ॥ आश्चर्येयणं ॥ ९८ ॥ हेण्णयआर्यिकानाही ॥ एसंअसाहोनयेकाही ॥ नवलुअंगप्रभंचीनुवादे ॥ केंसीकोदलीयेय ॥
 ९९ ॥ एयअमीचीहीदटीकरपत ॥ सुयखद्याततेसाहारपत ॥ एसंनंविपणअद्रुत ॥ तजाचेंयया ॥ ३० ॥ होकांमहातेजचियामहाण
 वी ॥ बुडोनिगेलीसुएआयवी ॥ र्कायुगोतविजुचापानुवी ॥ झोकलेगगन ॥ १ ॥ नातरासंहारनेजाचियाज्याळा ॥ तोडोनिमाच
 बांधलअंतराकां ॥ आतांदिव्यज्ञानाचियाडोळा ॥ पाहवेना ॥ २ ॥ उज्वळअधिकाधिकवहुवस ॥ धडाडीतअहअनिदाहस ॥
 पडतदिव्यचसूसहीनास ॥ न्याहाळितां ॥ ३ ॥ होकांजेमहाप्रकृतीचाभडाड ॥ होताकाकागिनरुद्राचियादारींगूद ॥ तोतूनीयनय
 नाचामद ॥ फुल्लाजेंसा ॥ ४ ॥ तेंसंपसरळनिप्रकाश ॥ संप्रपांचवनियाज्वाळाचेंवळस ॥ पडनांब्रदकटाहकोळसे ॥ होत
 आहाती ॥ ५ ॥ एसाअद्रुततेजोराशी ॥ जन्मानवलुभ्यादखिलासी ॥ नाहींव्यामीअणिकांतीसी ॥ पारजीतुझिये ॥ ६ ॥ अष्टो
 ७ ॥ त्रिमसरंपरमंवेदितव्यत्वमस्यविषयस्यपरंनिगानम् ॥ त्वमव्ययः शाश्वतमथमंगोमासनातनस्त्वंपुरुषोत्तमम् ॥ १८ ॥ टी०
 ॥ देवाचूंअक्षर ॥ ओठाविंमंत्रांचंसिपर ॥ श्रुतीजयांचंघर ॥ गिवसीतआहानी ॥ ७ ॥ जेंआकाराचेंआयतन ॥ जेंविश्वनिदस
 पैकनिधान ॥ तेंअव्ययतूगहन ॥ अविनाशजी ॥ ८ ॥ तूधर्माचाबोलावा ॥ अनादिसिद्धतूनिन्यनवा ॥ जाणेंवीसततिस्वावा
 ॥ पुरुषविशेशतू ॥ ९ ॥ अष्टो ॥ अनादिमध्यांतमनंनवीवमनंतबाहुशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामितादीसहनाशकूलस्वर्ज्ज्मा
 विश्वभिदंतपनम् ॥ ११ ॥ टी० ॥ तंआदिमध्यांतमनंनवीवमनंतबाहुशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामितादीसहनाशकूलस्वर्ज्ज्मा
 पैचंद्रचंडीशडोळा ॥ दावितासिकापप्रसादलीळा ॥ एकांरुसासितमाचियाडोळा ॥ एकांपाळितोसिरुपादशी ॥ ११ ॥ जीए

पाट ॥ ओं ॥ १६ वागारे ॥ ओं ॥ १९ श्वतो ॥ ओं ॥ १ काजे ॥ ओं ॥ १ विशेष

७

४

७

वैविधावृत्ते॥ मोदेखतसेहं निरुते॥ पेटलं प्रकाशनीचं जिते॥ तैसें वल्कल हंतुं सो॥ १२॥ वणिवंनिपेटलं पर्वत॥ कवकू निज्याळा
चेउभडउठत॥ तेंसीचाटीनदादातांत॥ जीमलोकत॥ १३॥ इयेवदनीचियउबा॥ आणिजीसवांगकांतीचियाप्रभा॥ वि-
श्वनातलें अतिशोभा॥ जातआहे॥ १४॥ भ्लोबा घावाएथिव्योरिदमंतराहव्यासत्येकेनादिगश्चसर्वा॥ हट्टाद्रुनरुतसुगुंत
वेदंलोकप्रयव्यथितं महात्मन्॥ २०॥ दी०॥ कांजेंगोलोक आणिपानाळ॥ एथिवीआणि अंतराळ॥ अथवादशाशासमाकु
ळ॥ दिशाचक्र॥ १५॥ व्यापकव्याप्यपाहाती॥ नदिसेरुगामीचीव्यवस्था॥ जडोनिठेलांतल्लिनिता॥ विश्वरूपीची॥ १६॥ हे
आयवेंचितुवाएकें॥ भरलेंदेखतआहंकोतुंके॥ परिगगनाहीसकटमयानकें॥ आपुविजेनेवी॥ १७॥ नातरीअद्भुतरसाचि
याकल्लोकी॥ जाहालीचवदाहीपुवनसिफडियाकी॥ तेंसैंआश्चर्यमगमीआकळीं॥ कायएक॥ १८॥ नावरेव्यासीहअसाध
रणा॥ नसाहवरूपचेंउग्रपणा॥ सखदुरीगेलेंपरीभाणा॥ विपायेंपरिजे॥ १९॥ अगाधव्यासीहेनसाहवे॥ याणकांडनिदेही-
सामावे॥ रोमांकपितकापदुणावे॥ मयभीतमनहोये॥ २०॥ देवाऐसेंदेखांनिहूतें॥ नेणोंकैसेंआलेंमयाचेंभरितें॥ आनांदु-
खकल्लोकींझळवें॥ नीन्हीफ्रवें॥ २१॥ येहवीतुंजमहात्मयावेदेंवरणें॥ तश्चिभयदुःखासिंकोमेळवणें॥ परिहं सखनव्हेचिये
णेंगुणें॥ तेंजाणवतआहेमज॥ २२॥ जंवतुंझेरूपनोहदिद॥ तबजगासीसंसारिकुगोमटें॥ आतांदेखिलासितरीविषयवि-
दें॥ उपजलावास॥ २३॥ तेंवींचितुजेंदेखिलियासाठी॥ कायसहसातुजेंवोंयेदंलमिठी॥ आणिनेदींतीरीशोकसंकटी॥ राहोंके
वी॥ २४॥ ह्यणोनिमागासरोतंवसंसार॥ अडवीतयेतसेंअनिवार॥ आणिपुटातुंतवअनावर॥ नयेसिधेवों॥ २५॥ ऐसामा-
झारिलियासांकडा॥ बापुदयाचेंलोक्याचाहोतसेंहरडा॥ ऐसाहाधनीजीपुटा॥ चोजवलामज॥ २६॥ जैसाआरंबळलाओं-
पाठ-ओं-१३ दांत-ओं-१५ फुलेंक-ओं-१७ तें-ओं-१९ जग-

गी॥ तोसंमुद्रार्थेनवावयान्तागी॥ तंवकलांछपाणियांचियातरंगी॥ आगच्छोनिहे॥ २७॥ तेंसंयाजगांसिजाहाले॥ नूतेंदेखो
 नितकर्मकृतदेले॥ २८॥ अमीहवास्तरसंयाविशानिकचिद्विनाःयांजक्यांमृणोनि॥ स्वस्तीत्युक्तमहाभिसिद्धसंघाः
 स्तुवंतितांस्तुतिभिःपुष्पान्नाभिः॥ २९॥ टी०॥ यामाजिंभकभक्त॥ सराजीनिचांचंमच्यावे॥ ३०॥ हेतुझनिआगीकृतजें॥ जी
 कूनिस्वकर्मार्चवीजें॥ भिळतनुजओतजें॥ सद्वाचेंरी॥ ३१॥ आणि कएकसाविशानिप्रयसोक्त॥ सर्वस्वभरानितुझिया
 हेरु॥ तुजप्रार्थितनिकरु॥ जोडानिया॥ ३२॥ देखाअविद्याणवीण्डुसं॥ जीविषयबाणेंआंतुडले॥ स्वर्गसंसारोचयासांकडले॥ दोहोभासो
 ३३॥ ऐसआमुचेंसादुवणें॥ तुजवांचुनिकीजंमळवणें॥ तुजशरीरागासवभाणें॥ झणतदेवा॥ ३४॥ आणिमहशीअथवासिद्ध॥ वि
 द्याधरसमृद्धिविष॥ हबोलतुजस्वस्तिवाट॥ कर्तनीअनन॥ ३५॥ २८॥ टी०॥ रुद्रादित्यावसयोगेंचसाध्याविश्वेभिनोमरुत
 श्चोषपाश्व॥ गोधर्वरक्षासरसिद्धसंघावीसंतन्यांविस्मितांश्चवसवें॥ ३६॥ टी०॥ हरद्रादित्यांचंमळाने॥ वसुहममाध्यआय
 वे॥ अश्विनोदेवविश्वदेवविभवं॥ वायुहृदिजी॥ ३७॥ अवधारणितरआणिगंधर्व॥ पेलयाक्षरसंगणासवें॥ जीगंहेंद्रमुख्यदेव
 ॥ कांसिद्धादिक॥ ३८॥ हेआघवेचिआपुर्णालुयांलकीं॥ गुंकांठत आपणेंपेतुझाअवलकीं॥ हेमहामूर्तीदेवकी॥ पाहान-
 आहती॥ ३९॥ मगपाहतपाहतप्रतिक्षण॥ विस्मितहोईमिअंतःकरण॥ करितनिजमुकुटीवोवाळणी॥ प्रभुजीनुज॥ ४०॥
 तेजयजघोषकलरवें॥ स्वर्गगाजविनानिआपवें॥ ठाविनीललाटावरीबरवें॥ करसंपुट॥ ४१॥ नियोविनयद्रुमाचियेअरवी॥
 सरबाडलीसात्विकांचीमाधवी॥ झणोंनिकरसंपुटपुधुवों॥ तूंहोनासिफळ॥ ४२॥ टी०॥ रूपमहत्तंबहुवल्लुनचंमहाबाहोबहु
 बाहूरुपादम्॥ बहूदूरबहुदृष्टाकारुदृष्टाकाःप्रव्यथितास्तथाहम्॥ ४३॥ टी०॥ जीलोचनाभाग्रउदले॥ मनोसरवाचेंसुया
 पाठ-ओं-२९आंनूनि-ओं-३५अग्निह्वन-ओं-३६सोळाठनप्रवलकीं-ओं-३८स्वर्गगाजनानिआपवे-

योपाह्वे ॥ जं अगाधतु संदोस्वले ॥ विश्वरूपदही ॥ ४० ॥ हेलोकस्य व्यापकरूपदे ॥ पाहानां देवाहीवचकपदे ॥ याचं सचुरवय
 णजोदे ॥ भूलुतयाकडुनी ॥ ४१ ॥ ऐसं एकाचिपरिवचिं ॥ आणि भयानं कंवळें ॥ बहुलोचनहं सशस्त्रं ॥ अनंतमुज्जा ॥ ४२ ॥
 अनंत उरुबाहुचरण ॥ बहुदरअणिनानावणं ॥ कैसं प्रतिवदनीं मातलेपण ॥ आवेशाचं ॥ ४३ ॥ हो कामहाकल्याचियाअंती ॥
 तंवकलेनियमजुततेउती ॥ मळयानाचीं उजनी ॥ आबुखिलीजैसी ॥ ४४ ॥ नातरीं संहारत्रिपुरारीचीं यंत्रं ॥ कीप्रळयसैर-
 वाचीं सैवें ॥ नानासुगंतशर्फीचीं पात्रं ॥ भूतकिंचवोडविलीं ॥ ४५ ॥ तैसीं जियेनियेकडे ॥ तुझीं वळें जीं प्रचंडें ॥ नसमातीदरी
 माजिसिंहडे ॥ तैसं दशमदिसतीं सागित ॥ ४६ ॥ जैसं काळरात्रीचीं निआधारे ॥ उल्हास ननियतीं संहारखंचरे ॥ तैसियावदनीं प्र-
 कयरुधारे ॥ काढलियादादा ॥ ४७ ॥ हें असां काळं अवंतिलेरण ॥ कांसवें संहारं मातले मरण ॥ तैसं अतिभिंमुळुवाणेपण ॥
 वदनीं तुं शिंये ॥ ४८ ॥ हे बापडीलोकसुधी ॥ मोदकीणविषाहिलीं दिदी ॥ आणितुं स्वकांडुंदीचियातरीं ॥ झाडहोउनिठली ॥ ४९
 तुजमहाभूतकनियासागरी ॥ ओतां हिं जिलोक्यजीविताचितीरी ॥ शोक दुवांतलुहरी ॥ ओदोळतअसे ॥ ५० ॥ एथकोपोनिजरी
 वेंकुटें ॥ ऐसं हनहाणिपैले अवचरे ॥ जेतुजलोकांचेकाइवाटे ॥ वंथ्यां निसुरवभागी ॥ ५१ ॥ तैरीं जीलोकांचे कीरसाधारण ॥ बो-
 गआडसूनसेवोडण ॥ कैवंसहसाहाणप्राण ॥ माझीचकापनी ॥ ५२ ॥ ज्यामजसंहाररुदवांसिपें ॥ ज्यामजें भोगें सुखलपें ॥ तो
 मीएथें अहावाहिकें कांपें ॥ ऐसंतुवांकुं ॥ ५३ ॥ तैरिनवलबापादेमहामारी ॥ इयानामिविश्वरूपजरी ॥ हेव्यासरूपणें हरी ॥
 प्रयासिआणी ॥ ५४ ॥ म्हुं ० ॥ नमः सृशंदीसमनेकवर्णं व्याप्तानंदीतविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वा हिलां प्रव्यथितां तारात्माभूतिं
 नविंदामि शमंच विष्णो ॥ २४ ॥ टी ० ॥ ठेंलीं महाकाळे सोहंटे तटें ॥ तैसीं कितें कें रागितें ॥ इहीवाटो नियां पाकुटें ॥ आकाश
 पाठ. ओं-६० जीवा. ओं. ४२ तैवीं विवदु. ओं. ४३ या. रु. ओं. ५१ धन्य. ओं. ५२ वर्ग.

केले ॥ ५५ ॥ गगनाचे निवाडुपणीं नाकळे ॥ त्रिभुवनींचियाही वारिया नें वेदाळे ॥ ययाचे निवाफा आगी जळें ॥ कैसें थडाडीन असे
 ॥ ५६ ॥ तेवींचि एका सारि रेंवेरुको नोहे ॥ गथवणावणांचा भेद आहे ॥ होको जे मळयीं सावावो लाहे ॥ वन्ही ययाचा ॥ ५७ ॥ ज
 याचिये आंगीं निदीसी ॥ येवटी जें त्रैलोक्य को जे रावोडी ॥ कीतया ही तोडें आणि तोडीं दोन दाटा ॥ ५८ ॥ कें सावारयाधनुर्वाने चढ
 ला ॥ समुद्र कीं महापूरी पडिला ॥ विषा निमारा प्रवतला ॥ वडवान कासी ॥ ५९ ॥ हळा हळ अग्नि पियालें ॥ नवल मरण मारा प्रव
 तलें ॥ तें संहार ते जाया जाहालें ॥ वदनं देखा ॥ ६० ॥ परिकोण मानें विशाळ ॥ जें सेंतु शिबिया अंतराळ ॥ आकाशासि कड्या
 कळ ॥ पडोनि ठेळें ॥ ६१ ॥ नानरी कासं स्नान वसुंधरी ॥ जें हरण्याक्षरि गाला विवरी ॥ तें उघडलें हटके शवरी ॥ जें विपाताळ कुहर
 ॥ ६२ ॥ तें सावळ्या चिया विकाशा ॥ माजि जिव्हांचा आगळा चि आवेश ॥ विश्व न पुरे स्वर्णा निघास ॥ नभरीचि कोडें ॥ ६३ ॥
 आणि पाताळ व्याळा चिया फुलारी ॥ गरळ ज्वाळा लागती अंबरी ॥ तें सीप सरळिये वदनरी ॥ माजि होजि कड्या ॥ ६४ ॥ काटूनि म-
 कय विजुंचीं जुं बाडें ॥ जें संपन्नासिले गगनाचे हुडे ॥ तें सें आंकाळु वावरी आं कडे ॥ धग धगीन दाटाचे ॥ ६५ ॥ आणि ललाट पटा
 चिये रवोळे ॥ जें संपया तें मेढवि ना तिडोळे ॥ होका जम हा मृत्युच उमाळे ॥ कडव सारा हि ले ॥ ६६ ॥ ऐसें वाडुनि भयाचे भोज ॥
 एथ काय निपजवू पाहानोसि काज ॥ तें नेणां परि मज ॥ मरण भय आलें ॥ ६७ ॥ देवा विश्वरूप पाहायाचे डोहळें ॥ केले तिथे पा
 तलो मति फळें ॥ बापा देखिलासि आतां डोळे ॥ निवावे तें से निवाळे ॥ ६८ ॥ अहो रे हपाथि वकीर जाये ॥ ययाची काकु कुती
 कवणा आहे ॥ परि आतांचे नन्य माझे वषायें ॥ वांचेल कीं न वंचें ॥ ६९ ॥ येन्हवीं भयास्तव आंग कापें ॥ नावेक आंग कें न-
 रिर मन नापें ॥ अथवा बुद्धी ही वासिपे ॥ अभिमान विसरिजे ॥ ७० ॥ परिये तुळिया हि वेगळा ॥ जो केवळ आनंद कळा ॥

पाठ. ओ. ५७ बानी. किवा वाडी. ओ. ६९ ठाके. ओ. ६७ दाडीनि.

तथा अंतरात्म्याही निश्चला ॥ औलीशरी ॥ ७१ ॥ बापसाक्षात्काराचा वेध ॥ कैसा देशाडी केला बोध ॥ हा गुरु शिष्य संबंध ॥ विपाये नंदे ॥ ७२ ॥ देवातुझा ये दर्शनी ॥ जेव्हा कल्प उपजलें आहें अंतः करणी ॥ तें सांवावया ला गिंगवसणी ॥ धैर्याची करितसें ॥ ७३ ॥ तंव माझी नानां धैर्य हार पलें ॥ कीं नयाही वरी विश्वरूप दर्शन जाहलें ॥ हें असो परिमजमलें आंतुडवि लें ॥ उपदेशाद्या ॥ ७४ ॥ जीवा विसंवावया चिया चाडा ॥ संघां वाधावी करितसें बापुडा ॥ परिसोय ही कवण कडा ॥ नल्लं एथें ॥ ७५ ॥ ऐसें विश्वरूपा चियामहामारी ॥ जीविलंगेलें आहें चराचरी ॥ जीबोलें तरिकाय करी ॥ कैसे निराहें ॥ ७६ ॥ भ्रष्टो ॥ द्रष्टा कराला निचते मुरवा निदृष्टे वकालानल सा निभाति ॥ दिशोनजाने नल भेच शर्म मसीदे वेशजगनिवास ॥ २५ ॥ टी ० ॥ पै अखंडोळ्या पुढें ॥ फुटलें जें संधा भयाचें भांडें ॥ तैसीं तुझीं मुखें वितेंडें ॥ पसरलीं देखें ॥ ७७ ॥ असा दो न दादाची दाटी ॥ न झाकं वेमाहो दोयोदी ॥ सें प्रभूकृपशस्त्राची दाटकाटी ॥ लागली या जैश्या ॥ ७८ ॥ जें सेंत सका विषभर लें ॥ हो कांजे काळ रात्रि प्लुत संचरलें ॥ कीं आंगने या स्त्र्य मोरिलें ॥ वज्राग्नि जैसे ॥ ७९ ॥ तैसीं तुझीं वलें पचेंडें ॥ वरि आवेश हा बाहेरि वोसडे ॥ आले मरण रसांचे लोंढें ॥ आह्मावरी ॥ ८० ॥ संहार समयी चांचेंडो निळ ॥ आणि माहाकल्यात प्रलयानळ ॥ या दोही जै होय मेळ ॥ तें काय एक न जळ ॥ ८१ ॥ तैसीं हीं संहार के तुझीं मुखें ॥ देखो निधीर कां आह्मा पारुखे ॥ आनंतु लुलोमी दिशान देखें ॥ आपण पेंनेणे ना ॥ ८२ ॥ मोट के विश्वरूप डोकां देखिलें ॥ आणि स्वरवाचे आवर्षण कांपडिलें ॥ आतां जा पाणिजा पाणि आपुलें ॥ अस्ताव्यस्त हें ॥ ८३ ॥ ऐसें करि मिह्यणो निजरि जाणें ॥ तरि हे गोष्टि सांगावी कोमी ह्यणें ॥ आतां एक वेळ वांचवी जीयाणें ॥ या स्वरूप प्रकृता पासांनी ॥ ८४ ॥ जरि तूं गोसावी आमुचा अनंता ॥ तरि सुदेवोडण माझिया-
पाट ॥ ओं ॥ ७१ ॥ सिरागी आली ॥ ओं ॥ ७८ ॥ हो ॥ ओं ॥ ७९ ॥ आंगने या स्त्र्य परि जलें ॥ ओं ॥ ८६ ॥ वांचवी जो ॥

जीविता ॥ सोढवीपसागहाभागुना ॥ माहासारीचा ॥ ८५ ॥ आइकेंसकदवाचिपरदेवते ॥ तुगचें नन्यगाविश्ववसते ॥ तें-
विसरलासिहंउपरते ॥ सहारुआदरिले ॥ ८६ ॥ द्यगांनवगीप्रसन्नहोदेवराया ॥ सहरीसंहरीआपुलीमाया ॥ काटीमतेम
हाभया ॥ पासोनिया ॥ ८७ ॥ होनैठाग्रवर्गपुटनपुटनी ॥ तेंद्वणिजेबहुवाकाकुर्ती ॥ ऐसामीविश्वमूर्ती ॥ भंडकाजाहल्लो ॥
८८ ॥ जेंअमरावनीयेआलाधाडा ॥ तेंम्याकळनिकेलाउवेडा ॥ जोमीकाळाचयाहीतोडा ॥ वासिपनधरी ॥ ८९ ॥ परिनया-
आंतुलनव्हेंदेवा ॥ एथमृत्युसहीकरुनिचटावा ॥ तुवाआमुचाचिघोटभरावा ॥ यासकळविश्वेसी ॥ ९० ॥ केसानव्ह-
ताप्रकयाचावेळ ॥ गोरवांतचिभिनलासिकाळ ॥ बापुडाहाधिमुवनगोळ ॥ अन्यायुजाहाळा ॥ ९१ ॥ अहासाग्याविपरीता
॥ विघ्नउठिलेंशांतकारिता ॥ कटकटाविश्वगंलेंआनी ॥ तुंलागलासिग्राम् ॥ ९२ ॥ हेंनळेमोरोकडें ॥ मेघपसरुनियांतोडें ॥
कवळितासिचहूंकडे ॥ सैन्येदयें ॥ ९३ ॥ मृत्यो ॥ ८ ॥ अमीचिबोधनराष्ट्रस्यपुत्राः सर्वेसहैगविनिपालसयै ॥ श्रीध्याद्रोणःसूत
पुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपिपोथमुख्यैः ॥ ९४ ॥ नोहंनिहेंकौरवकुळीचंवीर ॥ आंधीकियाधनराष्ट्राचेंकुमर ॥ हंगेलगे
लसहपरिवार ॥ तुझियावदनी ॥ ९५ ॥ आणिजंजेयांचेंनिसावायें ॥ आळदेशादेशीचंराये ॥ तराचेंसागावयाजावोनला
हे ॥ ऐसेंसरकटीतआहासी ॥ ९६ ॥ मदमुरगाचियासंघटा ॥ येतआहासीप्रदधटा ॥ अरणीहनथाटा ॥ दंतामिभिटी ॥ ९६
जंजाबिचीलमार ॥ पदानीचंमोगर ॥ मुखीआनभार ॥ हारपतातिमो ॥ ९७ ॥ कुनाताचियाजावळी ॥ जेंएकचिविशवा
नोगळी ॥ तियेकोठीवरीसगळी ॥ गळितामिशखें ॥ ९८ ॥ चतुरंगापरिवारा ॥ संजोडयारहंवरा ॥ दांतनलाविसीमोपरमे
श्वरा ॥ कैसानुष्टलासिबरवा ॥ ९९ ॥ हागाभीष्टऐसाकवण ॥ सत्यशौर्यनिपुण ॥ तोहीआणिब्राह्मणद्रोण ॥ ग्रासिलासि
पाठ-ओं-८८ हा-ओं-९९ गोसांवीत-किंवा देखात-ओं-९८ कोडी-

कटकता ॥ १०० ॥ अहमसहस्रकराचातुःवर ॥ अथगंगालाकर्णवरी ॥ आणि आसुचिया आघवांचाकरा ॥ फंडिलादेखें ॥ ११ ॥
 कटकताथानया ॥ कैसंजाहालें अनुग्रहायया ॥ मियाप्राधुनिजगाबापुडिया ॥ आगिळें मरण ॥ २ ॥ मागंथोडियावहुवाउपप
 नी ॥ थेंगंसांगीनळ्याविभूनी ॥ तैमानसंविमापुटनी ॥ वेंसलांपुसां ॥ ३ ॥ द्युगोनिभोग्यतेंत्रिशूनीनुके ॥ आणिबुद्धीहीहो
 गागमारिवीटाके ॥ माझेकपाळींपिटावेनोक ॥ तेलालेकात्या ॥ ४ ॥ पूर्वीअमृतहीहाताआलें ॥ परिदेवनसनीचिरुगळे ॥ म
 गकाकडूदुधिलें ॥ शंबरीजेंसें ॥ ५ ॥ परितेंएकबगीथोडें ॥ केलियापनैकारामाजिवडें ॥ आणिनियेअवसरीचेंनैसांकडें
 ॥ निस्तरविलेंशंपु ॥ ६ ॥ आनांहाजकृतवाराकावेंटाके ॥ कोणाहीविपाभरलेंगगनगिळे ॥ महाकाळोसिकेखेळें ॥ आंगवत
 असं ॥ ७ ॥ ऐसाअर्मुनदुःखेंशिणत ॥ शोवितअसेजवाआंत ॥ परिनदेखेनोयस्तन ॥ अभिप्रायदेवाचा ॥ ८ ॥ जेमीमारि-
 ताहेकौरवमरते ॥ ऐसांनिवेटाळिहातामोहेंबहुते ॥ नोफेडावयालागींअनंतें ॥ हेंदाराविलेंनिज ॥ ९ ॥ अरेंकोणहीकोणहानें
 नमारी ॥ अथमीविहोसवंसंहारी ॥ हेंविश्वरूपव्याजेंहरी ॥ यकटिनअसे ॥ १० ॥ परिवायांचिव्याकुलता ॥ तेंनचोजचेचपंडु
 कृता ॥ मगअहाकंपनन्दता ॥ वाटवितअसे ॥ ११ ॥ श्रुतो ॥ वल्काणितेनवरमाणविशंनिदंष्ट्राकरालाभिप्रायानकानि ॥ कै-
 चिद्विलनाशनानरेषुसंशयनेचूर्णितेंरुसमांगी ॥ २० ॥ टी ॥ तेंयद्युगणेपाहाहोएकेवेळें ॥ सासिकवचेंसिदोन्हीदळें ॥ वद-
 नींगेळींआभाळें ॥ गगनींकांजेंसी ॥ १२ ॥ कामहाकल्याचियाशिवरी ॥ जेंरुतांनकोपळाहोयसुष्टी ॥ तेंएकविमांदिस्वर्गभिरी
 ॥ पानाळ्यासकटें ॥ १३ ॥ नातरीगुदासीनैदेंवें ॥ संचकाचीवैभवं ॥ अधिचीतेशस्वभावं ॥ विलयाजानी ॥ १४ ॥ नैसीसांभिच
 लीसैस्यएकवटें ॥ इयेंमुखीजाहालींयविटें ॥ परिएकहीनोडोनिनसुटे ॥ कैसंकमेटेखा ॥ १५ ॥ अशोकाचेअंगवशो ॥ चयाळें

पाठ. ओ. ६ ग्रनि. ओ. ७ ग्ववळ. ओ. ९ नें. ओ. १५ सांचली.

५

५

५

५

करेनैजैसे ॥ लोकवक्त्रा माजितेस ॥ वायागळे ॥ १६ ॥ परिमसाळें मुकुटेंसी ॥ पडलीं दादांचें सांडसी ॥ पीठ होतें केसी ॥ दिस
 त आहानी ॥ १७ ॥ तिचेर तें दातांचें येसवडी ॥ कूटलागळे जिभचावुडी ॥ कोहोकाहो आंगरडी ॥ दंडूची मारवली ॥ १८ ॥ होको-
 जे विशयक पेंकाळे ॥ ग्राभिलोकोकांची शुगरिंबळे ॥ परिजिवित् देहीचा जिमाळे ॥ अवश्यकें गखिली ॥ १९ ॥ तें सीधरीरामाजिचो
 खडी ॥ इयंनुन मांगो होनीं फुडी ॥ ह्यगोनिमहाकाळा चियाहि तोडी ॥ परि गुरली शेंखी ॥ २० ॥ मग द्वाणें हें काई ॥ जन्मला-
 आनमो हरचि नाही ॥ जग आपें संचित न होही ॥ मंचरता हे मो ॥ २१ ॥ यया आपें आप आय विद्यासुखी ॥ लागल्या आहा
 निवटना चियाशेंवडी ॥ आणि हा जेथिंच यातें र्थ मदी ॥ देतसे उगला ॥ २२ ॥ अस्यादिक समस्त ॥ इचा मुरवाभाजि पोंवत ॥ येरसा
 मान्य हें स्मरत ॥ गेली चि वटनी ॥ २३ ॥ अण्णिक ही ह न जान ॥ तें रुप जग्ये चिदायी घाशित ॥ परि याचिया मुरगानि फांत ॥ न सुटे
 चि काही ॥ २४ ॥ अहो ॥ यया नदीस दंडी वुंगी ॥ समुद्र सवाभिमुखा द्रवीत ॥ त आत नर्म निरला कवोर बिषाति बल्काण्यभि
 विज्वलति ॥ २५ ॥ दी ॥ जेस मदान दींचे गी ॥ की हलत कि तोय मुद्राचें आंग ॥ तसें आयवाचिक डनि जग ॥ यं वंशत मुरगी ॥
 २५ ॥ आयुष्य पंथ पाणी गणी ॥ करोनि अहंगाना चं पाणी गणी ॥ वेगो वल्का मळणी ॥ साधि जत आहानी ॥ २६ ॥ अहो ॥ यथा
 प्रदीमं ज्वलन पतन गाविशति नाशाय समुद्र वगा ॥ तथेव नाशाय विशति नग्नाकास्तवापि वल्काणि समुद्र वगा ॥ २७ ॥ दी ॥ ज
 कृतया गिरीच्या आंगवरया ॥ माजि मग पतन पत गाचिया झोका ॥ तें स समग्र गोक दरया ॥ इय वटनी पडनी ॥ २७ ॥ परि जे तुले ये
 थ यं वंशले ॥ ते तुलिया न्गो हं पाणि पाणि गळिले ॥ बहि वटी हें पुसिले ॥ नामरूप पतयांचे ॥ २८ ॥ अहो ॥ अस्मिन् यं प्रसमानः समता
 स्त्रोक्तान्समग्रान्बदने ज्वलद्भिः ॥ तेजो भिरातु यं जगत्समग्र भासस्तवायाः यपतं निविष्णो ॥ २९ ॥ दी ॥ आणि यतु भिया हो-

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

७१

७२

७३

७४

७५

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

८८

८९

९०

९१

९२

९३

९४

९५

९६

९७

९८

९९

१००

१०१

१०२

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०८

१०९

११०

१११

११२

११३

११४

११५

११६

११७

११८

११९

१२०

१२१

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६

१२७

१२८

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

१४३

१४४

१४५

१४६

१४७

१४८

१४९

१५०

१५१

१५२

१५३

१५४

१५५

१५६

१५७

१५८

१५९

१६०

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६६

१६७

१६८

१६९

१७०

१७१

१७२

१७३

१७४

१७५

१७६

१७७

१७८

१७९

१८०

१८१

१८२

१८३

१८४

१८५

१८६

१८७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९६

१९७

१९८

१९९

२००

२०१

२०२

२०३

२०४

२०५

२०६

२०७

२०८

२०९

२१०

२११

२१२

२१३

२१४

२१५

२१६

२१७

२१८

२१९

२२०

२२१

२२२

२२३

२२४

२२५

२२६

२२७

२२८

२२९

२३०

२३१

२३२

२३३

२३४

२३५

२३६

२३७

२३८

२३९

२४०

२४१

२४२

२४३

२४४

२४५

२४६

२४७

२४८

२४९

२५०

आरोग ॥ करिंतु कुं नही उरण ॥ केंसे दीपन असाधारण ॥ उदयलें यया ॥ २९ ॥ जें सारोगिया ज्वरा हनि उठिला ॥ कं प्र
णगा दुकाळ हािला ॥ तें साजि भांचलुळ काटे शिवा ॥ अवाकु वें चाटितो ॥ ३० ॥ जें सें आहाचे निनवें काही ॥ तों डापा
सो नि उरलें चिनाही ॥ केंसी समसामितन चाई ॥ फुकेले पणाची ॥ ३१ ॥ काय सागराचा घोटा मरावा ॥ कीं पर्वताचा यांस क
रावा ॥ ब्रह्म कटाह घालावा ॥ आद्य वाचि दाटे ॥ ३२ ॥ दिशासगळिया चिगिका विया ॥ चों दिणिया चाटुनि ध्याविया ॥ ऐसें-
वर्तत आहं साविया ॥ लोलुपु बातु झें ॥ ३३ ॥ जें सामोरीं काम वाटे ॥ कांडे नें आगीं मिह काक चटे ॥ तें सीखारवातां चितो
डें ॥ खाखा तें ठेळी ॥ ३४ ॥ वें सें कचि कें वटे पसरलें ॥ त्रिभुवन जिह्वायीं आहें टें कळें ॥ जें सें काकवीठ घातळें ॥ वडवानळीं
॥ ३५ ॥ ऐसीं अपार वदने ॥ आतां यतुनीं केंचीं त्रिभुवनें ॥ को आहार मिळतां येणें मानें ॥ वाढविलीं सें घें ॥ ३६ ॥ अगाडालो
क बापुडा ॥ जाहाला वदन ज्वाळा वर पडा ॥ जें सीवण वें याचिया वेदां ॥ सांपडनीं मृगें ॥ ३७ ॥ आतां तें सें याविषया जाहालें
॥ देवन कें हें कर्म आलें ॥ कांजग जळ चरा पागिलें ॥ जाहालें काळें ॥ ३८ ॥ आतां ये अंग प्रमेचिये वागुरें ॥ कोणी कडुनि न
गि जें लचराचरें ॥ हीं वळें नोही निजोहरें ॥ नोडवलीं जगा ॥ ३९ ॥ आगीं आपुले निदाह कपणें ॥ केंसे निपोळि जें नेणें ॥ परि
जया लागोत यामाणें ॥ स्मृति कानाही ॥ ४० ॥ नातरा माझें नि तिरवट पणें ॥ केंसे नि वटे हें शस्त्र कायि जाणें ॥ कां आपुलि-
यामार नेणें ॥ विष जें सें ॥ ४१ ॥ तें सीतुज कांही ॥ आपुलिया उय पणाचीं सेचि नाही ॥ परि ऐली कडिले मुखीं रवाई ॥ हो स
रली जगाची ॥ ४२ ॥ अगा आत्मा तुं क ॥ सकळां विशव व्यापक ॥ तरिकां आत्मा अतक ॥ तें सावोड वलासी ॥ ४३ ॥ तरि-
मियां सांडिलीं वित्वाची चाड ॥ आणि तुवां हीं न धरावीं मीड ॥ मनीं आहें नें उघड ॥ बोलु पां मुखें ॥ ४४ ॥ किती वाटा वि-
पाट ॥ ओं ॥ ३३ ॥ लीं न्यचा तुज ॥ ओं ॥ ३४ ॥ वाटा विलें असा न्यातां ॥

७

७

७

७

सीयाउग्ररूपा ॥ आंगीचैष्मगवतपण आरुवांवापा ॥ नार्हांतरीकृपा ॥ मजपुरतपाही ॥ ६५ ॥ ॥ स्तो ॥ आरव्याहमेको
 भवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञानुभिच्छामिभवंतमाद्यनहिप्रजानामितवमवृत्तिम् ॥ ६६ ॥ टी ॥ तदिए
 क्वेळवेदेद्या ॥ जीविभुवनैकआद्या ॥ विनवर्णविश्ववंद्या ॥ आदिकेमासी ॥ ६७ ॥ ऐसंबोळोनिवीरें ॥ चरणनमस्कारि
 लेशिरे ॥ मगह्मणंतरीसर्वेश्वरें ॥ अवगारिजो ॥ ६८ ॥ भियाहोभावयासमाधान ॥ जीपुमिळेंविश्वरूपध्यान ॥ आणिएके
 चिकानेंविभुवन ॥ गिळितचिउदित्तासि ॥ ६९ ॥ नरितुकाणकायनुदी ॥ इयेभ्यासरमुखेकामेळविळी ॥ अवधियाचि
 करीपरिजली ॥ शस्त्रेकाल्या ॥ ७० ॥ जंजवतवरागाटपणें ॥ वादोनिगगनाआणेतोसिउणें ॥ कांडोळेकरुनिभंगुळ
 वाणें ॥ षेडसावीतआहासी ॥ ७१ ॥ गथवृत्तांतेंसंदेवा ॥ चारुयाकिजतसेहवा ॥ हाआपुळानुवांसागावा ॥ अभिप्राय-
 मज ॥ ७२ ॥ याबोलाह्मणेंअनंत ॥ मीवाणहेंआहामीपुसत ॥ आणिकायिसयालागीअसेवाटन ॥ उग्रतेसी ॥ ७३ ॥ ॥ स्तो ॥
 ॥ ॥ श्रीष्मगवानुवाच ॥ ॥ कान्तास्मिन्नाकसयवृन्द्यहो लोकानुसमाहनुमिहप्रवृत्तः ॥ अतोपत्वानेभविष्यतिस-
 र्वेयवस्थिताः प्रत्यनीकेषुयाथाः ॥ ३२ ॥ टी ॥ तर्हिमीकाळगाहंपुटें ॥ लोकसंहारावयालागीवाटें ॥ सेयपसरिलाआ-
 हातीतोंडो ॥ आतोयासीनहेंआयवें ॥ ७३ ॥ गथअजूनह्मणकटकटा ॥ उगिलेंमागिन्यासंकटा ॥ ह्मणोनिआळविला
 नंवबोखटा ॥ उवाइलाहो ॥ ७४ ॥ तवीचिकटिणबोलेंआसनुदी ॥ नेणेंअजूनहाइहंपुटी ॥ ह्मणोनिसेवेचिह्मणेंकिरी
 टी ॥ परिआनएककांहीअसे ॥ ७५ ॥ नरिआतोचियेसंहारवाहरें ॥ नुंस्वोपाइवअसाबाहिरे ॥ तथजातजाताधनुधरें ॥
 सांवारिलेयाण ॥ ७६ ॥ होताभरणमहामारींगला ॥ तोभागुनासावधजाहाला ॥ मगलागलाबोला ॥ चित्तेंदें ॥ ७७ ॥ ॥

पाठ-ओं-५-आणित्तासि-ओं-५-उपाइला-ओं-५-जेंग-

सैव्यणिजनआहेदेवें॥ अर्जुनामाझेंतुह्वाहंजाणावें॥ येरजाणमीआघवें॥ सरलोआसू॥ ५८॥ वज्रानकीपंचही॥
जैसीघांपेळोणियांचीउंडी॥ तैसेगजहमाझियातोंडी॥ तुवादेखिलेंजे॥ ५९॥ तरितयामाझारीकोही॥ सरवसेनिउणे-
नाही॥ इयवायांचिसेन्येंपाही॥ बैरवजतेंआहानी॥ ६०॥ ऐशाचतुरंगाचियासंपदा॥ करितमहाकाळेंसीस्पर्धा॥ वा
टिवेचियामदा॥ वळुयलेजे॥ ६१॥ हेजेमिकोनियांमेळे॥ कुंथतीवीरप्रवृत्तीचेनिबळे॥ ज्यावरीगजदळे॥ वारखाणि
जताती॥ ६२॥ ह्यणतीसृष्टीवरीसृष्टीकरूं॥ आणवाहूनिमुद्युतेंमारूं॥ आणजगाचाभरूं॥ घोटयया॥ ६३॥ पृथ्वी
सगळीचिगिळू॥ आकाशवरिचावरीजाळू॥ कायबाणवरीखिळू॥ वारयातें॥ ६४॥ बोलहतिथेराहूनिनिखटा॥ दिस
तीअरनीपरिसदासठ॥ मारकपणेंकाळकूटा॥ मडुरह्यणत॥ ६५॥ तरिहेगंधर्वनगरींचेउभाळे॥ जाणपोकळीचेपेंड
वळे॥ अगाचिचींचेपुतळे॥ वीरहेदेखें॥ ६६॥ जेंसेलेंपांचेरूपकंळें॥ नयाहानीशस्त्रदिधळें॥ चैनन्यानीणमांडलें॥ उ
ग्ररूप॥ ६७॥ हांगासृगजकाचापूरआला॥ दळनदंकापडाचासापकेला॥ इयासृंगारू॥ नियांरवाळा॥ मांडिडीयापें
॥ ६८॥ अली०॥ तस्मान्वमुनिष्ठयशालप्रस्यजित्वाशत्रून्मुखराज्यंसमृद्धम्॥ मयैवैतेनिहताः पूर्वमेवभिभित्तमात्रं
वसव्यसाचिन्॥ ३३॥ टी०॥ येरचेष्टविनेंजेबळ॥ तेंमागाचिभियांयासिलेसकळ॥ आतांकोल्हेरिचेवेनाळ॥ तैसेनि
जीवहेआहानी॥ ६९॥ हालविनीदोरीतुटकी॥ तरितयेखांबावरीलबाहुली॥ भलुतेणेंलोडिलीं॥ उलथोनिपडती॥
॥ ७०॥ तेंसासेन्याचायाबगा॥ ओडुगोवळमानुगेपेंगा॥ ह्यणोनिरुटीउठीविगां॥ शाहाणाहोई॥ ७१॥ तुवांगोग्रहणा
चेनिअवसरें॥ घानलेंभोहनास्त्रएकसरें॥ मगविराटाचेनिमहाभेडुतरे॥ आसदुनिनागविलें॥ ७२॥ आतांहेत्या
पाठ॥ ओं॥ ५८ तंवऐसें॥ ओं॥ ६० बलाजनें॥ ओं॥ ६२ जम अथवा यमा॥ ओं॥ ६८ स्वाळा॥ ओं॥ ६९ चेष्टवी॥ ओं॥ ७२ वीराचेः

हनिनिपटारं जाहाले ॥ निवर्त आशितरणपाडिले ॥ घेदेय शशिपुर्जितिले ॥ राक ननि अर्जुने ॥ ७३ ॥ आणिकार देय शचिनोह ॥ समयराज्य
 ही आले आहे ॥ तूनि भिन्नमात्र चिहोये ॥ स्वयमाच ॥ ७४ ॥ अम्हो ॥ द्रोणाचर्माम्येच जयद्रथचक्रणतया न्य ॥ नीपयाधवीरान् ॥ मया ह-
 तारस्व जहिमाव्यथिष्टायुधस्वत्रनाभिगणसपत्नान् ॥ ७५ ॥ टी ॥ द्रोणाचा पाडन करी ॥ भीमाचं मयन धरी ॥ केंसो निकर्णावरी ॥ प-
 र्जुन हन ह्यणी ॥ ७६ ॥ कोणउपाय जयद्रथाकीजे ॥ हंसचिंतयि न तुझे ॥ आगोकाही आर्थीजेने ॥ नावाणि गोवरी ॥ ७७ ॥ तेंही एकएक आ-
 यवे ॥ चित्रीचोसि हा देस नावे ॥ जंसेवाले निहाते व्यावे ॥ युयोनिया ॥ ७८ ॥ यावरी सांडव ॥ वायसा युद्धाचं मज्जावी ॥ हा आषासगा-
 आधवा ॥ येरयासिलो मिया ॥ ७९ ॥ जेव्हां तुंवाटो गरी ॥ तंसा अयावटनी पाडि ॥ तेंव्हां नियाचं आयुध शरणे ॥ आतां रितोसोपे ॥
 ७९ ॥ द्वाणोनिवाहला उठो ॥ भियांमारेले नोनवरी ॥ नरिंभं शोकसकरो ॥ नीथिगिया ॥ ८० ॥ आपणा निआडिखिळां छिजे ॥ नोको-
 नुंकेजे साविंथान पाडिजे ॥ तेंसें देखगा तुझे ॥ नमिनी आहे ॥ ८१ ॥ यापावि रुद्रजे जो हाणे ॥ तें उपजतां चयापेने ॥ आचारो ज्ये-
 सीसंचले ॥ मशतुंमोगी ॥ ८२ ॥ सावियाचि उतत हा ने दयाट ॥ आणिवि ज्ये जगो दुसट ॥ तें वाधिं न्य शिट ॥ साया मन लगतो ॥ ८३
 ॥ ऐसि पाइया गोरी ॥ विशवाचा वाकपटी ॥ लिहूनि याग्यां करीटी ॥ दनय द्याद ॥ ८४ ॥ अम्हो ॥ ॥ मंजयटयाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वा य-
 चनं केशवम्यकुनाजि वेंपमानां करीटी ॥ नमस्कृत्या भूगणवाहल आमग हर्षमिमीत प्रणय ॥ ८५ ॥ टी ॥ एसी आघ-
 वीचि हे कथा ॥ तया अपूर्ण मनोरथा ॥ सजयसारा कुलांथ ॥ ज्ञान दवखण ॥ ८६ ॥ मग मया खोको न गगाजक ॥ सुटलिया वा-
 जनी स्वका ॥ तेंसी वाचा विशाळ ॥ बोलत तया ॥ ८७ ॥ नान रिस हा नयाले दुसट ॥ घडय हा रण केवडे ॥ कांय मयु भिला मंद-
 गचके ॥ ही राब्य जिंसा ॥ ८८ ॥ तेंसारां मरि महांने ॥ हेराक्य विशवसे ॥ दानि न करी ॥ अननकर ॥ ८९ ॥ तें अर्जुन सोद-

कं ऐकिलं ॥ आणिसुखकीं प्रयटुणा वल्लं ॥ हंनेणोपायं कां पिनलं ॥ सर्वगतयाचं ॥ ८९ ॥ मर्यादपणं वळी मोटा ॥ आणितें सोचि
 जो डळेर संसुट ॥ आणिवेळा वळाल्लाट ॥ चरणं दिवो ॥ ९० ॥ तेवींचि कांही बोलो जाय ॥ नंवगका बुजला चिदायो ॥ हंसुखकीं
 प्रयटोयो ॥ हें विचारानुद्धी ॥ ९१ ॥ परितेव्हां देवाचे निबोलें ॥ अर्जुना हें संजाहालें ॥ मियांपदावरून देखिलें ॥ श्लोकानिया ॥ ९२
 मगतें सानि सगं भेणें ॥ पुटतें जां हाक निचरण ॥ मगाद्वणे जी आपण ॥ गें संबोलिलें तें ॥ ९३ ॥ श्लो ॥ अर्जुन उवाच ॥
 स्थाने दुर्धर्ष कंशत व प्रकृत्या जगद्वद्व्यस्य नुरज्यते च ॥ रसांसि मीना निदशा द्रव तं सर्वे न मय्यंति च सिद्ध संघा ॥ ९४ ॥ टी ॥ न
 ती अर्जुना मीकाळ ॥ आणिय सिजेना माझा खळ ॥ हा बाळ नुझा कर अटळ ॥ मानें आझी ॥ ९५ ॥ परानुवांजी काळें ॥ आज स्थि
 ती चिये वेळें ॥ ग्राभ जें हें मिळें ॥ विचारा मी ॥ ९६ ॥ कें सोनि आगे चें नारुण्य काटोवें ॥ कें चं नव्हे तें वां दुस्य आणावें ॥ द्यणों निकरू द्द
 ण सीतें नव्हे ॥ बहुतरुनी ॥ ९६ ॥ हांजी चांपा हरी न भरता ॥ काणही विलेयी अनेता ॥ काय मथान्दी सिविता ॥ मावळत आहें ॥ ९७ ॥ पैतुज अ
 र्खंडता काळा ॥ तिनी आहानी जें वळी ॥ त्यानि न्ही परीस बळा ॥ आपुणानिया समर्थी ॥ ९८ ॥ जे वेळीं हो लागे उपत्ती ॥ ते वेळीं स्थिती प्रक
 य द्धारपनी ॥ आणि स्थिती काळीं भरयती ॥ ९९ ॥ पाटीं प्रकृत्या चिये वेळें ॥ उग्यानि स्थिति मावळें ॥ हें काय सें न हीन ट
 कें ॥ अनादिएसं ॥ १०० ॥ द्यणों निअजिन व भरसणें ॥ स्थिती वनि जत आहं जणें ॥ एथयुसि सिद्धं हं न लगे ॥ माझा जीवीं ॥ १०१ ॥ तं न व
 काळाचा ही कळिता ॥ सवळळीक आदितनां ॥ अनेनी चिनि यना ॥ काकागिन रुद्र ॥ १०२ ॥ नंवसं केने देव बोलें ॥ अगाथा दोही संन्याचें भरण पु
 रलें ॥ तें प्रत्यक्ष चितुज हा विंलें ॥ परेथ्या काळं जाण ॥ १०३ ॥ हासं केत जं व अनंता ॥ वळ लागला बोलुनां ॥ नंव अर्जुनं लोक भागुता ॥ देखि
 लायथा स्थिती ॥ १०४ ॥ मगाद्वणत सें देवा ॥ नृसुत्ती विश्वलाघवा ॥ जगा आत्मा मां अधवा ॥ पूर्वस्थिती पुटती ॥ १०५ ॥ परिपडिलिया दुःख सा
 पाट ॥ १०६ ॥ अं ॥ १०७ ॥ बरिदिवले ॥ अं ॥ १०८ ॥ अं ॥ १०९ ॥ अं ॥ ११० ॥ अं ॥ १११ ॥ अं ॥ ११२ ॥ अं ॥ ११३ ॥ अं ॥ ११४ ॥ अं ॥ ११५ ॥ अं ॥ ११६ ॥ अं ॥ ११७ ॥ अं ॥ ११८ ॥ अं ॥ ११९ ॥ अं ॥ १२० ॥ अं ॥ १२१ ॥ अं ॥ १२२ ॥ अं ॥ १२३ ॥ अं ॥ १२४ ॥ अं ॥ १२५ ॥ अं ॥ १२६ ॥ अं ॥ १२७ ॥ अं ॥ १२८ ॥ अं ॥ १२९ ॥ अं ॥ १३० ॥ अं ॥ १३१ ॥ अं ॥ १३२ ॥ अं ॥ १३३ ॥ अं ॥ १३४ ॥ अं ॥ १३५ ॥ अं ॥ १३६ ॥ अं ॥ १३७ ॥ अं ॥ १३८ ॥ अं ॥ १३९ ॥ अं ॥ १४० ॥ अं ॥ १४१ ॥ अं ॥ १४२ ॥ अं ॥ १४३ ॥ अं ॥ १४४ ॥ अं ॥ १४५ ॥ अं ॥ १४६ ॥ अं ॥ १४७ ॥ अं ॥ १४८ ॥ अं ॥ १४९ ॥ अं ॥ १५० ॥ अं ॥ १५१ ॥ अं ॥ १५२ ॥ अं ॥ १५३ ॥ अं ॥ १५४ ॥ अं ॥ १५५ ॥ अं ॥ १५६ ॥ अं ॥ १५७ ॥ अं ॥ १५८ ॥ अं ॥ १५९ ॥ अं ॥ १६० ॥ अं ॥ १६१ ॥ अं ॥ १६२ ॥ अं ॥ १६३ ॥ अं ॥ १६४ ॥ अं ॥ १६५ ॥ अं ॥ १६६ ॥ अं ॥ १६७ ॥ अं ॥ १६८ ॥ अं ॥ १६९ ॥ अं ॥ १७० ॥ अं ॥ १७१ ॥ अं ॥ १७२ ॥ अं ॥ १७३ ॥ अं ॥ १७४ ॥ अं ॥ १७५ ॥ अं ॥ १७६ ॥ अं ॥ १७७ ॥ अं ॥ १७८ ॥ अं ॥ १७९ ॥ अं ॥ १८० ॥ अं ॥ १८१ ॥ अं ॥ १८२ ॥ अं ॥ १८३ ॥ अं ॥ १८४ ॥ अं ॥ १८५ ॥ अं ॥ १८६ ॥ अं ॥ १८७ ॥ अं ॥ १८८ ॥ अं ॥ १८९ ॥ अं ॥ १९० ॥ अं ॥ १९१ ॥ अं ॥ १९२ ॥ अं ॥ १९३ ॥ अं ॥ १९४ ॥ अं ॥ १९५ ॥ अं ॥ १९६ ॥ अं ॥ १९७ ॥ अं ॥ १९८ ॥ अं ॥ १९९ ॥ अं ॥ २०० ॥ अं ॥ २०१ ॥ अं ॥ २०२ ॥ अं ॥ २०३ ॥ अं ॥ २०४ ॥ अं ॥ २०५ ॥ अं ॥ २०६ ॥ अं ॥ २०७ ॥ अं ॥ २०८ ॥ अं ॥ २०९ ॥ अं ॥ २१० ॥ अं ॥ २११ ॥ अं ॥ २१२ ॥ अं ॥ २१३ ॥ अं ॥ २१४ ॥ अं ॥ २१५ ॥ अं ॥ २१६ ॥ अं ॥ २१७ ॥ अं ॥ २१८ ॥ अं ॥ २१९ ॥ अं ॥ २२० ॥ अं ॥ २२१ ॥ अं ॥ २२२ ॥ अं ॥ २२३ ॥ अं ॥ २२४ ॥ अं ॥ २२५ ॥ अं ॥ २२६ ॥ अं ॥ २२७ ॥ अं ॥ २२८ ॥ अं ॥ २२९ ॥ अं ॥ २३० ॥ अं ॥ २३१ ॥ अं ॥ २३२ ॥ अं ॥ २३३ ॥ अं ॥ २३४ ॥ अं ॥ २३५ ॥ अं ॥ २३६ ॥ अं ॥ २३७ ॥ अं ॥ २३८ ॥ अं ॥ २३९ ॥ अं ॥ २४० ॥ अं ॥ २४१ ॥ अं ॥ २४२ ॥ अं ॥ २४३ ॥ अं ॥ २४४ ॥ अं ॥ २४५ ॥ अं ॥ २४६ ॥ अं ॥ २४७ ॥ अं ॥ २४८ ॥ अं ॥ २४९ ॥ अं ॥ २५० ॥ अं ॥ २५१ ॥ अं ॥ २५२ ॥ अं ॥ २५३ ॥ अं ॥ २५४ ॥ अं ॥ २५५ ॥ अं ॥ २५६ ॥ अं ॥ २५७ ॥ अं ॥ २५८ ॥ अं ॥ २५९ ॥ अं ॥ २६० ॥ अं ॥ २६१ ॥ अं ॥ २६२ ॥ अं ॥ २६३ ॥ अं ॥ २६४ ॥ अं ॥ २६५ ॥ अं ॥ २६६ ॥ अं ॥ २६७ ॥ अं ॥ २६८ ॥ अं ॥ २६९ ॥ अं ॥ २७० ॥ अं ॥ २७१ ॥ अं ॥ २७२ ॥ अं ॥ २७३ ॥ अं ॥ २७४ ॥ अं ॥ २७५ ॥ अं ॥ २७६ ॥ अं ॥ २७७ ॥ अं ॥ २७८ ॥ अं ॥ २७९ ॥ अं ॥ २८० ॥ अं ॥ २८१ ॥ अं ॥ २८२ ॥ अं ॥ २८३ ॥ अं ॥ २८४ ॥ अं ॥ २८५ ॥ अं ॥ २८६ ॥ अं ॥ २८७ ॥ अं ॥ २८८ ॥ अं ॥ २८९ ॥ अं ॥ २९० ॥ अं ॥ २९१ ॥ अं ॥ २९२ ॥ अं ॥ २९३ ॥ अं ॥ २९४ ॥ अं ॥ २९५ ॥ अं ॥ २९६ ॥

गरी॥ तं काटि सीकां जयापरी॥ तं किर्तिनु द्वात्रिंशद्वरी॥ आठविन असं॥ ६॥ किंते आठविन वेको वेको॥ भोगी तं स महासुखाचा
साहाका॥ नैथ हर्ष भूत कल्लुका॥ वरिलोळत आहो॥ ७॥ देवा जियालें पणें जग॥ धरितु झाटयो अनुशग॥ आणि दुष्टांत यां भग॥
अधिकाधिक॥ ८॥ पेंत्रिभुवर्ना चिया राखु सा॥ मद्यामय तें दुर्धाकशा॥ द्यगोर्न पकतां तटाहो दशा॥ पेंती कडे॥ ९॥ तैय सरनर
सिद्ध किन्नर॥ किंबहुना नराचर॥ तें तुज दखोनि हर्षाभर॥ न मस्कारि न भसती॥ १०॥ कस्माच्च तेन न मेरव्य हात्मन
गरीयस ब्रह्मण्य्या दिक्ते॥ अनंत दशजगनि वास त्वमसुरं सत सत्पश्यत॥ ३७॥ टी०॥ एथ गाकवणा कारणा॥ राखस हं ना
रायणा॥ नलगती चिचरणा॥ पळत जाहाळे॥ ११॥ आणि जाहाला आहारि गोचर॥ द्यगोर्न निशाचरं कर॥ फिटला सहजें॥ १२॥ हे
॥ कैसां निमं॥ १२॥ जी तं स्वप्रकाशाचा आगर॥ आनांदखत संसिद्धि॥ गंभीरनुझा॥ १६॥ जैथुनि नानासुधी चिया बोळी॥ प-
येतुला दिवस आह्या॥ काही नणवें चिथी रामा॥ आनांदखत संसिद्धि॥ १७॥ देवनि सीमसत्त्वसंदीत॥ देवनि सीमगुण अनंत॥
सरती भूतगामा चिया वेळी॥ तया महद्ब्रह्मांत व्यान्ती॥ दोवकी दछा॥ १८॥ देवनि सीमसत्त्वसंदीत॥ देवनि सीमगुण अनंत॥
देवनि सीमसांभ्यसत॥ नरेंद्र तंवाचा॥ १९॥ जीर्त्तिं द्यजगति योलावा॥ अक्षरं मटाशिवा॥ हो चि सत सत देवा॥ तथाही अतीत नें
तु॥ १७॥ ग्लो०॥ त्वमां दि देवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्या विश्वरूपं निधानम्॥ वेत्तामि वंद्यं च परं च धाम त्वया ततो विश्वमनंतरूप॥ ३८
टी०॥ तं प्रकृति पुरुषा चिया आदी॥ जीमहला तें चि अवधी॥ स्वयं तं अनदी॥ पुरातन॥ १८॥ तं सकळ विश्वजीवन॥ जीवांसिद्धे
चि निधान॥ भूत भविष्या चें ज्ञान॥ नुझा बिहती॥ १९॥ जीर्त्तिं चिया लांचना॥ स्वरूप सुख तें चि अभिन्न॥ चि सुवना चिया आय
तना॥ आयतन तू॥ २०॥ द्यगोर्न जीपरम॥ तें तें द्यगि जम हा धाम॥ कल्यांती महद्ब्रह्म॥ तुज मांजिरी॥ २१॥ किंबहुना तुं वांदवें
पाठ ओं० १०० यें० ओं० १६ सामें० ओं० २१ नुमिया अंका०

॥ विश्वविस्तारि लोहो आघवे ॥ तरि अनंत रूपावानवे ॥ कवणं तूने ॥ २२ ॥ श्लो ॥ यथुयं भोगिर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वम
पितामहश्च ॥ नमोनमस्तेस्तु स हस्तकृत्यः पुनश्च भृश्यापि नमोनमस्ते ॥ ३१ ॥ नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमो रूते सर्वत एव सर्वो ॥ अ
नंत वीर्याभिनि विक्रमस्त्व सर्वसाम्राजिततां ससर्व ॥ ८ ॥ टी ॥ जीकायै एकं तेन कसी ॥ कवणं ठायी नमसी ॥ हें असौ जैसा अ
हासी ॥ तै सियानमो ॥ २३ ॥ वायु तूं श्री अनंता ॥ यम नू नियमिता ॥ प्राणिगण वि सना ॥ अग्नि मो नू ॥ २४ ॥ वरुण तूं सोम ॥ त्वष्टा
तुं बह्म ॥ पितामहाचा ही परमा ॥ आद्य जन कत ॥ २५ ॥ आर्णिक ही जें का ही ॥ रूप आशी अथवाना ही ॥ नयानमो तु ज ते सया ही ॥
श्री जगन्नाथा ॥ २६ ॥ ऐसं सानुरागें चित्ते ॥ नमन के लें गाडु स्तुते ॥ मगा पुट नी द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २७ ॥ पाठी ति ये सांचें ॥
न्याहा छि श्री मूर्ती तें ॥ आणि पुट नी द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २८ ॥ पाहन पाह तें मां तें ॥ समाधान पावे चित्ते ॥ आणि पुट नी ह्म
णे नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ २९ ॥ इयें चराचर जें सृष्टें ॥ यें वंदे खेतयां तें ॥ आणि पुनः पुना द्योने नमस्ते ॥ नमस्ते प्रभो ॥ ३० ॥ ऐसीं रूपे
नियें अद्रुतें ॥ आश्चर्ये स्फुरती अनंतें ॥ तंव तंव नमस्ते ॥ नमस्ते चि द्योने ॥ ३१ ॥ आणिक रूक्ती ही नाटवे ॥ आणि निवांत ही नमस्ते ॥
॥ ३२ ॥ देवा सिपा डि पोट आधिकी ना ही ॥ तें पोट पयसा आद्या काड ॥ तरि तुज पाटि मों रया ही ॥ नमो स्तामी ॥ ३३ ॥ उष्णामां झिये पाठी
सी ॥ द्योने निपाटि मों द्योणां वें नृह्यामी ॥ समुख विच्युख जें सो ॥ न घडें तुज ॥ ३४ ॥ आनं वेग का लिया अवयवां ॥ नेणें रूप कंठे वा
॥ द्योने निमो तुज सर्वा ॥ सर्वात्मका ॥ ३५ ॥ जी अनंत बळ संभ्रमा ॥ तुज नमो अमति विक्रमा ॥ सकळ कार्कासना ॥ सर्व देशो ॥ ३६ ॥ आ
य विया आकाश जें सैं ॥ अवकाश चि हो उनि आकाश असैं ॥ तूं सर्व पणें तें संगत लासि सर्व ॥ ३७ ॥ किं बहुना के वळ ॥ सर्व हें नू चिनि सि
पाट ॥ ओं ॥ २३ कावकाय ॥ ओं ॥ २८ पाठीमी ॥ ओं ॥ ३० समस्ते ॥ अयं ई इना ॥ ओं ॥ ३७ देवा ॥

तै॥ परस्त्रीरार्णवकिक्का॥ पयाचंसे॥ ३०॥ द्युणां नयादेवा॥ त्वेवगद्यातच्छर्मस्यवा॥ हं आन्दभर्जसद्वात्रा॥ आनातौ चसव॥ २०॥
 श्लो०॥ सखंस्मिन्वाग्रभयदुक्तं दंष्ट्रणाहंयादवहं सखंति॥ अज्ञाननामिहमानतवेदसयायमादायणयेनवापि॥ २१॥ द्यो०॥
 परेशियातृस्वामी॥ काहंचिनंगोजी आह्वी॥ द्युणां नसोयग्यंवेधमी॥ गहतन्मातृजनयो॥ २२॥ अहाथारवाउरजाह्वो॥
 अमृतंसेमार्जनस्याकुलं॥ गार्गकंधर्मंदिदंये॥ कामंभुवतं॥ २३॥ पारुसात्तन्वदवाचिजाडन्य॥ योलेफाईन आह्वीगोह्वो॥
 यानल्लो॥ कन्यतरुतोडोनिक्तरा॥ कृपशाना॥ २४॥ निताभगोत्तृग्याणोभुगाली॥ नणंयकानिवाताकुंवाग्राइली॥ तैरोनुझी
 जवकीकथाइली॥ गंगानांणं॥ २५॥ हं आ जचंचिभाहंयोगरुदे॥ भवशातुंअहंनदे॥ गदपगवत्तन्नुगुदे॥ सारथीकिल्ला
 मी॥ २६॥ ययाकोरदोचियायरा॥ वितादंयाडित्ताभितानारा॥ गंयावीभाजभयोभरागग॥ विक्कालीयिआह्वी॥ २७॥ तंयोगि
 योचंसमाधिसुख॥ क्लसाजाणोचिनामीसुख॥ उपरोचजासुख॥ तुजरोक्क॥ २८॥ न्ने०॥ यथाचहायाथमसक्तुंनोसिधि
 हाशय्यासनसो जनपु॥ एकोथवाथ्यच्युतनत्स भद्वनक्षामयत्त॥ सदमभमयम्॥ २९॥ दो०॥ तंयविधवाचिअनादिआदी॥
 वैससीजियेसभासदी॥ तंयोसोयरीवो॥ चयासवथी॥ गद्योयानो॥ ३०॥ विगणकण्ठयंयो॥ तंरतुंअनिअगोमानपावो॥ न-
 मानिसीतरीजावो॥ सखंनिसुगो॥ ३१॥ पायाग्रागनिवुआवणी॥ तुझादयाआइयाणी॥ वार्हजगशीकरणी॥ बहुक्कलो
 आह्वी॥ ३२॥ स्वजन्मणचियावाला॥ तुजपुंदेवंसुगता॥ दागदकायैकटा॥ मदिमुक्कलो आह्वी॥ ३३॥ दवंभिकोलका
 दीपरु॥ आखाडांओवीलोवीकरु॥ सारोसुत्तनात्तारु॥ नकरेहीभाडो॥ ३४॥ नोनेगुरीभाणो॥ सवजासिकानुक्षीसा
 गो॥ नेवीचिद्युणांकायल्लो॥ तुझेआह्वी॥ ३५॥ गंगाअपराधाआहं॥ जाविस्वर्ननिसमाय॥ नोनणनाचिकोपाय॥ सिवनि
 गद॥ ओ०३१निवव॥ ओ०४६जी० ओ०५३देवभिसि॥ अविक्कुरु॥ ओ०५४आइविनि॥

लेतुसे ॥ ५४ ॥ देवबोनयाचअवसरी ॥ लोभेकीर आठवण करी ॥ परिमाझानिस्तुगगर्वअवथारी ॥ जेफुगूंचेबैसे ॥ ५५ ॥ देवाचिया
 भोगायननी ॥ खेळतांआशंकेनामनी ॥ जोरिगोनियांशायनी ॥ सारिस्पापहुं ॥ ५६ ॥ रुखाह्मणोनिहाकारिजे ॥ यादवपणेतुंतेले
 रिवजे ॥ आपलीआणधालिजे ॥ जातानुज ॥ ५७ ॥ मजएकासनीबैसणें ॥ कांतुझाबोलनमानणें ॥ हेंवोनदीचेनिदाटपणें ॥ बहु
 तघडलें ॥ ५८ ॥ झणोनिकायकायआतां ॥ निवेदेजेतुअनंना ॥ मीराशिआहंसमस्ता ॥ अपराधांची ॥ ५९ ॥ यालागीपुढाअय-
 वापाटी ॥ जियेराहाटलांबहुवेंवोरवदी ॥ नयेमायेनियापरिपेटों ॥ सामावीप्रसों ॥ ६० ॥ जोकोणहीएकवेळे ॥ सारिताघेउंनियेतीरव
 डुळें ॥ नयेसामाविजेनिमिधुजळें ॥ आनरुपायनाहीं ॥ ६१ ॥ नेंसीपीनीकांपमादें ॥ देवेंसीमजविरुद्धें ॥ बोलविलींनियेंमुकुंदें ॥
 रुपसाहावीजी ॥ ६२ ॥ आर्णिदेवाचेनिस्समलेंक्षमा ॥ आधारजालीआहेयाभूतग्रामा ॥ झणोनिजीपुरुषोत्तमा ॥ विनवृत्तेथोडें ॥
 ६३ ॥ तरिआतांअप्रमेया ॥ मजशरणागताआपुलिग्या ॥ क्षमाकीजोजीयया ॥ अपराधांसि ॥ ६४ ॥ झलो ॥ पिनासिलोकस्यचराच
 रस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नवत्समोत्स्यभ्यधिकः कुतोन्योलोकत्रयेप्ययनिमप्रभावः ॥ ६५ ॥ दी ॥ जीजाणीतलोमि-
 यांसाचें ॥ महिमानआतांदेवाचें ॥ देवोद्वेयचराचराचें ॥ जन्मस्थान ॥ ६५ ॥ हरिहरादिगुरुं ॥ देवातुंपरमदेवता ॥ वेदानेंहीप
 दविता ॥ आद्यगुरुंतुं ॥ ६६ ॥ गंभीरतुंशीरामा ॥ नानाभूतैकसमा ॥ सकळगुणअग्रनिमा ॥ अद्वितीया ॥ ६७ ॥ तुजसींनाहोंसरि
 से ॥ हेमनिपादूनकायसे ॥ तुवाजालेनिअवकाशों ॥ सामाविलेंजगा ॥ ६८ ॥ नयातुझेविपाडेंदुजे ॥ ऐसेंबोलतांचलाजिजे ॥ तेथअ
 धिकचिकिजे ॥ गार्ष्टकीं ॥ ६९ ॥ झणोनिभिभुवनींतुंएक ॥ तुजसारिखानांहीआणिक ॥ तुझामिहमाआलोलिक ॥ नेणजेवाने
 ॥ ७० ॥ झलो ॥ तस्मात्पुण्यास्यपणिधायकायप्रसादयत्नामहर्षिशमील्यम् ॥ पितैवपुत्रस्यसखेवसरव्युः प्रियः प्रियायाहोमितैव
 णट् औं-६० प्रतिपादनाच-

सोदुम् ॥ ४४ ॥ दी ॥ ऐसो अजुनेद्वगितने ॥ मगपुतर्तदुवतयानन्द ॥ नेथ्यानि काचे आये ॥ भरतेतयो ॥ ७५ ॥ मगद्वणतसेप्रसीद
 प्रसीद ॥ वाचाहोतसेसहृ ॥ कादीजी अपराध ॥ मसुदोती ॥ ७६ ॥ तुजविषयसहृदोतकादी ॥ सोयरेणोनमनूचिपादी ॥ तुजकेशव
 राचियाठायी ॥ आश्वयेने ॥ ७७ ॥ त्ववर्णनियपरीक्षा ॥ मानेवणिमीपासमे ॥ तशिमयोवागल जेक्षोमे ॥ अधिकधिक ॥ ७८ ॥ आनारे ॥
 सियाअपरागो ॥ मयोदानादीमुकुटा ॥ द्वणमनिरसरभनगादा ॥ पमोनियो ॥ ७९ ॥ जेहोचि विनवावयालागी ॥ कुंचियागयनामाझिया
 आंगी ॥ परिअपदाजेसेसदगी ॥ बापेसंवाले ॥ ८० ॥ पुत्राचेअपराध ॥ जरिजादालेअगाध ॥ तरापितासाहनिहृद ॥ तसेसाहिजेजी ॥
 ८१ ॥ सख्याचेउदत ॥ मरयामाहनिगत ॥ तसेनुवासमज्ज ॥ माहिजेजी ॥ ८२ ॥ प्रियाचियादायोसम्मान ॥ प्रियनपादेसंवथाजाणा ॥ ते
 वीडिच्छिष्टकाटिलेआपणा ॥ तदसर्माकाजेजी ॥ ८३ ॥ नानरीयाणाचेयोरभेदे ॥ मगजनेस्मृतनी ॥ जयेसंकटे ॥ तियेनेवेदितानवाटे ॥ सं-
 कोचकाही ॥ ८४ ॥ काउरगितेआंगेजेने ॥ आपणापेदुभलेजियामनाभावे ॥ नियाचेतेमिनाझियानरादावे ॥ न्दयजेवी ॥ ८५ ॥ तयापरिजो
 भिया ॥ हंविनविलेनुमतंगासाविद्या ॥ आर्णाककाहीएकद्वणावया ॥ कारणअमे ॥ ८६ ॥ अटपुर्वहृषितोस्मिहृष्टाभयेनचप-
 व्यधितमनोमे ॥ तदेवमदर्शयेदेवरूपसीतदेवशजगन्निवास ॥ ८७ ॥ दी ॥ तरिदेवस्यम्यदुर्गाकेनी ॥ जेविषवरूपाचेआर्वायेतली ॥
 तंमायवोपुत्रविली ॥ स्नेहाकाचेनी ॥ ८८ ॥ सरतरुर्चाझाडे ॥ आराणीलावावीकोडे ॥ देयावेकामधेनुचपाडे ॥ खेळावया ॥ ८९ ॥ भियान
 क्षत्रोडावपाडावा ॥ चंद्रचंडूवालागीआवा ॥ हाछुदोसहृनिनेआयवा ॥ सागुलयेनुयो ॥ ९० ॥ जीयाअभुतलेशालागीसायास ॥ लक्ष्मिपा
 उसकेलाच्यारमास ॥ एखोवाहुनचासेचास ॥ चिंतामणिपरिले ॥ ९१ ॥ ऐसाअनकृत्यवेलाज्यामी ॥ गहलकापागिलातुहो ॥ दाविलेजेहे
 रबर्दी ॥ नायकिजेकानी ॥ ९२ ॥ मांदेरवावयाचेकिउनेपादी ॥ जयाचीदुपनिपदानाहीमेदी ॥ तेजन्हारोचिंगादी ॥ मजलागीसोइलीद
 पाठ ओ ७४ बलपिने ओ ८० भूतकी ओ ८२ संदु ओ ८७ हरबर्दी किवाहरिहरचर्दी ओ ८८ ते

जीकल्यादिभ्यामैनी॥ अजिघडीधरुनी॥ माझीजेतुलीहोउनी॥ गेलीजन्मे॥ ८९॥ तयाआघवियांचिआन॥ घरडोडीघेडोनिअसे
पाहन॥ परिहोदेखिलीगेकिलामान॥ आंतुडोचिना॥ ९०॥ बुढीचंजाणणें॥ कंहींनवचेचिजयाचेंनिआणणें॥ हेंसादेहीअंतःकरणें॥
करवेचिना॥ ९१॥ तेंथडोळ्यांदर्याहोआवी॥ हीगोष्टीचिकायसयाकरावी॥ किंबहुनारेंसेपूर्वी॥ दृष्टनासुत॥ ९२॥ तेंहोविश्वरूपआपुलें
॥ तुह्मीमजडाकोढाविलें॥ तेंरुमीझेंमनझालें॥ न्दृष्टदेवा॥ ९३॥ परिआतांरशीचाडजीवी॥ जेतुजसीगोढोकरावी॥ जवळीकहंभोगावी
॥ आलिंगावयासी॥ ९४॥ एथेंचरूपीकरूह्मणिजे॥ तरिकाणेंकंमुगेंरशीचावळजे॥ आणिकवणेंसैंवेदेजे॥ तुजेलखानाहीं॥ ९५॥
ह्मणोनिवारियासैंवेंशंवणें॥ नटकेगगनारवेंदणें॥ जळकेंक्यारेंवळणें॥ समुद्रोकिंउतें॥ ९६॥ यालागिजीदेया॥ एथिचंभयउपजतसे-
जीवा॥ ह्मणोनिचतुन्याळयावावा॥ जेपुरंदंआतां॥ ९७॥ पंचराचरविनोदेंयाहिजे॥ मगनेणेंसुरवेंघरोराहिजे॥ तेंसंचतुर्धुजकूपतु
झें॥ नोविसावाआह्मा॥ ९८॥ आह्मीयागजानअभ्यासावें॥ तेंणेंयाचिअनुभवायावें॥ शास्त्रांतेंआलोहावें॥ पारिमहानताहावि॥
९९॥ आह्मीयजनोकिजनीसकळें॥ पारित्यंफळ्यावेंयेणेंचिफळें॥ तीर्थेहोतुसकळें॥ याचिभ्यागी॥ १००॥ आणीकहीकांहीजेंजे॥
दानपुण्यआह्मीकीजे॥ नयाफळींफळतुझें॥ चतुर्भुजकूप॥ १०१॥ गेसीतेंथिचीजीवाआवडी॥ ह्मणोनिनेचिदेखावयाळवडसवडी॥ व
तंतआहजेंसकडी॥ तेंफाडिजेवगी॥ १०२॥ अगार्जावेंचंजाणतया॥ सकळविश्वयसविनया॥ प्रसन्नहोइपूजितया॥ देवांचियादेवा॥
३॥ श्लो०॥ कशीदिनगांदनचकहस्तामिछामिलांद्रुमहंतथैवा॥ तेंनवरूपणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्ते॥ ४६॥ टी०॥ के
सेनोत्पलानेराहावित॥ आकाशाहीरगलावित॥ नैजाचेंवांजदावित॥ इद्रनीका॥ ४७॥ जैसापरिमळजाहालाभरगजा॥ कांआनदा
स्मिनयांलियासुजा॥ ज्यांचेजानूवरीमकरध्वजा॥ जोडलीबरवा॥ ४८॥ मस्तकींमुकुटांतेंलैवविनै॥ कींमुकुटामुकुटमस्तकझालें॥ धृंगारा
पाट०-ओ०-१३ सोप्या-ओ०-१० नृपयेंचि किंवा द्रव्यवशव, क्षम-ओ०-४ दन ओ०-३ दोकलें.

लुण्ठान्प्रतः॥ आगांचिनिजयाचिया॥ ६॥ इद्रधनुष्याचियेआडणी॥ मांमिमयगाःल्लरणी॥ तेंसंआबोरिलेंशाईपाणी॥ वैजयंतिया
 ॥ ७॥ आनांकवर्णनिउदारादा॥ अस्मरांतेंकवत्यपदो॥ वेंसंचक्रहन्गोविंदा॥ सौम्यतजोमरवे॥ ८॥ किंयहुनास्वामी॥ तेंदेखबिया-
 उकोठिनपामी॥ द्यणोनिआनोनुद्री॥ तेंसयाहांश्रावें॥ ९॥ द्वेविश्वरूपचसंहने॥ मोगनिबालेजडोळे॥ ओतांहांतानिअंधळे॥ हूं
 णासुंमिलागी॥ १०॥ तेंसाकारकृष्णरूपदं॥ वांचुनिपाहोनावडु॥ तेंनरयतांथोदं॥ मानिनातिह॥ ११॥ आह्यामीगमोस्तिचियाठायी॥
 श्रीमृनिवांचुनिनाही॥ द्यणोनितेसाचिसाकारहाई॥ हेंउपसंहारीआता॥ १२॥ भूलो॥ ॥ श्रीमगावानुवांच॥ ॥ मयाप्रसन्नेनवाजु
 नेंदरूपपदार्थितमात्मयोगात्॥ तेजोमयाविश्वमनेतसाद्यन्स्वदन्त्यननदृष्टवम्॥ १३॥ टी०॥ याअजुनाचियाबोला॥ विश्वरूपावि-
 स्मयोजाहाला॥ द्यणेंस्मानाहीदेखला॥ धसाळुक्राणी॥ १४॥ कोणाहुंवल्गुपावलाआहासी॥ तयालाभाचानोपनयेसी॥ मोभेणोकायने
 णोबोलुसी॥ हंकाडेसा॥ १५॥ आह्यीसावियाचिजमसूनहाणें॥ तेंआगांचिवरीद्विणंदेणें॥ दोचोनिजवअसेवेचणें॥ कवणासिंगा॥
 १५॥ तेंहेंनुझियेचाडें॥ आंजिजीवाचेंनदकवाडें॥ कामगुनियायवेदें॥ रचिरेआन॥ १६॥ गंसीकायनेणोतुंझियेआवंडी॥ जाहालाप्र
 संभत्ताआमुर्नवेडी॥ द्यणोनिगोप्याचिहीपरिगुदो॥ १७॥ तेंहेंआपाराअपार॥ स्वरूपमाझपरास्वर॥ एधुनिनेअव
 नार॥ कृष्णादिक॥ १८॥ हेंज्ञानतजोचिनिशिवळ॥ विश्वात्मकवचळ॥ अनंतहेंअदळ॥ आद्यसकळा॥ १९॥ हेंतुजवाचोनिअजुना॥ प्रवी
 णुतदृष्टनाहीआना॥ जेजोगेनव्हेसाभना॥ द्यणोनिचा॥ २०॥ नवदयज्ञाअयननदानेंचक्रियाभिनतपांकिरुद्रो॥ एयरूपः
 शक्यअहंतुलाकेदुष्टेस्वदन्त्यनकुरुप्रवीर॥ २१॥ टी०॥ याचीसायपातळ॥ आणिवेदोमोनाचयेतले॥ यज्ञकीरमायेनिआले॥ स्वर्गोनि
 यो॥ २२॥ साधंकीदेखिन्माआयास॥ द्यणोनिवाळिलायागाथ्यास॥ आणिअथयनीसोरसा॥ नाहीएथ॥ २३॥ सीगेंचीसत्कर्म॥ धावि

पाठः ओं० ८ मया ओं० १० मयाद्री ओं० १६ संकाड ओं० १६ जीवित ओं० २० अथयन

न्मर्त्तस्य संश्रमं ॥ तिही बहुते कीं असे ॥ सत्यलो कर्ता किला ॥ २३ ॥ तपोगे श्रव्ये दे शिवने ॥ आणि उभयां च उग्रपणा सांडिले ॥ एव तपसा प
 ना ने देले ॥ अपारा नरे ॥ २४ ॥ तें हनुवा अनायासे ॥ विश्वरूप देखिले जेसे ॥ इयं मनुष्यना की तेसे ॥ न पावे चक्रवर्णा ॥ २५ ॥ आजि आनस
 प नि लागी ॥ तृणकाचि आथिला जगी ॥ हें परम प्राण्य आगी ॥ चिन्ची ही नाही ॥ २६ ॥ म्लो ० ॥ माने व्यथा माचि निमूट भावो दृष्टा रूप धोर
 भी ह्रस्व मे दम ॥ व्यपेत मी ॥ मी न मना ॥ पुनस्त्व त दे मेरु प मि दं य पत्रय ॥ २७ ॥ टी ० ॥ द्यणो नि विश्वरूप ला सं स्लाय ॥ एधि चे न पे न ये न य
 ॥ हं वाचु नि अ न्य चांग ॥ न मनी का ही ॥ २७ ॥ हांगा स मुद्र अ स्मृ ता चा म र न्ता ॥ आणि अवसात वर प डा जा हा ला ॥ मग कोणा ही आधि-
 वा सी डिला ॥ बुड जे ल द्य णो नि ॥ २८ ॥ ना तरी सा न या चा डों ग र ॥ यं स णा न च ले हा थोर ॥ गे से द्य णो नि अ व्हर ॥ कर णे घ डे ॥ २९ ॥ दे व वि
 तां म णी ले ड ज ॥ की हें ओ झं द्य णो नि सां डि जे ॥ काम धे नू द या ड जे ॥ न पोग ये द्य णो नि ॥ ३० ॥ चंद्र मा आ लिय ण रा ॥ द्य णि जे नि गे को र
 तो सि उ ब रा ॥ प डि सा थि णां डि नो सि द न क र ॥ पर न्ता म र ॥ ३१ ॥ ते सें गे श्र व य हं म हा ने ज ॥ आजि हा ता आ लें आ हे स ह ज ॥ की ए थ लु ज ग
 ज ब ज ॥ हो आ वी को ॥ ३२ ॥ परि ने ण सी च गो व द या ॥ का य को पे उ गा तो य नं ज या ॥ आ ग सां डा नि छि या ॥ आ लिंगि तो सि मा ॥ ३३ ॥ हें न
 व्हे जो मी सा चे ॥ ए थ म न क रू नि यां वा चे ॥ प्रे म ध र सी ॥ आ ग व णि ये चे ॥ च नु मु ज ने ॥ ३४ ॥ तरि आ झ नि व री पा थो ॥ सां डां सा डी हे आ
 स्या ॥ धि यो वि ष यो अ ना स्या ॥ ध र सी द्य णी ॥ ३५ ॥ हे रू प जे गि योर ॥ वि रू त नि आ णि थोर ॥ तरि कृ त नि श्र य आ चं घ र ॥ हो चि करी ॥ ३६ ॥ -
 कृ प णा चि न रू नि जे सी ॥ गं वां नि घा ली दे व या पार् मी ॥ म ग नु स धे न दे हूं सी ॥ आप ण अ से ॥ ३७ ॥ को अ जा त प क्षि य ज व टा ॥ जी व ठे र नि
 अधि मा क्ठी ॥ प क्षि णी अ त रा क्ता ॥ मां जि जा ये ॥ ३८ ॥ ना ना ग य न रे डों ग री ॥ ध र चि न बां धि ले व लो ग री ॥ ते से प्रे म ए थि चं क री ॥ स्या
 न प ती ॥ ३९ ॥ ये रे य रि चि ले नि व ने ॥ बा न्द स र य सा स् स वा पु र ते ॥ भो गि जो कां श्री मूर्ती ने ॥ च नु मु ज ॥ ४० ॥ परि पु ट त पु ट तो या ड बा ॥
 पा र ॥ ओ ॥ २३ सांगे ॥ टी किला ॥ ओ ॥ ३३ गावे दया ॥ ओ ॥ ३४ अवगणियेचे ॥ ओ ॥ ३५ न संध ॥ ओ ॥ ३८ विगाळा

हा एक बालन विसर्गवा ॥ जो यं यं रूपां हुनीं सद्भावा ॥ नेदां वीं नियो ॥ ६॥ इह कर्हानन्दते चिदभिव्यक्तं ॥ द्योनां निमयजं तु जगज्जलं ॥ तं सादी-
 एय सं चले ॥ असौ देयम ॥ ६२ ॥ आतोकरु तु जया सारिवे ॥ ऐसं द्यो गितं नो विश्वनां मुखे ॥ नरिमागीलरूपस्तु स्वे ॥ न्याहाळीं गंदे ॥ ६३ ॥
 श्लो ॥ ॥ संजय उवाच ॥ १ ॥ दय जुन वास देवस्मयो न्का स्वकरु पदशया मास मृयः ॥ आशवास मास च भीतमं न भूत्वा पुनः सं-
 व्यय पुर्महात्मा ॥ ५० ॥ टी ॥ ॥ संवाक्य बालन रयवो ॥ मारुता भुज्य जाहाला देवो ॥ इना परि नयवो ॥ आवडी चानिये ॥ ६६ ॥ श्रीकृ-
 ष्ण चि वन्य उघडे ॥ वरिस्वस्ति विश्वरूपा यवद ॥ हार्तो द्यन्तं कानावड ॥ अर्जुना सि ॥ ६७ ॥ वस्तु घडे निवाळिजे ॥ जें संरत्ना सि द-
 षण रे विजे ॥ नानरी कन्या पाइ निया ह्यगिजे ॥ मनान ये हे ॥ ६६ ॥ तया विश्वरूपा ये वदी दशा ॥ करि नाथी तीचा वाढ के सा ॥ शोला दे-
 धली सं उप दशा ॥ किरीटी मि देव ॥ ६७ ॥ मोडो निमंगारा चारवा ॥ नृणां य इलें आप नि य सवा ॥ मग ना वडे जरी जीवा ॥ तिरि आदि ने पु-
 दती ॥ ६८ ॥ तें सें शिष्या चियं गी निजा हान ॥ कृष्ण त्वहाने विश्वरूप जाळे ॥ तं मनान ये चिमरा आगिलें ॥ कृष्ण पण भागु ते ॥ ६९ ॥ हाट-
 वर शिष्या ची नि कसी ॥ साहाने गुरु आहार्ता कृण देशी ॥ परि ने गिजे आवडी कसी ॥ संजय द्यो ॥ ५० ॥ मग यिषव व्याघ्र निमग-
 वंते ॥ जें द्यन्त ज प्रकटल हाते ॥ तीं चि सा मा वलें भागु ते ॥ कृष्णारूपीं नियो ॥ ५१ ॥ जें सं त्व पद ह आये वें ॥ तन्य दी सा भावे ॥ अथ वादु-
 माकार सोडवे ॥ बीज की कजे वी ॥ ५२ ॥ नातरी स्व सप्तम जे सा ॥ गिळिजे चे इली जीव दशा ॥ श्रीकृष्ण योग हा ते सा ॥ संहार-
 लातो ॥ ५३ ॥ जें सीम सा हार पलीं बबी ॥ कीं जळ दस पतीं निमी ॥ नाना भर्ते शिष्यु गर्भा ॥ शिगाल राया ॥ ५६ ॥ हां को जे कृष्णारू-
 ती चिय मोडी ॥ होतो विश्वरूप पावि घडी ॥ तें अर्जुना चिय आवडी ॥ उकरु नि दा विली ॥ ५५ ॥ तव परमाणु वारगा ॥ तेणें देखि-
 लें सा विया चांगा ॥ तेथ्या हकी येन व्हे चि लागा ॥ द्योनां नि घडी केली पुदती ॥ ५६ ॥ तें संसादिचे निवड वसपणो ॥ रूपां विश्व जितले ज-
 पाट ॥ ओं-६९ नयावें ॥ ओं-४४ असो परि ॥ ओं-४९ केलें ॥

जेषो॥ तं सौम्यक्रोदिसवाणो॥ साकारजाहलें॥ ५७॥ किंबहुनाअनंतें॥ धरलेंधाकुटपणभागुतें॥ परिआश्वसिलेंपार्शतें॥
बिहालियासीं॥ ५८॥ जोस्वर्गस्वर्गांगला॥ तोअवसांतजेंसाचेंदला॥ तेंसाविस्मयजाहाला॥ किरीटीसीं॥ ५९॥ नातरीगुरुकृपमेवें॥
वोसरलेयायंपंनज्ञानआद्यें॥ सुखतुल्यनवीपोंडवें॥ श्रीसूनिदरिवली॥ ६०॥ नयापाडवारेसेंचिनी॥ आडाविश्वरूपाचीजवनि
काहोनी॥ तोफोटोनिगेलीपर्योती॥ हेंभळेंज्जालें॥ ६१॥ कायकालांतजिणोनिआला॥ किंमहावातमगांसाडिला॥ आपुलियाबाहो
उतरला॥ सातहीसिंधु॥ ६२॥ तेंसासनोपबहुचिंतें॥ घेइजनअसेपंडुकतें॥ विश्वरूपापाटीकृष्णतें॥ देखोनियां॥ ६३॥ मगसूया
चियाअस्तमानी॥ भागुनीतारागुवनीरागनी॥ तेंसादेखेंगलागलाअवनी॥ लोकांसाहता॥ ६४॥ पाहंतयेतेंचिकुरुसेव॥ तेंसोचिदेखदो
हींभागीगोच॥ वीरवयनातिशयान्व॥ संघटवरी॥ ६५॥ नयाबाणाचियामांडवांआंत॥ तेंसाचिरशदेखनिवांत॥ धुरेबैसलालस्मी
कात॥ आपणतळी॥ ६६॥ ज्यो०॥ ॥ अर्जुनउवाच॥ ॥ द्रष्टुंदमानुषरूपनवसोप्यजनादन॥ इदानींमस्मिंसंवत्तः सचेताः प्रकृ-
तिगतः॥ ६७॥ टी०॥ टी०॥ एवमागिलेंजेंसेंसें॥ दोखलेंवीरविलासीं॥ मगद्वणोजीजियालोंगेंसें॥ जाहालेंआनो॥ ६७॥ बुद्धीतेंसाडो
निज्ञान॥ भणेंवळथेलेंयान॥ अहंकारसींमन॥ तंशधईजाहालें॥ ६८॥ इंदियंप्रवृत्तीमुलली॥ याचावाचकपणाबुकली॥ ऐसीआ
पांपरीहोनीजाली॥ शरीरग्रामी॥ ६९॥ तिचेआद्यवीचिभागुती॥ जयतिंभेलीप्रवृत्ती॥ आतांजिनाणेंश्रीसूनी॥ जाहालेंथियां॥
७०॥ तेंसेंसंख्यनवीघंतलें॥ मगश्रीकृष्णतेंद्वानितलें॥ भियांनुमंचेंरूपदोशिलें॥ मांनुघटें॥ ७१॥ हेंरूपदारवणेंदेवराया॥ कींम
जअपत्याचुकलिया॥ बुझावोनितुवाभाया॥ स्तनपानदिधलें॥ ७२॥ जीविश्वरूपाचियासागरी॥ हंतोंतरगमाविनचोवेवरी॥ तोइ
येजिजमूर्तान्ध्यानीरी॥ निगालेंआनो॥ ७३॥ आदकेंदरकापुरसहाडा॥ मजसुकतियाजीझाडा॥ हेंमदीनव्हेबहुडा॥ मंधा-
चांकला॥ ७४॥ जीसाविद्याचितपाकुटली॥ तयामजअभूतसिंधुहांमंतला॥ आतांजिणयाचाफटला॥ अमरवसा॥ ७५॥ मां

श्रियन्तदयराणी ॥ द्रोताहेहधलतांचालावणी ॥ स्मरेवैसीबुझावणी ॥ जाहालमजा ॥ ७६ ॥ ॥ स्तो ० ॥ ॥ सुदुर्दशमि
 देरूपहृष्टवानसियन्मम ॥ देवाअप्यस्यरूपस्थानत्यर्शानकाक्षिणः ॥ ५० ॥ टी ० ॥ यथापाथोचियाबोलासवें ॥ हेकायद्वाणितलेदेव ॥ वु
 नोममेतेवनियावें ॥ विश्वरूपीकी ॥ ७७ ॥ मगदयेचीमूर्ती ॥ भटावेंसाडियाआयतें ॥ तेंशकवणसुभद्रापती ॥ विसरलामो ॥ ७८ ॥ अगो
 आंधिक्याअर्जुना ॥ हाताआलियासंरूहंम्यासना ॥ एसाआशिमना ॥ चुकीचाभावो ॥ ७९ ॥ तशिविशवात्मकरूपडें ॥ जेंदाविकेंआही
 हुजपुटें ॥ तेंशंभूहीपरिनजोडें ॥ तंपंकरिता ॥ ८० ॥ आणिअशंगादिसाकटी ॥ यांगोशिंगतातिंकरिटी ॥ परिअवसरनाहीपंटी ॥ ज
 याचिये ॥ ८१ ॥ तोंविश्वरूपएकादेवेक ॥ कंयोनितरेवीअळुमाळ ॥ एसंस्मरताकाळ ॥ जातसेदेवां ॥ ८२ ॥ आशोचियाअंजुकी ॥ देडे
 निन्दत्याचियानिदळी ॥ तेंचातकनिराळी ॥ लागलेंजैसे ॥ ८३ ॥ तेंसेउत्कंटाभिर्भर ॥ होउंनियासुरवर ॥ घोर्कातआठहीपाहर ॥ भे
 दीजयाची ॥ ८४ ॥ परिविश्वरूपासारिखें ॥ स्वर्माहीकोणहीनदेखें ॥ तेंमयसतुवांमखें ॥ देखिलेंहा ॥ ८५ ॥ ॥ स्तो ० ॥ नाहवेंदेनतप
 सानदोननचेज्या ॥ शक्यएवंविधाद्रुष्टुष्टवानसिमायया ॥ ५३ ॥ टी ० ॥ पुठुपायांसिवाटा ॥ नवाहनीएथसुभटा ॥ साहीस्
 हीतवोहटो ॥ वाडलावेंटी ॥ ८६ ॥ मजविश्वरूपाचियासाहारा ॥ चालावयाधनुभरा ॥ तपोचियाहीसवंपारा ॥ नळचिळागा ॥ ८७ ॥
 आपिदानांदक्षरकान्दें ॥ मीयज्ञाहीतेंसानसापडें ॥ जेंसोनिकासुरवाडें ॥ देखिलतुवां ८८ ॥ तेंसाशीर्काचिपरी ॥ आंतुडंगाअवथारी ॥ जरीभक्ती
 येउंनिवरी ॥ चित्तोंगा ॥ ८९ ॥ ॥ स्तो ० ॥ भुक्त्यालनन्यथाशक्यअहमवेंविशेजुन ॥ ज्ञातुद्रुष्टतत्त्वनमवंपुचप्रतप ॥ ५६ ॥ टी ० ॥ परिते
 चिस्मन्तीएसी ॥ पजन्याचीसुटकाजैसे ॥ धगवाचुनिअनारिसी ॥ गर्नाचिनणें ॥ ९० ॥ कासकजळसपांचे ॥ घेउंसमुद्रांतोगवसिनी
 ॥ गंगाजैसेअनन्यगती ॥ भिनलीचिखेळें ॥ ९१ ॥ तेंसंवेंभावसंपारें ॥ नथगतयेमणकसरे ॥ मेजमाजिसंचरें ॥ मीचिहांडनी ॥ ९२ ॥ आणितें

पाठ. ओ. ८४ नर. ओ. ८६ चोहरा. ओ. ८८ रानादिकां. ओ. ९० तुमज. ६

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ जयजयवोषाद्वे ॥ उदारोऽसिद्धे ॥ अनवरतं आनंदं ॥ नर्षनिये ॥ १॥ विषयव्याकें मिठी ॥ दियभिया लुठानाठी ॥
 तें लुझिये ह्म पाहर्षी ॥ भोर्विहोये ॥ २॥ तरि नवणातेनापणेळी ॥ हें सेनि नोशोक जाळी ॥ जर प्रसाद स कल्लोळी ॥ उरये मितं ॥ ३॥ अंगस्फ
 र्वाचे सोहळे ॥ सेवकां लुझे न संहाळं ॥ सोहं भिद्धे चैनद्धे ॥ पाळसीनं ॥ ४॥ आथार थोकी चिया अकी ॥ वाहं नसी को लुकी ॥ न्हं दया काश पस
 र्वा ॥ पोरये दसी निजे ॥ ५॥ मयक ज्योतीची वांवाळणी ॥ करि सीमन पवनाचे रोळणी ॥ आत्मस्मरणार्च बाळुणी ॥ लेव विसी ॥ ६॥ सत-
 रा विचेचें स्तन्ये दसी ॥ अनहानाचा हं लुरगारी ॥ समाधि बोधे नि जनि सी ॥ बुझा उनी ॥ ७॥ ह्यणी भिसा दका तें माउरी ॥ प्रिकसार स्वत लुझि
 या पाउली ॥ याकारणें मी सांउली ॥ नमं डी नुझी ॥ ८॥ अहांस हुरु चिये ह्म पाहर्षी ॥ तुझे वारुण्य जयते अधिधी ॥ तोस कळविद्या विचये सदी
 धावा होये ॥ ९॥ ह्यणी निअवे डी मने ॥ निज जनम लब्धते ॥ आजार्थी माने ॥ ग्रंथि मरुपणी ॥ १०॥ नवरसीं मरवी सागर ॥ करवी उचित रत्नांचे
 आगर ॥ प्रावाथे चि गिरि वर ॥ नफ जवि माये ॥ ११॥ माहि द्यसो निया चियारवाण ॥ उय उवां दं शिये चिया असोणी ॥ विवेक वल्ली चित्ताव
 णी ॥ होतें दर्सेय ॥ १२॥ सवाद फळ निधाने ॥ मये याची उद्याने ॥ लावी ह्यणे गहने ॥ निरंतर ॥ १३॥ पाला उचि दर कुटे ॥ मोडं वागवा द अक
 दे ॥ कुतर्फीची दुष्टे ॥ सावजें फेडी ॥ १४॥ श्री ह्मणा गुणो माने ॥ मंत्र करी वां सरते ॥ राणि वेंब सवीं ज्योतये ॥ अवाणा चिये ॥ १५॥ येम
 हा भिये चियान गरी ॥ ब्रह्म विद्येचा सकाळ करी ॥ येणं दणें सखचि वरी ॥ होतें दया जागा ॥ १६॥ नृ आपुले निस्नेह पसुवे ॥ मोते पायुर-
 विशी लसंदेवें ॥ तरि आतां चि हे आयवं ॥ निमीन माये ॥ १७॥ दये विनवणो ये साठी ॥ अवलोकि लें गुरु ह्म पाहर्षी ॥ ह्यणे गीता ये सो उठी ॥
 नवोले बहू ॥ १८॥ तेथ जी जीम हा मसाद ॥ ह्यणी भिसा विद्या नाहाना आनंद ॥ आतां भिरोपी नम बंध ॥ अवधान दीजे ॥ १९॥ श्लो० अ
 रुं नु उवाच ॥ एवं सतत युक्ता ये प्रस्तास्ता पर्युपासते ॥ ये चाप्यक्षरमव्यक्तेषां के योग विनमाः ॥ १॥ टी० तरि सकळ वीराधिपज ॥ जो
 पाठ ॥ ओ० १ अनावृत्त ॥ ओ० २ नादी ॥ विषय ॥ ओ० ५ पालकी ॥ परि ये दसी ॥ ओ० ७ हसुर ॥ ओ० ९ धाना ॥ ओ० ११ रसां ॥ ओ० १७ निर्मोनि ॥ ७

सोमवंशी किञ्च अज ॥ नो बोलता जाहोला आत्मज ॥ पांडुनुपत्ता ॥ २० ॥ हृष्टान्तं हृष्टेण अवधारितं ॥ आशुविशेषरूपमजदावितं ॥ तेन वल्ल-
 पो भिव्याहोत् ॥ चित्तमासे ॥ २१ ॥ आणित्ये हृष्टा सुनचित्तसवे ॥ आलागीं सोयथ रितं जीवे ॥ तवनको हृष्टणे निदेवे ॥ वारिले मानें ॥ २२ ॥ तं रि-
 व्यक्त आणित्य ॥ हेतु विगृह्णित ॥ प्रकृती पण विव्यक्त ॥ अन्यरूपयोग ॥ २३ ॥ यादो नीजी वादा ॥ वृत्ते पावा वयावें कुठा ॥ व्यक्ता व्य-
 क्तदार वंता ॥ शिगेजे जय ॥ २४ ॥ पंजे वा निमाश्यातुका ॥ ते चि वे गळिये वा त्यायेका ॥ हृष्टो भिगृह्णेश्या व्यापका ॥ सोरसा पाड ॥ २५
 असृता चिया सागरी ॥ जेदा भेसा मथ्याच प्योरी ॥ ते चि दे असृतलहरी ॥ वृद्धी येत रिया ॥ २६ ॥ हे कीरमाझा चिती ॥ प्रतीति आश्रिजी निरु-
 ती ॥ परिपुसणे योगपती ॥ तें या चिन्तागों ॥ २७ ॥ जेदे वातु ह्मी नावेक ॥ अंगो कारि नुं व्यापक ॥ ते साच चि कीर वनिक ॥ हे जाणावया ॥ २८ ॥
 तं रि तु जलांगि कर्म ॥ तं चि जयाचें परम ॥ प्रकृति भिमनो धर्म ॥ विको रिया तले ॥ २९ ॥ इत्यादि संवापरी ॥ जे मक्त तू ते ओहरी ॥ बांधो निया-
 जि कारी ॥ उपासनी ॥ ३० ॥ आणित्ये मणवा पलीकडे ॥ वेर गरिये सिजे कानडे ॥ का भिसया हि सांगले ॥ न हो नै जे वस्तु ॥ ३१ ॥ तें अस्पर-
 जो अव्यक्त ॥ निदाष देशा रहित ॥ सोह मावे उपासित ॥ जाभिये जें ॥ ३२ ॥ नयां आणित्ये मक्त ॥ येर येरां माझि अनता ॥ कवणें योगतत्त्वा
 आणित्ये सागा ॥ ३३ ॥ इयां किरीत चिया बोला ॥ तो जगद्धुसने पोषला ॥ हृष्टो हो प्रभु ॥ जाणसी कर्त ॥ ३४ ॥ स्तो० श्री भगवा-
 नुवाच ॥ मथ्यो वश्य मनो ये मानि न्ययुक्ता उपासने ॥ अदृष्टा परयोपेता स्ते मे युक्ततमा मताः ॥ ३५ ॥ तं रि अस्मगिरी चिया उपकंठो-
 रिगा स्त्रियारविं बिबापरी ॥ रयमे जे सकिरी दो ॥ संचरती ॥ ३६ ॥ कावर्षा कां सिरिता ॥ जे साच टोंला रोपां दुसला ॥ ते सें नीच नवी प्रज-
 नां ॥ अद्वैदिसे ॥ ३६ ॥ पराती कि भिया हि सागर ॥ जे सा मागील हायावा अभिचार ॥ नित्ये ये मे चिये एसा पडि सार ॥ मयमावा ॥ ३७ ॥ ते सें स-
 र्वी दया सहित ॥ मजमाजि सनिश्चिन ॥ जे रा भि देव सैन हणत ॥ उपासिती ॥ ३८ ॥ इया परी जे प्रकृत ॥ आपणें पंम जे देत ॥ ते चि योगयुक्त
 पाठ ॥ ओ ॥ ३८ ॥ राति देवो ॥

परममात्री ॥ ५९ ॥ स्तो० ॥ येत्स्वस्तरमनिदेशयमव्यक्तं पशुपासते ॥ सर्वत्रागपविच्यं नक्तृदस्थमचनं भवे ॥ ५९ ॥ अणि येरनेहोपाडवा ॥
जेआरुदोमिसोहं भावा ॥ स्त्रीवतीमिस्वरवा ॥ अक्षरासि ॥ ६० ॥ मनाचेनरनीनलगे ॥ जेयषुद्धीचिहृष्टनीरगे ॥ इंद्रियावृत्तजोगे ॥ कायहोद
तु ॥ ६१ ॥ परिध्यानाहो कुवाडे ॥ ह्यणोनिगकेतार्योनसापडे ॥ व्यक्तेमिसमाजिवेडे ॥ कवणीहीनोह ॥ ६२ ॥ जयासर्वत्रसर्वपणे ॥ सर्वा-
होकाळीअसणे ॥ जेप्रावृत्तिचिंतवणे ॥ हिंपुदोजाहले ॥ ६३ ॥ जेहोयनोहो ॥ जेनाहीनाओहो ॥ ऐसेह्यणोभिरुपाये ॥ उपजतीचिना ॥ ६४
जेचळेनाइके ॥ सरेशमेळे ॥ तेआपुलेमिचिबळे ॥ आगविलेनहो ॥ ६५ ॥ स्तो० ॥ संनियम्येदियथासर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेमासुवति-
मायिवसवंप्रवृत्तिहेतरताः ॥ ६६ ॥ टी० ॥ पूर्वैराग्यमहाप्रावके ॥ जाळीनिविषयाचोकरुके ॥ आयपनीतबके ॥ इंद्रियधरिनी ॥ ६६ ॥ मग-
सयमाचीथादो ॥ स्त्रीमिसुरडिलीउपगदो ॥ इंद्रियकोडनीवपानी ॥ नृदयाचिया ॥ ६७ ॥ अपानीचियातोडा ॥ लावेमिआसनसुदास्त
हाडा ॥ मूळबधाचाहुडा ॥ यन्नासिला ॥ ६८ ॥ आशचेव्वागनोडिले ॥ अर्धेयचिकडेझाडिले ॥ निदचेशीधिले ॥ काळवरवे ॥ ६९ ॥ वज्जा
मीनियाज्जाळी ॥ करुमिसमथावृत्तीहोळी ॥ व्याधीचिशिसाळी ॥ प्रजिनीयंत्र ॥ ७० ॥ मगकुडमिभियेचानेमा ॥ आधारीविलाउमा ॥ नया
केजवेलेमभा ॥ विमथावरी ॥ ७१ ॥ नवदागचियाचोचकी ॥ बाणुमिसयातीचीआडवांकी ॥ उपजलीसिडकी ॥ कृत्तारातिची ॥ ७२ ॥
माणशक्तीचासुडे ॥ महास्तानिसवल्याचेमेडे ॥ मनोमहायचेमिसुडे ॥ दिपनीबळी ॥ ७३ ॥ चंदसूर्याबुझावणी ॥ कृत्तुमिअनहाताची-
सुडवणी ॥ सतराविचेचणणी ॥ जिकिलेवंगी ॥ ७४ ॥ मगमअमामाअविचे ॥ नेणकोरिवेदादरे ॥ टोक्किलेचवेरे ॥ ब्रह्मरंभ ॥ ७५ ॥
वरीषकरानसापान ॥ तेसांजोभियागहन ॥ क्रास्वेस्तभियागगन ॥ प्ररलेब्रह्मो ॥ ७६ ॥ ऐसेजसमबुद्धी ॥ गिळावयासाहंसिहो ॥ आग
वितातिभिरवथी ॥ योगदुर्गे ॥ ७७ ॥ आपुनियासादावादी ॥ शून्ययेतउठाउवी ॥ तेहीसातेचिकरीदो ॥ पावतीगा ॥ ७८ ॥ वांचूनियाथा-
पाद-ओ-४९ सांडिले .

चेनिषच्छे॥ अधिकसंहोमिच्छे॥ एसेनाहोभागच्छे॥ कथंचित्तया॥ ५९॥ श्लो० ॥ कुशोधिकतरस्तेषाम्यक्तास्तत्तेतस्मात्॥ अव्यक्ताहिगवि-
दुःखंदेहवदिराज्यने॥ ५॥ टी० ॥ जिहोमसकृत्सूतांचियाहिती॥ निरालंबो॥ अव्यक्ती॥ परमरतियाआसक्ती॥ मत्कोविणो॥ ६०॥ तयाम
हृद्रोदपदे॥ करिनानिवादवये॥ आणिक्रुद्धिसिद्धीचोदुदु॥ पौडोनिगती॥ ६१॥ कामक्रोथाचेविजग॥ उवावतीअनेग॥ आणिशूरस्ती
आग॥ शुंसावेंकी॥ ६२॥ ताहागेनाहानिचिपियावी॥ मुकभियासूक्ष्मिस्वावी॥ अहोग्रनवावी॥ मनावारा॥ ६३॥ उनीदियाचेपहुडगो॥
मिरोथाचेवल्हावणे॥ झाजीमसाजणे॥ चवळोवेंगा॥ ६४॥ शीतवेतावे॥ उष्णापायुगेवं॥ दृष्टीचियाआसावे॥ घराआत॥ ६५॥ किंब
हुनापाडवा॥ हाअभिप्रपेथानित्यनवा॥ म्मनारावीणकरावा॥ तोहायोग॥ ६६॥ एथस्वामोचिकाज॥ नावापिक्व्याज॥ परिमरणेसींझूज॥
मित्यनवे॥ ६७॥ ऐसेमृत्पूहूमीनस्व॥ कांथोलेकृतनविषव॥ डोंगरीगिळनासुरग॥ नफातकाई॥ ६८॥ ह्यणोनियोगाचियाबादा॥ जेनिगाले
गास्रमदा॥ तयाहुःखचाचिबादा॥ प्रागाआत्मा॥ ६९॥ पाहंपोलाहोनेचणे॥ जेंबोचरियापडतोस्वाणे॥ तेंपोतमरणेकींमरणें॥ शूद्रोने
पो॥ ७०॥ ह्यणोमिसमुद्रबाहो॥ तरणेआधिकहो॥ कागरनामाजिपाई॥ रेवलिजत॥ ७१॥ वळयलियारणाचीथादी॥ आणोनित्यगताका
दी॥ सूर्याचेप्रउगी॥ क्राहोयगा॥ ७२॥ यास्मागींपगुळाहवा॥ नद्वेवाशुमिपांडवा॥ तेविदेहवंताजीवां॥ अव्यक्तोंगति॥ ७३॥ ऐसाहीज-
रीयिवसा॥ बायोनिगआकाशा॥ झोबतोतरोकुशा॥ पाव्रहोती॥ ७४॥ ह्यणोनिरनेपथा॥ नेणतोविह्वथा॥ जेकाप्रक्तिपथा॥ वोतगळे
॥ ७५॥ श्लो० क॥ येतुसर्वाणिकर्माणिमथिसन्यस्यमत्यराः॥ अनन्येनैवयोगेनमां आयेतउपासते॥ ६॥ टी० ॥ कर्मोद्वे-
कुरवें॥ करितीकर्मअशरेवें॥ जियेसांवणेविशेवें॥ प्रागाआली॥ ७६॥ विधेतिंपाळित॥ निषेधांतेंपाळित॥ मज्जेदेउनिजाळित॥ कर्मफ-
ळे॥ ७७॥ ययापरेपही॥ अर्जुनामाझेठाई॥ सन्यस्तनिनाहो॥ करितीकर्म॥ ७८॥ आणीकहोजेजंसर्व॥ काथिकवाचिकमानसिकभाव

पाठ-ओ-६१ पडोनि-ओ-६४ चाळोवें-ओ-६८ डोंगरी-ओ-७० याणे-ओ-७२ केवि-ओ

अ.

अ.

अ.

अ.

अ.

अ.

अ.

अ.

तयाभीवाञ्चनियत् ॥ आनोतनाहं ॥ ७९ ॥ ऐसे जेमल्पर ॥ उपाभितनिरंतर ॥ ध्यानमियेय ॥ माझे द्याने ॥ ८० ॥ जयाचिये आवढो ॥ केनीमजशा
 कुळवाडी ॥ भोगमासवापुढो ॥ त्याजिलो कुळ ॥ ८१ ॥ ऐसे अनन्ययोगो ॥ यिक्ले जिवेमने आगे ॥ तयांचे कायिक संगो ॥ जेसर्वमीकरी ॥
 श्लो ० ॥ तेषामहममुद्धतो मृत्युमेभार सागरान ॥ भवाभिनचिरात्यार्थमर्थ्योवशितचेतसाम ॥ ७ ॥ श्लो ० ॥ किबहुनायधुरंग ॥ जोगते
 चियाय उदरा ॥ तेसातेचासोयरा ॥ येतुन्दागो ॥ ८ ॥ तवोर्मातया ॥ जेसे भसते ते सिया ॥ कीक काळुनो कनिया ॥ येतलापाठा ॥ ८५ ॥ येदुवी
 तरोमाझिया भक्त ॥ आपणिससागर्चचिना ॥ वायमपथानोकागा ॥ कोरान्भोगो ॥ ८५ ॥ तेसेतमाझे ॥ कलवहं जाणजे ॥ कायिसोभहो
 नलजे ॥ तयाचोभर्मा ॥ ८६ ॥ जन्ममृत्युचियाभाटी ॥ झळवती दयास्फरी ॥ तदखोभियापोरी ॥ ऐसे जाहोले ॥ ८७ ॥ भवसिंधुचिनिमाजे
 कवणाभियाकुमुपजे ॥ तयजरीकोमाझे ॥ नीहताहन ॥ ८८ ॥ व्यणोनिगापादया ॥ मूर्तेचिमेळावा ॥ करुनित्याचियागाना ॥ धावनआलो ८९
 नाभाचेमहसवर ॥ नावादया अवयरी ॥ सार्जभयांससारी ॥ तारुजाहलो ॥ ९० ॥ सैदेजेदरिगेने ॥ तेथ्यानकासन्धविनि ॥ परिगृहीयातेले
 तिरयावरी ॥ ९१ ॥ यमाचिपेटी ॥ बायनाएकानियापोरी ॥ मग ओणिलेतने ॥ सायुज्याचिया ॥ ९२ ॥ परिभक्तचेनिनावे ॥ चतुष्यदरिआशवे
 वेकुर्वीचियराणिवे ॥ योग्यकेले ॥ ९३ ॥ व्यणोनिगाभक्तो ॥ नाहीएकहोचिंता ॥ तयातेममुद्धता ॥ आधिर्मासदा ॥ ९४ ॥ आणिजेदोचिक्कास
 को ॥ दिथनी आपुनीचिबनो ॥ तेदोचिमजसूति ॥ न्याचियमाटी ॥ ९५ ॥ याकारेणगाभक्तया ॥ हासवतुवायनेजया ॥ शिकजेछेयया
 भाराभजिजे ॥ ९६ ॥ श्लो ० ॥ मय्येवमन आयत्समशिवुद्धिनिवराय ॥ निवभयमिभय्येव भत उद्धनसशय ॥ ८ ॥ टी ० ॥ अगामान-
 संहारक ॥ माझास्वरूपसहनिव ॥ करुभियानीनसक ॥ बुद्धिभय्येसी ॥ ९७ ॥ दयेंदोनेसरिसी ॥ मजमाजनेयेसी ॥ रिगान्दोतिरणान
 सी ॥ मोनेतुगा ॥ ९८ ॥ जेमनबुद्धिदही ॥ यरकेलेमाझाठायी ॥ तिरिसोरोमगकाई ॥ मीतुरे ॥ ९९ ॥ व्यणोनिदोपपान्वे ॥ सवंचितेज

पाठ ॥ ओ ८० ॥ प्रकृतेशोचि ॥ ओ ९० ॥ निणिने ॥ ओ ९६ ॥ कीजे ॥

४

४

४

४

४

४

४

४

४

४

४

४

मालवे ॥ अंगरविं वामसे ॥ प्रकाश जाये ॥ १०० ॥ उचलले यामणासरिसी ॥ इंद्रिये हो भिगत जेसी ॥ तेसा मन बुद्धिपासी ॥ अहंकारे ॥ ११ ॥ ह्यणी निमा
 श्रिया स्वस्व रूपी ॥ मन बुद्धि दये निस्सी ॥ येतुने नि सर्ग व्यापी ॥ मोनि होसी ॥ २१ ॥ यया बोला का हो ॥ अनारि से ना ही ॥ आपनी आपणा ही ॥ वाहन संग
 ॥ ३१ ॥ स्तो० अथ चित्त सयाथातुन शक्ती प्रिय स्थिर ॥ अभ्यास योगे न तो या पिच्छा सुध जय ॥ ०॥ टी० अथ बोह चित्त ॥ मन बुद्धि सोह
 त ॥ माझा लती अनुबित ॥ नराकसी देवो ॥ ४ ॥ तरि गारे से करी ॥ यया आवाण हा रासा शरी ॥ मोटे के निमष भरी ॥ देते जई ॥ ५ ॥ यगजंज
 कां भिभिरय ॥ देव न मझ सरव ॥ नेतुले अंग चक्र ॥ विषयी येदल ॥ ६ ॥ जे यशर त्कारिगे ॥ अपि सरिता वोह दुलगे ॥ ते से चित्त कोट लेवगे ॥
 यपचेनी ॥ ७ ॥ मग पुन व हून जे से ॥ शशि विंदि से दिसे ॥ हार पत आवसे ॥ नारी चि होये ॥ ८ ॥ ते से भोग आतु निन गता ॥ चित्त मजमा जिरि
 गता ॥ हूकू हूकू पादु रूता ॥ मोचि हो भिनु ॥ ९ ॥ अगा अभ्यास योग क्षणिजे ॥ तो हा एक जाणिजे ॥ येणे का ही निन पजे ॥ ऐसे ना ही ॥ १० ॥ ऐं अ
 भ्यासा चो नबळे ॥ एका गति अंतराळे ॥ व्याघ्र संपा जके ॥ केन्हे रफी ॥ ११ ॥ विषकी आहारी पडे ॥ समुदो पाय वाट जोडे ॥ एकी वाट ह्य
 यो कडे ॥ अभ्यासे केलें ॥ १२ ॥ ह्यणी नि अभ्यासा सिवा ही ॥ सर्वथा दुष्कर ना ही ॥ याला गि माझा वाई ॥ अभ्यासे भिळें ॥ १३ ॥ स्तो० अ
 भ्यासे व्यसमर्थी भिम त्म परमो भव ॥ मर्त्य मपि कर्मणि कुर्वन्मिदमत्राथ सि ॥ १० ॥ टी० कां अभ्यासा होलागी ॥ कसना हो ली अया
 ओगी ॥ तरि आहासी जया भागी ॥ तेसा नि असे ॥ १४ ॥ इंद्रिये न कोडी ॥ भोग ते न तोडी ॥ अस्मि मान सांठी ॥ स्वजातीचा ॥ १५ ॥ कुळ ध
 र्मचाळी ॥ विधि निषेध पाळी ॥ मग रूखें वृक्ष सरळी ॥ स्थित आहू ॥ १६ ॥ परिमने वाच देह ॥ जे साजो च्या पार होये ॥ तो मी करीत आहे
 ऐसे न सणे ॥ १७ ॥ करणे का न करणे ॥ हे आयव नो चि जाणे ॥ विष चक्र ते से जेणे ॥ परमात्मी ॥ १८ ॥ उपाया पुर्याच का ही ॥ उरने दो आपु
 लिया वाची ॥ स्वजातीचा कुरु भियेई ॥ जो गि वहे ॥ १९ ॥ माळी ये ज उते नले ॥ ते उते निवात चि गेलें ॥ तया पाणि या ऐसे केलें ॥ हो आवया २०
 पार ॥ ओ० १ मनो बुद्धि ॥ ओ० ९ हो इत ॥ ओ० २१ आठ उमाते ॥ ४९

ह्यणोनिप्रवृत्तिआणिनिवृत्ती ॥ दयेंवोद्वीनयेमती ॥ अरवंदचिनवृत्ती ॥ मास्मावायी ॥ २१ ॥ येद्वीनोरोममदा ॥ उज्जूकाआह्वादा ॥ रथका
 दैखदपटा ॥ कर्मअसे ॥ २२ ॥ आणित्तेंजकर्मनपज ॥ तेथेदेवहुनह्मणिजे ॥ निवाताचिअर्पिते ॥ माज्यातायी ॥ २३ ॥ ऐभियासद्भाव
 नी ॥ तनुत्याणीअर्जुना ॥ तंसासुज्यसदना ॥ माद्वियायेसी ॥ २४ ॥ स्तो ॥ अथेतदध्यशक्तोभिकर्तमद्योगमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफलत्या-
 गंततः कुरुयतात्मवान् ॥ २५ ॥ टी ॥ नातरदिहीनज ॥ नेदवकर्मपज ॥ तरिगामांतनुंमज ॥ पांडुकुमरा ॥ २६ ॥ बुद्धीचियपार्थयोगी
 कर्मा ॥ आदिक्सांसेवदी ॥ मांतबाधणाकिरीदी ॥ दुबादजरी ॥ २७ ॥ तरिहंहीअसा ॥ सांडेमादा ॥ अंतसा ॥ परिमंयतिमोवसा ॥ बुद्धितुदी
 ॥ २८ ॥ आणित्तेंजेणेंवेळे ॥ घलनीकर्मसकळ ॥ नयांचिनेयेंफळ ॥ न्यीजतजाये ॥ २९ ॥ वृक्षकांवेळो ॥ लाटतीफळे ॥ आलो ॥ तेसीसंलो
 निपजली ॥ कर्मसिद्धे ॥ ३० ॥ परिमातेमनीयरावे ॥ कामजुदेराकरावे ॥ हेकाहीनका ॥ आवुने ॥ जांडेपरन्यी ॥ ३१ ॥ खडकीजे
 सेवर्षले ॥ कांआगीमाजियेरिले ॥ कर्ममातीदरिवेले ॥ स्वमजसा ॥ ३२ ॥ अगा ॥ आत्मजचाविषी ॥ जीवजसा ॥ निरभिलावी ॥ तेसाव-
 र्मथ्यशेषां ॥ निष्कामहोई ॥ ३३ ॥ वल्हीचिज्जाकाजेसी ॥ वायाजाय ॥ आकाशो ॥ ३४ ॥ जेततसी ॥ ३५ ॥ अजुनाहा
 फलत्याग ॥ आवडकार ॥ असलग ॥ परियोगमाजियोग ॥ पुरचाहा ॥ ३६ ॥ योगफलन्यागसांडे ॥ तेनमूननिवरुटे ॥ एकवळवणु-
 झाडे ॥ वांसेजसी ॥ ३७ ॥ तेसेयेणेंचिशरीरे ॥ शरीरायेणेंसर ॥ किबहुनायेणेंसर ॥ चिरापट ॥ ३८ ॥ पं ॥ अभ्यासाचियापाउटी ॥ दा
 षिजेज्ञानकिरीदी ॥ सोनेयेइजेमदी ॥ ध्यानाचिये ॥ ३९ ॥ मगध्यानाभिरवव ॥ देनंआयेवेचिमाव ॥ तद्धाकर्मजातसर्व ॥ दुरीठा
 के ॥ ४० ॥ कर्मजेशदुरावे ॥ तेथफलन्यागसंभव ॥ न्यागासुवभागवे ॥ शांतिसगळा ॥ ४१ ॥ ह्यणानियावयाशांती ॥ होचिक्रम
 संप्रदापनी ॥ अभ्यासचिप्रस्तुती ॥ करणाय ॥ ४२ ॥ स्तो ॥ ॥ अयोहिज्ञानमभ्यासातज्ञानाभ्यानांविशयते ॥ ध्यानात्संप्रफला
 पाठ ॥ ४३ ॥ अठऊमाने ओं २५ तेंदूतन ॥ ओं २७ स्वहिती ॥ ओं ३२ विशी ॥ ओं ३५ वंकु ॥ ओं ४० पावावया ॥ ४१ ॥

त्यागस्यागाच्छुतिरनन्तरम् ॥ १२ ॥ टी० ॥ अस्मासाहूभिगहन ॥ पार्थीमगजान ॥ ज्ञानापासोनिध्यान ॥ विशेषजे ॥ ४१ ॥ सगक
र्मफलत्याग ॥ तोध्यानापासोभिचंग ॥ त्यागाहूभिगमो ॥ शीतस्वरवाचा ॥ ४२ ॥ ऐसियाययावादा ॥ इहोविपैर्पोस्ममदा ॥ शानो
चाभाजवदा ॥ दक्लिजेणो ॥ ४३ ॥ श्लो० ॥ अद्वैतसर्वभूतानामेव ॥ करुणागवच ॥ निर्ममोनिरहंकारः ॥ समदुःखस्वरः ॥ सुमी ॥
॥ १३ ॥ टी० ॥ तोसर्वभूतं चादायी ॥ द्वेषानेनेणं चिह्नं हो ॥ आपपरनाहो ॥ चेतन्यजेसा ॥ ४४ ॥ उन्नमतेयिजिजे ॥ अयमाते अक्कोरि
जे ॥ हंकाहोचिनेणजे ॥ वस्त्रयाजेवी ॥ ४५ ॥ कारयाचिदहचाकु ॥ रक्षापणेनेगाकु ॥ हेनहणेचिह्नपाकु ॥ माणपेंगा ॥ ४६ ॥ गाइची
तषाहरु ॥ व्याघ्राविषहोउभिमाकु ॥ ऐसेनेणेचिकाकरु ॥ नायेंजेसे ॥ ४७ ॥ तेसीआयिविचिभूतमात्री ॥ एकपणंजयामेत्री ॥
वृषिसयात्री ॥ आपणजो ॥ ४८ ॥ अणिमीहेभाषनेणे ॥ माझेकाहोची नह्याण ॥ सुखदुःखजाणणे ॥ नाहोजया ॥ ४९ ॥ नेवीचिसमे
लागी ॥ दुखीसिपवाडआंगी ॥ संनोषाउत्सगी ॥ दिधेलेयर ॥ ५० ॥ श्लो० ॥ संतुष्टः सतंतयोगीयतात्याहृदनिश्चयः ॥ मय्यर्पित
मनेबुद्धिर्योमद्भक्तः समेप्रियः ॥ १४ ॥ टी० ॥ वीषिवैवीणसागर ॥ जेसाजळेनिर्मर ॥ तेसानिरुपचार ॥ संतोषीजो ॥ ५१ ॥ वाहूनि
आपलोधाण ॥ धरीजोअतः करणा ॥ निश्चयामात्तपण ॥ जयचिनी ॥ ५२ ॥ जीवपरमात्मादेनी ॥ वैसलेएकासनी ॥ जयाचिया-
तदयधुवनी ॥ विराजती ॥ ५३ ॥ ऐसायोगसमृद्धि ॥ होऊनिजोनिरवधि ॥ अर्पिमोबुद्धि ॥ माझावर्षो ॥ ५४ ॥ आतबोहरियो
ग ॥ निर्वल्लेयहीचांग ॥ तिरिमाझाअनुराग ॥ समेमजया ॥ ५५ ॥ अजुनातोभक्त ॥ तोचयोगीतोचिमुक्त ॥ तोवल्लुभासीका
त ॥ ऐसापिदये ॥ ५६ ॥ हेनानोआवडे ॥ मजजीवचिनिपाडे ॥ हेहोएथयेकडे ॥ रूपकरणे ॥ ५७ ॥ तरोपिदयतयानीकाहाणी ॥
हेमलोचीभावरणी ॥ दयेनवनबोलणी ॥ परिबोलवीअझा ॥ ५८ ॥ ह्यणेनिगाआहूी ॥ वेगाआलीउपमा ॥ येइवीकायमेमा ॥ अ-
पात्र ॥ ओ० ५३ पेणा ॥ ओ० ४५ तरी ॥ ओ० ४८ पांजो ॥ ओ० ५१ वरुवाये ॥ ओ० ५३ वेसीभि ॥ ओ० ५८ मरणी ॥ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

बुवाद्भसे ॥ ५९ ॥ आतांभसोहंकिरहा ॥ पंप्रियाचियगोष्ठी ॥ दुणायावउनी ॥ आवडोगा ॥ ६० ॥ मयाहावरिषणये ॥ प्रेमळसे
 वादियाहोये ॥ तियेगोळीसिआहे ॥ कंटाळेमगा ॥ ६१ ॥ ह्यणोनिगायाडुसुता ॥ तेंचिप्रियआणतेंचिआता ॥ वरिप्रियाचीवानीप्रस
 रेंआनी ॥ ६२ ॥ तीरिआतांबोले ॥ भलेयासरवामीनले ॥ ऐसेह्यणतक्षणीडोले ॥ लागनादेवो ॥ ६३ ॥ मगहणेजाण ॥ तयाभक्ता
 चेलक्षण ॥ जयामीअंतःकरण ॥ बेसोयाही ॥ ६४ ॥ स्तो ॥ यस्मान्नोद्विजेतेलोकोलोकानोद्विजेतेचयः ॥ हर्षामर्षमयोद्वेगसु
 कोयः सत्तमोप्रियः ॥ १५ ॥ टी ॥ तीरिसिंधूचेनिमणे ॥ जळचराभयनूपजे ॥ आणिजळचरीनुभगिजे ॥ समुद्रजेसा ॥ ६५ ॥
 तेविंउन्मतेजंग ॥ जयासिरवंताननगे ॥ आणिजयाचेनिआंगे ॥ नशिणंनोक् ॥ ६६ ॥ किंवूहुनापाडवा ॥ शरीरजेसेअवयवा ॥
 तेसाजुबगेजीवा ॥ जीवपणेजो ॥ ६७ ॥ जगचिदेहजाहाले ॥ ह्यणोभिप्रियाप्रियगेले ॥ हर्षामर्षवले ॥ दुजेनविषा ॥ ६८ ॥ रसाद
 द्वनिसुक्त ॥ मयेद्वगरीहत ॥ याहिवरिभक्त ॥ माझावायो ॥ ६९ ॥ तीरतयाचागामजमोहो ॥ कायसांगोतोपटियावो ॥ हेअसो
 जिवो ॥ जिवो ॥ माझोभितो ॥ ७० ॥ जैमिजानंद्याला ॥ परिणाम आयुष्यभाला ॥ पूर्णतेजाहाला ॥ वल्लभजो ॥ ७१ ॥ स्तो ॥ अन
 पेक्षः शक्तिदंस्उदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वारंभपरित्यागान्यामद्भक्तः समप्रियः ॥ १६ ॥ टी ॥ तयाचियागयीपाडवा ॥ अपेक्ष
 नाहीरिगावा ॥ सरवासिचढावा ॥ जयाचेअसण ॥ ७२ ॥ मोक्षदेऊनिउदार ॥ काशीहोयकार ॥ परिवचणेलागेशरीर ॥ तियेगावी
 ॥ ७३ ॥ हिमवंतदोषस्वाय ॥ परिजीविताचीहानीहाय ॥ तंमेशीचलेनोह ॥ सज्जनचे ॥ ७४ ॥ शक्तिवैभक्तिचिंगाहोये ॥ आणि
 पापतापहीजाये ॥ परिनेयंआहे ॥ बुडणंगक ॥ ७५ ॥ रेवोदियेपारुनीणजे ॥ तरोप्रसूनबुडिजे ॥ रोळुडचिल्लिहजे ॥ नमरता
 मोक्ष ॥ ७६ ॥ संतोचिनिअगलगे ॥ पापतेजिणणेगंगे ॥ नेणेसतसंगे ॥ शक्तिवैभक्ते ॥ ७७ ॥ ह्यणोभिअसोजोरसा ॥ शक्तिवैभ
 पाव ॥ ओ ॥ ६१ संवादिये ॥ ओ ॥ ६५ जळजगंनुवजे ॥ ओ ॥ ७० जीव ॥ ओ ॥ ७१ नित्यानंद ॥ ओ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

यंकुवासा ॥ जेणे उद्धययिनेदिवा ॥ मनोमय ॥ ७८ ॥ आंतबोहरिचोखाळ ॥ स्वर्यतेसाभिर्मळ ॥ आणितलार्थेचापायाळ ॥ देखणाजो
 ७९ ॥ व्यापक आणि उदास ॥ जेसेकां आकाश ॥ तेसेंजयाचेमानस ॥ सर्वत्रगा ॥ ८० ॥ संसार व्यर्थफुटला ॥ जेनेराखेभिवटला ॥
 व्याधातोनिसूटला ॥ विहरमजमा ॥ ८१ ॥ तेसांमतजोस्वर ॥ कृष्णहीटुवंचनेदरेवे ॥ नणिजगनासुखे ॥ लज्जाजेवी ॥ ८२ ॥ आ
 णिकसारंभालागीं ॥ जया अहंकारनाहीं आंगीं ॥ जेसेंनरयन आंगीं ॥ विस्त्रोभिजये ॥ ८३ ॥ तेसांउपशमचिभगा ॥ जयाभिआत्रा
 पेगा ॥ जोयोस्त्राचिया आंगा ॥ निहिन्नाअसे ॥ ८४ ॥ अर्जुनाहावावरी ॥ जोमोहंभावमरोवरी ॥ तोहेताचोपेनतीरी ॥ निगोसरला
 ८५ ॥ कोभक्तिस्वरालागीं ॥ आपणपंचिदोहीसारीं ॥ वांटोभियाआगीं ॥ सेवकेंबाणे ॥ ८६ ॥ येरानामर्मतिवीं ॥ मगभजतिवोजब
 रवीं ॥ नभजतयादावीं ॥ योगियाजो ॥ ८७ ॥ तयाचे आह्वाव्यसन ॥ आमुंचेतो नज आन ॥ किंबहुनासमाधान ॥ तोमिळते ॥ ८८ ॥
 तयालागींभजराखेणें ॥ तयाचेभिमजगणेंअसणे ॥ नयानेणकीजेजिवंप्राणे ॥ तेसापटये ॥ ८९ ॥ स्त्रो ० ॥ योनतृष्यतिनंदुष्टि
 नशोच्चित्तनकांक्षति ॥ शस्त्राशमपरित्यागीभक्तिसान्यः समीप्रयः ॥ ९० ॥ टो ० ॥ जो आत्मन्याभासारिखें ॥ गोमटेकांहीचिनेद
 रेवे ॥ हाणोभिभोगविशरेवे ॥ हांरखुनजो ॥ ९१ ॥ आपणचिचिश्चुन जाहाला ॥ तस्मिदभावसहजचिगला ॥ ह्यणोनिदृषठला
 मयापुरुषा ॥ ९२ ॥ पंअपुलजसान् ॥ तेकल्यांतोहीनवचे ॥ हेजाणोनिरातचे ॥ नशोचीजो ॥ ९३ ॥ आणिजयापरोतेकाहीनाहां
 तेआपणचिआपुनादायी ॥ जाहालायालागींजोकाही ॥ आकांक्षीना ॥ ९४ ॥ वारवंदंकागोमटे ॥ हेकांहींचितयानुमटे ॥ रात्रिदे
 वसमयटे ॥ सूर्यामिजेवी ॥ ९५ ॥ रेसाबोधचिकेयळ ॥ जोहो दुर्नअसेनिकळ ॥ त्याहोवरीभजनशीळ ॥ माझावायी ॥ ९६ ॥ त
 रितयासंदुसर ॥ आह्वापदयतेसोयरे ॥ नाहोंगासाचोकारे ॥ तुझीआण ॥ ९७ ॥ स्त्रो ० समः शत्रोचभिभवेचतयामानापमान
 पाव ॥ ओ ८१ निवडला ॥ ओ ८० जेना ॥ ओ ९३ भाणचि ॥ किंवा आपुने ॥ ओ ९४ रातिदेवी ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

[illegible]

तैतीर्थनेस्त्र ॥ जगतीचिपवित्र ॥ मन्त्रिस्तु शेषमेव ॥ जया पुरुषा ॥ ३५ ॥ आह्मीजयाचेकरुआन ॥ तैआमुचेदेवतार्चन ॥ तैवाचू
 निआन ॥ गोमंतेनमन् ॥ ३६ ॥ तयाच आह्माव्यसन ॥ तैआमुचेभिधितिआन ॥ किंचहनासमाधान ॥ तैमिळतीति ॥ ३७ ॥ पेंत्रेमु
 काचीवाती ॥ जेअनुवादतीषादुसता ॥ तैमानुपरमदेवता ॥ आपुर्ला आह्मी ॥ ३८ ॥ तैसेनिजजानांनदे ॥ तैणेजगदादिकदे ॥
 बोलिलेमुकुंदे ॥ सजयोह्मणे ॥ ३९ ॥ रायाजोनिर्मळ ॥ निखलकलोकलपाक ॥ शरणागतास्नेहाक ॥ शरणयजो ॥ ४० ॥ पें
 मारसहायशीक ॥ लोकलालनलीक ॥ प्रणतप्रतिपाक ॥ रेवकजयाचा ॥ ४१ ॥ जोधर्मकीतिधवक ॥ अगाधदातसेसरू
 अनुकबेकंमबळ ॥ बळिवंधन ॥ ४२ ॥ जाभक्तजगवत्सक ॥ प्रमकजनयाजक ॥ सत्यसेतुसक ॥ कलानिधि ॥ ४३ ॥ तो
 श्रीहृष्णावेंकुंठीचा ॥ चक्रवर्तीनिजाचा ॥ सांगेयरूलेवाचा ॥ भाइकतअसे ॥ ४४ ॥ आतायावरी ॥ निरूपितीपरी ॥
 सजयह्मणेअवथारी ॥ धृतराष्ट्राते ॥ ४५ ॥ तैचिरसाककथा ॥ मक्कादियाप्रतिपया ॥ आणिलेआता ॥ अवधारिजो ४६
 ज्ञानदेवह्मणेतुही ॥ सतवाळगावीत आह्मी ॥ हंपदविनोस्वामी ॥ निवृत्तिदेवें ॥ ४७ ॥ ७ ॥ २४७ ॥ इति श्रीभावाच्यदी
 पिकायाज्ञानदेवविचितायाद्वादशाध्यायः समाप्तः ॥ १२ ॥ श्रीहृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शरंभंभवतु ॥ ७ ॥

पाठः ४६ पथा.

॥ इति श्रीभगवत्पद्मसूत्राचार्यविरचिते श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ॥ १८ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ आत्मरूपगणशक्तेऽन्यास्मरण ॥ हांयसकृद्विधांच अधिक्करण ॥ तंवदूचिक्करण ॥ श्रीगुरुत्वे ॥ १॥ जयाचेनिआठवे
 शब्दस्त्रीभागवे ॥ सारस्वतआयवे ॥ जिह्मसिंये ॥ २॥ वक्रुवगोडपणे ॥ अमुतातेपरुषह्मणे ॥ रसहोतीचोळगणे ॥ अस्तरांसी ॥ ३॥ प्रा
 वाचेअवतरण ॥ अवतरवितोरवुण ॥ हाताचंदसंपूर्ण ॥ तत्वप्रद ॥ ४॥ श्रीगुरुत्वेप्रय ॥ जेल्दयगिवस्त्रनिहाये ॥ तेंयेवदेप्राग्यहोये ॥ उ
 न्मेषासी ॥ ५॥ तेनमस्कारुनिआना ॥ जोडितामहाचापिना ॥ उस्मृयायेचापनो ॥ ऐसेह्मणे ॥ ६॥ स्मृ ० श्रीप्रागवानुवाच ॥ इदंश-
 रीरकौतयस्त्रेचमित्प्रिधीयते ॥ एतद्योवंचित्तमाहुः स्त्रज्जामितनहिदः ॥ १॥ टी ० तरोपार्थापरिसोजे ॥ देहहंस्त्रह्मणिजे ॥ हंजा
 णेनोबोलिजे ॥ स्त्रज्जएथे ॥ ७॥ स्मृ ० स्त्रज्जचापिमिदिस्त्रवसेत्रपुभारत ॥ स्त्रज्जस्त्रज्जयोजोनयनस्त्रानममम ॥ २॥ टीका
 तरिस्त्रज्जजोएथे ॥ नोमीचिजाणामरने ॥ जोसवंसंत्रांते ॥ सगोपोनिअसे ॥ ८॥ स्त्रज्जअणिस्त्रज्जज्ञते ॥ जाणणेजेंभिरुते ॥ ज्ञानगेमं
 नयाते ॥ मान्आली ॥ ९॥ स्मृ ० तस्त्रज्जचयादकयिदिकारियगअयव ॥ सचयोयत्वभावश्चतत्समासेनमेव्युण ॥ १॥ टी ० ता
 रिस्त्रज्जयेणोनावे ॥ हंशरीरजेणोभावे ॥ ह्मणितलेतेआयवे ॥ सांगोथाना ॥ १०॥ हंस्त्रज्जह्मणिजे ॥ केसेकेहउपजे ॥ कवणकवणीवा
 दविजे ॥ विकारोएथ ॥ ११॥ हंओदह्यातमोटके ॥ कोकवटंपाकेनुके ॥ वरजुकीपिके ॥ कोणाचेंहे ॥ १२॥ इत्यादिसर्व ॥ जेजेयाचेप्रा-
 च ॥ नेबोलतीसावेव ॥ अवधानदेद ॥ १३॥ पैयाचिस्थव्याकारण ॥ अतिसदांचोवण ॥ तंकंयेणोचिभिरुण ॥ तोडाळवल्ना ॥ १४॥ चाळि
 नोहेविबोली ॥ दर्शनेशेवता आल्हा ॥ नेवीचिनाहीबुद्धिबोली ॥ अस्मृतोदेंहे ॥ १५॥ शास्त्राचियेसांयारिके ॥ विचिळजेयेणेचिदुके ॥
 याचिभियएकके ॥ जगावाद ॥ १६॥ तोडेंसीतोडानपडे ॥ बोलाबोलेमिनघडे ॥ इयागुर्नाचिउबडे ॥ त्रायज्जहाल्हा ॥ १७॥ नेणेको
 णाचेंहेस्थव ॥ परिकेसेअभिलाषाचेंवळ ॥ जेयरोघरीकपाळ ॥ पितृवतअस ॥ १८॥ नास्मिकाद्यावयानोड ॥ वेदाचेंगाटेबंड ॥ वे
 देरवोनिपांड ॥ आनचिवाजे ॥ १९॥ एकह्मणतोविमूळ ॥ लटकेहंवेवाज्जळ ॥ नाह्मणतोनरीपोफळ ॥ यानलेआहे ॥ २०॥ पाषाडचियेकडे ॥
 पाठ ॥ ओ १ तेचि ॥ ओ १६ विवळिजे ॥ ओ १८ अभिमानचि ॥ ओ २० ह्मणतुली ॥ किना ॥ ह्मणताने ॥ योफळ ॥

गर्वांलुचितीमुं नियोजितोवित्तं तजामिमेतो २१ मृत्युमृच्छाचेनिमाणें हें जाईल वीणकाजें तें देवोनि याव्याजे निघाले योगी
२२ मृत्युमि आधाधिने निहीनिरंजनसे विलें यमनियमाचें केले सेळावेपुन २३ येणें चिसेत्राभिमाने राज्यस्यजिलेईशाने
गुंनिजाणानिस्मशानें वासकळ्या २४ ऐमियापें जायहें दा पांथुरणें दाहीदिशा लाचकरद्वणोमिकोळसा कामकळ्या २५
पैसत्यलोवनाथा तदने आलोबळाशा तर्गतोसर्वा जाणोचिना २६ श्रुतोः ऋषिभिर्बहुधागीतं छंदोभिर्विविधैः प्रथ-
क ब्रह्मसूत्रगैत्र्यैवहं गुमदिविभिश्चैतैः ६ हीं एकद्वणतीहें ल्यळ जीवाचें चिसमूळ मगमाणहें तुळ नयाचें एथ २७ ज-
यामाणाचें घरी अंगेरावतीमाउचारी आणि सनातेसाअवरी कळवाडीकसे २८ नयातेदोदिसवें लचिपेटो नह्याणे आवसीपाहा
दों विषयसेत्रां आदी कादोमली २९ मगविधीची वापचुकरवी आणि अन्यायबोजवाकवा कुकसांचाकरवी राबजरी ३० त-
नितयाचिसारितें असमाव्यपापपिकें मगजन्मकोटीदुःखें कोणीनीव ३१ नानरीविधीचिये वापें सत्रियाबीजआशेपे त-
रीजवकोटिमापें सरवचिसविजे ३२ तंव आणि कद्वणतीहें नई हें जिवानें चिनह्याणावें आसुतें पुसाआघवे क्षुत्राचें या ३३
अहोजीव एथउरिवा वस्ताकरवादेजाना आणि माणाहावलोना ह्याणोमिजारी ३४ अनदिजेमळति सारव्यजियेंतें गानो क्ष-
नहें ह्यनि नियेचिजाणा ३५ आणि नियेंतें चिआयवा आधीयरमेळवा ह्याणोनिनेवाहिवा घरीवाहें ३६ वाहवियाचियेरा
हदी जेकासुदलनियेइयसुदी तोंनयेचियापोदी जाहालेगुण ३७ रजोगुणपरी तेतुलें सत्वसोक्षी मगवेळेंतमकरी संवरणी
३८ रघूनिमहत्वाचें रवळें मळि एवें कालुगेनिपोळें तेथअव्यक्ताचोमिळें साजेमन्नी ३९ तंव एकींमनिमनीं याबोलाचिचारकें
ती ह्याणतलें यथाजसी अवर्चिना ४० हाहापरनत्वाआट केमळतीचीमान हास्येब्रह्मनात उगेचिआइका ४१ इत्यसे
जसाउलियें सलीनतेचियेतुळिये निदाकें लोहोनीबळिये संकल्येयणीं ४२ ती अवसानचेइला उद्यमीसदें वमला ह्याणोनि

तेवाजोडलां दुच्छावशो ४३ निगलंबीचींवाडी होतीअभिप्रवसायेवडी हंतयाचिअजोडी रूपाआली ४४ मगमहाभूतुंचेरकवाट
 मेरावेटाळुनिमीट भूतयामाचेआघाट चिनिनेचारी ४५ यावरीआदी पाचविण्याचींवांधी बांधलीअमेदी पांचभूतकी
 ४६ कुमाकुमाचेगुंटे बांधयानलेदोर्हांकटे नयुसकवरटे रानकेली ४७ तेथेरस्यारेलागी जन्ममृत्यूचींमरंगी सहा
 विलोभिलारी संकल्येणे ४८ मगअहंकारासिगकुलाधी करुभिर्जावितावधी वाहाविलेंअबुद्धी चराचर ४९ यथापरी-
 निराळी वाटेसंकल्याचींवाळी ह्यागोभितासुळी उपचायया ५० यथापरिमनयोगीकिंदी तेथपाडियाथिलेआणिकी ह्यण-
 नीहाहाविवेकी केसेतुह्नी ५१ परतल्याचियागावी संकन्यसजदेखावी तरिनांपानमनावी यहुतीनयाची ५२ परिअ-
 सोहेंनई तुह्नीयाननगावें आताचिहेंआयेवें सांगिजेन ५३ तरिआकाशीकवणें केलींमेयाचींभरणें अंतरिस्स-
 तारागणें धरीकवण ५४ गगनाच्चादवो कोणेंवाटिलाकंधवा एवनिहंततअसावा हेंकवणाचमत ५५ रोमाक-
 वणपेरी सिधूकवणामरि एजल्याचियाकरी धाराकवण ५६ तेंसेंसंयहेंस्वभावे हेवतीकवणाचीनई हेवाहेतयाफा-
 वे येरागुटे ५७ तेवआणिंकंएकें स्तोमैद्यणितलेंनिंतं तरिस्मोगिजंगक काळेंचोविहें ५८ तरियथाचामार देखता-
 निअनिवार तरिस्वमतिभर अस्मिमानिया ५९ हेंजाणंमृत्यूचाआगिता सिहाडयाचादरकुटा परिकायकीजेवाजटा पू-
 रिजतअसे ६० महाकल्यापरीती कवधान्निअवचितीं सन्दलाकप्रदजाती आंगीवाजे ६१ लोकपाळनित्यनवे दिंगजोचि
 मेळावे स्वर्गीचियेआडवे रिगोनिमोडी ६२ येरययाचनिअंगनातें जन्ममृत्यूचियेतें निर्जोविंहोऊनिभ्रममें जीवमृ-
 गें ६३ त्याहाळीपाकेकडा पसरलासेचवडा करुनियामासिवडा आकारगज ६४ ह्याणिंकाळाचीमत्ता हाचिबो-
 पाट. ओ. ४३ दुच्छेसर्वे. ओ. ५५ नडागा. ओ. ५९ परी. ओ. ६० गरीटा. ओ. ६१ दिंगज. छ. छ. छ. छ. छ. छ.

लभिरुत्ता॥ ऐसेवादापाहुम्ता॥ क्षेत्रात्वागो॥ ६५॥ हेबहुउरिखिवरी॥ ऋषीकिलेनौमिषी॥ पुराणेदयेविषी॥ मतपत्रिका॥ ६६॥ अनुष्टुबा
 रिछंद॥ मबधींजयेविषी॥ तेंपत्रावलबनमदे॥ करितीअस्मणी॥ ६७॥ वेदोंचेंब्रह्मामस्तत्र॥ जेंदेवणेपणेपवित्र॥ परितयाहीहें
 क्षेत्र॥ नेणवेचि॥ ६८॥ आणीकआणिकीहोबहुनो॥ महाकवीहेतुमेंतो॥ याज्ञगीमती॥ वेचिलिया॥ ६९॥ पारिऐसेहेंएवढे॥ अ-
 मुकयाचेचिपुढे॥ हेंकोणहाहीवरपडे॥ होयचिना॥ ७०॥ आनायावरिजेसे॥ क्षेत्रहेंअसे॥ तुजसांगौंसे॥ साद्यतगा॥ ७१॥ स्तो-
 महाभूतान्यहंकाराबुद्धिरव्यक्तमेवच॥ दीदियाणितयेंवंचपंचचेद्वियगोचराः॥ ५॥ इच्छादेषः स्मरंवदुःखसंघातश्चैतनाधुनिः॥ एन-
 त्संनसमासेनसविकारमुदाहृतं॥ ६॥ दी०० तस्मिन्महाभूतपंचक॥ अणिअहंकारएक॥ बुद्धिअव्यक्तदशक॥ दीदियाच्या॥ ७२॥
 मनआणीवहीएक॥ विषयाचादशक॥ द्वेषस्मरवदुःख॥ संघातइच्छा॥ ७३॥ आणितेननाधुनि॥ एवसेत्रव्यक्ति॥ सांगिलीतुज
 मति॥ आयवीचि॥ ७४॥ आनामहाभूतेंद्वरणे॥ कवणविषयकेसोकरणे॥ हेंवेगळालेपणे॥ एकैकसांगो॥ ७५॥ तस्मिन्महाभूतज
 ज॥ वायुव्योमदयेंतुज॥ सांगिलीबुद्धि॥ महाभूते॥ ७६॥ आणिजागनियदशे॥ स्वमलपलेंअसे॥ नानरीअवसे॥ चंदगुद॥
 ॥ ७७॥ नानाअपौदबालकी॥ तारुण्यराह्योर्वा॥ कानकुण्ठतांकिर्ति॥ आमोदजसा॥ ७८॥ किंबहुनाकार्वा॥ वद्विजेविकरीदी॥
 तेविमलतीचियापोदी॥ गायजोअसे॥ ७९॥ जंसाज्वरधातुगत॥ अपय्याचिंभियपाहता॥ मगजामियाआता॥ बाहेरीच्यापी॥ ८०॥ तेसो
 पाचहीगोरीपडे॥ जेंदेहाकारउघडे॥ तेनाचवीचहुंइडे॥ तोअहंकारगा॥ ८१॥ नवलअहंकाराचीगोदी॥ विशेषनलगेअज्ञानापादी॥
 ॥ ८२॥ नारीकंदपेजेनिबळे॥ दीदियवृत्तीचेनिमेळे॥ विस्मांडुनिचेनिपाळे॥ विषयाचे॥ ८३॥ तोस्मरवदुःखवाचानागोवा॥ जेयउगा-
 पाठ नाही॥ ८४॥

निरवच्छेदः ॥ तत्कृतकृत्यमिदं ॥ स्थाणो नर जातं वच्छ ॥ भस्मिन्नेतन् ॥ ८ ॥ नैव हि स्मिन्निहं यो ॥ अहं नराश्रया उपावरी ॥ गणेशाय माहासरे ॥ वरि-
 या वच्छे ॥ ९ ॥ नायाय नहनाय ॥ च हर्षो कृत्यनाश्रया वव ॥ जया च निमग्नो जीव ॥ दशवल्गु ॥ १० ॥ अममलं सिसृक ॥ कामाजया च वच्छ ॥ जे अरुण-
 मरुच्छ ॥ अहं कारसी ॥ ११ ॥ नैव च्छेदो वा दती ॥ आशान्तरदती ॥ जया शरीपुरवी ॥ प्रयाभिगा ॥ १२ ॥ दूतं नैथ उन्ध ॥ अविद्या जेण लावी ॥
 जे इदियां जेती ॥ विषया माजी ॥ १३ ॥ स कृत्यं सुस्मयती ॥ सर्वो निमग्नं गमाडी ॥ मनारथाचा उमरडी ॥ उत्तररची ॥ १४ ॥ जे मल्लिचि-
 कुहर ॥ बाधुन बाच अतर ॥ बुद्धिचंदार ॥ ज्ञानं विजये जण ॥ १५ ॥ तेंगां कलति मन ॥ याया जना हीं अम ॥ आना विषया प्रिथान ॥ मेद आद बे-
 ॥ १६ ॥ तरोत्परी आगि याद ॥ रूत रस गंध ॥ हा विषय पंच विध ॥ ज्ञानं दियाचा ॥ १७ ॥ दहं पांचे हारी ॥ ज्ञाना भयाववा हेरी ॥ जे साकां हि-
 रवि आचारी ॥ सो वा वपश ॥ १८ ॥ मरास्वर वर्ण विमग्न ॥ अथवा स्वीकार त्याग ॥ संक्रमणं आमद उत्सर्ग ॥ निष्कृत्वाचा ॥ १९ ॥ हे कृ-
 दियाचे पांच ॥ विषय गासाच ॥ जे वार्थो भियायाच ॥ क्रियाधावे ॥ २० ॥ गेसे हे दाही ॥ विषय गादये देही ॥ आना दच्छा ने ही ॥ सांगि-
 जेल ॥ २१ ॥ नीरमृतं आनये ॥ बोनु कान झारुवे ॥ र्ण भियावरी च नव ॥ जेगा वृत्ती ॥ २२ ॥ इदिय विषयां चिया सेदी ॥ सरसी च जे गा उठी-
 कामाची वाहती ॥ धरू निया ॥ २३ ॥ जियेचे भिड ठिड पण ॥ मना संधावण ॥ नरया नैथ करण ॥ नोडरुती ॥ २४ ॥ जिये वृत्ती चिया
 आवडी ॥ बुद्धि होय वडी ॥ विषयां जिया गोडी ॥ नेगा दच्छा ॥ २५ ॥ अणि दच्छि लिया सांगड ॥ इदियां आपिष न जोडे ॥ नैथ जे उजो-
 साडावपडे ॥ तो चिदेष ॥ २६ ॥ आता यावरी सरस ॥ तेंगां विध दरु ॥ जेणां कृति अशेष ॥ विमर जीव ॥ २७ ॥ मना वाचे काये ॥ जे आपु-
 ला आपण वाहे ॥ देह स्थूनी चियाय ॥ मोडी नये जे ॥ २८ ॥ जयाचि भिजोले पण ॥ पांगुळा होइ जे माणे ॥ सात्विका सीं हुणे ॥ वरिही ला-
 म ॥ २९ ॥ कां आया विषया चि इदिय वृत्ती ॥ न्दिया चिया एकांती ॥ यापदू निमग्न बुनी ॥ अणि जे गा ॥ ३० ॥ किब हुना सोया ॥ जीक आप्तया चि-
 पाव ॥ ओं १० मरुती सख ओं १४ कृत्यं ओं २२ न भानवे ओं २३ वेगं

गौलागेजीवा तेथ्योहीसींवरवा पाडुजेथरी ८५. हेकरवहेदुःख हंपुण्यहेदोष हेमळहेचोरख ऐसेंनिवाडजे ८६ जियेथय-
 मोचमरुझे जियेसानेथोरुसे जियादिदीपारखिजे विधीजीवे ८७ जेतेंजनत्वाचीआदी जेतलपुणाचीबुद्धी जेतल्या
 जीवाचीसंधी वसवीतअसे ८८ अजुंनानेगजाण बुद्धितुंमपूगी आतांआईकवोळरवण अव्यक्ताचें ८९ पेंसारव्याचिया-
 भिड्ढांनीं प्रहृतीजेमहामता तेचिथ्येप्रसूती अव्यक्ता ९० आणिसारव्ययोगमते प्रहृतीपरिसविलीतुने ऐसींदोहोपरी
 जेथे विचिंत्ती ९१ तेथहुजुजेजीवदशा नियेनावधीरशा अव्यक्तापर्येसा पर्यायहा ९२ तरीप्रहालियारजनी ताराखोप
 नीगगनीं कांहापेअस्तमाना भूतक्रिया ९३ नानरीदेहगोलियागवीं देहादिककिरीटी उपाधिलपेपोटीं हतकर्मका ९४
 कांबीजमुदेआतु थोकेतरुसमस्त कांवरुप्रणतनु दशराहे ९५ तेसेंमांडुनियांस्थूळधर्म महाभूतेभूतग्राम लयाजानी
 सूक्ष्म होऊनिजेथ ९६ अजुंनानेगनाव अव्यक्तहेजाणावे. आतांआईकआधवे इंद्रियसेद ९७ तरीअवणानयन त्वचा-
 माणरसन इयेंजाणज्ञान करणंपांचे ९८ इयेंतलमखांपकीं सरवहुःखाचीउगिवरवी बुद्धिकरितेखवीं पांचेंदहो ९९ मन-
 गावाचाअणिकर चरणआणिअथोदार पायुंहेप्रकार पांचआणिक १०० कर्मेइयेंह्यापिपती नियेंइयेंजाणिजनी आइकेंके
 बल्यपनी सांगतसे १ पेंसाणाचीअनेरी क्रियाक्षिकिजेथरीरी नियेचीभिगिनिद्वारा पांचेंदहो २ एवंदाहाहीकरणें सांगी-
 तलींदेवह्याणें परिसआनापुदेपण मजुतेऐसें ३ जेंइदियांआणिबुद्धी साझारिनियेसंधी रजोगुणाचारवादी तरळतअसे ४
 नीळिमाअबरी कांभुगटण्यातुहरी तेसेवायांचिकारी वावोजाहलें ५ आणिशक्रशोणितनाचासांथा भिळनांपांचांचाबोधा
 वायुतलवदशाया एकचिजाहलें ६ मगनेहीदाहोभागीं देहधर्मचारवैवांगीं अधिष्ठलेंआंगीं आपुलाला ७ तेथचाचल्या
 पाठःओ ५ तेसा ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

लाह ॥ तेथ जें होय ॥ नयानाम सरव ॥ ३१ ॥ आणि ऐसी हे अवस्था ॥ न जोडतां पायी ॥ जी जें ते चि सरवया ॥ दुःख जाण ॥ ३२ ॥ हे मनोरथ-
 मंगेन होये ॥ येरधीनें भिदिगेले चि आहं ॥ हंदां ने चि उपाय ॥ सरव दुःखासी ॥ ३३ ॥ आतां असंगा सासि भूता ॥ देही चें तन्याची असना
 तियेना मपों दुसृता ॥ चेतना एथ ॥ ३४ ॥ जे न रवो नि केशवरी ॥ उभी जागे शरीरी ॥ जे तिहीं अवस्थां तरी ॥ पालदेना ॥ ३५ ॥ मन तु ह्या
 दि आधी ॥ जिएचें न दवढी ॥ मळती वन साधवा ॥ सदां चिजे ॥ ३६ ॥ जडा जडीं अशां ॥ राहा देजे सरि सी ॥ तेचें तना गा तुज सी ॥ लाह
 के नाहीं ॥ ३७ ॥ पैरांचो परि वारणें ॥ आज्ञा चि पर चक्र जिणें ॥ कांचंदाचें निपूण पणें ॥ सिंधु भरती ॥ ३८ ॥ नातरी भ्याम फाचे निमिन्निधा
 न ॥ लोहो करी सचेतन ॥ कांस्तूर्य संग जन ॥ चेंदवीगा ॥ ३९ ॥ अगामुख येळें विण ॥ पनियाचें पोषण ॥ करी नरी स्तूपा ॥ कूर्म जिर्वी ४०
 पार्थिता पारी ॥ आत्म संगती दये शरीरां ॥ सजीवत्वाचारी ॥ उपायोग जडा ॥ ४१ ॥ मग तियें तेचें तना ॥ ह्याणि पेंपें अर्जुना ॥ आनां रती
 विवचना ॥ भेद आदक ॥ ४२ ॥ तरित्वां परस्परें ॥ उघड जाती स्वभावे वर ॥ नोहें दृष्टी ते नरी ॥ न नां दिजे ॥ ४३ ॥ नीरा नें आदी तेज ॥ ते-
 जावायू सोझें ॥ आणि ते सहज ॥ वायु सिंभस्ती ॥ ४४ ॥ तेवीं नि कोण ही वेळे ॥ आपण काय सयाही न मिळे ॥ आनारि यो नि वेगळे ॥
 आकाश हें ॥ ४५ ॥ ऐसीं हीं पांच हीं भूतें ॥ न साहती गक संक्रांतें ॥ कीं तियें हीं ऐक्यांतें ॥ देहा येती ॥ ४६ ॥ दहाची उरि वरवी ॥ सांडुनि
 वसती गर्बी ॥ गक्रमे कां ते पोरी ॥ निज गुणंगा ॥ ४७ ॥ आणि गं संमिळे न या सांजणें ॥ चोळ येथे जेणें ॥ तियेना मगो ह्याणें ॥ दुती पेंगा ॥
 ४८ ॥ आणि जीं वीं पांडवा ॥ या छानि सांचां मेळावा ॥ तो हां गथ जाणावा ॥ संयानें पैगा ॥ ४९ ॥ एव छती सही भेद ॥ सांगी न ले तुज
 विशद ॥ ययाचे तुले या ने भि सिद्ध ॥ संच ह्या निजे ॥ ५० ॥ रथांगांचा मेळावा ॥ जे वीर थ ह्या निजे पांडवा ॥ कां अधोर्ध्व आवेवा ॥ नाम दे
 ह ॥ ५१ ॥ करी गुरगस माजे ॥ सैनानां निपजे ॥ कां वाक्य ह्या निपती पुजे ॥ अस्तरांचें ॥ ५२ ॥ कां जळयूं रांचा मेळा ॥ वाच्य होय आ-
 पाव ॥ ओं ॥ ३९ ग्रामा ॥ ओं ॥ ४७ सांडुनि ॥ ओं ॥ ४८ चरु ॥ ओं ॥ ५० नल भेद ॥ ओं ॥ ५१

प्राप्ता ॥ नानानां कोसकृष्णं ॥ नामजगः ॥ ५२ ॥ नांस्तु हस्तमवह्नी ॥ मंत्राण्यस्यस्थानी ॥ शरीरं जनीजनी ॥ दीपहाय ॥ ५६ ॥ तैमोच्छिता-
 महीदयेतत् ॥ भिन्नो जेणैकत्वं ॥ नेणं सप्तहपरत्वं ॥ क्षत्रह्यणिजे ॥ ५७ ॥ आणिवाने निमोत्तुक् ॥ पुण्यपापएथपिक् ॥ ह्यणो
 निआहोकोत्तुक् ॥ क्षत्रह्यणो ॥ ५८ ॥ आणिककाचं निमने ॥ देहह्यणनीययानं ॥ परिअसाहं अनंतं ॥ नासेयया ॥ ५९ ॥ पैपरत्वं
 क्षणेन ॥ स्थावरनीअनेन ॥ जंकाहीहांते जने ॥ नंस्वेचिहं ॥ ६० ॥ परिस्सरमरउरगी ॥ यडतआहं योनिविभागी ॥ नेगुणक्रमंसे-
 गी ॥ पंडितेसांने ॥ ५९ ॥ होचिगुणविवचना ॥ पुनाह्यणिपल अजुसा ॥ मस्तुगुजज्ञाना ॥ रूपदावू ॥ ६१ ॥ क्षत्रं तं वसविस्तर ॥ संगीत-
 तं सविस्तर ॥ ह्यणो निआनाउदार ॥ ज्ञानआदकं ॥ ६२ ॥ जयाज्ञानायागं ॥ रागनिगिच्छितानियोगी ॥ स्वर्गाचीआडवंगी ॥ उमरडोनी ६३
 नयरीरिफदीचीभीड ॥ नकारिहीमिह्नीचिनाड ॥ योगाणंसे दुवान ॥ हकसिती ॥ ६३ ॥ तपोदुर्गेवोनाडित ॥ कवुकोदिवोवाडित ॥ उल्ल-
 वृत्तिमाडित ॥ क्रमवल्ली ॥ ६४ ॥ नाचामजनमारी ॥ धावनउद्यदियाओगी ॥ एकरियनानिस्तरंगी ॥ सप्तुस्तेचिये ॥ ६५ ॥ ऐसीजयेसा-
 नी ॥ सुनीरवरचीउगाही ॥ वेदतरुच्यायानोवानी ॥ हिडताती ॥ ६६ ॥ दुडउरुस्तरंगी ॥ इयावहीपाडवा ॥ जन्मशानाचासाडोवा ॥ दांक-
 नजे ॥ ६७ ॥ जयाज्ञानाचीरगवणी ॥ अविद्येउणेंआणी ॥ जीवात्मायागुझावणी ॥ यांझनिदे ॥ ६८ ॥ जेंइदियाचींझारेंआडी ॥ मस्तनीचिपा-
 यमोडी ॥ जेंदेत्यचिफेडी ॥ मानसाचं ॥ ६९ ॥ देताचाहुकाळगाहे ॥ साम्याचं सत्याणं होय ॥ जयाज्ञानाचीसाये ॥ ऐसेंकरा ॥ ७० ॥ मदा-
 चातावोचिपुसी ॥ जेंमहासोहातेयासी ॥ मेदीआपपरंसी ॥ भाषउरो ॥ ७१ ॥ जेंसंसारानेंउच्छेदी ॥ सत्कल्पपंकमसावी ॥ अनवसा-
 नेंवेदाळी ॥ नैयानें ॥ ७२ ॥ जयाचं निज्यालेपणें पांयूळहोइजेणें ॥ जयाचं निविदाणें ॥ जगहेचें ॥ ७३ ॥ जयाचें निउजाळे ॥
 उयडतीबुद्धीचेडोळे ॥ जीवदोदाक्षीलोळे ॥ आनंदाचिये ॥ ७४ ॥ ऐसें ज्ञान ॥ पवित्रेकनिधान ॥ जैथविदाळलेमन ॥ चोरवकीजे ७५
 पात-आ ६० आतां ओ ६६ उयासी ७

आत्मयान्तिबुद्धिः ॥ जेनागन्तीहोतीसयव्याधी ॥ नेजयाचियासन्धि ॥ निरुजाकीजे ॥ ७६ ॥ नेअनिरुव्यर्कनिरुपिजे ॥ ऐकनाबुद्धिआ
णिजे ॥ वाचूनिडोळादेखिजे ॥ ऐसेनाही ॥ ७७ ॥ सगतांचिदयशरीर ॥ जेआपुनामसांवोकरो ॥ तेइदियाचियाव्यापारी ॥ हृष्टाहिद-
से ॥ ७८ ॥ पंचसनाचेंरिगवणें ॥ झालांचेनिसाजपणे ॥ जाणिजेनेवकरणें ॥ सागतीजान ७९ अगाव्हासासिपनाळीं ॥ जळसापडेमुखी
तेशारवाचियेबाहाळी ॥ वीरहीदिस ॥ ८० ॥ कुंभमूर्तिंसादव ॥ सांगकोंभाचेंतुलव ॥ नानाआचारगौरव ॥ सकुलीनाचें ॥ ८१ ॥ अथ
वासफ्यमाचिया आयतो ॥ सहजेसायव्यचरी ॥ कादशनाचियेमरास्ती ॥ पुण्यपुरुष ॥ ८२ ॥ नानरीकेळीकापूरजाहाला ॥ जेवंपरिम
ळेंजाणोंआंढा ॥ कांभिंगरीदोपनेवला ॥ बाहिरफाट् ॥ ८३ ॥ नैसन्दरीचेंनिजानें ॥ जियेदेहीउमदतीविद्धें ॥ नित्येंसांगोंआनाअव
धानें ॥ चारोंआदक ॥ ८४ ॥ भूमीअमानित्यमदमिलसाहिसादोहिराजव ॥ आचार्योपासनेरीचस्थैर्यमात्मविभूतहः ॥ ८५ ॥ दी० तरा
कवणेंहीविषयीचें ॥ जिवासाव्यहोणेंनरुचे ॥ समावितपणाचें ॥ बोझया ॥ ८५ ॥ आशितेचिरुणवांनिता ॥ मान्यपणेंमानिता ॥
योगनेचेंयनां ॥ आगारूप ॥ ८६ ॥ नेंगजवजालागेहेंसा ॥ व्याघ्रेरुथलाभृगजेसा ॥ कांवाहीनरनांवळसा ॥ दातळाजेवी ॥ ८७ ॥
पार्थानेणेंपाडें ॥ सचानेजोसावुद ॥ गारमेनेआगाकडे ॥ देवोंचिनेही ॥ ८८ ॥ पुज्यतांळाळानंदरावी ॥ स्वकीर्तिकर्तानायाकवी ॥ हा
अमुकएसीनाहावी ॥ सेचिनीको ॥ ८९ ॥ तेथरात्कारावीकोगादी ॥ नेंआदरादेंनभेदी ॥ मरणेंसीसाटी ॥ नमस्कारिता ॥ ९० ॥ वा-
चस्पतीचेंभिपाडें ॥ संवसनातीजोडे ॥ परिवर्जिवेमाजिदडे ॥ महिमेपणें ॥ ९१ ॥ चानुयलपवी ॥ माहलहारवी ॥ पिसंपणभिरवी ॥
आवडीनी ॥ ९२ ॥ नौकिकाचाउदेग ॥ शास्त्रावरीरुवग ॥ उरणेंपांग ॥ आर्याभर ॥ ९३ ॥ जणेंअवज्ञाचिकरावी ॥ संबेधेंसायनय
रावी ॥ ऐसीऐसीजीवीं ॥ जाडबहु ॥ ९४ ॥ नैलवटपणबाणें ॥ आगींहणावोखेवणें ॥ नेंनेविकरणें ॥ बहुनकरुनी ॥ ९५ ॥ हाजीवि
पाठ- ओं- ८० बाहरी- ओं- ९० आदरें- ओं- ९५ तळवटेपण- ओं-

ननानोहे ॥ लोककल्याणयोगेभावे ॥ नैसर्गिणोहोभावे ॥ ऐसीआशा ॥ ९६ ॥ पैलवान्नकोनोहे ॥ कीवारेनिजातआहे ॥ जनऐसाश्रम-
जाये ॥ नैसर्गिणोहे ॥ ९७ ॥ माझे असतेपणलोपो ॥ नामरूपहारपो ॥ मजज्ञेणेशिमिपो ॥ भूतजात ॥ ९८ ॥ ऐसीजयाचीनवसिमे ॥
जोभित्यारकाताजातआहे ॥ नामरूपजोजिचे ॥ विजनाचनी ॥ ९९ ॥ वायु भाणितयापडे ॥ गगनसीबोलोआवडे ॥ जीवयाणेंझडे ॥
पावइहोमिषी ॥ २०० ॥ किबहुनाऐसोत्सी ॥ चिद्रेजयादेरसी ॥ जाणनयाज्ञानेसी ॥ शंजजाहाली ॥ १ ॥ पैउमामित्वपुरुषी ॥ नेजा
से ॥ रौबलावापो ॥ ३ ॥ तयापराकिरीटी ॥ पडिसहोमाणसकटी ॥ परिस्फुटतनाप्रकटी ॥ आगेबाले ॥ ४ ॥ रकडाणेआलापादो ॥
पळवीजेविअजुना ॥ कातपवीपणयागना ॥ वडिदपण ॥ ५ ॥ आद्व्यआवडेअडवी ॥ मगआद्व्यवाजेविहारवी ॥ नामरौकुळ-
वधूलपवी ॥ अवयवांते ॥ ६ ॥ नागादुर्षविष्टआपुन ॥ पायुरवीपेरिते ॥ नैसर्गिकीमिपजले ॥ दानपुण्य ॥ ७ ॥ वारिवरीदेहनपूजी
लाकातेनरजी ॥ स्वयमचार्यजो ॥ ज्ञाणेनपो ॥ ८ ॥ परोपकारनबोले ॥ नामरवीअप्यासिले ॥ नशकीवकुंजोडले ॥ स्कीनीसावी ९
शरीरमोगाकडे ॥ पाहातासुपणआवडे ॥ येरुवींचेमिषीयोडे ॥ नहूनह्यणे ॥ १० ॥ यरादिसोसाकड ॥ देहोचिआयनीरोड ॥ परिदा-
नीजयाहोड ॥ मरनरसी ॥ ११ ॥ किबहुनास्वयमीयार ॥ अगसरुतरार ॥ आत्मनर्वचुर ॥ येरुवीवेडा ॥ १२ ॥ केळीचिदळवाडे ॥ हळु
पोकळआवडे ॥ परिस्फुटोनिगाडे ॥ रसाळजेसे ॥ १३ ॥ कामयाचिओगझेलि ॥ दिसवारीनजेसोडल ॥ परिवर्षतीनवल ॥ घणवटते
॥ १४ ॥ नैसर्गोपणपणी ॥ पाहताथानीआयणी ॥ येरुवीनरवाणी ॥ नोचिवाय ॥ १५ ॥ हेअसोयाचिझाचा ॥ नदनाचगाइजयाच्या ॥
जाणज्ञानमयाच्या ॥ हाताचदले ॥ १६ ॥ पैंगाअदमपण ॥ ह्यणिनहंजाण ॥ आनाआदंकरवुणा ॥ अहिंसेची ॥ १७ ॥ नरिअहिंसाबहु
पात ॥ ओ-४ बोला ॥

नोपरा ॥ बोलिन्दीधसे अयधारे ॥ आपणान्तरागनांनरी ॥ निरुगिनी ॥ १८ ॥ गां रतेस्तेदेरना ॥ जेशारवाडुनियाशारवा ॥ मगतयाचियाबु
 दुरगा ॥ कूपकीजे ॥ १८ ॥ कानाहनाडोमपचिजे ॥ मगमसुके विधादशिवजे ॥ मानदेउळमोडनिकजे ॥ पौळदेवा ॥ २० ॥ तेसीहि-
 साचिकरुनिअहिंसा ॥ निपनविजेदोसो ॥ येइवसोपसासा ॥ निणयकेना ॥ २१ ॥ जेअवृष्टीचिनिउपद्रवे ॥ गादुलेविश्वआयवे ॥ ह
 पोनिपजनेटीकरावे ॥ नोनायागा ॥ २२ ॥ तवतियदस्तेचियाबुडो ॥ पशहिंसातबरोकडी ॥ मगअहिंसेचीयडी ॥ केचोदसे ॥ २३ ॥ पोश
 जेनुसधाहिंसा ॥ तेउगवेनकायअहिंसा ॥ रजिगदलकायविदम ॥ अयाचिकान्ता ॥ २४ ॥ आणिआयुवदआयवा ॥ नोयाचमोहरा
 पाडवा ॥ जोजीवाकारणेकरा ॥ जौचयल ॥ २५ ॥ गारासगे आदाटली ॥ जोळतोहतेदेगिनी ॥ नोहिंसानिवारावयाकेली ॥ चिकि-
 त्सापे ॥ २६ ॥ तवनेचिकित्सपेहिने ॥ गवाचनकरयागिनि ॥ आणारहाउपदिबिने ॥ समुद्रोसपजो ॥ २७ ॥ गकेआडमोडविनी ॥ अ
 जंगसाचीरवालीकाहाडविनी ॥ गकेगार्मिणीउकडविनी ॥ गुदामासो ॥ २८ ॥ अमानयानुरुवरा ॥ सर्वोगतंविधिवल्याशिरा ॥ ऐसेजीवि
 येऊनियसुधरा ॥ कोरुदेकेले ॥ २९ ॥ आणिजंगमाहीहात ॥ आऊनिकर्तुनोपत्त ॥ मगरारिवन्शिणन ॥ आणिऊजीव ॥ अहोवसंतोदव
 कोरे ॥ मोडनिकेदीदेहारे ॥ नागऊनिवेहारे ॥ गवादीयातने ॥ ३१ ॥ मस्तकपायुगवेने ॥ तवतळवरीउयदेपडिले ॥ घरमोडनिकेले ॥ मोडवपु
 टे ॥ ३२ ॥ नानापायुरणे ॥ जाळुमिजसेनापणे ॥ कांजालेआंगुणे ॥ कुंजराजे ॥ ३३ ॥ नातरीबेलविक्कुनिगोला ॥ सुसनावोनिबाधिजे
 गावा ॥ दयाकारणकींचेश ॥ कादहंसो ॥ ३४ ॥ एकांधमाचियावाहणी ॥ गाळआदरपेपाणी ॥ नवगादितया ॥ आहाळणी ॥ जीव
 मेले ॥ ३५ ॥ गकनपचर्तचिकण ॥ दयाहिंसचेसेणे ॥ नेथकदथनेसाण ॥ तेचिहिंसा ॥ ३६ ॥ गंवहिंसाचिकरुनिअहिंसा ॥ क्रमकां-
 डोनिणयेसा ॥ सिद्धातसमनसा ॥ वोळसेने ॥ ३७ ॥ पहिं ॥ अहिंसचेनाव ॥ आन्याकनेजव ॥ तंवस्फुतिवाधलीहाव ॥ दयमर्ता ॥ ३८
 पाठ ॥ ओं २० विरिजे ॥ ओं २१ मानगेसा ॥ ओं २२ पाहिने ॥ ओं २३ ॥ ओं २४ ॥ ओं २५ ॥ ओं २६ ॥ ओं २७ ॥ ओं २८ ॥ ओं २९ ॥ ओं ३० ॥

अतिक्रमः॥६०॥ ऐसी जयार्चना हो ॥ हृषीकेश फळाभासी ॥ देवकी निज्यासी ॥ दयावाचे ॥ ६१ ॥ स्वयंभुवर्ग निरुद्ध कुमार ॥ सुखमोहाचे माहेर
 माधुर्या जाहाले अक्रूर ॥ दशमनेस ॥ ६२ ॥ सुदोस्त हृषीकेश ॥ माया नानुनी भस्मरे ॥ शब्दशब्द अंगवरी ॥ हृषीकेश ॥ ६३ ॥ तव चो लण जिनाही
 बोले ह्यणे जरी काही ॥ तिरबोल काणाही ॥ रघु रेवका ॥ ६४ ॥ बोलतो अर्थि वृद्धी नये ॥ तिरहो गादि या वस निवृत्ती ॥ आणि कोणा सिन रये ॥ शं
 कामनी ॥ ६५ ॥ मोडली गोवी हन मोटे ल ॥ वासिपे नवणे उदे ल ॥ आदका निवांनी उल ॥ कोण ही जरी ॥ ६६ ॥ तिरह्या की कोणा नोहीवी ॥ मं
 वंदक वणची वचलावी ॥ ऐसा मावजनी ॥ ह्यणे निया ॥ ६७ ॥ मग माथि लावि गये ॥ जोर नो मंदां लजाचे ॥ तिरपरि सत्या होये ॥ माय बाप
 ॥ ६८ ॥ काना द्रव्य चि मुसं आले ॥ कोणा पय आस छले ॥ पतिवने आले ॥ वाधे क्य नेसं ॥ ६९ ॥ तें सें साज आणि सावळ ॥ मतले आणि र
 साळ ॥ शब्द जे सें कलौळ ॥ अमृताचे ॥ ७० ॥ विरोध वाद वद्ध ॥ पाणनाप दाळ ॥ उपहास छद्ध ॥ नमस्पर ॥ ७१ ॥ आत वेग वंदण ॥
 आशा शका पनारण ॥ हे सन्यासने अवगुण ॥ जयावाचा ॥ ७२ ॥ आणि तया चि परा किरीट ॥ थाजया दिदी ॥ सांडिल्या मुकु
 टी ॥ मोड्डिया ॥ ७३ ॥ कोजे मूर्ति वस्तु आहे ॥ तिये रूपां शंका दिपायें ॥ ह्यणे निवास न पाहे ॥ बहु तक्रु नि ॥ ७४ ॥ ऐसा ही कोणार
 केवळे ॥ भितर ले छपे चि बळे ॥ उय ले नि लेळे ॥ हरीयाली ॥ ७५ ॥ तिरचंद्रा वेदो न थारा ॥ निघता वृत्ती गोचरा ॥ परिण कसरे च
 कोरा ॥ निघती दोद ॥ ७६ ॥ तें सें माणिया होय ॥ जरी नो वास पाहे ॥ तथा अवला कनाची सोये ॥ झुमी ही नणे ॥ ७७ ॥ किबहु न ऐसी
 दिरी जयची मृतांसी ॥ करही देर वसी ॥ तें सोचि ते ॥ ७८ ॥ तिरहो उगिया हतार्थ ॥ राहिले मंदांचे मनोरथ ॥ तें से बयाचे हात ॥ नि
 व्यापार ॥ ७९ ॥ असम आणि सन्यास ले ॥ कानि रयन आणि विज्ञाले ॥ मुक्ती भय नले ॥ मोन जे सें ॥ ८० ॥ तथा परी कांही ॥ जया क
 रा करणे नाही ॥ जे अक्रत याचा बायी ॥ वसोये ती ॥ ८१ ॥ आस लेल वारा ॥ नर वन नाग ल भंवरा ॥ दया वृद्धी करा ॥ चळोने दी ८२
 मर ॥ ओ ६२ अंतरे ॥ ओ ६३ उपा ॥ ओ ६४ दया व्यक्त ॥ ओ ६५ उपरीय ॥ किंवा ॥ उगोथ पाप ॥ ओ ६६ असम ॥ ओ ६७

नैथ आंगारो रल्लउडवावीं ॥ कांजोळारिगने झाडाणीं ॥ पशुपण्यांदावावीं ॥ नासमुद्रा ॥ ८३ ॥ इयाक्रेउतियागोवि ॥ नावडेदंडकावीं ॥
 मगशास्त्राचिकिरीती ॥ बोलणेंके ॥ ८४ ॥ लोळाकमळेगळणें ॥ कापुष्याळाझेलणें ॥ नकरोह्यणगोफणें ॥ गेसोहोदल ॥ ८५ ॥
 हाजवनीलरीमावळी ॥ यालागीं आंगन हूरवाळी ॥ नरवाचोरुं लाळी ॥ बोटावरी ॥ ८६ ॥ तंवकरणें याचाचि अस्माव ॥ परिगसाही
 पडेडोवी ॥ नरिहातां होचिसराव ॥ जे जोडिजती ॥ ८७ ॥ कामीं भिकारां उचि लजे ॥ हात पडिल्यां देइजे ॥ नालरि आर्तातें स्पर्शज
 अळुमाळ ॥ ८८ ॥ हेही उपरांध करण ॥ तरो आर्तामय हरणें ॥ चणनोचि द्वाकिरणें ॥ जिझाळालो ॥ ८९ ॥ घातोनितो स्पर्श ॥ मळयाभि-
 छरसरपुस्त ॥ येणें मान पश ॥ कुरवाळण ॥ ९० ॥ जेस दोचि नमो कळ ॥ जेसोचि दनारें शीतळे ॥ नफळतां हीं निपळे ॥ होतीं निना ९१
 आतां असो हे शाजळ ॥ जाणत करतळ ॥ सज्जनांचे शीळ ॥ स्वप्नाव जेसे ॥ ९२ ॥ आतां मनयाचे ॥ सांगो ह्यणां सांचे ॥ नरि सांगी
 नले कोणाचे ॥ विलासहे ॥ ९३ ॥ काइ शारवान देनरु ॥ जळेवीण असे सागरु ॥ तेज आणिते जाकारु ॥ आनकाई ॥ ९४ ॥ अवय
 व आणि शरीर ॥ हे वेगळाले कायवीर ॥ कोरस धाणि नर ॥ शिनानीं आथी ॥ ९५ ॥ ह्यणां निहे जे सर्व ॥ सांगीतले बात्य भाव ॥ तेस
 नीच सावयव ॥ ऐस जाण ॥ ९६ ॥ जे मुई बीज रों विने ॥ तेचि वरी सरत जाहावे ॥ तेसं देइ द्यद्वारा फांकले ॥ ते अनरचि वी ॥ ९७ ॥
 पैमान सोचि जरी ॥ अहंसेची अनवसरी ॥ नरि केचि बाहेरी ॥ वासं देव ॥ ९८ ॥ आवडे ते वृत्ती करीदी ॥ आधीं मनोनीं चिदी ॥ मग ते-
 वचे हिदी ॥ कुरां सये ॥ ९९ ॥ यांच्छां मनोचि नाही ॥ तंवाचे सीउ मदे लकाई ॥ नीजे वीण मुई ॥ अकुर असे ॥ १०० ॥ ह्यणो निमनप
 ण जे मांडे ॥ ते इंदिया आधीं चिउ वडे ॥ स्तुत्रधार धीण साइरणडे ॥ वावो जेसे ॥ १०१ ॥ उगमीं निवाळ निजारी ॥ तंवा धोकेच वाहे ॥ जी-
 वो गेलियां आहे ॥ चेष्टा देही ॥ १०२ ॥ तेसं हे पाडया ॥ मुखया सांगा ॥ हें चिराहटे आयदा ॥ द्वागं देही ॥ १०३ ॥ परिजिये वेळ जेसे ॥ जे

पाठ-ओ-२३ वास्ती-ओ-८७ प्रस्तावो-क्रिया-गवो-ओ-९१ रिने-ओ-९५ ज-७

होऊनि आंगे भसे ॥ वाहे रिये ते सें ॥ व्यापार रुने ॥ ५॥ या न्यागो सा चो करे ॥ मनी अहि सा या ने थारे ॥ जे सो पि कुळे दवो आदरे ॥ बोसा न निये
 ॥ ५॥ ह्यणो निद्रा दियने चसपदा ॥ वेनिता हो उय उवादा ॥ ने अहि सचावदा ॥ करि ते आह्ला ॥ ६॥ ससुदी दाद मारि ते ॥ ने ससुद चि प्ररीत-
 या ने ॥ ने ससुस गनि चिने ॥ इद्रिया के ले ॥ ७॥ हे वहु असो पंडित ॥ धरु नि बाळाचा हात ॥ बोनि र्छा हो मय्यक्त ॥ आपण चि ॥ ८॥ ने सेंद
 या तुल आपुले ॥ मन हात पायां आणिले ॥ मराने थउप जंगले ॥ अहि सने ॥ ९॥ या करणो करि ना ॥ इद्रियां चिया गोरो ॥ मना चिये चिरा-
 हावीं ॥ रूप के ले ॥ १०॥ ने सा मन दहवाचा ॥ मन सन्यास दंडाचा ॥ जो हा लावा योज याचा ॥ दंसु शोना ॥ ११॥ तो जाण वे ल्हाब ॥ ज्ञाना चें वे
 व्याउळ ॥ हे असो निखळ ॥ ज्ञान चि तो ॥ १२॥ जे अहि सा का न गे निजे ॥ यथाचार निरुपिजे ॥ ने पाहा न गे ॥ ने उपजे ॥ ने तो चिया हावा १३
 ने सें ह्यणि न लें देव ॥ ने बोनि गे क सा गावे ॥ परफाव जे हे उपसा हावे ॥ नुझी मज ॥ १४॥ ह्यणान्द हि प वा चारी गुरू ॥ विसरे भागी ल मोह-
 धरु ॥ का वारे न गे पारि वरु ॥ गगनां भरे ॥ १५॥ तो सिया म मा नि या स्फुर्ती ॥ भावि न्दियार सहते ॥ वाहा वला मतो ॥ आकळे ना ॥ १६॥ त
 रिने सें नो हे अवधारा ॥ कारण असो विस्तारा ॥ ये द्रवी पद तरां अदरा ॥ न हांचे चि ॥ १७॥ अहि सा हाण तो थोडी ॥ परि ते विहे होय उय
 डी ॥ जै लो दी जती कोडी ॥ मतां चिया ॥ १८॥ ये द्रवी पासं मता नरे ॥ आत नूनि आग मरे ॥ बोनि जेत ते नसरे ॥ तुझा यासी ॥ १९॥
 रत्न पार रि वया चिया गावीं ॥ जो इ ल गढ की तार सो जवी ॥ काश मारी न करावी ॥ मिड गने ये ॥ २०॥ का इ सा वास का पुरा ॥ मंद जे थ अ-
 वधारा ॥ पिता चा विकारा ॥ नये साते ॥ २१॥ ह्यणो निद्रये ससे ॥ बोनि क पणा चि नि सांसे ॥ लाग सर न नु भे ॥ बोला नु भू ॥ २२॥ -
 सामान्या आणि विशेषा ॥ सकळे की जेत दरवा ॥ तार का ना मन चिया मुरगा ॥ कडे न्या नना तुझी ॥ २३॥ शकें चि गदळे ॥ जे शूद्र प्रमे
 ये येळे ॥ ते माणुनिया पाउली पळे ॥ अवधान न ॥ २४॥ का करु नि बावु छिये चि बुंथी ॥ जळी ये ये नाती ॥ नया चि वास पाहाती ॥ हे स

पाठ- ओ- ६ उदा- ओ- १५ हिरवे ओ- २३ नेयाल ओ- २४ येने ओ- २५ वाहानी. ओ

काई ॥ २५ ॥ कांअप्पापैलं कडे ॥ जैयेतचांदिणंकोडे ॥ नैनकोरेंचांचुवडे ॥ उचलितना ॥ २६ ॥ नैसंतुह्यावास नपाहाडा ॥ ग्रंथनेयावे -
 रिकोपाळ ॥ जरीअवसंवादनोहेल ॥ निरूपण ॥ २७ ॥ नबुद्धावितांमते ॥ निफूजेअसंपंचितागते ॥ नैव्यारव्यानजीनुसते ॥ जोडुनिने
 दी ॥ २८ ॥ आणिमाझेनवआयवे ॥ ग्रंथनयेणचिमावे ॥ जेतुह्यांसतीहोआवे ॥ ससुरवसदा ॥ २९ ॥ चेडवीनरोसाचाकारे ॥ तुह्या-
 गोताथीचेसाये ॥ जाणोमिगोनागकुसरें ॥ धरतीमिया ॥ ३० ॥ जेसर्वस्वआपुलुद्याल ॥ मगदयेनेसादवुगिन्याल ॥ ह्यणोनिग्र
 यनकुंबोल ॥ सार्चेचिहे ॥ ३१ ॥ कांसर्वस्वाचात्तांमधरा ॥ आणिदयेवोलाचा अकरकरा ॥ तारीगेतेमजअवधारा ॥ एकचिगतो
 ॥ ३२ ॥ किबहुनामज ॥ तुमचियाहूपाकाज ॥ नित्येनागोव्याज ॥ ग्रंथाचेंकेले ॥ ३३ ॥ तारीतुह्यारमिका जोगा ॥ व्याख्यानशीयावेलागे
 ह्यणुनिजीमतागे ॥ बोलीगेना ॥ ३४ ॥ तेवकथेमिपसरुजाहान्या ॥ स्मोकार्थदूरीगेला ॥ कोजेस्साययाबोला ॥ अपत्यामज ॥ ३५
 आणियांसाआतिसहरळ ॥ फेडिगांलागेवळ ॥ नैदूषणनकरवडळ ॥ साडावावो ॥ ३६ ॥ कांसवनोरंतु कविता ॥ दिवसलागलियाभा
 तो ॥ कोपावेवीजीविना ॥ जितागोंकीजे ॥ ३७ ॥ पोरियावरीलहीनक ॥ तुह्योउपमाहिलेंचिवरणें ॥ आताअवयारिजोदेवें ॥ बोल
 नेरुसे ॥ ३८ ॥ ह्यणुउचोषकलाचना ॥ सावधहोईअचुना ॥ करुतूजज्ञाना ॥ वाळरवीआता ॥ ३९ ॥ तारीज्ञानगातेगर्थ ॥ वोळखतुनि
 रते ॥ आकोशेवीणजथे ॥ स्समाअसे ॥ ४० ॥ अगाथसरवीरी ॥ कुसळिणीजियापरी ॥ कांसदेवांचिअचरी ॥ सपनिजेसी ॥ ४१ ॥ पा
 थोतेणेपाडे ॥ स्समाजयांनवादे ॥ नहोतस्सणतेपुदे ॥ लैस्सणसागो ॥ ४२ ॥ तारीपदयंतैलेणे ॥ आंगोभावेजेणे ॥ थरिजेतेविंसाहणे
 सर्वचिजया ॥ ४३ ॥ निविधसुरव्यआयवे ॥ उपद्रवाचेयेथवे ॥ वरिपडिलियानक ॥ वाकडाजी ॥ ४४ ॥ अपेक्षितपावे ॥ नैजेतेविं
 यानावे ॥ अचपेक्षिताहोकरवे ॥ याननोचि ॥ ४५ ॥ जोमानापमानागेसादे ॥ सारकुःखजथेसमाये ॥ निदास्तुतिनोहे ॥ दुरवड-
 पाठ-ओ-३७ निविवाद-ओ-२८ निप्रदे-ओ-१० जीव-ओ-४२ सांगोपारसे-७

जो ॥ ४६ ॥ उंझाळीं निजो न पाप ॥ हिमवतं नं कांये ॥ कायसं नं हं न चां रिपे ॥ या न लेश ॥ ४७ ॥ स्वशिखरं चां मारु ॥ नेणें जें सामेरु ॥ की
 थराय जसू करु ॥ यो द्वे न ह्यणें ॥ ४८ ॥ नामाचराचरो मूर्ती ॥ दादणा न दे सिती ॥ नैसा ना नंद पासी ॥ यामें जेना ॥ ४९ ॥ येउ निज कंठे
 नोट ॥ आनि यान दिवदाचे मंधाट ॥ करो चाड पोत ॥ समु जेवीं ॥ ५० ॥ तें सें जया चिया वाये ॥ न साहणें कां हो जिना हो ॥ आणि साहने
 सेरे सें हो ॥ स्मरण लुरे ॥ ५१ ॥ शरीरा जें पातलें ॥ तें करु निया ना आयुलें ॥ नें य साहने नि न वलें ॥ यो पजेना ॥ ५२ ॥ हे अनाक्रोश समा
 जेथ आशी प्रयोचि मा ॥ जाणनेणें माहि मा ॥ दाया सिगा ॥ ५३ ॥ तो प्ररुष पाडवा ॥ जो नाचा जो नावा ॥ आना पोरस आर्जवा ॥ रूप करु
 ॥ ५४ ॥ नरि आर्जव तेणें सें ॥ याणाचें सें जे न्य जें सें ॥ आवडत या हो दोये ॥ एक चि पेंगा ॥ ५५ ॥ यो तो उपाह नि य काश ॥ न करी जे विच
 लाया ॥ जगा एक अवकाश ॥ आकाश जें सें ॥ ५६ ॥ तें सें जयाचें मल ॥ माणु सम ति आन आन ॥ नो हे आणि वन न ॥ रे सें पें तें ॥ ५७ ॥ जे
 जग चि स नो वळख ॥ जरो सें जिनाट सोय रि क ॥ आप पर हे भार व ॥ जाणने ना हो ॥ ५८ ॥ मल तेणें सें मेल ॥ याणि या ए सा दाळ ॥ क
 वणें वरवीं आडळ ॥ ने ये चि त्त ॥ ५९ ॥ वारियाचें थंय ॥ तें सें सरळ भाव ॥ शंका आणि हांव ॥ ना हो जया ॥ ६० ॥ साये पुढें वाळका ॥ शिगो
 ना हीं शंका ॥ तें सें सम देनां लोकां ॥ नालोची जो ॥ ६१ ॥ फांक निया दे दीवरा ॥ परिवर ना हो थंय धरा ॥ तें साको न कां परा ॥ नेणें चि जों ॥ ६२
 चोर बाळ पणार लाचें ॥ रत्ना वरी करणचें ॥ तें सें पुढें मज जयाचें ॥ करणें पाठी ॥ ६३ ॥ आळो जे नेणे ॥ अनुभव चि जो पावने ॥ ध-
 रं मा कळीं अतः करणें ॥ नो हे जया ॥ ६४ ॥ दिठो नो हे भिण धी ॥ बोलणें ना हां सें दिथी ॥ कवणें सां ही न वृद्धी ॥ राहा तो नेणें ॥ ६५ ॥
 दाहा हीं दीये मांजळें ॥ निःस्पृचें निर्मळें ॥ पांच ही पांलव मोकळें ॥ आवडी पाहार ॥ ६६ ॥ असुता न्ना थार ॥ तें सें उज्ज्वल ॥ कि
 वहुना जो माहेर ॥ याचि द्याचें ॥ ६७ ॥ तो पुरुष सभादा ॥ आर्जवा चिया आगवदा ॥ जाणने यां नि थरदा ॥ ज्ञानें केला ॥ ६८ ॥
 पाठ ओ ॥ ५५ ॥ उद्देशो ॥ ओ ॥ ५६ ॥ पाणि यांचा ॥ ओ ॥ ५७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ५८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ५९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ६९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ७९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ८९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९० ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९१ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९२ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९३ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९४ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९५ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९६ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९७ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९८ ॥ जीव ॥ ओ ॥ ९९ ॥ जीव ॥ ओ ॥ १०० ॥ जीव ॥ ओ ॥

आतां यथावरी ॥ गुरुभक्तजीची परी ॥ सांगोया अथारी ॥ चतुरनाथा ॥ ६९ ॥ तारि आद्यविद्याचि देवी ॥ जसा प्रसीहसे वा ॥ जे प्रहसकरी जीवा
 शोच्यांत ही ॥ ७० ॥ ते आचार्योपास्ती ॥ सांगिजे ननु जमनी ॥ वेसों देग कृपां श्री ॥ अवधानची ॥ ७१ ॥ तारि सकळ जल समुद्री ॥ येऊनि गंगा-
 नियाळी उदरी ॥ कीं झुती हेमहापदी ॥ पैती जाहान्नी ॥ ७२ ॥ नाना वेदाळी मिर्जी वितें ॥ गुणगुण उरिवितें ॥ पाणनाथासि उचितें ॥ दिवसे
 प्रिया ॥ ७३ ॥ ते ससबाळ्य आपुन ॥ जे गुरुकुळीं वोईले ॥ आपण पेकले ॥ प्रसन्नियरी ॥ ७४ ॥ गुरुहजिये देसी ॥ तो देशचि वसे-
 मानसी ॥ विरहिणी कांजेंसी ॥ वधूभाते ॥ ७५ ॥ नये कुडो नये तसेवारी ॥ देवो नियावे सामोरी ॥ आडपडे त्वणे घरी ॥ बीजे कैजो ॥ ७६
 साचमे साचिया प्रहली ॥ तिये देवो सीचि आवडे वान्नी ॥ जावथी नैपती करुनि याची ॥ गुरुहजो ॥ ७७ ॥ परि गुरु आज्ञाधारितें ॥ दे
 हंगां बीअसें एकले ॥ वां सरुवाळी विले ॥ दावें जेंसे ॥ ७८ ॥ ह्यानें केहे विरडे फिरेल ॥ केनी स्वाभिमान देळ ॥ युगाहुनि विडल ॥ निमेषमा-
 नी ॥ ७९ ॥ ऐसे या गुरुमासीचि आले ॥ कोस ये गुरुची चियां जेले ॥ तारि गंगा युवाजो उले ॥ आयुष्य जेंसे ॥ ८० ॥ कां सकल या अकुरा
 वरि पडिलिया पीयूषधारा ॥ नाना अल्योदकी चिया सागरा ॥ आज्ञागाम्या ॥ ८१ ॥ नातरी कें गिधानदेखिले ॥ कां आयुष्याजे केळ उघड
 ले ॥ मणगाचिया आगा आले ॥ इंद्रपद ॥ ८२ ॥ ते सा गुरुकुळीचि निवावे ॥ महासखंधारावे ॥ जे कोडे हीन पोराळवे ॥ आकाशकां
 ॥ ८३ ॥ पै गुरुकुळीं गेसी ॥ आवडी जया देखसी ॥ जाण जाननया प्रसी ॥ यादही करी ॥ ८४ ॥ आज्ञा अमल तिसयेकडे ॥ प्रेमाचे निप
 वाडे ॥ श्रीगुरुचरुपदे ॥ उपासी आयनी ॥ ८५ ॥ नृदय प्रहली चिया आवरी ॥ आराधनो गुरुमुनवरी ॥ मग सर्वे मानें वेंसीं परि वरी ॥
 आपण होय ॥ ८६ ॥ काचेत न्याचिये पावळी ॥ मांजि आनंदाचिया उळी ॥ मीतु सुखिगादळ ॥ आनामृत ॥ ८७ ॥ उदयि जना
 बोयाकी ॥ बुईची डाळ सातिका ॥ प्रसन्नियंत्रवका ॥ नाराजी वाहे ॥ ८८ ॥ काळ शास्त्री त्रिकाळी ॥ जीव दशाधूपजाळी ॥ ज्ञा-
 पा-ओ-७९ ॥ प्रसन्नचितें ॥ ओ-७६ ॥ कांजे ॥ ओ-७७ ॥ दिशासी, शाना ॥ ओ-८६ ॥ धुत ॥ ओ-८९ ॥ काळा ॥ ७९

नदीपेयैकच्छी ॥ निरंतर ॥ ८९ ॥ सामरस्याचीरससाये ॥ अरवुंद अर्पित जाये ॥ आपण भराडाहाये ॥ गुरुनंजिगा ॥ ९० ॥ नातरी-
जीवाचियेसेजे ॥ गुरुकांतकरुनिफ्रजे ॥ ऐसीममार्चनमाजे ॥ दुर्द्विवाहे ॥ ९१ ॥ कोणेएकं अवसरी ॥ अनुरागभरे अंतरी ॥ कीतयना
मकरी ॥ सीराच्छी ॥ ९२ ॥ तेथेअथध्यानबहुसरव ॥ तेचियेपतुळ्ळीभिदोष ॥ वरिजवशयनदरव ॥ भावोयुक्त ॥ ९३ ॥ मगवोअग-
नीपाये ॥ तेवस्वमीआपणहाये ॥ गुरुजहोइनिउभाराहे ॥ आपणचि ॥ ९४ ॥ नामीआपणजन्मे ॥ ऐसंगुरुपूजियेमे ॥ अनुभवीबनो
धर्मे ॥ ध्यानसरव ॥ ९५ ॥ एकधियेवळे ॥ गुरुमायकीभावबळे ॥ मगस्तन्यस्खेनाळे ॥ भकावरी ॥ ९६ ॥ नातरीकिरीही ॥ जैन-
न्यतरुतवरी ॥ गुरुयेनुआपणपदो ॥ वत्सहाये ॥ ९७ ॥ गुरुसुपास्वहसामुहो ॥ आपणहायमासोच्छी ॥ कोणेएकवेच्छी ॥ होचिमा-
वी ॥ ९८ ॥ गुरुहरामुनाचिवडप ॥ आपणसवावर्तचिहायगप ॥ ऐसंसमंजन्य ॥ मनचिवये ॥ ९९ ॥ चक्षुरसेवीण ॥ पिळ्हायआ-
पण ॥ कैसेपेअपारपण ॥ आवडेचि ॥ १०० ॥ गुरुतेपक्षिणाकरी ॥ जागयचाचवरी ॥ गुरुतांरुवरी ॥ आपणकास ॥ १०१ ॥ ऐसमसाचे
निचावे ॥ ध्याननिध्यानमसये ॥ पूर्णसिंधूहलावे ॥ फुटनेजैसे ॥ १०२ ॥ किंवहुवायापरी ॥ अंगुरुसूर्ताअंतरी ॥ मोगीआनोअवया-
री ॥ बाल्यसेवा ॥ १०३ ॥ तशिर्जीवीऐसआवांके ॥ ह्यणदास्यकरनिनिके ॥ जेसनिगुरुकोतुके ॥ मागह्यणनी ॥ १०४ ॥ नैसयासाच्याउपा-
स्ती ॥ गोसावीमसन्महोती ॥ तेथमीचिनती ॥ ऐसोकिरी ॥ १०५ ॥ ह्यणननुमच्यादवा ॥ परिवारजाअभवा ॥ येनुनेरुपेहोअवा ॥
मीचिएक ॥ १०६ ॥ आणिउपकरनीआपुर्ती ॥ उपकरणेआथिजेतुछी ॥ माझीरुपेनेतुछी ॥ हाआवीस्वामी ॥ १०७ ॥ ऐसाभोगेनवरु ॥
तेथहाह्यणनीअंगुरु ॥ मगतापरिवार ॥ मीनिहोदग ॥ १०८ ॥ उपकरणतातसकटिक ॥ तेमीनिहोदनेएक ॥ तेझाउपास्तीचिको-
तुक्त ॥ दोरिजेनु ॥ १०९ ॥ गुरुबहुनाचीमाये ॥ परियेकानेहाऊनिमाये ॥ तंसंकरुनिप्राणवाये ॥ छपेतिये ॥ ११० ॥ तयाअनुसागावे-
पाव- ओ-१३ मुच्छी ओ-७ जी-

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

धत्तायी ॥ एकपत्नीव्रतयवर्षी ॥ संत्रसन्ध्यासकरवी ॥ ओम्माकरवी ॥ ११॥ चतुर्दिक्षवारा ॥ नन्दाहर्निधेवाहिरा ॥ तैसागुरुकूपेणजिरा ॥
 मीचिहोइन ॥ १२॥ आउलियागुणाचिन्तिणी ॥ करीनगुरुसेवस्वामिणी ॥ हेअसोहोइनगंजमणी ॥ गुरुसक्तिसौ ॥ १३॥ गुरुस्वहा-
 चियेष्टधी ॥ मोष्ट्यहीहोइनतच्छवटी ॥ ऐसियामनार्थाचियासुष्टी ॥ अननारची ॥ १४॥ ह्येणैअगुरुस्वेंमुन ॥ तेंआपणमीहोइन ॥
 आणिदासहोइनिकरीन ॥ दास्यनेथिचें ॥ १५॥ निर्गमागमीदानरे ॥ जेवोनुंजिजतीउवरे ॥ तेमीहोइनआणिहारें ॥ हारपाळ १६॥
 पाउवामीहोइन ॥ तियामीचिलवर्षी ॥ छत्रआणिमीकरीन ॥ बारीपण ॥ १७॥ सीतळउपरजाणविता ॥ चवरधरहातदेता ॥ स्वाभिपु-
 टेंबोलेता ॥ होइनमी ॥ १८॥ मीचिहोइनसागळा ॥ करुसुईनगुरुळा ॥ सांजितीनेपळा ॥ पंडियामीचि ॥ १९॥ हडपमीवाळगेन
 मीचिउगाळुयेइन ॥ उळगमीकरीन ॥ आयोळीचें ॥ २०॥ होइनगुरुस्वेंआसन ॥ अळकारपरिधान ॥ चंदनादिहोइन ॥ उपचारते २१॥
 मीचिहोइनसुआरु ॥ वोगरीनउपहारु ॥ आपणपेंअगुरु ॥ वोवाळान ॥ २२॥ जेवेळीदेवोआरोगिनी ॥ तेढांपानीकरमीचिपाती ॥
 मीचिहोइनप्रहरी ॥ होइनविजा ॥ २३॥ तातमीकादीन ॥ सैजमीझादीन ॥ चरणसंवाहन ॥ मीचिकरीन ॥ २४॥ मिहासनहोइनआप-
 ण ॥ चरिगुरुकरीआरोहण ॥ होइनपुरेपणा ॥ वाळगेचें ॥ २५॥ अगुरुस्वेंमन ॥ जयादेईलअवधान ॥ नोमीपुटाहोइन ॥ चमत्कार ॥
 ॥ २६॥ तयाअवणाचेआंगणी ॥ होइनशब्दांरियाअसोहणी ॥ स्पेशेंहोइनयमणी ॥ आगानिया ॥ २७॥ अगुरुस्वेंडोळे ॥ अवलोक-
 नेंसेहोळे ॥ पाहानीनियंसकळे ॥ होइनसुरें ॥ २८॥ तियासंनैओरुचेन ॥ तोनोरसम्याहोइजेन ॥ गंधरुपेंकौजेन ॥ याणसेवा ॥ २९॥
 एवबात्यभनारत ॥ अगुरुसंवांसमस्त ॥ वेताळानवल्लुजान ॥ होउभिया ॥ ३०॥ जवदेहोअसेल ॥ तंवोळगीऐसीकौजेन ॥ मगदे-
 हानिनवल्लु ॥ बुद्धिआहे ॥ ३१॥ इयशरीराचिमाती ॥ मळवीर्जातयेसिती ॥ तेथअचिरणउमेनाती ॥ अगुरुस्वें ॥ ३२॥ माझास्वामीकेव-
 णार ॥ ११ मीचिमिनि ॥ १२ मीआणि ॥ १३ संवाळगा ॥ १४ परिस ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

तिके ॥ स्वर्गनिजियंउदरे ॥ तेथलयानंदनभिके ॥ आपोआप ॥ ३३ ॥ अंगुरुवोनाकुजती ॥ कोमुवनींभयोअज्जिअजती ॥ तयादीयांचियादी-
 सी ॥ वेवीनतेज ॥ ३४ ॥ चवरीहनिविजणा ॥ तेथलयाकरीअभाणा ॥ मयाआगाचवोअगणा ॥ होइनसी ॥ ३५ ॥ जियजियअवकाशींभओगु-
 रूअसनीपरिवारीसी ॥ आकाशालयाआकाशी ॥ गेइननिये ॥ ३६ ॥ परिजानमलानसडे ॥ नीमधोभियलोकोनघोडी ॥ ऐसोभयाणावया
 कोडी ॥ कल्यांचिया ॥ ३७ ॥ येतुलवरीशिवका ॥ जयाचियामानसा ॥ ओणकरूनहोनेसा ॥ अपारजो ॥ ३८ ॥ रात्रीदिवसनेणे ॥ ओडे
 बहुनहणे ॥ द्वाणियाचेनिदाहपणा ॥ साजाहोये ॥ ३९ ॥ मोव्यापारयेणेनवे ॥ रागनाहनिशारेवे ॥ एकलाकरीआयेवे ॥ गवविळाळा
 ॥ ४० ॥ ल्हादयहनेपुढा ॥ आगचियदवडा ॥ काजकरीहोडा ॥ मानससी ॥ ४१ ॥ एखादियावळा ॥ अंगुरुचियारवेळा ॥ लोणाकरीसक
 खा ॥ जीविताचे ॥ ४२ ॥ जोगुरुदास्यहया ॥ जोगुरुमेमसपाव ॥ जोगुरुआजेनिवास ॥ आपणचिजो ॥ ४३ ॥ जोगुरुकुळसकुळान ॥
 जोगुरुबुधसौजन्यसज्जन ॥ जोगुरुसेवाव्यसनसव्यसन ॥ निरनर ॥ ४४ ॥ गुरुसामदायधर्म ॥ तेविजयाचवर्णाआम ॥ गुरुपरिवयो
 नित्यक्रम ॥ जयाचेगा ॥ ४५ ॥ गुरुसैनगुरुदेवना ॥ गुरुमानागुरुपिता ॥ जोगुरुसेवपरता ॥ मागेनेणे ॥ ४६ ॥ अंगुरुचेदार ॥ तेजयाचे
 सर्वस्वसार ॥ गुरुसंवकासहोदर ॥ मेममेजे ॥ ४७ ॥ जयाचेवक्र ॥ वोहंगुरुनामानेमेज ॥ गुरुवाक्यावांचुभिशार ॥ हानेनिशिवे ॥ ४८ ॥
 शिवतुल्यरुत्तरणी ॥ प्रत्येमेहापाणी ॥ नयानोययाजआणी ॥ तीर्थत्रैलोक्याची ॥ ४९ ॥ अंगुरुचेउशिशे ॥ लाहेजेअवचटे ॥ तेनेणेल
 भेविटे ॥ समाधीसी ॥ ५० ॥ केवल्यसरवासावी ॥ परमपुण्यकिरीद ॥ उधच्छतीपायापार्श्व ॥ चालगजे ॥ ५१ ॥ हेअसोसागावेकती ॥
 नाहीपारगुरुभक्त ॥ परीगाउकांतमती ॥ कारणहे ॥ ५२ ॥ जयाइयमर्फीचिचाड ॥ जयाइयेविषयचिचोड ॥ जोहेसेवेचुनिगोड ॥
 नमनीकाही ॥ ५३ ॥ मोतलजानाचावो ॥ ज्ञानतेणचिआवो ॥ हेअसोमोदेवो ॥ ज्ञानभक्त ॥ ५४ ॥ हेजाणासाचोकरे ॥ तेथज्ञानउ
 पाव ॥ ओ- ३४ जेजब्नी ओ- ३५ यदींक्रिया वायानयदींअथवा वायानवर्डीं ओ- ३६ चि ओ- ३७ आकाश्याचा ओ- ३८ निजवास ओ- ४६ पूजे- ४७

यजोनिद्वारं ॥ नादत असंगापुरं ॥ दयारिती ॥ ५५ ॥ जियंयगुरुसंवैविरवीं ॥ माझाजीव अभिजातवीं ॥ ह्यणोनि सायचुकी ॥ बोनाकेनी ॥ ५६ ॥ वै
द्वर्वा असनाहानेगुच्छा ॥ सज्जवधानी आधच्छा ॥ परिचयंज्ञागंगुच्छा ॥ पासुनिमंद ॥ ५७ ॥ गुरुवर्णनिमुक्ता ॥ आळशीपोशिजेफु
का ॥ परिमर्ना आर्थोनिक्ता ॥ साधुरागा ॥ ५८ ॥ तेंपेकरणें ॥ हेस्युच्छेगोसणें ॥ पडलेसज ह्यणे ॥ ज्ञानदेवो ॥ ५९ ॥ परिनोबोलउ
पसाहावा ॥ आणिवोळगे अयसरदेयावा ॥ आताह्यणनजीवरवा ॥ यथार्थचि ॥ ६० ॥ परिमापरिमाजीह्यथा ॥ जोभूतभारसहि
ष्यु ॥ तोबोलतसंविष्या ॥ पायंगेक ॥ ६१ ॥ ह्येणेशतचित्त्वगांगेस ॥ जयापावींदिसे ॥ आंगमनेजेस ॥ कापुराचें ॥ ६२ ॥ कारल्याचेद
ळवाडे ॥ जेसं सबाह्यचोरपडे ॥ आनबाहेरिगकेगडे ॥ स्तूयजेसा ॥ ६३ ॥ बाहेरिकर्मसाळला ॥ मानरीज्ञानउजळला ॥ दहीदाही
परिआला ॥ पारवाळएका ॥ ६४ ॥ मुनिका आणजळ ॥ बाह्येणमेळ ॥ निमळ होयवोले ॥ वेदाचेनी ॥ ६५ ॥ मलुतेथेबुद्धिबळी ॥
रजआरिमाउजळी ॥ सोंदणीफेडीनिगळी ॥ वस्त्राचिया ॥ ६६ ॥ किबहुनाययापरी ॥ बाह्यचारवअवधारीं ॥ आणिज्ञानदीपधन-
रीं ॥ ह्यणोनिगुह ॥ ६७ ॥ चेह्वांनरीपांडुत्तना ॥ अंतरशूदनसना ॥ बाहेरिकर्मनासंवेया ॥ विंदुगा ॥ ६८ ॥ मृतनेसास्तुगारि-
त्या ॥ गादगनीथीझाणिला ॥ कडुदुधियामारिना ॥ गुळजसा ॥ ६९ ॥ वासगुहानेराणबाधिलें ॥ काउपवासअन्वलिपिलें ॥ कुटुंब
सेदुरकेले ॥ कांतहीनेने ॥ ७० ॥ कुलश्रुतिमाचेपाकळ ॥ जळोवरीभुनेहोळाळा ॥ कायकरुचित्रीयगळ ॥ आंतशेण ॥ ७१ ॥ तेसक-
मीवचिचिचुडो ॥ नसरथारसालकुजा ॥ मळेमादरेचायडा ॥ गवित्रंगे ॥ ७२ ॥ ह्यणोनिअंतराज्ञानहावें ॥ मगबाह्यलाभेलसभा
वें ॥ वरीज्ञानेकूमसवें ॥ एमकेजोडे ॥ ७३ ॥ यालागींवाह्यमाग ॥ कर्मधूतलाचाग ॥ ज्ञानेफितलाचंग ॥ भतरांजा ॥ ७४ ॥ तेथअंतर-
बाह्यगेलें ॥ निमळत्वगकुजाताले ॥ किंबहुनाउरुं ॥ श्रुतिचि ॥ ७५ ॥ ह्यणोनि सदावर्जवगन ॥ बाहेरितसतांफांकन ॥ स्फटिक
पाठ ॥ ओ ५५ उयडेनि जगा ॥ ओ ५६ स्वच्छ ॥ ओ ५७ वरे ॥ ओ ५८ तन्वगा ॥

यद्वर्तते नोद्वेगः ॥ ६५ ॥ विदुषो नोद्वेगः ॥ गीर्तयन्ति कर्मणि पणजे ॥ मनसो न च विजिजे ॥ भक्तुरवने ॥ ७॥ नो भ्रातृकंदरे नु अथवा मो
 दे ॥ परिमयी काहे ॥ चिनु मुदे ॥ मंगलं नु न काहे ॥ अथ कजे सु ॥ ७७ ॥ अन्तर्निद्रा यो नो निमिद्रे ॥ निरयवरी न रं न्याच्छे ॥ परिविकारा चो बिबिना
 के ॥ जिजिनेना ॥ ७९ ॥ ते सन्मया दास चर ॥ जायरी स्मिणि माहरी ॥ ते यय न दक्षिणि मारी ॥ राहो नो जाणे ॥ ८० ॥ काना गिनु ज्ञाने आलिगीना
 एक चिंचे नु पाणी ॥ ते अ पुत्र मा चि च्या आगी ॥ निरिगकार ॥ ८१ ॥ ते संह द्य चोर ॥ संकल्प विकल्प सोना कर ॥ हला हल्य विषो
 व ॥ पुढे जाणे ॥ ८२ ॥ पाणि संहार न सिजे ॥ आद्यणी दूर कर शिजे ॥ ते सगि कल्प ज्ञाने न निर्जिजे ॥ मनो हर्त ॥ ८३ ॥ तयाना व शचि
 त्वपणा ॥ पार्थगा स पूणे ॥ हरे सुवर्त विद्य जाण ॥ ज्ञान अस ॥ ८४ ॥ आणि स्थिर नासाचे ॥ धरि रया नो जयाचे ॥ नो पुरुष ज्ञानाचे ॥ आशु
 थगा ॥ ८५ ॥ देह नरी वीर चैली कुडे ॥ आशु नि स्या परि हिडे ॥ पारि दे स का न माद ॥ मानसी नि ॥ ८६ ॥ वत्सा वरू नि ये नूचे ॥ स्नेह राना न
 वचे ॥ न हर्ता भाग सति येचे ॥ मंग भोगा ॥ ८७ ॥ काये गि मिया दूर जाये ॥ परि जीव न ग चि दये ॥ ते संह चाल न हाये ॥ चळ चिना ॥ ८८ ॥
 जानया अक्का सवे ॥ न सं आका शो न थावे ॥ त्रिमण च की न भवे ॥ धन मसा ॥ ८९ ॥ प्रायिक चिया येर स्यारा ॥ संवे पथ न च लै ध जुधे रा
 काना ही जे वीत रुवरा ॥ येण जाण ॥ ९० ॥ ते सा चळ गळ कात्म्य री ॥ असो नि य गे च सति की ॥ सुतो भोग ही ॥ नळि जना ॥ ९१ ॥ बाहा
 दोळी चो भिबळे ॥ सखी जै सी न टळ ॥ ते सा ड प द व उमाळ ॥ नलो दे जो ॥ ९२ ॥ दैत्य दुः रवी न मये ॥ मय शो की न कं पे ॥ देह मृदून वा सिप
 पातले वी ॥ ९३ ॥ आर्त आशा पडि मरे ॥ वय व्याधी ग जरे ॥ उज्ज अस तो पा भि मार ॥ न हो चिना ॥ ९४ ॥ मिदो नि जे जंद ही ॥ कामो-
 भावर पदी ॥ परि राम न कं थ कुडी ॥ मान साचे ॥ ९५ ॥ आकाश हो वा सोरो ॥ सखी वीर शिरो ॥ परि नेणे मोहरो ॥ चि न मृती ॥ ९६ ॥ हा
 निहाला सुली ॥ प्रासाव पाजा विनयाली ॥ ते सा न लो टु वा न्य री ॥ ९७ ॥ क्षीरा पणो चि था क लो बी ॥ कप ना ही म
 गान ॥ ओ ॥ ६० ॥ श्री ॥ ओ ॥ १० ॥ नवन ॥ ७ ॥

दरत्पत्नी॥ आकाशमज्जंजाली॥ वणविद्या॥ ९८॥ नैसां आनागेलं ऊर्मी॥ न देग जब जमोथमी॥ किं बहुनाथैर्यक्षमी॥ कल्याणी-
ही॥ ९९॥ पैस्यैर्यंगीभाष॥ वोलिजे संविषय॥ नेह दशागंदर॥ दंरमण्या॥ ५००॥ हेस्यैर्यंगिदे॥ जेथ आगेजि वेंजोडे ॥
तज्ञानाचं उयडे॥ निधानसाचं॥ १॥ आणि दसाजुं साधरा॥ कांदरिया हाति येरा॥ न विसंच माडारा॥ लुच कैंजसा॥ २॥ कांएक
लौतया बाळका॥ यारणें निगळे अंबिका॥ सधुविषं सधुमक्षिका॥ सोमिणे जेंस॥ ३॥ अमुना जोयारी॥ अंतः करण जतन करी॥
नेदर भेंगो दाही॥ दंदियाच्या॥ ४॥ हाणे काम बागुलुं कुल॥ हे आशा सयारी देखे ल॥ तर्गजा वाट कुल॥ ह्यणो निविहे॥ ५॥ बाहेरी
धंद जेंस॥ दादुगायनिका च्यामी॥ करो तेहण नेंसी॥ प्रवृत्तीसी॥ ६॥ संचेतनीं वाणे पणे॥ देहास कुल आरणे॥ संयमा वशे करणें॥ बुद्ध
नियाली॥ ७॥ सनाचि शमहादारी॥ प्रत्याहासा चिया नाणातरी॥ यमदम शरीरी॥ जागव उमे॥ ८॥ आधारी ना भिकंवां॥ वंघवयची
घरदी॥ चंदसूर्य संपुदी॥ सूर्यचिन्ता॥ ९॥ समार्थ चिंशे जे पामी॥ बायेनयाली आनासी॥ चित्तैत नव्य समरसी॥ अंतः करणें॥ १०॥ अ
गा अंतः करण निग्रहीजो॥ तो हा हे जाणिजो॥ हा आर्थ तेथ विजयो॥ सोनाचो पै॥ ११॥ जयाची आज्ञा आपण॥ शिरीं वाहे अंतः कर
ण॥ मनुष्याकार जाण॥ ज्ञान चितो॥ १२॥ श्लो० दंदिया र्यैवैर्यंगयमनहंकार एवच॥ अन्य धुल्यजरा व्याधिदुःख दोषालु दर्शन म॥ १८॥
दी० आणि विषया विषयी॥ नेंगार्याची निक्ती॥ पुरवणी मानसं किं॥ जिती आथी॥ १३॥ गीमिदिया अन्ना॥ लाळ न घोंदी जे विसना
आगन सूचें आनिगना॥ मुना चिया॥ १४॥ विषयाने नागवे॥ जळत घरी निरिपवे॥ व्याम विवरान वचवे॥ वस्ती जेवी॥ १५॥ धडाहीन
लोहारी॥ उडी नयाल वजसी॥ न कर वे उथी॥ अजगराची॥ १६॥ अर्जुना नेणे पाडे॥ जयासी विषय वार्ता नावडे॥ नेदी दां द्यं च नि-
तोंडे॥ कहीं च जायो॥ १७॥ नयाचे मनीं आलस्य॥ देहीं अनिका रथ॥ शंभुदमो सामरस्य॥ जया सिगा॥ १८॥ तपोवताचो व्यावा॥
पाठ० ओ० २ नदूक० ओ० १० अंतर्गत० ओ० १८ यम०

नयचिद्वार्यमांडवा ॥ युगांतजयागावा ॥ आतयेता ॥ १९ ॥ बहुयोगाभ्यासीहाव ॥ भिजनाकउद्योग ॥ नयाहंजानव ॥ सयाताचं
 नाराचचीं आक्षुरणे ॥ पूयपकांलाळणे ॥ तैसैलेखीप्रोगणे ॥ एहंकीचें ॥ २० ॥ अणिस्वगागमानसे ॥ एकैविमानऐसे ॥ कीह
 लेपिशितजेसे ॥ श्वानाचेंका ॥ २१ ॥ तैहंविषयवेराय ॥ आत्मलाभाचेंभाय ॥ येणवह्यानदायाय ॥ होतर्जिवा ॥ २२ ॥ ऐसाउम
 यमोगीत्राम ॥ देखसीजेथबहुवस ॥ जाणवेथेरीहवांस ॥ ज्ञानाचात ॥ २३ ॥ अणिमचाज्ञानियेगरी ॥ दुष्टापूर्वकरा ॥ परिके
 लेपणशरीरी ॥ वसोनदी ॥ २४ ॥ वणांअमपोषक ॥ कर्मनित्यनेमिके ॥ यामाजीकाहोनवक ॥ आचरता ॥ २५ ॥ परिहंभया
 क्लेश ॥ कीहंसाक्षेनिमिदुगेलें ॥ ऐसेनाहोवेनिने ॥ पारनेमार्जी ॥ २६ ॥ जैसंअवचितेपणे ॥ गायुसीसर्वत्रविचरणे ॥ कोनिरा-
 प्रिमानीउदेजणे ॥ सूर्याचेंजैसे ॥ २७ ॥ कांअुनिस्वभावतावोले ॥ रागाकाजेंविणचांले ॥ तैसंअवदुर्भहंजिमने ॥ वर्तणेन्याचें ॥
 क्रतुकाळीनरीफळती ॥ परिफळनोहंनणती ॥ नयादृष्टाचियेणसंहिती ॥ कर्मसिद्धी ॥ २८ ॥ एवमर्भनिर्येविर्वादी ॥ जेथ अहंकारा
 उरवीजाहाली ॥ एकावर्दीचिकर्तिलो ॥ दारीजैसी ॥ २९ ॥ संसंधवीणजैसी ॥ अस्त्रेअसतीआकाशी ॥ देहांकर्मनेसी ॥ नयाभि
 गा ॥ ३० ॥ मद्यपाश्रोगीचिवस्त्र ॥ कालेमाहार्तेचिशस्त्र ॥ बौधेनंआहे ॥ ३१ ॥ नयापाडंदहो ॥ जयार्माआहे-
 हैसेचिनाही ॥ निरहंकारतापाही ॥ नयानव ॥ ३२ ॥ हेसंपूर्णजैथेदसे ॥ तेथेविज्ञामअसे ॥ ज्येविषीअनारिसे ॥ बोलोनये
 ॥ ३३ ॥ जन्ममृत्युजरादुःखे ॥ व्याधिवाधव्यकलुषे ॥ जियेआंगानयतांदरे ॥ दुःखमिजो ॥ ३४ ॥ साधकविबसिया ॥ का
 उपसर्गयोगिया ॥ पावेउणयापुरया ॥ वायवाजवी ॥ ३५ ॥ वेरजन्मानरीचि ॥ सर्गमनोनिवचे ॥ तेविअनंजनाचें ॥ उ
 णेजोवाही ॥ ३६ ॥ डोळाहरळनविर ॥ पार्देकोनजिरे ॥ तैसंकाळीचेंनविसरे ॥ जन्मदुःख ॥ ३७ ॥ ल्यणपूयगतीरयाजा ॥ अहा
 पात्र ॥ ओ २४ नो ॥ ओ २६ अरके ॥

मूत्रं द्यौं निमाला ॥ इतरे भियां चारिला ॥ कुचस्वेद ॥ ४७ ॥ ऐसो गेसिया परी ॥ जन्माचा काटाळा धरी ॥ ह्यणे आना तें मीन करी ॥ जेणे-
ऐसे होये ॥ ४९ ॥ हारी उभवाचया ॥ जुवारी जे सायेडया ॥ कीचें रावाचया ॥ पुत्रजेंचें ॥ ४२ ॥ मारिलियाचें भिरगो ॥ पाठीचा जे
वोस्तूडपागो ॥ तेंणे आसे पेंलगो ॥ जन्मो पावी ॥ ४३ ॥ परी जन्मती तें लग्न ॥ नसाडी जयाचें भिज ॥ संपाविता भिस्तेज ॥ नजिरे जे
वी ॥ ४४ ॥ आणि मृत्युदुदा आहे ॥ तोचि कल्यांत कां पाहे ॥ परि आजोच होये ॥ सावध ज्यो ॥ ४५ ॥ माजि आया तें ह्यणता ॥ थडियेची
पाडुसुता ॥ पोहणार आडता ॥ कासे भिजेवी ॥ ४६ ॥ कान पवमारणाचा नावो ॥ सांभाळिजे जे सा आवो ॥ वोडण सडजे घावो ॥ नल
गताचि ॥ ४७ ॥ पाहे पाहेचा वाटवधा ॥ नव आजोचि हाडजे सावधा ॥ जीवन वचतां ओषधा ॥ धांविजे जेवी ॥ ४८ ॥ येरवो ऐसे घटे
जे जळत घरी सांपडे ॥ तो मग न पवाडे ॥ कुहाराणो ॥ ४९ ॥ चोंटिये पाथरंगला ॥ तें से भिजो बुडाला ॥ तो बोवें हो स कट भिमाला ॥
कोणसांगो ॥ ५० ॥ ह्यणे नि समर्थे सोंवेर ॥ ज्या पाडिले हाडभादर ॥ नोजे सा आवही पाहार ॥ परज्जु भिअसे ॥ ५१ ॥ नातर केळ
वली नोवरी ॥ कां सन्यासी जया परी ॥ तें सान भरता जो करी ॥ मृत्युसूचना ॥ ५२ ॥ पैगा जे यया परी ॥ जमे विजय निवारी ॥ मर-
णे मृत्युमारी ॥ आपण उरे ॥ ५३ ॥ नया गरी जानाचें ॥ साकडे ना हांसाचें ॥ जया जन्म मृत्युचें ॥ भिमालें शत्य ॥ ५४ ॥ आणित
याचि परी जरा ॥ न तें कलां शरीरा ॥ तारण्याचि या भिरा ॥ साजिंदेवें ॥ ५५ ॥ ह्यणे आजिचा अवसरी ॥ पुष्टि आहे शरीरी ॥ तें
होईल काचरी ॥ वाळली जैसी ॥ ५६ ॥ निंदे वाचे व्यवसाय ॥ नें सना कर्त हात पाय ॥ अमत्रा ज्ययाचि पश आहे ॥ बळायया ॥
॥ ५७ ॥ फुलांचिया सोगा ॥ लगीं ममतागा ॥ तें फेरयाचा गुदया ॥ नें सें होईल ॥ ५८ ॥ वोटाळाचारवुरी ॥ आषाढ वा तें बुरी ॥ नेह-
शामाया शिरी ॥ पावे लग्ना ॥ ५९ ॥ पद्म देळशीं दिसाळ ॥ भांडनाती हेडोळे ॥ तें होनी पडवळे ॥ पिकली जैसी ॥ ६० ॥ भवईचीं प
पाठ ॥ ओ ॥ १२ ॥ जाने ॥ किंवा जपे ॥ ओ ॥ ४६ ॥ अथाव ॥ ओ ॥ ४८ ॥ पातां देचा पेणा ॥ भियना ॥ ओ ॥ ५२ ॥ सन्यासिनी ॥ ओ ॥ ५९ ॥ आरव रुवा जें ॥ ओ ॥ ६० ॥ विशाळ ॥

उच्छे॥ योमश्चनीशिनसाळे॥ उरकुहोजेनजळे॥ ओसवांचेनी॥ ६५॥ जेसेवावुळीचेरवाड॥ गिरबडभिजार्जसरड॥ नैसेपिचडी
 नोड॥ सरकटिजल॥ ६॥ राधवणीतुर्लपुटे॥ पद्मवुदमानिरयातवडे॥ तेसींचियनाकाडे॥ बिडबिडती॥ ६३॥ नाबूलेवोंवरउं
 हांसनादानदाउं॥ सनागरभिरऊं॥ बोलजेणो॥ ६४॥ नयाचियातोजा॥ येदंलजळबठाचालोदा॥ इयाउमळतीदादा॥ दांमोभि-
 हो॥ ६५॥ कुळवाडीकणेदारली॥ किंवाकडियातोरबसली॥ तेसींनुगीकाहोत्रिंडी॥ जीभतेचि॥ ६६॥ कुसलेकोरडी॥ वारेनेजाती
 बरडी॥ तेसेआपदानोडी॥ दौळियेसी॥ ६७॥ आषाढियेचेभिजऊं॥ जेसींझिरपनींयेल्याचींमोळे॥ तेसेस्वाडीहूनिताले॥ पेढ
 नीपुर॥ ६८॥ वाचेभिअपवाड॥ कानीअनुयड॥ पिडगरुवासामकड॥ होइनुहा॥ ६९॥ तृणाचेबुझवणे॥ ओदोळेवारेनगुण
 तेसेयेदलकापणे॥ सर्वागसी॥ ७०॥ पायापडतीवेगडी॥ हातवळतीसुरकुडी॥ बरवपणावागडी॥ नाचविजेन॥ ७१॥ मूळसू-
 त्रदारे॥ होऊनिगतीरवोकरे॥ नवभियेहोतीदनरे॥ माझियाभिधनी॥ ७२॥ दंरकांभियुंकीलजग॥ मृत्युचापडेलपाग॥ सोद
 रियाउबग॥ येदंलमाझा॥ ७३॥ स्त्रियाह्मणनीविषर्मा॥ बाळेंजानेमुल्ली॥ किंवहुनाचिछर्मा॥ पात्रहोइन॥ ७४॥ उमळीचाउ
 जगरा॥ सेजारियासोदलियाघरा॥ शिणवीलह्मणनीत्वातारा॥ बहुतातेहा॥ ७५॥ ऐसीवार्धक्याचीसूचणी॥ आपणि
 यानरूणपणी॥ देरवेमगमनीं वितजागा॥ ७६॥ तृणपाहंयेंडुल॥ आणिआताचमोगिताजाइल॥ मगकायउरल॥ हिना
 लागी॥ ७७॥ ह्मणोनिनाइकणेंपावुं॥ नंवआइकोभिघालीआघवे॥ पगुनहोताजावे॥ तेथजाया॥ ७८॥ हृष्टजंवआहे॥ नंव
 पाहवेंतेसुखेपाहे॥ मूकलाआधीवाचावाहे॥ सुभापितु॥ ७९॥ हातहोतरनुळे॥ हेपुढीलमोदकेंकळे॥ नंवकरुभिघाली-
 सकळे॥ दानादिकें॥ ८०॥ ऐसीदशायेइलपुढ॥ नंमनहोइउवेड॥ तवनिवनिमचीचारवेड॥ आत्मज्ञान॥ ८१॥ जेंचोरपाहे
 पाठ॥ ओ॥ ६०॥ विशाळें॥ ओ॥ ६१॥ पाहंया॥ ओ॥ ६६॥ का॥ ओ॥ ६७॥ अपत्य॥ दादियेसी॥ ओ॥ ७४॥ मूळेसी॥ ओ॥ ७५॥ तेदां॥ ७६॥

ज्ञोबन्ती ॥ तव आधुं चिरसिजेसपती ॥ कांसांकासांक्रियाती ॥ नवचनोकीजे ॥ ८२ ॥ तैसंवाधेक्यथावे ॥ सगजेंवाधांजावे ॥ तें आनां-
चिआयेवे ॥ वसतें करी ॥ ८३ ॥ आतंसोडुमिहंनोदुंगें ॥ कावक्षितधारिंरखों ॥ जेयउपेस्सनिजोनरिये ॥ नोनागवल्काकीं ॥ ८४ ॥ तें
मंष्ट्राप्यहोय ॥ आनपणवायाजाय ॥ जेनोशनसंष्ट्राहे ॥ नेगोक्क्या ॥ ८५ ॥ आदिर्निकोलेसाडी ॥ तयाफळेजेविबोडी ॥ ज्ञा
हालाअसीतरोरखोडी ॥ जाढीन्काइ ॥ ८६ ॥ स्त्रणोभवाधेक्यचिभआनवे ॥ याधेक्याजोनागये ॥ तयाचाठाइजाणावे ॥ ज्ञा
नआहे ॥ ८७ ॥ तें संचिनामराग ॥ यडियानिनांजवपुदां भोग ॥ तेंव आगेरयाचेउरेग ॥ करुंमथान्दी ॥ ८८ ॥ सापाचानोडी ॥ पडि
बीजेउडी ॥ तेनारुमिसाडी ॥ मबुद्धजैसा ॥ ८९ ॥ तेंमाविंयोगजेणदुःखे ॥ तेंपमिशालकोप ॥ तेंस्नेहसाइमिस्संवे ॥ दुदासहये
॥ ९० ॥ आणिजेणेंजेणेंकडे ॥ दोषसुतीन्मनोडे ॥ तयाकमरयांयुटे ॥ नियमाचेदाटी ॥ ९१ ॥ ऐंमंगेसिगाआडनी ॥ जयाचीपरीअस
ती ॥ तोचिनोज्ञानसंपती ॥ गोसांवीगा ॥ ९२ ॥ आनांआणीकहीएक ॥ लक्षयाअलंकित ॥ मांगनभोदक ॥ धनजया ॥ ९३ ॥ स्त्रो-
असक्तिरममिषंगः पुत्रदारपरहादु ॥ मित्यंचसमनिचत्वमिसानिदोपपनिमु ॥ ९४ ॥ दीः तरिजोयादेहागरी ॥ उदासगेरि
यापरी ॥ उरितजैसाबिदारी ॥ बेसलाआहे ॥ ९५ ॥ हांष्टांचांसाउली ॥ वाटेजानोमिन्दी ॥ घरावरीतेनुडी ॥ आस्थानाही ॥
॥ ९६ ॥ साउलीसिस्तीचअसे ॥ परिअसेहेनेणिजैजेसे ॥ स्त्रियेचनेसं ॥ लाजुप्यनाही ॥ ९७ ॥ आणिप्रजाजेजाली ॥ निचे
वस्तीकरआली ॥ कांगोरुवेवसली ॥ ररवानेदी ॥ ९८ ॥ जांसपनिमाजीअसतां ॥ ऐसागेमपाडुसुता ॥ जैसाकावाटेजानां ॥
सासीवेविला ॥ ९९ ॥ किंवहुनापुंसा ॥ याजरियासाजिजेसा ॥ वेदाजेसीगेसा ॥ विहमिअसे ॥ १०० ॥ चेहूवांदासगृहपुत्री ॥ सा
होजयमेत्री ॥ तोजाणपांथानी ॥ ज्ञानासिगा ॥ १०१ ॥ महासिधुजैसे ॥ योयवर्षासरिस ॥ दक्षाभित्तैसे ॥ जयाचागा ॥ १०२ ॥
पाव-ओ-८३ सवते-ओ-९४ बेसविजा-ओ-९५ जया-ओ-९६ किर-

कान्तिदीक्षांछहोता॥ अध्यानकैसविता॥ तैसासररदुःखोचिना॥ सेदुनाही॥ २॥ ज्ञेयनमाचेनिपाडे॥ समत्वाद्यूननपडे॥ तेथज्ञान
 रोकेडे॥ वोळखेंत॥ ३॥ श्लो० मध्विचानन्ययोगेनमभिरच्यमित्तिरिणी॥ विविक्तदेशमेविलमरनिर्जनसंसिद॥ ११॥ टीका
 अधिमीवाचूनिकांही॥ आणीकगोमटेनाही॥ ऐसाभिश्चयपाही॥ जयाचोकेला॥ ४॥ शरीरवाचामानसा॥ पियालीकृतनि
 श्रयाचाकोषा॥ एकमीवाचूनिवास॥ नफहतीआन॥ ५॥ किं बहुनानिकदमिजा॥ जयचिंजाहानेमज॥ नेणआपणयाआत्मासे
 जा॥ एकिकेली॥ ६॥ रिगतावस्तुप्रापुटे॥ नाहीआगीजीवीसाकडे॥ गिरेकांतेचेभिपाडे॥ गंकसरनाजो॥ ७॥ मिळोनिमिळत
 विअसे॥ समुद्रीगंगाजळजेसे॥ मोहाडनिमजतेस॥ सर्वस्वमजती॥ ८॥ सूर्याचाहोणाहोदजे॥ कासूर्यासवेनिजाइजे
 हंविक्लेपणसाजे॥ प्रमेसिजेवी॥ ९॥ पैपाणियांचियेसृष्टिमिक॥ पाणीतळपेकोनुके॥ तेनुहरीक्षणतीकोनुके॥ येइवीतेपा
 णी॥ १०॥ जोअनन्यपारी॥ सीजाहालाहीमानेवरी॥ नोचिनासूनधारी॥ ज्ञानपगा॥ ११॥ आणितोथेथोतेनेदे॥ तपावेनेचे
 रवटे॥ आवडतीकपाटे॥ वसवूंजया॥ १२॥ शैलकक्षाचोकुहरे॥ नळाशयपरिसरे॥ अधिष्ठाजाआदरे॥ नगरानये॥ १३॥ बहुए
 कांतावरीमीती॥ जयाजनपदाचौरवती॥ जाणमनुष्याकारसूती॥ ज्ञानाचोती॥ १४॥ आणीकहापुदती॥ चिद्रेगासमती॥
 ज्ञानमचियेनिरुती॥ लागिसांगी॥ १५॥ श्लो० अध्यात्मज्ञानिनित्यत्वंतत्त्वज्ञानार्थदर्शन॥ एतद्ज्ञानमिगिमोक्तमज्ञानयदतो
 न्यथा॥ १६॥ टी० तिरपरमात्माऐसे॥ जेएकवरुअसे॥ तेजयादिस॥ ज्ञानासव॥ १६॥ तेएकवाचूनिआने॥ जियेंसुवस्त
 गादिज्ञाने॥ तेअज्ञानेसामने॥ मिश्चयकेला॥ १७॥ स्वर्गजाणेहेसांडी॥ प्रवविषयीकानसाडी॥ देअध्यात्मज्ञानीबुडी॥
 सदाताची॥ १८॥ मंगालियवांदे॥ शाधूनियाआकाद॥ निधिजेविनेने॥ राजपथा॥ १९॥ तैसेअज्ञानजाताकरी॥ आश
 पाठ॥ ओ० ४॥ तिहीं॥ ओ० ७॥ अनुसरलाजो॥ ओ० ९॥ तरि॥ अविकल्पण॥ ओ० १४॥ वरी॥ ओ० १८॥ आत्म॥ ७॥

वैचित्र्यं कुरुते सारी ॥ मगमनसु हि माहरी ॥ अ-व्यात्मजानी ॥ २७ ॥ ह्यणो एक-हं चि-आथी ॥ येरजाणजे ते भ्रान्ती ॥ ऐसी भिक्खे सी मती ॥
 मेरु होय ॥ २१ ॥ एवें भिक्खु जयाचा ॥ हारं अध्यात्मजानाचा ॥ अ-वदेवो गगनींचा ॥ ते सारां हला ॥ २२ ॥ तथा चि या ठायीं ज्ञान ॥
 या बोला नाहीं आनै ॥ जे ज्ञानीं वसले मन ॥ ते हं चि ते तो ॥ २३ ॥ मरि वेसले पणे जे होये ॥ ते बुसनां चि बोले न होये ॥ गरि ज्ञान-
 या आह ॥ मरि सा पाड ॥ २४ ॥ अणितत्वज्ञान निमळ ॥ फळे जे एक फळ ॥ ते जे यही वरी सैकळ ॥ दिदी होय जेण ॥ २५ ॥ ये कुर्वा
 बोधा आने नि ज्ञान ॥ जरी ज्ञेय न दिसे चि मने ॥ तरि ज्ञान त्या सह न मन ॥ आहाला संता ॥ २६ ॥ आंध्र जे या हातीं दिवा ॥ दैऊ भिंकार
 करावा ॥ ते सा ज्ञान भिक्खु य-आघवा ॥ नायो चि जाये ॥ २७ ॥ जरी ज्ञानाचे निमकाये ॥ परतलीं दिदी न पैसे ॥ ते स्फूर्ती चि असे ॥ अ-
 ध होउनी ॥ २८ ॥ ह्यणो नि ज्ञान जेतुं दावी ॥ ते तुन्दी वस्तु चि आघवी ॥ ते देखे ऐसी कुर्वा ॥ बुद्धी चोख ॥ २९ ॥ यालुगी ज्ञाने नि
 दोंबे ॥ दाविले जे यंदरे ॥ ते सी नि दुभेये ॥ आधि यत्ना जो ॥ ३० ॥ जे वदी ज्ञानाची वृद्धी ॥ ते वदी न याची बुद्धि ॥ तो ज्ञान हे शाब्दी ॥ क-
 रणे न लगे ॥ ३१ ॥ पै ज्ञाना नि ये पैसे संवे ॥ ज्ञानाची मती जेथी पावे ॥ तो हात धरि पाशि वे ॥ परत ताने ॥ ३२ ॥ तो चि ज्ञान हे बोल
 तो ॥ विस्मयो कवण शा दुसता ॥ काय सविनया ने सविना ॥ ह्यणा वें असे ॥ ३३ ॥ तंव अजो ते ह्यणती असे ॥ न सांगत याचा अति सा-
 येथी तेथ आनसा ॥ या भि सी काहा ॥ ३४ ॥ तुझा हा नि आह्वां ओर ॥ वक्तृत्वाचा हा हुणेर ॥ जे ज्ञान विषा फार ॥ निरोपिला ॥ ३५ ॥
 रस हो आचा अति मानु ॥ हा ये नासि कस्मिन्नु ॥ तरी अवन्त नि शत्रु ॥ करि नासि क्रांता ॥ ३६ ॥ ठायी बेंस नि ये वेळे ॥ जे रस सोय
 येऊ नि पळे ॥ नि ये चा येर वोडविळे ॥ कोणा अथा ॥ ३७ ॥ आयुवा चि विषयीं सादी ॥ परि सांज वणें टेकौ नेदी ॥ ते रघुर तोडी
 मुसथी ॥ पावी कवण ॥ ३८ ॥ ते सी ज्ञानीं मती न फांके ॥ येर जल्यती नेणों को तुंके ॥ परि ते असो नि के ॥ केले तुवा ॥ ३९ ॥ जया ज्ञान ले
 पाठ-ओ-३३ ह्यणणी वियवधान-ओ-२५ सरळ-ओ-२७ येऊन-ओ-३३

शोदशे॥ किंजनीयोगादसायासे॥ नैधर्णचे॥ अणितु॥ सियाऐसे॥ निरूपण॥ ४०॥ अमृतचि॥ सातवां॥ कडी॥ लागोकां॥ अलुयछे॥
 सरथाचा॥ दिवसी॥ कोडी॥ राणिजतका॥ ४१॥ पूर्णचंद्र॥ सीरानी॥ युगएक॥ असो॥ निपा॥ हरी॥ तरिका॥ यनपा॥ हत॥ आहानी॥ चकीरेंते॥
 ४२॥ तैसे॥ ज्ञानचें॥ बोळणें॥ आणिये॥ गेर॥ साळ॥ पणो॥ आना॥ पुर॥ काण॥ ह्यणें॥ आकर्णितो॥ ४३॥ आणिस॥ भाग्य॥ पाहुणा॥ ये॥ स॥
 भगा॥ ची॥ वा॥ द॥ त॥ हो॥ ये॥ तैसे॥ गेर॥ न॥ र॥ स॥ सो॥ ये॥ ऐसे॥ आ॥ र्था॥ ४४॥ न॥ सा॥ जा॥ हा॥ ला॥ य॥ संग॥ ज॥ ज्ञानी॥ आ॥ हा॥ मि॥ ला॥ ग॥ आ॥ पि॥ तु॥ ज॥
 हो॥ अ॥ बु॥ रा॥ आ॥ थि॥ ने॥ थ॥ ४५॥ ह्य॥ पो॥ नि॥ य॥ या॥ व्या॥ र॥ व्या॥ ना॥ पा॥ र्सा॥ से॥ आ॥ न्नी॥ चो॥ रा॥ ना॥ ना॥ थ्य॥ णो॥ नि॥ ये॥ सी॥ दे॥ र॥ व॥ णा॥ हो॥ सी॥ ज्ञानी॥
 ४६॥ तरी॥ आ॥ ना॥ य॥ या॥ वरी॥ म॥ ज्ञ॥ चा॥ मा॥ ज॥ धरी॥ प॥ द॥ सा॥ च॥ तरी॥ निरूपणी॥ ४७॥ या॥ सं॥ त॥ वा॥ क्य॥ सा॥ रि॥ से॥ ह्य॥ णि॥ त॥ ले॥ नि॥ द्य॥ नि॥ दा॥
 से॥ मा॥ सें॥ ही॥ ज्ञी॥ ऐ॥ से॥ म॥ नो॥ ग॥ न॥ ४८॥ या॥ वरी॥ आ॥ ना॥ लु॥ ह्यी॥ आ॥ ज्ञा॥ पि॥ ला॥ स्वा॥ र्मी॥ तरि॥ वा॥ या॥ ना॥ ग॥ जा॥ क॥ मी॥ वा॥ दो॥ ने॥ दी॥ ४९॥ ग॥
 व॥ द्ये॥ अ॥ व॥ रा॥ ज्ञान॥ ल॥ ह्य॥ ण॥ अ॥ व॥ धा॥ रा॥ श्री॥ ह॥ र॥ षा॥ ध॥ जु॥ ध॥ रा॥ निरूपिनी॥ ५०॥ म॥ ग॥ ह्य॥ पो॥ या॥ ना॥ वे॥ ज्ञान॥ ए॥ थ्य॥ जा॥ णो॥ वे॥ हें॥ स्व॥ म॥ न॥
 अ॥ णि॥ आ॥ प॥ वे॥ ज्ञा॥ नि॥ ये॥ हो॥ ह्य॥ ण॥ नी॥ ५१॥ क॥ र॥ त॥ व्वा॥ वरी॥ वा॥ व॥ क्का॥ डो॥ ल॥ त॥ द॥ रि॥ जे॥ आ॥ व॥ क्का॥ तैसे॥ ज्ञान॥ आ॥ ह्यी॥ डो॥ क्का॥ दा॥ वि॥ ले॥ छु॥
 ज॥ ५२॥ आ॥ ना॥ ध॥ न॥ ज॥ या॥ म॥ हा॥ म॥ तो॥ अ॥ ज्ञा॥ ना॥ ऐ॥ सी॥ व॥ द॥ नी॥ ते॥ ही॥ सा॥ गो॥ व्य॥ क्ती॥ ल॥ ह्य॥ ण॥ सी॥ ५३॥ ये॥ ह॥ र्वा॥ ज्ञान॥ पु॥ द॥ जा॥ ल्यी॥ या॥
 अ॥ ज्ञान॥ ज्ञा॥ ण॥ वे॥ ध॥ न॥ ज॥ या॥ ज्ञे॥ ज्ञान॥ न॥ क्ते॥ अ॥ पे॥ म॥ या॥ अ॥ ज्ञान॥ चि॥ ५४॥ पा॥ हें॥ पा॥ दि॥ व॥ स॥ आ॥ थ॥ वा॥ स॥ रे॥ म॥ ग॥ रा॥ त्री॥ चि॥ वारी॥ वा॥ वरे॥
 वा॥ चू॥ नि॥ का॥ ही॥ नि॥ स॥ रे॥ ना॥ ही॥ जे॥ वी॥ ५५॥ तैसे॥ ज्ञान॥ जे॥ थ॥ ना॥ ही॥ तें॥ अ॥ ज्ञान॥ चि॥ णा॥ ही॥ तरि॥ सा॥ गो॥ का॥ ही॥ का॥ ही॥ चि॥ द्दि॥ ति॥ ये॥ ५६॥
 तरि॥ स॥ भा॥ व॥ न॥ जे॥ ये॥ जो॥ मा॥ ना॥ चें॥ वा॥ ट॥ पा॥ हें॥ स॥ ल्का॥ रे॥ हो॥ ये॥ तो॥ ष॥ ज॥ या॥ ५७॥ ग॥ व॥ प॥ र्वा॥ ना॥ चो॥ शि॥ र॥ वरे॥ ते॥ सा॥ म॥ ह॥ त्वा॥ व॥ रु॥ नि॥ नु॥ त॥ र॥
 त॥ या॥ चि॥ या॥ वा॥ र्था॥ पु॥ रे॥ अ॥ ज्ञान॥ आ॥ हें॥ ५८॥ आ॥ णि॥ स्व॥ ध॥ र्मा॥ चो॥ म॥ ग॥ ब्दी॥ बा॥ ध॥ वा॥ चें॥ चा॥ पि॥ प॥ क्कें॥ उ॥ मि॥ ला॥ जे॥ सा॥ दे॥ उ॥ छी॥ जा॥ णो॥ नि॥ बु॥ द्धा॥
 पाव॥ ओ॥ ४९॥ वा॥ क्य॥ मी॥ ओ॥ ५०॥ उ॥ रे॥ ओ॥ ५१॥ ज्ञा॥ णो॥ पि॥ वा॥ ज्ञो॥ य॥ ५२॥

॥५९॥ यालीविद्येचापसार॥ सूर्यसूहाचा जोगोरा॥ करुते तुलें मोहरा॥ स्फुतीचिया॥ ६०॥ आंगवरिवरिचर्चा॥ जनते अर्धे
तां वंची॥ नोजाण अज्ञानची॥ स्वाणीग्य॥ ६१॥ आणि वद्दीवनी विचरे॥ ते यजळते जें सोंजम स्यावरे॥ ते सें जयाचे नि-
आचारे॥ जगादुःख॥ ६२॥ कोतुके जें जस्य॥ ते सवळा हूनि तरु रूपे॥ विवाहूनि सकल्ये॥ मारकजे॥ ६३॥ तया ते बहु अ-
ज्ञाव॥ ते अज्ञानाचे निधान॥ हिंसेसि आयतन॥ जयाचें जिणें॥ ६४॥ आणि फुके माता फुगे॥ रेचिल्या सवें चिउफुगे॥
ते सासयोग वियोगे॥ चेदेवो हटे॥ ६५॥ पडलो वारया चियावळसा॥ धुळाचे दे आकाशा॥ हरिखावळ घेते सा॥ स्तुती
वेळ॥ ६६॥ निदामोतकी आइके॥ आणि कपाळरूनि ठाके॥ शंबे वारे वारे भिथोके॥ चिरवले जे सा॥ ६७॥ ते सा माना ए-
मानी होये॥ जो कोळी चिउरी नराहे॥ नयाचा नार्यो आहे॥ अज्ञान पुरे॥ ६८॥ आणि जया चिया मनी गानी॥ वरिवरी मो-
कळी वाचा दूरी॥ आगे भिळी पेंगारी॥ मलतया दे॥ ६९॥ व्याधीचे चारा घालणे॥ ते संप्राजळ जोगावणे॥ चागाची अंतः
करणे॥ विरुद्ध करी॥ ७०॥ गारशगाळ गुडाळनी॥ कामिबोळी जें सीपिकर्ता॥ ते सी जयाची मली॥ बाह्यक्रिया॥ ७१॥ अ-
ज्ञाननया चिया ठायी॥ विविन असे याही॥ यावाया आनही नाही॥ सत्य मानी॥ ७२॥ आणि गुरुकुळी जे॥ जो गुरु मांनिउमजे॥ वि-
द्योघे निमजे॥ गुरुसीचिजे॥ ७३॥ नयाचे नाम घेणें॥ ते वाचा शरद्वन हाणें॥ परगुहनीं लक्षणें॥ बोलतां दय॥ ७४॥ आनारु-
रुभक्ताचे नाव रेवो॥ ते पावचि नाय चित्तदयो॥ गुरुभक्ताचे नाम या हो॥ सूर्य जे सा॥ ७५॥ येतुले निपाण पापचा॥ निस्तरल हं या-
चा॥ जो गुरु नलकचा॥ नामी जाला॥ ७६॥ हातां यवरी॥ तया नामाचे मयरी॥ मग ह्मणे अवधारी॥ आणि केचि के॥ ७७॥
नरि आगे कसे दिला॥ जो मने विकल्प भरला॥ अहर्बचा अवगळला॥ कुहा जे सा॥ ७८॥ नयात लीं कां दिवडे॥ आंत नुस-
पाव ओ॥ ६३ सावळ॥ ओ॥ ६७ मांके॥ ओ॥ ७० विरु॥ ओ॥ ७४ वाचे॥

धीहाडे ॥ अंयचिनेणेपाडे ॥ सवाद्येजा ॥ ७९ ॥ जेसंपादाळागोसणे ॥ उधेडे स्वाक्रमनसणे ॥ तेसे आपले परावेनेणे ॥ इव्यालागी ॥ ८० ॥ इयायामिसिहाचिवाडाया ॥ जेसामिळणीदावा अवावनाही ॥ नसारुगिर्विधाकाही ॥ विचारीना ॥ ८१ ॥ कर्मचावेच्छुके ॥ कांनित्यनेमिभिकदावे ॥ जेजयनदुःख ॥ जीवामाजी ॥ ८२ ॥ पापेजानिसुग ॥ पुण्याविषयोअतिभिलाग ॥ जयाचियामनेविंग ॥ विकल्याचा ॥ ८३ ॥ नोजाणानिर्मलका ॥ अज्ञानाचापुतळा ॥ जोवाधोनिअसेडोळा ॥ विताशेने ॥ ८४ ॥ आणिसुखेअळुभाडे ॥ जोधेयोपासोनिवळे ॥ जेसंतणबीजदळे ॥ सुगयेचने ॥ ८५ ॥ पावास्तुदलियासवे ॥ जेसंथिल्लुरकालवे ॥ तेसामयचिभिना- ॥ वे ॥ राजबजेजा ॥ ८६ ॥ मनारथाचिधाधोरसा ॥ बाहणंजयानियामानसा ॥ पुरोणिदलाजसा ॥ दुधियापाहो ॥ ८७ ॥ वायूचिनि ॥ सावाये ॥ धूर्तदगमराया ॥ दुःखवानाहाये ॥ तेसंजया ॥ ८८ ॥ वाउधणाचियापरा ॥ आन्ययकहोचिनधरा ॥ क्षेत्रीनीथी ॥ पुरी ॥ थारांनणे ॥ ८९ ॥ कामानियासरजा ॥ पुढतेबुडवपुढतीशेजा ॥ हिंदणवाराकोरजा ॥ तेसाजया ॥ ९० ॥ जेसारेविल्या ॥ विणे ॥ राजणथारांनणे ॥ नसापइतराहाणे ॥ येद्वेहिंद ॥ ९१ ॥ नयाचावायाउदड ॥ अज्ञानअसेविनड ॥ जोचांचल्येप्रावड ॥ मंकटाचे ॥ ९२ ॥ आपिपेगाधनुधरा ॥ जयाचियाअंतरा ॥ नाहोवादावारा ॥ सयमाचा ॥ ९३ ॥ लोडयेआलालोदा ॥ नमनीवाकु ॥ वेसवरवडा ॥ तेसानिवधाचियागोडा ॥ विहनाजा ॥ ९४ ॥ व्रतानेआदमाही ॥ स्वधमपायेवानही ॥ नियमाचीआशताही ॥ जयाचीक्रिया ॥ ९५ ॥ नाहोपापाचाकलाळा ॥ नणपुण्याचाजिझाळा ॥ लाजेचापुडवळा ॥ रवाणांनियाही ॥ ९६ ॥ कुळंसीजे ॥ पावमोरा ॥ वेदाजेसीदुःहा ॥ हुल्याहुल्यव्यापारा ॥ निवाडनणे ॥ ९७ ॥ वसुजेसामोकाट ॥ वाराजसाअफाट ॥ फुटलाजेसा- ॥ पाट ॥ निरजनी ॥ ९८ ॥ आधेळहातरामान्ने ॥ कांडोगरीजेसंपदले ॥ तेसेविषयस्मदले ॥ चिजजयाचे ॥ ९९ ॥ पउकरडाका ॥ पाव ॥ ओ ८८ धुळा ॥ ओ ९० बुडबुडनी ॥ ७

यमपडे ॥ मोक्रादकोणानातुडे ॥ ग्रामद्वारींचें आडें ॥ नोनांदीकोणा ॥ ७० ॥ जें सें सर्वो भवनजालें ॥ कांसामात्याबोक्राआलें ॥ वाषियेचेउ
 म्भिविलें ॥ कोणनारिगे ॥ ११ ॥ तें सें जयाचें भंतः करणा ॥ नयाचावार्थें संपूर्ण ॥ अज्ञानाचाजाणा ॥ क्रुद्धिआहे ॥ १२ ॥ आपणीविषयांचीनो
 डी ॥ जोजीतमंलानसाडी ॥ स्वर्गाहारावयाजोडी ॥ एधुनीचि ॥ १३ ॥ जो अखंडभोगाजि ॥ जयाव्यसनकामक्रुडेचें ॥ सुरवे
 रवोनिधिरुक्ताचें ॥ संचैलुक्ती ॥ १४ ॥ विषोशिणोभियांराहें ॥ परिनिशणसावधनोहे ॥ कुहिलाहानिराये ॥ केदीजेसा ॥ १५ ॥ स्वरो
 देंकोनेदीउडे ॥ सानोनिफोडीनाक्रुडे ॥ तद्दोजेविंनक्राडे ॥ मायोनास्वर ॥ १६ ॥ तेंसाजोविषयांलागो ॥ उडीघालीजळतेधारी ॥
 व्यसनार्चंआंगी ॥ लुणोमिरवी ॥ १७ ॥ फुटोनिपडनव ॥ मगवाढवोहाव ॥ परिनहणेतमाव ॥ रोहिणीची ॥ १८ ॥ तेंसाजन्मोनिमू
 लुवरी ॥ विषयांचाभितावहुतीपरी ॥ तद्दोत्रासनयेधरी ॥ अधिक्त्रमा ॥ १९ ॥ पहिलियेबाळदशे ॥ आर्देबाहेंचिपिसें ॥ तेंसरे-
 मगस्त्रीमासे ॥ फलोनिराक्ते ॥ १० ॥ मगस्त्रीभोगितायावो ॥ वृद्धाप्यलागेयेवो ॥ तेंकानोचिमेमभावो ॥ बाळक्रासिआणी ११
 आपळेंव्यालेंजेंसें ॥ तेंसीबाळेंपरिवसे ॥ परिजोवसरेतेनत्रासे ॥ विषयांमिजो ॥ १२ ॥ जाणतयांचावार्थी ॥ अज्ञानासिपार
 नाही ॥ आताआणीक्रुकाही ॥ चिद्धेसांगो ॥ १३ ॥ तरिदेहहानिआत्मा ॥ ऐसेयाजोमनोधर्मो ॥ वळयेनियाक्सा ॥ आरंभक
 री ॥ १४ ॥ आणउणेंकापुरे ॥ जेंजेंकाह्याआचरे ॥ नयाचिनिआविस्तर ॥ कुथोलागो ॥ १५ ॥ डोदयेवेविलेभोजें ॥ देवलविसेजे
 विपुज ॥ तेंसाविद्यावयसामाजे ॥ उताणाचाले ॥ १६ ॥ हाणमीचिएकअर्थी ॥ माझानिधरोसपती ॥ माझीआचरतीरितो ॥
 कोणाआहे ॥ १७ ॥ नाहीमाझीनिपाडेपाड ॥ मीसर्वज्ञएकचिरूट ॥ ऐसासर्वतुहीगड ॥ घेअनिवाके ॥ १८ ॥ व्याधिलागलियासा
 पुसा ॥ नयेचिभोगदावूजेसा ॥ निव्वेनसाहेजेतेसा ॥ उदिलाचें ॥ १९ ॥ पैगुणेततयास्वाये ॥ स्नेहेंकोजळतजाये ॥ जेयवेविजे
 पाठ ॥ ओ ॥ जाय ॥

तेयहोये॥ मसीऐसा॥ २०॥ जीवनेंशिंपिलानिडिपडि॥ विजिलाभाणसांडी॥ नागलातरीकाडी॥ उरोनेदी॥ २१॥ अळुमाळप्रका-
 शकरी॥ तेतुलेनीचउवागधरी॥ तेसियादेपाचियापरी॥ सविधजो॥ २२॥ ओषधचेभिनावेअमृते॥ जेसानवज्वरआबुंथे॥ को-
 विषचिहोउनिपरने॥ सर्पादूध॥ २३॥ तेसासहुणामित्सर॥ व्युत्पन्नीअहंकार॥ तपोज्ञानेअपार॥ नाठाचदे॥ २४॥ अत्यजरा-
 णिवेवैसविला॥ आरधारणभिकुळा॥ तेसागवंपुगला॥ देखसीजो॥ २५॥ जोलातणेऐसानलवे॥ पाथरनेविनद्रवे॥ गुणि-
 यासनागवे॥ फाडसैजेसे॥ २६॥ किंवहुनानयापासी॥ अज्ञानआहेवार्तसी॥ हेनिकुपेंगानुजसी॥ बोलनअसो॥ २७॥ आ-
 णीकहीधनंजया॥ जोग्रहदेहसामग्रिया॥ नंदखेकाळीचिया॥ नन्येनया॥ २८॥ कृतस्याउपकारवेल्या॥ काचोगाव्यवहारदि-
 धला॥ निस्सरास्तविला॥ घिसरेजेसा॥ २९॥ वाटाळतांलाविने॥ नेतेंसंचिकानपुसबोले॥ कींपुदनीवोदाळुआले॥ स्रुणेजेस-
 ॥ ३०॥ बेडूकसापाचियागोंदी॥ जातसेसबुडबुडीं॥ तोमसिकारियाकोंडी॥ स्मरनाजेवी॥ ३१॥ तेसीनवहीद्वारेस्त्वनी
 आंगीदेहाचिलुनीजिनी॥ जेणजालतेचिनी॥ सलेनाजया॥ ३२॥ मातंचाउदरकुहरी॥ पंचूनिंविखेचादाथरी॥ जतरोनवमा-
 सवरी॥ उकडलजो॥ ३३॥ तियेगमींचियथ्या॥ कांजजालेउपजना॥ नेकाहोचिसवथा॥ नाठवीजो॥ ३४॥ मळमूत्रपंक्ती॥ जे-
 लोळजेचाळेअंकी॥ देखोनिजोनशुकी॥ नासनेयो॥ ३५॥ काल्दीचिनाजन्मगेले॥ पाहेचपुदनीआले॥ ऐसेहंकाहीवाटले॥ नाहो-
 जया॥ ३६॥ आणपेंतयाचियापरी॥ जीविनाचीफरारी॥ देखोनिजोनकरी॥ मृत्युचिना॥ ३७॥ जिणियाचेभिवशासे॥ मृत्यु
 एकएथधसे॥ हेंजयाचेंभमानसे॥ माभिजेना॥ ३८॥ अल्पोदकोचामासा॥ हेनादेगुमियाआशा॥ नवचेचिकंजैसा॥ अगा-
 धडोहा॥ ३९॥ कागोरोनियामुली॥ मृगव्याधाहृष्टीनयाली॥ गळनपाहतागिकेलो॥ उडोमीने॥ ४०॥ दीपाचियाझगमगा॥
 पाठ॥ ओ० २९० उपेग॥ ओ० ३३ मातृकादे० सुनी० जे अथना जेणे०

जळालहें पंगेगा ॥ नेणवें चिपेंगा ॥ जयापरी ॥ ४१ ॥ गंगारनिद्रा स्मरवें ॥ घरजळत असें तें नंदरेवो ॥ नेणांत जे विवरवें ॥ रांधिलें अन्न
 ॥ ४२ ॥ तें साजो विनाचें निमिषें ॥ हा मृत्युचि आला असो ॥ हें नेणें चिराजसें ॥ स्मरवें जोगा ॥ ४३ ॥ शरीरें चि वाढ्ये ॥ अहोरात्रांचे जोगी
 दी ॥ विषय स्मरवो दी ॥ साच विमाना ॥ ४४ ॥ परिवा पुढासु सें नेणें ॥ जें वेश्यें तें सर्व स्वदेणे ॥ नें चितें नागवणें ॥ रूपाण्या ॥ ४५ ॥ स
 वचोरांचे राजणें ॥ नें चितें नागवणें ॥ नेपास्त पनकरणा ॥ नोचिनाश ॥ ४६ ॥ यादुरागे आगस्तले ॥ नेतया चि नावरवुतलें ॥ तें सें ने
 णें मुल्लें ॥ आहारनिद्रा ॥ ४७ ॥ समुखशून्या ॥ धांव नया पायच पक्षा ॥ प्रतिपदां जवळा ॥ मृत्युजेवो ॥ ४८ ॥ तेविंदे हा जं वजववा
 दा ॥ जं वजव दिवसाचा पवाड ॥ जं वजव स्मरवाड ॥ भोगाचा यया ॥ ४९ ॥ नंवत व अधिकाधिके ॥ मरण आसु थ्यातिजिने ॥ मीठ
 जे विरुदें ॥ यासिजत असो ॥ ५० ॥ तें सें जे विल्व जाये ॥ यास्तव काळें तें न पाहें ॥ हे हा तो हात चित्त होये ॥ वाउ वजया ॥ ५१ ॥ किं
 बहुना पाडवा ॥ हा आंगीचा मृत्युगित्यनवा ॥ नंदरेव जोगावा ॥ विषयचिया ॥ ५२ ॥ तो अज्ञान देशी चारावो ॥ याबोला महाबाहो
 न पडे गाढावो ॥ आणिकाचा ॥ ५३ ॥ पैजि विनाचे निमोये ॥ जेसा कां मृत्यु नंदरेवें ॥ तेसा चि नासुण्यपेवें ॥ जरा नगणी ॥ ५४ ॥ क
 दा होला दळागाडा ॥ कां शिखरे निस्तला धाडा ॥ तेसा नंदरेवें जोगी पुढां ॥ वार्थस्य आह ॥ ५५ ॥ कां आडवो हळा पाणी आलें ॥
 कां जें संधसयाचें स्त सभानने ॥ तेसा नंदरेवें जोगी पुढां ॥ वार्थस्य आह ॥ ५६ ॥ पुष्टि लागे विषयो ॥ कां निपाहे निमरो ॥ मस्तक आ
 दरी शिरा ॥ नूपवळा ॥ ५७ ॥ दादा साउळ परी ॥ मान हा लो निवारी ॥ नरी जोगरी ॥ मारचो पेस्त ॥ ५८ ॥ पुढेल उरी आदळे ॥ नं
 वनंदरेवें जे विअधिके ॥ कां दाळयां वरले निगळे ॥ आळसी निषे ॥ ५९ ॥ तेसा नंदरेवें जोगी पुढां ॥ मारचो पेस्त ॥ ५९ ॥ पुढेल उरी आदळे ॥ नं
 रेवें नाचि साचें ॥ अज्ञानगा ॥ ६० ॥ दैत्य भस्मसेकुजे ॥ कां विराट् लांगे कुजे ॥ पारि न ह्यण पाहे माझे ॥ ऐसें चि हादल ॥ ६१ ॥ आ
 पाठ ओं ॥ ४५ ॥ वश्यच ओं ॥ ४६ ॥ ते निमरण ओं ॥ ४७ ॥ पासे ओं ॥ ४८ ॥ बाणी ओं ॥ ४९ ॥

णि आंगी वृद्धिर्वा ॥ संज्ञायोरु निमरणाच्ची ॥ परिजयानारण्याच्ची ॥ भूतो न फिद ॥ ६२ ॥ तो अज्ञानाचेयर ॥ हें साच निघेउत्तर ॥ ते गो-
 विपरिघेसी थोर ॥ चिह्ने आणिक ॥ ६३ ॥ तो रावाधाचिये आवडे ॥ एक वेळ आलाचरोनि देवं ॥ तेणो विश्वास पुढी थावें ॥ वस्तू जेसा
 ॥ ६४ ॥ कासपय आता ॥ अवंचने वया आणिल्या स्वस्थ ॥ येतु लिया साठी निश्चित ॥ नास्तिक होये ॥ ६५ ॥ तैसेंचि अवचते हे ॥ ए-
 क दोनी वेळ चित्वा हे ॥ एथरो एव आह ॥ हे मानी नाजो ॥ ६६ ॥ वैरिया निंद आला ॥ आतां दुहे माझी सरली ॥ हे मानी नासाप-
 ली ॥ मुकला जेवीं ॥ ६७ ॥ तैसी आहार निंदेची उजरी ॥ रोग निवात जो वरी ॥ तंजो न करी ॥ व्याधीची चिंता ॥ ६८ ॥ आणिल्या
 नादिमेळे ॥ सपत्ती जवजव फळे ॥ तेणेर जे डोळे ॥ जार्ता जयाचे ॥ ६९ ॥ सवळें चि विवोग पडेल ॥ वेळोनि विपत्ति येईल ॥ हे दुःख
 पुढील ॥ देखेनाजो ॥ ७० ॥ तो अज्ञान गाण्डवा ॥ आणितो हितो चि जाणावा ॥ जो इंदिये अहासवा ॥ चरो एथ ॥ ७१ ॥ वयसेचे नि-
 उवाये ॥ सपत्तीचे नि सावये ॥ सव्यासे व्यजाये ॥ सरकां देत ॥ ७२ ॥ नकरा वते करी ॥ अस भाव्य मनी धरी ॥ चितून येते विचारी
 जयाची मती ॥ ७३ ॥ रिघे जेथ न रिघावें ॥ मारो जे न ध्यावें ॥ स्पर्श जेथ न लगावें ॥ आगमन ॥ ७४ ॥ न जावे तेथ जाये ॥ न पाहवें
 तंजो पाहे ॥ न रवावें तंरवाये ॥ तेवीं चितोषे ॥ ७५ ॥ न धरावा ने सरग ॥ न लुगावें तेथ लाग ॥ नाचरावा जो मारी ॥ आचरे जो ॥
 ॥ ७६ ॥ नायकावें ते आदके ॥ न बोलावें ते वके ॥ परादिष होनी लहे देखे ॥ प्रवर्तता ॥ ७७ ॥ आंगामना सिरु चियावे ॥
 येतु ले निहत्या हत्य ना ठेवें ॥ जो करणें याचे नि नावें ॥ प्रलतें चि करी ॥ ७८ ॥ परिपाप मज होईल ॥ कानरक यात ना येईल ॥ हे कां-
 हो चि पुरील ॥ देखेनाजो ॥ ७९ ॥ तयाचे नि भागलगे ॥ जगी अज्ञान दादुगे ॥ जे सजाना ही संगे ॥ दोबो संके ॥ ८० ॥ परि असो हे
 आदक ॥ अज्ञान चिह्ने आणिक ॥ जेणे लुज सम्यक ॥ जाणवेल ॥ ८१ ॥ तरि जयाची र्पा भि पुरी ॥ गुंतली देखे सिधरी ॥ न वयथ
 पाठ ॥ ओ, ८१ जाणवें ते, ७.

केसरी॥ प्रमरजेसा॥ ८५॥ साकरोचियाराशी॥ बेंसलीनुवपासी॥ तैसेनिस्त्रीचित्त आवेशी॥ जयचिंमन॥ ८३॥ विलावेडूक कुंदी॥ म
 शक गुलशेबुंदी॥ जैसा दोरस बुडबुडी॥ रूतलापकी॥ ८४॥ तैसे घरी हनिमियणे॥ नाही जे विमने प्राण॥ जयासा पहा उनि-
 भसणे॥ मादो नित्य प्रियोत्तमा चिया कंठी॥ प्रमदाये आदो॥ तैसी जे विसी को पढी॥ धरूनि वाकि॥ ८६॥ मधुर मोद सै॥ म
 धुकर जे जै सै॥ गृह संगोपन ते सै॥ करी जोगा॥ ८७॥ ह्या नारपणी जाले॥ रत्न एक विषाद ले॥ तया चि का जे गुले॥ माता पित
 रा॥ ८८॥ ते तुलें निपाडें प्राथी॥ यरी मज जया आस्था॥ आणि स्त्री वाचूनि सर्वथा॥ जाणे नाजो॥ ८९॥ तैसा स्त्री देही जो जीवें
 पंजे निर्यास वें भावें॥ कोण मी काय करावें॥ कांही नें ॥ ९०॥ महा पुरुषा चें चित्त॥ जालिया वस्तुगन॥ राकव्य व हारजान॥
 जया परी॥ ९१॥ हाने लज्जान देरवे॥ परा पवाद ना देके॥ जयाची इंदिये एक सुरवे॥ स्त्रिया केली॥ ९२॥ चित्त आराधी स्त्रिये
 वें॥ आणि नित्ये चि छेद नाचें॥ साकड गारुडियाचें॥ जे सें होये॥ ९३॥ आपण पेही शिणवी॥ इच्छा मित्र दुखवी॥ मग कव
 ड चि वादवी॥ लोभ जैसा॥ ९४॥ तैसा दान पुण्य रखाची॥ गोत्र कुहु बावंची॥ परी बाइणी स्त्रियेची॥ उणें हो नैदी॥ ९५॥ प्रजिती
 देव नें जोगावी॥ गुरु ते बोले डीकवी॥ माय व्यापादावी॥ निदारपणा॥ ९६॥ स्त्रियेचा तरि वरवी॥ प्रोगसं पति अनेका॥ आणि व
 स्तु निवी॥ जे जे देखे॥ ९७॥ प्रेमा थिले निभक्तें॥ जे सें निभजि कुळ देव ते॥ तैसा एका ग्रचि ते॥ स्त्री जो उपासी॥ ९८॥ सा
 च आणि चोरवा॥ तें स्त्रिये शी चि अशेरव॥ येर विषयी जोगावणूक॥ तेही नाहीं॥ ९९॥ इथे ते हन कोणी देखेल॥ झणे वरवा
 सें जाईल॥ तरि युग चि बुडेल॥ एसे जया॥ ८०॥ नाय दया भोग॥ नमो हजै नागाची आणा॥ तैसी पाळी उणखुण॥ स्त्रि
 येची जो॥ १॥ किबहुना धन जया॥ स्त्री चि सर्व स्वजया॥ आणि नित्ये चिया जालिया॥ लागीं प्रेम॥ २॥ आणी कही जें संप
 पाव॥ ओ॥ ८५॥ जीवें तें मरणें॥ ओ॥ ८७॥ मधुर सादो सें॥ ओ॥ ८८॥ माणी कड पाडेल॥ ओ॥ ९५॥ गार मरी॥ ८९॥

स्त॥ त्रियैवैसंप्रिजात॥ तं त्रिवाहमिग्राम॥ मानजोको ॥ १॥ ता अज्ञानासीं मूळ॥ अज्ञानतेणें वळ॥ हे असो केवळ॥ तोतें चिरूप
 ॥ ४४॥ आणि मानलियासमगरी॥ मोर्त नुनैती स्वासी मरी॥ लाटाचा पिरझारी॥ आंदोळेजेवी॥ ५॥ तेविप्रियवृक्षपावे॥ आणि स-
 र्वेजो उंचावे॥ तेसाचि भ्रात्र्यासवे॥ तळवटये॥ ६॥ ऐसेमिजयाचंचिनी॥ वैषम्यसाय्याचा वावरी॥ वाहेतोमहामती॥ अज्ञान
 गा॥ ७॥ आणि माझाठाश मर्त्ता॥ फळांलागोजया आनी॥ धनोहे शोवरकी॥ नटणेजेवो॥ ८॥ नातरीकाताचामानसी॥ रि-
 गोनिस्वैरिणी जैसी॥ राहो जौरसी॥ जावग्रान्तांगी॥ ९॥ तेसा राते किरिदो॥ मजतीगायापरी॥ करूनिजो दिवो॥ विषोसूये
 ॥ १०॥ आणि भजनिग्र्यासवें॥ तोविषयजरानपावे॥ नरीसादी ह्याणे आघवे॥ टवाळहें॥ ११॥ कुणबदकुळवाडी॥ तेसा-
 आन आनदेवमाडी॥ आदित्याची परवडी॥ करीनया॥ १२॥ नयागुरुमार्गीटेवे॥ नयाचा सरगवांदरेवे॥ तरितयाचामन्त्रशि-
 के॥ येरनेये॥ १३॥ आणि जातेसिनि सूर॥ स्यावरी बहुसर॥ त्वोचिनाहो एकसर॥ निर्वीहजया॥ १४॥ मासीमृतीनि फजवी॥
 तेघराचेकोनी बैसवी॥ आपणदेवोदेवी॥ यात्रेजाय॥ १५॥ नित्य आराधनमाझे॥ काजो कुळदेवता मजे॥ पर्वीविशेषकीजे॥ पू-
 जा आना॥ १६॥ माझे अधिष्ठानघरी॥ आणि वावसे आनाचेकरी॥ पितृकार्यावसरी॥ पितराचा होये॥ १७॥ एकादशीचा दिवशी॥
 जेवुखापाड आह्यासी॥ तेलुनाचिनांगोसी॥ पचमीचा दिवसी॥ १८॥ वैयामोदकापाहे॥ आणि गणेशाचा चिहोये॥ चउदसी ह्याणे माये
 तुसाचि बोदुर्गे॥ १९॥ नित्य नमिनि कर्मसाडी॥ मगवै सेनवचंडी॥ आदित्यवारी वादो॥ बहिरवांपात्री॥ २०॥ पाठोसोमवारपावे
 आणि वेलेसी लिंगाथवे॥ ऐसा एक नाचि आघवें॥ जोगवीजो॥ २१॥ ऐसा अखंडमजनकू॥ उगानोहे सुणमरी॥ अवघेन
 गावदारी॥ आहो जैसी॥ २२॥ ऐसेमिजो मक्त॥ देवसी संराधवत॥ जाण अज्ञानाचा मृत॥ अवतारतो॥ २३॥ आणि एका
 पाद, ओ, ५, तीरी, ओ, ९, को, नटुनी, आणि कर्सी, ओ, १५, नेरुनिवैसर्वा, ओ, १६, नीब, ओ, २२, नसे, छ

भेचोस्ते॥ नपोवनेर्नथैवते॥ देरवोभोजोगाविदे॥ तोहोतोचि॥ २६॥ जयाजनपदीस्मरव॥ गजवजेचेंकवतिक॥ वानूआवडेलोकि
 क॥ तोहोतोचि॥ २७॥ आणि आत्मागोचरहोये॥ ऐसीजेविद्याआहे॥ तेआडकोभिजोरवाहे॥ विहांसजो॥ २८॥ उपनिषदांकडेन
 वचे॥ योगशास्त्रनस्ते॥ अध्यात्मज्ञानीजयाचि॥ मनचिनाही॥ २९॥ आत्मचर्चापक्षीआथो॥ ऐसियबुद्धीचीप्रती॥ पाडूनिजया
 चैमती॥ बोद्दाळजाहाली॥ ३०॥ कर्मकांडतरोजाणे॥ मुरवोहकपुराणे॥ ज्योतिषीतोह्यणो॥ तेसोचिहोये॥ ३१॥ शिल्पीअतिनिपु-
 ण॥ सूपकर्महीमवीण॥ विधिअर्थवगा॥ हातींआथो॥ ३२॥ कोकीनाहोतेले॥ भारतकरोह्यणितले॥ आगमआपाविले॥ मूर्तेहो-
 नी॥ ३३॥ नीतीजातरू॥ वेद्याकहीबुझे॥ काव्यनादकीदुजे॥ चतुरनाही॥ ३४॥ स्मृतीचीचची॥ दशजाणेगारुडेचि॥ नियत
 यजेचि॥ पादकीकरी॥ ३५॥ पेंव्याकरणीनिरवडा॥ तर्कअतिगाढा॥ परीएकआत्मज्ञानीफुडा॥ जल्यथजो॥ ३६॥ तेएकवा
 चुनिआयवाशास्त्री॥ सिद्धान्तिमाणायात्री॥ परेजकोनेसूकनसाचो॥ नपाहेगा॥ ३७॥ सोराआगीअशेषे॥ पिसेंअसतीजो
 बसे॥ परिएकहीदृष्टीनसे॥ तेसंतगा॥ ३८॥ जरीपरमाणुएवढे॥ सजीवनीसूकजोदे॥ तिरबहुकायगाडे॥ परणेयेरे
 ॥ ३९॥ आसुथवीणलक्षणां॥ सिसेंवीणाअळकरणे॥ वोहरेवीणबाधावणे॥ तोविदंबगा॥ ४०॥ तेंसंशारूजातजाण॥ आ
 यवीअममाण॥ पार्थाअध्यात्मज्ञानीवेण॥ एकमेनी॥ ४१॥ यालगीअर्जुनापाही॥ अध्यात्मज्ञानाचावर्षी॥ जयाभित्यबोधना
 ही॥ शास्त्रमूढा॥ ४२॥ तयांशरीरजंजाडे॥ तेंअज्ञानचेवीधिरूढले॥ तयाचेंव्युत्पन्नतेले॥ अज्ञानवेसी॥ ४३॥ तेजेजेबो-
 ले॥ तेंअज्ञानचिफुलले॥ तयाचेंपुण्यजेफळले॥ तेंअज्ञानगा॥ ४४॥ आणि अध्यात्मज्ञानकांहो॥ जेणेंमानिलेचिनाहो॥ तोज्ञाना
 र्थनेसेकाडे॥ हेबोलावेअसे॥ ४५॥ ऐलीचिथडेनपवतां॥ पळेजोमायोता॥ तयापेडुदोणीचीवार्ता॥ कायहोये॥ ४६॥ कंसा
 पाठ॥ ओ॥ ३९ कीर॥ ओ॥ ४१ व्युत्पत्तीते, ४२

रववांचिजयं ॥ शीररोविन्दुष्वचि ॥ तौकेविपरिवर्चि ॥ तैविन्दुस्त्रये ॥ ४५ ॥ तैविअआत्मज्ञानजया ॥ अनोळरवधनजया ॥ तयाज्ञा
 नथेदुरावया ॥ विषोकाई ॥ ४६ ॥ ह्यणेनिआतां वशेषं ॥ तोजानचिंतनदेखे ॥ हेसागांवआखेलेखे ॥ नलगेतुज ॥ ४७ ॥ जेह्या
 सगमिवाविले ॥ तेकांचिपाहिचेथाले ॥ तैसेसागिअपदेवो ॥ नते ॥ तैचिहोये ॥ ४८ ॥ वाञ्छुनियावेगळे ॥ रूपकरणेहेनमिळे ॥ जेविअ
 वनिनेआंधळे ॥ तेदुजेनमिये ॥ ४९ ॥ एकदेयेउपहृती ॥ ज्ञानोचिहेसागुती ॥ अमानिलादिप्रभृती ॥ वारवाणिती ॥ ५० ॥ जियेज्ञा-
 नपदेअवरा ॥ वैठियपरिमोहरा ॥ अज्ञानयाआराग ॥ सहजेयेयी ॥ ५१ ॥ सागासागचिनिअर्थी ॥ एसेसागीतलेओसुवुंदे ॥
 नाउफरादीदयेज्ञानपदे ॥ तैचिअज्ञान ॥ ५२ ॥ ह्यणोचिदयावाहणी ॥ वेन्नीम्याउपनवणी ॥ वाञ्छुनिदुधामेळउनिपाणी ॥ फारकी
 जेकाई ॥ ५३ ॥ तैसेजीनवउबडी ॥ पदाचीकोरनमाडी ॥ सुळअनोचियेवाही ॥ निर्मल्यजाहानो ॥ ५४ ॥ तंवओनेद्वयणतीरोहे ॥
 कं परिहारावावआहे ॥ विहिसीकांवाये ॥ काविपोपका ॥ ५५ ॥ तुतेओसुरारी ॥ ह्यणितनेमकुद्वरी ॥ जेअभिप्रायगह्वरी ॥ ज्योकि
 लेआही ॥ ५६ ॥ तेंदेवाचेंमनोगत ॥ दावितआहासोत्तुमने ॥ हेहाह्यणतांनिन ॥ दादेलतुझे ॥ ५७ ॥ ह्यणोनिअसोहूनबोलो ॥
 परिसावियागातोपलो ॥ जेंज्ञानतीरयेमच्छांविजो ॥ अवणसरयान्चि ॥ ५८ ॥ आतोदयावरी ॥ जेतोओहीरी ॥ बोलिलोतेकरी ॥ कथने
 गा ॥ ५९ ॥ दयासंतवाक्यासरिसं ॥ ह्यणितनेनिहंतदासे ॥ जीअवधारानरीसे ॥ बोलिलेदेवे ॥ ६० ॥ ह्यणतीतुषांपाडवा ॥ हा
 चिकसुसुचयआयवा ॥ आदिकितातोजाणावा ॥ अज्ञानभागा ॥ ६१ ॥ दयाअज्ञानविभागा ॥ पाठीदेऊनिपेंगा ॥ ज्ञानविरवींचागा
 ह्याहोदजे ॥ ६२ ॥ यगनिर्वाखिलनिज्ञाने ॥ जेयमेदुलुमने ॥ तेंजाणावयाअजुने ॥ आसकेली ॥ ६३ ॥ तंवसर्वज्ञाचारावो ॥ ह्यणे-
 जाणेनितयान्चाभावा ॥ परिसंज्ञयाअभिभावा ॥ सागेआतां ॥ ६४ ॥ श्लो- जेययत्नवस्याभियत्तज्ञात्वायुतममुने ॥ अनादि
 पाठ, ओ, ४९ येई, ओ, ५१ जें, ध

मत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १२ ॥ टी० तद्विज्ञेय एवेत्यणो ॥ वस्तुनैवेयेणो विचारणे ॥ ज्ञानेनैवांश्च निरूपणे ॥ उपायानये ॥ ६५ ॥ आ-
 णिजाणि तत्तेषां बरोते ॥ क्रांतीं वरणेनाहं जेथे ॥ जाणणे चित्तम्याते ॥ आणज्जयाचे ॥ ६६ ॥ जे जाणितलें यासाठी ॥ संसाराकाङ्क्षि-
 यं कांटी ॥ जिये मिजा जे येटी ॥ नित्यानदाचा ॥ ६७ ॥ ते ज्ञेय गाऐसे ॥ आदि जयानसे ॥ परब्रह्म आपेसे ॥ नामजया ॥ ६८ ॥ ज्ञे-
 हीं ह्यणो जादजे ॥ तंव विश्वाकारं देखिजे ॥ आणिविष्वचि ऐसे ह्यणिजे ॥ तदिहे माया ॥ ६९ ॥ रूपवर्णव्यक्ति ॥ नाही दृश्य दृश-
 स्थिती ॥ तद्विज्ञेय ऐसे आशी ॥ ह्यणवेया ॥ ७० ॥ आणिसाच चिजरीनाही ॥ तदिमहदादिकोणे वायी ॥ स्फुरत कंचे काई ॥ तणे
 वीण अभसे ॥ ७१ ॥ ह्यणो निअर्थानार्थ हेवोली ॥ जे देखे निमुषी जाहाली ॥ विचारची मोडली ॥ वाटजेथे ॥ ७२ ॥ जैसी प्रादु-
 र्दशा रावी ॥ तदाकार अभसे मुखी ॥ तैसे सर्व होऊनियां सर्वी ॥ अभसे जे वस्तु ॥ ७३ ॥ स्तो० सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽस्ति शिरोमु-
 रं ॥ सर्वतः श्रुतिमस्त्रोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १३ ॥ टी० आयवांचि देशी काळी ॥ नवतो देश काळ वेगळी ॥ जैकियास्थू कां स्फू-
 र्दी ॥ नेचिहानजयाचे ॥ ७४ ॥ तया ते या कारणे ॥ विश्वबाहु ऐसे ह्यणणे ॥ जे सर्व चि सत्तणे ॥ सर्वदा करी ॥ ७५ ॥ आणिसमस्तां हो-
 वायां ॥ एक काळी घनं जया ॥ आलें अभसे ह्यणो निजया ॥ विश्वाग्निनाम ॥ ७६ ॥ पैंसवितया आंगजेळे ॥ नाहो ते वेगळे वेगळे ॥ तैसेसु-
 वमष्टे सकळे ॥ स्वरूप जे ॥ ७७ ॥ ह्यणो निविश्वतश्च स्फ ॥ हा अचक्षूचा नार्थ पस्फ ॥ बोलावया दस्त ॥ जाहाल वेद ॥ ७८ ॥ जैस बो-
 चे शिरावरी ॥ जै नित्यानंद रंगचे परी ॥ ऐसिये स्थिती वरी ॥ ७९ ॥ पैंगा मूर्ति तचि सुरव ॥ हुनाशन जै-
 से देख ॥ तैसे सर्व पणें अशेष ॥ भोक्तें जे ॥ ८० ॥ याज्ञाणिगतापार्था ॥ विश्वतोमुख हे व्यवस्था ॥ आली वाक् पथा ॥ श्रुती चिया
 ॥ ८१ ॥ आणिवस्तुमार्त्रांगन ॥ जैसे अभसे मलम ॥ तैसे राब्द जातीकान ॥ सर्व वजया ॥ ८२ ॥ ह्यणो निअस्तीतयाते ॥ ह्यणो सर्व

पाठः ओ० ७२ विचारशिः ओ० ७५ हे ओ० ७९ शरीरावर्गः, नित्यमांदशिरावरी, ओ० ८० पर्णी, ओ० ८२

न आदकृते ॥ गवृजसर्वते ॥ आवरुनि असे ॥ ८३ ॥ ये हवीं तरी महा मती ॥ विश्वतश्च सद्गुणभृती ॥ तथा चिय व्याप्ती ॥ रूप व्रते ॥ ८४ ॥ वांस्तु
 निहस्तनेत्रगाय ॥ हे माधव ते युक् आह ॥ सर्वशून्यलाचानमाहे ॥ निष्कर्ष जे ॥ ८५ ॥ पै कृत्सुळा तें न ह्मोळे ॥ ग्रसिज्जन असे ऐसें कळे ॥
 परि ग्रसिते आसावे गळे ॥ अस कार्ड ॥ ८६ ॥ ते ससाचि विजे एक ॥ तेथें कव्याप्य व्यापक ॥ परि बोलाव था नावेक ॥ करावें लागे ॥ ८७
 पै रत्न जे दावा वें जा हा नें ॥ तें विंदुलें एक वेलें ॥ ते सें अद्वैत सागा वें लोले ॥ तें दून काजे ॥ ८८ ॥ ये हवीं तरी पाशी ॥ गुरु शिष्य स
 न्था ॥ आडळ पडे सर्वथा ॥ बोल प्रवृत्त ॥ ८९ ॥ ह्यणोनि गायुती ॥ द्वैत भावें अद्वैती ॥ निरूपणाची वाहती ॥ वाट वेळी ॥ ९० ॥ ते चि आ
 ना अवधारी ॥ इयेनेत्र गोचरें आकारी ॥ तें जे यगाजयापरी ॥ व्यापक असे ॥ ९१ ॥ श्लो ० सर्व द्विगुणाभास सर्व दिश विवर्जित स
 अस न्त सर्व भूचैव निरुण गुण भोक्तृ च ॥ १४ ॥ टी ० तर ते गां करा दी ऐसें ॥ अवकाशी आकाश जे सें ॥ पटी पंद होऊ नि असे ॥
 ते तु जे विं ॥ ९२ ॥ उदक होऊ नि उदकी ॥ रस जे सा अवलोकी ॥ दीप पणें दीपकी ॥ ते जे सें ॥ ९३ ॥ कपूर त्वं कापुरी ॥ सौरभ्य असे ज
 यापरी ॥ शरीर होऊ नि शरीरी ॥ कर्म जे वीं ॥ ९४ ॥ किंब ह्मना जे सें गांडवा ॥ सोने चि सोनया चारवा ॥ ते सें जे यासवी ॥ सर्वांगी असे ॥
 ॥ ९५ ॥ परि असे रेंवै पणो माजि वडे ॥ तंवर चारें सा आवडे ॥ वाहू नि सोने सांगडे ॥ सोनयां जे वीं ॥ ९६ ॥ पै गावोय चि वांकुजा ॥ परि
 पाणी उज्ज्वल हाडा ॥ वह्नि आत्मानो रंजडा ॥ लोहन केडी ॥ ९७ ॥ यत्ना करें वंदाळे ॥ तेथ न भगमें वांदाळे ॥ मवी तशी चो फळे ॥ आ
 रें दिसे ॥ ९८ ॥ परि ते अवकाश जे सें ॥ नो हजती चि आकाशें ॥ जे विकार होऊ नि ते सें ॥ विकारी नो हे ॥ ९९ ॥ मन सुरव्य इंदिया ॥
 सत्वादि गुणया ॥ सारिखे रें धन जया ॥ आवडे दीर ॥ १०० ॥ पै गुळाचि गोडी ॥ नो हे बांधे यासागडी ॥ ते सी गुण रं दिश फुडी
 नाही तेथ ॥ १०१ ॥ अगादी राचिये दशे ॥ द्युत सी राकारें असें ॥ परि क्षीर विनो हे जे सें ॥ कापि अजा ॥ १०२ ॥ ते सें जे द्ये विकारी ॥ वि-

पाउ ॥ ओ ॥ ९० निरूपणासी ॥ ओ ॥ ९६ स्वेवणा ॥ ओ ॥ १ येरी ॥ ३

कारनोहेभवधरी॥ पैआकारनामभोवरी॥ येरसोनेतेसोने॥ ३॥ इयउयउमहादिया॥ तेवेगळेपणधनजया॥ जाणयुणहंइया॥ पा-
 सेनिते॥ ४॥ नामरूपसंबंध॥ जातिक्रियाभेद॥ हाआकारसीचप्रवाद॥ वस्तुसिनाही॥ ५॥ तेगुणनहेकही॥ गुणातयासबधनाहो
 परितयाचिवाद॥ आभासनी॥ ६॥ येतुलेयासाठी॥ सभ्रानाचपोटी॥ ऐसंगमेजयाकिरीदी॥ जेहेचिधरी॥ ७॥ तरितेगाधर
 णेऐसे॥ अश्रानेजेविआकाशे॥ कांमतिवदनऐसे॥ आरसेनी॥ ८॥ नातरीसूर्यप्रभिमंडळ॥ जेसेनिधरीसलिल॥ कांशमीक-
 रींमृगजळ॥ धरिजेजेवी॥ ९॥ तेसंगासंबंधेविणा॥ ययासर्वानेधरीभिगुण॥ पैतेवायाजाण॥ भिख्याहरी॥ १०॥ आणियाप
 शभिगुणे॥ गुणानेभोगणे॥ रकाराज्यकरणे॥ स्वर्मांजैसे॥ ११॥ ह्यणोभिगुणाचासंग॥ अथवागुणभोगा॥ हाभिगुणोलाग॥
 बोलांनये॥ १२॥ श्लो० वहिरतश्चमृतानामचरमेवच॥ मृतमत्वात्तदविज्ञेयदूरस्थचातिक्तेचत॥ १३॥ दी० जेचरा
 चरभूता॥ मांजिअसेपादुभूता॥ नाभावकीदुष्णता॥ अमेदेजेंसी॥ १४॥ तेसेनिअविनाशभावे॥ जेसुदपदशेआयवे॥ व्या
 धूनिअसेतेजाणवे॥ जेयएथ॥ १५॥ जेएकआतबाहरी॥ जेएकजवळदूरी॥ जेएकवाज्जनिपरी॥ दुर्जीनाही॥ १५॥ क्षीरसागरी
 चीगोडी॥ मांजिबहूथडियेथोडी॥ हेंनाहीतयापरी॥ मृणंजंगा॥ १६॥ स्वेदजमभूती॥ वेगळाल्याभूती॥ जयाचियेअनुस्यूती॥
 खोमणेनाही॥ १७॥ पैओनेमुरखनिळका॥ यदमहसीअनेका॥ मांजिबिबोभिचंद्रिका॥ नमेदेजेवी॥ १८॥ नानालवणकणा
 चियेराशी॥ स्मारताएकजेंसी॥ काकोडीएकीदुसी॥ एकविगोडी॥ १९॥ श्लो० अविमक्तत्वभूतेषुविभक्तभिवचस्थितम् ॥
 मृतमर्तवचत्वेयमिष्युमभविष्युच॥ १६॥ दी० तेसेअनेकीभूतजाती॥ जेआहेएकीव्यासी॥ विश्वकार्यसमती॥ का
 रणजंगा॥ २०॥ ह्यणोनिहाभूनाकार॥ जेथुनितेचितयाआधार॥ कल्लोकासागर॥ जियापरी॥ २१॥ बाल्यादितिद्गवयसी॥

कांयाएकचित्तो॥ तैसां आदिस्थितिगामी॥ अरुणद्वजे॥ ११॥ आरंभान्तमध्याह्न॥ होतां जानां दिनमान॥ जैसंकांगना॥ पालदेना॥ १२॥ अ-
 गास्त्रिवेदेभियोगमा॥ जयानामह्यणतीव्रता॥ व्यामिर्जैविष्णुनामा॥ पात्रजाहोति॥ १३॥ मगआकारहाहारप॥ तेकारुद्रजैह्यणिपे॥
 तेहीगुणवयजेकांशोपे॥ तेजेश्वर्य॥ १४॥ नभाचैक्यत्वगच्छुन॥ गुणत्रयातेनुरउन॥ तेरत्यतेमहाशून्य॥ श्रुतिवचनसमत ३६
 प्रसो० ज्योतिषामपितज्ज्योतिरुसमसः परमुच्यते॥ ज्ञानज्ञेयज्ञानगम्यह्मदिसर्वस्यधिधितं॥ १७॥ टी० जेअग्निचिंदोपन॥ जे
 चंद्राचैजीवन॥ सूर्याचैनयन॥ दसवर्तजेण॥ १७॥ जयाचैनिर्जुजियेदे॥ नांगणउपदे॥ महोतेजस्करवाडे॥ राहादेजेण॥ १८॥ आ-
 दीचिजेआदी॥ वृद्धीचिजिहृदी॥ बुद्धीचिजेबुद्धी॥ जीवाचैजीव॥ १९॥ जेगनाचैमन॥ जेनचाचैनयन॥ कानाचैकान॥ वाचैची
 वाचा॥ २०॥ जेगणाचैगण॥ जेगर्तचैचरण॥ क्रियचैकर्तपण॥ जयाचैनी॥ २१॥ आकारजेणे आकारे॥ विस्तारजेणें विस्तारे
 संहारजेणें संहारे॥ पांडुकुमरा॥ २२॥ जेमदिनचैसिंदनी॥ जेगणपिपुत्रिअसेपाणी॥ तेजादेवतावणी॥ जेणेतैज॥ २३॥ जेवा
 युचायवासेवास॥ जेगनाचा अवकाश॥ हेअसोआयवाचिभास॥ आपासेजेण॥ २४॥ किबहुनापडवा॥ जेआघवैचिअसेआय
 वा॥ जेथनाहीरिगावा॥ द्वैतभावामी॥ २५॥ जेदेखिलयाचिसवे॥ दृश्यदृशहेआयवे॥ एकवटकालये॥ सामरस्ये॥ २६॥ म
 गतेविहोयज्ञान॥ ज्ञावाज्ञेयहने॥ जेणैगमिजेस्थान॥ तेंहेतेशि॥ २७॥ जेसंगलियांलेख॥ आरखहोतीएक॥ तेसंसाध्यसम्यना
 दिक॥ ऐक्यासियो॥ २८॥ अर्जुनाजयेनाई॥ नसरैदुनाचैवहा॥ हेअसोजेतुद्वी॥ सर्वोचाअसे॥ २९॥ प्रसो० इतिस्त्रैत्रयथाज्ञा
 नं जेयचोक्तसमासवः॥ मद्रूपतदिज्ञायमद्रावायोपपद्यते॥ १८॥ टी० एवहेतुजपुढा॥ आदिसेवस्तुहाडा॥ दविलंप्रालेवा
 डा॥ विवचुनी॥ ३०॥ तैसंचिसिंसापाठा॥ जैसंभेदेखसीदिवा॥ तैसंज्ञानहीकिरीटा॥ सागीतले॥ ३१॥ अज्ञानाहीकौतुक॥ रूप
 पाठ॥ ओ० २४ स्थितिजे॥ ओ० २८ उजवहे॥ ओ० २३ क्रियेस॥ ओ० २७ ज्ञानेजेयगहन॥ जेय०

केनेनिके ॥ जंबआयणीतुझीदेके ॥ पुरेह्यणे ॥ ४२ ॥ आणि आतां हेरोकडे ॥ उपपत्तीचे निपवाडे ॥ निरूपितें उघडे ॥ जेथपैया ॥ ४३ ॥ हे-
आयवीचि विचचना ॥ तुडां प्रसनि अर्जुना ॥ मस्तिष्मावना ॥ मां झिद्ययेती ॥ ४४ ॥ देहादि परिग्रहो ॥ सत्यासकुरु नियोजिहो ॥ जो
वमाज्ञावाई ॥ दृष्टिकरेना ॥ ४५ ॥ ते माने किरीटी ॥ हे विजाणो निराशेवटी ॥ आपण पयां सादोवाढो ॥ मोचिहोती ॥ ४६ ॥ मीचिहोतीप
री ॥ हे मुरव्यागा अवधारी ॥ सोहोपसवोपशो ॥ रत्तनी आह्मी ॥ ४७ ॥ कडा पायरी कीजे ॥ निगळी माचवायिजे ॥ आथा वीरुडजे ॥ नशे
रेसी ॥ ४८ ॥ येहूवो आघवेचि आत्मा ॥ हे सागो निवोरि नत्मा ॥ परि तुझिया मनोधर्मो ॥ मिळेलना ॥ ४९ ॥ ह्यणो नि एकचि संविडे ॥ नशे
तुर्थ आह्मी केले ॥ जें अदृष्ट पणें देखिले ॥ तुझिये मजो ॥ ५० ॥ पै बाळक जे जे वडिजे ॥ तें यांस एक विमावाई कीजे ॥ तें सें एकचि हेंच
तुयी जें ॥ कथिले आह्मी ॥ ५१ ॥ एकसेच एक ज्ञान ॥ एक जेथ एक अज्ञान ॥ प्रागे केलें अवधान ॥ जाणो नितुझें ॥ ५२ ॥ आणि ऐसेना-
हो पार्शो ॥ जरी हा अभिमावो तुज हाता ॥ नयेतरी हेव्यवस्था ॥ एक वेळ सांगो ॥ ५३ ॥ आतांचो दारो न करूं ॥ एकही ह्यणो नि नसरूं ॥
आत्मनात्मयाधरूं ॥ सरि साचि पाद ॥ ५४ ॥ परितुवा येतुले करवें ॥ यागेंतें आह्मादे आवें ॥ जें कानाचि नावे वेवें ॥ आपण पयावे ॥
५५ ॥ यात्री ह्य्याचि याबोला ॥ पार्थरो मांचित जाहाला ॥ तेथे देव ह्युणतो भला ॥ उचबळेना ॥ ५६ ॥ ऐसे नितो येतावेगा ॥ धरु मिह्य-
णे श्रीरंग ॥ प्रह्लाति पुरुष विभाग ॥ परि येसे सांगो ॥ ५७ ॥ ज्या भागीतें जगो ॥ साख ह्युणत योगो ॥ जयाचिये मादेवलागो ॥ योक्-
पिल जाहालो ॥ ५८ ॥ तो आई निर्देश ॥ प्रह्लाति पुरुष विवेक ॥ ह्यणे आदि पुरुष ॥ अजुनातें ॥ ५९ ॥ प्रहो ॥ प्रह्लाति पुरुषचे विल्य
नदीउभावीप ॥ विष्णारंभ गुणांचे व विद्म ह्यति संभवाच ॥ ६० ॥ दी ॥ नरी पुरुष अनादो अथी ॥ आणि तें विलागो नि प्रह्लाति ॥ सा-
वे सरि सी दिवो रानी ॥ जया परी ॥ ६१ ॥ दोरूपनो देवाया ॥ परी रूपाला गली छाया ॥ निरुणवा देधन जया ॥ कणें सी कोंटा ॥ ६२ ॥ ते
पात ॥ ओ ॥ ६३ ॥ तरि ॥ ओ ॥ ६४ ॥ आदर ॥ ओ ॥ ६५ ॥ चतुर्थाब्जें ॥ ओ ॥ ६६ ॥ कानासींचि ॥ ओ ॥ ६७ ॥ दोळीं निमी ॥ ओ ॥ ६८ ॥ को ॥ ६९ ॥ को ॥ ७० ॥

सीजाणजवेदे॥देहीइयेएकवेदे॥प्रकृतिपुरुषंप्रकृते॥अनादिसिद्धे॥६२॥पैंसेत्रयेणेनवे॥जेंसांगीतलेआषवे॥तिंचिएयजाणवो॥प्रकृतिहे॥६३॥आ-
 णिसेत्रयेसैं॥जयातेहणितलेअसे॥तोपुरुषहेअनारिसे॥नबोलीयेदे६४इयेआननिनवे॥पारिभिरूपआननोहे॥हेलक्षणनसु-
 कावो॥पुदतीपुदती॥६५॥तरीकैवळहैसत्ता॥तोपुरुषगापादुसुता॥प्रकृतीतिंममस्ता॥क्रियानामे॥६६॥बुद्धिइंदियेअनःकरण
 इत्यादिबिकारप्ररण॥आणितेतीद्वागुण॥सत्तादिक॥६७॥हाआयवाचिमेळावा॥प्रकृतीजाहालाजाणावा॥हेचिहेतुसमव-
 कमीधिया॥६८॥ श्रुती० कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते॥पुरुषःसरवदुःखानाभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते॥२०॥ टी० तेन
 दृच्छाअणिबुद्धी॥यदवीअहंकारेर्मांआधी॥मगतियालावितिवेधी॥६९॥तेचिकारणनाकावया॥जेंसत्रयसर-
 णेंउपाया॥तयानावधनंजया॥कार्येंगा॥७०॥आणिदृच्छामदाचाथावी॥लागलीमनातेउठवी॥तेइंदियेराहावो॥हेकृ-
 त्पेंगा॥७१॥ह्याणोनितीद्वायाजाणा॥कार्यकर्तृत्वकारणा॥प्रकृतीमूळहंराणा॥सिद्धांचाले॥७२॥एवंतिहोचिभिसमवाये
 प्रकृतिकर्मीरूपेंहोये॥परिजयागुणावादेत्राये॥त्याचिसारिवी॥७३॥जेंसत्वगुणेंअधिष्ठजे॥तेंसैत्कर्मसृष्टिजे॥रजोगुणेनि-
 पजे॥मध्यमते॥७४॥जेंकांकेवळतमें॥होतीजियेंकर्म॥निषिद्धेअर्थमें॥जाणतिये॥७५॥ऐसेभिसतासते॥कर्मप्रकृतीस्तव
 होतें॥तथापामोभिनिर्वाळते॥सरवदुःखगा॥७६॥असंतोदुःखउपजे॥सत्कर्मींसरवीमफजे॥तयादोहोचाबोलजे॥भोगउरु-
 चा॥७७॥सरवदुःखजनवरी॥निफजतीसाचोकारों॥तवप्रकृतिउद्यमकरी॥पुरुषभोगी॥७८॥प्रकृतिपुरुषचिकुळबांडो॥सो-
 यतोअंसगरी॥जेंआबुलीजोडी॥आबुलासाये॥७९॥आबुलियाआबुलिये॥सगतीनासोये॥होआबुलीजयविये॥बोजेएका
 ॥८०॥ श्रुती० उक्तः प्रकृतिस्थो हि सुकृत्प्रकृतिजान्गुणाच्च॥कारणगुणसंगोऽस्य सदस्यो भिजन्मसः॥२१॥ टी० जेअनंगतोपे-
 पाव॥ओ॥६६जे॥ओ॥७१मदोतें॥ओ॥७४सालिक॥ओ॥७५अर्थमें॥

या ॥ निकवडासया ॥ जीर्णोपनिष्टा ॥ पास्तुनिष्टा ॥ ८१ ॥ तया आलना वपुस्य ॥ वैद्वोस्तीनानं पुंसक ॥ किं बहुना ॥ किञ्च योनाहो ॥ ८२ ॥ तौ अचक्षुः अचक्षुः ॥ अहस्तश्चरण ॥ रूपनावर्ण ॥ नाम आशी ॥ ८३ ॥ महुतिकर्मोक्ताहोय ॥ पस्तिशुणयोज्ञे जाये ॥ तया सा प्रिरेक्षुः होये ॥ नाम पुरुषा ॥ ८४ ॥ अर्जुनाकाहो चिथेनाहो ॥ तौ महुतीचासं तौरपाहो ॥ कां भोगणोरेमया हो ॥ स्मरुहः रवाचै ८५ ॥ तौ तरे अकर्मो उदास अभोक्ता ॥ परिदयापतिमना ॥ भोग विजे ॥ ८६ ॥ जियेते अहुमाक ॥ रूपागुणात्वाकडाक ॥ ते मलते-
साही रेवळ ॥ लेशका आणी ॥ ८७ ॥ इयै महुती तंव ॥ गुणमयी हो चिनाव ॥ किं बहुना सावेव ॥ गुणतेचिहे ॥ ८८ ॥ हे प्रतिस्पर्णा नि-
त्यनवी ॥ रूपागुणाची च आसवी ॥ जडाते हो साजवी ॥ इथेचा साज ॥ ८९ ॥ नामे इयै प्रसिद्धे ॥ स्मरुहो स्मरुहे ॥ इदिये महुदे
इयेचेनी ॥ ९० ॥ कायी मनहं न पुंसक ॥ फोते हो उवीत फोलीक ॥ ऐसे ऐसे अलोकि ॥ करण इयेचे ॥ ९१ ॥ हे प्रमाचिम हा हो पा ॥
हव्याची चिंस्त ॥ विकार उमप ॥ इयाकले ॥ ९२ ॥ हे कामाची साडवी ॥ हे मोहवर्न विमाधवी ॥ इये प्रसिद्धी देवी ॥ माया हे नाम ॥
॥ ९३ ॥ हे वाड्याची वाढी ॥ हे साकार पणाची जोडी ॥ मपंचाची धाडी ॥ अभंगहे ॥ ९४ ॥ कळारथी निजालिया ॥ विद्या इयेच्यावे-
लिया ॥ इच्छाज्ञान क्रिया ॥ वियालीहे ॥ ९५ ॥ हे नदची तांक साक ॥ हे चमत्काराचे वलाउल ॥ किं बहुना सकळ ॥ रेवळ इयेचा ॥
॥ ९६ ॥ जे उतसि प्रलय होत ॥ ते इयेचे सायमात ॥ हे असो अद्भुत ॥ मोहनहे ॥ ९७ ॥ हे अहयाचे दुसरे ॥ हे निःसंगत्वे सोयरे ॥
हे निगलवें नसिरे ॥ नंदत अभि ॥ ९८ ॥ इये ते येतु लावरी ॥ सोभाग्याच्या तीथेरी ॥ ह्यणो नि तथा आवरी ॥ अनावसाते ॥ ९९ ॥ त-
याचा तंव वायो ॥ निपट्टुनि का हो चिनाही ॥ का तथा आयवूही ॥ आपण चि होये ॥ १०० ॥ तया स्वयं प्राची सप्तती ॥ तया अमूर्तची-
मूर्ती ॥ आपण हा यस्थिनी ॥ गवोतया ॥ १०१ ॥ तया अनंतोची आती ॥ तया पूर्णोची तृती ॥ तया अकुळाची जाती ॥ गवोतये ॥ १०२ ॥

पाठः ओः ८५ अगाः मर्तोः ओः ८८ मासिये, ओः ८९ नीचः ओः ९० इत्थेनि, ओः ९१ भोगवी, अनोकि, अः

नया अचर्चाचिच्छिद्र ॥ नया अपाराचिमान ॥ नया अपमन्याचिमान ॥ वृद्धाहो होय ॥ ३ ॥ तया भगवत्पाराचिआचार ॥ तया भव्योपासनाच्युपा
 पार ॥ निरहकाराचिअहंकार ॥ होऊनिहाव ॥ ४ ॥ तया भगमाचिनाम ॥ तया भजाचिजन्म ॥ आपणहायकर्म ॥ जन्मतया ॥ ५ ॥ तया भिगुण
 चेगुण ॥ तया अचरणाचिचरण ॥ तया अथवणाचिथवण ॥ अचरुचिचरु ॥ ६ ॥ तया भागवतीनचिभाव ॥ तया निरवयवाचिअवयव ॥
 किंवहुनाहोयसर्वा ॥ पुरवोचिहो ॥ आ ऐमो भिदयानुद्वेग ॥ आपुनियाराव्यामी ॥ तया अय्यारातो वदती ॥ माजो वोजि ॥ ७ ॥ तय्यपुरु
 बत्वजे असे ॥ तय्यमहानिदयो ॥ चंद्रसा अंगसे ॥ हरपुनो जवो ॥ ८ ॥ विनकवहुंचारा ॥ मनीन्यारागारा ॥ वसहोयराचिका ॥ ज्याप
 रो ॥ ९ ॥ कासाधुतंगोयच्छि ॥ संचरीमय्येयच्छि ॥ गाना मीतनाचा आमाच्छि ॥ दादनको जे ॥ १० ॥ तय्यपयपरदनायातो ॥ कावहो जेसाका
 छो ॥ गुहूनिधनलापदो ॥ रत्नदोष ॥ ११ ॥ गजापराधनिजाहान्ता ॥ वेगिगहगरेयधन्ता ॥ लम्बा पुरुषमद्वेति भान्ता ॥ स्वतजामुक्ते ॥ १२ ॥
 जागाननिरसहसा ॥ निद्रार्पजनिजसा ॥ स्वनीचियागसा ॥ वृद्धको जे ॥ १३ ॥ तसे मिद्विगिजानेपण ॥ पुरयागुणभोगण ॥ उदास
 अंतरीगुण ॥ आंतुडेजवी ॥ १४ ॥ तसे अजानियाहोय ॥ आगीजनिमन्यचिचयो ॥ वाजतीजवन्ताह ॥ गुणसंगाते ॥ १५ ॥ पणेंते
 तेसेपंडुसुता ॥ तातलेलोहणितता ॥ जेविंवह्नास्मिचिचिधाना ॥ वेदिजनीतिये ॥ १६ ॥ को आंदाकोदयाउदक ॥ ग्रतिभाहोयेअनक
 तेनानत्वित्यणतीलोका ॥ चिंदोजवो ॥ १७ ॥ दपणाचियाजनीलका ॥ दुजगणजसयपुरवा ॥ कावुवुमंभुमिदका ॥ लोहितत्वये ॥ १८
 तेसागुणसंगसे ॥ अजन्माहाजन्मे ॥ रावतंगसांगसे ॥ येद्वनीहाहो ॥ १९ ॥ अयमात्तमथानी ॥ यासांसियामानि ॥ जेससन्त्या
 सीहोयस्सर्पी ॥ अत्यजादिजाती ॥ २० ॥ त्याणोभिकेवळा पुरवा ॥ नाहोहोणोभोगेदरवा ॥ एथगुणसगचिअशेरवा ॥ आगिमूळ
 ॥ २१ ॥ श्लो ॥ उपदद्यानुमताचिमनीमोक्षमेशवरः ॥ परमान्मनिचायुक्तेतंहोसिन्पुरुषः ॥ २२ ॥ वि० हानद्वतिसार्जउभा ॥ प

रिजुर्जैसाबोथंबा॥ इयाप्रकृतिपृथ्वीनामा॥ तेनुलापाडा॥ २३॥ प्रकृतिमार्जितज्ञातरी॥ मेरुहोयहाकिरीदरी॥ माजिबिबेपरिजोदरी॥ नो
दोनेणें॥ २४॥ प्रकृतिहोयजोये॥ हातोअभर्मनचिआहे॥ ह्यणोभिआव्रह्माचिहोये॥ शासनहा॥ २५॥ मरुतियेणेंजये॥ यात्रियासनाज
गविया॥ इयाजोगींदये॥ वरहपुहा॥ २६॥ अनंतकाळींकिरीदरी॥ जयांमरुतइयाकुरीदरी॥ तियांरिगतीइयाचोपोदरी॥ कल्यांतसमंद॥ २७॥
हामहद्वह्यगोसानी॥ ब्रह्मगोनकृत्वाधवी॥ अपरपणेसवी॥ मपंचति॥ २८॥ पियादेहामाझारी॥ परमात्माणेसीजेपरी॥ बोनिजेतअ-
व्याशी॥ ययातेचि॥ २९॥ अगाप्रकृतिपरीना॥ एकआर्थपइसता॥ गेसाप्रवादगतत्वता॥ पुरुषहोपें॥ ३०॥ श्लो॥ व्यग्वेतिपुरुषंमह-
मिचगुणैः सह॥ सर्वथानर्तमानाग्निं सस्रयोमिजायेते॥ ३१॥ टी०॥ जोतिरवळपणेंयेणें॥ पुरुषाययाजोणा॥ आणिरुणाचिकरणें॥ प्र-
कृतीचेंते॥ ३२॥ हेरुपुहछाया॥ पलजळेहमाया॥ गेसांनिवाइयनंजया॥ जोर्नंकेजे॥ ३३॥ तेणेंपादेअर्जुना॥ प्रकृतिपुरुषविचन॥ ३४॥
जयाचियासना॥ गोचरजाहारी॥ ३५॥ तोशरीगचेनिमंका॥ कुरुकांकेमप्रकृते॥ परिआकाश॥ मंनमेळे॥ तेसाअसे॥ ३६॥ आशिलेनिहेह
जोनयेपुदहमोहे॥ दहरीलियानोहे॥ पुनरीतो॥ ३७॥ गेसातयाप्रकृ॥ प्रकृतिपुरुषविवेक॥ उपकारअर्थाविक॥ कयोपेंगा॥ ३८॥ गीर-
हानिअतरी॥ विवेकप्राप्तिचियापरी॥ उदयेजेतभवधारी॥ उपायेवहुता॥ ३९॥ श्लो॥ व्यनेनाव्यनिपश्यतिक्षेत्रिदात्यानमात्माना॥ अन्य-
सारेव्येनयोगेन कसयोगेनचापर॥ ४०॥ टी०॥ कोणंमनसमदा॥ विचाराओगता॥ आत्मानाव्यकिता॥ पुदेदउनी॥ ४१॥ छनींस्महा-
वानीभदा॥ तांदांनिभिर्विवाद॥ निवाइतीश॥ ४२॥ आयणें॥ ४३॥ तगाआपणप्रयत्नाजेदरी॥ अध्यात्मज्ञानाचियादरी॥ देरतरीगाळींदरी
आपणपेंचि॥ ४४॥ आपणेंपुदतबो॥ चिंतनभाणव्ययेणें॥ कतोअंगलगे॥ क्रमाचिनी॥ ४५॥ श्लो॥ अन्येविवेकमजानतः शुभाव्येष्वउ-
पासते॥ तेपिचानितरत्येवमुत्पृथ्वीतिपरायणाः॥ ४६॥ टी०॥ येणेंयेणनकरी॥ निरुतरीसाचोकार॥ हेमवभायकांडरी॥ आयवेचि॥ ४७

परितेव रिनेत्तिमे ॥ अभिमानतव जेवतेग ॥ ग्गानि यथा विवशसि ॥ देकं विन्म ॥ २३ ॥ जीहनी हनद वनी ॥ हानिकृणवायपनी ॥ मुसाभिमाह रि
नी ॥ देनी सुरग ॥ २४ ॥ नयाचि नमुरवे जेभया ॥ तेनुदे आनेरुचता ॥ ग्गक्रा रिया ॥ भन हाते ॥ २५ ॥ नयाएक गायचि भिनावे ॥ दोवती मो आ
यवे ॥ नया अस्सरासो जेवि ॥ नो गफरी ॥ २६ ॥ तेहा अने क्रिपिअजा ॥ दयाभरणा ॥ यवसमाजा ॥ पाक भि नयती जा ॥ गामेदया ॥ २७ ॥ ऐसेसे
हे उपये ॥ बहुवसायेयो ॥ जाणावयाहोये ॥ गेविरु ॥ २८ ॥ आता पुर हव हव ॥ येवग याचि मथिय ॥ म द्वांग नयतिता ॥ देउतु जा ॥ २९ ॥
येनुनिप दुसता ॥ अनु भवदाहाणा ॥ आयिता ॥ यरनवतु जहाणा ॥ मायाभनाहो ॥ ३० ॥ द्यणो निगवु दुसतु ॥ मनवाह गज ॥ सोन्ने र्खि नवव
फनिनार्थिनि ॥ ३१ ॥ प्रहो दानस्य जयितोर्त्ति क्खित्थयावर मगासा ॥ भजद जेवसा ॥ होइ भगविस ॥ ३२ ॥ दी ० तरोद्वेव जयेणे बोले
नुम आपण पज्जोगिन् ॥ आणिसन हाण्यो गित्ति ॥ आद्योर्त्ति ॥ ३३ ॥ नयापयरा जेभन्दो ॥ हा जे जे मने साकडे ॥ अंग ॥ संगसो लुन्दो ॥ कल्लो
व जेसा ॥ ३४ ॥ कोत जा आणि उमसा ॥ मंद जान्दो यावरी ॥ दुरा जळो चया दुरा ॥ ३५ ॥ हाया ॥ ३६ ॥ जानाया राधर थारो ॥ द्वां वी लुया वसरथो ॥ उ
ठिजे जेवि अकुरो ॥ नाना विधो ॥ ३७ ॥ तेरा जगत्वर आयवे ॥ जेवा हो जेवण नावे ॥ तेना उभय रास मंग ॥ ऐसे जाणा ॥ ३८ ॥ दयान्ताणे अजु
जा ॥ क्षिन्न जा प्रथाना ॥ पास्सि नग हाते ॥ भिना ॥ क्षवयि के ॥ ३९ ॥ प्रहो ॥ समसव पुहो ॥ पुगि न्निन परमथवर ॥ निनयत्स्सि निनयतय ॥ पश्यति सपश्य
ति ॥ ४० ॥ दी ० पेपन्वत वनकु ॥ नरितो चिन्ने आह ॥ ऐराग्यान्ने जाळो पाह ॥ ऐक्य दसा ॥ ४१ ॥ स्मिने आदो वै चि होती ॥ एकाचो ण्ण अहलो
परिपेक्षु सप्रती ॥ वेगळो अस्सा ॥ ४२ ॥ यो नीना मेही आनो ॥ भनारि सनते ॥ वप हो शिलाने ॥ आयवयाचि ॥ ४३ ॥ ऐसे रखा नि करेदो ॥
मेदस्स सोहन पादो ॥ तिरजन्मा चियाक्रादो ॥ नन्दाह र्भ गिया ॥ मनागानया जने शिक्ता ॥ देवि वक्कवने ॥ होनो ण्ण र्खि चि फळे ॥ तुं बिणियची
॥ ४४ ॥ होनुका इव्वो कुडे ॥ परिचारि चिह नमाद ॥ तमो स्मिने अवयदे ॥ गरि नस्तु उज्ज ॥ ४५ ॥ अगार कणा विहवमी ॥ इच्छा नममान जेसी ॥ तिसा

पाठ आ २२ मे आ २३ जळो आ २५ कळो आ २७ धरिनी ७

७

७

७

७

७

७

७

22

गार, न.हं. ७

5

11

5.

1

2.

—

यदा श्वेतस्थकृमादभक्तस्य भग्नप्रयत्नात् । ततः श्वेतस्थकृमादभक्तस्य भग्नप्रयत्नात् ॥ १० ॥
ना ॥ दिसर्गो गन्धो ॥ ८५ ॥ लहरीजिह्वायां मन्त्रो ॥ परमाणुनां गन्धो ॥ ८६ ॥
विभावा ॥ विष्कृन्ति गन्धो ॥ ८७ ॥ तैस्मिन्मन्त्राणां गन्धो ॥ ८८ ॥ तैस्मिन्मन्त्राणां गन्धो ॥ ८९ ॥
याकृन्ते ॥ ब्रह्मर्षिदहा उच्यते ॥ ९० ॥ ब्रह्मर्षिदहा उच्यते ॥ ९१ ॥ ब्रह्मर्षिदहा उच्यते ॥ ९२ ॥
जिह्वाया ॥ ९३ ॥ अमृतं जैस्य चतुर्णां ॥ ९४ ॥ अमृतं जैस्य चतुर्णां ॥ ९५ ॥
जैचिर्ना ॥ तैः आनां गन्धो ॥ ९६ ॥ तैः आनां गन्धो ॥ ९७ ॥ तैः आनां गन्धो ॥ ९८ ॥
ले ॥ मगबोलां प्रादग्निं ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ ९९ ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ १०० ॥
तयनवरो निनियता ॥ १०१ ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ १०२ ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ १०३ ॥
तैः अमृतं चिक्कन्ते ॥ १०४ ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ १०५ ॥ तैः यैः भवथानां चिक्कन्ते ॥ १०६ ॥
चोतये ॥ १०७ ॥ अरिमांससुखे जैस्य ॥ १०८ ॥ अरिमांससुखे जैस्य ॥ १०९ ॥
गोदी ॥ वारियावाळु वेगादी ॥ ११० ॥ वारियावाळु वेगादी ॥ १११ ॥ वारियावाळु वेगादी ॥ ११२ ॥
एकमेव पूर्वकडे ॥ एकं तपश्चिक्कन्ते ॥ ११३ ॥ एकं तपश्चिक्कन्ते ॥ ११४ ॥
या ॥ देहाजाणा ॥ ११५ ॥ रात्रिं आणि दिवसा ॥ ११६ ॥ रात्रिं आणि दिवसा ॥ ११७ ॥
गुणले ॥ भवमेव चिक्कन्ते ॥ ११८ ॥ भवमेव चिक्कन्ते ॥ ११९ ॥ भवमेव चिक्कन्ते ॥ १२० ॥
पाठ ॥ ओ ॥ १२१ ॥ राजी अथवा वाचुनि ॥ ओ ॥ १२२ ॥ राजी अथवा वाचुनि ॥ ओ ॥ १२३ ॥

विषये अर्गापदे ॥ परिमस ॥ कृन्निरे ॥ जाहोन्मना विरपदे ॥ तरेति विष्णु ॥ ६ ॥ यत्तु के दोहो काजा ॥ तरे होय रुये च्चापुजा ॥ हापरिणास कर्षीप
 अजा ॥ कर्ममलगा ॥ ७ ॥ दयादहाचोहे दया ॥ अर्णि आत्मालोसा ॥ पैशुद्गिन्य अपेसा ॥ अनादिपणे ॥ ८ ॥ सकळानिष्कळ ॥ अभ्रयनाभि
 यशीळ ॥ वृक्षनास्युद्ध ॥ निरुणपणे ॥ ९ ॥ सांसासनानि रापास ॥ प्रकाशना अमकाश ॥ अन्वनाव द्रुवस ॥ अरूपपणे ॥ १० ॥ रिताना मरित
 रहितनासी हित ॥ स्मर्तना अस्मर्त ॥ शून्यपणे ॥ ११ ॥ आनंदना निनन्द ॥ ऐकना विविध ॥ मुक्ता बाद्ध ॥ आत्मपणे ॥ १२ ॥ ये तुलान ते तुला ॥ आ
 दना नाग चिन्मा ॥ बोलना उगना ॥ अलक्षपणे ॥ १३ ॥ स्मृत्तिचा हाणोनरचे ॥ सर्वसंहारे नरेचे ॥ आधीनाथी यादोहत्ते ॥ पचतहा ॥ १४ ॥ मेवे
 नाचर्च ॥ घोटना रवेचे ॥ विटेनो वेंचे ॥ अच्ययपणे ॥ १५ ॥ गंवरूपपणे ॥ आत्मा ॥ देहो जौ हाणली प्रयोत्तमा ॥ तंमठा कोर्योमा ॥ नामजेसे ॥ १६
 ॥ तं सतया विचे अमुस्यती ॥ हाती जातो देहा कृती ॥ तोयना साडी स्मरती ॥ जैसा तेसा ॥ १७ ॥ अहो पांजे जैसा ॥ येती जाती आकाशी ॥ आत्मसेते
 तेसी ॥ देह जाण ॥ १८ ॥ ह्यणी निदये शरीरी ॥ कर्तन करु वं करी ॥ आयता हो व्यापारी ॥ सज्जन होये ॥ १९ ॥ याला गीस्वरूपे ॥ उणा पुरान येपे
 हे असो तो निपे ॥ देहो देहा ॥ २० ॥ श्लो युथा रमंगत सोहय्या दाका शोने पो न्ययते ॥ भवजाव स्थितो देह तथात्मनो पलियते ॥ २१ ॥ दी ॥ अगा
 आकाश जेनाही ॥ हेमो रिघे चिक्वणे ठायी ॥ योर कथिये निक ही ॥ गौदि जेना जेसे ॥ २२ ॥ तंसा सर्वत्र सर्व देहो ॥ आत्मा असत चि असेणा हो
 यीसंग दोपें कुही ॥ लिसेनो हे ॥ २३ ॥ पुढत पुढ तो गये ॥ हे चिन्महाणि रूने ॥ जे जाणा वें देन जाते ॥ दोत्रा वें देन जाते ॥ २४ ॥ दीपकाची अर्ची ॥ गहादी नो हे यरीची ॥ परि वेगळी क्वको डोची ॥ दोषा अपि यरा २५
 रिजो ह भामकनो हे ॥ सिंहासे च्चाजा आहा ॥ तनुना पाडा ॥ २६ ॥ दीपकाची अर्ची ॥ गहादी नो हे यरीची ॥ परि वेगळी क्वको डोची ॥ दोषा अपि यरा २५
 पेका साचा पोटी ॥ वज्र अस्मो पोरि करी ॥ काष्ठो नो हे यादही ॥ प्राति जेना ॥ २६ ॥ अपाडना अमाळा ॥ रवि अपि मृगजळा ॥ तेसा चि अत्मा
 हो जेका ॥ देखावोये ॥ २७ ॥ श्लो युथा भक्त शयन्ये कः दुल्लभ लोका मंमरी वि ॥ दोत्रा दोत्रा चीन थाक ॥ तंमका शयति सातरा ॥ २८ ॥ दी ॥ हे आद्य भेक्ष अ
 पाठ ॥ ओ १० ॥ आमास ॥ ओ ११ ॥ एकला साकका ॥ ओ १२ ॥ दाता ॥ ओ १३ ॥ जे ॥ ओ १४ ॥ जे ॥ ओ १५ ॥ जे ॥ ओ १६ ॥ जे ॥ ओ १७ ॥ हा देवसी जेरी

सिगक ॥ गगनोभिर्जेषा भक्त ॥ मकटवर्नोक्त ॥ नवेनवे ॥ ३८ ॥ गयस्त्रैत्रज्ञतो गेसा ॥ मन्त्रशास्त्रोदात्ताभासा ॥ यावद्वृत्तेहेनपुसा ॥ शक्तायेया ॥ ३९ ॥ प्रसो-
 द्वस्त्रैत्रज्ञयोरव्यंतरज्ञानचक्षुषा ॥ स्मृतमस्मृतिमोक्षचयेविदुर्गोतिनगर ॥ ३३ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासुप्रथमस्कन्धोविद्यायोगशारङ्गो-
 क्खण्डोऽनुमन्वादेस्त्रैत्रज्ञयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ १३ ॥ टी० शब्दमलसारज्ञा ॥ पेंदरवर्णोत्तिचमज्ञा ॥ जेशत्रसंज्ञा ॥ अयादरेवे ३०
 द्यादेहोचिअनर ॥ देवगयानुर ॥ ज्ञानयोचिद्वार ॥ आरधिति ॥ ३१ ॥ याचिस्वर्गोत्तिमसती ॥ जोतिनोयांतिमपनी ॥ शास्त्राचिदुमनी ॥ पवि-
 तीयरी ॥ ३२ ॥ योगाचिया आकाशाः ॥ दक्षयिजेयवदाधियसा ॥ याचियाचिआशा ॥ मुरुयाभिगा ॥ ३३ ॥ शर्गरादिमयस् ॥ साभिनार्नितृणव-
 नी ॥ जीवैभतचिहोत ॥ वाहणाधर ॥ ३४ ॥ गेसाभियापर ॥ ज्ञानाभियाभरावर ॥ कुरुनिद्याअनरें ॥ निरुजोती ॥ ३५ ॥ मगस्त्रैत्रज्ञाचि ॥ जे-
 अनरदेरवर्तसाचि ॥ ज्ञानेउमेरवर्तयाचि ॥ बोवाळ आहो ॥ ३६ ॥ आणिमहासत्ताद्वे ॥ मसदन्मोअनको ॥ यमगर्नसिन्नाद्वे ॥ मस्मृतिजेहे ॥
 ॥ ३७ ॥ जेशकनकिकान्याये ॥ नलगानिळगलीआहे ॥ हेगेसंआहेतसहोये ॥ राउवजया ॥ ३८ ॥ जेसमाकानमाका ॥ गेसाचिदेविजजेलेछा-
 सपबुद्धिदवाका ॥ उरिवहोउनी ॥ ३९ ॥ काशान्तिनशक्त ॥ हेसाचहोयेमतीत ॥ रूपयाचिप्रतीत ॥ जाउनीया ॥ ४० ॥ तेसीविगळेवेगळेपणें ॥ म-
 ह्मतीजेअनःकरणे ॥ देरवर्तनेसीद्विणे ॥ ब्रह्महोती ॥ ४१ ॥ जेआकाशाहोववाड ॥ जेअव्यक्तोपलोकडाजिमेनडिया ॥ अपाडापाड ॥ पुजेमंदो ॥ ४२ ॥
 आकारजेशसरे ॥ जीवलजेयोके ॥ हेनजेशसुरे ॥ अद्वयेजो ॥ ४३ ॥ नेपरमतवण्या ॥ होतोतसर्वया ॥ जेआत्मानात्मव्यवस्था ॥ गजहंस ४४
 ऐसाहाजीआयवा ॥ श्रीकृष्णतयापाडवा ॥ उगाणादिधनजोवा ॥ जोवाचिया ॥ ४५ ॥ मयकलशीचिथरी ॥ रत्निजेजयापरी ॥ आपणपेतया-
 श्रीहरी ॥ दिधलेतेंसे ॥ ४६ ॥ आणिकोणादेतकोण ॥ तोनरेंतेसानारायण ॥ वरीअर्जुनांत्योद्विष्या ॥ हामाह्मणे ॥ ४७ ॥ परिअसेनेनाथिले ॥ न-
 पुसताकोबोसिले ॥ किंवहुनोदिधेने ॥ सर्वसदेवे ॥ ४८ ॥ कोनोपार्थजीमनी ॥ अक्षणीतुमीमनी ॥ अधिकधिकउताह्मो ॥ नादवीनअसे ॥ ४९ ॥ -
 पाठ ॥ ओ ॥ २९ ॥ पौतें ॥ ओ ॥ ३० ॥ वाउकें ॥ ओ ॥ ४२ ॥ अवयड ॥ छ

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

स्नेहाचिन्तामरावरं ॥ आनुयिलाहापयेयोगी ॥ नाडुअमुनाअंतरीं ॥ प्रीस्तीनेत्सं ॥ ५७ ॥ तेयसरारणुडिदरें ॥ रसज्ञाअणिजेवणारं ॥ भिळतीसगअवतसे
 हातेजैसा ॥ ५८ ॥ नैसेंजोहोनेमदेवा ॥ तथाअवधानाचिचान्वलवा ॥ पाहाताव्याख्यानचदुलंथावा ॥ जोगुणवरी ॥ ५९ ॥ सुवायेमेयसांतरे ॥ जैसाचंदे-
 भिंशुभर ॥ नैसाभागतारसभादरें ॥ ओनयाचेनी ॥ ६० ॥ आताआनंदमयआयवें ॥ विभवकीजेलदेवें ॥ तेरायेपरिसावे ॥ संजयेह्योगी ॥ ६१ ॥ एवंजैम
 हाप्रारती ॥ श्रीव्यासेअप्यांतमनी ॥ मीषापवंमरती ॥ ह्यणिनच्छाष्या ॥ ६२ ॥ तोआझुष्याजुनसवाद ॥ नागर्गबोलेविशद ॥ सांगोनिदाउपबध ॥
 बोवियेचा ॥ ६३ ॥ नुसगचिचानिक्था ॥ आणिलेल्करवाक्यथा ॥ जेंदंगाराचापाया ॥ पायबंदी ॥ ६४ ॥ दाउदेह्लाळदेशीनवी ॥ जैसाहिन्येवो-
 जवी ॥ अमृतानुचुकीनेवी ॥ गोडसपणें ॥ ६५ ॥ बोलेवन्हाअवितोमणें ॥ चंद्राभियेउमाणें ॥ रसरंगासुलवणें ॥ नादलोपी ॥ ६६ ॥ रेचसचिचयाहोम
 ना ॥ आणिसात्विकाचापाझा ॥ अवगासेवंभयना ॥ समार्थजोदे ॥ ६७ ॥ नैसावाग्निलासीवस्तार ॥ गीतार्थेओविषवंपर ॥ आनंदचाअवार ॥ मा-
 डुंजगा ॥ ६८ ॥ फिरोविषकाचंवाणी ॥ होकांनोमनाजिणों ॥ देवोआचडेनेरवाणी ॥ ब्रह्मविद्येनी ॥ ६९ ॥ दिसोपरतलडोळां ॥ पाहोसरराचसोहळा ॥
 रिपोमहाबोधसकाळा ॥ मूर्जविश्व ॥ ७० ॥ होनप्रजनुआनाआयवें ॥ गेसेवोलेजलवरवें ॥ जेअधिधिसाअसेपरमदेवें ॥ ओनिद्विप्तिमी ॥ ७१ ॥ ह्य-
 णोनिअसरांसमेदी ॥ उपमाओपुकेदाकाहे ॥ त्याजोदेनर्मनपदं ॥ यंयार्थमी ॥ ७२ ॥ हाभाबोवर्षामोने ॥ पुरतघासारस्वते ॥ देहेअसेअमोने ॥
 ओगुहाराये ॥ ७३ ॥ नेणजोळपासाये ॥ मीवोलेनेनेसाणये ॥ आणिमुमचियेसमेलाहे ॥ गीनाह्योगी ॥ ७४ ॥ वरिवुहांसंतांचेपये ॥ आजमील्लाश
 लेआहे ॥ ह्यणोजिनेहे ॥ अतककोही ॥ ७५ ॥ ममुकाशरीरंमुके ॥ नुपजेहेकोनिये ॥ नाहोउणीसासुदिके ॥ लस्पीयेमी ॥ ७६ ॥ नैसागुहारांवा
 मी ॥ अज्ञानचोगोठीकार्य ॥ यालागीनवरसी ॥ वरुयेममी ॥ ७७ ॥ किबहनाआनादेवा ॥ अवसरसजदेयावा ॥ ज्ञानदेवसुणेबरवा ॥ सांगेन-
 ग्रंथ ॥ ७८ ॥ इतिआसावार्थदोपिकयाज्ञानदेवधिरचनायांत्रयेदो ॥ ७९ ॥ ॥ आहुकार्पापमस्तु ॥ ॥ म्मोक्ष ३४ ॥ ओवी ११७०

पाठ ओ ५५ गीती ओ ५७ परिक ओ ५८ जैमी ही ओ ६० फिरे मनार्ची ओ ६६ निद्विप्त ओ ६७ सावये ओ ६८ पानलो ओ ७१ मी ७२

श्रीगणेशाय नमः ॥ जय जय आचार्य ॥ समस्तस्वरूपी ॥ प्रज्ञाप्रभातस्थी ॥ स्वरषोदयाजी ॥ १ ॥ जय जय सर्वविषय ॥ साह माव
 सहावया ॥ नानाभोक्तेहावया ॥ समुद्रत ॥ २ ॥ आदंकेगा आनंकेधू ॥ निरंतरकारुण्यसंधू ॥ विशदविद्यावधू ॥ वल्लभाजी ॥ ३ ॥ त्वत्प
 रानितपसी ॥ तया विश्वहेदाविसी ॥ प्रकटनेकरिसी ॥ आयवेचिनु ॥ ४ ॥ किमुदितत्त्वदृष्टिचिरिजे ॥ हाहृषिवंधनिफजे ॥ परितवतुदय
 तुझे ॥ जे आपणपंचेरे ॥ ५ ॥ जीतचित्तसर्ववया ॥ माकोणबोयकोणामाया ॥ गमिया अपे आपनायविषया ॥ नमोतुजा ॥ ६ ॥ जाणोजनी
 आपबेजे ॥ तेनु शिवाबोलासरसजले ॥ तुझे निद्रमत्व आले ॥ पृथ्वीयेसी ॥ ७ ॥ रोवचंद्रदिशह्ता ॥ उदयकरितो निजगती ॥ तेनु दि
 यादीमी ॥ ते जतेजा ॥ ८ ॥ जेचळवळिजे अभिने ॥ तेदीदेकनिजी निजबळे ॥ नमोतुजमाजीसेळे ॥ नपथिपि ॥ ९ ॥ किंबहुनामाया अशेष ॥
 जानजीतुझे निजेळसा ॥ असो वानंसायास ॥ मुर्तीमहा ॥ १० ॥ वेदवान्निनविचारा ॥ जेवर्नदसेतुझे आया ॥ मग आहोतयासुगा ॥ एके
 पानी ॥ ११ ॥ जीएकारणवाचेनाई ॥ पाहोतामळयमधाचोपाडनाही ॥ सामहानदीकार्द ॥ निवडूंयेती ॥ १२ ॥ कोउदयनियाभासता ॥ चंद्र
 जेसासद्योत ॥ आत्मा मुर्तानुजआत ॥ तोपाड असे ॥ १३ ॥ आणिदुजयाथावमोटे ॥ जेयपरवीविसरबुडे ॥ मोतुमाकोणे तोटे ॥ वानावा
 सि ॥ १४ ॥ यानागी आता ॥ स्तुतिसांडुभिनिवाता ॥ चरणनिविजेमाथा ॥ हंचिभले ॥ १५ ॥ तिरितुंजसा आहासितेसिया ॥ नमोजोगुरुराया
 भजयथोद्यमफळावथा ॥ वेकाराहोई ॥ १६ ॥ आतां कृपा भादवलसोई ॥ भरांयाझे मर्तचि तोडो ॥ दुरेजानपद्यजोडो ॥ थोरामोते ॥ १७
 मगसीसंसरनेणे ॥ संतानेकणस्रषणं ॥ लेवविसरुनस्रषणं ॥ वेवकाचीं ॥ १८ ॥ जीगताथिभियान ॥ काढमाझे मन ॥ रुधिरसेहाजन ॥
 आपनेतं ॥ १९ ॥ हेवाकृस्तीएकेवेळ ॥ देरवोतमाझे बुद्धिचेडोळे ॥ तेसा उदयांजोर्जाभिमंळ ॥ कासण्यबिंबे ॥ २० ॥ माझीमजावेलावे
 ल्लाळ ॥ काळ्ये होयसफळ ॥ तोवसंतहोथीस्नेहाळ ॥ शिरोमणी ॥ २१ ॥ प्रमेयमहापुरुं ॥ हेमतिगंगयेथोरें ॥ तेसावर्ष उलारे ॥ दिवा
 पाठ ॥ ओ ६ वंध ॥ ओ ११ येबाबा ॥ १२ जाणिजेनि ॥ ओ १६ तुज ॥ ओ १७ योरावी ॥ १८ ॥

विनी ॥ २२ ॥ अग्राविग्वेकधामा ॥ नृत्तमसाद्वचदमा ॥ करसजपृणिषा ॥ स्फूर्तचिंजी ॥ २३ ॥ जो अवलोकि लियामो ॥ उन्मेषसागरां स्मरव
वोसो दलस्फूर्तीति ॥ रसवृत्तीति ॥ २४ ॥ तव संतोषो निश्चिगुरुराजे ॥ ह्यणितलुं विनिव्यजे ॥ मोरि उल्लेखे निदुजे ॥ स्तवनप्रे ॥ २५ ॥ हो
असो आगो वज्रदा ॥ नो जापनाय करुणो मदा ॥ यो शब्द विउल्लंका ॥ मंगो नंदे ॥ २६ ॥ हो का जो स्वामी ॥ हे विपाहत होतो मं ॥ जे अमु
खं द्यवणा वृत्ती ॥ ग्रंथ सांग ॥ २७ ॥ परिहृष्या वृत्ते ॥ किं हे माझे भिजाले ॥ ऐसे ना हो विले ॥ वासने माजि ॥ २८ ॥ सहजे दुर्वचार्हर ॥ अगो
चितवं अमरा ॥ वरी आला पुरा ॥ पीयूषा च्छा ॥ २९ ॥ तिरि आतां येण मसादे ॥ विन्यासे विहदे ॥ मूळशास्त्रपदे ॥ वास्वणीन ॥ ३० ॥ पर जो
वां भ्रातृनी कडे ॥ जे सो संदेहा चिजो णि लुं ॥ ना अविणित रिचाडे ॥ वौं दिसे ॥ ३१ ॥ नैसी बोलि साचारी ॥ अवतरे माझे माधुरी ॥ मा-
नि मागु निघरी ॥ गुरु रूपे च्छा ॥ ३२ ॥ तिरि मागात्रयोदशी ॥ अध्यायी गोठी ऐसी ॥ आहूण अर्जुनं मं ॥ नावळजे ॥ जे सिव क्षेत्र जयोग ॥ हो
इजे येण जगे ॥ आत्मारुण संगे ॥ संसारिया ॥ ३३ ॥ आणि हाचि मळति गतु ॥ स्वरुदः स्वमोरी हेतु ॥ अथ वा गुणानोनु ॥ केवळ हा ॥ ३४
तिरि किं सापं असगा संग ॥ कोण तो स्तव स्तव जयोग ॥ स्वरुदः स्वादि सोग ॥ केवितया ॥ ३५ ॥ गुणने के सो किती ॥ बांधती कुवणी र्गती ॥ ना
नरी गुणातीती ॥ चिह्न का दे ॥ ३६ ॥ एवं दया आयवेया ॥ अथा स्तव करावया ॥ विशेष थैलो दा विषा ॥ अध्यायासी ॥ ३७ ॥ तिर तो आना
ऐसा ॥ मस्तुत परि येसा ॥ अभिप्राय विशेषा ॥ वेकुं ठि च्छा ॥ ३८ ॥ नो ह्यणेणा अर्जुना ॥ अवधानाची सवसेना ॥ मेळ अर्जुन उयाजाना ॥
जो बव हो ॥ ३९ ॥ आत्मीयाणां तु जव कुं गी ॥ दाविले हे उपपत्ति ॥ तिरि आझणी मने ती ॥ कुशो नारिय ॥ ४० ॥ श्री भगवानुवाच
परमयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां लानमुत्तम ॥ यत्ज्ञात्वा मुनयः सर्वपरां सिद्धिं प्रमो गताः ॥ ४१ ॥ टी ० ह्यणे निगा पुढती ॥ सांगि जे लु-
नीत पति ॥ परि ह्यण ह्यणे अर्जुनी ॥ डाहारी लेजे ॥ ४२ ॥ येक वोजाने आपुले ॥ परि परे ऐसे निजाले ॥ जे आवडेलो येतले ॥ भवस्वया
पाठ ॥ ओ २६ ज्ञानार्थ ॥ ओ ३१ वाट ॥ ओ ४२ पै ॥ ओ ४२ प्रतीती ॥ ४३

दिक ॥ ४३ ॥ अथायाचिकरणे ॥ हे उत्तमसर्वापरासीत्यणे ॥ जेवढोहंत्युण ॥ येरेंजाने ॥ ४४ ॥ जियेंभनस्वर्गांतं ज्ञापती ॥ यागचिंचांग
 ह्यपती ॥ पारवोपुढे आर्या ॥ भेदीज्या ॥ ४५ ॥ तियेंआर्यवर्चिजानें ॥ केन्दीयेणेंस्वप्ने ॥ जेशावातोषीपगने ॥ गिळजतीअर्तनी
 ॥ ४६ ॥ कांउदितेंरस्मिराजें ॥ न्नीपिलेंचिंदादितेजें ॥ नानाप्रळयावुमाजें ॥ नदीनद ॥ ४७ ॥ तेंसंयेणेंपाहलया ॥ ज्ञानजात जायलया
 स्वर्णेनियधनजया ॥ उत्तमहे ॥ ४८ ॥ अनादिजेमुक्ता ॥ आपलीअसेपुंड्रुक्ता ॥ तोमोसहायेता ॥ होयजेणे ॥ ४९ ॥ ज्याचिया
 पर्तती ॥ विचारवारीसमस्ती ॥ नेदीजेचोसंस्ती ॥ मायाउधउ ॥ ५० ॥ मनेमनयान्दुनियाभंग ॥ विअंतिजालीयाअंग ॥ नेदेहोदेहा
 जोग ॥ होतीचिना ॥ ५१ ॥ मगतेतंहचिवेळ ॥ बोलादुनिगेचिवेळ ॥ सववृक्षाकांटाळा ॥ मासजाले ॥ ५२ ॥ अन्तो ० इदंज्ञानमुपाश्रि
 त्यममसाधम्यमागता ॥ सर्गेपिनोपजायतेमनयेनययतिचा ॥ २ ॥ टी ० जेसाशियाभित्यता ॥ तेंपोनिन्यतेपुंड्रुक्ता ॥ परिपृणपृणता
 माशियाचि ॥ ५३ ॥ मोजेसाअननानद ॥ जेसाचिसत्यसंध ॥ तैसेचितेभेद ॥ उरेचिना ॥ ५४ ॥ जेमजिवेदुजसे ॥ तेंतंचिजालेतें
 से ॥ यदभंगींयदाकांश ॥ आकाशजेवी ॥ ५५ ॥ नानारिदीपमुळकां ॥ दीपशिखवाअनेक ॥ भिनलियाअवलोक ॥ होयजेरें ॥ ५६ ॥ अजं
 मतयापरी ॥ सरलीहेवाचोवारी ॥ नांदोनामार्थकाहारा ॥ मातुवूणे ॥ ५७ ॥ येणेंचिपेकारणे ॥ जेपरिहंतुंस्वरचिंजुपणे ॥ तेंहंतयाहोणे
 पेडचिना ॥ ५८ ॥ सूर्याचियेसर्वदा ॥ जयांदेहाचिनाहंवार्या ॥ तेंकेचेप्रळयावरी ॥ ह्यणोनिजम्भसाया ॥ अर्तनियधनजया
 मोजालेज्ञानादया ॥ अनुसरोनां ॥ ६० ॥ ऐसोजानाचिवादी ॥ वाभिलेदेनंआवडी ॥ तेविचिपर्याहोगोनी ॥ लावावया ॥ ६१ ॥ तंवतयाजा
 तेंआना ॥ सर्वांगींनयालेकान ॥ सपाईअवधान ॥ आतलाणां ॥ ६२ ॥ आतोदेवाचियासे ॥ जाकळीमतअसेवोरसे ॥ ह्यणोनिनिरूप
 णआकाशें ॥ वेदाळेना ॥ ६३ ॥ मगह्येणामजाकां ॥ उजवलीआजिवकृतता ॥ जेबोलायेवदाज्योता ॥ जोडल्यसी ॥ ६४ ॥ तीरग

कमीअनेकी॥गोविंजदेहाशक्ती॥विगुणिलुन्यर्क॥वरुणेपर॥६६॥पक्षेत्रेणव्याजे॥यान्नागीहंबोलिजे॥जंमसंगबीजे॥भूतोंगिके॥६७
 भूतो॥समयोनिमहद्भुतस्मिन्नामंदयाख्यहं॥संभनःसर्वभूतानांतोभवतिभारता॥१॥टी०येरुवेंतरिमहद्भुत॥यान्नागीहंतेसं
 नाम॥जंमहदादिबिज्याम॥शाळिकाहे॥६८॥विकाराबहुवसयोरि॥अर्जुनाहेंनिकर॥होणीभअवयारी॥महद्भुत॥६९॥अच्युतवा
 दसतो॥अव्यक्तएसावदंतो॥मोरव्याचियायंतो॥प्रभूतोहेंचि॥७०॥वेदांतदयंतमाया॥ऐसेह्मणिजेमाज्ञायया॥असोद्वितीबोलेवा-
 या॥अज्ञानहे॥७१॥आपन्नाभापणपया॥विसरजायनजया॥तोंचरूपुडया॥अज्ञानासो॥७२॥आणिकुहोयेकअसे॥जेविचारने
 गळेंनीदसे॥आयोरिको॥७३॥हालबिभियाजाये॥निश्चर्कान्तेरीहोये॥दुधेंजेंसोसाय॥दुधाचीने॥७४॥ऐजागरनाम्सना॥नासरू
 पअवस्थान॥नेसपुमीकायन॥जेंसोहोये॥७५॥ज्ञानवियतावायूते॥वाझेंआकाशरिते॥तयाऐसेंनरुते॥अज्ञानगा॥७६॥पेल
 खाबकापुरप॥ऐसाभिच्ययनाहोएक॥परकायनेणो॥आलोक्त॥दिस्तेअसे॥७७॥तेंबिंबस्तुजेंसोअसे॥तेंसोकीरनिदसे॥परिका
 हीअनारिसे॥देरिविजेना॥७८॥नागतानातेजा॥तेंमधिजिविसांजा॥तोंवोंवरुदुनानिजा॥ज्ञानआयी॥७९॥ऐसोकोण्हीएकीदया॥निये
 वाजअज्ञान॥सा॥तयाउडनियामकाशा॥क्षेत्रज्ञनाम॥८०॥अज्ञानयोरियेआणिजे॥आपणपेंतरेनिणिजे॥तेरूपजाणिजे॥क्षेत्र-
 ज्ञाचें॥८१॥हाचिउभययोग॥बुद्धेबापाचागा॥सत्तेचनेसर्ग॥स्वभावहा॥८२॥आताअज्ञानासारिवें॥वरुत्तुआपणपाचिदेखें॥परि
 रूपअनेकें॥नेणोकोणें॥८३॥जेंसारकभ्रमना॥ह्मणजोरमीरावोभाला॥कामुल्लितंगेला॥स्वर्गलोका॥८४॥तोंबलचकालियाहोवा
 भगदेखणेजेंजेउति॥तयानाम्नासही॥मोचियेंपेगा॥८५॥जैसेकांस्वभमोहा॥नोएकाकीदेरिवजेंबहुवा॥नोचितोपाडआत्मया॥स्व
 रणेनीणअसे॥८६॥हेंनिभित्तांनि॥ममेयउपलउपुढने॥परिभूतनीती॥याचियेंपा॥८७॥नरम्यासिहेंगहिणा॥अनादितरुणा॥अभि-
 पाव॥ओ॥७५॥सिद्धांतो॥आ॥८६॥देखत॥

वाच्यगुणी॥ अविद्याहे ॥ ८८ ॥ दयनाहीनरूप ॥ ताणेंहं अतिउमप ॥ होनि दत्तासर्मप ॥ चेतादुरी ॥ ८९ ॥ पैसाज्ञेनिचिआंगे ॥ पड्डल्याह
 जोगे ॥ आपि रत्नासमंगे ॥ गुंविणीहोये ॥ ९० ॥ महद्गुहाउदरी ॥ मरुती ओठेविकरी ॥ गार्भचिकरी ॥ येनेवेळी ॥ ९१ ॥ उभयसंगे
 पहिले ॥ बुद्धित्वमसवळे ॥ बुद्धित्वे उभारले ॥ होयमना ॥ ९२ ॥ तरुणीममनामनाची ॥ अहंकारतत्त्वर्ची ॥ तेणेमहाभूताची ॥
 अभिव्यक्तिहोये ॥ ९३ ॥ आपि विषयी दयागोसी ॥ स्वभावेंतवभूतासी ॥ ह्योभियतोसरसी ॥ तिथेहीरूपा ॥ ९४ ॥ जोळिनिव
 कारसोमे ॥ पाठीत्रिगुणांचें उमे ॥ ते ज्यावासानागर्भ ॥ तायनावा ॥ ९५ ॥ रुखाचा आवाका ॥ जैसी बाजकणिका ॥ जेविबांधेउदका
 प्रेतखेवो ॥ ९६ ॥ तैसीसाज्ञेनिसंगे ॥ अविद्यानाजगे ॥ आरयेवोनागे ॥ आपि याचि ॥ ९७ ॥ मगगर्भगोळातया ॥ कैसेरूपतेये -
 आया ॥ तेपरियेसरया ॥ सजनाचिया ॥ ९८ ॥ पैमणिजसेदज ॥ उद्विजजारज ॥ उमवतीसहज ॥ अवयवहे ॥ ९९ ॥ व्योमवा-
 युवशे ॥ वातलेनिगभरसे ॥ मणिजउससे ॥ अवयवता ॥ १०० ॥ पोटीस्सनिमरजे ॥ आगळाकनोयतेजे ॥ उठिनोनिपजे ॥ स्वेदज
 गा ॥ १०१ ॥ आपसखीउल्लंघे ॥ आपितमोमात्रेनिहृष्टे ॥ स्थावरउमदे ॥ उद्भटहा ॥ १०२ ॥ पाचापाचहोवरजो ॥ होतोमनबुद्ध्यादिसा -
 जि ॥ हेहेतुजरायुजी ॥ ऐसेजाण ॥ १०३ ॥ ऐसेचारिहेसरळ ॥ हरचरणतळ ॥ महाप्रक्षितिस्थूळ ॥ तंचिशिर ॥ १०४ ॥ प्रवृत्तीपेललेपाद
 निवृत्तीतेपातिनिद ॥ सरयेनीआंगेआठ ॥ उर्ध्वार्च ॥ १०५ ॥ कवउल्लासनास्वर्ग ॥ मुन्युन्नाक्रमध्रमाग ॥ अयोदेशचारा ॥ नितंचतो
 ॥ १०६ ॥ ऐसेलंकूरक ॥ प्रसवलीहेदरव ॥ जयाचेनिहीनोळ ॥ बाळसंगा ॥ १०७ ॥ चोत्र्याभिलक्षयोनि ॥ तियेकाजंपेरासांदिण ॥
 वाटेप्रतिदनी ॥ वाळकहे ॥ १०८ ॥ नानादेहअवयवी ॥ नामाचोलेणीलेववी ॥ माहस्त्येवाटवी ॥ नित्यनव ॥ १०९ ॥ सृष्टीवेगळवेग
 व्यंश ॥ तियाकरात्रीआगाळिया ॥ भिन्नाभिमानासूदलिया ॥ मुदितायेये ॥ ११० ॥ हेयेकोलतेचराचरा ॥ अविचारितसुंदरा ॥ म
 पाठ ॥ ओ १०९ ॥ सारिलें ॥ ओ १०५ ॥ हेउमे ॥ ओ १०६ ॥ मध्यअधभाग ॥

सर्वोभयोर॥ शोरावली॥ ११॥ ऐं ब्रह्मायतः काळ ॥ विष्णुनेमभ्याङ्गवळ ॥ महाशिवसायंकाळ ॥ बाळायया ॥ १२॥ महाप्रकयसेजे ॥ रेवे
कोनिनेवांनिजे ॥ विषमज्ञानेउमजे ॥ कल्पोदयो ॥ १३॥ अर्जुनादयापर ॥ भिष्यादृष्टिच्यारो ॥ दुगालुष्टुत्तौचाकरी ॥ चोजणउले
॥ १४॥ सकल्यजयादृष्ट ॥ अहंकारतोविनट ॥ ऐसियाहोयसेवट ॥ ज्ञानेइया ॥ १५॥ आतांअसोहेबुहोली ॥ ऐसोविश्वमायाव्या
ली ॥ तेयसांगजाली ॥ माझीसन्ना ॥ १६॥ म्हे ॥ सर्वयोनिपुकोलेयमूर्तयःसंभविताः ॥ तासांब्रह्महृद्योनिरहंबोजमदःपिता
॥ ४॥ टी ॥ याकारणेमीपिता ॥ महद्रह्यहमाना ॥ अपत्यपदुस्मता ॥ जगडवर ॥ १७॥ आतांशरीरेबहुते ॥ देवोनिनभेदेहोचिते
अमनबुध्यादिस्ते ॥ ऐकेचियेये ॥ १८॥ हागाएकचिदेही ॥ कायअनारिसेअवयवनासो ॥ नेविंविचित्रविश्वपाहो ॥ एकचिहे ॥ १९॥ ते
उचनीचाजहाळिया ॥ विषमावेगळालिया ॥ येकानिजेविजालिया ॥ बांजालिया ॥ २०॥ आणिसंभयतोहोएसा ॥ सुनिकेयैतनेकजे
सा ॥ कोपटत्वकापुसा ॥ नात्रहोय ॥ २१॥ नानाकलुगुपरपरा ॥ संततोज्ञेसीसागरा ॥ आत्माआणिचराचरा ॥ संबंधतेसा ॥ २२॥ ह्य
णोनिवहीआणिज्याळ ॥ दाढीवर्द्धनिकेवळ ॥ तेविमोंगासकळ ॥ संबंधवावा ॥ २३॥ जालेनिजगेमीझांके ॥ तरजगलेकोणाफा
के ॥ किळेवरीमाणिके ॥ लोपिजेकाडे ॥ २४॥ अळकागतेआने ॥ तगिसेनेपणकाडेगेले ॥ विकसळफाकले ॥ कमळत्वासुके ॥ २५॥ -
सागपाधनजया ॥ अवयवीअवयविया ॥ आछादिजेकींतया ॥ तेचिरूप ॥ २६॥ विरूढलियाजोधका ॥ कणिसाचानिवळा ॥ वेच-
लाकींआगळा ॥ दिसतसे ॥ २७॥ ह्यणेनिजगपरेते ॥ सारूनिपाहेजमाते ॥ तेसाहोउरविते ॥ आधेवमीची ॥ २८॥ हातूसाचाका-
रा ॥ निश्चयाचारवरा ॥ गाठीन्वाधवरा ॥ जीवचिया ॥ २९॥ आतांमियामीदोस्वविळा ॥ शरीरेवेगळाला ॥ गुणोमीचिबाधला ॥ ए-
साआवडे ॥ ३०॥ जेसेस्वमीआपण ॥ उलूनिगाआत्माभरण ॥ भोगीजेगाजण ॥ कपिधज्या ॥ ३१॥ कोकवळतेलेळे ॥ मकाईसुनि
पाद ॥ ओ ॥ ११३ आर्लेनिदिजे ॥ ओ ॥ ११५ निवट ॥ पा ॥ ओ ॥ १२१ यडलाकुंम ॥ ओ ॥ १३० मजदाबिला ॥

पिबेच्छे ॥ देवर्षीर्नां हो कच्छे ॥ तयांसीर्निचि ॥ ३३ ॥ नानासूर्यमकाशे ॥ मकटोत्तमाश्च फ्रांसे ॥ तोलोपलाहे हृदिसे ॥ सूर्ये चिक्ते ॥ ३३ ॥ ऐं आप-
 णोपे निजान्भिया ॥ छायागा आपुलिद्या ॥ बिहोर्भिर्बहानिया ॥ आन आह ॥ ३४ ॥ तैसीं दयनादेहे ॥ दाए निर्माना होये ॥ तेथरे साजो बं-
 ध आहो ॥ मोहो हो देवे ॥ ३५ ॥ विंथ चिकीं न बिधिजे ॥ हे ज्ञाणणे सजमाझे ॥ नेणणे निउयजे ॥ आपले नि ॥ ३६ ॥ तरिकाण गुणें केसा ॥ म-
 जचि र्मी बंधणसा ॥ आवडे नें परिपसा ॥ अर्जुन देवा ॥ ३७ ॥ गुणने किनो कीर्णय ॥ कायिययारूपनासा ॥ केजले हे नर्म ॥ अवधारिणा ॥ ३८
 श्लो ॥ सत्वरजस्तम इति गुणाः यद्वानि संप्रवाः ॥ निबन्ध्यानि सहावाहो देहे हे हिनमव्यय ॥ ५ ॥ टी ० तरि सत्वरजतम ॥ त्रियां मि-
 हें नामा ॥ आपि यद्वानि जन्म ॥ म्हामिका दया ॥ ३९ ॥ येथ सत्त्व तउत्तम ॥ रजते मध्यम ॥ तिहो माजितम ॥ साविथा धरें ॥ ४० ॥ हे ऐक्ये चि-
 वत्तीचा ठावार्थी ॥ त्रिगुणत्व आवे वटणाही ॥ वयसात्रय देही ॥ येकी जे विं ॥ ४१ ॥ कांमि नित्ति नकी दे ॥ जवजं वटूक वाटे ॥ तंव तंव सोनेही
 नपडे ॥ पांचिका फूसी ॥ ४२ ॥ पेंसावधपण जेसे ॥ वाहाविने आळसे ॥ सूर्युर्मी वेंसे ॥ घणावो नि ॥ ४३ ॥ तैसे अज्ञानां गिकरें ॥ निगाली
 द्यनि विरवुरें ॥ तें सत्वरज होरें ॥ नम हो होय ॥ ४४ ॥ अर्जुना गा जाण ॥ दयानामगुण ॥ आतां दारव उंखुण ॥ वांथती ते ॥ ४५ ॥ तरि से
 ब्रजदशे ॥ आत्मा मोदकापेसे ॥ हे देह मी ऐसे ॥ मुहूर्त कर ॥ ४६ ॥ अजन्म मरणांतो ॥ देह धर्मि समस्ती ॥ ममत्वाची स्मृती ॥ येनाजव ॥ ४७ ॥ जे
 सीमी जातो दे ॥ पडे नाजव दे ॥ तंव गळ आसू दे ॥ जळ पारथी ॥ ४८ ॥ म्मो ० तव सत्त्व ॥ भिमं नत्वा ॥ त्वकाश ॥ कृमनामयम ॥ सूरवस
 रगेन वक्ष्यामि ज्ञानसंगेन चानय ॥ ६ ॥ टी ० तें विसत्त्व लुब्धे ॥ सूरवक्षाना चियाणा शिकें ॥ वोदिजती प्रगसू डेके ॥ भुगेजसा ॥ ४९
 मग ज्ञाने च फडी ॥ जाणिवि चिरचुरवोडी ॥ स्वयं सूरव हे थाडी ॥ हातीं चिंगा ॥ ५० ॥ तेव्हा विद्यामानें तो पेंथला भमावे होरिखे ॥ मोसंजु
 छे हे ही देरेव ॥ म्हायोलागे ॥ ५१ ॥ ह्यण सागरनामाझे ॥ भाजि सूरिविये ना होंदुजे ॥ विकाराष्टकें फुजे ॥ सालिकाचे नि ॥ ५२ ॥ आ

पाठ ॥ ओ ॥ ३५ ॥ हीं द्याउं ॥ ओ ॥ ४५ ॥ दाउं ॥ ओ ॥ ४९ ॥ रुनेक ॥

७

७

७

गिर्येणैहीनसरे ॥ लांकणलगेदुसरे ॥ जेविहूनेचेसरे ॥ मृतआंणीं ॥ ५३ ॥ आपणाचिज्ञानस्वरूपआहे ॥ तेंगेलेंहेदुःखनवाहे ॥ किंविषय
 ज्ञानहोये ॥ गगनायेनदा ॥ ५४ ॥ रावोजैसास्वमी ॥ रंकपणेरियथानि ॥ तोदोदाणामिमांनि ॥ इंदनामि ॥ ५५ ॥ तेंसंगादेहार्तता ॥ जा-
 न्यादेहवता ॥ होल्यगेपेइसता ॥ बान्धजाने ॥ ५६ ॥ प्रवृत्तिशस्त्रबुद्धे ॥ यज्ञविद्याउमजे ॥ किंबहुगुरुझे ॥ स्वर्गवरी ॥ ५७ ॥ आणिहम
 णेआज्ञेआन ॥ मोवाचुनिनाहोसज्ञान ॥ चतुर्थद्वारागना ॥ चिनमाझे ॥ ५८ ॥ ऐसेसत्त्वस्वज्ञानी ॥ जीवाभिलाडनिकानी ॥ वेत्युंचीक
 रीनानी ॥ पांगुळाचिया ॥ ५९ ॥ आताहाचिशरीरी ॥ रज्जिज्यापरी ॥ बोधिजैतेअवधारी ॥ सांगिजेन ॥ ६० ॥ श्लो० रजोगयात्मकविदु
 दध्यासगसमुद्रवम ॥ तन्निवर्त्तकोतेयकर्मसंगेनदेहिन ॥ ६१ ॥ ही० हेरंजयाचिकारण ॥ जीवांतंरजउजाणें ॥ हेआमनास्वाचे
 तरुणें ॥ सदाचिगा ॥ ६२ ॥ हेजीवोमोर्तकोरिगे ॥ आणिकामाचामदोनागे ॥ मगनारयावळये ॥ लृष्टोचिया ॥ ६३ ॥ मृतआबुरवूवि-
 आगियाळे ॥ वज्राभिचेंसादुकले ॥ आताबहुयेकुले ॥ ओहेतेय ॥ ६४ ॥ तेंशरीरवळेचाड ॥ होयहुः स्वासकटगोड ॥ इंदनीहसा
 कड ॥ गमोलागे ॥ ६५ ॥ तेंसोत्पन्नावादिनिभ्या ॥ मेरुहीहाताभिनिया ॥ तद्दीप्त्योयखादिया ॥ सारुणावळयो ॥ ६५ ॥ जी
 विनाचीकुरोडी ॥ बोवाळुलागेववडी ॥ मानलुणाचियेजोडी ॥ ६६ ॥ आजिअसनेविचिजेन ॥ परिपाहेपांकायकीजे
 ले ॥ ऐसापांगोवडीन ॥ व्युत्सायमाडी ॥ ६७ ॥ ह्योस्वगाहनजोवें ॥ नरिकायेथेर्यावें ॥ इयालागीथोदे ॥ यागकरूं ॥ ६८ ॥ व्रता
 पाठवते ॥ आचरेइसापुते ॥ काम्यवांचुनिहाते ॥ शिवणेनाही ॥ ६९ ॥ पेंघांधांनीचावारा ॥ विसांचोनेणेवीरा ॥ तेंसानह्यणव्यापा
 रा ॥ रात्रिदिवसा ॥ ७० ॥ कायचचळमासा ॥ कामिनीकदाक्षजैसा ॥ लवलाहोतेसा ॥ विजुहीनाहो ॥ ७१ ॥ तेसुलेनिगावेगे ॥ स्वर्ग-
 संसारपोंगे ॥ आणिमाजिरगे ॥ क्रियाचिये ॥ ७२ ॥ ऐसादेहीदेहावेगळा ॥ लैलृष्टोचियासास्वळा ॥ स्वदादोपवाहेगळो ॥ व्यावारा-
 पाठ ॥ ओ ॥ ५५ गोमर्दानक ॥ ओ ॥ ७१ लंदना ॥ ओ ॥ ७३ आगळा ॥

चा ॥ ७३ ॥ हेरजोगुणचिदरुण ॥ देहादिहयासीवधन ॥ परिस्रभानाविदाण ॥ तमाचैते ॥ ७४ ॥ अमोक्षमस्तज्ञानजोविदुमोहनसर्वहोह
 ना ॥ यमादान्स्वनिद्राभिस्तन्निबभ्रमिभारत ॥ ८ ॥ टी ० व्यवहारचोहोदे ॥ मंदजेणपदे ॥ मोहरात्रीचेकाळे ॥ महंजैसे ॥ ७५ ॥
 अज्ञानाचैज्याले ॥ तयायेकालागंने ॥ जेणैविश्वभुल्ले ॥ नाचतअसे ॥ ७६ ॥ अविषकमहामंत्र ॥ जेमोद्वयमद्यांचपात्र ॥ हेअमो-
 मोहनस्व ॥ जीवांसिजे ॥ ७७ ॥ गायानेगातम ॥ रत्नोणैसंवर्ष ॥ चौरसुरदिहात्म ॥ मानीयाते ॥ ७८ ॥ हंयेकचिकारशरीर ॥ माजेलो
 गेवरचरी ॥ अणितथदुसरी ॥ गार्हनाही ॥ ७९ ॥ सर्वदियाजाद्वय ॥ मनामाजिमोद्वय ॥ माल्दतीदाद्वय ॥ आलस्याचे ॥ ८० ॥ आंगे-
 आगसोडमोडी ॥ कार्यजानोअनावडी ॥ नुसर्तापरिवडी ॥ जांभयांचि ॥ ८१ ॥ उघड्याचिदिदि ॥ देरवगेनाहीकिरही ॥ नाळविना
 चिउदि ॥ बोह्यणेनि ॥ ८२ ॥ पडिलियेयोडे ॥ नेणेकानीसुरडी ॥ तयाचिपरिसुरकुडे ॥ उक्तनेणे ॥ ८३ ॥ एश्वपाताळेंजावो ॥ का-
 आकाशहीवरीयेवो ॥ पराउतणहाभावो ॥ उपजोनेणें ॥ ८४ ॥ उचितासुचितआयवें ॥ झांस्तरतानाठवेंजीवें ॥ जेशिचानेथलोव्यावे
 एसीमिया ॥ ८५ ॥ उभउभिकरतळें ॥ पडियायकणेळें ॥ पायांचेशिरियाळें ॥ मांडुलागे ॥ ८६ ॥ आणनिद्राविषयंचिंग ॥ जीवोआ-
 थिलगा ॥ झोपीजातास्वर्ग ॥ वावोदणे ॥ ८७ ॥ न्ह्यायुहोइजे ॥ मानिजेनियांचिअर्मजे ॥ हंयाचोमहुजे ॥ व्यसननाही ॥ ८८ ॥ का-
 वादेजानोवोयें ॥ कल्हानाहीडोलोलागे ॥ अमृतहीपरनेय ॥ जरीमिदअन्नी ॥ ८९ ॥ मोचिआक्राशबळें ॥ व्यापारकोणेनेवेळे ॥ नि-
 गालंतरीआयळें ॥ रोपेंजैसे ॥ ९० ॥ वैधवाकेंसंरादावे ॥ कोणसीकायबोलावे ॥ हंठाकतेंकानागवें ॥ हेहीनेने ॥ ९१ ॥ वणवामिया
 आयवा ॥ पारवेंपुसोनियेयावा ॥ पतगयाहावा ॥ याभुजेविं ॥ ९२ ॥ तेसावळयेसाहसा ॥ अकरणीचियिनसा ॥ किबहनाएसा ॥
 ममादूरुचे ॥ ९३ ॥ एवनिद्राल्प्यममादी ॥ तमइयात्रिविधि ॥ बोयेभिरुपाधि ॥ चोरवटोने ॥ ९४ ॥ जेसावद्विक्राशीमरे ॥ नोदसे-
 पाठ ॥ ओ ७५ जे ओ ८९ ओका ॥ ओ ९१ केद्वे ॥ ओ ९४ इहीत्रिविधि ॥ ७

काक्षाकारं ॥ व्यामयदं आवरे ॥ तं यदाकाश ॥ ९५ ॥ गानासरोवर भरलें ॥ तें संतुलण शीं बांधलें ॥ आत्मत्वगे ॥ ९६ ॥
 श्लो० सत्वस्वस्वसंजय निरजः कर्मणिभारत ॥ ज्ञानमाहृत्य तु तमः प्रमादं संजयत्युत ॥ १॥ टी० पैपरि हस्त निष्प्रवात ॥ जें देही आवो
 पोषित ॥ तें कदी सतम ॥ देह जें वि ॥ ९७ ॥ कां वर्ष आत पजेंसे ॥ जिणो नि सो नि चिदिसे ॥ ते क्का होय हिं वरेसे ॥ आकाश हे ॥ ९८ ॥ नाना
 प्रजायती ॥ लोभ नि ये सूपुमी ॥ तें दण एक चिन वृत्ती ॥ ते नि होये ॥ ९९ ॥ तें सौ रजत प्रहारवो ॥ जें सत्व माजु भिरवो ॥ तें जीवावर वी-
 क्षणवो ॥ सुखि वृत्तानामी ॥ १०० ॥ तें सें चित्सत्वरज ॥ लोभ नि तमाचें भोज ॥ वळयें तें सरुज ॥ प्रमादी होये ॥ १॥ तया चिगा परि पाठी
 सत्वतमो नें पोटी ॥ याल्नि जे क्का उठी ॥ रजोगुण ॥ २ ॥ ते क्का कमा वांच्चि निकांही ॥ आनगो मंदे नाही ॥ ऐसें मानि देही ॥ देहराज ३
 त्रिगुण वृद्धि नि रूपाण ॥ तं त्मे क्कां सागी नंदं जाण ॥ आतां सत्वा दृष्टि हलक्षण ॥ सादर परि येसा ॥ ४ ॥ पै रजतम विजयें ॥ सत्व गादेही
 इये ॥ वादता चिन्हें तियें ॥ ऐसीं होती ॥ ५ ॥ श्लो० सर्व होर पुढें देहि स्मिन् प्रकाश उपजायते ॥ ज्ञानं यदा तदा विद्या हि हृद् हसत्वमित्युत ॥ ११ ॥
 लोभः प्रवृत्तिरारंभः कृपणा मशमस्फुट ॥ रमस्य तानि जायते विद्वहे भरतर्पण ॥ १२ ॥ अयकाशो प्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ॥ त
 मस्ये तानि जायते विद्वहे कुरुनंदन ॥ १३ ॥ यदा जल मय द्हेतु मलयं योति देह भूत ॥ तदेतमविदाज्ञो कानमलाभ्य नि पद्यते ॥ १४ ॥ रज
 सिमलयगन्वाक्रमसागेषु जायते ॥ नयाम्पथीनस्तमसि मूढयो नि पृजायते ॥ १५ ॥ टी० जे मजा आतुली कुडे ॥ नसमानो बाहेरी वोस
 डे ॥ वसंतो पद्मवंदे ॥ हर्त जें सी ॥ ६ ॥ सर्व द्वि यात्रा आंगणी ॥ विवेक ररी रावणी ॥ साच विकर चरणी ॥ होती लेळे ॥ ७ ॥ राजहंसा
 पुढें ॥ चोचें आगर दे ॥ गोडी जे विस्मरे दे ॥ क्षीर नाराचि ॥ ८ ॥ ते विंदोषा दोषा विवेकी ॥ इंदिये चि होतो पारखी ॥ नयमबोर पाथि-
 की ॥ वोळगेतें ॥ ९ ॥ नौथि कृणें कानि चि वाळी ॥ नपाहणें तं दिवा चि गाळी ॥ अवाच्ये ने दाळी ॥ जो सचिगा ॥ १० ॥ वाली पुढें जेंसे ॥ प
 णव ॥ ओ० १६ गुणा सामी ॥ ओ० २ पाठी ॥ ओ० ३ महोदर सुंदर ॥ ओ० १० नाथिके ॥ ओ० १० पाहोवे ॥ ७

लोलागकांछवसे ॥ निषिद्धं द्रव्यं तस्य ॥ गयोर्नोहे ॥ ११ ॥ धाराधरकांछ ॥ म हन्तर्नामनक ॥ तस्योदुद्धापयच्छ ॥ धाराधरार्ति ॥ १२ ॥ अगस्त्य
 नवचादिवसी ॥ चंद्रमसाद्येव आकाशी ॥ जालीं वीर्जितसी ॥ पूंजं संसृ ॥ १३ ॥ आगनागकुवेदे ॥ मयनिचाह ॥ यानस्य विदे ॥ विषयां वरी १४
 एवमलषादे ॥ तैर्हचिद्रूपं ॥ आग्निनिधनहोयदे ॥ तैर्हचिजरी ॥ १५ ॥ कागहायेनिरुपाणे ॥ जालयप्रगुणी ॥ पंडितयेनपाहुणे ॥
 स्वर्गोनिया ॥ १६ ॥ तैर्जिसोचिद्यैर्चासंयुक्ता ॥ अग्निवर्षाच्च ओदायैयं दुर्गा ॥ सापत्वा आणिकार्ता ॥ कानोहाये ॥ १७ ॥ मगगोपदयान
 या ॥ जबळी असेयनं जया ॥ तैर्विसर्गो जायेत हा ॥ ये आधिया ॥ १८ ॥ जेस्वगुणी उदह ॥ ये उ निसन्य चोखन ॥ निवेसां हुनिकोपह ॥ भोग
 समहे ॥ १९ ॥ अवचेदेगसां जाये ॥ नोयान्चा चिंता होये ॥ विवदुना जन्मदाहे ॥ जतिनयामाजि ॥ २० ॥ सांसापां धनुंधरा ॥ राधोरायप
 णे डोंगरा ॥ गेलिया अपुरा ॥ होयकादं ॥ २१ ॥ नातंग्येयिका दिवा ॥ नैलयायी जयागना ॥ तोतयेनो रमा दया ॥ दोपचिर्को ॥ २२ ॥ ते
 सीतेसल्लक्ष्मी ॥ आगद्या जालेसी वृद्ध ॥ तैरगावोलागेवुद्ध ॥ विवदुना ॥ २३ ॥ पमहदो लोपादी ॥ विचारु निसवदी ॥ विचारास-
 करपोदी ॥ जिगेनिजाये ॥ २४ ॥ छुनो सासततीसाये ॥ चोविसां चवीमाये ॥ तन्हीनुरा नस्मावे ॥ चतुर्थजे ॥ २५ ॥ ऐसे संयजेसवी
 तम ॥ जाले असे जशसूगम ॥ तयासे येनिरूपम ॥ आहदेहा ॥ २६ ॥ द्रव्याचिपतिगव ॥ तमसन्व अथोभुरग ॥ तैसोनिजे आगळीक ॥
 धरीरज ॥ २७ ॥ आपलियाकायाचा ॥ दुमादगावी हाचा ॥ साजविती चिदाचा ॥ उदयगमा ॥ २८ ॥ पांजळीवाहदुद्ध ॥ करिवेगळी
 वेदाळी ॥ तैसि विषयां सारळी ॥ इंद्रियाहोये ॥ २९ ॥ परदारगदिकरते ॥ परिश्रुद्धो संनावेड ॥ मगशी अयेचे निताडे ॥ संयत्रारी ३०
 हाताच वरिलोम ॥ करोस्तेरत्नाचारव ॥ वेदाळितां अलाप ॥ तन उरे ॥ ३१ ॥ आणि आलपलिया ॥ उदयजातां भलनया ॥ मवृत्ती-
 धनंजया ॥ हातनफादि ॥ ३२ ॥ तैर्विंशिरखादनासाद ॥ कावगवा अश्वमय ॥ ऐसा अचादछंद ॥ घेउनि उडी ॥ ३३ ॥ नगरे चरचावी
 जळाशयेनिर्मावी ॥ महावेलावावी ॥ नानाविधे ॥ ३४ ॥ असे सां अफादो कमी ॥ समारंभ उपकमी ॥ आगिहडाह एकामी ॥ पुंनेन
 पाद ओ ३५ वाको ॥

हृणो ॥ १२ ॥ सागरहंसाक्षपदे ॥ आगिनत्वाहतेनकवले ॥ ऐसेंअमिताशीजोडे ॥ दुर्मरत्व ॥ १६ ॥ स्मरहामनासुदो ॥ आशेचापेदकली ॥
विश्वयोपचाडा ॥ पायातळीं ॥ १७ ॥ इत्यादिवातानांरजी ॥ इथेचि देहोतीमाजी ॥ आणिएशासमाजी ॥ वेंचेजरीदेह ॥ १८ ॥ तरिआय
वाचिदहो ॥ परीपरिशारलाऔनिदेहो ॥ रिगपरयोनिही ॥ मासुथीचि ॥ १९ ॥ स्मर गळेभिमिकारी ॥ वसोगंराजमदिरो ॥ तरीकाय-
अध्वारी ॥ गवोहोदल ॥ २० ॥ वेलतेयेकरवाडे ॥ हेनल्लुकेगाफुडोनेइजोकावक्रुडे ॥ समथेचेनि ॥ २१ ॥ हाणोनिव्यापाराचाहातो ॥ उसवुदे
हानासतो ॥ नैसयाचियेपांथी ॥ जुंपजेतो ॥ २२ ॥ कमजलाचानादे ॥ किंबुहनाहोयदेही ॥ जोराजोवृत्तीचाडोहो ॥ बुलोभिनिमे ॥ २३ ॥
मगतेसांस्विदती ॥ रजसत्वहती ॥ गिळुनियेउन्नती ॥ नमोगुण ॥ २४ ॥ तैचिजियेडिंगे ॥ देहिंविमवात्संगे ॥ तिथेपरिसचांगे ॥ ओव
बळ ॥ २५ ॥ तरीहोयगेसंमन ॥ जैसरविचंदहीन ॥ रात्रिचेंकामगन ॥ अंगसेचिये ॥ २६ ॥ नैसेंअंतरअसोस ॥ होयस्फूर्तिहीनउदूस ॥ वि
चारचिभाष ॥ हारपेन ॥ २७ ॥ बुद्धिमत्तेवेनाथोडे ॥ हाठायथारिमवाळेंसांडो ॥ आमवोदेशायडी ॥ जालादिसे ॥ २८ ॥ अविवेकचेनिमा
जे ॥ सबात्वशरीरगाजे ॥ एकुळनियेपीदजे ॥ मोदयेतया ॥ २९ ॥ आचारसंगाचींहाडे ॥ मूपतीइदियापुदे ॥ मरेजरीतेणेकडे ॥ क्रिया-
जाये ॥ ३० ॥ पैआणिकुहाकदिसे ॥ जेंदुसुतीचिनउल्हासे ॥ आथारींदेखणेजेसे ॥ दुडुळचे ॥ ३१ ॥ तैसींनिषिद्धाचेनिनावें ॥ मल
तेहीपरेहांवे ॥ तिथेविययीपांवे ॥ येतीकरणे ॥ ३२ ॥ मदिरानयेताडने ॥ सन्निरातेवेणवरुं ॥ निथेमेंचिसुळे ॥ पिसेजेसे ॥ ३३ ॥
चित्तरीगळेआहे ॥ परिउमनीतेनोहे ॥ गेमेमान्हातिजेमोहे ॥ माजरेनि ॥ ३४ ॥ किंबहुनाऐसेसीं ॥ इथेचिह्नेतमपेथी ॥ जेंवाहेआ-
थितिसी ॥ आपुलिया ॥ ३५ ॥ आणिहंचिहोयप्रसंगे ॥ मरणाचेजरीपडेश्यंगे ॥ तरितुलोनिनिगे ॥ तमेंसींते ॥ ३६ ॥ रादराइप
णबिजी ॥ साठपनिनयांगन्यजी ॥ मगविरुढेतुजुजी ॥ गोदीआहे ॥ ३७ ॥ पैहोसनिदीपकान्निक्का ॥ येरुआगीविस्त्रोकां ॥ कांजेय
पाठ ॥ ओ ३८ ॥ माजीं ॥ ओ ३९ ॥ आन ॥ ओ ४० ॥ गाळीं ॥ ओ ४१ ॥ मोदये ॥ ओ ४२ ॥ गाडीं ॥ ओ ४३ ॥ बोनि ॥ ओ ४४ ॥ गिने ॥ ओ ४५ ॥

लोकेनेथ अभस्मा ॥ तोचि आहे ॥ ५८ ॥ ह्यणानितमाच्येनाथ ॥ बोधोनि योसंख्यानि ॥ देह जायत मागाते ॥ तमाचोविहोये ॥ ५९ ॥ आतांकायुरे
 पोवळे ॥ जोनमोष्टि मृत्युलाहे ॥ तोप्रशक्तापक्षी होये ॥ आउकादुर्मो ॥ ६० ॥ श्रुतो ० कर्मणः स हृत स्याहः सात्विकमिर्मलफल ॥ रज
 सस्तु फलदुःखमज्ञानममसः फल ॥ ६१ ॥ टी ० योगीचिपेंकारणे ॥ जैनमजेमत्वगुण ॥ तेंसहजगेंसोह्यणें ॥ श्रीतसमो ॥ ६२ ॥ ह्यणो
 नितयानिर्मळा ॥ स्फुरवज्जार्जसुरळा ॥ अष्टवायेंफळा ॥ साविकते ॥ ६३ ॥ मगराजसाजियाक्रिया ॥ तयादेहावणिफळलिया ॥ जेस-
 रवेचितारुनिया ॥ फळतोडुःखें ॥ ६४ ॥ कानिबोक्रियाचेंपिक ॥ वरिणोद आत विषय ॥ तेंसंतराजसदेख ॥ क्रियाफळ ॥ ६५ ॥ तामसकर्म
 जितुके ॥ अज्ञानफळाचिपिके ॥ विषाकुरगिखें ॥ जियापरी ॥ ६६ ॥ श्रुतो ० मलात्मज्ञापतेज्ञानरजसोन्नाभाएवच ॥ ममादमोहातम
 सोभवतो ज्ञानमेवच ॥ ६७ ॥ टी ० ह्यणोनिवारे अजुना ॥ येयसत्यचिहेतु ज्ञाना ॥ जसाकादिनमाना ॥ स्रयहोपें ॥ ६८ ॥ आणितेंसो
 चिहें जाणा ॥ लोभाभिजयकारण ॥ आपदेविस्मरण ॥ अहेतोजेवि ॥ ६९ ॥ मोहप्रज्ञानप्रमादा ॥ यथामेच्छादोषघंदा ॥ पुढतीपु
 दतीमष्टा ॥ तमचिमूळ ॥ ७० ॥ तेंसोविचाराचोळा ॥ निर्द्वाराण्यगळवेगळा ॥ दोविदेजेसा आवच्छा ॥ तच्छहानिचा ॥ ७१ ॥ तंव
 रजतमोदोन्ही ॥ देखिलोमोदपतनी ॥ सत्वावांचुनिनेण ॥ ज्ञानाकडे ॥ ७२ ॥ ह्यणोनि सत्वाकृतनी ॥ एकजोदेजच्यवती ॥ सर्वत्यागेंच
 नुर्थी ॥ प्रतिकेसी ॥ ७३ ॥ श्रुतो ० ऊर्ध्वगच्छति सत्वस्थामध्यतिष्ठति राजसाः ॥ जयत्यगुण दृष्टिस्था अधोगच्छति तामसाः ॥ ७४ ॥
 टी ० तेंसंसत्वाचिनिदनाचें ॥ असणेंजाणेंजयाचें ॥ तेतनुत्यागोस्वगीचें ॥ रायहोती ॥ ७५ ॥ दयाचिपरिरजे ॥ जिहीकांजिजेमर
 जे ॥ तिहोमनुष्यहोदजे ॥ मृत्युलोकी ॥ ७६ ॥ तेयस्तरबहुः सत्वाचेंशिवदे ॥ जेविजेंकेंचिनादे ॥ जेयदयेमरणवादे ॥ पडिलेसुवी ॥
 ॥ ७७ ॥ आणितयाचीस्थितीतमी ॥ जेवाहोनिनमतांम्रागदमी ॥ तेयेतीनरकसूमी ॥ मूळपच ॥ ७८ ॥ एववस्तूचियासत्ता ॥ त्रि
 पाठ ॥ ओ ॥ ६२ एक ॥ ओ ॥ ६३ दंदवारुणीपिकलिया ॥ ओ ॥ ७३ परिय ॥ ओ ॥ ७४ ॥

सूर्यकांतविद्धपायें ॥ क्रमवर्द्धाविक्रमासावें ॥ जावें तसें ॥ ९७ ॥ चयाकोणचें काही ॥ संगिता जैसां देखनाहीं ॥ नैसा अकृतोभेदेही ॥ सत्ता-
रूप ॥ ९८ ॥ मोलाउनीगुणदेखें ॥ गुणवाहे मियांपोरें ॥ ययाचे निमः शेरें ॥ इरे तैसी ॥ ९९ ॥ ऐसे भिवें वंजया ॥ उदय होय वंजया
ये गुणातीतनाया ॥ इत्ये पथें ॥ १०० ॥ आनां निगुण अस्मभाणिक् ॥ तैतो जाणे भुक्नु ॥ हे जावे कुठें ठीक ॥ नयांचि नरी ॥ ११ ॥ किंबहुना
पंडुफला ॥ ऐसी तो माजो सत्ता ॥ पावे जैसी संगिता ॥ सिंधुलगा ॥ १२ ॥ नखि कुवकर निडोडला ॥ जैसा शक्र शारें वे सत्ता ॥ नैसा मूळ अहं-
नाद किला ॥ तैमा ह्यणों नि ॥ १३ ॥ अगा अज्ञाना निया निदा ॥ जो धोरत होता वदवादा ॥ नोस्वरूपी मबुदा ॥ चै इलाकी ॥ १४ ॥ पेंबुद्धि भेदा
चा आरि सा ॥ नया हा तो निपडि नावरी शा ॥ ह्यणों निमति मुरधाभासा ॥ सुकजाता ॥ १५ ॥ देहा मिमा नाचा वारा ॥ आता वाजें नि वारा ॥
तें एक्य वीचि सागरा ॥ जीवें शाहे ॥ १६ ॥ ह्यणों निमदा वें मि ॥ या मिगा विजे तेणें सार्मी ॥ वर्षा ती आकाशी ॥ यन जात जे वी ॥ १७ ॥ श्रुतो
गुणा नेना नती न्यधी न्देही देह स मुद्धवाच ॥ जन्म मृत्यु जरा दुःखे यि मुक्तो मृत मम्युते ॥ १८ ॥ दी ॥ ते विर्मि हांडु नि नरुता ॥ मग देही वि-
ये असता ॥ नाग वेदेह स भूता ॥ गुणा सिता ॥ १९ ॥ जैसा मिगा चि नयें ॥ दीपमाकाश नावरे ॥ कान विदे नि सागरे ॥ वडवानळ ॥ २० ॥ तें
सा आला गेला गुणाचा ॥ बोध नेमळतयाचा ॥ तो देही जैसा व्यामंचा ॥ चंद्र जळो ॥ २१ ॥ निर्हा गुण आपला लिपें यादी ॥ देही नाच विनीचा
गडी ॥ तो पाहे ही नयादी ॥ अहं नेते ॥ २२ ॥ हा नाय वरी ॥ नेह ता निनेला अंतरी ॥ आता काय वरें शरीरें ॥ देही नेणे ॥ २३ ॥ सा इनि आगी-
चे रेंवेळी ॥ सपरिगालिया पाताळी ॥ तैल चाकोण सा साळी ॥ तैस जावें ॥ २४ ॥ कांसार म्य जी जैसा ॥ आमोद पिच्छे नि जाये आकाशा
मायाराक मळकोशा नये चितो ॥ २५ ॥ पेंस्वरूप समरसे ॥ तें एक्य गजालें तसें ॥ नेंयें किय महे कसें ॥ नेणे देह ॥ २६ ॥ ह्यणों नि जन्म जरुम
रण ॥ इत्यादि जैसा ही गुण ॥ ते देही चिने कारण ॥ नाही नया ॥ २७ ॥ घटा चियार सापरिया ॥ यद मंगी फेडिलिया ॥ महाकाश अपे-
पात ॥ ओ ॥ २८ ॥ काजेक ही ॥ ओ ॥ २९ ॥ अर्थ पथें ॥ ओ ॥ ३० ॥ वंदला ॥ ओ ॥ ३१ ॥ मळानि ॥ ओ ॥ ३२ ॥ काही ॥ ओ ॥ ३३ ॥ हा ॥ ओ ॥ ३४ ॥

मया॥ जालेचिअसे॥ १७॥ नैसादेहबुद्धीजाये॥ जेंअपणपणंआवोहोये॥ तेंआनकहोआहे॥ तेंचंचुनी॥ १८॥ येणेंआरबोधलेपणें॥ तस्यासि
 गादेहीअसणें॥ हाणूनिनोमीदणें॥ गुणतीत॥ १९॥ ययादेवाचियाबोला॥ पार्थअतस्तरवावला॥ मेयेंसबोरिलला॥ मयूरजैसा॥ २०॥
 श्लो० अजुनउवाच क्लृप्तैर्गैस्त्रीचगुणनितनर्तनोभवतिप्रभो॥ किमाचारःकथंचेतस्त्रीनगुणानगिवर्तते॥ २१॥ टी० तेणेंतोवें-
 वीरपुसे॥ जोकोणहचिहीतोदिसे॥ जयामाजोवसे॥ गेसाबोध॥ २१॥ तोनिगुणकायआचरे॥ कसेनिगुणनिस्तरें॥ हंसगिजोसाहेरें॥
 हरेपेनि॥ २२॥ ययाअजुनाचियाप्रभो॥ तोषडगुणाचाराणा॥ परिहारआकर्णो॥ बोलतअसे॥ २३॥ हाणपार्थतुझीनवार्द॥ हंयंतुलनि-
 पुससीकार्द॥ तेंनामचितयापाहीं॥ सांचळदिक्कें॥ २४॥ गुणातीतजयानाव॥ तोगुणार्थीनतरीनह्ने॥ नाहोयतरीनागवे॥ गुणायया २५
 परिअर्थानकानागवे॥ हेचिक्लसेनिजाणवें॥ गुणाचियेवरवे॥ माजिअसता॥ २६॥ हासंदेहजरिवाहसी॥ तोरस्तरेंपुसोलाहसि॥
 परिस्रआतांतयासी॥ रूपकरू॥ २७॥ श्लो० श्रीभगवानुवाच प्रकाशंचमयन्तिचमोहमेवचगाडव॥ नेद्विष्टसंमद्वृत्तानिनिमद्वृत्तानि-
 काक्षति॥ २८॥ टी० तरिरजचेनिमाजें॥ देहीकसोचेंआणोजे॥ मद्वृत्तजेंयेइजे॥ वेदाळुनि॥ २८॥ तेंमीचिकाकर्मद॥ ऐसेनियेअ-
 माव॥ कादूरदलियेबुद्धीवीट॥ तोहीनाहो॥ २९॥ अथवासलेंचिअधिकें॥ जेंसर्वीइयोजानफाकें॥ तेंस्तरविद्यतातेरेंवें॥ उमजेहीना ३०
 कावाटनलेनितसे॥ नागिळजेचिमोहप्रभे॥ तेंअज्ञानलेनअमं॥ येणेंहीनाहो॥ ३१॥ पैमोहाचाअवसरों॥ ज्ञानाचीचाडनधरी॥ शोनेक
 पैनादरी॥ होतानदुरवी॥ ३२॥ सायमातमयात्का॥ यातिहांकाळांचोगणना॥ नाहिजेवितपना॥ तेंसाअसे॥ ३३॥ तयाबेगळचिक्राय
 प्रकाशो॥ सागितयावेंअसे॥ काथिजळाणवपाउसे॥ साजाहोये॥ ३४॥ नाप्रवतलेनिकर्म॥ कर्मठत्वतयाकांगसे॥ सांगेहिमवंतहवें
 कोपकाइ॥ ३५॥ नानरिमोहआलिया॥ काइपादानासृष्टिजेलतया॥ होमागोतेंउद्धाळेया॥ जाळवतअसे॥ ३६॥ श्लो० उदासी
 पाव॥ ओ० १८ जाणणें॥ ओ० २० मोर॥ ओ० २४ सांचें॥ ओ० २६ जाणवे॥ ओ० २६ उतरवे॥ ओ० ३४ नाना॥ ओ० ३६ होमाआगतिं॥ ३७

नवदार्मनिगुणैर्योनविचल्यते ॥ गुणावर्तत इत्यव्योचति स्मृतिर्नंगत ॥ २३ ॥ टी० तैस्सगुणगुणकार्येह ॥ आद्यवैचि आपण आह ॥ ह्यणो-
नियक्कं नोह ॥ तज्जोती ॥ ३७ ॥ रेख्दीयागामतीती ॥ तोदेह आत्मासेवस्ती ॥ वोदमैजिगुती ॥ जातं जेसी ॥ ३८ ॥ तोजिणतानां
रवी ॥ तेसागुणनद्वेनाकरवी ॥ जेसीकाओणवी ॥ संयामाचि ॥ ३९ ॥ काशीराअंतीलमाणु ॥ यरीअतिथ्याचाब्राह्मणु ॥ नानाचोहदा
चास्याण् ॥ उदामजेसा ॥ ४० ॥ आणिगुणाचायावाजावा ॥ दळ्ळचळेनापाडवा ॥ सुगजळाचाहलावा ॥ भरुजेसा ॥ ४१ ॥ हबहुतकायि
बोलिजे ॥ व्यामवारनिर्वैजें ॥ कांसूर्यनागिळिजे ॥ अंधकारे ॥ ४२ ॥ स्वमकाराजियापरी ॥ जागतयातेनसिंतरी ॥ गुणतेसाप्य
वधरी ॥ नवधिजेतो ॥ ४३ ॥ गुणासिकोरनातुदे ॥ परदूरुनजेपाहकाडे ॥ नेगुणदोषमाथिरवेदे ॥ सम्यजेसा ॥ ४४ ॥ सत्कर्मसा
लिको ॥ रजतेरजोविषयकी ॥ तममोहादिको ॥ वर्ततअसे ॥ ४५ ॥ परिसतयाचियागामना ॥ होतिगुणभ्रियासमस्ता ॥ हेफुडेजाण
सविना ॥ लोकिक्काजेवि ॥ ४६ ॥ समुद्रचिप्परती ॥ रामकानचिद्रवति ॥ कुसुंदोवकासति ॥ चंदेतोरुगा ॥ ४७ ॥ कावारचिवाजेविदे
रगनेनिष्कळअमिजे ॥ तेसागुणाचियेगजबजे ॥ डोलैनाजो ॥ ४८ ॥ अजुनेचिणलसुण ॥ नेगुणानातजाण ॥ परिसअनांआचरण ॥ त
याचिजो ॥ ४९ ॥ स्लो० समदुःखसुखः स्वस्थः समलोषाशमकात्तनः ॥ तुल्यमियाप्रियोधेरस्तुल्यनिदात्मसत्सुतिः ॥ २४ ॥ टी०
तीरवस्थासिपातिणेती ॥ नार्हासितावाचुभिर्द्रीढी ॥ ऐसेसंयदिदी ॥ चराचरमद्रूपे ॥ ५० ॥ ह्यणांसुखदुःखसंरिसे ॥ काला-
ळअचिरेसे ॥ रिपुभक्तांजेसे ॥ हरीचंदेण ॥ ५१ ॥ येरवीतीसहजे ॥ सुखदुःखतेविमविजे ॥ देहजळोहोइजे ॥ मासोळीजे
॥ ५२ ॥ आनानंतवतेणसांडिल ॥ अहस्वस्वरूपेसोचिमांडिल ॥ सस्यातीनविडिल ॥ बीजजेसे ॥ ५३ ॥ कावायसाडुनिगाग ॥
रियाभिसमुद्रखेआग ॥ निस्तरतीगगबग ॥ रक्कालाचि ॥ ५४ ॥ तेविआपणपांचिजया ॥ वस्तीजालीगाथनजया ॥ तयादेही
पाठ ॥ ओ० ३८ जानां ॥ ओ० ३८ माजी ॥ ओ० ४१ चंदे ॥ ओ० ४२ वकिजे ॥ ओ० ४७ पासरती ॥ ४८

अपेक्षया ॥ सरवेते सेंदुः ख ॥ ५२ ॥ गन्धितं संपाहन् ॥ हे चरणजे दिग्विजयानन्दे ॥ आत्मरामदेहा आनन्दे ॥ इद्वैतसे ॥ ५६ ॥ वैभित्ताने निधाय
 सि ॥ सापैते सोऽवशो ॥ ते किञ्च प्रप्या सस्ति ॥ दहो दह ॥ ५७ ॥ ह्यणो नितयाचार्यो ॥ शोणा सो नया विशेषनाही ॥ रत्ना गुदे याका-
 हो ॥ नेण जे मेद ॥ ५८ ॥ यशये योपास्वग ॥ कानरि पडो वाय ॥ परि आत्मबुद्धीसी भग ॥ कदां नो हे ॥ ५९ ॥ निवृत्तं निउपवृत् ॥ अर्द्धो
 नउ नवरुद्ध ॥ साम्यबुद्धी न सोऽह ॥ नया परो ॥ ६० ॥ हा अद्योगे समिस्त विजो ॥ कानो न च ह्यणो नी नो देजो ॥ परि नेण जे चो रिझो ॥ शरव
 जेसी ॥ ६१ ॥ नर्सो भिदा आगि सुतो ॥ नयं काण ह निव्यर्त्ता ॥ नाहो आधारं कावार्त्ता ॥ सूया यश ॥ ६२ ॥ अमुं ० माना पमान योस्तुल्यस्तु-
 ल्या भिचारिणस्यो ॥ सवारं भगव्यर्णो गुणानेतः स उच्यते ॥ ६५ ॥ टी ० ईश्वररूपानि भूजिन्ना ॥ काचोर ह्यणो भिगां जिन्ना ॥ ह्यवग
 जे विद्वन्ना ॥ कलारावो ॥ ६३ ॥ कां स हृदपां सिं भाल ॥ अथ यवैशे वरजान्ते ॥ परि नेण रार्त्ता पाहान्ते ॥ ते जजे वि ॥ ६४ ॥ साहो क्रतुयेना
 आकाश ॥ निपिज निना जसे ॥ ते विषयस्य मानसे ॥ जणि जेना ॥ ६५ ॥ आणी कही ये कृपा हो ॥ आचार तया चाचार्यो ॥ नरव्यापा
 रां माना हो ॥ जानिदिसे ॥ ६६ ॥ सवारं भाउत कुन्ते ॥ ग्रहनी च जेथ सो वळ ॥ जळु नो पाक स पळ ॥ नेनो आगी ॥ ६७ ॥ दृष्टा दृष्टा च नि-
 नवे ॥ भावचिजि विंनुगवे ॥ सविजस्वभाव ॥ पठहाये ॥ ६८ ॥ सरवनाशीण नेण ॥ पाशाण जेण माने ॥ तेसीं सां हि सां दीमने ॥ वज्रिनीं अ-
 से ॥ ६९ ॥ आनां कितां हा विस्तर ॥ जाणे रसा आचार ॥ जया चानि नि माचार ॥ गुणा नीना ॥ ७० ॥ गुणाने अभिभूयते ॥ यदुपये जेणे ॥ तो
 आनां आर्द्धकहाण ॥ म्रो ह्यणनाथ ॥ ७१ ॥ अमुं ० माने योच्य भिचारिण सो नये गेने सवते ॥ सरुणां स्मरते त्वेना न अहं भूयाय फलते
 ॥ ७२ ॥ टी ० नरव्या भिचारर ह्मनिचिन्ते ॥ सत्सियोगमान ॥ से विने गुणाने ॥ जळुशेक ॥ ७३ ॥ नरकाण मे केसी भक्ता ॥ अच्य भिचार-
 कायव्यक्ता ॥ हे आगवै चिनिरुती ॥ हो आवीनांग ॥ ७४ ॥ नरोपाया परि यसा ॥ मानत येथे रसा ॥ रत्नी किळा वेजे सा ॥ रत्नचिना ॥ ७५
 पाठ ॥ ओ ६३ बुद्धि आ ६७ भावये ॥ ओ ६९ सरवनाशिणे ॥ ओ ७० जयाने ॥ ओ ७२ जाकळु ॥ ओ ७३ अचिचार ॥ ७४ ॥

काद्रवपणाचिनी॥ अवकाशीचिअंबर॥ गोडतेचिसारवर॥ आननाही॥ १५॥ वहतेनिचिजाळा॥ दळाचिमातकमळा॥ हूरवतोचिडाळा॥ प्रळु-
 दिक॥ १६॥ हिमजेंआकर्षल॥ तेंचिहमवतजेंविजल॥ नानादृशसुगल॥ तेंचिदही॥ १७॥ तेंसंविशवयेणेंनावे॥ हंमोचिपेआयवे॥ च-
 दंचंद्रविंबसोलावे॥ नलगजेवि॥ १८॥ घुताचिथिजनुपणा॥ नसोडितांघुतचिजाण॥ कांथादिताकांषण॥ सोनचिने॥ १९॥ नउकलि-
 नापट॥ तंतूचिअस्ससृष्ट॥ नविरवितायट॥ मृत्तिकाजेंवि॥ २०॥ म्हणोभिविस्वपणजावे॥ भगनेंभानेंयेयोवे॥ तेभानव्हेआयवे॥ सगद-
 विर्मा॥ २१॥ ऐसनिमतजणिजे॥ तेअव्यभिचारशस्त्रि॥ त्स्मणिजे॥ येथुंमदकांहींदोरजे॥ तारव्यभिचारनो॥ २२॥ याकारपेसंदते
 साडुनिअमूर्दचिने॥ आपणयासकदसते॥ जाणावगा॥ २३॥ याथोसानयाचीदिक्॥ सानयासीलागहींदेरव॥ तेंसोआपणपेआ-
 णिक॥ मानवना॥ २४॥ तेजाचेतेजोनिधाला॥ पारितर्जोचिअसेलाला॥ नयारशमोएसाभला॥ बोधहोआवा॥ २५॥ पेंपरमा-
 णुसूतली॥ हिमकणहिमाचली॥ मजमाजिन्याहाळी॥ अहंतेस॥ २६॥ हाकातरगलाहन॥ परिसिधूसिनाहोभिन्न॥ तेसाईस्वरीमो-
 अना॥ नोहचिमा॥ २७॥ ऐसनिवासमरंसा॥ दृष्टजेंउल्लासे॥ तंमत्तिपेंऐस॥ आहीह्यणा॥ २८॥ आणिज्ञानचंचांगोवे॥ दयेदृष्टीमा-
 नवे॥ योगाचंहाआयवे॥ सर्वस्वह॥ २९॥ सिंधुआणिजळधरा॥ माजीलागलीअरंवंधारा॥ तेंसीवतिवीरा॥ प्रवतेते॥ ३०॥ का-
 कुहसिंआकाशी॥ तांडीसादानाहीजेसा॥ तोपरमपरुषुतेसा॥ एकनदेगा॥ ३१॥ अतिविबोनिबिबवरि॥ प्रभेचिजेसीउजरी॥ तेंसो
 हृदुतोअवधारी॥ तेंसीहोय॥ ३२॥ ऐसनिमगपरस्पर॥ तेंसाहृदिनेंअवतर॥ तेंविंहीसकदसरे॥ अपेसया॥ ३३॥ जेसासोपवा-
 चारवा॥ सिंधुमाजिण्डवा॥ विगलेयाविरवावा॥ हंहतिक्कि॥ ३४॥ नातरिजाळुनिवण॥ वल्लिहिंविंझेआपण॥ तेंसंमदनाशुभिजा-
 णा॥ ज्ञानसुर॥ ३५॥ माझेपलपणजाये॥ प्रक्तुहेंऐलपणवाये॥ अनादिऐक्यजेंआहे॥ तेंचिनिवड॥ ३६॥ आतांगुणतेंताकिरीदी॥

पाठ. ओ. १८ ते. ओ. ८१ गा. ओ. ९५. उर. ७.

जिणिपानवनीगोथी ॥ जगत्पणाहीभिर्न ॥ ९७ ॥ किंबहुनाएशीदशा ॥ तेब्रह्मत्वगाम्दशा ॥ हेनोपवजोरेसा ॥ मातेमजि ॥ ९८ ॥ पुउतीइहींभुंगी ॥ प्रकृतोमाझाजगो ॥ हेब्रह्मतातयालगो ॥ पतिवता ॥ ९९ ॥ जैसंगेचेनिबोधे ॥ डकुम्बतजळजेनिये ॥ सिधुपदतयाजाग ॥ आननाही ॥ १०० ॥ तेसाज्ञानचियदिदो ॥ जोमातेसेवीकिरीदो ॥ तोहोयब्रह्मतेचसुकुदो ॥ नुडारत्न ॥ १०१ ॥ ययाब्रह्मत्वाभिचिपया ॥ सारुज्यएसीव्यवस्था ॥ याचिनेसेचोथा ॥ पुरुषार्थगा ॥ १०२ ॥ परीमाझोआराधन ॥ ब्रह्मत्वीहोयसोपान ॥ तेथसीहनसाधन ॥ गेंयन्हेहो ॥ १०३ ॥ नरेझणीऐसे ॥ तुझाचिनीऐसे ॥ पैब्रह्मआननसे ॥ सीवांचुनि ॥ १०४ ॥ म्हुं ॥ ब्रह्मणोहिप्रनिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचयमस्यसुखस्यैकान्तिकस्यच ॥ १०५ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गुणप्रयविष्णुरायोगानामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥ दी ॥ आगाब्रह्मपानवा ॥ अप्रियायमीपाडवा ॥ मीचिबोलिजेआयवा ॥ शब्दीइही ॥ १०६ ॥ पैमडकुआणिचंद्रमा ॥ दोनानकूनीसुखमातेसापज ॥ आणिब्रह्मा ॥ सेदनाही ॥ अगानित्यजेनिष्कप ॥ अनाद्यतथमैरूप ॥ सूरवजेंउमप ॥ अहिनीया ॥ १०७ ॥ विवेकआपलेंकाम ॥ सारुनिटाविजयास ॥ निष्कषीचेंनिःसीस ॥ किंबहुनामी ॥ १०८ ॥ ऐसेसेहोअवधारा ॥ तोअनन्याचासोयरा ॥ सागतसेवीरा ॥ पार्थसिपे ॥ १०९ ॥ येथधृतराष्ट्रह्मण ॥ संजयाहृतेंकोणे ॥ पुरीसेभिविणवायाणे ॥ काबोलमी ॥ ११० ॥ माझीअवसरीतेंफुडें ॥ विजयाचीसांगेयदी ॥ येरुजिवेद्वेणेंसांदो ॥ गोदोथिया ॥ १११ ॥ सत्रयविस्मयमानसी ॥ आहाकारुनिरससी ॥ ह्मणकैसेपादेवसी ॥ इंदुयया ॥ ११२ ॥ तरिरुपाकुनातुष्टो ॥ ययाविवेकहायोदो ॥ मोहाचाफिदो ॥ महारोग ॥ ११३ ॥ संजयऐसेचिंनिता ॥ संवादोतासाभाळिता ॥ हरिस्वाचायेतनिता ॥ महापुरु ॥ ११४ ॥ ह्मणोभिआनंयेणें ॥ उत्साहोचिनिअवनरणें ॥ श्रीहृष्यानिंबोलणें ॥ सांगिजेल ॥ ११५ ॥ तयाअक्षराआतीलभाव ॥ पावर्बनिमीतुभचाभाव ॥ आइकाद्वेणेंज्ञानदेव ॥ निवृत्तीचा ॥ ११६ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतीयदो ॥ ज्ञानदेववि ॥ चतुर्दशोऽध्यायः ॥ ११७ ॥ पाठ ॥ ओ ॥ ९९ जो ॥ ओ ॥ २ नांव ॥ ओ ॥ ३ गयेन ॥ १०

श्रीगणेशायनमः॥ आनाहृदयं आपुलं॥ चोपाळुनियामलं॥ वरीवैसं प्रपाउलं॥ श्रीगुरुचो॥१॥ ऐक्यभावाचीं अंजुली॥ स
 वैदियकुडनी॥ मस्तूनि यणुषा जुळी॥ अय्यंदेवो॥२॥ अनन्योदकंधुवट॥ वामनाजेतन्निष्ठ॥ तेंलाविलेसेबोट॥ चंदनाचेगंडी॥
 प्रेमाचेभिभांगरो॥ निर्वोदनिनूपुर॥ लेखुमुकुमारो॥ पटंनियो॥२॥ वणावली आवही॥ अव्यभिचारेंचोरवडी॥ तियेयालु
 जोडी॥ आगोठिया॥५॥ आनदांमोटबहुळ॥ सात्विकाचमुकुळ॥ तेंउमलेलेंअष्टदळ॥ ठेउवरी॥६॥ तेंथेअहंहाधुपजाळी॥
 नाहंतेजेंवाळ॥ सामरस्यंपोवाळ॥ निरंतर॥७॥ माझीतनुआणिमाण॥ इयातोह्यापाउवालेवउंथीनरण॥ करूसोगमोक्ष
 निबलोण॥ पायातया॥८॥ इयाश्रीगुरुचरणसवा॥ होपात्रतयांदेवा॥ जेसकळार्थमेळावा॥ पाटवाधो॥९॥ ब्रह्मीचेंविसवणेव
 रि॥ उन्मेषलोहउजरी॥ जेवाचेंतेंइयकरी॥ सुधामिंधू॥१०॥ पूर्णचंद्रावियाकोडी॥ वक्तृत्वाधोपेकुरेंडो॥ तेंसीआणीगोडी॥
 अक्षरांतें॥११॥ सूर्यअधिष्ठिलीयाची॥ जगाराणीविंदेंप्रकाशाची॥ तेंसीवाचाथोतयाज्ञानाची॥ दिवाबोकरो॥१२॥ नादब्रह्म
 खुजे॥ कैवल्यहीतेंमनसजे॥ ऐसावोलेंदेंसिजे॥ जेणेंदेंवें॥१३॥ अवणामूरवाचाभाडवी॥ विश्वमोर्गीमाधवी॥ तेंसीसामिन
 लीवरवी॥ वाचावली॥१४॥ ठायनपवनाजयाचा॥ मनसीसुखलुवाचा॥ तोदेवहोयशब्दाचा॥ चमत्कार॥१५॥ हेज्ञानामिनचो
 जवें॥ ध्यानामिहीजेनागवे॥ तेंअणाचरफावे॥ गोटांमाजि॥१६॥ येवेंदेंएकसोभग॥ वळधेवाचेंचेंआंग॥ श्रीगुरुपादपद्म-
 रांग॥ लाहेंजेका॥१७॥ तरिबहुबोलुंकाई॥ आजितेंआनवाई॥ मातेवांचूनिनाही॥ ज्ञानदेवदाणो॥१८॥ जेंतान्हेनिभियाअपत्ये॥
 आणिमाझगुरुएकलोते॥ झणोनिकुपेसिएकहाते॥ जालेंनिये॥१९॥ पाहापापरोवरीआघवी॥ मेघचातकांसीरिचवी॥
 मजलागींसावी॥ तेंसंकेले॥२०॥ झणोनिरिकामेंतेंड॥ कऱ्हेलेबडबड॥ कींगिताऐसंगोड॥ आंजुडलें॥२१॥ होयअष्ट
 पाठ॥ ओ॥ १४ भाग॥ ओ॥ १८ आनी॥

आपैते॥ तैवाकुचिरत्नेपरते॥ उष्णायुष्यतैमारितं॥ लोमकरी॥ २२॥ आधणीधातुनिराहरका॥ होतोऽपमृताचेतांदुह॥ अशुशुक्चो
 राखेवेढा॥ श्रीजगन्नाथ॥ २३॥ तयापरीश्रीगुरु॥ करितेजैअगि कारु॥ तैहोउनिठाकेसमारु॥ मोक्षमयआधवा॥ २४॥ पाहापाकाई-
 श्रीनारायणें॥ तयापाडवांचेंउणें॥ कींजेंचिनापुरणें॥ विश्वद्यें॥ २५॥ तैमेशीनिवृत्तिराजें॥ अज्ञानपणहेंमाझे॥ आणिलेंबोजे॥
 ज्ञानाचिया॥ २६॥ परिहेंअसोआता॥ प्रेमरुततसेबोलता॥ वेगुरुगौरवर्णिता॥ उन्मेषअसे॥ २७॥ आतांतणेंचिपसाये॥ तुह्यासा
 तांचेभीपणें॥ बोकगेनअभिप्राय॥ श्रीगीतेंचेना॥ २८॥ तरितोचिप्रस्तुती॥ बोदाविषाअध्याच्याअती॥ निर्णयकेवल्यपती॥ ऐ-
 साकेला॥ २९॥ जेंज्ञाननयाच्याहाती॥ तोचिमसयमुक्ती॥ जेयाशतमरसंपत्ती॥ स्वर्गोचिये॥ ३०॥ काशतएकजन्मा॥ जोजन्मो
 निब्रह्मकर्मा॥ करितोचिब्रह्मा॥ आननाहें॥ ३१॥ नातरास्मृत्यानाप्रकाश॥ लाहेजेबोंडोकस॥ तेंविज्ञानियासौरस॥ मोक्षानातो॥ अ-
 तरितयाज्ञानालागी॥ कवणपायोग्यनाअगी॥ हेंपाहतांआंणी॥ दंशिन्याएका॥ ३३॥ जेंपाताळिचेंहीनिधान॥ दावीलकीरजज-
 ना॥ परिहोआवेलोचन॥ पायाळाचें॥ ३४॥ तैसमारुदेहजअना॥ येथकीरवाहीआना॥ परितेविथारेऐसेमना॥ शूद्रहोआवें॥ ३५॥
 तरिविरक्तीवाचुनीकेही॥ शानासितरणेनाही॥ हेंविचारुनिठाई॥ तेंविअदेवो॥ ३६॥ आतांविरक्तीचीकवणपरी॥ जेयउनिमनाते
 वरी॥ हेंहासर्वतेश्रीहरा॥ देखिलेंअसे॥ ३७॥ जेंवेंपेंगांधिजीरमसोये॥ जेंजवणारावाउविहोये॥ तेंतोताटसांडुनिजाये॥ जयाप-
 री॥ ३८॥ तैसीसमारायासमस्ता॥ जाणिलेंजेंअनित्या॥ तेंवेगयदचडिना॥ पाठीलागे॥ ३९॥ आतांअनित्यवयाकेंसे॥ तेंचि-
 वृक्षाकारमिषें॥ सांगिततअमगिअशें॥ पंचदशी॥ ४०॥ उपदिनेकबतिरु॥ झाडयेरिमोहरावाके॥ तेंवेगेंजेंसेसुके॥ तैसेंहेनोहे
 ॥ ४१॥ यातंएकापरी॥ रूपकाचियाकुसरी॥ मारीतसेवारी॥ समाराची॥ ४२॥ कस्तूरनिसारवावो॥ स्वरूपीअहंतेंचावावो॥ हो-
 पाठः ओ० २०॥ निर्णो० ओ० २०॥ विजयती० ओ० ३२॥ नाना० ओ० ३२॥ ज्ञानेचि० ४

४

५

६

आवयाअध्यावो॥पंधरावाहा॥४३॥ आताहचिआधवो॥ग्रंथगर्मचिचागवो॥उपलकिजलनोवो॥आकणिजो॥४४॥ तरिमहानर
 समुद्र॥जोपूर्णपूर्णिसाचंद्र॥नोहमकेचानरद्र॥ऐसंक्षणे॥४५॥ अग्रायपहुकुमं॥येतांनवसूत्रनिराधग॥करीतसंआडवारा
 ॥विश्वामासजो॥४६॥ तोहाजगडबस॥नोहयेथसंसार॥होनाणिजेमहातरु॥थावनाअसो॥४७॥ परियेरसुखंसारिवा॥न
 बोमुळेवरीशारवा॥तेसानोहेहाणोनिलेखा॥नयेचिकवणा॥४८॥ आणकाकुह्लाडो॥होयारिगावाजरीबुडो॥नरोहेकभलतेव
 दी॥वरिचोबवो॥४९॥ जेतुटलियामुखापसि॥उलंडलकाशारयांसि॥परितेसोणोठोकायसो॥होसोपानके॥५०॥ अर्जुनाहेक
 वतिक॥सांगतांअसेअलौकिक॥जैवादीअधोसुख॥रुखायया॥५१॥ जैसाभानुउचिनेणोके॥रश्मीजाळतळीफोको॥ससा
 रहेकावरुखे॥झाडतेसो॥५२॥ आणिआथीनाथीनितुके॥रंधलेअसेयणोचिरके॥कल्यांतोचिनिउदके॥व्यामजेसे॥५३॥ कार
 वोच्याअस्तमानो॥आधारेंकोदरजनी॥तेसाचिहागगनी॥मांडलाअसो॥५४॥ यथाफळानाचुबिता॥फूलनानुरबिता॥जेका
 होनपंडुसता॥तेरुखचिहा॥५५॥ होउर्ध्वमूळआहे॥परिउन्मूलिनोहे॥येणेचिहाहोये॥शाडूळगो॥५६॥ आणिउर्ध्वमूळऐसे
 मनिगादेलेंकीरअसे॥परीआर्धाहोअसोसे॥मूळयया॥५७॥ प्रबळलोचोमेरो॥पिंपळाकांवडाचियापरी॥जैपारंविश्यामाझारी
 ॥झाहळियअसनी॥५८॥ तेविंविगाधनजया॥संसारनरुयया॥आधींचिआथीरवांदिया॥हेहीनाहो॥५९॥ तरीउर्ध्वहोकेडो
 ॥शोरवाचेमांदोडे॥दिसतातिअणडे॥सासिबले॥६०॥ जालेगगनचिपालवोये॥कांवारामांडलारुखाचेनिआये॥नानाअव
 स्थेत्रोये॥उदयलाअसे॥६१॥ ऐसाहाएक॥विश्वाकारविदक॥उदयलाजाणरुखा॥ऊर्ध्वमूळा॥६२॥ आतांउर्ध्वयाकवण॥ये
 थेंमूळतेकिल्लक्षण॥काअर्थोसुखपण॥शारवाकेसिया॥६३॥ अथवाद्रुमायया॥आधींजियोसुखिया॥तियाज्ञेणेकेसिया॥उ

णवः ओः ४४ आकणिजेः ओः ४७ नाणेः ओः ५६ शाडूळः ओः ६१ पांचेलियेः आः ६१ अवस्थात्रयं ७

ध्वंशास्वा ॥ ६४ ॥ आणि अमृतहा ऐसी ॥ प्रसिद्धी कायसी ॥ आत्मविद विलासी ॥ निगणिकेला ॥ ६५ ॥ हें आघवें चिबरो ॥ तुझिये प्र-
 तीती सिफावे ॥ तैसे निसांगों सोलिवें ॥ विन्यासंगां ॥ ६६ ॥ परी ऐवें गासु भगा ॥ हा प्रसंग असे तुज चिजोगा ॥ कानचिकरी हो सवो
 गा ॥ हि ये आधिलियां ॥ ६७ ॥ ऐसं प्रेमसे सूर फुरें ॥ बोलिले जवयाद वरोरें ॥ तंव अवधान अर्जुनाकारो ॥ मूर्त जालें ॥ ६८ ॥ देव निरू-
 पितो तेथें कुलें ॥ येवढे श्रीते पण फाकले ॥ जेस आकाशें खेव पसरिलें ॥ दाहो दिशो ॥ ६९ ॥ श्रीकृष्णोक्ति सागरा ॥ हा अगस्तीचि दु-
 सरी ॥ ह्मणै निघां दभरो पाहे एकसरा ॥ अवधेयाचा ॥ ७० ॥ ऐसी सोय सांडु निखवळिली ॥ आकडी अर्जुनी देवें देखिली ॥ तेथ जा-
 ले निखरे केली ॥ कुरवडीतया ॥ ७१ ॥ श्री
 छंदोभियस्य पणोभियस्त वेदस वेदवित् ॥ १ ॥ दी० भगद्वणोधनजया ॥ तें उर्ध्वगत रूपया ॥ तें उर्ध्वगत रूपाजया ॥ उर्ध्वगत भे-
 ॥ ७२ ॥ येहवीं मधोर्ध्व अधा ॥ हे नाहीं जेथ भेद ॥ अहयासी एकवट ॥ जयावाणी ॥ ७३ ॥ जो नाई किजतानाद ॥ जो असो रम्यम करद ॥
 जो आंगाधिला आनद ॥ सूर ते विणा ॥ ७४ ॥ जया जे आह्मापरी ते ॥ जया जे पुढं माघो ते ॥ हरये वीण देखते ॥ अहश्य जे ॥ ७५ ॥ उ-
 पाधीचा दुसरा ॥ घालितां वोपासिरा ॥ नामरूपास सागरा ॥ होय जयते ॥ ७६ ॥ जातु होया विहीन ॥ नुसर्धो निजाना ॥ सखां प्रले-
 गराना ॥ गाळी वजे ॥ ७७ ॥ जे कार्यनाकारण ॥ जयातु जे नायेक पण ॥ आपणया जे जाण ॥ आपणचि ॥ ७८ ॥ ऐसे वस्तु जे सांचें ॥ तें ऊ-
 र्ध्वगाययात रूचे ॥ तेथ आरधेणें मृळीचें ॥ तें ऐसं असे ॥ ७९ ॥ तरी माया ऐसी रख्याती ॥ नसली चयया आर्या ॥ हे वाझीची संतती ॥ वा-
 नणे जे सें ॥ ८० ॥ तैसी संतना असत होये ॥ जे विचारानें नामन साहे ॥ ऐसे यापरी आहे ॥ अनादि क्षणती ॥ ८१ ॥ जेना नातला नि-
 मांदुस ॥ जे जगदप्समाचें आकाश ॥ जे आकारानाचें दुस ॥ घडो केले ॥ ८२ ॥ जे भवदुमबीजका ॥ जे प्रपंच विप्रमृमिका ॥ विप्र-
 णाठ ॥ ओ ६९ इये अर्थी ॥ ओ ७० तो ॥ ओ ७१ दिसते निविण दिसते ॥ ओ ८० कां ॥ ओ ८१ प्रपंचाचि ॥ ७२

रीतज्ञानदीपिका॥ सांचलीजो॥ ८३॥ तं मायावस्तुचातयां॥ असंजसेनिनाहां॥ मगवस्तुप्रमाचिपाहां॥ प्रकटहोयो॥ ८४॥ जेव्हाआ
 पणयांआलीनिदा॥ करीआपणपंजेविमुग्ध॥ काकाजकीआणीमंद॥ प्रमादीपो॥ ८५॥ स्वप्नीप्रियापुढंतरुणांगी॥ निंदेलीचेव्रत-
 निवेगां॥ आलिंशिलेनिवोणआलिंगां॥ सकासकरी॥ ८६॥ तेंसीस्वरूपजालीमाया॥ आणिस्ररूपनेणजेयनंजया॥ तेचितर-
 यया॥ मूळपहिले॥ ८७॥ वस्तुसिआपलाजोअबोध॥ तोउर्ध्वीआढळेंकंद॥ वेदांतीदाचिमिह॥ बीजभाव॥ ८८॥ यनअस्मन
 सुषुप्ती॥ तोबीजाकुरभावस्मणती॥ येरस्वप्नहनजायुती॥ द्वाप्रकभावनियेना॥ ८९॥ ऐसीययावेदांती॥ निरूपणभाषाप्रतीती॥
 परीतेंअसोप्रस्तुती॥ अज्ञानसूळ॥ ९०॥ तेंउर्ध्वआत्मानिमळें॥ अधोर्ध्वसूचितामूळें॥ वळियावांधानिआळें॥ मायायोगाचें॥ ९१॥
 मगअधिलोसंदेहांतरे॥ उठितीजियअपारे॥ तेंचापामधे इनिआगारे॥ रंवालावती॥ ९२॥ ऐसंभवादुभाचेंमूळ॥ हेंउर्ध्वीकरीबळ
 ॥ मगआश्रियाचेंबळ॥ आधिदावी॥ ९३॥ तेंचिचहूत्तोपाहिले॥ महत्तत्त्वउभलले॥ तेंपानेवालेंदुल्ह॥ येकनिघो॥ ९४॥ मगसल
 रजतमात्सुक॥ त्रिविधअहंकारजोयक॥ तोतिदयाअधोमुख॥ ईरपुटा॥ ९५॥ तोबुद्धिचोघोरुनिआगारी॥ भेदाचीहृदीकरा॥ ते
 थमनाचेंजळधरी॥ सांजेपणें॥ ९६॥ ऐसामूळानियागादिका॥ विक्लयरसकोवळिका॥ चित्तचतुष्टयडाहाळिका॥ कोभिजेतो॥ ९७॥
 ॥ मगआकाशवायूद्योतक॥ आपपृथ्वीहोपाचपाक॥ महाभूतानेसुरास॥ सरळेहोती॥ ९८॥ तेंसीथोत्रादितन्मात्रो॥ तियेअगव-
 सागभपत्रें॥ लुकलुळितेंविचित्रें॥ उमळतेपागा॥ ९९॥ तेथशब्दाकुर्वीरगदी॥ शोत्रावादीतंदूडी॥ होतोकरितकांडेनकूडी॥ आका-
 क्षेचि॥ १००॥ अगलचेंचेंवलपल्लुवा॥ स्पशांकुरीयेतीथाव॥ तेंथबांबळपडेअभिनव॥ विकारांचे॥ १०१॥ पावीरूपपत्रयालीवेली॥ च-
 क्षलांबतेकांडेघाली॥ तेवेकींच्यामोहनामली॥ पान्देलीजाये॥ १०२॥ आणिरसाचेंआंगवसें॥ गटातेंवेगेंबहुवसें॥ जिद्धेआर्तिचा
 पाठ॥ ओ॥ १२॥ आंधळां॥ ओ॥ १३॥ आणियनें॥ ओ॥ १४॥ दाक्ष॥ ओ॥ १५॥ डाळ॥ ओ॥ १६॥ डाळ॥ ओ॥ १७॥ परबडा॥ ओ॥ १८॥ वेगो॥ १९॥

असोसं॥नियतीवंचं॥१॥तैसंचिकोमेलनिगंधे॥घ्राणचिडिस्थिवंधे॥तेयतळघेस्वानंदं॥प्रलोभाचा॥१॥एवमहदादिअहं
 बुद्धि॥मनमहाभूतसमृद्धि॥इयेसंसारचिअवधि॥मासनजे॥५॥किंबहुनाइहीआटे॥आगीहाअधिकफांटे॥परिशिंपोनि
 येवटेउमठे॥रूपंजैविं॥६॥कांसमुद्राचेनिपेसारे॥वरीतरंगतअसारे॥तैसंब्रह्मचिहोयवृक्षाकारे॥अज्ञानमुख॥७॥आतां
 याचाचिहाविस्तार॥हाचियथोपेसार॥जैसाआपणेंचिस्वप्नीपरिवार॥येकाक्रिया॥८॥परितेंअसोहरेसं॥कावरेझाउउससे॥
 ययामहदादिआरवसे॥अधोशारवा॥९॥आणिअमृत्यऐसेंयथोते॥झणनजेजाणते॥तेंहीपरिसहोयेथे॥सांगिजेल॥१०॥
 तरिअमृत्यझणिजेउरवा॥तोवरीएकसारिखा॥नाहीनिर्वाहययाहीरुखा॥प्रपंचरूपासी॥११॥जैसानलोटाक्षण॥मेघहोयना
 नावर्ण॥कांविजूनसेसंपूर्ण॥निमेषभरी॥१२॥कायनथापदादळा॥वरीलयाबेसकानाहीजळा॥कांचित्तजैसेंव्याकुळा॥माणुसा
 चें॥१३॥तैसींचिययाचीस्थिती॥नाशतजायझणझणाप्रती॥झणोनिथयतेंझणती॥अमृत्यहा॥१४॥आणिअमृत्ययेणंना
 वें॥पिंपळझणतीस्वभावे॥परितोअभिप्रायनोहो॥श्रीहरीचा॥१५॥येहूवोपिंपळझणतोविरवीं॥भियांगतीदेखिलोअसेनिकी॥
 परितेंअसोकायलोकिंका॥हेतुकाजा॥१६॥झणोनिहाप्रस्तुन॥अलौकिकपरिसांगुंथा॥तरिझणिकलेचिअमृत्य॥बोलिजेहा॥१७॥
 ॥आणीकहीयेक्योरा॥यथाअव्ययत्वाचाडगर॥आधीपरीतोमीतर॥ऐसाआहुं॥१८॥जैसामेघाचेनितोडें॥सिंधूएकेआंगेकाटे
 ॥आगिनदीयेरीकडे॥झरितोचिअसनी॥१९॥येथबोहटेनाचटे॥ऐसापरिपूर्णचिआवडे॥परितेंफुलजवसुधुड॥मेघानदीचि॥
 ॥२०॥ऐसीयारुखाचेंहोणेंजाणें॥नतकैहोतेंनवहिलेपणें॥झणोनिथयतेंलोकझणो॥अव्ययहा॥२१॥येहूवीदानशीळपुरुषावे
 चक्रपणेंचिसंचक्र॥तैसाव्ययेचिहाकरुवा॥अव्ययगमी॥२२॥जातोवेगेंबहुवसें॥नवचेकाभूमीरुतलेंअसे॥रथाचेंचक्रदिसे॥जिया
 पाठ॥ओ॥५॥महदहं॥ओ॥११॥मृत्य॥ओ॥१६॥घडनां॥ओ॥१८॥असे॥

परी॥ २३॥ जैमैकालातिक्रमैजंबांछे॥ तैमैतुनशाखाजयगळे॥ तैयकोडोवरीउमाळे॥ उठतीआणिक॥ २४॥ परीयेकीकथबागेली
 ॥ शाखाकोडोकीकथबांजाली॥ हेंनेमैजेविउमल्लो॥ आषाढअंशे॥ २५॥ महाकल्याचाशेवदो॥ निंदेलियउमळतीसुष्टी॥ तैस
 चिआणिशिवेदांगउठी॥ सांमिन्नले॥ २६॥ संहारवातेप्रचंडे॥ पडतीप्रलयार्ताचींमालंडे॥ तवकल्यादिचौजुबांडे॥ पाल्हेज
 ति॥ २७॥ रिगेमन्तूरमनुपुटे॥ वंशावरीवंशाचेमांडे॥ जैसाइक्षवृन्दीकांडे॥ नकोडें॥ जिकेजेविं॥ २८॥ कलियुगांतिकोरडी
 ॥ चहुंयुगांचींमालेसाडी॥ तवकृतयुगातीचिपेलीदेवडी॥ पडेपुढती॥ २९॥ वर्ततेवर्षजाये॥ तेंपुढिलामुळहारिहोये॥ जैसा
 दिवसजातकीयेतआहे॥ हेंचोजेवना॥ ३०॥ जैशावारियाचाझूळका॥ सांदादाउवानव्हेदेखा॥ तैसियाउठतीपडतीशाखा
 नेणोकिती॥ ३१॥ एकीदेहाचीडिरीतुटे॥ तवदेहाकुरीबहुवीफुटे॥ ऐसेनिमवतरुहावोटे॥ अव्ययेसा॥ ३२॥ जैसेवाहतेपाणीजाय
 वेगे॥ तैसेंचआणिकभिकेमोगे॥ येथअसतचिअसिजेगे॥ मानिजेसत॥ ३३॥ कालागेनिडोळाउघडे॥ तंवकोडोवरीघडेमो
 डे॥ नेणतयातरंगआवडे॥ नित्यऐसा॥ ३४॥ नानावायसाएकबुळेंदोहंकेडे॥ दोळाचाकिताअपंडे॥ दोन्हीआयीऐसाप
 डे॥ ऋमजैविंजगा॥ ३५॥ पैभिंगेरीनिधियेपडली॥ तेगमेभूमीसैजैसीजडली॥ ऐसावेगातिशयशुली॥ हेतुहोये॥ ३६॥ हे
 बहुअसोझडती॥ आंधारेंभोवडितांकोलती॥ तेदिसेजैसीआयती॥ चक्राकार॥ ३७॥ हासमारवृक्षतेसा॥ भाडनभाडन
 सहसा॥ नदेखोनिलोकापिसा॥ अव्ययमानी॥ ३८॥ परियथाचवेगदेखे॥ जोहाक्षणीकऐसाबोळरेव॥ जाणेकोडिवेळाजिमि
 खे॥ होतजात॥ ३९॥ नाहोअज्ञानावाचुनिमुळ॥ यथाचैअभिलेपणटवाळ॥ ऐसंझाडचिसिनसाळ॥ देखिलेजे॥ ४०॥ तथा
 तेंगापडुसुता॥ भीमवर्द्धहाक्षणेजाणता॥ पैवाग्रक्षीसिद्धता॥ वद्यतोचि॥ ४१॥ योगजाताचैजोडले॥ तथायेकासींचिउप

पाठ- ओ- २६ उद्भवलिङ्ग- ओ- २९ सर्व- ओ- ४० सामिन्नलेपण-

५

५

५

५

योगगेलें ॥ किंबहुना जियालें ॥ ज्ञानही तें गें ॥ ४२ ॥ हे असो बहुबोल गों ॥ वानिजल तो कवणों ॥ जो भवरु स्वजाणें ॥ उरिवे एस ॥ ॥ ४३ ॥ श्लो० अथ श्रौर्ध्वं प्रसृता सस्यशारखा गुणहृदा विषय प्रबालाः ॥ अथ श्रमूला न्यनु संतानि कर्मानुबंधी निमनुष्य लोके ॥ २ ॥ टी० मग यथाचि प्रपंचरूपा ॥ अधोशाखिया पादपा ॥ डाहा क्रिया जातो उमरा ॥ उर्ध्वाही उज्ज्वा ॥ ४४ ॥ आणि अधि प्रां कली डावें ॥ ति ये होती मुखें ॥ तथाही तळी पयखे ॥ वेल पालव ॥ ४५ ॥ ऐसे जे आह्मी ॥ स्मृणित ले उपक्रमी ॥ ते ही परि संसारा मीं ॥ बोलों सांगों ॥ ४६ ॥ तीं बहु मुखें अज्ञानें ॥ महदादिकी शासनें ॥ वेदांची श्रवणें ॥ यंत्रुनियां ॥ ४७ ॥ परि आधीं तू वसे द ज ॥ जरा युजं झिजं अंज ॥ हे बुदो निमहा सुज ॥ उतती चारी ॥ ४८ ॥ यथा एकै कंचे नि आगवै ॥ चै न्याशी लक्षधा फुटें ॥ ते वे लां जीवशाखी फाटें ॥ सै यचि होती ॥ ४९ ॥ प्रसवनशाखा सरळिया ॥ नाना स्त्री डाहाळिया ॥ आड फुटती माळिया ॥ जातो चिया ॥ ५० ॥ स्त्री पुरुष नपुंसकें ॥ हे व्यक्ती भेदांचे दके ॥ आंदोळती आंगिकें ॥ विकार मारे ॥ ५१ ॥ जैसा वर्षा काढा गनी ॥ पाल्हे जे नव धनो ॥ तें सें आकार जात अज्ञानी ॥ वेली जाये ॥ ५२ ॥ मग शाखांचे नि आंग मारे ॥ लुको नि गुंफती परस्परें ॥ गुणक्षोभांचे वारे ॥ उदय ज ती ॥ ५३ ॥ तै य तें गें अचटें ॥ गुणांचे नि झड झडाटें ॥ तिहा वायीं हा फाटें ॥ उर्ध्व मूळ ॥ ५४ ॥ ऐसा रज्जा चिया झड्डुका ॥ झडाडित आगळिका ॥ मनुष्य जाती शाखा ॥ थोरावती ॥ ५५ ॥ निया उर्ध्वी नि अधी ॥ माझारींचे कोदा कोदी ॥ आड फुटती रवादी ॥ चतुर्व णांचा ॥ ५६ ॥ तै य विधि निषेध सपल्लवा ॥ वेद वाक्यांचे अभिनव ॥ पालव डोलती वारवा ॥ आपुला लिखा परी ॥ ५७ ॥ अथ काम प्रसूरा ॥ अग्रवने यती थारे ॥ तै य क्षणिकें पदांतरें ॥ इह भोगाचीं ॥ ५८ ॥ तै य प्रवृत्तीचे नि वृद्धि लोभें ॥ स्वां करे जती शमा श्रमो ॥ नाना क्रमा चै रावें ॥ नेणों किती ॥ ५९ ॥ तै वीं विभोग क्षय मागिलें ॥ पडतीं तै हातीं चि बुड सळें ॥ तव पुढा वाटि पेलें ॥ नव या देहाची ॥ ६० ॥ अण पाठ ॥ ओ० ४८ ॥ जार जे द्विसमणिज ॥ ओ० ४९ ॥ अण गटें ॥ अधो फुटें ॥ ओ० ५० ॥ फाटती ॥ ओ० ५१ ॥ प्राणतीतया ॥ ओ० ५२ ॥ देहाची ॥ ५३

णिशब्दादिकस्महावे॥ सहजरेणेंहवो॥ विषयपल्लवनवो॥ नित्यहोती॥ ६१॥ ऐसेंरजोवातेप्रचंड॥ मनुष्यशाखांचेमांदोडे॥ वादती-
 तोएथरूढे॥ मनुष्यलोका॥ ६२॥ नैसांचितोरजाचावारा॥ नावेकधरीवोसर॥ मगवाजोलागेधोरा॥ तमाचामो॥ ६३॥ तेथवायांचि-
 यामनुष्यशाखा॥ नीचवासनाआधारे॥ पालेजतीडाहाळिका॥ कुकर्मोचिया॥ ६४॥ अप्रवृत्तीचेवृणवाळे॥ कौभनिघती-
 सरये॥ घेतपानपलवडां॥ प्रमादानी॥ ६५॥ बोलतीनिंधनियमो॥ जियाकचायजुःसोमे॥ तोपलातयायुमो॥ टकेयवरी॥
 ६६॥ प्रतिपादिलीअभिचार॥ आगमंजपरमार॥ तेंहायनांयतीनसर॥ यासनावेली॥ ६७॥ तंवतवहोतीथोरुडे॥ अकर्मानी
 तळबुडे॥ आणिजन्मशाखापुंदपुंदे॥ घंतीधावा॥ ६८॥ तेथचाडाळ्यादिनिरुहा॥ दोपजातीचाथोरभादा॥ जाळपडेकर्मभ्रष्टा॥
 भुजोनिया॥ ६९॥ पशूपक्षीमूकर॥ व्याघ्रदुश्चक्रविरवार॥ हेआडशाखाविकर॥ थोरावती॥ ७०॥ परिशाशाखापाडवा॥ स-
 वोगीहैनित्यनवा॥ नरकभोगयावा॥ फळाचातो॥ ७१॥ आणिहिंसाविषयपुदारी॥ कुरुमसंगेंधुरधुरी॥ जन्मवरीआगारी॥
 वादतीचिअसे॥ ७२॥ ऐसेहोतीतरुत्तण॥ लाहलोठपाण॥ इयाखावतितीचीचिजाण॥ फळेहोहेचि॥ ७३॥ अजुनागाअव-
 धारी॥ मनुष्यालागेनिडयापरी॥ वृद्धिस्थायरांतवरी॥ अधोशाखाची॥ ७४॥ ह्मणोनिजेमनुष्यडाळे॥ इयेंचिजाणावीआधां-
 चींमूळे॥ जेएथुनिहापघळे॥ ससारतरू॥ ७५॥ केहवीउर्ध्वचिंपायी॥ मुदलमूळपाहता॥ आधींचियामध्यस्था॥ शाखाड-
 या॥ ७६॥ परितोमसीसालिका॥ स्मृतंदुद्रुतात्मकी॥ विरूढतीयाशाखा॥ अधोर्ध्वोचिया॥ ७७॥ आणिवेदत्रयाचियापाना
 ॥ नयेअन्यत्रलागेअजुना॥ जेसुनुष्यावाचुनिविधाना॥ विषयनाही॥ ७८॥ ह्मणोनितनुमानुषा॥ इयाउर्ध्वमूळेंनिजरीशा-
 रवा॥ तरीकर्मवृद्धीसिंदरवा॥ इयोचिमूळ॥ ७९॥ आणिआनीतरीझाडों॥ शाखावादातामुळेगादी॥ मूळगाढेतवदा॥ पेस-

पाव. ओ. ६३ जेथवां. ओ. ६५ फांक. ओ. ६९ जाणें. ओ. ७० निकर. ७

आथी॥८०॥ तंमैचिइयाशरीरा॥ कर्मतंवदेहासंसार॥ अग्निदेहनवव्यापारा॥ नाह्यणोचिनये॥८१॥ ह्यणोनिदेहमासुषो॥ इयं
 मूळं होतीनचुके॥ ऐमंजगज्जनके॥ बोलिलेतेणे॥८२॥ मगतमाचेंतेदारुणा॥ स्थिरावलेयावाउधाण॥ सत्वाचीसुंदेसत्राणा॥
 बाहुदळी॥८३॥ तेंयाचिमनुष्याकारा॥ मुळांसंवासनाविद्यतीआरा॥ येउनिफुटतीकांबारा॥ स्फुटतांकुंगी॥८४॥ उकलतेनि
 उन्मेषे॥ प्रज्ञाकुशलतेचितीरे॥ दिश्यानिद्यतीनिमिसे॥ बाबळेजुनी॥८५॥ मतीचेसोदवावे॥ यालितोस्फूर्तोचियावे॥ बु
 द्धिसंकाशघेयावे॥ विवेकाचेनी॥८६॥ तैथमेथारसेंसगर्भा॥ आस्थापत्रांसंबावे॥ सरळनिद्यतीक्षेत्र॥ सहृतीचे॥८७॥ सदाचा
 सचियासहसा॥ टकाउठतीबहुवसा॥ घुमघुमितीघोषा॥ वेदपद्याचा॥८८॥ शिष्टागमविधानो॥ विविधयागविताने॥ इयेपा-
 नावरीपाने॥ पालेजती॥८९॥ एथायमदमीघोसाळिया॥ उठतीतपाचियाडाहाळिया॥ देतीवैराग्यशारवाकोवळिया॥ बेल्लाक
 पणें॥९०॥ विशिष्टांम्रतांचेफोका॥ धीराचाअणगदींनरव॥ जन्मवेगेंउर्ध्वमुख॥ उंचावती॥९१॥ माजिवेदाचापालादाद॥ तोक-
 रीस्मविघेचाझडझडाद॥ जंववाजेअचाट॥ सत्वांनिळा॥९२॥ तैथधर्मडाकबाहाळी॥ दिसतीजन्मशारवासरळी॥ तियाआडभाद
 तीफळी॥ स्वर्गादिकी॥९३॥ पुढेंउपरतीरागेंलोहिवा॥ धर्ममोक्षाचीशारवापालवी॥ पाल्लजतेंनित्यनवी॥ वादतीचिअसे॥९४॥ पें
 रक्विचदादिग्रहवर॥ पितृभूषिविधाधर॥ हेआडशारवाप्रकार॥ पैसेयेती॥९५॥ याहापासूनउचवडें॥ गुदलेफळाचेनिबुडें॥ इद्रा-
 दिकतेमांदोडे॥ थोरशाखांचे॥९६॥ मगतयाहीउपरीडाहाळिया॥ तपोधनोउंचावळिया॥ मर्गचीकश्यपादिइया॥ उपरीशाखा॥
 ९७॥ एवमाळोवाळीउत्तरोत्तर॥ उर्ध्वशाखाचापैसार॥ बुडांसानाअग्नीयोर॥ फळाढ्यहा॥९८॥ वरीउपरिशारवाहीपावी॥ येतोफ-
 लभारजेकिरीटी॥ तेब्रह्मेशांतअणयदी॥ कोमनिद्यती॥९९॥ फळाचेनिवोझेपणें॥ उर्ध्वविंवाडेदुणे॥ जवमाघोतेंवैसणें॥ मूळी-
 पाठ॥ ओ॥८९ पांजरती॥ ओ॥९४ लाह्यालाहात॥ ओ॥९७ ज्ञानी॥ ओ॥९८ पणें॥ ५

चिह्नोयो॥२०॥ प्राकृताहीनरीरुखा॥ जफळेदादलीहोयशारवा॥ तेवोवांडळींदरवु॥ बुडामिये॥१॥ तेंसंजेंथुनिहाअघवा॥ संसारतरू
 चाउठावा॥ सियेमुकींठेकनीपांडवा॥ वाहतेनिजानें॥३॥ द्योणानिब्रह्मशानापसं॥ वाटणनाहीजीवानें॥ तेथुनिमगवरोतें॥ ब्रह्मचिकें॥३॥
 परिहेअसोसं॥ ब्रह्मादिकतेआंगवसे॥ उर्ध्वमूकासंरसे॥ नत्कनीगा॥४॥ आणिकहीशास्वाउपरना॥ जियासनकादिकनामोविरव्या
 ता॥ तियाफकींमुकींनाडकता॥ भरलियाद्वी॥५॥ एसीमनुष्यापासूनैजाणावी॥ उर्ध्वब्रह्मादिशेषपालवी॥ शाखाचीवाटीबरवी॥३॥
 नवैपें॥६॥ पार्थाउर्ध्वचियाब्रह्माद॥ मनुष्यताचिहायआधी॥ द्योणानिइयेंआधी॥ द्योणीतलींमूकें॥ ७॥ एवतुजअलौकिक॥ हाअर्थ॥ येशा
 स॥ सांगीतलाभवरूख॥ उर्ध्वमूक॥ ८॥ आणिअधिचिंहमूकें॥ उपपत्तीपारसविलोसविकें॥ आतांपरिसउच्यूकें॥ केसेनिहा॥१॥ ब्रह्म
 नरूपमस्येहृतथोपलभ्यतेनोतोनचार्दनचसर्पतिष्ठा॥ अश्वत्थमनसुविरूढमूलमगशस्त्रेणट्टेनछिन्वा॥३॥ टो॥ परितुझाहनपोटी
 तेसंगमेळकिरीटी॥ जेयवेदंझाडुत्पाटी॥ गेंसेकायिअस॥१०॥ किंब्रह्मथाचासवदरी॥ उर्ध्वशाखाचीथोरी॥ आणिमूळतंवीनराकरी॥३॥
 धीअसे॥११॥ हास्थवराहीतळी॥ फोक्तअसेअधीचांडां॥ माजिधावतसदुजासुकीं॥ मनुष्यरूपी॥१२॥ ऐसागाढाणिअफाट॥ आतां
 कोणकरीययसेवट॥ तंरझाणिहाहकव॥ धरसीमावा॥१३॥ तरिहाउच्यूकावयोदूश॥ येथसायासचिकायिसा॥ कायबाळाबागुलदेशी
 दवडावाहे॥१४॥ गंधर्वदुगकायपाडावी॥ कायशशिषाणमोडावी॥ होअवेमगनाडावी॥ वरपुण्यकीं॥१५॥ तेंसासंसारहावीसा॥ रूखनाही
 सातोकारा॥ माउच्यूळणींदारा॥ कायसातशि॥१६॥ आह्वांसगीतलीजेपरी॥ मूळडाळाचीउजरी॥ तेंवाझेचीघरपरी॥ लंकुरेजेसी॥१७
 कायकीजेनिचेदंरूपणी॥ स्मृतीचींतिथेवोळणी॥ तेंसीजाणतेकाहाणी॥ दुगळेंचित॥१८॥ बांचूनिआह्वांनिरूपिलजेंसे॥ ययाचेअचमूक
 असेतेंसे॥ आणितंसाचिजरीहाअसं॥ मांचाकारा॥१९॥ तरिकोणाचेनिंसातना॥ निपजतीतयाउच्यूळणी॥ कायफुकिलियागानें॥ जाइजेला॥२०

पाठ ओ० ६ बागोनि ओ० ९ उपपत्तीदादली ओ० ११ द० ओ० १४ उच्यूकावायादोषें ओ० १८ जायां ओ० १८ उगळे

दृष्टो नैपेधनं जया ॥ आहो विनिर्लेख्यं रूपं तैमाया ॥ कामं वीचं ननु पराया ॥ चोद्यं रिलजैसा ॥ २३ ॥ मृगजळा चिंता तकी ॥ तयो दिवा दुस्सा नेव्या हाकी ॥ का
 चूनि ते पोषिणिये साकी केळी ॥ ललवि सीकाई ॥ २४ ॥ मूळ अज्ञान चिंतं वलुटिकें ॥ मातया चैका ये हे कुकें ॥ दृष्टो नि संसार वसत्येकें ॥ वादो
 चिया ॥ २५ ॥ आणि अंतयानादी ॥ गंसे बोलि जे कांही ॥ तें ही साचि चियाही ॥ एके पोरी ॥ २६ ॥ तस्ये बोध जे नो हो ॥ तं विने द्रकाय अंत आहो ॥ कीरात्री-
 मरे तें वणहे ॥ तया आरौतें ॥ २७ ॥ तें साज वपायी ॥ विवेक धुवी माथा ॥ तंव अंत ना ही अश्वत्था ॥ भव रूप थपया ॥ २८ ॥ वाज ते तें वारे निवांत ॥ न
 राहे जी धिचें तया ॥ तं वतरंगांत अंत ॥ दृष्टा वीचकी ॥ २९ ॥ दृष्टो नि मृग जें हा रणे ॥ तें मृगजळा भासलो पा ॥ काम साजाय दीपें ॥ माल वळे नी ॥
 २८ ॥ तें सें सूळ बीज अविद्या रावो ॥ तें ज्ञान जें उमं होय ॥ तें चयया अंत आहे ॥ ये हवी ना ही ॥ ३१ ॥ तें विचहा अनारी ॥ ऐसी ह्मि आशी पाळी ॥
 तें आळजी ह्मि नुरोपी ॥ बोला तें यया ॥ ३० ॥ जें संसार वृक्षा चाठाई ॥ साचे कारतं वना ही ॥ माना ही तया आदि काई ॥ कोण हो इच्छ ॥ ३१ ॥ जो सा
 च जे थुं नुपजे ॥ तया तें आदि हं साजे ॥ आता ना ही चित्त दृष्टि जे ॥ कोवुं नया ॥ ३२ ॥ दृष्टो नि जचे ना आहे ॥ ऐमिया संगो कवण मायो ॥ याला
 गीना ही पणो चि होये ॥ अनादि हा ॥ ३३ ॥ वादो चिया लेंका ॥ केंची जन्म पत्रिका ॥ नर्मिनी कि मूमिका ॥ केंकल्युंगा ॥ ३४ ॥ व्योढ कुसुमं चा पा
 डवा ॥ कवणें दंतोडा वा ॥ दृष्टो नि ना ही ऐमिया प्रवा ॥ आदिकी चि ॥ ३५ ॥ जें सें घटा चें ना ही पण ॥ असत कि असे केलें निविणा ॥ तें सासु सूक
 वृक्ष जाण ॥ अनादि हा ॥ ३६ ॥ अजुना ऐसे नि पाही ॥ आद्यंत यया सी ना ही ॥ माजि स्थिती आसा संकां ही ॥ परि वळते गा ॥ ३७ ॥ ब्रह्म ग
 रो ह्म नि नगि ॥ आणि समुद्र हीं कीर नरिगे ॥ तरि साजि दसे वा उगे ॥ मृगं बुजें सां ॥ ३८ ॥ तें सा आद्यंत कीर ना ही ॥ आणि साच ही नो हे क
 ही ॥ परी लटिके पण त्वी न वाई ॥ पटिया से गा ॥ ३९ ॥ नाना रंगीं गज बजे ॥ जें सें द्रुधुं ध्ये दे रिजे ॥ तें सा ने पतया अपजे ॥ आहं ऐसा ॥
 ४० ॥ ऐसे नि स्थिती चिये वेळे ॥ भुलवी अज्ञानाचे डोळे ॥ लाघवी हरि मेखळ ॥ लोक जे सा ॥ ४१ ॥ आणि न समो चि शां भिका ॥ व्यस्मि ह्मि
 पाठ ॥ ओं-२० गुरो पी-ओं-४२ नव्हती-

॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

तैसीदिसोको॥ तरोदिसणेंहीक्षणाएक॥ होयजायो॥ ४२॥ स्वमीहीसामिलेंजदिवे॥ तरिनिवाहाकाएकसांशिवे॥ तेंविआभासहाक्षणिक्के॥
 रितनिगा॥ ४३॥ देवताआहेआवडे॥ घेउजाइजेतरिनातुडे॥ जैसादिकर्कजेमाकडे॥ जकासांजि॥ ४४॥ तरंगभंगसडीपडे॥ विजुहीनपुरहोडे॥
 आभाससिनेणपाडे॥ होणेजणगा॥ ४५॥ जैसाग्रीष्मशर्षाचिवारा॥ नोणजेसमोरकीपाठमोरा॥ तैसीस्थितोनाहीतरुवरा॥ भवरूपाय
 या॥ ४६॥ त्वआदिनाअंतस्थिती॥ नारूपययासिआयी॥ आतांकायसीकुंथकुंथी॥ ४७॥ आपुलियाअज्ञानसांठे॥ नव्दत्ताथाव
 लकिरीती॥ तरिआतांआत्मज्ञानाचालोटी॥ खांडेनिगा॥ ४८॥ बांचुनिज्ञानेनीणाएके॥ उपायकरिसीजंतुके॥ तिहीगुंफासिअधिके॥ रुखी
 ड्या॥ ४९॥ सगाक्तीगवांदोरवादी॥ ययाहिंडावेंरुखीअधि॥ द्युणेंनिमूळाचअज्ञानछोदिं॥ सम्यक्ज्ञाने॥ ५०॥ येहवतीरोयेचियाउरगा॥
 जांगमेळवितोपैगा॥ तोशिण्णचिदाउगा॥ केलाहोय॥ ५१॥ तरावयासुगजकाचिंगगा॥ होणीलागींधावतांदंगा॥ माजिवाहळेंबुडिजे
 पैगा॥ साचजेवि॥ ५२॥ तेंविनाथिलियासंसा॥ उपडैजैचनैयाविरा॥ आपणंपेळोपवारा॥ विकापीजाये॥ ५३॥ द्युणेंनिस्वमीचियाया
 औषपचेवैधिपनंजया॥ तेंविअज्ञानमूळाया॥ ज्ञानचिखडुगा॥ ५४॥ परितेंचिलीलापरजवे॥ तेंमेवरायानेनवे॥ अपंगबळहोअवें
 ॥ बुद्धीसिंगा॥ ५५॥ उठिलेनिवैरागयणें॥ हात्रिवर्गकोसाडणें॥ जैसेचमुनियारुणें॥ आतांचिगेलें॥ ५६॥ हाठायवरीपाडवा॥
 पदार्थजातआघवा॥ विटवितोहोआत्मा॥ वैरायलाठ॥ ५७॥ मगदेहाहंतेचैनदळे॥ सांडुनिआकेचिवेळे॥ यत्यकबुद्धीकरतळे॥ हा
 तरमावे॥ ५८॥ निसळेंगिवेकसाहणें॥ जैब्रह्माहमस्मिबोधेंसणणें॥ मगपुरतेनिबोपेंउठणें॥ एकलेंचि॥ ५९॥ परिनिध्वयानेंमुहीवळे॥
 पाहारेकदोनिवळे॥ समातुळावेंअतिचोखाळा॥ मननेवरी॥ ६०॥ पाठिहातीयेराआपणया॥ निदध्यासएकजालिया॥ पुटंदुजनुरेलया
 दा॥ पुरतेगा॥ ६१॥ तेंआत्मज्ञानाचेंस्वाडे॥ अहंतप्रभेचेंनिवाडे॥ नेदीलुंगकरणेकडे॥ भयवृद्धासि॥ ६२॥ शरदगमीचावारा॥ जैसा-
 पाठ-ओं-४५-नुपकरे-ओं-४६-मध्य-ओं-५१-नोवावीचिभासा-ओं-५३-जचत-ओं-५४-मया-ओं-५६-एसा-ओं-५९-मन-
 ॥ ७॥

केरुदेअंबरा॥ कांडयलारवीआधारा॥ घोटसरी॥ ६३॥ नानाउपवडहोतवेवो॥ सुरेस्वसंप्रमाचाढवो॥ स्वप्रतीतीधारेत्वाहो॥ क
 रीलतेसैं॥ ६४॥ तेव्होउर्वकांधोसूका॥ कांअधिचेंहणशाखाडोका॥ तेंकाहीचिनादिसेसृजका॥ चोदिणाजेविं॥ ६५॥ ऐसेनिगाविरनाथा
 आत्मज्ञानाचिराखडुलता॥ छेदूनियासवाधवत्या॥ ऊर्वसूळतें॥ ६६॥ श्लो॥ ततःपदतत्परिस्मार्गितव्यंस्मिन्गतानिवर्ततेभूयः॥
 तमेवचांदपुरुषप्रद्योतःप्रवृत्तिःप्रसूतापुराणी॥ ६७॥ मगइदनेसवाळले॥ जेमीपणेवीणडाहारले॥ तेंरूपणाहेजेआपले॥ आ
 पणचि॥ ६८॥ परित्पणानेनिआधारें॥ एकचिक्करूनदुसरे॥ सुरवपाहातीगंधारे॥ तैसेंनकोहो॥ ६९॥ हेंपाहणेऐसेंसवीरा॥ जेसान
 बुडलियाविहिरा॥ मगआपलीयाउगसीझरा॥ भरोनिटाके॥ ६९॥ नातरिआटलियाअस॥ निजविबीप्रतिबिंबा॥ नेहदेकांनभिंनप्र
 घटसाविं॥ ७०॥ नानाईधनांशसरलेया॥ वन्दीपरतेजेविंआणण्या॥ तैसेंअणेआपधनजया॥ न्याहाळणें॥ ७१॥ जिद्धेआपलीचिविवा
 रणें॥ वस्त्रनिजबुबुळदेखणें॥ आहृतयाऐसेंनिरिक्षणें॥ आपुलेंपें॥ ७२॥ कांपसेंसयस्माभिळे॥ गगनगगनावरीलोळे॥ ननापणीप्र
 रंकेखोळे॥ णणियाचिये॥ ७३॥ आपणेंचिआणण्यातें॥ पाहिजेजेअहुतें॥ तेऐसेंहोयनिरुतें॥ बोलिजनुअसे॥ ७४॥ जेपाहिजतेनवी
 णयाहिजे॥ कांहीनेणणाचिजाणिजे॥ आद्यपुरुषद्वाणिजे॥ जयादायतें॥ ७५॥ तेथहीउपाधीचावोयंबा॥ घेउनिश्रुतिउत्पत्तिजिस्मा॥
 मगनामरूपाचाबडबा॥ करितीवाया॥ ७६॥ पमवस्वर्गाउबगले॥ सुमुद्गुर्यागज्ञानावळयले॥ पुढतीनयांदियांगाले॥ पेजाजेश॥ ७७॥
 मंगराचियापायापुढा॥ पकतीवीतरागहोडा॥ ओलाडेनिब्रह्मपदार्चाकर्महडा॥ घालितीमाणा॥ ७८॥ अहंतादिस्मावाआपुलिया॥
 झाडादेउनिआयेवेया॥ पत्रपेतीजांनियेजया॥ मूळयरासी॥ ७९॥ पैजेथुनीहोयवदी॥ विष्णुपरंपरेचीविरूढी॥ वाढतीआशाजेसीको
 रडी॥ निदेंवाचि॥ ८०॥ जियेकांवस्तुचेंनेणणें॥ ओणिलेंशोरजगाजाणणें॥ नाहींनादिवेलेजेणें॥ मोतुजगी॥ ८१॥ पार्थोतवस्तुपहिते
 पाठ-ओं- ६५-जळ-ओं- ६९-वोसडलिया-ओं- ८०-वेलाडी- ॥ ६५ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ८१ ॥

आपणें आपुलें ॥ पाहजे जे सें हिवलें ॥ हिवलें ॥ ८२ ॥ आणि कही एकतया ॥ वोळखण असे धन जया ॥ तरी कांजया से रलिया ॥ येणें निना हुं
 ८३ ॥ पोरतया से दती ऐसे ॥ जे ज्ञान सव वसरिसे ॥ महा प्रकय बुचें जे से ॥ भरलें पण ॥ ८४ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ निमोन मोहा जित सुंग दोष अथात्मानि-
 त्याचि निवृत्त कामा ॥ दूदें वेमुक्ताः सरवदुःखं संजे गच्छत्यमृताः पदमययतत ॥ ५ ॥ टी ॥ जया पुरुषाचें कामना ॥ सोडोनि गेलें मोहमान ॥ व
 र्णती जें से घन ॥ आकाशा तें ॥ ८५ ॥ निव वड्या निघरा ॥ उर्बा गेजें वि सोयरा ॥ तें से नाग विती विकारां ॥ वेराळू जे ॥ ८६ ॥ फळ लीकळी उच-
 के ॥ तैसी आत्मला संघबळें ॥ जयाचि क्रिया टाळें टाळें ॥ गळती आहो ॥ ८७ ॥ अगो लालीया सरवी ॥ देवो लीसे रापकती पक्षी ॥ तें से स्थांडले
 अशोखी ॥ विकल्पी जे ॥ ८८ ॥ आईकें सकळ दोष वर्णणीं ॥ अंकुरी जनि जिय मोहनी ॥ तियें सरवदुःख चिकाहाणी ॥ नाहीं जया तें ॥ ८९ ॥ सूर्योदया सर
 सी ॥ रात्री पळो निजाय आपेसी ॥ गेली देह अहंता तैसी ॥ आवय संवें ॥ ९० ॥ पें आयुष्य ही जाजोवातें ॥ शरीर सोडो जे अभवितें ॥ तें वेनि दसरें दैतें
 सोडिले जे ॥ ९१ ॥ लोहाचे सांडे पारिमा ॥ न जोडे अथार वजेसा ॥ दैत बुद्धी चातें सा ॥ दुकाळ सदां जया ॥ ९२ ॥ अग मुसवदुःखाकरे ॥ हं देही जये-
 गाचें ॥ तियें जयां कां सभोरें ॥ होती चिना ॥ ९३ ॥ स्वमीचे राज्य कां सरणा ॥ नोह वष शाकां सिकारणा ॥ उपवट्ळां च्या जाणा ॥ जिया परी ॥ ९४ ॥ तें से
 सरवदुःख रूपी ॥ दूदें पुण्य पापी ॥ न घेपी जती सर्पी ॥ गरुड जे से ॥ ९५ ॥ आणि अनात्म वर्णनीरा ॥ सोडोनि आत्म रसाचें सीरा ॥ विचरता
 निजे सविचार ॥ राज हस ॥ ९६ ॥ जैसा वर्षो निमूतकी ॥ आपला रस अंश माव ॥ मागे तो आणो गडिमजळी ॥ बंबासीची ॥ ९७ ॥ तें से आत्म
 फांती साटी ॥ कसु विस्मली बारावटी ॥ तें एक वाटनी ज्ञान दर्शनी ॥ अखंड जे ॥ ९८ ॥ किंबहुना आत्म याचा ॥ निरगरी ॥ विवेक जयांचा ॥ बुडाला वो
 पंगोचा ॥ सिंधुमा जे जेसा ॥ ९९ ॥ पें आयवेंचें आपुलें पणें ॥ नुरो चितया अभिलषणें ॥ जें से यथु निप न्हा जाणें ॥ आकाशा नाही ॥ १०० ॥ जैसा अ-
 ग्नीचा डोंगर ॥ नवें कोणी बीज अंकुरा ॥ तैसा मनी जयाचा विकार ॥ उदय जेना ॥ १०१ ॥ जैसा काढिल्या मंदराचका ॥ राहें क्षीराब्धी निश्चका ॥ तै-
 पाठ ॥ ओं-१४ उपवटल्या ॥ ओं-१६ चरनाति ॥ ओं-१९ सिंधुसि ॥ ओं-३० जालें ॥ ॥ ध ॥

सानुर्विजयासळ॥ कामोर्मिनि॥ २॥ चंद्रः कळी धाला॥ चंद्रो कोणें ॥ तें तें सावला॥ तें विंअपेक्षेचा अवसळ॥ नपडे जयां॥ ३॥ हें किती बोक्ते
 असंगाडो॥ जें वेंपरमाणु रे वायुपुटो॥ तें तो रे पांचें गवडो॥ नाविं जया॥ ४॥ एवजेजे कोणिएसो॥ केले सानाव्य हुतायो॥ तें तथा भिळती
 जैसो॥ हमीं हेम॥ ५॥ तें तान ह्यण सी कोण॥ तरे तें अक्षसागाजण॥ जेथ नित्य वस्तुचें साधन॥ कामरी हित॥ ६॥ तें भस्मणि जे कवणे राई॥
 रे सें हो पुससी काही॥ तरे तें पदगानाही॥ वेचज को॥ ७॥ सुयपणें देखजे॥ कांजेथ वें जाणजे॥ असुकरें सें ह्यणिजे॥ तें जें नव्हे॥ ८॥ ॥ १०॥
 नतद्रुम येत सूर्यो न शशांको न पावकः॥ धद्रुत्वान निवर्तते तद्रुम परमं सम॥ ६॥ टी॥ ॥ १०॥ पौंदरीयाचा बणाळि॥ कांचंद्र हन जें उजळि॥ हेका
 यबोले अक्षसाळी॥ प्रकाशीजि॥ ९॥ तें आयवें चिदि सणें॥ जयाचें कां न देखणें॥ विश्वमासत सेजेणें॥ लपले नि॥ १०॥ जें सें शिंपी पणहार
 पो॥ तंव तंव परें हो रूपां कांदोरी लोपनां सापें॥ फार हो जे॥ ११॥ तें सी चंद्र सूर्या द्योरो॥ द्ये ते जें जे फारें॥ तिथे जयाचे निआथारें॥ प्रकाश
 ती॥ १२॥ तें वस्तु की ते जो राशी॥ सर्व सृतात्सु सरिसी॥ चंद्र सूर्या चामानसी॥ प्रकाशे जे॥ १३॥ ह्यणो निचंद्र सूर्य कडवसां॥ पडती वस्तु-
 चा प्रकाशा॥ यालागीं ते जें जे जसा॥ तें वस्तुचें अंगा॥ १४॥ आण जयाचा प्रकाशी॥ जगहार पेचें द्राकें सी॥ सचें द्रुन सें जें सी॥ दिने दुरीं
 १५॥ नातरी प्रबोधिल येवळे॥ तें स्वर्ग चिं डिमावळे॥ कानुरे चिसां जेवळे॥ मृगतृष्णिका॥ १६॥ तें साजिये वस्तुचा दायीं॥ कोण ही चका-
 आसासनाही॥ तें साक्षीं न जधाम पाही॥ पाठवें गा॥ १७॥ पुढती जें तेथ गेले॥ तें न घेतीं सांघेतीं पाउले॥ महो रूधी कांसी नले॥ सरिता
 सोत जें सी॥ १८॥ कालवणांचिया कुंजरी॥ सुदलिया लवण सागरी॥ होथ निना सागरी॥ परती जें सी॥ १९॥ नाना गेलिया अंतराळा
 न येती चिबिन्हि जवळा॥ नाही तमला हो निजळा॥ निघणें जे वि॥ २०॥ तें विमज सो एक वढा॥ जे जाले जाले॥ नेचो स्वदा॥ तया पुनरावृत्तीची वाढ॥
 मोडली गा॥ २१॥ तेथ प्रज्ञा पृथ्वी नाशयो॥ पार्थ ह्यणें जी जी परि सावो॥ परि धिं नती ए कि देवो॥ चित्त देतु॥ २२॥ तरे देवो भिस्वथें ए
 पाठ॥ ओं॥ ४८॥ पडें॥ ओं॥ १५॥ क्रस्ते॥ ओं॥ २२॥ पसावो॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥

कहोती॥ मगभायो तेजे नयेनी॥ ते देवें सिभिन्ना आथी॥ कीं अभिन्मजी॥ २३॥ जरिभिन्ना अनादि सिद्ध॥ तरि नयेती हें असंबद्ध॥ जे फुलांगे-
 लेषट्पद॥ ते फुलेंचि होतुकां॥ २४॥ पैलक्ष्महनि अनारिसे॥ बाणछर्शशिबो निजेसे॥ मागु ते पडती ते सो॥ येती चिते॥ २३५॥ ना तरि हिं चिते-
 स्वभावे॥ तरिकोण कोणेसीं भिळावें॥ आपणयासीं आपण रूपावें॥ शस्त्रे कै वि॥ २६॥ ह्मणो निजसीं अभिन्मांजीवां॥ तुझा संयोग वियोग
 देवा॥ नये बोलें अवयवों॥ शरीरें सी॥ २७॥ आणी जें सदां वेगळे तुजसीं॥ तयां भिळणी नाही कोणे दिवसीं॥ मायेती नयेती हाकयसी॥ वायं
 बुद्धि॥ २८॥ तरिकोण गाते तुनें॥ पावो निनयेती मायेने॥ हं विश्वनें मुखामाते॥ बुझा विजी॥ २९॥ इये अपेक्षां अर्जुनाचा॥ तो शिरोमणि सर्व
 ज्ञाचा॥ तोषला बोधशिष्याचा॥ देखो निया॥ ३०॥ मग ह्मणें गामहासति॥ मांभावो निनयेती पुढती॥ नेभिन्ना भिन्नि रीती॥ आहानी दोनि
 ॥ ३१॥ जें विवेकें खोलें पाहिजे॥ तरि मति चिते सहजे॥ ना अहाच वाहाच तरि दुजे॥ ऐसे ही गमती॥ ३२॥ जे सें पाणि यावे री वेगळ॥ तळपतां दि-
 सती कल्लोळ॥ येहवीं नरी निखळ॥ पाणी चितें॥ ३३॥ कांसुवर्णा हनि आने॥ लेणी गमती भिन्ने॥ मग पाहिजे तें वसोनें॥ आयवें चितें॥ ३४॥
 ते सें ज्ञानाचिये दिदी॥ मजसीं अभिन्ना चिते किरीदी॥ येर भिन्मपण तें उठी॥ अज्ञाना स्तव॥ ३५॥ आणिसाचो करे निवस्तु विचारें॥ कैचें म-
 ज्जाकासि दुसरें॥ जें भिन्ना भिन्मव्यवहारें॥ उमसि जळ॥ ३६॥ आयवे चि आकाशासु निपोदीं॥ विवेक जें आने खोदीं॥ तें प्रतिबिंब कें उठी॥
 कें रश्मि शिरे॥ ३७॥ कांढल्यांतीं चिया पाणि यां॥ कायवोत मृत्ति धनंजया॥ ह्मणो नि केंचें अंश अवि क्रिया॥ एका मज॥ ३८॥ परि वीयाचे
 निषेळें॥ पाणि उज्जु परि वां कुडें जालें॥ रवि दुजे पण आलें॥ तोय बगें॥ ३९॥ व्योमचो पळें कां वादोळें॥ हें ऐसें काय सया भिळें॥ परि घट मठी
 वेंदाळें॥ तें सें ही आथी॥ ४०॥ हांगा नि देचे नि आधारें॥ काय एकलें निज गन भरे॥ स्वमींचे नि जें अवतरे॥ राय पणें॥ ४१॥ कां भि नळे नि-
 किडां कें॥ वानिमोदासिये सोळें॥ तें सास्वसाये वेंदाळें॥ शुद्ध जें मी॥ ४२॥ तें अज्ञान एकूटें॥ तेणें कोहं विवल्याचें मांडे॥ मग विवस्तु नि कि-
 पाठ ओंवी २३ ही.

जे फुडें। देहो हांगें ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ मयें वांशो जीव लोके जीव मृतः सनातनः ॥ मनः षष्ठानीं द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षयति ॥ ७ ॥ देहो
 ऐ सेशरि राचिये वेंढें ॥ जें आत्मा दान वेगळें पडे ॥ तें आत्मा अंश आवडे ॥ थोडे पणें ॥ ४४ ॥ समुद्र कावायु वेंढें ॥ तरंगाकार उच्छ्वसे ॥ तो रा
 मुद्रांश ऐ सादिसे ॥ सानिवा जें विं ॥ ४५ ॥ तें विंजडानें जीव विना ॥ देह अहंता उपज विना ॥ मीजी वगमं पंडु रूता ॥ जीव लोकी ॥ ४६ ॥ पें-
 जीवा चिया बोधा ॥ गोचर जो हाधांदा ॥ ते जीव लोका बाढ्या ॥ अभिमाया ॥ ४७ ॥ अगाउ पजणें निमाणें ॥ हें साच जिजें कां मानणें ॥ तो जी
 व लोके मी ह्मणो ॥ संसार हन ॥ ४८ ॥ एव विध जीव लोकी ॥ तुं मानें ऐ सा अवलोकी ॥ जें साचं दुकां उदकी ॥ उदका तीन ॥ ४९ ॥ पें का स्मि
 राचारवा ॥ कुंकुमावरी पाडवा ॥ आणिकांग मेळो हिवा ॥ तो नरी नके ॥ ५० ॥ तें सें अभिपणन मोडे ॥ माझें अक्रियत्व न रवंडे ॥ परि क
 नी भोक्ता ऐसे आवडे ॥ ते जाण गाफनांती ॥ ५१ ॥ किंबहुना आत्मा चोखटा ॥ होउनि प्रकृती सिएक वटा ॥ बांधे प्रकृति धर्माचा पाटा ॥ आप
 ण पयो ॥ ५२ ॥ पें मना दिसा ही इंद्रियें ॥ श्रोत्रादि प्रकृतिकर्म्यें ॥ नेपें माझीं ह्मणों निहोयो ॥ व्यापारा रूढ ॥ ५३ ॥ जें सें स्वर्मा परि ब्राजें ॥
 आपण पयां आपण कुटुंब होइ जे ॥ मगतयांचे निधां विजो ॥ मोहें सें रा ॥ ५४ ॥ तें सा आपलीया विस्मृती ॥ आत्मा आपण चि प्रकृती ॥ सा
 रिरवाग भोगिनुदनी ॥ तिपें सिंचि प्रजे ॥ ५५ ॥ मना चार धीं वळये ॥ श्रवणाचा द्वारें निधे ॥ मग शब्दा चिया रिधे ॥ राना माजि ॥ ५६ ॥
 तो विप्रकृती चावागोरा ॥ करी त्वचें चिया मोहरी ॥ आणि स्पर्शा चिया योगी ॥ वना जायो ॥ ५७ ॥ कोणो के अवमरी ॥ रिधो निनेत्राचा
 द्वारी ॥ मगरुपाचा डोंगरी ॥ सेर हिंडे ॥ ५८ ॥ कां रसने चिया वादा ॥ निधो निगा सुभटा ॥ रसाचा दुडुटा ॥ भरो चि बागो ॥ ५९ ॥ नान
 रिधे पो चि बाणें ॥ देहांश कभी निद्यणें ॥ मग गंधा चिंदां रुणें ॥ आड वेंछंधी ॥ ६० ॥ ऐसे निदेहें दिपनायकें ॥ धरु निमन जवळीकें
 ॥ भोगी जनी शब्दादिकें ॥ विषय भरणें ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ शरीर यदवामो नित्य च्चाय्युक्ता मती श्वरः ॥ गृहीत्येता नित्यानि वायुग-
 णात् औवी ॥ ५६ ॥ हातीं

धानिवाशयीत् ॥ ८ ॥ टी० ॥ परिकर्तभोकारेसे ॥ हेजीवाचेतेंचिदिसं ॥ जेशरीरिकांपैसे ॥ येकाधिये ॥ ६३ ॥ जेंसाआधिअआणिबिला
 सिया ॥ तेंचिवोळरवोयेधनंजया ॥ जेंगजसेव्याढया ॥ वस्तीसिये ॥ ६३ ॥ तेंसाअहंकर्तत्वाचावाढ ॥ कोविषयेदियाचाधुमाड ॥ हाजो
 णिजेतेंनिवाड ॥ जेंदेहपावे ॥ ६४ ॥ अथवाशरीरातेंसांडी ॥ तहीइंदियाचीतांडी ॥ हेआपणपया ॥ सवजोड ॥ येऊनिजाये ॥ ६५ ॥ जें
 साअपमानिलाअतिथि ॥ नेसुकताचीसंपत्ती ॥ कांसाइखडेयाचीगती ॥ सूत्रंतत् ॥ ६६ ॥ नानामावळतेनितपनें ॥ नेइजतीलो
 कांचीदर्शनं ॥ हेअसोहतीपवनं ॥ नेइजेंसी ॥ ६७ ॥ तेविमनःषष्ठांयथा ॥ इंदियातेंधनजया ॥ देहराजनेदेहा ॥ पासुनिगेळा ॥ ६८
 श्लो० ॥ भोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंशणमेवच ॥ अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ॥ १ ॥ टी० ॥ मगयेथेंअथवास्वर्गी ॥ जेथजें
 देहअपणी ॥ तेथेंतेंसेचिपुडतीपांगी ॥ मनादिक ॥ ६९ ॥ जेंसामालवळियादिवा ॥ प्रभेंसिजायपाडवा ॥ मगउजळिजेतेथतेथवां ॥
 तेंसाचिफांके ॥ ७० ॥ तरिरेसेसियाराहादी ॥ अविवेकीयांचेदिही ॥ येतुळेंहेंकिरीटी ॥ गमेविगा ॥ ७१ ॥ जेंआत्मादेहासिआला ॥ आ
 णिविषययेणेंचिभोगिला ॥ अथवादेहोनिगेळा ॥ हेसाचिचिमानिती ॥ ७२ ॥ येहुळेंहेंकिरीटी ॥ गमेविगा ॥ ७१ ॥ जेंआत्मादेहासिआला ॥ आ
 कृतीचेंतेणें ॥ मानियेळें ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ उत्क्रामंतंस्थितंवापिपुजानंवारुणात्स्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यन्तिपश्यंतिज्ञानचक्षुषः
 ॥ १० ॥ यतंतोयोगिनश्चैनपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोव्यहतात्मानोनेनपश्यंत्यचेतसः ॥ ११ ॥ टी० ॥ परिदेहाचेमोहकेंउभे
 ॥ आणिवेतनतेथउपलभे ॥ तिचेचळबळेचेतिलोभे ॥ आलाह्मणती ॥ ७४ ॥ तेंसेचितयासंगती ॥ इंदियेआपलाअवर्तनी ॥ न
 यानावस्तुभद्रापती ॥ भोगेणंजया ॥ ७५ ॥ पाठींभोगक्षीणअपैसे ॥ देहगेलियातेनदिसे ॥ तेथेंगेलागेलाऐसें ॥ बोझातीगा ॥
 ॥ ७६ ॥ पैरुखडोळतंदेखावा ॥ तरीवारावाजतमानावा ॥ ह्मखनदिसेतेंथेपाडवा ॥ नाहीतीगा ॥ ७७ ॥ कांआरसाममोरठेबिजे ॥ आ-

पाठ ओं० ६५ काटी० ओ० ६७ निगे.

णिआपणपेत्यदेखिजे॥ तरिनेधवांचिजालें मानिजे॥ कायआधीनहीं॥ ७८॥ कांपरताकेलियाआरिसा॥ लोपजालातयाआभा
सा॥ तरीआपणपेनाहीऐसा॥ निश्चयकरावा॥ ७९॥ शब्दतरीआकाशाचा॥ परिकपाळींपिटेमेयाचा॥ कांचंदीवेगअप्ताचा॥ आरो
पिजे॥ ८०॥ तेंसंहोइजेजाइजेदेहें॥ तेंआत्मसत्तेअविक्रिये॥ निष्ठांकितीगामोहें॥ आंधळेते॥ ८१॥ येथआत्माआत्मयाचावार्थी॥ दे-
खिजेदेहीचायमेटही॥ ऐसेंदेखणेंतेंपाही॥ आनआह्वाति॥ ८२॥ सानेंकांजयाचेडोळे॥ देखोनिनराहानीदेहीचेरडोळे॥ सूर्यरश्मी
आणियाळें॥ ग्रीष्मींजैसे॥ ८३॥ तेंसंविवेकाचेनिपेसे॥ जयाचीस्फूर्तस्वरूपीबैसे॥ तेजानियेदेखतीऐसे॥ आत्मयातें॥ ८४॥ जे-
सेतारांगणीप्रिलें॥ गगनसमुद्रींबिंबलें॥ परितेंजुटोनिनाहीपडिलें॥ ऐसेंनिवडे॥ ८५॥ गगनगगनीविआहे॥ हेंआत्मासेतेवा-
ये॥ तेंसाज्जालादेखतीदेहें॥ गवसिलाही॥ ८६॥ खळाव्याचियेलगवगी॥ फेडनिरवळाव्याचाभागी॥ देखजेचंद्रिकाकांउगी॥ चंदी
जेवि॥ ८७॥ कानाडरचीप्रशोषे॥ सूर्यतोजेसतेंसाचिअसे॥ देहहोतांजानातेंसे॥ देखतीमातें॥ ८८॥ घटमठयडलें॥ तेंविपाठि
मोडलें॥ परिआकाशतेंसंबलें॥ असत्तचिअसे॥ ८९॥ तेंसेंअसंडेआत्मसत्ते॥ असानदृष्टिकल्पितें॥ हेंदेहविहोतेंजतें॥ जाणतीकु-
डें॥ ९०॥ चैतन्यचटनावोहटे॥ चैष्टवीनाचेष्टे॥ ऐसेंआत्मज्ञानेचोखटो॥ जाणतीते॥ ९१॥ आणितानहीअपेंतेंहोइल॥ प्रज्ञापरमाणु
हीउगाणादेइल॥ सकळशास्त्रांचेयेइल॥ सर्वस्वहाता॥ ९२॥ परीतेत्युत्पत्तीऐसी॥ जरीविरक्तीनगिमेयानमी॥ तरीराविसिक्कामज
सी॥ नकेंचिमेदी॥ ९३॥ पैतोंडफरोकाविचारा॥ आणितंतःकरणींविषयांभीचारा॥ तरीनातुडेधनुर्धरा॥ त्रिशूदीमी॥ ९४॥ हा-
गावोसणानियाचाग्रंथी॥ काइतुटतींसारग्रंथी॥ कींपैरिसिलियायेथी॥ वाचिलीहोये॥ ९५॥ नानाबांधोनियांडोळे॥ घाणीलान-
विजतिसुक्ताफळें॥ तरीनयांचेंकायफळे॥ मोलमान॥ ९६॥ नैसाबितीअहंतेंगवो॥ आणितमेसकळसरवो॥ ऐसेनिकोडीएक
पार ओर्बी॥ ९६॥ आभासतमे ओ० ९५॥ परिचिसिलिया.

जन्मजावो॥ परीनपविजं माते॥ १७॥ जो एक मीकांसमस्ती॥ व्यापकअसें भूतजाती॥ ऐकतिये व्योमती॥ रूपकरुं॥ १८॥ भ्रू० यद्वा
दित्यगतं तेजो जगद्भासयते स्थितं॥ अक्षुद्रमसि यन्वाग्भो तत्तेजो विद्मि मासकं॥ १९॥ दी० तर्गस्यार्थमकटआयवी॥ हे विश्वरचन जे दा-
वी॥ ते दीसि माझी जाणवी॥ आद्यंती आहे॥ १९॥ जलशोषुनि गोखियाराविता॥ ओव्हा सपुरवीतसे जे मायाता॥ तंच दीपडुसुता॥ जो-
त्कामाझी॥ २०॥ आणि दहनपाचन सिद्धी॥ करीतसे जे निरवधी॥ ते हुताशति जे रुद्धी॥ माझी विगा॥ १९॥ भ्रू०॥ गामाविषयच सूतम-
निधारयाभ्यहमोजमा॥ प्रथामिचोषधीः सर्वाः सोमो भूत्वारसात्मकः॥ २३॥ दी०॥ मीं रिगाळो असें सूतळीं॥ ह्मणो नि समुद्र महा-
जळीं॥ हे पांशक चिठ्ठे पुळीं॥ विरेचिना॥ २॥ आणि भूतें हिं वराचें॥ हे धरीतसे अपारें॥ तें मीचि धरीधरो॥ रिगोनिया॥ ३॥ गगनीसी-
पंडुसुता॥ चंद्राचे निमिसें अरुता॥ भरला जालो चालता॥ सरोवर॥ ४॥ ते सुनी फांकती रश्मि करि॥ ते पाटये वृन्निअपार॥ सर्वोष-
धीचे आगर॥ भारितअसें मी॥ ५॥ ऐसे निरस स्यादिकांस कळा॥ करी धान्यजाती सुकाळा॥ देउन्नदारा जिह्वाळा॥ भूतजाता॥ ६॥
आणि निपजविलें अन्न॥ तारि तें सेंकें चंदीपन॥ जेणे जिरू निरमाधान॥ भोगिती जीव॥ ७॥ भ्रू०॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणि-
नां देहमाश्रितः॥ प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधं॥ १४॥ दी०॥ ह्मणो नि प्राणिजातांचा मर्दं॥ करूनि कंदावरी आगिठी
॥ देसिजठरीं हिं किरीदी॥ मीं विजालो॥ ८॥ प्राणापानाचा जोड मर्ती॥ फुक फुकोनियां अहाराती॥ अर्दीतसे नेणों किती॥ उदरमा-
जी॥ ९॥ शूकें अथवा स्निग्धें॥ सुपकें कां विरधें॥ परि मीं विगाचतुर्विधें॥ अन्ने पचीं॥ १०॥ एवं मीं कि आयवें जना॥ जनाविरहित
तें मीं चिजीवन॥ जीवनीं सुरव्यसाधन॥ वन्दिही मीं चि॥ ११॥ आतां ऐसियाही वरी कंदा॥ सांगो व्यामीचि नवादी॥ येथ दुजे नाही चि
येई॥ सर्वच मीगा॥ १२॥ तारि कें से निपावे सें॥ सदां सकवि येयें कें॥ येकें ति येवहु दुःखें॥ आन भूतें॥ १३॥ जैसी सगळिये पाटणि॥ ए-
पाठ ओंवी १८ व्यंजमं ओ० ८ दीस.

केचिदीपेदिवेलावणि॥ जालियाकांनदेवणी॥ उरलीएकें॥ १४॥ ऐसीहूनउरवीविरवी॥ कंरितआहामीमानसिकी॥ तरिपरिसते
 हीनिकीं॥ शंकाफेडु॥ १५॥ पैअवधामीविअसें॥ येथनाहींकीरअनारिसो॥ परिमाणियाचियाउल्लासें॥ बुद्धिऐसा॥ १६॥ जैसीए
 कचिआकाशधनी॥ बाधविशेषेअनानि॥ वाजावेंपडेभिन्नी॥ नादंतरीं॥ १७॥ कांलोकचेष्टीवेंगळला॥ जोहाएकविभालुउंगा
 वली॥ नोआनानीपरिगेला॥ उपयोगासी॥ १८॥ नानाबिजधर्मनुरूप॥ झाडाउपजवीजेंसेआपा॥ तेंसेंपरिणमल्लेस्वरूप॥ मय
 मेंजीवा॥ १९॥ अगानेणाआणिचतुरा॥ पुढानिळयाचादुसरा॥ नेणासपर्वेजालायेरा॥ सुरवाळगीं॥ २०॥ हेंअसोस्वार्निचिउद-
 क॥ शरुकींमोनियेंव्याळींविस्व॥ नैसासजानासीमीकरव॥ दुःखनोअज्ञानासी॥ २१॥ भ्रमो॥ सर्वस्यचाहं हृदिसान्निविष्टोम-
 नस्त्यतिज्ञानमयोहंनच॥ वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांगकृदेदविदेवचाहं॥ २२॥ टी०॥ येहवींसर्वांचाहृदयदेशी॥ मीअमुकाहंते-
 सी॥ जेबुद्धीस्फुरेअहिर्निशी॥ तेवस्तुगामी॥ २३॥ परिसतासर्वेवसता॥ योगज्ञानीपैसनां॥ गुरुचरणउपासिनां॥ वैराग्येंसिं॥
 ॥ २४॥ येणेंचिसत्कर्म॥ अशेषहीअज्ञानविरमो॥ जयाचेंअहंविश्रामो॥ आत्मरूपीं॥ २५॥ तैआपेंआपदेखोनिदेखीं॥ मीयाआ
 लोनिमदसुखी॥ येथेंमीवांचूनअवलोकं॥ आनहेतुअसे॥ २६॥ अगासूर्येत्यजालियां॥ सूर्येंसूर्यविपाहावाधनंजया॥ तें-
 विंमार्तेभियाजाणावया॥ मींचिहेतु॥ २७॥ नाशरीरपरतेंसेविनां॥ संसारतेंसंसार॥ २८॥ जेजयाचीअहता॥ बुडोनितेडी
 ॥ २९॥ तैस्वर्गसंसारालगीं॥ धावताकर्मभारीं॥ दुःखाचासेलभारीं॥ विभ्रागीहोती॥ ३०॥ परिहंहीहोणेअर्जुनां॥ मजविस्त
 वनयाअज्ञाना॥ जैसाजागताचिहेतुस्वभा॥ निद्रेतोहोये॥ ३१॥ पैअप्पेंदिवसोचिजाणोआला॥ तेविमी-
 नेणोनिविषयदेखिला॥ मजचिस्तेवप्सुनी॥ ३२॥ एवनिद्राकाजागणिया॥ प्रबोधचिहेतुधनजया॥ तैविज्ञानाअज्ञानाजीवां-
 पाठ ओंकी १८ उद्देला.

चिय ॥ मीचिमूळ ॥ ३१ ॥ जेसेसपलकादोरा ॥ दोरचिमूळधुधेण ॥ तेसाज्ञानाअज्ञानाचियासंभारा ॥ भियांचोभिदि ॥ ३२ ॥ हाणो-
 निजेसाअसेतेंसया ॥ सातेनेणोनिधनजया ॥ वेदजाणोंगेलतवनया ॥ जालियाथाषा ॥ ३३ ॥ नरनिहीशारवासेदी ॥ मीचिजाणिजेनेत्रि
 शूद्धी ॥ जेसापूर्वापरानदी ॥ समुद्रनिदी ॥ ३४ ॥ आणिमाहासिद्धतापार्सी ॥ शुनिहारसिद्धतेण ॥ जेसियासंगीथाआकाशी ॥ वान
 ठहरी ॥ ३५ ॥ तेसंसमस्तहीशुकिजात ॥ वाकलजिअंसेनिवात ॥ तेंमीचिकरींयथावत ॥ मकटोनिया ॥ ३६ ॥ पाठींअुनीसंहित-
 अशेष ॥ अगहापेजेथीनःशेष ॥ तेंभिजज्ञानहीचोरव ॥ जाणतामीचि ॥ ३७ ॥ जेसेंनिदेशियांजागिजे ॥ तेंकांस्वमाचेंकीरनाहीदु
 जें ॥ परिरकत्वहीदेखोपाविजे ॥ आपलेंचि ॥ ३८ ॥ तेसैंआपलेंअदृयण ॥ मीजाणतेंसेंदुजेनवांण ॥ तयाहीबोधाकारण ॥ जाण
 तामीचि ॥ ३९ ॥ मणआगिलागलियाकापुरा ॥ नाकाजळनोवेंचानरा ॥ उरणेनाहीरीरा ॥ जयापरी ॥ ४० ॥ तेविंसमुळअविद्यारव
 ये ॥ तेज्ञानहोअेंबुडोनिजाये ॥ तन्हीनाहीकीरनोहे ॥ आणिनसाहेअसणेही ॥ ४१ ॥ पोंविश्वयंऊनिगेलामागेंसं ॥ तयाचोरानेक-
 वणकेंभिंवसी ॥ जेकोणीएकदयाऐसी ॥ शूद्धतेसी ॥ ४२ ॥ ऐसीजडाजडव्यासी ॥ रूपकरिनाकेंवल्यपनी ॥ ठीकलीनिरूपहिती ॥
 आपुलारूपी ॥ ४३ ॥ तोआद्यावचिबोधसहसा ॥ अर्जुनीउमदलाकेंसा ॥ व्योमीचाचेंदोदयजैसा ॥ क्षीरार्णवी ॥ ४४ ॥ कांमनिभिनी
 चोखटें ॥ समोरिलचिउमठ ॥ तेंसाअर्जुनीअणिवेकुंते ॥ नोदतंसंबोध ॥ ४५ ॥ तस्वापवस्तुस्वभाव ॥ प्रावेवंतंवगोडियेथाव
 हाणोंनिअनुभवियांचाराव ॥ अर्जुनहणें ॥ ४६ ॥ जीव्यापकपणबोलनां ॥ निरूप्याधिकजेंआतां ॥ स्वरूपमसंगता ॥ बोलिलेदेवो ॥ ४७
 तेंकवेळअधंगवाणें ॥ कींजोकाभक्तकारणें ॥ नेयदारेकचानायहाणें ॥ भवेंकेंते ॥ ४८ ॥ पेंअर्जुनाआह्याहिनडेकोडे ॥ अरकडबा-
 लोआवडे ॥ परिकापकीजेनजोडे ॥ दुसतेंऐसें ॥ ४९ ॥ आजिमनोरथांमिफळ ॥ जोडलासितुंकेंवळ ॥ जेंतोडपरूननिनिरवळ ॥ आन-
 पाव ॥ ओ ॥ ३७ सकट ॥ ओ ॥ ३८ तेंवेळां ॥ ओ ॥ ४८ सांगणें ॥

सिं अहे ॥ ह्येणां निरुपधि स्थिणां ॥ बोलिजे आदि ॥ ७० ॥ पाडिवाचि चंद्रखा ॥ निरुती दावावया गारवा ॥ दाविजेने विओपायिका
 बोली दया ॥ ७१ ॥ श्रेयो हविमो पुरुषो लोके क्षरत्या क्षरवचा ॥ क्षरः सर्वणि मृतानि कृतस्थो मृतान्यतो ॥ ७२ ॥ दी ० मगतो ह्यणे
 गासव्यसाची ॥ पैंदयसंसारपाटणीची ॥ यस्मिंसा विदाची ॥ दुपुरुषी ॥ ७३ ॥ जैसी आद्यवाचि गानी ॥ नादत दिवारां ब्रदा
 न्दी ॥ तैसे संसार जयानी ॥ दोक्दा चिह ॥ ७४ ॥ आणिक ही तिजा पुरुष आहे ॥ परि तो या दोही चें नावन साहे ॥ जो उदेला गा
 ने सीरवाये ॥ दोही नं वया ॥ ७५ ॥ परित्ते वगती असो ॥ आदि दोहे चिह पुरिसो ॥ जे संसार या सवसे ॥ आने असति ॥ ७६ ॥ ए
 क ओं धव्या वेला पगु ॥ ये संसारी पुरतांचोगु ॥ परि या मरणें संगु ॥ य इत्यादाया ॥ ७७ ॥ तथा काना मक्षर ॥ एका ने ह्यणती अस
 र ॥ इहिं दाही चिपरि संसार ॥ को दला अस ॥ ७८ ॥ आतां क्षर तो कवण ॥ अस र तो को न क्षण ॥ हे असि माय संपूर्ण ॥ विवंचुंगा
 नरी म ह द ह्कारा ॥ न्यारुनिया धनु र्धरा ॥ तृणानि चा पांगरा ॥ वीर पैगा ॥ ७९ ॥ जे कां हो साने थोर ॥ चाले ते अथवा स्थिर ॥ किं बहु
 जो गोचर ॥ मक्खु द्विसिं जे ॥ ८० ॥ जेतुलें पांच भूती क यदने ॥ जेना मरुपासा पडने ॥ गुणत्रयाचा पडने ॥ कामाजें ॥ ८१ ॥ मृता
 कृत चिनाणें ॥ यदनां सांगे जेणें ॥ काळा सिं जे रवळणें ॥ जिही कवडां ॥ ८२ ॥ जाणें निचि विपरीतें ॥ जे जे कां हो जाणिजे तें ॥ ते
 यति स्पर्णी भिम तें ॥ हो उभियां ॥ ८३ ॥ अगा कादु नि स्थाने चिंदांग ॥ उभवी सृष्टी चें आंग ॥ हं असो बहु जग ॥ जयनाम ॥ ८४ ॥ पै-
 अष्टया भिन्न रे सें ॥ जे दा विले प्रकृती भे ॥ जे स्वेच्छा रंजिते सें ॥ सागीं केलें ॥ ८५ ॥ हे मागील सांगीं कृती ॥ अगा आतो नि जे म
 स्तुती ॥ वसाकार रूपा कृती ॥ निरुती ॥ ८६ ॥ ते आणें चि साकारा ॥ कलुनी आपण या पुरा ॥ जाले असे न ह्नु सार ॥ चैतन्य वि
 ८७ ॥ जैसा कु हां आपण चि बें ॥ सिंह मति बिंब पाहतां सो सें ॥ मग सो भला सार सें ॥ यानी नेथ ॥ ८८ ॥ कां स भिदीं असत चि अ
 पाव, ओ, ८९ ॥

७

७

७

७

से ॥ ब्रह्मावरीषो भवितुं जेसे ॥ अहं न हेऊ नि तेसे ॥ द्वैत योगे ॥ ८९ ॥ अर्जुना यापरी ॥ साकार कल्पी निपुरी ॥ आत्मा विस्मृती चिकुरी ॥ भि-
 निद्रा तेथ ॥ ९० ॥ पै स्वमी से जार देखिजे ॥ मग पहुडणें जे से ते थकीजे ॥ ते से पुरी शयन देखिजे ॥ आत्मयासि ॥ ९१ ॥ पाठि नित्ये निद्रा
 निभरे ॥ मीसरवी दुःखी ह्यणतयोरे ॥ अहं मम तेचे निधोरे ॥ बोस पाये सांदे ॥ ९२ ॥ हाजन कहे माता ॥ हासी गौरही न पुरता ॥ पुत्र
 यिन कांता ॥ माझे हेना ॥ ९३ ॥ ऐसी यावळु यो निस्वप्ना ॥ धावत मवस्वगी चियारना ॥ तया चित्त न्याना मअर्जुना ॥ क्षर पुरुषा ॥ ९४
 आतार कक्षेत्र ज्ञयेणें ॥ नामें जया तें बोळणें ॥ जगज्जीवका ह्यणे ॥ जिये दशें ॥ ९५ ॥ जो अपुले निवि सरें ॥ सर्व भूत तें अलुका
 रे ॥ तो आत्मा बोलिजे सरें ॥ पुरुष नामें ॥ ९६ ॥ जे नो वस्तु स्थिती पुरता ॥ ह्यणे निआली पुरुषता ॥ वरी देह पुरी निदे जाता ॥ पुरु-
 ष नामें ॥ ९७ ॥ आणि क्षर पणाचा नाथिना ॥ आळय या ऐसे निआला ॥ जे उपधिची आनला ॥ ह्यणे नियं ॥ ९८ ॥ जैसी खळा-
 निया उदका ॥ सरसि उदाळें चंद्रिका ॥ ते साविकारं ओपायिका ॥ ऐसा चिगसे ॥ ९९ ॥ कां खळाळ मोट काशोषे ॥ आणि चंद्रिका ते
 सरि भिच फंडी ॥ ते सा उपधि नाशी निदिसे ॥ ओपायिक ॥ १०० ॥ ऐसे उपधा चिं भिपाडें ॥ क्षणिक लया तें जोडे ॥ तेणें रों कर पणें येडे
 सर हेनास ॥ ११ ॥ एवं जीव चैतन्य आयवें ॥ हे क्षर पुरुष जाणावें ॥ आतां रूप कूं बरवें ॥ असरासि ॥ १२ ॥ तरि प्रसर जो दूसरा ॥ पुरुष
 पै धनु रथा ॥ तो मध्यस्थ गागि रिरांग ॥ मेरु जेसा ॥ १३ ॥ जे तो रथी पाताळ स्वगी ॥ इही न भेदे तिहां भागी ॥ ते सा देहां ज्ञाना जा नागी ॥
 पडे नाजो ॥ १४ ॥ नाय शार्थ जाणे एक होणे ॥ ना अने कळे दुजे येणें ॥ ऐसे निखिळ जे नेणें ॥ ते चितें रूप ॥ १५ ॥ पाशतानि ॥ दोष जाये ॥
 नायद साजा दि होये ॥ तया सुखिं डागे से आहे ॥ मध्यस्थ जे ॥ १६ ॥ पै ओदे निगे विया सागर ॥ मगर तरंग नाबीर ॥ तया ऐसी अनाकार ॥
 जे दशागा ॥ १७ ॥ पार्थी जागणें तरा बुडे ॥ परि स्वयं चें कां हो न मांडे ॥ ते सिये निद्रे सां कडे ॥ न्याहाळुणें जे ॥ १८ ॥ विन्ध्य आघर्वे निमाळु
 पाव ॥ १९ ॥ सेज ॥ ओ ॥ १४ वेयोनि ॥ ओ ॥ ५ अन्यत्वे ॥ ओ ॥ न्याहाळी ॥

आण आत्मं बोधनरी लुजळे ॥ नित्ये अज्ञानदशे केवळे ॥ अक्षरनाम ॥ ९ ॥ अजा ह्यणतो जन्मनाही ॥ त्याभिना शक्तिचा काई ॥ यालागीं
 अक्षरपाही ॥ अज्ञानयन ॥ १० ॥ सर्वो कर्तृसांडिलें जें सें ॥ चंद्रपणउरें अवसे ॥ रूपजोणें वें तें सें ॥ अक्षरने ॥ ११ ॥ पैसर्वोपाधि वि
 नासे ॥ हे जीवदशा जेथें सें ॥ फळपाकांन जें सें ॥ झाडबीजें ॥ १२ ॥ तैसें उपार्थी सिंउपहि हत ॥ थोको निठां केजे थ ॥ तयांतें अव्यक्त
 बोधनीगा ॥ १३ ॥ यन अज्ञानसुषुप्ती ॥ तो बीजमाव ह्यणती ॥ येरस्वम हन जागृती ॥ फळभावतो ॥ १४ ॥ जयासीं कां बीज भाव
 विदांतीं केला ऐसाभाव ॥ तोनया पुरुषादाव ॥ अक्षराचा ॥ १५ ॥ जेथुनी अन्यथा ज्ञान ॥ फांको निजागृती स्वम ॥ नानाबुद्धींचें
 राना ॥ रिगालें असे ॥ १६ ॥ जीवत्व जेथुनि किंती ॥ दिव्य उदाविना चिउरी ॥ तेउमय भेदांचीं मरी ॥ अक्षरपुरुष ॥ १७ ॥ येरस्वपुरु
 षकांजनी ॥ जिहोखे जे जागृती स्वमी ॥ निया अवस्था जोदोकी ॥ वियालागी ॥ १८ ॥ पै अज्ञानयन स्सुषुप्ती ॥ ऐसे सीजिं कां रव्याती ॥
 याउणि येकी मासी ॥ ब्रह्माचिजे ॥ १९ ॥ साचि चिपुटती वीरा ॥ जरि नये तास्वम जागरां ॥ तरी ब्रह्माभाव साचो कारा ॥ ह्यणो येता
 २० ॥ परिमहति पुरुषदोमि ॥ अस्मिं जालीं जिये गरनीं ॥ क्षिप्रसे त्रजस्वमीं ॥ देविला जेणें ॥ २१ ॥ हें असो अधोशाखा ॥ यासंसार
 रूपारखा ॥ मूळ ते पुरुषा ॥ अक्षराचें ॥ २२ ॥ हा पुरुष का ह्यणिजे ॥ जे पुणं पणें विनिजे ॥ पै मायापुरीं पंहुडिजे ॥ तेणें ही बोले
 २३ ॥ आणिविकाराचि जे वारि ॥ ते विपरीत ज्ञानाची परी ॥ नेणिजे जिये माझारें ॥ तें सुषुप्तिगाहा ॥ २४ ॥ ह्यणो निया आपें सें
 क्षरणें पानसे ॥ आणिक हीं निहान नौशें ॥ ज्ञानाउणें १५ ॥ यालागीं हा अक्षर ॥ ऐसावे दातीं डगर ॥ केला देशीं थोर ॥ सिद्धता
 चा ॥ २६ ॥ ऐसें जीवकार्य कारण ॥ जया मायासंगि चितक्षण ॥ अक्षरपुरुष जाण ॥ चेंत न्यते ॥ २७ ॥ श्रुती ० उत्तमः पुरुषः स्वत्वः
 परमात्मै लुदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश विमर्त्य व्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥ टी ० आता अभ्यथा ज्ञानी ॥ यादोनी अवस्था जाज-
 पाठ ॥ ओ ॥ ११ जाण ॥ ओ ॥ १७ बोधांची ॥ ओ ॥ २५ नसे ॥ ओ ॥ २५ विणें ॥

नीं ॥ तथा हरपतो यनीं ॥ अज्ञानत्वीं ॥ १८ ॥ तें अज्ञान ज्ञानी बुडालिया ॥ ज्ञाने की तें सुख लगे लिया ॥ जे सावही का षड्जाळू निगा ॥ स्वये जा
के ॥ १९ ॥ तें सें अज्ञान ज्ञाने निलें ॥ आपण हि वस्तु देउ निलें ॥ ऐसे जाणणे निबीण उरलें ॥ जाण तें जें ॥ २० ॥ तें तो गाउत मधुपुरुष ॥ जो
नृती यंत्रां निष्कर्ष ॥ दोही हूने अणिक ॥ मागिला जो ॥ २१ ॥ स्रष्टु सी अणि स्मृमा ॥ पास निबुवें अर्जुना ॥ जाणें जें सें अना ॥
बोधाचे नि ॥ २२ ॥ कार शरी अणि मृगजळा ॥ पास नि अर्क मंडळा ॥ अंश ते विवेगळा ॥ उत्तम गा ॥ २३ ॥ हे ना का शी चा का शि
हूनि ॥ अना रि सा जें सावही ॥ तें साक्षरा सरा पासनी ॥ आन चि तो ॥ २४ ॥ पें यस्तु नि आपली मयांदा ॥ एक करीत न दीनदा ॥
उभे कल्यांत उदावादा ॥ एकांणवाचा ॥ २५ ॥ तें सें स्वप्न सा स्रष्टुनी ॥ ना जागरा चि गोष्टि आथा ॥ जे सी भिळिली दिवो राती ॥ प्रळय ते
जें ॥ २६ ॥ मग एक प्रण नदु जें ॥ असं ना ही हें नेणि जें ॥ अनुभव नि बुजें ॥ बुडाला जें ॥ २७ ॥ ऐसे आधि जें कांहीं ॥ तें तो उत्तम पुरुष
पाही ॥ जे परमात्मा इही ॥ बोलि जे नामा ॥ २८ ॥ तें ही येथ न भि सळता ॥ बोलणें जी वलें पंडु सता ॥ जे सी बुडणी याची वानी ॥
शडिये चा की जें ॥ २९ ॥ तें सी विवेका चि ये कांहीं ॥ उभे वा कलियौ करीती ॥ पारा वारा चि या गीठि ॥ करणें वेदा ॥ ३० ॥ स्मरणें नि पु-
रुष क्षरा सरा ॥ दोन्ही देखो नि अनावरा ॥ या तें त्याणी पर ॥ आत्मरूप ॥ ३१ ॥ अर्जुना रें सिया परी ॥ परमात्मा शब्द वरी ॥ सू-
चि जे ना अवधारें ॥ पुरुषोत्तम ॥ ३२ ॥ ये नृवी न बोलणे नि बोलणें ॥ जे थिचें सर्व नेणि वा जाणणें ॥ का ही च न हो नि होणें
जे वस्तु गा ॥ ३३ ॥ सोद ते ही अस्त वलें ॥ जेथ सांग तें चि सांगणें जालें ॥ द्रष्टवें सिंगेलें ॥ देखणें जेथ ॥ ३४ ॥ आतां विवा अणि
प्रति विवा ॥ माजि कै विह स्मरणे ये प्रभा ॥ जे की कै सें निह का सा ॥ जे ये चि ना ॥ ३५ ॥ कांघाणा रुका दोही ॥ दुती असे माझा रि लो-
वाधी ॥ तें न दिसे तरि ना ही ॥ ऐसे बोलो न ये ॥ ३६ ॥ तें सें दृष्टा दृश्य हे जाये ॥ मग कोण त्याने का ये आहे ॥ हे चि अनुभव ते चि ना
पाठ ॥ ओं ॥ ३१ अणिक ॥ ओं ॥ ३७ जेथ ॥ ओं ॥ ४० केलिया ॥ ओं ॥ ४४ दृश्य ॥

हे ॥ रुद्रपतया ॥ ४७ ॥ जामकाशेर्वीणामकाश ॥ जोइशितव्यंवाणइश ॥ आपणेनीचिअवकाश ॥ वसवीतअसेजो ॥ ४८ ॥ जोनादोरे
 अजनाद ॥ स्वोदेंचारवविजनास्मद ॥ जोभोगीजतअसेअनद ॥ आनंदेंचि ॥ ४९ ॥ जोपूर्णतेचापरिणाम ॥ पुरुषगासर्वोत्ति-
 म ॥ वियोतीचाहीवद्व्याम ॥ विरालाजेंथें ५० ॥ सरवासीसुरवजोडले ॥ जेतेंजेजासिसापडले ॥ शून्यहीबुडाले ॥ महरा-
 न्धीजिये ॥ ५१ ॥ जेविकाशाहोवरीउरता ॥ यामातेहीयासूनपुरता ॥ जोबहुतंपाडेबहुता ॥ यासूनबहु ॥ ५२ ॥ येमिणतयासू-
 ती ॥ रूपपणाचीप्रतीति ॥ रूपेनहोनिशुक्ती ॥ दावोजिवी ॥ ५३ ॥ कामानाअलकारदश ॥ सोनेनलपलपलेअसे ॥ विस्व-
 नहोनियांतेंसे ॥ विन्ध्यजोधरी ॥ ५४ ॥ हेंअसोजलतरंगा ॥ नाहींमिनामृणजेविगा ॥ तेंविंसतामकाशजगा ॥ आपणवि-
 जो ॥ ५५ ॥ आपलियासंकोचविकाशा ॥ आपणाविरूपवोरशा ॥ हाजर्थाचंद्रहनजेसा ॥ समग्रगा ॥ ५६ ॥ तैसाविन्ध्यपणेका-
 हीहोये ॥ नाविन्ध्यलोपीकंहोजाये ॥ जेसाराभिदिवसनाह ॥ द्विधारीवि ॥ ५७ ॥ तैसाकाहीनिकोणीकडे ॥ कायिसेमिहवेचि-
 नपडे ॥ जयाचेंसागडें ॥ जयासीचि ॥ ५८ ॥ यस्मात्सरमतीतोहमक्षरादिपिच्येनमः ॥ अतोस्मिलोकेवेदेचप्रथितः पुरु-
 षोत्तमः ॥ ५९ ॥ टी ० जोआपणपेंचिआपणिया ॥ मकाशोतसेयनंजया ॥ कायबहुबोलंजया ॥ नाहींदुजे ॥ ६० ॥ तोगासी-
 निरुपधिक ॥ क्षराक्षरात्तमएक ॥ ह्योनिद्वारेवेदलाक ॥ पुरुषोत्तम ॥ ६१ ॥ स्तो ० याममेवसममृदाजानतिपुरुषोत्त-
 मे ॥ ससर्वविद्वज्जितमामर्वभावेनभारत ॥ ६२ ॥ टी ० परिहंअसोरेसिया ॥ मजपुरुषोत्तमातेयनंजया ॥ जाणेजोप्रहि-
 लेया ॥ ज्ञानमित्र ॥ ६३ ॥ च्चेदलियांआपुलज्ञान ॥ जेंसनाहीचिहोयुस्वम ॥ तैसेस्फुरतेनिभुवन ॥ वावेजालें ॥ ६४ ॥ का-
 हातीयंतिलियापाळा ॥ फिरेसर्पासाचाकाटाळा ॥ तैसामाझेनिबोधेंटवाळा ॥ नागवेता ॥ ६५ ॥ लेणेंसोनेंनिकोजाणें ॥

पाठ. ओ. ५८ कही.

तेलेपेपणतेवावक्षणे ॥ तेविंमंजाणेनिजेणे ॥ वाकिलामेद ॥ ६४ ॥ मगह्येणसर्वभसिच्चिदानंद ॥ मीचिएकस्ततःसिद्ध ॥
जोआपणेनभिसंद ॥ नेणेनिजाणे ॥ तेणेचिसर्वजाणितले ॥ हेहोह्यणोथेकुले ॥ जेतयासर्वभउरले ॥ हेतनाही ॥ ६६ ॥
ह्यणोनिमाझियाभजना ॥ उचितनोचिअखुना ॥ गगनजैसेआलिगना ॥ गगनाचिया ॥ ६७ ॥ क्षीरसागरपरशुणे ॥ कीजेंक्षीर
सागरचिपणे ॥ असृतचिहोउलसिद्धणे ॥ असृतीजिवे ॥ ६८ ॥ साउंधरासिसळावे ॥ तेंसोलेपथेचिहोआवे ॥ तेविंमंजा
लियासंभवे ॥ भक्तिमाझी ॥ ६९ ॥ हांगासिंधुसंआनिहोती ॥ तीरंगांकुसेनिमिच्छती ॥ ह्यणोनिमीनहोताभक्ती ॥ अन्वय-
आहे ॥ ७० ॥ ऐसियालागीसर्वभकारी ॥ जैसाकुलेकुळअमन्यसागरी ॥ तेंसोमातअवधारी ॥ मजिन्नलाजो ॥ ७१ ॥ सूर्याआणि
पुसे ॥ एकवेंकैजेणेलोभे ॥ तोपाडमानुलासे ॥ मजनातया ॥ ७२ ॥ भद्रो ॥ इतिगुह्यतमशास्त्रमिदमुक्तययासय ॥ एतदु
आबुद्धिमान्यात्सतस्तुत्यव्यभारत ॥ ७३ ॥ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्संज्ज्ञाविद्यायोगशास्त्रेश्रीकृष्णा
र्जुनसंवादेपुरुषोत्तमयोगोनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ टी ॥ एवेकथिलयादोरभ्यजहसर्वशास्त्रेकुलभ्य ॥ उपनिषदांमोर
पय ॥ कमलदद्याजिवे ॥ ७४ ॥ हंशब्दब्रह्मचर्यायते ॥ श्रव्याभजनेनिहात ॥ मयुनिकादिनेआदते ॥ सारआही ॥ ७५ ॥
तेंज्ञानसुताचीजानवी ॥ जेआनंदचंद्रीचिसतरावी ॥ दिचारक्षाराणवीचिनवी ॥ भुस्मीजेह ॥ ७६ ॥ ह्यणोनिआपुले
निपदवर्षे ॥ अर्थचिनिजीविमाणे ॥ मीवांचोनिहोनेणे ॥ आजकाही ॥ ७७ ॥ मगह्येणसर्वभउरले ॥ हेतनाही ॥ ७८ ॥
वाकिले ॥ मगसर्वस्वभजदेवले ॥ पुरुषात्तमी ॥ ७९ ॥ ह्यणोनिनगंगांवाता ॥ मियाआत्मनिर्गतवता ॥ जहमस्तुतवृष्टा
आता ॥ भावणिंली ॥ ८० ॥ सात्विबोलाचिनहेहशास्त्र ॥ पेंससारजिणतशास्त्र ॥ आत्माअवतरवितभय ॥ अक्षर

दये ॥ ७९ ॥ परितुजपुतांसागीतले ॥ नैअजुनारेसंजाले ॥ जेगोव्यधनकादिले ॥ माझेओजितुवा ॥ ८० ॥ मज्जेतन्यशेसुचा
 माथा ॥ जोनिक्षपहातापाया ॥ नयागीतमेजालासिआस्था ॥ निर्धान्ता ॥ ८१ ॥ चोरवतिवा आपुलिया ॥ पुढिलाउगमाणा
 येयावया ॥ तथादपणान्चीचिपरिधनजया ॥ केलीआत्मा ॥ ८२ ॥ कांभरलेचंद्रतारागणी ॥ नमोसधुआपणयामाजिआणि
 तेसागीतेभिंमीअतःकरणी ॥ सुदलातुवा ॥ ८३ ॥ जेअविषयमळकता ॥ तुंसांठिलासिभ्रमता ॥ त्पणोनिगीतिसिजवसे
 दा ॥ जालासिगा ॥ ८४ ॥ परिहबालाकार्यगता ॥ जेहेमाझीउन्मेषलता ॥ जाणतासमस्ता ॥ मोहासुक ॥ ८५ ॥ सेविली
 अमृतसरिता ॥ रोगदवडनिपडुसता ॥ अमरपणउचिता ॥ देऊनिघाली ॥ ८६ ॥ तेसीगीताहेजाणतलिया ॥ कायवि-
 स्मयमाहजावया ॥ परिआत्मज्ञानिआपणपया ॥ मिळिजेथेथ ॥ ८७ ॥ अयाआत्मज्ञानाचावाद्यो ॥ कर्मआपुलयाजीवि-
 तायाही ॥ हाऊनियाउतराई ॥ लयाजाया ॥ ८८ ॥ हरपलेदारुनिजसा ॥ सागसेरवीरविलासा ॥ ज्ञानचिक्कसवळयेतसा ॥
 कर्ममासादचा ॥ ८९ ॥ त्पणोनिज्ञानियापुरुषा ॥ कृत्यकरुसरलंदरवा ॥ ऐसाअनाथाचासरवा ॥ बोलिल्यातो ॥ ९० ॥ तेंअ
 कृष्णवदनासुत ॥ पार्थसरोनिअसेवोसुडत ॥ मगव्यामसुपाप्राप्त ॥ संजयासी ॥ ९१ ॥ तोदतराभूराया ॥ सूतसपानकराव
 या ॥ त्पणोनिजीवितंतया ॥ नोहेचभारी ॥ ९२ ॥ यरुवर्गीनाअवणअवसरी ॥ आवडोलागतअनाधिकारी ॥ परिसरभी
 तेचिउजरी ॥ पातलाभली ॥ ९३ ॥ जेक्काद्रास्सीदूधयातले ॥ तेक्कावायांगेलंगमसे ॥ परिफळपाकंदुणावले ॥ देखिलेजे-
 वि ॥ ९४ ॥ तेसींभीहरीवर्कचिअक्षर ॥ सजयेसारीतलीआदेर ॥ तिहोअधुतोहीअवसरे ॥ ससिंयजाला ॥ ९५ ॥ तेचि
 मन्हेनेनिविन्यासे ॥ भियाउन्मेषवसेगोवसे ॥ जेजाणेनणेतसे ॥ भिरांपिले ॥ ९६ ॥ सेवतेथेअशषकाही ॥ आंगपाहता
 पाठ नाही ॥

पाठ, ओ, १८-तैत्तिगज, ओ ११परि, छ

9

5

श्रीगणेशाय नमः ॥ मां वच्छेदीति विप्रवाभासः ॥ नवल उदयलाचं दाशः ॥ अहूया विनीविकाशः ॥ वंदुं आनां ॥ १॥ जो अविद्यागती रुसो नि
 यो ॥ गिकि ज्ञानां ज्ञानचांदीण्यां ॥ जेसुदिन करी जाभियां ॥ स्तवो यान्या ॥ २ ॥ जेणों विवक्तितिये सवके ॥ लाहोनि आत्सज्ञानांचे दिगे
 के ॥ सांडितो देहाहेतुचिं अं विसांके ॥ जीवपक्षी ॥ ३ ॥ दिगदेह कसकत्वा ॥ पोति वेचतया चिद्रूपगचा ॥ बोदमास जयाचा ॥
 उदयला होये ॥ ४ ॥ शब्दाचिया आसकडी ॥ भेदन दीचा तो होथी ॥ आरजों ते विरहे वडी ॥ बुद्धि बाध ॥ ५ ॥ तथा चक्र वाक्र
 चे मिथुन ॥ सामरस्थ्याचे समाधान ॥ भोगवी जो चिद्रूपग ॥ सुवन दिवा ॥ ६ ॥ जेणें पाहो लिये पाहाटे ॥ भेदाचि चोरळी फटे
 रिघती आत्मा लुभवाटे ॥ पांथी कयाणी ॥ ७ ॥ जयांचे भिबे वक्र किरण संगें ॥ उन्नेर वस्तूयें कांत फुणगे ॥ दीपले जाकि ती दा
 ने ॥ संसारची ॥ ८ ॥ जयांचार शिपुंज निबर ॥ हातां स्वरूप उरवरी स्थिर ॥ ये महाभिदूचा पूर ॥ मृगजकते ॥ ९ ॥ जो मलय कु
 बोधाचिया माथ्या ॥ सोहते चाम अक्की आलिया ॥ लप आत्मप्राति छाया ॥ आपण पातळी ॥ १० ॥ ते वेळीं विश्वस्वमासी हेत
 कोण अन्यथा मती भिद्रें ॥ सांभाळी लुरे चिजेथें ॥ मायारती ॥ ११ ॥ ह्याणीनि अहूय बोधपाटणी ॥ तेथे महान दाची दाटणी
 मग सरखानु भूतींचे घणीं देणी ॥ मंदोवोला गती ॥ १२ ॥ कुं बहुरंगे सेंभें ॥ मुक्त केंवल्य सुदि वसें ॥ सदा लाहिजे कां प्रकाश
 ज्याचे नि ॥ १३ ॥ जे निज थामव्यो मी नारावो ॥ उदयला चि उदय जतरवो ॥ फेडो पुरवो दिशें सांमि नावो ॥ उदयास्ताचा १४
 न दिसेणों दिसणें न सोसावळी ॥ दोहों ज्ञां किलें ते सेंद पाळवी ॥ काय बहुबोलांतें आयवो ॥ उरवाचि आनि ॥ १५ ॥ तो अहोरा
 त्रचा पेलकड ॥ कोणें देखावा ज्ञान मातें उ ॥ जो मकाशे वाणसर वाड ॥ प्रकाशाचा ॥ १६ ॥ तथा चित्सूर्या अग्नि वृत्ती ॥ आतां
 न मोचि द्वाणो पुढत पुढती ॥ जे बोधकाये इजवसें स्तुति ॥ बोलाचिया ॥ १७ ॥ मग देवाचे महिमान पाहो भियां ॥ स्तुतीतरी येइ
 पाठ, ओं ४ बंध, ओं १० पांचि, ओं १४ उदो भस्तुच, ओं १७ बांधका,

अचंगवया ॥ जरीस्तव्यबुद्धीसालया ॥ जाइजेका ॥ १८ ॥ जोसर्वेचीवांजाणिजे ॥ सौनवियामिठीयावाजिजे ॥ काहोचनहोनिआ
 णिजे ॥ आपणपयाजो ॥ १९ ॥ नयातुझियाउद्देशासाठीं ॥ पश्यंतीमभ्यापोटीं ॥ सूनीपेचेहीपाठी ॥ वैरवरीवैरे ॥ २० ॥ तयातु
 नेमीसिवरूपणे ॥ लेववीबोलनेयास्मोत्राचेंलणे ॥ हेउपसाहावेहीम्हणानाउणे ॥ आह्मथानदा ॥ २१ ॥ परिरंकेअमृताचासागर
 देखिलुयापडेउचिताचाविसर ॥ भगवद्रूपावेयाहुणे ॥ शाखाचातया ॥ २२ ॥ तेथशाकरीरबहुतदृष्टावा ॥ तयाचोद्वेष
 वेगचिनाय्यावा ॥ उजळोनिदित्यतेजाहानिवा ॥ तंभीन्निचिगाहावी ॥ २३ ॥ बाळाउनिजजाणोहीय ॥ तारिबाळपणचिके
 आहे ॥ परिसाचचियेशिमाये ॥ ह्यणीनिताषे ॥ २४ ॥ हांगागावरसयाभरलें ॥ पणिपानीयायेदेतआलें ॥ तेंगगाकायह्मणीत
 हे ॥ परतेसर ॥ २५ ॥ जीम्हणुचोवैसाअपकार ॥ किंतामाचुनिप्रयोपचार ॥ कायतोषेचिनाशाईधर ॥ गुरुत्वासी ॥ २६ ॥ कोआ
 थोरंनिरवतिलेअंबर ॥ जालेदिवसचाथाभमोर ॥ तेंणेतयातेपरंतेसर ॥ ह्यणीतलेंकाई ॥ २७ ॥ तेंविषेदबुद्धिचेंयेतुले ॥ घा-
 लीनसूर्यसुखाचेंकाढकें ॥ तुकिन्नासितेंयेकावेक ॥ उपमाहिजोर्जा ॥ २८ ॥ जिहोआनाचोडोकापाहिलासि ॥ वेदादिवा-
 चावागिलासी ॥ जेंउपमाहिलेतयासी ॥ तेंआह्माहीकरीं ॥ २९ ॥ परिमीआजितुझारुणी ॥ लाचावलेअण
 राधनगणी ॥ प्रसंतेंकरीपरीअर्थणी ॥ नुठिंददा ॥ ३० ॥ भियांगीतायेणेंनावें ॥ तड्योपसायाभमरूहावे ॥ वावलायलेतंदणे-
 नथावें ॥ देवलोदेवें ॥ ३१ ॥ साक्षियासत्यवादाचेंनप ॥ वाचाकेलुबहुतकल्प ॥ तयाप्रकाचहमहाहीप ॥ पातलोप्रभु ॥ ३२ ॥
 पुणेंपोशिलेंअसाधारणें ॥ तियेंवुझेगणवानणें ॥ दबुनिमजउनीर्ण ॥ जार्जोअजि ॥ ३३ ॥ जीजिविलाचाआडवी ॥ आनुडलो
 होतोभरणगार्वा ॥ तेअवदसाचिआडवी ॥ फाडिलोहोअर्जा ॥ ३४ ॥ जेगीतायेणेंनावेंनावणिणी ॥ जेअविद्याजिणोनिदाहुणी
 पाठ ॥ ओ० ३७ पदार्जो ॥ ओ० २८ सूर्यशशा ॥

तेषां निवृद्धी आह्लाजोगी ॥ वानावया जाली ॥ ३५ ॥ पौनर्धनाय रत्ना निवसे ॥ महालक्ष्मी यद्गतिवैसे ॥ तया ते निर्धन ऐसे ॥ ह्यणो ये का ई ॥
 कां अथ कारा चिनाया ॥ देवै सुख्य आभिया ॥ तो अथ कार चिजगायया ॥ प्रकाशने हो ॥ ३७ ॥ जया देव चिपाहा ता थोरी ॥ विश्व परमा
 पुही दशानधरी ॥ तो भावा चिय सरोवरी ॥ न द्वे चिकई ॥ ३८ ॥ तैसा सीगी ता वाखाणा ॥ ह्रस्व पुथान् च तुरवणी ॥ परिसमर्थ तुका
 शिरयाणी ॥ फेडि डति ॥ ३९ ॥ ह्यणो निवृद्धी नि प्रसादे ॥ सीगी ता पद्मे अगाधे ॥ निरूपी न जीवि शदे ॥ ज्ञान देव ह्यणो ॥ ४० ॥ नरी
 अध्यायी पंथरावां ॥ श्रीकृष्णो तथा पाडवा ॥ शास्त्रा सिद्धांत आयवा ॥ उगाणि ला ॥ ४१ ॥ जे वृक्ष रूपाक परिभाषा ॥ फेले उपा-
 धिरूप अशेषा ॥ सद्देव जे संदोषा ॥ अगर्लाना ॥ ४२ ॥ आणि कूटस्थ जो अस्सर ॥ दाविला पुरुष प्रकार ॥ तेणें उपहि ता ही
 आकार ॥ चेतन्या के त्या ॥ ४३ ॥ पाठितु तम पुरुष ॥ शब्दांचे करुनि भिष ॥ दाविलें चोरव ॥ आत्म तल ॥ ४४ ॥ आत्म विष-
 यीं आनुवद ॥ साधने जे आंगद ॥ ज्ञाने हं ही स्पष्ट ॥ नावळ त्या ॥ ४५ ॥ ह्यणो निइये अथार्या ॥ निरूप्य नुरे चिकां ही ॥ आतां
 गुरु शिष्यां दो ही ॥ स्नेह त्या हणा ॥ ४६ ॥ एव इये विषयीं कीर ॥ जाणते बुझावले अपार ॥ परिसुमुक्ष इतर ॥ साकांक्ष जाले
 ४७ त्या मज पुरुषोत्तमा ॥ ज्ञाने मे दे जासुवर्मा ॥ तो सार्वज्ञ तो चि सीमा ॥ प्रस्तीचा ही ॥ ४८ ॥ ऐसे हे अंलां स्थानाये के ॥ बोलिले-
 अथार्या तस्लो के ॥ तैथे ज्ञान चि वहु ते के ॥ वानिलें तो के ॥ ४९ ॥ मरूनि प्रपंचाचा थोद ॥ कीजे देव तां विदेर वतथा दृष्ट ॥
 आनंद साक्षाज्यीणाद ॥ बाधिजे जीवा ॥ ५० ॥ येवढे थालो ठे पणाचा उपवा ॥ आनना हीं चि ह्यणो देवा ॥ हासम्य कृज्ञानाचारवा
 उपाय माजि ॥ ५१ ॥ ऐसे आत्म ज्ञान जे होत ॥ तिही तो षले भिचिने ॥ आदरे तथा ज्ञानांत ॥ वावा किलें जीवे ॥ ५२ ॥ आतां-
 आषढी जे थपडे ॥ तया चि अवसर पुढें पुढें ॥ रिगाला गे हं थंड ॥ प्रमऐसे ॥ ५३ ॥ ह्यणो निज ज्ञान सच्चोपे की ॥ ज्ञानी प्रतीति
 होय ना जं वनि की ॥ वंथोग सैम ज्ञान विरवि ॥ स्फुरल चिकि ॥ ५४ ॥ ह्यणो निनें चि प्रम्य कृज्ञान ॥ केसे निहोय स्वाधीन ॥
 फेद ओ ॥ ४५ देहों ॥ थो ॥ ५१ उवाचो ॥ ७

जलेशां द्विपत्य ॥ यदेलकोविं ॥ ५५ ॥ कांउपजोचिजेनलाह ॥ जंउपजलैहोअहंतामूये ॥ नेंजानोविरुद्धकायआहे ॥ हेजाणवे-
 को ॥ ५६ ॥ मगजाणतयाजोविरू ॥ तयाचीवाटवाहतीकरूं ॥ जानहितेंविचारूं ॥ सर्वमावे ॥ ५७ ॥ तेसाजानजिज्ञासुतुह्योसम-
 स्तो ॥ भावजोथरिलाअसेचिती ॥ तोपुरवावयालक्ष्मीपती ॥ बोलिजेन ॥ ५८ ॥ जानासिऊजमजोडे ॥ आपलीविआतीहोव-
 शिवोडे ॥ तियासपत्तीचेपवोडे ॥ सांगिजेलदेवी ॥ ५९ ॥ आणिजानाचेनिकामाकारे ॥ जेरागंदूषांसिदेथारे ॥ तियेआसरीये-
 दिह्योरे ॥ करीलरूप ॥ ६० ॥ सहजइच्छानिष्टकरणी ॥ दोधीचिइयाकवतुक्णी ॥ हेनवमाथायेउभारणी ॥ केलीहोती ॥ ६१
 वेधसाउमायेयावयाउवावो ॥ तंववोडवलाआनप्रस्तावो ॥ नरोतयामसंगेआतांदेवो ॥ निरूपीतअंस ॥ ६२ ॥ तयानिरूपणा-
 चेनिनावे ॥ अध्यायपदसोळावे ॥ लावणीपाहताजाणावे ॥ मागिन्नावरी ॥ ६३ ॥ परिहेंअसोआताप्रस्तुती ॥ ज्ञानाचाहिता-
 हितो ॥ समर्थासंपत्ती ॥ इयाचीदेव्ही ॥ ६४ ॥ जेमुमुक्षुसर्गचिबोळावी ॥ जेमाहगधीचीप्रसंदिबे ॥ तेआधीनवेदेवी ॥ सप-
 तिऐका ॥ ६५ ॥ जेथएकूएकतेपेरवो ॥ तेसेबहुनपदायेंयेंकं ॥ संपादिजतीनेलोकीं ॥ संपत्तिह्यणिजे ॥ ६६ ॥ तेदेवीसु-
 रवसंभवी ॥ तेशदेवागुणयेकोपजोवी ॥ जान्निह्योणीनदेवो ॥ संपत्तीहे ॥ ६७ ॥ अमोक् ॥ श्रीभागवानुवाच ॥ अमयस-
 त्वसंशुद्धिज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानदमस्तयज्ञस्वस्वाध्यायस्तपआर्जव ॥ १ ॥ टी ॥ आनातयाचिदेवगुणा ॥ मजिये-
 रेचाबिसण ॥ वेसेतयाआकर्णा ॥ अमयसं ॥ ६८ ॥ तरिमयन्मिमहापुरां ॥ नयपबुदुणयाचीशयारी ॥ कारागनगणिजयरो-
 पक्याचिया ॥ ६९ ॥ तेसाकर्माकर्मादियामोहरा ॥ उवुनेदुनिअहंकारा ॥ संसाराचादराग ॥ सांडणेंयेणें ॥ ७० ॥ अथवाऐक्य-
 भावाचेनिपेसं ॥ हुजंभान्निआत्माऐसं ॥ मयवानांश ॥ दवडणेंजे ॥ ७१ ॥ पाणिबुडयेमिनातें ॥ तंवमीनचिपाणिआते ॥
 पाठ. ओ. ५६. उमजोउमजले, भावनेचोनि.

नविं आपण जाले भिअहेत ॥ नाशे मय ॥ ७० ॥ अगा अमययेणे नावे ॥ बोलि जेतें ज्ञाणावे ॥ मलय कुजानाने आयवे ॥ धांवणे हे ७१ ॥
 आतां सत्व शही जे हाणिजे ॥ ते ऐसा चिहो ज्ञाणिजे ॥ तर्ग जे कर्मा विद्व ॥ राखो दोने मा ॥ ७२ ॥ कोणी दिवा वा निनवे ॥ अने
 सेतु दीसांडु निमारे ॥ माजी अति सहस्र अंगे ॥ चंद्र जे सा राहे ॥ ७३ ॥ नाति रवा षड्मासा दला ॥ या अंगा हा मा दला ॥ माजी
 निज रूपे निव दली ॥ गगजे सा ॥ ७४ ॥ तसी स कल्प वि कल्प्याची वादी ॥ सांडा नर जन माची का वदी ॥ सोयिता निज भर्मा
 ची आवडी ॥ बुद्धि जे उरे ॥ ७५ ॥ इंद्रिय वर्गा दा रवी रिलया ॥ वरु हू अथवा मलीया ॥ विस्मय का हो को लिया ॥ नुत्रो वि-
 सी ॥ ७६ ॥ गावा गेलिया वल्लु म ॥ पति वत चा विरह सो म ॥ मन्त ने सणी हा ना ला म ॥ ममने जिवी ॥ ७७ ॥ ने विं सत्व रू
 पर चले पणे ॥ बुद्धि जे ऐसे अनन्य होणे ॥ ने सत्व शही हू हाये ॥ कुशि हता ॥ ७८ ॥ आना आत्पला सा विरवी ॥ ज्ञान योगा
 माजी एकी ॥ जे आपु लि या दा की ॥ हो वे मरे ॥ ७९ ॥ ते ये स र्ग कय चि न वल्ल ॥ न्याग वरणे यारी ती ॥ निष्कामे पूर्णा हु-
 ती ॥ हुताशी जे सा ॥ ८० ॥ कां स कुळी ने आपु ली ॥ आत्प जा कुळी चि दि थली ॥ हे अमोल त्मो स्थिर वली ॥ मुकुंदा
 जे सा ॥ ८१ ॥ ते से नि वि कळ पणे ॥ जे योग ज्ञाने चिया वृत्ति व हाणे ॥ तो नि जा गुण द्य णे ॥ सुज्जना थ ॥ ८२ ॥ आता देह
 वा चा चित्ते ॥ यथा स पन्ने वि ते ॥ वैरी जालिया हा आता ॥ नव वणे जे का ॥ ८३ ॥ फुला फळी छया ॥ मुळी पनी ही यज
 या ॥ वाटे चानु लु के आलया ॥ हस जे सा ॥ ८४ ॥ ते स मना नि धन वरी ॥ विद्यमाने आल्या अवसरी ॥ आतां चिये मनो हरी
 उपयो गा जाण ॥ ८५ ॥ तया ना व जाण दान ॥ जे मो सि नि धान चे अंजन ॥ हे असा आधिके चिह्न ॥ हमा चेत ॥ ८६ ॥ तरी विष
 के दि या भिळणी ॥ करु नि या पे वि तु रणी ॥ जे से तो डि जे र व दू क पाणी ॥ पार के या ॥ ८७ ॥ ते सा विष य जा तां चा वा रा ॥ वजो
 पाठ, ओ० ८० रुचले ३ ओ० ८१ खडु ७

नेदिजेइंद्रियद्वारा ॥ इयं वां धीमप्रत्याहार ॥ हातोवोपी ॥ १० ॥ आतुल्यनित्तचे अंगवरी ॥ सांडुमिग्रहनिपकेवाहेरी ॥ आगीस्र
 यिजिदाहीहीद्वारे ॥ वेरायची ॥ ११ ॥ आसोशवासोहनीबहुवसे ॥ ब्रूते आचरेरपरपुसे ॥ वोसेनितांरात्रिदिवसे ॥ नाराणुकज
 य ॥ १२ ॥ पंदमरेसाह्यणिपे ॥ तोहाजाणस्वरूप ॥ यज्ञार्थहसंक्षेप ॥ सांगोपेक ॥ १३ ॥ तीरब्राह्मणकरुभिधुरे ॥ स्त्रियादिक
 पेलमेरे ॥ माझारेअधिकारे ॥ आपुनालेनि ॥ १४ ॥ जयाजसेवर्त्तम ॥ भजनोग्रदेवनाथम ॥ तेतेणयथागम ॥ विधीयजि
 जे ॥ १५ ॥ जेसाद्विजषट्कर्माकरी ॥ शूद्रतयतेनमस्कारी ॥ कींदाहीमिहीमरोवरी ॥ निपजयाग ॥ १६ ॥ तेसेअधिका-
 रपर्यालोचें ॥ हेयजकरणेसर्वचि ॥ परिदृषयदृषपळाशेचि ॥ नयापेमाज्जा ॥ १७ ॥ आगिपीकृतोमाभावो ॥ नेदिजेदेहाचे
 बिहारेजावो ॥ नावेदाक्षेसांतराभावो ॥ होइजेस्मये ॥ १८ ॥ अर्जुनागवयज ॥ भवेन्नजाणमाज ॥ केवल्यमार्गाचाअभिज्ञ
 सागातोहा ॥ १९ ॥ आताचेदुवेंभूमीहाणिजे ॥ हेनंदुकोहानाआणिजे ॥ कांस्यवैजयेरिजे ॥ परिपिकीलस ॥ २० ॥ ना
 तरिविलेदृशवया ॥ आदरवैजिदिवया ॥ कांशाग्राफक्यावया ॥ सिंगिजेसक्र ॥ २१ ॥ हेबहुअसोआरिमा ॥ आपणपेदेरवा
 वयांजेसा ॥ पुढवपुढतीबहुवसा ॥ उदिजेमीनी ॥ २२ ॥ तेमाप्रतिपाद्यजोदंस्मुर ॥ तोहावयालागींचर ॥ श्रुतीचानिरंतर
 अस्मासकरणे ॥ २३ ॥ तेदुजासीचब्रह्मसूत्र ॥ येरास्तोवकानामसंच ॥ आनतेणोपवित्र ॥ पावावयातन्व ॥ २४ ॥ पार्थागास्ता
 आया ॥ बोलिजेतोहाह्यणेदेवो ॥ आतातपशब्दामित्रावो ॥ आइंरुआशा ॥ २५ ॥ तारादानसर्वस्वदणा ॥ वचणतव्यर्थकरणे
 जेसफळोनिस्वयेसकण ॥ इद्रावणिजेवो ॥ २६ ॥ नानाधुपाचाअग्निप्रवेश ॥ कननीनुकाचानाश ॥ पितृपक्षपोषितांदास ॥ चे
 दाचजेसा ॥ २७ ॥ तेसास्वरूपाभियप्रसरा ॥ आगीमाणेंद्रियशरीरा ॥ आदणीकरणेजंवेरा ॥ तेचितप ॥ २८ ॥ अथवाअना
 पाद ॥ ओ ॥ २९ ॥ यागार्थ ॥ ओ ॥ ३० ॥ माज ॥ ओ ॥ ३१ ॥ वीधिरमिजे ॥

रिसें ॥ तपस्वरूपजरीअसे ॥ तरिजाणजेविंधुधाहंसं ॥ स्मृत्येत्वाचू ० तसेंदहर्जनिनिंयमरुणी ॥ जोउदयअतसूयेपाणी ॥ तो
 विवेकअंतः करणीं ॥ जागवीजे ॥ १० ॥ पाहानाआत्मयाकड ॥ परिरुद्धिचापमसीकड ॥ सनिद्रास्ममबुड ॥ जागणेंजेसें ॥ ११ ॥
 तैसेआत्मपथलोच ॥ अक्सेजोसाच ॥ तगाचहानिर्वेच ॥ धनुशरा ॥ १२ ॥ आताका ॥ हाहाकर ॥ जेंरेंनानाभूनीचैतन्य ॥
 तैसेप्रणिमात्रीसोजन्य ॥ आर्जवते ॥ १३ ॥ अहंसाप्रत्यमक्रोधस्थायः शान्तिरपेशून ॥ दयाभूतेषुलोलुपमार्दवंद
 रचापलं ॥ २ ॥ टी ० अणिजगाचियासुरवादेशें ॥ शरीरवाचासामसे ॥ राहाटणेंतेअहिंसं ॥ रूपजाण ॥ १४ ॥ आतोतिरे
 हाफुनिमवाक ॥ जेसेजानीचेंसुक ॥ कांतजपरीशानक ॥ शशाक्राचें ॥ १५ ॥ शक्रेदाविताचिगेफेड ॥ आणजिमेतरिनकुंक
 ड ॥ तेंवारवदनाहीमायडु ॥ उपमाकैची ॥ १६ ॥ तरिमउपणवुबकें ॥ झगडताहीपरिनाडकें ॥ येरवीफोडीकोराकें ॥ पाणिजे
 सं ॥ १७ ॥ तैसेंतेतोडावयासंदेह ॥ तीरवजेंसेकालात ॥ आव्यततरिमाधुर्य ॥ पथीयाला ॥ १८ ॥ ऐकोंतातकोतुके ॥ काना
 तेनियतीसुरें ॥ जेसाचारिवेचोभिवेके ॥ अह्यहोभेदी ॥ १९ ॥ किंवडुनाप्रियपणें ॥ कोणातेहीझाकउनेणें ॥ यथार्थतरीखु
 पणें ॥ नाहोकवणा ॥ २० ॥ येद्वीगोरीकारकानाकोड ॥ परिमाचाचारवाकांकीड ॥ आगियेचेंकरणेउपड ॥ परिजकोतेसा
 च ॥ २१ ॥ कानीलागतामहुर ॥ अर्थेपिमाडीजिह्वा ॥ तेवाचनकुंसुदर ॥ लावचिया ॥ २२ ॥ परिअहिनीकोपोनिमोप ॥ —
 लालनीनउजेंसुषु ॥ तिथमातेचेंस्वरूप ॥ जसेंक्राहोये ॥ २३ ॥ तैसेअवणसरवचतुर ॥ परिणमोनिमाचार ॥ बोलणेंजेअ
 धिकार ॥ तेंसत्ययेथें ॥ २४ ॥ आतायालितहीपाणी ॥ पाषाणीनिनेथेआणि ॥ कामधिलियालोणी ॥ कांजीनेदी ॥ २५ ॥ ल
 चापायेशिरीं ॥ हलयाहीफडेनकरी ॥ वसंतीहीअंबरी ॥ नहोतीफुलें ॥ २६ ॥ नानारंभेचोनिहोरूपें ॥ शक्तीनुठिजेचिकदपें ॥
 पाठ, नाही

कांमस्मीवह्नीवउद्दीपे ॥ २७ ॥ तेवोचिक्कुमारक्रोधेभरे ॥ तेभियांमत्रार्चविजाक्षरे ॥ तियेभिभिनेहीअपरि ॥ मीनलि
या ॥ २८ ॥ पैधातयाहोपायापडतां ॥ जुहंगतायुपुडुमुत्ता ॥ नेसीतुपजेउपजविता ॥ कोथोर्मिगा ॥ २९ ॥ अक्रोप्रत्वनेरेसे ॥ नावति
चेदशे ॥ जाणारेसेअीनिवास ॥ ह्यणंनलनया ॥ ३० ॥ आतांमृत्तिकान्यागेरुह ॥ ततन्यागेरुह ॥ त्यजिजेअिविवद ॥ बीजत्योगे
३१ कात्यजनिभिनिमात्र ॥ त्यजिजेआयवेचिचित्र ॥ कोनिद्राव्यागेविन्द्र ॥ क्कमज्जकते ॥ ३२ ॥ नानाजकत्यागेतरंग ॥ वर्षी-
त्यागेमेय ॥ त्यजिजीजेसंभोग ॥ धनत्यागे ॥ तेविबुद्धीसनीदेही ॥ अहंतामांदुनयाही ॥ भादिजेअशेषही ॥ संसारजात ३३
वयानावत्याग ॥ ह्यणेतोयज्ञाग ॥ होमान्निस्समग ॥ यार्थपुळे ॥ ३४ ॥ आनांशान्निद्रिन्द्रिग ॥ तैव्यक्तमजसाग ॥ देवोह्यणती
चांग ॥ अवधानदेई ॥ ३५ ॥ तर्पणिक्रोनिजयाग ॥ जानाजानहंसायोग ॥ दागेमविकृत ॥ नेशातीपेगा ॥ ३६ ॥ जेसाप्रकयाबु
चाउभट ॥ बुडऊभिबिश्वाचापवांटा ॥ होयआपणनेमिवट ॥ आगपनि ॥ ३७ ॥ प्रगपुमापुनोयमिधू ॥ हानुरेचिव्यवहारमेहु
परिजलेक्याचाबोध ॥ तोहीसुवपा ॥ ३८ ॥ नेभीजयादेतामर्धा ॥ जानुनहंमनेरोई ॥ पगारेनेचिचिर्गती ॥ शान्तिचेरूप ४
आताकह्येविनव्याथी ॥ बळिकुरणांनयाअर्थ ॥ आपणमनशोथी ॥ सुदुययसमा ॥ ३९ ॥ कश्चिग्वचनांरुतर्हागाथे ॥ थुदभा
कडनपाह ॥ जोतियेचियाल्हानिहोय ॥ कान्नाभुन्हा ॥ ४० ॥ नोमावदनयातेकाप्रमग ॥ नयिअन्यजकीआह्यगा ॥ कांदनिग
रेवप्राण ॥ हेचिजाणे ॥ ४१ ॥ कीमहावनीपाणिये ॥ इयदेकन्दर्धपाय ॥ नलमनिन्यावपानाहा ॥ शेटुजेभा ॥ ४२ ॥ नेसअ-
जानप्रमादादिकी ॥ कांप्राक्तनीहंसदोरी ॥ निद्याव्याचासर्वविषी ॥ शिवकिन्ता ॥ ४३ ॥ वयोओगीकूआपुले ॥ देउंनयांमेले
विसरविजतीसले ॥ सलतीतिये ॥ ४४ ॥ अगापुदिन्हाचेदोष ॥ कुरनिआपुदिनेमिचिजोग ॥ यगभागेअनन्योक्त ॥ नगाभरी ४५
पाठ ॥ ओ २७ नारांणे ओ ३३ जवि ओ ३८ निवान ओ ४२ माहर्गिगा ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

जैसा पुज्जनि देवपाहिजे ॥ परुनि बोता जाइ ज ॥ तो धूमि मसादय इजे ॥ अतिथिचा ॥ ५८ ॥ मंसे आगुने भिगुणे ॥ पुढिलाचे उणे ॥
 फेडनि या पाहणे ॥ तया कडे ॥ ५९ ॥ बाहुनि निविधि जेवसो ॥ नातुडा वजे अस्मर्मा ॥ नखादु विजेता सी ॥ सदोषी निहो ॥ ५९ ॥
 वरि कोण लेंवु उपाये ॥ पडिले तु उभे होये ॥ नेचि कीजे परि पाये ॥ नदावेवमा ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥
 दो ॥ हेवांचो निदी ॥ दोष नये ॥ ५९ ॥ अगा अरु न्याचे नसण ॥ अर्जुनादे फेड जाणा ॥ मोसा मोगीचि सरसासन ॥ सुख्य हेमा
 ॥ ५९ ॥ आतां दया तो सी ॥ पूर्णचि दुका जेसी ॥ निवविना न कडरी ॥ मानेधार ॥ ५९ ॥ तेसं दुखिताचे शिणणे ॥ हिरताम्र कण
 वपणे ॥ उत्तमाय मनेणे ॥ विवंचुगा ॥ ५९ ॥ पैजगी जावना सांगिवे ॥ वस्तु अग वरी परवे ॥ परि जाते जीवित राखे ॥ लुणा
 चेही ॥ ५९ ॥ तेसं पुढिले चिनेणे ॥ कक नका लीये हये ॥ सर्वस्व सिदि पल आपणें ॥ तद्दिशे डेंचि गमे ॥ ५९ ॥ निम्न सर-
 लिया उणे ॥ पाणिदळे चिनेणे ॥ ते विद्याती तां विनिजाणे ॥ साबोरपा ॥ ५९ ॥ येयायी का दाने हटे ॥ तव व्यथा जीवी उमरे ॥ ते
 सापेके सकटे ॥ पुढिले चिने ॥ ५९ ॥ कापा बोशी तळतां हाहे ॥ तितो कया चि न्यागी होये ॥ तसा परस्मरे जाये ॥ स्मरवाव तेजो
 ५९ ॥ विबुहना लपितालागी ॥ पाणि आराधिले असे जरी ॥ तेसं दुखिताचे सेल भागी ॥ जिणे जयाचे ॥ ५९ ॥ तो पुरुष वीर राया
 मूर्ति भूत जाण दया ॥ मोउदय जता चितया ॥ कृणिया लास ॥ ५९ ॥ आतां सूर्यासि जीवे ॥ अनुसरलिया राजिवे ॥ परितो न-
 शिवे ॥ सोरभ्य जेसे ॥ ५९ ॥ कावस ताचिया वाहाणी ॥ आलिया वन आल्या असा हिणी ॥ तेन गरीति चिये पां ॥ निगाला तो ५९
 हे असो महा सिद्धि मि ॥ लक्ष्मी ही आलिया पाशी ॥ परि महा विष्णु जेसी ॥ नगणि चिते ॥ ५९ ॥ तेसं ऐहिकींचे कां स्वर्गीचे ॥ मो
 गपादक जालिया दळेचे ॥ परि भागावे हें न रुचे ॥ मनास जी ॥ ५९ ॥ बहु वेकाय कोतुकी ॥ जीव नो हे विषया मि लखी ॥ अलो
 पाठ ॥ ओ ५९ ५९ सुमुख हे ॥ ओ ५९ ५९ विणे ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥

लुल्लदशागुकी ॥ जाणनेहे ॥ ६७ ॥ आतां माशियां जे सें मोहूक ॥ जळवरा जे विजक ॥ कां पक्षियां अंनराक ॥ मोककेंहे ॥ ६८ ॥
 नातरी बाळ कोटुशें ॥ माते नें स्नेह जे सें ॥ कावसनी चास्परी ॥ मउमलया निल ॥ ६९ ॥ जेकयां प्रियाची पेदी ॥ कांपिलियाकू
 मीची दिदी ॥ ते सोपूत माजी राहंदी ॥ मवाकते ॥ ७० ॥ स्वर्गा अति मूड ॥ सुर्वी येनां सुस्वादु ॥ आणासि सुगंध ॥ उज्जक
 आगे ॥ ७१ ॥ तो आवडते न वाधते ॥ मलत्या विरुद्ध जरी न हाता ॥ तनी उभयेना ॥ कापूर की ॥ ७२ ॥ परिमहा मूत पोटी वा
 हे ॥ तेवीं चिपरमाणु भाजि साधे ॥ या विषवा सुमार होय ॥ वरान जे सें ॥ ७३ ॥ काय सांगे सें जेणें ॥ जेजगाचि न जीवे-
 प्राणें ॥ तयानाच हणें ॥ मार्दव सी ॥ ७४ ॥ आनां पराजयेराजा ॥ जेसा फुटि जेलाजा ॥ कामानिया निस्तेजा ॥ निष्ठुरास्तव
 ७५ ॥ नानाचाडक मंदिराशी ॥ अवतरे अलि यास न्यासी ॥ यश लाज होय जे सी ॥ ७६ ॥ क्षत्रियां रणी पळोनि
 जाणें ॥ तें कोण साहेलाजीर वाणें ॥ कांवेयव्ये याचरणें ॥ महाभतीयेने ॥ ७७ ॥ रुपसा उदयल कुछ ॥ संपाविना कुटीचे बोद
 तयालाजा प्राण सुकट ॥ होय जे सें ॥ ७८ ॥ तें सें ओट हात पणें ॥ जें ग्राव होरुनि जे सें ॥ एणजे उपजो मरणें ॥ नावानावा ॥ ७९
 तियेगार्म भेद सु सें ॥ रक्तसूत्र सें ॥ वीनि वही उनि भस्मे ॥ तें लाजो रवाणें ॥ ८० ॥ हेव हू भस्मो देह पणें ॥ नामरूपासियेणें
 नाहोलाजीर वाणें ॥ नयाहू नि ॥ ८१ ॥ ऐसै सिया अवक्रा ॥ येव प्रणिजातु क्रूरका ॥ तेलार्जे निमैका ॥ निस्सगामोद ८२
 आतां मूत्रत वृत्तुदिया ॥ चेष्टा चि ताके सायवडिया ॥ तें सिद्धांत मंद ॥ ८३ ॥ कां पावळ प्लियादि न
 कर ॥ मरीरिणाचा प्रसर ॥ तें सामने जे ये प्रचार ॥ बुद्धी द्रिया ॥ ८४ ॥ चमन नवनियमे ॥ होनी दाही दिंये अप्समे
 तें अचापल्य वर्मे ॥ येणें होये ॥ ८५ ॥ श्लो ० ॥ तेजः क्षमाशुनिः शान्तम ॥ होनाति भाविता ॥ संवत्सपदं देवो मभिजात
 पाठ, ओ. ७३ पाठ, ओ. ८१ याही ०

स्यभारत॥१॥टी॥॥आताइश्वरभारतलगी॥प्रवर्तताज्ञानयोगी॥धिवसेयाचा आंगी॥उणिंवतक्क॥॥॥॥नोपनंदसंगणोसे
 तेहीआलेअधिप्रवेशी॥परीप्रणेश्वरसेहेशी॥नगणचिसती॥८७॥तेमेंआत्यनाथांचियाआधी॥आउनीवषगविषार्चिवांधी॥धां
 वोआवडेपाणधी॥धुल्यचिये॥८८॥ननाकेनिषधआड॥नपडेविधीचीसीड॥नुरजाचकाड॥महा॥मद्वचि॥८९॥ऐसेइंध
 राकडेनिज॥धावेआपसयासहज॥तयांनावतेज॥अध्यासिकते॥९०॥आतासर्वहीमाहानियागिरिमा॥गर्वनयेतेकि-
 स्समा॥जैसेदेहवाहोगिरिमा॥बाहणेनेणे॥९१॥आणिमातलियांदियांचेवेग॥कांमार्चिनिरवकनुरोग॥अथवायोगवि-
 योग॥प्रियाप्रियांचि॥९२॥ययाआद्यवियाचाचिथोर॥एकेवेकेआलियापूर॥तरीअगस्त्यकांथरुनधीर॥उमातोके ९३
 आकाशीधूमाचीरेरवा॥उठिलीबहुवाआगकिंका॥तेगिळियेकीझकुका॥वाराजवी॥९४॥तेसेअग्निप्रतापिदवा॥अ
 ध्यात्मादिउपदवा॥पातलेयापादवा॥गिळुनिघाली॥९५॥ऐसेचिचिसोमाचाअवसरी॥उचलुनिघया॥नचागांवकरी॥दु
 तीह्यपिपेअवधारी॥तियेतंगा॥९६॥आतांनिर्वाकूनिजनक॥मरिलारांगेपेयूचे॥नयाकलशाचियासा॥रिखे॥शोचिअ-
 से॥९७॥जेंआंगीनिष्काफअचार॥जिवीदिवेकसात्तार॥तागवाद्यधडलाआकार॥शुचिताचाचि॥९८॥कांफेडीतपा
 पताप॥पोरवीततरीचिपादप॥समुद्राजयआप॥गगेचेंजेसे॥९९॥कांजरांचेआद्येफेडित॥अियेचीगराडुंउयडित॥नि
 येजेसाभास्वत॥मदूक्षिणे॥१००॥तेसोबाधलोसोडित॥बुडालिकारिता॥साकडोंफेडित॥आर्ताचिया॥१०१॥किंवहुना-
 दिवसरती॥उठिलानिसरवहउज्जति॥आणितआणितान्स्वार्थी॥प्रवेशिजे॥१०२॥वांचूनिअपुलियाकाजलगी॥प्राणिजा
 ताचाअहितभागी॥संकल्याचीहीआडवेगी॥नवरणेजे॥१०३॥पेअइहलेशियागोष्टी॥एकसीजियाकिरती॥तेसांनी
 पाव॥ओ॥८६॥केशिच॥ओ॥९३॥मार्चनी॥ओ॥९५॥यस्मिनि॥ओ॥९६॥चे॥ओ॥२००॥अधकार॥७॥

ततोहेदिदी ॥ पाहोयेतेसें ॥ ४ ॥ आणिंगांशं प्रचमाथां ॥ पावोनिसेकोचलीजेविपाथां ॥ नोधिमान्यपणेंसर्वथा ॥ लाजणजे ॥ ५ ॥ तेंहे
 पुढतपुढती ॥ अमानिलजाणसुमती ॥ मागांसागीतलेसेकिती ॥ तेचित्तेंबोली ॥ ६ ॥ एवइहीसंधिसें ॥ ब्रह्मसंपदोहवसतअसे ॥
 मोसचक्रवर्तिचेंजेसें ॥ अग्राहारहोये ॥ ७ ॥ मानाहेसंपत्तीदेवी ॥ यागुणतीर्थाचिभित्यनवी ॥ निवोगसगराचिदेवी ॥ गंगाचि-
 आली ॥ ८ ॥ किंशुकुसुमाचिसाका ॥ हेयेडनिमुक्तिबाका ॥ वैरायविरेपेदेगदां ॥ गिवसीतअसे ॥ ९ ॥ वीं संधिसगुणज्योती
 इहीउज्ज्वलिआरती ॥ गीताआत्मयाभिजपती ॥ नौराजनाआली ॥ १० ॥ उगकिंतेनिमळे ॥ गुणेंयेचिमुक्ताफळे ॥ देवीशक्तिके
 शीतार्णवीची ॥ ११ ॥ कायबहुवाचेंऐसां ॥ अभिव्यक्तयेअपैसी ॥ केलेदेतीगुणराशि ॥ संपत्तिरूप ॥ १२ ॥ आतादुःखाचीआतु
 वदवेली ॥ दोषकाद्याचीजरीपरली ॥ तद्दिनिआभिधानिभियाली ॥ आसुरीनि ॥ १३ ॥ पैत्याज्यत्यजावद्यानागी ॥ जाणावीजही
 असुपयोगी ॥ एकातेचांगी ॥ श्रोत्रशक्ति ॥ १४ ॥ तरीनरकव्यथाथोरी ॥ आणावयादेवींअयोगीं ॥ मेळकेनातेआसुरी ॥ संप-
 नीहे ॥ १५ ॥ नानाविषयवर्गएकवद ॥ तयानावेंजेसाबासद ॥ आसुरांसंपत्तीहासेहें ॥ दोषांचतेसा ॥ १६ ॥ म्हेदेमोदयोमि
 मानश्चकोपः पारुष्यमेवच ॥ अज्ञानचाभिज्ञानसगर्थसंपदमासुरीं ॥ १७ ॥ तरीतयाचिआसुरा ॥ दोषांसाज्जिजयावीरा
 बाडपणाचागारा ॥ तोदंमोसा ॥ १८ ॥ जेमीआपुर्लाजननी ॥ नयदाभिअयोजनीं ॥ तेंतीअचिपगितनी ॥ कारणहोये ॥ १८ ॥ कोवि
 दाधुरूपदिश ॥ बोभादलिआचेहटा ॥ तारइष्टदुश्चिमिअमिश ॥ हेतुहोती ॥ १९ ॥ पैआंगेंबुद्धामहापुंगीं ॥ जेवेगेंकाहीपेड
 नीती ॥ तेंनांविबांधिलियांशिरीं ॥ बुडवेंजेसां ॥ २० ॥ कारणजेजिघिता ॥ तेंनाभिनेंजगिसेविता ॥ तीरअनचिपडुसुता ॥ होय-
 विष ॥ २१ ॥ तेसादृशासचासरवा ॥ धर्मज्ञानतोपोहाजिदेरवा ॥ तिरतिरिनालोचिदोषां ॥ नागीहोये ॥ २२ ॥ ह्युणेंनिवाचेचा
 पाठ ॥ ओ. ५ संकोच ॥ ओ. ८ निर्वाण ॥ ओ. १६ विष ॥ ओ. १६ रंगद.

चोबारा ॥ यान्तिलयाधर्माचापसारा ॥ धर्मचिंतोअधर्महोयवीरा ॥ तोदंस जाणें ॥ १३ ॥ आतांमूर्खान्चियोजिसे ॥ अस्सगत्ताआंबुंरवाप्र-
 आपितोब्रह्मसंभे ॥ नरसैजैसा ॥ १४ ॥ कांमाहुरतोकाचायोडा ॥ गजपतीहीमानीयोडा ॥ कांकांरियेवरिल्यासरडा ॥ स्वर्गहीनीन
 १५ तृणाचेपिंधने ॥ आगियावेगने ॥ थिसुरबळमीने ॥ नगाणिजोस धूतय्या ॥ १६ ॥ आतांमूर्खान्चियोजिसे ॥ अस्सगत्ताआंबुंरवाप्र-
 एकेदिवसींचेनिपराळे ॥ अल्पव्रजैसा ॥ १७ ॥ अत्रछायेचियाजोटी ॥ निदेवयरमोटी ॥ मृगाबुंदेखानिफोटी ॥ पाणिथाडेमूर्ख
 किबहुनोसैसे ॥ उत्तपेंजेंसंपत्तिमिसे ॥ तादपंगाअनारिसे ॥ नबोलयेई ॥ १८ ॥ आपणजगावेदीविश्वास ॥ आणिविश्वासोपूज्य
 ईश ॥ जगोएकतेजस ॥ सूर्यजैसा ॥ १९ ॥ जगस्पृहेआस्पद ॥ एकसावेभोमपद ॥ नमरणेनिर्विवाद ॥ जगापट्टये ॥ २० ॥ ह्यणीन-
 जरीउत्समाहे ॥ पातेंवानुजाये ॥ किंतेआइकोनिमल्सस्वोहे ॥ फुगोलोमै ॥ २१ ॥ ह्यणीन-
 वामाजीत्राये ॥ प्रगीतअसे ॥ २२ ॥ पतंगानावडज्योती ॥ रवयोताभासुचीरवंती ॥ टिटिमैनेअपांती ॥ वेरीकेला ॥ २३ ॥ तेसां
 भिमानीचेनिमोहें ॥ ईश्वराचेंहीनामनसाहे ॥ बापातेंह्मणेमजहे ॥ सवतीजालो ॥ २४ ॥ ऐसोमान्यतेचापुष्टगंड ॥ तोअभिमानीप
 रमसंड ॥ सैरवींचारुद ॥ मार्गचिपें ॥ २५ ॥ आपणपुढिलांचेंसख ॥ देखणियांचेंहोयोभिष ॥ चंदेक्रोधाग्रोचेंविरष ॥ मनोवृत्ती
 २६ शीतकाचियेभेटी ॥ तातलातेलींआगीउठी ॥ चंददेखोभिजंकेपोटी ॥ काल्हाजैसा ॥ २७ ॥ विश्वाचेंआयुथजेंउजळे ॥
 तोसूर्यउदलादेखोविसवळे ॥ पाणियांफुदतीडांके ॥ दुडुकांचे ॥ २८ ॥ जगाचीकरवपांहांद ॥ चौरांमरणाहुनिन ह्मण ॥ दुधाचें
 काकफुद ॥ होयव्याकीं ॥ २९ ॥ आगधेंसुदुजंके ॥ आशिताअधिकेजळे ॥ वडवाशीनमिके ॥ शांतीकहो ॥ ३० ॥ तेसांविद्या
 विनोदीवभेप ॥ देखेपुढीलांचीदेंब ॥ तवतवरोपदुणावे ॥ कोपनोजाण ॥ ३१ ॥ आपणमनसपांचीफुटी ॥ लाकेनाराचंचिसुदी
 पाद ॥ ओ ॥ ३२ ॥ बंद ॥ ओ ॥ ३३ ॥ आहिलानीं ॥ ओ ॥ ३४ ॥ ऐसेसा ॥ ओ ॥ ३५ ॥ अहमानाचे ॥ ओ ॥ ३६ ॥ ऐसेसा ॥ ओ ॥ ३७ ॥ होइनी ॥ कोपाचें ॥ ओ ॥ ३८ ॥

बोलणें ते वही ॥ दुर्गळाची ॥ ४२ ॥ येरजें क्रियाजान ॥ तें निरवयाचें क्वत ॥ ऐसें सबात्य स्वसाक्षित ॥ अयाचें गा ॥ ४४ ॥ तो मनुष्यांत अध-
 मजाण ॥ पास्त्याचें अवतरण ॥ आतां आइ करगुण ॥ अजानाची ॥ ४५ ॥ तरीशी तोषास्पर्शा ॥ निवाडनेणे पाषाणें जिंसा ॥ कांरात्री
 अणिदिवसा ॥ जात्यांच तो ॥ ४६ ॥ आगिउठिला आरोगणें ॥ जें सारवाद्या रवाच नक्षणें ॥ कांणिरसाडनेणे ॥ सोनयालोहा ॥ ४७
 नातर ते नानारसो ॥ शिंया निदवी जें सी ॥ परिरस स्वादासी ॥ नेणे जेवीं ॥ ४८ ॥ कावागजें सापार रवी ॥ नक्षेचि गा माग मागो वरवीं
 तें सें कृत्या ह्यत्य विवेकी ॥ अंधपणजें ॥ ४९ ॥ हें चोरव हें मैक ॥ ऐसें नेणे निचां बाळ ॥ देणें तें केवळ ॥ मुरवीं चियादी ॥ ५० ॥ तें सें पा-
 पपुण्याचें शिवचें ॥ करां निरवातां बुद्धिचें छे ॥ कडु मधुर नवाटे ॥ ऐमां जे दशा ॥ ५१ ॥ नियोनाम अज्ञान ॥ यावां नानाहीं आन ॥ ए-
 वें साही दोषांचें चिह्न ॥ सांगी तले ॥ ५२ ॥ इहिच साही दोषांगी ॥ हे भ्रासरी संपत्ती दादुंगी ॥ जें सथोर विषय सभने अंगी ॥ अंग-
 सानें ॥ ५३ ॥ कांति यावळीचा पंति ॥ पादतां थोडे वायगमती ॥ परि विषवही प्राणा हुती ॥ करुं न पुरे ॥ ५४ ॥ धातयाही गेलि याशर-
 ण ॥ त्रिदोषीं नचुं कर्मण ॥ तया तिहींची हे दुणी जाण ॥ साही दोष हे ॥ ५५ ॥ इहीं साही दोषां संपूर्णी ॥ जालीं दयेची उभारणी
 ह्युपो भि आसरी उणी ॥ संपदा नक्षे ॥ ५६ ॥ परि क्रूर ग्रहांची जें सी ॥ सादीं मिके एके चिराशी ॥ कांयेती निंदका पासी ॥ अशेष पा-
 पे ॥ ५७ ॥ मरणा रत्याचें आग ॥ पांड्यानि आवयेचि चिराग ॥ कां कुमुहर्तु दुर्योग ॥ एक ततती ॥ ५८ ॥ विश्वात्मना आनंद वीजेचो-
 रा ॥ शिणलास इज महापुरा ॥ तें सें दोषी इही नरा ॥ अभिष्ट कां जे ॥ ५९ ॥ कां आग्र्य जाति यवळ ॥ शोळिये सात वे उकि मिके ॥ ते
 सें साही दोष सगळे ॥ जेडती तथा ॥ ६० ॥ मोक्ष मार्गां कडे ॥ जें याचा आबुखा पडे ॥ तें न निपे ह्युणें निबुडे ॥ संसारां जो ॥ ६१ ॥ अ-
 धर्मापोनींचा पाउदी ॥ उतरत जो किरीदी ॥ स्यावरां हीं तळवटी ॥ बेमणें ये ॥ ६२ ॥ हें भ्रमोनयान्तायां ॥ भिळो नि साही दोषीं
 पाद, नाही ॥ ६३ ॥

हीं॥ आसुरीसंपत्तीपाहो॥ वाढवोजे॥ ६३॥ ऐसियायातवो॥ संपत्तीर्त्ताभद्राजणी॥ सोर्गोर्त्तावर्त्ता॥ देवमावो॥ ६४॥ भ्रूजो
 देवीसंपद्भिर्मोक्षायनिवधायामुद्रकता॥ मायत्तः संपददरोमयिमाताभिगयतव॥ ७॥ शोभा॥ उद्योतनीमातापद्भिः॥ दे-
 वीजोत्पत्तीतली॥ तैमोक्षस्तूपपाहिलो॥ उरयचिजाण॥ ६५॥ येरज्जदसरी॥ संपत्तीर्त्ताभद्राजणी॥ तभाहन्नाहाचसरी॥ सो
 र्वबिजीवा॥ ६६॥ परिहृआइकानिजणे॥ प्रययेसीहोसंसे॥ कायगर्भचिभिये॥ थाकयरीजे॥ ६७॥ हआसुरीसंपत्तीतया॥
 बयालागीधनजया॥ जोसाहीदोषाययो॥ आद्यरुहाय॥ ६८॥ तंनवपादया॥ सोर्गोर्त्तावर्त्ता॥ गुणनिधिवरवा॥ ज्यननरी
 ६९ ह्यणोनिपाथावुंया॥ देवोसंपत्तीस्वाभिया॥ हाउभियावउवाया॥ केवन्याचिया॥ ७०॥ भ्रूजो॥ होमूगमगोलाहोस्मिन्देव
 आसुरएवच॥ देवोविस्तरशः प्रोक्त आसुरपाथयेथणु॥ ६॥ दोक्ता॥ आणित्तो आसुरो॥ सपत्तिवतो नरो॥ अनादिसिद्ध
 उजरा॥ राहादोचाआहु॥ ७१॥ जैसंरात्रीचाअवसर॥ व्यापारिजनिशाचरी॥ दिवसासकव्यवहारो॥ मनुष्यादिक॥ ७२॥ तैसि
 याआपलालियाराहादो॥ वर्तनीदोवीसुदो॥ देवोआणिगिरीदो॥ आसुरोयेये॥ ७३॥ तैवीचिविस्तारुगिदैवी॥ ज्ञानकथना
 दिमस्तवी॥ मागीलुगथीवरवी॥ सोर्गोर्त्ता॥ ७४॥ आंतोआसुरजिस्तुदो॥ तैथिचिउपलुंगोदो॥ अयथानाचदिदो॥ देपांने
 की॥ ७५॥ तरीवाद्योणनाद॥ नेदिकवणाहिसाद॥ कोअपुथीमकरद॥ नलप्रजेसा॥ ७६॥ तैसीप्रदुतीहआसुर॥ एकलनो
 हेगोचर॥ जंवरकाथेयरीर॥ माल्हायिना॥ ७७॥ मगअविकरलाकुं॥ पाववजेसाजोड॥ तैसीआणिदेहीसापडे॥ आदो
 पसीह॥ ७८॥ तैवीजिवादिउसा॥ तैचिआंनुसारसा॥ देहाकारहोयेनेसा॥ प्राणियाचा॥ ७९॥ आनांतयचिमाणियो॥ रूपक
 रंरनजया॥ घदलजेआसुरीया॥ दोषवृद्धो॥ ८०॥ भ्रूजो॥ प्रवृत्तिचिनिवृत्तिजनानाविदुरासुराः॥ नशीचंनपिचानारान
 पाठ॥ ओ॥ ६६ लोप्रमोहाची॥ ओ॥ ७४ किल्लारे॥ ओ॥ ७६

सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥ टी ॥ तरि पुण्यालार्गं प्रवृत्ति ॥ कां पापविषं भिद्यती ॥ या जायते या चरती ॥ नया चैव मन ॥ ८ ॥ निगुणेषु
 आधिप्रवेशा ॥ चित्तनदीत आवेशा ॥ कोशकीटजैसा ॥ जाचि नल्लोपे ॥ ८ ॥ कां दिधले सायुती येइल ॥ कां नये हे सुदोल ॥ न पाहाता
 देमांडवल ॥ मूर्खचोरा ॥ ८ ॥ तैसिया प्रवृत्ति निवृत्ति दोनी ॥ नेणी जती आरुरी जनी ॥ आणिशोचते स्वमी ॥ देवनी माने ॥ ८ ॥
 कां किमा सांडील कोळसा ॥ वरिचोखो होईल वायसा ॥ राक्षस होमासा ॥ विदोशे के ॥ ८ ॥ परि आसुरा माणिया ॥ शौच नही प
 नेजया ॥ पवित्र लजे विमोडिया ॥ मद्याचिया ॥ ८ ॥ वादविना विधीची आशा ॥ कां पाहाना निलं चिवास ॥ आचाराची भाष
 नेणोचि तो ॥ ८ ॥ जे संचरणे शोकि येचें ॥ कां धावण वारियाचे ॥ जाळणे अभिच ॥ सत्य ते उते ॥ ८ ॥ तैसै पुढासु निस्वर ॥ आव
 रतीने गा अस्तर ॥ सत्ये भिकारी वेर ॥ सदाचितयां ॥ ८ ॥ जरी नांगिया आपुनिया ॥ विचूकरी गुदगुलिया ॥ तरी साचा बोलिया
 बोलती ते ॥ ८ ॥ अपानाचे नितीडे ॥ जरि सगंधा येणे घेइ ॥ तस्मिन् यंत्रा जाडे ॥ आभंगीने ॥ ८ ॥ ते सेंत न करिता काही ॥ आ
 मेचि बोखवटे पाही ॥ आतो बोलती ते न वाई ॥ सांगिजे ल ॥ ८ ॥ यद्दगी करया चावरीचांग ॥ तेंतया भिकेचे नीत आग ॥ तैसा अ
 करीचा प्रसंग ॥ मसंगपरिस ॥ ८ ॥ उपवर्णिजे जे विनीत ॥ उगळी पुवाच उमड ॥ हं जणिजे तो ये उघड ॥ साधो ते बोल ॥ ८ ॥ भु
 असत्य मज्जिते जगदाहुरी स्वर ॥ अपरस्पर संसृति स्मय न्काम हेतुक ॥ ८ ॥ टी ॥ तरि विष्णु हा अनारिहावो ॥ येथ नि
 यताई चरयावो ॥ चावडिये न्यावो अन्यावो ॥ निवडी वेद ॥ ८ ॥ वेदां अभ्यागता ॥ जे निष्ठावादी ॥ साध्यायोगी ॥ सरवाड ॥ स्त
 र्गोजिये ॥ ८ ॥ ऐसी हे विन्ध्य बवस्था ॥ अनादि जे पाश ॥ इयते द्वापती वृथा ॥ अवयोचि हे ॥ ८ ॥ यज्ञ मुदठि कन्यायोगी ॥ देव पि
 से प्रानि मालिगी ॥ नाग वल्लभ गवयौगी ॥ समाधि स्थले ॥ ८ ॥ येथ आपने निबळें ॥ मोगिजे जे जे वेदाळे ॥ हे वांचे निवेगळे ॥ पुण्य
 पाठ ॥ ओ ८४ कृत्तिल ॥ ओ ९४ धुमाचे ॥

आहे ९९ नां अग्रक्रमेणें आंगिकें ॥ वेगळे वेगळीं नदरे ॥ ऐसा गादि जवणा विषय स्वये ॥ तैचि पाप ॥ ३० ॥ प्राण येतों संपन्नांचे ॥ ते-
पापजरी साचे ॥ तरी सर्व स्वयेतयांचे ॥ हे पुण्य परळकीं ॥ १ वळा अबळा नेरवाये ॥ दोन्वि बाधित जरी होये ॥ तरी सांस यां कां न होयें ॥
निसंतान ॥ २ आणि कुठेशी धूनि दोन्ही ॥ कुमारे चि अमल म्री ॥ मेळवी जती मजा साधनी ॥ हे तु जगा ॥ ३ ॥ नरा पशु प्रस्मां द जाती
जयी भिति नाही संतती ॥ तया कोणे मति पर्त्ता ॥ विवाह वंद ॥ ४ ॥ चोरियें वंधन आज्ञें ॥ न रते का पाणि मिषि पजाळे ॥ वालभ्रं परदार
केले ॥ कोढा कोणी होये ॥ ५ ॥ ह्मणो निदवं सा ॥ नाथ जी पस भागवी ॥ आणि परत्राचा गार्वी ॥ करी तो भोगी ॥ ६ ॥ परि पर
त्रा देवो ॥ न दिसे ह्मणो निते वावो ॥ आंगिकर्तो निस माटावो ॥ मोण्या सिक्कवण ॥ ७ ॥ येथ उगी स्या इंदु सुरती ॥ जे साकां स्वर्ग-
लोकीं ॥ ते साचि ह्मि ही न रफी ॥ लोळत आय्य ॥ ८ ॥ ह्मणो निन रुस्वर्ग ॥ नक्षे पाप पुण्य भाग ॥ जेतो हां तायां स्मरु भोग ॥
क्रामाचि चित्तो ॥ ९ ॥ या कारणे कामें ॥ स्त्री पुरुष युग्म ॥ मिळती ते थज्जम् ॥ आद्य वै जग ॥ १० ॥ आणि जें अभिम्याचें ॥ स्वायाला
गी हें पोवे ॥ पाठि परस्परें द्वेष ॥ क्रमचि नाशी ॥ ११ ॥ वै कामा वांचुनि कांहीं ॥ जगा मूर्खचि आननाहीं ॥ ऐसे बोलती पाहीं ॥ आसु
रगाते ॥ १२ ॥ आतां असो हें किडाळ ॥ बोलीन कुरू पयळ ॥ सांगातां चिस फोड ॥ होतां से वाचा ॥ १३ ॥ एतां हरि मवरूप्य
न झाल्या नो ल्य बुद्धयः ॥ मभवत्युग्र क्रमणाः क्षयाय जगतो हिनाः ॥ १४ ॥ टी ॥ आणि ईश्वराचि यारवर्तना ॥ सुसंधियाचि करीती न
चांथी ॥ हे ही नाहीं चित्तीं ॥ निश्चयरक ॥ १४ ॥ किंबहुना उपड ॥ आंगोलाउनियां पोखाड ॥ नास्ति कृपणांचे हाड ॥ गोविले जीवीं १५
ते वेळीं स्वगालागी आदर ॥ कानरकाचा अडदर ॥ आवासनांच अंकुर ॥ जळोन गेला ॥ १६ ॥ मग केवळ येदे हर वोडो ॥ अमे त्याद
काचा बुडुडा ॥ विपय की सुहादा ॥ बुडाले गा ॥ १७ ॥ जें आटावे होत जळचर ॥ तें डोहीं भळती दीवर ॥ कांपडावें हो ये शरीर ॥

पाठ - ओ. १९, सक्रीयो, ७.

तैसैंगउदय ॥ १८॥ उदयजणेकतुक्जैसं ॥ विन्हाओनिरेहो ॥ जन्मतीतैतसे ॥ लाकांआहुं ॥ १९॥ विरूहलियांअशम ॥ फुटतीतै
 केकेंम ॥ पापाचेकीर्तिसंम ॥ न्वासनेन ॥ २०॥ आणिसागांपुढांजाकणें ॥ वांचूनिआगीकांहीनेणें ॥ तैसेंविरूहचिह्नकरणें ॥ म
 लुंबयां ॥ २१॥ परितेंचिगाकरणें ॥ आदिरतोसंभवेजें ॥ तोआहकपर्याहणे ॥ श्रीनिवास ॥ २२॥ स्तो० काममाअित्यदुःश
 रद्रूपमानमदान्विताः ॥ मोहाहूहीत्वासत्त्याहारप्रवर्तनेशचित्रताः ॥ १०॥ टी० तरिजाळणियेंनमरे ॥ आगीइंधनन
 रे ॥ तयांदुर्मराचियेधुरे ॥ मुक्ताळजे ॥ २३॥ तयाकामाचावोलावा ॥ जीवांधरुनिपांडवा ॥ दंभमानाचमेळावा ॥ मेळवीतो
 ॥ २४॥ मातलियांकुंजरा ॥ आगळीजालीशदिरा ॥ तैसामदाचातावातवजरा ॥ चढतांआगीं ॥ २५॥ आणिआग्रहातेचिवा
 वो ॥ वरिमोदयाऐसासादावो ॥ मगकायवानुनिर्वाहो ॥ निश्वयत्वा ॥ २६॥ जिहींपरोपतापपडे ॥ पगवाजीबुरगडे ॥ तिहींक
 मोहीअचिगाटे ॥ जन्मवृत्ती ॥ २७॥ मगआपुल्लेकेंलोकागिती ॥ आणिजगतेधिःकारिती ॥ दाहीदिशींपसरिती ॥ स्वरहाजा
 क ॥ २८॥ ऐसेंमिगायादोपें ॥ थोरियेआणिनीपापें ॥ धर्मधेनुवरुपें ॥ सुटलेंजैसं ॥ २९॥ स्तो० चिंतामपरिमेयांचमल
 यांतासुणअिताः ॥ कामोपमोगपरमाएनावर्दितनिश्विताः ॥ ११॥ टी० अचियेकाआयती ॥ तयाचियांकर्ममवृत्तौ ॥ आणि
 जिणियाहिपरैती ॥ वाहतीचिंता ॥ ३०॥ पाताळ्याहूनिनिम्स ॥ जियेजेंचियेसानेगन ॥ जेपाहांतांभिसुवन ॥ आणुहीनोहे
 ॥ ३१॥ तेयोगेंपदवीमवणी ॥ जीविंअनियमचितवणी ॥ जैसाइनेणेमरणी ॥ वल्लभाजैसीं ॥ ३२॥ तैसींचिंताअपार ॥ वाद
 विनीनरतरा ॥ जीवींस्त्रिअसार ॥ विषयादिक् ॥ ३३॥ स्त्रियागीइलेंआदकावें ॥ स्त्रीरूपडोळादेखावें ॥ सर्वेदियेंआलि
 गावें ॥ स्त्रियेतेंचि ॥ ३४॥ कुरबंडीकीजेअमृतें ॥ ऐसंसुखस्त्रियेपरोतें ॥ गहींचिहाणोंभिवितें ॥ निश्वयकेला ॥ ३५॥ मग
 पाठ ओ० १९ अनिवाचादोष ॥ ओ० ३० वृत्ति ॥ ओ० ३१ होउनि ओ० ३२ सोग ॥ ओ० ३४ आश्लेषावें ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

तयश्चिच्छ्रीभोगा ॥ लागीं पाताळ स्वर्गा ॥ धांवती दिग्विभागा ॥ पर्यंतही ॥ १६ ॥ श्लो० आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः
 ईहते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ टी० आमीषकवळुथोरीआशा ॥ नमिचारितांगिळीमासा ॥ तेंसें कीजे विवयां-
 शा ॥ तयाभिगा ॥ १७ ॥ वांळीतंतवनपवती ॥ मगफोरडियेचि आशेची संनती ॥ वाटउवाटउं होती ॥ कोशक्रिडे ॥ १८ ॥ आ-
 णिपसरिला अभिलाष ॥ अहूर्णहोयेतोचि देष्ट ॥ एंव कामक्रोधाहूनि अधिक ॥ पुरुषार्थनाहीं ॥ १९ ॥ दिवसां बोलणें शस्त्री-
 जागोवा ॥ ठाणातारियां जें सापाडवा ॥ अहोरात्रिही विसावा ॥ सेतुचिना ॥ २० ॥ तेंसें उबो निलो दिलें कामें ॥ निहटती क्रो-
 धाचि येदेंसें ॥ तरी रागहें पमेरें ॥ नमाती केंही ॥ २१ ॥ तें विंचि जीबीं चिया हांवा ॥ विषयवासनाचा मेळावा ॥ केला परीतो मो-
 गाचा ॥ अर्थे किंजा ॥ २२ ॥ ह्यणोनि भोगावयाजोगा ॥ पुरता अर्थे पेंगा ॥ आणावयाजगा ॥ झोंबती सैरा ॥ २३ ॥ एकांते सा-
 धुनि मारिती ॥ एकाचीं सर्व स्वहंरती ॥ एकालागीं उभारिती ॥ अपाययंत्रें ॥ २४ ॥ याशिकें पोतीं वागुरा ॥ सुणी ससाणेची का-
 दीरवोंचारा ॥ येऊनि निपती डोंगरा ॥ पारधीजेंसे ॥ २५ ॥ तें पोसावया पोद ॥ मारूनि माणियांचें संघाट ॥ आणितो ऐसे निह्मष्ट ॥
 तेही करिती ॥ २६ ॥ परमाणयें ॥ मेळवीती वितें ॥ मिळाल्यां वितें ॥ तोषणें केंसे ॥ २७ ॥ श्लो० इदमयमया लब्धमिमांसे
 मनोरथ ॥ इदमस्तीदमपि मेमस विद्यति पुनर्धनं ॥ १३ ॥ टी० ह्यणें आजिभियां ॥ सपती बहुते कां चिया ॥ आपुला हातीं केलिया
 धन्यनामि ॥ २८ ॥ ऐसां श्लाघों जव जांचे ॥ तें वमन आणी कही वाहे ॥ सवें चि ह्यणें पाहें ॥ आणिकांचेंही आणूं ॥ २९ ॥ हें जेतें असे
 जोडिलें ॥ तयाचे निमांडवले ॥ लाभायेई न उरलें ॥ वराचरहें ॥ ५० ॥ ऐसे निधनं विव्याचिया ॥ मोचि होई न स्वाभिया ॥ मगदि-
 वी पडेतया ॥ उरें नें दिं ॥ ५१ ॥ श्लो० असौमयाहतः शत्रुर्हनिष्ये चापरा नपि ॥ ईश्वरो ह्महं भोगी सिद्धो ह बलवान्भू रवी ॥ १४ ॥
 पाठः ओ० ४० दिहा, ओ० ४७ मिनयाचितें,

टी० हेमारेवश्येति॥ आणीकहासाथीनगाढ॥ मगनदेनपवाडे॥ येह्लाचिमी॥ ५२॥ मगमाझीहोतीकामारी॥ निवेवांनुनि
 येरमारी॥ किंबहुनाचरारी॥ ईश्वरतोमी॥ ५३॥ मीमोगझमीचारावो॥ आजिसर्वस्वरवासीवावो॥ ह्यणोनिद्रुहीवावो॥ मा-
 तीपाहुनि॥ ५४॥ मीमनेवाचादेह॥ करीतेंकैसेनोहे॥ केंमजवाचूनिआहे॥ आज्ञासिद्धआन॥ ५५॥ तंवचिबोळ्याकाळ॥ जे
 वनदिसेमीअतुबळ॥ सुखाचाकीरनिशिवळ॥ रासिबार्मीचि॥ ५६॥ श्लो० आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्ति सहशोमया
 यश्येदास्यामिमोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः॥ १०॥ टी० कुबेरआशिलाहोये॥ परीतोनेमोझीमोये॥ संपत्तीमजसमन
 के॥ श्रीनाथही॥ ५७॥ माझियाकुळाचाजळु॥ कांजातीगोताचामेळु॥ पाहातांजह्याहीहळु॥ उणाचिदिसे॥ ५८॥ ह्यणो
 भिमिरवितीनावें॥ वायाईश्वरादिआयवें॥ नाहीमजमीसरीपावे॥ ऐसेकाफी॥ ५९॥ आतालोपलाअभिचार॥ त्याचाकरीन
 मीजीणोंद्वार॥ प्रतिधीनपरमार॥ यागवारि॥ ६०॥ मातेंगातीवानिती॥ नटेनाचेरिझविती॥ तयादेदनमागती॥ तेतेवस्तु ६१
 माजिरअन्नपानी॥ प्रमदाचाआलिं गनी॥ मीहोईनीवसुवनी॥ आनंदाकार॥ ६२॥ कायबहुसांगोरेसे॥ तेआसुरीप्रकृति
 पिसे॥ तुरंवितीअसोसें॥ गगनीलेतये॥ ६३॥ श्लो० अनेकचित्तविभ्रान्तामाहजालसमावृताः॥ प्रसक्ताः कामभोगेषु
 पतंतिनरकशक्तौ॥ १६॥ टी० ज्वराचेनिआतोंपें॥ रोगीमलतेसेजल्ये॥ चावळतोसंकल्ये॥ आणतेंतैसे॥ ६४॥ अज्ञान-
 आतलेधुळी॥ ह्यणोंनिआशाबाहडुळी॥ मोवंडीजतीअंतराळी॥ मनोरथाचा॥ ६५॥ अनियमआपणदेमद॥ हांसमुद्रोमी
 अमंग॥ तैसेकामितिअनेग॥ अरवडकाम॥ ६६॥ मगपेंकामनाचितयां॥ जीवींजाल्यविलरिया॥ वोषपिलींकांदिया॥
 कमळेंजैसी॥ ६७॥ कांपाषाणाचियामायां॥ हांडीकूदलीपार्था॥ जीवितेंसेमरवथा॥ कुदकेजाले॥ ६८॥ तेह्नांचदतीयेरथणी॥
 पाठ॥ ओ० ६० तया॥ ओ० ६१ रजनी॥

तमाचीहोयंपुरवणी ॥ तेसामोहअतः करणी ॥ बोढोंचिलोणे ॥ ६९ ॥ आणिवोहेजंवजंवमोहो ॥ तंवतंवविषयीरोहो ॥ विषयते
थरावो ॥ यातकासि ॥ ३७० ॥ पापेंआपलेनिथावें ॥ जवकरितीमेळावे ॥ तंवजितांचिआयवे ॥ देतीवरना ॥ ७० ॥ हाणोंनिगा
सुमती ॥ याकुमनोरथापाळिती ॥ तेआसरयेतीवस्ती ॥ तयाठाया ॥ ७१ ॥ जेअथशीपयतकर ॥ रवदिरागाराकेंडोंगर ॥
तातलोतेलीसागर ॥ उतलतो ॥ ७२ ॥ जेथयातनांचीअणी ॥ हेनित्यनवीयमजाचणी ॥ पडतीतिथेदारुणी ॥ नरकलोकीं॥
ऐसेनरकाचिथेसेले ॥ सागीनंजेजेजन्मले ॥ तेहीदेखेंसुलले ॥ यजितयाणी ॥ ७३ ॥ येहवीयोगादीकक्रिया ॥ आहाण
तेचिधनजया ॥ परिविफळतीआचरोनिया ॥ नाटकीजेसे ॥ ७४ ॥ वसुधाचियाउजरिया ॥ आपणयापतिकुस्त्रिया ॥ जोडोनि
तोषितीजेसिया ॥ आहदपणें ॥ ७५ ॥ आत्मसंभावितास्तव्याधनमानमदान्निताः ॥ यजंतेनामयज्ञेस्तेदंभेनाविधिपूर्व-
कं ॥ ७६ ॥ दी० तेसैंआपण्यांआपण ॥ मानितांमहतपण ॥ फुगतीअसाधारण ॥ गर्वितेणें ॥ ७७ ॥ मगलवोंनेणतीकेंसे ॥ आ
दिवालोहाचेरवावजेसे ॥ काउधवलेआकाशें ॥ शिळाराशो ॥ ७८ ॥ तेसेआपुलियेवरवे ॥ आपणोचिरझतांजीवें ॥ तणाहीहू
निआयवे ॥ मानितीनीच ॥ ७९ ॥ वरिधनाचियासादिरा ॥ माजूनिधनुर्धरा ॥ कृत्याकृत्यविचारें ॥ सवतेकेंले ॥ ८० ॥ जयाआंगी
आयतीऐसी ॥ तेथयज्ञाचीगोटीकायसी ॥ तरिकायकायपिसों ॥ नकरीतीगा ॥ ८१ ॥ हाणोंनिकोणेयेवेके ॥ मोदयमद्याचे
निबळें ॥ यागाचीहीटवाळें ॥ आदरिती ॥ ८२ ॥ नाकुडमडपवेदी ॥ नाउचिनसाधनसमृद्धी ॥ आणितयासीतवविथी ॥ हंडवि
सदा ॥ ८३ ॥ देवांआसणाचेभिनावें ॥ आडवारनहिनोहवें ॥ ऐसेंआथीतेयावें ॥ लागेकवणा ॥ ८४ ॥ देवासरुवाचोसोक्रसा
गारपुढेवेडनिजेसा ॥ उगाणायेतीक्षीररसा ॥ बुद्धिवत ॥ ८५ ॥ तेसंयागाचेभिनावें ॥ जगवाडनिहांवें ॥ नागवितीआयवें ॥ आ-
पाव, ओः ७७ उपपत्तिः अ. ७७ विसरा, ७७

हेरावरा ॥ ८७ ॥ ऐसा काहं अपुलीया ॥ होमिती जे उजरिया ॥ तेणें कामिनी प्राणिचा ॥ सर्व बाधा ॥ ८८ ॥ श्लो० अहंकार बल दर्पे काम
 क्रोध च संश्रिताः ॥ सामा त्या परदे हे पुप्रदिष्ट तो म्यस्तृपकाः ॥ १८ ॥ टी० मग पुतां मेरी निशाण ॥ लाउनी ते दोसित पण ॥ जगो फोकारि
 ती आपण ॥ वावो वावो ॥ ८९ ॥ तेव्हा महले तेणें अथ सा ॥ गर्व चि देमहि मा ॥ जैसे ले वेदि धले तमा ॥ काजळाचे ॥ १९० ॥ तें सें मोदव
 यणावा ॥ ओहू त्व उचावे ॥ अहंकार दुणावे ॥ अविवेक ही ॥ ९१ ॥ मग दुजयाची साष ॥ सुरवावया भिः शेष ॥ बळिये पणा अधिक ॥
 होय बळ ॥ ९२ ॥ ऐसा अहंकारा बळा ॥ जाल याये कषळा ॥ दर्प सागर मग दर्पेका ॥ सांडुनि उते ॥ ९३ ॥ मग वो संडले निदर्पे ॥ का
 माही पित्त कुरुपे ॥ तया धर्मी सें य पक्रिये ॥ क्रोधा धिती ॥ ९४ ॥ तें थउन्हा कां आगी रवर मरा ॥ तेल तु पाचिया कोवारा ॥ लागला आ
 णिवारा ॥ स्फटला जें सा ॥ ९५ ॥ तें सा अहंकार बळा आला ॥ दर्प काम क्रोधां गूढला ॥ या दोहींचा मेळ जाला ॥ जयाचा वारी ॥ ९६
 ते आपुली या संवेशा ॥ मग कोणी कोणा हिंसा ॥ या प्राणि यां तें वीरशा ॥ न साधितीगा ॥ ९७ ॥ पहिलें तंव धनुर्धरा ॥ आपुलि या-
 मां मरु धिरा ॥ वेच कार्ता अभिचारा ॥ त्या गो मयां ॥ ९८ ॥ तें य जाळी न जिये देहे ॥ इया मा जिजो मो आहें ॥ तया आत्म या मज यावे
 वाजतीने ॥ ९९ ॥ आणि अभिचार किं तिही ॥ उपद्रवि जे तुलें कांही ॥ तें थें चैतन्य मी पाही ॥ सीण पावें ॥ १०० ॥ आणि अभि
 चार वेगळे ॥ विषा येजें अवगळें ॥ तया दाकिती इटाळें ॥ पें थर त्याचीं ॥ १०१ ॥ सति आणि सत्पुरुष ॥ दानशीळ या शिक्क ॥ तपस्वी-
 अलौलिक ॥ सन्यासी जे ॥ २ ॥ कां भक्त हनन हात्से ॥ दुये माझीं निजा चिंथामें ॥ निर्वाळलीं होम धर्म ॥ श्री नां दिकें ॥ ३ ॥ त-
 यां दूषांचनी काळ कूटें ॥ बास दोनि तिरवेटें ॥ कुबोला चि सदटे ॥ स्मृति कांटे ॥ ४ ॥ म्हा ० तानहं द्विषतः क्रूरान्समारेषु न राध-
 मान् ॥ क्षिपां स्वजस्म शंभानां सुग्रीव योनिषु ॥ १०१ ॥ टी० ऐसं आपय वाचि परी ॥ प्रवर्तले माझा वेशीं ॥ तया पापिया जेशी
 पाव नाही ॥ ११

कुरीते आर्द्रकां ॥ ५॥ तरोमनुष्ये देहाचा नागा ॥ येउनी रुसते जे जगा ॥ तपदीहीरोनि पैगा ॥ ऐसें वरी ॥ ६॥ जे कुशागारि चाउ करउ
 भवपुरीचा पानवडा ॥ तेत मायोनी तया सुदा ॥ वृत्ती चिद ॥ ७॥ मग आहाराचि निनाव ॥ तृणही जेथे नुगेव ॥ ते व्याग्रह श्रि कंभा-
 उवे ॥ तेसी येकरी ॥ ८॥ तेथे संधादुःख बहते ॥ तोडुनि स्वार्ते आपण व्याते ॥ मरमरो मागुते ॥ होत चि अंसती ॥ ९॥ का आ-
 पला गरळ जाळी ॥ जळती तया आगाचि पदळी ॥ तसर्प चि करी विळी ॥ निरुधला ॥ १०॥ परिये तला म्हासघापे ॥ येतुले नही
 मापे ॥ विसावात याना दोपे ॥ दुर्जनसी ॥ ११॥ ऐसें भवल्या चिया कोडी ॥ गणितोही संख्या थोडी ॥ ते तुला वेल न काटी ॥ कुशो-
 नितयां ॥ १२॥ तरितयां सी जेथ जाणे ॥ तेथि चि हं प हल्ल पणे ॥ तें पावो नियरे दारुणे ॥ महोती दुःखे ॥ १३॥ स्लो० आस-
 रं योनि मापन्ना मूढा जन्मीन जन्मनि ॥ मास प्राप्येव को तेय न तोयां त्यमांगति ॥ २०॥ टो० हा वायवरी ॥ संपत्ती ते आसरी
 अयोगति अवधारी ॥ जोडली तिहीं ॥ १४॥ पावी व्यायां दिता मसा ॥ योनी तो अकुमाळ ऐसा ॥ देहागाराचा उमसा ॥ आ-
 धी जोही ॥ १५॥ तोही सी वोल्हावा हिरे ॥ मगत सचि होती एक सरे ॥ जेथे ते आधार ॥ काळ वंदजे ॥ १६॥ जयाचिया
 पाणचिळ सी ॥ नरक येती विवसी ॥ शीण जाय मूर्छी ॥ सिपे जेणे ॥ १७॥ मळ जेणे मेळ ॥ ताप जेणे पोळ ॥ जयाचि निनावे स-
 के ॥ महा प्रय ॥ १८॥ पापा जयाचा कटाळा ॥ उपजे अस गळ अस गळा ॥ विटाळही विटाळा ॥ बिहे जया ॥ १९॥ ऐसें बिश्वाच
 या वारवटेया ॥ अधम जे धन जया ॥ ते ते होतो भागुनिया ॥ नाम सायोनी ॥ २०॥ आहासागतांचा चारडे ॥ आत वित्त अस निशि-
 रुडे ॥ कदार मूर्खी के वटे ॥ जोडले निरय ॥ २१॥ काय सयाते आसरा ॥ संपत्ति पोषितो वाजरा ॥ जिया दिथे लोरो ॥ पतने
 से ॥ २२॥ स्वर्णा निनुवा प्रसुधरा ॥ नाहा मगानिया मोहरा ॥ जे उतागार असरा ॥ संपत्ती वता ॥ २३॥ आणि देसा दिदाव सा-
 पाव नाहीं,

७

७

७

७

हीं ॥ हे संपूर्णजयाचतुर्थी ॥ नित्यजवेहेकाई ॥ ह्युणोकीरा ॥ २४ ॥ ॐ ॥ विनिर्गमकस्येदेदांशाधनमात्मनः ॥ कामक्रोधम-
 थालोभस्तस्मादेतवयत्यजेत् ॥ २१ ॥ टी ० परिकामक्रोधलोभ ॥ यानिहीनोभयंब ॥ कान्दनेथेअशरभ ॥ पिकलेजाण ॥ २५
 सर्वदुःस्वाभापुमिया ॥ दर्शनायनजया ॥ पादाउहेभलतया ॥ दीपिलेआहा ॥ २६ ॥ दोरापियांनरकभोगी ॥ सुवावशाला
 गीजगी ॥ पातकाचीदादुगी ॥ सभाचिहे ॥ २७ ॥ तैरोखगातवीचवरी ॥ अरुकेरुजतीआपुलातरी ॥ जंवहेनिन्हेअतरी
 उठतीना ॥ २८ ॥ अपायतिहाअशलगा ॥ यातनाइहीसंवंग ॥ हाणिहाणिनोहेनिच ॥ हेचिहाणि ॥ २९ ॥ कायबहुबोलुसु
 मदा ॥ सांगीतलीयानिदुष्टा ॥ नरकाचादाखंदा ॥ त्रिशकुहा ॥ ३० ॥ याकामक्रोधलोभा ॥ याजिजीवेजोहोयउभा ॥ तो-
 निरयपुर्णेनीसभा ॥ सन्मानपावे ॥ ३१ ॥ ह्युणोनिपुदतपुदतीकिरीटा ॥ हेकायाइहाषाअपुदा ॥ न्यजावीचिगावोखती ॥ आ-
 यवीविषयी ॥ ३२ ॥ ॐ ॥ एतौर्विमुक्तः कोनेयतभादुरोस्त्रिभिर्नरः ॥ आनरन्यात्मनः ॥ अयस्ततोयातिपरंगतिं ॥ २१ ॥ टी ०
 धर्मादिकाचोहीआंत ॥ पुरुषार्थानिर्तेचमात ॥ करावीजैसायात ॥ सांडिलहा ॥ ३३ ॥ हेनिन्हेजोवेजंवजागती ॥ तंववरी
 भिक्याचीपासी ॥ हेमाझेकाननाइकती ॥ देवोहीद्वयेण ॥ ३४ ॥ जयाआपणेंपहिंय ॥ आत्मनायाजोबिहे ॥ तेणेनधरावी
 हेमोये ॥ सावधहोइजे ॥ ३५ ॥ पोटोवांधोनिपाषण ॥ समुद्रीचाहीआंगवया ॥ कांजियावयाजवण ॥ काळकूटाचे ॥ ३६
 इहीकायक्रोधलोभमिं ॥ कार्यसिद्धोजाणेतैसी ॥ ह्यणेनिवावीचिंयमिं ॥ अयत्तयाणा ॥ ३७ ॥ हेनिन्हेजोवेजो
 सोरवळते ॥ तैसरेआपलियेवाटे ॥ चालोसोभे ॥ ३८ ॥ त्रिदावासांइत्संगारग ॥ त्रिकुलोपितांलुयानगर ॥ त्रिदायनिमा-
 लियाअंतर ॥ जैसैहोय ॥ ३९ ॥ तैसाकामादिकींतियो ॥ सांडिलासुरवपावोनजगा ॥ सगलाहमासमार्गी ॥ सज्जनान्वा ॥ ४०
 पाटओ २६ दिहले, ओ २८ परांतरी ओ २९ सवोय, ओ ३० लाह, ४०

मगसत्संगेनबुद्धे ॥ सत्तास्त्राचेनिबुद्धे ॥ जन्ममृत्युचिनिमाले ॥ निस्तेरणे ॥ ४१॥ नेदुळीआत्मानंदेआधवे ॥ जसदावसंतवरवे ॥
 तेतसेचिपाटणपावे ॥ शुद्धपुणे ॥ ४२॥ तेथयियाचिपरमसीसा ॥ तोभेदधारुलीआत्मा ॥ तेणेनेकीअनेजिनिम्या ॥ संसारीबहे ॥
 ४३॥ ऐसाजोक्रामक्रोधलाभा ॥ झाडीकरुनिवाकुरुभा ॥ तोयवटियालाभा ॥ गासावीहाय ॥ ४४॥ श्लो० यः शास्त्रविधिसुस्तु
 ज्यवर्ततेक्रामकारतः ॥ नससिद्धिमवाप्नोतिनस्सखनपरगति ॥ ४३॥ टी० नाहेनावजुनिकाहीं ॥ कामादिकांचिविचारी ॥ दो
 दिलीजेणेंडोई ॥ आत्सचोर ॥ ४५॥ जोजगीसमानसरूप ॥ हिताहितदावितादोप ॥ तोअमान्यकुलाबाप ॥ वदजेण ॥ ४६॥
 नयरीचिविधीचीमीड ॥ नकरीचिआपलीवाड ॥ वाढवीतगलाकोड ॥ दुंदियाचें ॥ ४७॥ कामक्रोधलाभाचीकामा ॥ नसांडिव
 पाळिलीभाषा ॥ स्वरचोरआसोस ॥ वळयलारान ॥ ४८॥ आणिपरत्रतवजाये ॥ हेकीरतयाआहे ॥ परीऐहिकहीनलाहे ॥
 मोगभोगु ॥ ४९॥ तोसदेकेचियावाहणी ॥ मगपिवोनलाहणणी ॥ स्वर्गोहेतिकाहाणी ॥ दर्शितया ॥ ५०॥ तरिमासाला
 गींमुलला ॥ ब्राह्मणपाणबुडारियाला ॥ केतेथर्हापावला ॥ नास्तिकवाद ॥ ५१॥ तैसेविषयाचनिकोडे ॥ जेणंपरत्राकलउ
 बडे ॥ तंवतोविआणिकोडे ॥ मरणेनला ॥ ५२॥ एवपरत्रनास्वर्ग ॥ नोऐहिकहीविषयभागा ॥ तेथेकुतामसंग ॥ मोक्षा-
 चातो ॥ ५३॥ ह्यणोनिकामाचेनिबुद्धे ॥ जोविषयसंरुपाहेसुळे ॥ तयाविषयनास्वर्गमिळ ॥ नाउदरेतो ॥ ५४॥ श्लो० ते-
 स्मात्तास्त्रप्रमाणंतेकार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ ज्ञाताशास्त्रविधानोक्तकर्मकर्तुमिहाहंसि ॥ ४४॥ इतिश्रीमद्देवा
 स्सरसपद्धिभागयोगनामषोडशाध्यायः १६ टी० याकारणेंपेबापा ॥ जयाआयीआपलीहृष्टा ॥ तेणेवेदांचियाभिरापा
 आननकीज ॥ ५५॥ पतितीचियामता ॥ अनुसरानोपतिमता ॥ अनायासेआत्माहता ॥ भेदेचिते ॥ ५६॥ नातरिशीगुरुव
 पाव, नाही. ७

चना ॥ दिगैदुजतना ॥ शिष्यध्यात्मप्रवना ॥ माजिपैस ॥ ५७ ॥ हे असो आपुलवेवा ॥ हाताआधीजरीयावा ॥ तरेआदरेजेविंदि
 वा ॥ पुलकीजे ॥ ५८ ॥ तैसाअशेषाहंपुरुषार्थ ॥ जोगोसार्वहोस्योपार्थ ॥ तणेअुनीस्मृतिमाथां ॥ बेसणेयापे ॥ ५९ ॥ शा-
 स्त्रहणलजसाउपे ॥ तेराज्यहीतणमानवे ॥ जेयेवरीतेनह्यणावे ॥ विषहीवरुद्ध ॥ ६० ॥ ऐसियावेदेकनिष्ठा ॥ जालियाज
 रीसमला ॥ तरेकैआहेअनिष्ठा ॥ भेटणेगा ॥ ६१ ॥ पैअहितापास्तुनिकाठितो ॥ हितदेउनीवाटविती ॥ नाहोअुतीपरोती ॥
 माउलीजगा ॥ ६२ ॥ ह्यणोनिब्रह्मसीमिळवी ॥ तंवहेकाणहनसाडावी ॥ अगातुह्नीहीऐसीमजावी ॥ विशेपैसी ॥ ६३ ॥ जेआ-
 जिअजुनातूये ॥ करावयासत्यशास्त्रेसार्थ ॥ जन्मलासिबळार्थ ॥ धर्मचेनि ॥ ६४ ॥ आणियमानुजहेमे ॥ बोधेनिआ-
 लेअपैस ॥ ह्यणोनिअनारिस ॥ करुत्तये ॥ ६५ ॥ कार्याकार्यविवेकी ॥ शास्त्रचिकरावीपारखी ॥ अकृत्यतंकुहलोकी ॥ वा-
 छावेगा ॥ ६६ ॥ मगहृत्यपणखरेनिगे ॥ तेतुवांआपलेनिओगे ॥ आचरोनिआदरचांगे ॥ सारावेगा ॥ ६७ ॥ जेविश्वमाभा-
 ण्यादीचीसुदी ॥ आजितुझाहाती ॥ असेसुबुद्धी ॥ लोकसंगहासिभिप्रबुद्धी ॥ योग्यहोसी ॥ ६८ ॥ एवअस्सरवर्गआयवा ॥ सा-
 गोनिनेथिचानिगावा ॥ तोहीदेवंपाडवा ॥ निरूपिला ॥ ६९ ॥ इयावरीतोपडुचा ॥ कुमरसद्गवजिविंचा ॥ पुसेलतेचेतन्या
 ना ॥ कानीऐका ॥ ७० ॥ सजयोव्यासाचियाभिरापा ॥ तोवेळफेडिलातयाचुपा ॥ तेसाभीहीनिहृत्तिरुपा ॥ सागेनतुझा ॥ ७१
 तुह्नीसतसाशियाकडो ॥ दिवीचाकरालबहुडा ॥ तरितुझांगानेयेवदा ॥ होईमगी ॥ ७२ ॥ जणोनिनिगअप्रधान ॥ सजके
 करपसायदान ॥ दीजोजीसनाथहोइन ॥ रानदेवह्यणे ॥ ७३ ॥ ७ ॥ इतिअमीभावाथेदीपिकायाज्ञानदेवविरचिता
 यांषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ७ ॥ श्रीह्यणार्पणमस्तु ॥ ७ ॥ ॥ शर्मप्रवतु ॥ ७ ॥ अजानकीजीवनमसन् ॥ ७ ॥
 पाठ. ओ. ६९ विरु. ७.

श्रीगणेशाय नमः ॥ विश्वविकशि तमुद्रा ॥ जया सोऽवी तुझी योगनिद्रा ॥ तयानमोजं रागेंद्रा ॥ श्रीगुरु रया ॥ १॥ त्रिगुण त्रिपु
 रीं बेटिला ॥ जीवत्व दुर्गा आदिला ॥ तो आत्मशंभू नि सोडविला ॥ तुझ्या स्मृती ॥ ३॥ द्यणो निशिवें सी काटाका ॥ गुरुत्वे तूं किआ
 गळा ॥ तही हकु मायाजका ॥ साजितारुनि ॥ ३॥ जे तुझा विरवी मूढ ॥ तया लागीं तू वक्रवुड ॥ सोनियासितरी अरवड ॥ उज्ज्वि
 आहसी ॥ ४॥ देवि धिदिठी पाहतां सानी ॥ तही मीलनाची लनी ॥ उत्पत्ति प्रकयदा न्ही ॥ लीलाचि करि सी ॥ ५॥ प्रवृत्ति कणाक्ष
 की ॥ उदिली मंदगंधानि की ॥ पूजि जसीनी को लकी ॥ जीवभृगाचा ॥ ६॥ पाहीं निवृत्ति न कर्ण ताकें ॥ आहा किंल तें पूजा भिषुके
 ॥ ते स्वांभिर विसी मोकें ॥ आगा चें लेणें ॥ ७॥ वासंगी चाला स्यविलास ॥ जो हा जगद्रूप आभास ॥ तो तांडव सिंसे कळस ॥
 दाविसी लुं ॥ ८॥ हे असो विस्मय दातारा ॥ तूं हो सी जयाचा सोयरा ॥ सोदरी के चियाव्य व हारा ॥ मुके चितो ॥ ९ ॥ -
 फडिता बधनाचा ठावो ॥ तुज गत बंधू ऐसा भावो ॥ धरु लोको गेडवावो ॥ तुझा चि ओगी ॥ १०॥ तंव दुजयाचि निनावें नया ॥ देह
 ही नुरे चि पें देवया ॥ जेणें तुं आपण पयां केलीं महुजा ॥ ११॥ तूं तें करुनि पुढें ॥ जेउ पायीं घेतीं दवडें ॥ तयाठा सिबहु वें पाडें ॥
 सांगां चितू ॥ १२॥ जो आनं सूर्यमानसी ॥ तया लागीं नाही तुल्याचें देशी ॥ ध्यानही विसरें तेणें सि ॥ वाल मलुज ॥ १३॥ तूं तें सि
 क्षत्रिजो नेगी ॥ तो नांदें सर्व सपणें ॥ वेदां हीत्ये वटें बोलणें ॥ नेघसी कानी ॥ १४॥ सोनगा तु सें राधिनाव ॥ आतां सोत्री कें बांधो-
 हांव ॥ दिससी ते तुली माव ॥ मजो काई ॥ १५॥ देविकें सेवक हां पाहो ॥ तरि सोदितां दोह चिलाहो ॥ द्यणो निआतां काही नो-
 हो ॥ तुज लागीं जी ॥ १६॥ जें सर्वथा सर्व ही नो हिजे ॥ तें अहया तू तें लाहिजे ॥ हें जाणे मी वर्म तुझे ॥ आराध्या लिंगा ॥ १७॥ तरे
 नुरो निवेषाकें पण ॥ रसी सजि नलें लवण ॥ तें सैन मन मासे जाण ॥ बहु काय बोली ॥ १८॥ आतां रिताकुं भ्रम सुद्रिं गिगे ॥ तो-

पद. ओ. १ कोटी. ओ. १ सडुकुज. ओ. ७ आहाली. ओ. १ विस्मो.

उचं बलत भरो निनिगे ॥ कां दशी दीपसंगे ॥ दीप चिहोये ॥ १९ ॥ तैसा तु द्विचा प्रणती ॥ मीरुणी जालो श्री निवृत्ती ॥ आतां अणी नव्य
नी ॥ गीतार्थ तो ॥ २० ॥ तरि षोडशाध्याय शेखी ॥ तिये समाप्ती चाम्बो की ॥ जो ऐसा निणोय निबुकी ॥ देविला देवे ॥ २१ ॥ जैकृत्या
कृत्य व्यवस्था ॥ अनुष्ठाय पाथी ॥ शास्त्र चिये कसर्वथा ॥ प्रमाण तु ज ॥ २२ ॥ तैश अर्जुन मानसे ॥ ह्मणे हे ऐसे के से ॥ जैशास्त्रे
वीण नसे ॥ सुटिका कर्मा ॥ २३ ॥ तरि तसकाची फडे ॥ दाकोनिकें तो सुणि कादे ॥ केंना कीचा के शजोडे ॥ सिंहा चिये ॥ २४ ॥ मग ते
पोंतो बो विजे ॥ तरि चले पों विजे ॥ ये हवीं काय असिजे ॥ रिक्त करी ॥ २५ ॥ तैसी शास्त्राची सो ककी ॥ इया के कोण वें दाळी ॥ ए
क वाक्य ते चा फकी ॥ पै मिजे के ॥ २६ ॥ जाल याही एक वाक्यता ॥ कांला मेवें क अनुष्ठितो ॥ कैचा पेंसार जी विता ॥ ये तुला लिया ॥ २७
॥ आणि शास्त्रें अर्थें देशी का के ॥ याच हवी ये क फके ॥ तो विपावो के मिळे ॥ आधव या पो ॥ २८ ॥ ह्मणौ निशास्त्राचे चड ते ॥ नो हे प्र-
कारें ब हुते ॥ तरि सूर्य सुहसंगे ये ॥ काय गती पा ॥ २९ ॥ हा पुसाव या अभिप्राव ॥ जो अर्जुन करी प्रस्ताव ॥ तो सतरा विचा दाव ॥
अध्यायायेथ ॥ ३० ॥ तरि सर्व विषयें वितुणा ॥ जो सकळ कर्मां प्रवीण ॥ कृष्णा ही नवल कृष्णा ॥ अर्जुन तें जो ॥ ३१ ॥ शौर्या जो डला
आधार ॥ जो सोमवंशाचा मृगार ॥ सुरवादि उपकार ॥ जयाची लीळा ॥ ३२ ॥ जो यज्ञेचा प्रियोत्तम ॥ ब्रह्म विद्येचा विआम ॥ सहच
र मनो धर्म ॥ देवाचा जो ॥ ३३ ॥ तो अर्जुन ह्मणे गात माल शासा ॥ इंद्रियां फावलिचा ब्रह्मा ॥ तुझा बोल आत्मा ॥ साकांक्ष पै जो ॥ ३४ ॥
जैशास्त्रें वांचुनि आणिकें ॥ प्राणि या स्व मोक्ष नंद रेवें ॥ ऐसें कां के पहे ॥ बोलिलासि ॥ ३५ ॥ अर्जुन ० येशास्त्र विधि सुस्-
ज्य यज्ञें तें अस्त्रा न्विता ॥ तेषां निष्ठुता कृष्णा सत्त्व मोहोर जस्तमः ॥ ३६ ॥ तरि निभिक चितो देश ॥ नक्षेत्रिकाळा अवका
श ॥ जो करवी शास्त्राभ्यास ॥ तो ही दुर्गा ॥ ३६ ॥ आणि अभ्यासी विरजिया ॥ होत जिज्या सामथ्रिया ॥ त्याही नाहीं आपैतिया ॥ ३७

पाठ. ओ. २१. ओ. २५. कंठः.

तिथयेवळी ॥ ३७ ॥ उजूनोहोचियाचीन ॥ नेदीचिप्रज्ञासंवाहन ॥ ऐसेहेलेंअपादान ॥ शास्त्राचेंजया ॥ ३८ ॥ किंबहुनाशास्त्राविरतें ॥ चे-
 कहीनलाह्यातीचिनखी ॥ ह्मणुनिउभिविरव ॥ सांडिलीजिही ॥ ३९ ॥ परिनिर्धास्तनिशास्त्रें ॥ अर्थास्तुष्टानेपेवें ॥ मोदनातिवर-
 तें ॥ साचारजे ॥ ४० ॥ तयाऐसेंआह्मीहोआवें ॥ ऐसीचाडबायोनिजीवें ॥ घेतीतयाचेमार्गावे ॥ आचरावया ॥ ४१ ॥ इडयाचिया
 औरवरा ॥ तकिंबाळीहेदातारा ॥ कापुटांस्त्रनिपडिकरा ॥ असमचाले ॥ ४२ ॥ तैसेंसर्वशास्त्रनिपुण ॥ तयाचेंजेंआचरण ॥ तें
 चिकरितीयमाण्या ॥ आपलीयेअहे ॥ ४३ ॥ मगशिवादिकेंपूजनें ॥ सूस्यादिकेंमहादानें ॥ अभिहोत्रादियजनें ॥ करितिजेअहा ॥ ४४ ॥
 तयांसत्वरजतमां ॥ माजिकोणपुरोत्तमा ॥ गतीहोयतेआह्मी ॥ सांगीजजी ॥ ४५ ॥ तंववेंकुदपीठिलिंग ॥ जोनिगमप-
 द्याचापराग ॥ जियेजयाचेनिहेजगा ॥ अंगछाया ॥ ४६ ॥ काकसावियाचीवाड ॥ तोलोकोत्तरप्रौढ ॥ अहितीयगूढ ॥ आनंदघन
 ॥ ४७ ॥ इयेंस्त्राधीजतीजेपेंबिकें ॥ तेंजयाचेंआंगीअसिकें ॥ तोअर्थकृष्णस्सुखें ॥ बोलतअसे ॥ ४८ ॥ स्त्रो ॥ विविधाभवतिअ-
 द्यदेदिनांसास्वभावजा ॥ सात्विकीराजसीचैवतामसीचेतितामृणु ॥ ४९ ॥ ह्मणेपार्थातुसाअतिसो ॥ घेंदंगाआह्मीजाण-
 तसो ॥ शास्त्राभ्यासाचाआडसो ॥ मानितोसिकी ॥ ४९ ॥ तुसधीयाचीअहा ॥ झोंबोंपाहसीपरमपद ॥ तारितेसेंहेप्रबुद्धा ॥ सो-
 होपेनोहे ॥ ५० ॥ अहाह्मणीतलियासाठी ॥ पातेजोनयेकिरीटी ॥ कायादिजअंत्यजघृष्टी ॥ अंत्यजनोहे ॥ ५१ ॥ गंगोदकजरीजा-
 लें ॥ तैरिमद्यभांडाआलें ॥ तेंघेंउंचेकांहिकेलें ॥ विचारीपां ॥ ५२ ॥ चंदनहोयशीतकुं ॥ परिअग्निसीपावेमेकुं ॥ तेंहातींधरि-
 तांजाकुं ॥ नशकेकाई ॥ ५३ ॥ कांकिडाचियेआदनियेपुढीं ॥ पडिलेसोकेकिरीटी ॥ घेतलेचोरवदासाठीं ॥ नागवीना ॥ ५४ ॥ तें-
 सेंअहेचंदकवाडें ॥ आंगीकीरचोखडें ॥ परिप्राणिथाचापडे ॥ विस्मारीजेसे ॥ ५५ ॥ आशिप्राणियेंतंवस्वभावे ॥ अनादिसाचा-

पाठ. ओ. ४२ अक्षरवरा. ओ. ४३ काठीकरा.

प्रसाधे ॥ त्रियुणाचे विआये ॥ बाळिले आहाती ॥ ५६ ॥ तेथ ही दोन गुण रांचती ॥ मग एक धरी उन्नती ॥ तें तें सिया चि वृत्ती ॥
 जीवांचिया ॥ ५७ ॥ वृत्ति ऐसें मन धरिती ॥ मना ऐसें किया करिती ॥ कैलिया एसी वरिती ॥ मगो नि देहें ॥ ५८ ॥ बीज मोडे झाड हो
 ये ॥ झाड मोडें बीज ससाये ॥ ऐसें निकल्य कोडे जाये ॥ परीजाती नानाशे ॥ ५९ ॥ तिया परिधियें अपारे ॥ होत जात जन्मांतरे ॥ त्रियुणा
 लन त्या भिचरे ॥ प्राणि यांचे ॥ ६० ॥ ह्मणुनि प्राणि यांचा पैकीं ॥ पडिली अद्वा अवलोकीं ॥ ते होय गुणा सारि स्वी ॥ तिही चयां ॥ ६१ ॥
 विप्रा ये वाटे सत्व युद्ध ॥ ते ह्मां ज्ञानाची करी साद ॥ परि एका दोषावरुद ॥ येर आहाती ॥ ६२ ॥ सत्वाचे नि आंगलगे ॥ ते अद्वा मोह
 फळारियो ॥ तेवर जत झुगे ॥ कांपारा हाती ॥ ६३ ॥ मोडोनि सत्वा चि बाये ॥ रजोगुण आकाशे जाये ॥ ते ह्मां ते नि अद्वा होये ॥ कर्म-
 केव सुणी ॥ ६४ ॥ मगत माची उठी आगी ॥ ते ह्मां ते नि अद्वा भंगी ॥ होला गे भोगालागीं ॥ प्रलयेया ॥ ६५ ॥ अद्वा ० सत्वाचु रूप सवे
 स्व अद्वा प्रवर्ति भारत ॥ अद्वा मये यंपुरुषो योय च्छुद्धः सा एव सः ॥ ३ ॥ टी ० एवं सत्वर जत मा ॥ वेगळी अद्वा सुवर्मा ॥ नाहीं गीजी
 वया मा ॥ माजियया ॥ ६६ ॥ ह्मणोनि अद्वा स्वाभाविक ॥ असे पै त्रियुणात्मक ॥ रजत ससात्तिक ॥ फेदीं हीं ॥ ६७ ॥ जैसें जीव नवि
 उदक ॥ परि विषी होय सारक ॥ कांभिरया माजि निरव ॥ उंशी गोड ॥ ६८ ॥ तें सा बहु वसें तें ॥ जो सदा चि होय निमो ॥ तेशु अद्वा प
 रिण मे ॥ तें विहो उनी ॥ ६९ ॥ मग काजका आणिससी ॥ नदिसे विवचना जेसी ॥ तें वि अद्वा ताससी ॥ सिनी नाहीं ॥ ७० ॥ तें सी चरा
 जसी जीवीं ॥ रजो मय जाणावी ॥ सात्वि कीं आघवी ॥ सत्वाची च ॥ ७१ ॥ ऐसे निहासक ॥ जग उंबर निरविक ॥ अद्वा चि चिकव
 क ॥ बोतला असे ॥ ७२ ॥ परियुण नय वरां ॥ त्रिविध पणाचें लासें ॥ अद्वा चें उठिलें असे ॥ तें वीकरवतूं ॥ ७३ ॥ नरि जाणिजे झाड-
 फुलें ॥ कांभान सजाणिजे बोलें ॥ भोंनें जाणिजे केलें ॥ पूर्व जन्मीचें ॥ ७४ ॥ तें सी जिहीं जहीं चि न्हों ॥ अद्वा चीं रूपें ति न्हों ॥ दे-

रवीजतीनेवांनी ॥ अवधारीपिं ॥ ७५ ॥ प्रलो० यजंतंमात्वि काटवाच्यस्तरक्षोभिराजसाः ॥ प्रेताभूतगणां श्रान्त्ययजंतंतामसाज-
 नाः ॥ ७६ ॥ टी० तरीसालीकृश्रद्धा ॥ अययाचाहोयबाधा ॥ तेंतयावहुतकस्तुनिर्मया ॥ स्वर्गिआर्था ॥ ७६ ॥ तेंविद्याजातपटर्ती ॥
 यज्ञक्रियेनिवडती ॥ किंबहुनापडती ॥ देवलोकी ॥ ७७ ॥ आणिश्रद्धाराजना ॥ धडलेजेवीरशा ॥ तेंभजतीराक्षसा ॥ खेचराहन
 ॥ ७८ ॥ श्रद्धाजेकांतामसी ॥ तेंमीसांगेनजुपशी ॥ जेकेवकपापरासी ॥ अतिकर्कशांनिहयले ॥ ७९ ॥ जीववधेसाधुनिबळीम
 धूतप्रेतकुळेंमेकी ॥ स्मशानीसंध्याकाळी ॥ पूजितीजे ॥ ८० ॥ तंतंभोगुणांचेंसार ॥ काढनिनिर्मलिनर ॥ जाणतामसियेचेंघर ॥ श्र-
 द्देचेंतें ॥ ८१ ॥ ऐसींदीहीनिहीलिंगी ॥ त्रिविधश्रद्धाजरी ॥ पेंहेंचयालारी ॥ सांगतअसे ॥ ८२ ॥ हेसालीकर्मतिजया ॥ निर्वाहोहो-
 यधनजया ॥ बागूलनोहेतया ॥ केवल्यतें ॥ ८३ ॥ जेंहेसात्तिकश्रद्धा ॥ जतनाधरावीप्रबुद्धा ॥ येरीदोनीविरुद्धा ॥ सांडाविया ॥ ८४
 ॥ तोनपटोकांश्रद्धासूत्र ॥ नलोदोसर्वशास्त्र ॥ सिद्धातनहोतस्वतंत्र ॥ तयाचाहानी ॥ ८५ ॥ परिश्रुतिस्मृतीचेंअर्थ ॥ जेआपणहो-
 कूनमूर्ते ॥ अनुष्ठानेजगांदेत ॥ वडीलजेंजे ॥ ८६ ॥ तयाचींआचरतीयाउलें ॥ पाऊनिसात्तिकीश्रद्धाचाल ॥ तोतेंचिफकटेविकें ॥
 ऐसेलाहे ॥ ८७ ॥ पेंएकदीपलावीसायामें ॥ आणिकतेंथेंलाउंवेस ॥ तरितोकायप्रकाशें ॥ वंचिजगा ॥ ८८ ॥ कांयेकेंमोलअपगु-
 ॥ वेंजोनिकेलेंधवकार ॥ तोसुरवाडवर्त्साकर ॥ नभोसीकाशी ॥ ८९ ॥ हेअसोजेतकंरी ॥ तेंतयाचीचतृषाहरी ॥ किंसुआरा-
 सिचिअन्नघरीं ॥ येरांनोहे ॥ ९० ॥ हेबहुकायबोलोपेंगां ॥ येकागोतमासीचिंगंगा ॥ येरांसमस्तोकायजगा ॥ वोहकजाला ॥ ९१ ॥
 क्षणोनिआपलीयापरी ॥ शास्त्रअनुष्ठितकुसरी ॥ जाणतयातेंश्रद्धाकृजोवरी ॥ तोसूरवेहीतरे ॥ ९२ ॥ प्रलो० अशास्त्रविहितथो-
 रंतयेंयेतपणजनाः ॥ दंभाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ ९३ ॥ टी० नाशास्त्राचेनिकारनावें ॥ स्वाकरोहीनेणनीजी

पद. ओ. ७६ ज्यांचा. तयां. ओ. ८९ की. ओ. ९० येथनकर्त्त्या. ओ. ९१ बुद्धन.

६९

६९

६९

वं ॥ परियास्त्रांहीशिर्वे ॥ देकेंनेदती ॥ १३॥ वडिलांचिपक्रिया ॥ देरबोर्नवतीवांकुलिया ॥ पंडितांडकुलिया ॥ वाजिवीती ॥ १४॥
 आपलेनीचिआदोपें ॥ धनत्वाचेनिदपें ॥ साचिपिपसांडाचींतपें ॥ आदरिती ॥ १५॥ असुलियासुदिलांचिया ॥ आंगीयाळुनिकानि
 या ॥ रकसांसयौणित्या ॥ १६॥ रिचिवितीजकत्तुंडी ॥ लावितीचेडयाचातोंडों ॥ नवसियादेतीउंडी ॥ बाककाची ॥
 १७॥ आग्रहाचियाउजरिया ॥ सुद्रदेवतांवरिया ॥ अन्त्यागेंसातरिया ॥ ठाकतीयेक ॥ १८॥ अगाआत्सपरपीडा ॥ बीजतम
 सेधीसुहडा ॥ पेरितीमगपुढों ॥ तेंचिपिके ॥ १९॥ बाहुनाहीआपलिया ॥ आणिनावेंतेंहीधनंजया ॥ नधरीहोयतया ॥ ससुद्रों
 जेंसे ॥ १०॥ कावेंद्यातेंकरीसका ॥ रससांडीपाचरबोकां ॥ तोरोगियाजिवेंविस्का ॥ सवताहोये ॥ ११॥ नानापडिकराचेनिस
 कं ॥ कादीआपलेचिडोके ॥ तेंगानवसांआंधळें ॥ जेंसेंठाके ॥ १२॥ तेंसेंतयाअसुराहोये ॥ जनिंदुनिशास्त्रांचिसोये ॥ सेंघयां
 वततिमोहें ॥ आडवींजेंकां ॥ १३॥ कामकरवीतेंकरिती ॥ कोपमारवीतेंमारिती ॥ किबहुनामातेंपुरिती ॥ दुःखाचागुंडा ॥ १४॥
 १५० कर्षयंतः शरीरस्थं भूतग्रासमचेतसः ॥ मांचेवांतः शरीरस्थं तान्द्विष्यासुरनिश्चयान् ॥ १६॥ दी० आपकापरावादेहीं ॥
 दुःखदेतीजेंकांहीं ॥ मजआत्सयातेंतुलाही ॥ होयसीणा ॥ १५॥ पैवाचेचेनिहीपालवें ॥ पापियातयानातकावें ॥ परिपडिलेंसा
 गावें ॥ त्यजावया ॥ १६॥ प्रेतबाहिरेंघालिज ॥ कांअंतजसंपाषणीत्यजिजे ॥ हेंअसोहातेंह्माकिजे ॥ कसमळातें ॥ १७॥ तेंथुबुद्धी-
 चियाआशा ॥ तोलेपनमनवेजेंसा ॥ तयातेंसांडावयातेंसा ॥ अनुवादहा ॥ १८॥ तरिअर्जुनातुंतयातें ॥ देवसातेंस्वरहोमानें
 ॥ जेआनयायश्चिन्तयेथें ॥ मानेलया ॥ १९॥ स्रजोनिअर्जुनसत्त्विकी ॥ पुढतीतेचिपेंचेंका ॥ जतनकरावीनिकी ॥ सेवोपवी ॥ १९॥
 ॥ तरिधरावातेंसासंग ॥ जेथेंपोरेंदेसात्त्विकलारा ॥ सत्वबुद्धीचाप्राग ॥ आहारयेथें ॥ १९॥ येहूवीनरीपाहीं ॥ स्वभावहरीचा
 पाठ ॥ ओ. १४ वाचवो ॥ ओ. १५ अनुशिमी ॥ ओ. १६ प्रणित्या ॥ ओ. १७ जया ॥ ओ. १८ पडका ॥ ओ. १९ सर्वा ॥ ओ. १९ बुद्धी.

ठाई ॥ आहारावांचूनिनाही ॥ बळीहंतु ॥ १२ ॥ यत्पक्षपाहंपांविना ॥ जोसावधचेमदिरा ॥ तोहोउनिराकेमाजिरा ॥ तिचेचिदक्षणी ॥
 १३ ॥ कांजोसाविद्याअन्तरससेवी ॥ दोव्यापिजेवातळसस्वभावी ॥ कायज्वरजालियानिववी ॥ पायादिक ॥ १४ ॥ नातरिअंशु-
 तजयापरी ॥ येतलियाभरणवारी ॥ कांआपुलियाऐसेकरी ॥ जेंसेविष ॥ १५ ॥ तेंविंजेंसाधेपेआहार ॥ धातुनेंसाचिहोयआ-
 कार ॥ आणियातुंएसाअंतर ॥ भावपावें ॥ १६ ॥ जेंसंभाडियाचेनितापें ॥ आतुलेंउदकहीनापे ॥ तेंसीधातुवशंआदोपे ॥
 चित्तवृत्ती ॥ १७ ॥ क्षणोनि सात्विकरससंविजे ॥ तेंसत्ताचीवाटिपाविजे ॥ राजसानामसाहोइजे ॥ येणेंरसी ॥ १८ ॥ तरीसात्व-
 ककोणआहार ॥ राजसतामसाकायिआकार ॥ हेंसांगोकरांआदर ॥ आकर्णनी ॥ १९ ॥ श्लो ० आहारस्वपिसर्वस्वत्रिवि-
 धोषवर्तिप्रियः ॥ यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंमृणु ॥ २० ॥ टी ० आणिएकसरेआहारा ॥ केंसेनितीनीमोहरा ॥ जालिया
 तेंहीवीरा ॥ रोकडेदाऊं ॥ २१ ॥ तरिजेवणाराचियारुची ॥ निष्पत्तिकिंबोनियाची ॥ आणिजेवितानंतंवरुणाची ॥ दासीयेथ ॥
 २२ ॥ जोजीचकतीमोक्ता ॥ तोरुणास्तवस्वभावता ॥ पावोनियात्रिविधता ॥ चेष्टेविधा ॥ २३ ॥ क्षणोनित्रिविधआहार ॥ यज्ञ
 हीप्रकार ॥ तपदानहनव्यापार ॥ विविधचित्ते ॥ २४ ॥ पेंआहारलक्षणपहिलें ॥ सांगेंजेक्षणीनलें ॥ तेंआइकभागलें ॥ रू-
 पकृतं ॥ २५ ॥ श्लो ० आयुः सत्वबलारोग्यसुखशीतिविवर्धनाः ॥ रम्याः स्निग्धाः स्मिरात्तद्याआहाराः सात्विकप्रियाः ॥ २६ ॥
 टी ० तरीसत्वरुणाकडे ॥ जेंदेवेंमोक्तापडे ॥ तेंमधुरांरसीवाटे ॥ सेचुतया ॥ २७ ॥ आंगेंचिद्व्यंसुरसे ॥ जेंआंगेंचिपदस्थ-
 गोडिसे ॥ आंगेंचिस्नेहंबुद्वसे ॥ सुपक्वेंजियें ॥ २८ ॥ आकारेनदतीडगळें ॥ स्पशेंअतिमवाळें ॥ जिमेलागींस्नेहळें ॥ स्वा-
 देंजियें ॥ २९ ॥ रसेंगादीवरिहिली ॥ द्रवभावांआधिली ॥ ठायेंठावसांडिली ॥ अस्मितापें ॥ ३० ॥ आंगेंसांनेपरिणामेथार ॥ जें-
 ३१

पाठ. ओ. १२ बोलें. ओ. १५ वेतलें. ओ. १७ निवळें. ओ. २८ द्रव्य.

सैशुरुसुखीचैअसर ॥ नैसीअत्थीजिहोअपर ॥ नृमिराहे ॥ ३९ ॥ आणिसुरवीजेंसीगोंडें ॥ तेंसीचिहिहेंआंतुलुकडे ॥ तिहीअला
 प्रीतिवाटे ॥ सालिकोसि ॥ ३० ॥ एंवणुलसण ॥ सालिकोसोज्यजाण ॥ आयुष्याचेंत्राण ॥ नित्यनवहे ॥ ३१ ॥ येणेंसालिकर
 सें ॥ जंवदेहीमोवरिवे ॥ तंवआयुष्यनदीउससे ॥ देहाचिदेहा ॥ ३२ ॥ सत्वाचिचेकीरपाळती ॥ कारणहाचिसुमती ॥ दिव
 साचियेउज्जती ॥ साजुजेंसा ॥ ३३ ॥ आणिशरीराहनमानसा ॥ बळाचोपेकुएसो ॥ हाआहारनरीदशा ॥ कैचीरोगां ॥ ३४ ॥ हा
 सालिकहोयभोग्य ॥ तेंचिभोगावयाआयोग्य ॥ शरीरासीभाग्य ॥ उदचलेजाणो ॥ ३५ ॥ आणिसुरवाचेंयेणेंदेणें ॥ निकेंउपा-
 याचयेणें ॥ हेंअसोवाटेसाजणें ॥ आनंदेंसी ॥ ३६ ॥ ऐसासालिकआहार ॥ परिणमलाथोर ॥ करीहाउपकार ॥ सवाह्यासी
 आतांराजसासिमीती ॥ जिहोरसीआर्थी ॥ करूंतांहीव्यक्ती ॥ प्रसंगेगा ॥ ३८ ॥ कद्रुम्ललवणादुष्यातीक्ष्णरुसवि-
 दाहिनः ॥ आहाराजसस्येष्टादुःखशोकामरुप्रदाः ॥ ३९ ॥ टी ० ॥ तर्गमानेजेंकडुवट ॥ कांचुनिचाहूनि
 दासट ॥ आसूहन ॥ ४० ॥ कणिकीनैजेंसंपाणी ॥ तेंसंमीदबांधयाआणी ॥ तेंतुलीचमूकवणी ॥ रसानरीची ॥ ४० ॥ ऐसेंस्वारट
 अपाडें ॥ राजसातयाआवडे ॥ उन्हाचेनिमिषेंनोडें ॥ आगीचिगिळी ॥ ४१ ॥ वोफेचियेसिंगे ॥ वातीहीलाविल्यालागे ॥ तेंसें
 उन्हासागे ॥ राजसनी ॥ ४२ ॥ वावदकपांडुनिठायें ॥ सबकवन्हिडाहारलाआहे ॥ तेंसेंतिरवतोखाये ॥ जेघार्येविणरुपें ॥ -
 ४३ ॥ आणिपारवेहूनिकोरडें ॥ आतबाहरीयेकेपाडें ॥ तोजिद्वादशआवडे ॥ बहुतया ॥ ४४ ॥ परस्परेंदांतां ॥ आदकहोचस
 तां ॥ तोगासुरवीधतां ॥ तोषोलागे ॥ ४५ ॥ अधिचद्रुचेंचुरसुरीं ॥ वरीपरवडीजतीमोहरी ॥ जिबेयेतांहीतीधुवारी ॥ नाकें-
 तोडें ॥ ४६ ॥ हेंअसोउणेंआगितें ॥ ह्मणेंतेंसेरादें ॥ पटयेप्रणापरतें ॥ राजसासिंगा ॥ ४७ ॥ ऐसानुपुरेनितांडा ॥ जिआ
 यत. ओ. ३१ नीच. ओ. ३४ वासा. ओ. ३६ उवाया. ओ. ३९ आम्ही. ओ. ४३ गडदक. ओ. ४५ तोडें.

केलावेडा ॥ अन्नमिषेअग्नीमदुमडा ॥ पोटीमरी ॥ ४८ ॥ तेसाचिलवघासुटे ॥ मगसुईनासेजेसांटे ॥ पणिचाचेंनसुटे ॥ तोंडो-
 निपात्र ॥ ४९ ॥ तेंआहारनकृतीयेतले ॥ व्याधिव्याकजेसुतले ॥ तेचववावयाथानले ॥ माजवणपोटी ॥ ५० ॥ तेंसेयेकमांसकं-
 ॥ गेरुडतीऐकेवेके ॥ ऐसाराजसआहारफळे ॥ कंवकदुःखे ॥ ५१ ॥ एवंगजसाआहारा ॥ रूपकेलेंधनुईरा ॥ परिणामाचाहीवि-
 सुरा ॥ सांगीतला ॥ ५२ ॥ आतांतयातामसा ॥ आवडेआहारजैसा ॥ तेहीसांगोंचिकसा ॥ झणेंसुस्ती ॥ ५३ ॥ तरकुहिलेंउसटें-
 रवातां ॥ नमनिजेतेणेंअनहिता ॥ जैसेंकांडपडिता ॥ हेंमिरवाये ॥ ५४ ॥ म्लो ० यातयामगतसंपूतिप्रपुषितचयतु ॥ उच्छि-
 दमपिचामेध्यमोजनतामसप्रियं ॥ ५५ ॥ टी ० निपजलेंअन्नतेंसे ॥ दुपाहरीकायेरेंदिवसें ॥ अतिकरतेंतामसें ॥ घेइजेते ॥ -
 ५५ ॥ नातरिअर्धउकडिलें ॥ कांनिपटकरपोनिगेलें ॥ तेंसेहीरवायचुकले ॥ रसाजेंयेवों ॥ ५६ ॥ जयाकांआथिनिष्यनि ॥ जेथर
 सधरीच्यक्ती ॥ तेंअन्नऐसीप्रतीती ॥ तामसांनाही ॥ ५७ ॥ ऐसेनिकहोंविषाये ॥ सदन्नावरपडाहोये ॥ तरीघाणिसुटेतंवराह-
 ॥ व्याघ्रजैसा ॥ ५८ ॥ कांबहुवेदिवशीवोलांडिलें ॥ सादपणेंसांडिलें ॥ शुष्कअथवासडलें ॥ गाभिणेंहीहो ॥ ५९ ॥ तेंहीबाकांच
 हातवरी ॥ चिवडिलेंजैसीराहाडीकरी ॥ कांसवेंबेंसोनिनारी ॥ गोतांबीलकरी ॥ ६० ॥ ऐसेनिकमकंजैरवाय ॥ तेंतथासुरब
 मोजनऐसेंहोय ॥ परिचेणेंहीनधाच ॥ पापिथातो ॥ ६१ ॥ मगचमत्कारदेखा ॥ निषेधाचाआबुखा ॥ जयाकांसदोषा ॥ -
 कुद्रव्यासी ॥ ६२ ॥ तथाअपेयांचापानी ॥ अरबादांचांसोजनी ॥ वाटवीजेउताही ॥ तामसेंतेणें ॥ ६३ ॥ एवतामसजवणासा
 ॥ ऐसेसीमेसुहेवीरा ॥ यथान्वेफळदुसरा ॥ स्पर्णनाही ॥ ६४ ॥ जेंजेकांनिहेंअपवित्र ॥ शिवेतथाचेंवक्र ॥ तेकांचिपापा
 च ॥ जालातोकी ॥ ६५ ॥ चावरतेंजेजवी ॥ तेजेवतीवोजनसणावी ॥ पोटभरतीजाणावी ॥ यातनाते ॥ ६६ ॥ शिरछेदे

काचहोये ॥ कांआगीरिघतांकेसंआहे ॥ हेजाणावेंकाइयाहे ॥ परिसाहातचिअसे ॥ ६७ ॥ ह्यणींनिताससाअन्ता ॥ परिणा-
मगासिनाना ॥ नसांगोंचिअर्जुना ॥ देवह्यणे ॥ ६८ ॥ आतांययावरी ॥ आहाराचियापरी ॥ यत्तहीअवधारी ॥ त्रिधाअसे ॥
६९ ॥ तैरीतिहीमाजीप्रथम ॥ सात्तिकयज्ञाचेंवर्म ॥ आईकपांसुमहिम ॥ शिरोमणी ॥ ७० ॥ श्लो० अफलाकांक्षिभिर्यशो
विधिदृष्टोयदृज्यते ॥ यष्टव्यमेवेतिमनःसमाधायसमात्तिकः ॥ ७१ ॥ टी० तरियेकप्रियोत्तम ॥ वांचेनिवाटोंनेदीकाम ॥
जैसाकामनोधर्म ॥ पतिव्रतेचा ॥ ७२ ॥ नानासिधूतेंदांकुनिगंगा ॥ पुढारांनकरीचिरिगा ॥ कांआत्मादेखोनिउगा ॥ वेददला
॥ तैसेजेंआपुलास्वहीती ॥ वेंचूनिपांचिनवृत्ती ॥ नुरवितीचिअहंकृती ॥ फळाग्री ॥ ७३ ॥ पातलेचाझडाचेंसूक ॥ मायु
मिसरोनेणोंचिजळ ॥ जिरालेंकांकेवळ ॥ तथाचाचिआंगी ॥ ७४ ॥ तैसेमनेंदही ॥ यजननिश्चयाचाढाई ॥ हारणेनिजेंका
ही ॥ वांछितीना ॥ ७५ ॥ निर्हांकळांछात्यागी ॥ स्वधर्माचांचूनिविरागी ॥ कीजेजोयजसवंगी ॥ अकंकुत ॥ ७६ ॥ परिआरिसा
आपणापें ॥ डोकांजेंसेंपे ॥ कांतकहातीचेनिदीपें ॥ रत्नपाहिजे ॥ ७७ ॥ नानाउदितेंदिवाकरें ॥ गमावामार्गदिधीस्मरे ॥ तै-
सावेदनिद्री ॥ देखोंनिया ॥ ७८ ॥ तिचेंकुडमंडपवेदी ॥ आणीकहीसंसारसमृद्धि ॥ तैमेकवणीजैसीविधी ॥ आपणपांके-
ली ॥ ७९ ॥ सकळावयवउचितें ॥ लेणीपातलांजैसींआगतें ॥ तैसेपदार्थजेथिचानेथें ॥ विनियोगुनी ॥ ८० ॥ कायवांतुंबहु-
तीबोली ॥ जैसीसर्वांभरणींभरली ॥ तेयज्ञविद्याविरूपाभली ॥ यजनमिषें ॥ ८१ ॥ तैसासांगोपांग ॥ निपज्जोपांग ॥ जुठक
नियंलागा ॥ महलाचा ॥ ८२ ॥ प्रतिपाकतरीपादाचा ॥ झडींकींजेतुकसीचा ॥ परीफळाफुलाछायेचा ॥ आश्रयोनाही ॥ ८३
॥ किंबुहुनाफळाशेवीण ॥ ऐसेथानियुतीनिर्माण ॥ होयतोयोगजाणा ॥ सात्तिकगा ॥ ८४ ॥ श्लो० अभिसंशयतुफलंद-
पाद. ओ. ७० परी. श्लो. ७५ देहमनेंदही. ओ. ८४ यज्ञ.

ध

ध

ध

मार्यमपिचिवयत् ॥ इज्यतेभरतश्रेष्ठतंयज्ञविद्भिराजसं ॥ १२॥ टी० आतांयज्ञकीरवीरंशा ॥ करीपेंयाचिएसा ॥ परिआद्भालागीं
 जैसा ॥ अवंतिलारावी ॥ ८५ ॥ जरिराजायरासिये ॥ तरिबहुतपयोगाजाये ॥ आणिकीर्ताहीहोये ॥ जैगामाजी ॥ ८६ ॥ तेंसांथ
 रूनिआवांका ॥ झणोस्वर्गजोडेलअसिका ॥ दीक्षीतहोईनमान्यलोकां ॥ यडेलयाग ॥ ८७ ॥ ऐसीकेवळकांलागीं ॥ महत्तफो-
 करावयाजगीं ॥ पार्थानिष्पत्तिजेयागीं ॥ राजसंपत्ते ॥ ८८ ॥ प्लो० विधिहीनमसृष्टान्नसंचहीनमदक्षिणं ॥ अद्वाविराहितं
 यज्ञतामसंपरिचक्षते ॥ १३॥ टी० आणियशुपक्षीविवाहीं ॥ जौसीकामापरोत्तानाहीं ॥ तेंसातामसायज्ञापाहीं ॥ अग्रदचिमु
 क ॥ ८९ ॥ वारयावादनवाहे ॥ किंमरणसुहृतपाहे ॥ निषिद्धासीविहे ॥ आगीजरी ॥ ९० ॥ तरीतामसाचियाआचारा ॥ विधीचा
 आधीनावोदावारा ॥ झणुनिनोधनुर्धरा ॥ उच्छ्रवल ॥ ९१ ॥ नाहीविधीचैतेयचाड ॥ नयेमंत्रादिकतयाआड ॥ अन्नजातानं
 सुदेतोंड ॥ मांसियेजैविं ॥ ९२ ॥ वैराचाबोधब्राह्मणा ॥ तेथकैरिगेलदक्षिणा ॥ अग्नीजालावावधाणा ॥ वरिपडाजैसा ॥ ९३ ॥ ते
 मेवायांचिसर्वस्वचे ॥ सुरवनदेरवतांअहूचे ॥ नागविलेंनिपुत्रिकाचें ॥ जैसंप्रर ॥ ९४ ॥ ऐसाजोयज्ञाभास ॥ तयानामया-
 गतामस ॥ आइकेंझणोनिवास ॥ श्रीयेचातो ॥ ९५ ॥ आतांगेचेंएकपाणी ॥ परिनेलेंआनानीवाहणी ॥ एकभळीएकआणी
 ॥ शुद्धतजैसें ॥ ९६ ॥ तेंसेतिहीगुणीतप ॥ येयजाहालेंआहुत्रिरूप ॥ तेंएककेलेंदेपाप ॥ उदरीएक ॥ ९७ ॥ तरितेंचितहीजो
 दीं ॥ कैसेनिपाझणोनिमुबुद्धी ॥ जाणोपाहासीतरिआधी ॥ तपचिजाण ॥ ९८ ॥ येयतपझणिजेकाइ ॥ तेंस्वरूपदाउपाहो
 ॥ मगसेदिलेंगुणीतिही ॥ तेंपाढीबोलो ॥ ९९ ॥ तरितपजेंकांसम्यक ॥ तेंहीअविधआइक ॥ शारीरमानसीक ॥ शाब्दगा ॥ १००
 ॥ आतांचातिहोमाझारी ॥ शारीरतंवअवधारी ॥ तरिसंभूकांश्रीहरी ॥ पटियंताहोये ॥ १॥ प्लो० देवद्विजयुगप्राज्ञपूजनेशो
 पाठ ॥ ओ० ८६ ॥ आहुनदके ॥ ओ० ८९ ॥ ओजेंइच्छा ॥ ओ० ९० ॥ वेदाची ॥ ओ० ९४ ॥ ही०

चमाजर्वे ॥ ब्रह्मचर्यमहिंसाचशरीरतपउच्यते ॥ १४ ॥ टी० तयोप्रियादेवतालया ॥ योचरिदेकरावशा ॥ आठहीपहाडिजेंसंया-
 यो ॥ उळिगाधारे ॥ १ ॥ देवांगणभिरंघणिया ॥ आंगोपचारपुरवणिया ॥ करावयासुणिया ॥ शोसतीहात ॥ ३ ॥ लिंगकांप्रतिमा-
 दिदी ॥ देवतत्वेवोंगेष्टी ॥ लोटिजेकांकाठी ॥ पडलीजेंसी ॥ ४ ॥ आणिविधिविनयादिकां ॥ गुणांविडलजेलोकों ॥ तथाब्राह्म-
 णाचीनिर्मी ॥ पादकीजें ॥ ५ ॥ अथवाप्रवासंकांपडा ॥ कांशिगलेजेसांकडों ॥ तेजीवसुरवाडा ॥ आणीजती ॥ ६ ॥ सकळती-
 थोंचियेथुरे ॥ जियेकांमातापितरें ॥ तयोसेवेमिकीरशरीरें ॥ लेणकीजें ॥ ७ ॥ आणिसंसारऐसादारुण ॥ जोसेदलियां
 हरीशीण ॥ तोज्ञानदानींसरुण ॥ मजिजेगुरू ॥ ८ ॥ आणिस्वधर्मचाआगिदा ॥ देहजाड्याचियाकिदा ॥ आवुनीपुदीसुमदा
 ॥ झाडाकीजें ॥ ९ ॥ वसुधूतमात्रांनभिजे ॥ परोपकारांमजिजे ॥ स्त्रीविषयींनियभिजे ॥ नवेंनावें ॥ १० ॥ जन्मतेनिप्रसंग ॥ स्त्री
 देहशिवणेंआंगों ॥ तेथुनिजन्याआघवें ॥ सोविळेंकीजें ॥ ११ ॥ धूतमात्राचेनिनावें ॥ तृणहीनासुडावें ॥ किंबहुनासांडावे ॥ छे-
 दमेद ॥ १२ ॥ ऐसेंसीजेंशरीर ॥ राहाटीचीपडेउजरी ॥ तेंशरीरतपघुमरी ॥ आलेंजाण ॥ १३ ॥ पार्थासमस्तहीहंकरणें ॥ देहा-
 चेनिप्रधानपणें ॥ क्षणोंनियचातेंसीक्षणें ॥ शरीरतप ॥ १४ ॥ एवंपरीरजेंतप ॥ तथाचेंदाविलेंरूप ॥ आतांआइंकनिषाप
 ॥ वाड्ययतें ॥ १५ ॥ श्लो० असुदेगकरंवास्थसत्प्रियहितंचयत ॥ स्वाध्यायाभ्यसनंचेववाङ्मयंतपउच्यते ॥ १५ ॥ टी० तु-
 रिलोहाचेंआंगतुळ ॥ नतोडितांचिकनक ॥ केलेंजेंसेंदरव ॥ परितेंणें ॥ १६ ॥ तेंसेंदुरवविनांसेजे ॥ जावळ्यासुरवनिप्रज
 ॥ ऐसेंसांधुलकांदेखिजे ॥ बोलणांजिये ॥ १७ ॥ पाणीसुदलझाडाज्ये ॥ तृणतेंप्रसंगेंजिये ॥ तेंसेंचेकाबोलिलेंदोये ॥ सर्वां
 हिंहिता ॥ १८ ॥ जोडेअमृतांचीसुरमरी ॥ तेंश्रणातेंअमरकरी ॥ स्थानेंपपतापवारी ॥ गोडीहीदे ॥ १९ ॥ तेंसाअगिवेकहीहिंदो ॥

आपुलें अन्नमदलसंते ॥ आदकतांरुचिनविटे ॥ पीयूषीजेंसी ॥ २० ॥ जरीकोणीकरपुसणे ॥ तराहो आवेऐसेबोलणे ॥ नातरिआव
 तेंवणे ॥ निगमकानाम ॥ २१ ॥ अखंडादतिही ॥ प्रतिष्ठाजतीवारसुवर्णा ॥ केलीजेंसीधर्मा ॥ ब्रह्माळा ॥ नातरिएकाधेमांन
 क ॥ नायकचीतो ॥ २४ ॥ मल्लो ॥ मनःप्रसादः सौम्यत्वसौमनात्मविनयहः ॥ भावसंशुद्धिरित्येन नरोमानसमुच्यते ॥ २६ ॥ दी०
 धिनंरेंद्र ॥ नातरिस्तीरसमुद्र ॥ कांचंदनाचेउरगी ॥ उद्यानवनजेंसे ॥ २५ ॥ नानाकळावैषम्यचंद्र ॥ कोसांडिलाआ
 रूपीजें ॥ २७ ॥ तपनेवीणप्रकाश ॥ जाडंपेवीणविरसीरस ॥ पोकळीवीणअवकाश ॥ होयजेंसा ॥ २८ ॥ तेंसीआपलीसोचदे
 रवे ॥ आणिआपलियास्वभावामुके ॥ दिवलेजेंसीआंगिके ॥ दिवोनेदी ॥ २९ ॥ तेंसेनचकतेककेंवीण ॥ शशिबिंबजेंसे
 लीवाफ ॥ निजबोधाची ॥ ३१ ॥ स्मणीनिविचारवयाशास्त्र ॥ राहाटवावेंजेवकर ॥ तेंवाचेचेहीसूत्र ॥ हातीनधरी ॥ ३२ ॥ तेंस्व
 लभमलामलेपणे ॥ मनसनपणाहीधरुनेणे ॥ शिवतलेंजेंसेलवणे ॥ आपलेंनिज ॥ ३३ ॥ तेंथकेंउठतीतेभाव ॥ जिहांदेंद्रि
 यसंगीधाव ॥ घेउनिठाकावेगांव ॥ विषयांचेते ॥ ३४ ॥ स्मणींनितियेमानसी ॥ भावशुद्धीविअस आपेसी ॥ गेमशुचिनेसी
 ण ॥ मानसतपाचेलस्मण ॥ देवास्मणसंपूण ॥ सांगीनलें ॥ ३७ ॥ एवेंदेहवाचाचिने ॥ जेंपानलेविविधत्वाते ॥ तेंसामान्यतप
 णतः ओ ॥ २४ ॥ त्रिमवर्ती ओ ॥ २९ ॥ नेष्टानिजांग ओ ॥ ३६ ॥ मनोतपविधानाः ओ ॥ ३८ ॥ स्मणींनि.

तूते ॥ परिसविलेगा ॥ ३८ ॥ आतां गुणत्रयसंगे ॥ हेच विशेषेच विविधरीगे ॥ ते हो आइं कचों ॥ प्रज्ञाबळे ॥ ३९ ॥ अहं प्रहयापरका
तमंतपस्तत्रिविधनरे ॥ अफलाकांक्षिभिर्मुक्तेः सात्त्विकं परं च हसते ॥ ११७ ॥ टी० तरि हेचि न पत्रिविधा ॥ जेदाविलेतु जप्रबुद्धा ॥ तेवि
करी पूर्णअद्वा ॥ सांडुनिफळी ॥ ११८ ॥ जें पुरतियासल बुद्धी ॥ अचरिजे असि क्यबुद्धी ॥ नैतयानेचिगाप्रबुद्धी ॥ सात्त्विकस्यपिपे ॥ ११९ ॥
॥ प्रहो ॥ सत्कारमानपूजार्थतपोदंभनचैव यत ॥ क्रियतेतदिह श्रोक्तराजसन्तलमधुवं ॥ १२० ॥ टी० नातरितपस्थापमेका
र्गी ॥ दुर्जपणमांडुनियाजगी ॥ महत्वाद्वाचाश्रुगी ॥ बैसावया ॥ १२१ ॥ अमुवनीचियासन्माना ॥ नवचावेदाया आना ॥ धुरे
चिया आसना ॥ साजनालागी ॥ १२२ ॥ विष्वचियास्तोत्रा ॥ आपणहो आवयापत्रा ॥ विस्व आपलियायात्रा ॥ करावियाया
वें ॥ १२३ ॥ लोकांचियाविधिपूजा ॥ आश्रयनधरावयादुजा ॥ भोगभोगावेवोजा ॥ महत्वाचिया ॥ १२४ ॥ अगाबोलमारवू
नीतपे ॥ विकावया आपणापे ॥ अंगार्दनिपदपे ॥ जयापरी ॥ १२५ ॥ हे असोधनमानी आश ॥ वाढनीतपकीजेसायास ॥
तेतें चितपगजस ॥ बोलिजेगा ॥ १२६ ॥ परिपदहरणीजेंदुहिलें ॥ तेतेंगुरुनदुभेचिव्यालें ॥ कांठभेंसेतचारिलें ॥ पिकावया-
नुरे ॥ १२७ ॥ तेंसेफोकारितांतप ॥ कीजेजेसाक्षेप ॥ तेफळींनवमोप ॥ भिः शेषजाये ॥ १२८ ॥ ऐसेंनिफळदेखोनि करितां ॥ मा
झारीमांडीपंडुसुता ॥ सयोंनिनाही स्थिरता ॥ तपातया ॥ १२९ ॥ येहवीतरी आकाशमांडी ॥ जोगजोंनिबझांडफोडी ॥ तो
अकाळमेयकायधडी ॥ राहात ओह ॥ १३० ॥ नेंसेराजसतपजेंदोये ॥ तेंफळींकीरवाझजाये ॥ १३१ ॥ आचरणोंहो नोहे ॥ नि
वांहेतेगा ॥ १३२ ॥ आतांनंचितपपुटती ॥ तामसाचियेरीती ॥ तेंपरत्रा आणिकीर्ती ॥ मुकोनिकीजे ॥ १३३ ॥ प्रहो ॥ मृदत्रा
हेणात्सुनोयतीडयाक्रियतेतपः ॥ परस्योत्सादनार्थेवाततामससुदाततं ॥ १३४ ॥ टी० केवळमूर्खपणाचावारा ॥ जीविं-

पाठः ओ० ४० फळे ॥ ओ० ४२ महलाच्ये ॥ ओ० ४६ पण्यांमना ॥ ओ० ५१ अवकाळ

ध

ध

ध

ध

घेउनिधनुंधरा ॥ नामदो वजेशरीरा ॥ वोरियाचें ॥ ५४ ॥ पंचाग्नीचिंदुंगी ॥ खोलवीजनीषारीगालागी ॥ कांइधनकीजेहे आगी ॥
 आंतुलावी ॥ ५५ ॥ मायांजालिजनीगुरुक ॥ पदीघालीजनीगक ॥ आंगजाळितीदंगक ॥ जकतप्रीतां ॥ ५६ ॥ दवडोनिम्बा-
 सोम्बास ॥ कीजनिवार्यांचिउपवास ॥ कापेपतीधूमाचेयांस ॥ अथोसुरवें ॥ ५७ ॥ हिमोदकेंआकंदें ॥ खडकसोवजतंतदें ॥ जि-
 तयांमासाचेचिमुटे ॥ तोडितीजेथ ॥ ५८ ॥ ऐसीनानापरीहेकाथा ॥ घायसूतांपेंधनजया ॥ तपकीजनाशावया ॥ पुटिलांतें ॥ ५९
 ॥ आंगभारेंसुल्लाधोडा ॥ आपणफुटोनिहोरखंडखंडा ॥ कांआडजालियातेंरगडा ॥ करीजेसा ॥ ६० ॥ तेंविआपलीयाआटणि-
 था ॥ सुरवेंअसनयाप्राणिथा ॥ जीयावयाशिराणिथा ॥ कीजनीया ॥ ६१ ॥ किंबहुनाहेवोरवदी ॥ घेउनीफुंशाचीहातवदी ॥ तप-
 निफजतेंकिरीटी ॥ तामसहोये ॥ ६२ ॥ एवंसत्तादिकाचाआंगी ॥ पडिलेंतपतिहोआंगी ॥ जालेंतेहीतुजचोगी ॥ दाविलेंव्यक्ति
 ॥ ६३ ॥ आतांबालतांप्रसंगा ॥ आलेंह्मणोनिएंगा ॥ करूरूपदानलिंगा ॥ त्रिविधातया ॥ ६४ ॥ येथगुणाचेंनिबळे ॥ दानहीत्रिवि-
 धासेजालें ॥ तेंचिआडकपहिलें ॥ सात्विकेसें ॥ ६५ ॥ म्हा ० दातव्यमितियहानंदीयतेनुपकारिणो ॥ देशेकालेचपात्रेच
 तदानंसात्विकंस्मृतं ॥ २० ॥ दी ० तरिस्वधर्माआतोतें ॥ जेंजेंभिकेल आपणयातें ॥ तेंतेंदेइजेकरुनिबहुतें ॥ सन्मानयोगें ॥
 ६६ ॥ जालयासुगीजप्रसंग ॥ पडेक्षेत्रवाफेचापांग ॥ तेंसाचिदानाचाहालाग ॥ देरवतअसे ॥ ६७ ॥ अनधरत्नाहाताचदे ॥ तेंसां-
 गाराचीवोटीपडे ॥ दोनींजालींतीरीनजोडे ॥ लेतेंआंग ॥ ६८ ॥ परिसणसुहृदसंपत्ति ॥ येतिनीयेकंभीकती ॥ जेंभाग्यधरीउ-
 न्मती ॥ अपुलाविधी ॥ ६९ ॥ तेंसंनिफजवाचयादान ॥ जेंसत्तासियेसंवाहन ॥ तेंदेशकाकभाजन ॥ द्रव्यहीभिके ॥ ७० ॥ तरि-
 आधिंतवप्रयलेंसि ॥ होआवेंकुरुक्षेत्रकांकाशी ॥ नातरितुकेसोइहिंसी ॥ तोदेशहीहो ॥ ७१ ॥ तेशरविचंद्रारहुमेक ॥ होना

पाठ. ओ. ६५ बोलें. ओ. ७० निफलजावया.

६

६

६

६

पाहेपुषकाक ॥ कानथासारिवाभिर्मक ॥ आनहैजालो ॥ १३ ॥ नैयाकाळीनियुंशी ॥ हांआवीपात्रसंपत्तींसी ॥ मूर्तिआहेइ-
 रिलीजेंसी ॥ शुचित्वेनिकां ॥ १३ ॥ आचारचेंमूकपीठ ॥ वेदांचेउत्तरपेठ ॥ नेंसदिजरलचोरवट ॥ पावोनियां ॥ १४ ॥ मगतयाचा
 दाईविता ॥ निवतवावीस्वसत्ता ॥ परिप्रियापुढेकांता ॥ रिगजेंसेभि ॥ १५ ॥ काज्याचेडेविलेनया ॥ देउनहोइउत्तरादया ॥ नाना
 हडपेविडाराया ॥ दिधलाजेंसा ॥ १६ ॥ नेंसेनिनिष्कामेंजिवें ॥ भूस्थादिकअर्थीवें ॥ किंवहनादानं ॥ नंदावेउठो ॥ १७ ॥ आपिदान-
 जयाधारे ॥ तयातेंसेयापाहावे ॥ जयावेतलेंतुमचेंवे ॥ काथसेनही ॥ १८ ॥ सादयातल्याआकाशा ॥ नंदीप्रतिशब्दजेंसा ॥ का
 पाहिलाआरसा ॥ येरीकडे ॥ १९ ॥ नातरीउदकाचियेभूमिके ॥ आफळिलेविकेंदुकें ॥ उग्रकोनिकवतिकें ॥ नयेजदाना ॥ २० ॥ ना
 नावसाचातलाचारु ॥ माथापुरंधिलाबुरु ॥ नकरीप्रत्युपकारु ॥ जियापरी ॥ २१ ॥ नेंसेदिधलेंदानयाचें ॥ जोकोणेहाओंगेनुमचें
 ॥ अर्पिलयासाम्यनयाचें ॥ कीजेंपंगा ॥ २२ ॥ ऐसियाजेंसामधिया ॥ दाननिफजेवीराराया ॥ नेंसालिकदानवयां ॥ सवोदीजाणा ॥
 २३ ॥ आगितांचिदेशकाळ ॥ घडेनेंसाचिपात्रमेक ॥ दानसागहीनिर्मक ॥ न्यायगन ॥ २४ ॥ भ्लो ० यत्तुप्रत्युपकारार्थेफलमु-
 दितें ॥ परुजाधिजे ॥ २५ ॥ नानादिदीयाळुनिआहेरा ॥ आवतुंजाइजसोथिरा ॥ कावाणथाडिजघरा ॥ वोवसीयाचे ॥ २६ ॥ पेंकळां
 तरगांदिबांधिजे ॥ मगापुरेलाचेंकाजकीजे ॥ पूजाघेउनिरसदीजे ॥ पीडितांमि ॥ २७ ॥ सजयाजदानदणें ॥ नांतणोंचगाजिव
 पें ॥ पुढेहीसुजावासावेंयणें ॥ दिजेजेंका ॥ २८ ॥ अथवाकोणीवादेजातां ॥ घेतलेंउमचोनशकता ॥ मिळेजेंपंडुसुता ॥ हिजो-
 नम ॥ २९ ॥ तरीकवड्यायेंकासाही ॥ अशेषांगोत्रांचेंचिकरीही ॥ सवंप्रायश्चित्तेंसुयेमुढी ॥ नयांचिये ॥ ३० ॥ तेंविंचियांरलो
 पाठ-ओ ॥ १२ ॥ ओंणीकहीहा ॥ ओ ॥ १४ ॥ नें ॥ ओ ॥ १८ ॥ प्रत्युपकारनकरवें

किं॥ फळें वांछिजतीअनकें॥ नाहिजेतरीशुकें॥ येकाहीनोहे॥ ९१॥ तेंहीब्राह्मणनवोंसरे॥ किंहाणिचेनिशिणेंभांसुरें॥ सर्वस्वजेंसे
 चोरें॥ नागऊनिनेलें॥ ९२॥ ऋचबहुसांगोसुमती॥ जेदजेयामनोवृत्ति॥ तेंदानगात्रिजगती॥ गंजमयें॥ ९३॥ **श्लो०** अदेशकाले
 यद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते॥ असकृतमवशातत्तामसमुदाहृतं॥ २२॥ टी० मगल्लंछाचेवसोदे॥ दोंगाणेहनकेंकटे॥ काशिबिरचो
 हटे॥ नगरींचेंते॥ ९४॥ तेंहीतेहीटाईभिकणी॥ समयसांजवेळकारजनी॥ तेंकंडदारहोणेंधनी॥ चोरियेचा॥ ९५॥ पात्रेंभाटनागारी
 ॥ सामान्यस्त्रियाकाजुवारी॥ जियेंमूर्तिमंतेसुहरी॥ सुलवावया॥ ९६॥ नृत्याचीपुरवणी॥ तेंपुढांडोळेभारणी॥ गीतभाटीवतोभ्यवणी
 कर्णजप॥ ९७॥ तयाहीवरीअकुमाळ॥ जेंघेंपुलांगथाचारुशुक॥ तंवभसाचातोवेताळ॥ अवतरेतेंसा॥ ९८॥ तच्चविस्माडुनिचांजग
 ॥ आणिलेपदार्थअनेग॥ तेघाल्निमानंग॥ गवांदिमि॥ ९९॥ एवंपेसेनिजेदणें॥ तेंतामसदानमीद्वणें॥ आणियेदेवगुणें॥ अणि
 केहीऐक॥ ३००॥ विपायेंघृणाक्षरपडे॥ राकियेकाडकासांपडे॥ तेंसेतामसांपर्वजोडे॥ पुण्यदेशी॥ १॥ तेथंदरवोनिताआथिला॥ -
 योग्यमाणोंहीआला॥ मोहीदणीचटला॥ सांबावेजरी॥ २॥ तरीअधूनधरीजीवी॥ तयासाथाहीनखालवी॥ स्वयेनकरिनाकरवी॥
 अर्थादिक३आलियानघलीबैसों॥ तेथगंधासताचाकायअतिसो॥ हाअप्रसंगकीरअसो॥ तामसींनरीं॥ ४॥ पैबोळवीजेरिणा
 इतें॥ तेंसासांकीतयाचाहात॥ तूंतुंकरणयाचाबहुत॥ प्रयोगतथें॥ ५॥ आणियजाजेंदेकिरीदी॥ तयानेंउभाणीतयासारी॥ -
 मगकुबोलेकालोटी॥ अवसेचा॥ ६॥ हंबहुअसोयापरी॥ मोलवंचणेंजेंअवधारी॥ तयानावचगचरी॥ तामसदान॥ ७॥ ऐसेआ
 पुढालाचिन्हें॥ अककृतेंतिह्नी॥ दानेंदोर्विलेंअभिधानी॥ रजतमया॥ ८॥ येथमीजाणतअसें॥ विपायेंतूंगाऐसें॥ नकलिय
 सीलमानसें॥ विचक्षणा॥ ९॥ जंभवबंधनमोचक॥ येकलेकमंसात्तिक॥ नरीकांवेरवासंसदोरव॥ येरबोलावीं॥ १०॥ परिनोसुं-

पाठ॥ ओ॥ ९९॥ अतलथा॥ ओ॥ ३००॥ तेंहीऐकें॥

७

७

७

७

तितां द्विषसी ॥ श्रीनदीर्हो निधीसी ॥ कोधूनसाहता जेसी ॥ वातिनलगे ॥ ११ ॥ तेंसे शुद्ध सत्ता आड ॥ आहं रजतमाचं कण्ड ॥ तेंसे दूणें
यातें फ्रीड ॥ द्वाणावेंका ॥ १२ ॥ आस्मी शुद्धादिदानांत ॥ जेंसमस्त दीक्रयाजात ॥ सांगीतलें कां व्याम ॥ तिही गुणी ॥ १३ ॥ तेंच भरवसे
नितीन्ही ॥ नसांगों चिऐं ससांनी ॥ परिसत्त्वदावायादोही ॥ बोललें चेरें ॥ १४ ॥ जें दोहो साजित जें असे ॥ तें दोन्ही सांडितां चिदिसे
॥ अहोरात्र त्यागें जेंसे ॥ सो अरूप ॥ १५ ॥ तेंसे रजतमविनाश ॥ तिजें जें उचमदिसे ॥ तेंसलहे आपेसे ॥ आवां सियें ॥ १६ ॥ एवं दावान
आसत्त्वज ॥ निरोपिलें तमरज ॥ तेंसांड निमलें काज ॥ सार्धा आपलें ॥ १७ ॥ सलें चिणे चोखाळें ॥ करीय जादिकें सकळें ॥ पावसी
तें करतळें ॥ आपलें निज ॥ १८ ॥ सूर्यें दावलें सातें ॥ काय येक नदिसे येथें ॥ तें विमलें केलियाळ्ळातें ॥ कायनेदी ॥ १९ ॥ इंकीर आ
वडतो विखी ॥ शक्ति सलीं आधिनिकी ॥ परिसोसे सीयेकी ॥ मिसळणें जें ॥ २० ॥ तें येक आनचि आहे ॥ तयाचा सावावो जें लाहे ॥
तें सोसाचाही होये ॥ गावीं सरतें ॥ २१ ॥ पें सांगारज ही पंधरें ॥ नही राजवकीचीं अदरें ॥ लाहे तें चिसरे ॥ जिघापरि ॥ २२ ॥ स्वच्छें
शीतळें सुगंधें ॥ जळें होती सुखप्रदें ॥ परिपवित्रत्वसंबंधें ॥ तीथांचे नि ॥ २३ ॥ नैर्दोकाभलें सीथोरी ॥ परिगंगाजें अंगिकारी ॥ तें
चितिये सागरी ॥ प्रवेशगा ॥ २४ ॥ तेंसे सात्विकाकर्मकिरीटी ॥ यत्तां सोहावा चि येथे नि ॥ न पडे आड काठी ॥ तें वेगळें आहे ॥ २५ ॥ हाबो
ल आयकत रंवी ॥ अर्जुना आधी नमाये जीवी ॥ द्वाणें देवें कृपाकरवी ॥ सांगावें तें ॥ २६ ॥ तेंच कृपाळ न चरनी ॥ द्वाणां आदिक नश
चीव्यक्ती ॥ जेणे सात्विकें ते सुक्ती ॥ रत्न दे रिवलें ॥ २७ ॥ प्रसो ० ॐ नत्सर्दिर्न नर्दं शोब्र ह्मणां निविधिः स्मृतः ॥ ब्राह्मणांसे न वे
दाश्च यसाश्च विहिताः पुरा ॥ २८ ॥ दी ० तरि अनादि परब्रह्म ॥ जें जगदादि विश्वासधाम ॥ तयाचें येक नाम ॥ विधापें असे ॥ २९ ॥ तें
कीर अनाम अजाती ॥ परि अविद्या वृत्ती चिये राती ॥ माजिवोळखावया श्रुती ॥ खुण नली ॥ ३० ॥ उपजलिया बाळकामी ॥ नोयना

हीं तथापासी ॥ ठेविलें निनावेसी ॥ वोढे तडोही ॥ ३३० ॥ कष्टलेस सागशिणी ॥ जेदें वोचने गीदाया ॥ पणनेदें नविजणा ॥ तोमंकुत
 हा ॥ ३१ ॥ ब्रह्माचा अबोल फिलावा ॥ भेद तू तू तलें तों भेदावा ॥ एसां सत्रदं गिलाकं वणा वंदे वाप ॥ ३३ ॥ मरादां दल निजो यक
 ॥ ब्रह्म आक विलेक वतिकें ॥ सागां असत हाके ॥ पुढाउमे ॥ ३३ ॥ परिनिगमाचळ शिरवरी ॥ उगी न पदाथ न गी ॥ आहात गद्य ह्म
 चाये काहारी ॥ तयां सिंचकळे ॥ ३४ ॥ हूही असो प्रजापती ॥ शक्त जसू टुकरती ॥ तेजया एक आदृति ॥ नामा न्विये ॥ ३५ ॥ पुरु
 षी चिया उपक्रमा ॥ पूर्व गी वीरात्तमा ॥ वेडा एसा ब्रह्मा ॥ चकला होना ॥ ३६ ॥ मज इस्मरा तेनां करे ॥ नासुही किं करुन शके ॥ तो न
 थोर केल्यायेकें ॥ नाम जेणे ॥ ३७ ॥ जयाचा अर्थ जिवी आनां ॥ जेवणांचा चि जपतो ॥ विम्यसु जन याग्य तो ॥ आलांत या ॥ ३८ ॥
 तेथ वारंचिले ब्रह्म जज ॥ तयां वेद दिथले शासन ॥ यत्नां एमं वतन ॥ जीविके कले ॥ ३९ ॥ पाठी निणों कर्त यंग ॥ स्त्री जल लोका अ
 पार ॥ जाले ब्रह्म दत्त अग्रहार ॥ तिही सुवन ॥ ४० ॥ एस नाम मंत्र जणे ॥ धातया अटळ चिकरण ॥ तथाचे स्वरूप आदिक क्षणे ॥
 श्रीकांत तो ॥ ४१ ॥ तरिसवमंत्राचारजा ॥ तो प्रणव आदि वणं वृद्धा ॥ आणित कारदुजा ॥ निमासत्कार ॥ ४२ ॥ एव ओतलसदाका
 र ॥ ब्रह्म नाम हे त्रिः प्रकार ॥ हे कुलतुरं विसुंदर ॥ उपनिषदांते ॥ ४३ ॥ यगां मीगा होऊनियेक ॥ जें कर्म चाले सानिक ॥ तें केवल्या
 तें प्रादिक ॥ धरिचें करी ॥ ४४ ॥ परिकार पुरांचे थळिव ॥ आयुनि दंड लटव ॥ लेवो जाणोचि अडव ॥ तेथ असे बाणा ॥ ४५ ॥ तें सं
 आद रिजेल सत्कर्म ॥ उच्चैरे लब्रह्म नाम ॥ परिनेणि जल जरिवमं ॥ विनियागाचें ॥ ४६ ॥ तरिम हंतं चिया कोडी ॥ घरा आलि
 ची ही वोदी ॥ मानुं नेषाता ही परवडी ॥ सुदल तुटे ॥ ४७ ॥ काल्या वयाचा गवट ॥ ही कसागार यक वट ॥ घालुनि बांधली मोट ॥ गळा
 जेवी ॥ ४८ ॥ तें सें तीं डों ब्रह्म नाम ॥ हातीं तें सानिक कर्म ॥ विनियोगे वीण काम ॥ विफळ होय ॥ ४९ ॥ अगा अन्ध आणि भूक ॥

पाठ. जो. ३२ अदंतले. ओ. ३२ पै. ओ. ५९ अदंत.

७

७

७

७

यासींअसपरिदेव ॥ जेऊंनेणतांबाळक ॥ लंघनचिकी ॥ ३५० ॥ कांस्तहसूत्रवेस्सनरा ॥ जोलियाहीसंसरा ॥ हातवरीनेणतांवीथ
॥ प्रकाशनोहे ॥ ५११ ॥ तैसेवेळेकृत्यपावे ॥ तेशिचामन्हीआठवे ॥ परिच्ययेंतेंआठवे ॥ विनियोगेवीणा ॥ ५१२ ॥ ह्मणोनियेवर्णात्र
यात्थक ॥ जेहंपरब्रह्मनामयेक ॥ विनियोगातूआडक ॥ यथाच्चाआतो ॥ ५१३ ॥ म्हणो ॥ तस्मादोमित्युदात्तस्यसदानतपः क्रियाः
प्रवर्ततेविधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ ११४ ॥ ती ॥ तरियानासोचो अस्मरेतर्हो ॥ कर्मा आदिमध्यनिदानी ॥ प्रयोजावीपे-
स्थानी ॥ इहोतिन्दी ॥ ५१४ ॥ हेचियेकिहातवटि ॥ घेउनीहूनकिरीटी ॥ आलेब्रह्मविदसेटी ॥ ब्रह्माचिये ॥ ५१५ ॥ ब्रह्मसीहोआवया
एकी ॥ तेनवेचतीथज्ञादिकी ॥ जेचावळेलेकोरवी ॥ शास्त्राचिया ॥ ५१६ ॥ तोआदितवोंकार ॥ ध्यानंकरितीगांचर ॥ पाठीआ
णितीउच्चार ॥ वाचेहीतो ॥ ५१७ ॥ तेपोध्यानेप्रकट ॥ प्रणवाच्चारेंस्पष्ट ॥ लागतीमगवाटे ॥ क्रियांचिये ॥ ५१८ ॥ आंधरीअभंगदिवा
आडवीसमर्थवाळावा ॥ तैसाप्रणवजाणावा ॥ कर्मांरसी ॥ ५१९ ॥ उचिंतदेचोदुशें ॥ द्रव्येंधर्मंआणिबुहुवसे ॥ दिजहाराहनहु
ताशी ॥ यजितीपेंते ॥ ३६० ॥ आहवनीयादिवद्दी ॥ निक्षपस्फुरीहवनो ॥ योजनीपेविधानी ॥ फुडेंहोउनी ॥ ६११ ॥ किंबुहुनानावाया
ग ॥ निष्पत्तीचेंघेउनीअंगा ॥ करितीनावडतेयात्याग ॥ उपाधीचो ॥ ६१२ ॥ कांन्यायेजोडलापवित्री ॥ मृत्योदिकंस्वतंत्रो ॥ देशकाकशु
दुपात्री ॥ देतीदानें ॥ ६१३ ॥ अथवायेंकातरांरुद्धी ॥ चांद्रायणेंसामोपवसी ॥ शाधोनिगाधातुगशी ॥ करितीतपें ॥ ६१४ ॥ एवंप्रस
दानतपें ॥ जियेंगाजतीबुंधरूपें ॥ तेहचिहायसापें ॥ मोक्षाचेंतया ॥ ६१५ ॥ स्थळींनावाजयादादज ॥ जळींनयाचजनीतरिजे ॥
तेविबहुकीकर्मसूटिजे ॥ नामेंयेणें ॥ ६१६ ॥ परिहेंअसोऐसिया ॥ यायज्ञदानादिकिया ॥ ६१७ ॥ कांरंसावायिलिया ॥ प्रवर्तनी ॥ ६१८
॥ तियासोदकियाजेथफळी ॥ रियोमाहातीनिहाळी ॥ प्रयोजितीतयेकाळी ॥ तच्छब्दानो ॥ ६१९ ॥ म्हणो ॥ नदित्यनभिसंथायंक
पाठः श्रीः ५१ संमारा ॥ श्री ५४ यानामासींच ॥ श्री ५४ मधुजावी ॥ श्री ५१ कर्मांरस ॥ श्री ६४ गोष्टनि ॥ ६४

लंयत्ततपः क्रियाः ॥ दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः ॥ १५ ॥ दी० जैसर्वो हो जगारयेते ॥ जै एकस्मिन् देवयेते ॥ जैनच्छब्दे
बोलिजते ॥ पहिलजेवस्तु ॥ १६ ॥ ते सर्वे दिकले चित्ता ॥ तदुपध्यावुनियसुमर्ता ॥ उच्चारे हो चित्ता ॥ आगिनीपदनी ॥ ३७ ॥ ह्यणत
तदुपाब्रह्मताया ॥ फलेंसी क्रियाद्या ॥ तेचिहोतु आह्मांभोगवया ॥ कांहीचिपुरो ॥ १७ ॥ ऐसंनिनदात्मकब्रह्म ॥ तथेउगाणूनि कर्म
॥ आगसाडितानमसे ॥ येणेंबोलें ॥ १३ ॥ आताओंकारें आदरिलें ॥ तत्कारेंसमपिलें ॥ दयार्तिजयाआलें ॥ ब्रह्मलकमा ॥ १३ ॥ तेंक
र्मकीरब्रह्माकारें ॥ जालेंतेंणेंहीनसरे ॥ जेंकरीतणेंसीदुसरे ॥ आहेंह्यणोनि ॥ १४ ॥ सीदुआंजळींविरे ॥ परिसारतावेमळा
उरे ॥ तेंसैंकर्मब्रह्माकारें ॥ गमेतेंहेंत ॥ १५ ॥ आगिदुजेजवजघडे ॥ तवतवससारभयजोडे ॥ हेदेवो आपलनिताडे ॥ बोलनीवे
दे ॥ १६ ॥ ह्यणोनिपरत्वेब्रह्मअसे ॥ तेंआत्मत्वेपरिवस ॥ सच्छब्दयारिणादोषें ॥ देविलादेवें ॥ १७ ॥ तरिओंकारतत्कारें ॥ कर्म
केलेंजेंब्रह्मशरीरें ॥ जेंप्रशस्मादिबोलवरी ॥ वाखाणिलें ॥ १८ ॥ प्रशस्तकर्मोतिथे ॥ सच्छब्दविनियोगआहे ॥ तोचिआइका
होये ॥ तेंसासांगों ॥ १९ ॥ म्ळो० सद्गोवेसाधुभावेचसादितेनत्ययुज्यते ॥ प्रशस्तकर्मणिनथासच्छब्दः पार्थयुज्यते ॥ २० ॥ दी० त
रिसच्छब्दयेणें ॥ आदुनिअसताचेनाणे ॥ दाविजअव्यगवाणें ॥ सत्तचेंरूप ॥ २० ॥ जेंसत्तचेंकाळेंदेशें ॥ हांऊंनेणेंचिअजारी
सें ॥ आपणयांआपणअसे ॥ अगवडित ॥ २१ ॥ हेदिसनेजतुलेंआहे ॥ तेंअसतपणेंआहे ॥ दूरवतारूपीसोये ॥ लाभजयाची ॥
२३ ॥ तेंणेंसिप्रशस्तेंकर्म ॥ जेंजालेंसर्वात्मकब्रह्म ॥ देविजकरुनिसम ॥ ऐक्यबोधें ॥ २३ ॥ तेंतरिओंकारतत्कारें ॥ जेंकर्म
दाविलेंब्रह्माकारें ॥ तेंगाळुनिहोइजेएकसरे ॥ सत्तात्रिचि ॥ २४ ॥ ऐसाहाअतरग ॥ सच्छब्दाचाविनियोग ॥ जाणाह्यणेश्रीर
ग ॥ मीनह्यणेंहो ॥ २५ ॥ नामीचिजरिहोह्यणें ॥ तारिश्चरींगीदुजेहेंचिउणें ॥ ह्यणोनिहेंबोलणें ॥ देवाचेचि ॥ २६ ॥ आताआ

पठ. ओ. ८२ दिसते.

६९.

७५.

७६.

७७.

७८.

णिकहीपरी ॥ सच्छब्दहा अवधारी ॥ सान्विक्रमां करी ॥ उपकार जो ॥ ८७ ॥ तनीसत्कर्म चंगे ॥ चालिले अधिकार बगे ॥ परि येका
 धें कां आंगें ॥ हिंगावर्तजें ॥ ८८ ॥ तें उणे येक अवचवें ॥ शरीर हा के आवचें ॥ कां अंग हीन मांडावें ॥ रथाची गती ॥ ८९ ॥ तें सें येकें -
 चिरुणें वीण ॥ संतचिपरी असंतपण ॥ कर्मधरीणा जाणा ॥ जिचे वेळे ॥ ३९० ॥ तें द्वां ओंकार नत्कारां ॥ सावाधिला चांगीपरी ॥ स-
 च्छब्द कर्मां करी ॥ जीर्णोद्धार ॥ ९१ ॥ तें असंतपण फुडें ॥ आणिसुद्धावांचि येथें ॥ निज संतलाचि येथें ॥ सच्छब्द हा ॥ ९२
 ॥ द्विच्योषध जें रोगिया ॥ कां सावाचोय भंगलिया ॥ सच्छब्द कर्माव्यंगलिया ॥ तें साजाणा ॥ ९३ ॥ अथवा कां हो प्रमादें ॥ कर्म अ-
 पुलिये मर्यादें ॥ चुकोनि पडे निषिद्धे ॥ वांटदून ॥ ९४ ॥ चालत याचि भागें सांडे ॥ पाररि वयाचि आखरे पडे ॥ राहटी भाजि न घडे ॥
 कादकाद ॥ ९५ ॥ क्षणोनि तें सीकमा ॥ गमस्य मांडे सीमा ॥ असाधुत्वाचि यादनां मा ॥ येवोण हे जें ॥ ९६ ॥ तेथे गाहासच्छब्द ॥ ये-
 गंदे हीपरी सप्रबुध ॥ प्रयोजिला करी साधु ॥ कर्मांतें येया ॥ ९७ ॥ लोहापरि साविष्य घृष्टी ॥ बोहकागो विष्ये मेदी ॥ कांसुत जें सी-
 बूष्टी ॥ यीपूयाची ॥ ९८ ॥ पै असाधु कर्मांतें सा ॥ सच्छब्द प्रयोगाची रक्षा ॥ हें असंगो रवंचि एसा ॥ नामाचा येया ॥ ९९ ॥ घेउनि -
 येथि चें वें ॥ जें विचारसी हें नाम ॥ तें केवळ हें विब्रह्म ॥ जाणसी तु ॥ १०० ॥ पाहें पां ओं तत्स नृ ए सें ॥ हें बोलणें तेथे नेतसे ॥
 जे खुनिकां हें प्रकाश ॥ दृश्य जात ॥ १०१ ॥ तें तें वनिर्निर्वाण ॥ परब्रह्म चारवट ॥ तथा चें हें आतुवट ॥ व्यजक नाम ॥ १०२ ॥ परि अत्र च-
 आकाशा ॥ आकाशचि कां जें सा ॥ यानां नामां आश्रयतें सा ॥ अभेद अस ॥ ३ ॥ उदधिला आकाश ॥ रवीं विरवीतें प्रकाश ॥
 हे नाम व्यक्त तें सी ॥ ब्रह्म करी ॥ १०४ ॥ क्षणोनि च्युत्सूर हें नाम ॥ नक्षे जाणक वळ ब्रह्म ॥ याही लागीं कर्म ॥ जें जें कां जे ॥ १०५ ॥
 यनेत पशिराने च स्थिति ॥ सादिति चोच्यत ॥ कर्म चें वत दर्श चं सति ते वाभिधीयते ॥ १०७ ॥ दी ॥ ते याग अथवादानें ॥ तपा

पार ओ ९१ जाति ओ ९२ रवई ओ ९३ जें ओ ९४ ब्रह्मचारी

६७

६८

६९

दिक्कंहींगहनें ॥ तैनिफजतुकांनूनें ॥ होऊनिवातु ॥ ६ ॥ परिपरिसाचावारकलीं ॥ नाहीचोसकडाचीबोलीं ॥ तैसीं ब्रह्मां अपितां
 केलीं ॥ ब्रह्मचिहोती ॥ ७ ॥ उणिचापुरयाचिपरि ॥ नुरेंचितथअवधारीं ॥ निवडुनयेतीसागरीं ॥ जेंसियानदी ॥ ८ ॥ एवंपार्थी-
 नुजप्रति ॥ ब्रह्मज्ञानाचीहेशक्ती ॥ सांगीतलिउपपत्ती ॥ ९ ॥ आपणियेककाहीअसरा ॥ वेगळवेगळावारा ॥ विनियो-
 गनागरा ॥ बोलिलोंरिती ॥ १० ॥ आतांएसंएवसुसहिम ॥ झणोंनिहेब्रह्मनाम ॥ जाणीतलेंकीसुखमं ॥ रायातुगो ॥ ११ ॥ तरियेशुनि-
 यांचीअद्दा ॥ उपलविलीहोसर्वदा ॥ जयाचेंजालेंबंथा ॥ उरोनदी ॥ १२ ॥ जियेकमीहाप्रयोग ॥ अनुष्ठीजेसहिनियोग ॥ तेथअनुष्ठी-
 लासांग ॥ वेदचितो ॥ १३ ॥ श्लो ० अद्दयाहुतंततपस्तसकृतंचयन ॥ असादितुच्यतेपार्थनचतत्येत्यनोदह ॥ १४ ॥ हरिः ॐ
 तत्सदितिश्रीमद्भगवद्गीतासू० संवादब्रह्मचर्यविभागयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥ दी० नासांडनिहेंसोये ॥ मोडनिअन्दे-
 चिचाहे ॥ दुराग्रहाचित्राये ॥ वाढऊनियां ॥ १५ ॥ सगअम्बमेधाकोडीकीजे ॥ रत्नेंमरोनिपृथ्वीदीजे ॥ येकशुद्धीहीनपिजें ॥ तप-
 साहलीं ॥ १५ ॥ जळाशयाचिनिवावे ॥ ससुद्धीकीजतीनवे ॥ परिकिंबहुनाआघवे ॥ वृथाचितें ॥ १६ ॥ पाषाणावरशिवलें ॥ जें
 सेंभस्मीहवनकलें ॥ कांखेंवेदीधलें ॥ साउलिये ॥ १७ ॥ नातरिजेंसंचडकणा ॥ गगनहाणीतलेअर्जुना ॥ तैसासमारंमसु-
 णीं ॥ गेलाचितो ॥ १८ ॥ याणागाकिलेंयुडे ॥ तेथजेलुनापुंडीजोडे ॥ तैसेंदरिद्रुतेवटे ॥ ठेलेंचिआगीं ॥ १९ ॥ गार्धबांधलीरवा-
 परि ॥ येथअथवापेलतीरीं ॥ नसरोनिजेंसीमारी ॥ उपवासीणां ॥ २० ॥ तैसैकमजातेंतेणें ॥ नाहीऐहकीचेंभोगणें ॥ ते-
 थपरत्रतोक्वणें ॥ अपेसावां ॥ २१ ॥ झणोंनिब्रह्मनामअद्दा ॥ सांडुनिकीजेतोधांदा ॥ हेंअसोसिणूजुसथा ॥ हथादृष्टीतो
 ॥ २२ ॥ ऐसैकलुषकरीकेसरी ॥ वितापतिभिरतमारी ॥ श्रीचरधीनरहरा ॥ बोलिलेतेंणें ॥ २३ ॥ तेथकिजानदाबहुवसा ॥ झा-

पाठः ओ. ५२० उपवासिन्ना. ओ. २३ आसुपवा. ओ. २३ नृ.

४३

४४

४५

जिअसुनतोसदसा॥हरपलाचंद्रजैसा॥चोंदणेंनि॥३४॥अहोसंशामहावाणिचा॥मोपेंनाराचांचियाआणिचा॥सूनिम
 सधेमवणिचा॥जीवितेंसि॥३५॥ऐसियासमर्थवैकेश॥मोरीजनस्वानंदराज्यकेंसे॥अजिमाग्योदयदानसे॥आणिके
 वंदें॥३६॥संजयक्षणेकोरवराचा॥गुणारिगोचैरिपूनिचा॥आणिगुरुहिहाअसुनिचा॥सुखाचावेथ॥३७॥दानपुसतां
 दगाडी॥नरिदवकासोदितगाढि॥तोरकेंसेनिआझोभेदी॥परमाथेसी॥३८॥होतांअज्ञानाचाआंधारा॥वोसतीतजन्म
 वाहरा॥तोआत्माप्रकाशसेदिरा॥आत आणिलं॥३९॥यवदाआझानुझोथार॥कलायेणेंउपकार॥क्षणांनिहाआसम
 हादर॥गुरुत्वेहोय॥३९॥तेविचरंजयाक्ष्मगान्ति॥हाअनिशययानृगनि॥खुपेलक्ष्मणोंनिकिति॥बालनअसो॥३९॥ऐसी
 देबोलीसांदिली॥मरायेरीचिगाईआदरिनी॥जपायेंकावुभिली॥श्रीकृत्याने॥३९॥चोचंजसंकाकरणें॥तेंसेभीहीकरी
 नयोलणें॥आधिकीजांजानंदवक्षणा॥निवृत्तीचा॥४३॥इनिअमावाथेदीपिकायांजानंदवविरचितायांसतदशा-
 ध्याय॥१७॥श्रीकृत्यापणमस्तु॥

पार ओ-२६ कर्मवर्षी ओ-४३३ तेंचिजसंजायेंनग

श्रीगणेशाय नमः॥ जयजयदेवनिर्मल॥ निजजनाखिलमंगल॥ जन्मजरजलदजल॥ ममंजन॥ १॥ जयजयदयवक॥ विदळितासु
 गळकुळ॥ निगमागमद्रुमफळ॥ फलुप्रद॥ २॥ जयजयदेवसकळ॥ विगतविषयवत्सक॥ कलितकाळसौख्यद॥ दलानीत॥ ३॥ जय
 जयदेवनिश्चळ॥ नैलितचित्तपानतुदिल॥ जगद्गुन्मीलनाविरल॥ केलिप्रिया॥ ४॥ जयजयदेवनिष्कळ॥ स्फुरदमदानदबहळ॥ नि
 त्यनिरस्ताखिलमल॥ मूळमूला॥ ५॥ जयजयदेवस्वप्नम॥ जगद्बुदगर्भनम॥ भुवनोद्भवभस्मम॥ भवभ्रम॥ ६॥ जयजयदे
 वविभुदु॥ विदुदयोधानिहिरद॥ शमदममदनमदमेद॥ दयार्णव॥ ७॥ जयजयदेवकलप॥ अतिकृतकदपसपदप॥ भक्तभाक्कुव-
 नदीप॥ तापापह॥ ८॥ जयजयदेवअद्वितीया॥ परिणतोपरमेकप्रिया॥ निजजनिजतमजनीया॥ मायागम्या॥ ९॥ जयजयदेवश्रीगुरो
 ॥ अकल्यनाकल्यतरो॥ स्वसंविद्रुमबीजप्ररो॥ हणावनी॥ १०॥ हंकारैकरोसे॥ नानापरिभाषावरो॥ स्तोत्रकरूतुजउद्देशो
 ॥ निर्विशेषा॥ ११॥ जिहींविशेषणीविशेषिजे॥ तेंदृश्यनळरूपतुसे॥ हेजाणेमीत्यणोभिलजे॥ वानणाइहो॥ १२॥ परिमर्योद
 चासागर॥ हातवंचितयाडगर॥ जवनदेवेसुधाकर॥ उदयाआला॥ १३॥ सोमकांतनिजनिर्दरी॥ चंद्राअर्घ्यादिकनकरी॥
 तेंतोचिअवधारी॥ करवीकीजी॥ १४॥ नेणोंकेशिवसंतसंगे॥ अवचितियावृक्षाचिअंगे॥ फुटतीतेंतयाहीजोगे॥ धरणेंनोहे
 ॥ १५॥ पद्मिनीरविकिरण॥ लाहेमगलजकुवण॥ कांजळेंशिवतलेंलवण॥ आगमुले॥ १६॥ तेंसातूतेंजयमीस्मरे॥ तथमीप
 णमीविसरे॥ मगजकळिलोटकरें॥ वसजेसा॥ १७॥ मजतुवाजीकेलेंतेंसे॥ माझेमीपणदवडुनिदशे॥ स्तुतिभिषेपचपि
 से॥ बांधलेंवाचे॥ १८॥ नायेन्हवींतरिआठवीं॥ राहोनिस्तुतिजेंकरावी॥ तेंगुणागुणसंधावी॥ सरोवरीकीं॥ १९॥ तारितू
 जीएकरसाचौलिंग॥ केवीकरूगुणागुणीविभाग॥ सोतींफोडोनिसाधितांचाग॥ कोतेंसेंचमले॥ २०॥ आणिबापतुंसाय॥
 पाठ० ओ० ४० चळ० ओ० ७० दानासंवेद०

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

इहीबोलीनास्तुती होय॥ डिंभोपाधिक आहे॥ विटाळतें ये॥ २१॥ जीजाले निपाईकें आले॥ तें गोसावीपण के विबोले॥ ऐसें उ
 पाधी उधितले॥ कायवर्ण॥ २२॥ जरि आत्मातूर कसरा॥ हे ही ह्यपातां दातारा॥ तरी आतुलतूळ हेरा॥ घापताभी॥ २३॥ ह्यपू
 निसैत्यचि तुजलागीं॥ स्तुती नदरे वें जीजगीं॥ मोनावांचु निळे पें आंगीं॥ सुसीनामा॥ २४॥ स्तुती काहीं निबोले गीं॥ पूजा का
 हीं नुकरणें॥ सन्निधी काहीं न होणें॥ तुझा दायीं॥ २५॥ तरि जितलें जें सें तुलीं॥ पिसें आला पधाली॥ तें सें वांचू तें माउली॥ उपसा
 हावें तुवा॥ २६॥ आतां गीताथचि मुक्त मुदी॥ लेववी माझ ये वागवुही॥ जे पें धामें सभा सदी॥ सज्जनाचा॥ २७॥ तें थें ह्यगितलें
 श्री निवृत्ती॥ नको हे पुढत पुढती॥ परिसी लोह पृष्टी किती॥ वेळ की जगा॥ २८॥ मंडविनि वीज्ञान देव॥ ह्यणे हो कांजी पसाव॥ तरि
 अवधान देत देवा॥ ग्रंथा आती॥ २९॥ जीगीतारत्न प्रसादाचा॥ कळस अर्थ चिंतनाची॥ चरदगीना दर्शनाचा॥ पाठा उजो॥ ३०॥
 लोकीं तरी आयी ऐसें॥ जे दुख निर्या कलशा दिसे॥ आपि भेदी नी हातवसे॥ देवता चितया॥ ३१॥ तें सें विण्यें ही आहे॥ जें केचि
 येणें अयायें॥ आयवांचि दृष्ट होये॥ गीतागमहा॥ ३२॥ श्री कलशयाचि कारणें॥ अदगावा अथय ह्यणें॥ वाइला बादरायणें॥ गीता
 आसादा॥ ३३॥ नोहे कलशापरतें काही॥ प्रासादी कामनाही॥ तें सांगतें संगीताही॥ संपन पणों॥ ३४॥ व्यामस झें मूर्ख बळीं॥ तें पोंनि
 गमरत्ना चकीं॥ उपनिषदा र्थाचि माळी॥ माजी रवां डिली॥ ३५॥ तें थें अचगचा अन्करा॥ आडुडनि घाला जो अपार॥ तो महा
 भारतप्रकार॥ प्रोवता कला॥ ३६॥ माजि आत्मज्ञान चें एकवट॥ दळवाइ साई निषाद॥ आडुड अथय कुठ॥ सवा दकुसरी॥ ३७
 निवृत्ति सूत्र सोडवणिया॥ सर्व शास्त्रार्थ पुरवणिया॥ आबो साधिला मांडवणिया॥ मांसे रेंवया॥ ३८॥ ऐसे निरति उभारा॥ पंध
 रा अध्यायात पभरा॥ प्रसी निवाळ लिया पुरा॥ प्रासाद जाहाला॥ ३९॥ परिसोळा वा अध्याय॥ मोखी विण्यें देवा आय॥ मस हश तोठा झ॥
 पाठ॥ ओं॥ ३३ साचा॥ ओं॥ २६ भूतकी, उपसा हे॥

॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

पडयाणियो॥४०॥तयाहीवरीअष्टदश॥तोअपैसामंडलाकलश॥उपरिगीतादिकीव्यासा॥ध्वजलागला॥४१॥द्वयोनिमगील
 जेअथाय॥तेचढतेधूमिचेआय॥तयाचेपुरंदारवविताहे॥आपुलाआगी॥४२॥जालथाकामानाहीचरी॥तेकलशेहोयउज्ज्वलते
 विशष्टदशविबरी॥साद्यतगीता॥४३॥ऐसाव्यासेविदाणिये॥गीतायासादसोडवणिय॥आणूनरा॥खलेअणिदे॥नानापरी
 ॥४४॥एकप्रदक्षिणाजपचिया॥बाहशेनिकरितीयया॥एकतेअवणामिषेछाया॥सेवितीयचवी॥४५॥एकतेअवधानचा
 पुरा॥विडापाडुसीतरंग॥घेडुनिरियतीगाभारा॥अर्थज्ञानाचा॥४६॥तेनिजबोधेउराउरी॥सेततीआत्मयात्रीहरी॥परिमोक्षप्रा
 सादीसरी॥सर्वोहोआथी॥४७॥समर्थचियेपुनिकभोजने॥तीळल्यावरिल्याएकपक्वान्ने॥तेविश्रवणेअर्थेपठणे॥मोक्षचिलामे॥
 ४८॥ऐसागीतावैष्णवावसाद॥अठरावाअध्यायकलशविशद॥स्याह्यणितलाहाभेद॥जाणोनिया॥४९॥आतांसप्तदशापाठी॥
 अध्यायकैसेनठुरी॥तोसंबंधसांगोदुष्टी॥दसेतैसा॥५०॥कांगगायमुनाउदक॥वोषवयोवेगळिक॥दावीहोउनिएक॥पाणीणणे
 ॥५१॥नमोडतादोन्हीआकार॥घडिलेएकशरीर॥हेअर्धनारीनरेश्वर॥रूपीदिसे॥५२॥नानावाढलीदिवसे॥कळाबिबीपैसे॥
 परिमिनानेलेवजैसे॥चंद्रीनाही॥५३॥तैसींसिनानीचारीपदे॥श्लोकश्लोकावछेदे॥अध्यायअध्यायभेदे॥गमेकीर॥५४॥
 परिमेमेयाचीउजरी॥आनानरूपनधरी॥नानारत्नमणीदीरी॥एकचिजैसी॥५५॥मोतियेमिळोनबहुवे॥एकावळीचापा
 डुआहे॥परिशोभेरूपहोये॥एकचिजैसे॥५६॥फुलाफुलसरांलेखचढे॥दुतींदुजीआगळीनपडे॥श्लोकअध्यायतेणेपडे॥जग
 णावेहे॥५७॥सातशतश्लोक॥अध्यायांअठरांचेलेख॥परिदेवबालिलेएक॥जेंदुजेनाही॥५८॥आणिम्याहीनसांडोनिसेये
 ग्रंथाव्यक्तीकेलीआहे॥प्रस्तुततेणेनिर्वाहो॥निरूपणआइका॥५९॥तरीसतरावाअध्यावा॥पावतांपुरताठाव॥जेंसंपतांश्लो
 पाठ॥ओं॥५५॥प्रेमाचो॥

॥४१॥

॥४२॥

॥४३॥

॥४४॥

की देवा बोलि ले सें ॥ ६० ॥ अर्जुना ब्रह्म नामाचा विस्वी ॥ ब्रह्मांडुनि आसि की ॥ कर्म किंजती तनु की ॥ असंतें होती ॥ ६१ ॥ हरे
को नि देवांचा बोला ॥ अर्जुना आला डोला ॥ स्मरण कर्म निष्ठ मूढा ॥ ठविला देखा ॥ ६२ ॥ ते अज्ञानांत वबापुडा ॥ ईश्वर चि न देखे एवदा ॥
तुंथे नावक पुढा ॥ कांस्तु अतया ॥ ६३ ॥ आणि रजसें दोन्ही ॥ गोलयाची गथ्य द्वा सानी ॥ ते कां लागे अभिधानी ॥ ब्रह्माचियो ॥ ६४ ॥ मग
को तारें वदणें ॥ वीतें वरि लुं भावणें ॥ सडीं पडे रे वळणें ॥ ना गिणी चें तें ॥ ६५ ॥ तें सीकें मंदु वाडें ॥ तया जन्मांतराची कडे ॥ दुर्मेळा वेय
वढो ॥ कर्म माजी ॥ ६६ ॥ ना विपायें हें उजू होये ॥ तरि ज्ञानाची योग्यता ला हो ॥ ये हवी यों चि जाये ॥ निरयालया ॥ ६७ ॥ कर्म हा
ठाय वरी ॥ आह्मसी बुद्धा अवसरी ॥ आनो कर्म द्या के ये वरी ॥ मोक्षाची हे ॥ ६८ ॥ तरी फिटो कर्मचा पंग ॥ कींजो अवया चित्तया ॥
आदरी जो अव्यंग ॥ सन्यास हा ॥ ६९ ॥ कर्म बाधेची कां ही ॥ जेथ प्रयाची गोटी ना ही ॥ तें आत्मज्ञान जिही ॥ स्वाधीन होये ॥ ७० ॥
ज्ञानाचे आवाहन संव ॥ ज्ञानापिक तें स्मरेव ॥ ज्ञान आकाशें तें सूत्र ॥ तंतु जे कां ॥ ७१ ॥ ते रानी सन्यास त्याग ॥ अनुष्टु नि सुतेज
ग ॥ तरि हे नि आतांचांग ॥ व्यक्त पुसो ॥ ७२ ॥ ऐसें स्वर्णो नि पार्थी ॥ त्याग सन्यास व्यवस्थ ॥ रूप हो अवयजेथें ॥ मय न केला ॥ ७३ ॥ तेथ
प्रफुल्ल रे बोली ॥ श्री कृष्णें जे चावळिली ॥ तया व्यक्ती जाली ॥ अष्टादशा ॥ ७४ ॥ एवज्य जनक भावें ॥ अथाय अथायातें प्रसदे ॥ आ
तां ऐका बरवें ॥ पुर्मिलें जें ॥ ७५ ॥ तरि पंडुकु मरें तेणें ॥ देवांचें सर तें बोलणें ॥ जाणोनि अंतः करणें ॥ काणी पेंतली ॥ ७६ ॥ ये हतस्त वि
षयें मिला ॥ तो निश्चित असैं की रजा हा ला ॥ परि दोरा हे उगला ॥ तें साहावे ना ॥ ७७ ॥ वत्स धालया ही वरी ॥ धेनु नवचावी दुरी ॥
अनन्य प्रीतीची परी ॥ ऐसी आहे ॥ ७८ ॥ तेणें काजें वीण ही बोलावें ॥ तें देखें तें तरी पाहावें ॥ प्रीति तें चाडु दुणावें ॥ पठियं तया वा
यी ॥ ७९ ॥ ऐसी प्रेमाची हे जंती ॥ अमण पार्थ तें वतो चि मूर्ती ॥ स्वर्ण नि करू ला हे वंती ॥ उगे पणाची ॥ ८० ॥ आणि संवादाचे नि
पाठ ॥ ओं ॥ ७२ ॥ बंकी ॥ ओं ॥ ७६ ॥ सरनां ॥ ओं ॥ ७७ ॥ आहे ॥ ॥ ७८ ॥

भिषं॥ जे अव्यवहार वस्तु असे॥ ते चि सो गिजे कीजेसे॥ दुर्पणी रूप॥ ८१॥ मग सवा दू तो ही पारुषे॥ तो रोगी गनं तोग पायाक॥ हे सहा
 वेळ सखें॥ लांचा वलेया॥ ८३॥ यालागी त्याग संन्यास॥ पुसावया चें घेई निमिष॥ मग उपला वेलें दुस॥ गति नें॥ ८३॥ अठगवा अध्या
 य मोहो॥ हे एकाध्यायी गीता चि आहे॥ जे वत्स चि घेनु दुहे॥ ते वेळ कायसी॥ ८४॥ तेसी संपनं अवसरी॥ गीता आदर विली माधारी॥ स्वा
 सी मृत्या चान करी॥ संवाद काई॥ ८५॥ परि हें असे ऐसं॥ अर्जुने पुंमि जत असे॥ म्हणो वनंती व्रतेशो॥ अवधारिजे॥ ८६॥ अहो॥
 अर्जुन उवाच॥ सन्यास स्तु महां बाहो तत्व मिच्छा मि वी दुतुम्॥ त्याग रय चतुर्थ केश एथ कं शिनि वृद्धन॥ १॥ टी०॥ हांजी सन्यास
 आपित्यावा॥ इयां दोणें के अर्थी लाग॥ जैसा सांघात आपि सघ॥ सघातें चि बोलिजे॥ ८७॥ तें सें चित्या गें आपि सन्यासे॥ त्याग
 चि बोलि जत असे॥ आमचे नितव मानसे॥ जाणिजे हें चि॥ ८८॥ नाकां हीं आधी अर्थ मेद॥ तो देव करी सुविषाद॥ जेथ ह्यणनी म्ही
 मुकुंद॥ भिन्न चि पै॥ ८९॥ तरि अर्जुना तुझा मनी॥ त्याग सन्यास दोनी॥ एका र्थग मले हे मानी॥ सीही सात्त्व॥ ९०॥ इहां दोहो की
 र शब्दी॥ त्याग चि बोलिजे चि शुद्धी॥ परिकरण एक मेदी॥ येतुलें चि॥ ९१॥ जें मपदुनि कर्म सांदिजे॥ तें सांदिणें सन्यास द्वाणि
 जे॥ आपि फळ मात्र कां त्यजिजे॥ तो त्याग गा॥ ९२॥ तरी कोणा कर्म चें पळ॥ सांदिजे कोण कर्म के वळ॥ हेही सांगों वै वळ॥ चि न देई॥ ९३
 तरि आपै सीं दांगें डोंगर॥ झाडें लागती असार॥ नैसे लांब राजागर॥ नुठतीति॥ ९४॥ नपेरितो सें यत्तुणें॥ उठनी तें सें साळि चें होणें॥ ना
 हीं गारा बाउणें॥ जिण परी॥ ९५॥ कं अंग जाहालें सहजें॥ परिलेणें उद्यम के जे॥ नदी आपै सीं आपादिजे॥ विहरि जेवी॥ ९६॥ जें सें
 नित्य नैमित्तिक॥ कर्म होय स्वाभाविक॥ परिनका भितां कामिक॥ नमि फजे॥ ९७॥ अहो॥ श्री भगवानुवाच॥ काय्या नो कर्मणां
 न्यास सन्यास कवयो विदुः॥ सर्व कर्म फल त्यागं प्रादुस्त्यागं विचक्षणाः॥ ३॥ टी०॥ कां काम न चें दळ वाडो॥ उभारा वया जे पडो॥ अश्व
 पाठ-ओं-८१ आर्त्ता-ओं-८३ उपरत विलें-ओं-९३ एक वेळ॥

॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

भेषादिकं फुडें॥ यागजेष॥ १८॥ वापीकूपआरास॥ अग्रहारं हनमहाग्राम॥ आणीकहीनानासंभ्रम॥ व्रतं जे॥ १९॥ ऐसें इष्टापूर्-
 तसकळ॥ जयाकामनाएकमूळ॥ जेकेलें भोगवी फळ॥ बोधोनियां॥ १००॥ देहाचियागांवाआलिया॥ जन्ममृत्युचियासोहळ-
 सा॥ नास्मणोनयेधनंजया॥ जियापरी॥ ११॥ काललादींचिलाहलें॥ नमोडेगांकाहीकेलें॥ काळें गोरपणधुतळें॥ फिदोनेणो॥ १२॥ के-
 लें काव्यकर्म तें सें॥ फळभोगावयाधरणें बैसे॥ नफेडितां झणजे सें॥ वोसंडीना॥ १३॥ कां कामनाहीनकारतां॥ अवसांत पडेपुडु-
 ता॥ तारि वायकांडनजुं झतां॥ लागें सें॥ १४॥ गुळनेण तांतें डी॥ घातलादेचि गोडी॥ आगीमानून निरांखेडी॥ चेपलापोळी॥
 १५॥ काव्यकर्म हें एक॥ सामर्थ्य आधीं स्थाभाविक॥ स्मरणोनि कोकोतुक॥ मुमुक्षू एथ॥ १६॥ किबहुनापाय ऐसें॥ जेकाम्यकमया
 असें॥ तें त्यजि जे विष जें सें॥ वोकूनियां॥ १७॥ मगतया त्यागा नंजगी॥ सन्यास ऐसया मिंगी॥ बोलिजे अंतरंगी॥ सर्वदृष्टा॥ १८॥
 हें काव्यकर्म सांडणें॥ तें कामने तें चिउपडणें॥ द्रव्यत्यागें दवडणें॥ भयजें सें॥ १९॥ आणिसोमसूर्यग्रहणें॥ येडुनि करविती पार्व-
 णें॥ कामातापितरमरणें॥ अर्कित जें दिवस॥ ११०॥ अथवा अतिथी हनपावे॥ हे ऐसें सें पडे जें करवावे॥ तें तें कर्म जाणावें॥ नैमित्ति-
 कगा॥ १११॥ वर्षियालो भोगगन॥ वसंतें दुणावेवन॥ देहाभुंगारी योंवन॥ दशजसी॥ ११२॥ कांसोमकांत सोमें पयळे॥ सूर्यें फां-
 तीकमळें॥ एथ असतें चिपल्लाळे॥ आनये॥ ११३॥ तें सें नित्य जें कां कर्म॥ तें नैमित्तिक चले हो नियम॥ एथ उंचावे तेणेनाम॥ नैमि-
 त्तिक होये॥ ११४॥ आणिसायं प्रातर्मध्यान्हीं॥ जें कां करणी यम्यति दिनी॥ परिग्रहीजे सीलोचनी॥ अधिकनोहे॥ ११५॥ कां नापादि
 सांगती॥ चरण जें सीआथी॥ नातरी ते दीप्ती॥ दीप बिंबी॥ ११६॥ वामनें हत जें सें॥ चंदनी सोरप्य असे॥ अधिकार चें तें सें॥ रूप
 चिजें॥ ११७॥ चित्यकर्म सें जनी॥ पाया बोलिजे ते मानी॥ एवनि न्य नैमित्तिक दोन्ही॥ दाविलीं तुज॥ ११८॥ हें चानित्य नैमित्तिक॥

॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

पाठ-ओं-८ प्राणी-३ओं-१५ करणें तें ही-३ओं-१७ सौगंध्य

अनुष्ठेय अवश्यक ॥ द्युणोनिद्वयोपाहतीएक ॥ वां झययते ॥ १९ ॥ परीमोजनें जे सें होये ॥ तृतीलापे भूक जाये ॥ ते सें नित्य
 ने भिन्न कीं आहे ॥ सर्वांगी फळ ॥ २० ॥ कीड आंगिठा पडे ॥ तारिमळ तुटवानी चढे ॥ ययाक मत्तया सागडे ॥ फळ जाणावे ॥ २१ ॥
 प्रत्यवाय तें वगळे ॥ स्वाधिकार बहु वंजळे ॥ तेथ हातौ फळीया भिळे ॥ सहतीसी ॥ २२ ॥ येवढें वरी दिसाळ ॥ नित्य नै भिन्न कीं आ
 हे फळ ॥ परितें त्या जे मूळ ॥ नक्षत्री जे सें ॥ २३ ॥ लता पिके आयवी ॥ तंव च्युत बांधे पालवी ॥ मग हात नलावत माधवी ॥ सोडु-
 नियाली ॥ २४ ॥ तैसी नोलां डितां कर्म रेवा ॥ चित्त दीजे नित्य नै भिन्निका ॥ पाठी फळा कीजे अशेरवा ॥ वांता चि वानी ॥ २५ ॥ बयक
 म फळ त्यागा तें ॥ त्याग ह्मणती पै जाणते ॥ एव त्याग सन्यास तूतें ॥ परिस्म विले ॥ २६ ॥ हा सन्यास जे संप्रवे ॥ तें कास्य बांधून पवे ॥ नि
 षिद्ध तंव स्वभावे ॥ न षिद्ध गेले ॥ २७ ॥ आणि नित्या दिक जे असो ॥ तें येणे फळ त्यागे नाश ॥ शिरलो ठिल्या जे सें ॥ येरभाग २८
 मग सस्य फळ पाकांत ॥ तै सें निमालिया कर्म जात ॥ आत्म ज्ञान गंव भित्त ॥ अपे सें ये ॥ २९ ॥ ऐसिया निगुती दोनी ॥ त्याग सन्या
 स अनुष्ठेनी ॥ चढलेगा आत्म ज्ञानी ॥ बांधती पाट ॥ ३० ॥ नातरी हे निगुती चुके ॥ मग त्याग कीजे हात तुकें ॥ तें काही नित्य जे अधिकें
 ॥ गोवीं चि पडे ॥ ३१ ॥ जें औषध व्याधी अनोळखा ॥ तें येत त्या परतें विरवा ॥ कोअन्न मानितां भूक ॥ नमारी काय ॥ ३२ ॥ द्युणोनि
 त्याज्य जे नीहे ॥ तेथ त्यागा तें नसू वावें ॥ त्याज्या लागीं नोहावें ॥ लोभ पर ॥ ३३ ॥ चुकलिया त्यागा चें वंझे ॥ केला सर्व त्याग ही होय वो
 जें ॥ नदेरवती सर्व दुजें ॥ वीतराग ते ॥ ३४ ॥ श्लो ॥ त्याज्य दोष वीदुं येके कर्म माहु मर्नीषिणः ॥ यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्य भि
 तिचा परे ॥ ३५ ॥ टी ॥ एकां फळ त्याग नटाकें ॥ तै कर्म तें द्युणती बंधकें ॥ जे सें आपण नग्न भांडकें ॥ जगा तें द्युणो ॥ ३५ ॥ काजिद्धा
 ले पद रोगिया ॥ अबे दूषी धनंजया ॥ आंगा नरुसे कोटिया ॥ मासियां कोपे ॥ ३६ ॥ तै सें फळ काम दुर्बळ ॥ द्युणती कर्म चि किडाळ ॥
 पाठ ॥ ओं- २२ हाता- ओं- ३० निरुते ॥ ओं- ३४ बुसें- ओं- ३५ फलाभिलाष नटे-

॥ ध ॥

॥ ध ॥

मगनिर्णयदेतीकेवळ॥ त्यजवेंऐसा॥ ३७॥ एकद्वणतीयागादिक॥ करावेंचअवश्यक॥ जयावांचूनिशोपक॥ आसनसै॥
 ३८॥ मनश्रद्धाचामार्गी॥ जेंविजयीव्हावेंवेगी॥ तेंकर्मसबळा लागी॥ आळसमकीजे॥ ३९॥ भागारअथोशोधावें॥ तरीआ
 गीजिबीनुबगावें॥ कांदर्पणालागीसांचावें॥ अधिकैज॥ ४०॥ नानावस्तुंचोरवहोआवी॥ ऐमेंआधीजरजीवी॥ तरीसोंदणोन
 ममवी॥ मलिनतें॥ ४१॥ तैसीकर्मकुशकरें॥ द्वणोंनन्यावीअद्वरें॥ काअन्नासैंअरुवारें॥ राधितियेउणें॥ ४२॥ इहीइ
 हींशास्त्री॥ एकीकर्मोंबांधविजतीबुद्धी॥ ऐसात्यागविसंवादी॥ पडोनिठला॥ ४३॥ तरीविसंवादतोफटे॥ त्यागाचाभिश्च
 यसेटो॥ तैसंबोलीगोमटे॥ अवधानदेइया॥ ४४॥ श्लो०॥ भिश्ययथ्युपमेतत्रत्यागोमरतसत्तम॥ त्योगोहिपुरुषव्याघ्रविधिः
 संपर्कीर्तितः॥ ४५॥ तरीत्यागएथेपांडवा॥ त्रिविधेजाणावा॥ तयात्रिविधाहीब्रवा॥ विसागकरू॥ ४५॥ त्यागानेतीनी
 प्रकार॥ कीजतीजरीगोचर॥ तरीसूइत्यर्थाचेसार॥ इतुलेंजाणा॥ ४६॥ मजसर्वज्ञाचियेहीबुद्धी॥ जेंआलोढमानेत्रिमुद्दी॥
 निश्चयतलवेंआधी॥ अवधारीपां॥ ४७॥ तरिआपुलीयेसोडवणें॥ जोमुमुक्षुजागोंद्वणें॥ तयासर्वस्वेंकराणें॥ हेंचिएक॥ ४८
 श्लो०॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यकार्यमेवतु॥ यज्ञोदानंतपश्चैवपवानांमनूषिणाम्॥ ५०॥ तरी०॥ जियेयज्ञदानतपादि
 के॥ इयेंकर्मअवश्यक॥ तियेनसाडावीपाथिकें॥ पाउलेंजैसी॥ ४९॥ हरपलनदेखजे॥ तंवतयाचामार्गनसाडजे॥ काद्वे
 सनहोतानलोद्विजे॥ भाणेंजैवी॥ ५०॥ नावथडीनपवतां॥ नसांजिजैकळीनफळतां॥ काठेविलेंनदिसतां॥ दीपजैसा ५१
 तैसीआत्मज्ञानविषईकी॥ जंवनिश्चितीनाहीनकी॥ तंयनोहावेंयागादिकी॥ उदासीन॥ ५२॥ तरिस्वाधिकारानुरूप॥
 तियेयज्ञदानंतपें॥ अनुष्ठावीविसाक्षेपें॥ अधिकेंवरी॥ ५३॥ जेचालणेंवेगवतजाये॥ तेवेगवैसावयाचिहाये॥ तैसाक
 पाठ-ओं० २८-नाहीं० ओं० ४१जैसी० ओं० ४४परि० ओं० ४५० सांगों०

मांतिशयोआहे॥ नैकर्म्या लागी॥ ५४॥ अधिकेंजंजवओषधी॥ सेवनेंचिमाडबाधी॥ तंवतंवसूकिजेव्याधी॥ नया-
 चिये॥ ५५॥ तैसीकर्म हातोपाती॥ ऐकीजतीयथा॥ निगुती॥ तैरजतमेझडती॥ झाडादेउनी॥ ५६॥ काशटोसतपुढे॥ की
 गाराखार देणेंघरे॥ तैकीडझडकरीतुढे॥ निव्याजहाये॥ ५७॥ तैसीनष्टाकलेंकर्म॥ तैसाडिकरुनिरजतसं॥ मगसत्सुत्थी
 चेंधाम॥ डोळादावी॥ ५८॥ द्यणो नियाधनजया॥ सत्वशुद्धीगंवसीतया॥ नीर्थाचियासावाया॥ आलिकमें॥ ५९॥ तीथिबाह्य
 मळसाळे॥ कर्मअस्पतरउजळे॥ एवंतेंथिजाणनिमळे॥ सत्कर्मची॥ ६०॥ तृषार्तामारुवाडेशी॥ झळेंअमृतेंवोळजिंसी
 ॥ कीअंथालागींढोळयासी॥ सूर्यआला॥ ६१॥ बुडतयानदीचिधाविब्ली॥ पडतयाएथ्वीचि कळवळी॥ निमतयासृत्युनेंदी
 धली॥ आयुष्यरुंदी॥ ६२॥ तैसंकर्मबाधता॥ मुमुक्षुसाडिवलेपडुसता॥ जैसारसरतीमरता॥ राखिलाविषे॥ ६३॥ तै-
 सीएकेहातवटिया॥ कर्मकिजेतीधनजया॥ बंधकेंचिसाडवावया॥ मुखेंहोती॥ ६४॥ आतंतेंचिहातवटी॥ तुजसांगो
 मरी॥ जयाकर्मतींकिरीटी॥ कर्मचिरुसे॥ ६५॥ श्लो०॥ एतान्यपितुं कर्माणि मंगत्युक्ता फलानि च॥ कर्तव्यानीतिमैपार्थनि
 श्रितेभतभुत्तमसू॥ ६६॥ टी०॥ तैरिमहायोगप्रमुखे॥ कर्मनिफजताहीअचुके॥ कर्तपणाचेंनटाके॥ फुंजणेंआगी॥ ६६॥
 जोमोलेंतीर्थजाये॥ तयामीयात्रा करितआहे॥ ऐसियाश्लाघ्यतेचानोहे॥ तोषजीर्वा॥ ६७॥ कांमुद्रासमर्थाचिया॥ जोए
 कवटझोंबेराया॥ तोभीजिणतौऐसिया॥ नयेचिगर्वा॥ ६८॥ जोकांसेलागोनितरे॥ तयापेहातीमोएसिऊमीनुरे॥ पुरोहि
 तनाविकुरे॥ दातेपणें॥ ६९॥ तैसंकर्तृत्वअहंकरें॥ नेयोभयथाअवसरें॥ कृतजातंचेंमोहरें॥ सारीजती॥ ७०॥ कल्याक्या
 पांडवा॥ जोआर्थीफळाचायावा॥ तयामोहराहोनेदाबा॥ मनोरथ॥ ७१॥ आर्थीचिफळांआशातुटिया॥ कर्मआरंभाविंधनज-
 पाठ॥ ओ॥ ६१ कर्मकरं बहुला, ओ॥ ६८ जाणता ओ॥ ७० मोहारे, ओ॥ ७१ आणिकेलिया कर्म,

या॥ परावें बाळ धाय॥ पाहजे जें सें॥ ७३॥ पिंपरुवांचि आशा॥ नासिं पिजे पिंपळ जें स॥ तें सिया फळा निराशा॥ कीजती क
र्म॥ ७३॥ सांडूनि दुधाची रकळी॥ गोंवारि गां वधे नूवें दाळी॥ किंबहुना कर्म फळी॥ तें सें कीजि॥ ७४॥ ऐसी ह्म हातवरी॥ पेंडें-
निजे क्रिया उठी॥ आपण आपुलिया गांठी॥ लाहे चिन्ता॥ ७५॥ ह्मणीनि फळी लाग॥ सांडोनि देही संग॥ कर्म करवी हाचांगा॥
निरोप साझा॥ ७६॥ जो जीव बंधी शीणला॥ सुटके जाचे आपला॥ तणें पुढत पुढतीया बोला॥ आनन कीजे॥ ७७॥ श्लो॥ निय
त स्य तु स्यासः कर्मणो नोपपद्यते॥ मोहात्तभ्यपरित्यागस्तामसः परिकीर्तितः॥ ७८॥ तयाचें कर्म सांडणें॥ तेंतामसमी ह्मणें॥ शिसाचे निरागें लोटणें॥
गोंवजती नवें॥ तेंसाकर्म दूषें अशें रेवें॥ कर्म चि सांडी॥ ७८॥ तयाचें कर्म सांडणें॥ तेंतामसमी ह्मणें॥ शिसाचे निरागें लोटणें॥
शिरोचि जें सें॥ ७९॥ हागा माग दुवाड होये॥ तरी निस्तारिती ते पाये॥ कीं तें चि रवांडणें आहे॥ मागां पारधें॥ ८०॥ भुके लिया पुढे
अन्न॥ होका भल तें सें उघ्या॥ बुद्धी न घेता लंघन॥ भाणें पाप राहल्या॥ ८१॥ तेंसाकर्म चा बाध कर्म॥ निस्तारिजे करि ते निवर्स॥
हेंतामस नणें फ्रमे॥ साजविला॥ ८२॥ कीं स्वभावं आलें विभागा॥ तें कर्म चि वो सें डीपिंगा॥ तर स्मणें आतला त्यागा॥ तामसात
या॥ ८३॥ श्लो॥ दुःखमिसे वयत्कर्म काय क्लेश प्रयान्यजेत्॥ सकलाराजसं त्यागं नैव त्याग फलं लभेत्॥ ८४॥ अथवा स्वा
धिकार बुझें॥ आपुलें विहित ही सझें॥ परिकरित या उबजे॥ निबरपणा॥ ८४॥ जे कर्म रंभाची ऐली कडा॥ नवे कादसे दुवाड॥
जेवा हात येवें लजडा॥ शिंदी रजिमी॥ ८५॥ जेंसा निंबाजि भेकडवटा॥ हरडा पाहिले तुरदा॥ तेंसाकर्म ऐले सेवटा॥ स्वपुवाळा
होये॥ ८६॥ कांधे नुवुवाड शिंगा॥ शेंवतिये आडव आगा॥ भोजन सूरवम हागा॥ पाक करितो॥ ८७॥ तें सें पुढत पुढती कर्म॥ आ
रंभीं चि अति विषम॥ ह्मणोनि ते ते मम॥ करितां मानी॥ ८८॥ येन्ही विहित त्वें माटी॥ परिघालितां अस्तर बाडी॥ तथे पोळले छा
पाद-ओं. ७८॥ अमिकें. ओं. ७९॥ लावणें. ओं. ८०॥ रां धिं तां रां यी॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥

संडी॥ आंदरिलेही॥ ८९॥ ह्यपोवस्तदेहासारिवी॥ आलीबहुतीमाग्यविशरवी॥ माजाचुकांकर्मादकी॥ पापियाजेसा॥ ९०॥
 केलेकर्मजिंघावें॥ तेंझणेंभजहोआवें॥ आजिभोगूनाबरवें॥ हातिचेभोगा॥ ९१॥ ऐसाशरीराचियाह्लेश॥ भेणेंकर्मवीरेश॥ संडी
 तोपरियेसा॥ राजस त्यागा॥ ९२॥ येह्वीतेंयहीकर्मसांडें॥ परितयात्यागफळनजोडे॥ जेसेउतलेंआगतिपडे॥ तेंनलगोचिहोसा॥
 ९३॥ कांबुडोनिम्राणगेले॥ तेअर्धोदकींनिमालें॥ हेंद्वणोंनयेजाहालें॥ दुर्मरणाचि॥ ९४॥ तेंमेंदेहाचेनिलोभें॥ जेणेंकर्मपापिसुमे
 ॥ तेंणेंसान्चानलसे॥ त्यागाचेंफळ॥ ९५॥ किंबहुनाआपुलें॥ तेंणेंज्ञानहोयउदयाआलें॥ तेंणेंनक्षत्रातेंपाहालें॥ गिळीजेंमें॥ ९६॥ ते
 शासकारणक्रिया॥ हारपतीधनंजया॥ तोकर्मत्यागयंजया॥ मोक्षफळेसी॥ ९७॥ तेंमोक्षफळअज्ञाना॥ त्यागियानाहींअर्जुना
 ॥ द्यणोंनितो त्यागनव्हेमाना॥ राजसते॥ ९८॥ तरिकोणेपाण्दत्यागें॥ तेंमोक्षफळपरिघे॥ हेंहीआइकप्रसंगें॥ बोलिलेला॥ ९९॥
 श्लो०॥ कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेर्जुन॥ संगत्यत्काफलंचैव सत्यागः सात्विकोमतः॥ १०॥ टी०॥ तरित्वाधिकाचनिनावें॥
 जेंवांटियाआलेंस्वभावं॥ तेंआचरेविधिगोरवें॥ शृंगारोनि॥ २००॥ परिहर्मीकरितअसें॥ ऐसाआठवत्यजीमानसें॥ तेंमेंचिपाणीदेआवें
 ॥ फळाचिये॥ ११॥ पेंअवज्ञाआणिकामना॥ मातेचाठायींअर्जुना॥ केलियादोनीपतना॥ काण्होतो॥ २१॥ तरिदोनीयेंतजवी॥ म-
 गंधानाचिनेभजवी॥ वांचूनिमुरवलागिंबळवी॥ गायाचिसगळी॥ ३॥ आवडतियेहीफळीं॥ असारेसालीआठोळी॥ त्यासाठो
 अवगळी॥ फळातेंकोणही॥ ४॥ तेंसाकर्तृत्वाचासद॥ आपिकर्मफळाचाअस्वाद॥ दोहीचीनाभेंबंध॥ कर्मचिकीं॥ ५॥ तरियादो
 हींचाविधी॥ जैसाबापनातलेलेंकीं॥ तेंसाहानशकेदुःखी॥ विहितक्रिया॥ ६॥ हातो त्यागतुरुवर॥ जोगामोसफळेंयेथोर॥ सावि
 करेसाडगर॥ ययासिजगीं॥ ७॥ आतोजाळूनिबिजजेंसें॥ झाडाक्रीजेनिर्वेश॥ फळत्यागूनैकर्मतेंसें॥ त्यजिलेजणें॥ ८॥ लोहो
 पाठ-ओं-२ हेतु-ओं-८ त्यजुनि-ओं-९ तया-

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

लागतखेवोपरिसीं॥ धातूचींगंधिकाळिमाजैसी॥ जातीरजनमेंतैसीं॥ तुटलींदोन्ही॥ ९॥ भगसत्वेचोखाळें॥ उघडनीआत्मबो
 धाचेडोळे॥ तेथमृगांबुसोंजवेळे॥ होयजैसें॥ १०॥ तैसाबुध्यादिकांपुढें॥ असतचिविशवाभासयेव्हटा॥ तोनदेखेकवणीकडां॥ आ
 काशजैसें॥ ११॥ श्लो०॥ नदेंद्रुकुशलकर्मकुशलेनानुषज्जते॥ त्यागीसत्समाविशेधामेधवीछिन्नसंशयः॥ १०॥ टी०॥ आणि
 प्राचीनाचेनिबळें॥ आलींरुत्यकुशलाकुशले॥ तियेव्यामाआंगीआभाळें॥ विरालीजैसीं॥ १२॥ तैसीतयाचियेहिटी॥ कर्मचो
 खाळलींकिरीटी॥ झणोनिमुखदुःखींउटी॥ पडेनाजो॥ १३॥ तेंपेशकर्मजाणावें॥ भगतेहेंपेशावें॥ कांअश्रुमालागीं-
 व्हावें॥ दोषयान्ता॥ १४॥ तरिदयाविषयींचाकाहीं॥ तथाएकहींमंदेहनाहीं॥ जेमास्वभाचाटायीं॥ जागिन्मलीया॥ १५॥ ह्य
 पाउंनिकर्मआणिकर्ता॥ याहेंतभावाचीवार्ता॥ नेणेनोपडुसता॥ सात्विकन्याग॥ १६॥ ऐसेनिकर्मपार्थो॥ त्यजिलींत्यजितो
 सर्वथा॥ अधिकेंचाधतीअन्यथा॥ मगडिलींतरी॥ १७॥ श्लो०॥ नहिदेहभ्रताशाक्यन्यक्तुं कर्मण्यशेषत्वा॥ यस्तु कर्मफलत्यागी
 सत्यागीत्यभिधीयते॥ ११॥ टी०॥ आणिहांगासत्यमाचीं॥ मूर्तीनाहीनिदेहानी॥ खातींकारितिकर्मचीं॥ तेंगांवढेना॥ १८॥
 मुनिकेचावीर॥ चैतेनिकायकरीलघट॥ केउतेंतनूपट॥ मांडीलतो॥ १९॥ तेवींचिविह्वलआंगीं॥ उबेउबागणेंआगी॥ कींतेदीप
 यसेलागीं॥ दोषकरीलकार्द॥ २०॥ हिंगचासलाचाणी॥ तरीकेंचेंसुगंधव्यआणी॥ द्रवमांडुनिपाणी॥ गंगहेतें॥ २१॥ तैसाश
 रीगचेनिआभासें॥ नांदनजंवअसें॥ तंवकर्मन्यागाचींपसें॥ काटूंमंतरी॥ २२॥ जायत्याजालेक॥ २३॥ नमुसायअवलोळा
 ॥ माघालीफेडीनिडळा॥ कांकरूयगा॥ २४॥ तैसींमिहितस्वयेआदरिजे॥ झणोनिन्यजयेन्यजिलें॥ परिकर्मचंदेहआतले॥ तेंका
 मांडीलगा॥ २५॥ जेम्बासौशवासुक्मी॥ होतनिजेलीयाहीवरी॥ कांहीनकरणेयाचिपंगी॥ होतनिजयाची॥ २५॥ याशरीगचेभि
 पाट॥ ओ० १२॥ झणोनि, अलंकृतं.

मिषं॥ कर्मचलागलें असिकें॥ जितांमेलयान ठाकें॥ इयारिती॥ २६॥ ययाकर्मतेंसां इतलपर॥ लकीं चितें अवधारी॥ जकरितां जाइ
 जहारी॥ फळां शेंचिये॥ २७॥ कर्मफळां ईश्वरी अपें॥ तद्दसादे बोधउद्दिपे॥ तेथरज्जु त्या तेंजोगें॥ न्याळपांका॥ २८॥ तेंगे आद्य बोधि
 तेंसे॥ अविवेशां कर्मनाश॥ पार्थात्यज जे ऐसे॥ तेंत्यजिलें होये॥ २९॥ ह्यणों न इयापरीजगीं॥ कर्मत्यज तो महात्यागी॥ ये
 रसूळनेनावरगों॥ विभ्यांतीजेंसी॥ ३०॥ तेंसाकर्मों शिणेएकीं॥ तो विसावो पाहे आणिकीं॥ दांडयाचे पायबुकी॥ धाडणेंजेंसे॥
 ३१॥ परिहें असो पुढती॥ तो चित्यागीं विजगतीं॥ जेणें फळ त्यागें निष्कृती॥ नलेंकर्म॥ ३२॥ येन्नुवीतरी धनंजया॥ त्रिविधाकर्म
 फळागायया॥ समयांतें कीं भोगायया॥ जेन सां इतल्वी आशा॥ ३३॥ आपणाचि विडुं न दुहता॥ कीं नमम ह्यणों पता॥ तो सुटे
 कीं प्रतिग्रहिता॥ जायदें शिरके॥ ३४॥ विषाचे आगरही वाहती॥ तो विकितां सुटलें जती॥ येरनिमाले जे पती॥ वेंचोनिमोलें॥
 ३५॥ तेंसे कर्ता कर्म करू॥ अकर्ता फळाशान्धरू॥ एथनया के आवरू॥ दोहीतें कर्म॥ ३६॥ वाढीपि कालयारुसाचें॥ फळ अपे
 क्षीतयाचें॥ नें विसाधारण कर्मचें॥ फळ घेतया॥ ३७॥ परिकरूनि फळ न घे॥ तो जगाचा कामीं नरिये॥ जें त्रिविध जग आयवें
 ॥ कर्म फळ हें॥ ३८॥ देवमनुष्य स्थावर॥ ययानावजगडंबर॥ आणितें तवत न्हि प्रकार॥ कर्म फळाचें॥ ३९॥ तेंच एकगा
 अनिष्ट॥ एकतें के वळइष्ट॥ आणिएक इष्टानिष्ट॥ त्रिविध ऐसे॥ ४०॥ श्लो०॥ अनिष्टां भ्रष्टां मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्॥ स
 वत्सत्यागिनां प्रेत्यननुसन्त्यासिनां क्वचित्॥ ४१॥ टी०॥ परिगवयमंता बुद्धी॥ आंगीसूनि अविधी॥ घवर्तते जे निषिद्धी॥
 कुन्यापारी॥ ४२॥ तेथ कर्मि कीटलोष्ट॥ हें देह लाहती न कष्ट॥ तयानामतें अनिष्ट॥ कर्म फळ॥ ४३॥ कां स्वधर्म मान देता॥
 स्वाधिकार पुढां सुता॥ सुकृत कीं जे पुमता॥ आस्त्रायति॥ ४४॥ तेंद्रादिक देवाची॥ देह लाहि जती सव्यसाची॥ तयाकर्म
 पाठ॥ ओं॥ २६ ठके॥ ओं॥ २७ कजाइजे॥ ओं॥ २७ बोधतेथें॥ ओं॥ ३१ तरि॥ बी॥ फळमें॥

फळाश्च ॥ प्रसिद्धीगा ॥ ४४ ॥ आपिगोडआंबटमिळे ॥ तैथरसांतरफळरसळें ॥ उढोदोहीवेगळें ॥ दोहीजिणतें ॥ ४५ ॥
 रेचकचियोगवशें ॥ होयस्तंप्रावयोदूशें ॥ तैविसत्यासत्यसमसै ॥ सैत्यासत्यैचिजिणजे ॥ ४६ ॥ ह्यणोभिसमभगंशुभा-
 शुसै ॥ मिळोनिअनुष्ठानचैउसै ॥ तैणमनुष्यत्वलाभें ॥ तैमिअफळ ॥ ४७ ॥ तैसैत्रिविधययाभारी ॥ कर्मफळमांडिलेंसजगीं
 ॥ हंनसांडितयांभोगीं ॥ जेसूदलेआशा ॥ ४८ ॥ जेशजिक्चेचाहानफांटे ॥ तंतजेवितांवेतेंगोमटे ॥ मोगपरिणामीशेवटे ॥ अव-
 श्यमरण ॥ ४९ ॥ संवचोरैमैचीचांगा ॥ जवनपविजेनेदांगा ॥ सामान्यामलीआंगा ॥ नभिवेनवा ॥ ५० ॥ तैमीकर्मकारितांशरी-
 शीं ॥ लाहनीमहत्वाचीफरारी ॥ पाटींनिधनीएकसरी ॥ पावतीफळे ॥ ५१ ॥ जैमासमर्थभाणिअणिया ॥ मागोंआलाबाइणि
 या ॥ नलोतैसैसायाणियां ॥ पडेतोभोगा ॥ ५२ ॥ मगकणसौनिकणझडो ॥ तोंविरुद्लाकाणसाचटे ॥ जोपुटनीभृमीपडे ॥ पुटनी
 ठढी ॥ ५३ ॥ तैसैभोगीजेंफळहोयो ॥ तेंफळांतरेवीतजाये ॥ चालतोपायेपाये ॥ जिणजेंजेंमा ॥ ५४ ॥ उताराचियेसांगडी ॥
 दाकेतेलीचयडी ॥ तोंवनमूकीजतीवोटी ॥ भोग्याचिये ॥ ५५ ॥ पैसाअसाधनप्रकारें ॥ फळभोगतोपसरे ॥ एवंगोविलेसं
 सारे ॥ अत्यागीते ॥ ५६ ॥ येरवीजानीपुष्पाचेंवैक्रमणें ॥ त्याचिनामजेंसंभुकोणें ॥ तेंसंकर्मभिवेनक्रमणें ॥ केलेंजिही ॥ ५७ ॥
 बीजचिवरोशिचेच ॥ तेशवाढनीकुळवाडीरवांचे ॥ तेंविफळन्यागेक्रमोचें ॥ मारिलेंकाम ॥ ५८ ॥ तैमन्यश्रीमाहाकारें ॥ गुरु
 रुपाभूतनुषारें ॥ सासिबलेनिवासरे ॥ हूतैदेव्या ॥ ५९ ॥ तेव्हाजगदाभाममिथ ॥ मरुगर्तोअशिश्नफळनाश ॥ एथामोक्ताभो
 ग्यआपैसैनिमालेंहें ॥ ६० ॥ घडंजानप्रधानेरेमा ॥ मन्यामजयावंगिश ॥ तेंचफळभोगसोसा ॥ मूकलेगा ॥ ६१ ॥ आ-
 णियणेंकीरसन्यासै ॥ जेंआत्मरूपीहृष्टीपैसे ॥ तेंकर्मएकसै ॥ तैरवणेंआहे ॥ ६२ ॥ गडोनेगेअणामिती ॥ चिवांचिकेव
 षाव-ओं-४६-सत्यचि-ओं-४९-गमे,परि-ओं-५७-माकणें.

कहोयमांती॥ कोपाहालैयारती॥ आधारंउरे ॥ ६३॥ जैरूपचिनीहांडसैं ॥ तैछाय्याकान्याचशोप्सा ॥ दपणेवणिबिबो ॥ वदनकेपां॥ ६४॥ फिरलियानिद्रेचाढावो ॥ कैचास्वप्नासिमस्ताव ॥ मगसैन्यकीतेयाव ॥ कोपाद्वयो ॥ ६५॥ तैरूपकाजोगेंगेमें ॥ तैरुअविशेषीनि
नाहीजों ॥ मातियेचंकार्यकोणों ॥ घोपेदोपि ॥ ६६॥ द्यणोंनिसन्यासीइयेपहं ॥ कर्मगौठैकजेलकाई ॥ परिअविद्याआपुलादेही ॥
आहेजैकां ॥ ६७॥ जैकैतेपणाचेनथावे ॥ आत्माश्रमशस्त्रीधोवे ॥ दृष्टिसेदाचियेराणवे ॥ रचलीसेजै ॥ ६८॥ तैतरोगास्त्वर्मा ॥ बीजा
वळिआत्मयाकर्म ॥ अपांडजैभीपश्चिमा ॥ पूर्वसिकां ॥ ६९॥ नातरिआकाशाकांआभाळा ॥ सूर्याआणिभृगजळा ॥ किजावळि
भूतळा ॥ वायूसिजैसी ॥ ७०॥ पाथरोंनिनईचेंउदक ॥ असेनईमाजिखडक ॥ परिजाणिजेकांवेगळिक ॥ कोइचीते ॥ ७१॥ होकांडद
काजवळी ॥ परिसिनीबितेबाबुळी ॥ कायसंगास्तवकाजळी ॥ दीपद्यणोंये ॥ ७२॥ जरीचंद्रजालाकलंक ॥ तरिचंद्रसीनव्हेएक ॥ आ
हेदृष्टीडोळयांविक ॥ अपाडयेतुळा ॥ ७३॥ नानावाटावटेजातया ॥ बोयावोर्धापाहतया ॥ आरसाआरसांपाहतया ॥ अपाडजेतु
ला ॥ ७४॥ पार्थागातेतुलेनिमानें ॥ आसोंनसीकर्मसिनें ॥ परिघवजैअज्ञानें ॥ तैकीरसैं ॥ ७५॥ विकाशेंरवीतेंउपजवी ॥ दु
तीअलीकरवींभोगवी ॥ तैसरोवरीकांबरी ॥ अजिणीजैसी ॥ ७६॥ पुटतीकांअत्मक्रिया ॥ अन्यकारणकीधनंजया ॥ करूपा
चांहीतया ॥ कारणरूपा ॥ ७७॥ श्लो० ॥ पंचैतानिमहाबाहोकारणानिबोधये ॥ सांन्येकृतोतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणा
मु॥ १३॥ टी० ॥ आणियांचहीकारणोंतियें ॥ तूंहीजाणसीलविपायें ॥ जेशास्त्रउभऊनिबाहे ॥ बोलतीजयातें ॥ ७८॥ वेदया
चियाराजधानी ॥ सांख्यवेदान्ताचापुर्वनी ॥ निरूपणाचा निशाणध्वनी ॥ गर्जतीजियें ॥ ७९॥ जैसर्वकर्मसिद्धीलागीं ॥ इयेचि
मुदलेंहोजगीं ॥ तैथनसुखावाअभंगी ॥ आत्मारज ॥ ८०॥ इयाबोलाचीडांगुरदी ॥ तियेप्रसिद्धीआलींकिरीदी ॥ ह्यणोंनितुझा
पाठ० ओ० ६५ साच० ओ० ६६ दिजेकर्म० ओ० ६७ साहु० ओ० ७९ पुढतुहती ॥ ॥ ७१॥

हनूकर्णपुदी॥ वसोकांजो॥ ८१॥ आपि सुखांतरि आइकीजे॥ तैसें कायसें हे आइये॥ प्रींचितामणी रत्न तुझे॥ असतां हातीं॥ ८२॥
 रणपुढां माडलेया॥ कालोकांचिया डोळयां॥ मानघावापाहावया॥ आपुले निकें॥ ८३॥ भक्तजैसें भजेथ पाहे॥ तेथ ते तें चिह्ना
 जाये॥ तो मी तुझे जाहालो आहे॥ खेळणें आजी॥ ८४॥ ऐसें हें घीति चिं भवे॥ देवबोलनां सेनेचे॥ तव आनदा मजी आगी॥
 विरतपथ॥ ८५॥ चादिण्याचा पाडिभर॥ हातीं सोमका ताचा डोंगरा॥ विघरोनि सगेवर॥ हां पाहे जैसा॥ ८६॥ तैसें सुख आ
 षि अनुभूती॥ यासावांची सोडुनि भिंती॥ आंतलें अर्जुनाकृती॥ करुनि जेथ॥ ८७॥ तेथ समर्थ हाणो नि देवा॥ अवकाश ला-
 हाला आठवा॥ मग बुडत्याचा धांवा॥ जीवें केला॥ ८८॥ अर्जुनायेस गोंधें॥ प्रज्ञापये मी बुडें॥ आलें भरतें एवढें॥ तें सावरू-
 नि॥ ८९॥ देव हाणो हागा पार्थी॥ हें आपण पेंदेख सर्वथा॥ तंव मीं नरुनिये रें माथा॥ नुकीयेला॥ ९०॥ हाणें जाणसी दातारा॥ मी तुज
 सीव्यक्त शो जारा॥ उबगला आदि एका हारा॥ येवो पाहे॥ ९१॥ तया ही हाणेसा॥ जोसें देत माजरी लालसा॥ नरिकांजी धालीतसा॥
 आड आडजीवा॥ ९२॥ तेथ श्री कृष्ण हाणतीं निकें॥ अघा पिना हीं माठाउकें॥ वेदुया चद्राभाणि चंद्रके॥ नमिळणें आहे॥ ९३॥
 आणि हा ही बोलोनि भावो॥ तुज दाडोनि आह्मी भिवों॥ जेरुसता बांधेयावो॥ तें प्रमगां हें॥ ९४॥ एथ एक मेकांचिये रवुणो॥ विस
 वादत वज्रिणो॥ हाणोनि असं हें बालणें॥ इथे विषयीचा॥ ९५॥ मागें मकें तें भानो॥ बोलत हातों पदमना॥ मर्न करुं किन्चना॥ आर्जो मसी॥ ९६॥
 तंव अर्जुन हाणें देवें॥ माझिये मनीचें चित्त समावे॥ प्रस्ताविलें बरवें॥ प्रमेयुंती॥ ९७॥ जें सकळ कर्मांचें बीज॥ कारण पंचकृतु
 ज॥ सांगन ऐसी पैंज॥ घनलीकां॥ ९८॥ आणि आत्मयाण्य काही॥ सर्वया लागन हीं॥ हें पुढारलासितें देई॥ लाहाणें साझी॥
 ९९॥ यथाबोला विशेशो॥ हाणितलें तो बंधु वसे॥ इथे विषयी धरणें बोसे॥ तैसें कें जेडे॥ १००॥ तें अर्जुनां निरुपजेला॥ ते नि-
 पाठ॥ ओं॥ ८२ चिदल॥ ओं॥ ८६ जालिया॥ ओं॥ ८९ काडुनि पुरती॥ ओं॥ ९० व्यासोनि॥ अ॥ ९१ मया॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९५ ॥

कीरभाषेंआंतुल॥परिसेचयेहोइजेले॥अणियातुज॥१॥तंवअर्जुनस्वगद्वेष॥काहेनिमगलमगीलभाबो॥इयेगंठोरकी
 राखतआहो॥मीतूपणजो॥२॥एथश्रीकृष्णस्वणतीहोका॥आताअवधानाचारराजिन्ना॥करुनियोआइका॥पुढार-
 लेते॥३॥तरिसेत्यचिगाधनुर्धरा॥सर्वकर्मचाउभारा॥होतसेबाहोरबाहरा॥करणीपिंचि॥४॥आणिपंचकारणदळवाड॥-
 जिहीकर्मकारमांडे॥तेंहेतुत्वयडे॥पांचअर्थी॥५॥येरआत्मतत्त्वउदासीनि॥तेंमाहेतुनाउपादल॥नातेअंगंकरिसंवाहन॥
 कर्मसिद्धीचे॥६॥नेथशभाशर्मांअंशी॥निफजतीवैमैसी॥रातेवेवाआकाशी॥जियापरी॥७॥तोयनेजधूम॥यथावा
 यूसीसंगम॥जालियाहोयअभ्यागम॥व्योसतेंनेणो॥८॥मानाकाष्टीनावामिळे॥तेनावाडनिचळे॥चालिविजेअनिळे॥उद
 कतेंसाक्षी॥९॥कांकवणेएकेपिडे॥वैचितांअवतरेभांडे॥मगधंवडीजेंदंड॥तेंभ्रमेचक्र॥१०॥आणिकर्तृत्वकुलालाचे॥तेंय
 कायतेंएथीयेचें॥आधारावांचूनिवेचें॥विचारीपो॥११॥हेहांअसंतोकांचिया॥राहादीहांतांआघविया॥कोणकामसवि
 तया॥आंगाआले॥१२॥तैसेंपांचहेतुमिळणी॥पांचेंचइहीकारणी॥कीजेकर्मलतांचीलावणी॥आत्मासिना॥१३॥आ
 तांचियेवेगळीं॥पांचहीविवंचुंगाभली॥तुकोनिघेतली॥मोतियेजेसी॥१४॥श्लो०॥अधिष्ठानंतथाकर्ताकारणचप्र
 क्षयधम॥विविधानएथकृशेदवेंचैवाचपचमसु॥१४॥टी०॥तेंसीयथाक्षणे॥आइकेंपांचैकारणे॥तरिदेहहेमीक्षणे
 ॥पहिलेएथ॥१५॥ययातेंअधिष्ठानऐसे॥स्वणिजेतयाचिउद्देशी॥जेंसंभोगेमीधसे॥सोकाएथ॥१६॥इंद्रियाचादेहहा
 ती॥जाचोनिदेवोराती॥सरस्वदुःखेंयकृती॥जोडीजतीजियें॥१७॥तियेंभोगावथापुरुषा॥आनठाचोचिनाहीदेखा॥स्वर्णा
 निअधिष्ठानभाषा॥बोलिजेदेह॥१८॥हेचोविसांहीतत्वांचें॥कुटुंबधमवस्तीचें॥तुरेबंधभासाचें॥गुंथाईएथ॥१९॥किंबहुनाअव
 पाठ-ओं-४साच-ओं-१५कर्म-ओं-१९गुंतले॥

॥७॥

॥७॥

॥७॥

स्याच्चयां॥ हंअधिष्ठानधनंजया॥ ह्यणोनिदेहायया॥ होचनमा॥ २०॥ अणिकर्तहेतुजे॥ कर्मचेंकारणजाणिजे॥ प्रतिबि-
 बस्यणिजे॥ चैतन्यचैजे॥ २१॥ आकाशचिक्वर्षनीर॥ तैतळवटीबांधेनाडर॥ मगाबिबोनितदाकार॥ होयजेवीं॥ २२॥ कांनि
 द्रूपरेंबहुवें॥ रायारायपणठाठवेंनळे॥ मगस्वमींचयेसामावे॥ रंकपणी॥ २३॥ तैसेआपुलेनिविसरें॥ चैतन्यचिदेहा॥
 कोरे॥ आप्तासोनिआविस्करे॥ देहपणेजे॥ २४॥ जयाविचाराचादेशीं॥ प्रसिद्धीगजीवऐसी॥ जेणेंभाषकेढीदेहेंसी॥ आ-
 घवाविषयीं॥ २५॥ प्रकृतीकरीकर्म॥ तैस्याकेलींद्वयपेभ्रमे॥ एथकर्तयेणेंनामें॥ बोलिजेजीव॥ २६॥ मगपांतयेयाचाकेशीं॥ ए-
 क्रीउठीदुठीजैसी॥ मोकळीचचरीऐसी॥ चरीवंगमे॥ २७॥ कांधराअंतुलएक॥ दीपाचाअवलोक॥ गवाक्षभेदेंअनेक॥
 आवडेजेवीं॥ २८॥ काएकचिपुरुषजैसा॥ अनुसरतनवरसा॥ नवविधपेसा॥ अवडोलापो॥ २९॥ तेंविबुद्धीचेंएकजाणणे॥
 श्रीवादिसेदेजेणें॥ बाहेरिइंद्रियपणें॥ कांकेजेका॥ ३०॥ तेंष्टयविभ्रकरणा॥ कर्मचेंइयाकारण॥ तिसरेंगाजाण॥ नृपनंदना॥
 ३१॥ आणिपूर्वपञ्चमवाहणी॥ निशालियावोपाचियामिळणी॥ होयनदीनदपणी॥ एकचिजेवीं॥ ३२॥ तैसीक्रियाशक्तिप-
 वनीं॥ असेजेअनयाधिनी॥ तेंपडिलीनानास्थानीं॥ नानाहोये॥ ३३॥ जेंवाचेंकुरीयेणें॥ तैतेचिहोयबोलणें॥ हाताआ-
 लीनरीपेणें॥ देणेंहोये॥ ३४॥ अगाचरणाचाठायीं॥ तरिगतीतैचियाही॥ अधोद्वारीदेही॥ ह्मणेंतैनि॥ ३५॥ स्तंभेंनिन्द-
 यवरी॥ पणवाचिउजरी॥ करितांतैचशरीरीं॥ प्राणद्वयिजे॥ ३६॥ मगउर्ध्वीनियारिगांनिगा॥ पुढतीतैचिशक्तिपेगा॥ उ-
 दानऐसियालिगा॥ पात्रजाहाली॥ ३७॥ अधोरंधाचेनिवाहें॥ अगनहेंनामलादे॥ व्यापकपणेंहोये॥ व्यानतैचि॥ ३८॥
 आरोगिलेनिरसें॥ शरीरसरिसरिसे॥ आणिनसांडितांअसे॥ सर्वसंधी॥ ३९॥ तैसियाइयाराहटी॥ मगतेचिक्रियापाठी-
 पाठ-ओं-२३-अपणपे-ओं-३७रिमि॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

ओं-३७रिमि॥

॥समानऐसीकीरटी॥बोलिजेगा॥४०॥आणिजांभईशिकुंदकर॥ऐसेसाहोतसेव्यापार॥नागकूमकुर॥इत्यादिहोय॥४१॥
 एवंथायूचीहेचेंछा॥एकीपरिरुभेदभा॥वर्तनास्तबपालदा॥येतसेजे॥४२॥तेचुनिसेदुर्गपणे॥वायुशस्त्रीगाताये॥कर्मकारण-
 चोये॥ऐसेजाणा॥४३॥आणिअतुवरकाशरद॥शरदीपुंदतीचांद॥आणिचंद्राजैसासंबंध॥पुण्णिमेचा॥४४॥कांबसंती-
 बरकाआरामा॥आरामाप्रियसंगमा॥सगसीआगमा॥उपचाराचा॥४५॥नानाकमळीपाडवा॥विकाशजैसाबरवा॥विकाशाहीयावा-
 परगाचातो॥४६॥वाचेबरवेंकवित्वा॥कवित्वावरवेंसिकत्वा॥भिकतीपरतत्वा॥स्पर्शजैसा॥४७॥तैसीसर्ववृत्तिवैसवी॥बुद्धि-
 चिएकलीबरवी॥बुद्धीहीबरवनवी॥इंद्रियभोटी॥४८॥इंद्रियभोटीमंडळा॥शृंगारएकचिनिर्मळा॥जैअधिष्ठात्रिया-
 कांमेळा॥देवमाचजा॥४९॥ह्मणूनिचक्रगादिकोदाहे॥इंद्रियपाटीस्वानुग्रहे॥सूर्यादिकांकोआहे॥सुराबेवृद्ध॥५०॥तैदेववृद्ध-
 बरवें॥कर्मकारणपांचवें॥अर्जुनाथजाणावें॥देवह्मणो॥५१॥एवंमानेनुग्रियेआयणी॥तैसीकर्मजातांचीहरवाणी॥पंचवि-
 धआकर्णी॥निरूपिली॥५२॥आतांहेचिरवाणीवादे॥मगकर्मोचीसुधीघडे॥जिहीतेंहेतुहीउघडे॥तैदाखउपचैही॥५३॥
 ॥श्लो०॥शरीरवाडु॥मनोभिर्यत्कर्मयारभतेनरः॥न्याय्यवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः॥१५॥टी०॥तैरिअवसांतआली-
 माधवी॥तेहेतुहोयनवपल्लवी॥पल्लवपुष्पांजदावी॥पुष्पफळाते॥५४॥कांवाधियेआणिजमेया॥मेघवशिष्टसंग॥वृष्टीस्तव-
 भोगा॥सस्यसुरवचा॥५५॥नातरीप्राचीअरुणातेंविये॥अरुणेंसूर्योदयहोये॥सूर्येसगळापाहे॥दिवसजैसा॥५६॥तैसं-
 मनहेतुपांडवा॥होयकर्मसंकल्पभावा॥तोसंकल्पलावीरवा॥वाचेचागा॥५७॥मगवाचेचातोदवदा॥दावीकृत्यजाता-
 चियावादा॥तेव्हांकर्तारिगेकामठां॥कर्तृत्वाचा॥५८॥तैथशरीरादिकदळवडे॥शरीरादिकांहेतुचिघडे॥लोहकामलो-
 पाठ॥नाही॥

॥३५॥

॥३६॥

॥३७॥

रवंडो॥निर्वाळिजेजैसे॥५१॥कांतांशुवाचाताणा॥तांशुघालितांवेरणा॥तोतंतूचिचिंवक्षणा॥होयपठ॥६०॥तैसेंमनवाचा
 देहाचे॥कर्ममनादिहेतुचिस्चे॥रलीघडेरत्ताचे॥दळवाडेंजेवी॥६१॥एथशरीरादिकेंकारणें॥तेचिहेतुकेवीहेकोणें॥अ
 पेक्षिजेतेरितणें॥अवधार्जो॥६२॥आइकासूर्याचियाप्रकाशा॥हेतुकारणसूर्यचिजेसा॥काउसाचेकाडुसा॥वाढहेतु
 ॥६३॥नानावारवतांवांनावी॥तेंवांचिचि लागेकामवावी॥कावेदांवेदचिबोलावी॥प्रतिष्ठाजेवी॥६४॥तैसेंकर्मशरीरादिके
 ॥कारणहेकीरताउकें॥परहेचिहेतुनचुके॥हेहीएथ॥६५॥आणिदेहादिकींकारणें॥देहादिहेतुभिळणी॥होयजयाउसा
 रंगी॥कर्मजातो॥६६॥हंशास्त्रार्थमानिलेया॥मार्गाअनुसरेधनजया॥तरिन्यायतो न्याया॥हेतुहोये॥६७॥जेसाप-
 र्जन्योदकानालोटा॥विषयेंधरीसाळीचापाठा॥तौजरेपरिअचाटा॥उपयोगआधी॥६८॥कारोषभियालेअवचदे॥पाडले
 द्वारकेचियेवाटे॥तेंशिणेपरिस्फुटाटे॥नवचतीपदे॥६९॥तैसेंहेतुकारणमेळें॥उदीकर्मजेंआंधळें॥तेंशास्त्राचेलाहेडाळे॥तें
 न्यायस्त्राणें॥७०॥नादूधवादितांठावोनपावें॥तंवउतोमिजायस्वभावं॥तोहीवेचपरि नव्दे॥वेचलेंतें॥७१॥तैसेंशास्त्र
 साहायेचीणा॥केलेंनोहेजरीअकारण॥तरिलागोकांनागवणा॥दानलेखी॥७२॥अगाबावनवर्णापरता॥क्रोणमंत्रआहे
 पंडुसुता॥कांबावन्हीनुच्चारिता॥जीवअर्थी॥७३॥परिमंत्राचीकुडमणी॥जवनेणिजेकोटडपाणी॥तवउच्चारफळावा
 णी॥नपवेजेवी॥७४॥तेंविकारणहेतुयोगें॥जेंबिसाटकर्मनगें॥तेंशास्त्राचियेनलगे॥कांसेजंवा॥७५॥कर्महोत-
 चिअसेतेव्हाही॥परितेंहोणेनळेपाहीं॥तोअन्यायाअन्यायी॥हेतुहोये॥७६॥श्लो०॥तवेंवसतिकतारमात्मान
 केवलंतुयः॥पश्यत्यकृतबुद्धित्वाभ्यसपश्यतिदुर्मतिः॥१६॥टी०॥एवंपंचकारणाकर्मो॥पांचहीहेतुहेस्फुमाहिमा॥
 पाठ- ओ०-६३ इस्क० ओ०-६८ जरी-ओ०-७१ पवे०

॥६॥

॥७॥

॥८॥

आतांथेपाहोआत्मा॥ सांपडलाअसे॥ ७७॥ भानुनहोनिरूपेंजैसी॥ चक्षुरूपातेंकांप्रकाशी॥ आत्मानहोनि कर्म
 तैसी॥ प्रकटीतअसेगा॥ ७८॥ पैयतिबिंबअगरिमा॥ दोन्हीनहोनि वीरेशा॥ दोहीतेंप्रकाशजैसा॥ न्याहाळितंतो॥
 ७९॥ कांअहोरात्रहसविता॥ नहोनि करीपंडुसता॥ तैसाआत्माकर्मकत॥ नहोनिदावी॥ ८०॥ परिदूहोहअभिमान
 मूढी॥ जयाचीबुद्धीदेहोचाआतली॥ तथाआत्माविषयीजाली॥ मध्यात्रीगा॥ ८१॥ जेणेंचैनन्याइश्वराब्रह्मा॥ देह
 चिकलेपरमसीमा॥ तथाआत्माकतोहृप्रमा॥ अलेटउपजे॥ ८२॥ आत्माचिकर्मकतो॥ हाहीनिश्चयनाहीतलता॥ देहो
 चिसीकर्मकतो॥ मानितीसाचे॥ ८३॥ जआत्मामीकर्मतीत॥ सर्वकर्मसाक्षीभूत॥ हेआपुलीकहीमात॥ नायकेचिकर्मो
 ॥ ८४॥ द्यणोनिउपमाआत्मयाते॥ देहचिवरीमिविजये॥ विनिव्वकाईरात्रिदवसातो॥ दुडुकनकरी॥ ८५॥ पैजेणेंआका
 शींचाकंहो॥ सैत्यसूर्यदेखिलानाही॥ तोधिल्लुरींचेंबिंबकाई॥ मानूनलाहे॥ ८६॥ थिल्लुराचोनजालेपणें॥ सूर्योमिआणि
 ह्मणें॥ त्यान्यानाशोनाशणें॥ कपेंकपा॥ ८७॥ आणोनिद्रिस्ताचेंवीनये॥ तैस्वप्नसाचंहालाहे॥ रज्जुनेपातांसपाबिहे॥ वि-
 स्माकवणा॥ ८८॥ जंवकुवळअथीडोळां॥ तंवचंद्रदेखावाकोपिवळा॥ कायमृगीमृगजळा॥ साळावेनाही॥ ८९॥ तै-
 सांश्राश्रागुरूचैननावे॥ जवाशहाटेकोनोदिसवे॥ कवळमेत्याचेंनिचिजोवे॥ जियालाजो॥ ९०॥ तेंणेंदेहात्मदृष्टीमुळे
 ॥ आत्मयापदेहाचेंजाळें॥ जैसाअग्नाचावेगकोल्हें॥ चंद्रोमानो॥ ९१॥ मगतयामानण्यासाठी॥ देहबंदीशाळकि
 रीटी॥ कर्माचावज्रगाठी॥ कळासेतो॥ ९२॥ पाहंपाबधसावनादो॥ नुळयेवरीतोबापुडा॥ कायमोकळेयाहीचव
 डा॥ नठकेचिपुसा॥ ९३॥ द्यणोनिनिर्मळआत्मास्वरूपी॥ जाप्रकृतीचेंकेलआरोपी॥ तांकल्यकोडीचामापी॥ मवीचिक
 पाठ॥ ओं-८६ सप्त॥ ओं-८८ अगा॥ ओं-८९ देवी॥

॥ ५॥

॥ ५॥

में॥१४॥ आतां कर्म माजिअसे॥ परितयांतं कर्मस्ययी॥ वडवानळांतें जें संपुद्रोदक॥१५॥ तें सोनि वेगळे पणें॥ जयांचे
 कर्म असणें॥ तो करि वौळखावौकवणें॥ तरी सांगों॥१६॥ जे मुक्तांतें निर्धारितां॥ लाभ आपली नमुक्ता॥ जें से दीपि दीस पा
 हतां॥ आपली वस्तु॥१७॥ ना तरी दर्पण जे वडुठिजे॥ तंव आपण पण आपण भेटिजे॥ कां तो यपावना तो य होइजे॥ लवणें जेवी
 ॥१८॥ हें असो परतो निमागुतें॥ प्रतिबिंब पाहें बिंबांतें॥ तंव पाहणे जो उनी आयितें॥ बिंबाचे होये॥१९॥ तें संहार तें आपणें
 पावे॥ तें सतांतें पाहतां गिवसावें॥ ह्यणो निवाना वेंरें कावें॥ तें निसदा॥२०॥ परिकर्म असो निकर्म॥ जो नाग वेसम विषसे॥
 चर्म चक्षुचे निचामें॥ दृष्टी जें सी॥१॥ तें सासो डवला जो आहे॥ तया चें रूप आतां पाहें॥ उपपत्तीची बाहो॥ उभट्टीं निमांगों॥२॥
 स्त्री०॥ यस्याहं कर्तो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते॥ हत्वापि स इमां लोकां न हति न निबद्ध्यते॥१७॥ टी०॥ तिरिअ विद्ये चिया
 निदा॥ विश्वस्वभावा हा धादा॥ भागिन होत प्रबुद्धा॥ अनादिजे॥३॥ तो महावाक्याचे निनावें॥ गुरू कपेचे निथावें॥ माथा
 हात ठेवणें नव्हे॥ थाप दिली जें सा॥४॥ तें सा विश्वस्वमैसी माया॥ नीद सांडुनि धनंजया॥ सहजें चिंचे इला अद्वया॥ नंदप-
 णें जो॥५॥ तें व्हा सुगळचे पुर॥ दिसती एक निरंतर॥ हा रपती कांचंद्रकर॥ फाकतां जें से॥६॥ कांबळ कलनि यो निजाय॥ तें
 बागुलाना हीं वाया॥ पैज कालिया इपन होये॥ इपन जें वी॥७॥ नानाचे वौ आलिया पाठी॥ तें स्वप्न दीसो दीदी॥ तें सी अहममता
 गाकिरीदी॥ नुरोचि तया॥८॥ मग सूर्य आधारलागीं॥ शिपोकां भलते सुं रंगी॥ परितो तयाचा भागी॥ नृमंजु जें सा॥९॥ तें सा
 आसते वौष्टुला होये॥ तो जया तया दृश्यांत पाहो॥ तें दृश्य दृष्टे पणें सी होत जाये॥ तया चें चिरूप॥१०॥ जें सावही जयाला
 जे॥ तें वही च होय आंगें॥ दास्य दाहक विभागे॥ सांडिजे तें॥११॥ तें सा कर्माकारा दुजेया॥ वोकर्ते पणाचा आसया॥ आळ
 पाठ-ओं-१६ जाणावा-ओं-१० आत्मतत्वे-ओं-११ जालिया-

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

अल्लोतगेलिया॥ कांहीबांहीजेंउरे॥ १२॥ तियेआत्मस्थितीचाजोरावो॥ मगत्तेदेहीइयेजाणेठठावो॥ कायप्रलयबुचउन्ना
 हो॥ बोधसानी॥ १३॥ तैसेरितेपूणअहंता॥ काईदेहपणेपंडरुता॥ आवरेकाईसविता॥ बिंबेपरिला॥ १४॥ तेंमशुनिनोणीपि
 पें॥ तेंमागुतीताकींधांपे॥ तारितेंअलिमपणेंसिंपे॥ तेंपेसीकाई॥ १५॥ नानाकाष्ठोनविरेशा॥ वाळकोलियाहुताशा॥ राहे-
 काष्ठचियामांदुसा॥ कांडलेपणें॥ १६॥ कारात्रीचियाउदराआत॥ शिगालाजोहाभास्वता॥ तोनिशाऐसीमाते॥ ऐकेकाई॥
 १७॥ तेंसंवेद्यवदकपणेसी॥ णडलेकाजयाचाप्रासी॥ तयादेहसीऐसी॥ अहंताकेंची॥ १८॥ आणिआकाशेजेथेजुनी॥ जा
 इजैथअसेभरोनी॥ ह्यणोनिलेंकोदोनी॥ अपेंआप॥ १९॥ तैसेजेंतेंणेंकरावें॥ तोतेंविआहेस्वभावें॥ साकोणेकर्येविषा
 वें॥ कर्तेपणें॥ २०॥ नुरेचिगगनावीणठावो॥ नेहेचिसमुद्राप्रवाहो॥ नुठीचिभ्रुवाजावो॥ तेंसंजाहो॥ २१॥ ऐसेनिअह-
 कृतीभावो॥ जयाचाबोधीजाहालावावो॥ तन्हीदेहाजवनिबाहो॥ तंवआधीकर्म॥ २२॥ वाराजरीवाजोनियासरो॥ तरीतो
 डोलरुसोडरे॥ कांसेंदेहुतिराहेकापुरो॥ वेचलेनी॥ २३॥ कांसरलेयागीतचासमारप्पु॥ नवचराहिलेपणाचाक्षोप्पु॥ भूमी-
 लोळोनोगोलयाअंबु॥ बोलथारे॥ २४॥ अगामावळलेनिअर्के॥ संधारागभूमिके॥ ज्यातीदीसीकोतुके॥ दिसजेसी॥
 २५॥ ऐलक्ष्मीदिलयाहीवरी॥ बाणधंवोचिंतववरी॥ जंवसरलीआधीउरी॥ बळाचीतया॥ २६॥ नानाचक्रीभांडेजालें॥ तें-
 कुलालंपरतेनल॥ परस्परमेचितेमागिलें॥ भोंवांडलेपणें॥ २७॥ तेंसादेहाभिसानगेलिया॥ देहजेणेंस्वभावेंधनजयाभ जा
 हेंतेंअपैमया॥ चेष्टवीचेंतें॥ २८॥ संकल्पेवीणस्वम॥ नलवितांदीगीचिंबन॥ नरचितांगंधर्वसुवन॥ उठीजेसें॥ २९॥ आत्म
 याचेनिउद्यमवीणा॥ तेंसंदेहादिपंचकारण॥ होयआपणार्थीअपणा॥ क्रियाजात॥ ३०॥ पैंपाचीनसंस्कारशेवें॥ पांचहीक्रा

प्राट् ओं० १३॥ आन्हादेहोय-ओं० १५॥ लिप्त-ओं० १६॥ वेगळाविल्या-ओं० २३॥ से-ओं० २५॥ संख्येनिये-

रणं सह तु कै॥ कामवीजतीगा अनेक॥ कर्माकारं॥ ३१॥ तया कर्माभाजीमगा॥ संहरो आघवे जगा॥ अथवानवे चांगा॥ अनु-
 करौ॥ ३२॥ परिकुमुदके सो निरुके॥ तैक मळके सें फाके॥ ये दोन्ही रवी न देवे॥ ज्या परी॥ ३३॥ कां बीज वषो नि आभाळा॥ ठि
 करिया आने भूतळ॥ अथवा कल्ला दुल॥ पर्जन्य वृष्टी॥ ३४॥ तरितया दो ही तैजें सें॥ नेण जचि का आकाशें॥ तैसा देही च
 जं असे॥ विदेह वृष्टी॥ ३५॥ तो देहादकी चेशी॥ घडना मोडतां हे मृष्टी॥ नदरे स्वस्म वृष्टी॥ चेइला जैसा॥ ३६॥ ये हवी चाभा
 ने दोळे वरी॥ जेदसनी देह चि वरी॥ तैकी रमो व्यापरी॥ ऐसे चि मानिती॥ ३७॥ कां वृणा चा बाहुला॥ जे आगरा मेरे ठे विला॥
 तो मल्य राखता का ल्हा॥ नमनी काई॥ ३८॥ पैसे ने सलें कानागवें॥ हें लोकी येउनि जाणावें॥ ठाणो रियाचें मवावें॥ आणि
 कीं घाचे॥ ३९॥ काम हा मनीचें भोग॥ देखे की रस कळ जगा॥ परिते आगिना आंगा॥ नालो कदे से॥ ४०॥ तैसा स्वस्वरूपे
 उठिला॥ जो दृश्येसी द्रष्टा आतला॥ तो नेण काय राहटला॥ इंद्रिय ग्रामा॥ ४१॥ अगथोरी कल्ला की कल्लो कमाने॥ लोपना
 तिरीचें निजन॥ एका एकी गिळि जे हं मन॥ मानि जन्ही॥ ४२॥ तंही उदका प्रीति काही॥ कोण ग्रामि तसे काई॥ तैसे पु
 णा दुजे नाही॥ जेतो मारी॥ ४३॥ स्रवणार्णिया चांडिका॥ स्रवणभृको चि देखा॥ स्रवणार्णिया मी हिखा॥ भाशुं कला
 ॥ ४४॥ तो देखलव भिया कडा॥ व्यवहारा मला फुडा॥ वांचुनि मी हिष भूळ चामुडा॥ स्रवणार्णितें॥ ४५॥ पैं चि त्रिचि जक
 हुनाश॥ तो वृष्टीचा चि आभास॥ पदें अग्नि वोल्लाश॥ दोन्ही नाही॥ ४६॥ मुक्ताचें देह ते म॥ हाले चाल स्रस्कार वशें॥
 तें देखो निलो कपि सें॥ तो कर्ता स्वर्णाती॥ ४७॥ आणितयां कारणें आंता॥ घडो त्रैलोक्या घाता॥ परि नेण केला हे मात॥
 बोलीनये॥ ४८॥ अगाअंधकार देखवा तेजे॥ मगतो फेडी हे कें वें बो लिजे॥ तैसे ज्ञानिया नाही दुजे॥ तो मारील काई ४९

पाठ ओ० ३२ आनंदास वी० ओ० ३३ करीती० ओ० ३८ मानिजेना० ओ० ४१ आटला० ओ० ४३ पाणिया कडे पाही० ओ० ४७ हालत० ओ० ४९ केवी० ४९

स्वर्णो नित्यचीबुद्धी ॥ नेणे पाप पुण्याची गंधी ॥ गंगेसी नलियानदी ॥ जेसा विटाळ नाही ॥ ५० ॥ अग्नीभिः अग्नी झगट
 लिया ॥ काय पोळें तो धनंजया ॥ कीर्तेशस्त्ररूप आपणया ॥ आपणचि ॥ ५१ ॥ तेंस आपण पया पुरतें ॥ जे नेणें क्रिया जाता तें ॥
 तें थकायें लंपवी बुद्धी तें ॥ तयाचिये ॥ ५२ ॥ स्वर्णो नित्य कर्यकर्ता क्रिया ॥ हे स्वरूप चि जाहलें जया ॥ नाही शरीरादीकीं तया ॥ कर्म
 बंध ॥ ५३ ॥ जे कर्तजी व विदाणी ॥ कादनि पांचही स्वाणी ॥ घडितें हे करणी ॥ आहुती दाहें ॥ ५४ ॥ तेथ न्यावो आणि अन्यवो ॥ हा
 द्विविधा साधुनि आवो ॥ उमा रितानलवै रवेवो ॥ कर्म सुवर्ने ॥ ५५ ॥ याथोराडा कीरकामा ॥ विवजानो हे आत्मा ॥ परस्पर सीहन
 उपक्रमा ॥ हातलवी ॥ ५६ ॥ तो सासीचिद्रूप ॥ कर्म प्रवृत्तीचा संकल्या ॥ उठी तो कांनिः शेष ॥ आपणचि दे ॥ ५७ ॥ तरी कर्म प्रवृत्ती लागीं
 ॥ तया आयास नाही आंगी ॥ जे प्रवृत्तीचे ही उळिगी ॥ लोकचि अंथी ॥ ५८ ॥ स्वर्णो नित्य आत्मयाचें केवळ ॥ जो रूपचि जाहाला निवि
 ल ॥ तया नाही बंदी पाळा ॥ कर्माची हो ॥ ५९ ॥ परि अज्ञानाचा पदी ॥ अन्यथा ज्ञानाचें चि उठी ॥ तेथ चितारणी हो त्रिपुटी ॥ प्रसिद्ध जे
 को ॥ ६० ॥ जे ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय ॥ हें जगाचें बीज त्रय ॥ तें कर्मची निः संदेह ॥ प्रवृत्ती जाण ॥ ६१ ॥ आतां ययाची गात्रया ॥ व्यक्ती विगळा
 लिया ॥ आई के धन जया ॥ करू रूप ॥ ६२ ॥ तरि जीव सूर्ये विवाचे ॥ रश्मि अत्रादिकें पांचें ॥ धांवो निविषय पद्माचें ॥ फोडितो मत
 ॥ ६३ ॥ की जीव नृपचे वारु पलाणें ॥ घेउनि इंद्रियांची कें काणें ॥ विषय देश चि नागवणें ॥ आणितो जे ॥ ६४ ॥ श्लो ॥ ज्ञान ज्ञेय
 परि ज्ञाता त्रिविधा कर्मचो दना ॥ करण कर्म कर्तें त्रिविधः कर्म संग्रहः ॥ ५८ ॥ टी ॥ हें असो इंद्र इंद्रियां राहातो ॥ जे सुख
 दुःखें सी जीवां भेदो ॥ तें संपुसी काळी वौहो ॥ जेथ ज्ञान ॥ ६५ ॥ तया जीवा नाव ज्ञाता ॥ आणि जे हें सांगीतलें आतां ॥ तं-
 चि एथें पंडु स्मता ॥ ज्ञान जाण ॥ ६६ ॥ जे अविद्ये चि येयोटी ॥ उपजत रवेवो कीरीटी ॥ आपणया तें वाटी ॥ तिहीं ठायीं ॥ ६७ ॥
 पाठ- ओं ५५ उषितां- ओं ५५ यावटे.

॥ ७-११

॥ ७ ॥

अपुलियेयंवेपुटी॥यावन्निज्ञेयाचागुंडा॥उष्मरिमागिलीकडां॥ज्ञातुलाते॥६८॥सगज्ञातयाज्ञेयादोयां॥तोनांदणुक्या
 बगा॥माजिजालोनिपेंगा॥वाहेजेणें॥६९॥टाकूनिज्ञेयाचींशिंवें॥पुरेजयाचींथांवें॥सकळपदार्थानांवा॥सुतसेजे॥७०॥तेंगां
 सामान्यज्ञाना॥याबोलांनाहीआन॥ज्ञेयाचेहीचिन्ह॥आडकूआना॥७१॥तरिशब्दस्पृश॥रूपगंधरस॥हापंचविधआभास॥ज्ञेया
 चाज्ञो॥७२॥जैसेंकोचिचूतफळें॥इंद्रियावेगळेवेगळे॥रसेवर्णपरिमळे॥स्रोतजेस्पर्श॥७३॥तैसेंज्ञेयतरीएकसरें॥परिज्ञानेशंद्रे
 यशूरें॥येद्वयणोनिप्रकारें॥याचेंजालें॥७४॥आणिसमुद्रविद्याचेंजाणें॥सरलाणिपामिंथावणें॥कांफळीसरेवाटणें॥सस्या
 केंजेवीं॥७५॥तैसेंइंद्रयाचावाहवटी॥धांवतयाज्ञानाजथउठी॥होयतेगाकिरीटी॥विषयज्ञेया॥७६॥एवज्ञातयाज्ञानाज्ञे-
 या॥तिहींरूपकेलेधनजया॥हेत्रिविधसर्वक्रिया॥प्रवृत्तीजाण॥जेशब्दादिविषया॥हंपंचविधजेज्ञेया॥तेंचिप्रियकाअ-
 रिया॥एकेपरिचें॥७८॥ज्ञानमोदकेंज्ञातया॥दावीनाजंवधनजया॥तवस्वीकाराकीत्यजावया॥प्रवर्तेंचित्तो॥७९॥परि-
 मीनातेंदेखोनिबका॥जैसानिधानातेंरंक॥कांस्वोदेखोनिबका॥प्रवृत्तिधरी॥८०॥जैसेंखोलोरोंधांवेपाणी॥स्वसर
 पुष्पाचियेपाणी॥नानासुदलामांजवणी॥वत्सविपा॥८१॥अगास्वर्गचिउर्वशी॥एकोनिजेवींमाणूसी॥वरतालावीज
 तोआकाशी॥यागांचिया॥८२॥पुंएपरिवोजैसाकिरीटी॥चढलानमानियेपौटी॥पारवीदेखोनिबोटी॥आंगचिसंगळे॥
 ८३॥हेनापनगर्जनासरिसा॥सयुरवोवांडेआकाशा॥ज्ञाताज्ञेयदेखोनिबैसा॥धावंचय॥८४॥द्वयणांनज्ञानज्ञयज्ञाता॥
 हेंत्रिविधयापंडुसता॥होयचिकर्मांसमस्ती॥प्रवृत्तीएथा॥८५॥परितेंचिज्ञेयविषये॥तरीज्ञातयाचेंप्रियहोये॥तरिप्रयोगाव-
 यानसाहे॥क्षणहीविलव॥८६॥नातरीअवचटें॥तेंचिविरुद्धहोउभिशेटी॥तरियुगांतवाटे॥सांडावथा॥८७॥व्याकाकांझ
 पाठ॥ओं॥७१एथ॥ओं॥७६ही॥ओं॥८१खालावां॥ओं॥८३पंढी॥ओं॥८४मोर॥ओं॥८७विरु॥

॥३॥

॥४॥

॥५॥

॥६॥

॥७॥

॥८॥

॥९॥

॥१०॥

॥११॥

॥१२॥

॥१३॥

॥१४॥

॥१५॥

॥१६॥

॥१७॥

॥१८॥

॥१९॥

॥२०॥

॥२१॥

॥२२॥

॥२३॥

॥२४॥

॥२५॥

॥२६॥

॥२७॥

॥२८॥

॥२९॥

॥३०॥

॥३१॥

॥३२॥

॥३३॥

॥३४॥

॥३५॥

॥३६॥

॥३७॥

॥३८॥

॥३९॥

॥४०॥

॥४१॥

॥४२॥

॥४३॥

॥४४॥

॥४५॥

॥४६॥

॥४७॥

॥४८॥

॥४९॥

॥५०॥

॥५१॥

॥५२॥

॥५३॥

॥५४॥

॥५५॥

॥५६॥

॥५७॥

॥५८॥

॥५९॥

॥६०॥

॥६१॥

॥६२॥

॥६३॥

॥६४॥

॥६५॥

॥६६॥

॥६७॥

॥६८॥

॥६९॥

॥७०॥

॥७१॥

॥७२॥

॥७३॥

॥७४॥

॥७५॥

॥७६॥

॥७७॥

॥७८॥

॥७९॥

॥८०॥

॥८१॥

॥८२॥

॥८३॥

॥८४॥

॥८५॥

॥८६॥

॥८७॥

॥८८॥

॥८९॥

॥९०॥

॥९१॥

॥९२॥

॥९३॥

॥९४॥

॥९५॥

॥९६॥

॥९७॥

॥९८॥

॥९९॥

॥१००॥

रा॥ वरपडाजालेयानरा॥ हर्षआणिदरारा॥ सरसाचिउठ्ठा॥ ८८॥ तैसें जेयो प्रिया प्रिये॥ दोखला न ज्ञानतया होये॥ मरात्याग-
 स्वीकारी वाहो॥ व्यापारते॥ ८९॥ तेथरागीप्रतिमलाचा॥ गोसावीसर्वदकाचो॥ रघुनाथ॥ ९०॥ तैसें-
 ज्ञानेपणेजेअसे॥ तेंयेकर्तारोमयेदशो॥ जेवितेंबैसलजेसे॥ रंधनकरु॥ ९१॥ कांश्चमरोचिकेलाभका॥ वोरकलरिगालाअ-
 कसुको॥ नानादेवरिगालादेउका॥ चियाकामा॥ ९२॥ तैसाजेयाचियाहोवा॥ ज्ञानाईद्रियांचामेकावा॥ राहादवीतेंथांडवा॥
 कर्ताहोये॥ ९३॥ आणिआपणहीउनीकता॥ ज्ञानाआणीकरपता॥ तेथेजेयचिस्वभावता॥ कार्यहोये॥ ९४॥ ऐसाज्ञाना
 चियेनिजगती॥ पूलटपडेगासुमती॥ नेत्राचीशोभारती॥ पालटेजैसी॥ ९५॥ कोअहृष्टजालियाउदास॥ पालटेअस्मिता
 चाविलास॥ पूणिमेपाठीशीतांश॥ पालटेजैसा॥ ९६॥ तैसाचाळितांकरणो॥ ज्ञानावेष्टिजेकर्तेपणो॥ तेथिचि नित्येंलक्षणें
 ॥ ऐकआतां॥ ९७॥ तरिबुद्धिआणिमना॥ चित्तअहंकारहना॥ हेंचतुर्विधचिन्ह॥ अंतःकरणानें॥ ९८॥ बाह्यत्वचाश्रवण
 ॥ चक्षुरसनाघ्राणा॥ हेंपंचविधजाणा॥ इंद्रियगा॥ ९९॥ तेथआतुलतंवकरणो॥ कर्ताकर्तव्यापेउमाणो॥ भगतेजरीजाणे
 ॥ सरसायेते॥ १००॥ तरिबाहेरिलेतेंही॥ चक्षुरादिकेदाहाही॥ उठोनिलवलाही॥ व्यापारासुये॥ १०१॥ भगतोईद्रियकद
 बं॥ करबिजेतंवराव॥ जंवकर्तव्याचालास॥ हातासिये॥ १०२॥ नातेंकर्तव्यजरीदुःखे॥ फळुलेमेंदेखे॥ तौलावीत्यागसुखें॥ नित्यें
 दाहाही॥ १०३॥ भगपिदेदुःखाचाठावो॥ तंवराहादवीरात्रिदिवो॥ विकणआतंकरावो॥ जयापरी॥ १०४॥ तैसेंनित्यागास्वीकारी
 ॥ वाहातांईद्रियांचीधुरी॥ ज्ञातयातेंअवधारी॥ कर्ताह्यणिपे॥ १०५॥ आणिकर्तयाचासर्वकर्मी॥ आउतांचियापरीक्षमी॥ ह्म
 णोनिईद्रियातेंआह्मी॥ करणह्यणो॥ १०६॥ आणिहेंचकरणवरी॥ कर्ताक्रियाज्याउभारी॥ नित्याव्यापेतेंअवधारी॥ कर्मए
 पाठ-ओं॥ १२॥ शिवा-ओं॥ १८॥ बाहेरी-ओं॥ २॥ तरि-ओं॥ ४॥ वातेंवाहावो॥ ॥ १॥ ॥ ॥ ॥

था॥७॥ सो नारायि चि य बुद्धि लेगे॥ व्याप चंद्र करि चिंदिणे॥ कां व्यापे वेल्हाळ पणे॥ वेली जैसी॥ ८॥ नाना प्रभाव्यापे प्रकाश॥ मो
 डिया इक्षर सा॥ हे असो अवकाश॥ आकाशी जैसा॥ ९॥ तैसें कर्तया चिया क्रिया॥ व्यापलें जे धनंजया॥ तें कर्म गाबोलावया॥ ओ
 न नार्ही॥ १०॥ एव कर्म कर्ता करण॥ या तिहीं चिंही लक्षण॥ सांगी तलें तुज विचक्षण॥ शिरा मणी॥ ११॥ राख ज्ञाना ज्ञाना ज्ञेय॥ हे
 कर्म चंद्र प्रवृत्ति वया॥ तैसें चि कर्ता करण काय॥ हा कर्म सचय॥ १२॥ वन्ही दे विला अस धुम॥ आशी बीज जे बिंदु म॥ कां मनी
 जोडे कामा॥ सदा जैसा॥ १३॥ तैसें कर्ता क्रिया करणी॥ कर्मांचे आद जित वणी॥ सो नें जैसें राणी॥ स्रवणार्चिया॥ १४॥ द्य-
 पोनि हे कार्य मी कर्ता॥ ऐसें आथी जे थपंडु कृता॥ ते थ आत्मा दूरी समस्ता॥ क्रिया पासी॥ १५॥ या लागी पुटन पुटती॥ आत्मा वे
 ग का चि स्रमती॥ आतां असो हे किती॥ जाणतां मित्र॥ १६॥ श्रुती॥ १७॥ शान कर्म च कर्ता चि थिये गुण भेदनः॥ प्रोच्यते गुण
 संख्या ते यथा वच्छृणुता न्यपि॥ १८॥ टी०॥ परिसांगी तलें ज्ञान॥ कर्म हा कर्ता हन॥ तेनें न्ही तिही ठायीं भिन्न॥ गुणी आ
 थो॥ १९॥ द्यणो निज्ञाना कर्म कर्तया॥ या तें ज्ञान ये धनंजया॥ जे दोनी बांधती सो डावया॥ एक चि मोटा॥ २०॥ तैसें सलिक ठा
 उ वें होये॥ तो गुण भेद सांगो पाहे॥ जो सारव्य शास्त्र आह॥ उवाडला॥ २१॥ जे विचार दीरस मुद्र॥ स्वबोध कुमुद न चंद्र॥
 शान डाळ सी न रद्र॥ शास्त्राचा जे॥ २२॥ कीं म कृति पुरुषा दोनी॥ भिस कली दिवोर जनी॥ तिये निवडितां त्रिभुवन॥ मान ड
 जे॥ २३॥ जे थ अपारामो हाराशी॥ तत्व चा मापे चा विसी॥ उमा गेय उमर ३॥ २४॥ अजुना त सारव्य शास्त्र
 पुढें जयांचे स्तोत्रा॥ ते गुण भेद चरित्रा॥ ऐसें आह॥ २५॥ जें आपुलें नि आंगिकें॥ त्रिविध गणांचे भअकें॥ दृश्य ज्ञाना नित के॥ अ
 कित केले॥ २६॥ एव सत्वर जत मा भनि हीं चागवटी असे मा हमा॥ जे त्रै विषय आदि ब्रह्मा॥ अति क्रमी॥ २७॥ परि विषयी चि
 पाठ- ओं- १२- कर्म- ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

आधवीसदी॥ जेणेसें दले त्रिगुणसेदी॥ प॥ हले तें तें वसात्वीक आधी॥ ज्ञानसांगां॥ २६॥ नहृ प्रजरी चार खकीजे॥ तारि मल्लतें ही चार व
 रुज्जे॥ तैसें ज्ञानेश्वरुं लाहिजे॥ सर्वही शब्द॥ २७॥ ह्यणों नितें सात्वित्वात्॥ ३०॥ अन्तर्गतां त्रे ध्रुवधान॥ केवल्यगुणनिधान॥ श्री
 कृष्णद्वयो॥ २८॥ अहो॥ सर्वभूतेषु येनैक भावमव्ययमीक्षते॥ अविभक्ताविभक्तेषु ते स्मानविद्विस्मात्त्विकुम्॥ २९॥ दी॥ तारि
 अर्जुनागातें पुढें॥ सात्विक ज्ञानचारवें॥ जयाचउदयी जे यबुडें॥ ज्ञातेनिसी॥ ३०॥ जेसासूर्यनदरेव आधारें॥ सरितानि णिज-
 तीसमारे॥ काकवळिल्यानधरे॥ आत्मज्ञाया॥ ३०॥ तयापर जयाज्ञाना॥ शिवादिहृणावसाना॥ इयाभूतव्यक्तिभिन्ना॥ नाडक
 ती॥ ३१॥ जेसें हातें चित्रपाहांतां॥ हायपाणें येमठिती॥ कांचे गोविस्वमायतां॥ जेसें हाये॥ ३२॥ तैसें ज्ञानेजें॥ करितां ज्ञानव्यातें
 पाहाणें॥ जाणतें निजाणें॥ जाणावें उ॥ ३३॥ येसें नें आदि नलणी॥ नकाठि ते अपुल्या आयणी॥ कांतरंगनपेनी पाणी॥ गा
 कुनिजेसें॥ ३४॥ तैसें ज्ञानाज्ञाना चिया हाता॥ नलगो चट्टययथा॥ तें ज्ञान जाणसर्वथा॥ सात्विकगा॥ ३५॥ आरिसापा हो जातों को
 हो॥ जेसें पाहातें चिको रंगपुढें॥ तैसें जेथला टो निपडें॥ ज्ञातचिजे॥ ३६॥ पुढती तें चसात्विक ज्ञाना॥ जे मोसलक्ष्मीचे सुवन॥ हे अ-
 सोरेक चिन्ह॥ राजसाचे॥ ३७॥ अहो॥ एथ कुलेन तु यस्माननाभावान्प्रथमि विधान्॥ वेत्ति सर्वभूतेषु ते स्मानविद्विस्मात्
 मे॥ ३८॥ दी॥ तारि पार्थापरियस॥ तें ज्ञान गाराजसा॥ जेसें दाचीकासा॥ धरूनि चाले॥ ३९॥ विचवतां मृताचिया॥ आपण आ-
 तोनि ठिकारिया॥ बहूचकें ज्ञातया॥ आणिली जेणें॥ ४०॥ जेसें सांचूरुपा आड॥ घाळुनि विसराचें कबाड॥ मग स्वमाचें काबो
 डा॥ विवरी निद्रा॥ ४०॥ स्वज्ञानाचिये पोकी॥ बाहेरि मिथ्या सोहचि रावकी॥ तिहीं अवस्थाची वत्याळी॥ दाविजे जीवा॥ ४१॥
 अळकारणें झोंकलें॥ बाळका सोनें कंवायांगेलें॥ तैसें नामीं रूपीं दुर्गावले॥ अहेतजयां॥ ४२॥ अवतरली गाडयां घडां॥ एव्ही
 पाठ॥ ओं॥ २६ पडिलें॥ ओं॥ २७ जेदटी॥ ओं॥ ३३ जाणताना॥ ओं॥ ४१ मिथ्येचि मिहि॥

॥ ३५ ॥

॥ ३५ ॥

अनोळवजाली मूढा॥ वन्हि जाला का नडा॥ दीप लासाठी॥ ४३॥ कां वस्त्र पणाचे विआसेपो॥ मूर्खी या नित तू हार पो॥ नाना सुभ्यो
 पदलोपो॥ दांडी निचव॥ ४४॥ तैसी जया ज्ञाना॥ जाणोनि मृत व्यर्का भिन्ना॥ एक्य बोधाची सावना॥ निसो निर्गलि॥ ४५॥ मग दे
 धनी भेटला अनका॥ फुलावरी परिमळा॥ कांजळ भेटे सकळा॥ चेद्रजे सा॥ ४६॥ तैसे पदार्थ भेट बहव स॥ जाणोनि लाहान थोर वे
 षा॥ आतलें तराज सा॥ ज्ञान येथा॥ ४७॥ आतां तामसाचि ही लिग॥ सांगे नतें वाळ सव चाग॥ डाव लावया मातंग॥ सत नजे सो॥ ४८॥
 श्लो०॥ यत्पुरुषं वदेकस्मिन् कार्यं सक्तं महत्तु॥ अतः तद्यथ वदत्यन्तं तत्तामसमुदाहृतं॥ २२॥ टी०॥ तं रिकर दीजे ज्ञाना॥ हिंडे
 विधेचि निवस्त्र हीना॥ श्रुति पाठ मोरी नगन॥ स्मरणो नितया॥ ४९॥ यो रंही शस्त्र बाह्य कारी॥ जे भिं देचे विदाळवरी॥ बोळ विले
 से डोंगरी॥ स्लेछ धर्माचा॥ ५०॥ जेगा ज्ञान रोसे॥ गुण या हेता मसे॥ घेतले मोर्ते पसे॥ हाऊनिया॥ ५१॥ जे सोयरी के बाध नेणे
 ॥ पदार्थी निषेध न स्मरण॥ निरोपिले जे संस्करण॥ शून्य ग्रामी॥ ५२॥ तया तोडी जे नाडुळे॥ काख तां जेणे पोळे॥ तें चिये कवाळे॥ ये
 रय चितें॥ ५३॥ पैसे नेचे रित उदिरा॥ न स्मरणे थर विथर॥ नेणे मोस रवाइरा॥ काळो गरी॥ ५४॥ नाना वना माजि बोहरी॥ कड
 सणी जे विन करी॥ काजी तमेले न विचारी॥ बेसता मासि॥ ५५॥ अगावांत वार्हा देलेया॥ साजुक कास डालिया॥ विवक का
 वळिया॥ नाही जे सा॥ ५६॥ तैसे निषिद्ध सांडी न द्यावें॥ कां विहित आदरे ध्यावें॥ हें विषयांचे निनावें॥ नेणे निजे॥ ५७॥ जेतु
 लें आड पडे दिवा॥ तें तुल्येचि विषया साठी॥ मग तें द्रव्य स्थिर यावरी॥ शिशादरा॥ ५८॥ तीया तय ह माषा॥ उदक नाई सोनाळ
 रवा॥ तृषा बाळतेचि सरवा॥ वाचूनिया॥ ५९॥ तया निपरी खाद्यारवाद्य॥ न स्मरणे भिद्या निद्य॥ तोडा आवडे ते मध्या॥ ऐसा
 निबोधा॥ ६०॥ आणि स्त्री जाताने तुकें॥ त्वचो द्रव्य चि बोळवे॥ तिये विषय सोपारिके॥ सादराचि बहू॥ ६१॥ पैसे याधि जे उपक्र
 पाठ॥ ओं॥ ४५ वासना॥ ओं॥ ४७ वेदें॥ ओं॥ ५५० वीर कारी॥ ओं॥ ५२ सुणांगां वी॥ ओं॥ ५७ जवें॥ ओं॥ ५८ स्त्री द्रव्य॥ ओं॥ ६१ एक निबोधा॥

॥ ४१॥

रे॥ तथा चिनामसो धिरो॥ देहसं बंधनसरो॥ जिये ज्ञानी॥ ६२॥ मृत्युचे आघवेंचि अन्न॥ आणि आघवेंचि इंधन॥ तैसें जगचि
 आपलें धन॥ तामस ज्ञान॥ ऐसे निविशव सकळ॥ जेणों विषय चि मां निलें केंवळ॥ तया एकापासुन॥ देहमरणा॥ ६४॥ आ
 काशपतितानीरा॥ जैसा सिंधु चिये कथारा॥ तैसें कृत्य जात उदरा॥ लुगिं चि बुझे॥ ६५॥ वांचूनि स्वर्गनरक आंधी॥ तया हेतुपु
 न्निनिवृत्ती॥ इये विषई आघवेंचि राती॥ जाणिवेतीते॥ ६६॥ जे देह रवडाना मआत्मा॥ इश्वर पाषाण प्रतिमा॥ यया परोती प्रम
 दळो नेणें॥ ६७॥ ह्येण पडिले निशरीरें॥ केलो निसीं आत्मा मरें॥ मांभोगा वया उरें॥ कोणवेधें॥ ६८॥ ना इश्वर पाहतां आह॥ तोसो
 गावीजरी हे होये॥ तेरी देव चि स्वाये॥ विकूनि या॥ ६९॥ गावींचे देवळेश्वर॥ निया मकचि होती साचार॥ तरि देसींचि डोंगर॥ उगे
 को असती॥ ७०॥ ऐसा विपाये देव मानिजे॥ तरि पाषाणमात्र चि जाणिजे॥ आणि आत्मा तवा चि द्युणिजे॥ देह ते चि॥ ७१॥ येरें
 पाप पुण्यादिकें॥ तें आघवेंचि करो नि लटिकें॥ हितमानि अग्निमुखें॥ चरणें जें का॥ ७२॥ जे चांमाचे डोळे दावती॥ जे इंद्रिये गोडी
 लावती॥ तें चि साचूं हे मतीती॥ फुडि जया॥ ७३॥ किंबहुना ऐसी प्रथा॥ वादती देर स्त्री पाया॥ धूमाचि वेली वृथा॥ आकाशीजि
 मी॥ ७४॥ कोरडानावाला॥ उपेयागो आर्या गेला॥ तो वादो निसोडला॥ भेंड जैसा॥ ७५॥ नानाउसंचि कणसें॥ कंनपुंसकं मा
 णुसें॥ वनलसालें जैसें॥ साबरीचें॥ ७६॥ ना तरी बाळ काचें मन॥ कांचो राघरींचें धन॥ अथवा गळस्तन॥ शोळियेच॥ ७७॥ तें
 में जंबवणों॥ वोसाळा दिसे जाणणें॥ तया तें मी द्युणें॥ तामस ज्ञान॥ ७८॥ तें ही ज्ञान दया पाषा॥ बोलिजे तो भाव ऐसा॥ जात्यथा
 च कां जैसा॥ डोळा वाड॥ ७९॥ कांब धिरांचे नीट कांन॥ अपेयाना मपान॥ तैसें आडनांव ज्ञान॥ तामसा तया॥ ८०॥ हें असो किती
 बोलवें॥ तरि ऐसे जे देखावें॥ तें ज्ञान नोहे जाणावें॥ डोळसत म॥ ८१॥ एवंचि तिही गुणी॥ भेद लथथाल सणी॥ ज्ञान श्रोते शिरो मू
 पाठ-ओं-६८ ह्येणों नि-ओं-६८ किमरे-ओं-७३ चर्मचक्र-ओं-७५ उपेगा-

॥ ११ ॥

॥ ११ ॥

पाठ-ओं-६८ ह्येणों नि-ओं-६८ किमरे-ओं-७३ चर्मचक्र-ओं-७५ उपेगा-

णी॥ दाविंलेंतुज॥ ८२॥ आतां याचिप्रकारा॥ ज्ञानाचेनिधनुर्परा॥ प्रकाशें होतें गोंचरा॥ कर्तयांच्या क्रिया॥ ८३॥ स्वर्णानिकर्म
पेणा॥ अनुसरेंत हीं मागां॥ मोहें जालियां वोया॥ तों येजे सौ॥ ८४॥ तें चिज्ञानत्रय वशें॥ त्रिविध कर्म जें असे॥ तें थसालिक तें वरे
सौ॥ परिस आधीं॥ ८५॥ ष्टो॥ ॥ नित्य तं संगरहित मरागद्वेषतः कृतम्॥ अफलफेक नाक मयत्तत्मात्त्विकमुच्यते॥ २३॥ दी०
तरि स्वाधिकाराचे निमर्गी॥ आलें जें मानिलें आंगें॥ पतिव्रतेचे निपरिषणें॥ प्रियातें जें सौ॥ ८६॥ मावक्या आगाच हुना॥ प्रभदा-
लेचनं अंजना॥ तें सै अधिकारासि सडणा॥ नित्यपण जें॥ ८७॥ तें नित्य कर्म भले॥ होय नो भित्तीं सावाइलें॥ सोनयासि जे
डलें॥ सोरप्य जें सौ॥ ८८॥ आणि आंगाजी वाचि संपनि॥ वेंचुनि करी बाळाची पाळती॥ परिजें विडवणें हो स्थिती॥ न
पाह माये॥ ८९॥ तें सै सर्व स्वै कर्म अनुष्ठी॥ परिफळन सूर्ये दौ॥ उरिविती क्रिया पौठी॥ ब्रह्मीचि करी॥ ९०॥ आपि पिय-
आलिया स्वभावो॥ सबळ उरें वेचे राउव नव्हे॥ तें सै सत्य सगें करावें॥ पारुषे जरी॥ ९१॥ तरि अकरणाचे निवेदें॥ देवते जि वीं
न बाधौ॥ जालियाचे निआनदें॥ फुजें नेणें॥ ९२॥ ऐस ऐसिया हात वटिया॥ कर्म निफजें धन जया॥ जाण सात्विक हें त
या॥ गुणनासगा॥ ९३॥ ययापरी राजमाचें॥ लक्षण सांगिल साचें॥ न करी अवधानाचें॥ वाणोपणा॥ ९४॥ ष्टो॥ ॥ यत्तु
कामेष्मिन्ना कर्म साहकारणवापुनः॥ क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्॥ २४॥ ॥ नित्य तं संगरहित मरागद्वेषतः कृतम्॥ अफलफेक नाक मयत्तत्मात्त्विकमुच्यते॥ २३॥ दी०
न हीं संसारां॥ योगविश्वभरी आदरा॥ सूरवें जें सौ॥ ९५॥ कातुकुशाचिया झाडा॥ दुरूनि न घाये सिं तोडा॥ द्राक्षीचिया तरि
बुडा॥ दुधचिला विजे॥ ९६॥ तें सौ नित्य नो भित्तीं॥ कर्म जिये अवश्य कें॥ तयाचे विषां शक॥ बेसला उदु॥ ९७॥ येरां का
म्याचें नितरि नावें॥ देह सवस्व आघवें॥ वेचिता हो नमन वे॥ बहु ऐसें॥ ९८॥ अगादे वटी वाटिला हिजे॥ तें थसालें दान थड
पाठ-ओं-८४ पाणी-ओं-९२ बंधे-ओं-९७ बेंडला-
॥ ९३॥

॥ ९३॥

॥ ९४॥

॥ ९५॥

जे॥ परितोपुनस्तपिजे॥ बीजजेषी॥ ११॥ कांपरिसजालियाहाती॥ लोहालगसिर्वसपति॥ वैचरितोयेउन्मति॥ साध
 कृजेसा॥ ६०॥ तैसींफळदूखोनिफुडे॥ काम्यकर्मदुवाडे॥ काम्यकर्मदुवाडे॥ काम्यकर्मदुवाडे॥ काम्यकर्मदुवाडे॥ यथावि
 धीनेदके॥ काम्यकीजेतितके॥ क्रियाजान॥ २॥ आणितयाहीकलियाचे॥ तोंडीलावीडो॥ डेचे॥ कर्मियांनामपाठाचे॥ वा-
 णेसारी॥ ३॥ तैसाभेरकर्महंकार॥ मगपितअथवागुरु॥ तनमनाकाळज्वर॥ ओषधजेसे॥ ४॥ तैसेनिसाहंकारे॥ फ-
 ळाभिकाधियेनरे॥ कीजगाअदरे॥ जेजेकाही॥ ५॥ परितोहीकरणेबहुवसा॥ वळघोनि करीसायासा॥ जीवोपायुकाजे
 सा॥ कोल्हादियात्ता॥ ६॥ एकाकणालागीरुंदीर॥ आवधाउपसंडोंगर॥ काशेवाकोदेशेदुंदुर॥ समुद्रडहुकी॥ ७॥ पैंभिके
 परतेनलाहे॥ तन्हीगारुडीसापवाहे॥ कायकीजेशीणचिहाये॥ गोंडयेका॥ ८॥ हेंअसोपरमाण्विनिलोभे॥ पाताळलंघि
 नीवांळबौ॥ तैसेस्वर्गसुखलोभे॥ विचबणेंजे॥ ९॥ तेंकाम्यकर्मसकुश॥ जाणावेंयेथराजस॥ आतांचिन्हपरिसा॥ तामसांचे॥ १०
 प्रलो॥ अनुबंधसर्पहिंसासनपेदयन्त्रपोरुष॥ मोहादुरभ्यतेकर्मयत्तन्नामसमुच्यते॥ २५॥ टी०॥ तरितेंगानामसकर्म॥
 जेंनंदेचेंकौक्याम॥ निषेधाचेंजन्म॥ साचजेणे॥ ११॥ जेंनिपजविल्यापाठी॥ काहीचनदिसोदही॥ रेघकाढिलियापोटी॥
 तैथाचेंजेवी॥ १२॥ कांकाजीगुसळिलिया॥ कांसाखरफुंकिलिया॥ काहीनदिसेगाळिलिया॥ वळघणा॥ १३॥ नानाउपणिलि
 याभूस॥ कांविधिलियाआकाश॥ नानासांडिलियापाश॥ वारयासि॥ १४॥ हेंअवघेंचिजेसे॥ वांस्नेहोसुनिनाशे॥ अकेलि
 यापाठेतैसे॥ वांयाचिजाये॥ १५॥ येद्वीनरंदहाहीयेवटे॥ धनआटणीयेपड॥ तेंकर्मनिफजवितामोडो॥ जगानेंसुख॥
 १६॥ जैसाकमळवर्निपासा॥ काढिलियाकाटसा॥ आपणेंझिजनाश॥ कमळाकरी॥ १७॥ काआपणअगजळे॥ आधि-
 पाठ॥ ओ० ६०० चेंचिनां॥ ओ० ७०० अमका॥ ओ० ८०० पाही॥ ओ० ९०० वाळबें॥ ओ० १०० शरवांडी॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

नागवज्रगान्धोके॥ पतंगजैसासळें॥ दीपचेनि॥ १८॥ तैसें सर्वस्ववायां जावो॥ वरीस्वदेहाही होयवावो॥ परिपुटितअप्या
 वो॥ निफजविजेजों॥ १९॥ मांसिआणपेयांतें गळवी॥ परिपुटिलां वांतां शिणवी॥ तें कसमळ आठवी॥ आचरणजें॥ ६२०॥
 तें हीकरावयो देशें॥ मजसामर्थ्य असेकीनसे॥ हेहीपुढील तैसे॥ नपाहातां करी॥ २१॥ केवटासा आउपावो॥ करिंत कोणयस्ता
 वो॥ कैलयाही आवो॥ काययेथी॥ २२॥ इयजणिवाच सोये॥ अविवेकाचे निपाये॥ पुसोनि या होये॥ सादोपकमी॥ २३॥ आ
 फ्लावसौदाजाकुनि॥ विसाढेजैसावन्ही॥ कोस्वमयादागिळोनि॥ सिंधू उढी॥ २४॥ मरानेणें बहुथोडें॥ नपाहमागें पुढें॥ सा
 रीमागयेकवडें॥ करीतचालें॥ २५॥ तैसें कुत्याकुत्यसरकुटित॥ आपपरनुरवित॥ कर्महोय तें निश्चित॥ तामसजाण॥ २६॥
 ऐसीगुणत्रयसिन्ना॥ कर्मासिगाअजुना॥ हेकलीविवचना॥ उपपत्तीसी॥ २७॥ आनांययाचि कर्माभजता॥ कर्मासिमा
 नियाकर्ता॥ तें जीवहीनिविधता॥ पातलाअसे॥ २८॥ चतुराश्मवशो॥ एकपुरुषचतुर्थोदसो॥ कतयात्रेविध्यतैसे॥ कर्मसे
 दें॥ २९॥ परितयांतिहीआंत॥ सात्विकतत्त्वप्रस्तुत॥ सागेनदत्तचित्त॥ आकर्णीत्ति॥ ३०॥ श्लो०॥ मुक्तसंगोनहवादीरतु
 स्नाहममन्वितः॥ सिध्यसिध्योर्निर्विकारः कर्तृमात्त्विकउच्यते॥ ३१॥ टी०॥ तिरफळो देशें सांडिलया॥ वाढीजेविसगळिया
 ॥ शाखाकांचंदनाचिया॥ बावनया॥ ३२॥ कांनफळांहीसार्थका॥ जैसियानागलतिका॥ तें सियाकरीनित्यादिका॥ क्रिया
 जोको॥ ३३॥ परिफळून्यता॥ नाहीतयाविफळता॥ पैफळासीचिपुडुस्तता॥ फळेंकांथिसां॥ ३४॥ आणि आदरेकरिबुडु
 वसे॥ परिमीकर्ताहेनुमसे॥ वर्षकाळीचिजैसे॥ मेघवृंद॥ ३५॥ तें विचपरमात्सलगा॥ समर्पवयाजोगा॥ कर्मकळापिया
 ॥ निपजौवयो॥ ३६॥ तयाकाळानें नुलेंपणें॥ देशशस्त्रीहीसाधणें॥ कांशास्त्रोचावौतों पाहाणें॥ क्रियानिर्णय॥ ३६॥ युक्तिका
 पाठ-ओं-२६ नवचारित-ओं-३२ गा ओं-३५ निपजवितो-ओं-३६ यानो-

॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥

रणायेकवक्त्रा॥ चित्तजवौनैरणैफळा॥ नियमान्वियासांखळा॥ वाहसैदा॥ ३७॥ हानिरोधसाहावयालागी॥ यथांचियांचांगाचो
 मी॥ चित्तवर्णिजितीआंगी॥ वाहजेकां॥ ३८॥ आणिआत्मयांचियेआवडी॥ कर्मकारितांवरिपडी॥ देहसमन्विनेयेगवडी॥ येवोन
 लाहे॥ ३९॥ ऐसानिद्रादुहावे॥ क्षुधानबाणवे॥ सुखाडनपावे॥ अंगाचाठावो॥ ४०॥ तवअधिकाधिक॥ उत्साहपरिआगळीक॥
 सोनेजेसेपुढितुकै॥ तुटालिया॥ ४१॥ जरिआवडीअर्थीसाच॥ तरेजीवत्तहीसलुच॥ आगीघालितांरोमांच॥ दोरिजतीसिति
 यो॥ ४२॥ साआत्मायायेवट्याप्रिया॥ वालसेलाजोधनंजया॥ देहहीसिद्धतातया॥ कायरेवेदेहईलै॥ ४३॥ ह्यणीनिविषयसर
 वाडतुटे॥ जंवजचदेहबुद्धिआटे॥ तंवतंवआनंददुणवटे॥ कर्माजया॥ ४४॥ ऐसोनिजोकर्मकरी॥ आणिकोणेयेकेअवसरी॥
 तेंठाकेसीसरी॥ वाहेजरी॥ ४५॥ तरीकडाडीमोड्याडा॥ तोआपणपेंनमनीअवघडा॥ तेंसाठाकलेनिहीथोडा॥ नोहेजोका॥
 ४६॥ नातरिआदरिले॥ अव्यंगसिद्धीगेलें॥ तरितेहीजिनिहें॥ भिरऊनेपो॥ ४७॥ इयास्वुणाकर्मकरितां॥ दोरिजेजोपंडुफुला
 तयातेंह्यणिपेंतलता॥ सात्विककर्तो॥ ४८॥ आतांराजसाकर्तेया॥ वोळखणेंहेंधनंजया॥ जेअभिलाषजगान्विया॥ वसेता-
 तो॥ ४९॥ म्हणे॥ रागीकर्मफलप्रसूतुब्धोहिंसात्माकोशुचि॥ हर्षशोकान्वितः कर्ताराजसः परिकीर्तितः॥ २७॥ टी०॥ जैसा
 गोंविंचियाकथमळा॥ उकरडाहोययेकवळां॥ कांस्मशानेंअमंगळा॥ आधवयांची॥ ६५०॥ तयापरिजेअशेषा॥ विष्वा-
 चियाअभिलाषा॥ पायप्रक्षाळणियांदोचां॥ घरतजाला॥ ५१॥ ह्यणीनिफळाचालागा॥ दोरिजेजियेअसलगा॥ तियेकर्मचिंगा॥ रो
 होमांडी॥ ५२॥ आणिआपणजालियेजोडी॥ उपसोनेदीकवडी॥ क्षणक्षणाकुरेंडी॥ जिवान्चीकरा॥ ५३॥ छुपणचिन्तीतेवअपु
 ळा॥ तेंसादक्षपरावियामाला॥ बकजैसासुतला॥ मांसेयासि॥ ५४॥ आणिगोंवीगेलियाजवळी॥ मृगवल्याआंगफळी॥
 याठ-ओं-३७ वाहाणेंइन-ओं-४१ तुक-ओं-४३ बेंदित-ओं-४३ बेनवाट-

॥ ७॥

॥ ४॥

फले औतपोढी॥ बोरटो जैसी॥ ५५॥ तैसेमने वाचा कर्ये॥ फल तथा दुःख दैत जाये॥ स्वार्थ साधितान पड़े॥ परा वै हित॥ ५६॥
 तैविच अंगे कसी॥ आचरणे नो हे कसी॥ नानये मनो धर्मो॥ अरोचक॥ ५७॥ कनक चिया फळा॥ आतमाज बाहरी सौका॥
 तैसा सबात्स दुबळा॥ शुचित्वे जौ॥ ५८॥ आणिक र्मजात कोलिया॥ फळा हुई शिध नंजया॥ तारि हर्ष जगायया॥ बोकुलिया
 वाये॥ ५९॥ अथ वर्ज आदरिले॥ हीन फळ होय केले॥ तारि शोके तुणों जितले॥ धिः करालगे॥ ६०॥ कर्म राहा दीरसी॥ जया
 तै होतो देवसी॥ तो चिजा निभुदीसी॥ राज सकर्ता॥ ६१॥ आतां यया पाठियेरा॥ जो कुकर्मा चा आगरा॥ तो ही कर्मे गोचरा॥
 ताम सकर्ता॥ ६२॥ अलो ०॥ अयुक्तः यकृतः सत्त्वः शठेनैकृति कोलसः॥ विषादी दीपसूत्रे च कर्तानाम स उच्यते॥ २८॥
 दी०॥ तारि मिया लागली या कैसे॥ पुढील जळत असे॥ हेने णिजे हुताशें॥ जिया परी॥ ६३॥ पैशास्त्रे मिया तिरवेदो॥ ने णिजे कै
 से निनिवेदो॥ काने णिजे काळूटो॥ आपले केले॥ ६४॥ तैसा पुढील या औपुलया॥ घात करीत धनंजया॥ आदरी वोरवदिया
 ॥ क्रिया जोको॥ ६५॥ तिया करिता ही वेळी॥ काय जालें हं नसा माळी॥ चला वायू वाहु दुकी॥ चेषे तैसा॥ ६६॥ पै करिण्या
 आण जया॥ मेकना ही धनजया॥ तो पाहूनि पैसेया॥ कै चिन्नाय॥ ६७॥ आणि इंदिया चवो इरिले॥ चरो निगारवे जे जिया
 ले॥ बैलात की लागले॥ गोचिड जैसे॥ ६८॥ हांसया रुदनावेक॥ नेपात आदरी बाळ॥ गहने उचुवळ॥ तया परी॥ ६९॥ जो
 प्रकृती आंतले पणे॥ कृत्या रुत्य स्वादनेणे॥ फुग केरें थाले पणे॥ उकरड जैसा॥ ७०॥ ह्यणों निमान्याचे निनावे॥ इस्वरचे ही
 परी नरवीलवे॥ सत्त्व्य पणे नमनवे॥ डोंगरा सी॥ ७१॥ आणिमन जयाचे कलाळी॥ राहा दी फुडी चो रवी॥ दिती कीर तेवा
 ली॥ पणयागनेची॥ ७२॥ किंबहु भक्त पटाचे॥ देह चिबळिले तयाचो॥ तें जेणें किंजु वारचें॥ तिटय॥ ७३॥ नो हेतय चाम्पा
 पाठ-ओं-५३ तरी सीतरी-ओं-५६ श्री-मागे पुढे-ओं-६५ आण रिवया, पाय-ओं-७९ लवे.
 ॥ ७॥

दुर्मवो॥ तो सा भिळाष भिलां चांगवो॥ म्हणें निनये वें जावें॥ तया ठायो॥ ७४॥ आणि आणि काचें नि कें केलें॥ विरुहो
 येज्या आलें॥ जे सें अपेय पया भिनलें॥ लवण करी॥ ७५॥ को हें वैसे पादार्थ॥ घातिल्यां जात आता॥ ते निस्पृणं धडडिते
 अग्नि होये॥ ७६॥ नाना सद्रव्यें गों मदीं॥ जाल्यां शरीरि पेटि॥ होउनि ठातीं किरीदी॥ मळाचि जे विं॥ ७७॥ तें संपुढलाचें वर
 वें॥ जयाचा भीतरि पावें॥ आणि विरुद्ध चि आयवें॥ होउनि निगो॥ ७८॥ जोगूण घे दे दोष॥ अमृताने चें करी विषा॥ दूधाजि लि
 या देख॥ व्याळ जे सा॥ ७९॥ आणि ऐहकी जियावें॥ जेणें परत्रा साचाये॥ तें उचित कृत्य पाये॥ अवसरि जियो॥ ८०॥ तें व्हज
 या अपेसा॥ निद्राये विली ऐसो॥ दुहवें वारी जैरी॥ विटा कें लोटे॥ ८१॥ पैद्राक्षर स आश्वरसा॥ वेळें तो डस डवायसा॥ कांडो के
 रुदती दिवसा॥ दुहुळाचें॥ ८२॥ तें सा कल्याण काळ पाहें॥ तें तया तें आळसरवाये॥ नाना प्रमादीं तरि होये॥ तो म्हणें तें सें॥ ८३
 जे विंचि सागराचा पोटी॥ जळें असं ड आगिरी॥ तें सा विषाद वाहें गों॥ जिवाचि येजो॥ ८४॥ हें डोरा आगी धूमाविधि॥ कां अपा-
 न आगें दुर्गंधी॥ तें सा जोजि विलाविधि॥ विषा दे वेळा॥ ८५॥ आणि कल्यांता चियापारा॥ वेगळें हो जे वीरा॥ सूत्र धरी व्यापारा
 ॥ सा भिलाषां॥ ८६॥ आगाज गाही परोती॥ सूचना वाहें पें चिती॥ करितां वर्षा हातीं॥ तृण ही नलगे॥ ८७॥ एसा जे लोका-
 आता॥ पाप पुंज मूर्ती॥ दुखसी तो अव्याहता॥ तामस कर्ता॥ ८८॥ एवं कर्म कर्ता जान॥ याति ही चि विधाचि न्ह॥ दाविले कुज सज्जन
 ॥ चक्रवर्ती॥ ८९॥ श्लो०॥ बुद्ध में दृते श्रेव गुण तां श्रि विधं यशु॥ प्रोच्यमान मशेषेण पृथक् ते न धनं जया॥ ९०॥ दीन आ
 तां विद्ये चांगवी॥ मोहाची वेदुनि मदवी॥ सदेहाचीं आयवी॥ लेउनि लेणी॥ ९१॥ आत्मनिश्चया चि वरवा॥ जया आरि सां पाहिसा
 वयवा॥ तये बुद्धि चि हां पावा॥ त्रिधा असे॥ ९२॥ आगासलां दुगुणीं इही॥ काइ एक ति हां गयी॥ नकी जे चिये थाही॥ जगाया
 पाठ-ओं-८९ दोह-ओं-८५॥ आणि-ओं-८७ स्प-हां-ओं-८८ देखजे-५॥

॥ ४॥

जी॥१३॥ अगो निवसन्तोपोटी॥ कवणकाष्टअसेसुष्टी॥ तैसें तें कैचें दृश्यकोटी॥ त्रिविधजेनोहे॥ १३॥ ह्यणों नितहीं युणी॥ बुद्धी
केलीं त्रियुणी॥ घृतीं सिद्धी वारुणी॥ तैसांचि असे॥ १४॥ तोंचिये कवेगाळों॥ तैथीचि न्हो अंकं करलें॥ सांगिले लउपाइले॥ मेदले
पणी॥ १५॥ पारिबुद्धि न द्या॥ दोही सांगां मांजधनं जया॥ आधीरूप बुद्धी चिया॥ मेदासिकरूं॥ १६॥ तिरुत्तममध्यम
निरुष्टा॥ संसारसिगां सुप्रदा॥ प्राणियां येतिया वाटा॥ तिनी आथी॥ १७॥ जे अकरणीय काम्य निषिद्ध॥ ते हे सांगां तिन्ही
प्रसिद्ध॥ संसारसंयसंबंध॥ जीवां यया॥ १८॥ प्रवृत्तिचि नवृत्तिचि कार्ये कार्ये भयापये॥ बंधमोक्षचयावेनिबु
द्धि॥ सापार्थसात्विकी॥ १९॥ टी०॥ ह्यणों निआधिकारं मानिलें॥ जे वधीचि निवोयें आलें॥ तें येकांचिये थमलें॥ नित्यकर्म॥
१९॥ तोंचि आत्मप्राप्ती फळ॥ दिटीं स्तुति केवळ॥ कीजे जें संकाजळ॥ सेविजे नाहने॥ ७०॥ येतुलें नितेकर्म॥ सांडि जन्म
भयविषम॥ करूं न दे संसारा॥ मोक्षसिद्धि॥ ११॥ ऐसें करितो भला॥ संसारमये सांडिला॥ करणीय तें आला॥ मुमु
क्षुसंसा॥ २॥ तेथजे बुद्धी रे सा॥ बुळ्याबांधे भरवसा॥ मोक्ष ठेविला रे सा॥ जोडेल येथ॥ ३॥ ह्यणों निबुत्तनीचि सा
डलीं॥ स्तुतिप्रवृत्ति न ठा॥ इयेकर्म बुडकुळी॥ द्यार्चकीना॥ ४॥ नृषांत उदकें जिणें॥ कापुरी पंडालिया पळणें॥ अधकू
पगतां करणें॥ सूर्याचे नी॥ ५॥ नानापार्थ्यां भि ओं पध लाहे॥ तरी गेगे दार नाहे निचे॥ कांयाने जिब्दाळा होये॥ जळा
चाजरी॥ ६॥ तरितयाचा जीविता॥ नाहीं जें विअन्यथा॥ तैसें कर्म रेंवतें तो॥ जोडेंचि मोक्ष॥ ७॥ हे करणीया चिया वडे॥ जें
ज्ञान आथीचो रवडें॥ आणि अकरणीय हे कुडे॥ तें मेजाण॥ ८॥ जियें तिन्ही काम्यारिकें॥ संसारमया दायकें॥ अकृत्यपणाचें अं
बुसें॥ पाडिलें जया॥ ९॥ तियेकर्म अकार्यी॥ जन्मसरणसंभयो॥ प्रवृत्ती फळती पायी॥ सांगिली चि॥ १०॥ तै आगि साजी नरिय
पाठ॥ ओं॥ ११॥ नमस्तो॥ ओं॥ ७॥ जेंसे॥ ओं॥ ७॥ प्रवर्तना॥ ओं॥ ८॥ कुडे॥

॥ ७॥

॥ ७॥

वे॥ अथार्वाचनपल्लवे॥ धणधणतनांगां॥ श्रूळजर्वी॥ ११॥ कांकाळियाणाधुधुवात॥ देव्यांननयाल्लवहात॥ नवचवखापआत॥ व्या-
 द्राचिये॥ १२॥ तैसैकर्मअकरणीयि॥ देवोनिमहासया॥ उपजनिः संदेह॥ बुद्धिजय॥ १३॥ नमोऽस्तुतेऽर्चनने॥ नेथजगिजेसू-
 त्कननुके॥ तेविनिषेधोकादुरवे॥ बेधातेजो॥ १४॥ मगबधमयभारिते॥ तियेनिषिद्धायामी॥ विनयागजाणेनिवृत्ती॥ कर्माचि-
 ये॥ १५॥ ऐसैनिकार्याकार्यवेंकी॥ जेप्रवृत्तिनिवृत्तीमापकी॥ खराकुडापारखि॥ जियापरि॥ १६॥ तैसैकुत्याकृत्यशही॥
 बुझेनिरवधी॥ सात्विकद्व्याणिपबुद्धी॥ तेंचितुंजाण॥ १७॥ श्लो०॥ यथाधर्ममपमंचकार्येचाकार्यमेवच॥ अथथावद्व्याजा-
 नातिबुद्धिः सापथराजसी॥ ११॥ टी०॥ आणबकाचागांवी॥ घेपहीरनीरसकलवी॥ कांआहारात्रीचिंगांवी॥ आंधळंने-
 पो॥ १८॥ तैसींदयेंकार्याकार्ये॥ धर्माधर्मरूपेजिये॥ तियेनचोजधितांजाये॥ जाणतीजेको॥ १९॥ जयाफुलांचामकरंदफवे॥ तोका-
 षेंकोरूंसावे॥ परिफ्रमरणानद्ध॥ अव्हाटांजेवी॥ २०॥ अगाडोळावीणमोतियें॥ घेतांपाडिमळविपाये॥ नमिळणेंतेआहे
 ॥ देविलेंतये॥ २१॥ तैसैअकरणीयअवचटें॥ मोडवेतरीचलोत॥ येरवींजाणेंएकवटें॥ दोन्हीजेको॥ २२॥ तेगाबुद्धिचोखविखी
 ॥ जाणयेथराजसी॥ अक्षतटाकेलीजेसी॥ मांदियेबरी॥ २३॥ श्लो०॥ अधर्मपर्मभितयामन्यतेनमसावृता॥ सर्वाथान्विपरी-
 तोस्त्रबुद्धिः सापथतामसी॥ ३२॥ टी०॥ आणिराजाजियावाटाजाये॥ तेंचोर्गसिआडवेंहाये॥ कांरास्रमांदिवोपाहे॥ रातिहोउनी
 २४॥ ननानिथानचिनैदेवा॥ होयेकोळसयाचाउडवा॥ पैअसतेंआपणपेंजीवा॥ नाहीजालें॥ २५॥ तैसैधर्मजाततिंतकें
 जियेबुद्धिसीपातकें॥ साचतलदिकें॥ ऐसैचिबुद्धे॥ २६॥ तैआपवेचिअर्थ॥ करूनिघालीअनर्थ॥ गुणतेतेव्यवस्थिता॥ दोषचि-
 मानी॥ २७॥ किबहुनाश्रुतिजाते॥ अधिष्ठानिकलसरते॥ तैतुलीहउपरते॥ जाणजेबुद्धी॥ २८॥ काणातेहीनपुसता॥ तामसी-
 पाठ-ओं-१४निषिद्धे-ओं-२३अस्वत-ओं-२४आडवाट- ॥५॥

॥५॥

॥५॥

॥५॥

जगन्नाथपंडुसूता॥ शस्त्रीकायधर्मार्थी॥ साचकरावी॥ २९॥ एवंकुहीचेमेद॥ तिन्हीतुजविषद॥ सांगितलेस्वबोध॥ कुमुदचंद्रो॥
 ३०॥ आतोययाचिबुद्धवृत्ती॥ निशंकिलाकर्मजाती॥ स्वादमांजुंरुती॥ अविधाजया॥ ३१॥ तियधुतचेहीविषाया॥ तिन्हीयशा
 लिंग॥ सांगीजनिचाग॥ अवधानदे॥ ३२॥ श्लो०॥ धृत्यायथाधारयत्तमनः॥ प्रणोद्वयक्रियाः॥ योगेनव्यभिचारिण्याश्रुतिः॥ सा
 पार्थसात्विकी॥ ३३॥ टी०॥ तीरुदेलियादिनकर॥ चोरिसिधकेआधार॥ कोराजाज्ञाअव्यवहार॥ कुठवीजवो॥ ३४॥ नात्राप-
 वनाचासाद॥ वाजीनलियार्नाट॥ आंगेंसीबोभाट॥ सोडितेसिय॥ ३५॥ कोअगस्तीचिनिदशन॥ सिंधुपेउनीठातीसोने॥ ने
 द्रोदयींकमळवने॥ भिठेते॥ ३५॥ हेंअसोपावोउचलिला॥ मदसुखनदेवितीरवालो॥ गर्जोनिपुटाजाला॥ सिंहजरी॥ ३६॥
 तेसाजोधीर॥ उठलियाअंतर॥ सनादिकेंव्यापार॥ सांडीतीउसी॥ ३७॥ इंद्रियांविषयोचियागोवी॥ अपेसयाफदतीकिरीटी
 ॥ मनमायेचापोंटी॥ रिगतीदाही॥ ३८॥ अधोर्ध्वपुटेंकाटी॥ प्राणनवांचिपेंडी॥ बांधोनिघालीउंडी॥ मध्यमेमाजी॥ ३९॥ संक
 ल्याविकल्पंचेंलुगडें॥ सोडुनिमनउघडें॥ बुद्धिमागिलेकडे॥ उगोचिबैसो॥ ४०॥ ऐसीधैर्यराजेंजेणें॥ मनप्राणकरणे॥ स्वचे
 घुंर्चीसंसावणें॥ सांडवीजती॥ ४१॥ मगअयवीचिसडी॥ ध्यानाचाआंतुलामठी॥ कोडजतीनिरवडी॥ योगाचिये॥ ४२॥
 परिपरमात्मयाचक्रवर्ती॥ उगाणितोजंवहाती॥ तंवलानचयेतोधुती॥ धरिजतीजिया॥ ४३॥ तेगाधुनयेधें॥ मानिकहं-
 निरुते॥ आर्दकअजुनातें॥ श्रीकातद्वणो॥ ४४॥ श्लो०॥ यथातुर्ध्वसंसार्यानुधृत्यापारयतेजुन॥ प्रसंगेनफलाकांक्षीश्रुतिः
 सापार्थराजसी॥ ४५॥ टी०॥ आणित्हाउनियांशरीरी॥ स्वर्गसंसारचादोहीपरी॥ नांदेजोपोदमरी॥ त्रिवंगोपाये॥ ४५॥ तो-
 मनोरथाचासागरी॥ धर्मार्थकामान्धतारुवावरी॥ जेणेंधैर्यबळंकरा॥ क्रियावाणिज॥ ४६॥ जेकर्मपांडवलासये॥ नयाची-

॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥

पाठ-ओं-३५ स्वाद, बांधिजे-ओं-४४ बोकल-

चैगुणीयेतिमाहे॥ येवदेसाहसवाहे॥ जयाधृती॥ ४७॥ तेगाधृतीराजस॥ पार्थाययगरयस॥ आतोआइकतामस॥
 तीसरीजेको॥ ४८॥ ॥ ४८॥ यथो॥ यथोस्विसमयशोकं विषादं सदसवच॥ नविमुच्यतेदुर्म॥ ४९॥ यथायतामसो॥ ३५॥ ही०
 तरिसवधसंपुणो॥ जयाचंकारूपयेणो॥ कोळसाकोकेपणो॥ घडळाजैसा॥ ४९॥ अहोयाकृतआणिहीन॥ नयाहकीगुण
 लाचामान॥ परिनेह्यणिपुण्यजन॥ राक्षसकाई॥ ५०॥ पैग्रहामाजिंद्रगळ॥ नयातेह्यणिजंमगळ॥ तेसातसोयसाळ॥ गुण
 शब्दहा॥ ५१॥ सर्वतमाचातोलादा॥ किअपमोर्तोचपेटा॥ आगजैसाआगिठा॥ तेसाधडके॥ ५२॥ जैसर्वदोषांचावसोटा॥ त
 मचकासउनिरूप्रमटा॥ उमारिलाआंगवठा॥ जयनराचा॥ ५३॥ तोआळसस्तानिकारवे॥ ह्यणोनिनेद्रकहानमुकं॥ पोपेपोपि
 तांदुःखें॥ नसांडिजेजेवो॥ ५४॥ आणिदुहायनाचियाआवडी॥ सदाभयतयातेनसांडी॥ विसंबुनसंकंधाडी॥ काठण्य
 जैसो॥ ५५॥ आणिपदार्थजैतोत्तहो॥ बापह्यणोनिताशोकेंदावो॥ केलानशकेपापजावो॥ कृतघ्नोनिजैसो॥ ५६॥ आणिअ
 सानाषजीवेसी॥ धरूनिटेलआहर्निशी॥ ह्यणोनिसेवीतेणेसी॥ विषादेकली॥ ५७॥ लसणातेनसांडीगांधी॥ कोअपथ्य
 शीळातंतव्याधि॥ तैसीकेलीमरणावधी॥ विषादेतया॥ ५८॥ आणिवयसावित्तकाम॥ यथाचावाटवीसंभ्रम॥ ह्यणोनिमदे
 आश्रम॥ तोचिकेळा॥ ५९॥ आगीतेनसांडीताप॥ सकातेजातीचासाप॥ कांजगाचवैरीयासिपा॥ अखंडजैसा॥ ६०॥ नातरि
 शरीरांतकाळ॥ नविसंबेकवणेवंक॥ तेसाआशिअटक॥ तामसामिदा॥ ६१॥ एवंपाचहीहोनिद्रादिक॥ तामसाचाटाईदेववा॥
 जियाधृतीदेखा॥ धरिलेआहाती॥ ६२॥ तयेगाधृतीनावें॥ तामसीयेयहजाणवें॥ ह्यणीतलेंतेणदेवो॥ जगाचनि॥ ६३॥ एव
 निविषजेंबुद्धि॥ कीजकर्मनिश्चयेआधी॥ तोधृतियासिद्धि॥ नेइजोयेथे॥ ६४॥ सूर्यमागगोचरहोये॥ आणितोचालती
 ॥ ७॥ ॥ ७॥

पाठ. ओ. ४७ सायाससंह. ओ. ५६ मात्री. ओ. ६० बाहे

कीरणये॥ परिचालणेनें आहे॥ धैर्यजेवी॥ ६५॥ तेसी बुद्धी कर्माते दावी॥ ते करण सामर्थी निफजवी॥ पारिनिफजावया हो आबी
धीरताजे॥ ६६॥ ते हंगल जमति॥ सांगीतली॥ त्रिविध धृती॥ ययक संश्रय निचरती॥ जालिया मग॥ ६७॥ येथ फळ जे येक नि
फळे॥ सरस्वजाते ह्यपिजे॥ ते ही त्रिविध जापिजे॥ कर्म वशें॥ ६८॥ तार फळ रूप ते सरव॥ त्रिगुणीं मंद ले देव॥ विवंचु आ
तों चोरव॥ चोस्ती बोली॥ ६९॥ परिचोरव ते कैसी सांगें॥ ऐवें वें जातों बोलवें॥ कानी चिये ही लागे॥ हातीं चासळ॥ ७०॥
ह्यणीं निजयाचे निअक्षरें॥ अवधान ही होय बाहिरें॥ तें पां आइक हो अंतरें॥ जिवाचे निजवें॥ ७१॥ ऐसें ह्यणीं निदेवो॥ त्रिवि
धा सरस्वाचा प्रस्तावो॥ मांडला तो निर्वोहो॥ निरूपीत असे॥ ७२॥ म्हो०॥ सरस्वति दानीं त्रिविधं शृणु से सरतर्षम॥ अप्या-
साद्रस ते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति॥ ३६॥ टी०॥ ह्यणें सरस्वत्रय मज्ञा॥ सांगां ह्यणीं निप्रतिज्ञा॥ बोलिला तो मज्ञा॥ ऐक आता॥
७३॥ तारि सरस्वते गा किरीटी॥ दाव जे लतुज दीटी॥ जे आत्मर्या चयें मंदी॥ त्रीवा मि होये॥ ७४॥ पारिमात्रेचे निमापें॥ दि
व्याषध जें संपें॥ कां कथिला चें कर्ज रूपें॥ रस मावनी॥ ७५॥ ना नालवगानें जळ॥ हो अवया दोनि न्च्यारवेळ॥ देऊ नि
सां डिजती दाळा॥ तो याचे जेवी॥ ७६॥ ते विजाले नि सरस्वला॥ जे वसा विजया अप्यासे॥ जीवपणाचे नासे॥ दुःख जे थो
७७॥ तें येथ आत्म सरव॥ जाले असे त्रिगुणात्मक॥ ते हा सांगा ये कैक॥ रूप आता॥ ७८॥ म्हो०॥ यत्तदमे विपश्चिप परि
णामे मृतोपमा॥ तत्सुखं सान्त्विकं प्रोक्तं माद्वबुद्धिप्रसादज्ञ॥ ३७॥ टी०॥ आतां चरनांच बुद्धा॥ सर्प जें से दुवाडा॥ कानि-
धानांचें तोंडा॥ विवसिया जे वि॥ ७९॥ अगास्वर्गाचि गोमटें॥ अद्वयागम संकटें॥ कां बाळकण दास दे॥ त्रास काळें॥ ८०॥
हे असो दीपाचिये सिद्धि॥ अवघड धूम आधीं॥ ना तरि तो ओंघपी॥ जिमं चाढवो॥ ८१॥ तथा परि पादवा॥ जया सरस्वाचा म्हा
पाद-ओं-६४ मर्माचकीं-ओं-७९ तरि॥

वा॥ विषमर्तमंळावा॥ यमदुमाचा॥ ८३॥ दुतसर्वस्वहामिठी॥ आंगी॥ ऐसंवेरायउठी॥ स्वर्गसंसारकांठी॥ कांढनवी॥
 ८३॥ विवेकअवणेंस्वरपुसो॥ जेथव्रताचरणेककेशो॥ कारताजानीमोकसे॥ ८४॥ सुबुद्धेचैनीतोंडे॥ मी-
 किजेप्राणानचेलोडे॥ बोहणियेसीचियेवढे॥ भारिजेथ॥ ८५॥ तेंसारमाहीविघडता॥ होयवाहा॥ निवत्सकांढता॥ न
 केमणगदवडिता॥ प्राणयावरुनी॥ ८६॥ पैसायेपुढोनिबाळका॥ काळनेतायेकुलंतयेक॥ होयकोउदका॥ तुततामना॥ न
 ८७॥ तेंसंविषयांचेंघर॥ इंद्रियासांढिताथेरा॥ युगातहोयतेंवीरा॥ विरागसाहाती॥ ८८॥ ऐसाजयासुखाचाआरस
 दावीकाठिण्याचाक्षोभ॥ मगसीराब्धीलाभ॥ अमृताचाजैसा॥ ८९॥ पहिलयावेराग्यागळा॥ धेयशंसुवाडुवीगळा
 तरिज्ञानामृतेंसोहळा॥ पाहेजेथे॥ ९०॥ पैकोलताहकोपेऐसे॥ द्राक्षोन्चिहूरवेपणअसे॥ तेंपरियाकोजैसे॥ माधु-
 येअति॥ ९१॥ तेंवेरायादीकतेंसे॥ पिकलियाआत्मप्रकाशे॥ मगवेरायेमिहीनाशे॥ अविगाजान॥ ९२॥ तेंव्हा
 सागरींगजैसी॥ आत्मासीनल्याबुद्धितेसी॥ अदयानंदार्चाओपेसी॥ स्वाणीउयडे॥ ९३॥ ऐसेंस्वानुभवविआ-
 से॥ वैराग्यमूळजेंपरिणमे॥ तेंसात्विकयेणेंनामे॥ बोलिजेसुख॥ ९४॥ अलो॥ विषयेद्रियसंयोगाद्यत्तदप्रसृ-
 तोपमे॥ परिणामेविषमिवतत्सुखराजसंस्तुत॥ ३८॥ टी०॥ आणिविषयेद्रिया॥ मेळहोतांधनजया॥ जेंसुखजा-
 यथाडिया॥ सांडनिदोही॥ ९५॥ अधिकारियानिपतांगावो॥ होयजैसाउत्साहो॥ कांरणावरीविवाहो॥ विस्तारिला॥
 ९६॥ नानारोगियाजिमेपासी॥ केळेंगोडसारवरेमि॥ कांबचनागाचीजैसी॥ मधुरतापिहली॥ ९७॥ पहिलेंसवचोरा
 चेंमंत्र॥ हाटभेटीचेंकळव॥ कालाघवीयाचेविचित्र॥ विनोदते॥ ९८॥ तेंसोविषयाद्रियदोषो॥ जेंसुखजीवातेंपोषी॥

पाठ. ओं ८४ अतित्रासे. ओं. ९१ गवे. ओं. ९७ महुता.

मगउपटिलाखडकीं॥ हंसजैसा॥ ९९॥ तैसीजोडिआयवीआरे॥ जीवित्ताचाठायफिरे॥ सकृत्ताचियाहीसुटे॥ धत्रा
 विगांटी॥ ८०॥ आणिमोगिलेंजेंकांही॥ तेंस्वप्नतेंसं होयनाही॥ मगहानिचाचियाई॥ लोकावेंउरे॥ १॥ ऐसंआप-
 त्हीजेंसूख॥ अहकींपरिणमेदेख॥ परत्रीकीरविख॥ होउनिपत्ते॥ २॥ जेइद्रियजाताळका॥ दीपलियाधमाचास-
 का॥ जाकनिमोगिजेसोहळा॥ विषयांचाजेथ॥ ३॥ तेंथपातेंबांधितीथावो॥ तियेनकींदेतीठावो॥ जेणेंसूखेहूअ-
 पवो॥ परत्रीऐसा॥ ४॥ पैनांमैंविषमधुरें॥ परिमास्तुनिअतीखरें॥ तैसैंआदिजेंगोडिरे॥ तेंअतीकडु॥ ५॥ पाषातसू-
 खसाचें॥ वळिलेंआहेरजाचें॥ दण्णोनिनाशिवेतयाचें॥ आंगकांही॥ ६॥ श्लो०॥ यदयेचानुबधेचसूखंमोहनमा-
 त्मनः॥ निद्रालस्यप्रमादोत्थंतचामसमुदाहृतं॥ ३९॥ टी०॥ आणिअपेयाचेनिपानें॥ अस्वाद्याचेनिमोजनें॥ स्वेरस्त्री
 सेंनिधानें॥ होयजेंसूख॥ ७॥ कांपुटिलांचेनिमारे॥ नातरिपरस्वापहारे॥ जेंसूखअवतरे॥ भाटाचाबोली॥ ८॥ जें
 आलस्यावरिपोखिजे॥ निद्रेमाजिंदेखिजे॥ जयाचाआचुतीसूलिजे॥ आपुलीवाट॥ ९॥ तेंगासूखपार्थो॥ तामसजा
 णसर्वथा॥ हेबहुनसांगोंचजेकथा॥ असंभाव्यहे॥ १०॥ ऐसैंकर्मभेदेमुदले॥ फळसूखहीअिधजाले॥ तेंहंथागमेंकेले
 ॥ गोचरतुज॥ ११॥ तेंकर्ताकर्मफळा॥ होचिपुटोयेकीकेवळा॥ वाचूनिकाहोचिनसेस्थूळा॥ सूक्ष्मीये॥ १२॥ आणिहेतववि-
 पुट॥ तिहीगुणींइहीकरीदी॥ गुंफलीअसंपटी॥ तांतुवीजैसी॥ १३॥ श्लो०॥ नतदस्तिशयिव्यावादिवेदेषुवापुनः॥
 सत्यप्रकृतैर्जमुक्तयेदोषः स्यात्तत्रिभिर्गुणैः॥ ४०॥ टी०॥ दण्णोनिमकृतीचाआलोकी॥ नबंधिजेइहीसत्वादिकी॥ ते
 सीस्वर्गनामसूखलोकी॥ आशीवस्तू॥ १४॥ कैचालोवेवीणकाबळा॥ मातिवीणभोदळा॥ कांजकेंवीणकल्लोळा॥ होफआ
 पाठ-ओं-६ कही.

४

४

४

४

हे॥ १५ ॥ तैसैनहोनिगुणांचें॥ सृष्टीचारचलारचे॥ ऐसेंनहींचंगासाचें॥ माणिजात॥ १६॥ यालागींहेसकळ॥ तिहींगुणां
 चोचिकेवळ॥ घडलेआहोनिखळ॥ ऐसेंजाणा॥ १७॥ गुणीदेवांवयलीबिली॥ गुणीहोकीत्रिपुटीपाडिली॥ चतुर्वर्णायां
 तली॥ सिनानिउकिगें॥ १८॥ ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशिशूद्राणांचपरतप॥ कर्माणिप्रविप्तक्तानिस्वभावप्रवर्गगु-
 णैः॥ १९॥ टी०॥ तैचचारिवर्ण॥ पुससीजरीकोणकाण॥ तरिजयामुख्यब्राह्मण॥ धुरेचेका॥ १९॥ येरक्षत्रियवैश्यदो-
 न्ही॥ तैहब्राह्मणाचाचिमांनिजेमानी॥ जेतैवैदीकविधानी॥ योग्यह्मणोनी॥ २०॥ चाथाशूद्रजोपनंजया॥ वेदीलाग
 कीरनाहीतया॥ तन्हीवृत्तीवर्णत्रया॥ आधीनतयाची॥ २१॥ तियेवृत्तीचियाजवळिका॥ वर्णत्रयांब्राह्मणादिका॥ २२॥
 होशूद्रहीकींदेखा॥ चोथाजाला॥ २३॥ जेसाफुलाचेनिमांगाते॥ तांतुतुरांजेअधीमते॥ तैसोद्विजसगेशूद्राते॥
 स्वीकारोभ्युत्ती॥ २४॥ ऐसेंसीगापार्थी॥ हेचतुर्वर्णव्यवस्था॥ करूंआतांकमपंथा॥ यांचियारूप॥ २५॥ जिहींगुणीतै
 वर्णचारी॥ जन्मसूत्रूचियेकातरी॥ चूकोनियांइश्वरी॥ पैठेहोती॥ २६॥ जियेआत्मप्रकृतीचेइहीं॥ गुणीसत्ता
 दिकींतिहीं॥ कर्मचोयांचहुंदाई॥ वांढलींवर्णा॥ २६॥ जैसेबापेंजोडिलेलेका॥ कांवांदेलेसूर्यमागपांथिका॥ ना
 नोव्यापारसेवका॥ स्वामीनिजेसैं॥ २७॥ तैसीप्रकृतीचागुणी॥ जयाकमांचिवेल्हावणी॥ केलीआहेवर्णा॥ २८॥ आ-
 हुंदही॥ २८॥ तेथसत्त्वआपलाआंगी॥ समीनिंमिनीभागी॥ दोयेकेलेनियोगी॥ ब्राह्मणक्षत्रिय॥ २९॥ आ-
 णिरजपरीसालिक॥ तेथेठेविलेवैश्यलोक॥ रजचितमसेषक॥ तेथशूद्रतेगा॥ ३०॥ ऐसायेकूचीमाणिवृदा॥ सेद
 चतुर्वर्णपा॥ गुणधर्चिइहीप्रबुद्धा॥ केलाजाण॥ ३१॥ मगआपलेठेविलेजैसे॥ आदित्तिदीपोदिसे॥ गुणभिन्न-
 पाठ० अ० २९ सत्त्वं, सुमानिनिमानोः

कर्मते सै॥ शास्त्रद्वयी॥ ३२॥ तेचिभानांकोणकोण॥ वर्णाविहातेचलक्षणा॥ हंसगोएकश्रवणा॥ सौभाग्यनि
धी॥ ३३॥ श्लो०॥ शमोदमस्तपःशौचंसांतिराजवमेवच॥ शानंविज्ञानमास्तिक्यब्रह्मकर्मस्वभावजा॥ ४२॥ टी०
तरस्वविद्याचियावृत्ती॥ घेउनिआपुलाहती॥ बुद्धिआत्मयाभळयेकती॥ ३४॥ ऐसाबुद्धिचाउपरम
॥ तयानामद्वयणिपेशम॥ तोचिगुणोपक्रम॥ जयाकमाचा॥ ३५॥ आणिबाह्योद्विग्येचेंदेडें॥ पिटुनिविधीचेनिदेडें॥ ने
द्विअधर्मोक्ते॥ कहीचिजावो॥ ३६॥ तोपैगाशमाविरजा॥ दमगुणजयदुजा॥ आणिस्वधर्माचियावोजा॥ ज्ञेजें
को॥ ३७॥ तेविचिसटवोचियेराती॥ नविसंबिजेजेविवाती॥ तेसाइस्वरनिणयिचिती॥ वाहणंसदा॥ ३८॥ तयानामत
प॥ होतनयागुणाचैरूप॥ आणिशौचहीनिष्ठाप॥ द्विविधजेथें॥ ३९॥ मनुभावशुद्धिपरले॥ आंगक्रियाअळकारिले
॥ ऐसेसबाह्याजियेले॥ साजिजेजेका॥ ४०॥ तयानामशौचपार्था॥ तोकर्मगुणजयचैथा॥ आणिएथ्हाचियापरीसर्व
था॥ सर्वजेसाहायि॥ ४१॥ तेगाक्षमापाडवा॥ गुणजेथपांचवा॥ स्वराभाजीसहावा॥ पंचमजेसा॥ ४२॥ आणिवांक्डे
निवोयोसि॥ गंगावाहेउज्ज्विलेसी॥ काएष्टीवंकलाउसी॥ गोदीजेसी॥ ४३॥ तेसाविषमांहजीवां॥ लागीउज्जुकारवरवा
॥ तेआजवगासाहावा॥ जेथिनगुणा॥ ४४॥ आणिपाणिपेयप्रयत्नेमाळि॥ अरवइज्जचेझाडामुळी॥ पारितेआपवोचक्रकी
॥ जाणेजेवि॥ ४५॥ तेसेंशास्त्राचारिणें॥ इस्वरयेकपावण॥ हेकृजेकाजावण॥ तपयज्ञान॥ ४६॥ तेगाक्रमींजे॥ सा
तवागुणहोये॥ आणिविज्ञानरुपाहे॥ तवरूप॥ ४७॥ नरिसत्त्वमुद्दिचियेके॥ शास्त्रकोआनबळे॥ इश्वरतत्त्वोचिमळे
॥ निष्टकबुद्धी॥ ४८॥ होवज्ञानवरवें॥ तेगुणगत्वजेथआठवे॥ आणिआस्तिक्यजागावे॥ नववागुण॥ ४९॥ पैराजमुद्रा
पाठ-ओं-३४ कांती

आशिल्यां ॥ प्रजाभजे भलतया ॥ तैविशास्त्रे स्विकारिल्या ॥ मांगमात्राते ॥ २० ॥ आदर ज मांलगा ॥ तै आस्तके
 त्वसी ह्यणे ॥ तोनववगुणजेणे ॥ कसे नसाच ॥ २१ ॥ एव नवहारासो ॥ २२ ॥ गुण ज मां ॥ २३ ॥ नानाचापाचा
 ब्रा ह्यणाच ॥ २४ ॥ तोनवगुणरत्नाकर ॥ ययानवरत्नांचाहार ॥ नफडी नल दुनकर ॥ मनाश ज मां ॥ २५ ॥ नानाचापाचा
 पोळी पूजिला ॥ चंद्रचंद्रिकाधवल्ला ॥ कांचंदननिजचंचिला ॥ सारस्ये जे वि ॥ २६ ॥ तोनववगुणां दयलगा ॥ लोणे ब्रा-
 ह्मणांचे अव्यग ॥ कहीचिनसडी आग ॥ ब्रा ह्यणाच ॥ २७ ॥ आता उचित जे सविद्या ॥ तै होकर धन जया ॥ सांगत कुम-
 न्ने चिया ॥ भरोवरी ॥ २८ ॥ शौर्ये ते जा रत दोस्व युद्धचा व्यपना येन ॥ दोन मीत्यर माव अक्षत्र मस्य माव जे २९
 टी ० तरि मातु हाते जे ॥ नापेसि जे विवरजे ॥ कोसिद्धे नपाहे जे ॥ जावळिया ॥ ३० ॥ एसास्वय मजा जे वलाव ॥ सावाय
 वोण उद्ध ॥ तै शौर्यगजे अभ्येष्ट ॥ पाहल गुण ॥ ३१ ॥ आणि सूर्यांचे निमतोप ॥ कोइही नसाचाहारप ॥ नातो तरि नलोप
 सचंदी तिही ॥ ३२ ॥ तैसे नि आपुने मोद गुणे ॥ जगाया विस्मयदणे ॥ आपण तरे नि साभगे ॥ काय सनही ॥ ३३ ॥ तै माग
 लस्य रूप तेजा ॥ जिये कमी गुण दुजा ॥ आणि धर तो तिजा ॥ नयि चारुण ॥ ३४ ॥ वारुण नयि अकाश ॥ बुद्धी चंडोळ
 मानस ॥ झांकिना ते पारिपेस ॥ धैर्य जे ये ॥ ३५ ॥ आणियाणी हाका मल ते तुके ॥ परत जिणोनि पक्षपाके ॥ को आकाश
 उचियाजिके ॥ आवडत याते ॥ ३६ ॥ तै विविध विधा अवस्था ॥ पातलिया जिणोनि पक्षपाके ॥ मसा फळतया अर्थ ॥ वेझदे
 णे जे ॥ ३७ ॥ तै दसू लगाचे राव ॥ जेथो थारा गुण दे रव ॥ आणि जुझुभल्लो किक ॥ पांचवगुण ॥ ३८ ॥ आदित्याची झाडे ॥
 सदा सस्यु रवसूया फुड ॥ तै विममोर शात्रू फुड ॥ हाणे जे को ॥ ३९ ॥ माहवना मय तैसी ॥ रिपु पाठीनि दिजे तैसी ॥ चुक्र वि-
 पाव ॥ ओ ॥ ४० ॥ सुद्ध ॥ ओ ॥ ४१ ॥ सदा ॥ ओ ॥ ४२ ॥ मोते वणी ॥ ओ

जेसे जे जीसी ॥ समरंगणी ॥ ६७ ॥ हासत्रियाचे चया आचारी ॥ पंचवागुणेंद्र अवधारी ॥ चहुं पुरुषायां शिरी ॥ सत्ति जे सी ॥ ६८ ॥
 आनि जाले निमुलें फळें ॥ शांति वया जे सी मोकळें ॥ कांडार परिमळें ॥ पद्माकर ॥ ६९ ॥ नाना आवडें चिनि मापें ॥ चांदीणें-
 फल तें जे येपें ॥ सुटिलां चिनि सकलें ॥ तें सें जे देणें ॥ ७० ॥ तें उमपगादान ॥ जयसा हावे गुण रत्न ॥ आनि आज्ञेगकाय न-
 न ॥ होणें जे का ॥ ७१ ॥ पोष्टी निअवयव आपुले ॥ कर विजती मान विलें ॥ तें विपाल लेला भविलें ॥ जग जें सोगणें ॥ ७२ ॥
 तयाना मई श्वर मावो ॥ जो सर्व सामर्थ्याचा तावो ॥ तो गुणाभाजि रावो ॥ सात वाज्य ॥ ७३ ॥ तें सें जे शोयां दुक्रां ॥ इहो
 सात गुण विशेषी ॥ अबल हत सत क्रुषि ॥ आकाश जें सें ॥ ७४ ॥ तें सें स मगुणीं विचित्र ॥ कर्म जें जगो पवित्र ॥ तें स हज ज-
 ण क्षेत्र ॥ सत्रियाचें ॥ ७५ ॥ नाना क्षत्रिय न हनर ॥ मोसल सोन याचा मर ॥ हाणो भिगुण स्वर्ग आधार ॥ सानां यिया ॥ ७६ ॥
 नातरि स मगुणां पूर्वी ॥ परिवार लोख रवी ॥ हो क्रियान जे पृथ्वी ॥ ७७ ॥ का गुणांचे सातही बोधी ॥ हो क्रियान
 गंगा जगो ॥ तया महीदधी चिया आंगी ॥ विलसूं जे सी ॥ ७८ ॥ परह वृहत् अमोद स्व ॥ शोयां दिगुणा ल्यक् ॥ कर्म गोन सों गेक
 क्षत्र जीतो सी ॥ ७९ ॥ आतां वैश्यांचे येजाति ॥ उचितें जे महामर्तो ॥ तें ऐकूं न कर्तो ॥ क्रिया सांगो ॥ ८० ॥ इति गोर
 क्ष्यवाणिज्य वैश्य कर्म स्थावज ॥ परिचयात्सकर्म शूद्र स्यापि स्वमाव जे ॥ ८१ ॥ तदिह तदिष्टमर्तो जनागर ॥ यथा मांडव
 लाचा आधार ॥ येउनि लाभ अपार ॥ मेळवो जे ॥ ८२ ॥ किं वहुना कुरी जे ॥ गोधन राखा ॥ ८३ ॥ कास न याचो विक-
 र्णें ॥ महार्य वस्तु ॥ ८४ ॥ ये लालाचि पादवा ॥ वैश्यांतें कर्माचा मळावा ॥ हो वैश्य जाति स्वभावा ॥ आतुन्ना जाणा ॥ ८५ ॥ आनि व
 श्य सत्रिया आसणा ॥ हो हज जन्मेत न्ही वर्ण ॥ ययांचे जश्रु धुषण ॥ तें शूद्र कर्म ॥ ८६ ॥ पेंद्र जसे वपरोते ॥ धावणे नाही रस्त
 पाव ॥ ओं ॥ ७९ ॥ जाता सी ॥ ७९

द्राने ॥ एवं च वृषो निते ॥ दा विनां कर्म ॥ ८५ ॥ श्रुत्वा ० स्वस्वैकर्मण्यभिरतः सं शि हि लभनेनरः ॥ स्ववर्गमनिरतः सिद्धि
 यथा विदति तच्छृणु ॥ ४५ ॥ दीपं आनांदयेच्च विचस्पणा ॥ विगच्छालियावृणा ॥ उचितं जस करणा ॥ ४६ ॥ देव
 नातिरजकदल्युता ॥ पाणि या उचित सारिता ॥ सोरते सो पा दु स्फुता ॥ सिधु उचिता ॥ ८७ ॥ ते संवर्णा अमवश ॥
 अं करणी य अलु असे ॥ गोरया अगजसे ॥ गोरपणा ॥ ८८ ॥ तथा स्वभावो विहता कर्मो ॥ शारद्व्या च निमुखे वीरा
 नसा ॥ मृगता वयला र्गो म्मेमा ॥ अतुल कर्ज ॥ ८९ ॥ ये अपु न्नि चरलयिते ॥ यूप पार शिवया च निहाते ॥ ते सं स्वं
 कर्म आपते ॥ शास्त्र्य करवे ॥ ९० ॥ जै सो दीनी असे अपु न्नि या वा र्गो ॥ परिदो पवीण भागना हो ॥ माग नला ह तो
 कां थि पां र्गो ॥ अमता होये ॥ ९१ ॥ ह्यणो निजानि वशे सा चार ॥ सह जे असे जो अधि कर ॥ तो आपु लालिया शास्त्र
 गोचर ॥ आपण को जा ॥ ९२ ॥ मगधरी च्चा चित्वा ॥ जे किडान्क या दो वी दिवा ॥ तर घिता काय पा डवा ॥ आडक अस
 ॥ ९३ ॥ ते सं स्वभाव भागा आले ॥ वरा शास्त्र्य रक्ते ॥ ते विहित जो आपु ले ॥ आन्तरणा ॥ ९४ ॥ परिभाळ सभा
 डनी ॥ फळ काम दव डनी ॥ ओं गे जो ये मा डनी ॥ ते ये चि भ्रर ॥ ९५ ॥ वोर्या पां डने पाणी ॥ नेण आनानो वाहणी
 ते सा जाय आन्तरणी ॥ व्यवस्था नि ॥ ९६ ॥ अनुना जाया परी ॥ ते विहित कर्म स्वये करी ॥ तो मो सा चार लु हा
 री ॥ ये रा होये ॥ ९७ ॥ जे अकरणा आणि निविद्धा ॥ नवचे चि कां हो संबं धा ॥ ह्यणो नि भवा विरुद्धा ॥ मूकला तो १८
 आणिका स्य कमा कडे ॥ न परत चि जे य को डे ॥ ते थ चं दना चे हा र्वे डे ॥ न ले चितो ॥ ९९ ॥ यरि नित्य कर्म नव ॥ फळ
 त्या र्गे र्वे चले सर्व ॥ ह्यणानि मो सा चो शिव ॥ ना कुला ह ॥ १०० ॥ ए से नि शभा र्गो सं सारी ॥ सां डना तो अव अ
 पाठ, ओं. ०७ पैल. ओं. १८ अकरणीया, ७,

शी ॥ वैराग्यमोक्षात्तद्वि ॥ उभातुक्ते ॥ १ ॥ जेसकल भारयत्तीसीसा ॥ सोसुल्हाभाविजेअसा ॥ नानाकर्मसांगुंअसा ॥ से
वहुजेथे ॥ २ ॥ सोसफळेदिधलीबोल ॥ जेसकल नतरुत्तेकुल ॥ तयैवैराग्येनैवैपाउल ॥ संवरुजेसा ॥ ३ ॥ पाहोआत्म
ज्ञानसुदिनाचा ॥ वाधावासागतयअरुणाचा ॥ उदयत्यावैराग्याचा ॥ दावोपावे ॥ ४ ॥ निंबहुनाआत्मज्ञान ॥ जेणो
हानायनिधान ॥ तवैराग्यादिव्याजन ॥ जीवेलेतो ॥ ५ ॥ ऐसीसासाचियाग्यता ॥ मिहिजायतयापंडुसुता ॥ अत्रु
सरोनिविहता ॥ कमायया ॥ ६ ॥ हेविहितकर्मपांडुवा ॥ आपुन्हाअन्यबोलावा ॥ आणिहोचिपरमसेवा ॥ मजसवा
त्मकाचि ॥ पैआयवाचिभोगेसि ॥ पतिव्रताकडंमयेसी ॥ भूतयाचिनामंजरी ॥ नरोनियकुली ॥ ७ ॥ कावाळका
येकीमाये ॥ वाचोमिजिणकायआहे ॥ द्यणोमिसेविजेकनोहोये ॥ पादाचाधम ॥ ८ ॥ नानापाणिद्व्यणोमिमासा ॥ राणा
नसांडितांजसा ॥ सर्वनीथसुवसा ॥ वरपडाजाला ॥ ९ ॥ नमोभाग्निर्याविहता ॥ उपायअसेनविभवता ॥ ऐसाकी-
जेकीजगन्नाथा ॥ आभारपड ॥ १० ॥ अगाजयाचिबिहता ॥ नेदुंश्वराचमनोरात ॥ द्यणोमिकेलियाभिप्रात ॥ सांपड-
चितो ॥ ११ ॥ पैजीवाचकसीउतरला ॥ नेदारीकंगोभाचोणजाला ॥ सिसेवोचनयामबली ॥ विहिजेवी ॥ १२ ॥ तेसेसा
मीचियामनोभावा ॥ ननुकिजेहोचिपरमसेवा ॥ चरंगपांडवा ॥ वाणिज्यवरण ॥ १३ ॥ अत्रुयतः प्रवृत्तिर्हाना
येनसर्वमिदंन ॥ स्वकमणानमम्यर्च्यभिदिदिनिमानवः ॥ १४ ॥ तेन द्यणोमिर्विहताकथाकुला ॥ नद्वतयाचिसु
पापाछिला ॥ जयापासुनिकाभालो ॥ आकारासुते ॥ १५ ॥ जोअविदेनिर्वाचिया ॥ गुंडमिजिववाहलिया ॥ रेवक
वीतसेनीगुणिया ॥ अहकाररज्जु ॥ १६ ॥ जेणजगहंसमस्त ॥ आनबाहेरीगुणभंगिन ॥ जालेआहेहोपजान ॥ मने
पार ॥ ओं ४ ॥ ओं १३ ॥ तेसासंवनफकटा ॥ ओ १३ ॥ विहितेजोर्न ॥ ४

जे ॥ १७ ॥ नचासवात्मनादंभरा ॥ स्वकर्मकुसुमार्चविरा ॥ पूजाकलहासअगारा ॥ तायात्मागी ॥ १८ ॥ हाणोंनि नचास
 रिस्मलेनि आत्मराजे ॥ वेराग्यसिद्धिदेज ॥ पसायतया ॥ १९ ॥ जियेवरास्यदया ॥ दुःखराचापययरा ॥ २० ॥ तरेहो
 देजसे ॥ वातहोये ॥ २० ॥ माणनाथाविद्याआधी ॥ विरहिणीनजिणवार्धा ॥ तेससरवजानकदि ॥ दुःखचिछणे
 २१ ॥ सम्यक्ज्ञानसुदंजता ॥ वेधेचि नभयता ॥ उपजेहोसीचायता ॥ बाधार्चलाहे ॥ २२ ॥ हाणोंनि मोक्षलासाला-
 गी ॥ जाअतवाहतसआगी ॥ तणस्वधर्मआस्थानागी ॥ अनुशवा ॥ २३ ॥ अगोअपलाहान्वधर्म ॥ अत्तरणीजरीविषम
 ललुसिनात् ॥ स्वभावनिधनकर्मकुर्वनामातिक्रिन्विष ॥ २४ ॥ टा ॥ अगाआपलाहान्वधर्म ॥ अत्तरणीजरीविषम
 नरीपाहावातोपरिणाम ॥ फळेजणे ॥ २५ ॥ फळणयाएलीकडे ॥ केळितपाहाताआयमाडे ॥ एसीत्यजिनोतरजोडे ॥ तेसैकंगा
 मटे ॥ २६ ॥ तेविस्वधर्मसाकडे ॥ दुखानिकलाजरीकुडे ॥ नरोमोक्षसरवाडु ॥ अनरन्नाकी ॥ २७ ॥ आणि आपली
 माय ॥ कुडुजराआहे ॥ नरीजो जितनाहे ॥ स्महकुर्दकी ॥ २८ ॥ चर्राजयापराभिया ॥ रसहूनवरविषा ॥ तिया
 क्षायकराविषा ॥ बाळकतेणे ॥ २९ ॥ अगापाणियाहनिबहवे ॥ तुरंगुणकीरआहे ॥ गरिमीनोकायहोये ॥ असणे
 तये ॥ ३० ॥ पेंआयवियाजराजिविषा ॥ तेविषकीडियापरुष ॥ आणि जगायूळतेदरव ॥ मरणदेनया ॥ ३१ ॥ ह-
 णोनिविहितजयाजेणे ॥ फ्रदेससारचधरणे ॥ क्रियाकुठारनरिनेणे ॥ नोचिकरावी ॥ ३२ ॥ येरापराचरावरविषा
 ऐसहोईलटकेलया ॥ पायांचेचालणेडोइया ॥ केलजेस ॥ ३३ ॥ यालागीकर्मआपल ॥ जजातस्वभावैअसेआळ

पाठ. ओं. १७ जेसं. ओं. २१ बाधी. छ.

छ.

छ.

छ.

छ.

नेकरतेणेजितले॥कर्मबंधते॥३४॥आणिस्वधर्मचिपाळावा॥परधर्मतोशाळावा॥हानिमहोपादवा॥नकीजेचिंपे
॥३५॥नरीआत्माहृदनेहे॥तंवकर्मकरुणेंकांदाये॥आणिकरुणेतेंथआहे॥आयासआधि॥३६॥भ्रू० सहजक
र्मकतेंयसदाषषपिनत्यजेत॥सवारंसाहिदोषेणधूमनागिरिवावृताः॥३८॥दी० ह्यणोनिन्नन्नित्येकमी॥आ
यांसजहीउपक्रमी॥तरीकायस्वधर्मो॥दोषभाग॥३७॥अगाउजूवाट्वाट्वालावे॥नहीपाथचिभिणवावे॥नोआ
उरनेंधांवावे॥तहेतेंचि॥३८॥पेंसिळाकांसिदोरिया॥दादणेंयकयनजया॥थरिजेवाहानाविसावया॥मिळिजे
नेधेपे॥३९॥येद्वैकणाआणधूमसा॥कांडिताहीसोससरसा॥जेचिरधनश्चानमासा॥तेंचिहवी॥४०॥दधि-
जळाचियायुसळणा॥व्यापारसांरिवंचिचिचसणा॥वाळुवेंतिळायाणा॥गाळणेंयेक॥४१॥पेंनित्यहोमदेयाव
या॥कामेरागिस्तवावया॥फुकिताधूमधनजया॥सागणेतेंचि॥४२॥परिधर्मपत्नीयागडी॥प्रांसिताजरीये-
कीवोदी॥तरिकांअपरबडी॥आणाविआगा॥४३॥हांगापढींलागलायाई॥मरगानचेंकुचिपाही॥नरिसमा-
रुळाकाई॥आगळेंनकीजे॥४४॥कुळरुत्रीदांडयाचेंघाये॥परधरिगांभियाहिजरिसाहे॥तरिस्वपतिनंवा
चे॥त्यजितकी॥४५॥तेंसंआवडतहीकरण॥नर्मपजशिणल्याविणें॥नरिविहितवारकाणें॥नालेभारी॥४६॥
वरियोडेंचिअमृतयेना॥सर्वस्ववेचोकांपडुसता॥जेणेंजोडेंजीविता॥अस्यत्व॥४७॥यराकाल्यापालवचुनि
विषयियावेंघेउनि॥आत्महत्येसिंभिमानी॥जायिजेजेणें॥४८॥तेंसंजाचुनिचांदेंदिये॥चतुर्भिआयुधानेनिदे-
ये॥सांचलेणपिआनंआह॥दुःखावाचुनि॥४९॥ह्यणोभिरावास्वधर्म॥जोकरिताहिरांनियेअस॥उचिके
पाठ, ओं. ४५ अकुरु. ओं. ४५ सादिले. ओं. ४६ उणें. ७

७

७

७

७

७

७

७

७

देहलपसमा ॥ पुरुषायराज ॥ १५० ॥ यातारणोहरिदो ॥ स्वधर्मावियेमहरा ॥ नविमोविजसकरो ॥ मिदुमनजसो ॥ ५३
 कानावेमिजेसीउदधीना ॥ महाधर्मादिद्व्योषधा ॥ नविसेविजेतयाद्विदि ॥ स्वकसयथ ॥ ५४ ॥ भगवतः श्रीकृष्णः ॥ ५३
 जा ॥ स्वकमाचिपामुहाधूजा ॥ तापलादधातभरजा ॥ सोडोकरुनि ॥ ५३ ॥ शुद्धसन्धानियावीना ॥ भाणिभ्रापु-
 लीउत्कवा ॥ भवस्तुगकाळकृदा ॥ एसेदार्ग ॥ ५४ ॥ जेवराग्ययणबाले ॥ सागासमिद्विरुक्कले ॥ किबहुनाआ-
 पुले ॥ मेळवीरवगे ॥ ५५ ॥ भगजितिलयाहभाय ॥ पुरुषसवधसाहाय ॥ कजाभादिजनाह ॥ नेआनभागा-
 ॥ ५६ ॥ श्री ० असक्तबुद्धिः सर्वत्रजितोत्थाविरागस्तहः ॥ नकस्यमिद्विरमासन्वासनाधिगच्छति ॥ ५७ ॥ टीर-
 तरिदहादिक्हेससार ॥ सर्वहोमाडलसजगुंकर ॥ तथेनालुततावागुर ॥ वाराजमा ॥ ५८ ॥ पपरिगाकान्विच-
 नेळे ॥ फळदेवनादेवफळे ॥ नधरतसुस्तहुरुळ ॥ सवनहाय ॥ ५९ ॥ पुनोवत्तकलत्र ॥ हेजान्निगुहोस्वतंत्र ॥ सा-
 देनह्यणेपात्र ॥ विषचिजेसे ॥ ५९ ॥ हेअसाविषयजानो ॥ बुद्धिपाळलेगसीसाधनो ॥ पाउलयद्रुमिकानो
 तदयत्वारिध ॥ ६० ॥ ऐसयाअतःकरण ॥ बाळयेतातगानिआण ॥ नमोदीसपर्योमण ॥ हासोजसो ॥ ६१ ॥ ते
 सैरक्यापियेसुढो ॥ साजिवडेचित्तकिरोहो ॥ करुनिवधीनेहो ॥ आत्मगान्ता ॥ ६२ ॥ तेस्कादुष्टादुष्टसुह ॥ निग-
 पेजालेचिआह ॥ आगीदुडपलियाधुय ॥ राहिजजेसे ॥ ६३ ॥ ह्यणोभिनियमिभियामानसो ॥ स्तहानासोभिजा-
 यआपेसी ॥ किबहुनातोरोसी ॥ स्तोमकापेवे ॥ ६४ ॥ पुअन्यथावोयआयवा ॥ भावळोभितयापाडवा ॥ योयमा
 श्रीचिजीवा ॥ वावहाय ॥ ६५ ॥ थारवणीवेचसर ॥ नमोभागनाचनपुर ॥ नयनवसुप्रकर ॥ काहोचिकरु ॥ ६६ ॥

पात्र, ओ. ५२ नोका. ओ. ५३ झडा. ओ. ५४ अहा. ओ. ५५ ज्ञाजे. ओ. ५६ एसेतेगा. ओ. ५७ विगी. बोधी. ओ. ५८ दहादुश्य. ओ. ५९
 निमि

ऐशी कर्मसाध्यदशा ॥ होय तैयवीरेशा ॥ मग अगुरु आपेसा ॥ मेदे निगा ॥ ६७ ॥ रात्रीची पाहरी ॥ वेचलिय-
 अवधारी ॥ डोळ्यात भारी ॥ भिळे जेसा ॥ ६८ ॥ कां येऊ नो फळाचा घड ॥ पारुषवी केळीची वाद ॥ अगुरु सेवेनि
 करी पाद ॥ सुसुद्धतेसा ॥ ६९ ॥ मग अलिगिता पोणमा ॥ जे साउणी वसाडीच दमा ॥ तैसें हायवीरतसा ॥ शु-
 रुह पातया ॥ ७० ॥ तसा अबाधमात्र अस ॥ तो न वतया ह्मनाश ॥ नैयमिशा सवेजसे ॥ आधारे जाये ॥ ७१
 तैसी अबोधानि येकुशी ॥ कमकतों काय ऐशी ॥ विपरीत असै जेसा ॥ गाभिणी मारिली ॥ ७२ ॥ तैसी अबाध
 नाशा सवे ॥ नशे क्रिया जात आयवे ॥ ऐसा समूल सभव ॥ सन्यास हा ॥ ७३ ॥ येणें मूढा ज्ञान सन्यासे ॥ इश्या
 चीज यहा वापुस ॥ नथ बुद्धावत आपेस ॥ तोचि आहे ॥ ७४ ॥ चेदलिया वरि पाही ॥ स्वमीचिया ति येडोही ॥ आ-
 पण यातें काई ॥ काहू जाई ॥ ७५ ॥ तैमी आता जाणें न ॥ हे सरलुत याहु ॥ स्वम ॥ जाला जातु जया वहीन ॥ चिहा
 काश ॥ ७६ ॥ सुरवाभासो सं आरिसा ॥ परना नै निया वीरेशा ॥ पाहाने पणें वीणजे सा ॥ पाहाना तके ॥ ७७ ॥ तै-
 सेने पणें जे गले ॥ ते पणें जाणें हो नैले ॥ मग निश्चि यउरले ॥ चिन्मात्र चि ॥ ७८ ॥ तैय स्वसा वें यजुं जया ॥ नाहो क्रो-
 णीचि क्रिया ॥ ह्मणों नि यव दतया ॥ नै कर्म ऐसा ॥ ७९ ॥ तै आपुने आपणपें ॥ अस ते चि हाउनि हारपें ॥ तर गका
 वायुलापें ॥ समुद्र जेसा ॥ ८० ॥ तै सै न हाणें भिपजे ॥ तै नै कर्म्या भिही जाणजे ॥ सर्वे सिद्धी न सहजे ॥ परम हें वि-
 ॥ ८१ ॥ देउळानिया कामा कळस ॥ परम गंगे सिंधु मवशा ॥ काम गण राही कस ॥ सोळा वां जेसा ॥ ८२ ॥ तै सै आ-
 पुने नेणें ॥ प्रेडिजे कं जाणजे ॥ नै हि गळुनि असणें ॥ ऐसी जे दशा ॥ ८३ ॥ ति ये परतें काही ॥ निपजणें ये यसा
 पाठ ॥ ओ० ६० होद जेतया ॥ ओ० ६१ बुभुल्ल ॥ ओ० ६४ मुकज्ञान ॥ ओ० ८० आरोगे ॥ ओ० ८२ उपरम ॥ छ

हीं॥ ह्यणो विह्यणिपेपाही॥ परमसिद्धीति॥ ८६॥ श्लो॥ सिद्धिमासोयथाब्रह्मतयाभोतिनिबोधमे॥ समसेनैगकानेव
 निष्ठाज्ञानस्ययापरा॥ ८७॥ टी० परिहरेवि आत्मासिद्धि॥ ज्ञाकाणीभायनिधि॥ अंगुरुकपालब्धि॥ काळोपावे
 उदयजतोदिनकर॥ अकाशचिआन आधार॥ कांदोपसर्गकपूर॥ दोपचिहोये॥ ८८॥ तयालवृणांचो कणिका॥
 भिक्तुतरवोउदका॥ उदकचिहोऊ निदखा॥ नाकजवि॥ ८९॥ कानिद्रितचवविभिया॥ स्वमसिनिजवायाभ
 जाऊनिआपणपया॥ भिळजेसा॥ ९०॥ तैसंजयाकोणहासिदेवे॥ गुरुवाक्यअवणासवे॥ हेतुगिळानिक्सेवे॥
 आपणपावनी॥ ९१॥ तयासीमगकर्मकरणे॥ हंबोलजेलचिकवेण॥ आकाशायेणजाणे॥ आहोकाई॥ ९२॥ ह्य
 णोनितासिकांही॥ त्रिशूहीकरणेनाही॥ परिऐसेंजरिहंकांही॥ नकुंजया॥ ९३॥ कानाचचनाचियेमेदा॥ स-
 रिसाचिपेकिरीटी॥ वस्तुहोउनिडनि॥ कवणियेकजा॥ ९४॥ येहवोस्वकमान्चेनिवन्ही॥ काम्यनिपिहूचियाइ
 धनी॥ रजतमकीरदोन्ही॥ जांनिर्लोआधी॥ ९५॥ पुनविचपपरलोका॥ यथानिहींचाअमिलारव॥ पराहोयपाइ
 क॥ हेहेजालें॥ ९६॥ दीद्वयेंमैरापदायी॥ रगतांविहाळुलोहोतो॥ नयेअत्याहारतीर्थी॥ न्हाणिलोकिर॥ ९७॥
 आणिस्वधर्माचेफळ॥ इम्ब्वरोअपुनिसकळ॥ नेऊनिकलेअदळ॥ वेरायपद॥ ९८॥ ऐसीआत्ममास्ताल्का
 री॥ लाभनानाचियेउजरी॥ नेसासग्रीकरपुरी॥ मेळविर्ली॥ ९९॥ आणितेचिसमयी॥ सद्गुरुमेदलेपाही॥
 तेवोचिनिहीकांही॥ वंचिजेना॥ १००॥ परिवोरवदयेनरेवो॥ कायलाभेआपुलागवो॥ काउदयजताचिदिवो
 मध्यान्होच॥ १०१॥ सस्तेत्रोआणिबोल्दो॥ बीजहीपेरलेगोमटे॥ तारिआलोदफळमेदे॥ परिवेळेकांगा॥ १०२॥

जेउलाभार्गमंजळ ॥ भिनलासंभ्राचाहीमेळ ॥ यरिपविजेवांनुनिवेळ ॥ लागेविकीं ॥ १ ॥ तेसावैराग्याभजाला
 वरिस्मदुरुहोसदला ॥ जीवोअकुरुदला ॥ विवेकाचा ॥ २ ॥ तेजब्रह्मएकआर्थी ॥ येरायवोचिन्माति ॥ हेहीकी
 रमतीति ॥ गादकेली ॥ ३ ॥ परिनेचिजेपरब्रह्म ॥ सर्वात्मकसर्वोत्तम ॥ मोक्षाचेहीकाम ॥ मरेजेथें ॥ ४ ॥ ययातिहो
 अवस्थापेदी ॥ जिरवीजोगाकिरीदी ॥ नयाज्ञानासिहीमिती ॥ हेजेवस्तु ॥ ५ ॥ ऐकाचिंएकपणसंरं ॥ तेथआनंदक
 णहीरिरे ॥ कांहीचिनुसोनिउरे ॥ जेंकांहीगा ॥ ६ ॥ तिजेब्रह्मोएकपणें ॥ ब्रह्मचिहोऊनिअसणें ॥ तेंक्रमेचिकरू
 भितेणें ॥ पाविजेप ॥ ७ ॥ सुकेलियापासो ॥ वोगरिलेंषडसी ॥ नोवमप्रतिप्रासो ॥ लोहेजेविं ॥ ८ ॥ तेसावैराग्या
 चाबोलावा ॥ विवेकाचातोदिवा ॥ अंबुयितोआत्मदेवा ॥ कादीचितो ॥ ९ ॥ तरिभोगिजेआत्मकही ॥ येवदीयो
 ग्यतेचोसिद्धी ॥ जयाचाआर्गोभिरवथी ॥ लेणेंजाली ॥ १० ॥ नोजेणेक्रमेब्रह्म ॥ होणेंकरीगासंगम ॥ नयाक्रम
 नेआतांवर्म ॥ आर्दकसांगो ॥ ११ ॥ स्तो ० बुध्याविशुद्धयायुक्तोद्यत्यान्मानियस्यच ॥ शब्दादीन्विषयांस्त्यक्कारा
 गदेषौष्युदस्यच ॥ १२ ॥ टी ० नरिगुरुलाभिलियावाना ॥ यद्रुनविवक्तोद्यतेतदा ॥ धुक्रुनियामळकदा ॥ बुद्धीचातेणे
 ॥ १३ ॥ भगशहूनेलगळिली ॥ प्रमाचेंदंआळिगिनी ॥ तेसाशक्तुलेंजडली ॥ आपणपावुंहु ॥ १४ ॥ सांडनिकुळेंदो-
 नी ॥ प्रियासोअनुसरेकाभिनी ॥ हंद्यागस्वचिंतनी ॥ यडलीतेसी ॥ १५ ॥ आणिज्ञानांमंजिझार ॥ नेवानवा-
 निरतर ॥ इंद्रीकलेथोर ॥ शब्दादिकजे ॥ १६ ॥ तेंरशिभजाळकादुल्लेया ॥ मृगजळजागल्या ॥ तेसंष्टतिरोधेन
 या ॥ पचाहीकले ॥ १६ ॥ नेणलंअधमाचियाअन्ना ॥ खादलियाकाजेवमना ॥ तेसावोकाविनीसवासना ॥ इंद्री
 माठ ॥ ओ ० १४ गुरुसासी ॥ ओ ० १६ धीमि ॥ ओ ० १७ इंद्रियोववधी ॥

यो विषयः ॥ १७ ॥ मरुतम्यगा हृत्ती चोत्तरवदे ॥ ला विन्दी गंगे च निनदे ॥ ऐसी प्रायश्चित्तं धुनदे ॥ क्लिंयेणो ॥ १८ ॥ पाविं
 सात्त्विके धीरे तेणे ॥ शोभारली तिये करणे ॥ मरुमने सी योगधारणे ॥ मेळविली ॥ १९ ॥ ते विचित्राचे निदहा निह ॥
 मोरें सी ये उनी सेते ॥ तेथे देवि वलि याही वोरवदे ॥ हे पन करी ॥ २० ॥ नागो मंदे विविपये ॥ ते आपण निपुता सूर्ये ॥
 तयां लागीं न होये ॥ सा भिळ्या ॥ २१ ॥ या परिदृष्टा निह्नी ॥ रागद्वेष किरीटी ॥ त्यज्जुनि गिरिकपाटी ॥ नि कुंजी विस ॥
 २२ ॥ श्लो ० विविक्त सवील व्याशी यत वाक्कायमानसः ॥ ध्यान योग परे नित्यं वैराग्य स मुपाश्चित्तः ॥ २३ ॥ टी ०
 गजबजासा डिभिया ॥ वसवी वन स्थळिया ॥ अगाचि चासां दिया ॥ एक लेया ॥ २४ ॥ शमदमादिकीं रेवळे ॥ न
 बोलणे चित्ता वळे ॥ गुरुवाक्याचे निमेळ ॥ नेणें वेळ ॥ २५ ॥ आणि आगा वळयावे ॥ नातरि स्फुधा जावे ॥ कंजि
 मेच पुरावे ॥ मनोरथ ॥ २६ ॥ मोजन करितो विरवी ॥ यथाति हो ते न लेखी ॥ आहार शंभितो संतोषी ॥ मापन सूर्ये ॥
 २६ ॥ अशनाचे निपावके ॥ हारपता पाणपोरेवे ॥ इतु कियचि भाग सोदके ॥ अशन करी ॥ २७ ॥ आणि परपुरुष
 का भिली ॥ कुळवधू आगन घाली ॥ निद्रालस्यान मोकली ॥ आसन ते सें ॥ २८ ॥ दंडवताचे निमसंगें ॥ सुयो हन-
 अगलागे ॥ वाचूनि येने ये ॥ राभस्य तेणे ॥ २९ ॥ देह निवाहा पुरें ॥ राहादवी हाता पायाते ॥ किबहुना आपें ते ॥
 सवाल्फले ॥ ३० ॥ आणि मनचा उबरा ॥ हृत्ती सी देखें नेदी विरा ॥ तेथे केवळ व्यापारा ॥ अवकाश असे ॥ ३१ ॥
 ऐसे निदेह वाचा मानस ॥ हें जिणो निवाल्फ मृदुश ॥ आकळिले आकाश ॥ ध्यानचें तेणे ॥ ३२ ॥ गुरुवाक्ये उरि वि-
 ला ॥ बोधीनि चर आपला ॥ न्याहाळी हातो घेतला ॥ आरि साजेसा ॥ ३३ ॥ पें ध्याता आपण पंचि परी ॥ ध्यान रुखे

पाठ, ओं, १८ मलयकूटसि. ७

७

७

७

७

वृत्तीमाझारी॥ ध्येयतुल्यवधारी॥ ध्यानरूढागा॥ ३६॥ तेथेअथध्यानगता॥ यथातिहोयैकरूपता॥ होयतुल्यपुंरु-
ता॥ कीजतेगा॥ ३७॥ ह्युणोनि तोमुमुक्षु॥ आत्मज्ञानीजालादरु॥ परिशुदासुनिपसु॥ योगाभ्यासाचा॥ ३८॥
अपानरुंधया॥ साझारीधनजया॥ पाष्ठीपिडनियो॥ कावरसूळ॥ ३९॥ आकुञ्चनिअध॥ देउनिनिहोबध॥
करुनियेकवद॥ वायुमेदी॥ ४०॥ कुंडलनिजागुनि॥ सअमाविकाशुनि॥ आधारादिमेदुनी॥ ओषेवरी॥ ४१॥
सहस्रदब्बाचाभय॥ पायूषवर्षोनिचारा॥ तोमूळवरीवोय॥ आणुनियो॥ ४२॥ नाचतयापुण्यगिरी॥ विज्जेरवा-
चारवापरी॥ मनपवनाचोरीचपुरी॥ वादुनिया॥ ४३॥ जालियायोगाचागादा॥ मेळावास्तुनिहापुदा॥ ध्यानमा-
गिलीकडो॥ स्वयमेकले॥ ४४॥ आणिअनुयोगदानी॥ इत्येआत्मतलजानी॥ पैवीहोआवयानिविमी॥ आधि-
चित्तेणे॥ ४५॥ बीनरागतेसारिवरा॥ जोडुनिदिवलासरवा॥ तोआघवियाचिभूमिका॥ सवेचानि॥ ४६॥ याहावे-
दिसेतववरी॥ दिदीतेनसंडीदीपजरी॥ नरीकेअवसर॥ दोरवावया॥ ४७॥ तेसमोदीमवतलया॥ वृत्तीब्रह्मजा-
यलया॥ तवैवैगण्यआर्यातया॥ संगकेचा॥ ४८॥ ह्यणोमिसुवैराग्य॥ ज्ञानाभ्यासतोसभाग्य॥ करुनिजाला-
योग्य॥ आत्मलासा॥ ४९॥ तेसुवैराग्याचीअंगी॥ बाणुनियावज्रांगी॥ राजयोगतुरंगी॥ आरूढत्मा॥ ५०॥ वा-
रिआडपडिलेंदिदी॥ सानेशोरनिवदी॥ तेबळिवेकमुष्टि॥ ध्यानचेंरवाडे॥ ५१॥ ऐसेनिसंसारणाआत॥ आ-
धारीसूर्यनेसाअसेजान॥ मोक्षविजयअियवरन॥ होआवयालागी॥ ५२॥ अस्मि० अहंकारबलदुर्गकामक्रोधपरि-
ग्रह॥ विमुच्यनिर्ममः शांतोब्रह्मभूयायकल्पते॥ ५३॥ टी० तेथआइवावयाआले॥ दोषवैरीजेथोपडिले॥ तस्मा-
पाठ॥ ओ० १९० आज्ञा॥ ५४॥

माजीणहिंते ॥ देहाहंकार ॥ ५१ ॥ ज्ञानमो कर्ला मारुनी ॥ जैवनेदी उपजवानी ॥ विचंबवीरवोडांचालुनी ॥ हा
 डांचिया ॥ ५२ ॥ तया न्महे हदुणें हाथारा ॥ मोडो नयतला तो वीरा ॥ आणि बळहाद सरा ॥ मारिला वीरा ॥ ५३ ॥
 जो विषयाचे निनावे ॥ चोगुण हो वीर यावे ॥ जेणे मृता वस्थ्या धावे ॥ सर्वत्र जगा ॥ ५४ ॥ तो विषय विषया अ-
 थावो ॥ आद्य विषा दोषांचा रावो ॥ परी ध्यान रव डांचा यावो ॥ साहेलु कैचा ॥ ५५ ॥ आणि मयि विषय मासी ॥
 करी जया स्फुवाची ब्यक्ती ॥ तेचिया लुनि बुयी ॥ आर्गजो वाजे ॥ ५६ ॥ जो मन्मारा सुलवी ॥ मग अग्रमाच
 आउवी ॥ सूनि वाया सांपडवी ॥ नरकादिका ॥ ५७ ॥ तो विस्वास मारिता रिडु ॥ निवटुनि घातला दुपु ॥ ज-
 यचा अहाकपु ॥ तापसासी ॥ ५८ ॥ क्रोधा एसा महादोष ॥ जयाचादख परिपाक ॥ मरिजे तंव अधिक ॥ रि
 ता होय जो ॥ ५९ ॥ तो काम कोणे चढायो ॥ नमरे सकेलु पाहो ॥ की तेचि क्रोधा हो ॥ सहजे आले ॥ ६० ॥ सुखा
 चे तो उणे जे स ॥ होय कांशा खोदो ॥ कामना शल निनाश ॥ ते साक्रोध ॥ ६१ ॥ ह्योनि काम वीरो ॥ निमला
 जयगोरी ॥ तेथ सरली वारी ॥ क्रोधाची ही ॥ ६२ ॥ आणि समथ आपुला खोडा ॥ शिसवाहवी जे साहोडा ॥
 ते सांभुजो निजो गाढा ॥ परिग्रहो ॥ ६३ ॥ जो साध्या चिया लाणवी ॥ अगा अवगुण घालवी ॥ जिवे दाडी घेव-
 वी ॥ महत्वाची ॥ ६४ ॥ शिष्य शास्त्रादि विनास ॥ मवादि सुदेचे निमिसे ॥ यातले आहा तो फासे ॥ निःसगा जे
 पो ॥ ६५ ॥ घरी कुटुंब पण सर ॥ तरी वनी वन्य होउनी अवतरे ॥ नागवीया हो शरीरे ॥ लागला आहे ॥ ६६ ॥ ऐसा दुर्जय
 जो परिग्रहो ॥ तयाची फुडनि वावो ॥ मवी वजयाचा उत्साहो ॥ मोभीतसे जो ६७ ॥ तेथ अमानिता दिआ घव ॥ ज्ञान गुण जे मळाव

७

७

७

७

७

७

७

७

७

नैकैवल्यदेभिंचेआयवे ॥ राकजैसेआले ॥ ६८ ॥ तेहासम्यक् ज्ञानाचिया ॥ राषिवाउगाणभिनया ॥ परिवारहोइ-
 मिया ॥ राहातआंगे ॥ ६९ ॥ प्रवृत्तीचियेराजबिदो ॥ अवस्थामंदप्रमदो ॥ कीजतआहप्रतिपदो ॥ सूरवाचेलोण
 ॥ ७० ॥ पुढावोयाचियेकाबीवरी ॥ विवेकदृश्याचीमांदिसारी ॥ योगसूयिकाआरतीकरी ॥ येतीजेमिया ॥ ७१ ॥ ते
 यक्रुद्धिमिद्धीतोअनेगे ॥ हुंदेभिळतीप्रसंगे ॥ नित्यपुण्यवर्धाआंगे ॥ नाहातसेतो ॥ ७२ ॥ ऐसेनिअहोव्यासारि
 रेवो ॥ स्वराज्ययेताजवळिके ॥ झळवनआहेहरिरेवो ॥ निन्दालोक ॥ ७३ ॥ नैकावैरियाकामंत्रिया ॥ नयासिया
 संस्थाणावया ॥ समानताधनंजया ॥ उरेचिहीना ॥ ७४ ॥ हेनामलतेणेव्याजे ॥ नौजयातेह्येणमाझे ॥ तेनोड -
 वेचिकाहुजे ॥ अहितीयजाला ॥ ७५ ॥ पैआपुनियाचेकीसन्ता ॥ सर्वहीकवळनियांपंडसुता
 कहीनलगतोसमता ॥ धाडलीनेणे ॥ ७६ ॥ ऐसाजिनिनियारिगुवर्ग ॥ अपमानिलियाहजरा ॥ अपेसयायो
 गखरंग ॥ स्थीरजाला ॥ ७७ ॥ वेराग्योचिंगादले ॥ आंगीत्राणहानभरले ॥ तेहीनावेकदिले ॥ तेव्हाकरी ॥
 ॥ ७८ ॥ आणिनिवटिआनाचेरवाडे ॥ तेंदुजनाहीचिपुढे ॥ ह्युणनिहानआसुडे ॥ वृत्तीचाहो ॥ ७९ ॥ जेसेर-
 सोषधरवर ॥ आपुलकाजकूरुनिपुरे ॥ आपणहीनुर ॥ तेंसहानसे ॥ ८० ॥ दुखेनिटाकितावावो ॥ धाव-
 नाथिरावपावो ॥ तेसाब्रह्मसामोयियावो ॥ अश्यासमाई ॥ ८१ ॥ घडनामहोदधामा ॥ गगावगसाईजिसो
 काकामिनीकातापामी ॥ स्थीरहोये ॥ ८२ ॥ नानाफळतिथेवेळे ॥ केळनीवादिमादळे ॥ कागावापुंदेवळे ॥ मा-
 गजेसा ॥ ८३ ॥ नैसाआत्मसाक्षात्कार ॥ होडलदेखोनिगोचर ॥ ऐसासाधनहातिथेर ॥ हळूचिठवो ॥ ८४ ॥
 पाव, ओं ७२ पीयूष, ओं ७४ तेवढी, ओं ७९ गतिकतो, ओं ८१ मारवें, ७९

ह्यणोनिब्रह्मेसीतया ॥ रेक्यात्तासमाधेन जया ॥ हातसेतेंउपाया ॥ वोहटपुंड ॥ ८५ ॥ मगवेरगयान्चोगाथकुट्ट ॥ ज
 ज्ञानाभ्यासांचेवार्धिक्य ॥ योगफल्लाचाहोपरिपाक ॥ दशाजेका ॥ ८६ ॥ तेशातिपेगासुभगा ॥ संपूज्य ॥ ८७ ॥
 आंगा ॥ तेब्रह्महोआवथाजागा ॥ होयतोपुरुष ॥ ८७ ॥ पुनवेहनिचतुर्दशी ॥ जेतुलुउणेंपणशशी ॥ कासोबे-
 पाऊनिजेसी ॥ पधरावीवानी ॥ ८८ ॥ सागराहोपाणिवेगें ॥ संचरेतेंरूपगे ॥ यरनिब्रह्मजेंउगे ॥ नेसमुद्रजे
 सा ॥ ८९ ॥ ब्रह्माप्राणिब्रह्महोतिये ॥ योग्यतेंतसापटआहे ॥ तेचिशोतिचेनिलबलाहे ॥ होयतेतोगा ॥ ९० ॥ पे
 तेचिहोणेनरोण ॥ प्रतीतीआलेजेब्रह्मपण ॥ तेब्रह्महोतीजाण ॥ योग्यतायेथ ॥ ९१ ॥ ब्रह्म ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्ना
 त्मानशोचतिनकास्ति ॥ समः सर्वेषु ॥ सुतेषु मद्भक्तलभतेपरा ॥ ९२ ॥ तेब्रह्मभावयोग्यता ॥ पुरुषतोमगपड
 भूता ॥ आत्मबोधमभन्नता ॥ पदोबेस ॥ ९३ ॥ जणानिपजरसमाय ॥ तोतापहीजेंजाय ॥ तेतेकाहोय ॥ प्रसन्न
 जेसी ॥ ९४ ॥ नानाभरतिथालगवगा ॥ शरत्कार्त्ताभाडुजंगगा ॥ कागीतराहातोउपागा ॥ वोहटपुंड ॥ ९५ ॥ तेसा
 आत्मबोधिउदस ॥ करिताहोयजोअस ॥ तोहीतेंथशम ॥ होउज्जुझे ॥ ९६ ॥ आत्मबोधप्रशस्ती ॥ होतिषेदश
 चौरव्याती ॥ नभारीतसेमहामती ॥ योग्यतागा ॥ ९६ ॥ तकाआत्मत्वशोचवे ॥ काहीपावावयाकामवे ॥ हेस
 रूढसमभावें ॥ भरितेंतया ॥ ९७ ॥ उदयायेतागभस्ति ॥ नानानक्षत्रव्यक्ती ॥ हारवेजनीदीसी ॥ आगिकांजवि ॥ ९८ ॥ तेवि
 उज्जतिथआत्मप्रथा ॥ हेसुतमेदव्यवस्था ॥ मोडीतमोडातपाथी ॥ वासपाहेतो ॥ ९९ ॥ पाटियेवरीलअसरे ॥ जेसीपुसता
 येतीकरें ॥ तेसीहारपतीमिदातर ॥ तयाचियेदृष्टी ॥ १०० ॥ तेसनिअन्यथाज्ञान ॥ जियेयेपतीजागरस्वमे ॥ नि
 पाट ॥ ओं. ८५ पडिमां. ओं. ९५ सम. ओं. ९६ प्रसन्नी. ओं. ९७ आसलें. ओं. ११० दिवा. ७

मंदोन्दीकेलोलने ॥ अथ क्ता माली ॥ १ ॥ मग ते ही अव्यक्त ॥ बोधवात तो ज्ञात ॥ पुरला बोधी समस्त ॥ बुडोनि
 जाये ॥ जेसी सो जननाच्या व्यापारी ॥ स्फुटा जित जाय अवधारी ॥ मग तू सीच्या अवसरी ॥ नाहीं चि होये ॥ १ ॥ नाना
 चालीनियावारी ॥ वाढ होत जाय सोडी ॥ मग पातला तायी बुडी ॥ देऊनि मी ॥ ४ ॥ काजारी तो जव उहोये ॥ तवत
 वनि द्वा द्वारये ॥ मग जागी नलिया स्वरूपे ॥ नाहीं चि होये ॥ ५ ॥ हें ना आ पुलें पूर्णत्व मेरे ॥ जेथ चि दासी वादी खुंदे ॥
 तेथ शक्रू पस्तु आटे ॥ निःशेष जेसा ॥ ६ ॥ तेसा बोध जात भिळिन ॥ बोध बोधें ये मज आंत ॥ मिसळला तेथ साद्य
 त ॥ अबोध गेला ॥ ७ ॥ तेसा कल्याता चि ये वेळ ॥ नदी मधूचें पेंड वेळ ॥ मोदुनि मरिलें जेळ ॥ आत्र ह्य जेसे ॥ ८ ॥ ना
 नागे लिया घट मठ ॥ आकाश ठाक ये कवट ॥ काजळो निकास काष्ठ ॥ वन्दो चि होये ॥ ९ ॥ ना तर ले गिया चि दसे ॥ आ-
 दोनि गेलिया भुसे ॥ ना मरूपे भेद जेसे ॥ सांड जेसे ने ॥ ११ ॥ हें ही असो ने दुलया ॥ हे समना ही जालया ॥ मग
 आपण चि आपणया ॥ उरि जेसे ॥ १२ ॥ तेसा मी ये कवाचु नि काही ॥ तथा तथा ही सकट नाही ॥ हेचो धाम्नि प्र-
 ही ॥ माझी नोलाहे ॥ १३ ॥ यर आर्त जिज्ञास अर्थी ॥ हं मज ती जिये यथी ॥ ते तन्हा पावो निचो यथी ॥ ह्यणि पत
 आहे ॥ १४ ॥ येन्ही निजी नचो यथी ॥ हे पहीली नासरति ॥ पैमाझिये सहज स्थिती ॥ मक्ति नाम ॥ १५ ॥ जे ने पण-
 माझ मकासु नि ॥ अन्यथा त्वं माते दाडनि ॥ सर्व ही सर्व भोजनि ॥ बुझावी तसे ॥ १६ ॥ जे जेथ जेसे पाहो वेंसे ॥ तथा
 तेथ तेसे चि अस ॥ हें उजिये दे कां दिसे ॥ अरवें दे जेणे ॥ १७ ॥ स्वमाचे दिमणे न दिमणे ॥ जेसे आपले नि असले पणे
 विस्वाचे आहना ही नेणे ॥ प्रकाश तेसे ॥ १८ ॥ एसा हा सहज माझा ॥ प्रकाश जो कापि धजा ॥ तो मक्ति यावे जा ॥ बोला

मार आ २ हीं ना, ७

७

७

७

जेगा ॥ ह्यपौमिभानांचादार्था ॥ हे आर्निहोऊनि याही ॥ अपेक्षणीय जे कांहीं ॥ तें मी चिकेला ॥ १९ ॥ जिज्ञास पुढां वीर
 शा ॥ हेचि होउनि जिज्ञासा ॥ मी कां जिज्ञासूंगे सा ॥ दाखवि ला ॥ २० ॥ हेचि होउनि अर्थना ॥ मी विमाझा अर्थ
 अजुनो ॥ करूनि अर्था मिधाना ॥ आणी माते ॥ २१ ॥ एवं घुडुनि अज्ञानातें ॥ माझी भक्ती जे होवते ॥ ने दावी मज
 दखयते ॥ दृश्य करूनि ॥ २२ ॥ येथें सुखचि दिसे सुख ॥ या बोला का हो न चुके ॥ परि दुजे पण हलटिके ॥ आरि सा
 करी ॥ २३ ॥ दिवीचि द्रविष्टे साचें ॥ परिय तुलें होति भराचें ॥ जे येक नि असे तयाचें ॥ दोनी दावि ॥ २४ ॥ तें सा प्रव
 त्र मी चि मिया ॥ घेपत संधन जया ॥ परि दृश्यत्व ह्याया ॥ अज्ञान वशे ॥ २५ ॥ तें अज्ञान आतां फिटले ॥ माझे दृष्ट
 लभज मेटले ॥ निज बिंबी येक वटले ॥ प्रतिबिंब जे मे ॥ २६ ॥ पैंजे कांही असे कि डाळ ॥ ते कांही सोने नि अ
 दळ ॥ परिते कां दुगे लिया के वळ ॥ उरें जे मे ॥ २७ ॥ हांगा पूर्णिमे आधी कांथो ॥ चंद्र सावयव नाही ॥ परि तिथे दिव
 सीं मे दयाही ॥ पूर्णतातया ॥ २८ ॥ तें सा मी चि ज्ञान हारें ॥ दिसें परि हस्ता नरें ॥ मग दृष्टत्व तें सरें ॥ मियां नि मीला
 मे ॥ २९ ॥ ह्यणो नि दृश्य पथा ॥ अतीत माझा पार्था ॥ भक्तियोग च वथा ॥ ह्यणीतलागा ॥ ३० ॥ भक्त्या मा
 भिजाना निया वा ल्य अस्मितत्वतः ॥ ततो मातल तो जाल्वा विधते नदनतर ॥ ३१ ॥ टी ० इया ज्ञान भक्ति सह
 ज ॥ भक्तयेक वटला मज ॥ तो मी चिके वळें हे तज ॥ अत ही आहे ॥ ३२ ॥ जे उभू नियां सुजा ॥ ज्ञानियां तो आ
 त्मा माझा ॥ हे वोलिलो कां पिध्यजा ॥ सममाध्यायी ॥ ३३ ॥ ते हे कल्यादि भक्ति मियां ॥ आभागवत भिषे ब्रह्मया
 उत्तम ह्यणो नि धन जया ॥ उपदेशिली ॥ ३३ ॥ ज्ञानी दयेत स्वसंविनि ॥ शेव ह्यणती शक्ति ॥ आह्मी परम भक्ति ॥

पाठ, ओं २५ भक्तियां, ७७

आपली ह्यणीं ॥ ३४ ॥ हे मज्झिमिच्छति ये वेळे ॥ तयां कर्मयोगीयां फळे ॥ मग समस्त ही निरिवळे ॥ मियां चि मरे ॥ ३५ ॥
 तय वैराग्य विवेकें सी ॥ आटे बंध मोक्षें सी ॥ वृत्ती तरे अहत्ती सी ॥ बुडो नि जाये ॥ ३६ ॥ ये उ नि ऐल पणों ॥ पर-
 तल हार पे जेथें ॥ गिळ निचा हो भूतें ॥ आकाश जे सें ॥ ३७ ॥ तया परे थडे याद ॥ साध साधना ती त शरद ॥ तें मी
 हो उ भये कवद ॥ भोगि तो मातें ॥ ३८ ॥ घडे नि मिधु चिया आंगा ॥ सिधु वरी तळ पंगगा ॥ तें सा पाड तया भोगा ॥
 अवधां स्जो ॥ ३९ ॥ का आरि सया मि अरि सा ॥ उढा नि दा वि लया जे सा ॥ देर वणा अनिश ये ते सा ॥ भोगणा ति ये
 ४० ॥ हे असो दर्पण नै लया ॥ तो भुरव बोध हा गेलिया ॥ देर वेल पण ये कलया ॥ आस्वा दिजे जे वि ॥ ४१ ॥ चे इगल या
 स्व मना शी ॥ आपलें क्य चि दिसे ॥ तें दु जे न वीण जे सें ॥ भोगि जे का ॥ ४२ ॥ तो चि जालिया भोग तयाचा ॥ न ये इ-
 हा भाव जयाचा ॥ ते ही बोलें के व बोलाचा ॥ उच्चार के जे ॥ ४३ ॥ तयाचा नेणों गावी ॥ रवि मका श ह न दि वि ॥ किं-
 व्या माला गी माडवी ॥ उमली त ही ॥ ४४ ॥ हांगा राज जल न कृत आंगी ॥ रावो राय पण काय भोगी ॥ का आधा रू
 न आलिगी ॥ दिन करतें ॥ ४५ ॥ आणि आकाश जे न के ॥ तया आकाश का रुज्जा णों वै ॥ रत्नाचा रूपी भिरवे ॥ गुंजा
 चेलुणे ॥ ४६ ॥ ह्योणि मि हो णे ना ही ॥ तया मी चि आहे के ही ॥ मग प्रजल हें कायी ॥ बोलों कीर ॥ ४७ ॥ याला गी तो
 कर्म योगी ॥ मी जाला चिया ते भोगी ॥ नारुण्य का न रुणागी ॥ जिया परे ॥ ४८ ॥ तरंग सर्वांगी तो यवुबी ॥ प्रभास
 र्वत्रि वल से बिंबी ॥ नाना अवकाश न भो ॥ लु न त जे मा ॥ ४९ ॥ तें सारूप हउ नि माझे ॥ मातें क्रिया वीण तो भजे ॥ अल
 कार का स ह जे ॥ सोन था ते जो दि ॥ ५० ॥ काच दून ते दुती जे सी ॥ चंदनी भजे अपे सी ॥ कां आह भिम शशी ॥ चंद्रिका
 पात ॥ ओं ॥ ३७ ॥ तें थें, ओं, ३८ ॥ भगव ॥ ओं ॥ ४६ ॥ जाणव ॥

ते ॥ ५१ ॥ तेष्मांश्रियाकारनसाह ॥ तस्मां अहंतांमनि आह ॥ हंभ्रमुभयान्निजोंगनह ॥ बोलाएसे ॥ ५२ ॥ तेन्हाहू-
 वंसंस्कारछे ॥ जेकारहंतोअनुवाद ॥ तेणोआद्यविलेनिवाद ॥ बोलतांभीचि ॥ ५३ ॥ बोलतयाबोलताचिमेदे ॥ ते
 येबोलिलेहंनघटे ॥ तेमोनतवगाभदे ॥ स्तवनमाझे ॥ ५४ ॥ ह्योणानितयाबोलतां ॥ बोलीबोलतांभीमेदता ॥ मो
 नहोयेतेणेतत्त्वता ॥ स्तविताभाते ॥ ५५ ॥ तेमंचिबुद्धिकादितां ॥ जेतोदेखोजाग्रहृदितां ॥ तेदखणेहश्यलोदी
 देरवतंचिदार्थो ॥ ५६ ॥ आरिभयाआधिजसे ॥ देखतेचिमुखादसे ॥ तयांचेदखणेतेसे ॥ मेळवादेहे ॥ ५७ ॥ ह
 वृचजाउनियादेहे ॥ दृष्टयाभिचिजेमेदे ॥ तेएकलेपणनघटे ॥ दृष्टपणही ॥ ५८ ॥ तयस्वमोंचियाप्रिया ॥ चिबोनि
 द्योबोणेनिया ॥ तार्थिजेदोहोनहोभिया ॥ आपणाचिजेसे ॥ ५९ ॥ कादोहोंकांष्टाचियेदुही ॥ माजीवन्हयेकउठी
 तोदोहोहोभाषादी ॥ आपणाचिहोये ॥ ६० ॥ नानाप्रतिबिबहार्ता ॥ घेऊगोलियागभस्ति ॥ बिबताहीअंसतां ॥ -
 जायजेसी ॥ ६१ ॥ तेसामीहोऊनिदेखते ॥ ताघेऊजायदृश्याते ॥ तोवेदृश्यनथिते ॥ दृष्टत्वही ॥ ६२ ॥ रेविआधारम
 काशितां ॥ नुरेचिजेविमकाशयता ॥ तेविदृश्यानाहीदृष्टता ॥ सीजालिया ॥ ६३ ॥ भगदेखिजनानदेखिजे ॥ रेसी
 अदशानिपज ॥ तेतदर्शनमाझे ॥ साचोकार ॥ ६४ ॥ तंमलतयाहोकिरीटा ॥ पदार्थाचियामेदी ॥ दृष्टदृश्यातीताद
 ष्ठा ॥ भोगितोसदा ॥ ६५ ॥ आणिआकाशहोआकाश ॥ दाटलेनदळेसे ॥ भियाआत्मनआपणपेतसे ॥ जालेत-
 या ॥ ६६ ॥ कल्यांतीउदकउदके ॥ रुंधिलियावाहोवाके ॥ तेसाआत्मनिभियाएके ॥ कांटलातो ॥ ६७ ॥ पावोआपणप
 यावळघ ॥ केविंविद्धिआपणपयालो ॥ आपणपायाणिगिरये ॥ स्नानाकेसे ॥ ६८ ॥ ह्योणानिसर्वभजिलेपणे ॥ तेलेतु

यायेणंजाणे॥ तेंचिगाथाकरणे॥ अदयाभज॥ ६९॥ पैजबावरीसुतरंग॥ जरिधाविन्नलासवेग॥ तरीनाहीसुमि
 भाग॥ अमिलतौये॥ ७०॥ जेसांडबेकांमांडवें॥ जेंचालेणंजेचालवें॥ तेंतोयचियेकआघवें॥ ह्येणोभिया॥ ७१॥
 केलियाहीमलतेडता॥ उदकपणेंपडुंभूता॥ तरंगाचीएकात्मता॥ नमोडेचिजेवि॥ ७२॥ तेंसामीपणेंहालोहला॥
 तोआघवाचिमजआला॥ यायाचाहोयमला॥ कापडीमाझा॥ ७३॥ आणिशरीरस्वभाववशे॥ काहोयेककरूज
 रीबेसे॥ तरिमीचिनोनेणेंविषे॥ सिंदतया॥ ७४॥ नैथकर्मआणिकर्ता॥ हेंजाडुनिपडुंभूता॥ मियांआत्मेभिम
 जपाहतां॥ मीचिहोये॥ ७५॥ पैंदर्पणांतेंदर्पणें॥ पाहिलियाहोयनपाहाणें॥ सोनेझाकिनियासुवर्णें॥ नझीके
 जेवि॥ ७६॥ दीपांतेंदीपेंप्रकाशिजे॥ तेंनमकाशणेंचिनिपजे॥ तेंसेकर्मभियाकीजे॥ तेंकरणेंकैसे॥ ७७॥ कर्मही
 करीलचिआहे॥ जेंकरावेंहेंप्राकजाये॥ तेंनकरणेंचिहोये॥ नयाचेवैके॥ ७८॥ क्रियाज्ञानमीजालेपणें॥ घडेकाही
 चिनकरणें॥ तयाचिनावपूजणें॥ खुणेंचेंमाझे॥ ७९॥ ह्येणोभिकूरतयाहीवोजा॥ तेंनकरणेंहेंचिकपिध्वजा॥ नि
 पजेतियामहापूजा॥ पूजीतोमानें॥ ८०॥ गवनेबोलेतेंस्तवन॥ नोदरेवेंतेंदर्शन॥ अदयायजगमन॥ तोचालेतेंचिने
 तोकरितेनुलीपूजा॥ तोकल्योतोजपमाझा॥ तोअसेतेचिकपिध्वजा॥ समाधीमाझी॥ ८१॥ जेंसेंनकेंसीकोकणे
 असिजेअनन्यपणें॥ तोभक्तियोगेयेणें॥ मजसीतेंसा॥ ८२॥ उदकींकलोळ॥ कापुरीपरिमळ॥ रत्नीउज्जळ॥ अन
 न्यजेसा॥ ८३॥ किंवहनातनुसीपद॥ कांभुनिकेसींघट॥ तेंसातोयेकवट॥ मजसीमाझा॥ ८४॥ दयाअनन्यसि
 द्वाभक्ती॥ याआघवाचिंदरयजातो॥ मजआपणेंपेंयांसमती॥ दृष्टयानेंजाणें॥ ८५॥ तिन्हीअवस्थांचेनिद्वैतें॥

उपाधुपहितकारं ॥ सावाभावसुखं सुखं ॥ ८७ ॥ तेहं आधेवोचिमीद्रष्टा ॥ रं सयावोधाचाभाजिवरा ॥ अनु-
 भवाचासुभदा ॥ धेडातोनाचे ॥ ८८ ॥ रज्जुजालियागोचर ॥ आभासनातोव्याव्याकारं ॥ रज्जुचरेभाभिधार ॥ हांरं
 जेवि ॥ ८९ ॥ भागारापरतेकाही ॥ लेणगुजहाभरीनाही ॥ हेआदुनियाठारी ॥ कीजेजेसा ॥ ९० ॥ उदक्रयकापरते
 तरंगनाहीचिहेनिरुते ॥ जाणोमितयाआकाराते ॥ नधेपेजेवि ॥ ९१ ॥ नातरिस्वयविहारसमस्ता ॥ चेउनियाउभा-
 रोंधेता ॥ तोआपणयापरेता ॥ नदिसेजेसा ॥ ९२ ॥ तेसीजेकाहीआधियायी ॥ तेणहायजेयस्फूर्ती ॥ तेज्जताचि-
 मीहेप्रतीती ॥ होउनिभोगी ॥ ९३ ॥ जाणंअजमीअजर ॥ असयमीअसर ॥ अपूर्वमीअपार ॥ आनंदमी ॥ ९४ ॥
 अचळमीअच्युत ॥ अनंतमीअदंत ॥ आद्यमीअव्यक्त ॥ व्यक्तहीमी ॥ ९५ ॥ ईशिलैमीईश्वर ॥ अनादिमी
 अमर ॥ अमयमीआधार ॥ आधेयमी ॥ ९६ ॥ स्वामीमीसरोदित ॥ सहजमीसतत ॥ सर्वमीसर्वगत ॥ सर्वो-
 तीतमी ॥ ९७ ॥ नवामीपुराण ॥ शून्यमीसंपूर्ण ॥ अस्युक्त अनण ॥ जेकाहीतेंमी ॥ ९८ ॥ अक्रियमीएक ॥ अ-
 संगमीअशोक ॥ व्याप्यमीव्यापूक ॥ पुरुषोत्तममी ॥ ९९ ॥ अशब्दमीअश्रोत्र ॥ अरूपमीअंगोत्र ॥ समस्तस्व-
 तंत्र ॥ ब्रह्ममीपर ॥ १०० ॥ ऐसंआत्मलमजंएकते ॥ दयाअदृश्यमक्तिजाणांनिरुते ॥ आणियाहिबाधा
 जाणते ॥ तेहीमीक्तिजाणे ॥ १०१ ॥ पंचेइलेयानंतर ॥ आपुलेएकपणउर ॥ तेहीतयावुरीस्फुर ॥ तयाशीचिजे
 से ॥ १०२ ॥ कामकाशताअक ॥ तोचिहायमकाशक ॥ तयाहीअमदायातक ॥ तोचिजेसा ॥ १०३ ॥ तेसावेद्याचा
 विलई ॥ केवळवेदकउरपाही ॥ तेणंजाणवेतयानोही ॥ हेहीजाणें ॥ १०४ ॥ तयाअदृश्यपणाअपुलिया ॥ जाणतो

पाठः ओः १६ ईशः ओः १८ पुराणः स्फूर्तमीअणुः ७

नमोजेधनं जया ॥ ते ईश्वरनिमीहेतया ॥ बोधासिये ॥ ५ ॥ मगदेतोहेतातीत ॥ मीचिआत्माएकनिश्चांत ॥ हे-
 जाणोनिजाणजेथ ॥ अनुभवोरिये ॥ ६ ॥ तेथचेइलबायेकपण ॥ दिसजेआपुलयाआपण ॥ तेहीजाताने-
 णोकोण ॥ होइजेजिं ॥ ७ ॥ कांडोळादेनियेसणी ॥ स्वरूपपणस्वरूपी ॥ नादिताहोयआदणी ॥ अळकारवी
 ही ॥ ८ ॥ नानालवणतोयहोये ॥ मगसारतातोयत्वेराहे ॥ तेहीजिरतांजेविजाये ॥ जालपणते ॥ ९ ॥ तेसामी
 ताहेजेअस्मे ॥ नेस्वानदालुभवसरसे ॥ कालउनियामवेश ॥ मजनिमाजि ॥ १० ॥ आणितोहेभाषजेयजा
 ये ॥ तेथेमीहेकोणहामीआहे ॥ ऐसाभीनातोतियेसामाये ॥ माझाविरूपी ॥ ११ ॥ तेह्याकापुजलोक्षरे ॥ त
 याचिनामअग्निपुरे ॥ मगउभयातीतउरे ॥ आकाशजिवि ॥ १२ ॥ काधाडिलियायेकायेक ॥ वादेतोइत्यवि
 शेष ॥ तेसाआहेनाहोत्वाशेष ॥ मीचिमगआधी ॥ १३ ॥ तेथब्रह्मआत्माइश ॥ ययाबोलाभांडेसौरस ॥ नबो
 लणेयाहीपैस ॥ नाहीतेथे ॥ १४ ॥ नबोलणेहीनबोलेनी ॥ तेबोलिजेतोडमरूनी ॥ जाणिवेणिवेणे
 नी ॥ जाणिजेते ॥ १५ ॥ तेथबुझिजेबोधबोधे ॥ आनदयेपेआनदे ॥ सरवरीनुसधे ॥ सरवचिभोगिजे ॥ १६
 तेथलाभजोडालाभा ॥ ममाआडिगिलीप्रभा ॥ विस्मयबुडालाउभा ॥ विस्मयाभाजी ॥ १७ ॥ शमतेथेसा
 मावला ॥ विस्त्रामविश्रान्तिआला ॥ अनुभववेडावला ॥ अनुभूतीपणे ॥ १८ ॥ किंबहुनाऐसेनिरवळ ॥ सीप
 णजोडेताफळ ॥ सेडनिवेलीवल्हाळ ॥ कर्मयोगाचीते ॥ १९ ॥ किंकर्मयोगमासादाचा ॥ कळसजोहोसो
 साचा ॥ तयावरीलअवकाशाचा ॥ उवावाजालातो ॥ २० ॥ पैकर्मयोगाकिरोदो ॥ नक्रवर्तिचासुकुदो ॥ भी-

पाठ, ओं, ११ मीपण. ओं. १२ जेका. ७.

चिद्रत्नतैसावेदी ॥ होय तो माझ्या ॥ २१ ॥ नानासंसार आडवी ॥ कर्मयोग वाद बरवी ॥ जोडली तमदैक्य गावी ॥
 पैवी जालीसि ॥ २२ ॥ हें असो कर्मयोग बोधे ॥ तें तें सकृदि नुगे ॥ मोक्षानंदोदधिवेंगे ॥ वाकिल्या किंग ॥ २३ ॥ हा
 राय वरी स्वरुमी ॥ कर्मयोगी आहे महिमा ॥ ह्मणोनि वेळो वेळा तुम्हा ॥ सांगतो आसी ॥ २४ ॥ पेंदेशे कालें पदा
 ये ॥ साधुनि बडे जमाते ॥ तें मानव्हे मी आयते ॥ सर्वोच सर्व हो ॥ २५ ॥ ह्मणोनि माझा वारी ॥ जाचो न लगे
 काही ॥ सीला भेदे उपारी ॥ साच चिगा ॥ २६ ॥ एक शिष्या एक गुरू ॥ हा रूढला साच व्यवहार ॥ तो मत्स्यासिप
 कारू ॥ जाणावया ॥ २७ ॥ अगाव सधेचा पोती ॥ निधान सिद्ध करीतो ॥ वन्हि मिद्ध करीतो ॥ बोहादुध ॥ २८ ॥ प
 रित्ता भेंतें असते ॥ तया कीजे उपायोने ॥ येर मिद्ध चितें सायेथ ॥ उपारी मी ॥ २९ ॥ हा फळही वरी उपारी ॥ कां पा
 यस्ता वीतसे देव ॥ हें पुस्ततांत रिभि प्राय ॥ येथि चारे सा ॥ ३० ॥ जेगीतार्थाने चांगो वे ॥ माझा पाय पर आय
 वे ॥ आणि शास्त्रा पायो किं नव्हे ॥ प्रमाण सिद्धी ॥ ३१ ॥ वार आमाळ नि फुडो ॥ वाचूनि सूर्या तें न घडो ॥ का हा
 त बाबुळी याडो ॥ तो यन करी ॥ ३२ ॥ तैसा आत्म दर्शनी अडळ ॥ असे अविद्येचा जो मळ ॥ तो शास्त्र ना शीथर
 नि मळ ॥ मी प्रकाश स्वये ॥ ३३ ॥ ह्मणोनि आयवो नि शास्त्र ॥ अविद्या विनाशाची पोत्र ॥ वांचोनि न होती स्त
 त्रें ॥ आत्म बोधो ॥ ३४ ॥ तया अभ्यात्म शास्त्रासि ॥ जें साच पणाचि ये पुसी ॥ तें येद जे जया वायासी ॥ ते हे गीता
 ॥ ३५ ॥ मानु मूर्धिताना चिया ॥ सते जादिशा आय विद्या ॥ तैसा शास्त्र बुवारी ताया ॥ सनाये शास्त्र ॥ ३६ ॥ हें
 असा येण शास्त्र स्वर ॥ मागा उपाय बहु वे विस्तार ॥ सागीतला जें साकर ॥ येवा ये आत्मा ॥ ३७ ॥ परि प्रथम श्रव
 ण, ओं. २९ लामेल, ओं. ३४ अस्त्रे, ओं. ३६ तैसी से स्वर, ओं. ३७ काते. ७

णासवे ॥ अर्जुनविषयं हे फले ॥ हाभावसमूहवे ॥ धरुमिच्छीहरी ॥ ३८ ॥ मंत्रिमयेयएकवे ॥ शिष्योहोभावया
अदब्ध ॥ सांगतसेसुकुळ ॥ सुदाओना ॥ ३९ ॥ आणिमसंगीता ॥ हाठायहीसंपता ॥ ह्यणोनिदावीआचंता ॥ एका
अंत ॥ ४० ॥ जयथाचामध्यभागी ॥ नानाअधिकारमसंगी ॥ निरूपणअनेगी ॥ सिद्धांतिकले ॥ ४१ ॥ तरितेतु-
लेहीसिद्धांत ॥ इयशारुओनस्तुत ॥ हेपूवापरनेणत ॥ कोणहोजेमनी ॥ ४२ ॥ तेमहासिद्धांताचाआवाका ॥ मि-
द्धांतपक्षाअनेका ॥ सिद्धिनिआरमंदरवा ॥ संपदोतअसे ॥ ४३ ॥ येथअविद्यानाशहस्यळ ॥ तेणेंमोक्षोपादनप्र-
ळ ॥ यादोहीकेवळ ॥ साधेनज्ञान ॥ ४४ ॥ हेंइतुलेंचिनानाप्रि ॥ निरूपिनेयंथविस्तारी ॥ तेआतांदोहोअक्षरी
अनुवादावे ॥ ४५ ॥ ह्यणोनिउपेयहीहानो ॥ जालयाउपायस्थिती ॥ देवअवतलेंतेपुदती ॥ येणेंचिभाव ॥ ४६ ॥ अतु-
सर्वकर्मण्यपिसदाकुर्वाणामध्यपात्रयः ॥ मत्प्रभादाद्वामोतिशास्वतंपदमथय ॥ ४६ ॥ टी ० भगवणेगासुभदा
नोकर्मयोगिचानिष्ठा ॥ मीहीउनीहोयंपेढा ॥ साझारूपी ॥ ४७ ॥ स्वकर्मचाचारावळी ॥ भजपूजाकरुनिमलो ॥
तेणेंमसादेआकळी ॥ ज्ञाननिष्ठेंते ॥ ४८ ॥ तेज्ञाननिष्ठाजेथदातवसे ॥ तेथभक्तिमाझीउल्लास ॥ नयायजमो-
समसं ॥ सभियहोये ॥ ४९ ॥ आणिविश्चमकाशितया ॥ आत्मयामजआशुलिया ॥ अनुसरजोकरुमिया ॥
सर्ववताहे ॥ ५० ॥ सांडनिआपलाआडळ ॥ लवणआन्यायेजळ ॥ कांहिडोभिराहेनिश्चळ ॥ वारुव्यामो ॥ ५१
तेसाबुद्विवाचाकारें ॥ जौमानेआन्यावृनिवाये ॥ तोनिषिद्धेहीविपाये ॥ कर्मकरु ॥ ५२ ॥ परिगंगेचासंबधी-
बिंदोआणिमहानदी ॥ ऐक्यवेविमाझाबोधी ॥ ५३ ॥ काबावनेआणिधुरें ॥ हांनिवाडानचमि
पाठ ॥ ओं ॥ ४४ नंदः मोक्षापादान ॥ ओं ॥ ४५ उपाय ॥

मेरे ॥ जवनयेपनीवश्वानरे ॥ कृवळूनिदोन्ही ॥ ५४ ॥ नानापाचिके आपिभोळे ॥ हे सोनयांत वचि आले ॥ जवप-
 रिस् आंगमेळे ॥ येकवहीना ॥ ५५ ॥ तें सेशभाशस एसे ॥ हेतंव चिवरी आभासे ॥ जवयेकनयकाशे ॥ सर्व
 ब्रमी ॥ ५६ ॥ अगारात्रिआणिदेवो ॥ हातवचि दूतभावो ॥ जवनरिगजेगावो ॥ गमस्तीचां ॥ ५७ ॥ म्हणो
 निमाशियासेही ॥ तयाचीं सर्वकुर्मै करीदो ॥ जाऊनिबैसे तो पादो ॥ सायुज्याचा ॥ ५८ ॥ देशे काळे स्वभावे ॥
 देवजयानसभव ॥ तपदमाझपाव ॥ अविनाशतो ॥ ५९ ॥ किबहनापडुझता ॥ मज आत्मयाची प्रसन्नता ॥
 लाहेतेणे नपविजतां ॥ लासकवणअसे ॥ ६० ॥ स्तो ॥ चेतसासर्वकुर्मणिमयिसन्यस्यमत्सरः ॥ बुद्धियो
 गमुपाश्रित्यमच्चित्तः सततं भव ॥ ६१ ॥ टी ॥ याकारणेगातुवांइया ॥ सर्वकुर्मो आपुलिया ॥ माझास्वरूपीय-
 नेजया ॥ सन्यासकुंजि ॥ ६२ ॥ परितोचिसन्यासवरी ॥ करणियिचा झणेकरा ॥ आत्मविवेकीधरा ॥ चित्तवृ-
 त्तीहे ॥ ६३ ॥ मगतेणिविवेकबळे ॥ आपणपेकभावगळ ॥ माझास्वरूपीनिर्मळे ॥ देखिजे लसर्व ॥ ६४ ॥ आ-
 णिकुर्माचिजन्मभोये ॥ प्रकृतोजेका आहे ॥ ते आपणयाहनिबहुवे ॥ देखसीदुरी ॥ ६५ ॥ तेथमहाप्रियाप-
 णयो ॥ वेगळीसुखनंजया ॥ रूपांवाणकाळाया ॥ ज्यापरी ॥ ६६ ॥ ऐसेनिमहानिनाश ॥ जालयाकर्मसन्या-
 स ॥ निफजेलअनायास ॥ सकारण ॥ ६७ ॥ मगकुसजातगेलया ॥ मोआत्माउरें आपणपंचां ॥ तेथबुद्धिपेक
 रूखीन्यां ॥ पतिमला ॥ ६८ ॥ बुद्धिअनन्यपणयोगे ॥ मज्जमाजो जें रोगे ॥ तें चित्तचैत्यत्यागे ॥ मातेविभजे ॥ ६९
 ॥ ऐसेचैत्यजानेमाडिलें ॥ चित्तमाझावायीजडले ॥ दाकेंतेंसेवहिजे ॥ सर्वदाकरी ॥ ७० ॥ स्तो ॥ मच्चित्तः सवृ

पाठ. ओ. ६ = चैत्यः ७

७

७

७

दुर्गाणिमत्यसादात्तरिष्यति ॥ अथ चेत्समं हंकारान्न न श्रोत्रासि विनंस्त्यसि ॥ ५८ ॥ टी० मग अमिल्ला इयासेवा
 चित्तभियां चिभरेलजेकां ॥ साझा जसा दजाणते कां ॥ संपूर्ण जाहाला ॥ ५९ ॥ तेथ सकळ दुःख धाये ॥ सुजोज
 तीजिये मल्लु जन्मे ॥ तिचे दुर्गे मे चिभ्रगमे ॥ होतोलुज ॥ ६० ॥ सूर्याचे निसावाये ॥ डोळा सावाइला होये ॥ ते
 आधारचा आहे ॥ पाडुतया ॥ ६१ ॥ तेसा माझे निमसाते ॥ जीवकृण जयाचा उपमर्द ॥ तोस सा राचे निबाधे ॥
 बागुले केवि ॥ ६२ ॥ ह्मणा निधन जया ॥ तुं ससार दुर्गति यया ॥ तर सील माझिया ॥ मसादा स्तव ॥ ६३ ॥ अथ
 वाहन अहंभावे ॥ माझे बोलणे हे आंधवे ॥ काला मना चिये शिव ॥ नेदि सटिको ॥ ६४ ॥ तिरि नित्य मुक्त अव्य
 य ॥ त्वाहा मिते हो वृनिवाय ॥ देह सवंधाचा धार ॥ राजल आगी ॥ ६५ ॥ जया देह सवंध आत ॥ मति प
 री आत्म यान ॥ सुजतो उमत्त ॥ का हो चनाही ॥ ६६ ॥ येवदे निमंरुणे ॥ निमणे नवीण निमणे ॥ पडल जरी बोलुणे
 मेघसीमाझी ॥ ६७ ॥ अन्त ॥ यद हंकार माघिन्य न योत्स्य न तिमल्य न ॥ मिथ्ये षव्यवसायस्ते मकृतिस्त्वानि
 योद्व्यति ॥ ६८ ॥ टी० पथ्ये द्वेषिया यो धाज्वर ॥ कादी पद ॥ पिया अंधकार ॥ विवेक दुर्ध्व अहंकार ॥ पोषु निते
 सा ॥ ६९ ॥ स्वदेहानाम अजुन ॥ परदेहानाम अजुन ॥ संयागानाम अमलिन ॥ पापचार ॥ ७० ॥ इया मति
 आपुलिया ॥ तिघाती नना मेययो ॥ ननु नियाधन जया ॥ ननु जेगेसा ॥ ७१ ॥ जीवा माजी भिषक ॥ करि सा
 जा आत्यंतिक ॥ नोवाया धाईल न सर्गिक ॥ स्वभाव निनु सा ॥ ७२ ॥ आणिसी अजुन हे आत्मिक ॥ यथाव
 ध करण हे पातक ॥ हे साया वाचुनि ना निवृत्त ॥ का हो आहे ॥ ७३ ॥ आधी ज्ञानारगुवा हो आचि ॥ मग जुसाव यासा
 पाठ ॥ ओ० ५८ कथा ॥

स्वयेयावें॥ कानजुंसावुयाकरवें॥ देवांगण॥ ८५॥ ह्यणेनीनजुं सणे॥ ह्यणसीतेवायणे॥ नामानुलेकपणे॥ लो
 कहसी॥ ८६॥ तहीनजुंझेंगें सें॥ निमंकिमीजिमानस॥ तेंमहतीअनारिसे॥ करवीलचि॥ ८७॥ स्त्रो० स्वभाव
 जेनकोतेयनिबद्धः स्वनकर्मणा॥ कर्तुनेच्छाभिरन्मोहात्करिष्यस्यवशोपितं॥ ८८॥ टी० पेंपूर्ववाहतापाणि
 पङ्क्तिपश्चिमचेवाहणि॥ तारिआग्रहचिउरतभाणि॥ आपुलियालेखा॥ ८८॥ कोसाढीचाकणह्यण॥ योलु
 गवेसाळीपणे॥ तरीआहेआनकरणे॥ स्वभावांसि॥ ८९॥ तेंसाक्षात्रसंस्कारसिद्धा॥ महताघडिलासिमद्ध
 आतांजुंरिह्यणसीहाधादा॥ परिउठाविमींचित्॥ ९०॥ पेंशेंयेंतेजदक्षता॥ एवमादिकपंडुसता॥ गुणार
 धलेजन्मता॥ महुतीतूज॥ ९१॥ तरितयाचियासमवाया॥ आनरूपेधनजया॥ नकरिताउगलिया॥ नयेल
 असो॥ ९२॥ ह्यणानियातिहीगुणों॥ बांधलासत्कोदडपाणी॥ त्रिशद्विनिघसोवाहाणी॥ क्षात्रोचिया॥ ९३
 नोहेंआपुलजन्मसूळ॥ नविचारीतचिकवळ॥ मजुंझेंगेंसंअदळ॥ व्रतजरीघेसी॥ ९४॥ तरिबांधोनिहातपाये
 जेरथीघातलाहोय॥ तोनचेलतरिजाये॥ दिगताजवि॥ ९५॥ तेंसांतुंआपुलियाकडनी॥ सीकांहीचम्बरी
 ह्यणानि॥ वासिपरिभरवसेनी॥ तूचिकारिमी॥ ९६॥ उत्तरवैराटिचाराजा॥ तोपळतोलुकांनिघालासोजु-
 द्धा॥ हास्तात्रस्वभावतुझा॥ जुझवीलतुज॥ ९७॥ महावीरअकराअस्माहिणी॥ तुंबायेकनागविलेरजांग
 णी॥ तोस्वभावकादडपाणी॥ जुझवीलतूत॥ ९८॥ हागारोगकाथीरोगिया॥ आवडुंदरिदरिदिया॥
 परिभोगविजेबळिया॥ अट्टेजेणें॥ ९९॥ तेंअदृष्टअनारिसे॥ नकरीलईश्वरवेश॥ तोईश्वरहीअसे॥ ह-
 पत॥ ओं० ८५० देवांगण, ओं० ८७० जुंझेंगें, ओं० ९१० निआतां, ओं० ९२० अनुरूप, ओं० ९३० बुद्धानिया, ओं० ९४० तेनि, ९५०

दद्यादुद्धा ॥ १३० ॥ अस्मिन् ईश्वरः सर्वभूतानां लहरीं नृणां तद्वत् ॥ तन्मा भवन्मदं भूतानि यत्रास्तेषां भूतानि मायया ॥ १३१ ॥ सर्वभूतानां अंतरा ॥ तदयमहा अंतरा ॥ चिह्नं चिह्नं स हस्तकरी ॥ उदयसा असेजो ॥ १३२ ॥ अवस्थात्रयति
 होलोक ॥ मुकाश्रुति अशेष ॥ अन्यथा हृदि पाणि ॥ चित्रविले ॥ १३३ ॥ वेदादकाचा सरोवरी ॥ फाकता विषय
 के लहरी ॥ इदं विषय पदाचारी ॥ जीवस्वमेत ॥ १३४ ॥ अस्मात्पुत्रक हे नो ईश्वर ॥ सकळ भूतानां अहंकार ॥ पा
 योनि निरंतर ॥ उल्हास असे ॥ १३५ ॥ स्वमायै च आड वस्त्र ॥ लघु निच कलारे वळवी स्तम्भ ॥ बाहरी नट्या
 याचित्र ॥ चोव्यासीलसा ॥ १३६ ॥ तथा ब्रह्मादिको वाता ॥ अशोधां भूतजाता ॥ देहाकार योग्यता ॥ प्रविनि
 दावी ॥ १३७ ॥ तेथ जे देह जयापुढे ॥ भयुरूप पण मोडे ॥ ते भूत नया आरुह ॥ हंसा ह्यणी नि ॥ १३८ ॥ सतत ते गु
 तले ॥ तृणतृण विवाधिन ॥ कां आत्मविबाधते ॥ बाळक जळी ॥ १३९ ॥ तथा परा देहाकारे ॥ आपण पे नि
 दुसर ॥ इराव निजी वध विष्णु ॥ आत्मबुद्धि ॥ १४० ॥ ऐस निवार राकार ॥ यत्रा भूत अवधार ॥ बाहु नि
 हालवीदारी ॥ मची नार्वा ॥ १४१ ॥ तथा जया जंकमस्तत्र ॥ मादुनिने विलिखतत्र ॥ ते ते गती पात्र ॥ हो नि
 लागे ॥ १४२ ॥ किं बहुना धनुरी ॥ भूत ते स्वर्ग सारा ॥ माजि मो वड तणे वारा ॥ आकाशी जे सो ॥ १४३ ॥ जे सुचरा आपुला लि
 मकाचे निसर्ग ॥ जे सत्ता हा वदारी ॥ ते सोई श्वर सत्ता योग ॥ चरुती भूते ॥ १४४ ॥ जे सुचरा आपुला लि
 या ॥ समुद्राद वधन जया ॥ चरुती ते दाविया ॥ सन्निधिये की ॥ १४५ ॥ तथा मिथु मारित दाटे ॥ सोमकात्मा
 पात्र ॥ कुमुदाच कोर न्नी फटे ॥ सकाच तो ॥ १४६ ॥ ते सीता जम हति वरा ॥ अने के भूत ये के ईशो ॥ चे

सर्वजतीतो भूमे ॥ तस्याहदशी ॥ १६ ॥ अजुत्पन्ननेधेना ॥ मीरेसेजे फडसुवा ॥ उरतसेते तलता ॥ तयाचेरूप
 १७ ॥ यालागीतो महुतेमि ॥ प्रवर्तवील होनरुते ॥ आणिते सुसुवोलतेते ॥ नजुं संसीज हो ॥ १८ ॥ ह्यणीनिडे
 स्वरगोसावी ॥ तेणे प्रहृती हेनेमावी ॥ तया सुखं राबवावी ॥ इदिये आपुलो ॥ १९ ॥ तू करणे न करण दोहो ॥
 लाउनि प्रहृतीचायानी ॥ प्रहृती ही कां आधीनी ॥ तदयस्यायया ॥ २० ॥ अतो ॥ तेमेव शरणं गच्छ सर्वसावेन
 पारत ॥ तत्प्रसादात्तरं शांतिस्थानं प्राप्स्यसि शास्वत ॥ ६३ ॥ टी ० तया अहंवाचि चित्त आंश ॥ देऊ निथांश
 रणारिग ॥ महोदधी कागागा ॥ रिगाल जेस ॥ २१ ॥ संगत याचि निजुं सादु ॥ सवा पशांति ममदे ॥ कात हाऊ नि
 यास्वानंद ॥ स्वरूपो न्चरसमी ॥ २२ ॥ समूति जेणे समवे ॥ विआति जेथे विमवे ॥ अनुसूतो ही अनुमवे ॥
 अनुभवाजया ॥ २३ ॥ तिये निजाल्म पदोचारीवो ॥ हो उमिताकसी अव्ययो ॥ ह्यणलदमीना हो ॥ पाथति ॥ २४ ॥
 अतो ॥ इतिने ज्ञानभारव्यातं गुह्यं द्रुह्यं तं रमया ॥ विमुंयेतदशेषेण यथेच्छ भितथाकुरु ॥ ६३ ॥ टी ० हेगी-
 तानाभ विख्यात ॥ सर्व वाङ्मयं चिंमथित ॥ आत्मा जेणे हस्तगत ॥ रत्न होये ॥ २५ ॥ ज्ञान ए सो या रूढो विं
 तेज याची मोटी ॥ वा नितां कीर्ती चारवडी ॥ पातली जगी ॥ २६ ॥ बुध्यादि केडोळसे ॥ हे जयाचि काकडवसे ॥ मो
 सर्वदशा हि दसे ॥ पाहालाजया ॥ २७ ॥ नेहंगा आत्मज्ञान ॥ मजगे याचि हे गुमधन ॥ परिवु ह्यनु निआम ॥
 कीविकरुं ॥ २८ ॥ याकारेण गापाडवा ॥ आत्मी आपला हा गुप्तवा ॥ तुज दिधला कणवा ॥ जाक विलेपणे ॥ २९
 जमी सुललीवोरसे ॥ मागवोलवा केदेश ॥ प्रीति हा परीतेसे ॥ न करु चि हो ॥ ३० ॥ येथ आकाश आणि रम
 पाठ, ओ. ३० परी, ७

बिजे॥ अमृताहीमालीफेडिजे॥ काटिव्याकरवीकरविजे॥ दिव्यजेसे॥ ३१॥ अयाचिनिअंगमकाशे॥ एताळींलाप
 रमाणुदिसे॥ तयासुर्याहिकाजेसे॥ अजनसुदले॥ ३२॥ तेसंसर्वज्ञां भिया॥ सर्वहोनिथत्तुनियां॥ निकेहोयतेधन
 ज्या॥ सागीतलेतुज॥ ३३॥ आतांतूययावरी॥ निकेहेनिधीरी॥ निधांसुनिकरी॥ आवडेतेसे॥ ३४॥ ययादेवानि
 याबोला॥ अखुनउगाचिठेला॥ तेथदेवाह्मणतीमला॥ अवचकहोमी॥ ३५॥ वाढीतयापुढेंसुकला॥ उपरो
 धेह्मणसीथाला॥ तेतोचिपुढें आपला॥ दोषहीतया॥ तेसासर्वज्ञां श्रीगुरू॥ सेदलियाआत्मनिर्धारू॥ ननु
 मिजजेआमारू॥ धरूनिया॥ ३७॥ तेआपणपुनिवचें॥ आणिपापहोवचनंचें॥ आपणयाचिसांचिभुक्त
 विलेतें॥ ३८॥ येउगेपणावुझिया॥ हाअभिप्रावेकीधनजया॥ जेएकवळआवाकुनियां॥ सागावेज्ञान॥ ३९
 तेथपार्थह्मणेदानारा॥ भलेजाणसीसाझिया॥ अतारा॥ हेह्मणोतरादुसरा॥ जाणतअसेकाई॥ ४०॥ येरसेयह
 जीआयवें॥ तुजोतायेकनिस्वभावे॥ सासूरह्मणोनिवनावें॥ सूर्यानेकाई॥ ४१॥ याबोलाश्रीह्मणो॥ ह्मणीत
 लुकायेणे॥ हेचिशेउगावाने॥ जेबुझतासित्॥ ४२॥ अतो० सर्वगुह्यतमसंभूयः शृणुमेपरमवचः॥ इहो
 सिमहदभतिस्तुतवस्यामितहिन॥ ४३॥ तों० तरावधानपथळ॥ करुनियांआणीकरकवळ॥ वाक्यभा
 सेनिर्मळ॥ अवधारीपा॥ ४४॥ हेवाच्यह्मणोनिबोलिजे॥ काआव्यमगआधिकेज॥ तेसेनहेपरितुझे॥ प्रा-
 रथवरवें॥ ४५॥ कूसींचियापिलिया॥ दिदीपान्हायेधनजया॥ आकाशवाहेबापिया॥ यरींचेयाणी॥ ४५॥ जेव्या
 वहारजेयनयेड॥ तयाचेंफळचिनेयेजोडे॥ कायेदेवनसंपडे॥ सानकूळ॥ ४६॥ येरवीहेताचीवारी॥ सारुनि
 पाठ॥ ओ० ३६पडे॥ ओ० ४०येय॥ ४७

रेव्याचापरिवरी॥ सोरिजेतें अवधारी॥ रहस्यहं॥ ६०॥ अणि निरूपचारप्रेमा॥ विषय होय जें प्रयोत्तमा॥
 तें दुजे नहे किं आत्मा॥ ऐसें चिंजाणां वें॥ ६१॥ अरि सावित्रा देखिलया॥ गोमटे वीजे धन जया॥ तें तया नेहे
 आपण या॥ लागीं जेसे॥ ६२॥ तें संपाया तुझी मिषें॥ मी बोलें आपण याचि उद्देशी॥ माझा तुझा वाई अस
 मी तू पण गा॥ ६३॥ ह्मणोनि जिह्मारी चें गुजें॥ सागतसे जीवां सितुज॥ हें अनन्य गती चें मज॥ आशी व्यसन
 ॥ ६४॥ पैजळा आपण पेटता॥ लवण भूल लपडुं मत्ता॥ किं आपवत याचें हाता॥ नल जे चितें॥ ६५॥ तें सातु
 माझा वाई॥ राखे नण सोचि काहीं॥ तर आतां तुज काई॥ गोप्य मी करी॥ ६६॥ ह्मणोनि आधवांचि गूढ
 जं पाउनि अति उघडें॥ तें गोप्य माझे चोरवडे॥ वाक्य आइक॥ ६७॥ भक्तना भव मद्रक्तो मद्याजी मान म
 स्फुर॥ मासे वेष्टा सिसव्य ते प्रतिजाने प्रियो मिसे॥ ६८॥ टी० तरि बाह्य अणि अंतरा॥ आपुलिया सर्व व्यापारा
 मज व्यापका ते वीरा॥ विषय करी॥ ६९॥ आधवा आंगी जे सा॥ वायु मिष्टानि आहे आकाशा॥ तू सर्व कमी
 तें सा॥ मज सिंचि असे॥ ७०॥ किं बहुना आपुलें मन॥ करी माझे एकाय मन॥ माझे निश्चय कान॥ मरु नि
 घाली॥ ७१॥ आत्म ज्ञान चोरवडे॥ संत जे माझे रूपाडे॥ तें थट्टी पडा आवडी॥ कामिने जे सी॥ ७२॥ मांसी स
 र्व वस्ती चें वसोटे॥ माझे नाने जें चोरवडे॥ तिये जीवा या वावाटे॥ वाचि नये लावी॥ ७३॥ हाता चें क्रूर
 गें॥ कुरापाया चें चालणें॥ तें होय मज कारण॥ तें सिकुरी॥ ७४॥ आपुला अथुवा परावा॥ गयी उपक्रमी पाड
 वा॥ तें पायने होवी बरवा॥ याज्ञिक माझा॥ ७५॥ हे येक शिकऊ काई॥ पैस सर्व आपुला गयी॥ उरऊ

पाठ, ओं. ५० दोषः ७५

७५

७५

७५

७५

निर्येसर्वह ॥ सीसेष्यचिकरी ॥ ६१ ॥ तेथजाउनिमृतदुष्ट ॥ सर्वत्रनमवेंसीचिवेक ॥ ऐसेभिआश्रयआत्यंतिक ॥
 लाहासीतुसाझा ॥ ६३ ॥ सगपरलेयाजगाआंत ॥ जाउनिजयाचीसात ॥ होऊनिवायीलएकांत ॥ आह्यातुह्या
 ६४ ॥ तेह्याप्रलुनियेअवस्थे ॥ सीतुतंतुमाते ॥ मोगिसेऐसेआइते ॥ वाटलसरव ॥ ६५ ॥ आणितिजेअडक
 रीते ॥ निमालेअजुनाजेथ ॥ तेसीचिहणोनितुमाते ॥ पावसीशरी ॥ ६६ ॥ जेसीजबेचीप्रतिमा ॥ जवना
 सीबिबा ॥ येतागाभागेभा ॥ काहीआहे ॥ ६७ ॥ पंपवनभबरा ॥ काकसोळसागरा ॥ मिळताआडवारा ॥ का
 णाचिपागा ॥ ६८ ॥ हणोनितुआणिआहो ॥ हेदिसताहेदेहधर्मा ॥ सगरयाचाविरासी ॥ सीचिहोसी ॥ ६९ ॥ य
 याबोलासाझारी ॥ होयनक्षेदोणकरो ॥ येथआनआथीतरी ॥ तुझीचआणा ॥ ७० ॥ पैतुझीआणवाहणो ॥ हेभा
 त्मनिगतेसवणे ॥ सीतचिजातिमाजण ॥ आतवोनेरी ॥ ७१ ॥ येन्हीवेदनिमपच ॥ जेणेविश्यामासहासा
 च ॥ आज्ञानरनान ॥ काळानंजिणे ॥ ७२ ॥ तोदेवसीसत्यसकल्य ॥ आणिजगाचाहीवाप ॥ माआणचिआ
 क्षेप ॥ काकरावा ॥ ७३ ॥ परीअजुनातुझीनिवेधे ॥ मियादेवपणान्विबिरुदे ॥ सोडिलीगाभित्आधे ॥ सगळे
 नितुवो ॥ ७४ ॥ पैकाजाअपुलिया ॥ राखोआपलीआपणया ॥ आणवाहूनजया ॥ तेसेहको ॥ ७५ ॥ तेथअ
 जुनहणदेवे ॥ अचरहंनबोलावे ॥ जेआमचकाजनों ॥ तुझेनिगेक ॥ ७६ ॥ यावरीसांगेबिससी ॥ कासा
 गतामावहीदेसी ॥ यातुझियाविनादासी ॥ पारआहेजी ॥ ७७ ॥ कमळवनाविकाश ॥ कशरीचायेकअश ॥
 तेथआघवाचिमकाश ॥ नितुदेतो ॥ ७८ ॥ पृथ्वीनिवकुनिसागर ॥ मरीजतीयेवदेयोर ॥ वर्षेतेथयिवात
 चानकरी ॥ ७९ ॥ हणोनिआनायीतुझेया ॥ सजनिमित्यनामूणावया ॥ ग्रामीअसेदानीराया ॥ कृपानिधी ॥ ८०

तं वेदवह्न्यण्मतीराहं ॥ या बोलाचा प्रस्नावनेह ॥ पैसांने पावसी उयाये ॥ सान्निधेणे ॥ ८१ ॥ संधवासधूपाल्लिया ॥
 जो क्षणधनजया ॥ तेणें विरेचिकां उरावया ॥ कारण कायी ॥ ८२ ॥ तें संधर्गवसांतें मजना ॥ सर्वसाहोता अहंता
 निःशेषजाउनि तबना ॥ सीचि होसी ॥ ८३ ॥ एवं साक्षि सुगामी वरी ॥ कुमालागोनि अवधारि ॥ दाविलो जुजु
 जरी ॥ उपायचि ॥ ८४ ॥ जे आधि तव पडुसता ॥ सर्वकर्म मज अपिना ॥ सवत्रममन्ता ॥ लाहिजे माझी ८५
 पावी माझा देय मसारी ॥ माझे ज्ञान जाय सिद्धी ॥ तें पेमिसि कुजे शिःझी ॥ स्वरूपी साझी ॥ ८६ ॥ मग पाया
 तिघे राई ॥ साध्य साधन होय नाही ॥ किं व हना जुज काही ॥ उरचि ना ॥ ८७ ॥ तारि सवकर्म अपिली ॥ तुवां सर्वदा
 मज अपिली ॥ तें पेम ममन्ता लाये न्नी ॥ आर्ज हे माझी ॥ ८८ ॥ ह्येणां निरुणे मसा दवळे ॥ न ह्नु जुझाचि निआड
 के ॥ नवी कंचिये कवळे ॥ साळले जुज ॥ ८९ ॥ जे प्रपंच अज्ञान जाये ॥ जेणे येक सी गोचर होये ॥ तें उपपत्तीचें
 निरुणये ॥ गीतारूप हें ॥ ९० ॥ मिया ज्ञान तुज आपुलें ॥ नाना परिउ पदे शिलें ॥ येणे अज्ञान जात भाडवले ॥ -
 धर्माधर्म जे ॥ ९१ ॥ स्तो ० सर्वधर्मात्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥ अहं त्वा सर्वपापेभ्यो माक्षयिष्यामि मया
 वः ॥ ६६ ॥ टी ० आशा जे मादुराते ॥ व्यालीनि दादुराते ॥ हें असो जें सदेन्याते ॥ दुर्भंगल ॥ ९२ ॥ तें सें स्वर्गन
 रूक सूचक ॥ अज्ञान व्याल धर्मादिक ॥ तें सांडनिया लो अशरव ॥ जेने येणे ॥ ९३ ॥ हाती येऊनि तो दोर ॥ सांडि
 जे मास पोकार ॥ कांनि दात्या गंधराचार ॥ स्वर्मीचि जे सा ॥ ९४ ॥ नाना सांडिलें नि कवळे ॥ चर्चाचे धुपें पिब
 के ॥ व्याधित्यागी कुटुंबाळ ॥ पण सुरवाचें ॥ ९५ ॥ अगादिवसा पाठी देउनी ॥ मृगजळ थापत्य जूनो ॥ काका स
 पावनाही, ७

नका हीं उरावया ॥ कारण असे ॥ १३ ॥ ह्यणो नितया चें का हीं ॥ चिंतीना आपुला वाई ॥ तुझे पाप पुण्य पाहो ॥ सोच हो
इम ॥ १४ ॥ तेथ सर्व बंध लक्षण ॥ पाप उरा वें दुज पण ॥ तें माझा बोधा वार्याण ॥ होतुं निजाईल ॥ १५ ॥ जन्मी पंडि-
लिया लवणा ॥ सर्व ही जळ होय विचस्पणा ॥ तू जमी अनन्य शरणा ॥ होई न तें सा ॥ १६ ॥ येतुं लीन अपेसया ॥
सूदल चि आहा सिधंन जया ॥ येई भज प्रकाशो निया ॥ सोडवीन तूत ॥ १७ ॥ या कारण पुढती ॥ हा अधिन-
वाहू निनी ॥ भज एका सिधे सुभती ॥ जाणो भि शरणा ॥ १८ ॥ ऐसें सर्व रूप रसे ॥ सर्व हुद हल सें ॥ सर्व देश
निवास ॥ बोलिले श्री हृष्णा ॥ १९ ॥ मग सावळा सक कणा ॥ बाहू पसरोनी दिक्षिणा ॥ आनि गिला स्वशरणा ॥ भक्त
राज तो ॥ २० ॥ न पव तो जया तें ॥ कारेव सूनि बुद्धी तें ॥ बोलणे मागो तें ॥ वोसरले ॥ २१ ॥ ऐसें जे का ही येक ॥ बोला
बुद्धि सी ही अदक ॥ तें द्यावया भिष ॥ रव वाच केलें ॥ २२ ॥ लढ्या लढयें कजालें ॥ येतुं दयी चें तें लढयें घालें
हुत न मोडितां केलें ॥ आपणा ऐसें अर्जुना ॥ २३ ॥ दीप दीप लाविला ॥ तें सापरि रंग नो जाला ॥ हुत न मोडिता
केला ॥ आपण पें पार्थ ॥ २४ ॥ तेज्जासु रवाचा भगतया ॥ पूर आला तो धन जया ॥ तेथ गाडत हीं बुद्धी निया ॥ तेथ पुढे
॥ २५ ॥ सिंधु सिंधु ते पावा जाये ॥ ते पावण लाके दुणा होये ॥ वरीरि गुरुर वणिये ॥ आकाश हीं ॥ २६ ॥ तें संतयां दया च-
भिल्ले ॥ दोघाना वरे जाणा वि कर्णे ॥ किंबहुना धीनारायणे ॥ विश्व कोदले ॥ २७ ॥ एवें वेदांचें भूळ सूत्र ॥ सर्वाधि-
कारेक पवित्र ॥ श्री हृष्णा गीता शास्त्र ॥ प्रगट केलें ॥ २८ ॥ येथगीता भूळ वेदां ॥ ऐसें के विपा आले बोधा ॥ ह्याणा
लतरी मसिद्धा ॥ उपपत्ति मागो ॥ २९ ॥ तरी जयाचा निःश्वासी ॥ जन्म जाले वेद राशी ॥ तो सत्य प्रतिज्ञे जेसी ॥ वो

पार, नाही, ७

७

७

७

७

लिलासचसुरवै॥ ह्यणो निवेदांश्च मृत ॥ गीता ह्यणो हं होय उचिन्त ॥ आणक हीये कीयेथ ॥ उपपत्ति असे ॥ ३१ ॥ जैन
 धातस्वरूप ॥ जयाचा विस्तार जयलप ॥ तयाचे ते ह्यणिपं ॥ बीजजगं ॥ ३२ ॥ तरिकां डण्यात्सक ॥ शब्दराश अशेष
 गीतेमाजी असंख्य ॥ बीजजेसा ॥ ३३ ॥ ह्यणो निवेदां चैव ज ॥ श्रीगीता होय हे मज ॥ गुमे आणिस हज ॥ हिम त हो
 आहे ॥ ३४ ॥ जेवदांचे तिन्ही भाग ॥ गीते उभटले असते चांग ॥ म्हणण रत्नो मवीग ॥ शो मल जस ॥ ३५ ॥ तिचि चिक
 मीदिकें तिन्ही ॥ कांडे कोण कोण स्थानी ॥ गीते आहाने निनयनी ॥ दाखव ऊ आडका ॥ ३६ ॥ तरि प हिल्या जो अछाव
 तो शास्त्र ग्रंथ नि प्रस्ताव ॥ द्वितीया सांख्य सद्भाव ॥ प्रकाशिला ॥ ३७ ॥ मोक्षपदी बि सावया ॥ ज्ञान प्रधान ह शास्त्र ॥ बि
 तुला लुडु जा म्हा ॥ उभारिले ॥ ३८ ॥ मग अज्ञान बांधिलया ॥ मोक्षपदी बि सावया ॥ साधनार भम तो तनीया ॥ अथ्या
 यो बोलिला ॥ ३९ ॥ जे देहाभिमान बंधे ॥ साडु नि का म्या निषिद्धे ॥ विहित परी अप्रभादे ॥ अनुष्ठवे ॥ ४० ॥ ये से नि
 मंदावे कर्म करावे ॥ हातिजा अध्यायी देवे ॥ निपाय कला ते ज्ञाणावे ॥ कर्म फळ येथे ॥ ४१ ॥ आणिते विनित्या दिक्
 अज्ञान च अवश्यक ॥ आचरता मोचक ॥ के विहायणा ॥ ४२ ॥ एसी अपेक्षा जालिया ॥ बहसु सुसु ते आलिया ॥ देव ब्र
 ह्माणत्व क्रिया ॥ सागीतली ॥ ४३ ॥ जे देह वाचा ज्ञान से ॥ विहीन निप जे जे स ॥ तेथे क दुस्चरी देशे ॥ कीजे ह्यणी
 तले ॥ ४४ ॥ हे निदुस्चरी कर्म योगे ॥ भजन कृपुना चरवागे ॥ आदिरिले शेष भागे ॥ चतुर्थाचेनी ॥ ४५ ॥ ते विस्वरूप अ
 कराना ॥ अध्याय संपजव आयवा ॥ तव कर्म इश मजावा ॥ हे जे बोलिले ॥ ४६ ॥ ते अष्टमाध्यायी उघड ॥ जाण येथे
 देवता काड ॥ शास्त्र सांगत से आड ॥ मोडुनि बोलि ॥ ४७ ॥ आणिते नेणे चि ईश मसादे ॥ श्रीगुरु संप्रदाय लब्धे ॥ सा-
 नार ॥ ओं ॥ ३५ रत्न म्हावणी ॥ आयुले ॥ ओं ॥ ३७ शास्त्र ॥ ओं ॥ ३९ ध्यायी ॥ ओं ॥ ४१ मंदावे ॥ ४

चजानेउद्धये॥ कोवलेजे ॥ ४८ ॥ तेअहृष्टादिअश्रुतिहो॥ अथवाअभाभित्यादिहो॥ नातुर्वजिह्यणोनित्तरवो॥ बारा
 वारुण॥ ४९ ॥ तोबाराकाअर्थांचेआदी॥ आणिपंचरावाअन्वि॥ ज्ञानसुखान्दसिद्धि॥ निरूपणामो॥ ५० ॥ स्त-
 णोभित्तुहोइहो॥ उर्ध्वसूत्रातोअध्यायी॥ ज्ञानकाइयवाचो॥ निरूपणजि॥ ५१ ॥ एवकाइयनिरूपिणी॥ शु-
 तीचोहोकाइसवाणी॥ गीतापदारत्नाचोलेणी॥ लयिनीआह॥ ५२ ॥ हेमसोकाइयत्मात्मक॥ श्रुतीमोसरूप
 फळयेक॥ बोभावेजेअवश्यक॥ ठाकावेस्त्रोणी॥ ५३ ॥ तयोचेनिभाधुनज्ञानेमी॥ वेत्तकरीजोअतिदिवशी॥
 तोअज्ञानवणपाडशी॥ अतिपादिजे॥ ५४ ॥ तोचिशास्त्राचाबान्नायी॥ यवानिवेर्गजिणावा॥ हानिरोपतोसत-
 रावा॥ अथ्यायेये॥ ५५ ॥ ऐसाप्रथमालागोनी॥ रातरावालाणिकरुनी॥ आत्मनिश्चासिवरुनी॥ दाविलादे
 वे॥ ५६ ॥ तयाअर्थजातोअशेषा॥ केलातात्पर्याचाआवाका॥ तोहाअनरावादरवा॥ कलशाध्याय॥ ५७ ॥ एवसक
 ठसाराव्यसिधु॥ श्रीभगवद्गोताप्रबंध॥ हाओदयेआगळावेदु॥ मूर्तजाण॥ ५८ ॥ वेदमपन्नहोचगाइ॥ परि-
 कृपणऐसाआननाहो॥ जेकानीलागलानिहो॥ वणाचिचि॥ ५९ ॥ येराप्रवव्यथादेलिया॥ स्त्रोश्रुतदोदिकना
 णिया॥ अनवसरमाहुनिचा॥ राहिलाआह॥ ६० ॥ तरीमजपाहातानेमागीलउणे॥ फेडावयागीतापणे॥ वेद-
 धेवलाभलतेणे॥ सेव्यहोआवया॥ ६१ ॥ नाहेअर्थरिगाभिसनी॥ अरणेलागोभिकानी॥ जपमिषेवदनी॥ वस्त्रो
 निया॥ ६२ ॥ येगीतेचापावजेजाणे॥ तयाचनिसांगार्तापणे॥ गीतालिहोनिवाहणे॥ पुस्तकमिषे॥ ६३ ॥ एसे
 साभिसकटा॥ संसाराचाचोहटा॥ गवादिधानेनचोरकटा॥ मोक्षसरस्वती॥ ६४ ॥ परिआकाशीवसावया ॥

पृथ्वीवरौबैसावया ॥ रविदीप्तीराहादावया ॥ आवारमम ॥ ६५ ॥ तेविंउत्तमप्रधमरेसे ॥ सेविताकवणानेहीनपुसे ॥
 केवल्यदानेसरसे ॥ निवधीतजगा ॥ ६६ ॥ यालागिमागिलीकुटी ॥ म्यालावेदगीतेचापोटी ॥ रिगालाआतांगाम
 दी ॥ कीर्तिपातला ॥ ६७ ॥ ह्यणोनिवेदाचीसुसेव्यता ॥ तेहसूतजाणअगीता ॥ श्रीह्मणोपंडकता ॥ उपदेशिला
 ६८ ॥ परिवत्साचेनिवारसे ॥ दुभतेहोयशरउहूरा ॥ जालेपाडवाचेनिमिषे ॥ जगदुहरण ॥ ६९ ॥ चातकानियेक
 णवे ॥ मयपाणियेसिधावे ॥ तेथचराचरआयवे ॥ निवालजेवि ॥ ७० ॥ काअनन्यगतीकमळा ॥ लागीसूर्ययेवेळ
 वेळा ॥ किंसागरियाहोइजेडोळा ॥ त्रिभुवनेचा ॥ ७१ ॥ तेसेअर्जुनाचेनियोजे ॥ गीतामक्रावृनिअरीजोमिसे-
 सारायेवेदथारओझे ॥ फडिलेजगचे ॥ ७२ ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती ॥ उज्ज्विताहोत्रिजगती ॥ सूर्यनहलस्पीप
 ती ॥ वक्राक्राशिचा ॥ ७३ ॥ बापकळतेपवित्र ॥ जेथिचापायययाज्ञानापात्र ॥ जेणगीताकेलस्वतत्र ॥ आवारजगा
 ७४ ॥ हेअसोमगतणे ॥ सदुरुह्योह्यो ॥ पार्थिनेमिसळणे ॥ आपिलेहेता ॥ ७५ ॥ पाठिह्मणतसेपाडवा ॥ शास्त्रहे
 मानिलेकिंजिवा ॥ तेथयेरुह्यणेदेवा ॥ आपुलियाह्मणा ॥ ७६ ॥ तरिनिधानजोडावया ॥ माग्यधडगाधनंजया ॥ प
 रिजोडिलेभोगवया ॥ विपायेहोय ॥ ७७ ॥ पंक्षीरसागरामेवढे ॥ भविर्जादुधाचेभादे ॥ सराअस्मराकवढे ॥
 मथिताजाने ॥ ७८ ॥ तेसाहसहोफळाआले ॥ जेअमृतहोडोळांदेशिले ॥ परिवरिचिलीचूकले ॥ जतनेने ७९
 येथअमरत्वावोगरिले ॥ तेभरणाचिलार्गजाले ॥ भोगोनेणताजाडने ॥ तेसेआहे ॥ ८० ॥ नहुषस्वर्गाधिपति
 जाला ॥ परीराहादीभाबावला ॥ तोभुजगलपवला ॥ नेणसीकार्या ॥ ८१ ॥ ह्यणोनिबहतपुण्यतुवा ॥ केलेतोणे
 पाठ, ओः ६६ मध्यम, ओः ७९ सार्धस, वरिली. ७.

धनंजया ॥ आजिशास्त्रराजा इया ॥ जालासि विषय ॥ ८२ ॥ तरियया चिशास्त्राच्वनि ॥ समदायेय पायरोनि ॥ शास्त्रार्थहा
 निकेनी ॥ अनुधी हो ॥ ८३ ॥ ये कंवी अमृतमयना ॥ सारिरेव हो ईल अर्जुना ॥ जरिघिसी अनुष्ठाना ॥ समदायेवी-
 णा ॥ ८४ ॥ गाथधुजोडे गोमटी ॥ ते ते चिपिंये किरीटी ॥ जे जाणिजे हातवटी ॥ सांजवणीची ॥ ८५ ॥ ते सांथी
 गुरु प्रसन्न होये ॥ शिष्य विद्याही कीरलाहे ॥ परिते फळे समदाये ॥ उपासि लया ॥ ८६ ॥ ह्यणो निशास्त्रे जो इये ॥
 उचित समदाय आहे ॥ तो एक आतां बहुवे ॥ आदरेसी ॥ ८७ ॥ स्तो ० इदं तेनात पस्कायना मक्ताय कदाचन ॥ नचा
 श्रम श्रुषे वाच्य न च मायाभ्यसूयति ॥ ८७ ॥ टी ० तरितुवां हे जे पाथा ॥ गीता शास्त्राला धरें आस्था ॥ ते तपोहीना स
 वथा ॥ सांगें नाहो ॥ ८८ ॥ अथवा तापम हा जाला ॥ परिगुरु भक्ति जो दिला ॥ तो वेदीं अत्यज वाळिला ॥ ते सावाळी
 ॥ ८९ ॥ नातरि पुरेडा श्रजेसा ॥ नयापेव ह्द तरी वाचसा ॥ गीताने दी ते सीतापसा ॥ गुरु भक्ति ही ना ॥ ९० ॥ कांतप
 ही जोडे देही ॥ भजगुरु देवाचा रायी ॥ परि आकर्णनी नाही ॥ चाडजरी ॥ ९१ ॥ तरि सागील दोहा आंगी ॥ उत्त-
 म होय कीरजरी ॥ परि यथाश्रवणालागी ॥ योग्य नाह ॥ ९२ ॥ सुक्ता फळ मल तेसे ॥ हो परि सुख नसे ॥ तव गुणम
 वेंशे ॥ तेथ कायी ॥ ९३ ॥ सागरंग भीर होये ॥ हें कोण ना ह्मणत आहे ॥ परि वृथा वायां जाये ॥ जाली तेथे ॥ ९४ ॥ क्ष-
 लिया दिव्यान्मस रावे ॥ मग जे वाचा धाडवे ॥ ते आती कांन करावे ॥ उदारपण ॥ ९५ ॥ ह्यणो नि योग्य मल तेसे ॥ हो
 तपरी चाड नसे ॥ तरि झपोवा निवसे ॥ देसी हेतया ॥ ९६ ॥ रूपाचा सुजाण डोळा ॥ वोडु ये कायि परि मळा ॥ जेय
 जंमान ते फळा ॥ तेथे चियेगा ॥ ९७ ॥ ह्यणो नितपी भक्ति ॥ याहावे ते स भद्रा पति ॥ परि शास्त्र अवाणी अनासक्ति ॥

पाठ, ओं. ८८ नसांगावे नाहो. ओं. ९३ वरन. ५

वाढावेचिते ॥९८॥ नातरितपमक्ति ॥ होउनिअवण ॥ आनि ॥ आशीऐसीहीआयती ॥ देरवसीजरी ॥ ९९ ॥ जरीगीता
 शारुत्रनिमिता ॥ जोसीसुकळलोकशास्ता ॥ तयाभातेसायान्यता ॥ बोलेलजो ॥ १०० ॥ माझासज्जेनेसिंभाते ॥
 सेशून्याचेनिआह्वाते ॥ येकआहातीतयाते ॥ योग्यनस्रणे ॥ ११ ॥ तयाचीयेरआशवी ॥ सामझीऐसीजाणावी ॥ दी
 र्पवीणावाणादवी ॥ रात्रिचीजैसी ॥ १२ ॥ अंगोरे ॥ आणितरुणे ॥ वारिलेयलेआहेलणे ॥ परियेकलेनिअणे ॥ सांनि
 लेजेवि ॥ १३ ॥ सोनयाचेसुंदर ॥ निर्वाळिलेहोयधर ॥ परिसर्पगनादूर ॥ रुंथलेआहे ॥ १४ ॥ निपजेदिव्यान्चेख
 द ॥ परिमाजीकाळकुद ॥ हेअसोमेत्रीकपट ॥ रात्रिणीजैसी ॥ १५ ॥ तैसीनपमक्तिमेधा ॥ तयाचीजाणमृदुदा
 जोमाझयाचीकानिदा ॥ माझीचिकरी ॥ १६ ॥ याकारणेधनजया ॥ तोमक्तमेधावीनपिया ॥ तरिनकोवापादया
 शारुत्राआनवोदेवो ॥ १७ ॥ कायबहुबोलोनितुका ॥ योग्यस्वष्टयाहीभारिखा ॥ गीताहेकवतिका ॥ लागींदीनेदी
 ॥ १८ ॥ हाणोनिनपाचाधनुर्धरा ॥ तळादादोनिरादोरा ॥ वरिगुरुभक्तीचापूरा ॥ आसादजोआला ॥ १९ ॥ आणिअव
 णेच्छेचापुढा ॥ दारवंदासदाउधडा ॥ वरिंकलशचोरवडा ॥ अनिदरत्नाचा ॥ २० ॥ अज्यो ॥ यइदपरमगुह्यमदक्ते-
 खमिधाम्यनि ॥ भक्तिमधिपुंराकृत्याममेवधन्यमशायः ॥ ६८ ॥ दी ॥ ऐशाभक्तालीचीरयदी ॥ गीतारत्नेन्वरहा
 प्रतिष्ठी ॥ मराभाझियासंभसादी ॥ तुकसीजरी ॥ ११ ॥ कांजेएकाक्षरपणेसी ॥ त्रिमानुकेनियेदुःखी ॥ प्रणवहो-
 ताराभवासी ॥ सांकडला ॥ १२ ॥ तोगीतेचियाबाहळी ॥ वेदबीजेनेषाहाळी ॥ कीगायत्रीकुलोफळी ॥ श्लो-
 कांचाआली ॥ १३ ॥ तेहमंत्ररहस्यगीता ॥ मेळवीजोमाझियाभक्ता ॥ अनन्यजीवनामाना ॥ बाळकाजैसी ॥ १४ ॥
 पाठ, ओ. १०३ गोर.

तेसीसङ्कां गीतेसीं ॥ भेटी करी जो आदंरसा ॥ तो देहाणी मजसी ॥ येक चिहाये ॥ १५ ॥ ॥ ॥ नच त भ्याम्भ जु
 येपुका जिन्म प्रिय हृत्तमः ॥ सवितानचमेतस्मादन्यः प्रियतरा सुवि ॥ ६९ ॥ टी ॥ आण देहांचे होलेणें ॥ हे
 ऊनिवेगळे पणें ॥ असे तव जिवे प्राणे ॥ तो चिपटिये ॥ १५ ॥ ज्ञानियाकर्म वातापसा ॥ ययारुणे चिया माणुसा
 माजिनो येक गाजेसा ॥ पटिये मज ॥ १६ ॥ तेसा भूत ठो आधवा ॥ आन नंद रे पंडवा ॥ जोगी तांसांगे मळावा
 सक्त जनाचा ॥ १७ ॥ मज ईश्वर तुचि निलोम ॥ हेगी ताप दुता असोम ॥ जो मुहुण ह्यसमे ॥ सतांचिये ॥ १८ ॥ न
 वपलु वीरोमाचित ॥ मदानिळ कापवित ॥ आसो दजळ वळवत ॥ स्वानंद दोळ ॥ १९ ॥ कोकिळा कलखाचे
 निमिषे ॥ सद्दुदबोलरी तजेमे ॥ वसंत कापवेरो ॥ मद्रक्त आरापी ॥ २० ॥ काज न्याचे फळ चकोरां ॥ होत जे
 चंद्र ये अंबरा ॥ नाना नवधन मयूरा ॥ वोदत पावे ॥ २१ ॥ तेसा सज्जनानाचि मळापी ॥ गीता पद्यरली उमपी ॥ वर्षे
 जोमाझा रूपी ॥ हे तुचे रुनि ॥ २२ ॥ मगत याचे निपाडे ॥ पटिये ते मज फुडे ॥ नाहीं चिगासांगे फुडे ॥ न्याहाळिता
 ॥ २३ ॥ अर्जुना हा वायवरि ॥ सीतया ते सूर्ये जिह्वारी ॥ जोगी तार्थीचे करी ॥ परगुणें संता ॥ २४ ॥ ॥ अर्थ ॥ अर्थ
 व्यतेय इदं धर्म्य सवादमावयोः ॥ ज्ञानयज्ञेन तेनाहं मिष्टः स्यामिति समतिः ॥ २५ ॥ टी ॥ येमां ज्ञयातुं क्षिप्त
 भिळणी ॥ वादी नली जे हे काहाणी ॥ मोक्षयम काजणी ॥ आलासे जे ये ॥ २५ ॥ तो हा सकळार्थ मंद ॥ आह्वादा
 धाचा मवाद ॥ न करिता पद मंद ॥ पाठे चिजो पठे ॥ २६ ॥ तेणें ज्ञानाना नवी मर्दासी ॥ मूळ अविद्ये चिया आहुती ॥ ता
 विला होय समती ॥ परमात्मा मी ॥ २७ ॥ येऊनि गीतार्थ उगाणा ॥ ज्ञानिये जे विचक्षणा ॥ दाकिती ते गाणा-
 थात ॥ ओ ॥ १७ ॥ सज्जनाना ॥ ओ ॥ १९ ॥ फुलांचे ॥ ओ ॥ २६ ॥ मंथ, ७

वाणा ॥ गीतचितोलाहे ॥ ३८ ॥ गीतापाठकामिणें ॥ फलअर्थज्ञानिसरिसें ॥ गीतापाठलियेकीनेसे ॥ जाणेंताहे ॥ ३९ ॥
 श्लो ० श्रद्धावाननसहस्रपुण्यादपियेनरः ॥ सोपिमुक्तः शक्राहोकात्रानुयात्युण्यकर्मणां ॥ ११ ॥ टी ० आ-
 णिसर्वसागैर्निदा ॥ सोडुनिआस्थापेश्रद्धा ॥ गीताअवणीअद्धा ॥ उमरीजो ॥ ३० ॥ तथाचअवणपुढों ॥ गी-
 तेचींअस्तरजवपेढों ॥ होनीनानवउठाढी ॥ पळेविपाण ॥ ३१ ॥ मगअदवीयमाजिजेसा ॥ वन्हिरिघतासहसा ॥
 लुधितीकादिशा ॥ वनोकेनिचे ॥ ३२ ॥ काउदयाचळकुळीं ॥ झळकतांअश्रमान्दी ॥ निमिरेअतगळीं ॥ हारपती ॥
 ३३ ॥ तेसाकानाचासहादारी ॥ गीतागजरजेथकरी ॥ तेथसुधीचियेआदिवरी ॥ जायेविपाण ॥ ३४ ॥ ऐसीजन्म
 वल्लुपुवत ॥ होयपुण्यरूपचोखत ॥ याहवरीअचाट ॥ लाहेफल ॥ ३५ ॥ जियेगीतेचींअस्तरें ॥ जेतुलोकांकण
 द्वारे ॥ रिघतीतितुलहीनीपुणे ॥ अश्वमेधुकी ॥ ३६ ॥ ह्येणोनिअवणेपापेंजाती ॥ आणधर्मधरीउज्जती ॥ नेणेंस्व
 गगज्यसपत्नी ॥ लाहचिशेखी ॥ ३७ ॥ तोपमजयावयालागी ॥ पहिलेंपेणेंकरास्वरी ॥ मगआवडेनवभोगी ॥ पा
 वोमजचिमिळे ॥ ३८ ॥ ऐसीगीताधुनजया ॥ ऐकतयाआणिपढतया ॥ फलमहानंदमिया ॥ ब्रह्मकायबोला ॥ ३९ ॥
 याकारणेंहेअसो ॥ परजियालुगीशास्त्रानिसो ॥ केलातंतवतुजपुसो ॥ काजतुझे ॥ ४० ॥ श्लो ० कश्चित्तच्छत
 पाथत्येकायेणचेतसा ॥ कश्चिदज्ञानसंभोहः मन एस्मधनजया ॥ ११ ॥ टी ० तरिसागपापाडवा ॥ हाशस्त्र
 सिद्धातआयवा ॥ दजएकचित्तफावा ॥ गेलाओहे ॥ ४१ ॥ अथवामाझारी ॥ गेलेंसाडीविषवुरी ॥ किंवाउपेसवरी
 वाळूनिसांडिलें ॥ ४२ ॥ जेसैंआहीसांगितलें ॥ तेंसैंचिन्दयाफावलें ॥ तरीसागपावहिलें ॥ पुसेनतेमों ॥ ४३ ॥
 पाव नाही

आह्मीहं जैमं जराती ॥ उगाणिले कानाचा हाती ॥ येरातें संचितु झालिनि ॥ पत्रं कलिकि ॥ ४४ ॥ तारि स्वाज्ञान ज-
 निते ॥ मागिले मोहें तुते ॥ मूलवीलें तो येथे ॥ असे किनाही ॥ ४५ ॥ हे बहु पुसो काड ॥ सारे तुं अपुला वाई ॥ कर्मो-
 कर्म काही ॥ देखतां मी ॥ ४६ ॥ पाथ स्वानंद कर मी ॥ विरलें सभे दश ॥ आणिल्या येणें मिव ॥ प्रज्ञाचिनि ॥ ४७
 ॥ पुण ब्रह्म जाला पाथ ॥ तारि पुढील साधा वधा कायर्थ ॥ मया दात्री कृष्ण नाथ ॥ उल्लुघोने दि ॥ ४८ ॥ ये नूवीं आपुं-
 ल करणे ॥ सर्व जकाय तेनेणे ॥ परिकेले पुसणे ॥ याचि लागीं ॥ ४९ ॥ एवं करे निचा प्रश्न ॥ नमते चि अजुन पण ॥
 आपुं नियां आपण ॥ जाले पूण पण ते बोलवी स्वये ॥ ५० ॥ मग स्त्री राखी ते साडित ॥ गगनी पुज मंडित ॥ निवडे
 जे मान निवडित ॥ पूर्ण चंद्र ॥ ५१ ॥ ते सा ब्रह्म हीं विसरे ॥ तेथ जग चि ब्रह्म त्वें मरे ॥ हे ही साडी तरि विरे ॥ ब्रह्म
 पण ही ॥ ५२ ॥ ऐसा मोड न मांडत ब्रह्म ॥ तो दुःखें दहा चि येसी मी ॥ मी अजुन येणे न मी ॥ उभा देला ॥ ५३ ॥ मग
 कापता कूरतळीं ॥ दडपुं निरो मावडी ॥ पुलिका स्वें दजळीं ॥ जिरु नियां ॥ ५४ ॥ माणसो सोडल नया ॥ आंगा
 आंग चि दे कलियां ॥ स्मृनि स्तंभ चाल नया ॥ सुलो नियां ॥ ५५ ॥ नेत्र युगुळ चि निवोते ॥ आनदा मृत चि मरिते
 वो सडत न मायुते ॥ कादु नियां ॥ ५६ ॥ विविधा ओं न्मूक्याची दादी ॥ वीपदा दत हो तो कंठी ॥ नेकरु नियां येवी
 हृदया माजी ॥ ५७ ॥ वाचिचें विवृळणे ॥ सावरुनि माणे ॥ आक्रमें च सणे ॥ ठेऊ निरायी ॥ ५८ ॥ स्तोत्र अ-
 जुन उवाच ॥ नृशे मोहः स्मृति लब्ध्या ललभा दान्मया च्युत ॥ स्थितां स्मिगत संदेहः करिष्ये वचन तव ॥ ५९ ॥ टी-
 मग अजुन ह्मण काय दवा ॥ पुसतां ति आवड मोहा ॥ तीरतां मकुटु बगेल जावावा ॥ घेऊ नि आपला ॥ ६० ॥ पा-

पाठ, ओं. ४५ हांगा, ओं. ५५ देकया, छ

भिंसेरुनिदिनकरं॥डोलयतेआधारे॥पूंसिजेहंकायिसरे॥कोणेंगावीं॥६०॥तेसाहूंद्रीकृष्णराया॥आसुवि
 याडोलया॥गाचरहेचिकायिसया॥नपुंरंतव॥६१॥वरिलोभेंमाययासूनि॥तेसांगसीताडसकृनि॥जेंकायि
 सेनिहीकुरुनि॥जाणूनये॥६२॥आतांमोहअसेकिनाही॥हेरेसेजीपूभसीकादे॥कृतकृत्यजाहलेंपाहो
 लुसंपणे॥६३॥गुंतलोहोतेंअजुनूणें॥तोभूरुझालेंतुसंपणें॥आतांपुसणेंसांगणें॥दोहीनाही॥६४॥
 मीतुझनिमसादे॥लाधेलनिआत्मबाधें॥सोहाचिंतयाकादे॥नेहीचउरो॥६५॥आतांकरुणेंकानकरणें॥
 हेजेणउतीहुजेपणें॥तेंतूवांचूनिनेणें॥सर्वत्रगा॥६६॥योविषुयीसाझावायो॥संदेहाचेसुरेचिकाहीं॥अश-
 क्हाकर्मजयनाही॥तेंमीजालो॥६७॥तुझनिमजसीपावानी॥कतव्यनेलनिपटूनि॥परिआज्ञातुझीवांचेनि
 आननाहींमो॥६८॥काजेदृश्यहृदयातेनाशी॥जेंदुजेंहेतातेंयासी॥जेएकपरिसर्वदेशी॥वसवीसदा॥६९॥ज-
 याचेनिमवधेबधकिदे॥जयाचियाआशाआशतुदे॥जेंभटलयासर्वभेटे॥आपणपांचि॥७०॥तेंतेंगसल्लिगजी
 माझे॥जेंयेकलपणींचेंविरजे॥जयालागींवीलाडिजे॥अहेतवोर॥७१॥आपणांचिहाऊनब्रह्म॥सांरिजहु
 त्याहृत्याचेंकाम॥मगकीजिकांनिःसीम॥सेवाजयाचि॥७२॥गंगासिंधुसेवृगेसी॥यावतांचिमसुदजाली
 तेविष्मत्तासेलुहयली॥निजपदाची॥७३॥नोतूसाझाजिनिरूपचारु॥श्रीकृष्णामेव्यमदुरु॥माझस्यनेन्य
 उपकारु॥हाचिमांनो॥७४॥जेंमजतुह्याआड॥होतेंभेदाचेकवाद॥तेंफेडोनिकेलेगोड॥सिवासरव॥७५॥
 तरोआनंतुझीआज्ञा॥सकळदेवाधिदेवराजा॥करीनेदयींअनुजा॥मन्मनियेविषयी॥७६॥यथाअर्जुनासि
 पाव॥ओ॥६४॥पणें॥ओ॥६८॥कृतुल॥ओ॥७१॥वांजळिजे॥

याबोला ॥ देवनाचैस्सर्वे सुलला ॥ ह्यणो विन्च फळा जाला ॥ स म्हा फळ हाम ज ॥ ७७ ॥ उणना उभ म्हा म्हा ॥ ७८ ॥
 देरवुनी आपला कुमर ॥ मर्यादा ही रसागर ॥ विस्मरे चिना ॥ ७९ ॥ गेसं मवादाचा बहुला ॥ लग्न दोघा चिया आसु
 ला ॥ लागले देरवा निजाला ॥ निर्भर संजय ॥ ८० ॥ तेंण ह्यण तसे संजयो ॥ बापू ह्यपा निर्धारो ॥ तो आयु न्याम
 नो भावो ॥ अजुने मी केला ॥ ८१ ॥ तेंण उच बळले पण ॥ संजय दूतरा द्याते ह्यण ॥ जी केस बाद रायणो ॥ रक्षि-
 लो दोघे ॥ ८२ ॥ आजितु भर्ते अवधारा ॥ नाही चिर्मचक्षु हा संभारा ॥ की जान हृष्टा ब्यवहारा ॥ आणिले ति म ८३ ॥
 आणिरथी चिचेरा हादी ॥ येइजे येडे चाभादी ॥ तथा आह्या योगादी ॥ गोचरा हाती ॥ ८४ ॥ वरीजु झोचें निर्वाण ॥ सा
 डेडे असे दारुणा ॥ दोही हागी आपण ॥ हारण जेजेसे ॥ ८५ ॥ येवदा जिये साकडा ॥ केसा अलु ग्रहो पेगादा ॥ जेव
 ह्या नद उधडा ॥ भोगवी तसे ॥ ८६ ॥ ऐसे संजय बोलिला ॥ परिनद वे परे उगला ॥ चंद्र करणी शिव तला ॥ पाषाण जे
 सा ॥ ८७ ॥ हे देरवो भितयाची दशा ॥ मग करी चिना सारि सा ॥ परिसर रव जाला पि सा ॥ बोल तसे ॥ ८८ ॥ सुलखिला
 हर्षवेगे ॥ ह्यणो निदूतरा द्या सागे ॥ येहू वी न हेत याजोगे ॥ हे की रजाणे ॥ ८९ ॥ अलु संजय उवाच ॥ इत्य
 हू वास्तुद वस्य पाथ स्थचमहात्मनः ॥ संवादि भिम मन्थीष मद्रुतरा म हर्षणे ॥ ९० ॥ टी ॥ मग ह्यण पे कुरु राजा ॥
 ऐसा सातु पुत्र तो ज्ञा ॥ बोलिलो ते अधो सजा ॥ गोल जाले ॥ ९१ ॥ अगा पूर्वा पर सागर ॥ यथानामा मी चिमि
 नार ॥ येर आधवे ते नीर ॥ येक जेसे ॥ ९२ ॥ तेसा अक्षिणा पाथ ऐसे ॥ हे आगा चिपा मिदिसे ॥ मग संवा दोजी
 नसे ॥ काही चिमेद ॥ ९३ ॥ पेइयणा हू निचा रवे ॥ दोन्ही हाती सन्मुख ॥ तेथ येरी येर देखे ॥ आपण पेजेसे ॥ ९४ ॥

॥ ९२ ॥ तेसादेवसापुडुसुते ॥ आपणपेंदेवीदेखत ॥ पांडवेसीदेखेअनंत ॥ आपणपेंपाथी ॥ ९३ ॥ देवदेवामका
 लागी ॥ जियविवरदेखेआगी ॥ येरुतियेविहोसमगी ॥ होन्हीदेखे ॥ ९४ ॥ आपणिककाहीचिनाही ॥ ह्योनिजे
 रितीकाई ॥ दोघयेकपणपाही ॥ नांदताति ॥ ९५ ॥ आतामेदजरीमोडे ॥ तरोप्रम्योत्तरकायडे ॥ नामेदचित
 रिजेडे ॥ सवादसरवका ॥ ९६ ॥ ऐसेबोलतादुजेपणे ॥ सवादोईतगिळणे ॥ तेऐकिलेबोलणे ॥ दोघांचेभिया
 ॥ ९७ ॥ उठुनिदोहोआरसे ॥ वोडविलीयासारसे ॥ कोणकाणापाहातसे ॥ कल्यावपा ॥ ९८ ॥ कांदोपाससुखेदे
 लयादीपके ॥ कोणसोणाअर्थिके ॥ कोणजाणे ॥ ९९ ॥ नानाअकरपुढेअके ॥ उदयलियाआणिक ॥ कोणह्योनेय-
 काशक ॥ यकाश्येकवण ॥ १०० ॥ हेनिथोरुजाताफुडे ॥ निधारामिचकपडे ॥ तेदोयेजालेयेवडे ॥ सवादसरसे
 ॥ ११ ॥ जीमिळतादोन्हीउदके ॥ माजिलवणवारुवाके ॥ किंवयासीहीनिभरवे ॥ तेचिहोये ॥ १२ ॥ तेसेअक्रिष्ण
 अर्जुनदोन्ही ॥ सवादलेतेमनी ॥ धरितामजहोवानी ॥ तेचिहोतसे ॥ १३ ॥ ऐसेह्योनामोटेके ॥ तवहियाभिसा
 लिके ॥ आवबनेलानेणके ॥ संजयपणाचा ॥ १४ ॥ रोसांचजवपरके ॥ तवतंवआंगसरके ॥ स्तमस्वदात-
 जिने ॥ ऐकलाकप ॥ १५ ॥ अहयानदपरिस ॥ दिदीरुसमयजालीअसे ॥ तेअनुनरुतीजेसे ॥ इवलचि ॥ १६ ॥
 नेणाकायमायपोटी ॥ कायनेणगुफुकुठी ॥ वागथापडतमिनी ॥ उससाभिया ॥ १७ ॥ किंवहुनासात्विकाआनी
 चचरभाडताउमठा ॥ संजयजालासचाहटा ॥ सवादसरवाचा ॥ १८ ॥ तयासरवाचीऐसीजाती ॥ जेआपणिया
 धरीशाती ॥ मगपुढतीदेहस्मृती ॥ लांधलीतेणे ॥ १९ ॥ अन्तो व्यासप्रसादाच्छुतवानेतहुल्यमहापर ॥ आ-
 णा. ओ. १९ अर्थिक. आ. ६ म्परी. ७

गंयोरेश्वरात्तुणात्सात्सात्कथयतः स्वयं ॥ ७५ ॥ टी० ते ह्यंबसते नि अनंदे ॥ ह्यणे जीजं उपनिषदे ॥ नेणतीने व्या
 समसादे ॥ ऐकिलं मिया ॥ १० ॥ ऐकतचिते गोदा ॥ ब्रह्मत्वाची प्रतिनिधि ॥ मीतुं पणसी दष्टी ॥ विदुनिगेली ॥
 ११ हे आघव चिकारोरा ॥ जयावायाय ते मागे ॥ तयाचि वाक्यमवगा ॥ कले मज व्यासे ॥ १२ ॥ अहो अजुनचि निमि
 वे ॥ आपणपे चिहुजे ऐसे ॥ नदो नि आपणया उदेशे ॥ बोलिले जे देव ॥ १३ ॥ तेथ कीं माझे श्रोत्र ॥ पावाचे जाले जी
 पात्र ॥ काय बाबु स्वतंत्र ॥ सामर्थ्य श्रीगुरुचे ॥ १४ ॥ श्रुति० राजन्स स्मृत्यसंस्तुत्य संचाद मिममदुत ॥ केशवाजु
 नयोः पुण्यत्वाभिमिचमुहसुहः ॥ ७६ ॥ टी० रायाहं बोलतां विस्मय होये ॥ तेणे चि मोडा वळादाये ॥ रत्नक्रोर
 त्रिकिळाये ॥ श्रीकोळिते जीसी ॥ १५ ॥ हिमवतचि संरोवरे ॥ चंद्रोदयो होतो काशमीरे ॥ मगसूयागमी मायाये ॥
 द्रवत्ये ॥ १६ ॥ तेसाशरीराचिया स्मृती ॥ तो संवाद संजयचिर्त्ता ॥ धरी आणि पुढती ॥ तेंचि होये ॥ १७ ॥ श्रुति० क
 तच्च संस्मृत्य संस्मृत्यरूपमत्यदुत हरः ॥ विस्मयो मम हान् राजन् जहृथाभिच पुनः पुनः ॥ ७७ ॥ टी० मग उवो नित्य
 गे नृपा ॥ श्रीहरीचिया विश्वरूपा ॥ दोखिलया उगाक्राया ॥ असो लाह सी ॥ १८ ॥ नंदे रवणे निजं दिसे ॥ नाहो पणे
 चिजं अस ॥ विसर आठवत कसे ॥ चुकत आतां ॥ १९ ॥ देखो निचमत्कार ॥ कीजे तो नाहो पै सार ॥ मज हो स
 कृतम हां पुर ॥ नेतु आहे ॥ २० ॥ ऐसा श्रीकृष्णाजुन ॥ सवाद संगमी स्नान ॥ कुरु निंद ते सी तिळदान ॥ अहं ते स्व ॥
 तेथ असंवर अनंद ॥ अलौकिक कृष्ण काही स्पंद ॥ श्रीकृष्णाक्षणे सद्रद ॥ वेळो वळा ॥ २१ ॥ या अवस्थाची काही
 कोरवाते परिनाही ॥ ह्यणो निरायेत काही ॥ कल्पाये जव ॥ २२ ॥ तव जाला सुखलाभ ॥ आपण यां करुनि स्वयं म
 पावन नाही ॥ २३ ॥

बुद्ध्या बिला अवहंस ॥ संजयेतेषां ॥ २४ ॥ ते यकोणीये किं अवसरी ॥ हो आवीते कुरु मिदुरी ॥ रावो ह्यणे स जया परी
 के सीतु द्वीगा ॥ २५ ॥ तेने तू ते येथे व्यासे ॥ बैस विन्का सया उदेशे ॥ अमसंगा माजिरेसे ॥ बोल सीका दे ॥ २६ ॥
 गुनी च राउळो नुल्या ॥ दाही दिशामानी सुनिया ॥ का रात्री होय याहा लया ॥ निशाचरा ॥ २७ ॥ जो जेथिचे गोरव
 नेणे ॥ तथासिते भिगुलवाणे ॥ ह्योनि अमसगतेणे ॥ ह्यणा वाकितो ॥ २८ ॥ मग ह्यणे सोरो मस्तु त ॥ उदयल
 से जे उत्कळित ॥ ते कोणा सिबारे जेत ॥ देई लशरवा ॥ २९ ॥ चेहूवीं विशेष बहते क ॥ आमुचे एसे मान भिक ॥ जे
 दुरोधनाचे अधिक ॥ मनापसदो ॥ ३० ॥ आणि येराचे निपाडे ॥ दुळहीया ते देऊडे ॥ ह्योनि जेत कुडे ॥
 आणि लनाते ॥ ३१ ॥ आह्यांत वगमेरेसे ॥ मालु झेजो तो बकसे ॥ तेनेणा सजया अस ॥ ते ससागपा ॥ ३२ ॥ भ्रु
 कु ० यथयोगे स्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र अर्धा विंजयो मूर्तिर्मुवानीति मीतिर्ममम् ॥ ३३ ॥ हरिः
 ओतत्सादिति श्रीमद्भगवद्गीतासु पविषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो
 नाम अष्टादशाध्यायः ॥ १८ ॥ ॐ ॥ टी ० यथाबोला सजया ह्यणा ॥ जो येराचे मनिणा ॥ परि आयुष्यते
 येजणे ॥ हे फुडे कींगा ॥ ३३ ॥ चंद तेथे चंदिका ॥ शंभू तेथे अंबिका ॥ संत तेथे विवेका ॥ असणे कीं जी ॥ ३४ ॥
 रावो तेथे कटक ॥ सो जल्य तेथे सोदरीक ॥ वहि तेथे दाहक ॥ सामर्थ्य कीं ॥ ३५ ॥ दया तेथे धर्म ॥ धर्म तेथे सुखा
 गम ॥ सरवीं पुरुषोत्तम ॥ असे जे सा ॥ ३६ ॥ वसंत तेथे वन ॥ वन तेथे समने ॥ समने पाणिगने ॥ सारगोची ॥ ३७
 गुरु तेथे ज्ञान ॥ ज्ञानी आत्मदर्शन ॥ दर्शनी समाधान ॥ आधि जेसे ॥ ३८ ॥ भाग्य तेथे विलास ॥ सरव तेथे अमृत
 ॥ अ. ओ. ३२ जोइस. ॐ

स ॥ हे असे तेथ मकाश ॥ सूर्य जेथें ॥ ३७ ॥ ते सैसकळ पुरुषार्थ ॥ जेणें स्वार्थी कामनाय ॥ तो आह्वाण राजाय ॥
 तेथ लक्ष्मी ॥ ४७ ॥ आणि आपले निंका तेसीं ॥ ते जगदंबाजयापसीं ॥ आणि मादिकुंकरागुदसीं ॥ नकून तयाने
 ॥ ४१ ॥ ह्मण विजय स्वरूप निज जे ॥ तो राहिला असे जे भागे ॥ ते जयलागवगे ॥ तेथेचि आहे ॥ ४२ ॥ विज-
 यीनाम अर्जुन विख्यात ॥ विजय स्वरूप अह्मणनाय ॥ अयेसीं विजय समस्त ॥ जाणनि अने तेथेचि अ-
 से ॥ ४३ ॥ तयाचि येदेशीं त्वाझाडी ॥ कल्प तर ते होई ॥ न जिणावे कांयु वदी ॥ माय बाप असता ॥ ४४ ॥ ते पा-
 षाणही आयवे ॥ चितार त्वे कानो हावे ॥ तियेसुं भिकू कानयावे ॥ स्वरुण त्वे ॥ ४५ ॥ तयाचि यागार्थी चिया ॥ नदी
 असुने वाहाविया ॥ नवल कायराया ॥ विचारी पा ॥ ४६ ॥ तयाचे विसाद शब्द ॥ स्वरुं वें ह्मणो येती वेद ॥ सदेह सच्चिदा-
 नंद ॥ कानो हावे ते ॥ ४७ ॥ पें स्वर्गापवर्ग दोन्हो ॥ इथें पंदे तथा आधीर्ना ॥ अह्मण बाप जननी ॥ कमळाजया ४८
 ह्मणो निजिया बाहो उमा ॥ तोल द्वायेचा वल्लभा ॥ तेथ सव मिदु स्वयंभा ॥ येर मोने पा ॥ ४९ ॥ आणि समुद्राचा
 मेघ ॥ उपचोगें तथा हनिचांग ॥ तेसापार्थी अजिलाग ॥ आहे तये ॥ ५० ॥ कनक त्वदी सायूरु ॥ लोहापरीस होय
 करु ॥ परिजगापोसिताव्यवहारु ॥ तेचि जाणें ॥ ५१ ॥ येथ गुरुत्वाये तसे पाणें ॥ ऐसे क्षण कोणही ह्मणें ॥ वंदि-
 मकाश दीप पाणें ॥ मकाशी आपला ॥ ५२ ॥ तेसादेवा वियाशक्ति ॥ पार्थदेवासी चबहुती ॥ परिमार्ने इयेस्तुती ॥ गो-
 रंघ अस ॥ ५३ ॥ आणि पुत्रमीस रंघुणी ॥ जिणावा हे बापासिराणी ॥ करी ते शार्डपाणी ॥ फळा आली ॥ ५४ ॥ किं-
 ब हुनारें मानू पा ॥ पार्थजालास ह्मण ह्मण ॥ तो जयाकडे साक्ष पा ॥ रीती आहे ॥ ५५ ॥ तो विगाविजयासिवावा ॥

पाठ. ओं. ४५ चैतन्यंत, ७.

७

७

७

७

येयतु जलोपसं देहो ॥ तेथ नयेत गीवावो ॥ विजयोचि होये ॥ ५६ ॥ ह्यणो निजेश्चि तेथश्चि मंत ॥ जेथ तो पंडुचास्त
 तेथ दिजय ममस्त ॥ अस्तु दये तेथ ॥ ५७ ॥ जरी व्यासाचे भिसाचे ॥ धिरे मन तु मंचे ॥ तराया बोलचे ॥ ध्रुवाचि माजा
 ५८ ॥ जेथ तो श्रीचंद्रम ॥ तेथ भक्त कंदव ॥ तेथ सरव आणिलास ॥ मंगळाचा ॥ ५९ ॥ चाबोला आन होये ॥ तरि
 व्यासाचा अंकन बोहे ॥ ऐस गजो निबाहे ॥ उमिली तेणे ॥ ६० ॥ एव भारताचा आवाका ॥ आणूनि स्त्रोकाथे का
 संजये कुसुनाथका ॥ दीधला हार्ता ॥ ६१ ॥ जेसा निगो केवदा वृद्ध ॥ परिगुणायी तेउनी ॥ आणि जसूयाचि हाणी
 निस्तरावया ॥ ६२ ॥ ते संशब्द जसू अन्त ॥ जाले सवालुस सारने ॥ भारताचे शन सात ॥ सर्व स्वगीता ॥ ६३ ॥ त
 गार्हासाता शताचा ॥ इत्यथ हा स्त्रोका शींचि ॥ व्यास शिष्य संजयाचा ॥ पूर्णोद्धार जो ॥ ६४ ॥ येणे येके चि स्त्रोके
 राहतेणे आसके ॥ अविद्या जनाचे निर्वे ॥ जितेंलें होय ॥ ६५ ॥ ऐसे या स्त्रोका शींचे सात ॥ गीतेची पदे आगे वाह-
 त ॥ परे ह्यणो ईपर माभृत ॥ गीता काशीचे ॥ ६६ ॥ किं आत्मराजा नि येससे ॥ गीते वोडवले हे रावे ॥ मज स्त्रो-
 क मतिसे ॥ ऐसे येत ॥ ६७ ॥ कीं गीता हे समशती ॥ मंत्र प्रतिपाद्य भगवती ॥ मोह महिषासु की ॥ आन दला अस ॥
 ६८ ॥ ह्यणो निमने काने वाचा ॥ जो से वक्र होई लुइयेचा ॥ तो स्वानंद सा आद्याचा ॥ चक्रवर्तिकरी ॥ ६९ ॥ कीं-
 अविद्या निमिरये ॥ स्त्रोकासूया ते पै जाजिके ॥ ऐसे यका शिने गीता भिषे ॥ राये श्री कृष्णो ॥ ७० ॥ कीं स्त्रोका-
 सार सुसलता ॥ मोडक जाली ओहेगीता ॥ संसार पथ आता ॥ विसवावया ॥ ७१ ॥ कीं समागय संती म्रमरी ॥
 से विलुते स्त्रोका कल्हारी ॥ श्री कृष्णारथ सरोवरी ॥ सासि न्मोही ॥ ७२ ॥ कीं स्त्रोका न केति आन ॥ गमे गीतेचे-

गार्हा. ओ. ५९ सरव सावलास. ओ. ६० विद्या. ओ. ६० मागुती. ओ. ७० केले. ७१

स्महिमान ॥ चारवाणिनन्दन ॥ उदङ्गजे ॥ ७३ ॥ कीन्सोकां चिया आवारा ॥ सातशते करु निरुदरा ॥ सवागम
 गीतापुरा ॥ वसे आले ॥ ७४ ॥ कीन्जकाता आत्मया ॥ आकडेगीता भिवाक्या ॥ श्लोकनरुती बाल्या ॥ पसु
 रकाजा ॥ ७५ ॥ कीगीताकसथे चिहृग ॥ हगेतासागरतरंग ॥ कीहरीचे हेतुरंग ॥ गीतारथीचे ॥ ७६ ॥ की
 श्लोकसर्वतीर्थसायान ॥ आलाश्रीगीतिगंगेआन ॥ जअजुनचु भिहस्त ॥ जालाह्यणोनि ॥ ७७ ॥ कीनोहेहस्तो
 कथणी ॥ अचिन्वचिन्वतामणी ॥ कीनिविकल्यालावणी ॥ कल्यतरुती ॥ ७८ ॥ ऐमियाशते सातश्लोका ॥ परि
 आगळ्यायेकयेका ॥ आताकोणवेगळिका ॥ वानावापा ॥ ७९ ॥ ताह्नीआणिपारधी ॥ इयाकामधे नृते दिवी ॥ सु
 चिन्नेसीयागोत्री ॥ कीजेतीना ॥ ८० ॥ दीपाआगितुमागिल ॥ सूर्यधकुटावडील ॥ अमृतसिंधूरवाल ॥ उयल
 कायसा ॥ ८१ ॥ तेसे पहिले सरते ॥ श्लोकनह्यणावेगीते ॥ जुनीनवीपरिजाते ॥ आहानीकाई ॥ ८२ ॥ आ-
 णिश्लोकापाडनाही ॥ हेकारसमर्थुकाई ॥ येथवाच्यवाचकाही ॥ भागनधरी ॥ ८३ ॥ जेइयेशास्त्रायेक ॥
 श्रीकृष्णविवाच्यवाचक ॥ हेमसिद्धजाणलोक ॥ ८४ ॥ जेथेअर्थजतेचिपाव ॥ जेडियेवदेनियते
 वाच्यवाचकयेकवेदे ॥ साधीतशास्त्र ॥ ८५ ॥ ह्यणानिमजकाही ॥ समर्थनीआताविषयनाही ॥ गीताजाण
 हेवाङ्मयी ॥ श्रीस्मृतिमधुची ॥ ८६ ॥ शास्त्रवाच्यअर्थप्रले ॥ मगआपणमावले ॥ तेसेनहेहसगले ॥ फब
 ह्यचि ॥ ८७ ॥ केसाविश्वान्वियाह्युपा ॥ करुनिमहानदसोपा ॥ अर्जुनव्याजकृष्ण ॥ आणिलदेवे ॥ ८८ ॥
 चकाराचिनिमिने ॥ तिन्होसुवनसतसे ॥ निवविलीकळावते ॥ चइजिवि ॥ ८९ ॥ तेमगीतेचे हेतुअत ॥
 गव ॥ ओ. ७२ ॥ ले. ओ. ८६ ॥ शास्त्रे. ७

वत्सकस्तु निपायते ॥ दुग्धमिलजगपुनते ॥ श्रीकृष्णायै ॥ ९० ॥ कांगोतभाचे निमिषे ॥ कलिकृष्णज्वरिनोदेशे
 पाणिटाब्धभिरिशे ॥ गंगचोक्ला ॥ ९१ ॥ यथेजिवेजरीनाहाले ॥ तरोहचकीरहोआले ॥ नातरपावमिषेतिवाल
 ज्जीमचिजरी ॥ ९२ ॥ तरिलोहरकेअशे ॥ जगदलियापरसे ॥ येरीकुडेअपेसे ॥ कवणहोये ॥ ९३ ॥ तेसापा-
 वाचेतिवादी ॥ स्लाकपादलावानाजववादी ॥ तवमस्तचेपुष्टी ॥ येदेलआगा ॥ ९४ ॥ नाएणमिसुखवाकडे ॥
 कुरुनिवाकालकानवडे ॥ तरिकानीहोयतापडे ॥ तेचिलेरुव ॥ ९५ ॥ जेहअवणेपाठअये ॥ गीतानेदीसोसाअये
 ते ॥ जेसासमर्थदाताकाणहोते ॥ नास्तिनह्यणे ॥ ९६ ॥ ह्यणोनिजाणतयासवा ॥ गीताचियेकीसेवा ॥ कायकर-
 लआयवा ॥ शास्त्रीयेरी ॥ ९७ ॥ आपिपुष्पाजुनीमाकुळी ॥ गोवीचावळिलिजेनिराळी ॥ तेअध्यासेकली
 करतली ॥ येवोयेएसी ॥ ९८ ॥ बाळकानेवोरसे ॥ मायजेवडुबेसे ॥ तेतयाढाकतीतेसे ॥ यासकरा ॥ ९९ ॥ काअ
 फाटासमीरण ॥ आपेंतेपणशाहाणा ॥ केलजेसेविजणा ॥ निर्भूनिया ॥ १०० ॥ तेसेशब्दजेनलेसे ॥ तेघडनि
 याअनुष्ठुमं ॥ स्त्रीशूद्रादिभूतिसे ॥ सासादिले ॥ १ ॥ स्वातीचेनिपाणिये ॥ नहोतीजरीसातिये ॥ तरिआगी
 सरदराचये ॥ काशाभतीनिये ॥ २ ॥ नादवाद्यानयेता ॥ तरिकागेचरहोता ॥ फुलेनहोताधपता ॥ आसादकावि
 ॥ ३ ॥ गोडीनहोतापकान्ते ॥ तरिकाफावतीरसने ॥ दर्पणावीणनयेने ॥ नयनकादिसे ॥ ४ ॥ तेसाइष्टाश्रीगुरु-
 मूर्ती ॥ नरिगतादृश्यपथी ॥ तरिकात्याउपास्ती ॥ आकळतातो ॥ ५ ॥ तेसेवस्तुजेअभरथात ॥ तथासरव्याशते
 सात ॥ नहोतीतरिकाणायथ ॥ फावोशकते ॥ ६ ॥ मेघसिंधूचेपणीवाह ॥ तरोजगतयानेचिपाहे ॥ कांजेउम
 पाठ, ओ. १० सरसी, ओ. १६ परीते, ओ. १६ नहो.

पतं नो हे ॥ ब्राह्मणं कोपहा ॥ ७ ॥ आणि वाचा जे न पवे ॥ ते हे श्लोक न हो ते बरे वे ॥ तरिकाने मुरें पवे ॥ ऐसें कां होतें ॥
 ॥ ८ ॥ ह्यणो निश्रीव्यासाचा हा थोर ॥ विश्वामित्राला उपकार ॥ जेश्रीकृष्ण उक्ती आकार ॥ ग्रंथाचा कला ॥ ९ ॥
 आणि तो चि हा भी आता ॥ श्रीव्यासाची पद पाहता ॥ आणि लाश्रवण पया ॥ मत्स्यदिया ॥ १० ॥ व्यासादिकांचे उ-
 न्मेष ॥ राहाद ती जे भसा शंक ॥ तेथ सीहरं कयेक ॥ वाचाळी करी ॥ ११ ॥ परिगीताई श्वर भोळा ॥ लेइ लाव्या-
 सो की कुसुम भाळा ॥ तरि माझ्या दुर्दळा ॥ नानस्य णे कीं ॥ १२ ॥ आणि सीरसिं धुचि या तदा ॥ पाणि यां येती
 गज यदा ॥ नेथ काय मुरकुटा ॥ वारी जत असे ॥ १३ ॥ पारव कुंद पाखिरू ॥ नुइ तरी न मीचि स्थिरू ॥ गगन आक्रमी
 मत्वरू ॥ तो गळइ ही तेथ ॥ १४ ॥ राजहंसाचे चालेणें ॥ मृतळी जालिया सिंहाणें ॥ आणि कें काय कोणें ॥ चाला वेंनि
 ना ॥ १५ ॥ जी आपुले नि अवकाशे ॥ अगाध जळ ये पकलशे ॥ चुळो चुळ प्रणा ऐसें ॥ मरून नि निवे ॥ १६ ॥ दिवें
 दोन्ही आंगीं सीरी ॥ तरि ते बहे ते जयरी ॥ वाती आपुलिया परी ॥ आणी चर्किना ॥ १७ ॥ जी समुद्राचे नि पेंसें ॥ म-
 सुद्धी आकाश आभासे ॥ थिल्लरी थिल्लरा ऐसें ॥ विबेचिये ॥ १८ ॥ ते विव्यासादिक महा मती ॥ वावरी येती इये म-
 शी ॥ मायासी वाको हे युक्ती ॥ न भिळी करी ॥ १९ ॥ जिये सागरी जळ चुरे ॥ संचरती मंदरा करे ॥ तेथ दे रे वानि
 सपुरे ॥ पोहो न लाहती ॥ २० ॥ अरुण आगाज वळिके ॥ ह्यणो नि स्तया ते देखे ॥ माभूतळी चि न देखे ॥ मुरी काई
 ॥ २१ ॥ रालागीं आह्मा माहता ॥ देशि करे बंधे गीता ॥ ह्यणो हे अनुचिता ॥ कारण नो हे ॥ २२ ॥ आणि बाप पु-
 दा जाये ॥ तेथे तपा उलाची सोये ॥ बाळय तरि न लाहे ॥ पावो कायी ॥ २३ ॥ ते साव्या साचा भागो वाघेत ॥ भाव-
 पात ॥ ओ. १० पाहता, ओ. १५ शाहोणें, ओ. १७ दिवि येच्या, ओ. १७ प्रकाशी, ओ. २० सामान्येयें, ७.

कारतवात्पुसत ॥ अयोस्यहीमीनपवत ॥ केजाइन ॥ २४ ॥ अणिपृथ्वीजयाचियाससा ॥ नुबेगेस्यवृजंगसा ॥ ज
 याचिनिअसुत्तचदमा ॥ निववीजग ॥ २५ ॥ जयाचिअगिकेअसिके ॥ तेजलोहोनिअके ॥ आधाराचसावाइके ॥
 लोहितजतआहे ॥ २६ ॥ समुद्राजयाचिनीय ॥ तोयाजयाचिमाधुर्य ॥ माधुर्यसोदय ॥ जयाचिनि ॥ २७ ॥ पवनज
 याचिबळ ॥ आकाशजणेपयळ ॥ ज्ञानजणेउज्वळ ॥ चक्रवर्ति ॥ २८ ॥ वेदजणेसुभास ॥ स्मरजणेसोल्लास
 हेअसोरूपस ॥ विश्वजणे ॥ २९ ॥ तोसर्वोपकारसमर्थ ॥ सुदुरूअनिद्विनाथ ॥ राहाततअसेमजदो
 आत ॥ रियेनिया ॥ ३० ॥ आताआयनीगीताजर्गा ॥ सीसांगमहादियाभागी ॥ येयकविस्मयालागी ॥
 ठावआह ॥ ३१ ॥ श्रीगुरुचनिनावमाती ॥ जोगरीजयापासिमाती ॥ तणेकोळियत्रिजगती ॥ येकवदकेली
 ॥ ३२ ॥ चंदनेपेथलीझांड ॥ जालींचंदनाचिनिपांड ॥ विशिष्टमांडलीकांभांड ॥ सानुसीयादी ॥ ३३ ॥ माभीत
 वचिताथिला ॥ अणिश्रीगुरुरसाददुला ॥ जोदीदीवेनिआपुला ॥ वेसरीपदो ॥ ३४ ॥ आधीचिदेखणीदि
 वी ॥ वरीसूरूपुरवीपाठी ॥ तेनदिसेरसीगोठी ॥ केहीआहे ॥ ३५ ॥ ह्येणानिमाझानित्यनवे ॥ ज्वासांस्वास
 होअबधहोआव ॥ श्रीगुरुपाकाययेकनोहे ॥ ज्ञानदेवह्येण ॥ ३६ ॥ याकारणेभियां ॥ श्रीगीतार्थमज्जादि-
 या ॥ फेलालाकाय्या ॥ दिदीच्चाविषयो ॥ ३७ ॥ परमह्लादबालुरंग ॥ कवळितांजगीतांगे ॥ तेंगातयाचिभियां
 ने ॥ येकाव्यतानोह ॥ ३८ ॥ ह्येणोनिगीतायावोह्येण ॥ तैगाणिवेहोतीलेणे ॥ नामोक्केंतुडुणे ॥ गीताहोआ
 णित ॥ ३९ ॥ सुंदरआर्थांलेणेनसूये ॥ तेतोमाकळांस्वगारहोये ॥ नालिदलतरिआह ॥ तेसिकडचित्त ॥ ४० ॥

पाठ. ओ. १९ देव, ओ. ३६ नीच, ४०

कांभोतिश्याञ्जैसीजानी ॥ सो नु याहीमानदेती ॥ नातरमानविती ॥ अंगिचिरुडो ॥ ४१ ॥ मन्त्राणी ॥ लोकांभीकळो
 उणीनहेतीपरिम्बळो ॥ वसुतांगमोचीवाटोळी ॥ सोरारीजैसी ॥ ४२ ॥ तेंसोनाणीचेनेमिरवो ॥ गीतिवोणहर-
 गदावी ॥ तोलासाचासुवधवोवी ॥ केलभिया ॥ ४३ ॥ तेणोआवाळसुबोदे ॥ वोचीनिलेजिमनुरी ॥ अत्यरससु
 स्वादे ॥ असरगुथिलो ॥ ४४ ॥ आताचदनाचातरुरी ॥ परिमळानागोकुलवरी ॥ गरवणेजियापारी ॥ ला
 गेनाकी ॥ ४५ ॥ तेंसामबधहाअवणी ॥ लागतरववासमाधिअणी ॥ तेकनियार्हाचारजो ॥ कावळसन
 नलावी ॥ ४६ ॥ पावैकुरिताव्याज ॥ पाडित्येयतीविषजे ॥ तेंअसुतातेनगजे ॥ फाविलया ॥ ४७ ॥ तेंसंगिआद
 तेपणें ॥ कविलजालहुपणे ॥ मननकिजध्यासअवणें ॥ जितिलेआता ॥ ४८ ॥ हस्तानदसागाचीसेलु ॥ म
 लतयासीचिदेईल ॥ सर्वदियांयोषवील ॥ श्रवणाकरवो ॥ ४९ ॥ चंद्रातेआंगवणे ॥ सोरानिचकोरशाहणे ॥
 परिफावेजेसुचादिणें ॥ मलतयाही ॥ ५० ॥ तेंसुअध्यात्मशारुणीये ॥ अंतरंगचिअधिकारिये ॥ परिलो-
 कवाकूचतुये ॥ हाईलसुविषया ॥ ५१ ॥ तेंसुअनिवृत्तीजायाचे ॥ गोरवआहजीसाचे ॥ ग्रथनोहेंहकपचे ॥
 वसवतिये ॥ ५२ ॥ क्षीरसिधूपरिसरी ॥ दार्त्ताचाकर्णकुहरी ॥ नेणोकेअविपुसरी ॥ सागीतलेजे ॥ ५३ ॥ ते
 क्षीरकुलोळाआत ॥ मकरादरीगुप्त ॥ होनातयाचाहान ॥ पतजाले ॥ ५४ ॥ तोमुछेइससंढणी ॥ ममावयवा
 चोरणी ॥ मटलाकीतोसवोरी ॥ सपूणजाला ॥ ५५ ॥ मगसमाधीअसुत्ययो ॥ सागावीवासनायया ॥ ते
 मुदुअंगोरक्षराया ॥ दिधर्लासीनी ॥ ५६ ॥ तेणोयोगाडिनीसरोवर ॥ विषयविध्वंसेकवीर ॥ तियेपदीका
 पाव. ओ. ४४. गुफिली. ओ. ४६. च्यास्यानी. ओ. ४७. पाक. ओ. ४८. तेंसु. ओ. ४९. असुच्छया. ७.

सर्वेष्वम् ॥ अग्निषु किले ॥ ५७ ॥ प्रगतिर्होतेशां भव ॥ अदृशान् देवैः भव ॥ संपदिलं संयम्य भव ॥ श्रीमैत्रीनाथ ॥ ५८ ॥
 तेषां कविकिं क्लृप्तं ॥ आलादेवो निरुता ॥ ते आज्ञाश्चो निवृत्तीनाथा ॥ दिपलीऐसी ॥ ५९ ॥ नाआदिरुश
 करा ॥ लागे निशिष्य परं परा ॥ बोधाच्च हांसं सरा ॥ जालाजो आमुते ॥ ६० ॥ तो हातं येन निआधवा ॥ कळीगि
 क्लृप्तया जीवां ॥ सर्वप्रकारं ध्यांवा ॥ करोपावर्गो ॥ ६१ ॥ आधीं च तव तो कृपल ॥ वरिगुरु आज्ञां चोबालु ॥ जा
 लाजो सावर्षं कालु ॥ खवळणं भया ॥ ६२ ॥ मग आनी च निवारसे ॥ गीतार्थं येन भिषे ॥ वर्षला शातरसे ॥ तो
 हांयं ॥ ६३ ॥ तेथ पुढां भीबापया ॥ मादला आनी आपुलिया ॥ क्रियथा साठीं येवदिया ॥ आणि लोयशा ॥ ६४
 ॥ एवंगुरु कर्मलाधले ॥ समाधि घनजें आपुले ॥ ते ग्रंथें बोधोनि दिधले ॥ गोसावी मज ॥ ६५ ॥ वाचूनि पुढे नावा
 ची ॥ नासेवा हा जाणें स्वामीची ॥ ऐसिया मज ग्रंथाची ॥ योग्यता कें भ्रमे ॥ ६६ ॥ परिस्मत्त चिगुरुनाथे ॥ भिष
 त करूनि माते ॥ प्रबंधव्याजें जगाते ॥ रसिलें जाणा ॥ ६७ ॥ नही पुरोहित गुण ॥ मोबालि लोपुरेणें ॥ ते तुह्या
 माउली पणें ॥ उपसाहु जोजी ॥ ६८ ॥ शब्द कें साधडिजे ॥ प्रमेयी कें से पाचटिजे ॥ अन्धकार द्वाणजे ॥ काय
 तेनेणें ॥ ६९ ॥ साधिरवंद्याचें बाहुलें ॥ चालवीत्यास आचनि चालें ॥ ते समातेतं दगोत बाहुलें ॥ स्वामी तो साझा
 ॥ ७० ॥ चालागीं पीरुणं दोष ॥ विषोसमाविनां विषेष ॥ जेमीस जात ग्रंथ लोदेख ॥ आचार्य कीं ॥ ७१ ॥ आणि
 पुढ्यास तांचि येस मे ॥ जें उणि वेसिं वाकें उमे ॥ ते पुणो नो हें ते लासे ॥ तुह्यासीं चिकोप ॥ ७२ ॥ सितलिया ही प
 रिसे ॥ लोहत्वाचि ये अवदशे ॥ नमस्क्रिज आचसे ॥ ते कवणा बाल ॥ ७३ ॥ बाहुलें हें चिकरावे ॥ जें गंगेचें आंग
 पाठ ॥ ओं ५८ गयणी, ओं ६१ वेगा, ओं ७३ आपेसे ॥

वाक्ये ॥ संगही गंगाजरी नो हवे ॥ तैतो काय करी ॥ ७४ ॥ ह्यणी निभाय योग बहुवे ॥ पाहे न ह्या सताचर्म पम् ॥
 पातलो आतं कलहे ॥ उणे जगी ॥ ७५ ॥ अहाजु माझे निस्वामी ॥ सजसंत जोडि नितु ह्यो ॥ निपले तिते सव फा
 मी ॥ परि पूर्ण जालो ॥ ७६ ॥ पाहा पाभा तु ह्यो सागडे ॥ माहे रतेणे स्फुर वाडे ॥ युथाच आळि वाडे ॥ सिद्धी गे
 ले ॥ ७७ ॥ जीकन काचे निरुवळ ॥ वातु येइ लभूतळ ॥ चितार लो कुळाचळ ॥ निमूं येती ॥ ७८ ॥ साताही हा सा
 गरते ॥ सोप मारितां अमृत ॥ दुवाड नो हताराते ॥ चंद्र करिता ॥ ७९ ॥ कल्पतरू ह्ये आराम ॥ लावितां नो हो वि
 वस ॥ परी गीता र्थ चिं वर्म ॥ निवड नये ॥ ८० ॥ हा यथ सागर ये फळा ॥ उतरो नि पेली फळा ॥ कीर्तो कि जयाचारे
 डा ॥ न्यचे जोका ॥ ८१ ॥ तो भीयेक सर्व सुखा ॥ बोला निमहादिया माषा ॥ करी दोळ वरी लाका ॥ येवो येरेंसे ॥ ८२ ॥ गी
 तार्थचा आचार ॥ कलवासी महामरु ॥ रत्न निभाजीं थोरु ॥ लिगज पुर्जो ॥ ८३ ॥ गीता निःकपट माय ॥ तुका
 नितां हे हिं उजे वायु ॥ तं भायु पूतो मोरि होव ॥ हाय मतु मुचा ॥ ८४ ॥ तुझा सज्जनाने केल ॥ आकळ निजी मी बो
 ले ॥ ज्ञान देव हाणें ये कुल ॥ तैस नो हे ॥ ८५ ॥ काय बहु बोलां सकळा ॥ मळगिला जन्म फळा ॥ ग्रथ सिद्धीचा-
 मो हळा ॥ दाविला जाहा ॥ ८६ ॥ भियां जे सजें मिया आशा ॥ केल तुमचा भर वसा ॥ तपु रू निजी बहु वसा ॥
 आपिलो स्फुरवा ॥ ८७ ॥ सजला गी युथाची स्वामी ॥ दुजी तू हे जे हे केली तुझी ॥ तपा हो निहासो आह्यो ॥ तिस्रा
 मित्रा ते हो ॥ ८८ ॥ जे असो भिक्षु कुडई शो ॥ धातया हो आणा व वास ॥ तेना मत कीजो करूंसे ॥ निमाविना हो ८९
 शास्त्र पम न्युचे निमो हे ॥ क्षीरसागर हो कला आह ॥ यथ तो ही उपम सरी नो हे ॥ ९० ॥ अथं कर

पाठ, ओ. ७५. तुझां. ओ. ८९ दोषे, ओ. ९० दिवला. ७

निशाचरा ॥ शिखितांस्तुचराचरां ॥ धांषकुलान्तरवरा ॥ ताउनीषीतो ॥ ९१ ॥ तान्दियाजगाकारणं ॥ चंद्रवैचि-
 ल्यचरिणं ॥ तथाभदाषाकविह्यण ॥ सारिवह ॥ ९२ ॥ ह्यणोभितुहीमजसनीं ॥ यथरूपजोहात्रिजगतीं ॥ उप-
 योगकेलातोपुदतीं ॥ निरूपमजी ॥ ९३ ॥ किं बहुनातुमचकूले ॥ यमवीर्तनहंभिहीनले ॥ यथभाङ्गजोउरले ॥
 पार्दकपुण ॥ ९४ ॥ आताविच्चात्मकूदेव ॥ यणवायज्ञताषवे ॥ तोषोनिमजद्याषे ॥ पसायदानह ॥ ९५ ॥ जे-
 नवळाचव्यकटेसादो ॥ तथाभक्तमोरतोवाहो ॥ भूतापरस्परपडो ॥ मेअजीवांचे ॥ ९६ ॥ दुरितान्चिंतिभिरजा-
 वो ॥ विश्वस्थयमस्तूरयाहो ॥ जोजंवाछिलतोतेलाहो ॥ माणिजात ॥ ९७ ॥ वर्षतेमकळमगळो ॥ ईश्वरनि-
 दाषीपांदिवाळी ॥ अनवरतभूतळो ॥ मेलातयाभूता ॥ ९८ ॥ चलाकृत्यतरुत्तेआरव ॥ चेतनाचिंतामणीचि-
 गाव ॥ बोलतेजअणव ॥ पीयूषाच ॥ ९९ ॥ चंद्रपूजेअलाछन ॥ यातंउजेतापहान ॥ तेमवाहोसदाभज्जन
 सोयरेहोलु ॥ १०० ॥ किंबहुनासवकरवी ॥ पूर्णहोउनिहोलावी ॥ भजिजेआदिपुरुषो ॥ अरवदित ॥ १०१ ॥
 आणियथापजीविचे ॥ विशेषीलोकीदय ॥ हृष्टादृष्टकिजय ॥ होअवेज्जी ॥ १०२ ॥ यथह्यगंश्रियश्चरावा ॥ हे-
 होइलदायपसावो ॥ यणेवरंदाजदेवो ॥ स्फुरियाजाला ॥ १०३ ॥ ऐसयुगोपरिकळो ॥ आणिमहाराष्ट्रमंडुळो
 श्रीगोदावरीचातरो ॥ दक्षिणिही ॥ १०४ ॥ त्रिसुर्वेनकपवित्र ॥ अनादिपचक्राशस्त्र ॥ जेथजगांचेजीविनस्तत्र
 श्रीमहोलायअस्म ॥ १०५ ॥ तेथयदुवशविलास ॥ जोसकळकुळांनिवास ॥ न्यायातेपाषांस्मितीश ॥ श्रीरामचंद्र
 तेथमहेशान्वयमभूत ॥ श्रीनिर्वातिनाथस्मृत ॥ केलेज्ञानदेवगीते ॥ १०६ ॥ एवमारताचागावो
 पाठः ओं ४ कुळो, दक्षिणहिंनो, ओं ५ जीवः महोदेवो, ७

श्री भक्तमु अमिहपूर्वो ॥ श्री कृष्णार्जुनीवर्यो ॥ गोविजकेली ॥ ८ ॥ तेउमनिषदाचसार ॥ सवशास्त्राचमाहर ॥ पर-
 महसोसरवर ॥ सविज्ज ॥ ९ ॥ तियेगीतिचाकल्ला ॥ संपूणहाअष्टादश ॥ ह्येनेनिहतिदाम् ॥ ज्ञानदेव ॥ १० ॥ तु-
 दतीपुदतीपुदती ॥ इयायथपुण्यसप्तो ॥ सर्वस्वरूपसंप्रभूतो ॥ संपूणहादज ॥ ११ ॥ शकवारशनेबारानर ॥ ते-
 दीकाकलीज्ञानेश्वर ॥ सच्चिदानंदबावाआदरे ॥ लेखकजाहाला ॥ १८ ॥ १२ ॥ ॥ इति श्री भावार्थदीपिका
 याज्ञानदेवविरचितार्यां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्री शके पंधराशेबासेचरी ॥ तारणनामसवत्सरी ॥
 येकाजनादनअत्यादरो ॥ गीताज्ञानेश्वराप्रतिश्रद्धकेली ॥ १ ॥ ग्रंथपूर्वचिअतिश्रद्ध ॥ परीयावतरेश्रद्धअबह-
 तशोधुनिचारविषय ॥ प्रतिश्रद्धाभिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमोज्ञानेश्वरानिष्कलका ॥ जयचीगीतेचावचिंतारी
 का ॥ ज्ञानहोयल्लोका ॥ अतिभाविकां ग्रंथाधिंशां ॥ ३ ॥ बहुकाळपूर्वणीगोमदी ॥ मादभासकपिलाषधी ॥ अति
 स्वानीगोदादी ॥ लेखनकायावीसंपूणजाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरीपार्वी ॥ जोवोवीकरालमहादी ॥ तेणेअमृताचेता
 हीं ॥ जाणनरोदीदेविली ॥ ५ ॥ ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ श्रमंभवतु ॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु ॥
 पठः ओं. १२ वारागो. ओं. १ सावेचरी, ७
 ही. ज्ञानेश्वरी, शके १७८६ यत्नासीनामसंवत्सरे, वैशाखशुद्धतुल्यश्रां, मृगशिरासरे, तद्दिनेसमाप्ता, ॥ सुकाम. मुंबई येथे गण-
 शबापुजी. शास्त्री. मालवणकर. गणो. लोककल्याणार्थे. आपले, शिलायंत्रछापप्रवाद्यांत, छापिली. ७ ॥ श्री राधाकृष्णाय नमः ॥ ७ ॥

॥ ॐ ॥ इति ज्ञानेश्वरी समाप्ता ॥ ॐ ॥

शुद्धी । स्वरूपीं माझ्या ॥ ८४ ॥ मग
 नाही । किंबहुना तुज कांहीं । उरें
 सुवां सर्वदा मज अर्पिलीं । तेणें
 ह्मणौनि येणें प्रसादबळें । नवे
 ललों तुज ॥ ८७ * जें संप्र
 तें ईपपत्तीचेनि उपायें । गी
 नानापरी उपदेशिलें । येणें अज्ञानजात सांडवलें ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ ६६ ॥

[सर्वधर्मान्परित्यज्य] आशा जैसी दुःखातें । व्याली निंदा दुँरितें । हें असो
 जैसें दैन्यातें । दुर्भगत्व ॥ १३९० ॥ तैसें स्वर्गनरकसूचक । अज्ञान व्यालें
 धर्मादिक । तें सांडूनि घालीं अशेख । ज्ञानें येणें ॥ ९१ ॥ हातीं घेऊनि तो
 दोर । सांडिजे जैसा सर्पाकार । कां निद्रात्यागें धराचार । स्वर्मींचा जैसा
 ॥ ९२ ॥ ना ना सांडिलेनि केंवळें । चंद्रीचें धुपें पिवळें । व्याधित्यागें केंडु-
 वाळें । पण मुखाचें ॥ ९३ ॥ अगा दिवसा पाठी देऊनी । मृगजळ घापे
 त्यजूनी । कां काष्टत्यागें वन्ही । त्यजिजे जैसा ॥ ९४ ॥ तैसें धर्माधर्माचें
 टर्वाळ । दावी अज्ञान जें कां मूळ । तें त्यजूनि त्यजीं सकळ । धर्मजात ॥ ९५ ॥
 [मामेकं] मग अज्ञान निमालिया । मीचि येक असें अपैसया । सनिद्र
 स्वप्न गेलया । आपणपें जैसें ॥ ९६ ॥ तैसा मी एकवांचूनि कांहीं । मग
 भिक्षाभिक्ष आन नाही । सोऽहंबोधें तयाच्या ठायीं । अनन्य होय ॥ ९७ ॥
 [शरणं ब्रज] पै आपलेनि भेदेंविण । माझें जाणिजे जें एकपण । तथाचि नांव
 शरण । मज येणें गा ॥ ९८ ॥ जैसें घटाचेनि नाशें । गर्गनीं गगन प्रवेशे ।
 मज शरण येणें तैसें । ऐक्य करी ॥ ९९ ॥ सुवर्णमणि सोनयां । ये कल्लोळ
 जैसा पाणिया । तैसा मज धनंजया । शरण ये तूं ॥ १४०० ॥ [अहं त्वा सर्व-
 पापेभ्यः] वांचूनि सागराच्या पोटी । वडवानळ शरण आला किरीटी । जाळूं
 न ठके तथा गोठी । वाळूनि दे पां ॥ १ ॥ मजही शरण रिधिजे । आणि
 जीवत्वेचि असिजे । धिग बोलिं यिया न लेंजे । प्रज्ञा केवि ॥ २ ॥ अगा
 प्रीकृताही राया । आंगीं पडे जें धनंजया । तें दोसिरुंहि कीं तथा । समान

* जे प्रपंच. † धनंजया. ‡ जाळूनि. § जीवित्वेचि.

१ प्रातः शाली. २ अटकावानें. ३ तुझ्या स्वाधीन झालों. ४ प्रपंचासह. ५ साक्षात्. ६ युक्तीच्या.
 ७ पातकें. ८ दुर्दैवपणा. ९ सोडून दे. १० प्रपंच. ११ कावीळ रोगानें. १२ चांदणें. १३ कडव-
 टपणा. १४ बंड. १५ त्रास पावल्यावर. १६ निद्रासह. १७ भिक्षाभिक्ष जें द्वैत त्याच्या ठाई.
 १८ घटाकाश आकाशांत मिळतें. १९ टाकून दे. २० लाजत नाही. २१ यः कश्चित् राजाच्या.
 २२ बटकूर.

वा-
तैसैं
माधौ
अद्वयत्वे भज । शरण ॥ १८ ॥ तुज । धर्माधर्म हे सहज । लागतील ना
॥ ७ ॥ लोह उमें खाय माती । त परिसाचिये संगती । सोनें जालया पुढती ।
न शिविजे मळें ॥ ८ ॥ हें असो कांष्टापासोनि । मथूनि घेतल्या वन्ही । मग
काष्टेही कोंडोनि । न ठके जैसा ॥ ९ ॥ अर्जुना काय दिनकर । देखत आहे
आंधार । कीं प्रबोधी होय गोचर । स्वप्नभ्रम ॥ १४१० ॥ तैसैं मजसीं येक-
वटलेया । मी सर्वरूप वांचनियां । आन कांहीं उरावया । कारण असे ॥ ११ ॥
[मोक्षयिष्यामि] झणौनि तयाचें कांहीं । चितीं ना आपुल्या ठाई । तुम्हें पाप-
पुण्य पाहीं । मीचि होईन ॥ १२ ॥ तेथ सर्वबंधलक्षणें । पापें उरावें दुजे-
पणें । तें माझ्या बोधीं वायाणें । होऊनि जाईल ॥ १३ ॥ जळीं पडिलिया
लवणा । सर्वही जळ होय विचक्षण । तुज मी अनन्यशरण । होईन तैसा
॥ १४ ॥ येतुलेनि अपैसया । सुटलाचि आहासि धनंजया । [मा शुचः] घेई
न प्रकाशोनियां । सोडवीन तूतें ॥ १५ ॥ याकारणें पुढती । हे आधी न
राहें चितीं । मज एकासि ये सुमती । जाणोनि शरण ॥ १६ ॥ ऐसैं सर्व-
रूपरूपसैं । सर्वदृष्टिडोळसैं । सर्वदेशनिवासैं । बोलिलें श्रीकृष्णें ॥ १७ ॥
[‘स्वानुभवसुखोक्तयः’] मग सांवळा सकर्कण । बाहु पसरौनि दक्षिण । आ-
लिंगिला स्वशरण । भक्तराज तो ॥ १८ ॥ न पैंवतां जयातें । कांखे सुनि बु-
द्धीतें । बोलणें मागौतें । वोसरलें ॥ १९ ॥ ऐसैं जें कांहीं येक । बोला बुद्धी-
सिही अटक । तें द्यावया मिष । खेवांचें केलें ॥ १४२० ॥ हृदया हृदय येक
जालें । ये हृदयींचें ते हृदयीं घातलें । द्वैत न मोडितां केलें । आपणाऐसैं
अर्जुना ॥ २१ ॥ दीपें दीप लाविला । तैसा परिष्कृत तो जाला । द्वैत न
मोडितां केला । आपणपें पार्थ ॥ २२ ॥ तेव्हां सुखाचा मग तया । पूर
आला जो धनंजया । तेथ वाड तन्हीं बुडोनियां । ठेला देव ॥ २३ ॥ सिंधु
सिंधुतें पावो जाये । तें पावणें ठाके दुणा होये । वरी रिगे पुरवणिये । आ-
काशही ॥ २४ ॥ तैसैं तया दोघांचें मिळणें । दोघां नावरे जाणावें कवणें ।

* प्रबोधा, प्रबोध.

१ जीवदशा. २ वाईट. ३ ऐकू. ४ ताकांतून. ५ पुनः. ६ घेत नाही. ७ पुनः. ८ न राहे.
९ जागृतीत. १० प्रत्यक्ष. ११ चितू नको. १२ सर्वथेव बंधाला कारण अशा. १३ व्यर्थ.
१४ हे सुज्ञा. १५ प्रकट होऊन. १६ मनोव्यथा. १७ सर्व रूपें ज्याच्या योगानें रूपवान् होतात.
१८ हस्तभूषणयुक्त. १९ केवळ आपल्यालाच शरण आलेला. २० ज्या वस्तूची माती न हेतां
बोलणें बुद्धीला काखेस मारून मागौतें — मागें हटतें अशी जी वस्तू. २१ मागें हटलें. २२ प्रतिबंधक.
२३ प्रवेश. २४ आलिंगनाचें निमित्त केलें. २५ दोघांचे देह तसेच असतां. २५ आलिंगन.
२६ मोठा. २७ साम्राज.

किंबहुना श्रीनारायणें । विश्व कोंदें

गमें त्रिकांडोत्पत्ति व्याकरोति'] एवं

श्रीकृष्णें गीताशास्त्र । प्रकट केलें

पां आलें बोधा । हें ह्मणाल तरी

हेविं

। ज-

याच्या निश्चार्सी । जन्म झालें वेदराशी

। ज पैजेसा । बोलिला

स्वमुखें ॥ २८ ॥ ह्मणौनि वेदां मूलभूत । ग. ह्मणों हें होय उचित । आणि-

कही येकी येथ । उपपत्ति असे ॥ २९ ॥ जें न नशत स्वरूपें । जयाचा विस्तार

जेथ लपे । तें तयाचें ह्मणपे । बीज जर्गी ॥ १४३० ॥ तरि कांडत्रयात्मक । शं-

ब्दराशी अशेष । गीतेमाजि असे रंख । बीजीं जैसा ॥ ३१ ॥ ह्मणोनि वेदांचें

बीज । श्रीगीता होय हें मज । गंमे आणि सहज । दिसतही आहे ॥ ३२ ॥

जे वेदांचे तिन्ही भाग । गीते उमटले असती चांग । भूषणरत्नीं सर्वांग ।

शोभलें जैसें ॥ ३३ ॥ तियेंचि कर्मादिकें तीन्ही । कांडें कोणकोणे स्थानीं ।

गीते आहाति तें नयनीं । दाखऊं आइक ॥ ३४ ॥ [‘गीताशास्त्रोत्पत्त्यादिप्रस्ता-

वना'] तरि पहिला जो अध्याय । तो शास्त्रप्रवृत्तिप्रस्ताव । द्वितीयीं सांख्यस-

द्भाव । प्रकाशिला ॥ ३५ ॥ मोक्षदानीं स्वतंत्र । ज्ञानप्रधान हें शास्त्र । येतुं-

लालें दुर्जी सूत्र । उभारिलें ॥ ३६ ॥ [‘कर्मकांड'] मग अज्ञानें बांधलेया । मो-

क्षपदीं बैसावया । साधनारंभतो तृतीया- । ध्यार्यीं बोलिला ॥ ३७ ॥ जे दे-

हाभिमानबंधें । सांडूनि काम्यनिषिद्धें । विहित परि अप्रमादें । अनुष्ठावें

॥ ३८ ॥ ऐसेनि सद्भावें कर्म करावें । हा तिजा अध्यार्यीं देवें । निर्णय केला

तें जाणावें । कर्मकांड येथ ॥ ३९ ॥ [‘उपासनाकांड'] आणि तेंचि नित्यादिक ।

अज्ञानाचें अवश्यक । आचरतां मोक्षक । केंवी होय पां ॥ १४४० ॥ ऐसी

अपेक्षां जालिया । बद्ध मुमुक्षुते आलिया । देवें ब्रह्मार्पणत्वे क्रिया । सांगी-

तली ॥ ४१ ॥ जे देह वाचा मानसें । विहित निपजे जें जैसें । तें येक ईश्वरो-

द्देशें । कीजे ह्मणीतलें ॥ ४२ ॥ हेंचि ईश्वरीं कर्मयोगें । भजनकथनाचें स्वांगें ।

आदरिलें शेषभागें । चतुर्थाचेनी ॥ ४३ ॥ तें विश्वरूप अकरावा । अध्याय

संपे जंव आघवा । तंव कर्म ईश भजावा । हें जें बोलिलें ॥ ४४ ॥ तें अष्टा-

ध्यार्यीं उघड । जाण येथें देवताकांड । शास्त्र सांगतसे आंड । मोडूनि बोले

॥ ४५ ॥ [‘ज्ञानकांड'] आणि तेणेंचि ईशप्रसादें । श्रीगुरुसंप्रदायलब्धें । सांच

ज्ञान उद्बोधे । कोवळें जें ॥ ४६ ॥ तें अद्वैष्टादिप्रभृतिर्की । अथवा अमानि-

त्वादिकीं । वाढविजे ह्मणोनि लेखी । बारावा गणू ॥ ४७ ॥ तो बारावा

अध्याय आदी । आणि पंधरावा अवधि । ज्ञानफलपाकसिद्धि । निरूपणासी

१ भरलें. २ सर्व अधिकारांत आतिशुद्ध. ३ सयुक्तिक कारण. ४ आसोच्छ्वासांपासून. ५ प्रति-
ज्ञेवर. ६ न नासतां. ७ कर्म-उपासना-ज्ञानरूप. ८ वेद. ९ वृक्ष. १० वाटे. ११ अशा प्रकारें.
१२ सोडविणारे. १३ इच्छा. १४ मोक्षेच्छुस्थितीला. १५ ठिकाण. १६ आठ अध्यायांत.
१७ उपासनाकांड. १८ गीताशास्त्र. १९ प्रतिबंध निवारून, गोंधळून. २० खरें. २१ प्रकाशे-
२२ गणनेंत.

॥ ह्यणौनि चहुंही इहीं । ऊर्ध्वमूलांतीं अध्यार्यी । ज्ञानकांड ये ठार्यी ।
 जे ॥ ४९ ॥ एवं *कांडत्रयरूपिणी । श्रुतीच हे कोडिसवाणी । गीता
 पंथरावीं लेणीं । लेयिली आहे ॥ १४५० ॥ हें असो कांडत्रयात्मक । श्रुति
 मोक्षरूप फळ येक । †बोभावे जें आवश्यक । ठाकावें ह्यणोनी ॥ ५१ ॥
 [‘षोडशाध्यायत्रयकारणं दर्शयति’] तयाचेनि साधन ज्ञानेंसी । वैर करी जो
 प्रतिदिवशीं । तो अज्ञानवर्ग षोडशीं । प्रतिपादिजे ॥ ५२ ॥ तोचि शास्त्राचा
 बोळावा । घेवोनि वैरी जिणावा । हा निरोप तो सतरावा । अध्याय येथ
 ॥ ५३ ॥ ऐसा प्रथमालागोनी । सतरावा लाणी करूनी । आत्मनिश्वास वि-
 वरूनी । दाविला देवें ॥ ५४ ॥ तया अर्थजातां अशेषां । केला तात्पर्याचा
 आवांका । तो हा अठरावा देखा । कैलशाध्याय ॥ ५५ ॥ एवं सकळ सांख्य-
 सिंधु । श्रीभगवद्गीताप्रबंधु । हा औदार्ये आगळा वेदु । मूर्त जाण ॥ ५६ ॥
 वेद संपन्न होय ठाई । परि कूर्पण ऐसा आन नाही । जे कार्नी लागला
 तिहीं । वर्णांच्याचि ॥ ५७ ॥ येरां भवव्यथा ठेलियां । स्त्रीशूद्रादिकां प्रा-
 णियां । अनवसर मांडूनियां । राहिला आहे ॥ ५८ ॥ तरी र्भज पाहतां तें
 मागील उणें । फेडावया गीतापणें । वेद वेढलां भलतेणें । सेव्य होआवया
 ॥ ५९ ॥ ना हें अर्थे रिगोनि मनीं । श्रवणें लागोनि कार्नी । जपमिषें वदनीं ।
 वसोनियां ॥ १४६० ॥ ये गीतेचा पाठ जो जाणे । तयाचेनि सांगातीपणें ।
 गीता लिहोनि वाहणें । पुस्तकमिषें ॥ ६१ ॥ ऐसैसा मीसंकटा । संसाराचा
 चोहंटां । गैवादि घालीत चोखटा । मोक्षसुखाची ॥ ६२ ॥ परि आकाशीं
 वसावया । पृथ्वीवरी बैसावया । रविदीप्ती रोंहाटावया । आवार नभ
 ॥ ६३ ॥ तेविं उत्तम ‡अधम ऐसें । सेवितां कवणातेंही न पुसे । कैवल्यदानें
 सरिसें । निववीत जगा ॥ ६४ ॥ यालागिं मौगिली कुटी । भ्याला वेद
 गीतेच्या पोटी । रिगाला आतां गोमटी । कीर्ति पातला ॥ ६५ ॥ ह्यणौनि
 वेदाची सुसेव्यता । ते हे मूर्त जाण श्रीगीता । श्रीकृष्णें पंडुसुता । उपदे-
 शिली ॥ ६६ ॥ परि वत्साचेनि वोरसें । दुभतें होय घरा उद्देशें । जालें पां-
 डवाचेनि मिषें । जगदुद्धरण ॥ ६७ ॥ चातकाचिये कैणवे । मेव पाणिघेसि
 धावे । तेथ चराचर आघवें । निर्वाले जेविं ॥ ६८ ॥ कां अनन्यगतीकमळा- ।

* कांडत्रयनिरूपिणी । श्रुतीचि. † बोभाये. ‡ मध्यम.

१ पंथराव्याध्या. २ लहानशी. ३ गर्जन सांगे. ४ सोवती. ५ जिकावा. ६ शेवट. ७ वेद,
 वेद हे निःश्वासापासून झाले ‘यस्य निःश्वासितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् । निर्ममे—’
 ८ विचार. ९ शिखररूप. १० प्रकृतिपुरुषांचें विवेचन ज्यानें केलें जातें तो सांख्यसमुद्र.
 ११ ग्रंथ. १२ प्रत्यक्ष. १३ समर्थ. १४ कदर्य. १५ अनधिकारी. १६ मला (ज्ञानदेवाला)
 असें वाटतें कीं. १७ आकारला. १८ मलत्या कोणासही. १९ मजसहित. २० च्याव्यावर.
 २१ सत्र. २२ फिरण्याला. २३ अवकाश. २४ मोक्षदानानें. २५ मागल्या निंदेला भ्याला.
 २६ पांढ्यानें, ममतेनें. २७ दयेनें. २८ पाण्यासहित. २९ शांत झालें. ३० एकनिष्ठ अशा कमळासाठीं.

कागीं सूर्य ये वेळोवेळा । कीं सुखिया होइजे डोळा । त्रिभुवनीचा ॥
 तैसें अर्जुनाचेनि व्याजें । गीता प्रकाशनि श्रीराजें । संसारायेवढें थोर
 फेडिलें जगाचें ॥ १४७० ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती । उजळिता हा त्रिजगता ।
 सूर्य नव्हे लक्ष्मीपती । वैष्णवाकाशीचा ॥ ७१ ॥ बापकुळ तें पवित्र । जे-
 थिचा पार्थ या ज्ञाना पात्र । जेणें गीता *केलें स्वतंत्र । आवार जगा ॥ ७२ ॥
 [चूर्णिका] हें असो मग तेणें । सदुरु-श्रीकृष्णें । पार्थाचें मिसळणें । आणिलें
 द्वैता ॥ ७३ ॥ पाठीं झणतसे पांडवा । शास्त्र हें मानलें कीं जीवा । तेथ
 येरु झणे देवा । आपुलिया कृपा ॥ ७४ ॥ तरि निधान जोडावया । भाग्य
 वढे गा धनंजया । परि जोडिलें भोगावया । विर्पायें होय ॥ ७५ ॥ पै क्षीर-
 सागरायेवढें । अविरजी दुधाचें भांडें । सुरां असुरां केवढें । मथितां जालें
 ॥ ७६ ॥ तें साहसही फळा आलें । जें अमृतही डोळां देखिलें । परि वरि-
 चिल चुकले । जेतनेतें ॥ ७७ ॥ तेथ अमरत्वा वोगिरिलें । तें मरणाचिल्लागीं
 जालें । भोगों नेणतां जोडलें । ऐसें आहे ॥ ७८ ॥ नहुष स्वर्गाधिपति जाला ।
 परी रौद्राटीं भांवावला । तो भुजंगत्व पावला । नेणसी कायी ॥ ७९ ॥
 झणौनि बहुत पुण्य तुवां । केलें तेणें धनंजया । आजि शास्त्रराजा ह्या ।
 जालासि विषय ॥ १४८० ॥ तरि ययाचि शास्त्राचेनि । संप्रदायें ^{१५}पौंघुरौनि ।
 शास्त्रार्थ हा निकेनी । अनुष्टीं हो ॥ ८१ ॥ येव्हवीं अमृतमथना- । सारिलें
 होईल अर्जुना । जरि रिघसी अनुष्ठाना । संप्रदायेंवीण ॥ ८२ ॥ गाय धड
 जोडे गोमटी । ते तेंचि ^{१६}पय दे किरीटी । जें जाणिजे हातवटी । सांजव-
 णीची ॥ ८३ ॥ तैसा श्रीगुरु प्रसन्न होये । शिष्य विद्याही कीर लाहे ।
 परि ते फळे संप्रदायें । उपासिलिया ॥ ८४ ॥ झणौनि शास्त्री जो ह्ये ।
 उचित संप्रदाय आहे । तो ऐक आतां बहुवें । आदरेंसी ॥ ८५ ॥

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।

न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥ ६७ ॥

[इदं ते] तरि तुवां हें जें पार्था । गीताशास्त्र लाधलें आस्था । [नातपस्काय]
 तें तपोहीर्मा सर्वथा । [न] सांगावें ना हो ॥ ८६ ॥ [नाभक्ताय] अथवा ता-
 पस ही जाला । परि गुरुभक्तीं जो ठिलें । तो वेदीं अंत्यज वाळिलें । तैसा

* केली. † वरिचिली चुकलें. ‡ संप्रदायेंवीण ज्ञाना । सांगसी जरी.
 § पिवोंये.

१ दूर केलें. २ मुखरूप आकाशीचा. ३ वसतिस्थान. ४ आळिगन. ५ गुतधन. ६ कविप. ७ न विरजलेलें. ८ निवावर उदार होऊन झटणें. ९ संभाळण्याला. १० वाडिलें. ११ नहुष राजाका काहीं दिवस स्वर्गाचें आधिपत्य मिळालें तेव्हां. १२ वर्तणुकींत चुकला. १३ वा गीतेच. १४ धारण करून. १५ चांगलेपणानें. १६ दूध देते, पिवोंये अशा पाठीं धार काढणें. १७ दोह-
 माची. १८ आस्थापूर्वक. १९ अनुष्ठानादिरहिताला. २० उदासीन. २१ दूर केला.

वाळी ॥ ८७ ॥ नातरि पुरोडोशु जैसा । न घापे वृद्ध तरी वायसा । गीता
 नेदी तैसी तापसा । गुरुभक्तिहीना ॥ ८८ ॥ [न चाशुश्रूषवे वाच्यं] कां तपही
 जोडे देहीं । भजे गुरुदेवांच्या ठाई । परि आकर्णनीं नाहीं । चाड जरी ॥ ८९ ॥
 तरि मागील दोहीं आंगीं । उत्तम होय कीर जर्गी । परि या श्रवणालागीं ।
 योग्य नोहे ॥ ९० ॥ मुक्ताफळ भलतैसें । हो परि सुख नसे । तंव गुण
 प्रवेशे । तेथ कायी ॥ ९१ ॥ सागर गंभीर होये । हें कोण ना ह्मणत आहे ।
 परि वृष्टी वायां जाये । जाली तेथ ॥ ९२ ॥ धालिया दिव्यान्न सुवावें । मग
 जें वायां धाडावें । तें आर्ती कां न करावें । उदारपण ॥ ९३ ॥ [कदाचन]
 ह्मणौनि योग्य भलतैसे । होत परी चाड तसे । तरि ह्मणें वीनिवसें । देसी
 हें तयां ॥ ९४ ॥ रूपाचा सुजाण डोळा । वोडवूं ये कायि परिमळा । जेथ
 जें माने तें फळा । तेथचि गा ॥ ९५ ॥ ह्मणौनि तपीं भक्ति । पाहावे ते सुभ-
 द्रापति । परि शास्त्रश्रवणीं अनासक्ति । वाळावेचि ते ॥ ९६ ॥ [नच मां योऽभ्य-
 ग्यति] नातरी तपभक्ति । होऊनि श्रवणीं आर्ति । आथी ऐसी ही आंयसी ।
 देखसी जरी ॥ ९७ ॥ तरी गीताशास्त्रनिर्मिता । जो मी सकळलोकशास्ता ।
 तया मातें सामान्यता । बोलेल जो ॥ ९८ ॥ माझ्या सज्जनेसि मातें । *पैशु-
 न्याचेनि आह्वाते । येक आहाती तयातें । योग्य न ह्मण ॥ ९९ ॥ तयांची
 येर आघवी । सामग्री ऐसी जाणावी । दीपेंवीण ठाणदिवी । रात्रिची जैसी
 ॥ १०० ॥ अंग गोरें आणि तरुणें । वरि लेयिलें आहे लेणें । परि येकलेनि
 प्राणें । सांडिलें जेविं ॥ १ ॥ सोनयाचें सुंदर । निर्वाळिलें होय घर । परि
 संपांगना द्वार । रुंधलें आहे ॥ २ ॥ निपजे दिव्यान्न चोखट । परि माजी
 काळकूट । असो मैत्री कैपट- । गर्भिणी जैसी ॥ ३ ॥ तैसी तेंपभक्तिमेधा ।
 तयाची जाण प्रबुद्धा । जो माझयांची कां निंदा । माझीचि करी ॥ ४ ॥ या-
 कारणें धनंजया तो । भक्त मेधोवी तपिया । तरी नको बापा ह्या । शास्त्रा
 आंतळों देवीं ॥ ५ ॥ काय बहु बोलों निंदका । योग्य सेंटयाहीसारखा ।
 गीता हे कवतिका- । लागीं ही नेदी ॥ ६ ॥ [चूर्णिका] ह्मणौनि तपाचा ध-
 नुर्धरा । तळीं दाटोनि गोंडोरा । वरि गुरुभक्तीचा पुरा । प्रोसाद जो जाला
 ॥ ७ ॥ आणि श्रवणेच्छेचा पुढां । दीरवंटा सदा उघडा । वरी कैलश चो-
 खडा । अनिंदारत्नांचा ॥ ८ ॥

* जे सदा करिते आघातें. † डांगोरा.

१ टाकला जातो. २ यज्ञाचा अवशेष चरु. ३ श्रवणीं. ४ इच्छा. ५ कर्मातुष्टानां. ६ छिद्र.
 ७ दोरा. ८ गुमाला. ९ वाढावें. १० दवडावें. ११ क्षुधिताला. १२ कदाचि. १३ कौतुकानें.
 १४ पुढें करूं येईल. १५ आवड नमलेले. १६ त्यागावे. १७ सामुग्री. १८ शासन करणारा.
 १९ ताडना. २० प्रकाशमान. २१ नागिणीन. २२ कोडलें. २३ कपट आहे गर्भत जिथ्या =
 कापट्यरूप. २४ केवळ तपाविषयीच बुद्धि. २५ बुद्धिमान. २६ स्पष्टी. २७ ब्रह्मदेवासारखा.
 २८ दगडाचा पाया. २९ देवालय. ३० दरवाजा. ३१ कळप.

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

[य इदं परमं गुह्यं] पेशा भक्तालयीं चोखटीं । गीतारलेश्वर हा प्रतिष्ठीं । मग माक्षिया संवेसाटी । तुकसी जर्गी ॥ ९ ॥ कां जे एकाक्षरपणेंसी । त्रि-
मैत्रकेचिये कुशी । प्रणव होता गर्भवासीं । सांकेडला ॥ १५१० ॥ तो गी-
तेचिया *बाहळीं । वेदबीज गेलें †पहाळीं । कीं गायत्री फुलींफळीं । श्लो-
कांच्या आली ॥ ११ ॥ ते हे मंत्ररहस्य गीता । मेळवी जो माक्षिया भक्ता ।
अनन्यजीवना माता । बाळका जैसी ॥ १२ ॥ [मद्भक्तेष्वभिधास्यति] तैसी
भक्तां गीतेसीं । भेटी करी जो आदरेंसी । तो [मामेवैष्यत्यसंशयः] देहा पाठीं
मजसीं । येकचि होय ॥ १३ ॥

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।

भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

[तस्मात्] आणि देहाचेंही लेणें । लेऊनि वेगळेपणें । असे तंव जीवें प्राणें ।
तोचि †पंडिये ॥ १४ ॥ [मनुष्येषु] ज्ञानियां कर्मठां तापसां । यया खुणेचिया
माणुसां । माजि तो एक गा जैसा । †पंडिये मज ॥ १५ ॥ [न च] तैसा भू-
तळीं आघवा । आन न देखें पांडवा । जो गीता सांगे मेळींवां । भक्तज-
नाचा ॥ १६ ॥ [भक्तिं मयि परां कृत्वा इति पूर्वश्लोकस्थं पदं] मज ईश्वराचेनि
लोभें । हे गीता पढतां अंक्षोभें । जो मंडेंन होय सभे । संतांचिये ॥ १७ ॥
नवपलवीं रोमांचित । मंदानिळें कांपवित । अमोदजळें बोलवित । फुलांचे
डोळे ॥ १८ ॥ कोकिला केलरवाचेनि मिषें । सद्गद बोलवीत जैसैं । वसंत कां
प्रवेशे । †मद्भक्तआरामीं ॥ १९ ॥ कां जन्माचें फळ चकोरां । होत जें चंद्र
ये अंबरा । ना ना नैव घन मयूरां । वो देत पावे ॥ १५२० ॥ [कश्चिन्मे प्रि-
यकृत्तमः] तैसा सज्जनाच्या मेळींपीं । गीतापथरलीं उमपीं । वर्षे जो माझ्या
रूपीं । हेतु ठेऊनि ॥ २१ ॥ [भवितेति] मग तयाचेनि पाडें । †पंडियंतें मजफुडें ।
नाहीचि गा मागेफुडें । न्याहाळितां ॥ २२ ॥ [चूर्णिका] अर्जुना हा ठायवरी ।
मी तयातें सूर्ये जिहारीं । जो गीतार्थाचें करी । पैरेगुणें संतां ॥ २३ ॥

* बहळीं. † पहाळीं. ‡ आरामामाजी.

१ स्थापन कर. २ बदलीस, साम्यतेस. ३ योग्य होशील. ४ अकार, उकार व मकार या
तीन मात्रांच्या. ५ ओकार. ६ सेकुचिन होऊन राहिला. ७ विस्तारामध्ये. ८ वृक्षरूपानें उंच.
९ मातेच्या स्तन्यावांचून अन्य जीविकेला साधन नाही अशा. १० अत्यंत प्रिय. ११ समुदायाला.
१२ अहंकाररहित, दिश्रवित्तानें. १३ भूषणरूप. १४ सुगंधोदकानें. १५ मधुर स्वराच्या. १६ व-
गीचांत. १७ नूतन मेघ. १८ समुदायांत. १९ पुष्कळ. २० आवडतें. २१ इत्यांत ठेवतो. २२ पा-
हुणेर, मेळवानी.

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।

ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥

[अध्येष्यते इति] पै माक्षिया तुक्षिया मिळणीं । वाढीनली जे हे काहाणी । मोक्षधर्म कां *जिणी । आलासे जेथें ॥ २४ ॥ तो हा सकळार्थप्रद । आह्वां दोघांचा संवाद । न करितां पैदभेद । पाठेंचि जो पढे ॥ २५ ॥ [ज्ञानयज्ञेनेति] तेणें ज्ञानानळीं प्रदीक्षीं । मूळ अविद्येचिया आहुतीं । तोषविला होय सु-
मती । परमात्मा मी ॥ २६ ॥ घेऊनि गीतार्थ उगाण्म । ज्ञानिये जें विच-
क्षणा । ठाकिती तें गाणावाणा । गीतेचा तो लाहे ॥ २७ ॥ गीतापाठकासि
†अैसे । फळ अर्थज्ञाचिसरिसें । गीता माउलिये कीं नसे । जाणेंतान्हें ॥ २८ ॥

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥

[श्रद्धावाननसूयश्च] आणि सर्वमागीं निंदा । सांडूनि आस्था पै शुद्धा ।
गीताश्रवणीं श्रद्धा । उभारी जो ॥ २९ ॥ [शृणुयादपि यो नरः] तयाच्या श्रव-
णपुटीं । गीतेचीं अक्षरें जंव पैठीं । होती ना तंव उठाउठी । पळेचि पाप
॥ १५३० ॥ [पुण्यकर्मणां] ‡अंतवीयेमाजि जैसा । वन्हि रिघतां सहसा । लं-
घिती कां दिशा । वनौकें तियें ॥ ३१ ॥ कां उदयाचळकुळीं । झळकतां अं-
शुमाळी । तिमिरें अंतराळीं । हारपती ॥ ३२ ॥ तैसा कानाच्या महाद्वारीं ।
गीता गजर जेथ करी । तेथ सृष्टीचिये भौदिवरी । जायचि पाप ॥ ३३ ॥
ऐसी जैन्मवह्ली धुवट । होय पुण्यरूप चोखट । याहीवरी भौचाट । लाहे
फळ ॥ ३४ ॥ जे यिये गीतेचीं अक्षरें । जेतुलीं कां कर्णद्वारें । रिघती तेतुले
होती पुरे । अश्वमेध कीं ॥ ३५ ॥ झणौनि §श्रवणें पापें जाती । [शुभाँल्लोका-
न्प्राप्नुयात्] आणि धर्म धरी उन्नती । तेणें स्वर्गराज्य संपत्ती । लाहेचि शेखीं
॥ ३६ ॥ [सोऽपि मुक्तः] तो पै मज यावयालागीं । पहिलें पेणें करी स्वर्गी ।
मग आवडे तंव भोगी । पाठीं मजचि मिळे ॥ ३७ ॥ [अयं भावः] ऐसी गीता
धनंजया । ऐकतया आणि पढतया । फळे महानंदें मियां । बडु काय वोळों

* जीवनी. † ऐसें. ‡ मग अरण्यामाजि. § गीताश्रवणें.

१ समागमांत. २ जगण्यास, हारीस. ३ एक पद सुद्धां न सोडतां, किंवा पदच्छेदादिक न
करितां केवळ श्लोकांचा पाठ. ४ प्रज्वलित ज्ञानार्जित. ५ अज्ञानाच्या. ६ गीतेचा अर्थ उगाणा =
अनुभवून जें ज्ञान्याला प्राप्त होतें तेंच गीतेच्या गाणावाणा = गाण्यानें व वर्णन करण्यानें प्राप्त
होतें. ७ आहे. ८ जाणतें नेणतें. ९ प्रविष्ट. १० दाट अरण्यांत. ११ वनचरें, पशुपक्षयादि.
१२ सूर्य. १३ अंधकार. १४ आर्घाचें. १५ जन्माची परंपरारूप वेळ. १६ मोठें. १७ शेवटी.
१८ मुक्काम.

॥ ३८ ॥ [चूर्णिका] याकारणें हें असो । परि जयालागीं शास्त्रातिसो । केला तें तंव तुज पुसों । काज तुझें ॥ ३९ ॥

कच्चिदेतच्छुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।

कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

[कच्चिदेतच्छुतं पार्थेति] तरि सांग पां पांडवा । हा शास्त्रसिद्धांत आघवा । तुज एकचित्तें फावा । गेला आहे ॥ १५४० ॥ आर्ह्यां जैसें जया रीती । उँगा-णिलें कानांच्या हातीं । येरीं तैसेंचि तुझ्या चित्तीं । पैठें केलें कीं ॥ ४१ ॥ अथवा माझारीं । गेलें सांडी विखुरी । किंवा उँपेक्षेवरी । वाळुनि सांडिलें ॥ ४२ ॥ जैसें आर्ह्यां सांगीतलें । तैसेंचि हृदयीं फावलें । तरी सांग पां व्हिलें । पुसेन तें मी ॥ ४३ ॥ [कच्चिदज्ञानसंमोह इति ।] तरि स्वाज्ञानजनितें । मागिले मोहें तूतें । भुलविलें तो येथें । असे कीं नाहीं ॥ ४४ ॥ हें बहु पुसों काई । सांगें तूं आपुल्या ठाई । कर्माकर्म कांहीं । देखतासी ॥ ४५ ॥ [अयं भावः] पार्थ स्वानंदैकरसें । विरेल ऐसा भेददशे । आणिला येणें मिपें । प्रश्नाचेनि ॥ ४६ ॥ पूर्णब्रह्म जाला पार्थ । तरि पुढील साधावया कार्यार्थ । मर्यादा श्रीकृष्णनाथ । उँलुंगों नेदी ॥ ४७ ॥ येन्हवीं आपुलें करणें । सर्वज्ञ काय तो नेणे । परि केलें पुसणें । याचिलागीं ॥ ४८ ॥ एवं करोनियां प्रश्न । नसतेंचि अर्जुनपण । आणूनियां *जालें पूर्ण-पण । तें बोलवी स्वयें ॥ ४९ ॥ [चूर्णिका] मग क्षीराब्धीतें सांडित । गगनीं पुंजें मंडित । निवडे जैसा न निवडित । पूर्णचंद्र ॥ १५५० ॥ तैसा ब्रह्म मी हें विसरे । तेथ जगचि ब्रह्मवें भरे । हेंही सांडी तरी विरे । ब्रह्मपणही ॥ ५१ ॥ ऐसा मोडत मांडत ब्रह्म । तो दुःखें देहाचिये सीमे । मी अर्जुन येणें नामें । उभा ठेला ॥ ५२ ॥ मँग कांपतां करतळीं । दडपूनि रोमावळी । पुलिका स्वेदजळीं । जिरऊनियां ॥ ५३ ॥ प्राणक्षोभे डोलतया । आंगा आंगचि टेकेंथा- । सूनि स्तंभ चालया । भुलौनियां ॥ ५४ ॥ नेत्रयुगळाचेनि वौतें । आनंदामृताचें भरितें । वौसडत तें मागुतें । काढूनियां ॥ ५५ ॥

* आपण. † नवनीत. ‡ पुलक. § टेंकावया, टेकलिया. ¶ चालतया.

१ अतिशय. २ समजून चुकला. ३ पदरीं घातलें. ४ लवंगून. ५ चालडकलीवर. ६ झुगारून दिलें. ७ प्रविष्ट झालें. ८ सत्वर. ९ स्वकीय अज्ञानापासून उत्पन्न. १० निजानंदरूप सामरस्यानें. ११ ओलांडूं देत नाहीं. १२ झालेलें पूर्णपण. १३ सोडीत. १४ तारागणाला शोभवीत. १५ विरघले. १६ एधून आठ सात्विकभाव वर्णिले आहेत ते येणेंप्रमाणें—'स्तंभः स्वेदोऽथ रोमांचः स्वरमंगोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका मताः'. १७ कांपत्या तळहातानें. १८ रोमांच. १९ प्राण्याच्या वाढीनें. २० टेंका देण्यास ठेवून. २१ कंग, चाळयाला. २२ अशुभवाहानें. २३ उसळत.

विविधा औत्सुक्यांची दाटी । चीपे दाटत होती कंठी । ते करुनियां पैठी ।
हृदयामाजी ॥ ५६ ॥ वाचेचें वितुळणें । सांवरुनि प्राणें । अक्रमाचें श्वसणें ।
ठेऊनि ठायीं ॥ ५७ ॥

अर्जुन उवाच-नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत ।

स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

[नष्टो मोहः] मग अर्जुन ह्याने काय देवो । पुसताति आवडे मोहो । तरि
तो सकुटुंब गेला जी ठावो । घेऊनि आपला ॥ ५८ ॥ पोसीं येऊनि दिनकरें ।
डोळयातें आंधारें । पुसिजे हें कायि सरे । कोणे गांवीं ॥ ५९ ॥ तैसा
तूं श्रीकृष्णराया । आमुच्या डोळयां । गोचर हेंचि कायिसया । न पुरे तंव
॥ १५६० ॥ वरि लोभें मायेपासुनि । तें सांगसी तोंड भरुनि । जें कायीसं-
निही करुनि । जाणूं नये ॥ ६१ ॥ आतां मोह असे कीं नाही । हें ऐसें जी
पूससी काई । कृतकृत्य जाहलों पाहीं । तुझेपणें ॥ ६२ ॥ गुंतलों होतों
अर्जुनगुणें । तो मुक्त झालों तुझेपणें । आतां पुसणें सांगणें । दोन्ही नाहीं
॥ ६३ ॥ [त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत] * मी तुझेनि प्रसादें । लीधलेनि आत्मबोधें ।
मोहाचे त्या कांदे । नेदीच उरों ॥ ६४ ॥ [स्मृतिर्लब्धा] आतां करणें कां न
करणें । हें जेणें उठी दुजेपणें । तें तूवांचूनि नेणें । सर्वत्र गा ॥ ६५ ॥ [स्थितो-
ऽस्मि गतसंदेहः] येविपर्यी माझ्या ठायीं । संदेहाचें नुरेचि कांहीं । त्रिशुद्धी
कर्म जेथ नाही । तें मी जालों ॥ ६६ ॥ तुझेनि मज मी पावोनि । कर्तव्य
गेलें निपटूनि । [करिष्ये वचनं तव] परि आशा तुझीवांचोनि । आन नाहीं
प्रभो ॥ ६७ ॥ कां जें दृश्य दृश्यातें नाशी । जें ह्रुजें द्वैतातें ग्रासी । जें एक
परि सर्वदर्शी । वसवी सदां ॥ ६८ ॥ जयाचेनि संबंधें बंध फिटे । जया-
च्या आशा आस तुटे । जें भेटल्यां सर्व भेटे । आपणपांचि ॥ ६९ ॥ तें
तूं गुरुलिंग जी माझें । जें येकलेपणीचें विरंजें । जयालागीं वोलांकीजे । अद्वैत
बोध ॥ १५७० ॥ आपणचि होऊनि ब्रह्म । सारिजे कृत्याकृत्याचें काम । मग
कीजे कां निःसीम । सेवा जयाची ॥ ७१ ॥ गंगा सिंधु सेवूं गेली । पाव-
तांचि समुद्र जाली । तेवि भक्तां सेलें दिधली । निजपदाची ॥ ७२ ॥ तो
तूं माझा जी निरूपचारु । श्रीकृष्णा सेव्य सद्गुरु । मा ब्रह्मतेचा उपचारु ।

* जी तुमचेनि.

१ स्वरमंग. २ प्रविष्ट. ३ क्रियारहितपणाचें. ४ आवडता होतो. ५ समीप. ६ शिरके. ७ हेंच
कोणत्या गोष्टीला पुरणार नाही, सर्व इतक्यानेच होईल. ८ कळवळ्याने, ममतापूर्वक. ९ कशाही
प्रयासानें. १० त्वद्रूपत्वाचें. ११ प्राप्त झालेल्या. १२ गृहे, मुळ्या. १३ खरेपणाचें. १४ तुझ्या
योगानें मी माझ्या स्वरूपी मिळून. १५ जें दृश्य प्रत्यक्ष होतांच. १६ द्वैत, गुरुशिष्यभाव.
१७ आशा कुटित होत. १८ गुरुमूर्ती. १९ साध. २० वांटा. २१ आदराचा.

हाचि मानीं ॥ ७३ ॥ जें मज तुझां आड । होतें भेदाचें कंवाड । तें फेडोनि
केलें गोड । सेवासुख ॥ ७४ ॥ तरी आतां तुझी आज्ञा । सकळ देवाधिदेव-
राज्ञा । करीन देखीं अनुज्ञा । भलतियेविपर्यी ॥ ७५ ॥ [अयं भावः] यथा
अर्जुनाचिया बोला । देव नाचे सुखें भुलला । झणे विश्वफळा जाला । * फळ
हा मज ॥ ७६ ॥ उणेनि उमचला सुधाकर । देखुनी आपला कुंमर । मर्यादा
क्षीरसागर । विसरेचिना ॥ ७७ ॥ [चूणिंका] ऐसें संवादाचा बहुला । लग्न
दोघांचिया आंतुलां । लागलें देखोनि जाला । निर्भर संजय ॥ ७८ ॥ तेणें
झणतसे संजयो । बाप कृपानिधीरावो । तो आपुला मनोभावो । अर्जुनेंसीं
केला ॥ ७९ ॥ तेणें उंचंबळलेपणें । संजय धृतराष्ट्रातें झणे । जी कैसें बाद-
रायणें । रक्षिलों दोघे ॥ १५८० ॥ आजि तुमतें आवधारा । नाहीं चर्मच-
क्षुंही संसारा । कीं ज्ञानदृष्टी व्यवहारा । आणिलेति ॥ ८१ ॥ आणि रंथीं-
चिये राहाटी । घेइ जो घोडेयासाठीं । तथा आह्मां या गोष्टी । गोचरा होती
॥ ८२ ॥ जुंझाचें निर्वाण । मांडलें असे दारुण । दोहीं हारीं आपण । हार-
पिजे जैसें ॥ ८३ ॥ येवढा जिये सांकडां । कैसा अनुग्रहो पै गाढा । जे ब्र-
ह्मानंद उघडा । भोगवीतसे ॥ ८४ ॥ ऐसें संजय बोलिला । परि न द्रवे येई
उगला । चंद्रकिरणीं शिवतला । पाषाण जैसा ॥ ८५ ॥ हे देखोनि तथाची
दशा । मग करीचिना सैरिसा । परि सुखें जाला पिसा । बोलतसे ॥ ८६ ॥
भुलविला हर्षवेगें । झणौनि धृतराष्ट्रा सांगे । येव्हवीं नव्हे तथाजोगें । हें
कीर जाणे ॥ ८७ ॥

संजय उवाच—इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

[इति] मग झणे पै कुरुराजा । ऐसा भ्रातृपुत्र तो तुझा । बोलिला तें अ-
धोक्षजा । गोड जालें ॥ ८८ ॥ [महात्मनः इति कृष्णपार्थयोर्विशेषणं] अगा
पूर्वापर सागर । यथा नामासीचि सिर्नार । येर आघवें तें नीर । एक जैसें
॥ ८९ ॥ तैसा श्रीकृष्ण पार्थ ऐसें । हें आंगाचिपासीं दिसे । मग संवादीं
जी नसे । कांहींचि भेद ॥ १५९० ॥ पै दर्पणाहूनि चोखें । दोन्ही होती
सन्मुखें । तेथ येरीं येर देखे । आपणपें जैसें ॥ ९१ ॥ [संवादं] तैसा
देवेंसी पंडुसुत । आपणपें देवीं देखत । पांडवेंसीं देखे अनंत । आपणपें

* सफळाफळ, सकळफळ.

१ प्रतिबंधक. २ कलंकयुक्त जाणला, क्षीरसागर आपला कुमार चंद्र याला पाहून उणेन उम-
चला = आनंदित व्हायें त्याहून कमी आनंद पावला (भरून आला तरी मर्यादेपर्यंतच). ३ बहु-
व्यावर. ४ हृद्गत सुणेनें. ५ गहिवरून. ६ व्यावहारिक दृष्टीनें. ७ अर्जुनाच्या रथाची राहाटी
चालली पाहिजे झणून घोड्यांची संगति ज्यानें केली त्याच्या गोष्टी आह्मांस गोचरा = मत्स्य हो-
तात. ८ युद्धप्रकरण. ९ उभय पक्ष. १० संकटांत. ११ धृतराष्ट्र. १२ संबंध. १३ पुनः (अर्जुन).
१४ वेगळेपण. १५ देहभिज्जतेच्या दृष्टीनें.

पाथीं ॥ ९२ ॥ देव देवा भक्तालगीं । जिये विवर देखे आंगीं । *येरु
तियेचिही भागीं । दोन्ही देखे ॥ ९३ ॥ आणिक कांहींचि नाहीं । ह्मणौनि
करिती काई । दोघे येकपणें पाहीं । नांदताति ॥ ९४ ॥ आतां भेद जरी
मोडे । तरी प्रभोत्तर कां घडे । ना भेदचि तरि जोडे । संवादसुख कां
॥ ९५ ॥ ऐसें बोलतां दुजेपणें । संवादीं द्वैतगिळणें । [इममश्रौषं] तें ऐकिलें
बोलणें । दोघांचें मियां ॥ ९६ ॥ उट्टनि दोन्ही आरसे । बोडविलीया
सरिसे । कोण कोणा पाहातसे । कल्पावें पां ॥ ९७ ॥ कां दीपासन्मुख ।
ठेविलया दीपक । कोण कोणा अर्थिक । कोण जाणे ॥ ९८ ॥ ना ना अर्का-
पुढें अर्क । उदयलिया आणिक । कोण ह्मणे प्रकाशक । प्रकाश्य कवण
॥ ९९ ॥ [अद्भुतं] हे निर्धारूं जातां फुडें । निर्धारसि ठेक पडे । ते दोघे
जाले येवढे । संवादें सरिसे ॥ १०० ॥ [अहं] जी मिळतां दोन्ही उदकें- ।
माजि लवण वारूं ठाके । कीं तयासींही निर्मिळें । तेंचि होय ॥ १ ॥
तैसें श्रीकृष्ण अर्जुन दोन्ही । संवादले तें मनीं । धरितां मजही वांनी । तेचि
होतसे ॥ २ ॥ ऐसें ह्मणे ना मोटकें । तंव हिरोनि सात्विकें । आठव नेला नेणो
कें । संजयपणाचा ॥ ३ ॥ [रोमहर्षणं] रोमांच जंव फेरके । तंव तंव आंग
सुरके । स्तंभे स्वेदांतें जिके । एकला कंप ॥ ४ ॥ अद्वयानंदस्पर्शें । दिठी रस-
मय जाली असे । ते अश्रु नव्हती जैसें । द्रवत्वचि ॥ ५ ॥ नेणों काय माय
पोटीं । काय नेणों गुंफे कंठीं । वींगर्था पडत मिठी । उर्ध्वसाधिया ॥ ६ ॥
किंबहुना सात्विका आठां । †चाचर मांडतां उमेठां । संजय जाहालासे चोहटां ।
संवादसुखाचा ॥ ७ ॥ तया सुखाची ऐसी जाती । जे आपणचि धरी शांती ।
मग पुढती देहस्मृती । लाधली तेणें ॥ ८ ॥

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्ब्रह्ममहं परम् ।

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

[व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्] तेव्हां बैसतेनि आनंदें । ह्मणे §जी जें उपनिषदें ।
नेणती तें व्यासप्रसादें । ऐकिलें मियां ॥ ९ ॥ [एतद्ब्रह्ममहं] ऐकतांचि ते
गोठी । ब्रह्मत्वाची पडिली मिठी । मीतूपणेसी †दिठी । विरोनि गेली

* येरुही तियेचि. † न माय पोटीं. ‡ परस्पर होत उमेठा. § ह्मणे जें.
¶ दृष्टी.

१ छिद्र. २ समोरासमोर ठेविले असतां. ३ प्रकाशक, इच्छा करणारा. ४ स्तब्धता. ५ निवारण
करण्यास राहे. ६ क्षणांत. ७ लवणाप्रमाणें. ८ थोडें बोलतो न बोलतो तों. ९ उमारे. १० संकोच
पडे. ११ स्तब्धता व धाम यांस. १२ ब्रह्ममय. १३ पाश्चात्. १४ कंठरूप गुंफेत. १५ शब्दार्थांस.
१६ श्वासोच्छ्वासार्था. १७ आठ सात्विक भावांस. १८ बोवडी वळली असतां. १९ अतिशय.
२० उग्रनिपत्सारसंवाद. २१ हारपली.

॥ १६१० ॥ [योगं योगेश्वरात्कृष्णात्] हे आघवेचि कां योग । जयाठाया येते मार्ग । तयाचें वाक्य सवंग । केलें मज व्यासें ॥ ११ ॥ [साक्षात्कथयतः स्वयं] अहो अर्जुनाचेनि मिषें । आपणपेंचि दुजें ऐसें । नटोनि आपणया *उद्देशें । बोलिले जें देव ॥ १२ ॥ [अयं भावः] तेथ कीं माझे श्रोत्र । पाटाचें जाले जी पात्र । काय वानूं स्वतंत्र । सामर्थ्य श्रीगुरुचें ॥ १३ ॥

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।

केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥

[राजन् इति स्पष्टं शब्दं अद्भुतं] राया हें बोलतां विस्मित होय । [केशवार्जुनयोः पुण्यं] तेणेंचि मोढावला ठाये । रत्नीं कीं रत्नकिळा ये । झांकोळित जैसी ॥ १४ ॥ [हृष्यामि च मुहुर्मुहुः] हिमवंतीचीं सरोवरें । चंद्रोदयीं होती कां-शमीरें । मग सूर्यागमीं माघारें । द्रवत्व ये ॥ १५ ॥ [संस्मृत्य संस्मृत्य संवादं] तैसा शरिराचिया स्मृती । तो संवाद संजय चित्ती । धरी आणि पुढती । तेचि होय ॥ १६ ॥

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।

विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ॥ ७७ ॥

[राजन्] मग उठोनि ह्मणे नृपा । [तच्चेति] श्रीहरीचिया विश्वरूपा । देखिलया उगा कां पां । असों लाहसी ॥ १७ ॥ न देखणेनि जें दिसे । नाहीपणेंचि जें असे । विसरें आठवे तें कैसें । चुकऊं आतां ॥ १८ ॥ [विस्मयो मे महान्] देखोनि चमत्कार । कीजे तो नाही पैसार । मजही सकट महापुर । नेत आहे ॥ १९ ॥ ऐसा श्रीकृष्णार्जुन- । संवादसंगमीं खान । करुनि देतसे तिळदान । अहंतेचें ॥ १६२० ॥ [हृष्यामि च पुनः पुनः] तेथ असंवरें आनंदें । अलौकिकही कांहीं स्फुंदे । श्रीकृष्ण ह्मणे सद्गदें । वेळोवेळां ॥ २१ ॥ या अवस्थांची कांहीं । कौरवातें परी नाही । ह्मणोनि रायें तें कांहीं । कल्पावें जंव ॥ २२ ॥ तंव जाला सुखलाभ । आपणपां करुनि स्वयंभ । बुझाविला अव-ष्टंभ । संजयें तेणें ॥ २३ ॥ तेथ कोणी येकी अवसरी । होआवी ते करुनि दुरी । रावो ह्मणे संजया पैरी । कैसी तुझी गा ॥ २४ ॥ तेणें तूतें येथें व्यासें । बैसविलें कांयसा †उद्देशें । अप्रसंगामाजि ऐसें । बोलसी काई ॥ २५ ॥ रानीचें राउळा नेलिया । दाही दिशा मानी सुनिया । कां रात्री होय पाह-

* आपणया दोषें. † दोषें.

१ योग्यतेचें, अधिकाराचें पाप. २ हिरमुसला होऊन राहे. ३ चकाकीला. ४ रक्तिकाकार. ५ शरीराच्या स्मृतीला संवादानें कांहीं वेळ धरलें = आवरलें, पण पुनः तीच स्मृति झाली. ६ न दिसणें व दिसणें, नसणें व असणें, स्मृति व आठव असें जें अत्यद्भुत. ७ प्रसार. ८ न सांवरणाऱ्या. ९ उसासा टाकी. १० जिरविला. ११ साद्विकाहंकार. १२ प्रसंग. १३ रीत. १४ कोणत्या. १५ अवधान सोडून. १६ उजाडलें असतां.

लया । निशाचरा ॥ २६ ॥ जो जेथिचें गौरव नेणे । तयासि तें भिंगुळवाणें ।
 ह्मणौनि अप्रसंग तेणें । ह्मणावा कीं तो ॥ २७ ॥ मग ह्मणें सांगें प्रस्तुत ।
 उदयलेंसे जें उत्कळित । तें कोणासि बारे जैत । देईल शेखी ॥ २८ ॥ ये-
 न्हवीं विशेषें बहुतेक । आमुचें ऐसें मानसिक । जे दुर्योधनाचे अधिक ।
 प्रताप सदा ॥ २९ ॥ आणि येरांचेनि पाडें । देळही याचें देव्हडें । ह्मणौनि
 जैत फुडें । आणील ना तें ॥ १६३० ॥ आह्मां तंव गमे ऐसें । मा तुमैं जो-
 तीथ कैसें । तें नेणों संजया असे । तैसें सांग पां ॥ ३१ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीविजयो भूतिर्धुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

हरिः ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

[यत्र योगेश्वरः कृष्णो] यया बोला संजयो ह्मणे । जी येर्येरांचें मी नेणें ।
 परि आयुष्य तेथें जिणें । हें फुडें कीं गा ॥ ३२ ॥ चंद्र तेथें चंद्रिका । शंभु
 तेथें अंबिका । संत तेथें विवेका । असणें कीं जी ॥ ३३ ॥ रीवो तेथें कटक ।
 सौजन्य तेथें सोडरीक । वन्हि तेथें दाहक । सामर्थ्य कीं ॥ ३४ ॥ दया तेथें
 धर्म । तेथें सुखागम । सुखीं पुरुषोत्तम । असे जैसा ॥ ३५ ॥ वसंत तेथें
 वने । वन तेथें सुमने । सुमनीं पालिंगने । सारंगांचीं ॥ ३६ ॥ गुरु तेथ
 ज्ञान । ज्ञानीं आत्मदर्शन । दर्शनीं समाधान । आथि जैसें ॥ ३७ ॥ भाग्य
 तेथ विलास । सुख तेथें उल्लास । हें असो तेथ प्रकाश । सूर्य जेथें ॥ ३८ ॥
 तैसे सकळ पुरुषार्थ । जेणें स्वामी कां सनाथ । तो श्रीकृष्ण रावो जेथ ।
 [तत्र श्रीः] तेथ लक्ष्मी ॥ ३९ ॥ [भूतिः] आणि आपलेनि कैांतेसी । ते जग-
 दंबा जयापासीं । अणिमादिकी काय दासी । नव्हती तयातें ॥ १६४० ॥
 [विजयः] कृष्ण विजयस्वरूप निजांगें । तो राहिला असे जेणें भागें । तें जय
 लागवेगें । तेथेंचि आहे ॥ ४१ ॥ [यत्र पार्थो धनुर्धरः] विजयी नामें अर्जुन
 विख्यात । विजयस्वरूप श्रीकृष्णनाथ । श्रियेसीं विजय निश्चित । तेथेंचि
 असे ॥ ४२ ॥ तयाचिये देशीच्या झाडीं । कल्पतरूतें होडी । न जिणीवें
 कां येवडीं । मायबापें असतां ॥ ४३ ॥ ते पापाणही आववे । चित्तोरखें कां
 नोहवे । तिये भूमिके कां न यावें । सुवर्णत्व ॥ ४४ ॥ तयाचिया गांवीं-
 चिया । नदी अमृतें वाहाविया । नवल काय राया । विचारीं पां ॥ ४५ ॥

१ भयंकर. २ उयाची मला उकंटा तें. ३ विजय. ४ इतर जे पांडव त्यांच्या योग्यतेस.
 ५ सैन्य. ६ अधिक. ७ गणित, भाकीत. ८ परस्परान्ते. ९ चांदणें. १० झाला. ११ राजा अ-
 सेल तिकडे सैन्य. १२ पुष्पें. १३ समुदाय. १४ भ्रमरांची. १५ मुजोपभोग. १६ पतीसह.
 १७ अष्टसिद्धि. १८ लक्ष्मीसह. १९ पैत मारी. २० न जिकावें. २१ चितामणी.

तयाचे बिसाट शब्द । सुखें झणों येती वेद । संदेह सच्चिदानंद । कां *नो-
 हावे ते ॥ ४६ ॥ पै स्वर्गापवर्ग दोन्हीं । इयें पदें तया अधीनीं । श्रीकृष्ण
 बाप जननी । कैमळा जया ॥ ४७ ॥ झणौनि †जिया बाहीं उभा । तो लक्ष्मी-
 येचा बल्लभा । तेथ सर्वसिद्धि स्वयंभा । येर मी नेणें ॥ ४८ ॥ आणि समु-
 द्राचा मेघ । उपयोगें तयाहूनि चांग । तैसा पार्थी आजि लांग । आहे तये
 ॥ ४९ ॥ कैनकत्वदीक्षागुरु । लोह्या परीस होय कीरु । परि जगा पोसिता
 व्यवहारु । तेंचि जाणें ॥ १६५० ॥ येथ गुरुत्वा येतसे उणें । ऐसें झणें कोणही
 झणे । वन्हिप्रकाश दीपपणें । प्रकाशी आपला ॥ ५१ ॥ तैसा देवाच्या
 शक्ती । पार्थ देवासीच बहुती । †परी माने इये स्तुती । गौरव असे ॥ ५२ ॥
 आणि पुत्रें मी सर्व गुणीं । जिणाचा हे बापा शिरीणी । तरी ते शार्ङ्गपाणी ।
 फळा आली ॥ ५३ ॥ किंबहुना ऐसा नृपा । पार्थ जालासे कृष्णकृपा । तो
 जयाकडे साक्षेपा । रीती आहे ॥ ५४ ॥ तोचि गा विजयासि ठावो । येथ
 तुज कोण संदेहो । तेथ नये तरी वावो । विजयोचि होय ॥ ५५ ॥ झणौनि
 जेथ श्री तेथ श्रीमंत । जेथ तो पंडुचा सुत । तेथ विजय समस्त । †अभ्युदय
 तेथ ॥ ५६ ॥ [ध्रुवा] जरी व्यासाचेनि सांचें । धिरे मन तुमचें । तरी या बो-
 लाचें । ध्रुवचि माना ॥ ५७ ॥ [नीति:] जेथ तो श्रीवल्लभ । तेथ भक्तकंदर्ब ।
 तेथ सुख आणि लाभ । मंगळाचा ॥ ५८ ॥ [मतिर्मम] या बोला आन होये ।
 तरि व्यासाचा अकें न वाहें । ऐसें गाजौनि बाहे । उभिली तेणें ॥ ५९ ॥
 [‘श्लोकमाहात्म्यं’] एवं भारताचा आवांका । आणूनि श्लोकां येका । संजयें
 कुरुनायका । दीधला हातीं ॥ १६६० ॥ जैसा नेणो केवढा वन्ही । परि
 गुणांम्रीं ठेऊनी । आणिजे सूर्याची हांणी । निस्तरावया ॥ ६१ ॥ तैसें शब्दब्रह्म
 अनंत । जालें सवालक्ष भारत । भारताचें शतें सात । सर्वस्व गीता ॥ ६२ ॥
 तयाही सातां शतांचा । इत्यर्थ हा श्लोकशेर्षीचा । व्यासशिष्य संजयाचा ।
 पूर्णोद्गार जो ॥ ६३ ॥ येणें येकेंचि श्लोकें । राहे तेणें असकें । अविद्याजाताचें
 निकें । जितिलें होय ॥ ६४ ॥ †ऐसे श्लोकशतें सात । गीतेचीं पदें आंगें वा-

* न होआवा तो. † जे बाहे. ‡ ऐसया श्लोकां.

१ भलते, अव्यवस्थित. २ ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूप कां न व्हावे, आहेतच. ३ लक्ष्मी.
 ४ उया पक्षाकडे, उया भागी. ५ पति. ६ संबंध. ७ सुवर्णपणा येण्याची दीक्षा देणारा गुरु. ८ लो-
 खंडाला सुवर्ण करणारा परिस आहे परंतु. ९ सुवर्णच. १० कदाचित्. ११ या स्तुतीनें देवालाच
 महत्व आहे. १२ प्रकारें. १३ इच्छा. १४ पक्षपातपूर्वक. १५ विजयाचें विजयत्व व्यर्थ होईल.
 १६ अधिक उदय. १७ खरेपणानें. १८ विश्वासे. १९ अढळत्वच. २० समुदाय. २१ कल्या-
 णाचा. २२ अंकितपण, शिष्यत्वचिन्ह. २३ असें मोठ्यानें बोलत हात उभारला. २४ मतलब.
 २५ ‘यत्र योगेश्वरः कृष्णो’ ह्या शब्दाच्या श्लोकांत. २६ वातीच्या अर्मी. २७ नाश दूर करा.
 यास. २८ संपूर्ण.

हृत । पदं ह्यणो कीं परमावृत । गीताकाशीचं ॥ ६५ ॥ कीं आत्मराजाचिये सभे । गीते बौद्धवले हे खांबे । मज श्लोक प्रतिभे । ऐसे येत ॥ ६६ ॥ कीं गीता हे सप्तशती । मंत्रप्रतिपाद्य भगवती । मोहमहिषा मुक्ती । आनंदली असे ॥ ६७ ॥ ह्यणौनि मनं *कार्ये वाचा । जो सेवक होईल ह्येचा । तो स्वानंदसाम्राज्याचा । चक्रवर्ती करी ॥ ६८ ॥ कीं अविद्यातिमिररोलें । श्लोक सूर्यातें पैजा जिंके । ऐसे प्रकाशिले गीतामिषें । रायें श्रीकृष्णें ॥ ६९ ॥ कीं श्लोकाक्षरद्राक्षलता । मांडव जाली आहे गीता । संसारपथ आता । विसंवावया ॥ ७० ॥ कीं सभाग्यसंतीं अमरी । सेविले ते श्लोक कलहारी । श्रीकृष्णाख्यसरोवरी । सासिजाली †हे ॥ ७१ ॥ कीं श्लोक नव्हती आन । गमे गीतेचें महिमान । वाखाणिते बंदिजन । उदंड जैसे ॥ ७२ ॥ कीं श्लोकांचिया आचारा । सात शतें करुनि सुंदरा । सर्वागम गीतापुरा । वसों आले ॥ ७३ ॥ कीं निजकांता आत्मया । आवडी गीता मिळावया । श्लोक नव्हती बाह्या । पसर कां जो ॥ ७४ ॥ कीं गीताकमळीचे भुंगें । कीं हे गीतासागरतरंग । कीं हरीचे हे तुरंग । गीतारथीचे ॥ ७५ ॥ कीं श्लोक-सर्व तीर्थसंघात । आला श्रीगीतेगंगे आंत । जे अर्जुन सिंहस्थ । जाला ह्यणौनि ॥ ७६ ॥ कीं नोहे हे श्लोकश्रेणी । अंचितचित्तचित्तामणी । कीं निर्विकल्पां लावणी । कल्पतरूंची ॥ ७७ ॥ ऐसिया शतेंसातश्लोका । परी आगळा येकयेका । आतां कोण वेगळिका । वार्तावा पां ॥ ७८ ॥ तान्ही आणि पोरठी । ह्या कामधेनूतें दिठी । सूनि जैसिया गोठी । कीजती ना ॥ ७९ ॥ दीपा आगिलें मागिल । सूर्य धाकुटा वडील । अमृतसिंधू खोल । उधळ कायसा ॥ ८० ॥ तैसे पहिले सरते । श्लोक न ह्यणावे गीते । जुनीं नवीं पारिजातें । आहाती काई ॥ ८१ ॥ आणि श्लोका पाड नाही । हें कीर समर्थ काई । येथ वाच्य वाचकही । भाग न धरी ॥ ८२ ॥ [‘पाठमाहात्म्यं’] जे ह्ये शास्त्रीं येक । श्रीकृष्णचि वाच्य वाचक । हें प्रसिद्ध जाणे लोक । भलताही ॥ ८३ ॥ येथें अर्थें तेंचि पाठें । जोडे येवडें निर्धटें । वाच्यवाचक येकवटें । साधितें शास्त्र ॥ ८४ ॥ ह्यणौनि मज कांहीं । समर्थनीं आतां विषय नाही । गीता जाणा हे वैद्ययी । श्रीमूर्ति प्रभूची ॥ ८५ ॥ शास्त्र वाच्यें अर्थें फळे । मग आपण मावळे । तैसे नव्हे हें सगळें । परब्रह्मची ॥ ८६ ॥ कैसा

* कानें. † सेविली. ‡ ये. § शास्त्रें.

१ गीता हीच काशी तिथें, स्वर्गाचें. २ प्रतिभारून येतात. ३ आंतिमहिषापुराची मुक्ता निरास केल्याने. ४ होईल. ५ अज्ञानांधकार आडवून. ६ कमळांनीं. ७ सिद्ध झाली. ८ स्तुतिपाठक. ९ वेदशास्त्रादि. १० अमर. ११ अंचित = विरक्त यांच्या चित्ताला चित्तामणि. १२ वर्णावा. १३ शुष्क. १४ दृष्टि देऊन. १५ पुढचाभागचा. १६ श्रेष्ठ, शेवटले. १७ पारिजात जुना असो, नया असो, परिमळ सारखाच. १८ मोठ्या पराक्रमानें प्राप्त होण्याजोगें. १९ प्रतिपादनाला. २० वाणीरूप.

विश्वाधिया कृपा । करुनि महानंद सोपा । अर्जुनेव्याजें कृपा । आणिला देवें
 ॥ ८७ ॥ चकोराचेनि निमित्तें । तिन्हिं भुवनें संतसें । निवविर्लीं कळावंतें ।
 चंद्रें जेविं ॥ ८८ ॥ [गीताशास्त्रं वेदमाता च मंत्रो विप्रः पूज्यस्तच्चरित्रेऽभिलाषः ।
 कृष्णे भक्तिः सर्वभूतानुकंपा सद्भिः संगो यस्य तस्याकृतं किम्] कां गौतमाचेनि
 मिणें । कळिकाळ *ज्वरितोद्देशें । पाणि ठाळ गिरीशें । गंगेचा केला ॥ ८९ ॥
 तैसें गीतेचें हें दुभतें । वत्स करुनि पार्थातें । दुभीनली जगापुरतें । श्रीकृष्ण
 गाय ॥ १६९० ॥ येथें जीवें जरी न्याल । तरी हेंच कीर होआल । नातरी
 पाठमिणें †तिंबाल । जीभचि जरी ॥ ९१ ॥ तरि लोह एके अंशें ।
 झगटलिया परिसें । येरीकडे अपैसें । सुवर्ण होय ॥ ९२ ॥ तैसी पाठाची ते
 ‡वाटी । श्लोक पाद लावावा जंव वोठी । तंव ब्रह्मतेची पुष्टी । येयील आंगा
 ॥ ९३ ॥ ना येणेंसीं मुख वांकडें । करुनि ठाकाल कांनवडें । तरि कार्नीही
 घेतां पडे । तेचि लेख ॥ ९४ ॥ जे हे श्रवणें पाठें अर्थें । गीता नेदी मोक्षा-
 अरोंतें । जैसा समर्थ दाता कोणहातें । नास्ति न ह्मणे ॥ ९५ ॥ ह्मणोनि
 §जाणतया सवा । गीताचि येकी सेवा । काय कराल आघवां । शास्त्रीं येरीं
 ॥ ९६ ॥ [गीता सुगीता कर्तव्या श्लो०] आणि कृष्णार्जुनीं मोर्कळी । गोडी चौव-
 लिळी जे निरीळीं । ते श्रीव्यासें केली करतळीं । घेवों ये ऐसी ॥ ९७ ॥ बा-
 ळकातें चोरसें । माय जें जेवजं बैसे । तें तैया ठाकती तैसे । घांस करी
 ॥ ९८ ॥ कां अफाटा समीरणा । अपैतें पण शाहाणा । केलें जैसें वि-
 र्जणा । निर्मूनियां ॥ ९९ ॥ तैसें शब्दें जें न लभे । तें घडूनियां अनुष्ठुभें ।
 †स्त्रीशूद्रादिप्रतिभे । सामाविलें ॥ १००० ॥ स्वातीचेनि पाणियें । न होती
 जरी मोतियें । तरि आंगीं सुंदराचिये । कां शोभती तियें ॥ १ ॥ नाद वाद्या
 न येतां । तरि कां गोचर होता । ¶फुलें न होतां घेपता । आमोद केविं ॥ २ ॥
 § गोडीं न होती पक्कानें । तरि कां फौवती रसने । दर्पणावीण नयनें । नयन
 कां दिसे ॥ ३ ॥ ||द्रष्टा श्रीगुरुमूर्ती । न रिगता दृश्यपंथी । तरि कां ह्या ‡उ-
 पास्ती । आकळता तो ॥ ४ ॥ तैसें वस्तु जें असंख्यात । तया संख्या शतें
 सात । न होती तरि कोणा येथ । फौवों शकतें ॥ ५ ॥ मेघ सिंधूचें पाणी
 वाहे । तरी जग तयातेंचि पाहे । कां जें उर्मप तें नोहे । ठाकतें कोणहा ॥ ६ ॥

* ज्वरितदोषें. † तिमाल. ‡ वाटी । लावाल ना. § जाणा तया. ¶ पुष्प
 नव्हतां. § गौतयते न येती पक्कानें. || तैसा द्रष्टा.

१ जगावर कृपा करुन. २ अर्जुनाच्या निमित्तानें. ३ प्रत्यक्षतेस. ४ कलिकालरूप जो
 चक्र लाणें पीडित. ५ पायउतार. ६ मिजवाल. ७ एका अंगावर. ८ प्रकार. ९ नाही.
 १० झाल्याबराबर. ११ स्पष्ट. १२ बोलिली. १३ आकाशांत. १४ पांढ्रा दाटून आल्यानें,
 अतिममतेनें. १५ सोईस पडतील तसे. १६ वाऱ्याला. १७ आधीनपण, वश्यता. १८ पंखा.
 १९ प्रतिविंबांत. २० फुलें उत्पन्न झालीं नसतीं तर सुगंध कसा घेतां घेता. २१ पक्कानें गोड झालीं
 नसतीं तर जिभेला गोड कां लागतीं. २२ साक्षी. २३ साकार झाला नसता. २४ उपासनेला.
 २५ मिळूं शकतें. २६ अगणित.

आणि वाचा . . . १५ । त हे १५ होते बरवे । तरि कांनें मुखें फावे ।
 ऐसें कां होते ॥ ७ ॥ ह्यणोनि श्रीव्यासाचा हा थोर । विश्वासि जाला उपकार ।
 जे श्रीकृष्ण उक्ती आकार । ग्रंथाचा केला ॥ ८ ॥ [ग्रंथकर्तृत्वाभिमानपरिहारः]
 आणि तोचि हा मी आतां । श्रीव्यासाचीं पदें पाहतां *पाहतां । आणिला श्र-
 वणपथा । मन्हाठिया ॥ ९ ॥ व्यासादिकांचे उन्मेख । राहाटती जेथ सांशंक । तेथ
 मीही रंक येक । वाचाळी करीं ॥ १० ॥ परि गीता ईश्वर भोळा । ले व्या-
 सोक्तिकुसुममाळा । तरि माझिया दूर्वादळा । ना न ह्यणे कीं ॥ ११ ॥ आणि
 श्रीरसिंधूचिया तटा । पाणिया येती गजघटा । तेथ काय मुरकुटा । वारिजत
 असे ॥ १२ ॥ पांखफुटे पाखिरं । जुडे तरी नभींच स्थिर । गगन आक्रमी सत्वर ।
 तो गुरुडही तेथ ॥ १३ ॥ राजहंसाचें चालणें । भूतळीं जालिया सिंहाणें ।
 आणिकें काय कोणें । चालावेंचि ना ॥ १४ ॥ जी आपुलेनि अवकाशें । अ-
 गाध जळ घेपे कलशें । चुळीं चूळपणा ऐसें । भरुनि न निघे ॥ १५ ॥ दिव-
 टीच्या आंगी थोरी । तरि ते बहु तेज धरी । वाती आपुलिया परि । आणीच
 कीं ना ॥ १६ ॥ जी समुद्राचेनि पैसें । समुद्रीं आकाश आभासे । थिल्लीं
 थिल्लराऐसें । बिंबेचि पै ॥ १७ ॥ तेवि व्यासादिक महामती । वाचरों येती
 इये ग्रंथीं । मा आह्मी ठीकों हे युक्ती । न मिळे कीर ॥ १८ ॥ जिये सागरीं
 जळचरें । संचरती मंदराकारें । तेथ देखोनि शिंफरें यें । पोहों न लाहती
 ॥ १९ ॥ अरुण आंगीजवळिके । ह्यणोनि सूर्यातें देखे । मा भूतळींची न
 देखे । मुंगी काई ॥ १७२० ॥ यालागीं आह्मां प्राकृतां । देशिकारें बंधे
 गीता । ह्यणें हें अनुचिता । कारण नोहे ॥ २१ ॥ आणि बाप पुढां जाये ।
 ते घेत पांउलाची सोये । बाळ ये तरि न लाहे । पावों कायी ॥ २२ ॥ तैसा
 व्यासाचा मांगोवा घेत । भाव्यकारातें वाट पुसत । अयोग्यही मी न प-
 वत । २० कें जाइन ॥ २३ ॥ आणि पृथ्वी जयाचिया क्षेमा । नुंबगे स्थावर
 जंगमा । जयाचेनि अमृतें चंद्रमा । निववी जग ॥ २४ ॥ जयाचें आंगिकें

* पाहतां. † सिंहाणें. ‡ अवकाश । जळ. § सपुरें.

१ जर हे श्लोक चांगले झाले नसते तर वाचा जें न पवे = वाणीला जें अगोचर तें कांनें
 मुखें फावे = कावाला व मुखाला प्राप्त कसें झालें असतें. २ ग्रंथ. ३ ज्ञानोद्धार. ४ अनिधीरित.
 ५ बडबड. ६ व्यासोक्तिरूप फुलांची माळा. ७ गजसमुदाय. ८ चिलटाला. ९ पांख फुटणारे
 पांखरू व गरुड आपआपल्या सामर्थ्यांनुसार आकाशांत उडतात. सीमा दोघांलाही नाही.
 “नभः पतंत्यात्मसमं पतत्रिणः” भागवत. १० सुंदर. ११ कलश अगाध जळान गेला तरी
 त्याच्या अवकाशाइतकेंच पाणी त्यांत रहातें. १२ तसे व्यासादिक या ग्रंथांत वाचरतात. आम्ही
 मात्र ठाकों = हात टेंकावे हें उलट नाही. १३ लहान मत्स्य. १४ अगदीं जवळ राहाणारा,
 सारथि. १५ देशभाषेनें. १६ अयोग्यपणाला. १७ पावळट. १८ माग घेन घेन. १९ न पावतां.
 २० कोणीकडे. २१ सहनशक्तीमुळे. २२ न कंटाळे. २३ संपूर्ण माय.

असिकें । तेज लाहोनि अकें । श्रृंगाराचे सावाहक । लाहोनि जाह ॥ २५ ॥
 समुद्रा जयाचें तोय । तोया जयाचें माधुर्य । माधुर्या सौंदर्य । जयाचेनि
 ॥ २६ ॥ पवना जयाचें बळ । आकाश जेणें पैघळ । ज्ञान जेणें उज्वळ । च-
 ऋवर्ति ॥ २७ ॥ वेद जेणें सुभास । सुख जेणें सोळास । हें असो रूपस ।
 विश्व जेणें ॥ २८ ॥ तो सर्वोपकारी समर्थ । सद्गुरु श्रीनिवृत्तिनाथ । राहटत
 असे मजहीआंत । रिघोनियां ॥ २९ ॥ आतां आयती गीता जर्गी । मी सांगें
 मन्हाठिया *भर्गी । येथ कें विस्मयालागीं । ठाव आहे ॥ १७३० ॥ श्रीगुरु-
 चेनि नांवें माती । डोंगरीं जयापासीं होती । तेणें कोळियें त्रिजगती । थि-
 कवंद केली ॥ ३१ ॥ चंदनें वेधलीं झाडें । जालीं चंदनाचेनि पाडें । वसिष्ठे
 मांडली कीं भांडे । भानुसीं शींटी ॥ ३२ ॥ मा मी तंव चित्ताथिला । आणि
 श्रीगुरु ऐसा दीदुला । जो दिठीवेनि आयुला । बैसवी पर्दी ॥ ३३ ॥ आधींची
 देखणी दिठी । वरी सूर्य पुरवी पांठी । तें न दिसे ऐसी गोठी । केंही आहे
 ॥ ३४ ॥ ह्मणोनि माझे नित्य नवे । श्वासोश्वासही प्रबंध होआवे । श्रीगुरु-
 कृपा काय नोहे । ज्ञानदेव ह्मणे ॥ ३५ ॥ [ग्रंथवैभवकथनम्] याकारणें मियां ।
 श्रीगीतार्थ मन्हाठिया । केला लोकां यया । दिठीचीं विषो ॥ ३६ ॥ परि
 मन्हाटे बोलरंगें । कवळितां पै गीतांगें । तें गातयाचेनि पांगें । येकाढ्यता
 नोहे ॥ ३७ ॥ ह्मणौनि गीता गावों ह्मणे । तें गाणिवे होती लेणें । ना
 मोकळे तरि उणें । गीताही आणित ॥ ३८ ॥ सुंदर आंगीं लेणें न सूये ।
 तें तो मोकळा शृंगार होये । ना लेइलें तरि आहे । तैसें कें उचित ॥ ३९ ॥
 कां मोतियांची जैसी जाती । सोनयाही मान देती । नातरि मानवती ।
 अंगेंचि सैंडी ॥ १७४० ॥ ना ना गुंफिलीं कां मोकळीं । उणीं न होती परि-
 मळीं । वसंतागमींचीं वाटोळीं । मोगरीं जैसीं ॥ ४१ ॥ तैसा गाणीवेन
 मिरवी । गीतेवीणही रंग दावी । तो लाभाचा प्रबंध वोवी । केला मियां
 ॥ ४२ ॥ तेणें आबाळसुबोधें । वोवियेचेनि प्रबंधें । ब्रह्मरससुखादें । अक्षरें
 +गुंथिलीं ॥ ४३ ॥ आतां चंदनाच्या तरुवरीं । परिमळालागीं फुलवरी ।

* भागीं. † एकवट. ‡ मन्हाठी. § ह्मणौनि गा गावों. ¶ होय. § आणित्ती.
 || तैसी. + गुंफिलीं.

१ संपूर्ण ऐहिक. २ दूर करीत आहे. ३ विस्तार. ४ चांगलें बोलणारा. ५ प्रकाशित, देखणें.
 ६ भाषेच्या रीतीनें. ७ एकत्र. ८ इतर झाडें चंदनसहवासानें त्याच्या तुलनेस येतात.
 ९ मांडणाऱ्या निवाड्यासाठी. १० छाटी. ११ चित सद्गुरुमय झालेला, सचेतन. १२ धनी.
 १३ दृष्टिमात्रानें. १४ पाठीराखा. १५ काव्य, ग्रंथ. १६ दृष्टिगोचर. १७ अधीनपणानें. १८ एकदेशित्व.
 १९ गाणीं. २० सुवर्णरहित, गुसती. २१ गाण्यावांचून. २२ आबाळवृद्धांस सुगम.
 २३ सुवाससाठी, फूल येण्यापर्यंत.

पौरुखणें जियापरी। लागेना कीं ॥ ४४ ॥ तैसा प्रबंध हा श्रवणीं। लांगत-
खेंवो समाधि आणी। ऐकिलियाही वौखाणी। काय * व्यसन न लवी ॥ ४५ ॥
† पाठ करितां व्याजें। पांडिल्यें येती वेसजें। तें अमृतातें नेणिजे। फावल्या
॥ ४६ ॥ तैसेनि आहतेपणें। ‡ कवित्वा जालें हें उपेणें। मनन निदिध्यास
श्रवणें। जितिलें आतां ॥ ४७ ॥ हे स्वानंद भोगाची सेलें। भलतयासीचि
देईल। सर्वेद्रियां पोषवील। श्रवणाकरवीं ॥ ४८ ॥ चंद्रातें आंगवणें। भो-
गूनि चकोर शाहाणे। परि फांवे जैसैं चांदिणें। भलतयाही ॥ ४९ ॥ तैसैं
अध्यात्मशास्त्रीं यिये। अंतैरंगचि अधिकारियें। परि लोक वाक्चातुर्यें।
होईल सुखिया ॥ १७५० ॥ ऐसैं श्रीनिवृत्तिनाथाचें। गौरव आहे जी साचें।
ग्रंथ नोहे हें कृपेचें। वैभव तिये ॥ ५१ ॥ [युरूपरंपराकथनम्] क्षीरसिंधुपरि-
सरीं। शैक्तीच्या कर्णकुहरीं। नेणों कै श्रीत्रिपुरारीं। सांगीतलें जें ॥ ५२ ॥ तें
क्षीर कल्लोळाभांत। मँकरोदरीं गुप्त। होता त्याचा हात। पैठें^{१८} जालें ॥ ५३ ॥
तो मत्स्येंद्र ससशृंगीं। भँभावयवा चौरंगीं। भेटला कीं तो सर्वांगीं। संपूर्ण
जाला ॥ ५४ ॥ मग समाधी अव्यत्यया। भोगावी वौसना यया। ते मुद्रा श्रीगो-
रक्षराया। दिधली मीनीं^{२०} ॥ ५५ ॥ तेणें योगांभिजनीसरोवर। विषयविध्वंसै-
कवीर। तिये पर्दीं कां सर्वेश्वर। अभिषेकिले ॥ ५६ ॥ मग तिहीं तें शै-
भव। अद्वयानंदवैभव। संपादिलें संप्रभव। श्रीगैणीनाथा ॥ ५७ ॥ तेणें
§ कळिकळित भूतां। आला देखोनि निरुता। ते आज्ञा श्रीनिवृत्तिनाथा।
दिधली ऐसी ॥ ५८ ॥ ना आदि गुरु शंकरा। लागोनि शिष्यपरंपरा।
बोधाचा हा संसैरा। जाला जो आमुतें ॥ ५९ ॥ तो हा तूं घेऊनि आ-
घवा। कळीं गिलितयां जीवां। सर्व प्रकारीं धांवै। करीं पां वेगीं
॥ १७६० ॥ आधींच तंव तो कृपालु। वरि गुरुआज्ञेचा बोलु। जाला जैसा
वर्षाकालु। खवळणें मेघां ॥ ६१ ॥ मग आर्ताचेनि वोरसैं। गीतार्थग्रंथन-
मिसैं। वर्षला शांतरसैं। तो हा ग्रंथ ॥ ६२ ॥ तेथ पुढां मीं बापियै। मां-
डला आर्तां आपुलिया। कीं यासाठीं येवढिया। आणिलों यशा ॥ ६३ ॥

* व्यसन लावी. † पाकु करिती व्याजें, पाडीतें येती वेसजें। तें अमृतातें
नेणिजे। पावल्या. ‡ कवित्व. § कळिकाळ.

१ वाट पाहणें. २ लागण्याबराबर. ३ व्याख्यानरूपानें. ४ स्पष्ट. ५ प्राप्त झाल्यास. ६ विश्रांति-
स्थान. ७ विभाग. ८ नवसानें, स्वार्थें, आपल्या शक्तीनें. ९ प्राप्त होय. १० या आत्मनात्मवि-
वारशास्त्री. ११ अंतर्मुख. १२ सन्निधमार्गी. १३ पार्वतीच्या कानांत. १४ लाटांमध्ये. १५ मायाच्या
गोटांत. १६ प्राप्त. १७ हातपाय नुटलेल्या चौरंगी मायास. १८ निर्विघ्न. १९ या वासनेनें, इच्छेनें.
२० मत्स्येंद्रनाथांनीं. २१ योगरूप कमलिनीचें. २२ विषयनाशाला मुख्य कारण. २३ अध्यात्मविद्या.
२४ मुद्रापासून. २५ कळीनें प्रस्त अशा. २६ खरा. २७ विस्तार. २८ धांवून रक्षणें. २९ पीडि-
ल्या पान्नासाठीं. ३० ग्रंथ करण्याच्या निमित्तानें. ३१ चातक.

एवं गुरुक्रमें लाधलें । समाधिधन जें आपुलें । तें ग्रंथें *बोधौनि दिधलें ।
 गोसावीं मज ॥ ६४ ॥ [गुरुस्तवनम्] वांचूनि पढे ना वाची । ना सेवाही
 जाणें स्वामीची । ऐशिया मज ग्रंथाची । योग्यता कें असे ॥ ६५ ॥ परि
 साचचि गुरुनाथें । निमित्त करुनि मातें । प्रबंधव्याजें जगातें । रक्षिलें जाणा
 ॥ ६६ ॥ तन्ही पुरोहितगुणें । मी बोलिलों पुरें उणें । तें तुझीं माउलीपणें ।
 उपसाहिजो जी ॥ ६७ ॥ शब्द कैसा घडिजे । प्रमेयीं कैसें पां चढिजे । अळं-
 कार ह्यणिजे । काय तें नेणें ॥ ६८ ॥ सौथिखडेयाचें बाहुलें । †चालवित्या सूत्राचेनि
 चाले । तैसा मातें दावीत बोलें । स्वामी तो माझा ॥ ६९ ॥ यालागीं मी गुण-
 दोष । विषीं क्षमाविना विशेष । जे मी संजात ग्रंथलों देख । आचार्यें कीं
 ॥ १७७० ॥ [संतजनस्तवनम्] आणि तुझांस संतांचिये सभे । जें उणिवेसीं ठाके
 उभें । तें पूर्ण नोहे तें लोभें । तुझांसीचि ‡कोपों ॥ ७१ ॥ सिंवतलियाही परिसें ।
 लोहत्वाचिये अंढसे । न मूकिये आंयसें । तें कवणा बोल ॥ ७२ ॥ वोईळें हेंचि
 करावें । जें गंगेचें आंग ठाकावें । मगही गंगा जरी नोहावें । तें तो काय करी
 ॥ ७३ ॥ ह्यणौनि भाग्ययोगें बहुवे पां हे । तुझां संतांचे मी पाये । पातलों आतां कें
 लाहें । उणें जर्गी ॥ ७४ ॥ अहो जी माझेनि स्वामी । मज संत जोडुनि तुझीं । दि-
 धलेति तेणें सर्वकामीं । परिपूर्ण जालों ॥ ७५ ॥ पाहा पां मातें तुझां †सां-
 गडें । माहेर तेणें सुरवाडें । ग्रंथाचें आळियाडें । सिद्धी गेलें ॥ ७६ ॥ जी क-
 नकाचें निखेळ । वोतूं येईल भूतळ । चितारलीं कुळाचळ । निर्मू येती ॥ ७७ ॥
 सातांही हो सागरातें । सोपें भरितां अमृतें । दुवाड नोहे तारातें । चंद्र क-
 रितां ॥ ७८ ॥ कल्पतरूचे आराम । लावितां नाहीं विषम । परी गीतार्थाचें
 वर्म । निवडूं नये ॥ ७९ ॥ तो मी येक सर्व मुका । बोलोनि मन्हाटिया
 भाषा । करीं डोळेवरीं लोकां । घेवों ये ऐसें जें ॥ १७८० ॥ हा ग्रंथसागर
 येव्हडा । उतरोनि पैलीकडा । कीर्तिविजयाचा घेंडा । नाचें जें कां ॥ ८१ ॥
 गीतार्थाचा आहार । कलशेंसी महामेरू । रचूनि माजी श्रीगुरु । लिंग जें
 पूर्जी ॥ ८२ ॥ गीता निष्कपट माय । चुकोनि तान्हे हिंडे जें वोंय । ते मांय-
 पूतां भेटि होय । हा धर्म तुमचा ॥ ८३ ॥ तुझां सज्जनांचें केलें । आकलुनि
 जी मीं बोलें । ज्ञानदेव ह्यणे थेंकुलें । तैसें नोहे ॥ ८४ ॥ काय बहु बोलों स-

* बांधोनि. † चालविलेनि सूत्रें चालें. ‡ कोपें.

१ गुरुपरंपरेनें. २ परस्वाधीनपणानें. ३ क्षमा करा. ४ अर्थान्वयांत. ५ कळसूत्री बाहुली.
 ६ ग्रंथयुक्त बोललों, ग्रंथच मी झालों आहे. ७ कोपूं लागेन. ८ स्पर्शलेल्या. ९ वाईट स्थितीला.
 १० लोहानें. ११ प्रवाहानें. १२ तुमच्यासारखें. १३ अनुकूल. १४ हट्ट. १५ सर्व. १६ पर्वत.
 १७ कठिण. १८ बाग. १९ विपरीत. २० प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर. २१ देऊळ. २२ व्यर्थ. २३ आई-
 लेंकरांस. २४ तुम्ही संतांनीं केलेल्याचा विचार करून हें माझे बोलणें आहे, केवळ थेंकुलें = ज्ञाने-
 श्वराचें यत्कश्चित् बोलणें नव्हे.

कळां । मेळविलों जन्मफळा । ग्रंथसिद्धीचा सोहळा । दाविला जो हा ॥८॥
 मियां जैसजैसिया आशा । केला तुमचा भरंवसा । ते पुरजनि जी बहुवसा ।
 आणिलों सुखा ॥ ८६ ॥ मजलागीं ग्रंथाची स्वामी । तुजी सृष्टी जे हे केली
 तुझी । ते पाहोनि हांसों आहीं । विश्वामित्रातेंही ॥ ८७ ॥ जे असोनि *त्रि-
 शंकुदोषें । धातयाही आणावें वोसें । तें नासतें कीजे कीं ऐसें । निर्मावें
 नाहीं ॥८८॥ शंभू उपमन्यूचेनि मोहें । क्षीरसागरही केला आहे । येथ तोही
 उपमेसरी नोहे । जे विषगर्भ कीं ॥ ८९ ॥ अंधकार निशाचरा । गिळितां सूर्यें
 चराचरां । धावा केला तरी खरा । ताउनी कीं तो ॥ १७९० ॥ तांतलिया
 जगाकारणें । चंद्रें वेंचिलें चांदिणें । तया सदोपा केवि हणें । सारिखें हें
 ॥ ९१ ॥ ह्यणोनि तुहीं मज संतीं । ग्रंथरूप जो हा त्रिजगतीं । उपयोग केला
 तो पुढती । निरुपम जी ॥ ९२ ॥ किंबहुना तुमचें केलें । धर्मकीर्तन हें सिद्धी
 नेलें । येथ माझे जी उरलें । पौर्णकपण ॥ ९३ ॥ [वरप्रार्थना] आतां वि-
 श्वात्मकें देवें । येणें वाग्यजें तोपावें । तोपोनि मज द्यावें । पैसायदान हें
 ॥९४॥ जे खळाची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मीं रती वाढो । भूतां
 परस्परें पडो । मैत्र जीवाचें ॥ ९५ ॥ दुरिताचें तिमिर जावो । विश्व स्व-
 धर्मसूर्य पाहो । जो जें वांछील तो तें लाहो । प्राणिजात ॥ ९६ ॥ वर्षत
 सकळमंगलीं । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी । अनवरत भूतलीं । भेटो तयां
 भूतां ॥ ९७ ॥ चलां कल्पतरूचे ॥ अरव । चेतना चिंतामणीचे गांव । बो-
 लते जे अणव । पीयूषाचे ॥ ९८ ॥ चंद्रमे जे अलांछन । मीतंड जे ताप-
 हीन । ते सर्वांहीं सदा सजन । सोयरे होतु ॥ ९९ ॥ किंबहुना सर्वमुखीं ।
 पूर्ण होऊनि तिहीं लोकीं । भजि जो आदिपुरुषीं । अखंडित ॥ १८०० ॥
 आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं द्ये । दृष्टादृष्टविजयें । होआवें जी
 ॥ १ ॥ येथ ह्यणे श्रीविश्वेश्वरावो । हा होइल ईर्दानपसावो । येणें वरें
 ज्ञानदेवो । सुखिया जाला ॥ २ ॥ [वास्तव्यस्थानमहिमा] ऐसें युगीं परि
 कळीं । आणि महाराष्ट्रमंडळीं । श्रीगोदावरीच्या कुंलीं । ॥दक्षिणिली
 ॥ ३ ॥ त्रिभुवनैकपवित्र । अनादि पंचक्रोशक्षेत्र । जेथ जगाचें जीवनसूत्र ।
 श्रीमहालया असे ॥ ४ ॥ तेथ यदुवंशविलास । जो सकळकळानिवास ।
 न्यायातें पोषी क्षितीश । श्रीरामचंद्र ॥ ५ ॥ तेथ महेशान्वयसंभूतें ।

* त्रिशंकुउद्देशे. † खळाचें व्यंकटै, ची वंकटै. ‡ विश्वा. § जें वांछेल तें तें
 लाहे. ॥ आरव. § दाय. ॥ दक्षिण लिंगीं, दक्षिणलिंग.

१ त्रिशंकुराजाच्या हेतूने. २ उणें. ३ दिला. ४ तप्त झालेल्या. ५ सेवकात्व. ६ ग्रंथरूप बहानें.
 ७ प्रसाद. ८ वक्रदृष्टी. ९ भगवज्जनांची. १० समुदाय. ११ सर्वकाल. १२ चालत्या. १३ कोटी,
 अंकुर. १४ जिवंत. १५ लांछनरहित. १६ सूर्य. १७ श्रीगुरु. १८ दानप्रसाद. १९ कल्पयुगांत.
 २० दक्षिणभागच्या तीरी. २१ पांच कोश विस्तृत, पंचक्रोशीत. २२ मोहनीराजदेव. २३ माधव.
 २४ आदिनाथपरंपरासंभूत, शिवसंप्रदाय.

श्रीनिवृत्तिनाथसुतें । केलें ज्ञानदेवें गीते । देशीकैरलेणें ॥६॥ एवं भारताच्या गांवीं । भीष्मनाम प्रसिद्ध पर्वीं । श्रीकृष्णार्जुनीं बरवी । गोठी जे केली ॥७॥ जें उपनिषदांचें सार । सर्वशास्त्रांचें माहेर । परमहंसीं सरोवर । सेविजे जें ॥ ८ ॥ तिये गीतेचा कैलश । संपूर्ण हा अष्टादश । ह्याने निवृत्तिदास । ज्ञानदेव ॥ ९ ॥ पुढती पुढती पुढती । इया ग्रंथपुण्यसंपत्ती । सर्वसुखीं सर्वमूर्तीं । संपूर्ण होइजे ॥ १८१० ॥ शके बाराशतें बारोत्तरें । तें टीका केली ज्ञानेश्वरें । सच्चिदानंदबाबा आदरें । लेखकु जाहाला ॥ १८११ ॥ *

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायामष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इति श्रीभावार्थदीपिका समाप्ता ॥

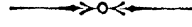
श्रीकृष्णार्पणस्तु ॥

श्लोक ७८, ओव्या १८११.

श्रीशकेपंधराशें बारोत्तरीं । तारणनामसंवत्सरीं । येकाजनार्दन अत्यादरीं । गीता ज्ञानेश्वरीप्रति शुद्ध केली ॥ १ ॥ ग्रंथ पूर्वींच अतिशुद्ध । परी पाठांतरीं शुद्ध अबद्ध । तो शोधूनियां एवंविध । प्रतिशुद्ध सिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमो ज्ञानेश्वरा निष्कळंका । जयाची गीतेची वाचितां टीका । ज्ञान होय लोकां । अतिभाविकां ग्रंथार्थियां ॥ ३ ॥ बहुकालपर्वणी गोमटी । भाद्रमा-सकपिलाषष्ठी । प्रतिष्ठानीं गोदातटीं । लेखनकामाठी संपूर्ण जाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरीपाठीं । जो चोवी करील मज्हाटी । तेणें अमृताचे ताटीं । जाण नरोटी ठेविली ॥ ५ ॥

* शके सोळाशें तेरोत्तरें । तें पदपद्धति केली ज्ञानेश्वरें । बरवा गोविंद सु-खांतरे । जगजीवना लेखका ॥ १८१२ ॥

श्रीज्ञानेश्वरीस्थगीतापद्यानामकारादि- वर्णक्रमः ।



श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ० श्लो०	पृ०
अकीर्तिं चापि भूतानि	२	३४	३५	अधिष्ठानं तथा कर्ता	१८ १४ ४६६
अक्षरं ब्रह्म परमं	८	३	१५५	अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं	१३ ११ ३१८
अक्षराणामकारो	१०	३३	२२६	अध्येष्यते च य इमं	१८ ७० ५३१
अग्निज्योतिरहः शुक्लः	८	२४	१६९	अनंतविजयं राजा	१ १६ ९
अच्छेद्योऽयमदाह्यो	२	२४	३१	अनंतश्चास्मि नागा	१० २९ २२४
अजोऽपि सन्नव्यया	४	६	७३	अनन्यचेताः सततम्	८ १४ १६२
अज्ञश्चाश्रद्धानश्च	४	४०	८५	अनन्याश्रितयंतो	९ २२ १९५
अंतकाले च मामेव	८	५	१५७	अनपेक्षः शुचिर्दक्षः	१२ १६ २८५
अंतवत्तु फलं तेषाम्	७	२३	१४८	अनादित्वान्निर्गुण	१३ ३१ ३४१
अंतवंत इमे देहाः	२	१८	३०	अनादिमध्यांतमनं	११ १९ २५१
अत्र शूरा महेष्वासा	१	४	६	अनाश्रितः कर्मफलं	६ १ १०४
अथ केन प्रयुक्तोऽयम्	३	३६	६६	अनिष्टमिष्टं मिश्रं च	१८ १२ ४६१
अथ चित्तं समाधातुं	१२	९	२८१	अनुद्वेगकरं वाक्यम्	१७ १५ ४३६
अथ चेत्त्वमिधं धर्म्यं	२	३३	३५	अनुबंधं क्षयं हिंसाम्	१८ २५ ४८१
अथ चैनं नित्यजातं	२	२६	३२	अनेकचित्तविभ्रांता	१६ १६ ४१८
अथवा योगिनामेव	६	४२	१३२	अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं	११ १६ २४८
अथवा बहुनैतेन	१०	४२	२२९	अनेकवक्त्रनयनम्	११ १० २४३
अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा	१	२०	११	अन्नाद्भवन्ति भूतानि	३ १४ ५८
अथैतदप्यशक्तोऽसि	१२	११	२८२	अन्ये च बहवः शूरा	१ ९ ७
अदृष्टपूर्वं हपितोऽस्मि	११	४५	२६८	अन्ये त्वेवमजानंतः	१३ २५ ३३८
अदेशकाले यद्दानम्	१७	२२	४४१	अपरं भवतो जन्म	४ ४ ७२
अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्	१२	१३	२८३	अपरे नियताहाराः	४ ३० ८२
अधर्मं धर्ममिति या	१८	३२	४८७	अपरेयमितस्त्वन्यां	७ ५ १३८
अधर्माभिभवात्कृष्ण	१	४१	१७	अपर्याप्तं तदस्माकम्	१ १० ७
अधश्चोर्ध्वं प्रसृता	१५	२	३७४	अपाने जुह्वति प्राणम्	४ २९ ८१
अधिभूतं क्षरो भावः	८	४	१५६	अपि चेत्सुदुराचारो	९ ३० २०१
अधियज्ञः कथं कोऽत्र	८	२	१५४	अपि चेदसि पापेभ्यः	४ ३६ ८४

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च	१४	१३	३५६	अहं कतुरहं यज्ञः	९	१६	१९१
अफलाकांक्षिभिर्य	१७	११	४३४	अहंकारं बलं दर्पं	१६	१८	४१९
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः	१६	१	४०२	”	१८	५३	५०५
अभिसंधाय तु फलं	१७	१२	४३४	अहमात्मा गुडाकेश	१०	२०	२२२
अभ्यासयोगयुक्तेन	८	८	१५९	अहं वैश्वानरो भूत्वा	१५	१४	३८८
अभ्यासेऽप्यसमर्थोसि	१२	१०	२८२	अहं सर्वस्य प्रभवो	१०	८	२१५
अमानित्वमदंभित्वम्	१३	७	२९८	अहं हि सर्वयज्ञानाम्	९	२४	१९७
अमी च त्वां धृत	११	२६	२५६	अहिंसा सत्यमक्रोधः	१६	२	४०५
अमी हि त्वां सुर	११	२१	२५२	अहिंसा समता तुष्टि	१०	५	२१३
अयनेषु च सर्वेषु	१	११	८	अहो वत महत्पापम्	१	४५	१८
अयतिः श्रद्धयोपेतो	६	३७	१३०	आ			
अयुक्तः प्राकृतः	१८	२८	४८४	आख्याहि मे को	११	३१	२६०
अवजानन्ति मां मूढाः	९	११	१८३	आचार्याः पितरः	१	३४	१५
अवाच्यवादांश्च बहून्	२	३६	३६	आढ्योऽभिजनवान	१६	१५	४१७
अविनाशि तु त	२	१७	३०	आत्मसंभाविताः स्त	१६	१७	४१८
अविभक्तं च भू	१३	१६	३३२	आत्मौपम्येन सर्वत्र	६	३२	१२८
अव्यक्तादीनि भू	२	२८	३३	आदित्यानामहं वि	१०	२१	२२३
अव्यक्ताद्यक्तयः स	८	१८	१६५	आपूर्यमाणमचलप्र	२	७०	४८
अव्यक्तोऽक्षर इ	८	२१	१६६	आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	८	१६	१६४
अव्यक्तोऽयमचित्यो	२	२५	३१	आयुधानामहं वज्रम्	१०	२८	२२४
अव्यक्तं व्यक्तिमा	७	२४	१४८	आयुःसत्त्वबलारोग्य	१७	८	४३१
अशाल्वविहितं घो	१७	५	४२९	आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं	६	३	१०५
अशोच्यानन्वशोच	२	११	२७	आवृतं ज्ञानमेतेन	३	३९	६८
अश्रद्धाः पुरुषाः	९	३	१७७	आशापाशशतैर्बद्धाः	१६	१२	४१६
अश्रद्धया हुतं दत्तं	१७	२८	४४७	आश्चर्यवत्पश्यति क	२	२९	३३
अश्वत्थः सर्ववृक्षा	१०	२६	२२४	आसुरीं योनिमापन्ना	१६	२०	४२०
असक्तबुद्धिः सर्वत्र	१८	४९	५००	आहारस्त्वपि सर्वस्य	१७	७	४३१
असक्तिरनभिष्वंगः	१३	९	३१७	आहुस्त्वामृषयः सर्वे	१०	१३	२१८
असत्यमप्रतिष्ठं ते	१६	८	४१३	इ			
असौ मया हतः श	१६	१४	४१७	इच्छाद्वेषसमुत्थेन	७	२७	१५०
असंयतात्मना योगो	६	३६	१३०	इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं	१३	६	२९३
असंशयं महाबाहो	६	३५	१२९	इति गुह्यतमं शास्त्रं	१५	२०	३९६
अस्माकं तु विशिष्टा	१	७	६९	इति ते ज्ञानमाख्यातं	१८	६३	५२०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं	१३	१८	३३३
इत्यर्जुनं वासुदेवस्त	११	५०	२७१
इत्यहं वासुदेवस्य	१८	७४	५३४
इदमद्य मया लब्धं	१६	१३	४१६
इदं तु ते गुह्यतमम्	९	१	१७६
इदं ते नातपस्काय	१८	६७	५२८
इदं शरीरं कौंतेय	१३	१	२९०
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य	१४	२	३४८
इन्द्रियस्यैन्द्रियस्यार्थे	३	३४	६५
इन्द्रियाणां हि चरतां	२	६७	४७
इन्द्रियाणि पराण्याहु	३	४२	६९
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः	३	४०	६८
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्	१३	८	३१३
इमं विवस्वते योगं	४	१	७१
इष्टान् भोगान् हि	३	१२	५६
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं	११	७	२४०
इहैव तैर्जितः सर्गो	५	१९	९५
ई			
ईश्वरः सर्वभूतानां	१८	६१	५१९
उ			
उच्चैःश्रवसमश्वानाम्	१०	२७	२२४
उत्क्रामन्तं स्थितं	१५	१०	३८६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः	१५	१७	३९४
उत्सन्नकुलधर्माणां	१	४४	१८
उत्सीदेयुरिमे लोका	३	२४	६१
उदाराः सर्व एवैते	७	१८	१४६
उदासीनवदासीनो	१४	२३	३६३
उद्धरेदात्मनात्मानं	६	५	१०६
उपद्रष्टानुमंता च	१३	२२	२३७
ऊ			
ऊर्ध्वं गच्छन्ति स	१८	१२	३५९
ऊर्ध्वमूलमधःशास्त्र	१५	१	३७१

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ऋ			
ऋषिभिर्बहुधा गीतं	१३	४	२९१
ए			
एतच्छ्रुत्वा वचनं के	११	३५	२६२
एतद्योनीनि भूतानि	७	६	१३९
एतन्मे संशयं कृष्ण	६	३९	१३१
एतान्न हंतुमिच्छामि	१	३५	१५
एतान्यपि तु कर्माणि	१८	६	४५८
एतां दृष्टिमवष्टभ्य	१६	९	४१४
एतां विभूर्ति योगं च	१०	७	२१५
एतैर्विमुक्तः कौंतेय	१६	२२	४२१
एवमुक्तो हृषीकेशो	१	२४	१२
एवमुक्त्वाऽर्जुनः सं	१	४७	१९
एवमुक्त्वा ततो राज	११	९	२४२
एवमुक्त्वा हृषीकेशं	२	९	२६
एवमेतद्यथात्थ त्वम्	११	३	२३६
एवं परंपराप्राप्तम्	४	२	७१
एवं प्रवर्तितं चक्रं	३	१६	५९
एवं बहुविधा यज्ञाः	४	३२	८२
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा	३	४३	६९
एवं सततयुक्ता ये	१२	१	२७७
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म	४	१५	७६
एषा तेऽभिहिता	२	३९	३८
एषा ब्राह्मी स्थितिः	२	७२	४९
ओ			
ॐ तत्सदिति निर्देशो	१७	२३	४४२
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म	८	१३	१६२
क			
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टः	६	३८	१३१
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ	१८	७२	५३२
कटुम्ललवणात्युष्ण	१७	९	४३२
कथं न ज्ञेयमस्माभिः	१	३९	१६
कथं भीष्ममहं संख्ये	२	४	२३

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
कथं विद्यामहं योगिन्	१०	१७	२२०
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि	२	५१	४२
कर्मणः सुकृतस्याहुः	१४	१६	३५९
कर्मणैव हि संसिद्धिम्	३	२०	६०
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं	४	१७	७७
कर्मण्यकर्म यः पश्येत्	४	१८	७७
कर्मण्येवाधिकारस्ते	२	४७	४०
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि	३	१५	५९
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य	३	६	५४
कर्षयंतः शरीरस्थं	१७	६	४३०
कवि पुराणमनुशा	८	९	१५९
कस्माच्च ते न नमेर	११	३७	२६३
काम एष क्रोध एष	३	३७	६७
कामक्रोधवियुक्तानां	५	२६	९९
काममाश्रित्य दुष्पूर	१६	१०	४१५
कामात्मानः स्वर्गपरा	२	४३	३९
कामैस्तैस्तैर्हेतुज्ञानाः	७	२०	१४७
काम्यानां कर्मणां न्या	१८	२	४५४
कायेन मनसा बुद्ध्या	५	११	९२
कार्पण्यदोषोपहत	२	७	२४
कार्यकारणकर्तृत्वे	१३	२०	३३४
कार्यमित्येव यत्कर्म	१८	९	४६०
कालोऽस्मि लोकक्ष	११	३२	२६०
काश्यश्च परमेष्वासः	१	१७	१०
कांक्षंतः कर्मणां सि	४	१२	७५
किं कर्म किमकर्मेति	४	१६	७६
किं तद्ब्रह्म किमध्या	८	१	१५४
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या	९	३३	२०४
किरीटिनं गदिनं च	११	४६	२६९
किरीटिनं गदिनं	११	१७	२५०
कुतस्त्वा कश्मल	२	२	२१
कुलक्षये प्रणश्यति	१	४०	१७
कृपया परयाविष्टो	१	२८	१२

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
कृषिगोरक्षवाणिज्यं	१८	४४	४९६
कैलिंगैस्त्रीन्गुणानेता	१४	२१	३६२
क्रोधाद्भवति संमोहः	२	६३	४५
क्लैब्यं मास्मगमः पा	२	३	२२
क्लेशोऽधिकतरस्ते	१२	५	२७९
क्षिप्रं भवति धर्मा	९	३१	२०२
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवं	१३	३४	३४३
क्षेत्रज्ञं चापि मां	१३	२	२९०
गतसंगस्य मुक्तस्य	४	२३	७९
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी	९	१८	१९२
गाण्डीवं संसते हस्ता	१	३०	१३
गामाविश्य च भूता	१५	१३	३८८
गुणानेतानतीत्य त्री	१४	२०	३६१
गुरूनहत्वा हि महा	२	५	२३
चंचलं हि मनः कृष्ण	६	३४	१२९
चतुर्विधा भजंते मां	७	१६	१४५
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं	४	१३	७५
चित्तामपरिमेयां च	१६	११	४१५
चेतसा सर्वकर्माणि	१८	५७	१६
ज			
जन्म कर्म च मे दिव्यं	४	९	७४
जरामरणमोक्षाय	७	२९	१५०
जातस्य हि ध्रुवो मृ	२	२७	३२
जितात्मनः प्रशांतस्य	६	७	१०७
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये	९	१५	१८९
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा	६	८	१०८
ज्ञानेन तु तदज्ञानं	५	१६	९४
ज्ञानं कर्म च कर्ता च	१८	१९	४७६
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानं	७	२	१३७
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता	१८	१८	४७३
ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी	५	३	८९

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि	१३	१२	३२९
ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते	३	१	५०
ज्योतिषामपि तज्ज्यो	१३	१७	३३२
त			
तं तथा कृपयाविष्टं	२	१	२१
ततः पदं तत्परिमा	१५	४	३८०
तच्च संस्मृत्य संस्मृ	१८	७७	५३६
ततः शंखाश्च भेर्यश्च	१	१३	८
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते	१	१४	९
ततः स विस्मयावि	११	१४	२४७
तत्त्ववित्तु महाबाहो	३	२८	६२
तत्र तं बुद्धिसंयोगं	६	४३	१३२
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वा	१४	६	३५३
तत्रापश्यस्थितान्पा	१	२६	१२
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं	११	१३	२४६
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा	६	१२	११४
तत्रैवं सति कर्तारं	१८	१६	४६९
तत्क्षेत्रं यच्च यादृ	१३	३	२९०
तदित्यनभिसंधाय	१७	२५	४४४
तद्बुद्ध्यस्तदात्मानः	५	१७	९४
तद्विद्वि प्रणिपतेन	४	३४	८३
तपस्विभ्योऽधिको	६	४६	१३४
तपाम्यहमहं वर्षे	९	१९	१९३
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि	१४	८	३५४
तमुवाच हृषीकेशः	२	१०	२६
तमेव शरणं गच्छ	१८	६२	५२०
तं विद्यादुःखसंयोगं	६	२३	१२६
तस्माच्छात्रं प्रमाणं	१६	२४	४२३
तस्मात्प्रणम्य प्रणि	११	४४	२६७
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्या	३	४१	६९
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो	११	३३	२६१
तस्मात्सर्वेषु कालेषु	८	७	१५९
तस्मादमक्तः सततं	३	१९	६०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
तस्मादज्ञानसंभूतं	४	४२	८६
तस्मादोमित्युदाहृत्य	१७	२४	४४३
तस्माद्यस्य महाबाहो	२	६८	४७
तस्मान्नाहं वयं हंतुं	१	३७	१६
तस्य संजनयन् हर्षं	१	१२	८
तानहं द्विषतः क्रूरान्	१६	१९	४२०
तानि सर्वाणि संयम्य	२	६१	४५
तुल्यनिंदास्तुतिमौनी	१२	१९	२८७
तेजः क्षमा धृतिः	१६	३	४०८
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलो	९	२१	१९५
तेषामहं समुद्धर्ता	१२	७	२८०
तेषामेवानुकंपार्थ	१०	११	२१७
तेषां सततयुक्तानां	१०	१०	२१६
तेषां ज्ञानी नित्ययु	७	१७	१४५
त्यक्त्वा कर्मफलासंगं	४	२०	७८
त्याज्यं दोषवदित्येके	१८	३	४५६
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः	७	१३	१४२
त्रिविधा भवति श्रद्धा	१७	२	४२७
त्रिविधं नरकस्येदं	१६	२१	४२१
त्रैगुण्यविषया वेदाः	२	४५	४०
त्रैविद्या मां सोमपाः	९	२०	१९४
त्वमक्षरं परमं वेदि	११	१८	२५१
त्वमादिदेवः पुरुषः	११	३८	२६४
द			
दंडो दमयतामस्मि	१०	३८	२२८
दंभो दमोऽभिमानश्च	१६	४	४१०
दंष्ट्राकरालानि च ते	११	२५	२५५
दानव्यमिति यद्दानं	१७	२०	४३९
दिवि सूर्यसहस्रस्य	११	१२	२४६
दिव्यमाल्यांबरधरं	११	११	२४५
दुःखमित्येव यत्कर्म	१८	८	४५९
दुःखेष्वनुद्गमनाः	२	५६	४३
दूरेण ह्यवरं कर्म	२	४९	४१

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं	१	२	५	न जायते म्रियते वा	२	२०	३०
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं	११	५१	२७३	न तदस्ति पृथि	१८	४०	४९३
देवद्विजगुरुप्राज्ञ	१७	१४	४३५	न तद्भायसते सूर्यो	१५	६	३८३
देवान्भावयतानेन	३	११	५६	न तु मां शक्यसे	११	८	२४१
देही नित्यमवध्यो	२	३०	३४	न लेवाहं जातु नासं	२	१२	२८
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे	२	१३	२८	न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म	१८	१०	४६०
दैवमेवापरे यज्ञं	४	२५	८०	न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य	५	२०	९६
दैवी ह्येषा गुणमयी	७	१४	१४२	न बुद्धिभेदं जनयेत्	३	२६	६२
दैवी संपद्धिमोक्षाय	१६	५	४१२	नभःस्पृशं दीप्तम	११	२४	२५४
दोषैरेतेः कुलघ्नानाम्	१	४३	१८	नभः पुरस्तादथ पृ	११	४०	२६४
द्यावापृथिव्योरिदमं	११	२०	२५१	न मां कर्माणि लिपं	४	१४	७६
द्युतं छलयतामस्मि	१०	३६	२२७	न मां दुष्कृतिनो	७	१५	१४५
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा	४	२८	८१	न मे पार्थास्ति क	३	२२	६१
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च	१	१८	१०	न मे विदुः सुर	१०	२	२१२
द्रोणं च भीष्मं च	११	३४	२६१	न रूपमस्येह तथो	१५	३	३७८
द्वाविमौ पुरुषौ लोके	१५	१६	३९१	न वेदयज्ञाध्ययनै	११	४८	२७०
द्वौ भूतसर्गौ लोके	१६	६	४१२	नष्टो मोहः स्मृति	१८	१३	५३३
ध				नहि कश्चित्क्षणमपि	३	५	५३
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	१	१	५	नहि देहभृता शक्यं	१८	११	४६१
धूमो रात्रिस्तथा कृ	८	२५	१६९	नहि प्रपश्यामि म	२	८	२५
धूमेनाप्रियते वह्निः	३	३८	६८	नहि ज्ञानेन सदृशं	४	३८	८४
धृत्वा यथा धारयते	१८	३३	४८८	नांतोऽस्ति मम दिव्या	१०	४०	२२८
धृष्टकेतुश्चेकितानः	१	५	६	नात्यश्रतस्तु योगो	६	१६	१२३
ध्यानेनात्मनि पश्यं	१३	२४	३३८	नादत्ते कस्यचित्पापं	५	१५	९४
ध्यायतो विषयान्पुंसः	२	६२	४५	नान्यं गुणेभ्यः क	१४	१९	३६०
न				नासतो विद्यते भावः	२	१६	२९
न कर्तृत्वं न कर्माणि	५	१४	९३	नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य	२	६६	४७
न कर्मणामनारंभात्	३	४	५३	नाहं प्रकाशः सर्वस्य	८	२५	१४९
न कांक्षे विजयं कृ	१	३२	१४	नाहं वेदैर्न तपसा	११	५३	२७४
न च तस्मान्मनुष्येषु	१८	६९	५३०	नांतोऽस्ति मम दि	१०	४०	२२८
न च मत्स्थानि भू	९	५	१७९	निमित्तानि च प	१	३१	१४
न च मां तानि क	९	९	१८२	नियतस्य तु संन्यासः	१८	७	४५८
न चैतद्विद्मः कतरन्नो	२	६	२४	नियतं कर्तुं कर्म त्वं	२	८	११

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
नियतं संगरहितं	१८	२३	४८०
निराशीर्यतचित्ता	४	२१	७८
निर्मानमोहाजितसं	१५	५	३८१
निश्चयं शृणु मे तत्र	१८	४	४५६
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः	१	३६	१६
महाभिक्रमनाशोऽ	२	४०	३८
नैते सती पार्थ जा	८	२७	१७१
नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि	२	२३	३१
नैव किञ्चित्करोमीति	५	८	९१
नैव तस्य कृतेनार्थो	३	१८	६०

प

पंचैतानि महाबाहो	१८	३	४६४
पत्रं पुष्पं फलं तोयं	९	२६	१९९
परस्तस्मात्तु भावो	८	२०	१६६
परं ब्रह्म परं धाम	१०	१२	२१८
परं भूयः प्रवक्ष्यामि	१४	१	३४८
परित्राणाय साधूनाम्	४	८	७३
पवनः पवतामस्मि	१०	३१	२२५
पश्य मे पार्थ रूपाणि	११	५	२३९
पश्यादित्यान्वसूनु	११	६	२४०
पश्यामि देवांस्तव	११	१५	२४७
पश्यैतां पांडुपुत्राणां	१	३	५
पार्थ नैवेह नामुत्र	६	४०	१३१
पांचजन्यं हृषीकेशो	१	१५	९
पितासि लोकस्य च	११	४३	२६७
पिताहमस्य जगतो	९	१७	१९१
पुण्यो गंधः पृथिव्यां	७	९	१४८
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि	१३	२१	३३५
पुरुषः स परः पार्थ	८	२२	१६६
पुरोधसां च मुख्यं मां	१०	२४	२२३
पूर्वाभ्यासेन तेनैव	६	४४	१३३
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं	१८	२१	४७७
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च	१४	२२	३६२

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
प्रकृतिं पुरुषं चैव	१३	१९	३३४
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य	९	८	१८१
प्रकृतेः क्रियमाणानि	३	२७	६२
प्रकृतेर्गुणसंमूढाः	३	२९	६३
प्रकृत्यैव च कर्माणि	१३	२९	३४०
प्रजहाति यदा कामान्	२	५५	४३
प्रयत्नाद्यतमानस्तु	६	४५	१३३
प्रयाणकाले मनसा	८	१०	१६०
प्रलपन्विमृजन्गृह्णन्	५	९	९१
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च	१६	७	४१३

”

१८ ३० ४८६

प्रशांतमनसं ह्येनम्	६	२७	१२७
प्रशांतात्मा विगतभी	६	१४	११६
प्रसादे सर्वदुःखानां	२	६५	४६
प्रह्लादश्चास्मि दैत्या	१०	३०	२२५
प्राप्य पुण्यकृतांल्लो	६	४१	१३२

ब

बलं बलवतां चाहं	७	११	१४०
बहिरंतश्च भूतानाम्	१३	१५	३३२
बहूनां जन्मनामंते	७	१९	१४६
बहूनि मे व्यतीतानि	४	५	७२
बंधुरात्मात्मनस्तस्य	६	६	१०७
बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा	५	२१	९६
बीजं मां सर्वभूता	७	१०	१४०
बुद्धियुक्तो जहातीह	२	५०	४२
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः	१०	४	२१३
बुद्धेर्भेदं धृत्वैश्वर्यं	१८	२९	४८५
बुद्ध्या विशुद्धया	१८	५१	५०३
बृहत्साम तथा	१०	३५	२२७
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठा	१४	२७	३६६
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि	५	१०	९१
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा	१८	१४	४६६
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः	४	२४	१११

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्	१८	४१	४९३	मय्यव मन आधत्स्व	१२	८	२८१
भ				महर्षयः सप्त पूर्वे	१०	६	२१४
भक्त्या त्वनन्यया	११	५४	२७४	महर्षीणां भृगुरहम्	१०	२५	२२३
भक्त्या मामभिजा	१८	५५	५०९	महात्मानस्तु मां पार्थ	९	१३	१८६
भयाद्रणादुपरतं	२	३५	३६	महाभूतान्यहंकारो	१३	५	२९३
भवान् भीष्मश्च कर्णश्च	१	८	६	मां च योऽव्यभि	१४	२६	३६५
भवाप्ययौ हि भूता	११	२	२३५	मा ते व्यथा मा च	११	४९	२७०
भीष्मद्रोणप्रमुखतः	१	२५	१२	मात्रास्पर्शास्तु कौं	२	१४	२८
भूतग्रामः स एवायम्	८	१९	१६५	मानापमानयोस्तुल्यः	१४	२५	३६४
भूमिरापोऽनलो वायुः	७	४	१३८	मामुपेत्य पुनर्जन्म	८	१५	१६२
भूय एव महाबाहो	१०	१	२११	मां हि पार्थ व्यपा	९	३२	२०३
भोक्तारं यज्ञतपसाम्	५	२९	१००	मुक्तसंगोऽनहंवादी	१८	२६	४८२
भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम्	२	४४	३९	मूढग्राहेणात्मनो यत्	१७	१९	४३८
म				मृत्युः सर्वहरश्चाहम्	१०	३४	२२७
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि	१८	५८	५१७	मोघाशा मोघकर्मा	९	१२	१८५
मच्चित्ता मद्गतप्राणाः	१०	९	२१६	य			
मत्कर्मकृन्मत्परमो	११	५५	२७५	य इदं परमं गुह्यम्	१८	६८	५३०
मत्तः परतरं नान्यत्	७	७	१३९	य एनं वेत्ति हन्तारं	२	१९	३०
मदनुग्रहाय परमम्	११	१	२३४	य एवं वेत्ति पुरुषं	१३	२३	३३७
मनःप्रसादः सौम्यत्वं	१७	१६	४३७	यच्चापि सर्वभूतानाम्	१०	३९	२२८
मनुष्याणां सहस्रेषु	७	३	१३७	यच्चावहासार्थमस	११	४२	२६६
मन्मना भव मद्भक्तो	९	३४	२०७	यजंते सात्त्विका दे	१७	४	४२९
"	१८	६५	५२२	यज्जाला न पुनर्मोहं	४	३५	८३
मन्यसे यदि तच्छ्रव्यं	११	४	२३७	यततो ह्यपि कौंतेय	२	६०	४४
मम योनिर्महद्ब्रह्म	१४	३	३४९	यतः प्रवृत्तिर्भूता	१८	४६	४९८
ममैवांशो जीवलोके	१५	७	३५३	यतेंद्रियमनोबुद्धिः	५	२८	९९
मया ततमिदं सर्वं	९	४	१७८	यतो यतो निश्चरति	६	२६	१२६
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः	९	१०	१८३	यतंतो योगिनश्चैनं	१५	११	३८६
मया प्रसन्नेन तवार्जु	११	४७	२६९	यत्करोषि यदश्नासि	९	२७	२०
मयि चानन्ययोगेन	१३	१०	३१७	यत्तदग्रे विषमिव	१८	३७	४९१
मयि सर्वाणि कर्माणि	३	३०	६३	यत्तु कामेषुना कर्म	१८	२४	४८०
मय्यावेदय मनो ये	१२	२	२७७	यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्	१८	२२	४७८
मय्यासक्तमनाः पार्थ	७	१	१३७	यत्तु प्रत्युपकारार्थं	१७	२१	४४०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
यत्र काले खनावृत्ति	८	२३	१६८	यं लब्ध्वा चापरं लाभं	६	२२	१२५
यत्र योगेश्वरः कृष्णो	१८	७८	५३७	यं संन्यासमिति प्राहुः	६	२	१०५
यत्रोपरमते चित्तम्	६	२०	१२५	यं हि न व्यथयत्येते	२	१५	२९
यत्सांख्यैः प्राप्यते	५	५	९०	यः सर्वत्रानभिस्नेहः	२	५७	४२
यथाकाशस्थितो	९	६	१८०	यस्त्वात्मरतिरेव स्यान्	३	१७	५९
यथा दीपो निवात	६	१९	१२४	यस्त्विन्द्रियाणि मनसा	३	७	५४
यथा नदीनां बहवो	११	२८	२५८	यस्मात्क्षरमतीतोऽहं	१५	१८	३९५
यथा प्रकाशयत्येकः	१३	३३	३४३	यस्मान्नोद्विजते लोको	१२	१५	२८५
यथा प्रदीपं ज्वलनं	११	२९	२५८	यस्य नाहंकृतो भा	१८	१७	४७०
यथा सर्वगतं गौ	१३	३२	३४२	यस्य सर्वे समारंभाः	४	१९	७८
यथैधांसि समिद्धो	४	३७	८४	यज्ञदानतपः कर्म	१८	५	४५७
यदग्ने चानुवंधे च	१८	३९	४९२	यज्ञशिष्टाश्रुतभुजो	४	३१	८२
यदहंकारमाश्रित्य	१८	५९	५१८	यज्ञशिष्टाशिनः संतो	३	१३	५७
यदक्षरं वेदविदो	८	११	१६१	यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र	३	९	५५
यदा ते मोहकलिलं	२	५२	४२	यज्ञे तपमि दाने च	१७	२७	४४६
यदादित्यगतं नेत्रो	१५	१२	३८७	यातयामं गतरमं	१७	१०	४३३
यदा भूतपृथग्भावं	१३	३०	३४१	या निशा सर्वभूतानां	२	६९	४८
यदा यदा हि धर्मस्य	४	७	७३	यामिमां पुष्पितां वाचं	२	४२	३९
यदा विनियतं चित्तं	६	१८	१२४	यावत्संजायते किञ्चित्	१३	२६	३३९
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु	१४	१४	३१६	यावदेतान्निरीक्षेऽहं	१	२२	११
यदा संहरते चायं	२	५८	४४	यावानर्थ उदपाने	२	४६	४०
यदा हि नैन्द्रियार्थेषु	६	४	१०६	यांति देवव्रता देवान्	९	२५	१९७
यदि मामप्रतीकारं	१	४६	१९	युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा	५	१२	९३
यदि ह्यहं न वर्तेयं	३	२३	६१	युक्ताहारविहारस्य	६	१७	१२४
यदृच्छया चोपपन्नं	२	३२	३५	युधामन्युश्च विकांत	१	६	६
यदृच्छालाभसंतुष्टो	४	२२	७८	ये चैव सात्त्विका भा	७	१२	१४१
यद्यदाचरति श्रेष्ठः	३	२१	६०	ये तु धर्म्यामृतमिदं	१२	२०	२८८
यद्यद्विभूतिमश्नत्वं	१०	४१	२२९	ये तु सर्वाणि कर्माणि	१२	६	२८०
यद्यप्येते न पश्यन्ति	१	३८	१६	ये त्वक्षरमनिर्देशयं	२२	३	२७८
यं यं वापि स्मरन्भावं	८	६	१५८	ये त्वेतदन्यमूयन्तो	३	३२	६१
यया तु धर्मकामार्थान्	१८	३४	४८९	येऽप्यन्यदेवताभक्ता	९	२३	१९६
यया धर्ममधर्मं च	१८	३१	४८७	ये मे मतमिदं नित्यं	३	३१	६३
यया स्वप्नं भयं शोकं	१८	३५	४८९	ये यथा मां प्रपद्यन्ते	४	११	७५

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१७	१	४२६
येषामर्थे कांक्षितं नो	१	३३	१४
येषां त्वन्तगतं पापम्	७	२८	१५०
ये हि संस्पर्शजा भोगाः	५	२२	९६
योगयुक्तो विशुद्धात्मा	५	७	९०
योगसंन्यस्तकर्माणं	४	४१	८६
योगस्थः कुरु कर्माणि	२	४८	४१
योगिनामपि सर्वेषाम्	६	४७	१३५
योगी युञ्जीत सततं	६	१०	१०९
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं	१	२३	११
यो न हृष्यति न द्वेष्टि	१२	१७	२८६
योऽतः सुखोत्तरारामः	५	२४	९८
यो मामजमनादिं च	१०	३	२१३
यो मामेवमसंमूढो	१५	१९	३९५
यो मां पश्यति सर्वत्र	६	३०	१२७
यो यो यां यां तनुं	७	२१	१४८
योऽयं योगस्त्वया	६	३३	१२९
युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानम्	६	१५	१२१
"	६	२८	१२७
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१६	२३	४२२
र			
रजस्तमश्चाभिभूय	१४	१०	३५५
रजसि प्रलयं गत्वा	१४	१५	३५६
रजो रागात्मकं विद्धि	१४	७	३५३
रसोऽहमप्सु कौंतेय	७	८	१३९
रागद्वेषवियुक्तैस्तु	२	६४	६४
रागी कर्मफलप्रेप्सुः	१८	२७	४८३
राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य	१८	७६	५३६
राजविद्या राजगुह्यं	९	२	१७७
रुद्राणां शंकरश्चास्मि	१०	२३	२२३
रुद्रादित्या वसवो ये	११	२२	२५२
रूपं महत्ते बहुवक्त्रेण	११	२३	२५३

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
ल			
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणं	५	२५	९८
ललित्यसे प्रसमानः	११	३०	२५९
लोकेऽस्मिन्द्विविधा	३	३	५२
लोभः प्रवृत्तिरारंभः	१४	१२	३५६
व			
वक्तुमर्हस्यशेषेण	१०	१६	२२०
वक्त्राणि ते त्वरमाणा	११	२७	२५७
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः	११	३९	२६४
वासांसि जीर्णानि	२	२२	३१
विद्याविनयसंपन्ने	५	१८	९१
विधिहीनमसृष्टान्नं	१७	१३	४३५
विविक्तसेवी लब्धाशी	१८	५२	५०४
विषया विनिवर्तते	२	५९	४४
विषयेंद्रियसंयोगात्	१८	३८	४९१
विस्तरेणात्मनो योगं	१०	१८	२२१
विहाय कामान्यः	२	७१	४९
वीतरागभयक्रोधाः	४	१०	७४
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि	१०	३७	२२७
वेदानां सामवेदोऽस्मि	१०	२२	२२३
वेदाविनाशिनं नित्यं	२	२१	३०
वेदाहं समतीतानि	७	२६	१४९
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु	८	२८	१७२
व्यवसायात्मिका	२	४१	३८
व्यामिश्रेणेव वाक्येन	३	२	५०
व्यासप्रसादाच्छ्रुत्वा	१८	७५	५३५
श			
शक्नोतीहैव यः सोढुं	५	२३	९८
शनैः शनैरुपरमेद्	६	२५	१२६
शमो दमस्तपः शौचं	१८	४२	४९४
शरीरं यदवाप्नोति	१५	८	३८५
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्	१८	१५	४६८
शुक्लकृष्णे गती ह्येते	८	२६	१७०

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य	६	११	११३	समः शत्रौ च मित्रे	१२	१८	२८६
शुभाशुभफलैरेवं	९	२८	२००	सर्गाणामादिरंतश्च	१०	३२	२२६
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं	१८	४३	४९५	सर्वकर्माणि मनसा	५	१३	९३
श्रद्धया परया तप्तं	१७	१७	४३७	सर्वकर्माण्यपि सदा	१८	५६	५१६
श्रद्धावाननसूयश्च	१८	७१	५३१	सर्वगुह्यतमं भूयः	१८	६४	५२१
श्रद्धावाँलभते ज्ञानं	४	३९	८५	सर्वतः पाणिपादं तत्	१३	१३	३३०
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते	२	५३	४२	सर्वद्वाराणि संयम्य	८	१२	१६१
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्	४	३३	८३	सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्	१४	११	३५६
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः	३	३५	६५	सर्वधर्मान्परित्यज्य	१८	६६	५२४
"	१८	४७	४९८	सर्वभूतस्थमात्मानम्	६	२९	१२७
श्रेयो हि ज्ञानमभ्या	१२	१२	२८३	सर्वभूतस्थितं यो मां	६	३१	१२८
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये	४	२६	८०	सर्वभूतानि कौंतेय	९	७	१८०
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च	१५	९	३८६	सर्वभूतेषु येनैकं	१८	२०	४७७
श्वशुरान्सुहृदश्चैव	१	२७	१२	सर्वमेतद्वत् मन्थे	१०	१४	२१९
स				सर्वयोनिषु कौंतेय	१४	४	३५१
स एवायं मया तेऽद्य	४	३	७१	सर्वस्य चाहं हृदि	१५	१५	३८९
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसः	३	२५	६१	सर्वाणीन्द्रियकर्माणि	४	२७	८०
सखेऽति मत्वा प्रसभं	११	४१	१६५	सर्वेन्द्रियगुणाभासं	१३	१४	३३१
स घोषो धार्तराष्ट्राणां	१	१९	१०	सहजं कर्म कौंतेय	१८	४८	४९९
सततं कीर्तयंतो	९	१४	१८७	सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा	३	१०	५५
स तथा श्रद्धया युक्तः	७	२२	१४८	सहस्रयुगपर्यंतम्	८	१७	१६४
सत्कारमानपूजार्थं	१७	१०	४३८	साधिभूताधिदैवं मां	७	३०	१५१
सत्त्वान्संजायते ज्ञानं	१४	१७	३५९	मिद्धि प्राप्तो यथा ब्रह्म	१८	५०	५०२
सत्त्वं रजस्तम इति	१४	५	३५२	मीदन्ति मम गात्राणि	१	२९	१३
सत्त्वं सुखे संजयति	१४	९	३५५	सुखदुःखे रामे कृत्वा	२	३८	३७
सत्त्वानुरुपा सर्वस्य	१७	३	४२८	सुखमात्यंतिकं यत्तद्	६	२१	१२५
सदृशं चेष्टते स्वस्याः	३	३३	६४	सुखं त्विदानीं त्रिविधं	१८	३६	४९०
सद्भावे साधुभावे च	१७	२६	४४५	सुदुर्दर्शमिदं रूपं	११	५२	२७३
समदुःखसुखः स्वस्थः	१४	२४	३६४	सुहृन्मित्रार्युदासीन	६	९	१०९
समोऽहं सर्वभूतेषु	९	२९	२००	संकरो नरकायैव	१	४२	१८
समं कायशिरोग्रीवं	६	१३	११५	संकल्पप्रभवान्कामान्	६	२४	१२६
समं पश्यन्हि सर्वत्र	१३	२८	३४०	संतुष्टः सततं योगी	१२	१४	२८४
समं सर्वेषु भूतेषु	१३	२७	३३९	संनियम्येन्द्रियग्राम	१२	४	२७८

श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०	श्लोकप्रतीकं.	अ०	श्लो०	पृ०
संन्यासस्तु महाबाहो	५	६	९०	स्वधर्ममपि चावेक्ष्य	२	३१	३४
संन्यासस्य महाबाहो	१८	१	४५३	स्वभावजेन कौतेय	१८	६०	५१८
संन्यासः कर्मयोगश्च	५	२	८९	स्वयमेवात्मनात्मानं	१०	१५	२२०
संन्यासं कर्मणां कृष्ण	५	१	८८	स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः	१८	४५	४९६
सांख्ययोगौ पृथग्वालाः	५	४	८९				
स्थाने हृषीकेश तव	११	३६	२६३	ह			
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा	२	५४	४२	हंत ते कथयिष्यामि	१०	१९	२२२
स्पर्शान्कृत्वा वह्निर्बाह्यान्	५	२७	९९	हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं	२	३७	३७
				हृषीकेशं तदा वाक्यं	१	२१	११

समाप्तेयं गीतापद्यानामकाराद्यनुक्रमणी ।

त्वानें कर्मांमध्ये असतो, तो निश्चयेंकरून कोणी ओळखावा तें सांगतों. ३९६ कारण, मुक्त कोणते ह्याचा निश्चय करावयास गेले ह्मणजे आपलीच मुक्तता होते. आपली वस्तु असते ती जशी दिव्यानें दिसते; ३९७ किंवा आरसा स्वच्छ करावा तेव्हां आपलेंच आपल्याला दर्शन होतें. किंवा मीठ पाण्याला भेटावयास गेले तर आपणच पाणी होऊन जातें. ३९८ हें असो. प्रतिबिंब फिरून आपल्या बिंबाला पहावयाला लागले ह्मणजे त्याचा प्रतिबिंबपणा जाऊन तें स्वतःच बिंब होतें. ३९९ त्याप्रमाणें आपण हरवलों असें वाटेल तेव्हां संतांचें दर्शन घ्यावें, ह्मणजे सांपडेल. ह्मणून सदासर्वकाल त्यांचेंच वर्णन करावें, व त्यांचेच गुणानुवाद श्रवण करावेत. ४०० परंतु कर्मांत राहूनही जो समविषमांत सांपडत नाही; चर्मचक्षूच्या चामड्यानें जशी दृष्टि, ४०१ त्याप्रमाणें जो निराळा आहे; त्याचें स्वरूप आतां पहा. बाहू उभारून त्याची उपपत्ति सांगूं.” ४०२

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।

हत्वाऽपि स इमाल्लोकान्न हंति न निबद्धयते ॥ १७ ॥

[यस्य नाहंकृतो भावः] तरि अविद्येच्या निर्दा. विश्व-स्वप्नाचा हा धोंदा. भोगित होता प्रबुद्धा. अनादि जो ॥ ३ ॥ तो महावाक्याचेनि नांवें । गुरुकृपेचेनि नांवें । माथां हात ठेवणें नव्हे । थापटिला जैसा ॥ ४ ॥ तैसा विश्वस्वप्नेसी माया । नीद सांझनि धनंजया । सहजेचि चेईला अद्वयानंदपणें जो ॥ ५ ॥ तेव्हां मृगजळाचे पुर । दिसते एक निरंतर । हारपती कां चंद्रकर । फांकातां जैसे ॥ ६ ॥ कां बाळव निघोनि जाय । तें बायला नाही त्राय । पै जळलिया इंधन न होय । रंधन जेवि ॥ ७ ॥ ना ना चेंवो आलिया पाटी । तें स्वप्न न दिसे दिठी । तैसी अहंममता गा किरीटी । नुरेचि तया ॥ ८ ॥ मग सूर्य आंधारालागीं । रिघो कां भलते सुंरंगीं । परि तो तयाच्या भागीं । नाहीचि जैसा ॥ ९ ॥ तैसा आत्मत्वे वेष्टिला होये । तो जया तया दृश्यातें पाहे । तें दृश्य द्रष्टेपणेंसी होत जाये । तयाचेंचि

१ निर्दा. २ धंदा. ३ योगानें. ४ बळानें. ५ जागा झाला. ६ चंद्रकिरण. ७ रक्षण, उपयोग. ८ पाकक्रिया. ९ जाणती. १० भुयारांत.

रूप ॥ ४१० ॥ जैसा वन्हि जया लागे । तें वन्हीचि जालिया आंगें । दाहदाहकविभागें । सांडिजे तें ॥ ११ ॥ तैसा कर्माकारा दुजेया । तो कर्तेपणाचा आत्मया । आळ आला तो गेलिया । काहीं बांहीं जें उरे ॥ १२ ॥ तिये आत्मस्थितीचा जो रावो । मग तो देहीं इये जाणेल ठावो । काय प्रलयांबूचा उभाहो । बोध मानी ॥ १३ ॥ तैसी ते पूर्ण अहंता । काई देहपणें पंडुसुता । आवरे काई सविता । बिंब धरिला ॥ १४ ॥ पै मथुनि लोणी घेपे । तें मायुती ताकीं घोपे । तरि तें लिप्तपणें सिंपे । तेणेंसी काई ॥ १५ ॥ नाना काष्ठौनि वीरेश । वेगळाविलिया हुताशा । राहे काष्ठचिया मांडुसा । कोंडलेपणें ॥ १६ ॥ कां रात्री-चिया उदराभांत । रिंगाला जो हा भास्वत । तो रात्री-ऐसी मात । एके काई ॥ १७ ॥ तैसें वेद्यवेदकपणेंसी । पडिलें कां जयाच्या प्रासी । तया देह मी ऐसी । अहंता कैची ॥ १८ ॥ आणि आकाशें जेथें जेथुनी । जाइजे तेथ असे भरोनि । ह्मणोनि ठेले कोंदोनी । आपेंआप ॥ १९ ॥ तैसें जें तेणें करावें । तो तेंचि आहे स्वभावें । मा कोणे कर्मा वेष्टावें । कर्तेपणें ॥ ४२० ॥ नुरेचि गगनावीण ठावो । नोहेचि समुद्रा प्रवाहो । गुठीचि ध्रुवा जावों । तैसें जाहालें ॥ २१ ॥ ऐसेनि अहंकृतिभावो । जयाचा बोधी जाहाला वावो । तन्हीं देहा जंव निवाहो । तंव आधीं कमें ॥ २२ ॥ वारा जरी वाजोनि वोरें । तरी तो डोल रुखीं उरे । कां सेंदे इति राहे कापुरें । वेचलेनी ॥ २३ ॥ कां सरलेया गीताचा समारंभु । न वचे वाहवलेणाचा क्षोभु । भूमी लोळोनि गेलिया अंबु । बोल थारे ॥ २४ ॥ अगा मावळ-लेनि अकें । संचेचिये भूमिके । ज्योतिदीप्तीकांतुके । दिसे जैसी ॥ २५ ॥ पै लक्ष भेदिलियाही वरी । बाण धावेचि तंववरी । जंव भरली आधीं उरी । बळाची तया ॥ २६ ॥ नाना चर्की भांडें जालें । तें कुलालें परतें नेलें । परि अमंचि तें मागिलें । भोंवडिलेपणें ॥ २७ ॥ तैसा देहाभिमान गेलिया । देह जेणें स्वभावें धनंजया । जालें तें अपैसया । चेष्टवीचें तें ॥ २८ ॥ संकल्पवीण स्वप्न । न लावितां दंगीनचें बन । न रचितां गंधर्वभुवन । उठी जैसें ॥ २९ ॥ आत्मया-चेनि उद्यमेंवीण । तैसें देहादिपंचकारण । होय आपणयां आपण । क्रियाजात ॥ ४३० ॥ पै प्राचीनसंस्कारशेषें ।

१ दाह=काष्ठे आदि व दाहक=अग्नि हा दोन प्रकारचा विभाग. २ काहीं, अवशेष. ३ वृद्धि. ४ स्पर्श. ५ पृथक् केला असतां. ६ पेटीत. ७ सूर्य. ८ जाणण्याचें वस्तु व जाणणारा. ९ ध्रुवमंडळाशीं. १० आटोपे. ११ करंज्यांत, बेलक्यांत. १२ खपून गेला तरी. १३ वाहावा दिल्याचा. १४ निशाण. १५ अवशिष्टता. १६ चक्र. १७ अरण्यांतलें. १८ पूर्व जन्मीच्या संस्कारातें.

पांचही कारणे सहेतुकें । कर्मावीजती गा अनेकें । कर्मा-
कारें ॥ ३१ ॥ [हृत्वापि स इमांलोकान्] तथा कर्माजी
मग । संहरो आघर्वें जग । अथवा नवें चांग । अनुकरो
॥ ३२ ॥ परि कुमुद कैसेनी सुके । तें कमळ कैसे फांके ।
ये दोन्ही रवी न देखे । जया परी ॥ ३३ ॥ कां वीजु
वर्षोनि आभाळ । ठिकरिया आतो भूतळ । अथवा करू
शाडूळ । पर्जन्यवृष्टी ॥ ३४ ॥ तरि तथा दोहीतें जैसे ।
नेणिजेचि कां आकाशें । तैसा देहींच जो असे । विदे-
हूदृष्टी ॥ ३५ ॥ तो देहादिकीं चेष्टीं । घडतां मोडतां हे
सृष्टी । न देखे स्वप्न दृष्टी । चेड्ळां जैसा ॥ ३६ ॥ येन्हीवीं
चामाचे डोळेवरी । जे देखती देहचिवरी । ते कीर तो
व्यापारी । ऐसेचि मानिती ॥ ३७ ॥ कां तृणाचा बाहुल ।
जो आंगरामेरे ठेविला । तो सत्य राखता कोल्हा । न मनी
काई ॥ ३८ ॥ पिसें नेसलें कां नागवें । हें लोकीं येऊनि
जाणावें । ठणोरियाचे मवावे । आणि की घाय ॥ ३९ ॥ कां
महासतीचे भोग । देखे कीर सकळ जग । परिते आगी ना
आंग । ना लोक देखे ॥ ४० ॥ तैसा स्वस्वरूपे उठिला । जो
दृश्येंसी द्रष्टा आटला । तो नेणे काय राहटला । इन्द्रि-
यप्राप्त ॥ ४१ ॥ अगा थोरीं कळोळीं कळोळ साने । लोपतां
तिरींचेनि जनें । एकाएकी गळिलें हें मन । मानिजे जन्ही
॥ ४२ ॥ तन्हीं उदकाप्रति पाहीं । कोण प्रसितसे काई ।
तैसे पूर्णा दुजें नाहीं । जें तो मारी ॥ ४३ ॥ सुवर्णा-
चिया चंडिका । सुवर्णशुद्धेंचि देखा । सुवर्णाचिया महिखा ।
नाश केला ॥ ४४ ॥ तो देवेंलवसिया कडा । व्यवहार गमला
कुंडा । वांचून महिष शुद्ध चांमुंडा । सुवर्णचि तें ॥ ४५ ॥
पें चित्राचें जळ हुंताश । तो दृष्टीचाचि आभास । पटीं
अग्नि बोलाशें । दोन्ही नाहीं ॥ ४६ ॥ मुक्ताचें देह तैसे ।
हाले चाले संस्कारवरी । तें देखोनि लोक पिसे । तो कर्ता
झणती ॥ ४७ ॥ [न हंति] आणि तयां करणयांआंत ।
घडो त्रैलोक्या घात । परि तेणें केला हे मात । बोलीं नये
॥ ४८ ॥ अगा अंधकार देखावा तेजें । मग तो फेडिजे
हें कें बोलिजे । तैसें ज्ञानियां नाहीं दुजें । तो मारील काई
॥ ४९ ॥ [बुद्धिर्यस्य न लियते] झणोनि तयाची बुद्धी ।

१ क्रिया करविती, सिद्ध केल्या जातात. २ रचो. ३ चंद्रवि-
कासी कमल. ४ वीज पडून. ५ तुकडे तुकडे होऊन व्यापो.
६ हिरवें तृण. ७ देहाभिमानरहित. ८ जागा झालेला. ९ चा-
मच्याचे. १० दृष्टीनं. ११ शेताच्या कडेस. १२ संरक्षक.
१३ भ्रमिष्ट. १४ लोकांनी. १५ बुद्धी मेलेल्यांचे. १६ व्या-
पला. १७ व्यवहारला. १८ इन्द्रियसमुदाय. १९ लहान
तरंग. २० देवीनं. २१ महिषासुर. २२ गुरवाला. २३ खरा.
२४ देवी. २५ अग्नि. २६ गारठा. २७ पूर्वकर्मानं. २८ दूर
करावा.

नेणे पापपुण्याची गंधी । गंगा मीनलिया नदी । विटाळ
जैसा ॥ ४५० ॥ अग्नीसि अग्नि झगटलिया । काय पोळे तो
धनंजया । कीं शस्त्र रूपे आपणया । आपणचि ॥ ५१ ॥
तैसे आपणपया परतें । जो नेणे क्रियाजातार्ते । तेथ काय
लिपवी बुद्धीतें । तयाचिये ॥ ५२ ॥ [न निबद्धयते]
झणोनि कार्य कर्ता क्रिया । हें स्वरूपचि जाहालें जया ।
नाहीं शरीरादिकीं तया । कर्मबंध ॥ ५३ ॥ जे कर्ता जीव
विदार्णी । काह्नि पांचही खाणी । घडित आहे करणी । आउती
दाहें ॥ ५४ ॥ तेथ न्यावो आणि अन्यावो । हा द्विविध घातुनि
आवो । उभारितां न लवी खेंवो । कर्म भुवनें ॥ ५५ ॥
या थोरांडा कीर कामा । विरंजा नोहे आत्मा । परि झणसी
हन उपेकमा । हात लावी ॥ ५६ ॥ तो साक्षी चिद्रूप ।
कर्मप्रवृत्तीचा संकल्प । उठी तो कां निरोप । आपणचि हे
॥ ५७ ॥ तरी कर्मप्रवृत्ती ही लागीं । तया आयास नाहीं
आंगीं । जे प्रवृत्तीजेही उळिगीं । लोकचि आथी ॥ ५८ ॥
झणोनि आत्मयाचें केवळ । जो रूपचि जाहाला निखिल ।
तया नाहीं बंदिशाळ । कर्माची हे ॥ ५९ ॥ परि अज्ञानाच्या
पटीं । अन्यथा ज्ञानाचें चित्र उठी । तेथ चित्तारणी हे त्रि-
पुटी । प्रसिद्ध जे कां ॥ ६० ॥

“तर अनादि, प्रबुद्ध असा, जो अविद्येची
निद्रा व विश्वरूप स्वप्नाचा थंदा भोगित अस-
तो, ४०३ तो महा वाक्याच्या योगानें, गुरु-
कृपेच्या वळानें, मस्तकावर हात ठेवावा-नव्हे
थोपटावें, ४०४ त्याप्रमाणें धनंजया ! विश्व-
स्वप्नासहवर्तमान मायेची शोष जाऊन जो
सहज अद्वयानंदानें जागा होतो, ४०५ तेव्हां
चंद्राचे किरण पसरतांच जसें निरंतर एकच
मृगजळाचे दिसणारे पूर नाहींसे होतात,
४०६ किंवा बाल्यत्व निघून गेलें झणजे
बागुलाला थारा उरत नाहीं; जळण संपल्या-
नंतर स्वयंपाक होत नाहीं; ४०७ किंवा
फिरून जाणें झाल्यावर स्वप्न जसें दृष्टीला
दिसत नाहीं. त्याप्रमाणें किरीटी ! त्याला
अहंममता झणून उरतच नाहीं. ४०८ मग
सूर्य अंधारासाठीं भलत्या पक्षाचा भुयारांत

१ वार्ता, गंध. २ भेटला असतां. ३ कोणता पदार्थ.
४ कार्य, तें करणारा, व करणें. ५ कीशल्यानं. ६ हेतु.
७ इन्द्रियरूप दहा नांगरांनी. ८ न्याय. ९ आकार.
१० क्षणही. ११ मोठ्या. १२ साक्षकर्ता. १३ आरंभास.
१४ ज्ञानस्वरूप. १५ वेगारींत. १६ चित्र काढणारी.

कां शिरेना ? तरी तो जसा त्याच्या वांढ्याला ह्मणून यावयाचाच नाही, ४०९ त्याप्रमाणे आत्मत्त्वाने जो गुंडाळलेला असतो, तो ज्याच्या दृश्य पदार्थाला पाहतो, तो दृश्य पदार्थ पाहणारा बरोबर पाहणाराचेंच रूप बनतो. ४१० ज्याप्रमाणे विस्त्व ज्याला लागतो, ते स्वतःच विस्त्व बनते, ह्मणजे मग जळणे आणि जाळणे हे दोन्हीही प्रकार नाहीसे होतात. ४११ त्याप्रमाणे कर्माच्या आकारामुळे त्या कर्त्याला दुसऱ्या कर्तेपणाचा आळ आलेला असतो, तो गेल्यानंतर जे कांहीं अवशेष राहतें, ४१२ त्या आत्मस्थितीचा जो राजा; तो मग ह्या देहामध्ये आपलें स्थान आहे, असें समजेल काय ? प्रलयकाळच्या समुद्राची भरती प्रवाहाची प्रतिष्ठा बाळगील काय ? ४१३ त्याप्रमाणे अर्जुना ! ती अहंता देहपणाने पूर्ण होईल होय ? बिंब धरल्यानें सूर्य सांपडेल काय ? ४१४ तसेंच घुसळून लोणी काढले, आणि ते पुन्हा ताकांत घातले, तर ते लिप्तपणाने त्यास मिळेल काय ? ४१५ किंवा हे वीरश्रेष्ठा ! काष्ठापासून अग्नि निराळा केला, तर तो लांकडाच्या पेटेंत कोंडून राहिल काय ? ४१६ किंवा हा सूर्य रात्रीच्या पोटांत शिरला तर तो रात्र असा शब्द तरी ऐकेल काय ? ४१७ त्याप्रमाणे जाणण्याची वस्तु व जाणणारा हे दोन्हीही ज्याच्या भक्ष्यस्थानी पडले, त्याला देह हा 'मी' ही अहंता कशाची ? ४१८ आणखी आकाश जेथून जेथे जाईल, तेथें तेथें भरूनच असतें, ह्मणून आपोआपच ते कोंडून राहतें. ४१९ त्याप्रमाणे त्यानें जें जें करावें, ते तो स्वतःच आपोआप असतो. मग कर्तेपणाने कोणत्या कर्मांत गुंतून रहावें ? ४२० गगनाशिवाय जागाच उरत नाही; समुद्राला प्रवाह उत्पन्न होत नाही; ध्रुवाला जाग्यावरून उठतां येत नाही. तसें होतें. ४२१ अशा प्रकारे अहंकृतीचा भाव त्याच्या ज्ञानाने जरी व्यर्थ झाला, तरी देहाला जोपर्यंत निर्वाह आहे,

तोपर्यंत कर्मे आहेतच. ४२२ वारा जरी वहावयाचा थांबला, तरी त्याचें हालणे झाडा-मध्ये राहतें. किंवा कापूर गेला तरी, करंज्यांत त्याचा वास रहातो. ४२३ किंवा गायनाचा समारंभ सरला तरी, मनोविकाराचा संस्कार जात नाही. भुईवर सांडलेले पाणी गेलें, तरी ओल रहाते. ४२४ अरे ! सूर्य मावळल्यानंतर सायंकाळच्या वेळीं जशी मजेची प्रकाशाची झांक दिसते; ४२५ निशाण भेदल्यावरही आपल्या आंगीं आलेले बळ अवशिष्ट असलेले संपेपर्यंत बाण धांवतच असतो. ४२६ किंवा चाकाने मडकें तयार झालें; ते कुंभाराने पलीकडे नेले; तरी ते आधीं भोंवडलेले असल्यामुळे फिरतच असतें. ४२७ त्याप्रमाणे अर्जुना ! देहाभिमान गेला तरी, ज्या स्वभावाने देह झालेला असतो, तो स्वभाव त्याला आपोआपच कर्मे करावयाला लावतो. ४२८ मनांत बेत केल्याशिवाय जसें स्वप्न; किंवा लागवड न करतां अरण्यांतले रान; बांधल्याशिवाय गंधर्वनगर जसें उत्पन्न होतें, ४२९ त्याप्रमाणे आत्म्याच्या उद्योगा-शिवाय देहादि पांच कारणांच्या योगाने हरएक क्रिया आपोआपच उत्पन्न होते. ४३० तसेंच पूर्वजन्मांच्या संस्काराने हेतुसहवर्तमान पांचही कारणे अनेक कर्मांच्या रूपाने क्रिया करवितात. ४३१ मग त्या कर्मांमध्ये सान्या जगाचा संहार होवो, किंवा दुसरे त्याहून चांगले तयार होवो. ४३२ तरी, चंद्र-विकासी कमल कशाने सुकतें; सूर्यविकासी कमल कशाने प्रफुल्लित होतें; हीं दोन्हीही जशीं सूर्य पहात नाही. ४३३ किंवा आभाळ हें वीज पाडून पृथ्वीच्या ठिकऱ्या करून टाको; अथवा पर्जन्यवृष्टि करून तृण उत्पन्न करो; ४३४ तरी त्या दोहोंलाही आकाश जसें जाणत नाही, त्याप्रमाणे विदेहदृष्टीनें जो देहामध्ये असतो, ४३५ तो देहादिकांच्या व्यापारांनीं ही सृष्टि नवी झाली कीं नाश पावली तरी, जाग्रुत झालेला मनुष्य जसें

स्वप्न दृष्टीनें पद्मात नाही, त्याप्रमाणे तोही पद्मात नाही. ४३६ परवीं चर्मचक्षूंनीं देहा-
पुरतेंच जे पद्मातात, ते खरोखर तोच व्यवहार
करणारा असें मानतात. ४३७ किंवा शेता-
च्या बांधावर गवताचा बाहुला ठेवलेला
असतो, तो राखित असतो तोंपर्यंत तो
खराच आहे, असें कोल्हा मानित नाहीं काय?
४३८ वेडा मनुष्य नेसला आहे कीं नागवा
आहे? हे लोकांनीं येऊन पद्मावे तेव्हां कळा-
वयाचें. युद्धांत पतन पावलेल्याचे घाव दुस-
ऱ्यांनीं मोजावेत! ४३९ किंवा महासतीचे
भोग खरोखर सारें जग पद्मात असतें. परंतु
तिला ती आग किंवा आपलें आंग किंवा लोक
ह्यांपैकीं काहींच दिसत नाहीं. ४४० त्याप्र-
माणे आत्मस्वरूपानें जो संपन्न झाला, दृश्या-
सह द्रष्टा नाहींसा होऊन गेला, तो, इंद्रिय-
समुदाय काय करित आहे हें जाणतच नाहीं.
४४१ अरे! मोठ्या लाटांमध्ये लहान लाटा जिरून
गेलेल्या पाहून किनाऱ्यावर उभे राहिलेल्या
लोकांनीं त्या एकमेकांस गिल्लित आहेत असें
जरी मानलें, ४४२ तरी, उदकाला कोणी
खातो काय? ह्याचा विचार कर. त्याप्रमाणे
जो पूर्ण-सिद्ध-झाला त्याला मारावयाला
दुसरें काहींच रहात नाहीं. ४४३ हें पद्मा!
सोन्याच्या चंडीनें-देवीनें-सोन्याच्याच त्रिशू-
ळानें सोन्याच्याच महिषाचा नाश केला;
४४४ तो पुजान्याला-गुरवाला- मात्र खरा
व्यवहार वाटतो. बाकी रेडा, त्रिशूळ, चामुं-
डा, हें सारें सोनेच. ४४५ तसेंच चित्रांतील
पाणी किंवा अग्नि; हा फक्त दृष्टीचा भास.
कापडाला जळणें आणि भिजणें हीं दोन्हीही
नाहींत. ४४६ त्याप्रमाणे जे मुक्त आहेत
त्यांचा देह पूर्वकर्मानें हालतो चालतो, तें
पाहून वेडे लोक तोच कर्ता असें ह्मणतात.
४४७ आणि त्याच्या कृतीनें त्रैलोक्याचा जरी
घात झाला, तरी तो त्यानें केला ही गोष्ट सुद्धां
बोलूं नये. ४४८ अरे! अंधकाराला प्रकाशानें
पाहिलें ह्मणजे मग तो दूर करावा हें कोणा-

पार्शी बोलार्हे? त्याप्रमाणे हान्याला दुसरें
ह्मणून कोणीच नाही. तो मारणार काय?
४४९ ह्मणून गंगेला नदी मिळाली ह्मणजे मग
ती जसा विटाळ समजत नाही, त्याप्रमाणे
त्याच्या बुद्धीला पाप आणि पुण्य यांचा
गंधही नसतो. ४५० हे धनंजया! अग्नीला
अग्नि भेटला तर पोळेल काय? किंवा शस्त्र
हें आपलें आपल्यासच कापील काय? ४५१
त्याप्रमाणे कोणतीही क्रिया जो आपल्याहून
वेगळी आहे असें समजतच नाही, तेथें
त्याच्या बुद्धीला लेप कोण घालणार? ४५२
ह्मणून कार्य, तें करणारा, आणि करणें हेंच
ज्याचें स्वरूप बनलें; हेंच जो मूर्तिमय बनला;
त्याला शरीरादिक कर्मांनीं बंध नाही. ४५३
कारण, कर्ता जो जीव तो कौशल्यानें पांचही
खाणी (हेतु) काढून इंद्रियरूप दहा आउ-
तांनीं तयार करतो. ४५४ तेव्हां न्याय आणि
अन्याय हा दोन बाजूंचा तट घालून कर्मांचीं
मंदिरें बांधण्यास क्षणाचाही विलंब लागत
नाहीं. ४५५ येवढ्या मोठ्या कामांतही आत्मा
हा खरोखर सहाय्य सुद्धां करित नाही. पण
तूं कदाचित् असें ह्मणशील कीं, आरंभाला
तरी तो हात लावित असेल. ४५६ पण तो
ज्ञानरूप असून साक्षिभूत मात्र असतो.
प्रवृत्तीचा संकल्प उठतो, तो निरोप तरी
आपण देईल काय? ४५७ तर कर्मप्रवृत्तीला
त्याच्या आंगांशीं काहींएक संबंध नाही. कार-
ण, प्रवृत्तीच्या विगारीमध्ये लोकच असतात.
४५८ ह्मणून जो आत्म्याचें शुद्ध स्वरूप
बनला, त्याला ह्या कर्मांची बंदिशाळा नाही.
४५९ परंतु अज्ञानरूप वस्त्रावर अन्यथा
ज्ञानाचें चित्र उठतें, तेथें प्रसिद्ध जी ही त्रिपु-
टी तीच चित्तारीण आहे." ४६०

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।

कारणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥

[परिज्ञाता] जे ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय । हें जगाचें बीजत्रय । तें
कर्मांची निःसंदेह । प्रवृत्ती जाण ॥ ६१ ॥ आतां यथाची गा

त्रया । व्यक्ती वेगळालिया । आह्मकें धनंजया । करूं रूप ॥ ६२ ॥ तरि जीवसूर्यबिंबाचे । रेश्मी श्रोत्रादिकें पांचें । धांवोनि विषयपद्माचे । फोडित मंड ॥ ६३ ॥ कीं जीवन्-पाचे वारु उपलणे । घेऊनि इंद्रियांचीं कर्काणें । विषय-देशीचें नांगवणें । आणीत जे ॥ ६४ ॥ हें असो इहीं इंद्रियां राहटे । जें सुखदुःखेसीं जीवा भेटे । तें सुषुप्तिकाळीं वोहटे । जेथ ज्ञान ॥ ६५ ॥ तया जीवा नांव ज्ञाता । आणि जें हें सांगीतलें आतां । तेंचि एथ पंडुसुता । ज्ञान जाण ॥ ६६ ॥ जें अंबिघेचिचे पोटी । उर्पजतखेवों किरिटी । आपणयातें बांटी । तिहीं ठायीं ॥ ६७ ॥ आपुलिये धांवें पुढां । घालूनि ज्ञेयांचा गुंढा । उभारी मागिलीकंडां । ज्ञातृत्वातें ॥ ६८ ॥ [ज्ञानं] मग ज्ञातया ज्ञेया दोघां । तो नांदणु-केचा बैगा । माजि जालेनि पैगा । वाहे जेणें ॥ ६९ ॥ टाकूनि ज्ञेयाची शिंव । प्रजे जयाची धांव । सकळ पदार्था नांव । सुतेसे जें ॥ ७० ॥ तें गा सामान्य ज्ञान । या बोला नाही आन । [ज्ञेयं] ज्ञेयाचेंही चिन्ह । आइक आतां ॥ ७१ ॥ तरि शब्दस्पर्श । रूप गंध रस । हा पंचविध आ-भास । ज्ञेयाचा तो ॥ ७२ ॥ जेसं एकेचि चूर्तफळें । इंद्रिया वेगळवेगळें । रसें वर्णें परिमळें । भेटिजे स्पर्शें ॥ ७३ ॥ तैसें ज्ञेय तरी एकसरें । परि ज्ञान इंद्रियद्वारें । घे ह्मणोनि प्रकारें । पांचें जालें ॥ ७४ ॥ आणि समुद्रीं बोधाचें जाणें । सरे लोणीपासीं धांवणें । कां फळीं सरे वाढणें । संस्याचें जेविं ॥ ७५ ॥ तैसें इंद्रियांच्या वाहवटीं । धांवतया ज्ञाना जेथ ठी । होय तें गा किरिटी । विषय ज्ञेय ॥ ७६ ॥ एवं ज्ञातया ज्ञाना ज्ञेया । तिहीं रूप केलें धनंजया । [त्रिविधा कर्मचोदना] हे त्रिविध सर्वे क्रिया । प्रवृत्ति जाण ॥ ७७ ॥ जे शब्दादि विषय । हें पंचविध जें ज्ञेय । तेंचि प्रिय कां अप्रिय । एकेपरिचें ॥ ७८ ॥ ज्ञान मोटकें ज्ञातया । दावी ना जंव धनंजया । तंव स्त्रीकारा की ल्यजावया । प्रवर्तेचि तो ॥ ७९ ॥ परि मीनांतें देखोनि वेकें । जैसा निर्धोनातें रंक । कां श्री देखोनि कामुक । प्रवृत्ति धरी ॥ ८० ॥ जैसैं खोलारां धांवें पाणी । भ्रमर पुष्पाचिये धांणी । ना ना सु-टला साजेंवणी । वत्सचि पां ॥ ८१ ॥ अगा स्वर्गीची उ-

र्वशी । एकोनि जेविं माणुसीं । वराता लावीजती आकाशी । यागांचिया ॥ ८२ ॥ पै पारिवें जैसा किरिटी । चढला नभाचिये पोटी । पारवी देखोनि लोटी । आंगचि सगळें ॥ ८३ ॥ हें ना धनगर्जनासरिसा । मयूर बोवाडे आकाशा । ज्ञाता ज्ञेया देखोनि तैसा । धांवचि घे ॥ ८४ ॥ ह्मणोनि ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता । हे त्रिविध गा पंडुसुता । होयचि कर्मां समस्तां । प्रवृत्ति येथ ॥ ८५ ॥ [कर्ता] परि तेचि ज्ञेय विपर्ये । जरी ज्ञातयाचें प्रिय होये । तरी भोगावयासाहे । क्षणही विलंब ॥ ८६ ॥ ना तरी अवचेतें । तेंचि विरुद्ध होऊनि भेटे । तरि युगांत वाटे । सांडावया ॥ ८७ ॥ व्याळा कां हागा । वरपडा जालेया नरा । हर्ष आणि दारारा । सरसाचि उठी ॥ ८८ ॥ तैसें ज्ञेय प्रियाप्रियें । देखिलेनि ज्ञातया होये । मग त्यागस्वीकारी वाहे । व्यापारातें ॥ ८९ ॥ तेथ रोगी प्रतिमंल्लाचा । गोसावी सर्वदळाचा । रथ सांडूनि पांयांचा । होय जैसा ॥ ९० ॥ तैसें ज्ञातेपणें जें असे । तें ये कर्ता ऐसिये दशे । जेविंतें बेसलें जैसैं । रंधन करू ॥ ९१ ॥ कां भंवरेचि केला मळा । वरकल जाला अंकसळा । ना ना देव रिगाला देउळा- । चिया कामा ॥ ९२ ॥ तैसा ज्ञेयांचि हांवा । ज्ञाता इंद्रियाचा मेळवा । राहाटवी तेथ पांडवा । कर्ता होय ॥ ९३ ॥ आणि आपण होउनी कर्ता । ज्ञाना आणि करंणता । तेथें ज्ञेयचि स्वभावता । कार्य होय ॥ ९४ ॥ ऐसा ज्ञानाचिये निजगती । पालट पडे गा सुमती । नेत्राची शोभा रातीं । पालटे जैसी ॥ ९५ ॥ कां अँदष्ट जालिया उदासु । पालटे श्रीमंताचा विलासु । पूर्णिमेपाठीं शीतांशु । पालटे जैसा ॥ ९६ ॥ तैसा चाळितां करेणें । ज्ञाता वेष्टिजे कर्तेपणें । तेथिचीं तियें लक्षणें । ऐक आतां ॥ ९७ ॥ तरि बुद्धि आणि मन । चित्त अहंकार हन । हें चतुर्विध चिन्ह । अंतःकरणचें ॥ ९८ ॥ बाह्य त्वचा श्रवण । चक्षु रसना प्राण । हें पंचविध जाण । इंद्रिय गा ॥ ९९ ॥ तेथ आंतुलें तंव करेणें । कर्ता कर्तव्या घे उभाणें । मग तें जरी जाणें । सुखा येतें ॥ १०० ॥ तरि बाहेरिलें तियेंही । चक्षुरादिकें दाहाही । उठोनि लवलाही । व्यापारा सुये ॥ १ ॥ मग तो इंद्रियकंदब । करविजे तंव रेबि । जंव

१ आकार. २ किरण. ३ कळी. ४ घोडे. ५ खोगीर पाठीवर नसलेले. ६ नामें व रूपें. ७ सुखदुःखभोग. ८ गाढ झोंपेंत. ९ अज्ञानाच्या. १० उपजतांच. ११ जाणावयाचा विषयरूप दगड. १२ आपण मागें उभें राहून पुढें विषयवृत्ति. १३ मार्ग, संबंध. १४ ज्ञानें. १५ ठेवितसे, घालीतसे. १६ आम्रफळांन. १७ शेवटापार्शी. १८ धान्याचें. १९ मार्गी. २० शेवट. २१ अल्प, थोडें. २२ मत्स्याला. २३ बगळा. २४ ब्रव्याला, ठेव्याला. २५ उतरणीकडे. २६ घाणी, बासावर. २७ संख्याकाळ, धार काढण्याची वेळ.

१ शिळ्या. २ पारवा पक्षी. ३ उलटे. ४ कदाचित्. ५ एकाएकी. ६ प्रलयासारखें संकट. ७ प्राप्त. ८ प्रिय किंवा अप्रिय ज्ञेय विषय पाहून ज्ञात्याला तसें=पूर्वोक्तासारखें होतें. ९ प्रीति. १० दुसऱ्या मल्लाच्या. ११ पायीं चालणें. १२ जेवणारें. १३ स्वयंपाकास. १४ भ्रमरानें. १५ कसोटी. १६ धातू लावून त्याची परीक्षा करणारा. १७ विषयेच्छेन. १८ विषयज्ञ. १९ क्रियेचें साधन. २० शरीरादि विषय. २१ देव. २२ चंद्र. २३ इंद्रियें. २४ मनादि क्रियासाधन. २५ माप. २६ घाली. २७ समुदाय. २८ राबणूक.

कर्तव्याचा लाभ । हातासि ये ॥ २ ॥ ना तें कर्तव्य जरी दुःखें । फळेस ऐसे देखे । तो लावी त्यागमुखें । तिचें दाहाही ॥ ३ ॥ मग फिटे दुःखाचा ठावो । तंव राहाटवी रात्रिदिनो । विकणुवातें करौवो । जयापरी ॥ ४ ॥ तैसेंनि त्यागस्वीकारी । बाहतां इंद्रियांची धुरी । ज्ञातयातें अवधारी । कर्ता ह्मणिए ॥ ५ ॥ [करण] आणि कर्तयाच्या सर्व कर्मा । आउतांचिया परी क्षमी । ह्मणोनि इंद्रियांतें आह्मी । करणें ह्मणों ॥ ६ ॥ [कर्म] आणि हेचि करणेंवरी । कर्ता क्रिया ज्या उभारी । तिया व्यापे तें अवधारी । कर्म एथ ॥ ७ ॥ सोनाराचिया बुद्धी लेणें । व्यापे चंद्रकरी चांदिणें । कां व्यापे वेव्हारूपणें । वेली जैसी ॥ ८ ॥ ना ना प्रभा व्यापे प्रकाशु । गोडिया इधुरसु । हें असो अवकाशु । आकाशी जैसा ॥ ९ ॥ तैसें कर्तयाचिया क्रिया । व्यापलें जें धनंजया । तें कर्म गा बोलावया । आन नाही ॥ १० ॥ [इति] एवं कर्म कर्ता करण । या तिहींचेंही लक्षण । सांगितलें तुज विचक्षण- । शिरोमणी ॥ ११ ॥ [त्रिविधः कर्मसंप्रदः] एथ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय । हें कर्माचें प्रवृत्तित्रय । तैसेंचि कर्ता करण कार्य । हा कर्मसंचय ॥ १२ ॥ वन्हीं ठेविला असे भ्रम । आधि बीजी जेविं डुम । कां मनीं जोडे काम । सदां जैसा ॥ १३ ॥ तैसा कर्ता क्रिया करणी । कर्माचें आहे जितेंवणी । सोनें जैसें खाणी । सुवर्णाचिये ॥ १४ ॥ ह्मणोनि हें कार्य मी कर्ता । ऐसें आधि जेथ पंडुसुता । तेथ आत्मा दूरी समस्तां । क्रियांपासीं ॥ १५ ॥ यालागीं पुढतपुढती । आत्मा वेगळाचि सुमती । आतां असो हें किती । जाणतासि तूं ॥ १६ ॥

“ज्ञान, ज्ञाता आणि ज्ञेय हीं जीं जगाचीं तीन बीजें, तींच निःसंशय कर्मप्रवृत्तीस कारणीभूत आहेत हें ध्यानांत ठेव. ४६१ तर आतां धनंजया! ह्या तिघांच्या लक्षणांचें निरनिराळें विवेचन करूं, ऐक. ४६२ जीवरूप सूर्यबिंबाचे श्रोत्रादिक पांच किरण धांवून येऊन विषयरूप कमळाची कळी उकलतात. ४६३ किंवा जीव हाच कोणी एक राजा; त्याचे उपलाणे वारू, इंद्रियांचीं नांवें व रूपे घेऊन विषयदेशाचे सुखदुःखरूप भोग हीच लूट, ती आणतात. ४६४ हें असो. ह्या इंद्रियांमध्ये जें वागतें, जें सुखदुःखास घेऊन जिव्हास भेटतें; तें ज्ञान गाढनिद्रेमध्ये जेथें लय पावतें;

४६५ त्या जिवाचें नांव ज्ञाता. आणि आतां जें हें सांगितलें तें अर्जुना! येथें ज्ञान असें समजावें. ४६६ हे किरीटी! तें अविद्येच्या पोटी जन्मल्याबरोबरच आपल्याला तीन ठिकाणीं विभागून सोडतें. ४६७ जाणावयाचा विषयरूप जो दगड, तो आपल्या धांवच्याही पुढें घालून मागच्या बाजूला जो ज्ञातृत्वानें उभारतो, ४६८ मग ज्ञाता आणि ज्ञेय ह्या दोघांनाही नांदणूक करण्याचा जो मार्ग, तो मध्यें जें निपजल्याच्या योगानें वाहतो; ४६९ ज्ञेयाची शांव लागली ह्मणजे त्याची धांव संपते; तेंच ज्ञान सकल पदार्थास नांवारूपास आणतें; ४७० अरे! सामान्य ज्ञान ह्मणतात तें हें होय. ह्या भाषणांत संशय नाही. आतां ज्ञेयाचें लक्षण ऐक. ४७१ तर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध हा जो पांच प्रकारचा आभास आहे, तो ज्ञेयाचा आहे. ४७२ एकाच अव्ययाच्या फलानें रस, वर्ण, गंध स्पर्श येणेंकरून वेगवेगळ्या इंद्रियांना भेटावें. ४७३ त्याप्रमाणें ज्ञेय ह्मणजे विषय जरी एकच आहे, तरी तो इंद्रियांच्या द्वारानें ज्ञानाचा स्वीकार करतो ह्मणून त्याचेही पांच प्रकार होतात. ४७४ आणखी प्रवाहाचें जाणें समुद्रापर्यंत; धांवणें सीमेपर्यंत गेलें कीं संपतें; किंवा फळ आलें कीं जशी धान्याची वाढ खुंटते, ४७५ त्याप्रमाणें अर्जुना! इंद्रियांच्या मार्गानें धांवतांना ज्ञानाचा जेथें शेवट होतो, तें ज्ञेयाचें स्वरूप होय. ४७६ अशा प्रकारें धनंजया! ज्ञाता, ज्ञान आणि ज्ञेय ह्या तिहींचें स्वरूप सांगितलें. ह्या तिघांकडून होणाऱ्या ज्या क्रिया, ती प्रवृत्ति होय. हें लक्षांत असूं दे. ४७७ कारण, शब्दादिविषय हें जें पांच प्रकारचें ज्ञेय, तें प्रिय किंवा अप्रिय कोणत्या तरी एका प्रकारची, ४७८ अल्पता जांपर्यंत ज्ञात्याला ज्ञान दाखवून देत नाही, तांपर्यंत तो स्वीकार करण्याला किंवा त्याग करण्याला सरसावतोच. ४७९ परंतु मासा पाहिला ह्मणजे जसा बगळा; द्रव्याला पाहिलें ह्मणजे जसा भिकारी;

१ फोलयुक्त धान्याला. २ सुपाचा वारा. ३ प्रवृत्ति. ४ नांगरादि. ५ समर्थ. ६ क्रियासाधन. ७ विस्तारानें. ८ अथवा. ९ कर्माचें साहित्य. १० जिव्हाळा.

किंवा स्त्रीला पाहून जसा विषयी पुरुष उता-
वळा होतो, त्याप्रमाणे, ४८० पाणी जसें स-
खल प्रदेशाकडे धांवते; किंवा भ्रमर जसा पु-
ष्पाच्या परिमळाकडे धांवतो; किंवा सायंकाळीं
धार काढण्याच्या वेळेला जसें वासकं सुटते,
४८१ अरे! स्वर्गांतल्या उर्वशीची कीर्ति ऐकू-
नच मनुष्ये जशीं आकाशामध्ये अज्ञानाच्या
हुंड्या पाठवितात, ४८२ किंवा अर्जुना!
पारवा आकाशांत उंच गेलेला असला, आणि
पारवी त्याच्या दृष्टीस पडली, ह्मणजे तो जसा
सारें आंग एकदम धाडकर खालीं टाकून देतो,
४८३ त्याप्रमाणे, किंवा मेघगर्जनबरोबर मोर
जसा आकाशाकडे धांव घेत सुटतो, त्याप्रमाणे
ज्ञेयाला-ह्मणजे विषयांना पाहून ज्ञाताही धांव
घेत सुटतो. ४८४ ह्मणून हे अर्जुना! ज्ञान,
ज्ञेय, आणि ज्ञाता हे तिघेच येथे कर्माच्या सर्व
प्रवृत्तीस कारण आहेत. ४८५ पण तेंच ज्ञेय
(विषय) ज्ञात्याला प्रिय झालें, तर त्याचा
उपभोग घेण्याला एक क्षणाचाही विलंब सहन
होत नाही. ४८६ किंवा एकापकीं तेंच विरुद्ध
होऊन आलें तर सोडवावयाला युगांत झाला
असें वाटतें. ४८७ पुरुषाला सर्प किंवा हार
ह्यांचा लाभ झाला तर, हर्ष आणि भय दोन्ही
एकदमच उठतात, ४८८ तसें ज्ञात्याला,
ज्ञेयामध्ये प्रिय किंवा अप्रिय दृष्टीस पडलें
ह्मणजे होऊन जातें. आणि मग तो त्याग किंवा
स्वीकार ह्याचा अवलंब करतो. ४८९ त्या
वेळेस दुसऱ्या मलाबरोबर कुस्ती धरण्याची
ज्याला हौस असते, तो सर्व सेनापतींचा अ-
धिपती असूनही रथांतून उतरून पायीं चालूं
लागतो, ४९० त्याप्रमाणे ज्ञातेपणानें जें असतें
तेंच कर्ता ह्या स्थितीला पोचतें. जेवणारांनीं
जसें स्वयंपाक करावयाला बसावें, ४९१ किंवा
भ्रमरांनींच जसा मळा लावावा, कसोटीनेंच
जसें परीक्षक बनावें, ४९२ त्याप्रमाणे अर्जुना!
ज्ञेयाच्या-विषयाच्या-इच्छेनें ज्ञाता-विषयज्ञ-
जेव्हां इंद्रियसमुदाय कामास लावतो, तेव्हां
तो कर्ता होतो. ४९३ आणखी कर्ता आपण-

हून ज्ञानाला क्रियेचें साधन करतो, तेव्हां
ज्ञेय असतें तें आपोआपच कार्य होतें. ४९४
हे बुद्धिमंता! अशा प्रकारे स्वयंधर्मानें ज्ञा-
नाच्या गतीमध्ये पालट होतो. रात्री नेत्रांची
शोभा ज्याप्रमाणे पालटते, ४९५ किंवा दैव
फिरलें ह्मणजे श्रीमंताच्या विलासांत व्यत्यय
येतो, पूर्णिमेनंतर चंद्र जसा बदलतो, ४९६
त्याप्रमाणे इंद्रियांची हालचाल करण्यामुळे
ज्ञाता असतो तो कर्तेपणामध्ये गुंततो. तेथचीं
त्यांचीं लक्षणें आतां ऐक. ४९७ तर बुद्धि आणि
मन; चित्त आणि अहंकार; हे चार प्रकारचें
लक्षण अंतःकरणाचें होय. ४९८ बाहेरची
त्वचा; कान; डोळे; जिह्वा; नाक; हे इंद्रियांचे
पांच प्रकार होत. ४९९ तेव्हां आंतील मनादि-
क्रियासाधनांनीं कर्ता आहे तो, कर्तव्याचें
माप घेऊं लागतो. आणि त्यांत सुखप्राप्ती
होते असें जर त्यास वाटलें, ५०० तर बाहे-
रील नेत्र आदिकरून जीं दहा इंद्रियें, तींही
तत्काळ त्याच व्यापारांत घालतो. ५०१ मग
तो इंद्रियसमुदाय, कर्तव्याचा लाभ हातास
येईपर्यंत त्यांस राबवितो. ५०२ किंवा तेच
कर्तव्यांत जर दुःख प्राप्त होतें असें दिसून
येईल, तर तो त्या दहानांही त्याजपासून
पराङ्मुख करतो. ५०३ मग दुःखाचा गंड
मोडेपर्यंत त्यांना रात्रंदिवस राबवितो. सुपा-
चा वारा ज्याप्रमाणे धान्याचा स्वीकार करतो,
व कोंड्याचा त्याग करतो, ५०४ त्याप्रमाणे
त्याग आणि स्वीकार करून इंद्रियांची प्रवृत्ति
होत असली, ह्मणजे ज्ञात्याला कर्ता असें
ह्मणतात. ५०५ आणि कर्त्याच्या सर्व कर्मा-
मध्ये इंद्रियें हीं नांगराप्रमाणे काम करण्यास
समर्थ असतात ह्मणून त्यांस आक्षी क्रियेचीं
साधनें असें ह्मणतात. ५०६ आणि ह्याच
इंद्रियांकडून कर्ता ज्या ज्या क्रिया उत्पन्न
करतो, त्यांनीं जें व्यास झालेलें असतें तें कर्म
होय. हे ध्यानांत असुं दे. ५०७ सोनाराच्या
बुखीनें अलंकार होतात; चंद्रकिरणांनीं
चांदणें होतें; किंवा विस्तारानें जशी वेली

पसरते, ५०८ किंवा प्रभेनें जसा प्रकाश प्राप्त होतो; गोडीनें जसा ऊंस व्याप्त होतो; हे असो, अवकाशामध्ये जसा अवकाश व्याप्त होतो; त्याप्रमाणें हे धनंजया! कर्त्याच्या क्रियेनें व्यापलेलें जें, तें कर्म होय. ह्या बोलण्यांत संशय नाही. ५१० अशा प्रकारे हे मर्मज्ञशिरोमणे! कर्म, कर्ता, आणि कारण ह्या तिहींचेंही लक्षण तुला सांगितलें. ५११ येथें ज्ञाता, ज्ञान, आणि ज्ञेय ह्या कर्माच्या तीन प्रवृत्ति आहेत. त्याचप्रमाणें कर्ता, कारण आणि कार्य हे कर्माचें साहित्य होय. ५१२ अग्नीमध्ये जसा धूर ठेवलेला असतो; बीजामध्ये ज्याप्रमाणें वृक्ष ठेवलेला असतो; किंवा निरंतर मनामध्ये जसा काम उत्पन्न झालेला असतो, ५१३ त्याप्रमाणें; किंवा सोन्याच्या खाणीमध्ये जसे सोने असावें त्याप्रमाणें; कर्ता, क्रिया आणि क्रियासाधन हीं तिन्हीं मिळून कर्माचा जिव्हाळा आहे. ५१४ ह्मणून हे अर्जुना! हे कार्य, मी हा कर्ता; असें जेथें असतें, तेथें सर्व क्रियांपासून दूर असणारा आत्मा त्या क्रियेपाशीं येतो. ५१५ ह्याकरितां हे सुमती! पुन्हा पुन्हा आत्मा हा अगदीं निराळाच आहे हे ध्यानांत ठेव. आतां हे किती सांगावें? तूही जाणतोसच. ह्मणून तें असो." ५१६

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।

प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥१९॥

[ज्ञानमिति] परि सांगितलें जें ज्ञान । कर्म कर्ता हन । ते तीन्हीं तिहीं ठायीं भिन्न । गुणीं आहाति ॥ १७ ॥ ह्मणोनि ज्ञाना कर्मा कर्तया । पातेजों नये धनंजया । जे दोनी बांधती सोडावया । ऐकचि प्रौढ ॥ १८ ॥ [प्रोच्यते गुणसंख्याने] तें सात्विक ठावें होये । तो गुणभेद सांगों पाहें । जो सांख्यशास्त्री आहे । उवाइला ॥ १९ ॥ जें विचारक्षीरसमुद्र । स्वबोधकुमुदिनीचंद्र । ज्ञानबोळां नरेंद्र । शास्त्रांचा जें ॥ ५२० ॥ कीं प्रकृतिपुरुष दोनी । मिसळलीं दिवोरजनी । तिर्यें निवडिता त्रिभुवनीं । मूर्तड जें ॥ २१ ॥

जेथ अपारा मोहराशी । तत्त्वाच्या मापीं चोविसीं । उमाणें घेऊनि पंरेशीं । सुरवाडिजे ॥ २२ ॥ अर्जुना तें सांख्यशास्त्र । पडे जयाचें स्तोत्र । [यथावच्छृणु तान्यपि] तें गुणभेदचरित्र । ऐसें आहे ॥ २३ ॥ जे आपुलेनि आंगिकें । त्रिविधपणाचेनि अंकें । दृश्यजात तितकें । अंकित केले ॥ २४ ॥ एवं सत्त्वरजतमा । तिहींची एवढी असे महिमा । जे त्रैविध्य आदिब्रह्मा । अतिकमी ॥ २५ ॥ परि विश्वाची आवडी मीदी । जेणें भेदलेनि गुणभेदी । पडिली तें तंव आदी । ज्ञान सांगों ॥ २६ ॥ जे दिष्टी जरी चोख कीजे । तरी भलतेंही चोख सुजे । तैसें ज्ञानें शुद्धें लाहिजे । सर्वही शुद्ध ॥ २७ ॥ ह्मणोनि तें सात्विक ज्ञान । आतां सांगों दे अवधान । कैवल्यगुणनिधान । श्रीकृष्ण ह्मणे ॥ २८ ॥

“तसेंच ज्ञान, कर्म आणि कर्ता हीं तीन सांगितलीं खरीं, परंतु गुणांच्या संबंधानें आणखीही तीन तीन भेद होतात. ५१७ ह्मणून हे धनंजया! ज्ञानावर, कर्मावर किंवा कर्त्यावरही विश्वास ठेवूं नये. कारण, दोन्हीही बांधणाऱ्यांपासून सोडविण्याला समर्थ असें एकच आहे. ५१८ तें सात्विक नीट रीतीनें समजेल असे त्याचे निरनिराळे भेद आहेत ते आतां सांगतां. त्यांचें विवरण सांख्यशास्त्रामध्ये केलेलें आहे. ५१९ जें विचाराचा क्षीरसमुद्र; आत्मज्ञानरूप कमलाला प्रफुल्लित करणारे चंद्र; ज्ञाननेत्रानें पाहणाऱांना जें शास्त्राचा राजा; ५२० किंवा प्रकृति आणि पुरुष हीं दिवसरात्रीप्रमाणें मिश्र झालेल्याची निवडणूक करण्याला त्रिभुवनामध्ये जे सूर्य; ५२१ जेथें मोहाच्या अपार राशी चोवीस तत्त्वांच्या मापानें माप घेऊन परतत्त्वानें सुख प्राप्त होतें, ५२२ अर्जुना! तें सांख्यशास्त्र ज्याची स्तुति गातें; तें गुणभेदाचें चरित्र असें आहे. ५२३ जें आपल्या सामर्थ्यानें तीन प्रकारच्या योगेंकरून जितकें ह्मणून दृश्यजात आहे, तितकें सर्व अंकित करून

१ विश्वासू नये. २ रज व तम. ३ सत्त्व-समर्थ. ४ स्पष्ट केला. ५ आत्मबोधकमलास प्रफुल्लितकर्ता चंद्र. ६ दिवस-रात्रीप्रमाणें. ७ सूर्य.

१ माप. २ परतत्वाशीं. ३ सुखी व्हावें. ४ स्वप्न. ५ साक्षानें. ६ आकारानें. ७ तीन प्रकारांनीं. ८ मेळा. ९ कळें, समजें.

सोडतें. ५२४ अशा प्रकारें सत्व, रज आणि तम ह्या तिहींची व्यापकता येवढी मोठी आहे कीं, तें ब्रह्मदेवापासून तों किड्यापर्यंत सर्वांचें अतिक्रमण करतें. ५२५ परंतु विश्वातील सर्व समुदाय ज्याच्या भेदानें भिन्न भिन्न गुणात्मक झाले आहेत, तें ज्ञान आर्थां सांगूं. ५२६ कारण, दृष्टि चांगली झाली झणजे कोणतेंही चांगलें समजतें. त्याप्रमाणें शुद्धज्ञानानें सारेंच शुद्ध प्राप्त होतें.” ५२७ झणून कैवल्यगुणनिधान श्रीकृष्ण झणतात “तें सात्विक ज्ञान आतां सांगूं. लक्ष्य दे.” ५२८

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।

अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम् ॥२०॥

[सर्वभूतेषु येनैकं] तरी अर्जुना गा तें फुडें । सात्विक ज्ञान चोखडें । ज्याच्या उदयीं ज्ञेय बुडे । ज्ञातेनिशीं ॥ २९ ॥ जेसा सूर्य न देखे आंधारें । संरिता नेणितजी सागरें । कां कवळिलिया न धरे । आत्मच्छाया ॥ ५३० ॥ तयापरी जया ज्ञाना । शिवादि तृणावसाना । इया भूत-व्यक्ति भिन्ना । नाडळती ॥ ३१ ॥ [भावमव्ययमीक्षते] जेंसं हातें चित्र पाहातां । होय पाणियें मीठ धुतां । कां चेंबोनि खप्रा येतां । जेंसं होय ॥ ३२ ॥ तेंसं ज्ञानें जेणें । करितां ज्ञातेंव्यातें पाहाणें । जाणता ना जाणणें । जाणावें उरे ॥ ३३ ॥ [अविभक्तं विभक्तेषु] पै सोनं आटुनि लेणीं । न काढीती आपुलिया आयणी । कां तरंग न घेपती पाणी । गाळुनि जेंसं ॥ ३४ ॥ तैसी जया ज्ञानाचिया हाता । न लगेचि दृश्यकथा । [तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम्] तें ज्ञान जाण सर्वथा । सात्विक गा ॥ ३५ ॥ आरिसा पाहों जातां कोडें । जेंसं पाहातेंचि कां रिगे पुडें । तेंसं ज्ञेय लोटोनि पडे । ज्ञाताचि जें ॥ ३६ ॥ पुढती तेंचि सात्विक ज्ञान । जें मोक्षलक्ष्मीचें भुवन । हें असो ऐक चिन्ह । राजसाचें ॥ ३७ ॥

“तर अर्जुना ! ज्याच्या उदयानें ज्ञात्या-सहवर्तमान ज्ञेय लुप्त होऊन जातें, तेंच शुद्ध सात्विक ज्ञान हें स्पष्ट समजावें. ५२९ सूर्य ज्याप्रमाणें आंधारास पहात नाही; नद्या समुद्राला पहात नाहीत; किंवा आपल्या छायेला जशी वेगेंत धरतां येत नाही; ५३० त्याप्रमाणें

ज्या ज्ञानाला शिवापासून तृणापर्यंत ह्या भूत-व्यक्ति भिन्न अशा दिसतच नाहीत. ५३१ सारवून चित्र पाहतांना, पाण्यानें मीठ धुतांना, जसें होतें; किंवा जागे झाल्यानंतर स्वप्राची जशी अवस्था होते, ५३२ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाच्या योगेंकरून विषयांस पाहिलें असतां विषय, ज्ञाता, व ज्ञान हीं तिन्हीही उरत नाहीत, ५३३ आपल्या आवडीसाठीं अलंकार आटून सोनं काढतात असें नाही, किंवा पाणी टाकून जसें तरंग घेत नाहीत, ५३४ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाच्या हाताला दृश्यपदार्थ झणून लागतच नाहीत. तेंच ज्ञान खरोखर सात्विक आहे असें समज. ५३५ कौतुकानें भारसा पहावयास जावें तों, पहाणाराच पुढें उभा राहतो. त्याप्रमाणें जेथें जें ज्ञाताच बनून राहतें; ५३६ मोक्षलक्ष्मीचें मंदिर असें जें, तेंच सात्विक ज्ञान श्रेष्ठ होय. हें असो. आतां राजस ज्ञानाचें लक्षण ऐक.” ५३७

पृथक्त्वे न तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् ।

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥ २१ ॥

[पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं] तरी पार्था परियेस । तें ज्ञान गा राजस । जें भेदाची कांस । धरुनि चाले ॥ ३८ ॥ [नानाभावान्पृथग्विधान्] विचित्रता भूतांचिया । आपण आतां ठिकरिया । बहु चक्रे ज्ञातया । आणिली जेणें ॥ ३९ ॥ जेंसं साचा रुपा आड । घालुनि विसराचें कवाड । मग खप्राचें कांवाड । विवरी निद्रा ॥ ५४० ॥ तेंसं खज्ञानाचिये पांळी । बाहेरि मिथ्यामोहाचे खळीं । तिहीं अवस्थांची वझाळी । दावी जें जीवा ॥ ४१ ॥ आळंकार-पणें झांकलें । बाळका सोनं कां वायां गेलें । तेंसं नामीं रूपीं दुरावलें । अद्वैत जया ॥ ४२ ॥ अवतरली गाढग्या घडां । पृथ्वी अनोळख जाली मूढां । वन्दि जाला कौनडा । दीपत्वासाठीं ॥ ४३ ॥ कां वल्लपणाचेनि आरोपें । मूर्खांप्रति तंतु हारपे । ना ना मुग्धां पट लोपे । दाऊनि चित्र ॥ ४४ ॥ तैसी जया ज्ञाना । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु जाणोनि भूतव्यक्ती भिन्ना । ऐक्यबोधाची भावना । निर्मोनि गेली

१ शुद्ध. २ नद्या. ३ गवतापर्यंत. ४ न दिसती. ५ सारवून. ६ जाणें होऊन. ७ विषयाचें. ८ दृष्टीनं, बुद्धीनं. ९ आवडीनं. १० मंदिर.

१ व्यापून. २ वेगवेगळीला. ३ चकभूल, भ्रम. ४ ओशें. ५ स्पष्ट करी. ६ आवार. ७ क्रीडा. ८ घागरीमध्यें. ९ अपरिचित. १० मूर्खांस. ११ नाश पावली.

॥ ४५ ॥ मग इधनीं भेदला अनळ । फुलावरी परिमळ । कां जळभेद सकळ । चंद्र जैसा ॥ ४६ ॥ तैसे पदार्थभेद बहुवस । जाणोनि लहान थोर वेध । [तज्ज्ञानं विद्धि राजसं] आतलें तें राजस । ज्ञान येथ ॥ ४७ ॥ आतां तामसाचेंही लिंग । सांगेन तें बोळख चांग । डावलावया मातंग । सदन जैसे ॥ ४८ ॥

“तर पार्था! ऐक. भेदाची कास धरून चालणारें जें ज्ञान, तें राजस होय. ५३८ ज्यानें आपण व्यास होऊन भूतांचे नानाविध भेद करून त्यांस वैचित्र्य आणलें आहे, आणि ज्ञात्यालाच ज्यानें चकभूल करून सोडलें. ५३९ ज्याप्रमाणें खऱ्या स्वरूपाच्या आड विस्मरणाचें कवाड घालून मग शोप जशी स्वप्नाचें ओझें लादते, ५४० त्याप्रमाणें आपल्या ज्ञानाच्या आवाराबाहेर मिथ्या मोहाच्या खळ्यामध्ये जिवाला जें तीन अवस्थांची क्रीडा दाखवितें. ५४१ अलंकारानें मुलांना झांकलें ह्मणून सोनें काय व्यर्थ गेलें? त्याप्रमाणें नामानें आणि रूपानें ज्याला अद्वैत दुराघतें; ५४२ गाडग्यामध्ये आणि घागरीमध्ये शिरली ह्मणून मूर्खाला पृथ्वीची (मातीची) ओळख नाहींशी होते; दिव्याच्या योगानें अग्नि अपरिचित होतो; ५४३ किंवा वस्त्रपणाच्या आरोपामुळें मूर्खाना तंतूच नाहींसे झालेसे वाटतात; किंवा अज्ञानाला चित्र दाखवून कापड नाहींसें होतें; ५४४ त्याप्रमाणें ज्या ज्ञानाला मिळाल्यानें भूतव्यक्ति भिन्न भिन्न आहेत असें वाटतें, व ऐक्यज्ञानाची भावना लयास जाते; ५४५ तेव्हां जळणानें अग्नीचीं जशीं निरनिराळीं स्वरूपें व्हायचीं; फुलांप्रमाणें परिमळ जसा निरनिराळा व्हावा, किंवा पूर्ण असलेला चंद्र जसा निरनिराळ्या जळानीं भिन्न भिन्नरूप व्हावा, ५४६ त्याप्रमाणें अनेक प्रकारचे पदार्थमात्रांचे भेद ते लहानथोरच आहेत हें मनांत आणून व्यास होणारें जें ज्ञान तें राजस होय. ५४७ आतां टाळून जाण्या-

साठीं मांगाचें घर दाखविल्याप्रमाणें तामसाचेंही लक्षण सांगतों. तेंही नीट ध्यानांत ठेव.” ५४८

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहेतुकम् ।

अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

[यत्तु] तरि किरिटी जें ज्ञान । हिंडे विधीचेनि वळें हीन । श्रुति पाठमोरी नम । ह्मणौनि तया ॥ ४९ ॥ येरीही शास्त्र बाधकारी । जें निंदेचे विटाळवरी । बोळविलेंसे ढोंगरी । म्लेंच्छधर्माच्या ॥ ५५० ॥ जें गा ज्ञान ऐसे । गुणग्रहें तामसें । घेतलें भोंवे पिसें । होऊनियां ॥ ५१ ॥ जें सोयरिके बाध नेणे । पदार्थां निषेध न ह्मणे । निरोपिलें जैसें सुणें । शून्यप्रामी ॥ ५२ ॥ तया तोंडीं जें नोडळे । कां खातां जेणे पोळे । तेंचि येक वाळे । येर बेचि तें ॥ ५३ ॥ पें सोनें चोरितां उदिर । न ह्मणे थरविथर । नेणें मांसखांदूर । काळें गोरें ॥ ५४ ॥ ना ना वनामाजि बोहरी । कंडसणी जेवि न करी । कां जीत मेलें न विचारी । बैसतां मासी ॥ ५५ ॥ अगा वांतां कां वाढिलेया । साजुक कां संडलिया । विवेक कावळिया । नाहीं जैसा ॥ ५६ ॥ तैसें निषिद्धं सांठुनि घावें । कां विहित आदरें ध्यावें । हें विषयांचेनि नावें । नेणेचि जें ॥ ५७ ॥ जेतुलें आड पडे दिटी । तेतुलें घेचि विषयासाठीं । मग तें खीद्रव्य वांटी । शिश्रोदरां ॥ ५८ ॥ तीर्थातीर्थ हे भोष । उदकीं नाहीं सनोळख । तृषा वोळे तेंचि मुख । वांचूनियां ॥ ५९ ॥ तयाचिपरी खोखाखाय । न ह्मणे निद्यानिघ । तोंडा आवडे तें मेथें । ऐसाचि बोध ॥ ५६० ॥ आणि खीजात तितुकें । त्वचेंद्रियेंचि वोळखे । तियेविषई सोयरिके । सादरचि बहु ॥ ६१ ॥ पें स्वार्थी जें उषकरे । तयाचि नाम सोयिरें । देहसंबंध न सरे । जिये ज्ञानीं ॥ ६२ ॥ मृत्यूचें आघवेंचि अन्न । आगी आघवेंचि दधेन । तैसें जगचि आपलें धन । तामसज्ञाना ॥ ६३ ॥ [कृत्स्नवदेकस्मिन्] ऐसेनि विश्व सकळ । जेणें विषयचि मानिलें केवळ । तया एक जाण फळ । देहभरण ॥ ६४ ॥ आकाशपतिता नीरा । जसा सिधुचि येक

१ विरुद्धाचरणातें. २ निंदा करून विटाळून टाकलें. ३ तमोगुणरूप नकानें. ४ पिशाच, अस्मिष्ठ. ५ शरीरसंबंधाविषयी. ६ सोडिलें. ७ कुत्रें. ८ ओसाड गांवीं. ९ प्राप्त होत नाहीं. १० त्यागी. ११ बरें वाईट. १२ मांसभक्षक. १३ अग्नी, वणवा. १४ विचार. १५ ओकलेलें. १६ कुजलेलें. १७ अपवित्र. १८ शास्त्रप्रतिपादित. १९ ह्मणणें. २० ओळखीची. २१ हरे. २२ भक्ष्याभक्ष्य. २३ पवित्र. २४ कामास येतें. २५ काष्ठ. २६ विषयच सर्व जग असें मानलें. २७ पोषण.

१ प्रतिबिंबत्वानें भेद. २ व्यापलें. ३ लक्षण, चिन्ह. ४ मांगाचें घर.

धारा । तैसें कृत्यजात उदरा- । लागींचि बुझे ॥ ६५ ॥
 [अद्वैतुकं] वांचूनि खगं नरक आथी । तया हेतु प्रवृत्ती
 निवृत्ती । इये आघवीयेचि राती । जाणिवेची जें ॥ ६६ ॥
 [कार्ये सक्तं] जें देहखंडा नाम आत्मा । ईश्वर पाषाण
 प्रतिमा । यया परीती प्रमा । ठळों नेणे ॥ ६७ ॥ [अतत्त्वा-
 र्थवत्] ह्याने पडिलेनि शरीरें । केलेनिसी आत्मा सरें । मा
 भोगावया उरें । कोण वेणें ॥ ६८ ॥ ना ईश्वर पाहातां
 आहे । तो भोगवी जरी हें होये । तरी देवचि खाये । विकू-
 नियां ॥ ६९ ॥ गांवींचे देवळेश्वर । नियांमकचि होती साचार ।
 तरि देशींचे जोंगर । जगे कां असती ॥ ५७० ॥ [अल्पं च]
 ऐसा विपार्यें देव मानिजे । तरि पाषाणमात्रचि जाणिजे ।
 आणि आत्मा तंव ह्याणिजे । देहातेंचि ॥ ७१ ॥ येरें पाप-
 पुण्यादिकें । तें आघवेंचि करोनि लटिकें । हित मानी अभि-
 मुखें । चरणें जें कां ॥ ७२ ॥ जें चामाचे ढोळे दाविती ।
 जें इंद्रियें गोडी लाविती । तेंचि साच हे प्रेतीती । कुंडी
 जया ॥ ७३ ॥ [तत्तामसं] किंवहुना ऐसी प्रथा । वाढती
 देखसी पार्थी । धूमाची वेली वृथा । आकाशीं जैसी ॥ ७४ ॥
 कोरडा ना बोला । उपयोगा आथी गेला । तो वाढोनि
 मोडला । भेंडें जैसा ॥ ७५ ॥ ना ना उसांचीं कणसें । कां
 नपुंसकें माणुसें । वन लागलें जैसें । सोबरीचें ॥ ७६ ॥ ना
 तरी बाळकाचें मन । कां चोराघरीचें धन । अथवा गळ-
 स्तन । शोळियेचें ॥ ७७ ॥ तैसें जें बांयाणें । बोसोळ दिसे
 जाणणें । तयातें मी ह्याणें । तामस ज्ञान ॥ ७८ ॥ [उदाहृतं]
 तेंही ज्ञान इया भाषा । बोलिजे तो भाव ऐसा । जात्य-
 धाचा कां जैसा । ढोळ्या वाड ॥ ७९ ॥ कां बधिराचे नीट
 कान । अपेया नाम पान । तैसें आडनांव ज्ञान । तामसा
 तया ॥ ५८० ॥ हें असो किती बोलावें । तरि ऐसें जें
 देखावें । तें ज्ञान नोहे जाणावें । ढोळेंस तम ॥ ८१ ॥ एवं
 तिहीं गुणी । भेदलें र्थधालक्षणीं । ज्ञान श्रोतेशिरोमणी ।
 दाविलें तुज ॥ ८२ ॥ आतां याचि त्रिप्रकारा । ज्ञानाचेनि
 धनुर्धरा । प्रकाशें होती गोचरी । कर्तयांच्या क्रिया ॥ ८३ ॥
 ह्यार्णानि कर्म पै गा । अनुसरे तिहीं भागां । मोहरें जालियां
 बोधा । तोय जैसें ॥ ८४ ॥ तेंचि ज्ञानत्रयवशें । त्रिविध कर्म
 जें असे । तेथ सात्विक तंव ऐसें । परिस आधीं ॥ ८५ ॥

“तर अर्जुना ! जें ज्ञान विधिरूप वस्त्रा-
 वांचून हिडतें; आणि तें नग्न असल्यामुळे

१ परिच्छिन्न देहाला. २ बुद्धि. ३ कर्मासहवर्तमान.
 ४ नासे. ५ एक नियते. ६ क्वचित्. ७ खाणें. ८ चामड्याचे.
 ९ अनुभव. १० खरी. ११ स्थिति, ख्याति. १२ भेंड्याचा
 वृक्ष. १३ निवडुंगाचें. १४ निरर्थक. १५ शून्य, ओशाळ,
 वाईट. १६ मोठा. १७ प्रत्यक्ष अंधार. १८ सर्वे लक्षणानीं
 युक्त. १९ प्रत्यक्ष. २० मार्गास लागलेले.

त्यास श्रुति पाठमोरी होते. ५४९ इतर श-
 स्त्रांनींही ज्याच्यावर निंदेचा बहिष्कार ठेवून
 म्लेंच्छधर्माच्या डोंगरावर बोलवण करून
 दिली आहे. ५५० असें जें ज्ञान तामसगुणाच्या
 आग्रहानें तामसानें घेतलेलें, जें वेडें होऊन
 भ्रमत राहणारें; ५५१ ज्याला शरीरसंबंधाविषयीं
 प्रतिबंध ह्याणून ठाऊकच नाही; पदार्थांमध्ये
 निषेध ह्याणून ह्याणतच नाही. ओसाड गांवांत
 कुत्रें सोडलें ह्याणजे, ५५२ त्याच्या तोंडाला
 जेवढें मिळत नाही, किंवा खातांना ज्यानें
 तोंड भाजतें, तेवढें मात्र टाकावयाचें. बाकी
 सारें स्वाहा ! ५५३ तसेंच उंदीर सोने चोर-
 तांना हलकें भारी ह्याणत नाही; किंवा मांस
 खाणारा काळें गोरें ह्याचा विचार करीत नाही,
 ५५४ किंवा वनामध्ये अग्नि जसा कांहीं विचार
 करीत नाही; किंवा माशी वसतांना हा जि-
 वंत आहे कां मेलेला आहे ह्याचा विचार
 करीत नाही; ५५५ अरे ! ओकलेलें कीं आंघ-
 लेलें; ताजें कीं कुजलेलें; ह्याचा विचार जसा
 कावळ्याला नाही; ५५६ त्याप्रमाणें अविहित
 असेल तें टाकावें; किंवा विहित असेल त्याचा
 स्वीकार करावा; हें विषयाच्या संबंधानें
 ज्याला माहितच नाही; ५५७ जितकें ह्याणून
 दृष्टीपुढें येईल, तितकें विषयाकरितां संपादन
 करावयाचेंच, आणि मग तें स्त्री व द्रव्य, शि-
 स्नोदराला वांटून द्यावयाचें. ५५८ उदकामध्ये
 तीर्थ कोणतें, आणि तीर्थ नव्हे असें कोणतें,
 ह्या शब्दांची ओळख सुद्धां नाही. तहान भा-
 गते येवढें सुख ठाऊक. दुसरें कांहीं जाणत
 नाही. ५५९ त्याप्रमाणें भक्ष्य कोणतें व अ-
 भक्ष्य कोणतें ? ह्याचा विचार करावयाचा
 नाही; निंद्य कोणतें आणि अनिंद्य कोणतें हें
 मनांत आणावयाचें नाही; तोंडाला गोड
 लागलें कीं तें पवित्र हीच मनाची आवड.
 ५६० आणखी स्त्रीची जात ह्याणून जितकी
 तितकी इंद्रियावरूनच ओळखावयाची. ति-
 च्याशीं संबंध ठेवावयाचा ह्मटला कीं तिसरा
 पाय ! ५६१ आपल्या स्वार्थांमध्ये कामीं

पडेल तेवज्याचेंच नांव सोयरे. ज्या ज्ञानाला देहसंबंधाचा विचार ह्मणून ठाऊकच नाही. ५६२ मृत्यूला सारेंच भक्ष्य; अग्नीला सारेंच जळण; त्याप्रमाणें सारें जगही तामस ज्ञानाचीच मालमत्ता आहे. ५६३ अशा प्रकारें सारें विश्व हें केवळ विषयच आहे असें ज्यानें मानलें, त्याला देहाचें पोषण करणें येवढेंच कायतें फळ असतें. ५६४ आकाशांतून पडलेल्या पाण्याला समुद्र हा एकच कायतो आश्रय; त्याप्रमाणें जें जें कृत्य ह्मणून करावयाचें तें पोटाकरितां करावयाचें ह्मणून समजणें. ५६५ शिवाय स्वर्ग आणि नरक जे आहेत, त्यांना प्रवृत्ति आणि निवृत्ति हे हेतु आहेत. ह्या सर्व ज्ञानाची जेथें रात्र असते. ५६६ देहाच्याच तुकड्याला आत्मा हें नांव; दगडाची मूर्ति हाच ईश्वर. ह्याच्या पलीकडे ह्मणून बुद्धि जावयाची नाही.” ५६७ तो ह्मणतो “शरीर पडलें कीं झालें. कर्मही गेलें आणि आत्माही गेला. त्याचा उपभोग घेण्याला कोण राहणार? ५६८ किंवा पाहतांना ईश्वर असेल व तोच जर हें होणारें सर्व भोगवीत असेल, तर तो देवच विकून खावा ह्मणजे झालें. ५६९ गांवच्या देवळांतले देवच जर जगाचे न्यायमक असतील, तर देशांतले डोंगर तरी स्वस्थ कां बसतात?” ५७० असा चुकून देव मानलाच तर दगडाचा मात्र मानावयाचा. आणखी देहालाच आत्मा ह्मणावयाचा. ५७१ इतर जीं पापपुण्यादिक आहेत, तीं सारीं खोटीं करून अग्निसारखें पाहिजे तें खात सुटावयाचें हेंच कायतें हित. ५७२ चर्मचक्षूंनीं जें दिसेल, ज्याची इंद्रियें गोडी लावून देतील, तेंच खरें अशी ज्याची पक्की खात्री; ५७३ किंबहुना अर्जुना! आकाशामध्ये ज्याप्रमाणें व्यर्थ धुराची वेल वाढते त्याप्रमाणें अशी वाढती स्थिति ज्याच्या ठिकाणीं पहाशील, ५७४ भेंड जसा कोरडाही नव्हे आणि ओलाही नव्हे. उपयोगास न पडतांच लयास जातो. ५७५ किंवा उसांचीं कणसें; नपुंसक माणसें;

किंवा साबरीचें (निवडुंगाचें) लागलेलें बन; ५७६ किंवा मुलांचें मन; चोराच्या घरचें द्रव्य; अथवा शेळीच्या गळ्याखालचें अचळ; ५७७ त्याप्रमाणें वायफळ, वाईट दिसणारें जें ज्ञान, त्याला मी तामस ज्ञान असें ह्मणतो. ५७८ त्याला देखील ज्ञान हा शब्द लावावयाचा, यांतला भावार्थ पाहिला तर इतकाच कीं, जन्मांधाचे डोळे मोठे मोठे आहेत असें झटल्याप्रमाणेंच. ५७९ किंवा बहिःच्याचे कान नीट आहेत असें ह्मणणें; किंवा अपेयाला पान ह्मणणें; तशापैकींच ह्या तामसाला ‘ज्ञान’ हें फक्त टोपण नांव आहे. ५८० हें असो. किती सांगावें? तर असें ज्ञान दृष्टीस पडतें तें ज्ञान नव्हे. मूर्तिमंत तमच तें असें समजावें. ५८१ अशा प्रकारें हे सर्वश्रेष्ठ श्रोत्या! तीन गुणांनीं ज्ञानाचेही झालेले तीन प्रकार तुला दाखवून दिले. ५८२ आतां धनुर्धरा! ह्याच ज्ञानाच्या तीन प्रकारांनीं कर्त्याच्या क्रिया प्रगट होतात. ५८३ ह्मणून ओघाचे जसे फांटे फुटतात त्याप्रमाणें पाणी जातें, तसें कर्म असतें तेंही ह्या तीन भागानुसार होतें. ५८४ ह्या तीन प्रकारच्या ज्ञानाप्रमाणें होणारें जें तीन प्रकारचें कर्म आहे, त्यांतील सात्विककर्म असें असतें, तें आधीं ऐक.” ५८५

नियतं संगरहितमरागद्वेपतः कृतम् ।

अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्विकमुच्यते ॥ २३ ॥

[नियतं] तरि स्वाधिकाराचेनि मागें । आलें जें मानिलें आगें । पतिव्रतेचेनि परिष्कणें । प्रियातें जेसे ॥ ८६ ॥ सांवळ्या आंगा चंदन । प्रेमदालोचना अंजन । तैसें अधिका-रासी मईण । नित्यपणें जें ॥ ८७ ॥ तें नित्यकर्म भलें । होय नैमित्तिकीं सावाडलें । सोनयासि जोडलें । सौरभ्य जसें ॥ ८८ ॥ [संगरहितं] आणि आंगा जीवाची संपत्ती । वेंचूनि करी बाळ्याची पाळती । परि जीवें उेबगणें हे स्थिती । न पाहे माय ॥ ८९ ॥ [अफलप्रेप्सुना कर्म] तैसें सवेस्वें कर्म अनुष्ठी । परि फळ न भुंये दिटी । उंखिती

१ आलिंगनाचें. २ श्यामवर्ण. ३ स्त्रियांच्या नेत्रांला. ४ भूषण. ५ साष्ट झालें. ६ सुगंध. ७ खर्चून. ८ रक्षण. ९ कंटाळणें, त्रासणें. १० दृष्टीस न घाली. ११ अवधी.

क्रिया पटी । ब्रह्मींचि करी ॥ ५९० ॥ [अरागद्वेषतः कृतं] आणि प्रिये आलिया खभावें । शबळ उरे वेंचे ठावें नव्हे । तैसें सत्प्रसंगे करावें । पाँहवे जरी ॥ ५९१ ॥ तरि अंकरणाचेनि खेदें । द्वेषातें जिवीं न बांधे । जालियाचेनि आनंदें । फुर्जो नेणें ॥ ५९२ ॥ ऐसऐसिया हातवटिया । कर्म निपजे जें धनजया । [यत्तत्सात्त्विकमुच्यते] जाण सात्त्विक हें तथा । गुणनाम गा ॥ ५९३ ॥ ययावरी राजसाचें । लक्षण सांगिल्ले साचें । न करी अवधानाचें । धर्मेपण ॥ ५९४ ॥

“पतिव्रतेचें आलिंगन जसें पतीला व्हावें, त्याप्रमाणें आपल्या अधिकाराच्या मार्गानें आलेलें, जें आंगालाही मान्य झालें, ५८६ काळ्या सावळ्या आंगाला चंदन; स्त्रियांच्या नेत्रांना काजळ; त्याप्रमाणें निरंतरपणानें अधिकारास भूषण. ५८७ तें नित्य कर्मच चांगलें असलें ह्मणजे त्याचा समावेश नैमित्तिकांत होतो. सोन्याला जसा सुगंध प्राप्त व्हावा, ५८८ आणखी आंगाची व जिवाची संपत्ति खर्च करून बाळकाचें पालप्रहण करते; परंतु जिवानें कंटाळावें, ही स्थिति आईला कधीं माहितच नसते. ५८९ त्याप्रमाणें सर्वभावें करून कर्माचें अनुष्ठान करावें, परंतु फळावर दृष्टी ठेवूं नये, सारी क्रिया ब्रह्मामध्येच अर्पण करावी. ५९० आणखी सहजगत्या आपलें कोणी आवडतें माणूस आलें, तर अन्न उरलें कीं संपलें ह्याचें भान राहत नाहीं. त्याप्रमाणेंच सुप्रसंगीं करण्याचें जर काहीं राहिलें, ५९१ तर न केलेल्याच्या दुःखानें मनामध्ये काहीं द्वेष धरीत नाहीं. किंवा झालें ह्मणून त्याच्या आनंदानें फुगण्याचें ज्याला माहित नाहीं; ५९२ हे धनंजया ! अशा हतोटीनें जें कर्म निपजतें, त्याच्या गुणावरून त्याला सात्त्विक असें नांव आहे. ५९३ आतां ह्यापुढें खऱ्या रजोगुणाचें लक्षण सांगेन. तरी लक्ष्य देण्याची कमतरता करूं नको.” ५९४

१ अपिली, प्रविष्ट. २ आवडतें. ३ अप्रिय. ४ राहे. ५ न केलें याविषयीच्या. ६ गर्वास चढत नाहीं. ७ रजो-गुणयुक्ताचें. ८ कमतायी.

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।

क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥

[यत्तु कामेप्सुना] तरि घरीं मातापितरां । धड बोली नाहीं संसारा । येर विश्व भरी आदरा । मूर्ख जैसा ॥ १५ ॥ कां तुळशीच्या झाडा । दुरुनि न बांधे सितोडा । द्राक्षी-चेया तरि बुडा । धूधवि लाविजे ॥ १६ ॥ [कर्म] तैसीं नित्यनैमित्तिकें । कर्म जियें आवड्यकें । तयांचेविषीं न शके । बैसला उठूं ॥ १७ ॥ येरां काम्याचेनि तरि नांवें । देह सर्वस्व आवडें । वेंचितांही न मनेवे । बहु ऐसें ॥ १८ ॥ अगा देवेंदी वाढी लाहिजे । तेथ मोल देतां न धाडजे । पेरितां पुरे न ह्मणजे । बीज जेवीं ॥ १९ ॥ कां परिस जालिया हातीं । लोहालागीं सर्वसंपत्ती । वेंचितां न ये उंच-ति । साधक जैसा ॥ २० ॥ तैसीं फळें देखोनि पुढें । काम्यकर्म कुवाडें । [पुनः] करी परि तें थोडें । केलेहि मानी ॥ २१ ॥ तेणें फळकासुकें । यथाविधि नेटकें । काम्य कीजे तितकें । क्रियाजात ॥ २२ ॥ [साहंकारेण वा] आणि तथाही केलियाचें ॥ तोंडीं लावी डोंडीचे । कमी या नामधेष्टाचें । वाणे सारी ॥ २३ ॥ तैसा भरे कर्माहंकार । मग पिता अथवा गुरु । ते न मनी काळज्वर । ओषध जैसें ॥ २४ ॥ तैसेनि साहंकारें । फळाभिलाषियें नरें । कीजे गा आदरें । जें जें काहीं ॥ २५ ॥ [क्रियते बहुलायासं] परि तेंही करणें बहुवसा । वळघोनि करी सोयासा । जीवनोपाय कां जैसा । कोल्हांटि याचा ॥ २६ ॥ एका कणालागीं उंदीर । अवघा उपसे डोंगर । कां शेवाळा दोषें दंदूर । समुद्र हुंहुळी ॥ २७ ॥ पै भिकेपरतें न लाहे । तन्ही गारुडी साप वाहे । काय कीजे शीणचि होये । गोड येकां ॥ २८ ॥ हें असो परमाणूचेनि लाभें । पाताळ लंघिती वोळबे । तैसें स्वर्गमुख लोभें । विचवणें जें ॥ २९ ॥ [यत्तद्राजसमुच्यते] तें काम्य कर्म सद्देश । जाणावें येथ राजस । आतां चिन्ह परिस । तामसाचें ॥ ३० ॥

“तर घरीं आईबापांशीं कीं इतर कुटुंबां-तील माणसांशीं धड बोलावयाचें नाहीं; परंतु मूर्ख जसा इतर सान्या जगाचें आदरातिथ्य करतो, ५९५ किंवा तुळशीच्या झाडावर दुरून एक शितोडा सुखां टाकावयाचा नाहीं. पण द्राक्षीच्या मुळाला दुधाचा रतीब लावा-

१ न घाली. २ मानवत नाहीं. ३ दिदी दुष्टीनें वाढ. ४ तृप्त न व्हावें. ५ उत्कर्षदशेस. ६ कठीण. ७ चांगलें. ८ प्रसिद्धीच्या. ९ त्यासारखें करी. १० आरुढ होऊन. ११ कष्टास. १२ उद्देशानें. १३ आलोडी, दवळी. १४ वाळवी. १५ श्रम करणें.

बयाचा; ५९६ त्याप्रमाणें नित्यनैमित्तिक अशीं जीं अवश्यकर्म, त्यांच्यासाठीं बसलेला उडा-
वयाचा सुद्धां नाहीं. ५९७ इतर काम्य क-
र्माच्या नांवानें देहासुद्धां सर्वस्व खर्च झालें
तरी, फार झालें असें वाटत नाहीं. ५९८
दिढी दुपटीची वाढ मिळाली ह्मणजे कर्जे
देणाराला जशी तृप्ति होत नाहीं, किंवा बीं
पेरित असतांना पुरे असें ह्मणत नाहीं; ५९९
किंवा परिस हस्तगत झाला असतां, लोखंडा-
साठीं सारी संपत्ति खर्च झाली तरी, साध-
काला पुरेसें होत नाहीं; ६०० त्याप्रमाणें पुढें
फळें पाहून हवीं तितकीं काम्य कर्मे करतो
तरी, तितकें केलेलेंही थोडेंच मानतो, ६०१
असा जो फलाची इच्छा करणारा आहे तो,
जितक्या जितक्या ह्मणून क्रिया यथाविधीनें
व नीटनेटक्या करतो, त्या सान्या काम्य-
ह्मणजे फलेच्छेसाठीं करतो. ६०२ आणखी,
त्या केलेल्यांचीही तोंडांनें दगंडी पिटतो. कर्म
करतांनाही त्याच्या प्रौढीची कांहीं वाण
करीत नाहीं. ६०३ तशाच रीतीनें कर्म केले-
ल्याचा अहंकार उत्पन्न होतो; त्यामुळे पि-
त्याला व गुरूलाही मानित नाहीं; कालज्वर
आला असतां जसें औषध मानवत नाहीं,
६०४ त्याप्रमाणें अहंकारानें, फलाच्या अभि-
लाषानें पुरुषानें जें जें कांहीं करावें, ६०५
आणखी तें करणेंही अतिशय कष्ट सोसून कराव-
याचें. कोल्हाट्यांचा जसा उदरनिर्वाहाचा धंदा
असतो, ६०६ किंवा एका धान्याच्या कणा-
साठीं उंदीर सारा डोंगर पोखरतो; किंवा
शेघाळीसाठीं वेडूक जसा सारा समुद्र ढव-
ळून सोडतो; ६०७ भिक्षेपेक्षां कांहीं माती
सुद्धां अधिक मिळत नाहीं, तरी गारोडी सर्प
वागवितो, हाही मासला त्यांतलाच ! एखा-
द्याला कष्ट काढणेंच गोड वाटतात, त्याला
काय करणार? ६०८ हें असो. एका रजः-
कणा करितां वाळवी पाताळापर्यंत जाते. त्या-
प्रमाणें स्वर्गाच्या सुखाकरितां जें रखडणें,
६०९ तें कर्म काम्य-कष्टप्रद- तें येथें राजस

आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. आतां तामसाचें
लक्षण ऐक. ६१०

अनुबंधं क्षयं हिंसामनपेक्ष्य च पौरुषम् ।

मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥ २९ ॥

[अनुबंधं] तरि तें गा तामस कर्म । जें निदेचें काळें
धाम । निपेधाचें जन्म । साच जेणें ॥ ११ ॥ जें निपज-
विल्या पाठी । कांहींच न दिसे दिठी । रेघ काढिलिया पोटी ।
तोयाचे जेवीं ॥ १२ ॥ कां कांजी घुसळलिया । कां राख
कुंकिलिया । कांहीं न दिसे गाळिलिया । बाळुघाणा ॥ १३ ॥
ना ना उपणिलिया भूंस । कां विधिलिया आकाश । ना ना
मांडिलिया पाश । वारयासी ॥ १४ ॥ हें अवघेंचि जैसें । बांझें
होऊनि नाशे । जें केलिया पाठीं तैसें । वायाचि जाय
॥ १५ ॥ [क्षयं] येन्हीं नरदेहाही येवढें । धन आटणीये
पडे । तें कर्म निफजवितां मोडे । जगाचें सुख ॥ १६ ॥
जैसा कमळवनीं फांस । काढिलिया काटेंस । आपण झिजे
नाश । कमळां करी ॥ १७ ॥ [हिंसा] कां आपण आंगें जळे ।
आणि नागवी जगाचे डोळे । पतंग जैसा सळें । दीपाचेनि
॥ १८ ॥ तैसें सर्वेस वायां जावो । वरी खदेहाही होय
घावो । परि पुढिलां अपावो । निफजविजे जेणें ॥ १९ ॥
मासी आपणयातें गिळवी । परि पुढिलां वांती शिणवी । तें
कंदमळ आठवी । आचरण जें ॥ ६२० ॥ [अनपेक्ष्य च
पौरुषं] तेंही करावया दोघें । मज सामर्थ्य असे कीं नसे ।
हेंही पुढील तैसें । न पाहतां करी ॥ २१ ॥ कैवळा माझा
उपावो । करितां कोण प्रस्तावो । केलियाही आंवो । काय
येथ ॥ २२ ॥ [मोहादारभ्यते कर्म] इथे जाणिवेची सोये ।
अविवेकाचेनि पाये । पुसोनियां होये । सांठोप कर्मां ॥ २३ ॥
आपला वसांठां जाळुनी । विसांटे जैसा वन्ही । कां स्वम-
यांदा गिळोनि । सिधु उठी ॥ २४ ॥ मग नेणें बहु थोडें ।
न पाहे मागे पुढें । मार्गामार्ग येकवेढें । वरीत चाले ॥ २५ ॥
[यत्तत्तामसमुच्यते] तैसें कृत्याकृत्य सरेंकटित । आपपर
नुरवित । कर्म होय तें निश्चित । तामस जाण ॥ २६ ॥
ऐसी गुणत्रयभिन्ना । कर्मांची गा अजुना । हे केली विव-
र्चना । उपपत्तीसीं ॥ २७ ॥ आतां ययाचि कर्मा भजतां ।
कर्माभिमानिया कर्ता । तो जीवही त्रिविधता । पातला असे
॥ २८ ॥ चेंचुराप्रभवशें । एकपुरुष चेंचुरा दिसे । कर्तया

१ घर. २ अपवित्रतचें. ३ पेज. ४ घाण्यांत वाळू घातली
तरी. ५ पाखळलें असतां. ६ खर्ची. ७ कांठ्यांचा. ८ आंधार
करी. ९ द्वेषानें. १० सदोष. ११ प्रसंग. १२ तात्पर्य. १३ अहंता-
युक्त. १४ वसतिस्थान. १५ पसरें. १६ एकत्र. १७ रगडीत.
१८ विवरण. १९ ब्रह्मचर्य. गृहस्थ, वानप्रस्थ, व संन्यास
यांच्या योगें. २० चार प्रकारचा.

त्रैविध्य तैसैं । कर्मभेदें ॥ २९ ॥ परि तयां तिहींआंत । सात्विक तंव प्रसुत । सांगेन दत्तचित्त । आकर्णी तूं ॥ ६३० ॥

“तर जें निदेचें काळें घर; ज्याच्या योगानें खरी अपवित्रता जन्मास येते; तें कर्म तामस होय. ६११ जें उत्पन्न झाल्यानंतर डोळ्यांना कांहींच दिसत नाही; पाण्याच्या पोटावर जशी रेषा काढावी, ६१२ किंवा पेज घुसळली असतां, किंवा राखुंडी फुंकली असतां, किंवा बाळूचा घाणा गाळला असतां, ६१३ किंवा भूस उपणलें असतां, किंवा आकाशाला मारलें असतां, किंवा वाऱ्याला जालें घातलें असतां, ६१४ तें सारेंच जसें फुकट होऊन नाश पावतें, त्याप्रमाणें जें केल्यानंतर पाठीमागें कांहींच रहात नाही, व्यर्थ जातें. ६१५ बाकी, नरदेहायेवढी संपत्तिही खर्ची पडून तें कर्म उत्पन्न होतें. परंतु त्यानें जगाचें सुख लयास जातें. ६१६ ज्याप्रमाणें कमलाच्या वनांत कांट्यांचा फांस वाढला, तर तो आपण झिजतो, आणि कमळांचाही पण नाश करतो. ६१७ किंवा पतंग जसा दिव्याच्या द्वेषानें आपण स्वतः जळून जगाच्या डोळ्यांनाही शून्याकार करून सोडतो. ६१८ त्याप्रमाणें सर्वस्व व्यर्थ जावो; आणि आपल्या देहालाही दुःख झाले तरी होवो; तरी जो मागच्यांना अपाय करतो. ६१९ माशी आपणाला खाविवते; परंतु दुसऱ्याची ओकून ओकून आंतडीं तोडते. जें आचरणाच्या योगानें त्या दोषाची आठवण होते. ६२० तेही दोष करावयाला मजमध्ये सामर्थ्य आहे कीं नाही, ह्या पुढच्याचा विचारही न करितां जो करतो; ६२१ माझा उपाय केवढा आहे? करण्याचा प्रसंग कोणता आहे? केल्यामध्ये आज अर्थ कोणता? ६२२ हा ज्ञानाचा मार्ग अविचाराच्या पायानें पुसून टाकून, कर्मांमध्ये जो अहंकारयुक्त होतो; ६२३ आपलें रहाण्याचें ठिकाण जा-

ळून अग्नि जसा चव्हंकडे पसरतो; किंवा आपली मर्यादा सोडून समुद्र जसा पुढें सरतो; ६२४ मग थोडें किंवा पुष्कळ हें मनांत आणीत नाही; मागें किंवा पुढें पहात नाही; मार्ग अमार्ग सारे एक करित निघतो; ६२५ त्याप्रमाणें उचित, अनुचित सारेंच दडपीत, आपलें किंवा दुसऱ्याचें बाकी न ठेवतां, जें कर्म होतें तें निश्चयेंकरून तामस होय. ६२६ ह्याप्रमाणें अर्जुना ! गुणत्रयानें भिन्न भिन्न झालेल्या कर्मांचें सोपपत्तिक विवरण केले. ६२७ आतां कर्ता कर्माभिमानी होऊन ह्याच कर्मांना भजू लागला ह्याणजे तो जीवही तीन प्रकारचा होतो. ६२८ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास ह्यांच्या योगानें एकच पुरुष चार प्रकारचा दिसतो, त्याप्रमाणें कर्मांच्या भिन्नत्वाप्रमाणें कर्त्यालाही त्रिविधता प्राप्त होते. ६२९ परंतु ह्या तिन्हींमध्ये प्रस्तुत सात्विक कर्ता सांगतों. त्याच्याकडे लक्ष्य देऊन तूं श्रवण कर.” ६३०

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।

सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते १६

[मुक्तसंगः] तरि फळोद्देशें सांढिलिया । वाढिती जेवि सरलिया । शाखा कां चंदनाचिया । बौवनया ॥ ३१ ॥ कां न फळतांही सार्थका । जैसिया नागलतिका । तैसिया करी नित्यादिका । क्रिया जो कां ॥ ३२ ॥ परि फळशून्यता । नाही तया विफळता । पै फळासीचि पंडुसुता । फळें कायिसीं ॥ ३३ ॥ [अनहंवादी] आणि आदरें करी बहुवसें । परि मी कर्ता हें तुमसे । वर्षाकाळीचें जैसैं । मेघवृंद ॥ ३४ ॥ तेविचि परमात्मलिगा । समर्पावियाजोगा । कर्मकैलाप पै गा । निपजौवया ॥ ३५ ॥ तया काळीतें नुलंघणें । देशशुद्धीही साधणें । कां शास्त्रांच्या वार्ती पाहणें । क्रियानिर्णय ॥ ३६ ॥ [धृत्युत्साहसमन्वितः] वृत्तीकैरणा येकवळा । चित्त जावों नेदणें फळा । नियमाचिया सार्बेळा । वाहे सदा ॥ ३७ ॥ हा निरोधें साहावयालागीं । धैर्याचिया चांगणांगी ।

१ फलेच्छा. २ सरळ. ३ मलयाचलसंबंधी. ४ नागवेल. ५ नुपजे. ६ समुदाय. ७ उपजण्यासाठी. ८ शास्त्ररूप दिव्यानें. ९ इंद्रियें, वृत्ती करणें अशा पाठीं बोलणें व चालणें याला. १० ऐक्यता. ११ प्रतिबंध. १२ अटक.

चितवणी जिती आमी । वाहे जो कां ॥ ३८ ॥ आणि आत्मयाचिये आवडी । कमें करितां वरपढी । देहसुखाचिये परबडी । येवों न लाहे ॥ ३९ ॥ ऐसा निद्रा दुःहावे । क्षुधा न बाणवे । सुरवाड न पावे । आंगाचा ठावो ॥ ४० ॥ तंव अधिकाधिक । उत्साह धरी आगळीक । सोनें जैसें पुटीं तुंक । तुटलिया कसीं ॥ ४१ ॥ जरी आवडी आधी साच । तरी जीवितही सैलच । आमी घालितां रोमांच । देखिजंती सतिये ॥ ४२ ॥ मा आत्मया येवडिया प्रिया । बालभेला जो धनंजया । देहही सिद्धतां तया । काय खेद होईल ॥ ४३ ॥ ह्मणौनि विषय सुरवाड तुटे । जंव जंव देहबुद्धि आटे । तंव तंव आनंद दुणवटे । कमी जया ॥ ४४ ॥ [सिद्धसिद्धोर्निर्विकारः] ऐसेनि जो कर्म करी । आणि कोणे येके अवसरी । तें ठांके ऐसी सरी । वाहे जरी ॥ ४५ ॥ तरी कडाडी मोडे गाडा । तो आपणपे न मनी अवघडा । तैसा ठाकलेनिही थोडा । नोहे जो कां ॥ ४६ ॥ ना तरि आदरिले । अव्यंग सिद्धी गेलें । तरि तेंही जितिलें । मिरळं नेणें ॥ ४७ ॥ इया खुणा कर्म करितां । देखिजे जो पंडु-सुता । [कर्ता सात्विक उच्यते] तयातें ह्मणिए तत्त्वा । सात्विक कर्ता ॥ ४८ ॥ आतां राजसा कर्तया । वोळखणें हें धनंजया । जे अभिलाषा जगाचिया । वसोटा तो ॥ ४९ ॥

“तर फळाचा हेतु सोडून, मलयगिरी चंदनाच्या शाखा जशा सरळ वाढतात, ६३१ किंवा नागवेलीला फळें न येतांही, ती जशी सार्धर्का लागते, त्याप्रमाणें जो नित्यादिक क्रिया करतो. ५३२ तरी फळाच्या शून्यतेमुळें त्याला विफलता प्राप्त होत नाही. हे पंडुसुता ! फळांनाच फळें कशीं येणार ? ६३३ आणखी, तीं कमें अत्यंत आदरानें करावयाचीं. परंतु वर्षाकाळांतील मेघसमुदाय ज्याप्रमाणें मी कर्ता हें मात्र समजत नाही, ६३४ त्याचप्रमाणें परमात्माला समर्पण करण्याजोगा कर्मसमुदाय निर्माण होईल, ६३५ त्या काळाचें

उल्लंघन करावयाचें नाही. देशशुद्धी साधावयाची; किंवा शास्त्ररूप दिव्याने शास्त्रनिर्णय पहाणें, ६३६ वृत्तीची ऐक्यता करणें, चित्स फलाकडे जाऊं न देणें, निरंतर नियमांची शृंखळा वहाणें; ६३७ हा प्रतिबंध सहन करण्यासाठीं आंगामध्ये जो धैर्याची उत्तमोत्तम जागृति वाहतो, ६३८ आणखी आत्म्याच्या आवडीनें प्राप्त झालेलीं कमें करतांना, देहसुखाच्या अवस्थेमध्ये यावयाला मिळत नाही. ६३९ अशी निद्रा दूर जाते; भूक समजत नाही; सुखावस्था कसली ती आंगाला स्पर्श करीत नाही; ६४० तों तों सोनें आटतांना जसें वजनांत कमी झालें तर, कसामध्ये चढतें, त्याप्रमाणें ज्याचा उत्साह अधिकाधिक वाढतच जातो. ६४१ खरी खरी जर प्रीति असेल, तर तिजपुढें प्राण केवळ तुच्छ होय. अग्नीस प्राण अर्पण करतांना सतीच्या आंगांवर रोमांच दृष्टीस पडतात काय ? ६४२ मग धनंजया ! आत्म्यासारख्या आवडत्या वस्तूशीं ज्याचें प्रेम जडलें, त्याला देहाच्या नाशानें खेद होईल होय ? ६४३ ह्मणून विषयाचें सुख जों जों कमी होतें; देहबुद्धी जों जों मालवते; तों तों कर्मांमध्ये आनंद दुणावत असतो. ६४४ अशा रीतीनें जो कर्म करतो, किंवा कोणा एखाद्या वेळीं तें कर्म बंद पडण्याचा जरी प्रसंग आला, ६४५ तरी, कड्यावरून गाडा पडून मोडला तरी त्याचा तो जसा खेद मानित नाही; तसा कर्मांमध्ये व्यत्यय आला ह्मणूनही जो संकोचित होत नाही. ६४६ किंवा आरंभलेलें कर्म निर्विघ्नपणें सिद्धीस गेलें तरी, तें आपण पार पाडलें ह्मणून त्याचा अभिमानही मिरवावयाचा समजत नाही. ६४७ अर्जुना ! अशा लक्षणांनीं कर्म करणारा जो पहाशील, त्यालाच खरोखर सात्विककर्ता असें ह्मणावें. ६४८ आतां धनंजया ! जगाच्या अभिलाषाचें स्थान, असा जो राजसकर्ता, त्याला ओळखण्याचें लक्षण असें.” ६४९

१ चिता. २ जिवंत, जागरूक. ३ प्राप्त. ४ अवस्थेस. ५ अनुभवास नये. ६ सुखावस्था. ७ अधिक. ८ वजन. ९ तुच्छ, दुःखरूप. १० आगीत उडी घालतांना सतीच्याही अंगावर भयानें रोमांच उभारतात. ११ आवडीनें युक्त झाला. १२ दुःख पावत असतां. १३ स्वच्छ राहे. १४ प्रकार. १५ डोंगराच्या अवघड ठिकाणी. १६ लहान. १७ स्थान.

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।

हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥२७॥

[रागी] जैसा गांवींचिया कैमळ । उकरडा होय ये-
कळ । कां स्मशानीं अमंगळा । आघवयांचि ॥ ६५० ॥
तथा परी जो अशेष । विश्वाच्या अभिलाषा । पायपाख-
ळण्यां दोषा । घट्टा जाला ॥ ५१ ॥ [कर्मफलप्रेप्सुः] ह्य-
गोनि फळाचा लांग । देखे जिये असलग । तिये कर्मी चांग ।
रोहो मांडी ॥ ५२ ॥ आणि आपण जालिये जोडी । उंपखों
नेदी कवडी । क्षणक्षणा कुरोडी । जीवाची करी ॥ ५३ ॥
[लब्धः] कृपणचित्तीं ठेवा आपुला । तैसा दक्ष पैरोवियां
माला । बक जैसा खुतला । मासेयासी ॥ ५४ ॥ [हिंसात्मकः]
आणि गोवी गेलिया जवळी । अंगटलिया आंग फाळी । फळें
तरी आंत पोकळी । 'बोरांटी जैसी ॥ ५५ ॥ तैसें मनं वाचा
कायें । भलतया दुःख देत जाये । स्वार्थ साधितां न पाहे ।
पराचें हित ॥ ५६ ॥ [अशुचिः] तेविच आंगें कर्मी । आच-
रण नोहे क्षमी । न निधे मनोधर्मी । अरोचक ॥ ५७ ॥
कैनकाचिया फळा । आंत माज बाहेरी मळें । तैसा सबाळ
दुबळा । शुचित्वें जो ॥ ५८ ॥ [हर्षशोकान्वितः] आणि
कर्मजात केलिया । फळ लाहे जरी धनंजया । तरि हेरिखें
जगा यया । वांकुलिया वाये ॥ ५९ ॥ [कर्ता राजसः परि-
कीर्तितः] अथवा जें आदरिलें । हीनेफळ होय केलें । तरि
शोकें तेणें जितिलें । धिकारों लागे ॥ ६० ॥ कर्मी राहाटी
ऐसी । जयातें होती देखसी । तोचि जाण त्रिशुद्धीसी ।
राजस कर्ता ॥ ६१ ॥ आतां यया पाठी येरें । जो कुक-
र्माचा आंगर । तोही करु गोचर । तामस कर्ता ॥ ६२ ॥

“ज्याप्रमाणें गांवच्या सान्या केरकचऱ्याला
उकिरडा ह्मणून एक ठिकाण असतें; किंवा
सारीं अमंगलें तेवढीं स्मशानांत राहतात;
६५० त्याप्रमाणें जो यच्चयावत् विश्वाच्या
इच्छेच्या पायधुण्याच्या दोषाला आश्रयस्थान

होऊन राहिलेला असतो, ६५१ ह्मणून
सहजगत्या ज्या फळाचा लाभ साधण्यासारखा
असेल, त्या कर्माचा आरंभ आधीं कराव-
याचा; ६५२ आणखी उत्पन्न होईल तें आ-
पण घ्यावयाचें, एक कवडी खर्च करावयाची
नाहीं, घटके घटकेला जीव ओवाळून टाका-
वयाचा; ६५३ कृपणाच्या चित्तामध्ये जसा
सदासर्वकाल आपला ठेवा असतो, किंवा
माशाकरितां बगळा जसा ध्यानस्थ बसतो,
त्याप्रमाणें दुसऱ्याच्या मालाविषयीं जो दक्ष;
६५४ जसें बोरीचें झाड जवळ गेलें तर अड-
कवितें; हिसकाहिसकी केली तर आंगाला
ओरबाडे काढतें; फळलें तर आंत पोकळ;
६५५ त्याप्रमाणें कोणीही असो, कायावाचा-
मनानें त्याला दुःख देत सुटावयाचें. स्वार्थ
साधावयाचा येवढें माहित. त्यांत दुसऱ्याचें
हित ह्मणून पहावयाचें नाहीं. ६५६ तसेंच
आंगानें कर्म करण्याला सामर्थ्य नसेल तर,
मनानें तरी त्या वाईट गोष्टीची इच्छा करतो.
६५७ धोतऱ्याच्या फळाला, आंतून कैफ,
आणि बाहेरून कांटे; त्याप्रमाणें जो विचारा
शुचित्वाच्या संबंधानें आंतून बाहेरून सा-
रखा; ६५८ आणखी धनंजया! प्रत्येक
कर्म केल्यानंतर फलप्राप्ति होईल तर, त्या
आनंदानें जगाला वेडावून दाखवितो; हिण-
वितो; ६५९ अथवा एखादें कृत्य करूं ला-
गून त्यांत फलप्राप्ति झाली नाहीं, तर त्याच्या
शोकानें आपल्या सान्या जन्माला धिकारूं
लागावयाचें. ६६० कर्मांमध्ये अशी वर्तणूक
ज्याची दिसून येईल, तो निश्चयकरून राजस
कर्ता असें समज. ६६१ आतां ह्यापुढें दुसरा
कुकर्माचा बाग, असा जो तामस कर्ता तोही
स्पष्ट सांगूं.” ६६२

अयुक्तः प्राकृतः स्वधः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।

विपादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥२८॥

[अयुक्तः] तरि मियां लागलिया कैसं । पुढील जळत
असे । हें नेणिजे हुताशें । जियापरी ॥ ६३ ॥ पै शबें

१ मळ, केरकचरा. २ एक ठिकाण. ३ संपूर्ण.
४ इच्छेसाठी. ५ पादप्रक्षालनार्थ. ६ आश्रय. ७ संबंध.
८ सोपा. ९ उपक्रम. १० लाभानें. ११ न खर्ची.
१२ दुसऱ्याच्या. १३ ध्यानस्थ झाला. १४ अडकवी.
१५ स्पर्श झाला असतां. १६ फाडी. १७ बोरीची डाळी.
१८ अंगानें करवत नाहीं तथापि मनानें तरी त्या वाईट गो-
ष्टीची इच्छा करतो. १९ समर्थ. २० अरुचि. २१ धोत-
ऱ्याच्या. २२ कांढवण. २३ हर्षानें. २४ वेडावी.
२५ निर्फळ. २६ वांचणें. २७ खचित. २८ इतर, तामस.
२९ मुख्य स्थान. ३० प्रत्यक्ष.

मियां तिखटें । नेणिजे कैसेनि निवटे । कां नेणिजे काळकूटें । आपलें केलें ॥ ६४ ॥ तैसा पुढीलया आपुलया । घात करीत धनंजया । आदरी वोखटिया । क्रिया जो कां ॥ ६५ ॥ तिया करितां ही वेळीं । काय जालें हें न सांभाळी । चळला वायू वाहदुळी । चेष्टे तैसा ॥ ६६ ॥ पै करणिया आणि जया । मेळ नाही धनंजया । तो पाहूनि पिसेर्या । कैची त्राय ॥ ६७ ॥ [प्राकृतः] आणि इंद्रियांचें वेरिलें । चरोनि राखे जो जियालें । बैलतळीं लागलें । गोचिड जैसे ॥ ६८ ॥ हांसिया रुदना वेळ । नेणतां आदरी बाळ । रहाटे उंच्छेखळ । तयापरी ॥ ६९ ॥ जो प्रकृती आतलेपणें । कृत्याकृत्यखाद नेणे । फुगे केरें धालेपणें । उकरडा जैसा ॥ ७० ॥ [स्तब्धः] झणौनि मान्याचेनि नांवें । ईश्वराही परी न खा-लवे । स्तब्धपणें न मनवे । डोंगरासी ॥ ७१ ॥ [शठः] आणि मन जयाचें कंलाळी । राहाटी फुंडी चोरिली । दिठी कीर ते बोली । पंथांगनेची ॥ ७२ ॥ किंबहुना कपटाचें । देहचि वळिलें तयाचें । तें जिणें कीं जुवाराचें । टिटेघर ॥ ७३ ॥ नोहे तयाचा प्रांडुर्भावो । तो साभिलाषभिळांचा गांवो । झणौनि नये येवो जावो । तया ठाया ॥ ७४ ॥ [नैष्कृतिकः] आणि आणिकाचें निरें केलें । विरें होय जया आलें । जैसे अपेय पंथा मिनलें । लवण करी ॥ ७५ ॥ कां हेंचि ऐसा पदार्थ । घातलिया आगीआंत । तेचि क्षणीं धें-बाडित । अग्नि होय ॥ ७६ ॥ ना ना सुदव्यें गोमटी । जालिया घारीरी पंठी । होउनि ठोंती किरिटी । मळचि जेवि ॥ ७७ ॥ तैसें पुढिलचें वरवें । जयाच्या भीतरीं पावे । आणि विरुद्धचि आपवें । होऊनि निगे ॥ ७८ ॥ जो गुण घे दे दोष । अमृताचें करी विष । दूध पाजिलिया देख । व्याळ जैसा ॥ ७९ ॥ [अलसः] आणि ऐहिंकी जियावें । जेणें परंत्रा साच यावें । तें उचित कृत्य पावे । अवसरीं जिये ॥ ८० ॥ तेव्हां जया आपसी । निद्रा ये ठंविली ऐसी । दुर्व्यवहारीं जंसी । विद्याळें लोटे ॥ ८१ ॥ पै द्राक्ष-रसा आन्नरसा । वेळे तोंड सडे बायसा । कां डोळे फुटती

१ मरे. २ वाईट. ३ हाले. ४ वेज्याला, मूखीला. ५ टिकाव. ६ तोंडीं पडलेलें. ७ जीव. ८ हंसण्यास व रडण्यास. ९ प्रारंभी. १० यथेच्छ. ११ व्यापलेपणें. १२ कर्मकर्माची रुचि. १३ तृप्तपणानें. १४ न लवे. १५ कपटी, दाहू विकणारांसारखें लोकांस माल देऊनही वेड लावणारें. १६ खरी. १७ वेदयेची. १८ चोरी, चाहाडी, सिंदळकी, या तिथ्यावरचें घर. १९ प्रगटपण. २० विरुद्ध. २१ दुधाला. २२ घृत. २३ प्रज्वलित. २४ प्राप्त. २५ राहती. २६ सपे. २७ या लोकीं वांचावें. २८ परलोकीं. २९ दुष्कृत्य करतांना. ३० विटाळशीप्रमाणें दूर जातें. ३१ कावळ्याला.

दिवसा । डुडुळाचे ॥ ८२ ॥ तैसा कल्याण काळ पाहे । तें तयातें आळस खाये । ना प्रेमादीं तरि होये । तो झणे तैसें ॥ ८३ ॥ [विषादी] जेविचि सागराच्या पोटी । जळे अखंड आगिठी । तैसा विषाद वाहे गांठी । जिवाचिये जो ॥ ८४ ॥ लेंडोरांआगीं धूमावधि । कां आपाना आगीं दुगीषि । तैसा जो जीवितावधि । विषादे केला ॥ ८५ ॥ [दीपेसूत्री च] आणि कल्पांताचिया पारा । वेगळेंही जो वीरा । सूत्र धरी व्यापारा । साभिलाषा ॥ ८६ ॥ अगा जगाही परीती । शुचा वाहे पै चित्ती । करितां विषीं हातीं । तृणही न लगे ॥ ८७ ॥ [कर्ता तामस उच्यते] ऐसा जो लोकाआंत । पो-पपुंज मूर्त । देखसी तो अंध्याहत । तामस कर्ता ॥ ८८ ॥ एवं कर्म कर्ता ज्ञान । या तिहींचें त्रिधा चिन्ह । दाविलें तुज सुजन । चक्रवर्ती ॥ ८९ ॥

“तर मीं स्पर्श केला असतां माझ्यापुढें कसें जळतें, हें जसें अग्नीला समजत नाही; ६६३ मी किती तीक्ष्ण आहे; दुःसंन्यास कसें कांपतो; हें जसें शस्त्राला समजत नाही; किंवा कालकूटाला जशी आपली करणी समजत नाही; ६६४ त्याप्रमाणें धनंजया ! आपल्या पुढच्याचा घात करण्यासाठीं जो दुष्कर्म आचरण करतो. ६६५ आणखी तीं करतांनाही त्यांचा परिणाम काय झाला ह्याकडे लक्ष्यही पोंचवित नाही. वारा जसा वा-वटळींत सांपडला ह्मणजे फिरत राहतो, त्याप्रमाणें व्यापार करतो. ६६६ हे धनंजया ! ज्याच्या कृतीला आणि सिद्धीला मेळ नाही. त्याच्या पुढें वेड्याची कथा ती काय ? ६६७ बैलाच्या खालीं चिकटलेल्या गोचिडाप्रमाणें इंद्रियांच्या तोंडांत जें जें ह्मणून पडेल, तें तें खाऊन जो जीव जगधितो; ६६८ मुलाला कांहीं समजत नसल्यामुळे, तें जसें वेळ अ-वेळ कांहींच न पाहतां पाहिजे तेव्हां हास लागतें, व पाहिजे तेव्हां रडूं लागतें, आणि यथेच्छ वागडत असतें. त्याप्रमाणें ६६९ मायेनें व्यापल्यामुळे ज्याला कृत्याकृत्याची रुचि समजत नाही. केरानें जसा यथेच्छ उ-

१ घुबडाचे. २ असावधपणी. ३ तो तैसें होय झणे. ४ खेद. ५ लेंड्यांच्या विस्तवांत. ६ गुदद्वाराचा वारा. ७ पलीकडचे. ८ शोक. ९ पापाचा ढीग. १० निरंकुश.

किरडा फुगतो, त्याप्रमाणें जो फुगलेला असतो. ६७० त्यामुळें आंगामध्ये इतका ताठा कीं, ईश्वरासही खालीं वांकावयाचें नाहीं. गंभीरपणामध्ये डोंगरालाही जो तुच्छ मानतो; ६७१ मन ज्याचें कपटी; वागणूक, दृष्टि, व भाषण तर खरोखर वेश्येचें. ६७२ किंबहुना त्याचा सारा देह कपटाचाच घडलेला असतो. त्याचें जिणें ह्मणजे तिळ्यावरील जुवाराचेंच घर होय. ६७३ त्याचें प्रगटीकरण तें प्रगटीकरण नव्हे. तर तो लुटारू भिलांचा गांव होय. ह्मणून त्या ठिकाणीं जाऊंही नये. ६७४ आणखी दुसऱ्याचें चांगलें केलें तर, तें त्याला विरुद्ध होतें. ज्याप्रमाणें मीठ दुधांत मिसळलें असतां, त्याला तें पिण्यास अयोग्य करतें, ६७५ किंवा तुपासारखा पदार्थ अग्नींत घातला, तरी तो लागलाच प्रज्वलित अग्नीसारखाच होतो. ६७६ किंवा किरीटी ! चांगले चांगले पदार्थ, शरीरांत गेले असतां, जसे मल होऊन राहतात; ६७७ त्याप्रमाणें दुसऱ्याचें चांगलें तेवढें ज्याच्या आंत जातें, आणि त्याच्या उलट होऊन बाहेर पडतें. ६७८ सापाला दूध पाजिलें असतां, तो जसें अमृताचें विष करून सोडतो, त्याप्रमाणें जो गुण घेतो, आणि दोष देतो. ६७९ आणखी इहलोकीं संरक्षण व्हावें, आणि परलोकींही उपयोगीं पडावें, असें उचित कृत्य करण्याची जेव्हां वेळ येते, ६८० तेव्हां ज्याला आपोआप ठेवल्यासारखी निद्रा येते. आणि दुष्कृत्य करण्यामध्ये मात्र ती विटाळशीप्रमाणें लांब पळते. ६८१ द्राक्षाला आणि आंब्याला फळें आलीं ह्मणजे कावळ्याला मुखरोग येतो. किंवा घुबडाचे डोळे दिवसा फुटतात; ६८२ त्याप्रमाणे कल्याणाचा काल आला कीं त्याला आळस खातो. किंवा चुकीमध्ये तो ह्मणेल तसें चालतो; ६८३ सागराच्या पोटांमध्ये ज्याप्रमाणें अखंड अग्नि जळत असतो, त्याप्रमाणें जिवाच्या गाठीमध्ये जो विषाद बाळगतो; ६८४ शेणीच्या विस्तवामध्ये धूर, किंवा

अपान वायूमध्ये दुर्गंधी, त्याप्रमाणें जो जन्म-भर विषादानें-दुःखानेंच-भरलेला; ६८५ आणखी हे वीरा ! जो कल्पांताच्याही पलीकडचे निराळ्याच अभिलाषाचें सूत्र धरतो, ६८६ बाबा ! जगामध्ये दृष्टी सुद्धां पडावयाचा नाहीं, इतका शोक जो मनामध्ये वाहतो. पण इतकें करूनही, ज्याच्या हातीं गवताची एक काडीही लागत नाहीं. ६८७ असा जो लोकांमध्ये पापाची केवळ राशी, असा पहाशील, तो निःसंशय तामस कर्ता होय. ६८८ ह्याप्रमाणें हे सज्जनराजशिरोमणे ! कर्म, कर्ता, आणि ज्ञान ह्या तिहींचीं तीन तीन लक्षणां तुला दाखवून दिलीं.” ६८९

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतत्त्विविधं शृणु ।

प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥

[बुद्धेर्भेदं] आतां अविद्येच्या गांवीं । मोहाची वेदनि मंदवी । संदेहाचीं आवर्ती । लेऊनि लेणीं ॥ २९ ॥ आत्मा निश्चयाची बरव । जया आरिसां पाहे सावयव । तिचे बुद्धिचीही धांव । त्रिधा असे ॥ ३१ ॥ [गुणतत्त्विविधं शृणु] अगा सत्त्वादिगुणीं इहीं । काइ एक तिहीं ठायीं । न कीजेचि येथ पाहीं । जगामाजी ॥ ३२ ॥ आमी न वसतां पोटीं । कवण काष्ठ असे सृष्टी । तैसें तें कैचें दृश्यकोटी । त्रिविध जें नोहे ॥ ३३ ॥ ह्मणौनि तिहीं गुणीं । बुद्धी केली त्रिगुणी । [धृतेश्चैव] धृतीसिद्दी वांटणी । तैसीचि असे ॥ ३४ ॥ [प्रोच्यमानमिति] तेंचि येक वेगळालें । यथाचिन्हीं अळकारलें । सांगिजेल उपाइलें । भेदलेपणें ॥ ३५ ॥ परि बुद्धि धृति इयां । दोहीं भागांमाजि धनंजया । आधीं रूप बुद्धीचिया । भेदासि करूं ॥ ३६ ॥ तरि उत्तम मध्यम निक्कंष्ट । संसारासि गा सुभटा । प्राणिंयां येतिया वाटा । तिनी आथी ॥ ३७ ॥ जे करणीय कैम्य निषिद्ध । ते हे मार्ग तिन्ही प्रसिद्ध । संसार भय संबंध । जीवा ययां ॥ ३८ ॥

“आतां अविद्येच्या गांवामध्ये मोहाचें वख गुंडाळून, संशयाचीं सारीं भूषणें घालून, २९० आत्मनिश्चयाचें मूर्तिमंत स्वरूप जिच्या आरशांत पाहतो, त्या बुद्धीची धांवही तीन प्रकारची असते. २९१ अरे ! हे सत्त्वादि तीन

१ वख. २ चांगुलपणा. ३ मूर्तिमान्. ४ दृश्यवर्गीत. ५ धृतीला. ६ आरंभिलेलें. ७ कनिष्ठ. ८ विहित निष्काम कर्म. ९ फलेच्छायुक्तकर्म.

गुण कशा कशाचे ह्मणून ह्या जगांत तीन प्रकार करीत नाहीत? ६९२ पोटामध्ये अग्नि नाही, असें लांकूड ह्या सृष्टीमध्ये कोणचे? तद्वत् दृश्य वर्गामध्ये तीन प्रकारचे झालेले नाही, असें काय आहे? ६९३ ह्मणून ह्या तिहींनी बुद्धीला त्रिगुणात्मक केलेली आहे. धृतीलाही तशीच तीन प्रकारची वांटणी आहे. ६९४ तेंच एक निरनिराळें ज्याच्या त्याच्या लक्षणांनी सुशोभित झालेले यथाप्रकारें सांगूं. ६९५ परंतु धनंजया! बुद्धि आणि धृति ह्या दोन्ही भागांपैकी बुद्धीच्या भेदाचे निरूपण आधीं करूं. ६९६ तर हे वीरश्रेष्ठा! प्राण्यांना संसारामध्ये आल्यावर उत्तम, मध्यम, आणि कनिष्ठ ह्या तीन वाटा मिळालेल्या असतात. ६९७ करण्यास योग्य, कामनिक, आणि निषिद्ध हे तीन मार्ग प्रसिद्ध आहेत. आणि ह्यांच्या योगानें ह्या जीवांना संसाराच्या भयाचा संबंध आहे.” ६९८

प्रवृत्ति च निवृत्ति च कार्याकार्ये भयाभये ।

बंधं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी ३०

[प्रवृत्ति च] ह्मणोनि अधिकारें मानिले । जें विधीचेनि बोधें आले । तें येकचि येथ भलें । नित्य कर्म ॥ ९९ ॥ [कार्ये] तेंचि आत्मप्राप्ति फळ । दिठी सृनि केवळ । कीजे जेंसें कां जळ । सेविजे ताहने ॥ ७०० ॥ येतुलेनि तें कर्म । [अभये] सांडी जन्ममय विषम । करुनि दे सुगम । मोक्ष-सिद्धि ॥ १ ॥ ऐसें करी तो भला । संसारभयें सांडिला । करणीयत्वे आला । मुमुक्षुभागा ॥ २ ॥ [मोक्षं च] तेथ जे बुद्धि ऐसा । बळिया बांधे भरंवसा । मोक्ष ठेविला ऐसा । जोडेल येथ ॥ ३ ॥ ह्मणोनि निवृत्तिचि मांडली । सृनि प्रवृत्तिवळी । इये कर्मा बुडकुळी । यावी की ना ॥ ४ ॥ तृपार्ता उदकें जिणें । कां पुरी पडलिया पंढरणें । अंधकूर्पी गति फिरणें । सूर्योचेनि ॥ ५ ॥ ना ना पथ्येसीं ओंषध लाहे । तरी रोगें दाटलाही जिये । कां मीनां जिह्वाळा होये । जळाचा जरी ॥ ६ ॥ तरि तयाच्या जीविता । नाही जेवि अन्यथा । तेंसें कर्मा इये वर्ततां । जोडेचि मोक्ष ॥ ७ ॥

१ तृपाशांत्यर्थ. २ मुक्तिलाभ. ३ निवृत्तीला=अ-तर्मुखवृत्तीला, प्रवृत्तीचे=विषयोन्मुख वृत्तीचे खाली घालून प्रवृत्तिमार्ग धरतो. ४ बुडी मारणें. ५ पोंहणें. ६ व्यापला असतांही वांचतो. ७ मत्स्याला.

हें करणीयाचिया कडे । जें ज्ञान आधी चोखडें । [निवृत्ति च] आणि अकरणीय हें कुंडें । ऐसें जाण ॥ ८ ॥ [अकार्ये] जीं तिये काम्यादिकें । संसारभयदायकें । अकृत्यपणाचें आंघुलें । पडिलें जयां ॥ ९ ॥ तिये कर्मा अकार्यी । [भये] जन्ममरणसमयीं । प्रवृत्ति पळवी पार्यी । मागिलीचि ॥ ७१० ॥ पै आगीमाजि न रिघवे । अंधावीं न घलवे । धंगधगीत नांगवे । शूल जेवीं ॥ ११ ॥ कां काळियानाग पुंघुवात । देखोनि न घालवे हात । न वचवे खोपेआर्ते । व्याघ्राचिये ॥ १२ ॥ तेंसें कर्म अकरणीय । देखोनि महा-भय । उपजे निःसंदेह । बुद्धी जिये ॥ १३ ॥ [बंधं] वाढिलें रांधूनि विधें । तेथ जाणिजे मृत्यु न चुके । तेवि निषेधीं कां कां देखे । बंधातें जो ॥ १४ ॥ [या वेत्ति] मग बंधभयभ-रित्ती । तियें निषिद्धीं प्राप्ती । विनियोगें जाणे निवृत्ती । कर्माचिये ॥ १५ ॥ ऐसेनि कार्याकार्यविवेकी । जे प्रवृत्ति निवृत्ति मोपकीं । खरा कुंडा पारखी । जिया परी ॥ १६ ॥ [बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी] तैसी कृत्याकृत्यशुद्धी । बुद्धे जे निरवंधी । सात्विक ह्मणुपे बुद्धी । तेचि तूं जाण ॥ १७ ॥

“ह्मणून अधिकाराला योग्य झाले; जें प्रारब्धाच्या ओघानें आलें; तें एक नित्यकर्मच येथें योग्य आहे. ६९९ तेंच आत्मप्राप्तीच्याच एका फलावर दृष्टि ठेवून, तान्हेला जसें पाणी प्यावयाचें त्याप्रमाणें आचरण करावें. ७०० इतक्यानें तें कर्म विषम असें जें जन्मभय तें दूर करून मुक्तीचा लाभ सुलभ करून देतें. ७०१ असें करील तोच उत्तम; आणि त्याचेंच संसारभय नाहीसें झालें. तो कर्माच्या योगा-नेच मुमुक्षूच्या योग्यतेला पोंचतो. ७०२ तेव्हां येथें जी बुद्धि अशा प्रकारचा दृढनि-श्चय करून राहते, तिला ठेवल्यासारखा मोक्ष प्राप्त होतो. ७०३ ह्मणून निवृत्तीला प्रवृत्तीच्या तळाशीं घालून ह्याच कर्मांमध्ये बुडी देऊं नये काय? ७०४ तृपार्ताला उदक हेंच जीवन; किंवा पुरांत पडलेल्यास पोंहणें; अंधारमय विहिरीमध्ये सूर्याच्या कि-रणानेंच गति होते. ७०५ किंवा पथ्यासह-वर्तमान औषध मिळालें तर रोगानें प्रस-त

१ आहे. २ स्पष्ट, खरें. ३ आवरण. ४ शिरवे. ५ खोल पाण्यांत. ६ प्रखर. ७ धरतां येत नाही. ८ फुत्कार टाकीत. ९ जाळीत. १० निषिद्ध. ११ व्यवस्था. १२ स्वार्थ-त्यागाच्या. १३ मापानें. १४ खोटा. १५ समजे. १६ अत्यंत.

झालेलाही वांचतो. किंवा माशाला जर जळाचा जिह्वाळा मिळाला, ७०६ तर त्याच्या जिवाला मग भीति उरली नाही. त्याप्रमाणे ह्या कर्मांमध्ये वागत असतांना मोक्ष हा मिळावयाचाच. ७०७ ह्या उचित कर्मांकडे जें ज्ञान लागते तें उत्तम होय. आणि अनुचित कर्मांचें लक्षण असें असतें हेंही लक्षांत ठेव. ७०८ जीं काम्यादिक; संसारभय दाखविणारी; ज्यांच्यावर अकृत्यपणाचा-निषिद्धतेचा-शितोडा पडलेला, ७०९ अशा कर्मापासून, अकार्यापासून, जन्ममरणाच्या प्रसंगांतून प्रवृत्तीला जी मागच्या पायानें पळविते, ७१० अग्नीमध्ये शिरवत नाही; खोल पाण्यांत उडी घालवत नाही; प्रखर शूळाला जसें धरवत नाही; ७११ किंवा कृष्णसर्प फूत्कार टाकित असतां त्याला हात घालवत नाही; व्याघ्राच्या गुहेमध्ये जावत नाही; ७१२ त्याचप्रमाणे निषिद्धकर्म पाहिलें असतां, ज्याच्या बुद्धीला निःसंशय महाभय उत्पन्न होतें. ७१३ विषयुक्त स्वयंपाक करून वाढला तर तेथें मृत्यु चुकावयाचा नाही, हें पकें समजावें. त्याप्रमाणे निषिद्धकर्मांमध्ये बंध आहे असें पाहून जिला, ७१४ पुढील बंधाचें भय घेऊन तीं निषिद्धकर्म प्राप्त झालीं असतां, त्या कर्मांची निवृत्ति करणें माहित असते. ७१५ अशा प्रकारे कार्याकार्यविचार करते; प्रवृत्ति निवृत्तीच्या मापानें, परीक्षक ज्याप्रमाणें खऱ्याची आणि खोट्याची निवड करतो, ७१६ त्याप्रमाणे उचित कृत्य कोणतें, आणि अनुचित कृत्य कोणतें, हें जिला उत्तम तऱ्हेनें कळतें, तिलाच सात्विक बुद्धि ह्मणतात हें तूं लक्षांत ठेव." ७१७

यया धर्ममधर्म च कार्य चाकार्यमेव च ।

अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ३१

[यथेति] आणि बकाच्या गांवीं । घेपे क्षीरं नीर सैकलवी । कां अहोरात्रीची गोवी । आंधळें नेणे ॥ १८ ॥ जया फु-

१ बगळ्याच्या. २ दूध व पाणी. ३ एकत्र मिश्र, सरसकट.

लाचा मकरंद फावे । तो काष्ठे कोरूं धावे । परि भ्रमरपणा नेव्हे । अंघांटा जेवि ॥ १९ ॥ तैसीं हयें कार्याकार्ये । धर्माधर्मरूपे जिये । [अयथावत्प्रजानाति] तियें न चोजवितां जाये । जाणती जे कां ॥ ७२० ॥ अगा बोळावीण मोलिये । घेतां पांड मले विपाये । न मिळणें तें आहे । ठेविलें तेथें ॥ २१ ॥ तैसें अकरणीय अवचटें । नोडवे तरीच लोटे । येरवीं जाणें एकवटें । दोन्ही जे कां ॥ २२ ॥ [बुद्धिः सा पार्थ राजसी] ते गा बुद्धि चोखविखी । जाण येथ राजसी । अक्षत टाकिली जैसी । मांदियेवरी ॥ २३ ॥

“आणखी बगळ्याच्या गांवामध्ये दूध व पाणी सरसकट चालतें. किंवा आंधळ्याला दिवस आणि रात्र ह्यांतील संबंध कळत नाही. ७१८ ज्याला फुलाचा मकरंद मिळतो, तो लांकडे पोखरावयालाही धांवतो. परंतु भ्रमरपणांत जसा बदल होत नाही; ७१९ त्याप्रमाणे हीं धर्माधर्मरूपानें असणारीं जीं कार्याकार्ये, त्यांतील भेदामेद ज्यास कळत नाही. ७२० बाबा! नीट पाहिल्या-वांचून मोल्यें घेतलीं, तर चांगलीं मिळतील एखादे वेळीं; परंतु चांगलीं न मिळणें हें मात्र अगदीं ठेवल्यासारखें असावयाचें. ७२१ त्याप्रमाणे अनुचित कृत्य अकस्मात् प्राप्त न झालें तर मात्र घडावयाचें नाही. बाकी दोन्हीची योग्यता जेथें एकच. ७२२ सान्या गांवाला जसें पैपाहुण्यासुद्धां आमंत्रण द्यावें, त्याप्रमाणे चांगल्या वार्हाटाची परीक्षा ज्या बुद्धीस नाही, ती राजस बुद्धि असें समज. ७२३

अधर्म धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।

सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२

[अधर्ममिति] आणि राजा जिया वाटा जाये । ते चोरांसि ओढव होये । कां राक्षसां दिवो पाहे । राति होउनी ॥ २४ ॥ ना ना निर्धानचि निर्दैवो । होये कोळसयाचा उडवो । पै असतें आपणपें जीवा । नाही जालें ॥ २५ ॥ तैसें धर्मजात तितकें । जिये बुद्धीसी पातकें । साच तें लटिकें । ऐसेंचि बुद्धे ॥ २६ ॥ [सर्वेति] ते आपवेचि अर्थ । करुनि

१ मिळे. २ आडवाट होत नाही. ३ न जाणों येतां. ४ योग्यता. ५ क्वचित्. ६ अकस्मात्. ७ प्राप्त न होय. ८ शुद्धविषयी. ९ सभेवर. १० अरण्य. ११ दिवस उजाडे. १२ ठेवा. १३ माग्यहीनाला. १४ रास, ढीग. १५ वाटे.

घाली अनर्थ । गुण ते ते व्यवस्थित । दोषचि मानी ॥२७॥
किंबहुना श्रुतिजार्ते । अधिष्ठूनि केले सरते । तेतुलेंहि उंप-
रते । जाणे जे बुद्धी ॥ २८ ॥ कोणातेंही न पुसता । ताम-
सी जाणावी पंडुधुता । रात्री काय धर्मार्था । साच करायी
॥ २९ ॥ एवं बुद्धीचे भेद । तिन्ही तुज विशद । सांगितले
स्वबोध- । कुमुदचंद्रा ॥ ३० ॥ आतां यथाचि बुद्धिहृत्ती ।
निष्ठकिला कर्मजार्ती । खांद मांडिजे धृती । त्रिविधा जया
॥ ३१ ॥ तिथे धृतीचेही विभाग । तिन्ही यथालेग । सांगी-
जति चांग । अवधान दे ॥ ३२ ॥

“आणखी राजा ज्या वाटेनें जातो, ती वाट चोराला अरण्य होते; किंवा राक्षसांना दिवस हा रात्रीच्या रूपाने उद्यास येतो; ७२४ किंवा भाग्यहीनाला द्रव्याचा ठेवा, कोळ-शाचा ढीग होतो; व आपणाजवळ असले-लेंही जीवाला जसे नाहींसें होतें. ७२५ त्याप्र-माणें धर्म ह्याणून जितकें जितकें तितकीं ति-तकीं ज्या त्या बुद्धीस पातकें; खरें ह्याणून जि-तकें असेल, तितकें खोटें अशीच तिची सम-जूत. ७२६ जे अर्थ असतात त्या साऱ्यांचाच जी अनर्थ करून सोडते; आणि व्यवस्थित जे जे गुण असतील ते ते दोषच मानते. ७२७ किंबहुना प्रत्येक श्रुतीनें स्थापन करून जें जें मान्य केलेलें तितकें विपरीत-उलट-मानणारी जी बुद्धि; ७२८ हे अर्जुना! ती बुद्धि तामसी आहे हें पकें लक्षांत ठेवावें. कोणाला विचारण्याचें कारण नाहीं. धर्मा-र्थांला जी खरोखर रात्र-अभाव-करणारी ती काय करावयाची? ७२९ अशा प्रकारें हे ज्ञान-रूप कुमुदिनीस विकसित करणा-ऱ्या चंद्रा! बुद्धीचे तीन भेद तुला स्पष्ट करून सांगितले. ७३० आतां ह्याच बुद्धीच्या वृत्तीनें कर्मांमध्ये प्रवृत्त झालें असतां, त्याच्या धृतीचेही तीन प्रकार होतात. ७३१ त्या

धृतीचे ते तीनही भाग यथातथ्य रीतीनें सां-गतो. तिकडे लक्ष्य दे.” ७३२

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेंद्रियक्रियाः ।

योगेनाऽव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्विकी ३३

[धृत्या यया] तरि उदेलिया दिनकर । चोरीसि धोके आधार । कां राजाज्ञा अव्यवहार । कुठवी जेवी ॥ ३३ ॥ ना ना पवनाचा साट । वाजीनलिया नीट । आंगेंसी चो-भाट । सांडिती मेघ ॥ ३४ ॥ कां अगस्तीचेनि दर्शने । सिंधु घेउनी ठाती मौने । चंद्रोदयीं कमळवने । पिठी देती ॥ ३५ ॥ हें असो पावो उचलिला । भेदमुख न ठेविती खालां । ग-जोंनि पुढां जाला । सिंह जरी ॥ ३६ ॥ तैसा जो धीर । उठलिया अतें । मनादिकें व्यापार । सांडिती उभी ॥ ३७ ॥ [इंद्रियक्रियाः] इंद्रिया विळ्यांचिया गांठी । अपैसया सुटती किराटी । मन मायेच्या पोटी । रिगती दांही ॥ ३८ ॥ [प्राण-] अधोर्ध्व गुढे काटी । प्राण नवांची पंडी । बांधोनि घाली उडी । मध्यमेमाजी ॥ ३९ ॥ संकल्पविकल्पाचें लु-गडें । सांडूनि मन उघडें । बुद्धि मागिलेकडे । उगीचि बैसे ॥ ४० ॥ [धारयते] ऐसी धैर्यराजें जेणें । मन प्राण क-रणें । स्वचेष्टांचीं संभाषणें । सांडवीजती ॥ ४१ ॥ [योगेन] मग आगवीचि सैंडी । ध्यानाच्या आंतुल्या मेंढी । कोंडिजती निरवडी । योगाचिये ॥ ४२ ॥ [अव्यभिचारिण्या] परी पर-मात्मया चक्रवर्ती । उभाणिती जंव हातीं । तंव लांच न घेतां धृती । धरिजती जिया ॥ ४३ ॥ [धृतिः सा पार्थ सात्विकी] ते गा धृति येथें । सात्विक हें निरुतें । आईक अर्जुनातें । श्रीकांत ह्याने ॥ ४४ ॥

“तर सूर्य उगवला ह्याणजे चोरीचा आश्रय तुटतो, किंवा दुर्व्यवहार असेल तर राजा-क्षेने बंद होतो. ७३३ किंवा वाऱ्याचा वेग ह्यापाट्यानें सुटला ह्याणजे मेघ विद्युद्गर्जना वगैरे सोडून देतात. ७३४ किंवा अगस्तीला पा-हिलें कीं समुद्र मौन धरून बसतात; चंद्रो-दय झाला कीं, कमळवने कोमेजतात; ७३५ हें असो. गर्जना करून सिंह जर पुढें आला, तर हत्ती सुद्धां उचललेला पाय खालीं ठेवित

१ स्थापन. २ मान्य. ३ उलटें, विपरीत. ४ धर्मांर्थांला जी खरोखर रात्र=अभाव करणारी ती काय करावयाची. ५ स्पष्ट. ६ ज्ञानरूप कमलास प्रफुल्लित करणाऱ्या चंद्रा. ७ निश्चयात्मक झाला. ८ वेगवेगळेपणा. ९ धैर्य. १० जसे आहेत तसे.

१ थावे. २ आश्रयस्थान, अधकार अशा पाठी, चोरी व अधकार हीं दोन्ही नाहींशीं होतात. ३ वेग. ४ वीज इत्यादि. ५ गर्जना. ६ राहाती. ७ मिटती. ८ हत्ती. ९ अंतरांतून. १० दाहा इंद्रियें. ११ खालतें वरतें. १२ आवरण. १३ सुपुत्रेंत. १४ शुद्ध, मोकळीं. १५ हृदयां. १६ कुशलतेनें. १७ जाणती.

नाहींत. ७३६ त्याप्रमाणें अंतःकरणांतून धीर उत्पन्न झाला कीं, मनादिक आपआपले व्यापार उभ्याउभ्याच सोडून देतात. ७३७ हे किरीटी ! इंद्रियांच्या आणि विषयांच्या गांठी आपोआपच सुटतात. दाही इंद्रियें मनाच्या आणि मायेच्या पोटांत शिरतात.

७३८ प्राण हा खालचीं व वरचीं आच्छादनें काढून नवद्वारांची पेंडी बांधून सुषुम्नेमध्ये उडी घालतो. ७३९ संकल्प विकल्पाचें वृत्त सोडून मन उघडें पडतें. आणि बुद्धि मागच्या बाजूला उगेच बसलेली असते. ७४० अशा प्रकारें धैर्यरूप राजा, मन, प्राण, व इंद्रियें ह्यांच्या व्यापारांचीं संभाषणेंच बंद करवितो. ७४१ मग हीं सारीं ध्यानाच्या आंतील गामाच्यांत योगाच्या कौशल्यानें जी कोंडून ठेवते, ७४२ आणि परमात्मरूप जो सार्वभौम राजा तो त्यांस आपल्या ताव्यांत घेईपर्यंत, त्यांकडून लांच लुचपत कांहींपक न घेतां जी त्यांस धरून ठेवते," ७४३ श्रीकांत ह्मणतात "वा अर्जुना! तीच खरोखर सात्विक धृति होय. हें ऐकून ठेव." ७४४

यया तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन ।

प्रसंगेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥३४॥

[यथेति] आणि होऊनिचां शरीरीं । स्वर्गसंसाराच्या दोहीं घरीं । नांदे जो पोटभरी । त्रिवर्गोपायें ॥ ४५ ॥ तो मनोरथांच्या सागरीं । धर्मार्थकामांच्या तारुवावरी । जेणें धैर्यवळें करी । क्रिया वाणिज ॥ ४६ ॥ [प्रसंगेनेति] जें कर्म भांडवला मुये । तयाची चौगुणी येती पाहे । येवढें साहस वाहे । जिया धृती ॥ ४७ ॥ ते गा धृती राजस । पार्था येथ परियेस । आतां आदक तामस । तिसरी जे कां ॥ ४८ ॥

“आणखी शरीरामध्ये उत्पन्न होऊन धर्म, अर्थ आणि मोक्ष ह्या तीन उपायांनीं जो पोटभर नांदतो, ७४५ तो मनोरथरूप समुद्रामध्ये धर्मार्थकामाच्या गलबतावरचा मोठ्या साहसानें व्यापार करतो. ७४६ तो

जें कर्म भांडवलांत घालतो, त्याची चौपट होती हें ध्यानांत ठेव. इतकी ज्याची धृति साहस करते; ७४७ हे पार्था ! ऐक. ती धृति राजस होय. आतां तिसरी जी तामस धृति ती ऐक." ७४८

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।

न विमुंचति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी॥३५॥

[यथा] तर सर्वाधमें गुणें । जयाचें कां रूपा येणें । कोळसा काळेपणें । घडला जैसा ॥ ४९ ॥ अहो प्राकृत आणि हीन । तयाही कीं गुणत्वाचा मान । परि न ह्मणजे पुण्यजन । राक्षस काई ॥ ५० ॥ पै ग्रहांमाजि इंगळ । तयातें ह्मणजे मंगळ । तैसा तमी घेसाळ । गुणशब्द हा ॥ ५१ ॥ जे सर्वदोषांचा वसोटा । तमचि कामजनि सुभटा । उभारिला आंगवठा । जया नराचा ॥ ५२ ॥ [स्वप्न] तो आळस सूनि असे कांखे । ह्मणोनि निद्रे कहीं न मुके । पापें पोशितां दुःखे । न सांडिजे जेवि ॥ ५३ ॥ [भय] आणि देहा धनाच्या आवडी । सदा भय तयातें न सांडी । विसंबूं न सके धोंडी । काटिण्य जैसे ॥ ५४ ॥ [शोक] आणि पदार्थजातीं लेंदो । बांधे ह्मणोनि तो शोकें ठावो । केला न शके पाप जावो । कुतर्गोनि जैसे ॥ ५५ ॥ [विषाद] आणि असंतोष जीवेसी । धरुनि टेलें अहिर्निशी । ह्मणोनि मैत्री तेणेसी । विषादें केली ॥ ५६ ॥ लसणातें न सांडी गंधी । कां अपथ्यशीळातें व्याधी । तैसी केली मरणावधी । विषादें तया ॥ ५७ ॥ [मदमेव च] आणि वैयसा वित्तकाम । ययाचा वाढवी संभ्रम । ह्मणोनि मदे आश्रम । तोचि केला ॥ ५८ ॥ [धृतिः सा पार्थ तामसी] आगीतें न सांडी ताप । सळातें जातीचा साप । कां जंगचा वेरी योसिप । अखंड जैसा ॥ ५९ ॥ ना तर शरीरातें काळ । न विसंवे कवणे वेळ । तैसा आथि अढळ । तामसी मद ॥ ६० ॥ [न विमुंचति दुर्मेधाः] एवं पांचही हे निद्रादिक । तामसाच्या ठाई दोख । जिया धृती देख । धरिले आहाती ॥ ६१ ॥ तिये गा धृती नांवें । तामसी येथ हें जाणावें । ह्मणीतलें तेणें देवें । जगाचेनि ॥ ६२ ॥ एवं त्रिविध जे बुद्धि । कीजे कर्मनिश्चयो आधि । तो धृती या सिद्धि ।

१ प्रसिद्धीस. २ पुण्यवान् लोक. ३ अमीसारखा क्रूर प्रह. ४ कल्याण करणारा. ५ स्थूल, अयथार्थ. ६ बस तिस्थान. ७ सिद्ध करून. ८ आकार. ९ घालून. १० दगड. ११ प्रीति. १२ ठेवितो. १३ अनुपकाऱ्यापासून. १४ राहिला. १५ खेदानें. १६ दुर्गंध. १७ आयुष्यधनवर्धनाची इच्छा. १८ मोठेपण. १९ द्वेषातें. २० सर्वांशीं विरुद्ध. २१ भय.

१ धर्म, अर्थ, काम या तीन उपायांनीं. २ गलबतावर. ३ व्यापार. ४ घाली. ५ रजोगुणात्मक.

नेइजो येथ ॥ ६३ ॥ सूर्ये मार्ग गोचर होय । आणि तो कीर पाये । परि चालणे तें आहे । धैर्य जेवि ॥ ६४ ॥ तैसी बुद्धि कर्मातें दावी । तें करणसामग्री निफेजवी । परि निफजावया होआवी । धीरता जे ॥ ६५ ॥ ते हे गा तुज-प्रति । सांगीतली त्रिविध धृति । यया कर्मत्रया निष्पत्ति । जालिया मग ॥ ६६ ॥ येथ फळ जें एक निफजे । सुख जायतें ह्मणिजे । तेंही त्रिविध जाणिजे । कर्मवशें ॥ ६७ ॥ तरि फळरूप तें सुख । त्रिगुणी भेदले देख । विवंचू आतां चोखा । चोखीं बोली ॥ ६८ ॥ परि चोखी ते कैसी सांगें । पें घेवों जातां बोलवें । कानींचियेही लागे । ह्यातीचा मळ ॥ ६९ ॥ ह्मणौनि ज्याचेनि अन्हेरें । अवधानही होय बाहिरें । तेणें आदक हो आदरें । जिवांचेनि जिवें ॥ ७० ॥ ऐसें ह्मणौनि देवो । त्रिविधा सुखाचा प्रस्तावो । मांडला तो निनाहो । निरूपित असे ॥ ७१ ॥

“तर कोळसा जसा काळेपणानें व्यापलेला असतो, त्याप्रमाणें सर्व अधम गुणांनींच ज्याचें प्रगट होणें, ७४९ अहो ! इतका तो हलका व कनिष्ठ प्रतीचा असून त्याला गुणत्वाचा मान कसा देतात ? पण राक्षसालाही पुण्यश्लोक असें ह्मणत नाहींत काय ? ७५० ग्रहांमध्ये अग्नीसारखा जो क्रूर ग्रह त्याला मंगळ ह्मणतात. त्याप्रमाणें तमालाही गुण हा शब्द अयथार्थच आहे. ७५१ हे वीरश्रेष्ठा ! सर्व दोषांचें जें स्थान; ज्यानें तमालाच कमावून त्याचें शहर वसविलेलें असतें. ७५२ तो आळस काखोटीस मारून बसलेला असतो ह्मणून, पापें पोसलेल्याला दुःखें जशीं कधीं सोडित नाहींत, त्याप्रमाणें निद्रेला कधींही दूर करीत नाहीं. ७५३ देहाच्या आणि धनाच्या आवडीमुळे, दगडाला जसा कठीणपणा सोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्याला भय ह्मणून सदासर्वकाल सोडितच नाहीं. ७५४ आणखी, प्रत्येक पदार्थावर प्रीति ठेवतो. ह्मणून कृतज्ञाला जसें पाप

सोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्यालाही शोक सोडित नाहीं. ७५५ आणखी रात्रंदिवस जिवाशीं असंतोषाला धरून बसलेला असतो, ह्मणून खेदाबरोबर त्याची मैत्री जडते. ७५६ लसणीला जशी घाण सोडीत नाहीं; किंवा अपथ्य करणाराला जशी व्याधि सोडित नाहीं; त्याप्रमाणें विपाद हा त्याच्या मरणकालपर्यंत सोबती होऊन बसतो. ७५७ शिवाय, आयुष्य व द्रव्येच्छा ह्यांची प्रतिष्ठा वाढवितो, ह्मणून मदालाही तोच आश्रयभूत होतो. ७५८ ताप अग्नीला सोडीत नाहीं; जातिव्यंत सर्प द्वेष सोडित नाहीं; किंवा भय हें जसें जगाचें निरंतर वैर धरून असतें; ७५९ नाहीं तर शरिराला काळ जसा केव्हांही विसंबत नाहीं; त्याप्रमाणें तामसामध्ये मदही अढळ होऊन राहिलेला असतो. ७६० ह्याप्रमाणें हे निद्रादिक पांचही दोष तामसाच्या ठिकाणीं ज्या रीतीनें धरले जातात, ७६१ त्या धृतीला” “जगदीश्वर” ह्मणतात “तामसी धृति हें नांव आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. ७६२ अशा प्रकारें तीन प्रकारची बुद्धि जी आधीं कर्माचा निश्चय करते, तो ह्या रीतीनें धृति शेवटास नेते. ७६३ सूर्याच्या योगानें मार्ग दिसूं लागतो, आणि तो मार्ग निश्चयें करून पायानें चालतात. परंतु चालणें हें जसें धैर्य आहे, ७६४ त्याप्रमाणें बुद्धि कर्म दाखवून देते; इंद्रियांसाठीं सर्व तयारी करून देते; परंतु तें करण्याला जें धैर्य पाहिजे, ७६५ त्या धैर्याचेच हे तीन प्रकार तुला सांगितले. असें हें तीन प्रकारचें कर्म निष्पन्न झालें ह्मणजे मग, ७६६ तेथें जें एक फल उत्पन्न होतें; ज्याला सुख असें ह्मणतात; तेंही कर्माच्या जातीप्रमाणें तीन प्रकारचें असतें हें लक्ष्यांत असूं दे. ७६७ तर तें फलरूप सुखही तीन गुणांनीं तीन प्रकारचें झालेलें असतें, समजलास ? ह्याकरितां त्याचेंच आतां स्पष्ट शब्दांनीं निरूपण करूं. ७६८ परंतु त्याचा चांगुलपणा किती सांगावा ? तें शब्दाच्या मार्गानें धेऊं

१ प्रत्यक्ष. २ इंद्रियार्थ. ३ उत्पन्न करी. ४ धैर्य. ५ कर्माच्या योगानें. ६ स्पष्ट शब्दांनीं. ७ शब्दाच्या मार्गानें. ८ अंतःकरणयुक्त ध्वनानें. ९ करतलमलवत. १० ज्याणें अन्हेरें = तिरस्कार केला असतां अवधान देखील बाहिरें = व्यर्थ होतें त्या जीवाचे जीवानें ऐक. ११ विवरण. १२ व्यवस्था.

लागलें असतां, कानांच्या हातांचा मळ सुखां त्याला लागेल ! ७६९ झणून ज्याच्या तिर-
स्कारानें लक्ष्यही व्यर्थ होतें, त्या जिवाच्या जीवानें आदरपूर्वक ऐक. ७७० असें झणून देवांनीं तीन प्रकारच्या सुखाचें निरूपण कर-
ण्यास प्रारंभ केला. त्याची व्यवस्था आतां सांगतां. ७७१

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।

अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखांतं च निगच्छति ॥ ३६ ॥

[सुखं त्विदानीमिति] ह्मणे सुखत्रयसंज्ञा । सांगां ह्मणोनि प्रतिज्ञा । बोलिलों तें आज्ञा । ऐक आतां ॥ ७७२ ॥ तर सुख तें गा किरीटी । दाबिजेल तुज दिटी । जें आत्मयाचिये भेटी । जीवास होय ॥ ७३ ॥ [अभ्यासाद्रमते यत्र] परि मात्रे-
चेनि माये । दिव्याषध जेसे घेये । कां कथिलाचें कीजे हवे । रसभावनीं ॥ ७४ ॥ ना ना लवणाचें जळ । होआवया दोनि चार वेळ । देऊनि सांडिजती ढाळ । तोयाचें जेवि ॥ ७५ ॥ तेवि जालेनि सुखलेशें । जीव भाविलिया अभ्यासें । [दुः-
खांतं च निगच्छति] जीवपणाचें नासे । दुःख जेथें ॥ ७६ ॥ ते येथ आत्मसुख । जालें असे त्रिगुणात्मक । तेंही सांगां ऐकैक । रूप आतां ॥ ७७ ॥

ते झणाले “ हे सुज्ञा ! तीन प्रकारच्या सु-
खाचीं लक्षणें सांगूं झणून तुला वचन दिलें होतें; तीं आतां ऐक. ७७२ तर अर्जुना ! आत्म्याच्या भेटीनें जिवाला जें सुख होतें, तें सुख तुझ्या दृष्टीला दाखवून देऊं. ७७३ परंतु दिव्य औषध जसें मात्रेच्या प्रमाणानें द्याव-
याचें, किंवा रसायनिक प्रयोगानें जसें कथ-
लाचें रूप करावें, ७७४ किंवा मिठाचें पाणी करण्याकरतां, त्याला जशीं पाण्याचीं दोनचार वेळ पुढें द्यावीं लागतात, ७७५ त्याप्रमाणें ज्ञा-
लेल्या यत्किंचित् सुखाचा अभ्यास जिवास घडला असतां, जीवपणाचें जें कांहीं दुःख झ-
णून आहे तें जेथें नाश पावतें; ७७६ तें आ-
त्मसुखही येथें त्रिगुणात्मक झालेलें आहे. त्याचें-
ही एक एक स्वरूप आतां सांगूं. ७७७

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।

तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ३७

१ बुद्धिमंता. २ भेटीनें. ३ प्रमाणानें. ४ किमयेच्या कृतीनें. ५ पूर. ६ पाण्याचे.

[यत्तदग्रे विषमिव] आतां चंदनाचें बुड । सर्पी जेसें दु-
वाड । कां निधानाचें तोंड । विवसिया जेवि ॥ ७८ ॥ अगा खर्गीचें गोमटें । आडव यागसंकटें । कां बाळपण दसटें । त्रासकाळें ॥ ७९ ॥ हें असो दीपाचिये सिद्धी । अवघड धूम आधीं । ना तरि तो औषधीं । जिभेचा ठावो ॥ ८० ॥ तयापरि पांडवा । जया सुखाचा रिगावा । विषम तेथ मे-
ळावा । यमदमांचा ॥ ८१ ॥ देत सर्वज्ञेहा मिठी । आंगीं ऐसें वैराग्य उठी । खर्गसंसारा कीटी । कांदिताची ॥ ८२ ॥ विवेक श्रवणें खरपुसें । जेथ व्रताचरणें कर्कशें । कर्तां जाती भोक्सें । बुध्यादिकांचे ॥ ८३ ॥ सुषुप्तेचेनि तोंडे । गिळिजे प्राणापानाचे लोंडे । बोहणियेसीचि येवढें । भारी जेथ ॥ ८४ ॥ जें सारसांही विषडतां । होय बोहोहूनि वत्स काडितां । ना भर्तण दवडितां । भोगयावरुनी ॥ ८५ ॥ पै मायेपुढीनि बाळक । काळें नेतां एकुलतें एक । होय कां उदक । तुटतां मीना ॥ ८६ ॥ तैसें विषयांचें घर । इंद्रियां सांडितां थोर । युगांत होय तें वीर । विरोग साहाती ॥ ८७ ॥ ऐसा जया सुखाचा आरंभ । दावी काटिण्याचा क्षोभ । [प-
रिणामेऽमृतोपमं] मग क्षीराब्धीं लाभ । अमृताचा जैसा ॥ ८८ ॥ पहिल्या वैराग्यगंरेळा । धैर्यशुं बोडवी गळा । तरि ज्ञानामृतें सोहळा । पाहे जेथें ॥ ८९ ॥ पै कोलितोहि कोपे ऐसें । द्राक्षांचें हिरवेपण असे । तें परिपार्की कां जैसें । माधुर्य आते ॥ ९० ॥ [आत्मबुद्धिप्रसादजं] तें वैराग्या-
दिक तैसें । पिकलिया आत्मप्रकाशें । मग वैराग्येसांही नाशे । अविद्येजात ॥ ९१ ॥ तेव्हां सागरीं गंगा जैसी । आर्त्ता मीमेत्या बुद्धि तैथी । अद्वयानंदाची आपेसी । खाणी उघडे ॥ ९२ ॥ ऐसें खानुभवविश्रामें । वैराग्यमूळ जें परिणमे । [तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तं] तें सात्त्विक येणें नामें । बोलिजे सुख ॥ ९३ ॥

“ आतां चंदनाचें बूड सर्पीमुळें जसें भयं-
कर; किंवा ठेव्याचें तोंड भुतामुळें जसें भेसूर;
७७८ त्याप्रमाणें बाबा ! स्वर्गातील भोग चां-
गले आहेत. परंतु त्याकरितां यज्ञयागादिक

१ भयंकर. २ विघ्नदेवतेमुळें. ३ अरण्य. ४ यज्ञरूप ह्म-
शानें. ५ पीडाकारक. ६ औषधास. ७ विपरीत. ८ दांतखोळ.
९ कांटेरी. १० दूर करीतच. ११ तीव्र. १२ कठोर. १३ आं-
गच्या कातज्याचें भोंक. १४ मध्यनाडी. १५ प्रथमारंभी.
१६ चक्रवाकाच्या युग्मास. १७ कासेपासून. १८ भिकारी.
१९ पात्रावरून. २० आईच्या पुढ्यांतून. २१ विरक्त.
२२ विषाला. २३ पुढें करी. २४ निखान्यालाही तीक्ष्ण
लागेल, कवलित्ता अशा पाठीं तक्षक. २५ अज्ञानसमूह.
२६ सिळाची असतां.

संकटांचीं अरण्ये ओलांडाचीं लागतात; किंवा बालपण कंटाळवाणें असल्यामुळें संतापदायक असतें. ७७९ हें असो. दिवा तयार करण्या-पूर्वी धूर कठीण असतो, किंवा औषधाच्या गुणापूर्वी जिभेला कडवटपणा सोसावा लागतो. ७८० त्याप्रमाणें अर्जुना ! ज्याला ह्या सुखांत प्रवेश करावयाचा असेल, त्याला यम दम ह्यांचा समुदायाचा मोठा अडथळा आहे. ७८१ त्यांच्या योगानें झाडून साऱ्या ओढाचें पूज्य होईल; व स्वर्गसंसाराची आडकाठीच निघून जाईल, अशा प्रकारचें वैराग्य उत्पन्न होतें. ७८२ तीक्ष्ण विचार कानावर आल्यानें, कठोर व्रताचरणानें, बुद्धि आदिकरून फाटून त्यांना भोकसे पडतात. ७८३ सुषुप्तेच्या तोंडानें प्राणापानांचे लोंढे गिळावे लागतात. बोहनीलाच जेथें इतकें संकट असतें; ७८४ चक्रवाक पक्ष्याच्या युगमामध्ये बिघाड झाला असतां, कासेपासून वासरूं ओढलें असतां, पात्रावरून भिकारी हांकून दिला असतां, ७८५ एकुलतें एक मूल आईपासून काळानें नेलें असतां, किंवा उदक संपलें असतां, मत्स्याला जसें होतें; ७८६ त्याप्रमाणें विषयांचें घर सोडतांना इंद्रियांना मोठा युगांत झाला असें वाटतें. परंतु हें सर्व, विरक्त वीर मात्र सहन करतात. ७८७ असा सुखाचा आरंभ जरी कठीणपणाचा कडेलोट दाखवितो, तरी मग जसा क्षीराब्धीमध्ये अमृताचा लाभ व्हावा, ७८८ तद्वत् पहिल्या वैराग्यरूप विषाला धैर्यरूप शंकर जर आपला गळा पुढें करील, तरच तेथें आत्मज्ञानामृताचा सोहळा पहावयास मिळतो. ७८९ निखान्याला सुडां तीक्ष्ण लागेल इतका द्राक्षाचा आंबटपणा असतो, परंतु त्यालाच परिपक्व झाल्यावर जसें माधुर्य प्राप्त होतें; ७९० त्याप्रमाणें तें वैराग्यादिक आत्मप्रकाशानें परिपक्व दशेला आलें ह्मणजे वैराग्यासहित अज्ञान ह्मणून जेवढें आहे तेवढें सारें लयास जातें. ७९१ तेव्हां समुद्राला जशी गंगा मिळते, त्याप्रमाणें आत्मस्वरूपामध्ये बुद्धीचें ऐक्य झालें ह्मणजे आपोआपच अज्ञा-

नंदाची खाण उघडते. ७९२ अशा प्रकारें स्वा-नुभवाच्या विधांतीनें वैराग्यमूळापासून परिपक्व दशेस आलेलें जें सुख, त्यालाच सात्त्विक सुख असें नांव आहे.” ७९३

विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।

परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥१८॥

[विषयेति] आणि विषयेंद्रिया । मेळ होतां धनंजया । जें सुख जाय थड्या । सांडून दोन्ही ॥ १४ ॥ अधिकारिया रिगतां गांवो । होय जैसा उत्साहो । कां रिणावरी विवाहो । विस्तारिला ॥ १५ ॥ नाना रोगिया जिभेपासीं । केळें गोड साखरेसीं । कां बचनागाची जैसी । मधुरता पहिली ॥ १६ ॥ पहिलें संव-चोराचें मैत्र । होटभेटीचें कलत्र । कां लोषवी-याचे विचित्र । विनोद ते ॥ १७ ॥ तैसें विषयेंद्रियदोखी । जें सुख जीवातें पोखी । [परिणामे विषमिव] मग उपर्जिला खडकीं । हंस जैसा ॥ १८ ॥ तैसी जोडी आघवी आटे । जीविताचा ठाय फिटे । सुकृताचियाही सुटे । घनाची गांठी ॥ १९ ॥ आणिक भोगिलें जें काहीं । तें खम्र तैसें होय नाहीं । मग हानिचाचि धोई । लोळावें उरे ॥ २० ॥ ऐसें आपत्तीं जें सुख । ऐहिकी परिणमे देख । परत्रीं कीर विख । होउनि परते ॥ १ ॥ जे इंद्रियजाता लळा । दीधलिया ध-र्माचा मळ । जाडून भोगिजे सोहळा । विषयांचा जेथ ॥ २ ॥ तेथ पातकें बांधिती थोवो । तियें नरकी देती ठावो । जेणें सुखें आपवो । परत्रीं ऐसा ॥ ३ ॥ पै नांमं विषं मधुरें । परि मारुनि अंती खरें । तैसें आदिजे भोडिरें । अंती कडु ॥ ४ ॥ [तत्सुखं राजसं स्मृतं] पार्था तें सुख साचें । बै-ळिलें आहे रजाचें । ह्मणीनि न शिवें तयाचें । आंग कहीं ॥ ५ ॥

“हे धनंजया ! विषयांचा आणि इंद्रियांचा मिलाफ झाला ह्मणजे जें सुख दोन्ही थडी सोडून जातें. ७९४ अधिकारी गांवांत शिरतांना जसा उत्साह होतो; किंवा ऋण काढून लग्नसोहळा होतो, ७९५ किंवा रोग्याच्या जिभेला जसें साखरेबरोबर केळें गोड लागतें; किंवा बचनागाची गोडी जशी प्रथम मधुर लागते, ७९६ बरोबर येणाऱ्या चोराची पहिली मैत्री; बाजारांत भेटलेली स्त्री; किंवा

१ तीरें. २ अधिकारी. ३ शिरतां. ४ कर्जोनें. ५ बाजारां-तील स्त्री. ६ थडेंखोराचें. ७ विषयांमुळें, उद्देशानें. ८ सांपडला. ९ संपादिलें. १० पुण्यरूप धन. ११ घायानें. १२ विप-तिरूप. १३ या लोकांत. १४ परिणाम पावतें. १५ बळ. १६ अपाय. १७ मधुर नांवाचें विष. १८ मधुर. १९ बनविलें.

खुषमस्कऱ्याची विचित्र थट्टा; ७९७ त्याप्रमाणें विषयेंद्रियांच्या दोषानें जें सुख जिवाला पोसतें; मग हंस जसा खडकावर सांपडावा; ७९८ त्याप्रमाणें संपादलेलें सारें संपून जातें; जीविताचें ठिकाण मोडतें; पुण्यरूप धनाचा सांठा रिकामा पडतो; ७९९ आणखी भोगलेलें जें जें कांहीं, तें स्वप्नवत् नाहींसं होऊन जातें. मग हानीच्या धावामध्ये लोलत बसणें येवढेंच काय तें बाकी उरतें. ८०० असें आपत्तिरूप जें सुख तें ह्या लोकांत आपला गुण करतें, आणि परलोकीं तर जें विष होऊन परततें. ८०१ जें प्रत्येक इंद्रियाचा लळा पुरवितें. ज्यास धर्माचा मळा दिला असतां तो जाळून जेव्हां विषयांचा सोहळा भोगतें, ८०२ तेव्हां पातकें बळावतात; आणि तीं नरकामध्ये नेऊन टाकतात. इतका परलोकामध्ये ज्या सुखानें अपाय होतो. ८०३ तसेंच मधुर नांव असलेलें विष खरें; पण अखेर तें मारून शेवटीं आपलें नांव खरें करतें. त्याप्रमाणें आधीं जें गोड आणि अखेरीला कडू; ८०४ पार्था ! तें सुख खरोखर रजोगुणाचें बनविलेलें आहे. ह्याणून त्याच्या आंगाला कधीं हात सुद्धां लावूं नको.”

८०५

यदग्रे चानुबंधे च सुखं मोहनमात्मनः ।

निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥

[यदग्रे इति] आणि अपेयाचेनि पानें। अखायाचेनि भोजनं। खैरस्त्रीसंनिधानें। होय जें सुख ॥ ६ ॥ कां पुढिलोचने मारें। नातरि परस्वापहारें। जें सुख अवतरे। भाटाच्या बोलें ॥ ७ ॥ [निद्रालस्यप्रमादोत्थं] जें आलस्यावरि पोखिजे। निद्रेमाजी जें देखिजे। जयाच्या आवांनीं भूलिजे। आपुली वाट ॥ ८ ॥ [तत्तामसमुदाहृतं] तें या सुख पार्था। तामस जाण सर्वथा। हें बहु न सांगोचि जें कथा। असंभाव्य हें ॥ ९ ॥ ऐसें कर्मभेदें मुदलें। फळसुखही त्रिया जालें। तें हें यथागमं केलें। गोचर तुज ॥ ८१० ॥ तें कर्ता कर्म फळ। हे त्रिपुटी येकी केवळ। वांचूनि क्रांहीचि नसे स्थूळ। सूक्ष्मीं इये ॥ ११ ॥ आणि हे तंव त्रिपुटी। तिहीं गुणीं इहीं किरीटी। गुंफिली असे पटी। तांनुवीं जैसी ॥ १२ ॥

१ व्यभिचारिणीच्या संसर्गानें. २ प्रगटे. ३ पुष्ट होतें. ४ स्वधर्म. ५ कारण कीं. ६ त्याज्य, निघ. ७ तंतूनीं.

“आणखी अपेयाचें पान केल्यानें, अभक्ष भक्षण केल्यानें, व्यभिचारिणीच्या सांसर्गानें जें सुख होतें; ८०६ किंवा दुसऱ्यास मारून, किंवा दुसऱ्यास सर्वस्वीं नागवून, भाटाच्या बडबडीप्रमाणें जें क्षणिक सुखच प्राप्त होतें; ८०७ आळसानें जें पोसलें जातें; निद्रेमध्ये जें दृष्टीस पडतें; ज्याच्या आदि व अंती आपली वाट चुकते; ८०८ हे पार्था ! तें सुख खरोखर तामस होय. त्याची कथा निघ आहे. ह्यास्तव अधिक सांगत नाहीं. ८०९ अशा प्रकारें मूळ कर्मभेदाप्रमाणें फलसुखही तीन प्रकारचें झालेलें आहे. तें हें प्रसंगानुसार तुला दाखवून दिलें. ८१० तें कर्ता, कर्म आणि फल ह्या एका त्रिकुटाशिवाय, ह्या सूक्ष्मामध्ये स्थूळ असें कांहीं नाहीं. ८११ आणि हे अर्जुना ! हें त्रिकुट तर ह्या तीन गुणांनीं वखामध्ये तंतु असल्याप्रमाणें गुंफलेलें आहे.” ८१२

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।

सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यान्निर्भिर्गुणैः ॥ ४० ॥

[सत्त्वं प्रकृतिजैरिति] ज्ञाणानि प्रकृतीच्या आलोकीं। न बंधिजे इहीं सत्वादीकीं। [न तदस्तीति] तैसीं स्वर्गां ना मृत्युलोकीं। आधी वस्तु ॥ १३ ॥ कैचा लोवेवीणं कांबळा। मातियेवीण मोढळा। कां जळेंवीण फळोळा। होणें आहे ॥ १४ ॥ तैसें नहोनि गुणाचें। सृष्टीच्या रचना रचे। ऐसें नाहींच गा साचें। प्राणिजात ॥ १५ ॥ यालागीं हें सकळ। तिहीं गुणांचेचि केवळ। घडलें आहे निखिळ। ऐसें जाण ॥ १६ ॥ गुणीं देवां त्रयी लाविली। गुणीं लोकीं त्रिपुटी पाडिली। चतुर्वर्णा घातलीं। सिनानि उळिगें ॥ १७ ॥

“ह्याणून प्रकृतीच्या आभासांत ह्या सत्वादीकांनीं वांधली जाणार नाहीं, अशी स्वर्गांत किंवा मृत्युलोकावर एकही वस्तु नाहीं. ८१३ लोंकरीशिवाय कांबळा कशाचा ? मातीशिवाय ठेंकूळ कशाचें ? किंवा पाण्याशिवाय लाटा उत्पन्न होतील काय ? ८१४ त्याप्रमाणें गुणांना धेतल्याशिवाय सृष्टीच्या रचनेत उत्पन्न होईल, असा कोणताच प्राणी नाहीं. ८१५ ह्याकरितां

१ आभासांत, जगांत, दृष्टींत. २ लोंकरीवांचून. ३ मातीचें ठेंकूळ. ४ ब्रह्मा, विष्णु, महेश. ५ कर्ता, कर्म, करणें इ०. ६ कायें.

हैं सर्व निखालस तीन गुणांचेंच घडलेलें आहे असें समज. ८१६ गुणांनीं देवांतही तीन भेद करून टाकले; गुणांनींच जगामध्ये कर्ता-कर्म आणि करणें असे तीन भेद केले, आणि चतुर्वर्णांना भिन्न भिन्न कर्मे लावून दिलीं. ८१७

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवेर्गुणैः ॥४१॥

[ब्राह्मणक्षत्रियेति] तेचि चारी वर्ण । पुससी जरी कोण कोण । तरी जयां मुख्य ब्राह्मण । घुरेचे कां ॥ १८ ॥ येर क्षत्रिय वैश्य दोन्ही । तेही ब्राह्मणाच्याचि मानिजे मानी । जे ते वैदिकविधानी । योग्य ह्मणानी ॥ १९ ॥ चौथा शूद्र जो धनंजया । वेदीं लाग कीर नाही तया । तन्ही वृत्ति वर्णत्रया- । अधीन तयाची ॥ ८२० ॥ तिये वृत्तीच्या जवळिका । वर्णत्रयां ब्राह्मणादिकां । अहो शूद्रही की देखा । चौथा जाला ॥ २१ ॥ जेसा फुलाचेनि सांगाते । तांतु तुरबिजे श्रीमंतें । तैसें द्विजसंगें शूद्रातें । स्वीकारी श्रुती ॥ २२ ॥ ऐसैसी गा पार्था । हे चतुर्वर्णव्यवस्था । करूं आतां कर्मपथा । यांचियां रूप ॥ २३ ॥ [कर्माणि प्रविभक्तानि] जिहीं गुणीं ते वर्ण चारी । जन्ममृत्यूचिये कातरी । चुकोनियां ईश्वरीं । पडे होती ॥ २४ ॥ जियें आत्मप्रकृतीचे इहीं । गुणीं सत्त्वादिकीं तिहीं । कर्म चौघां चहूं ठाई । वांटिलीं वर्णां ॥ २५ ॥ जैसें बापें जोडिलें लेंका । वांटिले सूर्यें मार्ग पांथिकां । ना ना व्यापार सेवकां । खागीं जैसे ॥ २६ ॥ [स्वभावप्रभवेर्गुणैः] तैसी प्रकृतीच्या गुणीं । जया कर्मांची वेल्होवणी । केली आहे वर्णां । चहूं इहीं ॥ २७ ॥ तेथ सत्त्वं आपल्या आंगीं । समीननिमीन भागीं । दोघे केले नियोगी । ब्राह्मण क्षत्रिय ॥ २८ ॥ आणि रज परी सात्त्विक । तेथ ठेविले वैश्य लोक । रजचि तैममेपक । तेथ शूद्र ते गा ॥ २९ ॥ ऐसा येकाचि प्राणिवृंदा । भेद चतुर्वर्णधा । गुणींचि इहीं प्रबुद्धा । केला जाण ॥ ८३० ॥ मग आपलें ठेविलें जैसें । आइतेंचि दीपें दिसे । गुणभिन्न कर्म तैसें । शास्त्र दावी ॥ ३१ ॥ तेंचि आतां कोण कोण । वर्णविहिताचें लक्षण । हें सांगों ऐक श्रवण । सांभांग्यनिधी ॥ ३२ ॥

“ते चार वर्ण कोण कोण ? असें विचारशील

१ अग्रमार्गीचे. २ जीवोपाय. ३ वृत्तीच्या सान्निध्याने. ४ दोरा हुंगतात. ५ या चारी वर्णांच्या कर्ममार्गांचें स्पष्टीकरण. ६ कातरिस. ७ प्राप्त. ८ वाटसरू लोकांस. ९ अथवा. १० वांटणी. ११ अर्धोअर्ध, समविषमभावे. १२ स्वाधीन. १३ तमोमिश्र. १४ वर्णपरत्वे चार प्रकारचा. १५ हे भाग्यवंता.

तर, त्यामध्ये ब्राह्मण हे मुख्य-अग्रगणी-आहेत. ८१८ दुसरे क्षत्रिय आणि वैश्य हे दोन्ही. त्यांचा मानही ब्राह्मणांप्रमाणेच समजावा. कारण, ते वेदोक्त कर्म करण्यास योग्य आहेत ह्मणून. ८१९ अर्जुना ! जो शूद्र त्याला मात्र वेदांशीं कांहीं संबंध नाही. तरी त्याचा जीवोपाय तिन्ही वर्णांच्या हातांत आहे. ८२० अहो ! त्या वृत्तीच्या सान्निध्याने ब्राह्मणादि वर्णत्रयांत शूद्र हाही चौथा होऊन बसला कि हो ! ८२१ ज्याप्रमाणें फुलांच्या संगतीनें दोऱ्याचाही श्रीमंत लोक वास घेतात, त्याप्रमाणें श्रुतीनें ब्राह्मणावरोबर शूद्राचाही स्वीकार केला आहे. ८२२ पार्था ! अशी अशी ही चार वर्णांची व्यवस्था आहे. आतां ह्या चारी वर्णांच्या कर्ममार्गांचें विवरण करूं. ८२३ ते चारी वर्ण ज्या गुणांनीं जन्ममृत्यूच्या कातरितून सुटून ईश्वराच्या ठिकाणीं पोचतील, ८२४ अशीं जीं आत्मप्राप्तीचीं सत्त्वादिक तीन गुणांचीं कर्मे, तीं चारी वर्णांना चार प्रकारें वांटून दिलीं. ८२५ यापानें संपादलेलें ज्याप्रमाणें मुलांना वांटून द्यावें, किंवा सूर्य जसा प्रवाशांना मार्ग वांटून देतो, किंवा धन्यानें चारारांना जशीं कर्मे वांटून द्यावीत, ८२६ त्याप्रमाणें प्रकृतीच्या ह्या गुणांनीं ज्या कर्मांची ह्या चतुर्वर्णांमध्ये वांटणी केली आहे, ८२७ त्यांत सत्त्वानें आपल्या आंगच्या समविषमभावानें ब्राह्मण व क्षत्रिय हे दोघे स्वाधीन करून ठेवले आहेत. ८२८ आणखी रज-परंतु सात्त्विक आहे-त्यांत वैश्य लोक ठेवलेले आहेत. आणखी रजच तमानें मिश्रित झालेले असतें, त्यांत शूद्र असतात. ८२९ हे बुद्धिमंता ! असा एकाच प्राणिसमुदायाचा चार प्रकारचा भेद ह्या गुणांनींच केला आहे, हें लक्षांत ठेव. ८३० मग आपलें ठेवलेलें दिव्यानें जसें सहज दिसू शकतें, त्याप्रमाणें गुणांनीं भिन्न भिन्न केलेलें कर्म शास्त्र दाखवून देतें. ८३१ हे भाग्यवंता ! तेंच वर्णविहिताचें कोणकोणतें लक्षण ? तें सांगतों. कान देऊन ऐक ॥ ८३२

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतरार्जवमेव च ।

ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ४२

[शमः] तरि सबैद्रियांचिया दृष्टी । घेऊनि आपुल्या हातीं । बुद्धि आत्मया मिळे येकांती । प्रिया जैसी ॥ ३३ ॥ ऐसा बुद्धीचा उपरम । तया नाम ह्मणिपे शम । तो गुण गा उपेकम । जया कर्माचा ॥ ३४ ॥ [दमः] आणि बाह्येद्रियांचें धेडें । पिटूनि विधीचेनि दंडें । नेदिजे अधर्माकडे । कहींचि जावों ॥ ३५ ॥ तो पै गा शमा विरेजा । दम गुण जेथ दुजा । आणि स्वधर्माचिया वोजा । जिणें जें कां ॥ ३६ ॥ [तपः] तेविंचि सटवीचिये राती । न विसंबिजे जेविं वाती । तैसा ईश्वरनिर्णय चितीं । वाहणें सदा ॥ ३७ ॥ तया नाम तप । हें तिजया गुणाचें रूप । [शौचं] आणि शौचंही निष्पाप । द्विविध जेथ ॥ ३८ ॥ मन भावशुद्धी भरलें । आंग क्रिया अळकारिलें । ऐसें सबाह्य जियेलें । साजिरें जें कां ॥ ३९ ॥ तया नाम शौच पार्था । तो कर्मी गुण जये चौथा । [क्षांतिः] आणि पृथ्वीचिया परी सर्वथा । सर्व जें साहाणें ॥ ८४० ॥ ते गा क्षमा पांढवा । गुण जेथ पांचवा । खरा-माजि दुहावा । पंचम जैसा ॥ ४१ ॥ [आर्जवमेव च] आणि वांकडेनि वोधेंसी । गंगा वाहे उजूचि जैसी । कां पृष्टी वळला उर्सी । गोडी जैसी ॥ ४२ ॥ तैसा विषमाहि जीवां-लागीं उजु-कार बरवा । तें आर्जव गा साहावा । जेथिचा गुण ॥ ४३ ॥ [ज्ञानं] आणि पाणियें प्रयत्नं मीळीं । अखंड जंचे झाडामुळीं । परितें आषवेंचि फळीं । जाणे जेविं ॥ ४४ ॥ तैसें शा-स्त्राचारें तेणें । ईश्वरच येक पावणें । हें फुडें जें कां जाणणें । तें येथ ज्ञान ॥ ४५ ॥ तें गा कर्मी जिये । सातवा गुण होये । [विज्ञानं] आणि विज्ञान हें पाहें । एवरूप ॥ ४६ ॥ तरि सत्वशुद्धीचिये वेळे । शास्त्रें कां ध्यानबळें । ईश्वरतत्त्वाचि मिळे । निष्ठंरुद्धी ॥ ४७ ॥ हें विज्ञान बरवें । तें गुणरत्न जेथ आठवें । [आस्तिक्यं] आणि आस्तिक्य जाणावें । नववा गुण ॥ ४८ ॥ पै रोजमुद्रा आथिलियां । प्रजा भजे भलतयां । तेविं शास्त्रें स्वीकारिलिया । मार्गमात्रातें ॥ ४९ ॥ आदरें जें कां मानणें । तें आस्तिक्य मी ह्मणें । तो नववा गुण जेणें । कर्म तें साच ॥ ८५० ॥ [ब्रह्मकर्म स्वभावजं] एवं नवही शमा-

दिक । गुण जेथ निदोष । तें कर्म जाण खाभाविक । ब्राह्मणाचें ॥ ५१ ॥ तो नवगुणरत्नाकर । यया नवरत्नांचा हार । न फेळित ले दिनकर । प्रकाश जैसा ॥ ५२ ॥ ना ना चांपा चांपोळीं पूजिला । चंद्र चंद्रिका धवळला । कां चंदन निजें चंचिला । सौरभ्यें जेविं ॥ ५३ ॥ तेविं नवगुणटिकला । लेणें ब्राह्मणाचें अव्यंग । कहींचि न संडी आंग । ब्राह्मणाचें ॥ ५४ ॥ आतां उचित जें क्षत्रिया । तेंही कर्म धनंजया । सांगों एक प्रजेचिया । भरोवरी ॥ ५५ ॥

“पतीला जशी एकांती स्त्री भेटते; त्याप्रमाणें सर्व इंद्रियांच्या प्रवृत्ति आपल्या हाता-मध्ये घेऊन बुद्धि आत्म्याला मिळणें, ८३३ अशी जी बुद्धीची उलट, तिलाच शांति असें ह्मणतात. तो गुण ज्याच्या कर्माच्या आरंभाला असतो. ८३४ बाह्येद्रियांच्या धेड्यांना विधी-रूपदंडानें शासन करून पिटाळून लावतो. अधर्माकडे कधीं जाऊंच देत नाही. ८३५ त-साच तेथें त्या शमाला साह्य करणारा दुसरा गुण जो दम तो जेथें असतो. आणि स्वधर्माच्या रीतीनें जें जगणें, ८३६ तसेंच सटवाईच्या रात्रीं (मूल जन्मल्यापासून पांचव्या व सहाव्या रात्रीं) दिव्याला जसें क्षण-भर विसंबत नाहीत, त्याप्रमाणें चित्तामध्ये निरंतर ईश्वराचा निर्णय धरून बसणें, ८३७ त्याचें नांव तप. तें तिसऱ्या गुणाचें लक्षण होय. आणि निष्पाप असा शुचिर्भूतपणाही जेथें दोन प्रकारचा; ८३८ शुद्ध भावनेनें मन भरलेलें, आणि शरीर विहित कर्मांनीं अलंकृत झालेलें; असें अंतर्बाह्य सुशोभित जें जीवित, ८३९ हे पार्था! त्याचें नांव शौच. हा कर्मांतला चौथा गुण होय. आणखी बरोबर पृथ्वीप्रमाणें जें सर्व सहन करणें; ८४० अर्जुना! स्वराामध्ये पंच-

१ विषयापासून उलटणें. २ शांति. ३ आरंभ. ४ खारी. ५ साह्य. ६ रीतीनें. ७ वांचणें. ८ जन्मल्याच्या साहाय्या रात्रीं. ९ दिवा. १० शुद्धि. ११ विचारानें. १२ विहित कार्यानीं भूषित केलें. १३ जाहालें, जीवित. १४ सुशो-भित. १५ पंचम नांवाचा खर. १६ पाठीकडे वळले. १७ सरळ. १८ माळी नित्य झाडाच्या मुळांत पाणी घालून जचें=जपें, श्रम करितो परंतु ते श्रम फळीं जाणतो=फळांनें श्रमांचें सार्थक्य होईल असें मानितो. १९ सिद्धांतबुद्धीनें. २० वस्तुसत्यताबुद्धि. २१ राजचिन्हें असलेल्यांला.

मस्वर जसा उत्तम-शोभिवंत-त्याप्रमाणें जी क्षमा, ती त्याचा पांचवा गुण होय. ८४१ वांकड्या ओघानें गंगा जशी सरळच वाहते, किंवा उसाला पाठीकडे वळविला तरी, गोडी जशी कायमच्या कायम, ८४२ त्याप्रमाणें वांकड्या

१ तोच नवगुणरूप रत्नांचा समुद्र व त्या नवरत्नांचा हार करून तोच ले=आपल्या आंगावर बाळितो. २ चांप्याच्या कळ्यांनीं. ३ चांदण्यानें शुभ्र केला. ४ शोभिवंत. ५ सामुग्रीनें.

प्राण्यावर सुखां सरलता; असें जें आर्जव तें ज्यांतील सहाषा गुण. ८४३ आणखी, माळी नित्य झाडाच्या मुळांत पाणी घालून अखंड खपत असतो, पण तें सर्व झाडाच्या फळा-मध्ये समजून येतें. ८४४ त्याप्रमाणें शास्त्राचार ह्मणून जो आहे, त्याच्या योगानें एका ईश्व-रालाच पहावयाचें असें स्पष्ट समजणें ह्याचें नांव येथें ज्ञान होय. ८४५ तें कर्मांमध्ये रा-हिलेलें असतें. तें सातवा गुण होय. आणि विज्ञानही तसेंच आहे हें ध्यानांत ठेवावें. ८४६ तर सत्वशुद्धीच्या वेळेला शास्त्रद्वारे किंवा ध्यानशक्तीने सिद्धांतबुद्धि ईश्वरतत्त्वालाच मि-ळते. ८४७ तें सुंदर विज्ञान हें जेथचें आठवें गुणरत्न आहे. आणि आस्तिक्य-वस्तूच्या-ब्रह्माच्या-ठिकाणीं सत्यताबुद्धि हा नववा गुण आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. ८४८ राजचिन्हें धारण केलेला कोणीही असो, त्याला प्रजा भजू लागते. त्याप्रमाणें शास्त्रानें स्वीकारलेल्या प्रत्येक मार्गाला, ८४९ आदरानें जें मान देणें त्याला मी 'आस्तिक्य' असें ह्मणतों. तो खरो-खर नववा गुण असून त्याच्या योगानें कर्म शे-वटास जातें. ८५० ह्याप्रमाणें शमदमादिक नऊही गुण जेथें निदोष रीतीनें असतील, तें ब्राह्मणांचें स्वाभाविक कर्म आहे, हें लक्ष्यांत ठेव. ८५१ तो नऊ गुणरूपरत्नांचा समुद्र, व त्याच नऊ रत्नांचा हार, सूर्य जसा प्रकाश धारण करतो, त्याप्रमाणें धारण करतो, दूर करीत नाही. ८५२ किंवा चाफ्याची पूजा, चाफ्याच्याच कळ्यांनीं करावी, चंद्राला चां-दण्याचीच सफेती द्यावी, किंवा चंदनानें आ-पल्याच सुगंधाचें उटणें लावावें, ८५३ त्या-प्रमाणें त्रिगुणाचा शोभिवंत व अव्यंग असा ब्राह्मणाचा अलंकार आहे. तो ब्राह्मणांच्या आं-गापासून कधीही दूर होत नाही. ८५४ आतां धनंजया! क्षत्रियांना जें कर्म उचित, तेंही सांगतों, नीट लक्ष्य देऊन ऐक." ८५५

शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।

दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥

[शौर्य] तरि भानु हा तेजें । नापक्षी जेव्हा विरजें । कां सिंह न पाहिजे । जावळिया ॥ ५६ ॥ ऐसा स्वयंभ जो जीवें लाठ । सावायेंवीण उद्धट । तें शौर्य गा जेथ श्रेष्ठ । पहिला गुण ॥ ५७ ॥ [तेजः] आणि सूर्यांचेनि प्रतापें । कोडिही न-क्षत्र हारपे । ना तो तरि न लोपे । सचंद्री तिहीं ॥ ५८ ॥ तैसेनि आपुले प्रौढिगुणें । जगा या विस्मय देणें । आपण तरी न क्षोभणें । कायसेनही ॥ ५९ ॥ तें प्रागल्भ्यरूप तेजा । जिये कर्मी गुण दुजा । [धृतिः] आणि धीर तो तिजा । जेथिचा गुण ॥ ८६० ॥ वरिपडलिया आकाश । बुद्धीचे ढोळे मानस । झांकी ना तें परियेस । धैर्य जेथें ॥ ६१ ॥ [दाक्ष्यं] आणि पाणी हो कां भलतेतुकें । परि तें जिणोनि पद्म फांके । कां आकाश उंचिया जिंके । आवडे तयातें ॥ ६२ ॥ तेथि विविधा अवस्था । पातलिया जिणोनि पाथी । प्रज्ञाफळ तया अर्था । वेष्टां देणें जें ॥ ६३ ॥ तें दक्षाव गा चोख । जेथ चौथा गुण देख । [युद्धे चाप्यपलायनं] आणि जुंम अलौकिका पांचवा गुण ॥ ६४ ॥ आदित्याचीं झाडें । सदां सन्मुख सू-र्यो कडे । तेथि समोर शत्रूपुढें । होणें जें कां ॥ ६५ ॥ माहे-र्वणी प्रयत्नेंसी । चुकविजे सेजे जैसी । रिपू पाठी नेदिजे तैसी । समरगणी ॥ ६६ ॥ हा क्षत्रियाच्या आचारी । पां-चवा गुणेंद्र अवधारी । चहू पुरुषार्थी शिरी । मक्ति जैसी ॥ ६७ ॥ [दानं] आणि जालेनि फुलें फळें । शोखिया जैसी मोकळे । कां उदार परिमळें । पद्माकर ॥ ६८ ॥ ना ना आ-वडीचेनि मापें । चांदिणें भलतेणें घेपे । पुढिलांचेनि सं-कल्प । तैसें जें देणें ॥ ६९ ॥ तें उमेव गा दान । जेथ स-हावें गुणरत्न । [ईश्वरभावश्च] आणि आंजे एकायतन । होणें जें कां ॥ ८७० ॥ पोपुनि अवयव आपुले । करविजती मा-तविले । तेथि पालणें लोभविलें । जग जें भोगणें ॥ ७१ ॥ तया नाम ईश्वरभावो । जो सर्वसामर्थ्याचा ठावो । तो गु-णांमाजि रावो । सातवा जेथ ॥ ७२ ॥ [क्षात्रं कर्म स्वभा-वजं] ऐसें जें शौर्यादिकीं । इहीं सात गुणविशेखी । अलंकृत संसृद्धी । आकाश जैसे ॥ ७३ ॥ तैसें सप्तगुणी विचित्र । कर्म जें जगीं पवित्र । तें सहज जाण क्षात्र । क्षत्रियाचें ॥ ७४ ॥ ना ना क्षत्रिय नव्हे नर । तो सत्व सोनयाचा मेरु । ह्मणींनि गुण स्वर्ग आधार । सातां यियां ॥ ७५ ॥ ना तरि सप्तगुणांगवी । परिवारली बरवी । हे किया नव्हे पृथ्वी । भोगीतसे तो ॥ ७६ ॥ कां गुणाचे साताही ओवी ।

१ साह्य. २ सोबती. ३ बळवान्. ४ साढावांचून. ५ शूर. ६ कोट्यवधि. ७ कोसळल्यास. ८ भलत्या रीतीनें, कितीही. ९ जिंकून. १० सूक्ष्ममार्ग. ११ रजखला. १२ मुख्य गुण. १३ वृक्ष. १४ देतात. १५ मोठें. १६ वेदालेस एकनिष्ठ. १७ सप्तश्रुतीनीं. १८ वेष्टिली.

हे क्रिया ते गंगा जगी । तथा महोदधीच्या आंगी । विलसे जैसी । ७७ ॥ परि हें बहु असो देख । शौर्यादि गुणात्मक । कर्म गा नैसर्गिक । क्षत्रजातीसी ॥ ७८ ॥ आतां वैश्याचिये जाती । उचित जें महामती । तें ऐकें निरंती । क्रिया सांगें ॥ ७९ ॥

“ तर सूर्य हा प्रकाश पाडण्यासाठी कोणाचे साहाय्य मागत नाही; किंवा सिंह हा कधी सोबती धुंडावयास जात नाही. ८५६ त्याप्रमाणे स्वतःच जो बलाढ्य, कोणाच्या साहाय्याचूनच जो शूर, तो शौर्यगुण ज्यामध्ये पहिला व श्रेष्ठ होय. ८५७ आणखी, सूर्याच्या प्रभावाने कोट्यवधि नक्षत्रे असली तरीही ती लोपून जातात. पण चंद्रासहवर्तमान ती सारी असली तरी, तो मात्र लोपत नाही. ८५८ त्याप्रमाणे, आपल्या अप्रतिम गुणाने जे ह्या जगाला अगदी चकित करून सोडते, आणि आपण कधीही हार जात नाही. ८५९ ते उन्नतीला पोचलेले तेज, हे ज्याच्या कर्मातील दुसरा गुण होय, आणि ‘धीर’ हा ज्याच्यातील तिसरा गुण. ८६० मस्तकावर आकाश कोसळून पडले तरी, हे लक्ष्यांत ठेवावे की, मन बुद्धीचे डोळे सुखां झांकित नाही, असे जेथे धैर्य असते. ८६१ आणखी कितीही पाणी असो; पण तितक्यासही मागे सारून जसे कमल विकास पावते; किंवा उंचीमध्ये आकाश हें पाहिजे त्याला मागे टाकते; ८६२ त्याप्रमाणे पार्था! नानाप्रकारच्या दशा प्राप्त झाल्या तरी, त्यास मागे हटवून त्यामध्ये जी सुक्ष्मबुद्धि खर्च करणे, ८६३ असे जे उत्तम दाक्षिण्य ते ज्यांत चौथा गुण आहे. आणि अलौकिक युद्ध करणे हा पांचवा गुण. ८६४ सूर्यकमळाची झाडे, जशी सदासर्वकाल सूर्याकडे असतात, त्याप्रमाणे नेहेमी जे शत्रूच्या समोर असतात. ८६५ कांहीही झाले तरी रजस्वला स्त्री जशी शय्यास्थानी वर्ज्यच केली पाहिजे, त्याप्रमाणे समरांगणामध्ये शत्रूला पाठ झणून द्यावयाचीच नाही. ८६६ चारी पुरुषार्थामध्ये जशी भक्ति श्रेष्ठ,

तद्वत् क्षत्रियाच्या आचारामध्ये हा पांचवा गुण श्रेष्ठ आहे, हे ध्यानांत ठेवावे. ८६७ आणखी पुष्पे, फळे, तयार झाली झणजे डाहळ्या जशी ती देऊन टाकतात; किंवा सुगंध देण्याविषयी कमले जशी उदार असतात; ८६८ किंवा चांदणे हे पाहिजे त्याने पाहिजे त्या मापाने घ्यावे, त्याप्रमाणे दुसऱ्याच्या संकलपप्रमाणे जे देणे; ८६९ ते मोठे दान जेथे सहावे गुणरत्न. आणि वेदाशेला जे एकनिष्ठ होणे; ८७० आपले अवयव पोसून पुष्ट करावयाचे; आणि त्यांजकडून पराक्रम करावयाचे, तसेच जोपासन करून ज्या जगाला आपलेसे करून त्याचा उपभोग घेणे, ८७१ त्याचे नांव ईश्वरीभाव. तो सर्व सामर्थ्याचे स्थान होय. तो गुणांतील जेथे सातवा राजसगुण होय. ८७२ अशा ह्या शौर्यादिक सात विशेष गुणांनी जे सुशोभित असतात. आकाशांत जसे सप्त ऋषी असावेत, ८७३ तद्वत् सात गुणांनी शोभणारे जे जगांतील पवित्रकर्म, तेच क्षत्रियाचे स्वाभाविक कर्म असे समज. ८७४ किंवा क्षत्रिय तो पुरुष नव्हे; तो सत्वरूप सोन्याचा मेरूच होय. झणून गुणरूप सप्तस्वर्गांना त्याचा आधार होतो. ८७५ किंवा सात गुणरूपी सप्तसमुद्रांनी वेष्टिलेली जी ही क्रिया, ती क्रिया नव्हे. तर ती पृथ्वी असून तिचाच तो उपभोग घेतो. ८७६ किंवा ह्या गुणरूप सात ओघांनी ह्या जगद्रूप महासागराच्या आंगामध्ये क्रियारूप गंगाच शोभत आहे. ८७७ पण हा पाल्हाळ असो. क्षत्रियजातीला हे शौर्यादि गुणात्मक कर्म स्वाभाविक आहे हे समजून ठेव. ८७८ आतां हे बुद्धिमंता! वैश्याच्या जातीला जी क्रिया उचित आहे, ती ही यथार्थ रीतीने सांगू. तीही ऐक.” ८७९

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ४४ ॥

[कृषि-] तरि भूमि बीज नागर । यया भांडवलाचा आधार । घेऊनि लाभ अपार । मेळवणे जें ॥ ८८० ॥ किंबहुना

कृषीजिणें । [गोरक्ष्य-] गोधनें राखोनि वर्तणें । [वाणिज्यं] कां समर्पाची विकणें । मेहार्थ वस्तु ॥ ८१ ॥ [वैश्यकर्म स्व-भावजं] येतुलालचि पांडवा । वैश्यातें कर्माचा मेळावा । हा वैश्यजातिसखावा । आंतुला जाण ॥ ८२ ॥ [परिचर्येति] आणि वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण । हे द्विजन्मे तीनही वर्ण । य-यांचें जें शुभ्रूषण । तें शूद्र कर्म ॥ ८३ ॥ पै द्विजसेवेपरांतें । धावणें नाही शूद्रातें । एवं चतुर्वर्णोचितें । दाविलीं कर्म ॥ ८४

“ तर उत्तम प्रकारची भूमी, बीज, ह्यांना भांडवलाचा आधार घेऊन जो अपार नफा मिळविणें; ८८० किंबहुना शेतकीवर निर्वाह करणें; गाई रक्षण करून रहाणें, किंवा स्वस्त जिन्नस घेऊन महाग विकणें, ८८१ अर्जुना! वैश्य जातिस्वभावाच्या आंतील कर्माचा समुदाय इतकाच. हें लक्षांत असूं दे. ८८२ आपणही, वैश्य, क्षत्रिय, व ब्राह्मण हे दोनदा जन्मास आलेले आहेत. (स्वाभाविक जन्म हा एक आणि उपनयन हा दुसरा. ह्याून द्विज असें नांव झालें आहे.) ह्या द्विजांची शुभ्रूषा करणें हें शूद्रांचें कर्म होय. ८८३ द्विजांचे सेवेपुढें शूद्रांना अन्य मार्ग नाही. याप्रमाणें चतुर्वर्णांना उचित अशीं जीं कर्मे, तीं तुला दाखवून दिलीं.” ८८४.

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।

स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विंदति तच्छृणु ॥ ४९ ॥

[स्वे स्वे कर्मणि] आतां इथेचि विचक्षणा । वेगळालिया वर्णा । उचित जैसं करणा । शब्दादिक ॥ ८५ ॥ ना तरि जेळदच्युता । पाणिया उचित सरिता । सरितेसी पांडुमुता । सिधु उचित ॥ ८६ ॥ तैसें वर्णाश्रमवर्षे । जें करणीय आलें असे । गोरेया आंगा जैसें । गोरेपण ॥ ८७ ॥ [अभिरतः] तथा स्वभावविहिता कर्मा । शास्त्राचेनि मुखें वीरोत्तमा । प्रवर्तावयालागीं प्रेमा । अढळ कीजे ॥ ८८ ॥ पै आपुलेंचि रत्न थितें । घेपे पारस्त्रियाचेनि हातें । तैसें स्वकर्म आपैतें । शास्त्रें करावें ॥ ८९ ॥ जैसी दिठी असे आपुलिया ठाई । परि दीपेवीण भोग नाही । मारुं न लाहतां काई । पाय अ-

सतां होय ॥ ८९० ॥ ह्याणीनि ज्ञातिवर्षे साचार । सहज असे जो अधिकार । तो आपुलालिया शास्त्रें गोचर । आपण कीजे ॥ ९१ ॥ [संसिद्धिं लभते नरः] मग घरींचाचि ठेवा । जेविं डोळ्यां दावी दिवा । तरी घेतां काय पांडवा । आढळ असे ॥ ९२ ॥ [स्वकर्मनिरतः] तैसें स्वभावें भागा आलें । वरी शास्त्रें खरें केले । तें विहित जो आपुलें । आचरे गा ॥ ९३ ॥ परि आळस सांडुनी । फळकाम दवडुनि । आगें जीवें मांडुनि । तेथेंचि मेह ॥ ९४ ॥ बोधीं पडिलें पाणी । नेणे आनामी वाहणी । तैसा जाय आचरणी । व्यवस्थौनि ॥ ९५ ॥ [यथा] अर्जुना जो यापरी । तें विहित कर्म स्वयें करी । [सिद्धिं] तो मोक्षाच्या ऐलतीरी । [विंदति तच्छृणु] पेटां होय ॥ ९६ ॥ जे अंकरणा आणि निविद्धा । नेवचेचि काहीं संवधा । ह्याणीनि भंवा विरुद्धा । मुकला तो ॥ ९७ ॥ आणि काम्यकर्माकडे । न परतेचि जेथ कोडें । तेथ चंदना-चेही खोडे । न लेचि तो ॥ ९८ ॥ येर निल्य कर्म तंव । फळयागे वेंचिलें सर्व । ह्याणीनि मोक्षाची शिव । ठाकूं लाहे ॥ ९९ ॥ ऐसेनि शुभाशुभी संसारी । सांडिला तो अवधारी । वैराग्य मोक्षद्वारी । उभा ठाके ॥ १०० ॥ जें सकळभा-ग्याची सीमा । मोक्षलाभाची जें प्रेमा । नाना कर्ममार्गभ्रमा । रोवटु जेथ ॥ ११ ॥ मोक्षफळें दिधलीं बोलें । जें मुकतत-त्त्वे फूल । तये वैराग्यां ठेवी पाउल । भंवेंह जैसा ॥ १२ ॥ पाही आत्मज्ञानसुदिनाचा । बांधावा संगतया अहणाचा । उदय त्या वैराग्याचा । ठावो पावे ॥ १३ ॥ किंबहुना आत्म-ज्ञान । जेणें हाता ये निधान । तें वैराग्य दिव्यांजन । जीवें लेतो ॥ १४ ॥ ऐसी मोक्षाची योग्यता । सिद्धी जाय तथा पंडुमुता । अनुसरोनि विहिता । कर्मा यथा ॥ १५ ॥ हें वि-हित कर्म पाडवा । आपुला अर्जन्य बोळवा । आणि हेचि परम सेवा । मज सर्वात्मकाची ॥ १६ ॥ पै आपवाचि भो-गेंसी । पतिव्रता कोडे प्रियेंसी । की तयाचि नामें जैसी । तपें तियां केलीं ॥ १७ ॥ कां याळका एकी माये- । बांचोनि जिणें काय आहे । ह्याणीनि संविजे की तो होये । पेटाचा धर्म ॥ १८ ॥ ना ना पाणी ह्याणीनि मासा । गंगा न सांडितां जैसा । सर्व-तीर्थसहवासा । वैरपडा जाला ॥ १९ ॥ तैसें आपलिया वि-हिता । उपाय असे न विसंबतां । ऐसा कीजे कीं जगन्नाथा ।

१ अडथळा. २ भर, आदर. ३ निरनिराळा प्रवाहमार्ग. ४ प्राप्त. ५ मुळीच कर्म न करण्याळा. ६ जातच नाही. ७ आत्मप्राप्तीस विरुद्ध जो संसार खाला. ८ आवडीनें. ९ खोडा, प्रतिबंध. १० स्वीकारित नाही. ११ प्राप्तीस लाभतो. १२ वैराग्य हें मोक्षाचें द्वार आहे. १३ प्रमाण. १४ तारण. १५ भ्रमर. १६ वार्ता, उदय. १७ धाडी. १८ एकनिष्ठ. १९ जिह्वाळा. २० पतीशीं विहार करी. २१ खान्याच. २२ श्रेष्ठत्वाचा. २३ प्राप्त.

१ शेतकीवर निर्वाह करणें. २ स्वस्त दरांन घेतलेली वस्तु. ३ महाग. ४ दोन वेळ जन्म, पहिलें सर्वसामान्य शौक व दुसरें उपनयनांग सावित्री मंत्रोपदेशानें सावित्र हीं ज्यांस आहेत ते. (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य.) ५ पडलेल्या मेघजळाला. ६ बुद्धि, प्रमाण. ७ असलेले. ८ प्राप्त.

आभार पडे ॥ ११० ॥ अगा जयाचें विहित । तें ईश्वराचें मनोगत । झणौनि केलिया निज्रांत । सांपडेचि तो ॥ ११ ॥ पै जीवाचे केंसी उतरली । ते दासी कीं गोसावीणें जाली । तैसी सेवेची तिथा मावली । वेंहि जेविं ॥ १२ ॥ तैसें खा-मीच्या मनोभावा । न जुकीजे हेचि परमसेवा । येर तें गा पांडवा । वाणिज्य करणें ॥ १३ ॥

“आतां हे विचक्षणा ! तसेंच ह्या निरनि-राल्या वर्णांना, इंद्रियांना जसें शब्दादिक योग्य, ८८५ किंवा अर्जुना ! मेघापासून निघालेल्या पाण्याला नदी योग्य, नदीला समुद्र योग्य, ८८६ किंवा गोण्याच्या आंगाला जसें गोरेपण, तसें वर्णाश्रमधर्मानें जें कर्म आलेलें असतें, ८८७ हे वीरोत्तमा ! त्या स्वभाव-विहित कर्मांला शास्त्राच्या मुखानें करावयाला निश्चित बुद्धि करावी. ८८८ आपलेंच असलेलें रत्न परीक्षकांच्या हातून घ्यावें, त्याप्रमाणें आलेलें कर्म शास्त्रयुक्तीनें करावें. ८८९ ज्याप्रमाणें डोळे आपल्याजवळ असतात, परंतु दिव्याशिवाय त्यांचा उपयोग नाही. मार्गच न सांपडेल तर पाय असून तरी काय उपयोग ? ८९० झणून जातिधर्मानुसार स्वयमेवच जो खरा अधिकार असतो, तो आपआपल्या शास्त्रांनीं आपणच पहावा. ८९१ मग अर्जुना ! घरचाच ठेवा जर दिव्यानें डोळ्यांना दाखवून दिला, तर तो घेण्यास कांहीं हरकत आहे काय ? ८९२ तसें स्वभावधर्माप्रमाणें वांट्यास आलेलें, आणखी शास्त्रानें जें खरें केलें—ठरविलें—तें आपलें विहित कर्म जो आचरण करतो; ८९३ परंतु आळस सोडून, फलेच्छा टाकून, जीवा-प्राणासुखां तेथेंच भर ठेवून, ८९४ ओघांत पडलेल्या पाण्याला, हिकडे तिकडे वहावयाचें माहित नसतें, त्याप्रमाणें व्यवस्थित आचरणानेंच चालतो, ८९५ अर्जुना ! ह्याप्रमाणें तें विहितकर्म स्वतः करतो, तो मोक्षाच्या पलीकडच्या तीरास पोचतो. ८९६ कारण, न करण्याच्या आणि निषिद्धाच्या संबंधाला तो जा-

तच नाही. झणून विरुद्ध असा जो संसार त्याला तो मुक्तो. ८९७ आणखी, काम्यक-र्माकडे जो आनंदानें झणून कधीं वळतच नसल्यामुळें चंदनाचे खोडेही त्यास घ्यावे लागत नाहीत. ८९८ बाकीचें नित्यकर्म तर, फलत्याग केल्याच्या योगानें सारें नाश पावतें. झणून मोक्षाची शींव गांठतो. ८९९ अशा प्रकारें संसारांतील शुभाशुभें त्याचीं नाहीशीं होऊन तो मोक्षाच्या द्वारांत उभा राहतो, हें लक्षांत ठेव. ९०० जें सर्व भाग्याची सीमा; जें मोक्षलाभाचें माप; नानाप्रकारच्या कर्म-मार्गांच्या भ्रमाचा जेथें शेवट होतो; ९०१ मोक्षफळें ज्यानें तारण दिलीं आहेत; जें सुकृततरूचें फूल; त्या वैराग्यामध्ये भ्रमर जसा पाऊल ठेवतो; त्याप्रमाणें पाऊल ठेवतो. ९०२ वैराग्य हें आत्मज्ञानरूप दिवस उगवण्याची सूचना करणाऱ्या अरुणोदयाच्या स्थानीं होतें हें ध्यानांत ठेव. ९०३ किंबहुना आत्मज्ञान-रूप ठेवा जेणेंकरून हातास चढेल, असें जें वैराग्यरूपी दिव्यांजन तें तो जीवेंभावेंकरून घालतो. ९०४ हे अर्जुना ! त्या विहितकर्मांला अनुसरल्याच्या योगानें त्याला अशा रीतीनें मोक्षाची सिद्धि होते. ९०५ अर्जुना ! तें विहितकर्म आपल्याला एकीएक ओलावा—जिव्हाळा—आहे. आणि हीच माझी, सर्वात्मकाची श्रेष्ठ सेवा होय. ९०६ सारे भोग भोगतांना पतिव्रता स्त्री आपल्या पतीशींच क्रीडा करीत असते; किंवा त्याच्या नांवानें ती त्याच्या नामाचें तपच करित असते. ९०७ किंवा एका आईशिवाय मुलाचा जन्म कशाचा ? झणून त्यानें तिची सेवा करणेंच योग्य आहे. कारण तोच त्याचा श्रेष्ठ धर्म होय. ९०८ किंवा पाणी समजून जरी माशानें गंगा सोडली नाही तरी, त्याला सर्व तीर्थांचा सहवास घडतो. ९०९ त्याप्रमाणें आपल्या हिताचा उपाय असेल तो क्षणमात्र न विसंबतां अशा रीतीनें करावा कीं, त्याचा जगन्नाथालाही भार पडेल. ९१० बाबा ! ज्याचें जें विहित तेंच ईश्वराचें मनोगत. झ-

पून तें केलें कीं, ईश्वर हस्तगत झालाच. ९११ जीवाच्या कसोटीला उतरते; ती दासी होते, कां धनीन होऊन बसते? तद्वत् वर्ष घातल्याप्रमाणें त्या सेवेची हद्द साधलेली असते. ९१२ अर्जुना! अशा प्रकारें धन्याचें मनोगत न चुकतां जी सेवा करणें, तीच परम सेवा होय. इतर जी सेवा तें केवळ वाणिज्य झणून समजावें.” ९१३

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानवः ४६

[यतः प्रवृत्तिर्भूतानां] झणौनि विहित क्रिया केली । नव्हे तथाची खूण पाळिली । जयापासूनि कां आली । आकारा भूतें ॥ १४ ॥ जो अविद्येच्या चिथिया । गुंढनि जीव बाहुलिया । खेळवीतसे तिगुणिया । अहंकाररज्जु ॥ १५ ॥ [येन सर्वमिदं ततं] जेणें जग हें समस्त । आंत वाहेरी पूर्ण भरित । जालें आढे दीपजात । तेजें जेंस ॥ १६ ॥ [स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य] तथा सर्वात्मका ईश्वरा । स्वकर्मकुसुमांची वीरा । पूजा केली होय अपारा । तोपालागीं ॥ १७ ॥ झणौनि तिये पूजे । रिझलेनि आत्मराजें । वैराग्य-सिद्धि देखिजे । पेंसाय तथा ॥ १८ ॥ [सिद्धिं विंदति मानवः] जिये वैराग्यदशे । ईश्वराचेनि वेधवशें । हें सर्वही नावडे जेंस । वांत होय ॥ १९ ॥ प्राणनाथाच्या आधी । विरहिणीतें जिणेंही बांधी । तेंसं सुखजात त्रिभुद्धि । दुःखचि लागे ॥ २० ॥ सम्यक्ज्ञान नुदेजता । वेधेचि तन्मयता । उपजे ऐसी योग्यता । बोधाची लाहे ॥ २१ ॥ झणौनि मोक्षला-भालागीं । जो व्रतें वाहतसे आंगी । तेणें स्वधर्म आस्था-चांगी । अनुष्ठावा ॥ २२ ॥

“झणून विहित क्रिया केली तरी, क्रिया केली असें होत नाहीं. तर ज्यापासून प्राणी उत्पन्न झाले आहेत, त्याची आपण आज्ञा पाळिली असें होतें. ९१४ जो अविद्येच्या चि-ध्या गुंडाळून तीन गुणांच्या तिपडीच्या अहं-काररूप दोरीनें जीवरूप बाहुलया खेळवितो; ९१५ तेजानें जसे सर्व दिवे व्याप्त असावेत त्याप्रमाणें ज्यानें हें सर्व जग आंतून व बाहे-रून पूर्ण भरून गेलें आहे; ९१६ हे वीरा!

त्या सर्वात्मक ईश्वराला अपार संतोष होण्यासाठीं स्वकर्मरूप पुष्पांनीं पूजा करतो. ९१७ झणून त्या पूजेच्या योगानें आत्मराजा संतुष्ट होऊन, त्याला तो वैराग्यसिद्धिरूप प्रसाददान देतो. ९१८ ज्या वैराग्यदशेमध्ये ईश्वराचा छंद लागल्यामुळें वमन असल्याप्रमाणें हेंही सारें आवडेनासें होतें. ९१९ पतीच्या मनो-व्याधीनें विरहिणीचें जिणेंही दुःसह होतें, त्याप्रमाणें सुख झणून जें जें आहे, तें खरो-खर दुःखच वाटतें. ९२० ज्ञानाची योग्यता अशी आहे कीं, खरें ज्ञान उत्पन्न झालें नाहीं तोंच, त्या छंदानें तन्मयता उत्पन्न होते. ९२१ झणून मोक्षलाभासाठीं जो स्वतः व्रतें आचरण करतो, त्यानें स्वधर्माचें मोठ्या आस्थेनें अनु-ष्ठान करावें.” ९२२

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मोऽस्वनुष्ठितात् ।

स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ४७

[श्रेयान्स्वधर्मः] अगा आपला हा स्वधर्म । आचरणीं जरी विषम । तरी पाहावा तो परिणाम । फळेल जेणें ॥ २३ ॥ [विगुणः] जें सुखालागीं आपणपयां । निंबवि आधी धनंजया । तें कडवटपणा तथाच्या । उंबगिजे ना ॥ २४ ॥ फळण्या ऐलीकडे । केळीतें पाहातां आंस मोडे । ऐसी त्यजिली तरी जोडे । तेंसं कें गोमटें ॥ २५ ॥ तेवि स्वधर्म सांकड । देखोनि केला जरी कड । तरी मोक्षसुरवाड । अंतरला कीं ॥ २६ ॥ आणि आपली माये । कुज्जा जरी आहे । तरी जीजे तें नोहे । नेह कुंहें कीं ॥ २७ ॥ [परधर्मोऽस्वनुष्ठितात्] येरी जिया पराविया । रंभेहूनि बरविया । तिया काय कराविया । बाळकें तेणें ॥ २८ ॥ अगा पाणियाहुनि बहुवें । तुपीं गुण कीर आहे । परि मीना काय होये । असतें तेथ ॥ २९ ॥ पें आश्रविया जगा जें विख । तें विख-कीडिया पीयूष । आणि गुळ तें देख । मरण दे तथा ॥ ३० ॥ [स्वभाविति] झणौनि जे विहित जया जेणें । फिटे संसाराचें धरणें । क्रिया कठोर तन्हि तेणें । तेचि करावी ॥ ३१ ॥ येरा पराचारा बरविया । ऐसं होईल टेंक-लेयां । पायांचें चालणें डोईया । केलें जेंस ॥ ३२ ॥ यालागीं कर्म आपलें । जें जातिस्वभावे असं आलें । तें करी तेणें जितिलें । कर्मबंधातें ॥ ३३ ॥ आणि स्वधर्मचि पाळावा ।

१ संतुष्ट झाल्यानें. २ प्रसाद. ३ छंदानें. ४ वमन. ५ मनोव्याधि. ६ वांचणें. ७ व्यर्थ. ८ ध्यासानें. ९ चांगल्या आस्थेनें.

१ कठीण. २ त्रासू नये, कंटाळू नये. ३ आशामंग. ४ वांचिजेतें, जेणें वांचावें. ५ वांकडें. ६ गोड. ७ आश्रय केल्यास. ८ डोक्यानें.

परधर्म तो गाळावा । हा नेमही पांडवा । न कीजेचि पै ॥ ३४ ॥ तरी आत्मदृष्ट नोहे । तंव कर्म करणें को ठाये । आणि करणें तेथ आहे । आयास आधीं ॥ ३५ ॥

“बाबा ! आपला हा स्वधर्म आचरणांमध्ये जरी कठीण असला, तरी त्याच्या परिणामावर दृष्टि घावी. ९२३ धनंजया ! निघानेंच आपल्याला आराम होणार असेल, तेव्हां त्याच्या कडवटपणाला त्रास नये. ९२४ फळें येण्याच्या आधींच केळीकडे पाहिलें तर आशा खुंटते. ह्मणून तिला टाकून दिली, तर तशी सुंदर फळें कशी मिळतील ? ९२५ त्याप्रमाणें स्वधर्मांत संकट आहे हें पाहून जर कडू मानला, तर मोक्षाचें सुख अंतरलेंच ह्मणून समजावें. ९२६ आणखी आपली माता जरी कुड्या असली, तरी तिच्या पालनपोषण करण्याच्या ममतेत कांहीं वांकडेपणा नसतो. ९२७ इतर दुसऱ्या स्त्रिया रंभेहूनही सुंदर असल्या तर त्या मुलानें त्यांना करावें ? ९२८ बाबा ! पाण्याहून तुपामध्ये पुष्कळ गुण चांगले आहेत, ही गोष्ट खरी आहे. पण मत्स्यांना त्यांत असणें काय होय ? ९२९ तसेंच साऱ्या जगाला विष, तें विषांतील किड्यांना अमृत असतें, आणि गुळाच्या योगानें त्यांना मरण येतें. ९३० ह्मणून ज्याला जें विहित; ज्यानें संसाराचें धरणें निघतें; ती क्रिया कठोर असली तरी, त्यानें तीच करावी. ९३१ इतर-दुसऱ्याचा-आचार चांगला आहे ह्मणून त्याचा आश्रय केला तर, पायांनीं चालावयाचें जें काम, तें डोक्यानें केल्यासारखें होईल. ९३२ ह्यासाठीं आपलें कर्म जें जातिस्वभावाप्रमाणें आलें असेल, तें जो करील त्यानें कर्मबंधाला जिकलें ह्मणून समजावें. ९३३ आणि अर्जुना ! स्वधर्मच पाळावा; परधर्माचा त्याग करावा; हा जर नेम केला नाही, ९३४ तर आत्मज्ञान प्राप्त होत नाही, आणि आत्मज्ञान प्राप्त झालें नाही तोंपर्यंत कर्म करणें राहिल काय ?

१ टाकावा. २ कसें रहातें.

आणखी कर्म करावयाचें झटलें कीं, तेरा सायास हे आहेतच.” ९३५

सहजं कर्म कौंतेय सदोषमपि न त्यजेत् ।

सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवानृताः ॥ ४८ ॥

[सर्वारंभा हि दोषेण] ह्मणौनि भलतिये कर्मी । आयाजन्ही उपकर्मी । तरी काय स्वधर्मी । दोष सांगें ॥ ३६ ॥ अगा उजू वाटा चालावें । तन्ही पायचि सिणवावे । न आढरानें धावावें । तन्ही तेंचि ॥ ३७ ॥ पै शिळा कसिदोरिया । दाटणें एक धनंजया । परि जें वाढातां विसावया । मिळिजे तें घेवे ॥ ३८ ॥ येन्हुवीं कैणा आणि भूसा काढितांही सोधें सरिसा । जेंचि रंधन श्वानमांसा । तेंचि हवी ॥ ३९ ॥ दधी जलाचिया घुसळणा । व्यापार सारिखेचि विचक्षणा । वाळुवे तिला घाणा । गाळणें एक ॥ ४० ॥ [धूमेनाग्निरिवानृताः] पै निलहोम देयावया । कां सरें आगीं सुवावया । फुंकितां धूम धनंजया । साहणें तेंचि ॥ ४१ ॥ [सदोषमपि] परी धर्मपत्नी र्थगंडी । पोसित जरी एकी वोढी । तरि कां अपरवढी । आणावी आंग ॥ ४२ ॥ हां गा पाटीं लागला घाई । मरण न चुकेचि पाहीं तरि संमोरला काई । आंगळें न कीजे ॥ ४३ ॥ कुळर्वांदांड्याचे घाये । परंघर रिगालीहि जरि साहे । तरि स्वपतीतें वायें । लजिलें की ॥ ४४ ॥ तैसे आवडतेंही करणें न निपजे शिणल्याविणें । तरि विहित वारे कोणें । बोलें भोरी ॥ ४५ ॥ वरि थोडेंचि अमृत घेतां । सर्वस्व वेंचो कपंडुसुता । जेणें जोडे जीविता । अक्षयत्व ॥ ४६ ॥ येर कांक्षां मोलें वेचूनि । विष पियावें घेउनि । आत्महत्येनि निमोनि । जायिजे जेणें ॥ ४७ ॥ तैसे जाचूनिया इद्रियें वेचूनि आगुण्याचेनि दियें । सांचले पापी आन आहे दुःखावांचूनि ॥ ४८ ॥ [सहजं कर्म कौंतेय] ह्मणौनि करावा स्वधर्म । जो करितां हिरोनि घेथ्रम । उचित देई परम । पुंस्र्थराज ॥ ४९ ॥ [न त्यजेत्] याकारणें किरीटी । स्वधर्माचिये राहटी । न विसंबिजे संकटी । सिद्ध मंत्र जैसा ॥ ५० ॥ का नाव जैसी उदधी । महारोष दिव्यौषधी । न विसंबिजे तया बुद्धी । स्वकर्म येथ ॥ ५१ ॥ मग ययाचि गा कपिध्वजा । स्वकर्मोचिया महापूजा । तोषल ईश तमरजा । झाडा करुनि ॥ ५२ ॥ शुद्ध सत्वाचिय

१ दडपणें. २ विश्रांतीस. ३ धान्य. ४ फोल. ५ थर सारखाच. ६ शिजविण्याची खटपट. ७ स्वेच्छ अर्मी घालण्यास. ८ दांडगी, व्यभिचारिणी. ९ अन्यायवर्तन १० समोर होऊन केलेला घाय. ११ ज्यास्ती. १२ दुसऱ्याचें घर. १३ कोणत्या शब्दानें कठीण असें ह्मणवें १४ कशाला. १५ दिवस. १६ मोक्ष.

बाटा । आणि आपली उत्कंठा । मग स्वर्ग काळकूटा । ऐसे दावी ॥ ५३ ॥ जियें वैराग्य येणें बोलें । मोगां संसिद्धी रूप केलें । किंबहुना तें आपुलें । मेळवी खोंगे ॥ ५४ ॥ मग जितिलिया हे भोये । पुरुष सर्वत्र जैसा होये । कां जालाहि जें लाहे । तें आतां सांगों ॥ ५५ ॥

“ह्याकरितां कोणत्याही कर्माच्या आरंभाला जर आयास पडतात, तर मग स्वधर्मांत दोष तो कोणता ? सांग. ९३६ अरे ! सरळ वाटेनें चाललें तरी पाय दमतात; किंवा आड-रानांतून धांवलें तरी तेंच; ९३७ तसेंच धनंजया ! धोंडा आणि शिंदोरी दोहींचें ओझें सारखेंच. परंतु जें नेतांना सुखावह होईल तेंच घ्यावें. ९३८ नाहीं तर, दाण्याला आणि भुसाला वेगळें करतांना, दोहोंनाही श्रम सारखेच; कुत्र्याचें मांस शिजवावयाला आणि होमद्रव्य शिजविण्याला खटपट तितकीच. ९३९ हे बुद्धिमंता ! दहीं घुसळतांना आणि पाणी घुसळतांना क्रिया तीच. घाण्यांत वाळू घातली काय, आणि तीळ घातले काय ? गाळणें सारखेंच. ९४० तसेंच अर्जुना ! नित्य होम देण्याकरितां, किंवा उगाच जाळ करण्याकरितां फुंकणें आणि धूर लागणें हीं सारखींच. ९४१ त्याचप्रमाणें धर्मपत्नीला आणि वेश्येला पोसतांना जर एकसारखीच यातायात करावी लागते, तर अन्यायाचा कळंक तरी आपल्या आंगास कां लावून घ्यावा ? ९४२ आणखी असें पहा ! पाठीवर घाव लागला तरी मरण चुकत नाहीं, तर मग समोरासमोर होऊन श्रेष्ठत्वच कां घेऊं नये ? ९४३ कुळस्त्रीला दुसऱ्याच्या घरांत शिरूनही जर दांड्याचे घाव सोसावे लागतील, तर मग आपल्या नवऱ्याला व्यर्थ टाकून आल्यासारखें मात्र झालें. ९४४ त्याप्रमाणें आवडतें कर्म असलें, तरी सुद्धां तें कष्ट केल्याशिवाय होत नाहीं. तर मग बाबारे ! विहित असेल तें

कोणत्या शब्दानें कठीण असें झणावें ? ९४५ आणखी अर्जुना ! जें मिळालें असतां आयुष्याला चिरस्थायित्व येतें, तें अमृत थोडेंसें घेण्यासाठीं सर्वस्व गेलें तरी हरकत नाहीं. ९४६ जेणेंकरून मरावयाचें, आणि शिवाय आत्महस्येचा दोष लागावयाचा, तें विष मोल देऊन घेऊन कशासाठीं घ्यावें ? ९४७ तसें, इंद्रियांना कष्ट देऊन आयुष्याचे दिवस खर्च करून, सांडविलेल्या पापांत तरी दुःखावांचून दुसरें काय आहे ? ९४८ ह्याणून जो आचरण करितांच श्रमाचा परिहार करतो तो स्वधर्मच आचरण करावा. श्रेष्ठ पुरुषार्थ जो मोक्ष तो तोच देईल. ९४९ ह्याकरितां किरीटी ! स्वधर्माच्या सांप्रदायाची उपेक्षा करूं नये. संकटामध्ये जसा सिद्धमंत्र; ९५० किंवा समुद्रांत जशी नौका; महारोगामध्ये दिव्यौषधाची जशी उपेक्षा करतां कामा नये, त्याच रीतीनें येथें स्वकर्मही उपेक्षूं नये. ९५१ मग हे कपिध्वजा ! ह्याच स्वकर्माच्या महापूजेनें ईश्वर संतोषित झाला ह्याणजे तो रजतमांचा झाडा करून, ९५२ आपली उत्कंठा शुद्ध सत्त्वाच्याच वाटेला आणतो. आणि ऐहिक व पारलौकिक भोग कालकूटाप्रमाणें दाखवितो. ९५३ वैराग्य ह्या शब्दानें पूर्वी “संसिद्धी-”चें [स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः] निरूपण केलें. किंबहुना त्यानें आपलें स्थानच मिळविलें. ९५४ ही भूमी संपादन केली ह्याणजे, सर्वत्र पुरुषच कसा होऊन जातो, किंवा तो सर्वव्यापक झाला ह्याणजे त्याला काय प्राप्त होतें, तें आतां सांगतों.” ९५५

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।

नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाऽधिगच्छति ४९

[असक्तबुद्धिः सर्वत्र] तरि देहादिक हें संसारें । सर्वही मांडलेसे जें गुंफिरें । तेथ नातुडे तो वांगुरे । वारा जैसा ॥ ५६ ॥ पै परिपाकाचिये वेळे । फळ देठें ना देठ फळें । न भरे तैसें ब्रेह खुळें । सर्वत्र होय ॥ ५७ ॥ पुत्र वित्त कलत्र । हे जाल्याही स्वतंत्र । माझें न झणें पात्र । विषाचें

१ जालें. २ न सांपडे. ३ जाळ्यांत. ४ पांगळें, वेढानें.

१ इहपरसंबंधी भोग. २ मागे ‘स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धौ’ इत्यादिकानें सांगितलें. ३ ठिकाण. ४ भूमि. ५ पूर्ण झालेला.

जैसे ॥ ५८ ॥ [जितात्मा] हे असो विषयजाती । बुद्धि पोळली ऐसी माघीती । पाउलें घेउन एकती । हृदयाच्या रिचे ॥ ५९ ॥ ऐसया अंतःकरण । बाह्य येतां तयाची आण । न मोडी समर्था भेण । दासी जैसी ॥ ६० ॥ तैसे ऐक्याचि ये मुठी । माजिवडें चित्त किरीटी । करुनि वेधीं नेहटी । आत्मयाच्या ॥ ६१ ॥ विगतस्पृह तेव्हां दृष्टादृष्ट स्पृहे । निर्मणें जालेचि आहे । आंगी दडपलिया धुयें । राहिजे जैस ॥ ६२ ॥ ह्याणोनि नियमिलिया मानसी । स्पृहा नासोनि जाय आपैसी । किंबहुना तो ऐसी । भूमिका पावे ॥ ६३ ॥ [नैष्कर्म्यसिद्धि परमां] पै अन्यथाबोध आघवा । मावळोनि तथा पांडवा । बोधमात्रीचि जीवा । ठाव होय ॥ ६४ ॥ धरवणी वेचें सरे । तैसें भोगें प्राचीन पुरे । नवें तंव उपकरे । कांहींचि करुं ॥ ६५ ॥ ऐसी कर्म साम्य दशा । होय तेथ वीरेश । मग श्रीगुरु आपैसा । भेटेचि गा ॥ ६६ ॥ रात्रीची चापाहरी । वेंचलिया अवधारी । ढोळ्यां तमारी । मिळे जैसा ॥ ६७ ॥ कां येऊनि फळाचा घड । पोरुषवी केळीची वाढ । श्रीगुरु भेटोनि करी पांड । मुमुक्षु तैसा ॥ ६८ ॥ मग आलिंगिला पूर्णमा । जैसा उणीव सांडी चंद्रमा । तैसें होय वीरोत्तमा । गुरुकृपा तया ॥ ६९ ॥ तेव्हां अबोधमात्र असे । तो तंव तया कृपा नाशे । तेथ निशिखरें जैस । आंधारें जाय ॥ ७० ॥ तैसी अबोधाचिये कुशी । कर्म कर्ता कार्य ऐसी । त्रिपुटी असे ते जैसी । गर्भिणी मारिली ॥ ७१ ॥ [संन्यासेनाधिगच्छति] तैसेंचि अबोधनाशासवें । नाशे क्रियाजात आपवें । ऐसा समूळ संभवे । संन्यास हा ॥ ७२ ॥ येणें मूळज्ञानसंन्यासे । दयाचा जेथ ठावो पुसे । तेथ बुद्धावें तें आपेस । तोचि आहे ॥ ७३ ॥ चेडलियावरि पाहीं । स्वप्नीचिया तिये ढोहीं । आपणयातें काई । काढुं जाइजे ॥ ७४ ॥ तें मी नेणें आतां जाणेन । हें सरलें तया दुःस्वप्न । जाला शांतज्ञेयाविहीन । चिदाकार ॥ ७५ ॥ मुखाभासैसी आरिसा । परता नेलिया वीरेश । पाहातेपणेंवीण जैसा । पाहाता टांके ॥ ७६ ॥ तैसें नेणणें जें गेलें । तेणें जाणणेंही नेलें । मग निष्कर्म उरलें । चिन्मात्रचि ॥ ७७ ॥ तेथ स्वभावं धनंजया । नाहीं कोणीचि क्रिया । ह्याणोनि प्रवाद तया । नैष्कर्म्य तैसा ॥ ७८ ॥

१ छंदानें. २ इहपर भोगेच्छेन. ३ अंत, समाप्ति. ४ विपरीत ज्ञान. ५ धरुन ठेवलेलें पाणी. ६ संचित. ७ आरंभ न करी. ८ थांबवी. ९ प्रकार, योग्यता. १० अज्ञान. ११ गर्भिणी. १२ अज्ञानाच्या नाशासह. १३ कर्मत्याग. १४ जाणवें. १५ जाणें झाल्यावर. १६ जाणणारा व जाणण्याची वस्तु या भेदावांचून. १७ राहें. १८ कियारहित. १९ ज्ञानस्वरूप. २० नांव, बोलणें.

तें आपुलें आपणणें । असतचि होऊनि हारपे । तरंग कां वायुलोपें । समुद्र जैसा ॥ ७९ ॥ [परमां] तैसें न होणें निपजे । ते नैष्कर्म्यसिद्धि जाणजे । सर्वसिद्धीत सहजें । परम हेचि ॥ ८० ॥ देउळाचिया कामा कळस । परम गंगेसी सिंधुप्रवेश । सुवर्णशुद्धी कस । सोळावा जैसा ॥ ८१ ॥ तैसें आपुलें नेणणें । फेडिजे कां जाणणें । तेंहि गिळुनि असणें । ऐसी जे दशा ॥ ८२ ॥ तियेपरतें कांहीं । निपजणें येथ नाहीं । ह्याणोनि ह्याणपे पाहीं । परमसिद्धि ते ॥ ८३ ॥

“तर जाळ्यामध्ये जसा वारा सांपडत नाहीं, त्याप्रमाणें देहादिक जो हा संसार, तो पसरलेलें जालें आहे, त्यांत जो सांपडत नाहीं, ९५६ फळ पिकलें ह्याणजे त्या फळाला देंड धरीत नाहीं, व देंडाला फळ धरत नाहीं. त्याप्रमाणें कोठेंच ममता ह्याणून नाहीं. ९५७ विषानें भरलेलें पात्र असलें ह्याणजे तें आपणास पाहिजे असे ज्याप्रमाणें कोणी ह्याणत नाहीं; त्याप्रमाणें पुत्र, वित्त, कलत्र, हीं सर्व आपल्या सत्तेत असतांही त्यांना आपलीं असें ह्याणत नाहीं. ९५८ हें असो. प्रत्येक विषयांत बुद्धि ही पोळून निघाल्याप्रमाणें माघारी पाऊल घेऊन हृदयाच्या एकांतांत शिरते. ९५९ असें असूनही अंतःकरणांतून बाहेर येण्याचा प्रसंग आलाच तर, समर्थाची आज्ञा जशी दासी मोडित नाहीं, त्याप्रमाणें त्याची शपथही ती मोडित नाहीं. ९६० ह्याप्रमाणें अर्जुना! चित्त हें ऐक्याच्या मुठीमध्ये ठेऊन आत्मछंदास लावतो. ९६१ तेव्हां अर्थात्च अग्नि दडपला ह्याणजे धूर नाहींसा झालाच, त्याप्रमाणें इहपर भोगेच्छा नाहींशीच होऊन जाते. ९६२ ह्याणून मनाचें नियमन केलें कीं, इच्छा आपोआपच नाहींशी होऊन जाते. किंबहुना त्याला अशी अवस्था प्राप्त होते. ९६३ अर्जुना! विपरीत असलेलें सर्व ज्ञान नाहींसें होऊन त्याच्या जिवामध्ये फक्त ज्ञानासच स्थान मिळतें. ९६४ धरुन ठेवलेलें पाणी खर्च केलें ह्याणजे तें संपतें. त्याप्रमाणें सुकृत हें

१ तें=जाणणें, असतचि=नेहमीं असणारें आत्मस्वरूप. २ निष्कामकर्मता. ३ सोळा रुपये तोळा दराचा.

भोगल्यानें नष्ट होऊन जातें. आणि नवा आरंभ तर कथाचाच करीत नाही. ९६५ हे वीरश्रेष्ठा! अशी कर्माच्या योगानें जेव्हां साम्यदशा प्राप्त होते, तेव्हां मग आपोआपच श्रीगुरु भेटतो. ९६६ आणखी, एका रात्रीचे चार प्रहर गेले ह्मणजे नेत्रांना जसा सूर्य दिसतो, ९६७ किंवा फळांचा घड आला ह्मणजे तो केळीची वाढ खुंटवितो, त्याप्रमाणें श्रीगुरु भेटून मुमुक्षूची दशा करून सोडतो. ९६८ मग पौर्णिमेनें पदरांत घेतलेला चंद्र जसा आपल्या आंगचा कमीपणा सोडून देतो, त्याप्रमाणें हे शूरवर्या! ज्यावर, गुरु कृपा करतात, त्याची योग्यता होते. ९६९ त्या वेळीं अज्ञान ह्मणून जेवढें असतें, तेवढें सारें त्यांच्या कृपेनें नाश पावतें. तेव्हां रात्रीबरोबर जसा आधार जातो, ९७० त्याचप्रमाणें अज्ञानाच्या पोटांत कर्म, कर्ता आणि कार्य अशी त्रिपुटी असते तीही गर्भिणी मारल्याप्रमाणेंच नाश पावते. ९७१ त्याचप्रमाणें अज्ञानाच्या नाशाबरोबरच कर्म ह्मणून जितकें आहे तितकें यच्चयावत् नाश पावतें. अशा प्रकारें हा समूळ संन्यास (कर्म-त्याग) घडतो. ९७२ ह्या मूळ अज्ञानाच्या संन्यासानें दृश्याचें स्थानच जेव्हां नाहीस होऊन जातें, तेव्हां जाणावयाचें जें असतें तें आपोआपच शिळक राहतें. ९७३ हें पहा! जागें झाल्यानंतर स्वप्नांतील डोहांतून आपणास काय काढावें लागतें? ९७४ माझे अज्ञान मला समजू लागतें तेव्हां त्याचें सारें दुःस्वप्न संपतें आणि तो ज्ञाता व ज्ञेय ह्या भेदाच्या अतीत होतो. ९७५ हे वीरश्रेष्ठा! मुखाचा आभास दाखविणारा आरसा बाजूस नेला ह्मणजे पाहणारा जसा पाहण्याशिवाय राहतो, ९७६ त्याप्रमाणें अज्ञान जेव्हां जातें, तेव्हां तें ज्ञानासही घेऊन जातें. मग क्रियारहित असें ज्ञानरूप मात्र उरतें. ९७७ तेव्हां अर्जुना! स्वभावगत्याच तेथें कोणतीही क्रिया रहात नाही. ह्मणून त्याला “ नैष्कर्म्य ” असें ह्मणतात. ९७८ तें नेहेमी असणारें आत्मस्वरूपच

आपलें आपल्यामध्ये लय पावतें. वारा बंद झाला ह्मणजे लाटांचाच जसा समुद्र होतो, ९७९ त्याप्रमाणें न होतां होणारी जी, तिचें नांव निष्कामकर्मता हें लक्ष्यांत ठेव. ह्मणून अर्थात् ती सर्व सिद्धींतील श्रेष्ठ सिद्धि होय. ९८० देवळाच्या कामामध्ये जसा कळस श्रेष्ठ; गंगेला जसा समुद्रप्रवेश श्रेष्ठ; किंवा सोन्याच्या परिक्षेमध्ये जसा सोळांचा कस, ९८१ आपलें अज्ञान नाहीस करणें आणि ज्ञान असेल तेंही गिळून वसणें अशी जी दशा, ९८२ तिच्यापेक्षां जगामध्ये दुसरें कांहीं साध्य करावयाचें नसतें. ह्मणून तिलाच ‘परमसिद्धि-’ अत्यंत श्रेष्ठ सिद्धि असें ह्मणतात.” ९८३

सिद्धि प्राप्ति यथा ब्रह्म तथाऽमोति निबोध मे ।

समासेनैव कौंतेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥ ९० ॥

[निष्ठा ज्ञानस्य या परा] परि हेचि आत्मसिद्धि । जो कोणी भाग्यनिधि । श्रीगुरुकृपालब्धि- । काळीं पावे ॥ ८४ ॥ उदयजतांचि दिनकर । प्रकाशचि आते आधार । कां दीप-संगें कपूर ॥ दीपचि होय ॥ ८५ ॥ तया लवणाची कणिका । मिळतसेवो उदका । उदकचि होऊनि देखा । ठाके जेवि ॥ ८६ ॥ कां मिद्रित चेवविलिया । स्वप्नेसी नीद वायां । जाऊनि आपणयां । मिळे जेसा ॥ ८७ ॥ तैसें जया को-पहासि देवें । गुरुवाक्य श्रवणाचिसवें । द्रैत गिळोनि विधेवें । आपणया वृत्तां ॥ ८८ ॥ तयासी मग कर्म करणें । हें बो-लिलेजचि कवणें । आकाशा येणें जाणें । आहे काई ॥ ८९ ॥ ह्मणोनि तयासि कांहीं । त्रिशुद्धि करणें नाहीं । परि ऐसें जरि हें कांहीं । नव्हे जया ॥ ९० ॥ कानां वचनाचिये भेटी- । शिरिसाचि पें किरीटी । वेस्तु होऊनि सुटी । कवणि एक जो ॥ ९१ ॥ येव्हीं खकमांचेनि वेव्हीं । काम्यनिधि-द्वाचिया इंधनीं । रज तम कीर दोन्हीं । जाळिलीं आधीं ॥ ९२ ॥ पुत्र वित परलोक । यया तिहींचा अभिलेख । घरीं होय पौडक । हेंही जालें ॥ ९३ ॥ इंदियें सैरा पदार्थी । रिगतां विटाळलीं होतीं । तियें प्रत्याहारतीर्थी । न्हाणिलीं कीर ॥ ९४ ॥ आणि स्वधर्माचें फळ । ईश्वरीं अर्पुनि बळ । घेऊनि केलें अढळ । वैराग्यपद ॥ ९५ ॥ ऐसी आत्मसाक्षा-

१ प्राप्तीच्या वेळीं. २ व्यापी. ३ मिळतां क्षणीं. ४ जागृत केला असतां. ५ निद्रा. ६ विभ्रान्ति पावे. ७ शिष्याचा कान व गुरुवचन यांची भेट. ८ लागलाच. ९ ब्रह्मस्वरूप. १० अमीमयें. ११ काष्टांत. १२ इच्छा. १३ नोकर. १४ इंद्रियनिग्रहरूप तीर्थांत.

जो द्वेष करीत नाही; १०१९ किंवा कदाचित् चांगलें इष्टच पुढें आणून ठेवेलें तरी, त्याच्या-बद्दल अभिलाष धरीत नाही. १०२० याप्रमाणें अर्जुना ! इष्ट येवो किंवा अनिष्ट येवो; कांहीं आलें तरी द्वेष सोडून जो गुहेंत व दाट झाडींत वास्तव्य करतो;” १०२१

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाकायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥

[विविक्तसेवी] गजबजा सांडिलिया । वंसवी वनस्थळिया । अंगचिया मांदिया । एकलेया ॥ २२ ॥ शमदमादिकी खेळे । न बोलणेंचि चावळे । गुरुवाक्याचेनि मेळें । नेणे वेळ ॥ २३ ॥ [लघ्वाशी] आणि आंगा बळ यावें । ना तरि धुधा जावें । कां जिभेचे पुरावे । मनोरथ ॥ २४ ॥ भोजन करितां बिड्डी । यया तिहींतें न लेखी । आहारीं मिती संतोषी । माप न सूये ॥ २५ ॥ अनशनाचेनि पांवकें । हारपतां प्राण पोखे । इतुकियाचि भाग मोटकें । अशन करी ॥ २६ ॥ [यतवाकायमानसः] आणि परपुरुषें कोमिलि । कुळवधू आंग न घाली । निद्रालस्या न मोकली । अशन तैसे ॥ २७ ॥ दंडवताचेनि प्रसंगें । सुयीं हन अंग लागे । वांचूनि येर नेघे । रामस्य तेथ ॥ २८ ॥ देहनिर्वाहापुरतें । राहाटवी हातापायांतें । किबहुना ओपेंतें । सबाह्य केले ॥ २९ ॥ आणि मनाचा उंवरा । वृत्तीसी देखीं नेदी वीरा । तेथ कें वागव्यापारा । अवकाश असे ॥ १०३० ॥ ऐसेनि देहवाचा मानस । हें जिणोनि बाह्यप्रदेश । [ध्यान-] आकळिलें आकाश । ध्यानाचें तेणें ॥ ३१ ॥ गुरुवाक्यें उठविला । बोधीं निश्चय आला । न्याहाळी हातीं घेतला । आरिसां जैसा ॥ ३२ ॥ पै ध्याता आपणपेंचि परी । ध्यानरूप वृत्तिमाझारी । ध्येयतवें धेई अवधारीं । ध्यानरूढी गा ॥ ३३ ॥ तेथ ध्येय ध्यान ध्याता । यया तिहीं एकरूपता । होय तंव पंडसुता । कीजे तें गा ॥ ३४ ॥ ह्मणौनि तो मुसुक्षु । आत्मज्ञानी जाला देखु । [योगपरो नित्यं] परि पुढेंसुनि पंडु । योगाभ्यासाचा ॥ ३५ ॥ अपानरंद्रव्या- । माझारी धनंजया । पोषणी

१ जनसहवास. २ वनांत स्थळ वसविलें. ३ अवयवसमुदाय. ४ मन इन्द्रियांच्या अंतर्मुखतें. ५ बोले. ६ धुधा मंद व्हावी. ७ विषयी. ८ मोजलेला. ९ माप घालीत नाहीत. १० जठराग्नीनें, प्राण पोषण होतो. ११ इच्छिली किंवा बोलविली. १२ दबडीत नाही. १३ विषयसुख, अविचार. १४ उपयोग करी. १५ खाधीन. १६ शब्दास. १७ जिकून. १८ ध्यान करण्यास योग्यपणानें. १९ ध्यान करितो. २० प्रकार. २१ शहाणा. २२ पुढें करून. २३ प्रकार. २४ गुदशिश्रिद्धांच्या. २५ खोटेनं दाबून.

पिड्डनियां । कांवरुमूळ ॥ ३६ ॥ आकुंचुनि अध । देऊनि तिन्ही बंध । करुनि एकवद । वायू भेदी ॥ ३७ ॥ कुंडलिनी जागळुनि । मध्यमा विकारुनि । आधारादि भेदुनि । अमिवरी ॥ ३८ ॥ सहस्रदळाचा मेघ । पीयूषं वर्षोनि चांग । तो मूळवरी वोघ । आणुनियां ॥ ३९ ॥ नाचतया पुण्यगिरी । चिद्वैरावाच्या खापरीं । मनपवनाची खीच पुरी । बाहुनियां ॥ १०४० ॥ जालिया योगाचा गांढा । मेळवा सुनि हा पुढां । ध्यान मागिलीकडे । स्वयंभ केले ॥ ४१ ॥ आणि ध्यानयोगदोनी । इयें आत्मतत्त्वज्ञानी । पैटी होभावया निर्विघ्नी । आधींचि तेणें ॥ ४२ ॥ वीतरांगतेसारखा । जोडुनि ठेविला सखा । तो आधवियाचि भूमिकी- । सर्वें चाले ॥ ४३ ॥ पहावें दिसे तंववरी । दिटीतें न संधी दीप जरी । तरी कें अंधसरीं । देखावया ॥ ४४ ॥ तैसें मोक्षीं प्रवर्तल्या । वृत्तीं ब्रह्मीं जाय लया । तंव वैराग्य आधी तया । अंग केंचा ॥ ४५ ॥ ह्मणौनि सवैराग्य । ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य । करुनि जाला योग्य । आत्मलाभा ॥ ४६ ॥ ऐसी वैराग्याची अंगी । बाणुनियां वज्रांगीं । रंजयोगतुरंगीं । आरूढला ॥ ४७ ॥ वरि आडपडिलें दिटी । सौनें थोर निवेंटी । तें बळी विवेकसुधीं । ध्यानाचें खाडें ॥ ४८ ॥ ऐसेनि संसारणाभांत । आधारीं सूर्य तैसा असे जात । मोक्ष विजय श्रिये वरेंत । होभावयालागीं ॥ ४९ ॥

“जनांचा सहवास सोडावयाचा; वनांत वस्ती करावयाची; आपल्या आंगाचे अवयव येवढेच काय ते सोबती; १०२२ शमदमादिकां-मध्ये खेळतो; न बोलण्याचीच बडबड करतो; गुरुवाक्याच्या तळीनतेमध्ये वेळसुद्धां ज्याला कळत नाही. १०२३ आणखी आंगाला शक्ति

१ गुदशिश्रास सांधणाऱ्या रेपाकृतीचें मूळ, चार बोटांचा मध्य. २ आकर्षण करून. ३ गुदस्थानचा वज्रबंध, नाभिस्थान उड्डियाणबंध व कंठस्थान जालंधरबंध. ४ नाभिकमलांतील मूळशक्ति. ५ सुप्तप्रा. ६ गुदस्थानच्या आधारचक्राचा भेद करून. ७ कुंडलिनीच्या जागृतावस्थेपासून उत्पन्न झालेल्या तेजावर. ८ मस्तकस्थित ब्रह्मरंध्रीचा. ९ मूलाधारगुदस्थित चक्रापर्यंत. १० द्विदलरूप कमल जें अमिचक्र तद्रूप पर्वतावर. ११ चैतन्यरूप भैरवाच्या भिक्षापानात ह्मणजे सहस्रदलरूप कमलमस्तकांत. १२ मनोरूप वायूची पूर्ण खिचडी. १३ बळकटी. १४ वर सांगितलेला समुदाय पुढें करून. १५ ब्रह्मध्यानाकडे. १६ स्थिर प्राप्त. १७ वैराग्यासारखा. १८ अवस्थांसामागमें. १९ वेळ. २० अहंस्फुरण. २१ कवच. २२ वज्राप्रमाणें बळकट. २३ राजयोगरूप घोळ्यावर २४ स्थूल, सूक्ष्म. २५ संहारी. २६ खड्ग. २७ वरणाऱ्या, भर्ता.

यावी; किंवा क्षुधा मंद व्हावी; किंवा जिमेचे हेतु पूर्ण व्हावेत; १०२४ भोजन करीत असतां ह्या तिहींनाही जो मोजित नाही. आहारा-मध्ये मोजकेपणा; संतोषामध्ये मात्र माप नाही. १०२५ जठराग्नीनें दग्ध होणारा प्राण वांचेल, इतका परिमित आहार मात्र सेवन करावयाचा. १०२६ आणखी परपुरुषानें हाक मारिली तरी, कुलीन स्त्री त्याच्या आंगाला स्पर्श करीत नाही, त्याप्रमाणें निद्रेला आणि आळसाला जो थारा देत नाही. १०२७ नमस्कार घालतांना जें काय भूमीला आंग लागेल तें लागेल. त्याशिवाय उगाच अविचारानें लोळणें नाही. १०२८ देह चालेल इतक्या पुरताच हातापायांचा उपयोग करतो. किंबहुना अंतर्बाह्य सारें आपल्याच स्वाधीन करून सोडतो. १०२९ हे वीरा! वृत्तीला मनाचा उंबराही जो पाहूं देत नाही, तेथें शब्दादिकांच्या व्यापाराला संधि कोठची? १०३० अशा प्रकारें तो काया, वाचा, व मन हीं जिकून ध्यानाच्या आकाशासुद्धां बाह्य प्रदेश आपल्या ताब्यांत घेतो. १०३१ तो गुरुवाक्यानें जागृत होतो आणि ज्ञानानें आलेला निश्चय, आरसा घेऊन पहात वसावें त्याप्रमाणें जो पहात बसतो. १०३२ ध्यान करणारा आपणच असतो आणि तोच ध्यानरूपवृत्तीमध्ये ध्यान करण्यास योग्य जें आपण त्याचेंच ध्यान करतो. असा जो ध्यानाचा प्रकार तो आतां ऐक. १०३३ तेव्हां अर्जुना! ध्येय, ध्यान आणि ध्याता ह्या तिहींची एकरूपता होईल तोंपर्यंत तें तो करतो. १०३४ झणून तो मुमुक्षु आत्मज्ञानामध्ये प्रवीण होतो. परंतु हें सर्व योगाभ्यासाचा प्रकार पुढें करून करतो. १०३५ धनंजया! खालच्या दोन्हीं छिद्रांमध्ये खोट देऊन मधील शिवणीस रेटून, १०३६ अधोभाग (गुदस्थानचा) आकर्षण करून वज्रबंध, (नाभिस्थान) उड्डीयानबंध, (कंठस्थान) जालंधरबंध हे तिन्ही बंध साधून वायुभेदांची एकवाक्यता लावून, १०३७ कुंडलिनी जागृत करून, मध्यमा-सु-

षुम्ना विकसित करून आधारचक्राचा भेद करून, त्या अग्नीवर, १०३८ मस्तकांतील ब्रह्मरंभरूप मेघापासून अमृताची उत्तम वृद्धि करीत तो ओघ मूलाधारचक्रापर्यंत आणून, १०३९ पुण्यपर्वतावर नाचणारा जो चैतन्यरूप भैरव, त्याच्या भिक्षापात्रांत मनाची आणि वायूची भरपूर खिचडी वाढून, १०४० योगाचा अभ्यास दृढतर झाला झणजे हा सर्व समुदाय पुढें करून त्याच्या पाठीमागें ध्यानाला स्वयंभु करून सोडतो. १०४१ आणखी हें ध्यान व योग दोन्हीही ह्या आत्मतत्त्वज्ञानामध्ये निर्विघ्नपणें स्थिर होण्याकरितां, त्यानें आधींच, १०४२ वैराग्यासारखा मित्र जोडून ठेवलेला असतो. तो प्रत्येक स्थितीमध्ये त्याच्याबरोबर चालत असतो. १०४३ दिसतें तोंपर्यंत पहावें. परंतु दीप जर दृष्टीला सोडित नाही, तर पहावयाला अवकाश तरी कोठें राहिला? १०४४ तद्वत् मोक्षामध्ये शिरलें, कीं अहं हें स्फुरण लयास जाईपर्यंत त्याला वैराग्य असतें. मग त्याला भंग कशाचा? १०४५ झणून वैराग्यासहवर्तमान जो ज्ञानाचा अभ्यास करतो, तो भाग्यवान् होय. आणि तोच आत्मलाभाला योग्य होतो. १०४६ अशा प्रकारें वैराग्याचें वज्राप्रमाणें बळकट कवच आंगांत घालून जो राजयोगरूपी (अद्वैतबोधरूप) घोड्यावर बसतो. १०४७ तो विवेकाच्या बळकट मुठीत ध्यानरूप तरवार घेऊन दृष्टीपुढें जें जें लहान किंवा थोर येईल, तें स्थूल असो कीं सूक्ष्म असो, त्याचा संहार करीत सुटतो. १०४८ अशा रीतीनें आंधारांत सूर्य जातो तसा, संसारयुद्धामध्ये मोक्षाची विजयश्री वरण्याकरितां जात असतो.” १०४९

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।

विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥५३॥

[अहंकार] तेथ आडवावया आले. दोषवैरी जे धोपटिले । तयांमाजी पहिले । देहाहंकार ॥ १०५० ॥ जो न मोकली मारुनी । जीवों नेदी उपजवोनी । विचंबवी खोडां घालुनी । हाडांचिया ॥ ५१ ॥ तेंयाचा देहदुर्ग हा थारा । मोडोनि १ श्रमवी. २ त्या अभिमानाचा. ३ देहरूप किष्ठा.

जो द्वेष करीत नाही; १०१९ किंवा कदाचित्
बांगलें इष्टच पुढें आणून ठेवले तरी, त्याच्या-
बद्दल अभिलाष धरीत नाही. १०२० याप्रमाणें
अर्जुना ! इष्ट येवो किंवा अनिष्ट येवो; कांहीं
आलें तरी द्वेष सोडून जो गुह्यत व दाट झा-
डीत वास्तव्य करतो; १०२१

विविक्तसेवी लब्धाशी यतवाकायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥९२॥

[विविक्तसेवी] गजबजा सडिलिया । वसवी वनस्थळिया ।
अंगाच्या मांदिया । एकलेया ॥ २२ ॥ शमदमादिकीं खेले ।
न बोलणेंचि नावळे । गुरुवाक्याचेनि मेळें । नेणे वेळ ॥ २३ ॥
[लब्धाशी] आणि आंगा बळ यावें । ना तरि झुधा जावें ।
कां जिभेचे पुरावे । मनोरथ ॥ २४ ॥ भोजन करितां
बिंबी । यया तिहींतें न लेखी । आहारीं मिती संतोषी ।
मोप न सुये ॥ २५ ॥ अनशनाचेनि पांवकें । हारपतां
प्राण पोखे । इतुकियाचि भाग मोटकें । अशन करी ॥ २६ ॥
[यतवाकायमानसः] आणि परपुरुषें कांमिलि । कुळवधू आंग
न घाली । निद्रालस्या न मोकली । अशन तैसे ॥ २७ ॥
दंडवताचेनि प्रसंगें । सुरीं हन अंग लागे । वांचूनि येर
नेघे । राभस्य तेथ ॥ २८ ॥ देहनिवांहापुरतें । राहाटवी
हातापायांतें । किंबहुना आपतें । सबाळ केले ॥ २९ ॥
आणि मनाचा उंबरा । वृत्तीसी देखो नेदी वीरा । तेथ कें
वाग्यापारा । अवकाश असे ॥ १०३० ॥ ऐसेनि देहवाचा
मानस । हें जिणोनि बाह्यप्रदेश । [ध्यान-] आकळिले आ-
काश । ध्यानाचें तेणें ॥ ३१ ॥ गुरुवाक्यें उठविला । बोधीं
निश्चय आला । न्याहाळी हातीं घेतला । आरिसां जैसा ॥ ३२ ॥
पै ध्याता आपणपेंचि परी । ध्यानरूप वृत्तिमाझारी । ध्ये-
यतें धेहे अवधारी । ध्यानरुढी गा ॥ ३३ ॥ तेथ ध्येय
ध्यान ध्याता । ययां तिहीं एकरूपता । होय तंव पंडुसुता ।
कीजे तें गा ॥ ३४ ॥ झणौनि तो सुसुधु । आत्मज्ञानी जाला
देखु । [योगपरो नित्यं] परि पुढेंसुनि पेंडु । योगाभ्यासा-
चा ॥ ३५ ॥ अपानरंद्रध्याना- । माझारीं धनंजया । पांष्णीं

१ जनसहवास. २ वनांत स्थळ वसविलें. ३ अवयवसमु-
दाय. ४ मन इन्द्रियांच्या अंतर्मुखतें. ५ बोले. ६ झुधा मंद
व्हावी. ७ विषयी. ८ मोजलेला. ९ माप घालीत नाहीत.
१० जठराग्निनें, प्राण पोषण होतो. ११ इच्छिली किंवा
बोलाविली. १२ दवडीत नाही. १३ विषयसुख, अविचार.
१४ उपयोग करी. १५ स्वाधीन. १६ शब्दास. १७ जिकून.
१८ ध्यान करण्यास योग्यपणानें. १९ ध्यान करितो.
२० प्रकार. २१ शहाणा. २२ पुढें करून. २३ प्रकार.
२४ गुदशिश्निद्रांच्या. २५ खोटेनं दाबून.

पिडुनियां । कांवरूमूळ ॥ ३६ ॥ आकुंचनि अध ।
देऊनि तिन्ही बंध । करुनि एकवद । वायू भेदी ॥ ३७ ॥
कुंडलिनी जागळुनि । मध्यमा विकारुनि । आधारदि भे-
दुनि । अमिर्वरी ॥ ३८ ॥ सहस्रदळाचा मेघ । पीयूषें वषोनि
चांग । तो मूळवरी बोध । आणुनियां ॥ ३९ ॥ नाचतया
पुंष्यगिरी । चिद्वैरवाच्या खापरीं । मनपवनाची खीच पुरी ।
बाहुनियां ॥ १०४० ॥ जालिया योगाचा गाढा । मेळावा
सुनि हा पुढा । ध्यान मागिलीकडे । स्वयंभ केले ॥ ४१ ॥
आणि ध्यानयोगदोनी । इयें आत्मतत्त्वज्ञानी । पेंदी होआवया
निर्विद्री । आधींचि तेणें ॥ ४२ ॥ वीतेंरंगतेसारखा । जो-
डुनि ठेविला सखा । तो आधवियाचि भूमिकी- । सर्वे चाले
॥ ४३ ॥ पहावें दिसे तंववरी । दिडीतें न संधी दीप जरी ।
तरी कें अवसर । देखावया ॥ ४४ ॥ तैसें मोक्षीं प्रवर्तल्या ।
शेतीं ब्रह्मीं जाय लया । तंव वैराग्य आधी तया । अंग
केचा ॥ ४५ ॥ झणौनि सर्वैराग्य । ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य ।
करुनि जाला योग्य । आत्मलाभा ॥ ४६ ॥ ऐसी वैराग्याची
अंगी । बाणनियां वेज्जगीं । रोजयोगतुरंगीं । आरूढला
॥ ४७ ॥ वरि आडपडिले दिदी । सौने थोर निवेंदी । तें
बळी विवेकमुष्टीं । ध्यानाचें खांडें ॥ ४८ ॥ ऐसेनि सं-
सारणाभांत । आधारीं सूर्य तैसा असे जात । मोक्ष विजय
धिये वरेंत । होआवयालागीं ॥ ४९ ॥

“जनांचा सहवास सोडावयाचा; वनांत
वस्ती करावयाची; आपल्या आंगाचे अवयव
येवढेच काय ते सोबती; १०२२ शमदमादिकां-
मध्ये खेळतो; न बोलण्याचीच वडवड करतो;
गुरुवाक्याच्या तळीनतेमध्ये वेळसुद्धां ज्याला
कळत नाही. १०२३ आणखी आंगाला शक्ति

१ गुदशिश्नास सांधणाऱ्या रेपाकृतीचें मूळ, चार बोटांचा
मध्य. २ आकर्षण करून. ३ गुदस्थानचा वज्रबंध, नाभिस्थान
उड्डियाणबंध व कंठस्थान जालंधरबंध. ४ नाभिकमलातील
मूळशक्ति. ५ सुपुत्रा. ६ गुदस्थानच्या आधारचक्राचा भेद
करून. ७ कुंडलिनीच्या जायतावस्थेपासून उत्पन्न झालेल्या
तेजावर. ८ मस्तकस्थित ब्रह्मरंध्रीचा. ९ मूलाधारगुदस्थित
चक्रापर्यंत. १० द्विदलरूप कमल जें अभिचक्र तद्रूप पर्व-
तावर. ११ चैतन्यरूप भैरवाच्या भिक्षापात्रांत झणजे सह-
स्रदलरूप कमलमस्तकांत. १२ मनोरूप वायूची पूर्ण खिचडी.
१३ बळकटी. १४ वर सांगितलेला समुदाय पुढें करून.
१५ ब्रह्मध्यानाकडे. १६ स्थिर प्राप्त. १७ वैराग्यासारखा.
१८ अवस्थांसमागमें. १९ वेळ. २० अहंस्फुरण. २१ कवच.
२२ वज्राप्रमाणें बळकट. २३ राजयोगरूप धोव्यावर
२४ स्थूल, सूक्ष्म. २५ संहारी. २६ खड्ग. २७ वरणारा, भर्ता.

यावी; किंवा क्षुधा मंद व्हावी; किंवा जिमेचे हेतु पूर्ण व्हावेत; १०२४ भोजन करीत असतां ह्या तिहींनाही जो मोजित नाही. आहारा-मध्ये मोजकेपणा; संतोषामध्ये मात्र माप नाही. १०२५ जठराग्नीनें दग्ध होणारा प्राण वांचेल, इतका परिमित आहार मात्र सेवन करावयाचा. १०२६ आणखी परपुरुषानें हाक मारिली तरी, कुलीन स्त्री त्याच्या आंगाला स्पर्श करीत नाही, त्याप्रमाणें निद्रेला आणि आळसाला जो थारा देत नाही. १०२७ नमस्कार घालतांना जें काय भूमीला आंग लागेल तें लागेल. त्याशिवाय उगाच अविचारानें लोलणें नाही. १०२८ देह चालेल इतक्या पुरताच हातापायांचा उपयोग करतो. किंबहुना अंतर्बाह्य सारें आपल्याच स्वाधीन करून सोडतो. १०२९ हे वीरा! वृत्तीला मनाचा उंबराही जो पाहूं देत नाही, तेथें शब्दादिकांच्या व्यापाराला संधि कोठची? १०३० अशा प्रकारें तो काया, वाचा, व मन हीं जिकून ध्यानाच्या आकाशासुद्धां बाह्य प्रदेश आपल्या ताब्यांत घेतो. १०३१ तो गुरुवाक्यानें जागृत होतो आणि ज्ञानानें आलेला निश्चय, आरसा घेऊन पहात बसावें त्याप्रमाणें जो पहात बसतो. १०३२ ध्यान करणारा आपणच असतो आणि तोच ध्यानरूपवृत्तीमध्ये ध्यान करण्यास योग्य जें आपण त्याचेंच ध्यान करतो. असा जो ध्यानाचा प्रकार तो आतां ऐक. १०३३ तेव्हां अर्जुना! ध्येय, ध्यान आणि ध्याता ह्या तिहींची एकरूपता होईल तोंपर्यंत तें तो करतो. १०३४ झणून तो मुमुक्षु आत्मज्ञानामध्ये प्रवीण होतो. परंतु हें सर्व योगाभ्यासाचा प्रकार पुढें करून करतो. १०३५ धनंजया! खालच्या दोन्हीं छिद्रामध्ये खोट देऊन मथील शिवणीस रेटून, १०३६ अधोभाग (गुदस्थानचा) आकर्षण करून वज्रबंध, (नाभिस्थान) उड्डियाणबंध, (कंठस्थान) जालंधरबंध हे तिन्ही बंध साधून वायुभेदांची एकवाक्यता लावून, १०३७ कुंडलिनी जागृत करून, मध्यमा-सु-

षुम्ना विकसित करून आधारचक्राचा भेद करून, त्या अग्नीवर, १०३८ मस्तकांतील ब्रह्मरंध्ररूप मेघापासून अमृताची उत्तम वृष्टि करीत तो ओघ मूलाधारचक्रापर्यंत आणून, १०३९ पुण्यपर्वतावर नाचणारा जो चैतन्यरूप भैरव, त्याच्या भिक्षापात्रांत मनाची आणि वायूची भरपूर खिचडी वाढून, १०४० योगाचा अभ्यास दृढतर झाला झणजे हा सर्व समुदाय पुढें करून त्याच्या पाठीमागें ध्यानाला स्वयंभु करून सोडतो. १०४१ आणखी हें ध्यान व योग दोन्हीही ह्या आत्मतत्त्वज्ञानामध्ये निर्विघ्नपणें स्थिर होण्याकरितां, त्यानें आधींच, १०४२ वैराग्यासारखा मित्र जोडून ठेवलेला असतो. तो प्रत्येक स्थितीमध्ये त्याच्याबरोबर चालत असतो. १०४३ दिसतें तोंपर्यंत पहावें. परंतु दीप जर दृष्टीला सोडित नाही, तर पहावयाला अवकाश तरी कोठें राहिला? १०४४ तद्वत् मोक्षामध्ये शिरलें, कीं अहं हें स्फुरण लयास जाईपर्यंत त्याला वैराग्य असतें. मग त्याला भंग कशाचा? १०४५ झणून वैराग्यासहवर्तमान जो ज्ञानाचा अभ्यास करतो, तो भाग्यवान् होय. आणि तोच आत्मलाभाला योग्य होतो. १०४६ अशा प्रकारें वैराग्याचें वज्राप्रमाणें बळकट कवच आंगांत घालून जो राजयोगरूपी (अद्वैतबोधरूप) शोड्यावर बसतो. १०४७ तो विवेकाच्या बळकट मुर्तीत ध्यानरूप तरवार घेऊन दृष्टीपुढें जें जें लहान किंवा थोर येईल, तें स्थूल असो कीं सूक्ष्म असो, त्याचा संहार करीत सुटतो. १०४८ अशा रीतीनें आंधारांत सूर्य जातो तसा, संसारयुद्धामध्ये मोक्षाची विजयश्री वरण्याकरितां जात असतो." १०४९

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।

विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥५३॥

[अहंकारं] तेथ आडवावया आले। दोषवैरी जे धोपटिले। तयांमाजी पहिले। देहाहंकार ॥ १०५० ॥ जो न मोक्ली मारुनी। जीवों नेदी उपजवोनी। विचवैवी खोडां घालुनी। हाडांचिया ॥ ५१ ॥ तेंयाचा देहेंदुर्ग हा थारा। मोडोनि १ श्रमवी. २ त्या अभिमानाचा. ३ देहरूप किष्ठा.

घेतला तो वीरा । [बल] आणि बळ हा दुसरा । मारिला
वैरी ॥ ५२ ॥ जो विषयाचेनि नांवें । चौगुणेही वरी थावे ।
जेणें मृतावस्था धावे । सर्वत्र जगा ॥ ५३ ॥ तो विषयवि-
षाचा ठावो । आषविषा दोषांचा रावो । परी ध्यानखड्याचा
घावो । साहेल कैचा ॥ ५४ ॥ [दर्प] आणि प्रिय विषय-
प्राप्ती । करी जया सुखाची व्यक्ती । तेचि घालनि बुंधी ।
आंगी जो वाजे ॥ ५५ ॥ जो सन्मार्ग मुलवी । मग अध-
र्माच्या आडवी । सूनि वाघां सांपडवी । नरकादिकां ॥ ५६ ॥
तो विश्वासे मारिता रिपु । निर्वदनि घातला दुर्पु । [काम]
आणि जयाचा अहा कंपु । तापसांसी ॥ ५७ ॥ क्रोधा ऐसा
महादोख । जयाचा देख परिपाक । भरजे तंव अधिक ।
रिता होय जो ॥ ५८ ॥ तो काम कोणेचठायी । नसे ऐसे
केलें पाहीं । [क्रोध] की तेंचि क्रोधाही । सहजें आलें ॥ ५९ ॥
मुळाचें तोडणें जैसे । होय कां शाखोदेशें । काम नाशलेनि
नाशे । तैसा क्रोध ॥ १०६० ॥ ह्याणीनि काम वैरी । जाला
जेथ ठाणरी । तेथ सरली वारी । क्रोधाचीही ॥ ६१ ॥ [प-
रिग्रह] आणि समर्थ आपुला खोडो । शिसे वाहवी जैसा
होडो । तैसा भुंजोनि जो गाढा । परिग्रहो ॥ ६२ ॥ जो
मायांचि पालवणी । अंगा अवगुण घालवी । जीवें दांडी
घेववी । ममत्वाची ॥ ६३ ॥ शिष्यशास्त्रादिविलासे । मेठा-
दिमुद्रेचेनि मिसे । घातले आहाती फांसे । निःसंगा जेणें
॥ ६४ ॥ धर्मी कुटुंबपणें सरे । तरी वनी वैश्य होउनि अ-
वतरे । नागवीयाही शरीरें । लागला आहे ॥ ६५ ॥ [वि-
मुच्य] ऐसा दुर्जय जो परिग्रहो । तयाचा फेहूनि ठावो ।
भवविजयाचा उत्साहो । भोगीतसे जो ॥ ६६ ॥ [निर्ममः] तेथ
अमानित्वादि आघवे । ज्ञानगुणाचे जे मेळावे । ते कैवल्य-
देशांचे आघवे । राव जैसे आले ॥ ६७ ॥ तेव्हां सम्यक्-
ज्ञानाच्या । राणिवा उगाणूनि तया । परिवार होऊनियां ।
राहत आंगें ॥ ६८ ॥ प्रवृत्तीचिये राजविदी । अवस्थाभेद-
प्रमदी । कीजत आहे प्रतिपदी । सुखाचें लोण ॥ ६९ ॥
पुढां बोधाचिये कांबीवरी । विवेक दृष्ट्याची मादी सोरी ।

१ सर्व विषयांचें नांव घेताना. २ बळावे. ३ कसे सहन
करील. ४ खोक. ५ आदळे. ६ अरण्यांत. ७ घालून. ८ गुरु-
शास्त्रवचनी विश्वासानें. ९ वधून. १० गर्व. ११ पक्षावस्था.
१२ रिकामा. १३ इच्छा. १४ युद्धहत, युद्धकर्ता. १५ बेडी.
१६ मस्तकें. १७ पैजेजें. १८ संग. १९ ओझें घाली, डो-
क्यावर बसतो. २० जडवी. २१ काठी. २२ शिष्यसंप्रदाय
वाढविण्याचे प्रकार. २३ मठ करणें, मुद्रा दाखविणें.
२४ विरक्तास. २५ ज्या परिग्रहानें. २६ घरकुटुंब त्याग
करून दूर झाला. २७ वन्यसंबंधाचे विषयी. २८ स्वामित्वानें.
२९ झाडा करून. ३० राजमार्गावर. ३१ जाणुति इत्यादिक
झियांविषयी. ३२ धनुष्यानें. ३३ नाहींशी करी.

योगभूमिका आरती करी । येती जैसिया ॥ १०७० ॥ तेथ
ऋद्धिसिद्धीचीं अनेगें । वुंदें मिळती प्रसंगें । तिये पुष्पवर्षी
आंगें । नाहातसे तो ॥ ७१ ॥ ऐसेनि ब्रह्मक्यासारिखें । स्व-
राज्य येतां जवळिकें । झळवित आहे हरिखें । तिन्ही लोक
॥ ७२ ॥ तेव्हां वैरिया कां मैत्रिया । तयासि माझे ह्याण-
वया । सानानता धनंजया । उरेचिही ना ॥ ७३ ॥ हें ना
भलतेणे व्याजें । तो जयातें ह्याणे माझे । तें नोडवेचि कां
हुंजें । अद्वितीय जाला ॥ ७४ ॥ पै आपुलिया एकी सत्ता ।
सर्वही कवळुनियां पंडुसुता । केहीं न लगती ममता । धां-
डिली तेणें ॥ ७५ ॥ [शांतः] ऐसा जितिलिया रिपुवर्ग ।
अपमानिलिया हें जग । अपैसा योगगुरुंग । स्थिर जाला
॥ ७६ ॥ वैराग्याचें गाढलें । अंगत्राण होतें भलें । तेंही
नावेक दिलें । तेव्हां करी ॥ ७७ ॥ आणि निर्वंदी ध्यानाचें
खांडें । तें हुजें नाहींचि पुढें । ह्याणि हात आसुडे । वृत्ती-
चाही ॥ ७८ ॥ जैसे रसौषध खरें । आपुलें काज करुनि
पुरें । आपणही नुरे । तैसें होतसे ॥ ७९ ॥ देखोनि ठाकिता-
ठावो । धांवतां थिरावे पावो । तैसा ब्रह्मसामीप्यें थावो ।
अभ्यास सांडी ॥ १०८० ॥ घडतां महोदधीसी । गंगा वेग
सांडी जैसी । कां कामिनी कांतापासी । स्थिर होय ॥ ८१ ॥
ना ना फळतिये वेळे । केळीची वाढि मोटुळे । कां गांवापुढें
वळे । मार्ग जैसा ॥ ८२ ॥ तैसा आत्मसाक्षात्कार । होईल
देखोनि गोचर । ऐसा सार्धनैहतियेर । हळूचि ठेवी ॥ ८३ ॥
ह्याणीनि ब्रह्मंसी तथा । ऐक्याचा सर्मो धनंजया । होतसे तें
उपाया । बोहटें पडे ॥ ८४ ॥ मग वैराग्याची मोर्धळुक ।
जे ज्ञानाभ्यासाचें बार्धक्य । योगफळासही परिपक्व । दशा
जे कां ॥ ८५ ॥ ते शांति पै गा सुबेगा । संपूर्ण ये तया-
चिया आंगा । [ब्रह्मभूयाय कल्पते] तें ब्रह्म होआवयाजोगा ।
होय तो पुरुष ॥ ८६ ॥ पुनवेहूनि चतुर्दशी । जेतुलें उणेंपण
शशी । कां सोळेया ऊनि जैसी । पंधरावी वांनी ॥ ८७ ॥
सागरीही पाणी वेणें । संचरे तें रूप गंगे । येर निश्चळ जें
उणें । तें समुद्र जैसा ॥ ८८ ॥ ब्रह्मा आणि ब्रह्महोतिये ।
योगयते तैसा पांड आहे । तेचि शांतीचेनि लाहे । हातें तो

१ आरती करणाऱ्या. २ पुष्पवृष्टीनें. ३ आनंदित,
गुंडाळित. ४ साम्यतेन. ५ निमित्तानें. ६ प्राप्त होत नाहीं.
७ दुसरेपणानें. ८ वेष्टून. ९ कधी. १० फेडिली. ११ शत्रु-
समुदाय. १२ सहज. १३ योगरूप घोडा. १४ अंगावर
बळकट घातलेलें. १५ कवच. १६ वधी. १७ खड्ग.
१८ झुगारी. १९ विश्रांतिस्थान. २० पाय स्थिर होतो.
२१ बळ. २२ सरे, कुंटे. २३ शास्त्र. २४ समय. २५ तूट.
२६ मावळती वेळ. २७ वृद्धपणा. २८ परिणाम. २९ ऐश्वर्य-
वंता. ३० उणी. ३१ कस. ३२ साम्य.

गा ॥ ८९ ॥ पै तैचि होणेनवीण । प्रतीती आलें जें ब्रह्म-
पण । ते ब्रह्महोती जाण । योग्यता येथ ॥ १०९० ॥

“तेव्हां दोषरूप शत्रु जे जे आडवे येतात, आणि त्यांपैकी ज्यांना धोपटून काढावे लागते, त्यांमध्ये पहिला कोण ? तर देहाहंकार. १०५० त्याला नुसता मारूनच सोडित नाही, तर त्याने पुन्हा डोकेंसुद्धां वर करूं नये असें करून टाकतो. १०५१ हे वीरा ! त्या देहाहंकाराचें राहण्याचें ठिकाण जो देहरूप किला तो जिकून टाकलेला असतो. आणखी, बळ हा दुसरा वैरी मारतो. १०५२ विषयांचें नांव घेतांच जो चौपटीहूनही अधिक वाढतो. आणि ज्याच्या योगानें सर्व जगाला मृतावस्था प्राप्त होते. १०५३ तो विषयरूप विषाची खाण; सर्व दोषांचा राजा तरी, ध्यानरूप तरवारीचा वार कसा सहन करणार ? १०५४ आणखी प्रिय विषय प्राप्त झाले कीं ज्याचें सुख दिसू लागते. आणि तेंच कवच आंगांत घालून जो गरजतो. १०५५ जो सन्मार्गाला भुरळ पाडतो; चुकवितो; आणि अधर्माच्या अरण्यांत घालून नरकादिक वाघांच्या तावडींत देतो. १०५६ विश्वासानें मारणारा दुस्मान; असा जो गर्व तो ज्यानें ठार करून टाकलेला. आणि अरेरे ! ज्याचा तपस्व्यांनासुद्धां धाक, १०५७ क्रोधासारखा महादोष हें ज्याचें फळ; भरूं लागलें कीं जो अधिकाधिक रिताच होत जाणारा; १०५८ असा जो काम तो कोठेंच ज्यानें नाहींसा करून टाकलेला. तेव्हां क्रोधाच्या कपाळालाही सहर्जा तीच दशा आली. १०५९ ज्याप्रमाणें मूळ तोडलें ह्मणजे शाखा तुटतातच; त्याप्रमाणें कामाचा नाश झाला कीं, क्रोधाचाही झालाच. १०६० ह्मणून कामरूप शत्रु जेथें पराजित होतो, तेथें क्रोधाचीही वारी संपते. १०६१ आणखी सत्ताधीश असतो तो आपला खोडाही पैजेनें डोक्यावरून न्यावयाला लावतो, त्याप्रमाणें भोग भोगून मातलेला जो

परिग्रह, १०६२ जो आपल्या नुसत्या मस्तक हालविण्यानेंच आपल्या आंगचा अवगुण चिकटवितो, व जिवाकडून ममत्वाची दांडी घेववितो, १०६३ शिष्यसांप्रदाय वाढविणें; मठ करणें; मुद्रा दाखविणें, इत्यादि निःसंगावरही ज्यानें फांसे घालून ठेवलेले आहेत. १०६४ घरांतील कुटुंबांतून निघतो परंतु वनामध्ये वन्यविषयीं होऊन राहतो; नागव्यांच्या शरीरालाही जो चिकटलेला; १०६५ असा जिकण्याला कठीण जो परिग्रह, त्याचा गंड मोडून जो संसारापासून विजयी होत्साता आनंदोत्सवाचा उपभोग घेतो. १०६६ तेव्हां अमानित्वादि सारे ज्ञानगुणांचे समुदाय, ते जणों काय मोक्षदेशाचे राजे असावेत त्याप्रमाणें येतात. १०६७ त्या वेळीं यथार्थज्ञानाच्या राज्याचा त्यांस झाडा देऊन, त्यांचा अंकित होऊन राहतो. १०६८ प्रवृत्तीच्या राजमार्गावर जागृति इत्यादि अवस्था, भेदरूपी स्त्रिया पावलोपावलीं सुखाचें लिंबलोन उतरित असतात. १०६९ पुढें विचार हा ज्ञानाची काटी घेऊन दृश्याची दाटी मागे करतो. आरती ओवाळण्यास स्त्रिया आल्याप्रमाणें योगभूमिका (अवस्था) येतात. १०७० तेव्हां प्रसंगानुसार ऋद्धिसिद्धीचेही अनेक समुदाय जमा होतात. आणि त्यांच्या पुष्पवृष्टीनें त्यांचें आंग अगदीं झांकून जातें. १०७१ अशा प्रकारें ब्रह्मेक्षयासारख्या स्वराज्याची प्राप्ति झाली ह्मणजे त्रिभुवन आनंदामध्ये बुडून जातें. १०७२ त्या वेळीं धनंजया ! शत्रूला किंवा मित्राला माझे ह्मणावयाला कांहीं उरतच नाही. १०७३ हें नसलें तर, कोणत्याही इतर निमित्तानें माझे असें झटलें तरीसुद्धां तें दुसरें होत नाही. कारण, तो स्वतःच अद्वितीय झालेला असतो. १०७४ अर्जुना ! आपल्या एकाच सत्तेखालीं सर्व घेऊन कधीं न सुटणारी ममता त्यानें सोडलेली असते. १०७५ अशा प्रकारें शत्रुसमुदाय जिकला; ह्या जगाचा अब्देर केला; कीं योगरूप घोडा आपोआपच उभा राहतो. १०७६

१ तें ब्रह्म झाल्यावांचून ब्रह्मपणा जो प्रतीतीस येतो तो ब्रह्म होण्याची योग्यता. २ ब्रह्म होण्याची.

त्या वेळेस वैराग्याचें बळकट घातलेलें कवच असतें तें सुद्धां घटकाभर ढिलें करतो. १०७७ आणखी ध्यानाचें खड्गही फेंकून देतो; कारण, दुसरें ह्मणून कांहीं उरत नाही त्यामुळे वृत्तीचाही हात क्षिप्तकारून देतो. १०७८ ज्याप्रमाणें खरें रसायन आपलें काम पुरतें करून मग आपणही शिल्पक रहात नाही, त्याप्रमाणें होतें. १०७९ थांबावयाचें ठिकाण पाहिलें ह्मणजे धांवणारा जसा पाय थांबवितो, त्याप्रमाणें ब्रह्मार्थी ऐक्यभाव झाला ह्मणजे अभ्यासाचें ठिकाण सोडून देतो. १०८० महासागराची गांठ पडली कीं, गंगा जशी वेग टाकून देते; अशी जशी पतीपाशीं स्थिर होते; १०८१ किंवा फलद्रूप होण्याच्या वेळेला केळीची वाढ खुंटते; किंवा गांवाजवळ जसा मार्ग मुरडतो; १०८२ त्याप्रमाणें आत्मसाक्षात्कार होतो असें समजतांच साधनरूप शस्त्र हळूच खाली ठेवतो. १०८३ ह्मणून हे धनंजया! ब्रह्माच्या आणि त्याच्या ऐक्याचा समय येतो तेव्हां उपायामध्ये तूट पडते. १०८४ मग वैराग्याची जी मावळती वेळ; जें ज्ञानाभ्यासाचें वार्धक्य; योगफळाची जी परिपक्व दशा; १०८५ हे ऐश्वर्यवंता! ती संपूर्ण शांति त्याच्या आंगास येते. तेव्हां तो पुरुष ब्रह्म होण्यास योग्य होतो. १०८६ पौर्णिमेपेक्षां चतुर्दशीच्या चंद्रांत जितकी कमतरता, किंवा सोळांच्या कसाहून पंधरांचा कस जितका उणा, १०८७ समुद्रांत जें पाणी जोरानें शिरतें, तें गंगेचें स्वरूप होय. बाकी जें स्थिर-निश्चल-पाणी तो समुद्र होय. १०८८ त्याप्रमाणें ब्रह्माची आणि ब्रह्म होणाऱ्याची योग्यता अगदीं जवळ जवळ आहे. तीच त्याला शांतीच्या द्वारानें प्राप्त होते. १०८९ तेंच ब्रह्म झाल्याशिवाय ब्रह्मत्वाचा जो अनुभव घडतो, तीच ब्रह्म होण्याची योग्यता होय." १०९०

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।

समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ९४ ॥

[ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा] ते ब्रह्मभावयोग्यता । पुरुष तो

मग पंडुजुता । आत्मबोध प्रसन्नता । पदीं बैसे ॥ ९१ ॥ जेणें निपजे रससोय । तो तापही जें जाय । तों तें कां होय । प्रसन्न जैसी ॥ ९२ ॥ ना ना भरतिंया लगवणा । शरत्काळीं सांडिजे गंगा । कां गीत राहतां उपांगा । वोहट पडे ॥ ९३ ॥ तैसा आत्मबोधी उद्यम । करितां होय जो भ्रम । तोही जेयें शंभ । होऊनि जाय ॥ ९४ ॥ आत्मबोध प्रशस्ती । हे तिये दशेची ह्याती । ते भोगीतसे महामती । योग्य तो गा ॥ ९५ ॥ [न शोचति न कांक्षति] तेव्हां आत्मत्वे शोचोंवें । कांहीं पावावया कामावें । हें सरलें समावें । भरितें तया ॥ ९६ ॥ [समः सर्वेषु भूतेषु] उदया येतां गैभस्ती । नाना नक्षत्रव्यक्ती । हारवीजती दीप्ती । आंगिकां जेवि ॥ ९७ ॥ तेवि उठतिआ आत्मप्रभा । हे भूतभेदव्यवस्था । मोडीत मोडीत पार्था । बांस पाहे तो ॥ ९८ ॥ पाटियेवरील अक्षरें । जैसीं पुसतां येती 'करें' । तैसीं हारपती भेदांतरें । तयाचिये दृष्टी ॥ ९९ ॥ तैसेनि अन्यथाज्ञानें । जियें घेपती जागरस्वप्न । तियें दोन्हीं केलीं लीन । अव्यक्तामाजि ॥ १०० ॥ मग तेंही अव्यक्त । बोध वाढतां क्षिजत । पुरलां-बोधीं समस्त । बुडोनि जाय ॥ १ ॥ जैसी भोजनाच्या व्यापारी । क्षुधा जिरत जाय अवधारी । मग तृप्तीच्या अवसर । नाहीच होय ॥ २ ॥ नाना चालीचिया वाढी । वाट होत जाय थोडी । मग पातळायां बुडी । देऊनि निभे ॥ ३ ॥ कां जाणती जंव उंदीपे । तंव तंव निद्रा हारपे । मग जागीनलियां स्वरूपे । नाहीच होय ॥ ४ ॥ हें ना आपुलें पूर्णत्व भेटे । जेथ चंद्रासी वाढी खुंटे । तेथ शुक्रपक्ष आटे । निःशेष जैसा ॥ ५ ॥ तैसा बोधेंजात गिळित । बोधबोधें ये मजआंत । मिसळला तेथ सायंत । अंबोध गेला ॥ ६ ॥ [मद्भक्ति] तेव्हां कल्पांतचिये वेळे । नदी सिंधूचे पेंढेवळें । मोडुनि भरिलें जळें । आब्रह्म जैसें ॥ ७ ॥ ना ना गेलिया घट मठ । आकाश ठाके एकवट । कां जळोनि काष्ठे काष्ठ । वन्हीच होय ॥ ८ ॥ ना तरि लेणिंयांचे ठसे । आटोनि गेलिया मुंसे । नामरूपभेदें जैसें । सांडिजे सोनें ॥ ९ ॥ हेंही असो चेइलेंया । हें स्वप्न नाही जालया । मग आपणचि आपणयां । उरिजे जैसें ॥ १११० ॥ [लभते

१ रससोय. २ आपणास पूर्ण करण्याची लगवण. ३ मृंदगादि. ४ उद्योग. ५ शांत. ६ मोडेपण. ७ शोक करावा. ८ इच्छावें. ९ सूर्य. १० आंगच्या. ११ आत्मानुभव. १२ वाट. १३ हातांनं पुसतां येतात तशी. १४ विपरीत ज्ञानानें. १५ घेतलीं जाती. १६ सूक्ष्मवृत्तीत. १७ पूर्ण बोधकाळी. १८ समर्थी. १९ नाश पावे. २० प्रकाश पावे. २१ सर्व बोध, सर्व ज्ञान. २२ अज्ञान. २३ बांध, मर्यादा. २४ ब्रह्मलोकापर्यंत. २५ अलंकार घडण्याचे छाप. २६ मुशीत. २७ जाणें झाल्यावर.

परां तैसा मी एकवांचूनि काहीं । तया तयाहीसकट नाही ।
हे चौथी भक्ती पाहीं । माझी तो लाहे ॥ ११ ॥ येर आतं
जिज्ञासु अर्थीयां । हे भजती जिये पंथी । ते तिन्ही पावोनि
चौथी । ह्यणिपत आहे ॥ १२ ॥ येन्हवीं तिजी ना चौथी ।
हे पहिली ना सरती । पै माझिये सहजस्थिती । भक्ति नाम
॥ १३ ॥ जे नेरणें माझे प्रकाशनि । अन्यथात्वे मातें दाऊनि ।
सर्वही सर्वां भजौनि । बुझावीतसे ॥ १४ ॥ जो जेथ जेसं
पाहों बैसे । तया तेथ तैसेचि असे । हें उजियेडें कां दिसे ।
अखंडें जेणें ॥ १५ ॥ स्वप्राचें दिसणें न दिसणें । जैसे
आपलेनि असलेपणें । विश्वाचें आहे नाही जेणें । प्रकाशें
तैसे ॥ १६ ॥ ऐसा हा सहज माझा । प्रकाश जो कपिध्वजा ।
तो भक्तीचा वोजा । बोलिजे गा ॥ १७ ॥ ह्यणौनि आतां-
च्या ठायीं । हें आतं होऊनि पाहीं । अपेक्षणीय जें काहीं ।
तें मीचि केला ॥ १८ ॥ जिज्ञासुपुढां वीरेशा । हेचि होऊनि
जिज्ञासा । मी कां जिज्ञासु ऐसा । दाखविला ॥ १९ ॥ हेचि
होऊनि अर्थना । मीचि माझ्या अर्थी अजुना । करुनि अर्थो-
भिधाना । आणि मातें ॥ ११२० ॥ एवं घेऊनि अज्ञानातें ।
माझी भक्ति जे हे वतें । ते दावी मज द्रष्टयातें । दृश्य
करुनि ॥ २१ ॥ येथें मुखचि दिसे मुखें । या बोला काहीं
न चुके । परि दुजेपण हें लटिकें । आरिसा करी ॥ २२ ॥
दिठी चंद्रचि घे साचें । परि येतुलें हें तिमिरांचें । जे एकचि
असे तयाचे । दोनी दावी ॥ २३ ॥ तैसा सर्वत्र मीचि
मियां । घेपेंतसे धनंजया । परि दृश्यत्व हें वायां । अज्ञान-
वशें ॥ २४ ॥ तें अज्ञान आतां फिटलें । माझे द्रष्टृत्व मज
भेटलें । निजबिंबीं एकवटलें । प्रतिबिंब जेसं ॥ २५ ॥ पै
जेव्हांही असें किडोळ । तेव्हांही सोनेचि अडळ । परि तें
कीडें गेलिया केवळ । उरे जेसं ॥ २६ ॥ हांगा पूर्णमे
आधीं कायी । चंद्र सावयव नाही । परि तिये दिवसीं भेटे-
पाहीं । पूर्णता तया ॥ २७ ॥ तैसा मीचि ज्ञानद्वारें । दिसं
परि हेस्तातरें । मग दृष्टत्व तें सरे । मियांचि मी लाभें ॥ २८ ॥
ह्यणौनि दृश्यपथा । अतीत माझ्या पार्था । भक्तियोग चवथा ।
ह्यणीतला गा ॥ २९ ॥

“अर्जुना ! त्या ब्रह्म होणाऱ्या योग्यतेस पों-
चलेला पुरुष असतो तो मग आत्मज्ञानप्रसन्न-

१ शुद्धज्ञान. २ लाभे. ३ पीडित. ४ ज्ञानेच्छु. ५ द्र-
व्येच्छु. ६ शेवटली. ७ ब्रह्मरूप स्थिति. ८ अज्ञान. ९ अन्य
प्रकारें. १० भजवून. ११ समजावीत आहे. १२ प्रकाशानें.
१३ भक्तीच्या रीतीनें. १४ पीडिताच्या. १५ इच्छा करण्यास
योग्य. १६ ज्ञानेच्छुच्या पुढें. १७ अर्थीय या नांवास.
१८ सर्वसाक्षीला. १९ एवढें. २० नेत्ररोगाचें. २१ घेतला
जातो. २२ साक्षीरूपत्व. २३ डाकलग. २४ स्थिर. २५ हीण.
२६ उपाधीच्या योगानें हाताच्या अंतरानें. २७ ज्ञान.

तेच्या सिंहासनावर बसतो. १०९१ जिनें स्वयं-
पाक तयार होतो, ती आग जेव्हां विझून जाईल,
तेव्हांच तो स्वयंपाक उपयोगी पडतो; १०९२
किंवा शरदृतूमध्ये गंगा पुराचा जोर सोडून
देते; किंवा गाणें बंद झालें कीं, बाकी मृदंग
वगैरे साधनें बंद पडतात; १०९३ त्याप्रमाणें
आत्मज्ञानासाठीं केलेले जे भ्रम तेही जेथें शांत
होऊन जातात. १०९४ आत्मज्ञानाचें महत्त्व
हेच त्या दशेचें प्रसिद्ध नांव होय. त्या दशेला
तो महात्मा योग्य होऊन तिचा उपभोग घेतो.
१०९५ तेव्हां आत्मज्ञानासाठीं शोक करावा,
काहीं मिळण्याची इच्छा धरावी, हेच संपत्ते.
ह्यणून अर्थात्च त्याला साम्यता प्राप्त होते.
१०९६ सूर्य उदयास आला ह्यणजे नानाविध
असलेल्या नक्षत्रांच्या आंगचें असलेलें तेज लोपू-
न जातें; १०९७ त्याप्रमाणें हे पार्था ! आत्मा-
नुभव प्राप्त झाला ह्यणजे, प्राणिमात्रांतील भेद
मोडित मोडित त्याच मार्गानें तो जात असतो.
१०९८ पाटीवर असलेलीं अक्षरें जशीं पुसून
टाकतां येतात, त्याप्रमाणें त्याच्या दृष्टीतील
भेदाभेद मोडून जातात. १०९९ तसेंच जागृति
स्वप्न हीं जीं विपरीत ज्ञानें मानलीं जातात,
तीं दोन्हीही तो अव्यक्तामध्ये नाहीशीं करून
सोडतो. ११०० भगवान् जसजसें वाढूं ला-
गतें, तसतसें तें अव्यक्तही कमी कमी होत होत
पूर्ण ज्ञान झालें ह्यणजे त्यांत सर्वच बुडून जातें.
११०१ ऐक. भोजन करतांना क्षुधा जशी कमी
कमी होत जाऊन तृप्तीच्या वेळीं तर ती अग-
दीच नाहीशी होऊन जाते. ११०२ किंवा चा-
लणें जसें जसें अधिक वाढत जातें, तस-
तशी वाट थोडथोडी रहाते. आणि नेमलेल्या
टिकाणीं पोंचलें ह्यणजे ती मुळीच नाहीशी
होते. ११०३ किंवा जों जों जागेपणा येत
जातो, तों तों निद्रा नाहीशी होते. आणखी
नीट जाणें झाल्यावर तर ती मुळीच नाहीशी
होते. ११०४ हें, किंवा चंद्राचें जेथें पूर्णत्व
होतें; त्याची जेथें वाढ खुंटते; तेथें जसा शु-
क्लपक्ष नाहीसा होऊन जातो, ११०५ त्याप्र-

माणें झाडून सारें ज्ञान गिळून ज्ञानाच्या ज्ञानानें माझ्या मध्ये एकरूप होऊन जातो, आणि अज्ञान सारें नाहीसेंच होऊन जातें. ११०६ तेव्हां कल्पांताच्या वेळेला नदीची आणि सिंधूची मर्यादा सारीच मोडून ब्रह्मलोकापर्यंत जसें सारें पाणीच पाणी भरून जातें, ११०७ किंवा घट आणि मठ दोन्ही नाहीशीं झालीं झणजे आकाश जसें एक होऊन राहतें, किंवा लांकडे जळल्यानंतर लांकूड जसें विस्तवच बनतें, ११०८ किंवा अलंकाराकरचे ठसे मुशीत आटून गेले झणजे सोनें जसें नामरूप ह्यांच्या भेदाला सोडून देतें. ११०९ हेंही असो. जागे झालेल्याला स्वप्न हें असत नाही, आणि तो जसा आपल्याच ठिकाणीं उरतो, १११० त्याप्रमाणें माझ्या एकाशिवाय त्याला त्याच्या सहवर्तमान दुसरें कांहीं दिसत नाही. अशी ही माझी चौथी भक्ति त्याला प्राप्त होते. ११११ इतर आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी, हे ज्या ज्या पंथानें माझे भजन करतात, त्या तिन्ही पंथांहून ही भक्ति निराळी होय. झणूनच हिला चौथी भक्ति असें झणतात. १११२ बाकी ती तिसरीही नव्हे आणि चौथीही नव्हे. ती पहिलीही नव्हे, आणि शेवटचीही नव्हे. माझ्या ब्रह्मरूप स्थितीलाच भक्ति हें नाम आहे. १११३ जी माझे अज्ञान उघडकीस आणून मला निराळ्या प्रकारानें दाखवून सर्वांच्या भजनांत सर्व प्रकारची समजूत घालून देते. १११४ जो जेथें जसें पहावयास बसेल, त्याला तेथें तसेंच असतें, आणि ज्यानें हें सर्व अखंड प्रकाशित दिसतें. १११५ स्वप्नाचें दिसणें किंवा न दिसणें हें जसें आपल्या अस्तित्वावर अवलंबून असतें, त्याप्रमाणें विश्वाचें असणें आणि नसणें ज्यानें भासमान होतें, १११६ कपिध्वजा! असा जो हा माझा स्वाभाविक प्रकाश तोच भक्ति ह्या शब्दानें बोलतात. १११७ झणून आर्तामध्ये हेंच आर्ति होऊन ज्याची अपेक्षा करावयाची तें मीच होतो. १११८ हे वीर-श्रेष्ठा! जिज्ञासपुढें हेंच जिज्ञासा होऊन जि-

ज्ञासा तो मी असा भास करतें. १११९ हेंच अर्थी होऊन अर्जुना! माझ्याकरितां मीच अर्थादिक नांवास पात्र होतो. ११२० अशा प्रकारें अज्ञानाला घेऊन जी ही माझी भक्ति वागते, तीच मला पाहणाराला पहाण्याचा पदार्थ करून दाखविते. ११२१ येथें तोंडानेंच तोंड दिसतें. ह्या बोलण्यांत कांहींच चुक नाही. पण हें जें मिथ्या दुसरेंपण तें आरसा करतो. ११२२ दृष्टी खरोखर चंद्राचाच स्वीकार करीत असते, पण येवढें कृत्य फक्त त्या एक नेत्ररोगाचें; कीं एक असलेला पदार्थ द्विधा करून दाखवावयाचा. ११२३ त्याप्रमाणें धनंजया! सर्व ठिकाणीं मीच माझे सेवन करतो. आणि दृश्यत्व हें अज्ञानानें व्यापल्यामुळें मिथ्या होय. ११२४ आपल्या विंबांत जसें प्रतिबिंब मिळून जावें त्याप्रमाणें तें अज्ञान आतां नाहीसें होतें. माझे साक्षीरूपत्व माझ्या प्रत्ययास येतें. ११२५ हीण मिसळलेलें असतें, तेव्हांही तें खरोखर सोनेच असतें. परंतु हीण गेल्यानंतर तें जसें शुद्ध बाकी रहातें; ११२६ किंवा पौर्णिमेच्या आर्धी चंद्र संबंध नसतो काय? पण त्या दिवशींच त्याला संपूर्णता प्राप्त होते. ११२७ त्याप्रमाणें ज्ञानद्वारानें मीच दिसतो; पण हाताच्या अंतरावरून दिसतो. मग तें दिसणेंही संपतें, आणि माझाच मला लाभ होतो-पाहणारा आत्मस्वरूपाशीं-माझ्याशीं-प्रेक्ष्यता पावतो. ११२८ झणूनच अर्जुना! चवथा जो भक्तियोग तो दृश्यमार्गाच्या अतीत-झणजे पलीकडे आहे असें झणतात." ११२९

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनंतरम् ॥ ११ ॥

[भक्त्या] इया ज्ञान भक्ती सहज । भक्त एकवटला मज । तो मीचि केवळ हें तुज । श्रुतही आहे ॥ ११३० ॥
जे उभऊनियां भुजा । ज्ञानिया तो आत्मा माझा । हें बोलिलें कपिध्वजा । सप्तमाध्यायी ॥ ३१ ॥ ते हे केंत्यादि भक्ति मिया । श्रीभागवतमिणें ब्रह्मया । उत्तम झणौनि धनंजया । उपदे-

शिली ॥ ३२ ॥ शानी इयेतें खंसंविति । शैवं क्षणती शक्ति ।
आह्मी परम भक्ति । आपली क्षणां ॥ ३३ ॥ [मामभिजा-
नाति] हे मैज मिळतिये वेळे । तयां कैमयोगियां फळे ।
मग समस्तही निखिलें । मियांचि भरे ॥ ३४ ॥ तेथ वैराग्य
विवेकेंसी । आटे बंध मोक्षेंसी । वृत्ती तये अष्टुत्तीसी ।
बुडोनि जाय ॥ ३५ ॥ बेकनि ऐलेंपणातें । परंतव हारपे
जेथें । गिळनि चान्ही भूतें । आकाश जैसे ॥ ३६ ॥ तया
परि धड्याद । साध्यसाधनातीत शुद्ध । तें मी होऊनि
एकवद । भोगितो मातें ॥ ३७ ॥ घडोनि सिंधूचिया आंगा ।
सिंधूवरी तेंकपे गंगा । तैसा पांड तया भोगा । अवधारी जो
॥ ३८ ॥ कां आरिसयासि आरिसा । उदूनि दाविलिया
जैसा । देखणा अतिशय तैसा । भोगणा तिये ॥ ३९ ॥
हें असो दर्पण नेलिया । तो मुखबोधही गेलिया । देखलें-
पण एकलेया । आखादिजे जेवि ॥ ११४० ॥ चेडलिया खप
नाशे । आपलें ऐक्यचि दिसे । तें दुजेनवीण जैसे । भोगिजे
कां ॥ ४१ ॥ 'तोचि जालिया भोग तयाचा । न घडे हा
भोव जयांचा । तिहीं बोले केवि बोलाचा । उंचार कीजे
॥ ४२ ॥ [यावान्] तयांच्या नेणो गांवीं । रवीं प्रकाशी हन
दिवी । कीं व्योमालागीं मांडवी । उभिली तिहीं ॥ ४३ ॥
हां गा रोजन्यत्व नव्हांतां आंगीं । रावो रायपण काय भोगी ।
कां आधार हन आळिगी । दिनेकरातें ॥ ४४ ॥ आणि आ-
काश जें नव्हे । तया आकाश काय जाणवे । रत्नाच्या
रूपी मिरवे । गुंजाचें लेणें ॥ ४५ ॥ क्षणोनि मी होणें
नाहीं । तया मीचि आहे केही । मग भजेल हें कायी ।
बोलें कीर ॥ ४६ ॥ यालागीं तो कर्मयोगी । मी जालाचि
मातें भोगी । तारुण्य कां तरुणांगी । जियापरि ॥ ४७ ॥
तरंगें सर्वांगी तोय चुंबी । प्रभा सर्वत्र विलसे विंबी । ना
ना अँवकाश नमीं । छुंउतें जैसा ॥ ४८ ॥ तैसा रूप होउनि
माझें । मातें क्रियावीण तो भजे । घंताकार कां सहजें ।
सोनयातें जेवि ॥ ४९ ॥ कां चंदनाची हुंती जैसी । चंदनीं
भजे अपैसी । कां अँकृत्रिम शशीं । चंद्रिका ते ॥ ११५० ॥

१ स्वकीय ज्ञानकला. २ शिवोपासक. ३ ही भक्ति ते
कर्मयोगी जेव्हां माझ्याशीं ऐक्य पावतात तेव्हां त्यांस
सफल होते. ४ लय पावे. ५ येरझारा. ६ त्वंपद. ७ तत्पद.
८ शुद्धस्वरूप कूटस्थ, ब्रह्म तटस्थ, उदासीन. ९ एकस्वरूप.
१० शोभे. ११ पदवी. १२ पाहतां. १३ आरसा. १४ जा-
गृतास. १५ तेंच झाला क्षणजे त्याचा भोग घडत नाही
असा ज्यांचा भाव आहे ते बोलानेंच बोलाचा कसा उच्चार
करतात. १६ त्या प्रकाशकारांच्या गांवीं प्रकाश पाडण्यास
रवि दिवा आहे असे वाटतें. १७ आकाशासाठीं मांडव. १८
उभारला. १९ राजेपणा. २० सूर्याला. २१ कोठें. २२ म-
द्रूप होऊन. २३ लाट. २४ पोकळी. २५ लोळे. २६ लगड.
२७ सुवास. २८ साहजिक.

तैसी क्रिया कीर न साहे । तन्हीं अद्वैती भक्ति आहे । हें
अनुभवाचि जोगें नव्हे । बोलाऐसें ॥ ५१ ॥ तेव्हा पूर्वसं-
स्कारछेदें । जें कांहीं तो अनुवादे । तेणें आळविलेनि बो हें ।
बोलता मीचि ॥ ५२ ॥ बोलतया बोलताचि भेटे । तेथें
बोलेल हें न घटे । तें मौन तंब गोमटें । स्वप्न माझें ॥ ५३ ॥
क्षणौनि तया बोलतां । बोली बोलता मी भेटतां । मौन होय
तेणें तत्त्वता । स्ववितो मातें ॥ ५४ ॥ तैसेचि बुद्धी कां
दिठी । जें तो देखों जाय किरीटी । तें देखणें दृश्य लोटी ।
देखतेंचि दावी ॥ ५५ ॥ आरिसया आधीं जैसे । देखतेंचि
मुख दिसे । तयाचें देखणें तैसें । मेळवी द्रष्टें ॥ ५६ ॥ दृश्य
जाउनियां द्रष्टें । द्रष्टयासिचि जें भेटे । तें एकलेपणें न घटे ।
द्रष्टेपणही ॥ ५७ ॥ तेथ स्वप्नीचिया प्रियां । चेंबोनि भांबो
गेलिया । टाथिजे दोन्हीं न होनियां । आपणचि जैसें
॥ ५८ ॥ कां दोहीं काष्ठांचिये धृष्टी । माजी बन्दि येक
उठी । तो दोन्हीं हे भांप आटी । आपणचि होय ॥ ५९ ॥
ना ना प्रतिबिंब हातीं । घेऊं गेलिया गंभस्ती । विषताही
असती । जाय जंसी ॥ ११६० ॥ तैसा मी होऊनि देखतें ।
तो घेऊं जाय दृश्यातें । तेथ दृश्या ने धितें । द्रष्टवेंसी
॥ ६१ ॥ रवि आंधार प्रकाशिता । नुरेचि जेवि प्रकाशयता ।
तेवि दृश्यीं नाही दृष्टता । मी जालिया ॥ ६२ ॥ मग दे-
खिजे ना न देखिजे । ऐशी जे दशा निपजे । ते तें दर्शन
माझें । सौचोकारें ॥ ६३ ॥ तें मलतयाही किरीटी । पदा-
र्थाचिया भेटी । द्रष्टृदयतातीता दृष्टी । भोगितो सदा ॥ ६४ ॥
[यथास्मि] आणि आकाश हें आकाशें । दाटलें न ठळे जैसें ।
मियां आत्मेन आपणपें तैसें । जालें तया ॥ ६५ ॥ कल्पांतीं
उदक उदकें । रंधारल्यां वाहों टाकें । तैसा आत्मेनि मियां
येकें । कोदंला तो ॥ ६६ ॥ पावो आपणपयां वोल्ले । केवि
बन्दि आपणपयां लागे । आपणपां पाणी रिघे । झाना कैसें
॥ ६७ ॥ क्षणोनि सर्व मी जालेपणें । ठेलें तया येणें जाणें ।
तेंचि गा यात्राकरणें । अद्वया मज ॥ ६८ ॥ पें जळावरील
तरंग । जरी धाविन्नला सवेग । तरी नाही भूमिभाग । क-
मिला तेणें ॥ ६९ ॥ जें सांडावें कां मांडावें । जें चालणें
जेणें चालावें । तें तोयचि एक आपवें । क्षणोनियां ॥ ११७० ॥
गेलियाही भळेतें उता । उदकपणें पंडुमुता । तरंगाची एका-
त्मता । न मोडेचि जेवि ॥ ७१ ॥ तैसा मीपणें हा लोटला ।

१ पूर्वपुण्यबलानें. २ बोले. ३ विनविल्यानें, हाक
मारातांच मी ओ देतो. ४ दृष्टीन. ५ पलीकडे सारी. ६ पा-
हणारास. ७ पतीला. ८ जागृत होऊन. ९ भेटण्यास. १० घ-
ट्टणानें. ११ बोलणें संपवून. १२ सूर्य. १३ मूळ असणारें
नेतें. १४ प्रकाशकपणा. १५ खरेपणानें. १६ प्रतिबंध केला
असतां. १७ भरला. १८ उल्लेख. १९ केवढाही.

तो आषवेयाचि मज आला । या यात्रा होय भला । कापडी माझ्या ॥ ७२ ॥ [ततो मां] आणि शरीर स्वभाववशें । कांहीं येक करूं जरी वैसे । तरि मीचि तो तेणें मिषें । भेटें तया ॥ ७३ ॥ तेथ कर्म आणि कर्ता । हें जाऊनि पंडुडुता । मियां आत्मेनि मज पाहतां । मीचि होय ॥ ७४ ॥ पें दर्पणातें दर्पणें । पाहिलिया होय न पाहणें । सोनें झांकिलिया सुवर्णें । न झांके जेव्हां ॥ ७५ ॥ दीपातें दोषें प्रकाशिले । तें न प्रकाशणेंचि निपजे । तैसें कर्म मियां कीजे । तें करणें कैवें ॥ ७६ ॥ कर्मही कैरितचि आहे । जें करावें हें भाष जाये । तें न करणेंचि होये । तयाचें केलें ॥ ७७ ॥ क्रियाजात मी जालेपणें । घडे कांहींचि न करणें । त्याचि नांव पूजणें । खुणेचें माझें ॥ ७८ ॥ झणानि करि तयाही वोजा । तें न करणें हेंचि कपिध्वजा । निपजे तिया महापूजा । पूजी तो मारतें ॥ ७९ ॥ एवं तो बोले तें स्वप्न । तो देखे तें दर्शन । अद्वया मज गमन । तो चाले तेंचि ॥ ११८० ॥ तो करी तेतुली पूजा । तो कल्पी तो जप माझा । तो निजे तेचि कपिध्वजा । समाधी माझी ॥ ८१ ॥ जैसें कनकेंसीं कांकणें । असिजे अनन्यपणें । तो भक्तियोगें येणें । मजसीं तैसा ॥ ८२ ॥ उदकीं कळोळ । कापुरीं परिमळ । रत्नीं उंजाळ । अनन्य जैसा ॥ ८३ ॥ किंवहुना तंतूसीं पट । कां मृत्तिकेसीं घट । तैसा तो येकवट । मजसीं माझा ॥ ८४ ॥ इया अनन्यसिद्धा भक्ती । या आषवाचि दृश्यजातीं । मज आपणपें या सुमती । दृष्ट्यातें जाणे ॥ ८५ ॥ तिन्ही अवस्थांचेनि द्वारें । उपाधुपहिताकरें । भावाभावरूप स्फुरे । दृश्य जें हें ॥ ८६ ॥ तें हें आषवेंचि मी द्रष्टा । ऐसिया बोधाचा माजिवटा । अनुभवाचा सुमटा । धेंडां तो नाचे ॥ ८७ ॥ [तत्त्वतः] रंजु दोर जालिया गोचर । आभासतां तो व्याख्याकार । रज्जूच ऐसा निधोर । होय जेवि ॥ ८८ ॥ भांगारापरतें कांहीं । लेणें गुंजहीभरी नाही । हें आदुनियां ठांवीं । कीजे जैसें ॥ ८९ ॥ उदका येकापरतें । तरंग नाहीचि हें निरतें । जाणोनि तया आकारातें । घेवे जेवि ॥ ११९० ॥ ना तरि स्वप्नविकार समस्ता । चेडुनियां उमाणें घेतां । तो आपणया परंता । न दिसे जैसा ॥ ९१ ॥ तैसें जें कांहीं आधि नाथी । तेणें होय ज्ञेयस्फूर्ती । तें ज्ञाताचि मी हे प्रतीती । होऊनि भोगी ॥ ९२ ॥ [ज्ञात्वा]

१ यात्रेकरू. २ आत्मत्वानें. ३ करीत असतां. ४ त्याचेंच नांव. ५ रीतीन, निमित्तानें. ६ सुवर्णाशीं कंकणानें. ७ चकचकाट. ८ या अद्वैतभक्तीनें. ९ जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति. १० माया शरीर या उपाधीच्या योगानें, उपाधीनें केलेला जो आकार त्याणें. ११ सोहळा. १२ दोर. १३ सोन्याहून. १४ एकत्र. १५ खरें. १६ उदून. १७ माप. १८ आहे व नाही अशा स्थितीनें. १९ जाणावयाच्या पदार्थाचें स्फुरण.

जाणे अज सी अजर । अक्षय मी अक्षर । अपूर्व मी अपार । आनंद मी ॥ ९३ ॥ अचळ मी अच्युत । अनंत मी अद्वैत । आय मी अर्थवक्त । व्यक्ती मी ॥ ९४ ॥ ईशत्व मी ईश्वर । अनादि मी अमर । अमय मी आधार । आधेय मी ॥ ९५ ॥ खामी मी सदोदित । सहज मी सतत । सर्व मी सर्वगत । सर्वोत्तीत मी ॥ ९६ ॥ नवा मी पुराणु । ईश्वर मी संपूर्ण । अस्थूळ अनणु । जें कांहीं तें मी ॥ ९७ ॥ अक्रिय मी एक । असंग कीं अशोक । व्यास मी व्यापक । पुरुषोत्तम मी ॥ ९८ ॥ अशब्द मी अश्रोत्र । अरूप मी अगोत्र । सम मी स्वतंत्र । ब्रह्म मी पर ॥ ९९ ॥ ऐसें आत्मत्वं मज एकातें । इया अद्वयभक्ती जाणोनि निरतें । आणि याहि बोधा जाणतें । तेंही मीचि जाणे ॥ १२०० ॥ पें चेडुल्योनांतरें । आपुलें एकपण उरे । तेंही तयावरी स्फुरे । तयाशींचि जैसें ॥ १ ॥ कां प्रकाशतां अर्क । तोचि होय प्रकाशक । तयाही अभेदा द्योतक । तोचि जैसा ॥ २ ॥ तैसा वेद्याच्या विलयां । केवळ वेदक उरे पाहीं । तेणें जाणवे तया तेंही । तेंही जो जाणे ॥ ३ ॥ तया अद्वयपणा आपुलिया । जाणतीं ज्ञेयी जे धनंजया । ते ईश्वरचि मी हे तया । बोधासि ये ॥ ४ ॥ [विशते तदनंतरें] मग द्वैताद्वैतातीत । मीचि आत्मा एक मिश्रांत । हें जाणोनि जाणणें जेथ । अनुभवीं रिघे ॥ ५ ॥ तेथ चेडुल्यो येकपण । दिसे जें आपुलया आपण । तेंही जातां नेणें कोण । होइजे जेवि ॥ ६ ॥ कां डोळां देखति ये क्षणीं । स्वरूपपण सुवर्णी । नाटितां होय आटणी । अळंकाराचीही ॥ ७ ॥ वा ना लेवण तोय होये । मग क्षारता तोयतें राहे । तेही जिरतां जेवि जाये । जालेपण तें ॥ ८ ॥ तैसा मी तो हें जें असे । तें खानंदानुभवसमरसें । कालवूनियां प्रवेशे । मजचिमाजि ॥ ९ ॥ [तत्त्वतः] आणि तो हे भाष जेथ जाये । तेथें मी हें को-

१ उत्पन्न न होणारा. २ दृढपणरहित. ३ नाशरहित. ४ अविनाश. ५ ज्याच्या पूर्वी कांहीं नाही असा. ६ चलन न पावणारा. ७ पतित न होणारा. ८ अंतररहित. ९ पहिला. १० निराकार, अस्पष्ट. ११ ईशित्व. १२ समष्टिरूप, जीवधर्मरहित. १३ ज्या आधारावर सर्व ठेवले जातें तें. १४ अधिपति. १५ चेतनाचेतनांत भरून असणारा. १६ सर्वांच्या पलीकडे. १७ जुना. १८ अभावरूप. १९ अणूहून भिन्न. २० कियारहित. २१ 'अशब्दमस्पर्शमरूपमव्यय' या श्रुतीनें प्रतिपाद्य. २२ सत्यतेन. २३ जागृतीनंतर. २४ सूर्यच आपणाला प्रकाशक करतो असा जो अभेद त्यालाही जसा सूर्यच प्रकाशक तसा. २५ जाणण्यायोग्य पदार्थांच्या नाशानंतर. २६ ज्ञान. २७ ज्ञानकला. २८ दोहोंच्याही पलीकडे. २९ जागृतांस. ३० आदित्यावाचून. ३१ मीठ पाणी होऊन जातें. ३२ पूर्णानंदाविर्भावानें. ३३ शब्द.

प्राप्ती आहे । ऐसा मी ना तो तिये सामाये । माझ्याचि रूपी ॥ १२१० ॥ तेव्हां कापुर जळो सरे । तयाचि नाम अशि पुरे । मग उभयातीत उरे । आकाश जेचि ॥ ११ ॥ कां धाडिलिया एका एक । वाढे तो शून्यविशेख । तैसा आहे नाहीचा शेख । मीचि मग आथी ॥ १२ ॥ तेथ ब्रह्म आत्मा ईश । यथा बोला मोडे सौरस । न बोलणें याही पैस । नाही तेथ ॥ १३ ॥ न बोलणेंही न बोलोनी । तें बोलिजे तोंड भरुनी । जाणिव नेणिव नेणोनि । जाणजेतें ॥ १४ ॥ तेथ बुझिजे बोध बोध । आनंद घेपे आनंद । सुखवरी नुसवें । सुखचि भोगिजे ॥ १५ ॥ तेथ लाभ जोडला लाभ । प्रभा आलिली प्रभा । विस्मय बुडाला उभा । विस्मया-माजी ॥ १६ ॥ शम तेथ सौमावला । विश्राम विश्रान्ती आला । अनुभव वेडावला । अनुभूतिपणें ॥ १७ ॥ किव-हुना ऐसे निखळ । मीपण जोडे तथा फळ । सेवुनि वेळी वेढाळ । कर्मयोगाची ते ॥ १८ ॥ पें कर्मयोगा किरीटी । चक्रवर्तिच्या मुकुटी । मी चिद्रंज तें सांठोवाटी । होय तो माझा ॥ १९ ॥ कीं कर्मयोगप्रासादाचा । कळस जो हा मोक्षाचा । तथा वरील अवकाशाचा । उवावो जाला तो ॥ १२२० ॥ ना ना संसार आडवी । कर्मयोग वाट वरवी । जोडली ते मदक्यंगाची । पेटि जालीसे ॥ २१ ॥ हें असो कर्मयोगबोध । तणें भक्तिचिद्रंग । मी स्वानंदोदधिवेग । ठाकिला कीं गा ॥ २२ ॥ हा ठीयवरी सुवर्मा । कर्मयोगी आहे महिमा । ह्यानि वेळोवेळां तुझां । सांगतो आह्मी ॥ २३ ॥ पें देशें काळें पदार्थें । सांघुनि घेदजे मातें । तैसा नव्हे मी आयतें । सर्वांचें सर्वही ॥ २४ ॥ ह्यानि माझ्या ठायीं । ज्ञांचावें न लगे काहीं । मी लाभें दये उपायीं ।

१ असाच मी नाही व तोही नाही होऊन माझ्या स्वरूपी मिळतो. २ विज्ञतो. ३ अग्नि व कापूर यांहून भिन्न. ४ एकांत एक वजा केला असतां बाकी शून्य. ५ अभिप्राय. ६ अवकाश. ७ न बोलणेंही न बोलून मग तोंडभर बोललें जातें तसें जाणीव व नेणीव टाकून जाणलें जातें. ८ ज्ञानज्ञान. ९ जाणावें. १० सुखमय होऊन. ११ प्रमेनें, प्रकाशानें. १२ नवल, आश्चर्य. १३ विधाति पावला. १४ संकोच पावला. १५ त्याला कर्मयोगाची वेढाळ=सुंदर वेळ सेविल्यानं मीपण=मी हेंच त्यास फळ मिळतें. १६ चैतन्य=ज्ञानरूप रत्न. १७ अदलाबदलीनं. १८ तो कर्मयोगी कर्मयोगप्रासादाचा=देवळाचा मोक्षरूप जो कळस त्यावरच्या आकाशाचा उवावो=प्रसर झाला. १९ अवकाश, प्रसर. २० अरण्यांत. २१ माझ्याशीं जें ऐक्य, तद्रूप गांवांत. २२ प्रविष्ट. २३ भक्ति व ज्ञान एतद्रूप जी गंगा (या दोहोंचा संगम). २४ तिनानंदरूप समुद्र. २५ एधपर्यंत. २६ मर्मज्ञा अर्जुना ! २७ आपटारा करून. २८ शिणावें लागत नाही. २९ ह्या कर्मयोगानं.

साचचि गा ॥ २५ ॥ एक शिष्य एक गुरु । हा रूढला साच व्यवहार । तो मत्प्राप्तिप्रकार । जाणवया ॥ २६ ॥ अगा वसुधेच्या पोटी । निधान सिद्ध किरीटी । बन्दि सिद्ध काष्टी । वोहां दूध ॥ २७ ॥ परि लाभें तें असतें । तथा कीजे उपा-यातें । येर सिद्धचि तैसा येथें । उपायीं मीं ॥ २८ ॥ हा फळवरी उपावो । कां पां प्रस्तावीतसे देवो । हें पुसतां तरि अभिप्रावो । येथिचा ऐसा ॥ २९ ॥ जे गीतार्थांचें वांगवें । मोक्षोपायपर आवघें । आन शास्त्रोपाय की नव्हे । प्रमाण-सिद्ध ॥ १२३० ॥ वारा आभाळचि फेंडी । वांचूनि सूर्योतें न र्घडी । कां हात बांडली धाडी । तोय न करी ॥ ३१ ॥ तैसा आ-त्मदर्शनी आंढळ । असे अवियेचा जो मळ । तो शास्त्र नाशी येर निर्मळ । मीं प्रकाशें स्वयें ॥ ३२ ॥ ह्यानि आ-घवींचि शास्त्रें । अवियांविनाशाचीं पात्रें । वांचोनि न होरी स्वतंत्रें । आत्मबोधी ॥ ३३ ॥ तथा अर्थात्मशास्त्रांशीं । जें सांचपणाची ये पुंसी । तें येईजे जया ठायसी । ते हे गीता ॥ ३४ ॥ मानु भूषिता प्राचिया । सतेजां दिशा आवधिया । तैसी शास्त्रेश्वरा गीताया । सनार्थ शास्त्रें ॥ ३५ ॥ हें असो येणें शास्त्रेश्वरें । मांगा उपाय बहुवे विस्तारें । सांगीतला जैसा करें । घेवो ये आत्मा ॥ ३६ ॥ परि प्रथमभ्रवणासवें । अर्जुना विषयें हें फांवे । हा भोव संकणवे । धरुनि श्रीहरी ॥ ३७ ॥ तेंचि प्रमेयें एक वेळ । शिष्यां हो आवया अढळ । सांगतसे मुकुंड । मुद्रा आतां ॥ ३८ ॥ आणि प्रसंग गीता । ठीवही हा संपता । ह्यानि दावी आंयता । एकार्थत्व ॥ ३९ ॥ जे प्रथांच्या सध्यभागीं । नाना अधिकारप्रसंगीं । निरूपण अनेगी । सिद्धांतीं केले ॥ १२४० ॥ तरि तेनुळेही सिद्धांत । इये

१ पृथ्वीच्या. २ ऊधास (कासेस). ३ असतें तेंच लाभतें, परंतु त्यास उपाय केला पाहिजे. ४ फलप्राप्ति-पर्यंत. ५ चांगुलपण. ६ मोक्षप्राप्तिविषयक. ७ निवारी. ८ तयार करीत नाही. ९ शेवाळा, गोंदाळ दूर करी. १० बंध. ११ अज्ञानाचा. १२ अज्ञान हरणारी पात्रे, योग्य स्थले. १३ आत्मानात्मप्रतिपादक वेदांतशास्त्रांशीं. १४ जेव्हां खरोखर पुसण्याचें मनांत येई. १५ साद्य. १६ पूर्वस सूर्योदय होतांच. १७ प्रकाशमय. १८ शास्त्रांत श्रेष्ठ अशा या गीतेनं अन्य सर्व शास्त्रे सनार्थ=समर्थ होतात. १९ बहुत. २० हातानं आत्मा हस्तगत होईल असा. २१ नवविधभक्ती-तील प्रथम जें भ्रवण त्याबराबर. २२ कदाचित्. २३ प्राप्त होईल. २४ अभिप्राय. २५ दयेनं. २६ तात्पर्य, सार. २७ संक्षिप्त. २८ स्वरूपानं, संक्षेपलक्षण, स्पष्ट लक्षण. २९ गीता हा प्रसंग व हें स्थान हीं दोन्ही आतां संपण्याचीं आहेत ह्यानं. ३० आरंभापासून शेवटपर्यंत एकार्थता. ३१ अनेक सिद्धांतांनीं. ३२ तेवढेही सर्व.

शास्त्री प्रस्तुत । हें पूर्वापार नेणत । कोणही जें मानी ॥४१॥
तें महासिद्धांताचा आवांका । सिद्धांतकक्षा अनेका । भिड-
उनि आरंभ देखा । संपवीत असे ॥ ४२ ॥ येथे अविद्या-
नाश हें स्थळ । तेणें मोक्षापादन फळ । या दोहीं केवळ ।
साधन ज्ञान ॥ ४३ ॥ हें इतुळेंचि नानापरी । निरूपिलें ग्रं-
थविस्तारी । तें आतां दोहीं अक्षरी । अनुवादावें ॥ ४४ ॥
झणौनि उपेयही हातीं । जाल्या उपायस्थिती । देव प्र-
तेले ते पुढेंती । येणेंचि भावें ॥ ४५ ॥

“ह्या ज्ञानभक्तीच्या योगानें सहजगत्या जो
भक्त मजशीं ऐक्यता पावतो, तो निखालस
मत्स्वरूपच होतो हें तुलाही माहितच आहे.
११३० कारण, हे कपिध्वजा ! सातव्या अ-
ध्यायामध्ये “ज्ञानी तो माझा आत्मा” असें
बाहू उभारून—मोठ्या खात्रीनें—मी तुला सां-
गितलें आहे. ११३१ ती, ही, कल्पांच्याही
आदीपासून असलेली भक्ति, उत्तम, झणून
श्रीभागवताच्या निमित्तानें मी ब्रह्मदे-
वाला सांगितली. ११३२ ज्ञानी हिला आपली
ज्ञानकला असें झणतात. शिवोपासक हि-
लाच शक्ति असें झणतात. आणि आह्मी
आमची परमभक्ति असें झणतो. ११३३ ही
भक्ति, कर्मयोगी मला मिळतात, तेव्हांच
त्यांस प्राप्त होते. आणि जिकडे तिकडे मीच
एक भरून राहतो. ११३४ तेव्हां विचारा-
सहवर्तमान वैराग्य; मोक्षासहवर्तमान बंधही
आहून जातो. आणि पुनरावृत्तिसहवर्तमान
वृत्तीही बुडून जाते. ११३५ जीवपणाला घे-
ऊन ईश्वरपणाही जेथें नाहींसा होऊन जातो.
आकाश जसें चारही भूतें गिळतें, ११३६
त्याप्रमाणें अलित; साध्यसाधनातीत; शुद्ध; तें
माझें पद एक स्वरूप होऊन मीच भोगतो.
११३७ समुद्राच्या आंगांत शिरूनही गंगा
समुद्राच्या वर शोभते. तीच योग्यता त्या भो-
गाला आहे, हें लक्ष्यांत ठेव. ११३८ किंवा
आरशानें उठून आरशास भेटलें झणजे त्याची

शोभा जशी अधिक वाढते, तद्वत् त्या भोगणा-
राची स्थिति असते, ११३९ हें असो. आरसा
नेला झणजे मुखाचें ज्ञानही जातें. पण पाहि-
लेला अनुभव असतो तो जसा एकट्याला घेतां
येतो, ११४० जागृत झाल्यावर स्वप्न नाहींसें
होऊन आपलें ऐक्यच दिवूं लागतें, तें दुसरेपणा-
शिवाय जसें भोगतां येतें, ११४१ तें तोच
झाला झणजे त्याचा भोग घडत नाहीं. असा
ज्यांचा भाव आहे, ते बोलानेंच बोलाचा कसा
उच्चार करतील ? ११४२ त्या प्रकाशकारांच्या
गांवीं प्रकाश पाडण्याला रविच दिवा आहे
असें वाटतें. किंवा त्यांनीं आकाशासाठीं मांड-
वच घातला आहे असें वाटतें. ११४३ अरे !
आंगांत राजेपणाच नसला तर, राजा राजेपणा
भोगील काय ? आंधार हा सूर्याला कधी आ-
लिंगन देईल काय ? ११४४ आणखी जें स्वतः
आकाश नव्हे; त्याला आकाश समजणार कसे ?
रत्नाच्या रूपामध्ये गुंजांचे अलंकार मिरवतील
काय ? ११४५ झणून मी होणें नाहीं, त्याला
मी कोठचा ? मग तो माझें भजन करील ही
खात्री तरी काय सांगावी ? ११४६ ह्याकरितां
तो कर्मयोगी, तरुणी जसा तारुण्याचा उप-
भोग घेते, तद्वत् मद्रूप होऊनच मला भोगतो.
११४७ लाट जशी सर्वांगानें पाण्याचाच उप-
भोग घेते; प्रभा जशी बिंबामध्ये सर्वत्र विलसत
असते; किंवा आकाशामध्ये जसा अवकाश लो-
ळत राहतो; ११४८ त्याप्रमाणें मद्रूप होऊन
तो क्रियेशिवाय मला भजतो. सोन्याची जशी
सहज लगड होते; ११४९ किंवा चंदनाचा
सुवास जसा आपोआपच चंदनाची सेवा क-
रतो; किंवा न्यूनत्वरहित जो चंद्र तेंच चां-
दणें. ११५० त्याप्रमाणें खरोखर क्रिया त्याला
आवडत नाहीं तरी, अद्वैतामध्ये भक्ति असते.
तें अनुभवानेंच जाणलें पाहिजे. बोलून दाख-
विण्यासारखें नव्हे. ११५१ ते वेळीं पूर्वपुण्या-
ईच्या बळानें तो जें कांहीं बोलतो, त्या वि-
नंतीरूप हाकेला ‘ओ’ देऊन बोलणारा मीच.
११५२ बोलणाराला बोलणाराच भेटला, तर

१ पूर्वापार संगती ध्यानांत राहत नाहीं. २ बळ.
३ सिद्धांताच्या युक्ति. ४ मिळवून. ५ मोक्षसंपादन.
६ संक्षेपानें. ७ पुनः बोलवें. ८ उपायसाध्य, उपायानें
साध्य होणारें. ९ प्राप्त झालें असतां. १० पुनः.

बोलणें होण्याचा संभवच नाही. तेव्हां मौन तेंच माझे उत्तम स्तवन होय. ११५३ झणून तो भाषण करतांना, मला भेटला तरी मौनच धरतो. आणि त्यानेच माझे उत्तम स्तवन करतो. ११५४ तसेंच अर्जुना ! तो बुद्धीने किंवा दृष्टीने जें जें काय पहावयास जातो, तेव्हां तेव्हां दृष्टीस पडण्याचे झणून जेवढे जेवढे पदार्थ तेवढे तेवढे दूर लोटून पाहणारालाच दाखवितें. ११५५ आरशाचे पुढे ज्याप्रमाणें पहाणाराचेंच तोंड दिसतें, त्याप्रमाणें त्याचें पहाणें, पहाणाराच दाखवितें. ११५६ पहाण्याचा पदार्थ नाहीसा होऊन पहाणारा पहाणारासच जेव्हां मिळतो, तेव्हां एकत्वानें पहाणाराच नाहीसा होत नाही काय ? ११५७ तर जाग्रत होऊन स्वप्नांतल्या पतीस आलिंगन देण्यास गेली असतां, आपण व तो दोघेही आपणच झाले होते हें जसें समजून येतें, ११५८ किंवा दोन काष्ठांच्या घर्षणामध्ये अग्नि एकच उत्पन्न होतो. तो दोन हें भाषण नाहीसें करून आपण एक निराळाच होतो. ११५९ किंवा सूर्य आपलें प्रतिबिंब हातांत धरावयाला गेला तर, असलेलें प्रतिबिंबही जसें लुप्त होतें, ११६० त्याप्रमाणें मी देखतें होऊन तो दृश्याला ध्यावयास पहातो, तेव्हां मूळ पहाणारें असतें तें दृष्टत्वासहवर्तमान दृश्यालाच घेऊन जातें. ११६१ सूर्य, आंधाराला प्रकाशित करूं लागला झणजे जसा प्रकाशकपणा उरत नाही. त्याप्रमाणें मत्स्वरूप झालें झणजे दृश्यामध्ये द्रष्टाही असत नाही. ११६२ मग दिसणें किंवा न दिसणें; पाहणें किंवा न पाहणें; अशी जी दशा उत्पन्न होते; ती दशा हेंच माझे खरोखर दर्शन आहे. ११६३ अर्जुना ! तें कोणताही पदार्थ पाहून द्रष्टृ दृश्यातीत दृष्टीने तो सदासर्वकाल भोगित असतो. ११६४ आणि आकाश हें आकाशानें दाटलें झणजे तें जसें हालत नाही, तसें त्याला माझ्या आत्मस्वरूपानें होऊन जातें. ११६५ कल्पांताच्या वेळीं पाण्यानेच पाणी अडवून

धरलें झणजे तें वहावयाचें बंद होतें. त्याप्रमाणें माझ्या एका आत्मस्वरूपानेंच तो अगदीं भरून जातो. ११६६ पाय हा आपल्यालाच कसा उलंघन करील ? अग्नि आपल्यालाच कसा लागेल ? पाणी आपल्यामध्येच झानाला कसें जाणार ? ११६७ झणून सारें मीच झाल्याच्या योगानें त्याचें जाणें येणें बंद पडतें. तीच माझी अद्वैताची यात्रा झणून समजावें. ११६८ तसेंच पाण्यावरची लाट जोरानें जरी धावली, तरी तिनें कांहीं जमीन ओलांडली असें होत नाही. ११६९ तिचें उत्पन्न होणें, लय पावणें; किंवा तिचें चालणें, हें सारें एका पाण्यांतल्या पाण्यांतच असतें झणून. ११७० अर्जुना ! पाण्याच्या धर्माप्रमाणें ती हवी तिकडे गेली तरी, त्या लाटेची एकात्मता (पाण्याशीं असलेलें ऐक्य) जशी भंग होत नाही; ११७१ तद्वत् हा मीपणा ज्यानें सोडला, तो सर्वतोपरी मजकडेच आला, आणि ह्या माझ्या यात्रेतला तो एक उत्तम वारकरी-यात्रेकरू-झाला. ११७२ आणखी शरीर, स्वभावधर्माप्रमाणें कांहीं एखादें करावयास लागलें, तर, त्याच्या रूपानें मी त्यास भेटत असतो. ११७३ तेव्हां अर्जुना ! कर्म आणि कर्ता हें जाऊन मी आत्मत्वानें पाहून मीच होतो. ११७४ आरशानें आरशाला पाहिलें, तर न पाहिलेल्यासारखेंच होतें. सुवर्णानें सोनें झांकलें तर जसें झांकत नाही, ११७५ दिव्यानें दिव्यालाच प्रकाशित केलें तर तें प्रकाशित न केल्यासारखेंच होतें. त्याप्रमाणें मद्रूप होऊन केलेलें कर्म तें केलें कसलें ? ११७६ कर्म तर करितच असतो. पण तें केलें हा शब्द जेव्हां नाहीसा होतो, तेव्हां त्याचें केलेलें कर्म न केल्यासारखें होतें. ११७७ प्रत्येक कर्म मद्रूप होत असल्यामुळे, कांहींएक न घडल्याप्रमाणेंच होतें. त्याचेंच नांव माझे खुणेंचें पूजन होय. ११७८ झणून हे कपिध्वजा ! तो करतो त्या रीतीनें तें करणेंच न करणें होतें. त्याच महापूजेनें तो माझी पूजा

करतो. ११७९ अशाच प्रकारें तो बोलतो तेंच माझे स्तवन; तो पाहतो तेंच माझे दर्शन; तो चालतो तेंच माझे अद्वैताचें चालणें होय. ११८० तो जें जें करतो, ती ती सारी माझी पूजा; तो जी जी कल्पना करतो तो तो माझा जप; आणि हे कपिध्वजा ! तो निजतो, तीच माझी समाधी. ११८१ सोन्याशीं कंकणाचा जसा ऐक्यभाव असतो, तद्वत् त्याच्या ह्या भक्तियोगानें माझ्याशीं ऐक्यभाव असतो. ११८२ उदकाशीं लाटा; कापराशीं सुगंध; रत्नाशीं तेजस्विता; हीं जशीं ऐक्यरूपानें असतात, ११८३ किंवा तंतूबरोबर वस्त्र; किंवा मातीबरोबर घागर; हीं जितकीं ऐक्यरूप असतात, तितकाच तो माझ्याशीं एकवट असतो. ११८४ हे सुमते ! ह्या अद्वितीय भक्तीच्या योगानें हें सर्व दिसणारें जें जें ह्मणून आहे, तें तें सर्व आपणहूनच मला द्रष्टापाला जाणतें. ११८५ जागृति, स्वप्न आणि सुषुप्ति, ह्या तीन अवस्थांच्या द्वारानें, स्थूल, सूक्ष्म व कारण ह्या तीन देहाकार उपाधींच्या संबंधानें जे हें भाव व अभावरूप दृश्य स्फुरण पावतें, ११८६ हे शूरवर्या ! तें हें सारें मद्रूपच आहे. अशा ज्ञानाच्या धुंदीत तो ऐक्यभावाचा झेंडा नाचवित असतो. ११८७ रज्जूही दोरीच आहे असें समजलें, ह्मणजे सर्पाकाराचा होणारा भास जाऊन ही दोरीच आहे, ह्याप्रमाणें जसा निर्णय होतो. ११८८ अलंकारामध्यें सोन्यावांचून गुंजभरही दुसरें कांहीं नाहीं. हें समजून तें आटून जसें एकत्र करावें, ११८९ एका पाण्याहून लाटा कांहीं भिन्न नाहींत, हाच निश्चय मनांत आणून त्याच्या आकारांत जसा भेद धरीत नाहींत, ११९० किंवा जागें होऊन स्वप्नांतील साऱ्या विकारांचें माप घेऊं लागलें तर, आपणाहून भिन्न असें कांहींच दिसत नाहीं. ११९१ त्याप्रमाणें आहे व नाहीं अशा स्थितीनें जें असतें, त्याच्याच योगानें जाणावयाच्या पदार्थाची स्फूर्ति होते. आणि मग ज्ञाता तेंही तेंच हा

अनुभव येऊन त्याचाच तो उपभोग घेतो. ११९२ मी जन्मरहित आहे; मी जरारहित आहे; मी नाशरहित; मी अविनाश; ज्यापूर्वीं कांहीं नाहीं असा मी; अपार मी व आनंदही मीच. ११९३ अचल व अच्युत मी; अनंत व अद्वैत मी; आद्य आणि अव्यक्त मी; आणि व्यक्तही मीच. ११९४ सर्वश्रेष्ठ मी; जीवधर्मविरहित मी; अनादि व अमर मी; अभय व आधार मी; आणि आधारभूत ही मीच. ११९५ अधिपति मी; शाश्वत मी; सुलभ मी; निरंतर मी; सर्व मी; व्यापक मी; आणि सर्वांच्या पलीकडचा-अगम्य-मी. ११९६ नवा व जुना मी; शून्य मी; संपूर्ण मी; सूक्ष्म परमाणूहून जें जें कांहीं भिन्न, तें तें मी. ११९७ मी; एक; अक्रिय; असंग; अशोक मी; व्याप्त मी; आणि पुरुषोत्तम तो मी. ११९८ अशब्द, अश्रोत्र तो मी; अरूप अगोत्र मी; सम स्वतंत्र मी; परब्रह्म मी. ११९९ अशा प्रकारें आत्मस्वरूपानें मला एकाला ह्या अद्वय भक्तीनें नीट ओळखून सत्य आणि ह्या ज्ञानाला जाणणारें तेंही मीच, हें लक्षांत ठेव. १२०० तसेंच जागृत झाल्यानंतर आपलें ऐक्यपणच शिल्लक राहतें. तेंही त्यानंतर त्यालाच जसें स्फुरतें. १२०१ किंवा सूर्य प्रकाश करतांना तोच प्रकाशक होतो. त्या अभेदाचा जसा तोच द्योतक. १२०२ त्याप्रमाणें जाणण्याच्या पदार्थाचा नाश झाल्यानंतर केवळ ज्ञानच शिल्लक राहतें. त्याच्या योगानें त्याला तें कळतें हेंही जो जाणतो. १२०३ धनंजया ! त्या आपल्या अद्वयपणाला जाणणारी जी कला, तीही माझे ईश्वरी स्वरूपच आहे असें त्यास ज्ञान झालेलें असतें. १२०४ मग द्वैताद्वैताच्या पलीकडे असणारा जो आत्मा, तो निःसंशय मीच हें समजून जाणीव जेथें अनुभवांत शिरतें, १२०५ तेव्हां जागृत झाल्यानंतर आपला आपल्याला जो ऐक्यपणा दिसतो तोही गेला असतां काय होईल हें जसें समजत नाहीं. १२०६ किंवा सुवर्णाकडे त्याच्या स्वरूपाच्या दृष्टीनें पाहिलें

कीं, लगेच न आटतांही अलंकाराची आटणी होते. १२०७ किंवा मिठाचें पाणी होतें, आणि मग तो खारटपणा पाण्याच्या स्वरूपानें राहतो. तें पाणीही जिरून गेलें ह्मणजे तें मिश्रणही नाहींसैं होऊन जातें. १२०८ त्याप्रमाणें मी आणि तो हें जें आहे तें पूर्णानंदाच्या ऐक्यानें कालवून तो माझ्यामध्येच शिरतो. १२०९ आणि 'तो' हा शब्द नाहींसा होतो तेव्हां 'मीपण' कोणाला असणार? अशा प्रकारें मीही नव्हे, आणि तोही नव्हे असें होऊन माझ्याच स्वरूपामध्ये मिळतो. १२१० कापूर जेव्हां जळून नाहींसा होतो, त्याच वेळेस अग्निही त्याच नांवाबरोबर नाहींसा होतो. आणखी मग दोघांहूनही भिन्न असें जें आकाश, तें जसें शिल्पक राहतें, १२११ किंवा एकांतून एक काढला तर, बाकी शून्य राहतें; त्याप्रमाणें आहे व नाहीं ह्यांचा शेवट मीच आहे. १२१२ तेव्हां ब्रह्म; आत्मा, ईश ह्या बोलण्याचा कांहीं अर्थच नाहींसा होतो. न बोलण्यालाही तेथें जागा रहात नाहीं. १२१३ न बोलणेंही न बोलून मग जें तोंडभर बोललें जातें, आणि जाणीव व नेणीव हीं दोन्हीही टाकून जें जाणलें जातें. १२१४ ज्ञानानें ज्ञान जाणावयाचें; आनंदानें आनंद घ्यावयाचा; केवळ सुखमय होऊन सुख भोगावयाचें. १२१५ तेव्हां लाभालाच लाभ होतो; प्रकाशालाच प्रकाश मिठी मारतो; विस्मय तर विस्मयामध्ये उभाच्या उभाच बुडून जातो. १२१६ तेथें शम शमतो; विश्रामाला विश्रांति प्राप्त होते; अनुभव अनुभवानेंच वेडा होतो. १२१७ किंबहुना ती कर्मयोगाची सुंदर वेल सेवन केली ह्मणजे त्याला ह्याप्रमाणें माझ्या शुद्धस्वरूपाचें फळ प्राप्त होतें. १२१८ हे किरीटी! कर्मयोगरूप सार्वभौम राजाच्या मुकुटावर मी ज्ञानरत्न होऊन राहतों. आणि तसाच उलट तोही माझ्या मुकुटावरचें रत्न होऊन राहतो, १२१९ किंवा कर्मरूप देउळाचा कळस जो

मोक्ष, त्याच्यावरील आकाशाचा जो विस्तार होऊन राहतो, १२२० किंवा संसारारण्यामध्ये कर्मयोगही उत्तम घाट सांपडलेली असून ती, मदैक्यरूप गांवांत गेली आहे. १२२१ हें असो. कर्मयोगाच्या ओघांतून त्याची भक्ति व ज्ञान एतद्गुप गंगा निजानंदरूप समुद्रास वेगानें जाऊन मिळालेली असते. १२२२ हे मर्मज्ञा! इतकें ह्या कर्मयोगाचें माहात्म्य आहे. ह्मणूनच मी तुला पुन्हा पुन्हा सांगतों. १२२३ देश, काल, पदार्थ इत्यादिक पाहून मोठी संधि साधून मला आपलासा केला पाहिजे, अशांतला मी नव्हे. तर, मी सर्वांचा सर्वदायी आणि आयताच आहे. १२२४ ह्मणून मजकरितां कांहीं कष्ट काढावे लागत नाहींत. मी खरोखर ह्याच उपायांनीं प्राप्त होतों. १२२५ एक शिष्य, एक गुरु; हा केवळ लौकिक व्यवहार वाढलेला आहे, तो फक्त माझ्या प्राप्तीचा प्रकार कळण्यासाठी. १२२६ हे अर्जुना! पृथ्वीच्या पोटांत ठेवा हा पूर्वीचाच आहे. काष्ठामध्ये अग्नि; कासेमध्ये दूध, हीं मूळर्थांच आहेत. १२२७ असतें तेंच प्राप्त होतें, परंतु त्याला उपाय करावे लागतात. त्याप्रमाणें उपायांनींच मी प्राप्त होतों तरी मूळचा मी सिद्धच आहे." १२२८ हा फळप्राप्तीपर्यंतचा उपाय देवांनीं कशाकरितां सांगितला असें विचाराल तर, त्यांतील हेतु असा. १२२९ कीं, गीतार्थामध्ये असलेले सर्व उपाय, मोक्षप्राप्तिविषयकच असल्यामुळे उत्तम आहेत. तसे इतर शास्त्रांतील उपाय नव्हेत. कारण, ते प्रमाणसिद्ध नसतात. १२३० "चारा अम्राला दूर करतो; शिवाय सूर्याला कांहीं नवा करीत नाहीं. किंवा हात शेवाळ बाजूस सारतो, पाणी करीत नाहीं. १२३१ तद्वत् आत्मदर्शनाला प्रतिबंध करणारा जो अविद्येचा मळ असतो तो नाश करतो. बाकी मी निर्मळ आणि स्वयंप्रकाशच आहे." १२३२ ह्मणून सारीं शास्त्रे हीं अविद्या हरण करण्याचीं सा-

धर्मे आहेत. त्यांशिवाय स्वतंत्रपणे आत्मबोध करण्यास समर्थ नाहीत. १२३३ अध्यात्म-शास्त्र ह्याने काय ते खरोखर त्यांना विचारा-वयाची इच्छा झाली तर त्यांना ज्या ठिकाणी आले पाहिजे, ती ही गीता होय. १२३४ सूर्याने पूर्वदिशेला शोभा आणली की, साऱ्या दिशा प्रकाशमान होतात. त्याप्रमाणे ह्या एका श्रेष्ठ गीताशास्त्राने सर्व शास्त्रे समर्थ होतात. १२३५ हे असो. ह्या शास्त्रश्रेष्ठाने ज्या रीतीने आत्मा हस्तगत करता येईल, असा उपाय मागे पुष्कळ विस्तारेंकरून सांगितला. १२३६ परंतु एकदां ऐकूनच अर्जुनास प्राप्त होणे कठीण पडेल, असा सदय अंतःकरणाने श्रीहरींनी हेतु धरून, १२३७ तोच सारांश शिष्याच्या ठिकाणी दृढतर होण्याकरितां संक्षिप्तरूपाने सांगत आहेत. १२३८ आणखी गीतेचा प्रसंग व स्थान ही दोन्हीही संपावयाची आहेत, ह्याून आरंभापासून शेवटपर्यंत एकवाक्यता दाखवून दिली. १२३९ कारण, ग्रंथांच्या मध्यभागामध्ये नानाप्रकारच्या समयानुसार अनेक सिद्धांतांचे निरूपण केले आहे. १२४० तरी तितके सारे सिद्धांत प्रस्तुत ह्या शास्त्रांत आहेत. त्यांची पूर्वापार संगति जर कोणास न राहिल, १२४१ तर महासिद्धांताचे बळ, सिद्धांताच्या अनेक युक्ति ह्यांची एकवाक्यता करून आरंभाप्रमाणे समाप्तिही करित आहे. १२४२ येथे अविद्यानाश हे स्थळ असून त्यांत मोक्ष-संपादन हे फळ आहे. ह्या दोहोंच्या प्राप्तीलाही साधन एक शुद्ध ज्ञान होय. १२४३ हे इतके परोपरीने ग्रंथविस्तारेंकरून निरूपण केले, ते आतां थोडक्यांत सांगावे, १२४४ ह्याून उपायाने साध्य झाले असूनही पुन्हा उपाय सांगण्यास देव प्रवृत्त झाले, ते याच उद्देशाने. १२४५.

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मध्यपाश्र्वयः ।

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥९६॥

[सर्वकर्माण्यपि] मग ह्याने या सुभटा । तो कर्मयोगी या निष्ठा । मी होऊनी होय पैठा । माझ्या रूपी ॥ ४६ ॥ स्व-कर्माच्या चौखोळी । मज पूजा करुनि भली । तेणे प्रसादे आकळी । ज्ञाननिष्ठेतें ॥ ४७ ॥ ते ज्ञाननिष्ठा जेथ हातवसे । तेथ भक्ति माझी उल्लासे । तिथे मजसी संमरसे । सुखिया होय ॥ ४८ ॥ [मध्यपाश्र्वयः] आणि विश्वप्रकाशितया । आत्मया मज आपुलिया । अनुसरे जो करुनिया । सर्वत्रैता हे ॥ ४९ ॥ सांडुनि आपला आडळ । लवण आश्रयि जळ । कां हिंडोनि राहे निश्चळ । वायु व्योमी ॥ १२५० ॥ तैसा बुंदी वाचा काये । जो माते आश्रऊनि ठाये [सदा कुर्वाणः] तो निषिद्धेही विर्पाये । कर्म करू ॥ ५१ ॥ [मत्प्रसादादवा-प्नोति] परि गंगेच्या संवंधी । विदी आणि महा नदी । ऐक्य तेवि माझ्या बोधी । शुभाशुभांसी ॥ ५२ ॥ कां वावने आणि धुरें । हा निवाड तंवचि सरे । जंव न घेपती वैश्वानरें । कवळुनि दोन्ही ॥ ५३ ॥ ना ना पौचिकें आणि सोळें । हें सोनया तंवचि ओळें । जंव परिस आंगमेलें । येकवटीना ॥ ५४ ॥ तैसें शुभाशुभ ऐसें । हें तंवचिवरी आर्भसे । जंव येक न प्रकाशें । सर्वत्र मी ॥ ५५ ॥ अगा रात्रि आणि दिवो । हा तंवचि द्वैतभावो । जंव न रिगिजे गांवो । गर्भंस्तीचा ॥ ५६ ॥ ह्याणोनि माझिया भेटी । तयाचीं सर्व-कर्मं किरिटी । जाऊनि बेसे तो पांटी । सांयुज्याच्या ॥ ५७ ॥ [शाश्वतं पदमव्ययं] देशी काळें स्वभावे । वेंचें जया न संभवे । तें पद माझे पावे । अविनाश तो ॥ ५८ ॥ किंबहुना पंडसुता । मज आत्मयाची प्रसन्नता । लहे तेणे न पवि-जता । लोभ कवण असे ॥ ५९ ॥

मग ह्याणतात “हे शूरवर्षा! अशा निष्ठेने तो कर्मयोगी मत्स्वरूप होऊन मजमध्ये प्रवेश करतो. १२४६ स्वकर्माच्या उत्तम फुलांनी माझी उत्तम प्रकारे पूजा करून, तिच्या प्रसादाने ज्ञाननिष्ठा संपादन करतो. १२४७ ती ज्ञाननिष्ठा जेव्हां हस्तगत होते, तेव्हां माझी भक्ति पसरते. तिच्या साह्याने मजशी ऐक्य-रूप होऊन तो सुखी होतो. १२४८ आणखी

१ या भावनेने. २ प्रविष्ट. ३ चोख पुष्पांनी. ४ हस्तगत होते. ५ त्या भक्तीने. ६ ऐक्य पावे. ७ पांचही कोशांत. ८ प्र-तिबंध. ९ आकाशांत. १० कायावाचामर्नेकरून. ११ क्वचित. १२ ओहोळ. १३ मैलागिरी चंदन. १४ सामान्य काष्ठ. १५ हिणकट. १६ सोळांच्या दराचे. १७ आळ, अपवाद. १८ मासे, वाटे. १९ दिवस. २० सूर्याचा. २१ पदवीवर. २२ ब्रह्मांत लय पावणे. २३ नाश. २४ न पावण्याजोगें, अप्राप्य असे काय आहे ?

जो हेंच सर्वत्र करून विश्वास प्रकाशित करणाऱ्या मला-आपल्या आत्म्याला-अनुसरतो; १२४९ आपला प्रतिबंध नाहीसा करून मीठ जसें जळाचा आश्रय करून राहतें, किंवा वायु आकाशामध्ये हिंडून निश्चळ राहतो, ११५० त्याप्रमाणें जो कायावाचामनंकरून माझाच आश्रय करून राहतो, त्यानें चुकून एखादे वेळीं जरी निषिद्ध कर्म आचरण केलीं, १२५१ तरी, गंगेशीं मिळणारा ओहोळ आणि मोठी नदी जशीं एकरूप होतात, त्याप्रमाणें माझ्या ज्ञानामध्ये शुभ आणि अशुभ दोन्हीही एकरूप होतात. १२५२ हा मैलागिरी चंदन; आणि दुसरें हें लांकूड; हा भेद तरी, अग्नीनें दोन्हीलाही एके ठिकाणीं कवळून घेतलीं नाहीत तोंपर्यंत चालतो. १२५३ हें हिणकट; आणि हें शुद्ध-सोळांच्या दराच्या सोनें. हा अपवाद तरी, जोंपर्यंत परिसानें आपलें आंग त्यास लावेलें नाही तोंपर्यंतच. १२५४ त्याप्रमाणें हें शुभ आणि हें अशुभ हें तोंपर्यंतच वाटतें, जोंपर्यंत एक मी सर्वत्र प्रकाशमान झालों नाही. १२५५ सूर्याच्या गांवांत शिरलें नाही, तोंपर्यंतच हा दिवस आणि ही रात्र; हे दोन भेद. १२५६ झणून अर्जुना! माझी भेट होण्याबरोबर त्यांचीं सर्व कर्म लयास जाऊन तो मुक्तीच्या पदावर जाऊन बसतो. १२५७ देशानें, कालानें, किंवा नैसर्गिक धर्मानें ज्याचा नाश होण्याचा संभवही नाही, असें जें अविनाश पद, तें तो पावतो. १२५८ किंबहुना अर्जुना! माझ्या आत्म्याच्या प्रसन्नतेला तो पात्र झाल्यानंतर त्याला लाभ मिळणार नाही असा कोणता ?” १२५९

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ १७ ॥

[चेतसा सर्वकर्माणि] याकारणें गा तुवां इया । सर्व कर्मा आपुलिया । माझ्या स्वरूपी धनंजया । संन्यास कीजे ॥ १२६० ॥

१ त्याग.

परि तोचि संन्यास वीरा । कर्णण्याचा क्षणें करा । आत्मवि-
वेकी धेरा । चित्तवृत्ति हे ॥ ६१ ॥ [मयि] मम तेणें विवे-
कवळें । आपणपें कर्मावेगळें । माझ्या स्वरूपी निर्मळें । दे-
खिजेल सर्व ॥ ६२ ॥ [संन्यस्य] आणि कर्मांची जन्ममोये ।
प्रकृति जे कां आहे । ते आपणयाहूनि बहुवे । देखसी दुरी
॥ ६३ ॥ तेथ प्रकृति आपण्यां- । वेगळी नुरे धनंजया ।
रूपेवीण कां छया । जयापरी ॥ ६४ ॥ ऐसेनि प्रकृतिनाश ।
जालया कर्मसंन्यास । निफजेल अनायास । संकारण ॥ ६५ ॥
[मत्परः] मग कर्मजात गेलया । मी आत्मा उरें आपणपयां ।
[बुद्धियोगमुपाश्रित्य] तेथ बुद्धि धांपे करुनियां । पतिव्रता
॥ ६६ ॥ बुद्धि अनन्य येणें योगें । मजमाजी जें रिगे ।
[मच्चित्तः सततं भव] तें चित्त चैत्येलागें । मातेंचि भजे
॥ ६७ ॥ ऐसें चैत्यजातें सोडिलें । चित्त माझ्या ठायीं ज-
डलें । ठाके तैसें वहिलें । सर्वदा करी ॥ ६८ ॥

“ह्याकरितां हे अर्जुना! तूं ह्या आपल्या सर्व कर्मांचा माझ्या स्वरूपामध्ये संन्यास करून टाक. १२६० पण हे शूरवीरा! तोच संन्यास स्वधर्माचा करशील हो! तसा मात्र करूं नको. तर ही चित्तवृत्ति आत्मविचारामध्ये ठेव. १२६१ झणजे त्या विचाराच्या बळानें आपोआप कर्माशिवायच, माझ्या स्वरूपामध्ये सारें निर्मळ दृष्टीस पडेल. १२६२ आणखी कर्मांची जन्मभूमि जी प्रकृति झणून आहे, ती स्वस्वरूपाहून फार निराळी आहे, हेंही दृष्टीस पडेल. १२६३ तेव्हां धनंजया! स्वरूपापासून छया जशी वेगळी नसते, त्याप्रमाणें प्रकृती ही आत्मस्वरूपाहून वेगळी राहणार नाही. १२६४ असें केलेंस झणजे प्रकृतीचा नाश होऊन अनायासें कारणासहित आपोआप कर्मांचा संन्यास घडेल. १२६५ असा कर्मांचा संन्यास घडला झणजे मग मी जो आत्मा तोच काय तो स्वतःसिद्ध राहतो. तेव्हां बुद्धिरूप पतिव्रता करून सोडावी. १२६६ ह्या अनन्ययोगेंकरून माझ्या मध्ये जेव्हां बुद्धि प्रविष्ट होते तेव्हां चित्त आपला अहंपणा सोडून माझ्याच भजनीं लागतें. १२६७ अशा

१ स्वधर्माचा. २ ठेवा. ३ जन्मभूमि. ४ स्वस्वरूपाहून. ५ आत्मस्वरूपाला. ६ कारणासहित. ७ सर्व कर्मसमुदाय. ८ घातली जाते. ९ द्वैतरहित. १० विलाचे वंचलादिक धर्मत्यागानें. ११ सत्वर.

प्रकारें चंचलपणा सोडलेलें चित्त माझ्या ठिकाणीं जडून राहील असा उपाय सदासर्वकाल शीघ्र करीत जा." १२६८

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।

अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनक्ष्यसि ॥१८॥

[मच्चित्तः] मग अभिन्ना इया सेवा । चित्त मियांचि मरेल जेव्हां । माझा प्रसाद जाण तेव्हां । संपूर्ण जाहाला ॥ ६९ ॥ [सर्वदुर्गाणि] तेथ सकळ दुःखांमैं । भुंजींजती जियें मृत्युजन्में । तियें दुर्गमंचि सुगमैं । होती तुज ॥ १२७० ॥ सूर्याचेनि सावायें । डोळा सावाइला होये । तें आंधाराचा आहे । पांड तथा ॥ ७१ ॥ [मत्प्रसादात्] तैसा माझेनि प्रसादें । जीवकण जयाचा उपमदें । तो संसाराचेनि बांधे । बागुलें केवि ॥ ७२ ॥ [तरिष्यसि] ह्मणोनि धनंजया । तूं संसारदुर्गती यया । तरसील माझिया । प्रसादास्तव ॥ ७३ ॥ अथवा हून अहंभावें । माझें बोलणें हें आधवें । कानामनाचिये ' 'शिवें । नेदिसी टेंकों ॥ ७४ ॥ [चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि] तरि नित्यमुक्त अव्यय । तूं आहासि तें होवूनि वीय । [विनक्ष्यसि] देहसंबंधाचा घाव । बोजेल आंगीं ॥ ७५ ॥ जया देहसंबंधाआंत । प्रतिपदीं आत्मघात । भुंजतां उंसंत । कहींच नाही ॥ ७६ ॥ येवढेनि दांरुणें । निर्मणेनवीण निर्मणें । पडेल जरी बोलणें । नेदिसी माझें ॥ ७७ ॥

“मग ह्या अभिन्न सेवेनें चित्त जेव्हां मजमध्यें भरेल तेव्हां माझा प्रसाद संपूर्ण झाला ह्मणून समजावें. १२६९ तेव्हां जन्ममृत्युरूप जी दुःखाचीं स्थानें भोगाचीं लागतात तीं, तुला कठीण असतांही सुलभ होतील. १२७० सूर्याच्या साह्यानें डोळा साह्यभूत होतो, तेव्हां मग त्याला आंधाराची कांहीं मातबरी आहे काय ? १२७१ तद्वत् माझ्या प्रसादानें ज्याचा जीवांश नाश पावला, त्याला संसाराच्या बागुलापासून कशी बाधा होणार ? १२७२ ह्मणून अर्जुना ! तूं ह्या माझ्या प्रसादानें संसाररूप दुर्गतीतून पार पडशील. १२७३

१ दुःखाचीं स्थानें. २ भोगिलीं जातात. ३ अवघड. ४ मदींनें, साह्यानें. ५ साह्यभूत. ६ योग्यता, विश्वाद. ७ ज्याचा जीवकण=जीवांश उपमदें=नासे किंवा नष्ट झाला. ८ पीडा पावेल. ९ बुझावण्यानें. १० अहंकारानें. ११ हद्दींस. १२ व्यर्थ. १३ आदलेल. १४ पावलोपावली. १५ विसावा. १६ भयंकर. १७ न मरूनही मरणें. १८ घेत नाहीस.

अथवा अभिमानानें माझें हें सारें बोलणें, कानाच्या आणि मनाच्या शिवेला सुद्धां टेंकूं न देशील, १२७४ तर तूं नित्ययुक्त व अव्यय आहस तें व्यर्थ होऊन देहसंबंधाचा घाव तुझ्या आंगावर पडेल. १२७५ त्या देहसंबंधाच्या आंत पावलोपावलीं आत्मघात असून भोगतांना विसावा ह्मणून कधीं नाहीच. १२७६ हें माझें भाषण मनास जर न आणशील, तर येवढें भयंकर न मरतांच जें मरणें तें भोगावें लागेल." १२७७

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।

मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति १९

[यदहंकारमाश्रित्य] पथ्यवेष्टिया पोषी ज्वर । कां दीपद्वेषिया अंधकार । विवेकद्वेषे अहंकार । पोषूनि तैसा ॥ ७८ ॥ खदेष्टा नाम अर्जुन । परदेहा नाम खजन । संग्रामा नाम मलिन । पापाचार ॥ ७९ ॥ इया मती आपुलिया । तिघां तीन नामें यया । ठेऊनियां धनंजया । [न योत्स्य इति मन्यसे] न जुंझें ऐसा ॥ १२८० ॥ [मिथ्यैष व्यवसायस्ते] जीवामाजी निष्ठेक । करिसी जो आत्मिक । तो वायां धाडील नैसर्गिक । स्वभावचि तुझा ॥ ८१ ॥ आणि मी अर्जुन हे आत्मिक । ययां वध करणें हें पातक । हे माया वांचुनि तात्विक । कांहीं आहे ॥ ८२ ॥ आधीं जुंझार तुवां हो-आवें । मग जुंझावया शस्त्र घेयावें । कां न जुंझावया करावें । देवांगण ॥ ८३ ॥ ह्मणूनि न जुंझणें । ह्मणसी तें वायाणें । ना मातुं लोकहणें । लोकदृष्टीही ॥ ८४ ॥ [प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति] तन्ही न जुंझें ऐसें । निष्ठंकिरी जें मानसें । तें प्रकृति अंनारिसें । करवीलचि ॥ ८५ ॥

“पथ्याचा द्वेष करणाराचें जसें ज्वर पोषण करतो; किंवा द्वीपद्वेष्याचें जसें अंधकार पोषण करतो; त्याप्रमाणें विवेकाच्या द्वेषानें अहंकार पोसून, १२७८ आपल्या देहाला नांव अर्जुन; दुसऱ्या देहाला आपले लोक; आणि युद्धाचें नांव फार वाईट असें पापाचरण. १२७९ धनंजया ! अशीं आपल्या बुद्धीनें ह्या तिघांना तीन नामें ठेवून युद्ध करणार नाहीस

१ राखी. २ शेवटचा सिद्धांत. ३ अतिशय. ४ तुझा नैसर्गिक स्वभाव—क्षात्रधर्म. ५ आपले जन. ६ तत्वदृष्टीनें. ७ युद्धकर्ता. ८ मिथ्यानिश्चय, गंधर्वनगर. ९ व्यर्थ. १० निर्धारिती. ११ निराळें.

असा जो, १२८० तूं जिवामध्ये अतिशय डाम निश्चय करून बसला आहेस, तो तुझा नैसर्गिक स्वभावच मोडून टाकील. १२८१ आणखी मी अर्जुन; हे आपले; ह्यांचा वध करणें हें पाप; ही माया. खरें तत्त्व आहे तें काहीं निराळेंच आहे. १२८२ आधीं युद्धाला आपणच तयार व्हावें; आणि मग युद्ध करण्याकरितां शस्त्र उचलावें, कां युद्ध न करण्याचा झलताच निश्चय करावा? १२८३ ह्मणून तूं युद्ध करित नाहीं ह्मणतोस हें व्यर्थ होय. तें तिन्हाइतपणानें, व व्यवहारदृष्टीनेंही उक्त नाहीं. १२८४ तर युद्ध करित नाहीं असा मनामध्ये निश्चय करून बसला आहेस, त्याला प्रकृति वेगळेंच करावयाला लावील.” १२८५

स्वभावजेन कौंतेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।

कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यशोपि तत् ॥ १०

[स्वभावजेन कौंतेय] पें पूर्वे वाहतां पाणी । पंढिजे पश्चिमेचे वाहणी । तरि आग्रहचि उरे तें आणी । आपुल्या लेखा ॥ ८६ ॥ कां सालीचा कृष्ण ह्मणे । मी जुगवें साली-पणें । तरी आहे आन करणें । स्वभावांस ॥ ८७ ॥ [निबद्धः स्वेन कर्मणा] तैसा क्षात्र संस्कारसिद्धा । प्रकृती घडिलासि प्रबुद्धा । आतां नुढीं ह्मणसी हा धांदा । परि लठविजसीची तूं ॥ ८८ ॥ पें शौर्य तेज दक्षता । एवमादिक पंडुमुता । गुण दिधले जन्मतां । प्रकृती तुज ॥ ८९ ॥ तरि तयाचिया सैमवाया । अनुरूप धनंजया । न करितां उंगलियां । नयेल असों ॥ १२९० ॥ ह्मणोनियां तिहीं गुणीं । बांधलासि तूं कोदंडपाणी । त्रिशुद्धि निधसि बांदाणी । क्षात्राचिया ॥ ११ ॥ [कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्] ना हें आपुलें जन्म-मूळ । न विचारीतचि केवळ । जुंझें ऐसें अढळ । वत जरी घेसी ॥ ९२ ॥ [करिष्यस्यशोऽपि तत्] तरि बांधोनि हात पाये । जो रथीं घातला होये । तो न चेंले तरी जाये । दिगंता जेवि ॥ ९३ ॥ तैसा तूं आपुल्याकडनी । मी कांहींच न करीं ह्मणोनी । ठांसी परि भरंवसेनी । तूंचि

करिषी ॥ ९४ ॥ उत्तर वैराटिचा राजा । पळतां तूं कां निघालासि जुंझा । हा क्षात्रस्वभाव तुझा । जुंझवील तुज ॥ ९५ ॥ महावीर अकरा असौहिणी । तुवां येकें नांगविले रणांगणीं । तो स्वभाव कोदंडपाणी । जुंझवील तूतें ॥ ९६ ॥ हां गा रोग कायी रोगिया । आवडे दरिद्र दरिद्रिया । परि भोगविजे बळिया । अर्धें जेणें ॥ ९७ ॥ तें अष्ट अनासि । न करील ईश्वरवशें । तो ईश्वरही असे । हृदयीं तुझ्या ॥ ९८ ॥

“पाणी—पूर्वेस वहात असून आपण पश्चिमेकडे पोहं लागलों, तर आपला हट्ट मात्र दिसून येणार. बाकी तें, आपल्याच मार्गावर आल्यावांचून राहवयाचें नाहीं. १२८६ किंवा भाताच्या दाण्यानें निश्चय केला कीं, मी भाताच्या रूपानें उगवावयाचा नाहीं, तर उपयोग काय? स्वभावकर्म आहे तें निराळेंच आहे. १२८७ त्याप्रमाणें हे बुद्धिमंता! क्षात्र संस्कारानें तुझी प्रकृति बनलेली आहे. ह्यामुळे आतां तूं उठत नाहीं असें ह्मणतोस, पण तें कर्तव्यच तुला उठवील. १२८८ हे पंडुसुता! शौर्य, तेज आणि दक्षता इत्यादि गुण प्रकृतीनेंच तुला दिलेले आहेत. १२८९ तर अर्जुना! त्यांच्या स्वभावानुरूप जर तूं न करशील तर ते तुला उगाच बसूं देणार नाहीत. १२९० ह्याकरितां हे कोदंडपाणी! तूं ह्या तीन गुणांनीं बांधलेला आहेस. ह्मणून तूं क्षात्र-मार्गानेंच जाशील ह्यांत तिळमात्र संशय नाहीं. १२९१ कारण आपला जन्म, कुल, ह्यांचा कांहींच विचार न करितां “मी युद्ध करणार नाहीं इतकेंच केवळ अढळ वत घेऊन बसशील” १२९२ तर हातपाय बांधून ज्याला रथावर घातलेला असतो, तो जरी चालला नाहीं, तरी जसा दिगंताला जातो, १२९३ त्याप्रमाणें तूं आपल्याकडून मी कांहींच करित नाहीं ह्मणून स्वस्थ बसशील, तरी खात्रीनें सांगतां कीं तूं करणारच. १२९४ विराट

१ पोहावें. २ मार्गानुरूप. ३ पलीकडे, हिशोबास, मार्गोस. ४ दाणा. ५ उगवणार नाहीं. ६ प्रकृतिभावास. ७ कारणानुरूप. ८ साहजिक. ९ खरेपणानें. १० मार्गोस. ११ क्षत्रियस्वभावाच्या. १२ चालत नसला तरी. १३ स्वस्थ राहासी.

१ तूं गोप्रहणप्रसंगी उत्तराचा सारथि जेव्हां झालास तेव्हां तो युद्धांतून पळत असतांही तूं मुद्दाम त्याला सारथि करून युद्ध केलें, हा तुझा क्षात्रधर्म तुझ्याकडून युद्ध करवील. २ फसविले, पराभूत केले. ३ दुष्कृतसंचित प्रारब्धानें. ४ वेगळें.

राजाचा पुत्र उत्तर पळू लागला तेव्हां, तूं कां युद्धाला निघालास ? हा तुझा क्षत्रिय स्वभाव. तोच तुला युद्ध करावयाला लावील. १२९५ हे कोदंडपाणी ! तूं एकट्यानें रणांगणामध्ये अकरा अक्षौहिणी महावीर पराजित केलेस. तोच तुझा स्वभाव तुला युद्ध करावयाला लावील. १२९६ अरे ! रोग्याला रोग आणि दारिद्र्याला दारिद्र्य काय आवडत असतें ? पण भवितव्य झणून असतें तें बलवान् असतें. तें त्याजकडून भोगवितें. १२९७ तें भवितव्य ईश्वराच्या आधीन असल्यामुळें, त्यालाही भल-तेंच करतां येत नाही. आणखी तो ईश्वरही तुझ्या हृदयामध्ये आहेच." १२९८

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥

[सर्वभूतानां] सर्वभूतांच्या अंतरीं. हृदय महाअंबरीं. चिद्गुतीच्या सहस्रकरीं. उदयला असे जो ॥ ९९ ॥ अवस्था-त्रय तिन्ही लोक. प्रकाशने अशेष. अन्यथादृष्टि पांथिक. चैवविले ॥ १३०० ॥ वेयोदकाच्या सरोवरीं. फांकतां विषय कलहारीं. इन्द्रियषट्पदा चारी. जीवभ्रमरातें ॥ १ ॥ [ईश्वरः] असो रूपक हें तो ईश्वर. सकळ भूतांचा अहंकार. पांथरोनि निरंतर. उल्लासत असे ॥ २ ॥ [मायया] स्व-मायेचें आडवळ. लावुनि एकल खेळवी सूत्र. बाहेरी नेटी छायचित्र. चौर्योसी लक्ष ॥ ३ ॥ तथा ब्रह्मादिकी-टांतां. अशेषांही भूतजातां. देहाकार योग्यता. पाहोनि दावी ॥ ४ ॥ [यंत्रारूढानि] तेथ जें देह जयापुढें. अर्जुन-पपणें मांडे. तें भूततया आरुढे. हें मी झणोनि ॥ ५ ॥ सूत सूतें गुंतले. तृण तणेंचि बांधले. कां आत्मविबा घेतले. बाळकें जळीं ॥ ६ ॥ तयापरी देहाकारें. आपणपेंचि दुसरें. देखोनि जीव आंविष्करे. आत्मबुद्धी ॥ ७ ॥ ऐसेनि

१ हृदयरूप महाकाशामध्ये. २ चैतन्यवृत्तिरूप हजारों किरणांनी. ३ जागृती, स्वप्न, सुषुप्ति. ४ स्वर्ग, मृत्यु, पाताळ. ५ विपरीत ज्ञानानें भुललेले जीव, वाटसरू. ६ जागृत केले. ७ जाणण्यास योग्य दृश्य वस्तुरूप जलाच्या. ८ कमळांनी. ९ भ्रमराच्या धोरणानें. १० चारतो. ११ सूत्र-धाराची झी. १२—२० लक्ष वृक्ष, ११ लक्ष कीटक, ३० लक्ष पक्ष, ९ लक्ष जलचर, १० लक्ष पक्षी, ४ लक्ष मनुष्य-योनि. मिळून एकंदर ८४ लक्ष योनि. १३ ब्रह्मदेवापासून कीडमुंगीपर्यंत. १४ योग्यतेनुष्य. १५ भूत असें होऊन. १६ प्रगटे. १७ तें मी नसून मीच अशा बुद्धीनें.

शरीराकारी. यंत्रां भूतें अवधारी. [भ्रामयन्] वाहूनि हालवी दोरी. प्राचीनाची ॥ ८ ॥ तेथ जया जें कर्मसूत्र. मांडुनि ठेविलें स्वतंत्र. तें तिये गती पात्र. होंचि लागे ॥ ९ ॥ किंबहुना घनुर्धरा. भूतांतें खेगसंसार. माजि भोंवडी तृणें वारा. आकाशीं जैसी ॥ १३१० ॥ भ्रामका-चेनि सणें. जैसे लोहो वेढां रिंगे. तैसी ईश्वरसत्तायोगें. चेष्टेती भूतें ॥ ११ ॥ जैसे चेष्टा आपुलाल्या. समुद्रादिक धनंजया. चेष्टती चंद्राच्या. सन्निधी येकी ॥ १२ ॥ तथा सिंधू भरितें दाटे. सोमकांता पाझर फुटे. कुमुदांचको-रांचा फिटे. संकोच तो ॥ १३ ॥ तैसी बीज-प्रकृतिवशें. अनेकें भूतें येकें ईशें. चेष्टजीवती तो असे. [हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति] तुझ्या हृदयां ॥ १४ ॥ अर्जुनपण न घेतां. मी ऐसें जें पंडुशुता. उठतसे तें तत्वता. तयाचें रूप ॥ १५ ॥ यालागीं तो प्रकृतीतें. प्रवर्तवील हें निरुतें. आणि तें जु-झवील तूतें. न झुंजसी जन्ही ॥ १६ ॥ झणोनि ईश्वर गोसावी. तेणें प्रकृति हे नेमावी. तियां सुखें राववावी. इन्द्रियें आपुलीं ॥ १७ ॥ तूं करणें न करणें दोन्ही. लाऊनि प्रकृतीच्या मानीं. प्रकृतीही कां अधीनी. हृदयस्था जया ॥ १८ ॥

“सर्व प्राणिमात्रांच्या अंतःकरणांत हृदयरूप महदाकाशांत चैतन्यवृत्तिरूप हजारों किरणांनीं जो उदय पावलेला आहे, १२९९ प्रवृत्ति, स्वप्न आणि सुषुप्ति, ह्या तिन्ही अवस्था, व स्वर्ग, मृत्यु आणि पाताळ ह्या तिन्ही लोकांना संपूर्ण प्रकाशित करून विपरीत ज्ञानानें भुल-लेले जीव ज्यानें जागृत केले आहेत, १३०० दृश्य वस्तुरूप जलाच्या सरोवरांमध्ये विषयरूप कमळें उमललीं झणजे इन्द्रियषट्पदरूप जे जीव-भ्रमर, त्यांचा चारा घालतो. १३०१ हें रूपक असो. तो ईश्वर सर्व प्राणिमात्रांचा अहंकार पांथरून निरंतर प्रकाशतो. १३०२ आपल्याच मायेचें आडवळ लावून एकटाच सूत्र नाच-वितो. बाहेर मायारूप नदी आणि तिच्या छायेपासून निघालेलीं तिचीं चैन्यायशीं लक्ष

१ पूर्वकर्माची. २ इहपरलोकी. ३ लोहचुंबकाच्या. ४ वा-टोळें फिरे. ५ व्यवहार करतात. ६ चंद्रविकासी कमलाळ. ७ मिटलेपणा. ८ प्रकृतिबीजाच्यानें, ‘यथा बीजं तथाकुंरः’ या न्यायानें बीजाच्या प्रकृत्यनुसार—बीजासारखी. ९ ईश्वर. १० खरें. ११ प्रकृति. १२ इन्द्रियस्वामी. १३ प्रकृतीनें. १४ चेष्टवाची. १५ धोरणानें.

योनी हीं चित्रे. १३०३ त्या ब्रह्मदेवापासून किड्यापर्यंत यक्षयावत् प्राणिमात्रांना योग्यता पाहून आकार देतो. १३०४ तेव्हां ज्याच्या त्याच्या योग्यतेप्रमाणे त्याला जो जो देह प्राप्त होतो तो तो प्राणी, हे 'मी मी' झणून अहं-कारास चढतो. १३०५ सूत सुतानेच गुंतवावे; गवत गवतानेच बांधावे; किंवा मुलाने पाण्या-मध्ये आपलेच प्रतिबिंब पहावे, १३०६ त्याप्र-माणे देहाकाराने आपणच दुसरा पाहून, जिव हा तोच मी अशी बुद्धि धारण करतो. १३०७ अशा प्रकारे शरीराकाररूप यंत्रामध्ये भूतें अडकवून पूर्वकर्माची दोरी हालवितो, हे लक्षांत ठेव. १३०८ तेव्हां ज्याचे जें स्वतंत्र कर्मसूत्र मांडून ठेवलेलें असतें, तें त्याच्या गतीला पात्र करतें. १३०९ किंबहुना धनु-र्धरा! आकाशामध्ये वारा जसा गवताला गरगर गरगर फिरवितो, त्याप्रमाणे इहपर-लोकीं तो फिरवित असतो. १३१० लोहबु-वकाच्या सान्निध्यानें लोखंड जसें वाटोले फिरतें, त्याप्रमाणे ईश्वरी सत्तेच्या योगेंकरून प्राणी व्यापार करतात. १३११ अर्जुना! चंद्राच्या एका सान्निध्यानें समुद्रादिक आपआपला व्यापार करतात. १३१२ समुद्राला भरती येते; सोमकांताला पाझर फुटतो; चंद्रविकासी कम-लांचा वचकोर पक्ष्यांचा संकोच नाहीसा होतो; १३१३ त्याप्रमाणे बीजप्रकृतीनुसार एक ईश्वर हे सर्व प्राणी वागवितो. तो ईश्वर तुझ्या हृदयांत आहे. १३१४ हे अर्जुना! मी हा अ-र्जुन असा अभिमान न धरितां 'मी' असें उत्पन्न होणारे जें स्वरूप, तेंच त्याचें स्वरूप होय. १३१५ ह्याकरितां तो प्रकृतीला पुढें करील हें खचित आहे. आणि तूं जरी युद्ध करित नस-लास तरी ती तुला करावयाला लावील. १३१६ झणून ईश्वर हा धनी असून त्यानें जी प्रकृति नेमलेली आहे, तिच्या अनुपंगानें सुखानें आपआपलीं इंद्रियें वागूं घावीत. १३१७ तूं करणें आणि न करणें हीं दोन्ही ज्या हृद-

यांत राहणाऱ्याच्या स्वाधीन प्रकृति आहे, त्या प्रकृतीच्याच मर्जीवर ठेव." १३१८

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।

तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् १२

[तमेव शरणं गच्छेति] तथा अहं वांचा चित्त आंग । देऊनियां शरण रिग । महोदधी कां गोंग । रिगालें जैसे ॥ १९ ॥ [तत्प्रसादात्परां शान्तिं] मग तथाचेनि प्रसादे । सर्वोपशान्तिप्रमदे । कांत होऊनियां खानंदें । स्वरूपीच रमसी ॥ १३२० ॥ [स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतं] संभूति जेणें संभवे । विश्रान्ति जेथें विसंवे । अनुभूतिही अनुभवे । अनु-भवा जया ॥ २१ ॥ तिथे निजात्मपदींचा रावो । होऊनि ठाकसी अव्ययो । झणे लक्ष्मीनाहो । पार्थो तूं ॥ २२ ॥

“गंगेचें उदक जसें महासागरांत शिरतें, त्याप्रमाणे त्याला काया, वाचा, मन आणि अभिमान अर्पण करून शरण जा. १३१९ झणजे त्याच्या प्रसादानें शांतिस्त्रीचा पति होऊन निजानंदानें स्वस्वरूपांतच रममाण होशील. १३२० जेथें उत्पत्तीची उत्पत्ती; जेथें विश्रान्तीला विश्रान्ति; जेथें अनुभवालाही अनु-भव घडतो;” १३२१ लक्ष्मीपति झणाले, “पार्थो! तूं त्या निजात्मपदाचा अक्षयी राजा होऊन राहशील.” १३२२

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।

विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥ १३ ॥

[इति] हे गीतानाम विख्यात । सर्ववाक्याचें मथित । आत्मा जेणें हसगत रत्न होय ॥ २३ ॥ [ज्ञानमाख्यातं] ज्ञान ऐसीया रूढी । वेदांतें जयाची प्रौढी । वांनितां कीर्ति चो-खडी । पातली जमी ॥ २४ ॥ बुद्ध्यादिकें बोलसें । हें जयाचें कां कडवसे । मी सर्वद्रष्टाहि दिसें । पांढळा जया ॥ २५ ॥ [गुह्याद्गुह्यतरं] तें हें गा आत्मज्ञान । मज गोप्या-चेंही गुप्त धन । परि तूं झणूनि आन । केवि कळ ॥ २६ ॥ [मया] याकारणें गा पांडवा । आर्क्षी आपला हा गुप्त ठेवा ।

१ त्या हृदयस्थाला. २ ज्या कायावाचामनाला मी झणतोस. ३ गंगोदक. ४ शांतिस्त्रीचा. ५ उत्पत्ति. ६ राहासी. ७ लक्ष्मीपति. ८ वेदांचें. ९ प्रसिद्धि. १० वर्णितां. ११ आभास, परावर्तन, प्रतिबिंब. १२ उदय पावलेला.

[ने] तुज दिधला कणवा । जांकळिलेपणें ॥ २७ ॥ जैसी भुलली बोरेंस । माय बोले बाळा दोषें । प्रीती ही परी तैसें । न करुंचि हो ॥ २८ ॥ येथ आकाश आणि गाळिजे । अमृताही साली फेडिजे । कां दिव्याकरवीं करविजे । दिव्य जैसें ॥ २९ ॥ जयाचेनि अंगप्रकाशें । पाताळींचा परमाणु दिसे । तया सूर्यादि कां जैसें । अंजन सुदलें ॥ १३३० ॥ तैसें सर्वज्ञेही मियां । सर्वेही निर्धारनियां । निकें होय तें धनंजया । सांगीतलें तुज ॥ ३१ ॥ [विमृश्यैतदशेषेण] आतां तूं ययावरी । निकें हें निर्धारी । निर्धारिनि [यथेच्छसि तथा कुरु] करी । आवडे तैसें ॥ ३२ ॥ यया देवाचिया बोला । अर्जुन उगाचि ठेला । तेथ देवो ह्मणती भला । अंबंचक होसी ॥ ३३ ॥ वाढितया पुढें भुकेला । उतरोधें ह्मणे धोला । तें तोचि पीडे आपला । आणि दोषही तया ॥ ३४ ॥ तैसा सर्वज्ञ श्रीगुरु । भेटलिया आत्मनिर्धार । न पुसिजे जें आभाळ । धरुनियां ॥ ३५ ॥ तें आपणपेंचि वंचे । आणि पापही वंचनाचें । आपणयाचि साचें । चुकविलें तेणें ॥ ३६ ॥ पें उगेपणा तुझिया । हा अभिप्रावो कीं धनंजया । जें एक वेळ औबाकुनियां । सांगावें ज्ञान ॥ ३७ ॥ तेथ पार्थ ह्मणे दातारा । भलें जाणसी माझिया अंतरा । हें ह्मणों तरी दुसरा । जाणता असे काई ॥ ३८ ॥ येर ज्ञेय हें जी आपवें । तूं ज्ञाता येकचि स्वभावें । मा सूर्य ह्मणौनि वानावें । सूर्यांत काई ॥ ३९ ॥ या बोला श्रीकृष्णें । ह्मणीतलें काय येणें । हंचि थोडें गा वानणें । जें बुझतासि तूं ॥ १३४० ॥

“हें गीतानामक सर्व वेदांचें सार आहे. आणि ज्याच्या योगानें आत्म्यासारखें रत्न हस्तगत होतें. १३२३ ज्ञान हें मोठें ह्मणून त्याच्या प्रौढीचें वर्णन केलें ह्मणून जगामध्ये वेदांची मोठी कीर्ति पसरली. १३२४ बुद्ध्यादिक जाणण्याचीं जीं साधनें तीं ज्याचीं प्रतिविधें, माझ्या सर्व द्रष्ट्याचा उदय झालेला ज्याच्या योगानें दिसतो; १३२५ तें हें आत्मज्ञान—मी

जो गुप्त त्या गुप्ताचेंही गुप्त धन. पण तुझ्या जवळ प्रतारणा कां करावी? १३२६ अर्जुना! आह्मी करणेनें व्याप्त झालों आहों. या कारणानें हा आह्मी आपला गुप्त ठेवा तुला दिला. १३२७ ज्याप्रमाणें आईला पान्हा दाटून वेदना होऊं लागल्या ह्मणजे, प्रीति असूनही आई मुलाला दोष देते. पण तसेंही आह्मी केलें नाहीं. १३२८ आकाश गाळावें; अमृताची साल काढावी; किंवा दिव्याकडून जसें दिव्य करवावें; १३२९ ज्याच्या अंगच्या प्रकाशानें पाताळांत असलेलाही परमाणु दृष्टीस पडतो, त्या सूर्यालाही जणों काय काजळ घालावें, १३३० तद्वत् मी सर्वज्ञ असतांही सर्व धुंडाळून हे अर्जुना! जें खरें ह्मणून होतें तें तुला सांगितलें. १३३१ आतां ह्यावर खरें तत्त्व कोणतें ह्याचा तूंही निश्चय कर. आणि तो निश्चय झाला ह्मणजे तुला वाटेले तसें कर.” १३३२ ह्या देवाच्या भाषणावर अर्जुन उगाच राहिला. तेव्हां देव ह्मणाले “तूं फार भिडस्त आहेस.” १३३३ वाढणाऱ्या पुढें भुकेलेला मनुष्य लाजेनें पोट भरलें ह्मणाला, तर त्याचा तोच उपाशी रहातो; आणखी वर खोटें बोलण्याचा दोषही येतो. १३३४ तद्वत् सर्वज्ञ श्रीगुरु भेटले असतांना तेथे भय धरून जर आत्मज्ञान विचारून घेतलें नाहीं, १३३५ तर आपलें आपणासच ठकविल्यासारखें होतें; परवंचना केल्याचें पातक लागतें; आणि आपणच आपल्यास खरें नाहींसें केल्याप्रमाणें होतें. १३३६ अर्जुना! तुझ्या उगाच बसण्यांतील मतलब हा, कीं एक वेळ संपूर्ण सांगावें. १३३७ तेव्हां अर्जुन ह्मणाला “हे दातारा! माझें अंतःकरण आपण उत्कृष्ट जाणतां. पण हें बोलून दाखविण्यांत तरी अर्थ कोणता? कारण, दुसरा कोणी जाणता आहे काय? १३३८ स्वभावधर्मैकरून ज्ञाता असा तूं एक; आणि बाकीचें सारें हें ज्ञेय होय. तेव्हां सूर्य ह्मणून सूर्याला तें काय वाखाणावें?” १३३९ ह्या भाषणावर श्रीकृष्ण ह्मणाले “झालें हें वर्णन काय

१ कृपेनें. २ व्याप्त झाल्यानें. ३ पान्हानें. ४ आकाश गाळावें, अमृताच्या साली काढाव्या व प्रकाशानें प्रकाश करावा ह्या असंभवनीय गोष्टी, तसें असंभाव्यही मी सर्वज्ञानें निर्धारून इत्यादि १३३१ ओवीशीं संबंध. ५ काजळ घातलें. ६ खरें. ७ वंचना न करणारा—आपणाला ठकविणारा (इष्ट वस्तु कोणी देत असतां ती नको ह्मणणारा) असा होणार नाहींस. ८ भिडेनें. ९ तृप्त झालों. १० धुधेनें पीडा पावतो. ११ भय, भार. १२ आपणाला फसविलें ह्मणून त्याला वंचनाचें पापही लागतें. १३ पूर्णपणें. १४ जाणावयाचें. १५ समजलास.

थोडें झालें ?" ह्मणून समजतोस होय ? १३४०

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।

इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् १४

[शृणु मे परमं वचः] तरि अवधान पंधळ । करुनियां आणी एक वेळ । वाक्य माझें निर्मळ । अवधारीं पां ॥ ४१ ॥ [सर्वगुह्यतमं भूयः] हें वाक्य ह्मणोनि बोलिजे । कां श्राव्य मग आयिकिजे । तैसें नव्हे परि तुझें । भाग्य बरवें ॥ ४२ ॥ कूर्मीचिया पिलयां । दिठी पान्हा ये धनंजया । आकाश वाहे बापिया । घरीचें पाणी ॥ ४३ ॥ जो व्यवहार जेथ न घडे । त्याचें फळचि तेथ जोडे । काय देवें न सांपडे । सानुकुळें ॥ ४४ ॥ येरवीं द्वैताची बांरी । सारुनि ऐक्याच्या पेंसिघरीं । भोगिजे तें अवधारीं । रहस्य हें ॥ ४५ ॥ आणि निरुपचारा प्रेमा । विषय होय जें प्रियोत्तमा । तें तुजें नव्हे कीं आत्मा । ऐसेचि जाणावें ॥ ४६ ॥ [इष्टोऽसि मे] आरिसाचिया देखिलया । गोमटें कीजे धनंजया । तें त्या नोहे आपण्यां । लागीं जैसे ॥ ४७ ॥ तैसें पार्था तुझेनि मिषें । मी बोलें आपण्याचि दोषें । माझ्या तुझ्या ठाई असे । मी तूंपण गा ॥ ४८ ॥ ह्मणोनि जिह्वाहीचें गुज । सांगतसें जीवासीं तुज । हें अनन्य गतीचें मज । आर्था व्यसन ॥ ४९ ॥ [दृढमिति] पै जळा आपणपें देता । लवण मुललें पंडुसुता । कीं आघवें त्याचें होतां । न लजेचि तें ॥ १३५० ॥ तैसा तूं माझ्या ठाई । राखों नेणसीचि कांहीं । तरी आतां तुज काई । गोप्य मी करीं ॥ ५१ ॥ [ततो वक्ष्यामि ते हितं] ह्मणोनि आघ-वीचि गूढें । जें पाऊनि अति उघडें । तें गोप्य माझें चोखडें । वाक्य आइक ॥ ५२ ॥

“तर आतां आणखी एक वेळ चांगलें लक्ष्य देऊन माझें निर्मळ भाषण ऐक. १३४१ हें बोलण्यासारखें आहे ह्मणून बोलावयाचें, किंवा ऐकण्यासारखें आहे ह्मणून ऐकावयाचें, अशांतला प्रकार नाही. तर तुझे भाग्य मोठे असें समज. १३४२ हे धनंजया! कासवांच्या पिलांचा पान्हा दृष्टीतूनच फुटतो; चात-काला आकाश हेंच घरचें पाणी होतें. १३४३ जी गोष्ट जेथें व्हावयाची नाही, त्याचें फळ तेथें प्राप्त होतें. दैव अनुकूल झालें ह्मणजे

१ विस्तारलेलें असें. २ बोलण्यासारखें. ३ श्रवण करण्यास योग्य. ४ दृष्टीचें. ५ चातकाल. ६ निवारण. ७ घरी. ८ गुह्य, तात्पर्य. ९ आदरयुक्त प्रेमानें. १० निमित्तानें. ११ आपल्या उद्देशानें. १२ अंतर्गत. १३ एकनिष्ठतेचें. १४ चटक.

काय काय ह्मणून सांपडणार नाही ? १३४४ नाहीतर द्वैताला बाजूस सारून ऐक्याच्या घरामध्ये भोगावयाचें जें रहस्य तें हें. ध्यानांत असूं दे. १३४५ आणखी हे प्रियोत्तमा! जें निरुपचार-निरुपमेय-प्रेमाला जें विषय होतें, तें दुसरें कांहीं नव्हे. तर तोच आत्मा ह्मणून समजावें. १३४६ अर्जुना! आरथांत पाहणाराला शृंगारलें, तर त्याचें त्याला कांहींच नाही. तर तें आपल्यालाच शृंगारल्याप्रमाणें आहे. १३४७ तद्वत् अर्जुना! तुझ्या निमित्तानें मी मलाच अनुलक्षून बोलत आहे. माझ्यामध्ये आणि तुझ्यामध्ये मी-तूंपणा आहे काय ? १३४८ ह्मणून हें अंतर्गत गुह्य, तुला प्राणासमानाला सांगतों. एकनिष्ठेची मला मोठी आवड आहे. १३४९ अर्जुना! पाण्याला आपला देह अर्पण करतांना मीठ भुलून जातें. तें आपण स्वतः तद्रूप झालें तरी, त्याची त्याला लाज वाटत नाही. १३५० त्याप्रमाणें माझ्या-पासून लपवून ठेवावयाचें तुला माहितच नाही. तर मग मी काय आतां तुझ्यापासून गुप्त ठेवूं ? १३५१ ह्मणून जें गुह्य पाहिलें असतां बाकीचीं कितीही गुह्ये असलीं तरी तीं उघडीं वाटतात, असें जें माझे सुंदर भाषण तें आतां ऐक.” १३५२

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे १५

[मन्मना भव] तरि बाह्य आणि अंतरा । आपुलिया सर्व व्यापारा । मज व्यापकातें वीरा । विषय करीं ॥ ५३ ॥ आघवा आंगीं जैसा । वायू मिळोनि आहे आकाशा । तूं सर्व कर्मी तैसा । मजसीचि असें ॥ ५४ ॥ किंबहुना आपुलें मन । करी माझें एकायतन । माझेनि श्रवणें कान । भरुनि घालीं ॥ ५५ ॥ आत्मज्ञानें चोखडी । संत जे माझीं रूपडीं । तेथ दृष्टि पडो आवडी । कामिनी जैसी ॥ ५६ ॥ मीं सर्व-वस्तीचें बंसीटें । माझीं नामें जियें चोखटें । तियें जीवा यावया वाटे । वाचेचिये लावीं ॥ ५७ ॥ हाताचें करणें । कां पायांचें चालणें । तें होय मजकारणें । तैसें करीं ॥ ५८ ॥ [मद्याजी] आपुला अथवा पैरावा । ठायीं उपकरसी

१ एक स्थान. २ वसतिस्थान. ३ दुसऱ्याचा. ४ उपयुक्त हो, उपकार करणारा हो.

पांडवा । तेणें यज्ञ होयीं बरवा । याज्ञिक माझा ॥ ५९ ॥ [मद्रक्तः] हें येकैक शिकऊं काई । पै सैवकै आपुल्या ठाई । उरऊनि येर सर्वही । मी सेव्यचि करीं ॥ १३६० ॥ [मां नमस्कुरु] तेथ जाऊनि भूतद्वेष । सर्वत्र नमैव नम मीचि येक । ऐसेनि आश्रय औखंतिक । लाहसी तूं माझा ॥ ६१ ॥ [मामेवैध्यसि] मग भरलेया जगाआंत । जाऊनि तिजयाची मात । होऊनि ठायील एकांत । आह्मां तुझां ॥ ६२ ॥ तेव्हां भलतिये अवस्थे । मी तूतें तूं मातें । भोगिशी ऐसें आह्मते । वाढेल सुख ॥ ६३ ॥ आणि तिजें ओढळ करितें । निर्मालें अर्जुना जेथें । तें मीचि ह्मणौनि तूं मातें । पावसी शेखीं ॥ ६४ ॥ जैसी जळींची प्रतिभा । जळनाथीं बिंबा । येतां गोंभागोभा । कांहीं आहे ॥ ६५ ॥ पै पवन अंबरा । कां कैळोळ सागरा । मिळतां आंढवारा । कोणाचा गा ॥ ६६ ॥ ह्मणौनि तूं आणि आह्मी । हें दिस-ताहे देहधर्मी । मग ययाच्या विरामीं । मीचि होसी ॥ ६७ ॥ [सत्यं ते] यया बोलामाझारीं । होय नव्हे झेणें करीं । येथ आन आथी तरी । तुझीच आण ॥ ६८ ॥ [प्रतिजाने] पै तुम्ही आण वाहणें । हें आत्मलिगातें शिवणें । [प्रियोऽसि मे] प्रीतीची जाति लोचणें । आठवों नेदी ॥ ६९ ॥ ये-हवीं वेह्मनि प्रपंच । जेणें विश्वाभास हा साच । आंझेचा नटनाच । काळातें जिणें ॥ १३७० ॥ तो देव मी संत्यसंकल्प । आणि जगाच्या हिती बाप । मों आणेचा ओक्षेप । कां करावा ॥ ७१ ॥ परी अर्जुना तुझे विधे । मियां देवपणाचीं बिरुद्धे । सांडिलीं गा मी हें ओंधें । सगळेनि तुवां ॥ ७२ ॥ पै काजा आपुलिया । रावो आपली आपणया । आण वाहे धनंजया । तैसें हें कीं ॥ ७३ ॥ तेथ अर्जुन ह्मणे देवें । अंचाट हें न बोलावें । जें आमचें काज नावें । तुझेनि एकें ॥ ७४ ॥ यावरी सांगों बेससी । कां सांगतां भोषही देसी । या तुझिया विनोदीसी । पार आहे जी ॥ ७५ ॥ कमळवना विकाशु । करी रवीचा येक अंशु । तेथ आघवाचि प्रकाशु । नित्य देतो ॥ ७६ ॥ पृथ्वी निवऊनि सागर । भरीजती येवढें थोर । वर्षें तेथ मिपांतरें । चातक कीं ॥ ७७ ॥ हा-

१ सेवकपणा मात्र आपले ठिकाणीं ठेवून बाकी सर्व. २ नमोनमः. ३ अतिशय. ४ प्रेम. ५ प्रतिबंध. ६ गेलें. ७ प्रतिबंध. ८ आकाशास. ९ लाटा. १० अडचण. ११ निरनिराळ्या शरीरांनीं. १२ अभावसमयीं. १३ करुं नको. १४ अन्यथा असेल तर. १५ आत्मस्वरूपा. १६ लज्जा. १७ हें सर्व दृश्य जग. १८ वेदाज्ञेचा प्रताप. १९ जिंकी. २० सफलसंकल्पी. २१ कल्याणाविषयीं. २२ त्यापेक्षां. २३ शंका. २४ छंदातें. २५ चिन्हें. २६ ओंधें. २७ अद्भुत. २८ वचन. २९ मोजेस. ३० किरण. ३१ निमित्ताला धनी.

गौनि औदार्यां तुझेया । मज निमित्त ना ह्मणावया । प्राप्ति असे दानी-राया । कृपानिधी ॥ ७८ ॥ तंव देव ह्मणती राहें । या बोलाचा प्रस्ताव नोहे । पै मातें पावसी उपायें । साचचि येणें ॥ ७९ ॥ सैध्व सिंधू पडिलिया । जो क्षण धनंजया । तेणें विरेचि कीं उरावया । कारण काथी ॥ १३८० ॥ तैसें सर्वत्र मातें भजतां । सर्व मी होतां अ-हंता । निःशेष जाऊनि तत्वता । मीचि होसी ॥ ८१ ॥ एवं माझिये प्राप्तीवरी । कर्मालागोनि अवधारीं । दाविली तुज उंजरी । उपायांची ॥ ८२ ॥ जे आधीं तंव पंडुसुता । सर्व कर्म मज अर्पितां । सर्वत्र प्रसन्नता । लाहिजे माझी ॥ ८३ ॥ पाठीं माझ्या इये प्रसादीं । माझें ज्ञान जाय सिद्धी । तेणें मिसळिजे त्रिशुद्धी । स्वरूपी माझ्या ॥ ८४ ॥ मग तिये ठाई । साध्य साधन होय नाहीं । किंबहुना तुज कांहीं । उरेचिना ॥ ८५ ॥ तरि सर्व कर्म आपलीं । तुवां सर्वदा मज अर्पिलीं । तेणें प्रसन्नता लोचली । आजि हे माझी ॥ ८६ ॥ ह्मणौनि येणें प्रसादबलें । नवे गुंजाचेनि ओढलें । न ठाकेचि येकवेले । माळिलें तुज ॥ ८७ ॥ जें संप्रपंच अज्ञान जाये । जेणें येक मी गोचर होयें । तें उपेक्षी-चेनि उपायें । गीतारूप हें ॥ ८८ ॥ मियां ज्ञान तुज आ-पुलें । नानापरी उपदेशिलें । येणें अज्ञानता सांडवले । धर्मा-धर्म जें ॥ ८९ ॥

“तर हे वीरा ! मला सर्वव्यापकाला आपल्या सर्व अंतर्बाह्य व्यापाराचाच विषय करून सोड. १३५३ सर्वांगानें घायु जसा आकाशाला मिळून असतो, त्याप्रमाणें तूंही सर्वकर्मांमध्ये मलाच मिसळून अस. १३५४ किंबहुना तूं आपलें मन माझ्या ठिकाणचेंच वतन करून ठेव. माझ्या ऐकण्यानेच कान भरून टाक. १३५५ स्त्रीची दृष्टि जशी आपल्या पतीवर वेधून राहते, त्याप्रमाणें आत्मज्ञानानें पवित्र ज्ञालेल्या माझ्या मूर्ति जे सज्जन, त्यांच्यावर तुझी दृष्टि राहूं दे. १३५६ सर्व वस्तीचें वसतिस्थान मी; माझी जी उत्तम उत्तम नामें आहेत, तीं जिवाला येण्यासाठीं वाणीच्या वाटेस लाव. १३५७ हाताचें करणें, किंवा पायाचें चालणें, तें सुद्धां माझ्या प्रीत्यर्थ होईल असें कर. १३५८ अर्जुना ! आपला असो कीं, परका

१ उदारपणाला. २ धर्मोत्तराजा, महादाला. ३ प्रसंग. ४ मीठ. ५ प्राप्तीपर्यंत. ६ स्पष्टता. ७ पूर्वी. ८ प्राप्त झाली. ९ अटकावाचें. १० तुझ्या खाधीन झालों. ११ प्रपंचावह. १२ साक्षात्. १३ युक्तीच्या.

असो; त्याजवर उपकार करणारा होऊन, त्या यज्ञाने माझा उत्तम यज्ञ करणारा हो. १३५९ हे एक एक काय काय झणून शिकवावे? एक सेवकपणा मात्र आपल्याकडे घेऊन बाकी सर्व मी आहे हे समजून सेवाच करीत जा. १३६० तेव्हां प्राणिमात्राचा द्वेष जाऊन सर्वत्र मीच एक आहे असे समजून 'नमस्कार' 'नमस्कार' असे करशील, तेव्हांच तू माझ्या दृढतर आश्रयास पात्र होशील. १३६१ मग साऱ्या भरलेल्या जगामध्ये तिसऱ्याची गोष्ट ही न उरता, तुझ्याला आह्वालाच, एकांत होऊन राहील. १३६२ तेव्हां पाहिजे त्या अवस्थेमध्ये मला तुझा आणि तुला माझा उपभोग घेतां येईल, असे आयतेंच सुख वृद्धिंगत होईल. १३६३ आणखी अर्जुना ! तिसरे, मध्ये अडथळा करणारे नाहीसे झाले झणजे, बाकी राहणार तें मीच; झणून शेवटीं मलाच पावशील. १३६४ ज्याप्रमाणें जळांतील प्रतिबिंब, जळ नाहीसे झाल्यावर बिंबांत येतांना काहीं प्रतिबंध आहे काय ? १३६५ वायु आकाशाला मिळतांना, लाटांस समुद्र मिळतांना, कोणाची आडकाठी असणार ? १३६६ झणून तू आणि मी हे निरनिराळ्या देहामुळे मात्र दिसतो आहो. तेव्हां त्यांच्या अभावीं तू मत्स्वरूपच होशील. १३६७ ह्या भाषणामध्ये होय नाही काहींएक झणू नको. ह्यांत अन्यथा असेल तर तुझीच शपथ ! १३६८ आणखी तुझी शपथ वाहणें हे आत्मस्वरूपावरच हात मारण्यासारखें आहे. परंतु प्रीतीचें लक्षण असे आहे कीं, ती लजेची आठवणच होऊं देत नाही. १३६९ बाकी प्रपंचास वेढा घालून ज्याणें हा विश्वाभास सत्य करून दाखविला आहे, आणि ज्याचा आज्ञेचा प्रताप तर असा कीं, जो काळालाही जिंकिल. १३७० तो मी सत्यसंकल्प देव; जगाच्या कल्याणाविषयीं तत्पर; मग शपथेबद्दल शंका कशाला घ्यावी ? १३७१ पण अर्जुना ! तुझ्या छंदानें मी देवपणाचीं लक्षणेही सोडून दिलीं. मी अर्धा आहे. तूं मिळाला

लास झणजे संपूर्ण होतो. १३७२ हे धनंजया ! आपल्या कार्यासाठीं राजाही आपली आपण शपथ वाहतो, त्यासारखेंच हेंही आहे. १३७३ तेव्हां अर्जुन झणाला "देवा ! इतकें हें अचाट बोलूं नये. कारण, तुझ्या एका नांवानेंच आमचें कार्य होणार आहे. १३७४ असे असतां आपण आणखी सांगावयास तयार होतां, इतकेंच नव्हे, तर सांगतांना घचनही देतां, तेव्हां ह्या तुमच्या प्रसन्नतेला काहीं अंतपार आहे काय ? १३७५ सूर्याचा एक किरणही कमलाचें सर्व वन विकसित करून सोडतो. असे असतां तो साराच प्रकाश निरंतर देतो. १३७६ पृथ्वीला गारीगार करून समुद्र भरून जातील येवढी मोठी वृष्टि होते तेथें, चातकाचें निमित्त कशाचें ? १३७७ झणून तुझ्या औदार्याला निमित्त नाही झणतां येऊं नये झणून मी निमित्तास धनी झालों आहे. बाकी हे कृपानिधि ! हे महादात्या ! हा आपला लाभ सर्व जगालाही फार मोठा झाला आहे. १३७८ तेव्हां देव झणाले "थांब. तें असूं दे. स्तुति करित बसण्याची ही वेळ नव्हे. तर तूं खरोखर ह्याच उपायांनीं मला पावशील. १३७९ अर्जुना ! मीठ समुद्रांत पडलें, तर तें क्षणामध्ये विरूनच जाईल. उरावयाला कारण काय ? १३८० तद्वत् सर्वत्र माझेच भजन केलें, सर्व मत्स्वरूपच होऊन राहिलें, झणजे झाडून सारी अहंता नाहीशी होऊन तूं खरोखरच मीच होशील. १३८१ अशा प्रकारें कर्मापासून माझ्या प्रातीपर्यंत उपायांची स्पष्टता तुला दाखवून दिली, हें लक्षांत आण. १३८२ कारण अर्जुना ! आधीं तर सारीं कर्मे मला अर्पण केलीं कीं, सर्व ठिकाणीं माझी प्रसन्नताच प्राप्त होते. १३८३ नंतर माझ्या ह्या प्रसादानें माझे ज्ञान परिपूर्ण होतें. आणि त्याच्या योगेंकरून निश्चयानें माझ्या स्वरूपामध्ये ऐक्य होतें. १३८४ मग पार्था ! त्या ठिकाणीं साध्य आणि साधन हीं दोन्हीही

नाहींशीं होतात. किंबहुना तुला कांहींच उरत नाही झटले तरी चालेल. १३८५ तर तूं आपलीं सारीं कर्मे सदा सर्वकाल मला अर्पण केलींस, त्यामुळे आज ही माझी प्रसन्नता तुला प्राप्त झाली आहे. १३८६ झणून ह्या प्रसादाच्या बळाने ह्या युद्धामध्ये आणखी एक नवीनच आडकाठी येईल, हें एक वेळही मनांत आले नाही. इतका मी तुला भुलून गेलों आहे. १३८७ कारण, प्रपंचासह अज्ञानाचा नाश होतो, जिच्या योगाने एक मीच व्यक्त होतो, त्या युक्तीचा उपाय हें ह्या गीतेचें स्वरूप आहे. १३८८ मी तुला अनेक प्रकारांनीं ज्ञान दिलें. येणेकरून धर्म आणि अधर्मरूप जें जें झणून कांहीं अज्ञान आहे, तें सारें नाश पावले आहे.” १३८९

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ६१

[सर्वधर्मान्परित्यज्य] आशा जैसी दुःखार्तें । व्याली निंदा दुरितें । हें असो जैसें दैन्यातें । दुर्भगत्व ॥ १३९० ॥ तैसें स्वर्गनरकसूचक । अज्ञान व्याले धर्मादिक । तें सांझनि घालीं अशेख । ज्ञानें येणें ॥ ९१ ॥ हातीं घेऊनि तो दोर । सांढिजे जैसा सर्पाकार । कां निद्रात्यागे धराचार । स्वप्नीचा जैसा ॥ ९२ ॥ ना ना सांढिलेनि कंवळें । चंद्रीचें धुपे पिवळें । व्याधित्यागे कंडुवाळें । पण मुखाचें ॥ ९३ ॥ अगा दिवसा पाठी देउनी । मृगजळ घापे लज्जनी । कां काष्ठत्यागे वन्ही । त्यजिजे जैसा ॥ ९४ ॥ तैसें धर्माधर्माचें उवाळ । दावी अज्ञान जें कां मूळ । तें त्यज्जनि त्यजीं सकळ । धर्मजात ॥ ९५ ॥ [मामेकं] मग अज्ञान निमालिया । मीचि येक असें अपेसया । 'सिनिद्र स्वप्न गेल्यां । आपण पें जैसें ॥ ९६ ॥ तैसा मी एकवांचूनि कांहीं । मग भिन्नाभिन्न आन नाही । सोडईबोधें तैसाच्या ठायीं । अनन्य होय ॥ ९७ ॥ [शरणं ब्रज] पें आपलेनि भेदेबिण । माझे जाणिजे जें एकपण । तयाचि बांव शरण । मज येणें गा ॥ ९८ ॥ जैसें घटाचेनि नाशें । गंगीनी गगन प्रवेशे । मज शरण येणें तैसें । ऐक्य करी ॥ ९९ ॥ सुवर्णमणि सोनयां । ये कळोळ जैसा पाणियां । तैसा मज धनंजया । शरण ये तूं ॥ १४०० ॥

१ पातकें. २ दुर्वैषणा. ३ सोडून दे. ४ प्रपंच. ५ कावीळ रोगाचें. ६ चांदणें. ७ कडवटपणा. ८ बंड. ९ नाश पावल्यावर. १० निद्रेसह. ११ भिन्नाभिन्न जें द्वैत त्याच्या ठाई. १२ घटाकाश आकाशांत मिळतें.

[अहं त्वा सर्वपापेभ्यः] बांचूनि सागराच्या पोटी । वडवा- नळ शरण आला किरीटी । जाऊं न ठके तया गोठी । वाळुनि दे पां ॥ १ ॥ मजही शरण रिधिजे । आणि जीव- त्वेंचि अशिजे । धिग्न बोलीं यिया न लेंजे । प्रज्ञा केवि ॥ २ ॥ अगा प्राकृताही राया । आगीं पडे जें धनंजया । तें दसिरुहि कीं तया । समान होय ॥ ३ ॥ मा मी विश्वेश्वर भेटें । आणि जीवेंप्रधी न सुटे । हे बोल नको बोखेदे । कौनी लाऊं ॥ ४ ॥ झणौनि मी होऊनि मातें । सेवणें आहे आयितें । तैसें करी हाता येतें । ज्ञानें येणें ॥ ५ ॥ मग ताकौनियां काढिलें । लोणी भाषौतें ताकीं घातलें । परि न धेपेचि कांहीं केलें । तेणें जेवि ॥ ६ ॥ तैसें अद्वयत्वें मज । शरण रिघालिया तुज । धर्माधर्म हे सहज । लागतील ना ॥ ७ ॥ कोह उमें खाय माती । तें परिसाचिये संगती । सोनें जालया पुढती । न शिविजे मळें ॥ ८ ॥ हें असो काष्ठापासोनि । मथूनि घेतल्या वन्ही । मग काष्ठेही कोंडोनि । न ठके जैसा ॥ ९ ॥ अर्जुना काय दिनकर । देखत आहे आंधार । कीं प्रबोधी होय गोचर । स्वप्नभ्रम ॥ १४१० ॥ तैसें मजसीं येकवटलेया । मी सर्वरूप वांचुनियां । आन कांहीं उरावया । कारण असें ॥ ११ ॥ [मोक्षयिष्यामि] झणौनि तयाचें कांहीं । चितीं ना आपल्या ठाई । तुसें पाप- पुण्य नाही । मीचि होईन ॥ १२ ॥ तेथ सर्वबंधलेंक्षणें । पापें उरावें दुजेपणें । तें माझ्या बोधीं बोयाणें । होऊनि जाईल ॥ १३ ॥ जळीं पडिलिया लवणा । सर्वही जळ होय विवेक्ष- णा । तुज मी अनन्यशरणा । होईन तैसा ॥ १४ ॥ येतुलेनि अपेसया । सुटलाचि आहासि धनंजया । [मा शुचः] वेई मज प्रकाशोनियां । सोडवीन तूतें ॥ १५ ॥ याकारणें पुढती । हे आधी न वाहे चितीं । मज एकासि ये सुमती । जाणोनि शरण ॥ १६ ॥ ऐसें सर्वरूपरूपसें । सर्वदष्टिबोळसें । सर्वदेशनिवासें । बोलिले श्रीकृष्ण ॥ १७ ॥ [स्वानुभवसुखो- क्तयः] मग सांवळा सकंकेण । बाहु पसरौनि दक्षिण । आ- लिंगिला स्वशरण । भक्तराज तो ॥ १८ ॥ न पेंवेतां जयातें । कोखे सुनि बुद्धीतें । बोलणें मागीतें । बोसरेलें ॥ १९ ॥ ऐसें जें कांहीं येक । बोला बुद्धीसिही अटक । तें घावया

१ टाकून दे. २ लाजत नाही. ३ यःकश्चित् राजाच्या. ४ बटकूर. ५ जीवदशा. ६ वाईट. ७ ऐकू. ८ ताकांतून. ९ पुनः. १० न राहें. ११ जाणूतें. १२ प्रत्यक्ष. १३ चिंतू नको. १४ सर्वथैव बंधाला कारण अशा. १५ व्यर्थ. १६ हे सुज्ञा. १७ प्रकट होऊन. १८ मनोव्यथा. १९ सर्व रूपें ज्याच्या योगानें रूपवान् होतात. २० हस्तभूषणयुक्त. २१ केवळ आपल्याला शरण आलेला. २२ ज्या वस्तूची प्राप्ति न होतां बोलणें बुद्धीला काखेस मारून मागीतें=मागे हटतें अशी जी वस्तु. २३ मागे हटलें. २४ दुःप्रवेश्य.

मिष । खेपाचें केलें ॥ १४२० ॥ हृदया हृदय येक जालें ।
 ये हृदयीचें ते हृदयी घातलें । द्वैत न मोडितां केलें । आ-
 पणाऐसें अर्जुना ॥ २१ ॥ दीप दीप लाविला । तैसा परि-
 ष्वंग तो जाल्म । द्वैत न मोडितां केला । आपणपें पार्थ ॥
 २२ ॥ तेव्हां सुखाचा मग तया । पूर आला जो धन-
 जया । तेथ वाढ तन्हीं बुढोनियां । ठेला देव ॥ २३ ॥
 धिषु धिषुते पावों जाये । तें पावणें ठाकें दुणा होये । वरी
 सिंगे पुरवणिये । आकाशही ॥ २४ ॥ तैसं तया दोषांचें
 मिळणें । दोषां नावरे जाणावें कवणें । किंबहुना श्रीनारायणें ।
 विश्व कांदलें ॥ २५ ॥ [‘गीतायाः गर्भे त्रिकांशोऽपि व्याक-
 रोति’] एवं वेदाचें मूळसूत्र । सर्वाधिकारैकपवित्र । श्रीकृष्णें
 गीताशास्त्र । प्रकट केलें ॥ २६ ॥ येथ गीता मूळ वेदां ।
 ऐसे केवि पां आलें बोधा । हें झणाल तरी प्रसिद्धा ।
 उपपत्ति सांगों ॥ २७ ॥ तरी जयाच्या निश्चांसी ।
 जन्म झालें वेदराशी । तो सत्यप्रतिज्ञ पेंजेसी । बो-
 लिला स्वमुखें ॥ २८ ॥ झणौनि वेदां मूळभूत । गीता
 झणो हें होय उचित । आणिकही येकी येथ । उपपत्ति
 असे ॥ २९ ॥ जें न नशत स्वरूपें । जयाचा विस्तार जेथ
 रूपे । तें तयाचें झणपे । बीज जर्गी ॥ १४३० ॥ तरि
 कांडत्रयात्मक । शब्दराशी अशेष । गीतेमाजि असे रेंव ।
 बीजें जैसा ॥ ३१ ॥ झणौनि वेदांचें बीज । श्रीगीता
 होय हें मज । गंमे आणि सहज । दिसतही आहे ॥ ३२ ॥
 जे वेदांचे तिन्ही भाग । गीते उमटले असती चांग । भूष-
 णरणीं सर्वांग । शोभलें जैसें ॥ ३३ ॥ तियेचि कर्मादिकें
 तिन्हीं । काडें कोणकोणे स्थानी । गीते आहाति तें नयनीं ।
 दाखळ आइक ॥ ३४ ॥ [‘गीताशास्त्रोत्पत्त्यादिप्रस्तावना’]
 तरि पहिला जो अध्याय । तो शास्त्रप्रवृत्तिप्रस्ताव । द्वितीयीं
 सांख्यसद्भाव । प्रकाशिला ॥ ३५ ॥ मोक्षदानां स्वतंत्र ।
 ज्ञानप्रधान हें शास्त्र । येतुलें दुर्जी सूत्र । उभारिलें ॥ ३६ ॥
 [‘कर्मकांड’] मग अज्ञानें बांधलेया । मोक्षपदी बैसावया ।
 साधनारंभ तो तृतीया- । ध्यायीं बोलिला ॥ ३७ ॥ जे दे-
 हाभिमानबंधें । सांझि काम्यनिषिद्धें । विहित परि अप्रमादें ।
 अनुष्ठावें ॥ ३८ ॥ ऐसेनि सद्भावें कर्म करावें । हा तिजा
 अध्यायीं देवें । निर्णय केला तें जाणवें । कर्मकांड येथ
 ॥ ३९ ॥ [‘उपासनाकांड’] आणि तेंचि नित्यादिक । अज्ञा-
 नाचें आवश्यक । आचरतां मोचक । केंवी होय पां ॥ १४४० ॥
 ऐसी अपेक्षां जालिया । बद्ध सुसुधुते आलिया । देवें ब्रह्मा-

१ आलिंगनाचें निमित्त केलें. २ दोषांचे देह तसेच
 असतां. ३ आलिंगन. ४ मोठा. ५ साक्षास. ६ भरलें.
 ७ सर्व अधिकारांत अतिशुद्ध. ८ सयुक्तिक कारण. ९ श्वासो-
 च्छ्वासांपासून. १० प्रतिज्ञेवर. ११ न नासतां. १२ कर्म-
 उपासना-ज्ञानरूप. १३ वेद. १४ वृक्ष. १५ वाटे. १६ अशा
 प्रकारें. १७ इच्छा. १८ मोक्षच्छुस्थितीला.

पणवें क्रिया । सांगीतली ॥ ४१ ॥ जे देह बाचा मानचें ।
 विहित निपजे जें जैसें । तें येक ईश्वरोद्देशें । कीजे झणौतलें
 ॥ ४२ ॥ हेंचि ईश्वरी कर्मयोगें । भजनकथनाचें सांगें ।
 आदरिलें शेषभागें । चतुर्यांचेनी ॥ ४३ ॥ तें विश्वरूप
 अकरावा । अध्याय संपे जंव आषषा । तंव कर्म ईश म-
 जावा । हें जें बोलिलें ॥ ४४ ॥ तें अध्यायायीं उषड ।
 जाण येथें देवतोकांड । शास्त्र सांगतसे भाड । मोडुनि
 बोले ॥ ४५ ॥ [‘ज्ञानकांड’] आणि तेणेंचि ईशप्रसादें । श्री-
 गुरुसंप्रदायलब्धें । साच ज्ञान उद्गोधे । कोवळें जें ॥ ४६ ॥
 तें अद्वैतादिप्रभृतीकी । अथवा अमानित्वादिकीं । वाढविजे
 झणौनि लेखीं । बारावा गणू ॥ ४७ ॥ तो बारावा अध्याय
 आदी । आणि पंधरावा अवधि । ज्ञानफळपाकसिद्धि । निरु-
 पणासी ॥ ४८ ॥ झणौनि चव्दही इहीं । ऊर्ध्वमूर्ती अ-
 ध्यायीं । ज्ञानकांड ये ठायीं । निरुपिजे ॥ ४९ ॥ एवं
 कांडत्रयरूपिणी । श्रुतीच हे कोटिंशवाणी । गीतापद्यरमाचीं
 लेणीं । लेयिलि आहे ॥ १४५० ॥ हें असो कांडत्रयात्मक ।
 श्रुति मोक्षरूप फळ येक । बोभावे जें आवश्यक । ठाकावें
 झणौनी ॥ ५१ ॥ [‘षोडशाध्यायत्रयकारणं दर्शयति’]
 तयाचेनि साधन ज्ञानेंसी । वैर करी जो प्रतिदिशशीं । तो
 अज्ञानवर्ग पोडशीं । प्रतिपादिजे ॥ ५२ ॥ तोचि शास्त्राचा
 बोळावा । घेवोनि वैरी जिर्णावा । हा निरोप तो सतरावा ।
 अध्याय येथ ॥ ५३ ॥ ऐसा प्रथमालागोनी । सतरावा लेणी
 करुनी । आत्मनिश्वास विवरुनी । दाविला देवें ॥ ५४ ॥
 तया अर्थजातां अशेषां । केला तात्पर्याचा आवाका । तो
 हा अठरावा देखा । कलेशाध्याय ॥ ५५ ॥ एवं सकळ सां-
 ख्यसिधु । श्रीभगवद्गीताप्रबंधु । हा औदार्यें आगळा वेडु ।
 मूर्त जाण ॥ ५६ ॥ वेद संपन्न होय ठाई । परि कृपण ऐसा
 आन नाहीं । जे कार्णी लागला तिहीं । वर्णाच्याचि ॥ ५७ ॥
 येरां भवव्यथा ठेलियां । श्रीशूद्रादिकां प्राणियां । अनेकसर
 मांडूनियां । राहिला आहे ॥ ५८ ॥ तरी मज पाहातां तें
 मागील उणें । फेडावया गीतापणें । वेद वेडला मेलतेणें ।
 सेव्य होआवया ॥ ५९ ॥ ना हें अर्थें रिगोनि मनीं । अवणें

१ टिकाण. २ आठ अध्यायांत. ३ उपासनाकांड.
 ४ गीताशास्त्र. ५ प्रतिबंध निवारून, गोधदून. ६ गणनंत.
 ७ पंधराव्याच्या. ८ लहानशी. ९ गर्जून सांगे. १० सो-
 बती. ११ जिवावा. १२ शेवट. १३ वेद, वेद हे निःश्वासा-
 पासून झाले ‘यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽस्मिन्नं जगत् ।
 निर्ममे...’ १४ विचार. १५ शिखररूप. १६ प्रकृतिपुरुषांचें
 विवेचन ज्यानें केलें जातें तो सांख्यसमुद्र. १७ ग्रंथ.
 १८ प्रत्यक्ष. १९ समर्थ. २० कदर्थु (कद्). २१ अनधिकारी.
 २२ मला (ज्ञानदेवाला) असं वाटतें कीं. २३ आकाररूप.
 २४ मल्ला कोणासही.

लागोनि कानीं । जपमिधें वदनीं । वसोनियां ॥ १४६० ॥
 ये गीतेचा पाठ जो जाणे । तयाचेनि सांगातीपणें । गीता
 लिहोनि वाहणें । पुस्तकमिधें ॥ ६१ ॥ ऐसैसा मीसकटा ।
 संसाराचा चोहटां । गैवादि घालित चोखटा । मोक्षसुखाची
 ॥ ६२ ॥ परि आकाशी वसावया । पृथ्वीवरी बैसावया ।
 रविदीप्ती राहाटावया । आचार नभ ॥ ६३ ॥ तेवि उत्तम
 अधम ऐसें । सेवितां कवणातेंही न पुसे । कैवल्यदानें सरिसें ।
 निववीत जगा ॥ ६४ ॥ यालागि मांगिलि कुटी- । भ्याला
 वेद गीतेच्या पोटी । रिगला आतां गोमटी । कीर्ति पातला
 ॥ ६५ ॥ झणौनि वेदाची सुसेव्यता । ते हे मूर्त जाण श्री-
 गीता । श्रीकृष्णें पंडसुता । उपदेशिली ॥ ६६ ॥ परि वत्सा-
 चेनि वोरखें । दुभर्तें होय घरा उद्देशें । जालें पांडवाचेनि
 मिधें । जगदुद्धरण ॥ ६७ ॥ चातकाचिये केणवे । मेव
 पाणिपेसिधावे । तेथ वराचर आघवें । निर्वाळें जेवि ॥ ६८ ॥
 कां अनन्यगती- कमळा- । लागीं सूर्य ये वेळोवेळा । किं सु-
 खिया होइजे डोळा । त्रिभुवनीचा ॥ ६९ ॥ तैसें अर्जुनाचेनि
 व्याजें । गीता प्रकाशनि श्रीराजें । संसारायेवढें थोर ओझें ।
 फेडिलें जगाचें ॥ १४७० ॥ सर्वशास्त्ररत्नदीप्ती । उजळिता
 हा त्रिजगती । सूर्य नव्हे लक्ष्मीपती । वैष्णवाकाशीचा ॥ ७१ ॥
 बापकुळ तें पवित्र । जेथिचा पार्थ या ज्ञाना पात्र । जेणें
 गीता केलें स्वतंत्र । आचार जगा ॥ ७२ ॥ हें असो मग
 तेणें । सद्गुरु-श्रीकृष्णें । पाथोचें मिसळणें । आणिलें द्वैता ॥ ७३ ॥
 पाठीं झणतसे पांडवा । शास्त्र हें मानलें की जीवा । तेथ
 येरू झणे देवा । आपुलिया कृपा ॥ ७४ ॥ तरि निर्धान
 जोडावया । भाग्य घडे गा धनंजया । परि जोडिलें भोगा-
 वया । विर्यायें होय ॥ ७५ ॥ पै क्षीरसागरायेवढें । अविरजि
 दुधाचें भाडें । सुरां असुरां केवढें । मथितां जालें ॥ ७६ ॥
 तें सौंदर्यही फळा आलें । जें अमृतही डोळां देखिलें । परि
 वरिचिल चुकले । जंतनेतें ॥ ७७ ॥ तेथ अमरत्वा बोंगरिलें ।
 तें मरणाचिलागीं जालें । भोगों नेणतां जोडलें । ऐसें आहे
 ॥ ७८ ॥ नहुष खैगांधिपति जाला । परीं राहोटीं भावावला ।
 तो भुजंगत्व पावला । नेणसी काथी ॥ ७९ ॥ झणौनि बहुत पुण्य
 दुवां । केलें तेणें धनंजया । आजि शास्त्रराजा दैया । जालासि

१ मजसहित. २ चवाक्यावर. ३ सत्र. ४ फिरण्याला. ५ अवकाश. ६ मोक्षदानें. ७ मागल्या निंदेला भ्याला. ८ पान्यानें, ममतेनें. ९ दयेनें. १० पाण्यासहित. ११ घात झालें. १२ एकनिष्ठ अशा कमळासाठी. १३ दूर केलें. १४ सुखरूप आकाशीचा. १५ वसतिस्थान. १६ आलिंगन. १७ गुप्त धन. १८ कवित्. १९ न विरजलेलें. २० जिवा-वर उदार होऊन झटणें. २१ संभाळण्याला. २२ वाडिलें. २३ नहुष राजाला कांहीं दिवस खगोचें आधिपत्य मिळालें तेव्हां. २४ वर्तणुकीत चुकला. २५ या गीतेवर.

विषय ॥ १४८० ॥ तरि यवाचि शास्त्राचेनि । संप्रदायें पांघु-
 रौनि । शास्त्रार्थ हा निकैनी । अनुष्ठी हो ॥ ८१ ॥ येन्ही
 अमृतमथना- । सारिखें होईल अर्जुना । जरी रिचसी अनुष्ठाना ।
 संप्रदायेंवीण ॥ ८२ ॥ गाय घड जोडे गोमटी । ते तैचि
 पैय दे किरिटी । जें जाणिजे हातवटी । सांजवणीची ॥ ८३ ॥
 तैसा श्रीगुरु प्रसन्न होये । शिष्य विद्याही कीर लाहे । परि
 ते फळे संप्रदायें । उपासिलिया ॥ ८४ ॥ झणौनि शास्त्री जो
 इये । उचित संप्रदाय आहे । तो ऐक आतां बहुवें ।
 आदरेंसी ॥ ८५ ॥

“आशेपासून दुःखें; आणि निंदेपासून पा-
 तकें जशीं उत्पन्न होतात; हें असो, दुर्दैव जसें
 दारिद्र्य उत्पन्न करतें, १३९० त्याप्रमाणें स्वर्गनर-
 कसुचक अज्ञानापासून धर्मादिक उत्पन्न होतात.
 तीं सारीं ह्या ज्ञानाच्या योगानें नाहींशीं करून
 टाक. १३९१ दोर हातांत घेऊन सर्पाकार
 जसा टाकून घावा, किंवा निद्रा गेल्यानंतर
 स्वप्नांतला प्रपंच जसा सोडावा, १३९२ किंवा
 कामीण नाहींशी झाली झणजे चंद्राच्या चांद-
 प्यांतील पिवळेपणाही नाश पावतो; रोग गेला
 झणजे तोंडाचा जसा कडवटपणा जातो;
 १३९३ दिवस गेला झणजे मृगजळ जसें नाहींसें
 होतें, किंवा (जळकें) लांकूड टाकून दिलें झणजे
 जसा अग्नि टाकावा लागतो, १३९४ त्याप्रमाणें
 धर्माधर्माचें बंड, ज्याच्या मुळाशीं अज्ञान अस-
 लेलें दृष्टीस पडतें, तें टाकून सारे दरोबस्त
 धर्मच सोडून दे. १३९५ तें अज्ञान निघून गेलें
 झणजे अर्थात् मीच एक राहतों. निद्रेसहवर्त-
 मान स्वप्न गेलें झणजे जसें आपलें आपण राहतों,
 १३९६ त्याप्रमाणें माझ्या एकाशिवाय दुसरे
 भिन्न अभिन्न असें दुसरे कांहींच नाहीं. “तोच
 मी” ह्या ज्ञानानें त्याच्या ठिकाणीं अनन्य हो.
 १३९७ आपल्याही भेदावांचून माझे एकत्व
 जाणणें त्याचेंच नांव मला शरण येणें होय.
 १३९८ घटाचा नाश झाला झणजे जसें त्यां-
 तील आकाश, आकाशामध्ये शिरतें, त्याप्रमाणें
 मला शरण येणें माझ्याशीं ऐक्य करतें. १३९९
 सोन्याचे मणी जसे सोन्यांत येतात; पाण्याच्या

१ धारण करून. २ चांगलेपणांन. ३ दूध देते, पिबों ये
 अशा पाठीं धार काढणें. ४ दोहनाची. ५ आस्थापूर्वक.

लाटा जशा पाण्यांत येतात; त्याप्रमाणे अर्जुना! तूही मला शरण ये. १४०० नाहींतर अर्जुना! समुद्राच्या पोटांमध्ये वडवानळ शरण आला तर काय उपयोग? तो त्याला जाळणार नाहीं, ही गोष्ट सोडून दे. १४०१ मला शरण येऊन सुखां जीवपणानेच कायम राहिला, अशा बोलण्याला धिक्कार असो. तसें करतांना बुद्धीला लज्जा वाटणार नाहीं काय? १४०२ वा अर्जुना! यःकश्चित् राजा-च्या आंगाखाली पडणारें एखादें बटकुर असलें, तर तें सुखां त्याच्या बरोबरीचें होतें. १४०३ मग मी तर विश्वेश्वर आहे, आणि तो मला भेटल्यानंतरही जीवदशा सुटणार नाहीं, हें दुर्भाषण कानावर सुखां घेऊं नको. १४०४ ह्मणून मी होऊन आयतें मलाच सेवन करावयाचें असतें. ह्याकरितां ह्या आलेल्या ज्ञानानें मी हस्तगत होईन असें कर. १४०५ मग ताकापासून काढलेलें लोणी फिरून ताकांत घातलें, तर तें कांहीं केलें तरी जसें घेत नाहीं, १४०६ त्याप्रमाणें अद्वयपणानें मला तूं शरण आलास ह्मणजे अर्थात् तुला धर्माची किंवा अधर्माची कांहीं गरज राहणार नाहीं. १४०७ लोखंड उभें असलें तर, माती खातें. पण तें परिसाच्या संगतीनें सोनें झाल्यानंतर मळ त्याला शिवत नाहीं. १४०८ हें असो. काष्ठापासून मंथन करून अग्नि काढला ह्मणजे मग तो जसा काष्ठांनीं कोंडून राहत नाहीं, १४०९ अर्जुना! सूर्य हा कधीं आंधार पाहतो काय? किंवा जागृतींत स्वप्नाचा भ्रम प्रकट होतो काय? १४१० त्याप्रमाणें माझ्याशीं ऐक्यरूपता झाली ह्मणजे मग माझ्या सर्व स्वरूपाशिवाय, दुसरें रहावयाला कांहीं कारण आहे काय? १४११ ह्मणून त्याची तूं आपल्या ठिकाणीं कांहींएक चिंता करूं नको. हें पहा! तुझे पाप आणि पुण्य मीच होईन. १४१२ तेव्हां सर्वथैव बंधाला कारण, अशा पापानें दुसरेपणानें रहावें हें माझ्या ज्ञानानें व्यर्थ होऊन जाईल. १४१३ हे सुज्ञा! पाण्यांत मीठ पडलें तर

सारें पाणीच होऊन जातें. त्याप्रमाणें तूं मला अनन्यभावे शरण आलास ह्मणजे तसाच मद्रूप होऊन जाशील. १४१४ अर्जुना! तेवढ्यानें आपोआपच मुक्त होशील. याकरितां मला आपलासा करून घे. ह्मणजे मी तुला सोडवीन १४१५ आणखी पुन्हां ही मनामध्ये चिंता वाहूं नको. हे बुद्धिमंता! मला एकालाच तूं शरण ये." १४१६ सर्व रूपे ज्याच्या योगानें रूपवान् होतात; सर्व दृष्टी ज्याच्या योगानें डोळस होतात; असे सर्वत्र व्यापून असणारे जे श्रीकृष्ण ते ह्याप्रमाणें बोलले. १४१७ आणखी कंकणयुक्त शामवर्णाचा उजवा बाहु पसरून आपणास शरण आलेल्या भक्तराजास आलिंगन दिलें. १४१८ ज्या वस्तूची प्राप्ति न होतां, बोलणें बुद्धीला काखोटीस मारून मार्गे हटतें; १४१९ अशी जी कांहीं एक वस्तु, जिच्यामध्ये आपण व बुद्धिही शिरकत नाहीं, ती वस्तु देण्यासाठीं आलिंगनाचें एक निमित्त केलें. १४२० हृदयाला हृदय भिडलें; ह्या हृदयांतलें त्या हृदयांत घातलें; द्वैत न मोडतां अर्जुनाला आपणासारखें करून सोडलें. १४२१ दिव्यानें दिवा लावावा त्याप्रमाणें तो आलिंगनाचा प्रकार झाला. द्वैत न मोडतां पार्थाला स्वस्वरूप करून सोडलें. १४२२ तेव्हां त्या अर्जुनाला इतका कांहीं सुखाचा पूर आला कीं, देव येवढे मोठे होते तरी सुखां त्यांत बुडून गेले. १४२३ समुद्राला समुद्र भेटावयास गेला ह्मणजे तें भेटणें एका बाजूस राहून तोच दुप्पट होतो. आणि शिवाय आपल्या सांठ्याला अवकाश सुखां होतो. १४२४ त्याप्रमाणें त्या दोघांची भेट दोघांनाही आवरेना. हें कळणार तरी कोणाला? किंवा शुभ्र श्री नारायणांनीं सारें विश्वच कोंडून टाकलें ह्मटलें तरी चालेल. १४२५ अशा प्रकारें वेदाचें मूळसूत्र, सर्व अधिकारामध्ये अत्यंत पवित्र, असें जे गीता-शास्त्र, तें श्रीकृष्णांनीं प्रगट केलें. १४२६ येथें गीता ही वेदाचें मूळ असें कशावरून समजलें असें ह्मणाल ह्मणून, सबळ कारण सांगतो.

१४२७ तर ज्याच्या श्वासोच्छ्वासापासून वेदरा-
शीचें जन्म झालें, असा जो सत्यप्रतिज्ञ भगवान्
त्यानें आपल्या मुखानें ती सांगितली. १४२८ म्ह-
णून वेदांना मूलभूत गीता असें म्हटलें तें योग्यच
आहे. शिवाय आणखीही एक कारण आहे.
१४२९ नाश न पावणारें जें स्वरूप, आणि
ज्याचा विस्तार ज्यांत गुप्त असतो, तें त्याचें
बीज असें जगामध्ये म्हणतात. १४३० तर
बीजामध्ये जसा वृक्ष असतो, त्याप्रमाणें त्रिकां-
डात्मक एकून एक वेदराशी ह्या गीतेमध्ये आ-
हेत. १४३१ ह्याणून श्रीगीता हें वेदांचें
बीज आहे असें मला वाटतें. आणि उघड दि-
सण्यांतही दिसतेंच आहे. १४३२ रत्नालंका-
रांनीं जसें सारें आंग शोभतें, त्याप्रमाणें वेदाचे
जे तिन्ही भाग ते, गीतेमध्ये उत्कृष्ट रीतीनें उम-
टलेले आहेत. १४३३ तींच कर्मादिक तीन
कांडें, गीतेमध्ये कोणकोणत्या ठिकाणीं आहेत
तीं डोळ्यांस दाखवून देऊं. ऐका. १४३४ तर
पहिला जो अध्याय तो शास्त्रारंभाची प्रस्तावना
होय. दुसऱ्या अध्यायांत सांख्यशास्त्राचीं उत्तम
लक्षणें व्यक्त केलीं. १४३५ हें शास्त्र ज्ञानप्रधान
असून मोक्षदान देण्याविषयीं मुखत्यार आहे,
अशाबद्दल दुसऱ्या अध्यायांत सूत्राची उभारणी
केली आहे. १४३६ नंतर अज्ञानानें बद्ध झाले-
ल्याला मोक्षपदावर बसावयाला साधनें काय
तीं सांगण्याला आरंभ तिसऱ्या अध्यायांत केला
आहे, १४३७ असा कीं, वेदाभिमानानें बद्ध झा-
लेलीं काम्य, व निषिद्ध कर्मे सोडून विहित अ-
सणारीं कर्मे, प्रमादरहित अशीं आचरण करावीं-
त. १४३८ अशा सद्भावनेनें कर्म करावें. हा दे-
वांनीं तिसऱ्या अध्यायांत निर्णय सांगितला.
तें येथें कर्मकांड आहे हें लक्ष्यांत ठेवावें. १४३९
आणखी तसेंच नित्य नैमित्तिक कर्म आचरण
करतांना अज्ञानाची आवश्यक मुक्तता कशी
होईल ? १४४० बद्ध मुमुक्षु होऊन त्यास
अशी अपेक्षा उज्ज्वल्यास त्याकरितां देवांनीं
ब्रह्मार्पणामध्ये क्रिया सांगितली. १४४१ ती
अशी कीं, कायावाचामनें करून जें जसें वि-

हित कर्म होईल, तें एक ईश्वराप्रीत्यर्थ करावें
असें सांगितलें. १४४२ हेंच कर्मयोगानें ईश्व-
राचें भजन करण्याचें ठिकाण होय. हें चवथ्या
अध्यायांतील राहिलेल्या भागांत सांगितलें.
१४४३ तें अकराव्या अध्यायांतील विश्वरूप
संपेपर्यंत जें सारें कर्मानें ईश्वराचें भजन
करावें असें कथन केलें, १४४४ तेंच देवताकांड
आठ अध्यायांत स्पष्ट, सर्व शंका दूर
करून हें शास्त्र बोलले. १४४५ आणि त्याच
ईश्वरप्रसादानें श्रीगुरुकृपाप्राप्तीनें कोमल आणि
सत्वज्ञानाचा जो अनुभव, १४४६ तें 'अद्वेष्टा-
दि'क श्लोकांनीं किंवा 'अमानित्वादि'क श्लोकां-
नीं वाढविलें. ह्यांतच बाराव्याची गणना आहे.
१४४७ तो बारावा अध्याय पहिला, आणि
पंधरावा शेवटचा, येथपर्यंत ज्ञानफलाची पाक-
सिद्धि निरूपण केली आहे. १४४८ ह्याणून ह्या
चारी अध्यायांनीं 'ऊर्ध्वमूल' ह्या अध्यायाच्या
अखेरपर्यंत ज्ञानकांडाचें निरूपण केलें. १४४९
अशा प्रकारची गीतापद्यरूप रत्नालंकार घात-
लेली ही एक गोजिरवाणी लहानशी श्रुतीच
आहे. १४५० हें असो. ही त्रिकांडात्मक श्रुति,
मोक्षरूप फल देण्यासाठीं 'थांबा' 'थांबा'
ह्याणून हाका मारित आहे. १४५१ त्याचें साधन
जें ज्ञान, त्याच्याशीं प्रत्येक दिवशीं वैर करणारा
जो अज्ञानवर्ग, तो सोळाव्या अध्यायांत वर्णन
केला आहे. १४५२ तो वैरी, शास्त्राचा जेही
घेऊन जिंकावा, ह्याचें निरूपण तो सतरावा
अध्याय होय. १४५३ ह्याप्रमाणें पहिल्या अ-
ध्यायापासून सतराव्या अध्यायापर्यंत देवांनीं
आपल्याच श्वासोच्छ्वासाचें-वेदांचें-निरूपण
केलें. १४५४ त्यांतील एकून एक तात्पर्यांचा
ज्यांत विचार केला आहे, तो हा अठरावा-
कळसरूप अध्याय आहे हें समजावें. १४५५
अशा प्रकारें सांख्य-प्रकृति पुरुषाचा-विचार
केलेल्या शास्त्राचा समुद्र असा हा श्रीमद्भगव-
द्गीता ग्रंथ प्रत्यक्ष वेदाचाच अवतार असून
औदार्यानें त्याहूनही थोर आहे. १४५६ वेद
आपल्या ठिकाणीं समर्थ आहे खरा; पण त्या-

च्या सारखा दुसरा कृपणच कोणी नाही. कारण, तो तिन्ही वर्णांच्याच कानांशी लागतो. १४५७ इतर स्त्रीशूद्रादिक प्राण्यांना ते संसारायातनेत पडले तर, त्यांना त्याने अनधिकारी करून ठेवले आहेत. १४५८ तर मला असे वाटते की, तो मागचा उणेपणा काढून टाकण्यासाठी आणि पाहिजे त्याला सेवन करता येण्यासाठी, गीतेच्याच रूपाने वेद जन्मास आला. १४५९ किंवा हे [गीताशास्त्र] अर्थाने मनांत शिरून श्रवणाने कानास लागून जपाच्या निमित्ताने मुखांत राहून, १४६० ह्या गीतेचा पाठ जो करतो, त्याच्या संगतीला बसून गीता लिहून पुस्तकरूपाने जो जवळ बाळगतो; १४६१ त्याला अशा अशा निमित्ताने संसाराच्या चव्हाळ्यावर मोक्षसुखाचे त्याने अन्नछत्रच घालून ठेवले आहे. १४६२ परंतु आकाशांत संचार करण्याला, पृथ्वीवर बसावयाला, सूर्यप्रकाश पसरावयाला जसे आकाशच अवार, १४६३ त्याप्रमाणे सेवन करतांना गीताही तू उत्तम आहेस की अधम आहेस हे विचारित नाही. मोक्ष देऊन सरसकट सर्व जगाला तृप्त करून सोडते. १४६४ याकरिता मागच्या निंदेला वेद भ्याला, आणि गीतेच्या पोटांत शिरला. झणून तो आतां सुंदर कीर्तीस पात्र झाला आहे. १४६५ ह्याकरितां वेदांचे सुलभ सेवन अशी जी ही मूर्तिमंत श्रीगीता, तिचा श्रीकृष्णांनीं अर्जुनाला उपदेश केला. १४६६ पण वासराच्या पांढ्याने साऱ्या घराला दुभते होते. तद्वत् अर्जुनाच्या निमित्ताने जगाचा उच्चार झाला. १४६७ चातकाची करुणा येऊन मेघ पाणी घेऊन धांवतो, तेव्हां सारे चराचर ज्याप्रमाणे गारीगार होते, १४६८ किंवा कमलाच्या एकनिष्ठेकरितां सूर्य वारंवार येतो; पण त्याने त्रिभुवनांतील सर्व डोळ्यांस संतोष होतो. १४६९ त्याप्रमाणे अर्जुनाच्या निमित्ताने लक्ष्मीकांतांनीं गीता प्रकट करून जगाचे संसारायेवढे प्रचंड ओझे कमी करून टाकले. १४७० हा लक्ष्मीपती नव्हे, तर त्रिभुवनांतील सर्व

शास्त्रज्ञांच्या प्रभेला दैदीप्यमान करणारा बवनाकाशांतील सूर्यच होय. १४७१ ते कुलही फार श्रेष्ठ व पवित्र होय, की ज्यांतील पार्थ, ह्या ज्ञानास पात्र होऊन त्याने गीता हे साऱ्या जगाला स्वतंत्र आवार करून सोडले. १४७२ हे असो. मग त्या सदृश श्रीकृष्णांनीं अर्जुनाची मिठी सोडली. १४७३ मग अर्जुनाला झणाले “हे शास्त्र तुझ्या जिवाला आवडले काय ? ” तेव्हां तो झणाला “देवा ! आपली रूपा.” १४७४ तर अर्जुना ! ठेवा मिळण्याइतके दैव अनुकूल होतें, परंतु जोडलेल्याचा उपभोग घेणे मात्र कठीण आहे. १४७५ देवदानवांना समुद्रमंथनाच्या वेळीं क्षीरसागरायेवढे विरजण न घातलेले दुधाचे भांडे मिळाले; १४७६ त्या साहसाचे फलही मिळालेले जे अमृत तेही डोळ्यांनीं पाहिले. पण कित्येक ते सांभाळावयास चुकले. १४७७ तेव्हां अमरत्व येण्यासाठी वाढलेले, ते मरणाचा कारण झाले. संपादलेल्याचा उपभोग कसा घ्यावा, हे माहित नसले झणजे हे असे होते. १४७८ नहुषराजा

१ नहुष हा आयुराजाच्या पुत्रांतील ज्येष्ठ पुत्र होय. हा राजा परम पराक्रमी व सद्गुणी असा होता. झणून शत्रूसुराच्या हत्येने इंद्र पीडित होऊन जलामध्ये विप्रांति घेत असतां, संपूर्ण देव आणि ऋषि यांनीं मिळून झाला इंद्रपदाचा अधिकारी केले होते. त्याप्रमाणे तो तेथील अधिकार व ऐश्वर्य भोगित असतां, काहीं काळाने यास असे वाटले की, इंद्राणींवाही उपभोग आपणांस घडावा, ह्यास्तव ह्याने तिला पाचारण्याकरितां, देवदूतांस पाठविले. तेव्हां तिनं गुरुबृहस्पतींच्या संमतीने असा निरोप पाठविला की, तू एखाद्या अपूर्व वाहनांत बसून ये, झणजे मी तुम्ही सेवा करीन. ते अपूर्व असे वाहन कोणते ? ह्याचा तो विचार करूं लागला. तेव्हां दुंदुवाने त्यास असे सुचले की, आजपर्यंत वाहनास कोणी सप्तऋषि लावलेले नाहीत, ह्याकरितां ते लावावेत, झणजे अपूर्व वाहन झाले. त्याप्रमाणे त्याने आपल्या वाहनास ऋषि लावून तो इंद्रायणीकडे जावयास निघाला, सारे ऋषि, आपल्या पायाखालीं कृमिकीटक सांपडून येत झणून पायाखालीं पहात पहात हळू हळू चालले होते. परंतु नहुषाला, जाण्याची फार त्वरा झाली होती. ह्यास्तव तो ऋषीस लताप्रहार करून “सप, सप”—लंकर लोकर पाय उचला—असें ह्याणू लागला. तेव्हां अगस्तिऋषीय कोप

कांहीं दिवस स्वर्गाचा राजा झाला होता. परंतु वर्तणुकीत चुकला. झणून तो सर्प झाला हें तुला माहित नाही काय ? १४७९ ह्याकरितां अर्जुना ! तूं पुष्कळ पुण्य केलें आहेस, झणूनच ह्या शास्त्राजाला पात्र झालास. १४८० तर ह्याच शास्त्राचे सांप्रदाय धारण करून ह्याच शास्त्रार्थ नीट रीतीने अनुष्ठान कर. १४८१ नाही तर अर्जुना ! सांप्रदायाशिवाय अनुष्ठान करशील तर, अमृतमंथनासारखें होईल बरें ! १४८२ अर्जुना ! गाय चांगली खाशी सांपडली, पण धार काढावयाची माहित असेल, तरच ती दूध देईल. १४८३ तसें श्रीगुरुही प्रसन्न होतील; शिष्याला निश्चय करून विद्याही प्राप्त होईल; परंतु ती सांप्रदायानें उपासना केल्यावांचून फलप्राप्ति मात्र होणार नाही. १४८४ झणून ह्या शास्त्रामध्ये जो उचित सांप्रदाय आहे, तो आतां नीट अगत्यपूर्वक ऐक.” १४८५

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।

न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥६७॥

[इदं ते] तरि तुवां हें जें पार्था । गीताशास्त्र लाघलें आस्था । [नातपस्काय] तें तपोहीना सर्वथा । [न] सांगावें ना हो ॥ ८६ ॥ [नाभक्ताय] अथवा तापस ही जाला । परि गुरुभक्ती जो ढिल्ले । तो वेदी अंजय वाळिले । तैसा वाळी ॥ ८७ ॥ ना तरि पुरोडेशु जैसा । न घापे वृद्ध तरी वायसा । गीता नेदी तैसी तापसा । गुरुभक्तीहीना ॥ ८८ ॥ [न चाशुश्रूषवे वाच्यं] कां तपही जोडे देहीं । भजे गुरुदेवांच्या ठाई । परि आकर्णेनीं नाही । चांड जरी ॥ ८९ ॥ तरि मागील दोहीं आणीं । उत्तम होय कीर जगीं । परि या श्रवणालागीं । योग्य नोहे ॥ ९४९० ॥ मुक्ताफळ भलतैसें । हो परि मुख नसे । तंव गुण प्रवेशे । तेथ काथी ॥ ९१ ॥ सागर गंभीर होये । हें कोण ना ह्मणत आहे । परि वृष्टी वायां

येऊन “तूंच सर्प होऊन पतन पावशील” असा त्यांनीं त्यास शाप दिला. त्याबरोबर तो अजगर होऊन पतन पावला.

—भा. उद्योग-अ० ११-१७—

१ अनुष्ठानादिरहिताला. २ उदासीन. ३ दूर केला. ४ त्याज्य करावा. ५ यज्ञाचा अवशेष चर. ६ श्रवणीं. ७ इच्छा. ८ कर्मानुष्ठानांत. ९ छिद्र. १० दोरा.

जाये । जाली तेथ ॥ ९२ ॥ धाळिया दिव्यास सुवावें । मग जें वायां धाडावें । तें आर्ता कां न करावें । उदारपण ॥ ९३ ॥ [कदाचन] झणोनि योग्य भलतैसे । होत परी चाड नसे । तरि झणें वांनिवसें । देसी हें तथा ॥ ९४ ॥ रूपाचा सुजाण बोळा । बोडवूं ये कायि परिमळा । जेथ जें माने तें फळा । तेथचि गा ॥ ९५ ॥ झणोनि तपी भक्ति । पाहावे ते सुभद्रापति । परि शास्त्रश्रवणीं भनासक्ति । बाळावेचि ते ॥ ९६ ॥ [नच मां योऽभ्यसूयति] ना तरी तपभक्ति । होऊनि श्रवणीं आर्ति । आथी ऐसी ही भांयती । देखसी जरी ॥ ९७ ॥ तरी गीताशास्त्रनिर्मिता । जो मी सकळलोकेशास्ता । तथा मातें सामान्यता । बोडेल जो ॥ ९८ ॥ माझ्या सजनेसि मातें । पैशुन्याचेनि भांडाते । येक आहाती तथातें । योग्य न ह्मण ॥ ९९ ॥ तथाची येर आघवी । सामग्री ऐसी जाणावी । दीपेवीण ठाणदिवी । रात्रिची जैसी ॥ १०० ॥ अंग गोरे आणि तरुणें । बरि लेयिलें आहे लेणें । परि येकलेनि प्राणें । सडिलें जेविं ॥ १ ॥ सोनयाचें सुंदर । निर्वाळिलें होय घर । परि सर्पांगना द्वार । रुंधलें आहे ॥ २ ॥ निपजे दिव्यास चोखट । परि माजी काळकूट । असो मैत्री कपट- । गर्भिणी जैसी ॥ ३ ॥ तैसी तपभक्तिमेधा । तथाची जाण प्रबुद्धा । जो माझ्यांची कां निंदा । माझीचि करी ॥ ४ ॥ याकारणें धनंजया । तो अफ मेर्धावी तपिया । तरि नको बापा इया । शास्त्रा औतळों देवों ॥ ५ ॥ काय बहु बोळों निंदका । योग्य संध्याहीसारीखा । गीता हे कवतिका- । लागींही नेदीं ॥ ६ ॥ झणोनि तपाचा धनुर्धरा । तळीं दाटोनि गांडोरा । बरि गुरुभक्तीचा पुरा । प्रोसाद जो जाला ॥ ७ ॥ आणि श्रवणेच्छेचा पुढां । दारवंदा सदा उघडा । बरी कलश चोखडा । अनिंदारजांचा ॥ ८ ॥

“तर अर्जुना ! तुला हें जें गीताशास्त्र प्राप्त झालें, तें ज्याला आस्था नाही, ज्याला तप नाही, त्याला कधीही सांगूं नकोस बरें ! १४८६ अथवा तपस्वीही आहे. परंतु गुरुभक्तीमध्ये ढिला असेल, तर वेदामध्ये जसे अंत्यजाला दूर टाकलें आहे, त्याप्रमाणें त्याला

१ तृप्ताला. २ वाढावें. ३ दवडावें. ४ क्षुधिताला. ५ कदाचित्. ६ कर्तुकांन. ७ पुढें करूं येईल. ८ आवड नसलेले. ९ त्यागावे. १० सामुग्री. ११ शासन करणारा. १२ ताडणानें. १३ प्रकाशमान. १४ नागिणीनें. १५ धरलें. १६ कपट आहे गर्भिणी जिच्या=कापट्यरूप. १७ केवळ तपाविषयीच बुद्धि. १८ बुद्धिमान्. १९ स्पर्शा. २० ब्रह्मदेवासारखा. २१ दगडाचा पाया. २२ देवालय. २३ दरवाजा. २४ कळस.

दूर टाक. १४८७ किंवा यज्ञाचा अवशेष, ह्यातारा कावळा असला तरी त्यास घालित नाहीत; त्याप्रमाणे तापस असून गुरुभक्तिहीन असेल तर, त्यास ही गीता देऊं नये. १४८८ किंवा देहाला तपही घडले असेल, गुरुदेवांच्या ठाई भक्तिही असेल, पण ऐकण्याची जर इच्छा नाही, १४८९ तर पूर्वी सांगितलेली दोन्ही आंगे जरी खरोखर त्याची चांगली असली तरी, तोही ऐकण्याला योग्य नाही. १४९० मोती कसलेही असले तरी, त्याला जर तोंड नाही, तर त्यांत दोरा जाईल काय ? १४९१ समुद्र गंभीर आहे, हे कोण नाही झणतो आहे ? पण त्यावर झालेली वृष्टि वांया जातेच. १४९२ तृप्त झालेल्याला सुग्रास अन्न घालून मग जे वांया दवडावे, त्यापेक्षां भुकेलेल्याला घालूनच उदारपणा कां दाखवूं नये ? १४९३ झणून पाहिजे तितके योग्य असून त्यांना जर ऐकण्याची इच्छा नाही, अशांना पखादे वेळीं हे देशील हो ! १४९४ रूपाला उत्तम तऱ्हेने जाणणारा डोळा आहे, झणून तो परिमळाकडे लावला तर चालेल काय ? जेथे जे योग्य असते, तेच तेथे फलद्रूप होतें. १४९५ झणून हे सुभद्रापती ! तपस्वी भक्तिमान् असतील ते पहावेत. पण शास्त्रश्रवणांत जर आवड नसेल तर, त्यांचा त्याग करावा. १४९६ किंवा तप, भक्ति, व श्रवण करण्याची इच्छा, इतकी सामग्रीही असलेली जरी पाहशील, १४९७ तरी त्या गीताशास्त्राला निर्माण करणारा, सकल लोकांचे शासन करणारा जो मी; त्या मला सामान्य असें जो मानील, १४९८ मला, माझ्या सुजनतेला, जे कोणी वागप्रहार करणारे असतील, त्यांना थोर असें झणूं नको. १४९९ रात्रीच्या वेळीं दिव्याशिवाय जशी ठाणवई असावी, त्याप्रमाणे त्यांची बाकी सारी सामुग्री समजावी. १५०० आंग चांगले गोरें असून तरुणही आहे; त्याच्यावर अलंकारही घातलेले आहेत; परंतु ते एका प्राणाशिवाय जसें टाकावे

लागतें, १५०१ सोन्याचे सुंदर घर असून ते मोठे निर्मळ आहे; परंतु नागीण बसली आहे दार धरून ! १५०२ सुग्रास अन्न तयार झालेले आहे, पण त्यांत विष आहे; पोटांत कपट असलेली जशी मैत्री, १५०३ त्याप्रमाणे हे बुद्धिमंता ! जो माझ्या भक्तांची किंवा माझी निंदा करतो, त्याची केवळ तपाविषयीच बुद्धि आहे हे लक्षांत ठेव. १५०४ ह्याकरितां अर्जुना ! तो भक्त, बुद्धिमान् व तपस्वी असला तरी बाबा ! ह्या शास्त्राला शिवूं देऊं नकोस. १५०५ फार काय सांगावे ? ब्रह्मदेवासारखा योग्य असूनही तो जर निष्क असेल, तर त्याला ही गीता कौतुकखातर सुजां देऊं नकोस. १५०६ झणून धनुर्धरा ! खाली तपाचा पाया भरून वर जो गुरुभक्तीचा संपूर्ण राजवाडा बांधील, १५०७ आणखी श्रवणेच्छेचा दरवाजा निरंतर पुढे उघडा असून त्याच्या वर अनिंदारत्नांचा सुंदर कलश बसविलेला असेल," १५०८

य इदं परमं गुह्यं मद्रक्तेष्वभिधास्यति ।

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

[य इदं परमं गुह्यं] ऐशा भक्तालयीं चोखटी । गीतारत्नेश्वर हा प्रतिष्ठी । मग माझिया संवसाटी । तुकसी जगी ॥ ९ ॥ कां जे एकाक्षरपणेसी । त्रिमात्रकेचिये कुशी । प्रेणव होता गर्भवासी । सांकडला ॥ १५१० ॥ तो गीतेचिया बाहळीं । वेदवीज गेलें पाहाळीं । कीं गायत्री फुलीफळीं । श्लोकांच्या आळी ॥ ११ ॥ ते हे मंत्ररहस्य गीता । मेळवी जो माझिया भक्ता । अनन्यजीवना माता । बाळका जैसी ॥ १२ ॥ [मद्रक्तेष्वभिधास्यति] तैसी भक्तां गीतेसी । भेटी करी जो आदरेंसी । तो [मामेवैष्यत्यसंशयः] देहा पाठीं मजसी । येकचि होय ॥ १३ ॥

“अशा सुंदर भक्तमंदिरांत हा गीतारत्नेश्वर स्थापन कर. झणजे जगामध्ये माझ्या साम्यतेस योग्य होशील. १५०९ किंवा एका-

१ स्थापन कर. २ बरोबरीस, साम्यतेस. ३ योग्य होशील. ४ अकार, उकार व मकार या तीन मात्रांच्या ५ ओंकार. ६ संकुचित होऊन राहिलेला. ७ विस्तारामध्ये. ८ वृक्षरूपानें उंच. ९ मातेच्या स्तनावांचून अन्य जीविकेला साधन नाही अशा.

क्षरपणानें अकार, उकार, व मकार ह्या तीन मात्रांच्या पोटांमध्ये गर्भवासी 'प्रणव' कुचमत होता, १५१० तो गीतेच्या विस्तारांत वेदरूप बीजानें जन्मास आला आहे. किंवा श्लोकांच्या फुलामध्ये आणि फळामध्ये गायत्री उत्पन्न झाली आहे. १५११ ती ही मंत्ररहस्यरूप गीता, जो कोणी माझ्या भक्तांना देईल; दुसरे जीवनच ज्याला माहिती नाही, अशी आई ज्याप्रमाणें मुलाला भेटते, १५१२ त्याप्रमाणें अगत्यपूर्वक गीतेची आणि भक्ताची जो कोणी गांठ घालून देईल, तो देह टाकल्यानंतर मत्स्वरूपाला पोचेल." १५१३

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृतमः ।

भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

[तस्मात्] आणि देहाचेही लेणें । लेऊनि वेगळेपणें । असे तंव जीवें प्राणें । तोचि पंडित्ये ॥ १४ ॥ [मनुष्येषु] ज्ञानियां कर्मठां तापसां । यया खुणेचिया माणुषां- । माजि तो एक गा जेसा । पंडित्ये मज ॥ १५ ॥ [न च] तैसा भूतळीं आघवा । आन न देखें पांढवा । जो गीता सांगे मेळवा । भक्तजनांचा ॥ १६ ॥ [भक्ति मयि परां कृत्वा इति पूर्वश्लोकस्थं पदं] मज ईश्वराचे नि लोभें । हे गीता पढतां अक्षोभें । जो मंडन होय सभे । संतांचिये ॥ १७ नवपल्लवी रोमांचित । मंदानिळें कांपवित । आनोदजळें बोलवित । फुलांचे डोळे ॥ १८ ॥ कोकिळा केलरवाचे नि मिषें । सद्गद बोलवीत जेंसे । वसंत कां प्रवेशे । सद्गक्तआरामी ॥ १९ ॥ कां जन्माचें फळ चकोरां । होत जें चंद्र ये अंवरा । ना ना नव घन मयूरां । वो देत पावे ॥ १५२० ॥ [कश्चिन्मे प्रियकृतमः] तैसा सज्जनाच्या मेळपीं । गीतापघरळीं उभपीं । बपें जो माझ्या रूपीं । हेतु ठेऊनी ॥ १२१ ॥ [भवितेति] मग तयाचे निपाडें । पंडित्येंतें मज फुडें । नाहीचि गा मागेफुडें । न्याहाळितां ॥ २२ ॥ अर्जुना हा ठायवरी । मीं तयातें सूर्यें जिह्दारी । जो गीतार्थाचें करी । परैगुणें संतां ॥ २३ ॥

“आणखी देहाचा अलंकार घालूनही तो जर त्यापासून अलिप्त राहील, तर त्याची मला जीवाभावापासून आवड. १५१४ ज्ञानी, कर्मठ, तपस्वी, ह्या लक्षणांच्या मनुष्यामध्ये तो जसा

मला प्रिय आहे, १५१५ तसा अर्जुना ! जो भक्तसमुदायामध्ये गीता सांगतो, त्याच्या सारखा सर्व भूमंडळावर दुसरा कोणी दिसत नाही. १५१६ माझ्या ईश्वराच्या लाभासाठी स्थिर चित्तानें गीता सांगून जो संतांच्या सभेमध्ये भूषणभूत होईल, १५१७ रोमांच ही नवी पल्लवी; मंद वाण्यानें कंपवीत सुगंधरूप जळानें फुलांचे डोळे ओले करीत, १५१८ कोकिळ मधुर स्वराच्या निमित्तानें सद्गद भाषण करीत, माझ्या भक्तरूप बगीच्यांत जणों काय वसंतच प्राप्त व्हावा, १५१९ किंवा चंद्रोदय झाला ह्मणजे चकोराला जसें जन्माचें सार्थक झाले असें वाटावें, किंवा नवे मेघ मयूराला जसे “ओ” देत यावेत, १५२० त्याप्रमाणें जो माझ्या स्वरूपामध्ये हेतु ठेवून सज्जनांच्या समुदायांत अनेक गीतापघरळांचा वर्षाव करतो; १५२१ त्याच्या इतका खरोखरच आवडता पदार्थ मागचा पुढचा विचार केला तरी, मला दुसरा कोणताच नाही. १५२२ अर्जुना ! जो संतांना गीतार्थाची मेजवानी घालतो, त्याला मी इतका जिवार्शी बाळगतां.” १५२३

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।

ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥

[अध्येष्यते इति] पै माझिया तुझिया मिळणीं । वाढी- नली जे हे काहाणी । मोक्षधर्म कां जिणें । आलासे जेथें ॥ २४ ॥ तो हा सकळार्थप्रद । आह्मां दोघांचा संवाद । न करितां पैदमेद । पाठेंचि जो पडे ॥ २५ ॥ [ज्ञानयज्ञेनेति] तेणें ज्ञानानळीं प्रदीर्ती । मूळ अविद्येचिया आहुतीं । तोष- विला होय सुमती । परमात्मा मी ॥ २६ ॥ घेऊनि गीतार्थ उगाणा । ज्ञानिये जें विचक्षणा । ठाकिती तें गाणावाणा । गीतेचा तो लाहे ॥ २७ ॥ गीतापाठकासि असे । फळ अर्थ- शाचिसरिसे । गीता माउलिये कीं नसे । जाणेंतान्हें ॥ २८ ॥

१ समागमांत. २ जगण्यास, हारीस. ३ एक पद दुष्टां न सोडतां, किंवा पदच्छेदादिक न करितां केवळ श्लोकांचा पाठ. ४ प्रज्वलित ज्ञानामीत. ५ अज्ञानाच्या. ६ गीतेचा अर्थ उगाणा=अनुभवून जें ज्ञान्याला प्राप्त होतें तेंच गीतेच्या गाणावाणा=गाण्यानें व वर्णन करण्यानें प्राप्त होतें. ७ आहे. ८ जाणतें नेणतें.

१ अत्यंत प्रिय. २ समुदायाला. ३ अहंकाररहित, स्थिर- चित्तानें. ४ भूषणरूप. ५ सुगंधोदकानें. ६ मधुर स्वराच्या. ७ बगीचांत. ८ नूतन मेघ. ९ समुदायांत. १० पुष्कळ. ११ आवडतें. १२ हृदयांत ठेवतां. १३ पाहुणे, मेजवानी.

“तसैच माझ्या तुझ्या समागमांत ही जी कथा वाढली आहे, जीत मोक्षधर्म जन्मास आला आहे, १५२४ तो सकलार्थप्रद आपणा उभयतांचा हा संवाद, एकही पदच्छेद न करतां जो केवळ पठण करील, १५२५ त्याने हे बुद्धिमंता ! ज्ञानाग्नीच्या प्रज्वलित ज्वालेमध्ये मूळ अविद्येची आहुति देऊन मला परमात्म्याला तृप्त केलें. १५२६ हे विचक्षणा ! गीतार्थाचा ठाव पाहून ज्ञानी ज्या पदास पोंचतात, तेंच पद गीतेचें गायन करणारास व वर्णन करणारास प्राप्त होतें. १५२७ गीतेचा पाठ करणाराला, गीतेचा अर्थ जाणणाऱ्या-इतकेंच फल असतें. गीतामाउलीला जाणतें मूल आणि नेणतें मूल, अशी भेदबुद्धीच नाही.” १५२८

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

सोऽपि मुक्तः शुभ्रालोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ७१

[श्रद्धावाननसूयश्च] आणि सर्वमार्गी निंदा । सांडनि आत्मा पै शुद्ध । गीताश्रवणीं श्रद्धा । उभारी जो ॥ २९ ॥ [शृणुयादपि यो नरः] तयाच्या श्रवणपुटी । गीतेचीं अक्षरें जंव पैटी । होती ना तंव उठाउठी । पळेवि पाप ॥ १५३० ॥ [पुण्यकर्मणां] अंतर्वीयेमाजि जैसा । वन्हि रिघतां सहसा । लंघिती कां दिशा । वनौकें तियें ॥ ३१ ॥ कां उदयाचळकुळीं । झळकतां अंशुमाळी । तिमिरें अंतराळीं । हारपती ॥ ३२ ॥ तेसा कानाच्या महाद्वारीं । गीता गजर जेथ करी । तेथ सृष्टीचिये आदिबरी । जायचि पाप ॥ ३३ ॥ ऐसी जन्मबळी धुवट । होय पुण्यरूप चोखट । याही वरी अचाट । लाहे फळ ॥ ३४ ॥ जेथिये गीतेचीं अक्षरें । जेतुलीं कां कर्णद्वारें । रिघती तंतुले होती पुरे । अश्वमेध कीं ॥ ३५ ॥ ह्याणनि श्रवणें पापें जाती । [शुभ्रालोकान्प्राप्नुयात्] आणि धर्म धरी उन्नती । तेणें स्वर्गराज्य संपत्ती । लाहेचि शेखीं ॥ ३६ ॥ [सोऽपि मुक्तः] तो पै मज यावयालागीं । पहिलें पैणें करी स्वर्ग । मग आवडे तंव भोगी । पाठीं मजचि मिळे ॥ ३७ ॥ ऐसी गीता धनंजया । ऐकतया आणि पढतया । फळे महानंद मिथां । बहु काय बोलें ॥ ३८ ॥ याकारणें हें असो । परि

जयालागीं शाखातिसो । केळ तें तंव तुज पुसों । काज तुमैं ॥ ३९ ॥

“आणि सर्वतोपरी निंदा सोडून शुद्ध आस्थेनें गीता ऐकण्याविषयीं जो श्रद्धा बाळगील, १५२९ त्याच्या कर्णामध्ये गीतेचीं अक्षरें शिरतात न शिरतात तोंच, पाप उठाउठी पळून जातें. १५३० अरण्यामध्ये अकस्मात् वणवा लागला ह्याणजे वनचरें जशीं दशदिशेला पळत सुटतात, १५३१ किंवा उदयाचलावर सूर्य झळकूं लागला कीं, अंधकार जसा आकाशामध्ये नाहीसा होतो, १५३२ त्याप्रमाणें कानाच्या महाद्वारावर जेव्हां गीतेचा चौघडा झडूं लागतो, तेव्हां सृष्टीच्या आदिपासून झालेलें पाप सुद्धां नाहीसें होतें. १५३३ ह्याप्रमाणें जन्माची परंपरारूप वेल अशा रीतीनें निर्मळ-उत्तम पुण्यरूप-झाली ह्याणजे मग तिला फळ येतें, तें फार मोठें येतें. १५३४ कारण ह्या गीतेचीं जितकीं जितकीं अक्षरें कर्णद्वारांत शिरतील, तितके तितके अश्वमेध घडल्याप्रमाणें होतें. १५३५ ह्याणून श्रवणानें पापें जातात, आणि धर्माचीं उन्नति होते. आणि त्यामुळें शेवटीं स्वर्गाच्या राज्याची संपत्ति मिळते. १५३६ माझ्याकडे येण्यासाठीं तो पहिला मुकाम स्वर्गाचा करतो; आणि वाटेला तेथपर्यंत त्याचा उपभोग घेऊन मागाहून मलाच येऊन मिळतो. १५३७ अर्जुना ! अशी ही गीता, ऐकणाराला आणि पठण करणाराला महदानंदानें फळते. ह्याहून फार तें मी काय सांगूं ? १५३८ ह्याकरितां तें असो. पण ज्याकरितां हें येवढें शास्त्र वाढविलें, तें तुझें काम कसें काय झालें, तें तुला विचारूं या.” १५३९

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्र्येण चेतसा ।

कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

[कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थति] तरि सांग पां पांडवा । हा शास्त्रसिद्धांत आपला । तुज एकचित्सें फावला गेला आहे ॥ १५४० ॥ आझीं जसैं जया रीती । उगाणिलें कानांच्या हातीं । येरीं तसैंचि तुझ्या चित्तीं । पेटें केलें कीं ॥ ४१ ॥ अथवा मा-

१ प्रविष्ट. २ दाट अरण्यांत. ३ वनचरें, पशुपक्ष्यादि. ४ सूर्य. ५ अंधकार. ६ आधींचें. ७ जन्माची परंपरारूप वेल. ८ मोठें. ९ शेवटीं. १० मुकाम.

१ अतिशय. २ समजून चुकला. ३ पदरीं घातले.

झारी । गेलें सांडी विखुरी । किंवा उपेक्षेवरी । बाळुनि सां-
डिलें ॥ ४२ ॥ जेसं आझी सांगितलें । तैसेंचि हृदयीं का-
वळें । तरी सांग पां वेंडिलें । पुसेन तें मी ॥ ४३ ॥ [कृषि-
दक्षानसंमोह इति ।] तरि स्वाज्ञानजनितें । मागिले मोहें
तुतें । भुलविलें तो येथें । असे की नाही ॥ ४४ ॥ हें बहु
पुसों काई । सांगें तूं आपुल्या ठायीं । कर्माकर्म कांहीं । देख-
तासी ॥ ४५ ॥ पार्थ स्वानंदैकरसे । विरेल ऐसा भेददशे ।
आणिला येणें मिथें । प्रश्नाचेनि ॥ ४६ ॥ पूर्णब्रह्म जाला
पार्थ । तरि पुढील साधावया कार्यार्थ । मर्यादा श्रीकृष्णनाथ ।
उल्लंघों नेदी ॥ ४७ ॥ येव्हवीं आपुलें करणें । सर्वज्ञ काय
तो नेणे । परि केळें पुसणें । याचिलागीं ॥ ४८ ॥ एवं
करोनियां प्रश्न । नसतेंचि अर्जुनपण । आणूनियां जालें
पूर्णपण । तें बोलवी खर्यें ॥ ४९ ॥ मग क्षीराब्धीतें सां-
डितें । गगनीं पुजें मंडित । निवडे जैसा न निवडित ।
पूर्णचंद्र ॥ १५५० ॥ तैसा ब्रह्म मी हें विसरे । तेथ जगचि
ब्रह्मत्वं भरे । हेंही सांडी तरी विरे^१ । ब्रह्मपणही ॥ ५१ ॥
ऐसा मोडत मांडत ब्रह्म । तो दुःखें देहाचिये सीमे । मी अर्जुन
येणें नामें । उभा ठेला ॥ ५२ ॥ मग कांपतां करतळीं ।
दडपून रोमांचळी । पुलिका खेदजळीं । जिरऊनियां ॥ ५३ ॥
प्राणक्षोभे डोलतया । आंगा आंगचि टेंक्या । सूनि स्तंभ
चाळ्या । मुलीनियां ॥ ५४ ॥ नेत्रयुगळाचेनि वोटें । आनं-
दामृताचें भरितें । बोसंडंत तें मायुतें । काहूनियां ॥ ५५ ॥
विविधा औत्सुक्यांची दाटी । चौप^२ दाटत होती कठीं । ते
करूनियां पैटी । हृदयामाजी ॥ ५६ ॥ वाचेचें वितुळणें ।
सावरुनि प्राणें । अकृमाचें श्वसणें । ठेऊनि ठायीं ॥ ५७ ॥

“तर अर्जुना ! हा सारा शास्त्राचा सि-
द्धांत तुला नीट एकाप्रचित्तानें समजला ना ?
सांग पाहूं. १५४० आझी जसें, ज्या रीतीनें,
तुझ्या कानाच्या स्वाधीन केलें, तसेंच त्यांनीं
तुझ्या चित्तास अर्पण केलें ना ? १५४१ कां

मध्येच सांडावांडी वारी गेलें ? कां तिरस्कारानें
फेंकून दिलें ? १५४२ आझीं जसें सांगितलें,
तसेंच हृदयामध्ये शिरलें असेल तर, मी
विचारतो तें झटपट सांग पाहूं. १५४३ तर
तुझ्या अज्ञानापासून मागे उडवलेल्या मोहानें
तुला भ्रमविलें होतें. तो आतां आहे कां नाही ?
१५४४ हें आतां फार काय काय झणून
विचारावें ? कर्म कोणतें आणि अकर्म कोणतें ?
हें तुझें तुलाच समजू लागलें किंवा नाही ? हें
सांग बरें.” १५४५ अर्जुन हा निजानंदस्वरू-
पांत ऐक्यरूप होईल हें मनांत आणून ह्या
प्रश्नाच्या निमित्तानें त्याला अशा भेदस्थितीला
आणला. १५४६ अर्जुन जर पूर्ण ब्रह्म बनला,
तर पुढील कार्यभाग साधावयाचा नाही. तो
साधावा झणून श्रीकृष्णांनीं द्वैताची मर्यादा
उल्लंघन करूं दिली नाही. १५४७ बाकी तो
सर्वज्ञ होता, तेव्हां त्याचें सामर्थ्य त्यास मा-
हित नव्हतें कीं काय ? पण विचारलें तें ह्याच
करितां. १५४८ अशा प्रकारें प्रश्न करून, नस-
लेलें अर्जुनपण त्याच्या आंगीं आणून, त्याच्या
स्वतःच्या तोंडून आंगीं पूर्णपणा आलेलें बोल-
विलें. १५४९ मग क्षीराब्धीला सोडून आ-
काशांतील तारकामंडलासहचर्तमान पूर्णचंद्र
वेगळा नसतांही वेगळा दिसतो; १५५० त्या-
प्रमाणें ब्रह्म मी हें विसरतें, तेव्हां ब्रह्मानें सारें
विश्वच भरून जातें. तेंही सोडलें तर, ब्रह्म-
पणही नाहीसें होतें. १५५१ अशा प्रकारें
ब्रह्मानें धरून धरून सोडला तेव्हां, मोठ्या
दुःखानें तो “मी अर्जुन” ह्या भावानें दे-
हाच्या सीमेवर येऊन उभा राहिला. १५५२
मग कांपण्या कांपण्या तळहातांनीं उभे राहि-
लेले केंस दडपून ग्रामामध्ये रोमांच जिरवून,
१५५३ प्राणाच्या उंचंबळीनें डोलत असलेल्या
आंगाला, आंगाचाच टेंका देऊन, स्तंभाचे चाळे
सोडून, १५५४ नेत्रयुग्माच्या अश्रुप्रवाहानें
आनंदामृताचा पूर वाहत होता तो पुसून
काढून, १५५५ अनेक उल्लासलहरींची दाटी
होऊन गळा दाढून येऊन, स्वरभंग होत होता

१ लवडून. २ चालढकलीवर. ३ झुगारून दिलें.
४ प्रविष्ट झालें. ५ सत्वर. ६ स्वकीय अज्ञानापासून
उत्पन्न. ७ निजानंदरूप सामरस्यानें. ८ ओलांडूं देत नाही.
९ झालेलें पूर्णपण. १० सोडीत. ११ तारागणाला
शोभवीत. १२ विरघळे. १३ एथून आठ सात्विकभाव
वर्णिले आहेत ते येणेंप्रमाणें—‘स्तंभः खेदोऽथ रोमांचः
स्वरभंगोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका
मताः’. १४ कांपण्या तळहातांन. १५ रोमांच. १६ प्रा-
णाच्या वाढीनें. १७ टेंका देण्यास ठेवून. १८ कंप,
चाळ्याला. १९ अश्रुप्रवाहानें. २० उसळत. २१ स्वरभंग.
२२ प्रविष्ट. २३ क्रियारहितपणाचें.

तो हृदयांतील हृदयांत दाबून, १५५६ वाणी
विस्कळित झाली होती तिला प्राणानें सांवरून
धरून मधून मधून येणारे हुंदके जागच्या
जागी ठेवून," १५५७

अर्जुन उवाच—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

[नष्टो मोहः] मग अर्जुन झणे काय देवो । पुसताति आवडे
मोहो । तरि तो सकुटुंब गेला जी ठावो । घेऊनि आपला
॥ ५८ ॥ पोर्षी येऊनि दिनकरें । डोळ्यातें आंधारें ।
पुसिजे हें कायि संरे । कोणें गांवीं ॥ ५९ ॥ तैसा तूं श्रीकृष्णराया ।
आमुच्या डोळ्यां । गोचर हेंचि कायिसया । न पुरे तंव
॥ १५६० ॥ वरि लोभें भायेपासुनि । तें सांगसी तोंड भरु-
नि । जें कायिसेनिही करुनि । जाणूं नये ॥ ६१ ॥ आतां
मोह असे कीं नाही । हें ऐसं जी पूससी काई । कृतकृत्य
जाहलें पाहीं । तुझेपणें ॥ ६२ ॥ गुंतलों होतो अर्जुनगुणें ।
तो मुक्त झालों तुझेपणें । आतां पुसणें सांगणें । दोन्ही
नाहीं ॥ ६३ ॥ [त्वत्प्रसादान्मयाच्युत] मी तुझेनि प्रसादें ।
लाधलेनि आत्मबोधें । मोहाचे या कांदे । नेदीच उरों ॥ ६४ ॥
[स्मृतिर्लब्धा] आतां करणें कां न करणें । हें जेणें उठी दुजे-
पणें । तें तूंवांचुनि नेणें । सर्वत्र गा ॥ ६५ ॥ [स्थि-
तोऽस्मि गतसंदेहः] येविषयी माझ्या ठायीं । संदेहाचें
नुरेचि कांहीं । त्रिशुद्धी कर्म जेथ नाही । तें मी जालों
॥ ६६ ॥ तुझेनि मज मी पावोनि । कर्तव्य गेलें निपटनि ।
[करिष्ये वचनं तव] परि आज्ञा तुझीवांचोनि । आन नाही
प्रभो ॥ ६७ ॥ कां जें दृश्य दृश्यातें नाहीं । जें दुजे द्वैतातें
प्रासी । जें एक परि सर्वदेशीं । वसवी सदां ॥ ६८ ॥
जयाचेनि संबंधें बंध फिटे । जयाच्या आशा आस तुटे ।
जें भेटल्यां सर्व भेटे । आपणपांचि ॥ ६९ ॥ तें तूं गुंरे
लिंग जी माझे । जें येकलेपणीचें विरजें । जयालागीं बोला-
डिजे । अद्वैत बोध ॥ १५७० ॥ आपणचि होऊनि ब्रह्म ।
सारिजे कृत्याकृत्याचें काम । मग कीजे कां निःसीम । सेवा
जयाची ॥ ७१ ॥ गंगा सिंधु सेवूं गेली । पावतांचि समुद्र
जाली । तेवि भक्तां सेलें दिधली । निजपदाची ॥ ७२ ॥
तो तूं माझा जी निरुपचार । श्रीकृष्णा सेव्य सद्गुरु । मा

१ आवडता होतो. २ समीप. ३ शिरके. ४ हेंच कोणत्या
गोष्टीला पुरणार नाही ? सर्व इतक्यांचेंच होईल. ५ कळ-
वळ्यानें, ममतापूर्वक. ६ कशाही प्रयासानें. ७ त्वद्रूपत्वांनं.
८ प्राप्त झालेल्या. ९ गूढ, मुळ्या. १० खरेपणानें. ११ तुझ्या
योगानें मी माझ्या स्वरूपां मिळून. १२ जें दृश्य प्रत्यक्ष
होतांच. १३ द्वैत, गुरुशिष्यभाव. १४ आशा कुंठित होते.
१५ गुरुमूर्ति. १६ साद्य. १७ बांटा. १८ आदराचा.

ब्रह्मतेचा उपकार । हाचि माहीं ॥ ७३ ॥ जें मज तुझा
आड । होतें भेदाचें कंवाड । तें फेडोनि केलें गोड । सेवा-
सुख ॥ ७४ ॥ तरी आतां तुझी आज्ञा । सकळ देवाधिदेव-
राज्ञा । करीन देयीं अनुज्ञा । भलतियेविषयीं ॥ ७५ ॥ यथा
अर्जुनाचिया बोला । देव नाचे सुखें भुलला । झणे विश्वफळा
जाला । फळ हा मज ॥ ७६ ॥ उणेनि उमचला सुधाकर ।
देखुनी आपला कुंमर । मर्यादा क्षीरसागर । विसरेचिना
॥ ७७ ॥ ऐसं संवादाचा बेहुला । लम दोषांचिया आतुला ।
लागलें देखोनि जाला । निर्भर संजय ॥ ७८ ॥ तेणें झणतसे
संजयो । बाप कृपानिधीरावो । तो आपुला मनोभाषो ।
अर्जुनेसीं केला ॥ ७९ ॥ तेणें उंचबळलेपणें । संजय धृतरा-
ष्ट्रातें झणे । जी कैसें बादरायणें । रक्षिलों दोषे ॥ ८० ॥
आजि तुमतें आवधारा । नाहीं चर्मचक्षुही संसारा । कीं
ज्ञानदृष्टी व्यवहारा । आणिलेति ॥ ८१ ॥ आणि रैथींचिये
राहाटी । घेइ जो घोडेयासाटीं । तथा आज्ञा या गोष्टी ।
गोचरा होती ॥ ८२ ॥ कुंक्षाचें निर्बाण । मांडलें असे वा-
रण । दोहीं हारी आपण । हारपिजे जैसें ॥ ८३ ॥ येवढा
जिये सांकडां । केसा अनुग्रहो पें गाढा । जे ब्रह्मानंद उधवा ।
भोगवीतसे ॥ ८४ ॥ ऐसं संजय बोलिला । परि न द्रवे येई
उगला । चंद्रकिरणीं शिवतला । पाषाण जैसा ॥ ८५ ॥ हे दे-
खोनि तथाची दशा । मग करीचिना संरिसा । परि सुखें जाला
पिसा । बोलतसे ॥ ८६ ॥ भुलविला हर्षवें । झणौनि धृतराष्ट्रा
सांगे । ये-हवीं नव्हे तथाजोगे । हें कीर जाणे ॥ ८७ ॥

मग अर्जुन झणाला "देवा ! मोह आव-
डतो कीं काय झणून विचारतां होय ? तर
महाराज ! तो आपलें ठिकाण सोडून सह-
कुटुंब गेला हो ! १५५८ सूर्यानें जवळ येऊन
डोळ्यांनाच विचारावें कीं, आतां आंधार आहे
काय ? असें कोणत्या गांवीं घडलें आहे ? १५५९
त्याप्रमाणें हे श्रीकृष्णराया ! तूं आमच्या
डोळ्यांसमोर आहेस येवढेंच त्याला पुरें होणार
नाहीं काय ? १५६० आणखी लोभानें ममता-
पूर्वक जें कशानेंही समजणारें नव्हे, तें तोंड

१ प्रतिबंधक. २ उणेनि=कलंकापासून. उमचला=मुक्त
झालेला, सुटलेला. सुधाकर=चंद्र आपला कुंमर=क्षीरसागरा-
चा मुलगा. (समुद्रमंथनाच्या वेळीं, चवदा रत्नांपैकी निचा-
लेलें चंद्र हें एक रत्न प्रसिद्धच आहे. ३ बहुल्यार. ४ हृदय
सुणनें. ५ गहिंवरून. ६ व्यावहारिक दृष्टीनें. ७ रथाची राहटी
चालखी पाहिजे झणून घोड्यांची संगति ज्यानें केली अशा
आज्ञांस असल्या गोष्टी गोचरा=प्रत्यक्ष होतात. ८ युद्धप्रकरण.
९ उभय पक्ष. १० संकटांत. ११ धृतराष्ट्र. १२ संबंध.

भरून सांगतोस. १५६१ तेव्हां आतां मोह आहे किंवा नाही हे महाराज ! विचारार्थ काय ? त्वद्रूपत्वाचे कृतकृत्य झालो हो ! १५६२ अर्जुनाच्या गुणांनी गुंतलो होतो, तो तुझेपणाने मुक्त झालो. आतां विचारणे आणि सांगणे हीं दोन्हीही उरलीं नाहीत. १५६३ तुझ्या प्रसादेकरून प्राप्त झालेल्या आत्मज्ञानसामर्थ्याने त्या मोहाचे कांदे हणून उरूनच दिले नाहीत. १५६४ आतां करणे किंवा न करणे हे ज्या दुसरेपणाने उत्पन्न होतें, ते आतां तुझ्याशिवाय दुसरें कोठेंच दिसत नाही. १५६५ ह्याबद्दल माझ्या मनामध्ये संशय हणून कांहीं उरलाच नाही. कर्माचा संबंधच ज्यास नाही, असें जें स्वरूप तेंच शपथपुरस्कर मी बनलों आहे. १५६६ तुझ्या योगाने मी माझ्या स्वरूपी मिळून कर्तव्य सारें लयास गेलें आहे, हणून, प्रभो ! तुझ्या आज्ञेशिवाय दुसरें कांहीं राहिलें नाही. १५६७ कारण, जें प्रत्यक्ष होतांच दृश्याचा नाश करतें. जें द्वैताद्वैतालाच गिळून टाकतें; जें एक असून सर्वत्र सर्वकाल वास्तव्य करतें; १५६८ ज्याच्या संबंधानें बंध तुटतो; ज्याच्या आशेने आशा नाहीशी होते; ज्याची भेट झाली असतां आपल्याच ठिकाणीं सर्व कांहीं भेटतें. १५६९ महाराज ! जें एकत्वाला साह्य करतें; ज्याच्यावरून अद्वैत ओंवाळून टाकावें; ती आपण माझी गुरुमूर्ति. १५७० आपणच ब्रह्म होऊन कृत्याकृत्याचें काम संपवावें, आणि मग त्याची निस्सीम सेवा करावी. १५७१ गंगा समुद्राची सेवा करावयाला गेली, ती तेथें पांचतांच समुद्ररूप बनली. त्याप्रमाणें आपणही भक्तांला निजपदाचा वांटा दिलात. १५७२ श्रीकृष्णा ! तो तूं माझा आदराचा सेव्य गुरु आहेस. मग ब्रह्मत्वाचा हाच उपकार मानावयास नको काय ? १५७३ तुमच्या माझ्यामध्ये जें भेदाचें दार आडवें होतें, तें काढून टाकून सेवासुख गोड केलेंत. १५७४ तर आतां हे सकल देवाधिदेवा ! तुमची आज्ञा मला शिरसा बंध आहे. मग ती

कशाविषयीही कां असेना ?” १५७५ ह्या अर्जुनाच्या भाषणानें देव अगदीं भांबावून गेले. आणि आनंदाच्या भरानें नाचूं लागले. आणि ह्मणाले “हा मला विश्वफळालाही फळ झाला !” १५७६ आपला मुलगा चंद्र सर्व कलांनीं युक्त पाहिला ह्मणजे समुद्र तरी थोडा उंचबळतो काय ? आपली मर्यादा सुद्धां विसरत नाही काय ? १५७७ तसें संवादाच्या बहुल्यावर दोघांच्या अंतःकरणाचें लग्न लागलेलें पाहून संजयाला परमानंद झाला. १५७८ त्या भरांत संजय ह्मणाला, “प्रभु ! कृपा-निधि ! फार थोर ! त्यानें अर्जुनाला आपला मनोभावच करून सोडला.” १५७९ तसाच सद्गदित कंठानें संजय धृतराष्ट्रास ह्मणाला “महाराज ! व्यासांनीं आपलें दोघांचें कसें बरें संरक्षण केलें ! १५८० अहो ऐका ! तुझालाही आज संसार करावयाला डोळे नाहीत. हणून ज्ञानदृष्टीनें सर्व व्यवहार करावा लागतो. १५८१ आणि रथाचें काम चालविण्यासाठीं ज्यानें घोड्याची संगत पतकरली आहे, त्या आत्मांला ह्या असल्या गोष्टी उपलब्ध

१ संजय हा गावल्गण नामक सूताचा पुत्र असून धृतराष्ट्राचा सारथी होता. तेव्हां त्यानें आपल्या स्थितीचे दर्शक असे हे उद्गार काढले आहेत. हा मोठा सखबक्ता व निश्ठुर असे. तो धृतराष्ट्रासही बोध करण्यास मार्गेपुढें पहात नसे. युद्धांतील सर्व वृत्त घर बसल्याच यास व्यास-प्रसादानें कळे, आणि तें जशाचें तसेंच हा त्यास सांगे. संजय हा दिव्यदृष्टी, दिव्यज्ञानी, व दिव्यशरीरी असा होता. त्याचें वर्णन फार चमत्कारिक आहे. तें असें:—

चक्षुषा संजयो राजन् दिव्येनैव समन्वितः ।

कथयिष्यति ते युद्धं सर्वं ज्ञात्वा भविष्यति ॥ १ ॥

प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा दिवा वा यदि वा निशि ।

मनसा चित्तितमपि सर्वं वेत्स्यति संजयः ॥ २ ॥

नैनं शस्त्राणि छेत्स्यन्ति नैनं बाधिष्यते श्रमः ।

गावल्गणिदयं जीवन् युद्धादस्माद्विमोक्ष्यति ॥ ३ ॥

—भा. भी. अ० २—

धृतराष्ट्राचा सारथी संजय; अर्जुनाचा सारथी कृष्ण; कर्णाचा सारथी शल्य; ह्या सर्वांचा विचार मनांत आणला ह्मणजे प्राचीनकालीं सारथ्यकर्म हें फार महत्त्वाचें असून त्यांत अखंत श्रेष्ठ लोकही पडत असत असें दिसतें.

झाल्या ! १५८२ युवाची तर घनचक्र माजून राहिली आहे. दोहों पक्षांमध्ये आपण तर कोणीकडेच्या कोणीकडेच जाऊं, १५८३ येवढें जेथें संकट, त्यांतच हा अनुग्रह हें किती विलक्षण पहा ! कीं ज्याच्या योगानें प्रत्यक्ष ब्रह्मानंदच भोगावयास मिळतो.” १५८४ ह्याप्रमाणें संजय बोलला. पण धृतराष्ट्राच्या मनाला यांत किंचित्ही द्रव आला नाहीं. चंद्रकिरणांनीं स्पर्श केला तर, धोंडा जसा उगाच बसतो, त्याप्रमाणें तोही उगाच बसला. १५८५ ही त्याची अवस्था पाहून त्यानें बोलण्याचें सोडून दिलें. हर्षातिशयानें तो अगदीं भुलला होता, झणून तो धृतराष्ट्राशीं भाषण करूं लागला. १५८६ नाहीं तर तो तें सांगण्याच्या योग्यतेचा नव्हे, हें तो पूर्णपणें जाणून होता. १५८७

संजय उवाच—

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

[इति] मग ह्यानें पै कुरुराजा । ऐसा भ्रातृपुत्र तो तुझा । बोलिला तें अघोक्षजा । गोड जालें ॥ ८८ ॥ [महात्मनः] अगा पूर्वापर सागर । यथा नामासीचि सिनार । येर आघवें तें नीर । एक जैसें ॥ ८९ ॥ तैसा श्रीकृष्ण पार्थ ऐसें । हें आंगाचिपासीं दिसे । मग संवादी जी नसे । कांहींचि भेद ॥ १५९० ॥ पै दर्पणाहूनि चोखें । दोन्ही होती सन्मुखें । तेथ येरी येर देखे । आपणपें जैसें ॥ ९१ ॥ [संवाद] तैसा देवेंसी पंडुसुत । आपणपें देवीं देखत । पांडवेंसीं देखे अनंत । आपणपें पार्थी ॥ ९२ ॥ देव देवा भक्तालागीं । जिये विवरे देखे आंगीं । येरु तिचेचिही भागीं । दोन्ही देखे ॥ ९३ ॥ आणिक कांहींचि नाहीं । झणौनि करिती काई । दोघे येकपणें पाहीं । नांदताति ॥ ९४ ॥ आतां भेद जरी मोडे । तरी प्रश्नोत्तर कां घडे । ना भेदचि तरि जोडे । संवादमुख कां ॥ ९५ ॥ ऐसें बोलतां दुजेपणें । संवादी द्वैत गिळणें । [इममश्रौषं] तें ऐकिलें बोलणें । दोघांचें मियां ॥ ९६ ॥ उट्टनि दोन्ही आरसे । बोटविलीयां सरिसे । कोण कोणा पाहातसे । कल्पावें पां ॥ ९७ ॥ कां दीपासन्मुख ठेविलिया दीपक । कोण कोणा अर्थिक । कोण जाणे ॥ ९८ ॥ ना ना अर्कापुढें अर्क ।

१ पुतण्या (अर्जुन). २ वेगळेंपण. ३ देहभिन्नतेच्या दृष्टीनें. ४ छिद्र. ५ समोरासमोर ठेविले असतां. ६ प्रकाशक, इच्छा करणार.

उदयलिया आणिक । कोण ह्याने प्रकाशक । प्रकाश्य कवण ॥ ९९ ॥ [अद्भुत] हें निघांरुं जातां फुडें । निघांरासि ठेक पडे । ते दोघे जाले येवढे । संवाद सरिसे ॥ १०० ॥ [अहं] जीं मिळतां दोन्ही उदकें । माजि लवण वारूं ठाके । कीं तयासींही निमिखें । तेंचि होय ॥ १०१ ॥ तैसें श्रीकृष्ण अर्जुन दोन्ही । संवादले तें मनीं । धरितां मजही वानी । तेचि होतसे ॥ १०२ ॥ ऐसें ह्याने ना मोटकें । तंव हिराणि सात्विकें । आठव नेला नेणो कें । संजयपणाचा ॥ १०३ ॥ [रोमहर्षणं] रोमांच जंव फेरके । तंव तंव आंग धुरके । स्तंभ स्वेदांतें जिके । एकला कंप ॥ १०४ ॥ अद्रयानंदस्पर्श । दिठी रसमय जाली असे । ते अश्रु नव्हती जैसें । द्रवत्वचि ॥ १०५ ॥ नेणों काय माय पोटीं । काय नेणों गुंफे कटीं । बांगथो पडत मिठी । उसासचिया ॥ १०६ ॥ किंबहुना सांत्विका आटां । चौचर मांडता उमेठां । संजय जाहालासे चोहटां । संवादमुखाना ॥ १०७ ॥ तथा सुखाची ऐसी जाती । जे आपणचि धरी शांती । मग पुढती देहस्मृती । लाधली तेणें ॥ १०८ ॥

मग झणाला “हे कौरवाधिपते ! असें तुझा पुतण्या जो अर्जुन तो बोलला. तें अधोक्षजाला फार गोड वाटलें. १५८८ अरे ! पूर्वसमुद्र, पश्चिमसमुद्र हीं नांवेंच कायतीं वेगवेगळीं, बाकी पाणी सारें जसें एकसारखेंच, १५८९ त्याप्रमाणें श्रीकृष्ण आणि अर्जुन हे देहामुळेच भिन्न भिन्न दिसत. परंतु संवादामध्ये भेद झणून कांहींच नव्हता. १५९० आरशाहूनही स्वच्छ असे दोन पदार्थ जर समोरासमोर आले, तर ते जसे परस्पर आपणांला पहातात, १५९१ त्याप्रमाणें अर्जुन, देवामध्ये आपणास पहात होता; आणि देव आपणाला पार्थामध्ये पहात होते. १५९२ देव, देवाला आणि भक्ताला ज्या ठिकाणीं पहात होता, त्याच ठिकाणीं तोही दोघांस पहात होता. १५९३ दुसरे कांहींच नाहीं, तेव्हां करणार काय ? झणून दोघेही एकत्रपणानें नांदूं लागले. १५९४ आतां असा जर भेद

१ स्वच्छता. २ निवारण करण्यास राहें. ३ क्षणांत. ४ लवणाप्रमाणें. ५ थोडें बोलतो न बोलतो तों. ६ उभारे. ७ संकोच पावे. ८ स्वच्छता व घाम यांस. ९ ब्रह्ममय. १० पाप्मरच. ११ कंठरूप गुंफेत. १२ शब्दार्थास. १३ श्रासोच्छ्वासाच्या. १४ आठ सात्विक भावांस. १५ बोवडी वळी असतां. १६ अतिशय.

मोडलेला होता, तर प्रश्नोत्तरं कशीं झालीं ?
 मेदच जर नाही, तर संवादाचें सुख तरी
 मिळणार कसें ? १५९५ असें द्वैतपणानें बो-
 लतां बोलतांच संवादांमध्ये द्वैत नाहीसं हो-
 ऊन गेलें, असें जें दोघांचें भाषण तें मीं भ्रवण
 केलें. १५९६ दोन आरसे उठून एकमेकांपुढें
 आले तर, त्यांपैकीं कोणकोणाकडे पहातो आहे
 झणून कल्पना करावी ? १५९७ किंवा दिव्या-
 समोर दिवा ठेवला, तर कोणकोणाचा प्रका-
 शक कोण जाणे ? १५९८ किंवा सूर्यापुढें आ-
 णखी एक सूर्य उगवला तर, प्रकाश करणारा
 कोण आणि प्रकाश करून घेणारा कोण ?
 १५९९ ह्याचा खरा निर्णय करावयाला गेलें
 झणजे विचारच खुंटतो. इतके दोघे संवादानें
 एकरूप झाले. १६०० महाराज ! दोन ठि-
 काणचीं उदकें एकमेकांस मिळतील झणून
 त्यांचें निवारण करण्यास मध्यंतरीं जर मीठ
 बसलें, तर क्षणमात्रांत तेंही तद्रूप होऊन
 जातें. १६०१ त्याप्रमाणें श्रीकृष्ण आणि
 अर्जुन ह्या दोघांचें संभाषण झालें तें मनांत
 आल्यामुळें माझीही तशीच अवस्था झाली.”
 १६०२ असें बोलला न बोलला, तों त्या संभा-
 षणाची स्मृति सात्विकपणानें कोठें नेली कोण
 जाणे ! १६०३ जों जों रोमांच उभे राहूं ला-
 गले, तों तों आंगाचा संकोच होऊं लागला.
 गर्हिवर आणि घाम ह्या दोघांस एका कंपा-
 नेच मार्गें सारलें. १६०४ अद्वयानंदाची गांठ
 पडल्यामुळें दृष्टि ब्रह्ममयच होऊन गेली होती.
 त्यामुळें आलेले अश्रु, अश्रु नव्हेत, तर जणों काय
 पाझरच फुटलेसे दिसत होते. १६०५ पोटांत
 काय राहिलें होतें कोण जाणे ? कंठांत काय
 बसलें तें समजेनाच ! हुंदके येऊन ते शब्दार्थांला
 आडकाठी करूं लागले. १६०६ किंबहुना अशा
 सात्विकाच्या आठ भावांनींही त्याची अगदीं
 बोबडीच वळवून सोडली. त्यामुळें संजय हा
 त्या संवादसुखाचा चव्हाटाच होऊन राहिला.
 १६०७ पण त्या सुखांत एक असा धर्म होता

कीं, तें आपलें आपणच शांति धरित असे.
 त्यामुळें पुन्हां तो देहमानावर आला. १६०८
 व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतदुद्बुधमहं परम् ।

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥७९॥

[व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्] तेव्हां नैसर्तेनि आनंदें । झणे
 जी जें उपनिषदें । नेणती तें व्यासप्रसादें । ऐकिलें मियां
 ॥ ९ ॥ [एतदुद्बुधमहं परं] ऐकतांचि ते गोडी । ब्रह्मत्वाची
 पडिली मिठी । मीतूंपणेसी दिठी । विरोनि^३ गेली ॥१६१०॥
 [योगं योगेश्वरात्कृष्णात्] हे आधवेचि कां योग । जयाठाया
 येते मार्ग । तयाचें वाक्य स्वर्ग । केलें मज व्यासें ॥ ११ ॥
 [साक्षात्कथयतः स्वयं] अहो अर्जुनाचेनि मिघें । आपणपेंचि
 दुजें ऐसें । नटोनि आपण्या उद्देशें । बोलिले जें देव ॥ १२ ॥
 तेथ कीं माझे श्रोत्र । पांटाचें जाले जी पात्र । काय वानूं
 स्वतंत्र । सामर्थ्य श्रीगुरूचें ॥ १३ ॥

तेव्हां आनंद स्थीर झाल्यानंतर झणूं ला-
 गला “महाराज ! जें उपनिषदांना सुखां
 माहित नाही, तें मला व्यासाच्या प्रसादानें
 एकावयास मिळालें. १६०९ तो संवाद ऐक-
 तांच ब्रह्मत्वाचीच गांठ पडली आणि मी तूं-
 पणाची दृष्टि होती ती नाहीशीच झाली.
 १६१० हे सारे योग ज्याच्या ठिकाणीं जा-
 ण्याचे मार्ग, त्या भगवंताचें वाक्य व्यासांनीं
 मला सुलभ करून दिलें. १६११ अहो !
 अर्जुनाच्या निमित्तानें आपणच दुसरेपणाचें
 सोंग घेऊन आपल्यासाठींच देव बोलले.
 १६१२ त्याच्या अधिकाराला किहो माझे कान
 पात्र झाले ! तेव्हां त्या श्रीगुरूचें स्वतंत्र सा-
 मर्थ्य किती झणून वर्णन करूं ?” १६१३

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।

केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७९॥

[राजन् इमं अद्भुतं] राया हें बोलतां विस्मित होय ।
 [केशवार्जुनयोः पुण्यं] तेणेंचि मोडावला ठाये । रत्नी कीं
 रत्नकिळें ये । झांकोळित जैसी ॥ १४ ॥ [हृष्यामि च मुहु-
 र्मुहुः] हिमवंतीचीं सरोवरें । चंद्रोदयीं होती कांश्मीरें । मग
 सूर्यागमीं माघारें । द्रवत्व ये ॥ १५ ॥ [संस्मृत्य संस्मृत्य]

१ उपनिषत्सारसंवाद. २ हारपली. ३ योग्यतेचें, अ-
 धिकाराचें पात्र. ४ हिरसुसला होऊन राहो. ५ चकाकीला.
 ६ स्फटिकाकार.

संवाद' तैसा शरिराचिया स्मृती । तो संवाद संजय चित्ती । धरी आणि पुढती । तेचि होय ॥ १६ ॥

हें ऐकून धृतराष्ट्र राजाला मोठें आश्चर्य वाटलें. त्यामुळे संजय हिरमुष्टि होऊन राहिला. रत्नाची झकाकीच जशी रत्नाला झांकते, १६१४ हिमालय पर्वतावरील सरोवरें, चंद्रोदय झाला कीं, स्फटिकासारखीं होतात. आणि सूर्योदय झाला झणजे फिरून तीं पाझरूं लागतात. १६१५ त्याप्रमाणें देहभानावर येतांच तो संवाद पुन्हा संजयाच्या मनांत आला, आणि पुन्हा त्याची पूर्ववत् अवस्था झाली. १६१६

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।

विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ७७

[राजन्] मग उठोनि झणे तृपा । [तच्चेति] श्रीहरीचिया विश्वरूपा । रेखिलया उगा कां पां । असों लाहसी ॥ १७ ॥ न देखेणेंनि जें दिसे । नाहीपणेंचि जें असे । विसरें आठवे तें कैसे । चुकऊं आतां ॥ १८ ॥ [विस्मयो मे महान्] देखोनि चमत्कार । कीजे तो नाही पसार । मजही सकट महापुर । नेत आहे ॥ १९ ॥ ऐसा श्रीकृष्णाजुन- । संवाद-संगमीं झान । करुनि देतसे तिळदान । अहंतेचें ॥ १६२० ॥ [हृष्यामि च पुनः पुनः] तेथ अंसवरें आनंदें । अलौकिकही कांहीं स्फुंदे । श्रीकृष्ण झणे सद्गदें । वेळोवेळां ॥ २१ ॥ या अवस्थांची कांहीं । कौरवातें परी नाही । झणोनि रायें तें कांहीं । कल्पावें जंव ॥ २२ ॥ तंव जाला सुखलाम । आपणपां करुनि स्वयंभ । बुझाविला अवष्टम । संजयें तेणें ॥ २३ ॥ तेथ कोणी येकी अर्धसरी । होआवी ते करुनि दुरी । रावो झणे संजया परी । कैसे तुझी गा ॥ २४ ॥ तेणें तूतें येथें व्यासें । बैसविलें कांयसा उद्देशें । अप्रसंगामाजि ऐसे । बोलसी काई ॥ २५ ॥ रानीचें राउळ नेलिया । दाही दिशा मानी सुनिया । कां रात्री होय पांहुलया । निशाचरा ॥ २६ ॥ जो जेथिचें गौरव नेणे । तयासि तें भिरुळवाणें । झणोनि अप्रसंग तेणें । झणावा कीं तो ॥ २७ ॥ मग झणे सांगें प्रसुत । उदयलेंसे जें उत्कळित । तें कोणासि बारे जैतें । देखील शेखीं ॥ २८ ॥ येन्हवीं विशेषें बहुतेक । आमुचें ऐसें मानसिक । जे दुयां-

१ शरीराच्या स्मृतीला संवादानें कांहीं वेळ धरलें=आवरलें पण पुनः तीच स्मृति झाली. २ न दिसणें व दिसणें, नसणें व असणें, स्मृति व आठव असें जें अत्यद्भुत. ३ प्रसार. ४ न सांवरणाच्या. ५ हुंदके देई, उसासा टाकी. ६ जिरविला. ७ सात्विकाहंकार. ८ करमणूक. ९ रीत. १० कोणत्या. ११ अवधान सोडून. १२ उजाडलें असतां. १३ भयंकर. १४ ज्याची मला उत्कंठा तें. १५ विजय.

धनाचे अधिक । प्रताप सदा ॥ २९ ॥ आणि येरांचेनि पाहें । दळही याचें देव्हडें । झणोनि जैत फुडें । आणील ना तें ॥ १६३० ॥ आझां तंव गमे ऐसें । मा तुमें जोतीर कैसें । तें नेणों संजया असे । तैसें सांग पां ॥ ३१ ॥

मग उठून झणाला “महाराज!-भकराव्या अध्यायांत वर्णन केलेलें-श्रीहरीचें विश्वरूप मनांत बिबलें असतांही, आपल्याच्यानें स्वस्थ बसवतें तरी कसें ? १६१७ न पाहतांही जें दिसतें, नसूनच जें भासतें; विस्मृतींतही जें स्मरतें, त्याला आतां टाळावें तरी कसें ? १६१८ तो चमत्कार पाहून चमत्कार असें झणण्याला सुखां अवकाश रहात नाही. इतका तो महापूर मला सुखां वाहून नेत आहे ! १६१९ ह्याप्रमाणें श्रीकृष्णाजुनाच्या संवादरूप संगमांत झान करून अहंतेची तिळांजुळी देऊं लागला. १६२० तेव्हां आनंद आवरेनासा झाला. कांहीं विलक्षण प्रकारचे हुंदके देऊं लागला. सद्गदित अंतःकरणानें वारंवार “श्रीकृष्ण” “श्रीकृष्ण” असें झणूं लागला. १६२१ ह्या अवस्थेची धृतराष्ट्राला कल्पनाही नव्हती. झणून तो असें कां करतो, असा तर्क करणार, १६२२ तोंपर्यंत संजयानें यथेच्छ सुख भोगलें, आणि मग आपला आपणच निग्रह करून आलेला गद्दि-वर सांवरून घेतला. १६२३ तेव्हां राजा झणाला “संजया ! तूं कांहीं तरी करमणूक करावयाची तें सारें टाकून ही तुझी भलतीच तन्हा कसली ? १६२४ तुला येथें त्या व्यासांनीं कोणत्या उद्देशानें बसविलेलें आहे ? आणि हें-अप्रासंगिक-भलतेंच काय बडबडत बसला आहेस ?” १६२५ रानांत राहणाऱ्याला जर घरांमध्ये नेलें, तर त्याला दाही दिशा शून्य वाटूं लागतात. किंवा चोराला उजाडलें कीं, रात्र होते. १६२६ ज्या ठिकाणचें महत्त्व ज्याला समजत नाही, त्याला तें भयंकरच वाटतें. तेव्हां त्यानें त्याला अप्रसंग झणावा हें योग्यच आहे. १६२७ मग झणाला “बाबारे ! आतां हें सांग, कीं हें जें शुद्ध उपास्थित झालें आहे,

१ इतर जे पांडव त्यांच्या योग्यतेस. २ सैन्य. ३ अधिक. ४ गणित, भाकीत.

त्यांत शेवटीं विजयी कोण होईल ? १६२८
बाकी फार करून-हजार वाटेनें-आमचा तर्क
तर असा आहे कीं, केव्हांही झालें तरी दुयो-
धनाचा प्रताप हा अधिकच, १६२९ आणखी
प्रतिपक्षाच्या योग्यतेनें पाहिलें तर, यांचें सैन्य-
ही फार मोठें आहे. तेव्हां त्याला विजय येणार
नाहीं काय ? १६३० आह्मांला तर असें वाटतें.
मग संजया ! तुझें ज्योतिष कसें काय तें कळत
नाहीं. तर तें कसें काय आहे सांग पाहूं.” १६३१

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीविजयो भूतिर्भुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

हरिः ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्मवि-
द्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास-

योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

[यत्र योगेश्वरः कृष्णो] यया बोला संजयो झणे । जी
येरंयेरांचें मी नेणें । परि आयुष्य तेथें जिणें । हें फुडें कीं गा
॥ ३२ ॥ चंद्र तेथें चंद्रिका । शंभु तेथें अंबिका । संत तेथें
विवेका । असणें कीं जी ॥ ३३ ॥ रावो तेथें कटक ।
सौजन्य तेथें सोदरीक । बन्दि तेथें दाहक । सामर्थ्य कीं
॥ ३४ ॥ दया तेथें धर्म । धर्म तेथें सुखागम । सुखीं पुरुषो-
त्तम । असे जैसा ॥ ३५ ॥ वसंत तेथें वनं । वन तेथ
सुमेनें । सुमनीं पार्लिंगे । सारंगांचीं ॥ ३६ ॥ गुरु तेथ
ज्ञान । ज्ञानीं आत्मदर्शन । दर्शनीं समाधान । आधि जैसें
॥ ३७ ॥ भाग्य तेथ विलास । सुख तेथें उल्लास । हें असो तेथ
प्रकाश । सूर्य जेथें ॥ ३८ ॥ तैसे सकळ पुरुषार्थ । जेणें
स्वामी कां सनाथ । तो श्रीकृष्ण रावो जेथ । [तत्र श्रीः] तेथ
लक्ष्मी ॥ ३९ ॥ [भूतिः] आणि आपलेनि कैतेसी । ते
जगदंबा जयापासीं । अणिमादिकी काय दासी । नव्हती
तयातें ॥ १६४० ॥ [विजयः] कृष्ण विजयस्वरूप निजांगें ।
तो राहिला असे जेणें भागे । तें जय लागवें । तेथेंचि आहे
॥ ४१ ॥ [यत्र पार्थो धनुर्धरः] विजयी नामें अर्जुन वि-
ख्यात । विजयस्वरूप श्रीकृष्णनाथ । ‘‘अ्रियेसीं विजय नि-
श्चित । तेथेंचि असे ॥ ४२ ॥ तयाचिये देशींच्या झाडीं ।
कल्पतरूतें ‘‘होडी । न जिणोंवें कां येवढीं । मायबापें
असतां ॥ ४३ ॥ ते पाषाणही आघवे । चित्तीरनें कां नो-
हावे । तिये भूमिके कां न यावें । सुवर्णत्व ॥ ४४ ॥ तया-
चिया गांवींचिया । नदी अमृतें वाहाविया । नवल काय

१ दुसऱ्या तिसऱ्यांचें. २ चांदणें. ३ विचार. ४ राजा असेल
तिकडे सैन्य. ५ पुष्पें. ६ समुदाय. ७ भ्रमरांची. ८ सुखो-
पभोग. ९ पतीसह. १० अष्टसिद्धि. ११ लक्ष्मीसह. १२ पैज
मारी. १३ न जिंकावे. १४ चित्तामणी.

राया । विचारीं पां ॥ ४५ ॥ तयाचे बिसाट शब्द । सुखें
झणों येती वेद । संदेह सच्चिदानंद । कां नोहावे ते ॥ ४६ ॥
पें स्वर्गपवर्ग दोन्ही । इयें पदें तया अधीनीं । श्रीकृष्ण बाप
जननी । कैमळ जया ॥ ४७ ॥ झणौनि जिंया बाहीं उभा ।
तो लक्ष्मीयेचा वल्लभा । तेथ सर्वसिद्धि स्वयंभा । येर मी
नेणें ॥ ४८ ॥ आणि समुदाचा मेघ । उपयोगें तयाहूनि
चांग । तैसा पार्थी आजि लाग । आहे तये ॥ ४९ ॥
कैमळवदीक्षागुरु । लोई परीस होय कीळ । परि जगा पो-
सिता व्यवहार । तेंचि जाणें ॥ १६५० ॥ येथ गुरुत्वा येतसे
उणें । ऐसें झणें कोणही झणे । बन्दिप्रकाश दीपपणें ।
प्रकाशी आपला ॥ ५१ ॥ तैसा देवाचिया शक्ती । पार्थ
देवांसीच बहुती । पॅरी माने इये खुती । गौरव असे ॥ ५२ ॥
आणि पुत्रें मी सर्व गुणीं । जिणावा हे बापा शिरोणी । तरी
ते शास्त्रपाणी । फळा आली ॥ ५३ ॥ किंबहुना ऐसा नृपा ।
पार्थ जालासे कृष्णकृपा । तो जयाकडे सौक्ष्मा । रीती आहे
॥ ५४ ॥ तोचि गा विजयासि ठावो । येथ तुज कोण संदेहो ।
तेथ नये तरी बावो । विजयोचि होय ॥ ५५ ॥ झणौनि
जेथ श्री तेथ श्रीमंत । जेथ तो पंडुचा सुत । तेथ विजय
समस्त । अभ्युदय तेथ ॥ ५६ ॥ [ध्रुवा] जरी व्यासाचेनि
सांचें । धिरे मन तुमचें । तरी या बोलाचें । ध्रुवेचि माना
॥ ५७ ॥ [नीतिः] जेथ तो श्रीवल्लभ । तेथ भक्तकंदब । तेथ
सुख आणि लाभ । मंगळाचा ॥ ५८ ॥ [मतिर्मम] या बोला
आन होये । तरि व्यासाचा अंके न वाहें । ऐसें गोंजोनि
वाहे । उमिळी तेणें ॥ ५९ ॥ [‘‘श्लोकमाहात्म्यं’] एवं भार-
ताचा आंवाका । आणुनि श्लोकां येका । संजयें कुरुनायका ।
दीधलाहतीं ॥ १६६० ॥ जैसा नेणो केवढा बन्दि । परि गुंणार्थी
ठेऊनी । आणजे सूर्याची हानी । निस्तरावया ॥ ६१ ॥
तैसें शब्दब्रह्म अनंत । जालें सवालक्ष भारत । भारताचें
शतें सात । सर्वस्व गीता ॥ ६२ ॥ तयाही सातां शतांचा ।
इत्यर्थ हा श्लोकेशींचा । व्यासशिष्य संजयाचा । पूर्णोद्धार
जो ॥ ६३ ॥ येणें येकेंचि श्लोकें । राहें तेणें अंसकें ।

१ भलते, अव्यवस्थित. २ ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूप कां
न व्हावे, आहेतच. ३ लक्ष्मी. ४ ज्या पक्षाकडे, ज्या
भागी. ५ पति. ६ संबंध. ७ सुवर्णपणा येण्याची दीक्षा
देणारा गुरु. ८ लोखंडाला सुवर्ण करणारा परिस आहे
परंतु. ९ सुवर्णच. १० कदाचित्. ११ या खुतीनें देवा-
लाच महत्त्व आहे. १२ प्रकारें. १३ इच्छा. १४ पक्षपा-
तपूर्वक. १५ विजयाचें विजयत्व व्यर्थ होईल. १६ अधिक
उदय. १७ खरेपणानें. १८ विश्वासे. १९ अढळत्वच. २० भक्त-
समुदाय. २१ कल्याणाचा. २२ अंकितपण, शिष्यत्व-
चिन्ह. २३ असें मोठ्यानें बोलून हात उभारला. २४ मत-
लब. २५ ‘यत्र योगेश्वरः कृष्णो’ ह्या शेवटच्या श्लोकांत.
२६ बातीच्या अग्नी, २७ नाश दूर करायचा. २८ संपूर्ण.

अविद्याजाताचें निवें । जितिलें होय ॥ ६४ ॥ ऐसे श्लोकशतें सात । गीतेचीं पदें आंगें बाहृत । पदें झणों की परमाभूत । गीताकाशीचें ॥ ६५ ॥ कीं आत्मराजाचिये सभे । गीते वोढवळे हे खांबे । मज श्लोक प्रतिभे । ऐसे येत ॥ ६६ ॥ कीं गीता हे सप्तशती । मंत्रप्रतिपाद्य भगवती । मोहमहिषा मुक्ती । आनंदली असे ॥ ६७ ॥ झणौनि मनें कार्यें वाचा । जो सेवक होईल इथेचा । तो खानंदसाम्राज्याचा । चक्रवर्ती करी ॥ ६८ ॥ कीं अविद्यातिमिररोखें । श्लोक सूर्यातें पैजा जिके । ऐसे प्रकाशिले गीतामिषें । रायें श्रीकृष्ण ॥ ६९ ॥ कीं श्लोकाक्षरद्राक्षलता । मांडव जाली आहे गीता । संसार-पथ-भ्रांता । विसंवावया ॥ ७० ॥ कीं सभाग्यसंतीं भ्रमरी । सेविले ते श्लोक कंठहारी । श्रीकृष्णस्वरोवरी । सांस्त्रिली हे ॥ ७१ ॥ कीं श्लोक नव्हती आन । गमे गीतेचें महिमान । वाखाणिते वंदिजन । उदंड जैसे ॥ ७२ ॥ कीं श्लोकांचिया आवारा । सात शतें करुनि सुंदरा । सर्वागम गीतापुरा । वसों आले ॥ ७३ ॥ कीं निजकांता आत्मया । आवडी गीता मिळावया । श्लोक नव्हती बाधा । पसर कां जो ॥ ७४ ॥ कीं गीताकमळांचे भुंगें । कीं हे गीतासागरतरंग । कीं हरीचे हे तुरंग । गीतारथीचे ॥ ७५ ॥ कीं श्लोकसर्व तीर्थसंघात । आला श्रीगीतेगंगे आंत । जे अर्जुन सिंहस्थ । जाला झणौनि ॥ ७६ ॥ कीं नोहे हे श्लोकश्रेणी । अचितचित्तचित्तामणी । कीं निर्विकल्पां लावणी । कल्पतरूची ॥ ७७ ॥ ऐसिया शतेंसात-श्लोका । परी आगळा येकयेका । आतां कोण वेगळिका । वानावां पां ॥ ७८ ॥ तान्ही आणि पारंटी । इया कामधेनूतें दिठी । सुनि जैसिया गोठी । कीजती ना ॥ ७९ ॥ दीपा आगिलें मागिल । सूर्य धाकुटा वडील । अमृतसिंधू खोल । उथळ कायसा ॥ ८० ॥ तैसे पहिले सरंते । श्लोक न झणावे गीते । जुनीं नवीं पारिजातें । आहाती काई ॥ ८१ ॥ आणि श्लोका पाड नाही । हें कीर समर्थ काई । येथ वाच्य वाचकही । भाग न धरी ॥ ८२ ॥ [पाठमाहात्म्य] जे इथे शास्त्री येक । श्रीकृष्णचि वाच्य वाचक । हें प्रसिद्ध जाणे लोक । भलताही ॥ ८३ ॥ येथें अर्थें तेंचि पाठें । जोडे सेवढे निधेटें । वाच्यवाचक येकवटें । साधितें

१ गीता हीच काशी तिचें, स्वर्गीचें. २ प्रतिभारुन येतात. ३ भ्रांतिमहिषासुराची मुक्ता निरास केल्यानें. ४ करिते. ५ अज्ञानांधकार आवडून. ६ कमळांनीं. ७ सिद्ध झाली. ८ स्तुतिपाठक. ९ वेदशास्त्रादि. १० भ्रमर. ११ अचित्त=विरक्त यांच्या चित्ताला चित्तामणि. १२ वर्णावा. १३ शुष्क. १४ दृष्टि देऊन. १५ पुढचाभागचा. १६ श्रेष्ठ, श्रेष्ठले. १७ पारिजात जुना असो नवा असो, परिमळ सारखाच. १८ मोठ्या पराक्रमानें प्राप्त होण्याजोगें.

शास्त्र ॥ ८४ ॥ झणौनि मज काहीं । समर्थनीं आतां विषय नाही । गीता जाणा हे बाळ्याची । श्रीमूर्ति प्रभूची ॥ ८५ ॥ शास्त्र वाच्यें अर्थें फळे । मग आपण मावळे । तैसें नव्हे हें सगळें । परब्रह्मची ॥ ८६ ॥ कैसा विश्वचिया कृपा । करुनि महानंद सोपा । अर्जुनव्याजें रूपा । आणिला देवें ॥ ८७ ॥ चकोराचेनि निमित्तें । तिन्हीं भुवनें संतसें । निवविलीं कळावतें । चंद्रें जेवि ॥ ८८ ॥ कां गीतमाचेनि मिषें । कळिकाळ उवरितोइशें । पाणिढाळ गिरीशें । गंगेचा केला ॥ ८९ ॥ तैसें गीतेचें हें दुभतें । वत्स करुनि पार्थातें । दुभीनली जगापुरतें । श्रीकृष्ण गाय ॥ ९० ॥ येथें जीवें जरी न्याल । तरी हेंच कीर होआल । ना तरि पाठमिषें तिंवाळ । जीमिषि जरी ॥ ९१ ॥ तरि लोह एकें अशें । झगटलीया परिसें । येरीकडे अपसें । सुवर्ण होय ॥ ९२ ॥ तैसी पाठाची ते बाटी । श्लोक पाद लाबावा जंव वोटी । तंत्र ब्रह्मतेची पुट्टी । येथील आंगा ॥ ९३ ॥ ना येणेंसी मुख बांकडें । करुनि ठाकाल कानवडें । तरि कार्नीही घेतां पडे । तेचि लेखें ॥ ९४ ॥ जे हे श्रवणें पाठें अर्थें । गीता नेदी मोक्षाभरीतें । जैसा समर्थ दाता कोण्हातें । नास्ति न झणे ॥ ९५ ॥ झणौनि जाणतया सवा । गीताचि येकी सेवा । काय कराल आपवा । शास्त्री येरी ॥ ९६ ॥ आणि कृष्णार्जुनीं मोर्कळी । गोठी चावळिली जे निराळीं । ते श्रियासें केली करतळीं । घेवों ये ऐसी ॥ ९७ ॥ बाळकातें बोरसें । माय जें जेवळ बैसे । तें तेंथा ठाकती तैसे । घांस करी ॥ ९८ ॥ कां अफाटा समीरण । अपैतेंपण शाहाणा । केळें जिसें विजंणा । निर्मूनियां ॥ ९९ ॥ तैसें शब्दें जें न लभे । तें घडूनियां अनुष्ठुमें । ब्रह्मादिप्रतिभे । सामाविलें ॥ १०० ॥ स्वातीचेनि पाणियें । न होती जरी मोतियें । तरि आंगी सुंदराचिये । कां शोभती तियें ॥ १ ॥ नाद बाधा न येतां । तरि कां गोचर होता । फुलें न होतां घेपता । आमोद केवि ॥ २ ॥ गोडीं न होती पकाभें । तरि कां फावती रसने । दर्पणाविण नयनें । नयन कां दिसे ॥ ३ ॥ द्रष्टा श्रीगुरुमूर्ती । न रिगता दृश्यपंथी । तरि कां ह्या उपास्ती । आकळता तो

१ प्रतिपादनाल. २ वाणीरूप. ३ जगावर कृपा करून. ४ अर्जुनाच्या निमित्तानें. ५ प्रत्यक्षतेस. ६ कलिकालरूप जो जवर, त्याणें पीडित. ७ पायउतार. ८ भिजवाल. ९ एका अंगावर. १० प्रकार. ११ नाही. १२ झाल्याबराबर. १३ स्पष्ट. १४ बोलिली. १५ आकाशांत. १६ पांढऱा दाटून आल्यानें, अति ममतेनें. १७ सोईस पडतील तसे. १८ वाच्याला. १९ आधीनपण, वश्यता. २० पंखा. २१ प्रतिविंबांत. २२ फुलें उत्पन्न झालीं नसतीं तर सुगंध कसा घेतां येता ? २३ पकाभें गोड झालीं नसतीं तर जिमेला गोड कां लागतीं ? २४ साक्षी. २५ साकार झाला नसता. २६ उपासनेल.

॥ ४ ॥ तैसें वस्तु जें असंख्यात । तथा संख्या शतें सात ।
न होती तरि कोणा येथ । फावो शकतें ॥ ५ ॥ मेघ सिं-
धूचें पाणी वाहे । तरी जग तयातेंचि पाहे । कां जें उर्मप
तें नोहे । ठाकतें कोण्हा ॥ ६ ॥ आणि वाचा जें न पवे ।
तें हे श्लोक न होते बरवे । तरि कां नें मुखें फावे । ऐसें
कां होतें ॥ ७ ॥ ह्मणोनि श्रीव्यासाचा हा थोर । विश्वासि
जाला उपकार । जे श्रीकृष्ण उक्ती आकार । प्रथाचा केला
॥ ८ ॥ आणि तोचि हा मी आतां । श्रीव्यासाचीं पदें पा-
हातां पाहातां । आणिला श्रवणपथा । मन्हाठिया ॥ ९ ॥
व्यासादिकांचे उन्मेख । राहाटती जेथ सांशक । तेथ मीही
रंक येक । वाचाळी करीं ॥ १० ॥ परि गीता ईश्वर
भोळा । ले व्यासोक्तिकुसुममाळ । तरि माझिया द्वादळा ।
ना न ह्मणे कीं ॥ ११ ॥ आणि क्षीरसिंधूचिया तटा । पा-
णिया येती गंजघटा । तेथ काय मुरकुटा । बारिजत असे
॥ १२ ॥ पाखें-फुटे पाखिरं । नुडे तरी नभींच स्थिर ।
गगन आक्रमी सत्वर । तो गंजवडी तेथ ॥ १३ ॥ राजहं-
साचें चालणें । भूतळीं जालिया शंहाणें । आणिकें काय
कोणें । चालावेंचि ना ॥ १४ ॥ जी आपुलेनि अवकाशें ।
अगाध जळ घेपे कलशें । चुळीं चूळपणा ऐसें । भरुनि न
निघे ॥ १५ ॥ दिवडीच्या आंगीं थोरी । तरि ते बहु तेज
धरी । वाती आपुलिया परी । आणीच कीं ना ॥ १६ ॥
जी समुद्राचेनि पैसें । समुद्रीं आकाश आभासे । थिळरीं
थिळराऐसें । विवेचि पें ॥ १७ ॥ तेविं व्यासादिक महामती ।
वावरां येती इये प्रथीं । मा आझी ठांकीं हे युक्ती । न मिळे
कीर ॥ १८ ॥ जिये सागरीं जळचरें । संचरती मंदराकारें ।
तेथ देखोनि शंफरें घेरें । पोहों न लाहती ॥ १९ ॥ अरुण
आंगार्जवळिके । ह्मणोनि सूर्यातें देखे । मा भूतळीची न
देखे । मुंगी काई ॥ २० ॥ यालागीं आझां प्राकृतां ।
देशिकारें बंधे गीता । ह्मणणें हें अनुचिता । कारण नोहे
॥ २१ ॥ आणि वाप पुढां जाये । ते घेत पांउलाची सोये ।

१ मिळू शकतें. २ अगणित. ३ जर हे श्लोक चांगले
झाले नसते तर वाचा जें न पवे-वाणीला जें अगोचर तें
कां नें मुखें फावे-कानांला व मुखाला प्राप्त कसें झालें असतें.
४ प्रथ. ५ ज्ञानोद्धार. ६ अनिर्धारित. ७ बडबड. ८ व्यासो-
क्तिरूप फुलांची माळा. ९ गजसमुदाय. १० चिलटाला.
११ पंख फुटणारें पांखरूं व गडद आपआपल्या सामर्थ्यानु-
रूप आकाशांत उडतात. सीमा दोघांलाही नाही. “नभः
पतंत्यात्मसमं पतन्निगः” भागवत. १२ सुंदर. १३ कलश
अगाध जलांत गेला तरी त्याच्या अवकाशाइतकेंच पाणी
त्यांत रहातें. १४ तसे व्यासादि या ग्रंथांत वावरतात.
आझी मात्र ठाको-हात टेंकावे-उगेच वसावें-हें बरें नव्हे.
१५ लहान मत्स्य. १६ अगदीं जवळ राहणारा, सारथी.
१७ देशभाषेनें. १८ अयोग्यपणाला. १९ पावळट.

बाळ ये तरि न लाहे । पावो कायी ॥ २२ ॥ तैसा व्यासाचा
मागोवा घेत । भाष्यकारातें वाट पुसत । अयोग्यही मी न
पवत । १ कें जाइन ॥ २३ ॥ आणि पृथ्वी जयाचिया क्षमा ।
नुबगे स्थावर जंगमा । जयाचेनि अमृतें चंद्रमा । निववी
जग ॥ २४ ॥ जयाचें आंगिकें असिकें । तेज लाहोनि अंकें ।
आंधाराचे सावाइकें । लोटिजत आहे ॥ २५ ॥ समुद्रा
जयाचें तोय । तोया जयाचें माधुर्य । माधुर्या सौंदर्य ।
जयाचेनि ॥ २६ ॥ पवना जयाचें बळ । आकाश जेणें
पेघळ । ज्ञान जेणें उज्वळ । चक्रवर्ति ॥ २७ ॥ वेद जेणें
सुभास । सुख जेणें सोळास । हें असो रूपस । विश्व जेणें ॥ २८ ॥
तो सर्वोपकारी समर्थ । सद्गुरु श्रीनिवृत्तिनाथ । रहाटत असे
मजहीआंत । रिघोनियां ॥ २९ ॥ आतां आयती गीता
जर्गी । मी सांगें मन्हाठिया भंगीं । येथ कें विस्मयालागीं ।
ठाव आहे ॥ १०३० ॥ श्रीगुरुचेनि नांवें माती । डोंगरां
जयापासीं होती । तेणें कोळियें त्रिजगती । येकवर्दे केली
॥ ३१ ॥ चंदनं वेधलीं झाडें । जालीं चंदनाचेनि पाडें ।
वसिष्ठें मांडली कीं भांडे । मानुसीं शांटी ॥ ३२ ॥ मा मी
तंव चित्तांथिला । आणि श्रीगुरु ऐसा दांदुला । जो दिटीवेनि
आपुला । वसवी पदीं ॥ ३३ ॥ आधींचि देखणी दिटी । वरी
सूर्य पुरवी पांठी । तें न दिसे ऐसी गोठी । कंही आहे ॥ ३४ ॥
ह्मणोनि माझे नित्य नवे । श्रासोच्छ्वासही प्रबंध होआवे ।
श्रीगुरुकृपा काय नोहे । ज्ञानदेव ह्मणे ॥ ३५ ॥ याकारणें
मियां । श्रीगीतार्थ मन्हाठिया । केला लोकां यया । दिटीचां
विपो ॥ ३६ ॥ परि मन्हाटे बोलरंगें । कवळितां पें गीतांगें ।
तें गातयाचेनि पांगें । येकांढ्यता नोहे ॥ ३७ ॥ ह्मणोनि
गीता गावो ह्मणे । तें गांणिवे होती लेणें । ना मोकळे तरि
उणें । गीताही आणित ॥ ३८ ॥ सुंदर आंगीं लेणें न सूये ।
तें तो मोकळा श्रंगार होये । ना लेइलें तरि आहे । तैसें
कें उचित ॥ ३९ ॥ कां मोतियांची जैसी जाती । सोनयाही
मान देती । ना तरि मानवती । अंगेंचि सईदीं ॥ १०४० ॥
ना ना गुंफिलीं कां मोकळीं । उणीं न होती परिमळीं । व-
संतागमींचीं वाटोळीं । मोगरीं जैसी ॥ ४१ ॥ तैसा गाणीवेनें

१ माग घेत घेत. २ न पावतां. ३ कोणीकडे ?
४ सहनशक्तीमुळे. ५ न कंटाळे. ६ संपूर्ण साख.
७ संपूर्ण ऐहिक. ८ दूर करित आहे. ९ विस्तार.
१० चांगलें बोलणारा. ११ प्रकाशित, देखणें. १२ भाषेच्या
रीतीनें. १३ एकत्र. १४ इतर झाडें चंदनसहवासानें त्याच्या
तुलनेस येतात. १५ भांडणाच्या निवाऱ्यासाठी. १६ छाटी.
१७ चित्त सद्गुरुमय झालेला, सच्चैतन. १८ धनी. १९ दृष्टि-
मात्रानें. २० पाठीराखा. २१ काव्य, ग्रंथ. २२ दृष्टिगोचर.
२३ अधीनपणानें. २४ एकदेशित्व. २५ गाणी. २६ सुवर्ण-
रहित, नुसती.

मिरवी । नीतेवीणही रंग दावी । तो लाभाचा प्रबंध बोवी ।
 केला मिया ॥ ४२ ॥ तेणें आंबाळसुबोधें । वोवियेचेनि
 प्रबंधें । प्रहारससुखादें । अक्षरें गुफिलीं ॥ ४३ ॥ आतां
 चंदनाच्या तरुवरीं । परिमळां लागीं फुलवरी । पारुखणें जि-
 यापरी । लागेना कीं ॥ ४४ ॥ तैसा प्रबंध हा श्रवणीं ।
 लागतखेबो समाधि आणी । ऐकिलियाही वाखाणी । काय
 व्यसन न लवी ॥ ४५ ॥ पाठ करितां व्याजें । पांडिलें येती
 वैधेजें । तें अमृतातें नेणजे । फाविल्या ॥ ४६ ॥ तैसेनि
 आइतेपणें । कवित्वा जालें हें उषणें । मनन निदिध्यास श्रवणें ।
 जितिलें आतां ॥ ४७ ॥ हे खानंदभोगाची सेल । मलत-
 यासीचि देखील । सर्वेद्रियां पोषवील । श्रवणाकरवीं ॥ ४८ ॥
 चंद्रातें आंगवणें । भोगीन चकोर शाहाणे । परि फावे जिसे
 चांदिणें । मलतयाही ॥ ४९ ॥ तैसें अध्यात्मशास्त्रीं यिये ।
 अंतरंगचि अधिकारियें । परि लोक वाकचातुर्यें । होईल
 सुखिया ॥ ५० ॥ ऐसें श्रीनिश्चिनाथाचें । गोरष आहे
 जी साचें । ग्रंथ नोहे हें कृपेचें । वैभव तिये ॥ ५१ ॥ क्षी-
 रसिंधूंपेरिसरीं । शक्तीच्या कर्णकुहरीं । नेणें कै श्रित्तिपुरांरीं ।
 सांगीतलें जें ॥ ५२ ॥ तें क्षीर कैलाळांता । मंक्रोदरीं
 गुप्त । होता तयाचा हात । पठें जालें ॥ ५३ ॥ तो मत्स्येंद्र
 सप्तश्रृंगी । भेन्नावयवा चौरंगी । भेटला कीं तो सर्वांगी ।
 संपूर्ण जाला ॥ ५४ ॥ मग समाधी अंजल्यया । भोगावी वसना
 यया । ते मुद्रा श्रीगोरक्षराया । दिधली मीनीं ॥ ५५ ॥ तेणें
 योगांजलिनीसरोवर । विषयविध्वंसकवीर । तिये पदीं कां
 सर्वेश्वर । अभिषेकिले ॥ ५६ ॥ मग तिहीं तें शोभव ।
 अद्रयानंदवैभव । संपादिलें संभव । श्रीगंणीनाथा ॥ ५७ ॥
 तेणें कैळिकळित भूतां । आला देखोनि निरुतां । ते आज्ञा
 श्रीनिश्चिनाथा । दिधली ऐसी ॥ ५८ ॥ ना आदि गुरु
 शंकरा- । लागोनि शिष्यपरंपरा । बोधाचा हा संसरा । जाला
 जो आमुतें ॥ ५९ ॥ तो हा तू घेऊनि आषवा । कळीं
 गिळितयां जीवां । सर्व प्रकारीं धांवो । करीं पां वेगीं

१ गाण्यावांचून. २ आबालवृद्धास सुगम. ३ सुवाससाटी. फूल येण्यापर्यंत. ४ वाट पहाणें. ५ लागण्यावराबर. ६ व्याख्यानरूपानें. ७ स्पष्ट. ८ प्राप्त झाल्यास. ९ विप्रां-
 तिस्थान. १० विभाग. ११ नवसानें, खभाजें, आपल्या
 शक्तीनें. १२ प्राप्त होय. १३ या आत्मानात्मविचार-
 शास्त्री. १४ अंतर्मुख. १५ सन्निधभागी. १६ पार्वतीच्या
 कानांत. १७ लाटांमध्यें. १८ माशाच्या पोटांत. १९ प्राप्त.
 २० हातपाय तुटलेल्या चौरंगीनाथास. २१ निर्विघ्न. २२ या
 वाधनेन, इच्छेन. २३ मत्स्येंद्रनाथांनीं. २४ योगरूप कमलि-
 नीचें. २५ विषयनाशाला मुख्य कारण. २६ अध्यात्मवि-
 था-शंभूपासून उत्पन्न झालेलें तें. २७ मुळपासून. २८ क-
 लीन प्रसन्न अशा. २९ खरा. ३० विस्तार. ३१ धांवून रक्षणें.

॥ ५७६० ॥ आधींच तंव तो कृपालु । वरि गुरुआज्ञेचा
 बोलु । जाला जैसा वर्षाकालु । खबळणें मेवां ॥ ६१ ॥ मग
 आतांचेनि बोरसें । गीतार्थग्रंथनमिसें । वर्षेला शांतरसें ।
 तो हा ग्रंथ ॥ ६२ ॥ तेथ पुढां मीं बापिया । मांडला आर्ती
 आपुलिया । कीं यासाठीं येवडिया ! आणिलों यशा ॥ ६३ ॥
 एवं गुरुकमें लाधलें । समाधिधन जें आपुलें । तें ग्रंथ बो-
 धोनि दिधलें । गोसावीं मज ॥ ६४ ॥ बांचूनि पडे ना
 वाची । ना सेवाही जाणें स्वामीची । ऐशिया मज ग्रंथाची ।
 योग्यता कें असे ॥ ६५ ॥ परि साचचि गुरुनाथें । निमित्त
 करुनि मातें । प्रबंधव्याजें जगातें । रक्षिलें जाणा ॥ ६६ ॥
 तन्ही पुरोहितगुणें । मी बोलिलों पुरें उणें । तें तुझीं मा-
 उलीपणें । उषसाहिजो जी ॥ ६७ ॥ शब्द कैसा घडिजे ।
 प्रेमयीं कैसें पां चडिजे । अळंकार ह्मणिजे । काय तें नेणें
 ॥ ६८ ॥ साहिखडेयाचें बाहुलें । चालविल्या सूत्राचेनि
 चाले । तैसा मातें दावीत बोलें । स्वामी तो माझा ॥ ६९ ॥
 यालागीं मी गुणदोष । विषीं क्षमाविना विशेष । जे मी
 संजात ग्रंथलों देख । आचार्यें कीं ॥ ७० ॥ आणि तुझां
 संतांचिये सभे । जें उणिवेसीं ठाके उभें । तें पूर्ण नोहे तें
 लोभें । तुझांसीचि कोपां ॥ ७१ ॥ सर्वतैलियाही परिसें ।
 लोहत्वाचिये अवदसे । न मूकिये आंयसें । तें कवणा बोल
 ॥ ७२ ॥ वोहळें हेंचि करावें । जे गंगेचें आंग ठाकावें ।
 मग ही गंगा जरी नोहावें । तें तो काय करी ॥ ७३ ॥
 ह्मणानि भाग्ययोगें वहुवे पां हे । तुझां संतांचे मी पाये ।
 पातलों आतां कें लाहें । उणें जर्गी ॥ ७४ ॥ अहो जी
 माझेनि स्वामी । मज संत जोडुनि तुझीं । दिधलेति तेणें
 सर्वकामीं । परिपूर्ण जालों ॥ ७५ ॥ पाहा पां मातें तुझां
 सांगडें । माहेर तेणें सुरवाडें । ग्रंथाचें आळींयडें । सिद्धी
 गेलें ॥ ७६ ॥ जी कनकाचें निखळ । वातूं येईल मूतळ ।
 चितारव्ही कुंकुचळ । निर्मू येती ॥ ७७ ॥ सातांही हो
 सागरातें । सोपें भरितां अमृतें । दुवाट नोहे तारातें । चंद्र
 करितां ॥ ७८ ॥ कल्पतरूचें आराम । लावितां नाही विषम ।
 परी गीतार्थाचें वर्म । निवडूं नये ॥ ७९ ॥ तो मी येक सर्व
 मुक्ता । बोलोनि मन्हाटिया माया । करीं डोलेवरी लोकां ।
 घेवों ये ऐसें जें ॥ ८० ॥ हा ग्रंथसागर येव्हडा । उत-
 रोनि पैलीकडा । कीर्तिविजयाचा धंदा । नाचें जें कां ॥ ८१ ॥

१ पांडिताच्या पान्थासाठी. २ ग्रंथ करण्याच्या निमित्तानें. ३ चातक. ४ गुरुपरंपरेन. ५ परस्वाधीनपणानें. ६ क्षमा करा. ७ अर्थान्वयांत. ८ कळमूखी वाहुली. ९ ग्रंथयुक्त बोललों, ग्रंथच मी झालों आहें. १० कोपू लागून, रसेन. ११ स्पष्टलेल्या. १२ वाडेट स्थितीला. १३ लोहानें. १४ प्रवाहानें. १५ तुम-
 च्यासारखें. १६ अनुकूल. १७ दृष्ट. १८ सर्व. १९ पर्वत. २० कठिण. २१ वाग. २२ विपरीत. २३ प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर.

गीतायांचा आचार । कलशेंसी महामेरु । रचुनि माजी श्रीगुरु । लिंग जें पूजी ॥ ८२ ॥ गीता निष्कपट माय । चुकोनि तान्हें हिंडे जें बाय । ते मायपूतां भेटि होय । हा धर्म तुमचा ॥ ८३ ॥ तुझ्या सजनांचें केलें । आकळुनि जी मी बोलें । ज्ञानदेव ह्याने थेंकुलें । तैसें नोहे ॥ ८४ ॥ काय बहु बोलें सकळां । मेळविलों जन्मफळा । ग्रंथसिद्धीचा सो- हळा । दाविला जो हा ॥ ८५ ॥ मियां जैसजैसिया आशा । केला तुमचा भरवसा । ते पुरऊनि जी बहुवसा । आणिलों सुखा ॥ ८६ ॥ मजलागीं ग्रंथाची खात्री । दुजी सृष्टी जे हे केली तुझी । ते पाहोनि हांसीं आझी । विश्वामित्रातेंही ॥ ८७ ॥ जे असोनि त्रिशंकुदोषें । घातयाही आणवें बोसें । तें नासतें कीजे कीं ऐसें । निर्मावें नाही ॥ ८८ ॥ शंभू उपमन्युचेनि मोहें । क्षीसागरही केला आहे । येथ तोही उपमेसरी नोहे । जे विषगर्भ कीं ॥ ८९ ॥ अंधकार नि- शाचरा । गिळितां सूर्य चराचरा । धावा केला तरी खरा । ताउनी कीं तो ॥ ९० ॥ तातल्या जगाकारणें । चंद्रें वेंचिलें चांदिणें । तया सदोषा केवि ह्याणें । सारिखें हें ॥ ९१ ॥ ह्याणेनि तुझीं मज संतीं । ग्रंथरूप जो हा त्रि- जगतीं । उपयोग केला तो पुढती । निरुपम जी ॥ ९२ ॥ किंबहुना तुमचें केलें । धर्मकीर्तन हें सिद्धी नेलें । येथ माझें जी उरलें । पंडितपण ॥ ९३ ॥ आतां विश्वात्मकें देवें । येणें वांग्यज्ञें तोषावें । तोषोनि मज थावें । पंसायदान हें ॥ ९४ ॥ जे खळाची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मा रती वाडो । भूतां परस्परें पडो । मैत्र जीवाचें ॥ ९५ ॥ दुरिताचें तिमिर जावो । विश्व स्वधर्मसूर्य पाहो । जो जें बांडील तो तें लाहो । प्राणिजात ॥ ९६ ॥ वषेत सकळमंगळीं । ईश्वर- निष्ठाची मांदियाळी । अंतवरत भूतळीं । भेटो तयां भूतां ॥ ९७ ॥ र्वां कल्पतरूचे अंबर । चेतनां चितामणीचे गांव । बोलते जे अणव । पीयूषाचे ॥ ९८ ॥ चंद्रमे जे अंलांछन । मांतड जे तापहीन । ते सर्वांही सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥ ९९ ॥ किंबहुना सर्वसुखीं । पूर्ण होऊनि तिहीं लोकी । भजिजो आदि पुरुषीं । अखंडित ॥ १०० ॥ आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं इये । दृष्टादृष्टविजयें । होआवें जी ॥ १ ॥ येथ ह्याने श्रीविश्वेश्वरावो । हा होइल दानपसावो । येणें वरें

१ देऊळ. २ व्यर्थ. ३ मायलेंकरास. ४ तुझीं संतांनीं केलेल्याचा विचार करून हें माझें बोलणें आहे. केवळ थेंकुलें-ज्ञानेश्वराचें यःकश्चित् बोलणें नव्हे. ५ त्रिशं- कुराजाच्या हेतूनें. ६ उणें. ७ दिला. ८ तप्त झालेल्या. ९ सेवकत्व. १० ग्रंथरूप यज्ञाचें. ११ प्रसाद. १२ वक्रदृष्टि. १३ भगवज्जनाची. १४ समुदाय. १५ सर्वकाळ. १६ चाल- ल्या. १७ कोटी, अंकुर. १८ जीवंत. १९ लांछनरहित. २० सूर्य. २१ श्रीगुरु. २२ दानप्रसाद.

ज्ञानदेवो । सुखिया जाला ॥ २ ॥ ऐसैं सुणीं परिकळीं । आणि महाराष्ट्रमंडळीं । श्रीगोदावरीच्या कुळीं । दक्षिणिलीं ॥ ३ ॥ त्रिभुवनैकपवित्र । अनादि पंचक्रोशक्षेत्र । जेथ जगाचें जीवनसूत्र । श्रीमहालया असे ॥ ४ ॥ तेथ यदुवं- शविलास । जो सकळकळनिवास । न्यायातें पोषी क्षितीश । श्रीरामचंद्र ॥ ५ ॥ तेथ महेशान्वयसंभूतें । श्रीनिवृत्तिना- थंभुतें । केलें ज्ञानदेवें गीते । देशीकारलेणें ॥ ६ ॥ एवं भारताच्या गांवीं । भीष्मनाम प्रसिद्ध पर्वी । श्रीकृष्णार्जुनीं बरवी ॥ गोठी जे केली ॥ ७ ॥ जें उपनिषदाचें सार । सर्वशास्त्रांचें माहेर । परमहंसीं सरोवर । सेविजे जें ॥ ८ ॥ तिये गीतेचा कैलश । संपूर्ण हा अष्टादश । ह्याने निवृत्तिदास । ज्ञानदेव ॥ ९ ॥ पुढती पुढती पुढती । इया ग्रंथपुण्यसंपत्ती । सर्वसुखीं सर्वभूतीं । संपूर्ण होइजे ॥ १०१ ॥ शके बाराशतें बारोत्तरें । तें टीका केली ज्ञानेश्वरें । सच्चिदानंदबाबा आदरें । लेखकु जाहाला ॥ १०११ ॥

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायामष्टाद-
शोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इति श्रीभावार्थदीपिका समाप्ता ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्लोक ७८, ओव्या १८११.

ह्या भाषणावर संजय ह्याणाला “महाराज ! मला दुसऱ्या तिसऱ्याचें काहीं माहित नाही. पण आयुष्य असेल तेथें जीव असावयाचा हें उघड आहे. १६३२ महाराज ! चंद्र तेथें चांदणें, शंकर तेथें पार्वती; संत तेथें विचार; हीं असावयाचींच. १६३३ राजा तेथें सैन्य; सौ- जन्य तेथें स्नेह; अग्नि असेल तेथें जाळण्याचें सामर्थ्य. १६३४ दया असेल तेथें धर्म; धर्म तेथें सुखोत्पत्ति; आणि सुख तेथें जसा ईश्वर असतो. १६३५ वसंत असतो तेथें वन; वन तेथें पुष्पें; आणि पुष्पें असतील तेथें भ्रमरांचे समुदाय. १६३६ गुरु तेथें ज्ञान; ज्ञान तेथें

१ कलियुगांत. २ दक्षिणभागच्या तीरीं. ३ पांच कोश विद्यत, पंचक्रोशींत. ४ मोहनीराजदेव-श्रीविष्णूनीं घेतलेल्या मोहनीचा अवतार. हें देवालय नेवासे येथें असून त्यास, श्रीपुसवाचक दोग्दीही नामें देतात. अधिक माहिती ‘केरळकोकिळ’तील “ज्ञानेश्वराची ज्ञानेश्वरी” ह्या लेखांत पहावी. ५ यादव वंशास सुशोभित करणारा. ६ आदिना- थपरंपरासंभूत, शिवसंप्रदाय. ७ शिष्यरूप पुत्राचें. ८ देश- भाषेचा अलंकार. ९ कळस. १० उत्तरोत्तर.

आणि आत्मदर्शनामध्ये जसे समा-
पन्न झाले. १६३७ भाग्य तेथे सुखोपभोग,
सुख तेथे उन्हास, हे असो. जेथे सूर्य तेथे
प्रकाश. १६३८ त्याप्रमाणे सकल पुरुषार्थाने
सोबतसारा प्रभु जेथे श्रीकृष्ण, तेथे लक्ष्मी;
१६३९ आणखी, आपल्या पतिसहवर्तमान
जगदीशचा ज्याच्यापाशी असेल, त्याच्या
शशिमादिक सिद्धि दासी झोणार नाहीत काय ?
१६४० कृष्ण हा स्वयमेव विजयस्वरू-
पच आहे. तो ज्या पक्षाकडे राहिलेला आहे,
तिकडे विजय असणार हे उघडच दिसते.
१६४१ शिवाय 'विजय' हे अर्जुनाचे नांव
प्रसिद्धच आहे. श्रीकृष्णनाथ, तर विजयस्व-
रूपीच. ह्याकरितां लक्ष्मीसहवर्तमान विजय
तेथेच असणार हे खचित. १६४२ येवढे ज्याचे
आईबाप आहेत, त्या गांवांतलीं झाडे सुद्धां
कल्पतरूशीं पैज मारून त्याला जिकावयाचीं
नाहींत काय ? १६४३ तेथले जे दगड अस-
तील, त्या साऱ्यांनीं चितामणी तरी कां होऊं
नये ? आणि तेथच्या जमिनी सुवर्णाच्या तरी
कां होऊं नयेत ? १६४४ हे राजा ! त्याच्या
गांवांतल्या नद्यांतून असृत वहावयाला लागले
तर आश्चर्य तें काय ? विचार कर. १६४५
त्यांच्या अव्यवस्थित शब्दांना सुद्धां वेद ह्यावांचे
लागेल. ते मूर्तिमंत सच्चिदानंदरूपच नव्हेत
काय ? आहेतच. १६४६ स्वर्ग आणि मोक्ष हीं
दोन्ही पदे, श्रीकृष्ण ज्यांचे बाप, व लक्ष्मी
ज्यांची आई आहे, त्यांच्या अगदी हातांतलींच
आहेत. १६४७ ह्यापून तो लक्ष्मीचा पति ज्या
बाजूकडे उभा राहील, त्या बाजूकडे सर्व सिद्धि
स्वयंभूच आहेत. दुसरें मी कांहीं जाणत नाहीं.
१६४८ आणखी समुद्रापासून मेघ होतो, पण
तो उपयोगामध्ये समुद्राहूनही चांगला असतो.
तर तीच गोष्ट आज त्या अर्जुनाला लागू आहे.
१६४९ लोखंडाला सुवर्णाची दीक्षा देणारा
परिस आहे, ही गोष्ट खरी. परंतु जगाला
पोषण करण्याचे काम लोखंडालाच माहिती
आहे. १६५० अशाने गुदवाला डोणेपणा येतो

असे जर कोणी झणेल, तर अज्ञांचे तेज नि-
व्याच्या रूपाने आपलेंच तेज प्रकाशित करेल.
१६५१ त्याप्रमाणे पार्थ ही देवाचीच शक्ति
होय. पण ही त्याची स्तुति देवालाच सार
मानवते. आणि त्यांतच त्याला मोठेपणा आहे.
१६५२ आणखी आपणाला सर्व गुणांमध्ये मुलाचें
जिकाचें अशी बापाला मोठी हौस असते. तर
तीही शार्ङ्गपाणी जे भगवान् त्यांची पूर्ण
झाली. १६५३ किंबहुना राजा ! अशा कृष्ण-
रूपेस तो अर्जुन पात्र झाला आहे. तो ज्या-
कडे पक्षाभिमानाने राहिला, १६५४ तेथे
विजयाचें स्थान, हांत तुला संशय तो कसला ?
तिकडे जर विजय न आला, तर त्याचें विजय
हें नांवच व्यर्थ होईल. १६५५ ह्यापून जेथे
लक्ष्मी, तेथे लक्ष्मीपति; आणि जेथे तो
अर्जुन तेथे सारा विजय आणि मरत्तराद.
१६५६ व्यासाच्या खरेपणावर जर तुमचा
विश्वास असेल, तर हें भाषण अडळच आहे,
हें लक्ष्यांत ठेवा. १६५७ जेथे तो लक्ष्मीपति,
तेथे भक्तांचे समुदाय, तेथेच कल्याणाचा आणि
सुखाचा लाभ. १६५८ ह्या भाषणांत जर अंतर
पडेल तर, पुन्हा व्यासाचा शिष्याच ह्यावि-
णार नाही." असें मोठ्याने बोलून त्यानें आभे-
शानें हात उचलला. १६५९ ह्याप्रमाणे संज-
यानें साऱ्या भारताचें सार एका श्लोकांत
आणून कौरवराजा जो धृतराष्ट्र, त्याच्या हा-
तांत दिलें. १६६० अग्नि हा केवढा आहे हें
कांहीं समजत नाही. पण तो वातीच्या टोंका-
वर ठेवून, सूर्यापासून झालेली हानि भरून
काढण्याकरितां (दिव्याच्या रूपानें) जसा त्याला
घेऊन येतात, १६६१ त्याप्रमाणे वेद हे अनंत,
त्यांपासून सव्वालक्ष भारत झालें. भारताचें
सर्वस्व—सातथें श्लोकांची गीता. १६६२ त्या
सातथें श्लोकांच्या इत्यर्थाचा, व्यासाचा
शिष्य जो संजय, त्याचा जो पूर्णोद्धार तो
हा शेवटचा श्लोक. १६६३ ह्या एकाच
श्लोकाचा जो कोणी आश्रय करून राहील,
त्यानें सर्व अज्ञान जिकलें ह्यापून समजावें.

१६६४ असे गीतेचीं पदे वाहणारे सातशे श्लोक आहेत. त्यांना पदे ह्याणावीत कां गीतारूप भागीरथीचे परमामृत ह्याणावे ? १६६५ किंवा आत्मराजाच्या गीतारूप सभेला हे श्लोकरूपी खांबेच लावलेले आहेत, असे माझ्या मनाला वाटते. १६६६ किंवा गीता ही सप्तशती मंत्रांनी प्रतिपादन केलेली भगवतीच असून, मोहरूप महिषाला मुक्ति देऊन ती आनंदित झाली आहे. १६६७ ह्याणून कायावाचामनेकरून जो हिचा सेवक होईल, तो स्वानंदसाम्राज्याचा उपभोग घेईल. १६६८ किंवा अज्ञानांधकारास रोखून धरतील, सूर्याशीही पैजा मारतील, असे श्रीकृष्ण प्रभुंनी गीतेच्या रूपाने हे श्लोक प्रकाशित केले. १६६९ किंवा संसाराचा मार्ग क्रमण करून थकलेल्यांना विसांवा घेण्यासाठी श्लोकांशरूप द्राक्षाच्या वेलीला, ही गीता मांडवच झाली. १६७० किंवा भाग्यवान् संतसज्जनरूपी भ्रमरांना सेवन करण्याकरितां श्रीकृष्णरूप सरोवरांतून श्लोकरूप कमलेंच वर आली आहेत. १६७१ किंवा हे श्लोक नव्हेत. दुसरेच कोणी असावेत. गीतेचा महिमा वर्णन करण्यासाठी जणों काय हे शेंकडो भाटच जमलेले आहेत. १६७२ किंवा सातशे श्लोकांचा सुंदर तट घालून सर्व शास्त्रे ह्या गीतानगरांत राहावयास आली आहेत. १६७३ किंवा हे श्लोकही नव्हेत. तर आपला पति जो आत्माराम, त्याला परम प्रीतीने भेटण्यासाठी गीतेने हे हातच पसरले आहेत. १६७४ किंवा गीतारूप कमलांतील हे भृंग असावेत; किंवा गीतारूप समुद्राच्या लाटा; किंवा श्रीहरीच्या गीतारूप रथाचे हे घोडे होत. १६७५ किंवा अर्जुन हा सिंहस्थ पर्वणी झाला ह्याणून सारे श्लोक हीं अनेक तीर्थे होत. तीं श्रीगीतारूप गंगेमध्ये येऊन मिळालीं. १६७६ किंवा ही श्लोकपंक्ति नव्हे. विरक्त चित्ताचे चित्तामणीच होत. किंवा विकल्परहित अशा ब्रह्माची प्राप्ती करून देणारे हे कल्पवृक्षच

होत. १६७७ अशा प्रकारे ह्या सातशे श्लोकांची योग्यता एकापेक्षा एक चढ आहे. तेव्हां एकएकांचे वर्णन कोठपर्यंत करावे ? १६७८ कामधेनूच्या संबंधाने बोलतांना ती व्यालेली आहे का पालटी आहे ? ह्याची जशी कोणी चौकशी करीत नाही; १६७९ दिवा हा मागचा कसला आणि पुढचा कसला ? सूर्य हा लहान कसला आणि मोठा कसला ? अमृताचा समुद्र उथळ कसला, आणि खोल कसला ? १६८० त्याप्रमाणे गीतेच्या श्लोकांना चांगले आणि वाईट ह्याणूच नयेत. पारिजातकाचीं पुष्पे, नवीं आणि जुनीं अशीं असतात काय ? १६८१ याउपपर श्लोकांना मोल नाही, ह्याणून आणखी किती तरी प्रतिपादन करावे ? तेथे वाच्य आणि वाचक ह्यांचा भागच रहात नाही. १६८२ कारण, ह्या शास्त्रामध्ये श्रीकृष्ण हेच एक काय ते वाच्य आणि वाचक आहेत, ही गोष्ट सर्व प्रसिद्ध-कोणा पाहिजे त्यालाही माहित आहे. १६८३ येथे जे अर्थाने तेच पठणानेही प्राप्त होत. आणि वाच्यवाचकांचे ऐक्य करणारे असे हे महत्वाचे शास्त्र आहे. १६८४ ह्याणून मला आतां प्रतिपादन करण्याचा हा विषय नाही. कारण, गीता ही वाणीरूप श्रीप्रभूची मूर्ति आहे हे लक्षांत ठेवा. १६८५ कोणतेंही शास्त्र वाचनेने व अर्थानेही फल देते, आणि मग आपण नाहीसे होत. त्याप्रमाणे हे शास्त्र नव्हे. हे सारे परब्रह्मस्वरूपच आहे. १६८६ देवांनी विश्वावर कृपा करून अर्जुनाच्या रूपाने महदानंद सोपाकरून रूपाला कसा आणला पहा ! १६८७ कलायुक्त चंद्राने चकोराच्या निमित्ताने संतप्त झालेले तिन्ही लोक जसे निववून सोडावेत, १६८८ किंवा कलिकालरूपी ज्वराने लोक पीडित झाले असे पाहून श्रीश्यांबकांनी जसा गंगेचा प्रवाह निर्माण केला, १६८९ त्याप्रमाणे श्रीकृष्ण ही कोणीएक गाय, अर्जुनाला वांसरू करून जगाला पुरेसे तिते गीतारूप दूधच दिले. १६९० हे पोटांत घ्याल तर तत्स्वरूप व्हाल ह्यांत तर शंका नाहीच.

किंवा पठणाच्या १८ करून, १ जरी ओली कराल, १६९१ अ. १८ जरी बाजू जरी परिसाला लावली, तरी दुसरी बाजू जशी आपोआप सोने बनत जाती, १६९२ तद्वत् श्लोक, चरण, इत्यादिकांच्या पाठाची वाटी जरी तोंडाला लावली, तरी आंगाला ब्रह्मस्वरूपाची पुष्टी येईल. १६९३ किंवा त्याला, तोंड वांकडें करून एका कुशीवरच पडाल आणि कानांत थोडेंसे घ्याल, तरी सुद्धांतसाच प्रकार होईल. १६९४ कारण, श्रीमान् व समर्थ दाता जसा कोणाला 'नाहीं' असे ह्मणत नाहीं, त्याप्रमाणें ही गीता अर्थासह पठण करा, कीं नुसती पठण करा; किंवा श्रवण करा; कांहीं केलें तरी, ती मोक्षाशिवाय दुसरें कांहीं द्यावयाचीच नाहीं. १६९५ ह्मणून जाणत्या लोकांप्रमाणें गीताच एक सेवन करावी. बाकी शास्त्रांना घेऊन काय करावयाचें? १६९६ आणखी श्रीकृष्ण व अर्जुन ह्यांनीं जें भाषण केवळ मोकळें-अधांतरीं-केलें होतें, तें तळहातांत घेतां येईल, असें श्रीव्यासांनीं करून ठेवलें. १६९७ आई ममतेनें जेव्हां मुलांस जेऊं घालावयास बसते, तेव्हां त्याच्या सोयीसारखे घास करते. १६९८ किंवा अफाट असलेल्या वाऱ्याला वेतापुरताच घेण्यासाठीं शहाण्या लोकांनीं जसा पंखा तयार केलेला आहे, १६९९ त्याप्रमाणें शब्दांनीं जी गोष्ट कळावयाची नाहीं, ती अनुष्टुप् छंदांत आणून स्त्रीशूद्रादिकांतही तिचा प्रसार करून टाकला. १७०० स्वातीच्या पाण्यानें जर मोल्यें बनलीं नसतीं, तर तीं सुंदर आंगावर विराजमान झालीं असतीं काय? १७०१ वाद्यांत जर नादच नसता, तर ऐकावयाला कोठून मिळाला असता? फुलेंच नसतीं तर वास कसा घ्यावयास मिळाला असता? १७०२ पक्कानें गोड झालीं नसतीं, तर तीं जिमेला रुचकर कशीं लागतीं? आरशाशिवाय, डोळ्याला डोळा दिसता काय? १७०३ पाहणारे-साक्षी-असे जे श्रीगुरु, ते जर दृश्य

आकारास न येते, तर त्यांची कोणत्या उपासना-मार्गानें प्राप्ती झाली असती? १७०४ त्याप्रमाणें अनंत असें जें ब्रह्म, त्याची सातशें श्लोकांनीं गणना न होती, तर तें कोणाच्या हस्तगत झालें असतें? १७०५ मेघ हा समुद्रांतलेंच पाणी आणतो, तरी सारें जग त्याच्याकडेच पहात असतें. कारण, जें अपरिमित आहे, तें कोणालाच आकलन करितां येत नाहीं. १७०६ हे सुंदर श्लोक जर न होते, तर वाणीला जें अगम्य तें कानांला आणि मुखाला कसे प्राप्त झालें असतें? १७०७ ह्मणून श्रीकृष्णाच्या भाषणाला ग्रंथाचा आकार दिला, हा श्रीव्यासाचा विश्वावर मोठाच उपकार झाला. १७०८ आणि तोच हा गीताग्रंथ मी श्रीव्यासांचीं पदें पाहतां पाहतां महाराष्ट्र लोकांच्या श्रवणमार्गास आणला. १७०९ व्यासादिकासारख्यांच्याही ज्ञानाला, संचार करतांना शंका रहातात. त्याची मी ही एका यःकश्चित् मनुष्यानें बडबड केली. १७१० परंतु गीतारूप ईश्वर मोठा आहे. तो व्यासोक्त रूप फुलांची माळा धारण करतो, तरी माझ्या एका दूर्वादळालाही नाहीं ह्मणत नाहीं. १७११ आणखी क्षीरसागराच्या तटाकाला हत्तींचे कळपच्या कळप पाणी प्यावयास येतात, ह्मणून त्यानें मुरकुटास कधीं मज्जाव केलें आहे काय? १७१२ तो गरुड तेथें भराभर आकाश आक्रमण करित आहे, ह्मणून पंख फुटलेलें पांखरूं मुळीं उडणारच नाहीं काय? आकाशांतच स्थिर राहील? १७१३ भूमंडळावर राजहंसाचें चालणें फार उत्तम आहे, ह्मणून दुसऱ्या कोणी मुळीं चालूच नये काय? १७१४ महाराज! आपल्या साठवणाप्रमाणें घागर पुष्कळ पाणी घेते, पण चुळीमध्ये चुळीच्या मानानें पाणी राहत नाहीं काय? १७१५ दिवटीचा आकार मोठा असतो, ह्मणून तिचा प्रकाश मोठा पडतो. पण वात आपल्या परीनें उजेड करित नाहीं काय? १७१६ महाराज! आकाशाचें प्रतिबिंब समुद्राच्या विस्तारा-

प्रमाणें समुद्रांत पडतें, तसेंच डबक्याप्रमाणें डबक्यांतही पडतेंच, १७१७ तद्रत् व्यासासारखे महान् महान् बुद्धिमान् ह्या ग्रंथामध्ये परिश्रम करतात झणून आर्ह्यां मागें सारावें हें खरोखरच सयुक्तिक दिसत नाही. १७१८ ज्या समुद्रामध्ये मंदराचल पर्वतासारखीं महान् महान् जलचरें संचार करतात, तीं पाहून तेथेंच लहान लहान मासेही पोहत नाहीं काय ? १७१९ अरुण अगदीं सान्निध्याला असतो झणून सूर्याला पहातो, पण जमिनीवरील मुंगीला तो पहातां येणार नाहीं काय ? १७२० ह्याकरितां आमच्यासारख्या प्राकृतांनीं देशी भाषेंत गीतेचें काव्य करणें तें कांहीं अयोग्यतेस कारण होणार नाहीं. १७२१ आणखी बाप पुढें गेलेला असला, आणि त्याच्याच पाउलाच्या वाटेनें मूल आलें, तर तें त्याच्या ठिकाणीं पोंचणार नाहीं काय ? १७२२ त्याप्रमाणें व्यासाचा माग काढीत काढीत, भाष्यकारांना वाट विचारीत विचारीत मी आलों. आतां मी अयोग्य असलों तरी, त्यांच्या ठिकाणीं जाणार नाहीं, तर कोठें बरें जाईन ? १७२३ ज्याच्या क्षमेच्याच योगानें पृथ्वी ही स्थावर जंगमाला कंटाळत नाहीं; ज्याच्या अमृतानें चंद्र साऱ्या जगाला गारीगार करून सोडतो; १७२४ सूर्य, ज्याच्या आंगचें सर्व तेज घेऊन आंधाराची रास दूर झुगारून देत आहे; १७२५ समुद्राला ज्याचें पाणी; पाण्याला ज्याचें माधुर्य; ज्याच्या योगानें माधुर्याला सौंदर्य; १७२६ वाऱ्याला ज्याचें बळ; आकाशाला ज्याचा विस्तार; सर्वांवर सत्ता करणारें ज्ञान ज्याच्या योगानें दैदीप्यमान झालें आहे. १७२७ वेद ज्याच्या योगानें बोलका झाला; सुख ज्यानें उल्हासयुक्त झालें; हें असो. सारें विश्व ज्याच्या योगानें प्रकाशित झालें आहे. १७२८ तो सर्वांवर उपकार करणारा, समर्थ, सद्गुरु जो श्रीनिवृत्तिनाथ तो मजमध्ये प्रवेश करून सारा व्यवहार करीत आहे. १७२९ झणून आतां मी आयती ही

गीता जगाला मन्वशा प्रथिनें सांगत आहे. तेव्हां आतां आश्चर्यालाणजेणा कोठें राहिली ? १७३० श्रीगुरुचें नांव ठेवलेली माती, डोंगरामध्ये ज्याच्याजवळ होती, त्या कोळ्यानें

१ हा एकलव्य होय. हा हिरण्यधेनुक नामक निषादाधिपतीचा पुत्र. भीष्मानें द्रोणाचार्यास, धार्तराष्ट्र आणि पांडव ३० मुलांस धनुर्वेद शिकविण्यासाठीं हस्तिनापुरीं आपल्या समीप ठेऊन घेतल्यावर, तीं मुलें त्यासमीप अभ्यास करूं लागलीं. हें वर्तमान देशोदेशीं कळून, अनेक राजपुत्र तेथें येऊन द्रोणाचार्यासमीप अस्त्रविद्येचा अभ्यास करूं लागले, असें ऐकून हाही तेथें आला, आणि माझा अंगीकार करून विद्या पढवावी, झणून आचार्यास प्रार्थू लागला. पण त्याचा त्यांनीं अंगीकार केला नाही. त्यावरून त्यानें द्रोणाचार्याच्या पादुका मागितल्या, त्या त्यांनीं यास विमुख लावूं नये झणून दिल्या असतां, हा, त्या घेऊन स्वगृहीं गेला, आणि भक्तिपुरःसर द्रोणाचार्याची मृगमय मूर्ति करून व तीपुढें आणलेल्या पादुका ठेवून, त्यांची नियमपूर्वक नित्य पूजा करीत होतासाता, हस्तामध्ये आपणच धनुष्यबाण घेऊन उभा राही. व असें अन्न सोडूना ? झणून आपण आपल्याच मनास प्रश्न करी, व आपणच, हो हो, असेंच सोड, झणून उत्तर करून, सोडी. असें करतां करतां, विमोक्ष, आदान, संधान ३० जीं धनुर्विद्येचीं प्रकरणें, त्यांत तो अल्पकाळांतच तिकडे प्रवीण झाला.

इकडे कौरव, पांडव, तसेच अन्य राजपुत्र, हेही धनुर्विद्येंत प्रवीण होऊन, एकदां सर्वही मृगयेस गेले, व मृगामागें लागले असतां, त्यांचा मृगयाश्वान त्यांपासून दूर राहून चुकल्यामुळें, जेथें एकलव्य होता, तिकडे गेला. परंतु त्यास नेहेमीं सुंदर वेष केलेल्या राजपुत्रांस पाहण्याची संवय असल्यामुळें, विचित्रवेषधारी एकलव्यास पाहून तो त्याच्या आंगावर भुंकूं लागला. तें त्याचें पसरलेलें मुख एकलव्यानें पाहून त्यांत अशा गुक्तीनें एक लहान लहान वाणांचा जुंबडा भरला की, त्यास भुंकतां व तोंड मिटतां येऊं नये. पुढें तो श्वान तेथून पळाला, व इकडे तिकडे हिंडत आहे तो त्यानें राजपुत्रांस, व राजपुत्रांनीं त्यास परस्पर पाहिलें. नंतर तो समीप आला असतां, संपूर्ण राजपुत्रांनीं त्याच्या मुखांत भरलेला वाणांचा जुंबडा पाहतांच, त्यांस अति आश्चर्य झालें, व अशी कृति करणारा धनुर्धर या अरण्यांत कोण असावा, झणून ते त्याचा शोध करीत चालले. जातां जातां, हस्तांत धनुष्यबाण घेतलेल्या एकलव्यास त्यांनीं पाहिलें, व हाच तो असावा, झणून ते सवे तेथें उभे राहिले. नंतर सर्वे राजपुत्रांत, एकजण पुढें होऊन, त्यानें त्यास पुसलें कीं, तूं कोण व कोणाचा शिष्य आहेस ? त्यानें

सुद्धां त्रिभुवाणामेकं करून सोडलें. १७३१ चंदनाच्या संगतीला असलेलीं झाडे चंदनाच्याच योग्यतेचीं होतात. भांडणाचा निर्णय करण्याकरितां वसिष्ठ ऋषींनीं सूर्यास आपल्या बरोबर साक्षीकरितां घेतलें व त्रैलोक्य प्रकाशित करण्याच्या कामगिरीवर आपली छाटी ठेवली! १७३२ छाटी निर्जीव होती; मग मी तर सजीव; आणि श्रीगुरूसारखा धनी; जो दृष्टिमात्रानेंच आपल्या पदावर बसविणारा; १७३३ आधींच उत्तम पाहणारे डोळे; आणखी त्यावर सूर्य पाडिराखा; मग दिसणार नाही ही गोष्ट कोठें राहणार? १७३४ झणून माझे नित्य नवे श्वासोच्छ्वास सुद्धां काव्येच होऊं लागले आहेत. ज्ञानदेव झणतात

उत्तर केलें, मी हिरण्यधेनुक नामक निषादाधिपतीचा पुत्र असून, द्रोणाचार्याचा शिष्य आहे. त्यावरून सर्वांमही काहीसा विषाद वाटून ते गृहीत आले, आणि आचार्यास झगले की, आपण आह्मांस न कडू देतां, गुप्तपणें एक निषाद प्रवीण केलात हें कसे? तें ऐकून द्रोणाचार्यास त्याचा कांहींच संबंध ध्यानांत येईना, तथापि तो कोण असावा हें पाहून यावें झणून आचार्य हस्तिनापुरांतून राजपुत्रांस समागमें घेऊन त्यास पाहण्यास निघाले, व तथें गेले. त्यांस पाहतांच एकलव्यानें दंडवत् प्रणाम केला, व हात जोडून आचार्यापुढें उभा राहिला. पुढें द्रोणाचार्यांनीं याच्या अस्त्रविद्येची परीक्षा पाहून, तीन तो अत्युत्कृष्ट प्रवीण आहे, असें जाणल्यावर त्यास पुसलें की, ही विद्या, तूं मजपासून कशी संपादन केलीस? तेव्हां यानें संपूर्ण पूर्ववृत्त त्यांस निवेदन केलें. तें ऐकून राजपुत्र निःसंशय झाले, व त्याच्या भावनेचें आणि आचार्यांच्या पुण्यप्रभावाचें, त्यांस परमार्थ होऊन, परस्परंशीं गोष्टी करीत आहेत तो आचार्यांनीं, हा प्रसंगवशात् अर्जुनासही भारी होईल असें मनांत आणून, यास गुरुदक्षिणा मागितली की, तूं तुझा अंगुष्ठ, वाण सोडतांना इतःपर कधीही त्यास स्पर्शवीत जाऊं नको. त्यावरून यानें तथास्तु झणून, त्या त्रिवसापासून बाणास अंगुष्ठाचा स्पर्श करणें सोडलें. तें व्रत अजून सर्व किरात पाळतात. तात्पर्य, इतकें जरी द्रोणाचार्यांनीं यास बांधून घेतलें होतें, तरी हा अर्जुनास भारीच होता. (भार० आदि०) हा भारती युद्धांत दुर्योधनाकडे झगण्यास मात्र होता; परंतु युद्धममयीं सुजीव आला नाही.

भा० प्रा० पें० कोश.—

श्रीगुरूरूपा काय काय झणून करणार नाही? १७३५ ह्याच कारणानें श्रीगीतेचा अर्थ मन्हाठी भाषेमध्ये ह्या लोकांच्या दृष्टीचा विषय केला. १७३६ मन्हाठी शब्दांच्या माधुर्याने गीतेचा सर्वतोपरी अंगीकार केला तरी, पठणामुळें त्याला कांहीं उणीव येत नाही. १७३७ झणून गीता पठण करून आणखी अर्थही समजून घेतला, तर तें पठण भूषणभूत होईलच होईल. पण अर्थ समजला नाही तरी सुद्धां, पठण करणाराला गीता कोणत्याही प्रकारें उणेपणा आणीत नाही. १७३८ आंगावर उत्तमोत्तम अलंकार घातले नाहीत तरी, साधा शृंगार तो असतोच. किंवा ते घातले, तर मग त्याच्या तुलनेला दुसरे कोठें काय आहे? १७३९ मोत्यांची जात जशी सोन्याचें महत्त्व वाढविते, किंवा मोकळीं असलीं तरी एकटींही लोकांस आवडतात. १७४० किंवा वसंतऋतूतील चटमोगरीचीं फुले गुंफलेलीं असोत किंवा मोकळीं असोत, परिमळांत जशीं कांहीं कमी पडत नाहीत, १७४१ त्याप्रमाणें अर्थ-बाला लाभ घडेल तर घडेलच; पण अर्थावांचून नुसतें पठण करणारासही तोच लाभ घडेल. अशा प्रकारचें हें ओवीबद्ध काव्य मी रचलें आहे. १७४२ त्या ओवीबद्ध काव्याच्या योगानें आबालवृद्धांसही सुलभ होतील अशीं, ब्रह्मरसाच्या उत्तम स्वादानें युक्त अशीं अक्षरे गुंफलेलीं आहेत. १७४३ आतां चंदनाच्या वृक्षापासून परिमळ येण्याला फूल येईपर्यंत वाट पहात बसायें लागत नाही. १७४४ त्याप्रमाणें हें काव्य कानावर पडतांच समाधि लावतें. मग अर्थ ऐकल्यावर तें चटक लावल्याशिवाय राहील काय? १७४५ केवळ पाठाच्या निमित्तानें अंगीकार केला तरी, मूर्तिमंत पांडित्य येऊन उभें राहतें. त्या वेळीं अमृताचा लाभ होत असला तरी, त्याच्याकडे इच्छा जात नाही. १७४६ अशा प्रकारें हें कवित्व आयतेंच विप्रांतिस्थान होऊन राहिलें आहे. मनन आणि निजध्यास हे एका श्रवणानेंच

जिकलेले आहेत. १७४७ हे पाहिजे त्याला स्वानंदभोगाचा वांटा देईल. आणि काना-कडून सर्व इंद्रियांना पोशील, १७४८ चंद्राचा उपभोग घेऊन चकोर मोठे श्रेष्ठ ह्मणवितात. पण चांदणें हें पाहिजे त्याला मिळतें. १७४९ तसें ह्या अध्यात्मशास्त्राचे, अंतर्मुख ज्ञानीच योग्य अधिकारी आहेत. परंतु इतर लोक भाषणशैलीनेच आनंदित होतील. १७५० महाराज! खरोखर असा हा श्रीनिवृत्तिनाथांचा महिमा आहे. हा ग्रंथ नव्हे. तर त्यांच्या कृपेचें वैभव आहे. १७५१ क्षीरसिंधुसमीप श्रीशंकरांनीं पार्वतीच्या कानांत जें सांगितलें—केव्हां तें मात्र समजत नाही. १७५२ पण त्या वेळीं क्षीरसमुद्राच्या लाटांमध्ये मत्स्याच्या पोटांत मत्स्येंद्रनाथ गुप्त होते, त्यांना तें हस्तगत झालें. १७५३ ते मत्स्येंद्रनाथ सप्तशृंग पर्वतावर येऊन हातपाय तुटून पडलेल्या चौरंगीनाथास भेटतांच तो संपूर्ण अवयवयुक्त झाला. १७५४ नंतर गोरक्षनाथानें समाधिसुख भोगावें, अशी मत्स्येंद्रनाथास इच्छा झाल्यावरून मत्स्येंद्रनाथांनीं गोरक्षनाथास या अध्यात्मविद्येची मुद्रा—अर्थात् दीक्षा—दिली. १७५५ आणि योगरूपी कमळिणीच्या सरोवरांतील विषयविध्वंसक सर्वेश्वरपदावर त्यांची स्थापना केली. १७५६ तें अध्यात्मविद्येचें अद्वयानंदवैभव त्यांनीं गडनीनाथास दिलें. १७५७ गडनीनाथांनीं कलिकालग्रस्त जीवांचा उद्धार करण्याकरितां श्रीनिवृत्तिनाथास अशी आज्ञा केली. १७५८ कीं, आदिगुरु श्रीशंकरापासून शिष्यपरंपरेनें जो बोध (ज्ञान) अर्थात् आत्मज्ञानाचा विस्तार आमच्यापर्यंत येऊन पोचला आहे, १७५९ तो सारा हा तूं घेऊन त्यानें, कलिप्रासित असलेल्या जीवांचें सर्व प्रकारें संरक्षण कर. १७६० ते स्वभावानें प्रथमपासूनच कृपाळू; त्यांत आणखी गुरुची आज्ञा झालेली; मग काय ? मेघांना खवळायला जसें वर्षाकाळाचें निमित्त होतें, तसें झालें.

१७६१ पीडितजनां सार्थ गीतार्थ ग्रंथ करण्याच्या निमित्तानें तत्परूप ब्रह्मरसाची वृष्टि केली. तो हा ग्रंथ आहे. १७६२ तेव्हां मी चातकरूपानें आपल्या दुःखानें संतप्त झालेला पुढेंच तोंड करून बसलों होतो. ह्मणून एवढ्या यशास पात्र झालों. १७६३ अशा प्रकारें गुरुपरंपरेनें प्राप्त झालेलें जें समाधिरूप धन, ते प्रभूंनीं ग्रंथरूपानें बांधून माझ्या स्वाधीन केलें. १७६४ नाही तर, मी कांहीं शिकलेला नाही; कांहीं वाचलेलें नाही; स्वामींची—सद्गुरूंची—सेवा करावयाचीही माहिती नाही. अशा मला ग्रंथ करण्याची योग्यता कोठची ? १७६५ परंतु खरोखर गुरुनाथांनीं माझें निमित्त करून—मला पुढें करून—काव्याच्या निमित्तानें जगाचें संरक्षण केलें. हेंच खचित समजा. १७६६ तर महाराज ! परस्वाधीनपणानें—आचार्य या नात्यानें—मी जें उणें पुरें बोललों, त्याची आपण जननीच्या नात्यानें मला क्षमा करावी. १७६७ शब्द कसा योजावा ? अर्थ कसा साधावा ? अलंकार ह्मणजे काय ? तें मला माहीत नाही. १७६८ कळसूत्री बाहुलें, नाचविणाराच्या दोऱ्यानें नाचत असतें; त्याप्रमाणें माझ्या स्वामींनीं—सद्गुरूंनीं—मला दाखवून दिलें, तसतसें बोलत गेलों. १७६९ ह्याकरितां गुणदोषाबद्दल फारशी क्षमा मागत बसत नाही. कारण, ग्रंथद्वारे मी जें सारें भाषण केलें आहे तें आचार्यांच्या नात्यानें केलेलें आहे. १७७० आणखी तुझां संतांच्या सभेमध्ये उणीव जर जशीच्या तशीच राहील,—ती पूर्ण होणार नाही, तर ममतेनें—लडिवाळपणानें—मी तुझांवरच रुसेन. १७७१ परिसानें स्पर्श केला असूनही लोखंडांतील हलकेपणा निघून गेला नाही, तर त्याचा शब्द कोणावर बरे ? १७७२ ओढ्याचें काम एवढेंच कीं, त्यानें जाऊन गंगेस मिळावयाचें. इतकें करूनही तो गंगा झाला नाही, तर तो काय करणार ? १७७३ ह्मणून मोठ्या सुदैवानें तुझां संतांचे हे पाय मला प्राप्त झाले

आहेत. आतां जगामध्ये उणेपणा रहाणार कोठें ? १७७४ अहो महाराज ! माझ्या स-
दुरुस्वामींनीं मला आपली संतांची जोड मिळ-
वून दिली. तिच्या योगानें सर्व इच्छा परिपूर्ण
झाल्या. १७७५ मला आपल्यासारखे मायबाप
मिळाले ह्मणून त्यांच्या अनुकूलतेनं ग्रंथाचा
हट्ट शेवटास गेला. १७७६ महाराज ! साऱ्या
सोन्यानेंच पृथ्वी ओतवून काढतां येईल; सारे
पर्वत चिंतामणीचेच करतां येतील; १७७७
सात समुद्रही अमृतानें सहज भरतां येतील;
तारांचा चंद्र करावयाचेंही कठीण नाहीं.
१७७८ कल्पतरूंचे मळे लावण्यालाही फारशी
अडचण नाहीं; पण गीतार्थाचें मर्म मात्र
काढतां येणार नाहीं. १७७९ तो मी एक
केवळ मुका; असें असतां मराठी भाषेत तो
प्रत्यक्ष घेतां येईल असें जें केले; १७८० हा एवढा
ग्रंथसागर उतरून कीर्तिविजयाचा जो पलीकडे
झेंडा फडकाविला; १७८१ गीतार्थाचें देऊळ
महामेरु कळसासहवर्तमान तयार करून त्या-
मध्ये श्रीगुरुमूर्तीचें पूजन केलें; १७८२ गी-
तारूप निष्कपट मातेला चुकून हें मूल व्यर्थ
भटकत होतें, त्या मायलेंकरांची भेट झाली;
हा तुमचा प्रसाद. १७८३ ज्ञानदेव ह्मणतात
“ महाराज ! तुझी सज्जनांनीं केलेल्याचा
विचार करून मी बोलतो. तें उगाच कांहीं
तरी भाषण नव्हे. १७८४ फार काय सांगूं ?
ग्रंथसमाप्तीचा हा जो सोहळा आपण दाख-
विलात येणेंकरून सकल जन्माची सफलता
झाली. १७८५ महाराज ! मी आपल्या भर-
वशावर जितक्या जितक्या आशा धरल्या,
तितक्या तितक्या सर्व परिपूर्ण होऊन मी
अप्रतिम सुखास पात्र झालों. १७८६ महाराज !
तुझी माझ्याकडून ग्रंथाची ही दुसरी सृष्टि
निर्माण केली, ती पाहून आम्ही विश्वामि-
त्राला सुद्धां हिणावूं. १७८७ कारण, त्रिशं-
कूकरितां ब्रह्मदेवालाही कमीपणा आणावा,

ह्मणून त्यानें दुसरी सृष्टि निर्माण केली. पण
ती नाशवंत होती, व ही माझी अविनाशी

ळचें नांव सत्यव्रत असें होतें. हा ‘वाल्यापामूनच दुर्भोग-
वर्ती’ होता, व पुढें त्यानें ‘ब्राह्मणस्त्रियाही हरण’ केल्या.
तेव्हां पित्यास याचा राग येऊन, त्यानें ह्यास राज्यांतून पार
हाकून लाविलें. आणि त्या दुःखानें, ह्याचा पिताही स्वतः
मंत्रिमंडळावर राज्याचा भार टाकून, अरण्यांत तपश्चर्या
करण्यास गेला. पितापुत्र उभयतांही ‘श्रपाकाप्रमाणें’ अर-
ण्यांत भटकूं लागल्यामुळे अयोध्या नगरीस कोणी धनी
ना वाली असें होऊन, सारी बेवंद पातशाही माजली.
आणखी ‘दुष्काळांत तेरावा महिना’ या ह्मणीप्रमाणें तशा-
तही साऱ्या राज्यांत अवर्षण पडलें. अशा दुर्धर प्रसंगीं,
विश्वामित्र ऋषि अरण्यांत तपश्चर्येस गेले होते, व इकडे
त्यांच्या मागे त्यांचीं बायकांमुळे उघडीं पडून, अन्नास मोताद
होऊ लागलीं. अशा वेळीं ह्या सत्यव्रतानें त्यांस रोज थोडें
मांस आणून देऊन, त्यांचा सांभाळ केला. पण त्याच वेळीं
ह्याच्या हातून वसिष्ठ ऋषींचा एक अक्षम्य अपराध झाला
होता. ह्मणजे सत्यव्रतानें विश्वामित्राच्या कुटुंबास वसि-
ष्ठाच्या धेनूचा वध करून, एकदां मांस आणून दिलें. त्यामुळे
वसिष्ठ क्रोधाविष्ट होऊन, त्यांनीं त्यास शाप दिला की, ‘ब्राह्म-
णस्त्रियांचा अपहार, पित्याचा क्रोध, आणि धेनूचा वध, ह्या
तीन शंकूस्तव (पातकास्तव) सत्यव्रत हा त्रिशंकु नाम पावो.’
तेव्हांपामून तर हा अधिकच वेड्यासारखा वनांत भटकूं
लागला. पुढें कालांतरानें ह्याचा पिता पुन्हां खनगरीस आला.
पण त्यानें त्याचें मुळीच कांहीं नांव काढलें नाहीं. तेव्हां
तर हा देहत्यागासही प्रवृत्त झाला. तो इतक्यांत कोणी
देवतेनें यास सांगितलें की, ‘तू देहत्याग करूं नको. तुझा
पिता तुला लवकरच राज्यावर स्थापील.’ तेव्हां त्रिशंकूनें तो
बेत रहित केला. कांहीं काल लोटल्यावर ह्याच्या पित्यानें
ह्यास राज्यमंत्रें हातीं घेण्यास आज्ञा दिली, व सद्गुपदेश
केला. प्रथमतः एकदां ह्याच्या पित्यानें ह्यास उपदेश केला
होता, पण त्या वेळीं ‘पालथ्या घागरीवर पाणी’ झालें.
तथापि ह्या वेळीं मात्र तो पितृबोध ह्याच्या पथ्यावर पडला.
व पुढें त्रिशंकु नीतीनें राज्य करूं लागला. असो. हा त्रि-
शंकूचा थोडासा मूळवृत्तांत झाला.

त्रिशंकु ह्याप्रमाणें राज्य करीत असता, एकदां त्याच्या
मनानें घेतलें की, आपण ‘या मर्त्यदेहानेंच स्वर्गास जाऊन,
तेथील दिव्य भोग चिरकाळ भोगीत बसावें, असा एक यज्ञ
करावा.’ ह्मणून तो वसिष्ठाकडे गेला. तेव्हां वसिष्ठानें सां-
गितलें ‘तू ह्मणतोस तसें होणार नाहीं.’ तेव्हां तो ह्मणाला
‘हें समजलों. पूर्वीं मी आपली धेनू मारिली, ह्मणून, हें आ-
पण देवानें सांगत आहां’ ‘बरें आहे. मी दुसऱ्या उपाध्या-

१ त्रिशंकु हा इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न निबंधन राजाचा पुत्र व
प्रख्यात पुण्यश्लोक हरिश्चंद्र राजाचा बाप होय. ह्याचें मू-

आहे. १७८८ उपमन्यूच्या मोहासाठीं झं-
करांनीं क्षीरसागरही निर्माण केला. पण
तोही येथें उपमेला योग्य होत नाही. कारण-
त्याच्या पोटांत विष आहे. १७८९ अंधका-
ररूप राक्षस स्थावरजंगमास गिळूं लागला
असतां, सूर्य धांवून संरक्षण करतो खरा, पण
लोकांना त्याच्यापासून ताप होतो. १७९०
संतस झालेल्या जगासाठीं चंद्रानें चांदणें पाडलें
पण त्या कलंकयुक्त चंद्राला ह्यासारखें कसें हणा-
वें? १७९१ हणून महाराज! तुझीं संतांनीं
मजकडून जो हा ग्रंथाच्या रूपानें त्रिभुवनावर

यास आणून, असा यज्ञ करून स्वर्गास जातो कीं नाही तें
पहा.' यावर वसिष्ठ रागानें हणाले 'तूं स्वर्गास जा किंवा न
जा; पण आतांच्या आतां तर चांडाल हो.' असें हणतांच,
त्यास चांडालस्वरूप प्राप्त झालें. त्यामुळें त्रिशंकूस पराका-
ष्टेची लाज वाटली, व पश्चात्ताप झाला. त्याच संधीस विश्वा-
मित्र घरी आले, व 'माझ्या मागे तुमचें रक्षण कोणी केलें?'
हणून वायकामुलांस विचारूं लागले. तेव्हां त्यांनीं त्याचें
नांव सांगून, त्रिशंकूची हताश स्थिति निवेदन केली. पुढें
विश्वामित्राची व त्रिशंकूची गांठ पडली. तेव्हां त्रिशंकू
हणाला:—'आतां माझें रक्षण करणें आपणांकडे आहे.'
विश्वामित्र हणाले:—'ठीक आहे.' नंतर ह्या दोहोंनीं यज्ञ
आरंभिला; व ब्राह्मणांस निमंत्रणें केलीं. पण वसिष्ठांनीं
'चांडाल यजमान व क्षत्रिय उपाध्याय' हणून निंदा केल्या-
मुळें ब्राह्मण कोणी येतना. तेव्हां विश्वामित्रानें रागानें
वसिष्ठपुत्रांस 'तुझी चांडाल व्हाल' हणून शाप दिला.
तदनंतर कांहीं ब्राह्मण आले. परंतु पुढें हविर्भागास देव
घेईनात. तेव्हां विश्वामित्रानें त्रिशंकूस सांगितलें कीं, 'आतां
जर कांहीं माझे खाजित पुण्य असेल, तर तूं स्वर्ग
जाशील.' इतकें हणतांच त्रिशंकू पक्ष्याप्रमाणें उडून स्वर्ग
जाऊ लागला. तेव्हां इंद्रास क्रोध येऊन, त्यानं गुरुश्रापानें दग्ध
झालेला जो तूं त्या तुला मर्त्यदेहानें स्वर्ग येण्याचा अधिकार
नाहीं, यास्तव खाली पतन पाव' असें ह्मटलें. 'तेव्हां त्रिशंकू
खाली पडूं लागला, व ओरडूं लागला. तें ओरडणें ऐकून
विश्वामित्रानें 'तिष्ठ तिष्ठ' (स्थिर रहा, स्थिर रहा) असें ह्मटलें.
तेणेंकरून हा तेथेंच अंतरिक्षांत स्थिर राहिला. 'नंतर
विश्वामित्रानें प्रतिष्ठिति व प्रतिस्वर्ग निमाणें करून, तेथें
त्रिशंकूस स्थापीन अशी प्रतिज्ञा करून इष्टी आरंभिली, व
कांहीं पदार्थही निर्माण केले. त्यावरून इंद्रानें त्याची समजूत
करून, मर्त्यदेह त्रिशंकूकडून टाकवून, त्यास दिव्यदेही के-
त्यावर स्वर्गास नेले'. (भा० क०.)

उपकार केलात, तो फारच निरुपम आहे! १७९२ एवढेंच नव्हे तर महाराज! तुमचें
जें हें मीं धर्मकीर्तन केलें तें तुमचें तुझींच
सिद्धीस नेलेंत. आणि त्यांत माझा सेवकपणा
मात्र उरला. १७९३ आतां विश्वात्मक देवानें
हा जो मीं वाग्यज्ञ केला—गीतेवर टीका केली—
तिच्या योगानें संतुष्ट होऊन मला एवढा
प्रसाद द्यावा. १७९४ कीं, दुष्टांची दुष्टवृत्ति
जाऊन त्यांना सत्कर्माची अभिरुचि उत्पन्न
व्हावी. प्रत्येक प्राणिमात्रामध्ये परस्परचा स्नेह
जमावा. १७९५ पापरूपी अंधकार लयास
जाऊन विश्वामध्ये स्वधर्मरूप सूर्याचा उदय
व्हावा. आणि जो जो प्राणी जी जी इच्छा
करील, ती ती त्याची परिपूर्ण व्हावी.
१७९६ सदासर्वकाळ जगताचें कल्याण इ-
च्छिणारे, भाग्यवान्, अशा ईश्वरनिष्ठांचे स-
मुदायच्या समुदाय निरंतर प्राणिमात्रांस भे-
टावेत. १७९७ कोट्यावधि चालते बोलते
कल्पतरूच; सजीव चिंतामणींचे गांवच; अमृ-
ताचे बोलते चालते समुद्रच; १७९८ जे
कलंकरहित चंद्र; जे तापरहित सूर्य; असें जे
संतसज्जन ते, सर्वांचे सदासर्वकाळ सोयरे—
आप्त—होवोत. १७९९ किंवाहुना तिन्ही लोक
सर्वमुखी पूर्ण होऊन सदासर्वकाळ आदिपुरुष
जो परमेश्वर त्याच्या भजनीं लागोत. १८००
आणखी महाराज! ह्या लोकांमध्ये जे कोणी
विशेष आदरानें ग्रंथ वाळगतील ते या लोकांत
व परलोकांतही विजयी व्हावेत; १८०१
ह्यावर सद्गुरु हणाले "हा प्रसाद होईल."
त्या वराच्या योगेंकरून ज्ञानदेवांना फार
आनंद झाला. १८०२ अशा प्रकारें कलियुगांत
आणि महाराष्ट्रदेशामध्ये, श्रीगोदावरीच्या
दक्षिणतीरी, १८०३ त्रिभुवनमध्ये अत्यंत
पवित्र असें जें अनादि पंचक्रोशीक्षेत्र—ज्या-
मध्ये जगाचें जीवनसूत्र श्रीमहालया वा-

१ 'श्री महालया' हें दैवत अहमदनगर जिल्ह्यांत
वासे ह्या गांवीं आहे. ह्याला 'श्री मोहनराज' असें पुण्य
पुरुषवाचकही नाम आहे. श्रीविष्णूंनीं समुद्रमंथनकालीं व

स्तव्य करीत आहे. १८०४ जेथे यादववंश-
भूषण सकलकलाप्रवीण असा श्रीरामचंद्र
प्रभु न्यायाने राज्य करितो. १८०५ तेथे शि-
वसांप्रदायाने चालणारा श्रीनिवृत्तिनाथाचा

मोहनीचे रूप धारण केलें होते, त्याचा हा अवतार आहे
झणून त्यास स्त्रीलिंगी व पुल्लिंगी अशीं दोन्हीही नामें आहेत.
ह्या देवाचा मुळचा वेष स्त्रीचा आहे. परंतु उत्सवात बंगरे
पुरुषाचाही पोषाख घालतात. ह्याच नेवाशात ज्ञानेश्वरांनी
ज्ञानेश्वरी लिहिली. तेथे अद्याप 'ज्ञानोवा' चा खाब ह्या नां-
वानें एक प्रसिद्ध दगडी खाब आहे. त्याजवर प्रथमतः कोळ-
शानें ज्ञानेश्वर महाराज ओव्या लिहीत, व नेवाशाचे कुळक-
र्णी सच्चिदानंद बाबा हे त्याची नीट प्रत उतरून ठेवीत.
अहमदनगर डिस्ट्रिक्ट 'ग्याझिटीयर' झणून सरकारमार्फत
प्रसिद्ध झालेल्या इंग्रजी पुस्तकात 'निवास' ह्या शब्दाचा अर्थ
नेवासें असा केला आहे. ती निखालम चूक, केवळ महाराष्ट्र-
भाषेचे अज्ञान होय. कारण मुळातील 'सकलकलानिवास'
येवढें संपन्न पद सामासिक अमून ते राजे रामचंद्र ह्याचे
विशेषण आहे, हे स्पष्ट दिसतें. अधिक माहितीकरिता 'कर-
ळकोकिळी'तील 'ज्ञानेश्वराची ज्ञानेश्वरी' हा विषय पाहून
त्यातील नेवासें येथील एका सन्मान्य वकिलाचे पत्र पहावे.

१ मुळात 'श्रीनिवृत्तिनाथमुते' असे आहे. मुत ह्याचा
अर्थ शिष्य असाही होतो, व कित्येक महती पथांमध्ये
शिष्यपरंपरेला पुत्र अशीच संज्ञा अमून त्यास पुत्राप्रमाणेंच
जिनर्गा बंगरे मिळते. शिवाय, शिष्य हा पुत्ररूपीच आहे,
असा ज्ञानेश्वराचाही आशय ठिकांठकाणी ज्ञानेश्वरीत

शिष्यरूप पुत्र जो ज्ञानदेव त्यानें हा गीतेला
देशभाषेच्या तऱ्हेचा अलंकार केला आहे
१८०६ असें भारताच्या गांवांत श्रीधर
नामक प्रसिद्ध पर्वामध्ये श्रीकृष्ण आणि
अर्जुन ह्यांनीं जें सुंदर भाषण केलें, १८०७
जें उपनिषदाचें सार; सर्व शास्त्राचें माहेर
परमहंसांनीं सेवन करण्याचें जें सरोवर
१८०८ निवृत्तिदास ज्ञानदेव झणाले
'त्या गीतेचा अठरावा अध्याय हा कळस तें
शेवटास गेला.' १८०९ उत्तरोत्तर ह्या
ग्रंथाच्या पुण्यरूपसंपत्तीच्या सर्व सुखांनीं स
प्राणिमात्रांनीं संपन्न व्हावें. १८१० शके बाराश
बारामध्ये ज्ञानेश्वरांनीं ही टीका केली
आणि मच्चिदानंदबाबा ह्यांनीं ती लिहि-
ण्याचें काम फार आस्थापूर्वक केलें. १८११

प्रगट झालेला आहे. पहा ओव्या १६५३१७२९. कर्ण, १
भागवतरामापाशी मी ब्राह्मण आहे असे मागून शिकत
असता, ते रागावले, त्या वेळी त्यानें असे जाहीर
आहे की "शिष्याचा गुरू हा पिताच होय. झणून जी गुरू-
जाती, तीच शिष्याची, असे मनात आणून मी ब्राह्मण
असें सांगितले."

भारत-उद्योगपर्व.

ज्ञानेश्वरीची मूळ प्रत शुद्ध करतांना श्रीएकनाथमहाराजांनीं

सा

शेवटीं जोडलेल्या ओव्याः—

श्रीशकेपंधराशें बारीतरीं । तारणनामसंवत्सरीं । येकाज-
पैर्दन् अत्यादरीं । गीता ज्ञानेश्वरीप्रति शुद्ध केली ॥ १ ॥
एष पूर्वाच अतिशुद्ध । परी पाठांतरी शुद्ध अबद्ध । तो
संघुनियां एवंविध । प्रतिशुद्ध सिद्धज्ञानेश्वरी ॥ २ ॥ नमो
पनेश्वरा निष्कळंका । जयाची गीतेची वाचितां टीका । ज्ञान
वैद्य लोकां । अतिभाविकां ग्रंथार्थियां ॥ ३ ॥ बहुकाळपर्वणी
ममदी । भाद्रमासकपिलाषष्ठी । प्रतिष्ठानीं गोदातटीं । लेख-
नामाठी संपूर्ण जाली ॥ ४ ॥ ज्ञानेश्वरीपाठीं । जो बोवी
यत्तिल मन्हाटी । तेणें अमृताचे ताटीं । जाण नरोटी
पडिली ॥ ५ ॥

ज
ल्य
ष्टार असतां, अत्यंत आदरानें एकाजनार्द-
सांनीं गीताज्ञानेश्वरीची प्रत शुद्ध केली. १
ह्याच प्रथ अत्यंत शुद्ध होता. परंतु पाठां-
नांवि सगुण.
विश्वामित्राः

तरानें अतिशय विसंगत झाला. तो अ-
रीतीनें तपासून ज्ञानेश्वरीची दुसरी शुद्ध प्रत
तयार केली. २ निष्कलंक असे जे ज्ञानेश्वर
त्यांना नमस्कार असो. ज्यांची गीतेची टीका
वाचली असतां अतिभाविक व ग्रंथार्थजिज्ञासूंना
ज्ञान प्राप्त होतें. ३ बहुतकालानें येणारी
दुर्लभ पर्वणी कपिलाषष्ठी, भाद्रपदमास, असत
गोदातीरीं प्रतिष्ठान (पैठण) नगरामध्यें
लेखनाचें काम समाप्त झालें. ४ ज्ञानेश्वरीच्या
पाठामध्यें जो कोणी मराठी ओवी रचून घालील
त्यानें अमृताच्या ताटामध्यें नरटी ठेवल्याप्रमाणें
आहे, हें लक्ष्यांत ठेवावें. ५

सार्थ व सटीप ज्ञानेश्वरी समाप्त.

“जनादेन महादेव गुजर, बुकसेलर रामबाडी-मुंबई

किं. ३० पवमानसूक्तम् विष्णुसूक्तं इत्यादि विषय ४२. पोथी सुटी. किं. रु. १।० ट. ख. ८८ रेशमी बांधीव.
रु. १।१ ट. ख. ८८ किं. ट.

ऋग्वेदीश्रावणी-पोथी किं. ट.

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यंदिनवाजसनेयिनां-

आह्निकसूत्रावलि: (ब्रह्मकर्म)

आवृत्ति ४ थी विषय ४२८ टाईप सुंदर. कागद चांगला बुकसांचा.

१०० किंमत २।१ रु. होती ती कमी करून किं. १।१ साधा कागद ट. ख. ८८, उत्तम कागद किं. रु. २ ट. ख. १।०

माध्यंदिनवाजसनेयी ब्राह्मणांस हा बहुत लाभ आहे.

याज्ञवल्क्यस्मृति.

मिताक्षराव्याख्यासंवलित.

अनेक स्मृत्यादि धर्मशास्त्रग्रंथेभ्यः टिप्पण्यादि युक्तीकृता च । बुक. कायद्याच्या पुस्तकासारखी सुरेख
वस्था केली आहे. किं. रु. ३ ट. ख. १८

मनुस्मृति: सटीका.

कुल्लूकभट्टव्याख्यासंवलित २ १८

कुल्लूकभट्टव्याख्यासंवलित. मोठे अक्षरांची २।१ १८

कृत्यसंग्रहः.

विषय १७१. द्वादशमास व अधिकमास हातील विशेष कृत्ये घेऊन त्यांचे संकल्प, पूजा, कथा वगैरे शुद्ध व सरळ
आहेत. कर्मशील गृहस्थांचा व मुख्यत्वे मिश्रकांचा हे एक पुस्तक संग्रही असल्याने निर्वाह होईल. आ-
वृत्ति २ री. टाईप मोठा, कागद सुंदर, पोथी सांचा. किं. १।१।१ ट. १८

संस्कृतधर्मसिंधुः.

टिप्पण्यादियुतः । लेखी प्रतीवरून धर्मशास्त्रज्ञ विद्वानांकडून शुद्ध करवून स्थलविशेषी टिप्पण्या व विषय ज्यास्त
मार्जिन्स (विषयसूची) देऊन, कायद्याच्या पुस्तकासारखी व्यवस्था केली आहे. त्यामुळे विषय पाहण्या
सारच सोईचे झाले आहे. रायल अष्टपत्री सांच्याच बुक. टाईप उत्तम, कागद तेजस्वी जाड, कपड्याची सुरेख बांधणी.
या धर्मसिंधूत विशेष विषय व टिप्पण्या जोडल्या आहेत, एकादशीचा निर्णय, गोत्रव्यवहार कोष्टक, आशौचप्र-
माण वगैरे नेहमी लागणाऱ्या विषयांचे विवेचन अगदी मुलभ रीतीने केले आहे. किं. रु. ३ ट. ख. १८

फारच सुरेख, स्वस्त, आणि उपयुक्त

अमरकोशः ।

शब्दाना वर्णानुक्रमेण (Index) मयुक्त. । पाकट (खिशांत राहणाऱ्या) सांचा.

रोजच्या अभ्यासासाठी. माथी बांधणी. किं. १८ ट. ख. ८८

दादा, बीम, पंचवीस प्रती एकदम घणारांस मुलभ रीतीने पडतील. पृष्ठे ३५०.

गृहद्वारूपावलि:-(सिद्धांतकौमुदीअनुक्रमाने) ८११

रूपावलि:-एकाक्षरीकोशसहित ८११

धातुरूपावलि. ८११

सिद्धांतकौमुदी.

स्वरवेदिकीसमेता (पंचम्यार्थतः) अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, शिक्षा, अष्टाध्यायीसू-
क्तिकमकोशः सूत्रासहिता च. किं. रु. २ ट. ख. १८

शिव गुप्त, मुकुन्दराय रावभाई-मुम्बई."

मुभाषितरत्नभाण्डागारम्.

(तृतीयावृत्तिः) ग्रंथसंख्या १९,४४०. विषयसंख्या ७४४. श्लोकसं० १०,५६८. कोणता श्लोक कोणत्या ग्रंथातीर
निरूपक व वर्णानुक्रमसूचीसहित. ३॥ ००

शतश्लोकी सटीका.-श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीता आनन्दगिरिकृतटीकासमेता. १ ८०

उपदेशसाहस्री सटीका.

श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीता, रामतीर्थखामिकृतटीकासमेता.	३	००
„ रेशमी पुढ्याची	३॥	००
मुहूर्ततत्व सटीक, पोथी	१	८०

क्रियापदप्रकाश.

आवृत्ति ३ री (भागद्वयात्मक.) A guide to Sanskrit Verbs.

Part 1 & 2

THIRD EDITION.

Price 12 Annas

REVISED AND ENLARGED.

Containing a full conjugation in all tenses and moods with important rules of almost all the important Sanskrit verbs, with an addition of two cantos (14 & 15) from मट्टिकाव्य, illustrating the forms of the Perfect and Aorist, by Mr GOVIND SHASTRI BANGT

नावे	कि. रु.	ट. ख.	नावे	कि. रु.	ट. ख.
संहिता, मूलपोथी.	४	॥०	रूपावलि:	८-	८॥
ऋग्वेदमंत्रसंहिता....	१॥	८२	धातुरूपावलि:	८२	८॥
ऋग्वेदीब्रह्मकर्म.	१	८२	सिद्धांतकौमुदी.	२	००
„ रेशमी बांधीव.	१॥	८३	संधिप्रकाश....	८३	८
ऋग्वेदीश्रावणी पोथी.	॥०	८-	समासचक्र,	८॥	८
प्रवमानपंचसुक्तानि-पोथी....	॥०	८-	समासचंद्रिका.	८॥	८
रुद्रसूक्तम्-पोथी.	८२	८॥	सर्वपूजा.	८॥	८
वेदांगचतुष्टय-पोथी.	००	८॥	विष्णुसहस्रनाम-मूल.	८-	८॥
आहिकसूत्रावली: (माध्यंदिनब्रह्मकर्म) -			सत्यनारायण-मूल.	८-	८॥
„ कागद उत्तम.	२	००	मंगलाष्टके.	८॥	८॥
„ कागद साधा.	१॥	८३	पुरुषोत्तमसहस्रनाम.	८२	८॥
मनुस्मृति: सटीका	२	००	देवीसहस्रनामावलि.	८-	८॥
„ „ अक्षर मोठे.	२॥	००	गणपतिसहस्रनामावलि.	८-	८॥
सग्रह-पोथी.	१॥	००	विष्णुसहस्रनामावलि.	८-	८॥
त्रयक नारायणभट्टी.	२	००	शिवसहस्रनामावलि	८-	८॥
शिवकव्यस्मृति मिताक्षरास०	३	००	शिवकवच.	८-	८॥
श्वित्तसंजरी-पोथी.	००	८-	रामरक्षा.	८॥	८॥
कोश-साधा पुढा.	००	८-	महिम्न.	८॥	८॥
लि:	००	८॥	महाराजमहात्म.	०॥	८॥

“जनादन महादेव गुर्जर, बुकसेलर रामवाडी-मुंबई.”

नावें	कि.	र.	ट.	ख.	नावें	कि.	र.	ट.	ख.
सुभाषित-कापडी सोनेरी.	१॥	०-	०-		वसंतकोकिलकादंबरी.	१॥	०-	०-	
,, रेशमी बांधणी.	१॥	०-	०-		सुभाषितपद्यमाला.	०-	०-	०-	
विचित्रभाण्डागारम्	३॥	१-	०-		सद्गुरुभक्ति कविता.	०-	०-	०-	
ओफी सटीका	१	०-	०-		विवाहविधिचंद्रिका....	१॥	०-	०-	
देशसाहस्यसटीका.	३	१-	०-		सार्थगणेशगीता.	१॥	०-	०-	
,, रेशमी पुढ्याची.	३॥	१-	०-		विठोबा अण्णा दसरदार-चरित्र	१-	०-	०-	
दुर्लभसटीक पोथी... ..	१	०-	०-		वैद्यविनोद सार्थ.	२॥	१-	०-	
व्यापकप्रकाश.	१॥	०-	०-		वैद्यक शास्त्रधर मराठी भाषांतरासह.	२॥	१-	०-	
मराठी पुस्तकें.					डोंगरेकृत संगीतमाला-				
चित्र लोकोत्तरचमत्कार भाग १	१॥	०-	०-		संगीत इंद्रसभा.	१-	०-	०-	
सुखसंस्थितिविचार.	१-	०-	०-		,, वेणीसंहार.	१-	०-	०-	
परममाला	१॥	०-	०-		,, रंगीनायकीण.	१-	०-	०-	
मर्मच्छंकाराचार्यचरित्र.	१॥	०-	०-		,, मृच्छकटीक.	१-	०-	०-	
मुमुक्षुति मराठी भाषांतरासहित.	५	१-	०-		,, शाकुंतल.	११-	०-	०-	
सतिमुक्ताहार.	१	०-	०-		,, वसंतोत्सव.	११-	०-	०-	
शास्त्रे कळसूत्रीधर, नरदेहाच्या आकृतीसह.	१-	०-	०-		त्रिलोकेकरकृत संगीत नाटके-				
पंचतंत्रामृत.	०-	०-	०-		संगीत हरिश्चंद्र.	१॥	०-	०-	
मोनचा इतिहास.	१-	०-	०-		,, सावित्री नाटक.	१-	०-	०-	
सारिथ्यविमोचन.	१-	०-	०-		सुलभप्रसूति.	०-	०-	०-	
गीता. (रामचरित)... ..	२	०-	०-		शिवलीलामृत पोथी....	१-	०-	०-	
कथकप्रबोध.	१-	०-	०-		,, साधी बांधलेली.	११-	०-	०-	
कृतकविपंचक.	१	०-	०-		,, रेशमी बांधलेली.	१-	०-	०-	
धर्मज्ञानधर्माची आवश्यकता. १	०॥	०॥	०॥		शनिमाहात्म्य पोथी.	०॥	०॥	०॥	
धर्मज्ञान-आर्यधर्माचा इतिहास.	५॥	०॥	०॥		,, बुक.	०-	०-	०॥	
धर्माचा वृत्तांत.	२	०-	०-		उदारदामोदर नाटक.	१	१-	१-	
मोकानयनाचा इतिहास.	१-	०-	०-		मिताक्षराव्यवहाराध्याय सार्थ.	६	१॥	१॥	
वचनचरित्र.	०-	०॥	०॥		सार्थसत्यनारायण.	१-	०-	०॥	
गीतामंदोदरीभेट.	०-	०॥	०॥		श्रीमद्भगवद्गीता. (मराठीभाष्यासह)	४	१॥	१॥	
पद्मोदानंदशांतवन.	०॥	०॥	०॥		स्त्रीगीतमाला-सीतागीत भाग १.	०-	०॥	०॥	
गीतास्वयंवर.	०॥	०॥	०॥		रुक्मिणीहरणगीत भाग २.	०-	०॥	०॥	
चंद्रहासचरित्र.	०॥	०॥	०॥		कृष्णाचीं गाणीं भाग ३.	०-	०॥	०॥	
मुलीचें पहिलें पुस्तक.	०-	०॥	०॥		विचारसागर (हिंदुस्थानी) मटीक....	२	१-	१-	
मुली पहीलें पुस्तक चित्रांसह.	१-	०-	०-		अश्वघाटीप्रबंधिका....	०॥	०॥	०॥	
गवळिका. (रांगोळी लेणी)	१-	०-	०-		हरिविजयपोथी.	१	१-	१-	

पुस्तकें मागविण्याचे पत्ते:-

जनादेन महादेव गुर्जर,
मु० पार्पुड-पो. बनवेल.

जनार्दन महादेव गुर्जर,
रामवाडी, मुंबई.

